# শীশীহরিভক্তি বিলাসঃ

### यजिकः।



মহামহোপাধ্যায় প্রমভাগ্রত ঐগোপালভট্ট সংগৃহীতঃ।

\*

সংবাদ পূর্ণচন্দ্রে সম্পাদকোদেষ গাতো ব**হুতর** স্থানিজ্ঞপণ্ডিতবরৈঃ সহ বিবিচা।

ত্রীযুক্ত মুক্তারান বিদ্যাবাগীশেন শোধিতঃ।

- ALEELEN

**ক**লিকাভায়াং

भूनं हत्त्वाम् स यस्त्र भूकाकरेत्र मृतिरहाष्ट्र ।

र्जेक्षाचाः ३१७१ ।

#### ভূমিকা।

विविद्याचित्र मुहोभव । ( ) PUBLICAT

প্রকর্ত্ত	न्दे । गर	त्को ।	क्षकत्रवर 1850	र्वे । अर	(4)
মঞ্চাচরণং	` a	3	তত্ৰ শব্দাপন বিধিঃ	42	>
লৈ খ্যপ্ৰতিজ্ঞা	•	•	ज्ञथं कृरस छ गवरश्चाविधिः	૭૨	•
গুত্রপদন্তিকারণং	•	8	जर्थ मीकारहाम विधिः	૭૨	30
ছাৰপদত্তিঃ	<b>4</b> 0.0	vo	অথ ছোমদ্রব্য পরিমাণং	08	ঙ
গুৰূপদত্তি নিভাতা	હ	33	অথ গুরু শিষ্য নিয়মাদিঃ	98	35
<b>शिश्व</b> रतार्लकगानि	9	৩	ভদ্দিন কুত্যানি	96	
অগুরু লকাণং	ь	30	व्यथाज्यिक विधिः	৩৫	>8
শিষ্যলক্ষ্ণানি	৯	৩	অথাতিষেক মন্ত্ৰাঃ	৩৬	<b>*</b>
উপেক্ষা: শিব্যা:	۵	>.	অথ মন্ত্ৰকথন বিধিঃ	<b>99</b>	59
পরীক্ষণং (গুরুশিয়ায়ো:)	30	>	অথ সময়াঃ	99	35
বিশেষভোগুরুবেৰাৰিধিঃ	50	<b>b</b>	অধ্বরাহপুরাণোক্তদীকাবিধিঃ	83	۵
শিষ্য প্ৰাৰ্থনা	¢	২১	অথ সংক্ষিপ্ত দীকা	86	3¢
<b>জ্ঞিগবন্ধাহাত্ম্যং</b>	પ્ર	৩	অথ মন্ত্ৰদানমাহাত্মং	8\$	28
रेवस्थव माश्जार	28	٠	দ্বিতীয় বিলাস সমাপ্তিঃ	8 %	रु∘
चानभाकताचे।न्भाकतमञ्जाना	35 }	à			
মাহাত্মাং	•	7	ভূতীয়াবিলা <b>শারন্তঃ</b>	89	•
নারসিংহাত্ <i>উ</i> ত্তমন্তরাজন্য মা <b>হ</b> া	खाः ३६	2	অথ দীক্ষিত্স্য পূজানিত্যভা	89	
শ্রীরামমস্তাণাং মাছাত্ম্যং	20	30	অথ সদাচারস্য নিত্যতা	89	₽
<b>শ্রীগোপালদেবমন্ত্রমাহাত্মাং</b>	20	25	অধ স্দাচার মাহাত্মাং	82	4
অধিকারি নির্ণয়ঃ (দীক্ষায়াং)	ھز	26	অথ তত্ৰ নিত্যক্ষত্যানি	89	5
অধ মন্ত্রশংকারা:	२२	>	व्यथ প্রাতঃ স্মরণকীর্ত্তনে	89	ঙ
अध्यक्तिनान नमाश्विः	२२	२७	অথ স্মরণ মাহাত্মাং	æ	5
			অথ বিজ্ঞাপনং	49	•
দ্বিতীয় বিলাসারস্তঃ	.૨૭	. 3	व्यथं खाउर्यान्	e b	9
দীকা নিত্যতা	२७	8	व्यथ निर्मात्ना । इति ।	<i>95.</i>	38
দীকামাহালুং	₹ ३	8	यथ विमूर्थश्रकातनः	৬২	8
দীক্ষাকাল:	28	20	मस्रकार्थार्भगामि माहाञ्चार	<b>હ</b> ર	سط
তত্ত্ব বারশু <b>দ্ধি:</b> নক্ষত্তপ্ৰস্থিতি	. २०	2	प्रकृत जीताकतः	৬২	>>
ন খনা হৈ। জ্বঃ তিথি শুক্ষিঃ	₹¢	<b>ર</b>	कथ अभिनः सामार्थः मात्रः	ં	36
ভাষা কাৰ: ভাষাপ্ৰাদ:	₹€	ঙ	তত্র সৈক্রাদিক ভাবিধিঃ	• ৬২	<b>₹</b> \$
ভ্ৰাপ্ৰাণ: অথ মণ্ডপ নিৰ্মাণ বিধিঃ	₹ <b>৫</b> ₹ <b>৫</b>	20	mat controlle	৬৩	33
অধ কুণ্ডনিৰ্মাণ বিধিঃ	રહ ૨ <i>\</i>	હ ઇ	merican folia	<b>9</b> 8	>•
व्यथं मीकात्र थन विधिः	२४ २४	8	I mak Sameramen	òe	۵,
चर्य की काक श्वा	२ ३	ঙ		44	. 8
्र गामिनम् द्वा	44	٥			

<b>শ্রকরণং</b>	र्का ।	<b>भ</b> रको	'প্রকরণং	भूट है।	<b>भ</b> ९८ <b>ङ</b>
ভত্ৰাপৰাদ:	09	۵	व्याद्यापक ज्ञानः	<b>ે</b> ૪- ૯	8
व्यथं मस्कार्रान	७२	59	তত্ৰ নিষিদ্ধ দিনানি	FC	\$0.
অথ কেশপ্রদধন†দিঃ	40	3/9	অথামলক স্থানং	ba	>0
অথ স্থানং	40	>>	অথ তিক সানং	ba	24
<b>ত</b> ত্ৰ স্নাৰবিধিঃ	9.	8	অথ তৈল স্থানং	<b>७</b> ৫	२२
<b>ত</b> ত্ৰ বিশেষঃ	٩.	२०	তুলদীজলাভিষেক মাহাত্মাং	43	<b>4</b> .
অব শ্রীচরণোদকাভিষেকমাহাত্ম্য	९ १ऽ	२५	অৰ বস্ত্ৰধারণ বিধিঃ	৮৬	२४
অথ সামান্যতো দেবাদিতপ্নং	92	36	অথ পীঠং	49	: a
व्यथं देविक निका	90	৩	অথ দাদশভিলক বিধিঃ	wb.	. ર
<b>অধ</b> তান্ত্রিকী সন্ধ্যা	90	28	অথোর্নসূত্র নিভাতা	6	25
অথ তদিধি:	90	26	অर्थार्क्षभू धुमा हान्प्रार	49	>9
অথ মতান্তর তান্ত্রিকসন্ধ্যাবিধিঃ	98	9	অপের্প্তুনির্মাণ বিধি:	৯৽	>0
তত্ৰ জলে শ্ৰীভগংৎপূজা বিধিঃ	98	22	অথোদ্ধপুঞ্সা মধ্যতিক নিত্যতা	ે•	२ऽ
व्यथं विस्थवरका स्वामि कर्भनः	90	૭	অথে: ৰূপুণ্ড মৃত্তিকাঃ	92	>•
ष्यथं यानामि महावारभका	95	a	অথ গোপীচন্দন মাহাত্ম্যং	. 22	১৬
ভূতীয়বিলাদ দমাধ্যিঃ	93	> <sub>s</sub>	গোপীচন্দনেনে ইপু গুমাহাল্যং	>>	₹8
<b>~6</b> ♦ ∰ <b>\$0</b> ~			অথ ত্লসীমৃত্তিকাপুণ্ড মাহাল্যাং	25	24
চন্তর্থ বিলাশার মু:	99		মুক্রাধারণ বিভ্যতা	25	২৩
<b>७३५</b> विभागतात्व. <b>७१४</b> वीभगवक्तित्व मःस्वादः	99	<b>)</b>	মুদ্রধারণ মাহাত্মাং	৯৩	9
তত্ত সংমার্জন মাহাত্ম্যং	99	<b>)</b> ર	মুদ্রাধারণ বিধিঃ	৯৫	30
উপলেপন মাহাত্মাং	98	9	व्यथ हकामीनाः नक्तानि	৯৬	2
অভাকণ মাহাত্মাং	95	5	ष्यथ मालामि धाउपः	20	e
01	95	9	অথ মালাধারণ বিধিঃ	20	6
অথ মণ্ডল মাহাঝাং	92	38	মালাধারণ নিভাভা-	৯৬	24.
তত্ত্ব স্থান্তিক লক্ষণং অধ তত্ত্ব ধ্বজাদ্যারোপণং	98		সালাধারণ মাহাত্মাং	20	११
ধুজারোপণ মাহান্ত্র্য	7 N	3	অথ গৃহে সম্ব্যোপাদন বিধিঃ	ット	
পতকোরোপণ মাহান্ত্যং	ه به	> >	অথ শ্রীগুরু পূজা	ット	<b>y</b> .
वन्त्रनमानाकम्भी खखारताश्रममाहाष		20	অথ ঐীগুরু মাহাস্মাং	72	25
व्यथं भीठंभाव रहामि मःकातः	b.0	ነል	অথ গুর্বভিক্তলকণং	৯৯	29
তৈজ্পপাত্র সংস্কার	<b>v</b> .	<b>২</b> ২	<b>ठ</b> खर्थ विनाम नमाश्विः	>••	•د ،
बद्धानीनाः ( मःकातः )	bra	8	जार्थ अलगुद्धिसम्बद्धः	. •	
धानामीनाः ( नःकातः )	40		অথ পঞ্মবিলাশারন্তঃ অথ দার পূজা	202	3 L
श्रुकार्थ उनमीभवामग्रहतुनः	٧-8	9	অব গৃহান্তঃ পূজা		<b>b</b> -
<b>जब</b> गृहस्रात विधिः	lr8		्रवार्थात्रमः श्रुकार्थात्रमः	20.5	*
14 72414 (414)	~ •	A)	। दनापानगर	٥٥٤	è

# জীজিহরিভজিবিলাসস্য সূচীপারং

	প্রকরণ ং	अंद्र ।	भर दको	প্রকরণ	প্রে ৷ প	েক)
	<b>कामना</b> नि	ڪ • ڍ	9	व्यथ विष्ठुं हुः	১৩৩	28
	विद्यवं छः यात्रन दिश्वरो	>= 5	>>	बर्ध अपूर्णि नक्षणीन	<b>&gt;</b> 08	Ŋ
	অথ পাত্রাসাদনং	<b>گ</b> د ت	>9	অথ নিদ্ধার্থ দংহিতারাং		
	অথ পাতাণি তথা চাথাঞ	:08	ં	চক্তবিংশতি মৃক্তরঃ	200	30
	অথ মঞ্জ ঘটস্থাপনং	>∘8	>3	অথ শালগ্রামশিলাঃ	> 59	٤
	অথার্য্যাদি পাত্রাণি	>08	۰ ډ	তত্ৰ ভাসাংবাৰ্ণাদিভেদেন গুণদোৰ	रो ३ ७ १	9
	অথ মঙ্গল শান্তিঃ	۵۰۵	>8	অথ ভাগামের লক্ষণ স	> & b	৬
	অথ বিল্পনিবারণং	200	26-	ित्यास्य मः क्यांतित्यसः	,	•
	অংশ শীণ্ডৰ্বাদি নতিঃ	>0 5	2	অথ শালগ্রামশিলা মাহারাং	280	<b>\$</b> 2
	অথ ভূতশ্ৰিঃ	30.8	C	অথ তৎক্রয়বিক্রয় নিষেধঃ	>88	9
	ष्यथ क्ष: ना स्वामः	3·b	>0	তৎ প্রতিষ্ঠা নিষেধঃ	\$88	৬
	প্রাণায়াম মাহায়াং	202	৯	-তাসাং সর্ব্বাধিষ্ঠান শ্রৈষ্ঠ্যং	288	৯
	অধান্তমাত্কান্যানঃ	222	>	শালগ্ৰামশিলাধ্ৰা নিতাতা	283	ن
	শ্রথ কেশ্রাদিন্যাসঃ	>>>	8	অথ শাল্ঞামশিলা শীল্বকে -	2588	S
-	অিপ শীফ্রাং	222	٥, د	हकाक मिलामः योश माइः जाः	5 730	3
	ष्य मञ्जूः	222	>9	অথ শ্রীদারকাচক্রাস্ক লক্ষণানি	\$8 <b>7</b>	8
	অথ তত্ত্বন্যাসঃ	223	22	অথ দ্বাদশ চক্ৰান্ত মাহাত্মাং	>89	'n
	व्यथ श्वागायाम वि: भवः	228	Ø.	व्यथं (उत्हर्व हक्तरज्ञान कनार्जनः	>89	23
	অথ পীঠন্যানঃ	223	٥	व्यथ वर्गामिट अन्ति छन्ति वा	289	২ ৩
	অব পীঠমন্ত্রঃ	774	, >	श्काश्काद ह		
	অথ ঋষ্যাদি সারণং	772	S S	পঞ্মবিলাদ সমাপ্তিঃ	186	9
	অধাঞ্চন্যাস:	224	. >0	-35		
	অথাক্ষর ন্যানঃ	25.	>		` 'SA	5
	ष्यं भवनामः .	250	• 6	ত্রী যুর্তিপূজা মাহাঝাং	ንያእ	50
	<b>७</b> १थ अयापि नामः	25.5	د ،	শ্রীমূর্তিপ্রসাদনং আত্মাদিশুদ্ধরুশ্চ.	>89	50
	व्यथं मूजां भक्षकः	25.2	৩	ष्य भीठेश्व।	260	y
	ष्यथं श्रीनन्मनन्मन जगवन्नानिविधि	: ><>	ঙ	অথবোহনাদীনি	505	₽
	<b>ष्यशस्य</b> र्गनः	<b>२</b> २१	રર	অথাবাচনাদি বিধিঃ	505	ર
	অধ শৰ্পতিষ্ঠা	১১৮	¢	অধাবাহন মাহাড্মাং	>७२	አ
	অথ বদেহে পীঠপুজা	200	5	ष्यथं मूजाः	>@2	১১
	व्यथ (पराद्यम् प्रजानापि नातः	<b>&gt;</b> 00	৩	वर्थ मूजा माहाबार	:00	9
	व्यथं वार्ष्या अन्ति देवसः श्रमा	<i>&gt;</i> %>	৩	व्यथाननामार्भगः	300	<b>១</b>
	ष्यां खर्गा गाराषाः	<b>५</b> ५२	9	व्यामनामार्भन माहाबाः	১৫ ৬	3
	व्यथ विशः शृषा	200	8.	ত্ত্ৰ স্বানং	563	さく
•	অথ পূজাস্থানানি	350	9	অথ শ্বাৰপাত্ৰং	·63	>1

## ঞীঞীইরিভক্তিবিলাসস্য সূচীপত্র।

<b>প্রকর</b> ণ•্	न्द्र ।	পংকৌ	প্রকরণণ	અં. ક્રો	<b>अ</b> ९८
<b>অ</b> থাভ্যঙ্গদ্ৰব্যাণি	>69	Ь	অথ স্থবৰ্ণাদি পুজা:নি	<b>76</b> 8	
অথ পঞামৃত স্নপনং	>69	5.0	অথ স্বৰ্পুষ্পাদি মাহাল্যং	51-8	(
অথ ক্ষীরাদিস্নপন মাহাত্ম্যং	364	œ	অথ সামান্যতোনিযিদ্ধানি পুষ্পা	ণি ১৮৪	٠,
অথ ৰপনে ধূপন মাহায়াং	502	৬	অথ বিশেষতোনিষিদ্ধানি পূজাণি		\$:
অথোদ্ধ ৰ্ত্তনং তন্মাহান্য	569	৯	অথ পুষ্পাগ্ৰহণ ফলাদিঃ	36 B	٠,٠
অথ কুৰ্চং ত্ৰাহায়্ঞ	১৫৯	56	অথ পত্ৰাণি	569	Γ,
व्यथं एककल स्राप्तर	569	<b>ጎ</b> ል	অথ তুলনী মাহাঝ্যং	:bb	? <b>?</b>
তত্র অলপরিমাণং	3.90	ર	जुनभी भाजा गाः छ भव नर्भाग )		
জন গ্ৰহণকালঃ	> % o	8	পাপহাতিত্বং	1500	b
স্পন মাহাস্ত্	১৬০	٩	অথ তুলদীগ্ৰহণবিধিঃ	ちなる	55
ভত্তাপি শস্ত্যোদকস্নপন মাহাম্যং	১৬১	৩	তুলস্প্রচয় নিষেধকালঃ	` <b>a</b> 5	<b>૨</b> ડે
ভত্ৰ ঘণ্টা মাহাকাং	: ५२	*6-	অথাক্ষোপাঞ্ পূজা	:28	٩
न्नात्न वानामि माश्राज्यः	১৬৩	52	অথাবরণপূজা	558	33
অধ সহসুনাম মাহ,জ্যুং	: 48	5	অথ শ্রীময়ামাটক গুক্সা	:25	>
অথ শ্ৰীভগবদ্দীত। মাহ্যত্যু	> ५७	5	मश्चमित्राम भगाश्चिः	いるか	`3
অথ পুরাণপাঠাদি মাহাম্যং	35.0	२०	_0\$@÷€ <b>-</b>		
অথ বস্ত্রার্পণং	599	પર	অথাতমবিলানঃ	いかか	٠,
অথ শ্রীমদক্ষমাজ্জন মাহালাং	১৬৮	₹.	অर्थ धूपनः	658	ప
অথ বস্তাপ্ৰ মাহাল্যং	<b>५७</b> १	` `	অথ ধূপন মাহান্ন্যত	> 0	>
অথ বস্ত্রাপণে নিষিদ্ধং	389	56	ঞীভগ্ৰদালগ্ৰপুন মাহা গ্ৰ	205	>
অথ যজ্ঞোপৰীত দানং	293	२५	अर्थ मी अनः	ې ه ځ	5,>
অথ পাদ্যতিলকাচমনানি	704	હ	ভুৱ দীপঃ	5.02	24
অথ ভূষণং	756	œ	দীপন মাহাজাং	<b>په خ</b>	3
অথ ভূৰণাদ্যপূৰ্ণ মাহাআং	: 56	9	जीजगव्मानस्य मीभमान मार्थमार	200	৬
ष्याञ्चल भन माहात्राः	190	58	অথ মহাদীপ মাহার্থ	5.08	৯
অথ শ্রীতুলদীকাঠচন্দন মাহাত্র্য	595	ъ	অথ শোণমলিনাদিবস্ত্রবর্ত্ত্যা দীপদান নিষেধঃ	30,5	8
व्यथाञ्चल्य निविकानि	592	35		)	
वर्ष्ट्रिलान नगाथिः	195	8	वय नीপनिकां भगानि तन्यः वय रेनरवन्तः	30¢	Ь
<b>→!</b> ♦		I		\$ 0 C	>>>
অথ শপ্তমবিলাশারন্তঃ	598	,	णश देनदिनगार्शन विधिः रेन्यान	२०, ७	>
অথ প্ৰাণ্ণি		- 1	देगरवमा পाजानि	२०५	8
অথ সামান্যতোহিধিল পুল্মাহাল্লা	598 2 500	9	তত্র ভোজ্যানি	र्•फ्र	>,
অথ বিশেষপুষ্প মাধাম্মাং		40	देनरवरमा निविक्षानि	570	৯
वर श्रुक्षम छ भा किः	599,		অধাভক্যানি	520	36
11 0/ 11/ 0 11/40	०४०	52	देनदवनाक्षा माहामाः	<b>\$</b> >>	>

প্রকরণং	भ्रष्ट ।	<b>भ</b> ९८को	প্রকরণং	भृष्टे । भ	१८ छी
অগ পানকানি	२ ५२	<b>১</b> .৯	অত তীর্থধারণং	२७৯	>•
<b>चथ</b> (हामः	२३७	œ	व्यथ बीहत्रामिक शामगोशांखाः	२७৯	79
<b>७थ र</b> िकानर्र	२५५	<b>5</b> ₹	অথ তলদীবন পূজা	289	२১
বলিদান মাহায়াং	<b>ś</b> 38	৩	जुलमीवनश्चा माहाजाः	२88	•
জলগ গুষাদ্যপ গ	२,५९	Ŀ	वुनभीवन माशाब्याः	₹88	\$\$
অথ পুনর্গাপণ্	<b>\$</b> 58	26	তুলদীম্ভিকাকাঠাদি মাহাত্যুং	२८१	२०
অথ মহারাজেশপচারপেণং	5 <b>2</b> ¢	৬	তুলসীপত্রধারণ মাহাত্য্যং	₹8 <b>Ъ</b> ′	>œ
অথ্গীতবাদ্য স্ত্যানি	2 <b>&gt;</b> 5	>0	जूनमीपन जन्म । भाराज्याः	२८५	5
<b>७ श</b> भी अवन १	<b>\$\$0</b>	>>	वर्ष थां भी भाहा जा !!	\$60	5
শ্ৰাণাদন মাহাত্যুণ্	>>>	>5	অথ স্থান নিষেধকালঃ	્. ૨ <b>૯</b> ૦	ر ع ہ
সজলশন্তা নীরাজনং	\$53	٠	अर्थ वृद्धिमण्याम् <b>न</b> ः	<b>२.৫</b> ১	20
অথ স্কৃতি বিধিঃ	<b>३</b> ২্১	>3	অথ এ∤ছাএাছ্⊦ণি	२ <b>७</b> ऽ	<b>₹</b> 8
তত্ত্ব স্থোগি	হ <i>হ</i> ্	>9	অথ মাধ্যাহ্নিক কুত্যানি	<b>20</b> 5	œ
अ <sup>डिमा</sup> हाल्याः	÷±′8	৬	थिस देवस्व देवस्वरम्वामि विधिः	२० ७	4
ाथ व <b>लनर</b> ं	55₺	20	अथ टेब्स्न आफ विधिः	२,७ ७	<b>\$</b> \$
অথ প্রণাম বিধিঃ	(55%	25	अथ आह्मदेवस्वदालनमाहाजाह	. ૨૯૯	) <u>1</u>
নমস্তার মাহাত্যাং	22 P	(¢	अथ औजशदमर्भाग नियिक्तः	રહ  છ	 
<u> প্ৰাম নিত্তি</u>	২্১৭	<b>३</b> ४	অথ পূজাব্যতিরিক্তভোজনদোৰাঃ		२०
অথ নমস্কারে নিধিদ্ধানি	२२५	, ,	यथ देनद्वमाञ्क्रभ विभिः	২৫৮	ે
অধ প্রদক্ষিণা	२२०		देनद्वमाञ्कल भाषाज्याः	২ <b>১</b> ০	১৩
७ थ अनुभिगाताः निविक्तः	えっか		নবমবিলাস সমাপ্তিঃ	२ ५२	S
७। य कर्मा । मा भ ग १	₹÷9			,	
ভত্ত কৰ্মান্থ বিধিঃ	559		অর্থ দশমবিলা সারস্তঃ	२५७	>
অথ স্থাপণি বিধিঃ•	र <b>५</b> ००	٠	ভগবদ্ধক্ত শক্ষণানি	८.५.७	¢
ज्य जुनः	<u>دن :</u>		অথ ভগবদ্ধকানাং মাহায়াং	३१७	9
পথ প্রার্থ নং জালালে বংগ্রেক	२८५		ৰথ ভগবদ্ধক্ত সম্মাহাক্যং	२৯३	ં
অবপেরাধক্ষমাপণ্ অবপেরাধাঃ	ર <b>ડ</b> ર		व्यथानश्मक (नायाः	C00	৬
	२ ५२	>0	অথাসভাং নিষ্ঠা	<b>৩</b> 0)	s
ছ্পাণিরাধশমন্	२८४	<b>ર</b>	अथ टेवछवनिकामि (मायः	७०२	3
অথ নিশাল)ধারণ নিত্যতা	२ ∨8	25	অথ বৈষ্ণবস্মাগ্ম বিধিঃ	৩৽৽	¢
অথ পূজ্যাবধিবিবেকঃ	ર હે <b>લ</b> - ^		व्यथ टेवक्ष्वमन्त्रान निडाठा	1, 2.	35
অক্সাবলাস সমাপ্তিঃ	२ ७१	ঙ	অথ বৈক্ষবস্থতিঃ	X. (	6
काले मान्या विकास्थितम्	اميي	,	অথ বৈষ্ণাভিগমন মাহায়্যং	v <sub>p</sub> × <sub>c</sub> =	8
ष्यं मन्म निलामाः सः	२७५	. >	বৈক্বস্তুতি মাহাখ্যং	le¢.	P

## শীঞীছরিভজিবিশাসসঃ সূচীপত্র।

<b>श्रकप्र</b> 4१ ं	र्गाष्ट्र । भाः	(2)	প্রকরণং	क्ट्रेड ! क	र दल
অথ টেবক্ষংশাস্ত্র মাহ্মোং	৩৽৬	১৬	অথ ভগৰদশীকারিত্বং	<b>৩</b> ৬২	3.49
অথ এীমন্ত'গৰত মাহাত্মাণ	509	2	অথ শ্রীমন্ত্রাম অপ মাহাত্রাং	৩৬৫	200
অথ শ্ৰীভগৰ্জাস্ত্ৰবক্তৃ মাহাত্মাং	৬:২	2	অথ ঐভগবনাম মাহাজ্যং	৩৬৬	5 8
ष्य के कृष्णी ना कथा खादन मा शाजा		>>	অথ বিশেষতঃকুঞাবতার মাহাস্যং	৩ ৬৭	8
অব্য ঞ্জীভন্ন ংক্তথাত্যাগাদি দোৰ:	Q;5	٥	অথ শ্ৰীমনামকীৰ্ত্তন নিভাতা	৩৬৯	<b>ড</b>
অথ ভগৰৎক্পাসক্তিঃ	७२५	œ	শ্ৰীভগৰন্নামাৰ্বাদকপেনা দূষণং	७२०	C
অথ ঞীভগবদ্ধর্গপ্রতিপাদন মাহাত্	गु९७३३	œ	অথ নামাপরাধাঃ	595	۶
অথ ভগৰদ্বৰ্শাঃ	৩২৩	>	অপরাধভঞ্জনং	:095	C
ভগৰদ্ধা মাহাত্মাং	८२ ७	৬	শ্রীভগবদ্ধ জি মাহান্যং	৩৭৫	<b>'</b> 5
অধ এভগবলানাকথাকীর্ত্তন 🤰	<b>৩</b> ২৭	e	ঞ্জীভগহন্ত ক্রি নিতাত।	<b>১৮৪</b>	ᠬ
মাহান্যং	<b>U</b> (1	"	শ্রীভগবন্ত ক্রিল লক্ষণং	<b>७५</b> ८	9
দশমবিলাস সমাপ্তিঃ	८२४	ঙ	বিশেষ সাধনভক্তি লক্ষণানি	5.4°	*, 6
			অৰ প্ৰেমভক্তি লক্ষণং	चेचट	ؿ
একাদশ বিলাশার্ভঃ	·25.9	>	প্ৰেমশন্ত চিহ্নান	ベンシ	8
অথ সায়ন্তন ক্ত্যানি	C> 2	'8	অথ শরণাপণ্ডিঃ	2700	*3 *3
জ্বভগবদ্ধ জ্ঞানাংকর্মপাতিতা-			শরণাপত্তি মাহাজ্যং	৩৯১	৯
পরিহারঃ	35.2	25	শ্রণাপন্তি লক্ষণং	৬৯৪	<b>b</b> '
ত্ৰিকালাৰ্চ্চনবিধি ৰিশেষঃ	ં હ હ•	ઝ	देवस्वकर्खवागानाताः	<b>৩</b> ৯৬	২
অথ নক্তং কুত্যানি	৩৩১	٩	একাদশবিলাস সমাপ্তিঃ	8.8	S
ख्यशास्त्राकाशिलकर्मार्भग विधिः	৩৩১	>8	<b>→→</b>		
অথ পুজাফলপ্রাপ্তাপায়:	৩ ১২	৩	. व्यथ काममेविनाम!दञ्जः	8°€	[>
অথাশক্তম্য পূজাকনপ্রাপ্তাপায়ঃ	ও এহ	ъ	অথ পক্ষরূত্যানি	8°¢	•
অথ দৰ্শন মাহাত্মাং	৩এ২	38	শ্রীমদেকাশীব্রত্যা নিতাপ	800	,y
অধ শ্ৰীভগবমূৰ্ত্তিদৰ্শন নিত্যতা	७३३	9	তত্র ভোজন নিষেধঃ 🔭	3°\$	৮
व्यथं जनवर्षक्वामान माहात्राः	૭૭૭	ঠ	শংক্রান্ত্যাদাবপি তল্লিত্যতা	806	٠২,٠
व्यथं मानविष्णय कलः	<b>৩</b> ৩৪	>	স্তকাদাৰপি নিত্যত্বং	8৽৯	>>
- অথ বিবিধোপচারাঃ	-5-5-5	२	बर्थाशवानिति धान्न निरम्	৪৽৯	22
व्यालकामभाभागः	400	``	व्यथाभिकाविषः	870	9
व्यथ भग्नन विधिः	204	55	অশক্তে প্রতিনিধিঃ	872	२
. অথ এভিগবদর্শন মা <b>হাত্যা</b> ং	<b>७</b> 8₀	૭	अरेथकामनी माहाजााः जाराध्यम्बद्धाः	875	ی،
অথ পূজা নিত্যতা	<b>986</b>	35	অথেপিবাসদিন নির্মু;	-8'sb	•
व्यक्ष क्षेत्रज्ञाविष्णायन विशेषक्षात्र-ूं विष्णेयं स्मृत्राविष्णायन विशेषक्षात्र-ूं	389	ર	নামান্যত্যে বিদ্ধোপ্ৰাস্থ্যে	872	<b>b</b>
	<b>,</b>		অধ পূর্ণালক্ষণেন বিদ্ধালক্ষণং	858	<b>ર</b> 8
অথ শামান্যতোভগৰ-	7.5 <b>2</b>	55	অধারুণোদর বিদ্ধা পরিত্যাগঃ	928	৬
क्षामकीखनमां हा 💃	<b>トレ</b> 季	ا هو'.	अथ देवकव लक्षानः	<b>8</b> २ ७	20

# शहर अहरको अहरक

প্রকরণং	र्शि।	यश्रदको ।	প্রকরণং	ः श्रुश्न	्टको
ष्य्रवाकृत्वाम्य मक्तवः	8२ १	٦	অধ ত্রিস্পৃশা ব্রতং	8.50	76
অধার্দ্ধরাত বিদ্ধা সমাধানং	8२৮	8	অধ পক্ষবৰ্দ্ধনী ব্ৰতং	8.50	<b>ጎ</b> ፄ
অথ শুদ্ধাবিশেষ পরিত্যাগঃ	8र २	8	অথ অয়া ব্ৰতং	898	۵
व्यथ श्रुविदिक्षां भवाभागि ममाधानः	१८७ <b>२</b>	29	অথ বিষয়া ব্ৰতং	898	>8
<b>অथ সম্ভেহনিরসন বিধিঃ</b>	8:26	6	অথ ত্ৰত বিধিঃ	8 <b>%8</b>	२॰
তত্ৰ বৰ্জ্যং	306	30	অথ জয়ন্তী ব্ৰতং	8 <b>७€</b>	ه
দাদশ বিলাপ সমাঞিঃ	900	8	তত্ৰ তদ্বিধিঃ	8 <b>&amp;C</b>	D:
অথ ত্রয়োদশ বিলাসারস্তঃ	8७१	5	व्यथ भाभ नामिनी खडः	8 97	8
অংথাপবাস পূৰ্বা দিন কুত্যং	809	৩	তদ্বুত বিধিঃ	८७५	>>
অথ হবিষ্যাণি	યદ 8	9	অথ ধাতী পূজা	8৬৯	ঙ
षरिशंक ভক্ত लक्षा	৪৩৯	৩	ज्यामम विलाग मगाखिः	8৬১	<b>3</b> ¢
অথোপবাস লক্ষণং	880	3	<b>→</b>		
অথোপবাস দিনেহন্যেপি নিয়মাঃ	883	৬	চতুর্দশ বিলাসারস্তঃ	890	
অথ তত্ত পূজাদিকং	885	>8	অথ মাস কুত্যানি	89•	Ġ
অথ জাগরণ প্রকরণং	88२	હ	ভত্ত মার্গশীর্থ ক্তাং	890	8
काशवरन भी जानि निवात 🤾	882	ል	পৌৰ কৃত্যং	895	ሥ
र्गानि निरम्भः 🔑 🕽	300	,,	মাঘ কৃত্যং	895	59
অথ জাগরণ বিধিঃ	89২	`b'	তত্র মাঘ্সানস্য নিত্যত্ত্বং	<b>८१</b> ७	22
জাগরণ নিত্যতা	८८७	>8	তত্রাধিকারি নির্ণয়ঃ	890	۶.
জাগরণে গীতাদি নিত্যত্বং	839	৩	মাঘ মাচাম্যং	893	>
জাগরণ মাহালাংং	888	৯	অথ বসন্তপঞ্চমী	892	<b>\$</b> \$
অথ পারণ দিন ক্নত্যং	862	8	वर्ष रेज्राकामगौ	St.	9
তত্ত ভগবতঃ প্রাতরসুপনং	865	. >.	অথ ফাল্ডণ কৃত্যং	877	>
পারণে দ্বাদশ্যপেক্ষণং	598		ध्यं भिव दाबिः	877	Ъ
তত্ৰ দাদশাপোত্ত্বে কুত্য সমাধানং	<b>१</b> ७८	58	শিবরাত নির্ণয়ঃ	850	\$
সক্ষটে পারণা সমাধানং	<b>508</b>	36	শিবরাত্রি ব্রতবিধিঃ	840	20
অথ হরিবাসর কালে পারণ নিষেধ	<b>C38</b> :	ঙ	শিবত্রত মাহাত্মাং	348	>
व्यत्ताक्षि वाननी नियमाः	<b>C</b> 38	>•	<b>শ্রীগোবিন্দ দাদশী</b>	87°C	9
खेबी नगामा के महाबाम भी तिकश्वर	860	59	অথ বসস্তোৎসবঃ	8 <b>४७</b>	20
1.41.11			ष्य देउत कुछार	৪৮৩	১৬
षक महाबाननी निजायः	848	29	অথ শ্ৰীরামনবমী	8 <b>४</b> ७	79
অথ পারণ কাল নির্ণয়ঃ	998	۵	তছ্ত নিভাত্তং	৪৮৬	२१
উন্মালন্যাদি মাহাত্মাং ততা } পুলা বিশেষশ্চ	398	30	তদুত মাহাম্যং তদ্ব নিৰ্মঃ	879 879	<b>9</b>
व्यव वक्षुनी खडर	, 8¢b	39	তমুত বিধিঃ	867	28
44 187 11 Cl 41	1 20 h.	· ny	। वर्ष व (४।४)	UV (	

•	u				
<b>শ্ৰক</b> ৰূণ <b>ং</b>	બૃંદેક   ભા	কো	প্রকরণং	र्का अ	(रक्)
ভত্তকৌশল্যাদ্যর্চ।	8४४	२•	অথ পবিত্রারোপণ বিধিঃ	678	9
ष्यं (नानमत्राष्ट्रन्यः	872	29	তত্ৰ পবিত্ৰাধিবাসনং	659	>
(एटनार्य विधिः	৪৯৽	>8	পৰিত্ৰাপ্ৰং	esb	ъ
व्यथं प्रमनकारताभरगां स्मरः	8%>	৯	भविक विमर्कान विधिः	6:3	ঽ
তত্ৰ দমনকাধিবাস বিধিঃ	৪৯২	C	অথ ভাদ্র ক্তাং	৫১৯	36
ममनकार्शन विधिः	882	১৬	অথ জন্মাফীনীব্ৰতং	ፍተው	₹•
<b>অ</b> থ বৈশাপ ক্ত্যং	८४७	20	লশাফমীত্রত নিত্যস্বং	<b>৫</b> ২১	5
ৰৈশাখ ক্বত্য নিভ্যতা	868	৬	তমু তাকরণে প্রত্যবায়ঃ	<b>৫२</b> ५	50
ভত্ত প্ৰাতঃস্নান নিত্যতা	826	٩	बच्च छमी माराजाः	<b>@</b> 22	ъ
তত্ত স্থানবিধিঃ	882	ঽ৩	ৰশ্বাইমীত্ৰত নিৰ্ণয়ঃ	<b>6</b> 28	56
অধাক্ষতৃতীয়া কুত্যং	839	>•	অথ সপ্তমী বিদ্ধান্ত্যীত্তত	<b>े</b>	
শুক্লাসপ্তমী কৃত্যং	ଌ୷୬	76	<b>नि</b> रष्यः	, ,	
নরসিংহ চন্তর্দেশী	৪৯৬	२७	खवाकिमीभात्रगंकान निर्वशः	<b>(</b> )	5
তমাহাত্মং	823	8	জন্মান্টমী ব্ৰত্বিধিঃ	৫৩১	ל
তছ ত নিৰ্ম:	827	२१	অথ পাশ্ব পরিবর্ত্তনোৎসবঃ	<b>68</b> 2	9
তল্ভ বিধিঃ	828	۵	অথ শ্ৰবণ দাদশীব্ৰতং	<b>685</b>	-8
পৌৰ্ণমাসী কুত্যং	( • •	₹8	व्यथ धारनमञ्ज पूरेकका मणा भरा		8
সমস্ত বৈশাখাশক্তক্ত ভাং	603	9	व्यथं विकृ मृज्यन यानः	688	>8
ठखर्मम विवास समाधिः	.005	50	অথ বামনত্রতবিধিঃ	<b>689</b>	۶.
	0.5		অথাশ্বিন ক্লড্যং	€85	>9
व्यथं शक्षमं विलाशावसः	<b>७</b> ०२ <b>४</b> ०२	3	অথ বিশ্লমোৎসব বিধিঃ	<b>e</b> sb	なって
অথ জৈয়ন্ত কুত্যং তত্ত্ব জলে ভগৰৎ পুঞাবিধিঃ	6.5	৬	गक्रमना विद्यान ने साखि॰	<b>689</b>	•
		ن در	काश (सर्वेद्धार्थ विकास रहतः	•00	5
ভন্মাহাত্মাং	६०२		অংশ কাৰ্তিকৈবত নিত্তা	•99	9 '
अथ निक्किटेलकामभी !	<b>e.</b> ••	30 30	জ্ঞা কার্তিক সাহাজ্য	599	5
অধ নিৰ্জ্জল ত্ৰতবিধিঃ	6.8		তত্ত দীপদান মাহাত্যাং	299	50
অথাৰাঢ় কুতাং	8.6	*	অথ শিধবদীপমাহাত্যাং	600	5
অথ তপ্তমুদ্রাধারণ নিত্যতা	8.6	<b>y</b>	অধাক্ষভালীপ মাহাত্যাং	669	53
ভপ্ত মুদ্রাধারণ মাহাজ্যং	6.0	• •	অথ কার্ত্তিক কভাবিধিঃ	609	6
তপ্তমুদ্রাধারণ বিধিঃ	6.4	2/3	অথ শ্রীবাধাদামোদর প্রকারিখিঃ	৫৬১	P
व्यथ हकामीनाभावास्त्र मखा		•	वर विमामामता छेकः '	662	52
অৰ চকাদি প্ৰতিকৃতি জবাং	6.9	23	व्यय ७० क्रकाकमा क्रुशर	৬৬৬	৩
व्यथ हास्त्रमाना निवस्तावनाकः		34	क्षेत्रवादमानमा क्षेत्र	699	50
চান্তর্মাস্যত্ত নির্ম মাহার	११ ७७७	9	कृष हर्ष्यमंगी कुछाः	699	5
जब बादन कुछार	679	•	वभावना। कुछाः	699	50

প্রকর্ণং	भट । भर	(क्)	প্র করণং	र्के दिशे । क	াংকো
শুক্লা প্রতিপং	๔๎ษๆ	28	अथ जलनःशा निरम	624	5
ভত্ত গোৰ্জনপূজা বিধিঃ	৫৬৮	२8	व्यथं उर्भगामि	ፈ የ	•
তত্র পূজা মন্ত্রঃ	৫৬৮	29	অথ সংক্ষিপ্ত পুরশ্চরণং	629	55
তত্ৰ গোজীড়া	৫৬৯	e	ভত্র প্রকারাস্তরং	900	>>
যম দিতীয়া কুত্যং	690	9	অধ সিদ্ধমন্ত্ৰ কুত্যং	৬০১	>
শুক্লাফমী কুত্যং	<b>6</b> 9•	58	অথাসিদ্ধসাধনোপারাঃ	903	৩
প্রবোধনী কুত্যং	690	36	অথ যন্ত্ৰং	303	>
প্রবোধ কাল নির্ণয়ঃ	<b>69</b> 2	29	मक्षमम विनाम नमाक्षिः	७०२	2
অথ রথযাতা মাচাক্সং	696	6	व्यथाचेम्भ विनामात्रसः	৬৽৩	>
র্থাসুগমন নিত্যতা	696	5	অথ শ্ৰীমূৰ্ত্তি প্ৰাছ্ভাবণং	y = V	e
প্রবোধনী জাগরণ মাহাস্ক্রং	674	۵	ভত্ত মূর্ন্তি পরিমাণং	<b>%•8</b>	<b>3</b> ¢
অথ পারণাদিন ক্ত্যুং	<b>e</b> b•	७	অধারম্ভ কুতাং	৬৽৪	২•
অথ ত্রতেষু দানানি	ap.	20	भगाशीनाः मृखीनाः वित्नवः	৬১৬	Š
অথ ভীশ্বপঞ্চাদি	0 b s	58	व्यथं बीमृर्छाक्राधिकानि मिरः	७२७	9.
অথাধিমাস ক্লত্যং	ars	ં	व्यथ प्रवाराज्यम् अभूषि (जनः	७२४	50
ষে।ড়শ বিলাস সমাপ্তিঃ	८५२	g	অথ শিলাগ্রহণং	<b>3</b> 28	२७
<b>-&gt;</b> ₩�		Ì	অফাদশবিলান নমাপ্তিঃ	৬৩৽	Š
ष्यर मश्रमम विनामात्र इः	०४०	٥			
व्यथ श्रुत्र इत १९	८५७	8	व्यायानिवर्भ विमागात्रसः	७७५	>
প্রশ্চরণ মাহাকাং	GP-8	2	অথ শ্ৰীমূৰ্ত্তি প্ৰতিষ্ঠা	৬৩১	9
্স্থানবিশেষে ফ্লবিশেষঃ	ara	ર	অথ প্রতিষ্ঠাকাল:	७७७	৯
अथ कृर्माठकः	ara	>9	অথ প্ৰতিষ্ঠা স্থানং	৬৩৪	.0
'শথ ভক্ষণ নিয়মঃ	CFD	૭	অথ প্রতিষ্ঠাধিকারী	৬৩৫	8
অথাসন নিয়মঃ	G 6 9 .	39	অথ স্থাপকত্বে বৰ্জনীয়াঃ	৬৩৬	ъ
অথ অপমালা ত্রিতাতাচ	ar9	2.2	মথ প্র তিষ্ঠাবিধ্যভিচ্চস্য প্রতিষ্ঠা- নাচরণে দোষঃ	<b>१७७</b> १	9
अथ मालामान निर्णयः	<b>ሪ</b> ፦	હ	অথ স্থিমূন্তি প্রতিষ্ঠারন্তঃ	৬৩৭	વ
मालानाः मि विदम्या देवनि	कीं उन्म	23	वर्थ मध्यामि निर्माणः	७७१	ንሮ
অথ মালা নিৰ্মাণ বিধি:	a + 9	৩	তত্ত্ৰ বেদ্যাদি নিৰ্মাণং	৬৩৯	
অথ মালা সংস্কার:	ه. و	>	वर्ष कुष्ठ द्वाशनः	৬৪৽	3
অথ মালা সংস্কার: অথ্জপাঞ্ল্যাদি নির্ণয়: অথ জপে গুণাঃ	692	>		৬৪•	33
व्यथ कर्ष छनाः	492	٤>		<b>৬</b> ৪•	२२
मथ कर्प (पाय:		``		৬৪২	39
0.6	425	23		<b>989</b>	
वर्थ वर्शावराः		•			
मथ मश्रविधिः	263		অথ শিশ্পি পরিভোবণং	<b>৬</b> %	<b>:</b> 4
	manufacture and management		1 - 44 (11 ) William	416	

<b>₩</b> ₹763	भ्रष्ठ । अर	; }	প্রকরণং	भृत्व । भर	(क)
প্রকরণং ভাপ স্থানং	৬৪৬	9	তন্মগুপাদি নির্মাণ বিধিঃ	<b>७</b> ७२	۶.
ष्यथ (नर्जाची गनः	৬৪৬	58	ভত্ত মণ্ডল বিধিঃ	৬৮২	<b>b</b> '
অথ নেত্র।ভ্যঞ্জনং	৬৪৭	b	অথ ত্রাহ্মণবরণাদি বিধিঃ	<b>৬</b> ৮৩	5
ज्यथ माञ्चनगाठत्वभगाञ्चना निवास	<b>ণং</b> ৬৪৭	20	অথ বাস্তদেব পূজাদি বিশিঃ	<b>७</b> ७३	>
অব সুপুন মাহাত্ম্য	৬৫০	9	चर्थ ञ्चलनिर्विदः	৬৮৪	৯
অথ শ্রীমর্জ্যপাপনং	<b>৬</b> ৫০	>0	व्यथ रखामार्शन विधिः	<b>১৮৫</b>	৯
অগ্ৰধিবাসমণ্ডপে প্ৰবেশঃ	৬৫১	20	चर खिं दिन नामि	<b>8</b> 70	ኃ৫
অথ শ্রীমৃত্যিধিবাসনং	৬৫৩	20	অ্থাধবাদনবিধিঃ	७५ ७	Œ
অথ শান্তিঘটোদক স্নপনাদি	৬৫৬	36	অথ স্থাপনবিধিঃ	छ म् छ	33
অথ পিণ্ডিকাশোধনং	৬৫৮	<b>ર</b> ર	অথ প্রতিষ্ঠাকনং	७৮৮	20
ष्यथ आगार औगुर्खि विक्रसः	৬৫৯	>	উনবিংশ বিলাস শমাপ্তিঃ	৬৯২	<b>5</b> ©
অথ বড়াদিন্যাসঃ	৬৫৯	>>	বিংশ বিল্যাসার্ড্রঃ	৬৯৩	>
অথ র তুন্যাদ মন্ত্রঃ	৫৬১	১৩	অথ শ্রীভগমানির নির্মাণেং	৬৯৩	8
অথ কামবিশেষেণ দ্রব্য }	৬৬২	১৩	স্থ ভল্নির নির্মাণ মাহালাং	<i>७৯</i> ৩	<b>9</b>
বিশেব ন্যানঃ			य अभागत्र । समा मारा मारा मारा मारा मारा मारा मारा स्थित अर्थान स्थान स्थान	৬৯৬	
অথ তত্ত্ৰ মঞ্জ স্থপনং	৬৬৩	<b>b</b>	অথ ভূমি পরিগ্রহঃ	৬৯৬	> >>
অথ গত্ত লেপনাদি	<i>૭૭૭</i>	28	श्रथ मिक्साधनः	ゆかみ	ઝ
অথেকুাদি বলিদানং	৬৬৩	<b>२</b> °	व्यथ टेमटनाकातगर	めると	2.W
অথ প্রাদান্তঃ শ্রীমূর্তি প্রবেশ		₹8	অথ বাস্তমগুলং	<b>৩৯</b> ৯	2.9
অথ পিণ্ডিকান্যাগাদি অথ শ্ৰীনৃত্তি স্থাপনং	৬৬৪	<b>&gt;</b> 2	অথ বাস্তপূজা	900	9
অথ আয়ুতে স্থাসনং অথ আয়ুতি স্থাপনান্তর কুত্যা	৬৬৪ নি ৬৬৫	<b>ર</b> ર ષ્ઠ	অথ প্রদাদ মূলারম্ভঃ	৭০৬	<b>२</b> >
व्यय ज्ञान शामाज्य भ्रमा व्यथ ज्ञान विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विश्य			ALL OF MARKE OF	9.5	<b>২8</b>
व्यथं महाशृजा	<u> </u>	Ś	অথ পীঠ বন্ধনং	920	8
তত্ত গ্রীভগবৎসা নিধ্য লক্ষণা	•	<u> </u>	The Companies asserted	972	5
অথ শ্রীমৃত্তি স্থিত্তাপাদনং	৬৭১	;		950	58
व्यथं पिनास्तरवादनरः	395	<b>&gt;</b> @		958	২
অথ কৃত্য বিশেষেণ ফল বিশেষ		2:		9>8	२९
ष्यथ ठ छ शीं क र्मा		9		9>8	ર૧
অথাবভত স্নানং	৬৭৩	٠		950	, 3
অথহে ম সমাধানং	৬৭৪		विश्व जून मी विवाहः श्रांष्ठिश वि		>>
অথ যত্রসানাভিষেকঃ	<b>৬</b> 93	5		958	30
ष्यं ध्वारताभगः	৬৭৫		<b>भटिश्वास्त्रिक्</b> कु जार	928	<i>২</i> ৩
<b>অধ</b> চল শীসূত্তি প্ৰতিষ্ঠা	৬৭৮		৬ গ্রন্থ সমাপ্তিঃ	959	
চলমূত্তি প্ৰতিষ্ঠা মাহায়াং	৬৮১			(27	9



### এ প্রিভক্তি, বিবাসঃ।

Marian.

. এ এ কিংকাজয়তি। চৈতন্য দেবং ভগবন্তমাশ্রের জীবৈফ্রানাৎ প্রমুদেই জনা লিখন। আবশ্যকং কর্মা বিচার্য্য সাধুতিঃ সার্দ্ধং সমাজ্ত্য সমন্ত শাল্পছঃ ॥ ১॥ ভত্তেবিলাসাংশিচনুতে প্রবোধানক্ষ্য শিষ্যো ভগবং প্রিয়স্য। গোপাল ভট্টো রঘুনাথ দাসং সন্তোব্য়ন্ কণ সমাতনো চ ॥ ২॥ মধুরানাথ পাদাক্ত প্রেমভক্তি

শ্রীমদনমোহনঃ কুফোজয়তি। ব্রহ্মাদি শক্তিপ্রদমীশ্বরং তং দাতৃং স্বভাক্তিং কুপয়াব-जीर्गः। टेठजनात्मवः भव्नाः श्रभतमा यमा श्रमामार च्यत्मर्थिमिकः। निशास जनवस्ति বিলাসস্য যথামতি। টীকা দিগ্দর্শনী নাম তদেকাংশার্থবোধিনী। সুদৃষ্করে কর্মণি প্রবর্তমানো এন্থকার স্তৎ সংসিদ্ধায়ে প্রথমং পরমগুরুরপং শ্রীমদিউটেদবতং শরণত্বেনাশ্রয়তি চৈত-नाि । टेठ जनाः विकाश खानः जनात्भाषात्मरवा काश्मृकाखः । त्मरवयु मरधारयाख्वानयनद মিতার্থ:। यथा চৈতনাস্য চিত্তন্য দেবোহধিষ্ঠাতা যং খ্রীবাসুদেবন্তং। অথবা চৈতন্যং চেতনা কীবনহেন্ত ন্তিস্য দেবোনাথন্তং প্রাণেশ্বনিত্যর্থঃ। আত্রয়ে শবণংযামি। কিমর্থং প্রামতাং বৈক্ষবানাং আরুশ্যকং অবশ্য ক্তাং বৎকর্ম তৎ সাধুভিঃ সদাচারপরৈইব্ফবৈরের সমং বিচার্য্য লিখন্ লিখিতুং হেতৌশত্ভ তচ্চ কিমর্থং তেবামের প্রক্ষমুদে পরমহর্ষার। ননু তব নীচন্য কথমেতৎসিদ্ধান্ত ভত্তাহ ভগবন্ত মিতি সবৈশ্বৰ্যাযুক্তং কাৰুণ্যাদাবিল ভক্ষনীয় গুণৰন্তং বা জীক্ষমিতি বা কৃষ্ণস্ত,ভগবান সম্মিতি জীভাগবডোঁকে:। এবং পক্ষত্রে ক্রমেণ সম্মানীয়ং। जाम्भना महाश्राखाताखातान न किमशामाधामिष्ठि **जातः । किशः उक्टरे**काव जनिरशाकरनन वा তশ্বংল্যোন বা ২হমত্র প্রবৃত্তোংশ্মি নত স্বাতস্ত্রাদিনেতি নিজে। ভারতাদি পরিহারঃ। স্বমতেচ শ্রীটৈতন্যদেবেতি প্রসিদ্ধ সংজ্ঞাং ভগবস্তং মহাপ্রভুং। তৎকারুণামহিমা তদাঞ্জিলস্য মম ন কিমপি দুষ্করং দর্বামের সৃধসঃধ্যমিতার্থ:। ননু তৎ দর্বাং শ্রুতি পুরাণাগমাদিবু দর্বত বর্তত্থব কিং ওলিখনেন তত্রাহ। সমস্তেতাঃ শান্তেতাঃ সমাক্ আহ্তা আনীয়। তव , তব স্থানে श्विमश्येव यथारयात्राः नक्ष्मया छछ । भगकाल्यकवीहरो निविधा-विनामाम् भ्रतमदेव खब ब्लान् उमान् विनुष्ठ नमाक्ति । खिक विनामानाः **एत्ररमनागा अञ्चर्गा जिल्लास्मिकि मश्कातार कात्रन रमक मुक्तिकेर। जगवर श्रित्ररमा**कि वस् বীহিণা তৎপুরুষেণ বা সমাদেন ওস্য মাহাত্ম্যজাতং প্রতিপাদিতং। এবং ডচ্ছিব্যস্য জীগো-भाग उग्रेगानि डोम्छ्यू राष्ट्रवारा क्षित्रयुगार्थ मार्गा नाम गोएकात्रयुनाख्याकतः भन्नम काशव्यः अभव्याक्षिक क्यांनीम् निक्रमार्कतः मंद्रश्वावतिक मिठार्वः।। २ ॥ अभव्यामार्थमः

. বিলাসতঃ। জাতৎ ভক্তিবিলাসাথ্যৎ তত্তকাঃ শীলয়ন্তিমং।। ৩।। জীয়াসুরা-ভ্যন্তিকভক্তিনিষ্ঠাঃ শ্রীবৈধ্যবা মাধুর মগুলেখ্ত্র। কাশীখ্রঃ কৃষ্ণবনে চকাস্থ শ্রীকৃষ্ণদাসশ্চ সলোকনাথঃ।। ৪।।

#### তত্র লেখ্য প্রতিজ্ঞা।

আদৌ সকারণৎ লেখ্যং প্রীগুর্মাশ্রমণং ততঃ । গুরুঃ শিষ্যঃ পরীক্ষাদির্ভ্যবান্ মনবোৎস্যাচ । মন্ত্রাধিকারী সিদ্ধ্যাদি শোধনৎ মন্ত্রসংক্ষিয়া ।। ৫।৷ দীক্ষানিত্যৎ ব্রাহ্ম্য কালে শুভোত্থানৎ পবিত্রতা ।। ৬।৷ প্রাতঃমৃত্যাদি কৃষ্ণস্য বাদ্যাদ্যৈ সঙ্গ প্রবোধনৎ ৷ নিম্নাল্যোন্তারণাদ্যাদৌ মঙ্গলারাত্রিকং ততঃ ।। ৭।৷ মৈত্র্যাদি কৃত্যং

শীর্ষণা ভগবতঃ পাদাজে বিষয়ে যা শ্রীগোপাল ভট্টা প্রেমভক্তি স্তান্য বিলাসতঃ উল্লাসাং। যদা মধুরায়াং যো নাথস্তান্য প্রভোঃ শ্রীর্ফন্য পাদাজম্মোর্ভক্তিবিলানঃ ভক্তিক্ষেত্র সাং তক্ষাজ্ঞাতং ইদং গ্রন্থা ভক্তিবিলানেত্যাখ্যায়াং কারণান্তরং জ্ঞেয়ং। ইমং গ্রন্থং তদ্যক্তাঃ শ্রীমধুরানাথপাদাজে ভ্রমরাঃ শীল্মস্ত অভ্যান্তি,তার্থঃ। শোভয় ন্তি,তিপাঠে দোষাপাকরণেন নিরন্তর শ্রবণ কীর্ত্তন প্রচারণাদিনা বা হলকুর্বন্তি,তি বিনয়বিশেষঃ॥ ৩॥ শোভাপাদন-প্রাস্থা গ্রন্থা শ্রীমধুরানাথ চরণারবিশ্বভক্তিরিসিকানাং শ্রীমথুরায়াং দুখ নিবাসেন স্বত্তব সম্পদ্যতে ইত্যাদ্যভিপ্রায়োণাত্তে জীয়াসুরিতি। শ্রীভগবদ্ধক্তি প্রবর্তনাদি লক্ষণ নিজোৎকর্মা বিদ্ধৃক্তি,তার্থঃ। মথুরামগুলে শ্রীমথুরানগরমধ্যে প্রায়স্ত্রৈব তেষামবন্থিতেঃ। রুফ্বনং বৃন্ধাবনং তাপনীয়শ্রুত্রজানুসায়াৎ তন্মিন জীড়তু শ্রবণ কীন্ত নাদি ভক্ত্যা দুখং নিবসত্বিত্যর্থঃ। লোক নাথেন সহবন্ত ত ইতি তথা সঃ। ইত্যন্যোন্যং তয়োঃ প্রীতি বিশেষঃ সূচিতঃ। এবঞ্চ যদৈবাং তত্র ত্র নিবাস স্থদানীময়ং গ্রন্থোজাত ইত্যপি সূচিতং॥৪॥

### লিপন্নিতি যলিখিতং তল্লেখ্যমেব প্রতিকানীতে

আদাবিত্যাদি ত্রয়োবিংশতিভিঃ। কারণ সহিতং প্রীপ্তরোরাশ্রয়ণং উপসন্তিরাদে লেখাং। লেখামিত্যসা লিঞ্চবচনবাত্যয়েন যথাযথং সর্বতাযয়ঃ। তত ত্তদনন্তরং গুরুঃ কীদৃশ ইতি তস্য লক্ষণং লেখামিত্যর্থঃ। অস্য ভগবতো মনবো মন্ত্রাশ্র ত্র্যাহাত্মাদিকঞ্চ লেখা মিতার্থঃ॥ ৫॥ দীকা তদ্বিলিখ্য ইত্যর্থঃ। এবমগ্রেপি সর্বত্র মূলগ্রন্থানুসারেণ যথাযথমূহং। নিত্য মিতাসা শরণাগতি রিতাস্তমনুবৃত্তিঃ। শরণাগতেরপি নিতারুত্যেম্বর্ভাবেন ভদবধি নিত্য ক্রত্যানামেব লিখনাং। অতএব তদনন্তরং নিত্য ক্রত্যাবাছেদার্থং পক্ষেম্বিতি লেখাং। ত্রাক্ষ কালে ত্রাক্ষ মুহূর্ত্তে শুভং শুভকর্মার্থং ক্রফ ক্ষেত্রতি কীর্ত্তনাদিনা মঙ্গলাবহং বা যদুপানং শ্যাত্যাগ তথা। পবিত্রতা পাণিপাদপ্রক্ষালনদন্তধাবনাচমনাদিনা শুচিত্রং। এতদাদি সর্বব্র যদ্যপাথ্যে স্বত্যব তত্তং প্রকরণতোবক্তবাং ভাবি তথাপি সুখবোধার্থমধুনাত্র ক্রিঞ্চিদভিবাজ্যতে॥ ৬॥ প্রতিরিতি নিত্য মিতিবং মধ্যাহ্ন ক্রত্যং যাবদনুবর্ত্তকেওব। এবং মধ্যাহ্লাদিকং চোহাং। স্মৃতিং স্মরণং। আদি শব্দেন প্রাতঃকীর্ত্তন প্রণমন বিজ্ঞাপনাদি। প্রবেধনং বাইদ্যঃ। আদি শব্দাং স্তিতি পাঠাদিভিঃ। নির্মাদ্যোগ্তারণং আদিশব্দেন প্রীমুথপ্রক্ষালন দন্তকান্তা-পর্ণাদি। আলাবিতি প্রথমং নির্মাল্যোপ্তারণস্যাবশ্যকত্বাং॥ ৭॥ নিজ দন্তধাবনং যদ্যপুপোনানম্বর্ত্তকের ক্রতামিতি পবিত্রতান্তঃ পর্বাং প্রবিত্তমের তথাপি শৌচাদি বিধি প্রসঙ্গতোংত ভদিধি

শৌচাচননং দশুস্থাবনং। স্নংভাদ্ভিকসন্ধ্যাদি দেবসন্ধাদি সংক্রিরা। ৮ ।।
তুলস্যাদ্যাহ্যভিগেইস্নানমুফোদকাদিকং। বন্ধং পীঠং চোদ্ধ পুভুং প্রীগোপী
চন্দনাদিকং ।। ১ ।৷ চক্রাদিমুদ্রা মালাচ গৃহসন্ধ্যান্তনং গুরোঃ। মাহাম্ব্যাশার্থা কৃষ্ণস্য লারবেশ্যান্তরান্তনং ।। ১০ ।৷ পূজার্থাসনমর্ব্যাদিস্থাপনং বিঘুবারণং।
প্রীন্তর্কাদিনভিভূত শুদ্ধিং প্রাণ বিশোধনং ।। ১১ ৷৷ ন্যাসামুদ্রাপঞ্চকঞ্চ কৃষ্ণ ধ্যানান্তরার্জনে। পূজাপদানি প্রীমূর্ভি শালগ্রাম শিলা তথা ।। ১২ ৷৷ দারকোত্তব চক্রাণি শুদ্ধাং পীঠ পূজনং। আবাহনাদি তন্মুদ্রা আসনাদি সমর্পণং ।। ১৩ ৷৷ স্থানং শন্থ ঘণ্টাদি বাদ্যং নামসহসূকং । পুরাণ পাঠোবসন মুপ্রাতং বিভূবণা ১৪ ৷৷ গন্ধং প্রীত্রলসীকান্ঠ চন্দনং কুসুমানিচ । পত্রাণি ভলসী চাক্ষোপাঙ্গাব্রণ পূজনং ৷৷ ১৫ ৷৷ গুপোদীপশ্চ নৈবেদ্যং পানং হোমো বলিক্রিয়া। অবগশ্বেষাদ্যাস্যবাসো দিব্যান্ধাদিকং পুনং ৷৷ ১৬ ৷৷ রাজ্বোপচারা গীতাদি মহানীরাক্রি

মাত্র লিখনং। তান্ত্রিকী সন্ধ্যাতদুপান্তিঃ। আদি শব্দেন জলে ভগবৎ পূজা। দেবসন্মনঃ ভগব-দাল যাসা সংক্রি। সংমাজ্জ নাদিনা স্বস্তিকনির্মাণ ধ্রুপতাকাদ্যারোপণেন চ। আদি শব্দাৎ পীঠপাত্র বস্ত্রাদি সংস্কারঃ।। ৮।। তুলস্যাঃ আদি শব্দাৎ পুস্পাদীনাঞ্চাহরণং। গেছে নিজগেছে মানং তদিধিঃ ওচ্চ বহিস্তীর্থাভাবেন কিয়া জ্রীভগবদালযসংস্কারাদ্যনন্তরমেব পূজার্থং পুনঃ মানাপেকয়া ভেয়ং। ততৈবোঞোদকামলকাদি স্নান ব্যবস্থা চ। বস্ত্রং স্নানানন্তরং নিজপরি-ধেয়ং পীঠং আচমনাদ্যর্থং নিজাসনং॥ ৯॥ গুরোরর্চনং মাহাত্মঞ্চ। অথেতি গুরুপূজানন্তর মেব ভগৰৎ পূজায়া বিধেয়ত্বাৎ। দ্বারং বেশ্যান্তরঞ্চ গৃহমধ্যং তয়োরচ্চনং॥১০॥ পূজার্থেতি পূর্ব্ব লিখিতাৎ নিজ পীঠান্ডেদার্থং। অঘ্যপাত্রাদীনাং স্থাপনমিতি তত্তদুব্যাণাং তত্তৎপাত্রেচ তত্তৎ পাত্রাণাঞ্চ তত্তৎ স্থানেষু ধারণং তথা মঙ্গলঘটস্থাপনঞ্চেতার্থঃ। প্রাণবিশোধনং প্রাণা-য়াম ইতার্থঃ॥ ১১॥ । ন্যাসাঃ মাত্কাদীনা ম্য্যাদ্যন্তানাং। মুদ্রাপঞ্কং বেণু বনমালাদি মুদ্রাঃ পঞ্চ। ক্লফ্ষ্য ধ্যানং অথ প্রকট সৌরভেত্যাদ্যক্তং। অন্তর্জনঞ্চ ধ্যানানন্তর মন্তর্যাগঃ। পূজায়াঃ পদানিস্থানানি শ্রীশালীগ্রাম শিলাদীনি সূর্য্যাম্যাদীনি চ। শ্রীমূর্ত্তয়ঃ শ্রীভগবৎ প্রতিকৃত্যঃ শ্রীশাল গ্রাম শিলাশ্চ তত্তলকণাদি॥ ১২।। শুদ্ধয়ঃ কালনাদিনা এমূর্ত্ত্যাদীনাং। আবাহনং আদি শব্দাৎ সংস্থাপন সলিধাপনাদি সপ্তকং। তন্মুদ্রাঃ আবাহনাদি মুদ্রাঃ। আসনস্য আদি শব্দাৎ স্বাগতানন্তরং অহাপাদ্যাচমনীয় মধুপকপুনরাচমনীয়ানাঞ্ সমর্গং॥ ১৩॥ স্নপনে ২ভাঙ্গ দ্রব্য পঞ্চাম্ভোদ্ত নাদীনি ন প্থক্লিথিতানি তেঘাং স্পনাঙ্গতাং এবমন্যদপূহাং। ভগবতঃ স্নানে শম্বস্লপনস্য ঘণ্টাবাদ্যস্য চ কল বিশেষোক্তেঃ শম্বঘণ্টয়োমাহান্স্যং আদিশব্দান্ততৈব শর্খীদি বাদ্য স্যাচ মাহ।ক্সাং লেখ্য মিত্যর্থঃ। বসনাদিকং স্নপনানন্তরং ভগবতে২পণং॥ ১৪॥ গক্ষান্তর্গাপি এতুলসীকাষ্ঠ চনদন্য্য পৃথক্ লেখোমাহাত্মা বিশেষতঃ এবমন্যদপূছেং। পতাণি বিজ্বাদীনাং। অঞ্চানাং মন্ত্রবর্ণাদীনাং উপাঞ্চানাঞ্চ বেণ্বাদীনাং। আবরণানাঞ্চ গোপ-কুমারাদীনাং পূজা॥ ১৫॥ বলিক্রিয়া বিশ্বক্পেনাদিভ্যোভগবদ্চ্ছিক্টাংশ প্রদানং। অবগওূ বং গওুবার্থ জলং। আদি শব্দেন দন্তশোধন পুনর।চমন এমুখ্যাজ্জনাদি। আস্যবাসং লবক তাষূলাদি মুথ বাসঃ।। ১৬॥ রাজোপচারাঃ ছ্ত্রচামরাদয়ঃ। গীতং আদি শব্দাৎ বাদ্যং ন্তাঞ।

জনং তথা।। ১৭।। শপ্তাদিবাদনং সায়ুশস্থনীরাজনং স্তৃতিঃ। নতিঃ প্রদৃদ্ধিনা ক্যাদ্যপর্ণং জপ্যাচনে। আগঃ ক্ষমাপনং নানাগাংসি নির্মালাঃ ধারনং ।। ১৮।। শস্থায়ু তীর্থাৎ জল্মী পূজা তয় তিকাদিচ। ধাত্রী সান নিষেধ্যা কালোবৃত্তে রুপাচ্জনিং।। ১৯।। মধ্যাত্রে বৈশ্বদেবাদি আদং চানপ্যমৃত্যুতে। বিনার্চামশনে দোষা স্তথানপিতি ভোজনে। নৈবেদ্য ভক্ষনং সন্তঃ সংসঙ্গোহসদস্পতিঃ। অসদ্যতিবৈশ্ববাপহাস নিন্দাদি দুক্ষলং।। ২০।। সতাং ভক্তিবিশ্বুশাস্ত্রং প্রামন্ত্রাগ্রতং তথা। লীলা কথাচ ভগবদ্ধর্মাঃ সায়ং নিজ্ঞান্তিয়াঃ। কর্মপাত পরীহার স্ত্রিকালার্চা বিশেষতঃ। নক্তৎ কৃত্যান্যথো পূজা ফল সিদ্ধ্যাদি দর্শনং।। ২১ ।। বিশ্বপ্রদানং বিবিধাপচারা ন্যুনপূরনং। শয়নং মহিনার্চায়াঃ শ্রীমন্ত্র্যান্ত্রা নামাপরাধা ভক্তিশ্ব প্রমাথাশ্রেয়নাদ্যঃ। পক্ষেষ্কাদশী সাস্থা শ্রীদাদশ্যইকং

শস্থাদীনাং বাদনং পূর্বং সানসম্বন্ধি অধুনাচ মহানীরাজন বিষয়ক মিতিভেদঃ॥ ১৭॥ জল্লযুক্ত শস্থেন নীরাজনং। জপঃ যাচনঞ্চ প্রার্থনা। আগসামপরাধানাং ক্ষমাপণং। নানা বিধান্যাগাংসি। নিশ্মাল্যস্য শ্রীভগবৎ পাদাক্ষোত্তীর্ণস্য তুলস্যাদেনিজ মন্তকে ধারণং ॥১৮॥ শঙ্গামু শ্রীভগ-বন্নীরাজিত শশ্বজলং। তীর্থং শ্রীচরণোদকং। তুলসীবনে ভগবতস্তলস্যাশ্চ পূজনং। তস্যা-স্তুলস্যামৃত্তিকা কাষ্ঠাদি। ধাত্রী আমলকী তন্মাহাত্ম্য মিত্যর্থই ।। ১৯॥ টবশ্বদেবাদিকং আদ্বিগু বৈষ্ট্ৰেয়থাকাৰ্য্যং তদ্বিদি বিভাগঃ বৈষ্ণ্য ক্লভ্যানামেৰ লিখনাৎ। অচ্যতে শ্ৰীভগৰতি অনুপ্যং অপণাযোগ্যং। অর্চাং ভগ্রৎ পূজাং বিনা ভোজনে দোষাঃ। তথেতি ভগরতানপিতিসা দ্রবাস্য ভোজনেচ দোষাঃ। সন্তঃ শ্রীভগবন্দক্তাঃ অসন্ধি রসঙ্গতিঃ অসৎ সঙ্গ পরিত্যাগ ইত্যর্থঃ। অসতাং গভিনিষ্ঠা। বৈষ্ণবানামুপহাদাদিনা যদুষ্টং ফলং ভবতি তৎ। যদ্যপ্যদদাতান্তর্গতমেব তৎ স্যাৎ তথাপি বিশেষতে বিষয়ক পরাধ লক্ষণ প্রমাসাধুত্ব পরিহারাথ হৈ পৃথক্ লি-ভক্তिः অভিমননস্ততাদিনা সম্মাননং। লীলা কথেতি ভগবলীলাকথায়া। প্রবণ কীর্ন্তনাদি। তৎত্যাগে দোষশ্চ। নিজ্ঞক্রিয়াঃ ম্বন্ধ্যোপাস্ত্যাদিকর্মাণি। বৈষ্ণবানাং কর্মা পাত্রদ্য পরিহারঃ তদ্দোষ নিরাকরণ সিদ্ধান্ত ইত্যর্থঃ। বিশেষত ব্রিকালার্চনং কালত্রয়পূজা বিধিবিশেষ ইত্যর্থঃ। নক্তং ক্লত্যানি গীতবাদ্যাদিপূর্ব্বকং শ্রীভগবচ্ছয়নোপঢ়ার কম্পনা-मीनि। शृक्षा कलना निक्षिः येथा मः शृर्वा मा। ७९ अकोत रेडार्थः। आपि मास्त अमकुमा পূজা ফল প্রাপ্তাপায়ঃ। দর্শনং পূজায়াঃ এীমূত্তে ব্রাহ্বলোকনং॥ ২১॥ বিফার্বং কপিলাদি দীনং। তদ্ধাদিনা নিভাপূজাসিজেনিভাপূজার্থ দ্রব্য দানাভিপ্রায়তো বা নিভাক্তামধ্যে লিখিতং। ন্ত্রপুরণং অলকোপিচার স্থাধানং। শ্রনং নিজ শ্রনবিধিঃ। অর্চায়াঃ শ্রীভগবৎ প্রাপরমদোষাবহা। নামদেবয়া নামাপরাধক্ষশেচতাপি সূচয়তি। ভক্তি: এভগবদ্ধকে দৌলভাদি মাছান্থং লকণঞ্জেভাগ প্রেমা প্রেমসম্পত্তি লক্ষণ মিতার্থ আত্রয়ণং শরণাগতি স্তদ্য কাদাচিৎকত্বেপি নিত্যক্তগ্ৰহেল্থো নিত্যং শ্ৰীভগবৎ স্থানাশ্ৰয়ণাদি লক্ষণত্যা নিত্যমানু-কুল্যস্য সঙ্কপাদিলকণতয়াচ নিত্যক্তগান্তরেব পর্য্যবসানাৎ। আদি শক্ষেন উচ্চাব্রচ সদা-চারাঃ। এবং লেখ্য নিত্যক্ত্যানি ক্রমেণ প্রতিজ্ঞায় পক্ষক্ত্য মাসক্ত্রাদীনি লেখ্যানি প্রতি

गर्थ। কৃত্যানি মার্গশীর্ষাধি মাসেষু দ্বাদশন্তপি। পুরশ্চরণ কৃত্যানি মন্ত্র সিদ্ধার লক্ষণং। মূর্ত্যাবিভাবেনং মূর্ত্তিপ্রতিষ্ঠা কৃষ্ণমন্দিরং। জীর্ণাদ্ধৃতিঃ প্রীতুলসা বিবাহোহনন্য কর্ম চা। ২২ ।।

তত্র প্রীপ্তরপদন্তিকারণ । কৃপয় | কৃষ্ণদেবদ্য তত্ত্তজ্ঞনদঙ্গতঃ । ভত্তেমাহাআমাকর্ণ তামিচ্ছন্ দলারু ওভাতে ।। তারানুভ্যতে নিত্যং দুঃখাশ্রেণী
পরতা । দুঃদহা শ্রান্তে শাস্ত্রাভিতীর্যেদপীতা দুর্ধীঃ ।। ২৪ ।। তথাচোক্তনেকাদশক্ষ্যে ভগবত। প্রীদত্তেন । লক্ষ্য দুদুর্লভমিদং বহুগছবাতে মানুষ্যমর্থ দ্
মনিত্য মপাহ পারঃ । তুর্ণ যতেত ন পতেদুন্দ্ত্র যাবরিঃশ্রেয়দায় বিষয়ঃ খল্
নিরভঃ স্যাহ ।। ২৫ ।৷ স্বয়ং প্রভিগবতাত । নৃদেহনাদ্যং সুলভং সুদুর্লভং পুরং

জানীতে পক্ষেদিত্যাদিনা। অসানি দশুমাদি দিনতায় নিয়মাঃ জাগরণং ছালশ্যপেক্ষণালীনিচ্ টেড সহিত্যমকাদশীব্রতং। তাওঁ আহাজ্যং তাওঁ ছুত দিননির্থাদিচেত্যেই। এবমন্দপ্যভাং। মাজ্যাতি লিক্ষবচন্দ্রত্যেক্ষেন সর্বাত্র যথাব্যং যোজ্যং। সিদ্ধান্ত পুরশ্চরণাদিনা সিদ্ধান্ত্রিয়েত্যেই। মাজিয়ালাং জ্রীতাবং প্রতিমানামাবিত্যিনং শিশ্পাদিলারা নিস্পাদনমিত্যর্থই। কথঞ্চিত্য ভিন্ন জ্রীমূত্তেই পুনং সংক্ষারই প্রতিষ্ঠাবিধ্যন্তর্গ তএবেতি পুথক্ নোলিখিতই এবং প্রাকারাদি নির্ধি বৃক্ষরোপণাদিকমপি মন্দিরানুদ্দিকত্য়া পূথক্ নোলিখিতই। জীর্ণানাং প্রামাদাদীনাং উল্ভিক্জারই। জনন্যানাং একান্তিনাং ক্ষত্যং॥ ২২॥

অধুনা, প্রতিজ্ঞাতং তত্তদের বিস্তার্য্য লিখতি তত্তেত্যাদিনা যাবং সমাপ্তি। তত্ত তেযু শ্ৰিণ্ডৰূপদক্তেঃ প্ৰপদ্যেত উপাশীত সংশ্ৰয়ীতেত্যাদিনাইত্ৰে শ্ৰেখ্যায়াঃ কারণমিদং লিখ্যত ইতি শেষঃ। . এবমগ্রেপি স্বাক্ত। তদেব লিখতি ক্লপয়েত্যাদিনা পুরুষোবেদেত্যন্তেন। ক্লফ-দেবশ্য ক্লপয়া বস্তুশ্য ভক্তজনৈঃ সঙ্গস্তস্মাৎ। মাহান্স্যং মোকাদপ্যাধিক্যাদি। তাং ভক্তিং সন্তং লেখ্যলক্ষণৈ রুদ্ধনং গুরুষাশ্রয়েৎ॥ ২০॥ ননু বিষয় সুধাসক্তানাং তাদৃশভানং দুর্ঘটনেবেতি কুড়ে ভাক্তীছাইস্ত ,সতাং দুংখনা ারতরণেছ্য়াপি ভক্তিং বাঞ্ন্ সন্মুক্তমপে-ক্ষেত্তবেত্যাশয়েন লিখতি অত্তেতি। দুঃখস্য শ্রেণী পরম্পরা শাস্ত্রাম্ভ্রত ইতি বেদ বাক্যে বিস্থাসাৎ সাপি প্রত্যেতবৈষ্ঠ নত্তবিশ্বনীয়েত্যর্থঃ। অতস্তাং দুঃথ শ্রেণীমপি তরীতুমি-চ্ছেৎ। মা ভাদুশমাহাল্যাং ভক্তিমিচ্ছব্বিতাহো বত শোচাতেত্যপিশকার্থঃ। সুধীশ্চেৎ অন্যথা বিচারাভাবেন পশুবন্নিবৃদ্ধিরেবৈত্যর্থঃ। যদা মিথ্যাদুঃখাবলীসহনেন ব্যাধাদিবৎ কুধীরে-স্বলিথিতমেতদেব মহাপুরাণোক্তপদালয়েন প্রমাণয়তি তথাচোক্তমিতি। যে শ্ৰীভাগৰতাদীনাং শ্লোকাৰ্যাবিদিতা হিতে। সুদুগম স্তথাপ্যৰ্থস্তেষু কশ্চিদিশিষ্যতে। তথাহি মৃত্যোরনুপশ্চাৎ যাবলপতেৎ তাবদেব নিংশ্রেয়সায় ভূর্ণং যতেত। यंद्वी অনু নিরন্তরং মৃত্যবোমর-ণানি যস্য। যদা মৃত্যুহেতবো রোগোদয়ো মৃত্যুবইব বিবিধবভ্লমহাদুঃখানি বা যিমিন্তং। বিষয়স্ত সর্বতঃ শ্বাদিযোনিশ্বপি স্যাদেব ॥২৫॥ - স্বয়মিতি নিজেউদৈবত এক্সফাভিপ্রায়েণ। যদ্বা ক্ষস্ত ভগবান্ স্বয়মিত্যভিপ্রায়েণ। চকারাদুক্তমিতি পূর্ব্বগতপদেনাম্বরঃ এবমগ্রেপি বোদ্ধবাং। ন্দেহংপ্লবংনাবং প্রাপ্যেতাধ্যাহারঃ। আদীং সর্বাফলীনাং মূলং। এতদুপার্জ্জিতকর্মতিঃ শব্দ

## শীশীব্রিভজি বিলাস: 1

Ø

সুকংশং গুরুকর্ণারং। ময়ানুক্লেন নভস্বতেরিতং পুনান্ভবারিং ন তরেৎয় আত্মহা।। ২৬ ।।

ভাগ শ্রীগুরুপন ন্তিঃ। তত্ত্বৈর শ্রীপ্রবৃদ্ধ যোগেশ্বরোক্তো। তথ্যাদানুদ্ধং প্রপদ্যেত জিল্লানুং শ্রেয় উত্তমং। শাবদ পরে চ নিফাতং ক্রন্পুগশমাশ্রমং।। ২৭।। স্বয়ৎ শ্রীভগবদুক্তো। নদভিজ্ঞৎ ক্রন্ধ শান্ত মুপাসীত মদাত্মকং।। ২৮।। ক্রনদাপিকায়ায়। বিপ্রম প্রধৃন্ত কামশ্রভৃতি রিপুঘটং নিমালাক্ষণ গরিষ্ঠাৎ ভিত্তিং ক্ষাথিপুপক্ষেক্ষ্মগলর জাে রাগিণা মুম্বহত্তৎ। বেভারং বেদশাস্ত্রাগম বিমল পথাৎ স্মতং সংস্কৃত্য দান্তৎ বিদ্যাৎ মঃ সংবিবিৎসুং প্রবণতনুমনা দােশকং সংশ্রেষ্ঠে।। শ্রুভাবিপা। তরিল্লানার্থাৎ সদাক্রমবাভিগচ্ছেৎ সমিৎপাণিঃ শ্রোত্রিয়ৎ ক্রন্দ্রিইং। আচার্যবান পুরুষোবেদ।। ২১।।

আথ গুরুপসত্তি নিত্তে। জীতাগবতে দশম ক্ষুফো শ্রুতিস্তে । বিজিত্ত্ধীক বায়ু ভিরদান্ত্রণৎ যু ইছ যুত্তি যুদ্ধতিলোলমুপর্গিদঃ। বাসন্শতাহিত :

ফলাবাপ্তে:। সুদুর্ল তং উদামকোটিভির্গি প্রাপ্ত মুশক্রং। তথাপি সুলতং যদ্ভরা লক্ষাং। সুকংপং পটুতরং। ওরে নংশ্রিভগাত্রএব কর্ণধারো নেতা যদ্য তং। ময়া শ্রভমাত্রেরান্কুলেন মাক্রতেন প্রেরিতং। বহা অত্রাগি ক্ষেত্রভাধাশির্যং বজ্ঞ্গি নির্মির্যণ ওদুন্তে সভাবভদ্রের শতাপাভাই তভ্রুরার্যর ন্দেইনিদং গুরু কর্ণধারং ক্ষা কর্ণধারনীর্মান্থ্রবদাশ্রনাত্রের গুরুরা সংক্রাভিমুগং প্রবর্ত্তা তথানুকুলবাত প্রেরিতবং শ্রিমাত্রের ময়াহিতিং নং ক্রার্থং ক্ষান্তরে ব্যাভিমুগং প্রক্রিত তথানুকুলবাত প্রেরিতবং শ্রিমাত্রের ময়াহিতিং নং ক্রার্থং ক্ষান্তরে ব্যাভিমুগং প্রাম্বিতিং নং ক্রার্থণ

এবং কারণ মুলিখ্য কার্যাং নিখতি তন্তাদিতাদিনা। শাদে ব্রহ্মণি বেদাখ্যে ন্যায়তে।
নিকাতং তন্ত্রতং । অন্যথা সংশয় নিরাসক্রাঘোগ্যদাং। পরেচ ব্রহ্মণি অপরোফান্তবে
নিকাতং । অন্যথা বোধ সঞ্চারায়োগাং। পরব্রহ্মনিফাতবিলক্ষণং উপশ্যাশ্রয়ং প্রনশান্ত
মিতি। যদা পরে ব্রহ্মণি শ্রিক্রেলে শ্যো মোকস্বদুপরি বর্ত্তইত্যুপশম্মোততিযোগস্তদাশ্রয়ং
দদা শ্রেণকীর্ত্রনাদিপরং শ্রীবৈক্ষবর্মিতার্যাঃ। অন্যং স্মানং॥ ২৭ ॥ মাং অভিতো ভক্ত
বাংসল্যাদিমাহান্যানুভবপুর্বকং জানাতীতি তথা তং। অত্রব ময়ি আল্লাভিত্তং যস্য তং
বক্তরীহৌকঃ । অস্য পদ্যম্য পূর্বার্দ্ধং যমানভীক্ষ্ণং সেবেত নিয়মান্ মংপরঃ ক্তিদিত্যত্রানুপযুক্তর্ম্বলিখিতং । এবমন্ত্রাগ্যতে ক্রেয়ং॥২৮॥ নির্দ্ধান্ত্রং ব্যাধিরহিতং বেদশাস্ত্রাগমানাং যে বিমলাঃ পন্তানঃ মার্গান্ত্রোং বেন্তারং। দংসু সতাং মতং সন্মতং । বিদ্যাং
সংসার দুঃখ তরণাদ্যুপারং মন্তং। প্রবণ নুমা বিনীতা দেশিকৈকপরা বাতন্ম্মনন্স ব্যা তথাতূতঃ
সন্। দেশিকং গুরুং। এবং প্রবণতনুমনস্ক্রাদি ক্রত্যক্ত সমিৎপাণিত্বাদি চ গুরুপ্সক্রোদ্য

বিজিতেন্দ্রিপ্রাটেণরপি অদমিতমনোহশ্বং যে নিয়ন্তং প্রয়তন্তে শুরোশ্রণমনাশ্রিত্য তে উপায়েষু থিদান্তে ক্লিশান্তীত্যুপায়থিদঃ দশুঃ বহুবাসনাকুলাঃ ইহ নংসারসমূদ্রে দন্তি তিঠন্তি প্রদঃ পুন দুঃধনেব প্রাপুর্বতীতার্গঃ। হে অজ ভগবন্ অধীক্ত কর্ণবারা নাবিকা বণিজো যথা সমবহার গুরোশ্রেণং বণিজইবাজ সন্তঃ কৃতকর্ণধারা জলগে। । ৩০।। আনতোচ। নৈমা তকেন মতিরপনেয়া প্রোক্তান্যেনিব সূজানায় প্রেষ্ঠা।। ৩১।। \*

অথ বিশেষতঃ প্রীপ্তরোর্লক্ষণানি । সন্ত মুক্তাবল্যাং ত্রদাতানুয়ঃ শুদ্ধঃ স্নোচিতাচারতৎপরঃ। আশ্রমী ক্রোধ রহিতো বেদবিৎ সর্বশান্তবিৎ। শ্রদাবাননসূখু শ্চ প্রিরবাক্ প্রিয়দর্শনঃ। শুটিঃ সুবেশস্কুণঃ সর্বক্তৃতহিতে রতঃ। ধীমাননুদ্ধতমতিঃ পূর্ণোহহন্তা বিমর্শকঃ। সঞ্চণোহর্চাসু কৃতধীঃ কৃতক্তঃ শিষ্যবৎসলঃ।। ৩২ ।।
নিগ্রহানুগ্রহেশক্তোহোমমন্তপরারণঃ। উহাপোছপ্রকারকঃ শুদ্ধাত্মা হ কৃপালয়ঃ।
ইত্যাদি লক্ষণৈযুঁ ক্রো গুকুঃস্যাক্ষারিমামুধিঃ।। ৩৩ ।। অগন্ত্য সংহিতায়া চ ।
দেবতোপাসকঃ শান্তো বিষয়েযুপি নিঃস্পৃহঃ। অধ্যাত্মবিদ্ধুন্ধাদী বেদশাস্ত্রাপ্র কোন্বিদঃ। উদ্ধর্ত হিব সংহরু ব সমর্থোবান্ধাত্মি। তত্তুতো হক্ত মন্ত্রাণাং মন্মন্ত্র। রহস্যবিহ । পুরশ্চরণকৃদ্ধোমমন্ত্র সিদ্ধঃ প্রয়োগবিহ । তপস্বী সত্যবাদী চ গৃহত্যে গুকুক্চ্যতে।। ৩৪ ।। বিকুম্পৃত্যে। পরিচার্যাবশোলাভলিপ্সুঃ শিষ্যাদার্দ্রহি । কৃপাশিক্ষঃ সুসংপূর্ণ সর্বাস্বাস্কারকঃ। নিস্পৃহঃ সর্বভঃ সিদ্ধঃ
সন্ধবিদ্যা বিশারদঃ। সর্বা সংশ্র সংক্রোহ্যাহ্মলাস্ত্রেরাল্ভঃ কুর্য্যাহ্মেরাল্ভঃ কুর্য্যাহ্মেরাল্ভঃ

ভদ্ব।। ৩০।। শোভনজানায় প্রেচা পরমযোগ্যত্ত্বেন প্রিয়তমাএবা মতিঃ তর্কেণ নিজন্যায়েন হেতুনা প্রোক্তাদন্যেন বিধিনা কুত্রা ন অপনেয়া অপমার্গেণ প্রবেশনীয়েত্যর্থঃ।। ৩১॥

শাদে পরেচ নিঞ্চান্ত মিত্যাদিনা প্রাক্ সামান্যতঃ সংক্ষেপেণ গুরুলক্ষণান্য লিথাধুনা তান্যের বিশেনতো বিস্তার্য কিয়াণুর্বাং গুরুল্লের প্রান্তিয়া লিথিছা ইদানীং মুখ্যত্বেনলিথিত অবদাতে তাদিনা । অবদাতঃ গুদ্ধঃ পাতি তাদিদোষরহিতো হ্রয়ো বংশো যমানু সহংশক্ষাত ইতার্থঃ। গুদ্ধঃ স্বান্তিয়াদিদোমরহিতঃ ॥ অহস্তা অহিংসকঃ। যদা অহ্যায়া বিমশকঃ তত্ত্ব বিচারকঃ । গুণা বাৎসল্যাদায় ওদ্যুক্তঃ । অচ্চামু ভগবৎপূজামু । পাঠান্তরে সগুণসা সন্ত্বভণাবিষ্ঠাতুঃ কারুণ্যাদিগুণযুক্তপা বা ভগবতঃ অচ্চামু ভগবৎপূজামু । পাঠান্তরে সগুণসা সন্ত্বভণাবিষ্ঠাতুঃ কারুণ্যাদিগুণযুক্তপা বা ভগবতঃ অচ্চামু প্রতিমামু ৷ রুত্রীঃ তৎপূজায়াং রুত্রনিশ্বয় ইতার্য ॥ ৩২ ॥ গরিনেত্যাকারান্তর্মার্যবাহ সোচব্যং। যদা গরিমান্ব বিরিতি পাঠস্ত স্পান্টএর ॥ ৩৩ ॥ বহু নাকাদগরিমন্ত্রপা নিধিনিধানং। বহু সাক্ষাদগরিমন্ত্রপা নাক্র সাক্ষার্য সংশায় প্রস্থিচ্ছেন্তা ॥ ৩৪ ॥ তত্তকা পুরুক্তাপি কেবলং নিজ্বপরিচর্যাদ্যর্থং শিষ্যানুবন্ধকোগুরু রুপেক্ষা ইতি লিখতি পরিচর্যোতি । লাভোধনাদিঃ শিষ্যাৎ। দীক্ষয়েহে শিষ্যা বৃত্রমানিত্যপ্রথঃ । যদা শিষ্যাৎ শিষ্যাহ ক্রমেন্ত্রমান্ত ক্রমেন্ত্রমান্ত ক্রমেন্ত্রমান্ত প্রক্রমান্ত্রমান্ত ক্রমেন্ত্রমান্ত প্রক্রমান্ত্রমান্ত মেনেহিভার্থ মেবেভিভাবঃ। অলোক্তানাং সুলংপূর্ণ ইত্যাদীনাং বিশেষণানাং হেন্তহেন্তমন্ত্রোহা। আচ্তঃ ব্যাহ্তঃ। গুরুরাড্রমিতি পাঠাক্রিচিছ ॥ ৩৫ ॥ এবং বিপ্রএব গুরুং ন্যাদিত্যায়াতং তদ জাবে কিংকার্যানিভিলিখতি। ব্রাক্ষণ ইতি নাইক্রন্তিঃ। নর্বে পর্ক্রীত্র বিধানোক্তাঃ পঞ্চকালা

6

ষনুগ্রহণ। তদভাবাহিজকে শান্তাত্বা ভগবন্ধরঃ। তাবিতাত্বা চ সর্বজঃ শান্ততঃ
সংক্রিয়াপরঃ। সিদ্ধির্মসমাযুক্ত আচার্য্যতেইভিষেচিতঃ। ক্ষণ্ম বিট শুদ্র জাভীনাং ক্ষত্রিয়াইনুগ্রহে ক্ষ্মঃ। ক্ষত্রিম্যাপিচ গুরোরভাবাদাদৃশোহদি। বৈশ্যঃ
স্যান্তেন কার্যাক্ষ দ্বে নিত্যমনুগ্রহঃ। সন্ধাতীয়েন শুদ্রেণ তাদৃশেন মহামতে।
অনুগ্রহাভিষেকেচি কার্য্যা শুদ্রস্য সর্বাদা।। ৩৬।। কিঞ্চ । বর্ণোভ্রমেইশা গুরৌ
সভি বা বিশ্রুতিপি চ। স্বদেশভোইশবান্যত্র নেদণ কার্য্যং শুভার্থিনা।। ৩৭।।
বিদ্যান্তের হা কুর্য্যাৎ যত্র তত্র বিপর্যায়ণ। তস্যেহামুত্র নাশঃ স্যান্ত্র্যাচ্ছাস্থোক্রমানরেও। ক্ষণ্ম বিট শুদ্র জাভীয়ং প্রাতিলাম্যং ন দীক্ষয়েও।। ৩৮।।
পাজে চ। মহাভাগবতক্রেতে। ব্রাক্ষণে বৈ গুরুন্পাণ। সর্ব্যোদের লোকান্যমৌ
পুজ্যো ঘথা হরিঃ।। ৩৯।৷ মহাকুল প্রসূত্রেইপি সর্ব্র যজ্বেদ্ দীক্ষিতঃ। সহসূ
শাখাধ্যাম্বীচ ন গুরুঃ স্যাদ্বৈক্ষব ইতি।। ৪০।৷ গৃহীত বিফু দীক্ষাকোবিফু পূজাপরোনরঃ। বৈক্রোহভিহিতোইভিক্তিরিভরোইক্যাদ্বৈক্ষবঃ।। ৪১।৷

\* অথাগুরু লক্ষণ । তরুসাগরে। বছাশী দীর্ঘসূত্রীচ বিষয়াদিয় লোলুপঃ। হেন্তবাদরতোদুটোঃবাধাদী গুণ নিন্দকঃ। অরোমা বছরোমা চ নিন্দিতাশ্রম

স্তান্ জানাতীতি তথা मः। শংকাষু বর্ণেযু অনুগ্রহং মন্ত্রপ্রদানাদিকং। তদভাবাচ্চ ক্রিয়ং ক্রা-দীনাং অনুগ্রহে ক্ষমঃ ইতি দ্বাভ্যামন্তরঃ। হেদ্বিজ্ঞশ্রেষ্ঠ গ্রীনারদ। শান্তাত্মা শান্তস্বভাবঃ ভাবিতাত্ম। শুদ্ধচিন্তঃ। সর্বাং দীক্ষাবিধানাদিকং জানাতীতি তথা সঃ। সিদ্ধিত্রয়ং পুরশ্চরণাদিনা মন্ত্রগুরুদেব-তানাং যং সাধনং তেন সংযুক্তঃ। আচার্যান্তে মন্ত্রোপদেইছে। পুরশ্চরণানন্তরং নিজ্ঞরুণাভি-ষিক্তঃ অন্যথোপদেশেহধিকারানুৎ পত্তে:। তচ্চোক্তং তত্তৈৰ পুরশ্চরণানন্ত্রমভিষেকান্তে। ভতো২ভিষিচ্য বিধিনা স্বাধিকারে নিযোজয়েৎ। গৃহীত্বা তেন কর্ত্তব্যং গুরুত্বমিতরেষুচেতি। জাস্যার্থঃ স্রাধিকারে উপদেশকত্মাদিকে নিয়োজয়েদগুরুঃ তেন শিব্যেণেতি। ঈদৃশ উক্ত লক্ষণ ক্ষত্রিয় সদৃশঃ। দ্বে বৈশাশূ দ্রোরিত্যর্থঃ। অন্যত্র প্রাতিলোম্যদোষাপত্তেঃ ভচ্চাত্রে নিষিদ্ধ মেব। ভাদূশেন উক্ত এক । ক্তিয় সদূশেন॥ ৩৬॥ তত্তৈবাপবাদমাহ। বর্ণোত্তম ইতি। ইদং অনুগ্রহাদিকং ॥ ৩৭॥ ইহ লোকেইমুত্র চ তস্যনাশঃ স্বার্থহানিঃ স্পৎ ॥ ৩৮॥ ভাগৰত শ্ৰেষ্ঠঃ অশেষ বৈষ্ণৰ ধৰ্মারতঃ শ্ৰীভগৰখাহাত্ম্যাদি জ্ঞানবাংশ্চ অস্য লক্ষণমগ্ৰে ভগৰন্তক্ত লক্ষণে বিশেষতোৰাক্তং ভাৰি।। ৩৯॥ আঙ্গণোপি ৰংকুল ধর্মাধায়নাদিনা প্রথাতোপি অবৈ-ক্ষবশেত্তহি গুরুনভবতীতি সর্বাত্রপবাদং লিখতি । মহাকুলেতি । কুলে মহতিজাতোহপীতি ক্ষুচিৎ পাঠঃ। অতএবোক্তং পঞ্চরাত্রে। অবৈফ্বোপদিফেন মক্ত্রেণ নিরয়ং ত্রফেৎ। পুনদ্চ বিধিনা সমাক্ আছয়েৎ বৈঞ্বালা ুরো রিতি। ইতি শব্দপ্রয়োগোইতোদাহতানামনাত্র বচনানাং প্রায়োনিজগ্রন্থ বচনতো ব্যবচ্ছেদার্থই । এবসগ্রেহপ্যন্যত্র। যদ্যপি প্রক্তি প্রকর্ত্তান্তে উদাহত তত্তভাক্ত বচনাতে চ সর্বত্তে প্রেতিশব্দোযুজ্যেত। তথাপি তত্তভাবচ্ছেদঃ প্রকরণাদীনামভেদাৎ वाङ्ग्यादि अञ्चर्गक्रनाच्याम निथिजः।। ৪• ।। অবৈষ্ণবইত্যক্তং। তঞাদৌ নামান্যতো বৈষ্ণব अक्र-१९ निथन् उपिछंत्रद्विकेदश्यकेदश्यकेष । পৃহীতেতি। अक्रादेवकेदापिछद्ता ভিন্নঃ।। ৪১॥

নেবকঃ। কালদন্তোহ্নিতেষ্ঠিশ্চ দুর্গন্ধিশাসবাহকঃ। দুউলক্ষণসম্পন্নো যদ্যপি ষ্ম-নীশ্বঃ। বছপ্রতিগ্রহাসক্ত আচার্যঃ শ্রীক্ষয়াবহঃ।। ৪২ ।।

অথ শিবলেকণানি। যন্ত্র মুক্তাবল্যাং। শিব্যঃ শুদ্ধাব্যঃ শ্রীনান্ বিনীতঃ প্রিয় দর্শনঃ। সভাবাক্ পুণ্যচরিতোহদদ্রধীদ ন্তবজিতঃ। কামক্রোধণরিভ্যাগী ভক্তন্য গুদ্ধাদ্যে। দেবভাপ্রবণঃ কায়মনোবাগ্ভিদিবানিশং। নিক্রজা নিজিভিটানেষ পাতকঃ শ্রন্ধানিতঃ। দ্বিজ্ঞানের পিতৃণাঞ্চ নিত্যন্ত্রায়ণঃ। যুবা বিনিয়ভালেয় ক্রণঃ করণালয়ঃ। ইত্যাদি লক্ষণৈযুক্তঃ শিল্যোদীক্ষাধিকারবান্।।৪৩।। একা শক্ষারে চ। অনান্য মৎসরোদ্যে নিয়ানো দৃদ্দৌক্ষা । অন্তরোহ্থ জিজাযুরনা সুযুরীনোহ্যাক্ ।।৪৪।।

অবাথাদী অবাচ্যপরপাপাদিবক্তা। ঈশ্বরঃ দানাদিযু দমর্থ স্তথাপি চেং বহুপ্রতি-গ্রহাসক্তঃ॥ ৪২॥

অদক্রবীঃ মহাবুদ্ধিঃ ॥৪৩॥ দক্ষঃ অনলদঃ। নির্মান জায়াদিবু মমতাশূন্যঃ গুরৌস্ত দূত সৌহ্দঃ। অসত্তরঃ অব্যগ্রঃ। অমোঘবাক্ ব্যথালাপরহিতঃ॥ ৪৪॥

ভত্তা পুৰীনানপি ভক্তান্তি গৈ প্ৰপন্ন স্বীকৃষ্ণতাপি প্ৰীপ্তরুণা লেখাদোষবন্ধেইবশ্য-মুপেক্ষাইত্যাশয়েন তান্ লিখতি অলসা ইতি পঞ্চিঃ। ক্লিফীঃ ব্থাক্লেশকারিণঃ। রাগিণো বিষয়াশক্জাঃ। তোগলালদা লুৱা ইভার্যঃ। পিশুনাঃ পরদোষসূচকাঃ থলাঃ পরদুঃখলাঃ। ৪৫॥ গুরুশিকারা অনহনশীলাঃ। শিব্যান্ত্রন কেনাপ্যপ্রকাণিতা নবিহিতাঃ শিব্যা ন ক্লতা ইভার্যঃ। বরা উপকণ্পিতা ন ভবন্থিশিষান্ত্রংনাহান্তি ইতার্যঃ॥ ৪৬॥ সোভাদিনা তেষাং স্বীকারে প্রিথরী নহাদোষাঃ পর্যাবসান্তীত্যাহ যদ্যেত ইতি পার্ক্ষেন ॥ ৪৭। ৪৮॥ তারাঃ গুরুশিষ্যয়োঃ। অন্যোন্য মিত্যস্য পরার্ক্ষেনাপ্যন্ত্রয়ঃ। ব্যবহারঃ চেকী। স্বভারঃ শীলং তারাের নৃভবেনৈব অন্তিতা জায়তে॥ ৪৯॥

অথ পরীক্ষণং। মন্ত্র মুক্তাবল্যাং। তয়োর্যৎসরবাসেন জ্ঞাতাধন্যান, হতানবালাঃ। গুক্তা শিষ্যতা চেতি নান্যথৈবেতি নিশ্চয়ঃ। শ্রুতিশ্চা নাসম্বর্পর বাসিনে দেয়াং। সারসংগ্রহেইপি। সদ্যুক্ত য়াশ্রিতং শিষ্যং বর্ষমেকং পর্বাক্ষারেং। বেং।। বাজি চামাত্যজা দোষঃ পত্রীপাপং স্বভর্তরি। তথা শিষ্যাজিতিং পাপং গুক্ত প্রাপ্যেতি নিশ্চিতং। ক্রমদীপিকায়ায়। সভোষয়েদকুটিলার্মতিং ভির্মার তংগভার স্বপ্রাপ্যনুক্লব্যায়া অফল্রমং ক্মলনাভিধিয়াইতিধার ভ্রেট বিব্দত্ব গুরাব্য মন্ত্রদীক্ষাং।। ৫১।।

অথ বিশেষতঃ প্রীন্তরুদেবাবিধিঃ। কৌনো প্রীব্যাসগীতায়াং। উদকুত্তং কুশান্
পুস্পং সমিধো হস্যাহরেৎ সদা। মার্ক্তনং লেপনং নিত্য মঞ্চানাং বাসসাং চরেৎ।
নাস্য নির্মাল্যশারনং পাদুকোপানহাবিপি। আক্রামেদাসনং ছায়ামাসলীং বা কদা
চন। সাধরেদতকাষ্ঠাদীন কৃত্যং চালো নিবেদয়েৼ।। ৫২ ।। তনাপ্ত্যুন গ্রবং
ভবেং প্রিয়হিতে রতঃ। ন পাদৌ সার্ক্রেদস্য সর্মে নেকদাচন। জ্য়াহাস্যাদিকং
চৈব কণ্ঠপ্রাবরণং তথা। বর্জয়েং স্ক্লিখৌ নিত্য মথাক্ষোটনমেব চা। ৫৩ ।। কিঞা
শ্রেম্ম ওক্রবন্ধতি নিত্যনেব সমাচরেং। গুরুপ্তেমু দারেমু গুরোশিকে স্বন্ধ্যা। ৫৪।।
উৎসাদনং বৈ গাত্র নাং স্বাপনোজ্ফিভোজনে। ন কুর্য্যাদগুরুপ্ত্রস্য পাদ্রেরঃ
শৌচনেবচ। গুরুবং পরিপূজ্যাশ্চ স্বর্না গুরুহোষিতঃ। তস্বর্নান্ত সংপ্তার

শুরুণাত্বশামের শিষ্যপরীকা কার্যোত্যত ভেন্তমাহ রাজ্ঞীতি॥ ৫০।। এবং বর্ষমেকং পরীকা তাতোদীক্ষেতি নিশ্চিতং। তত্র প্রীকোপালমন্ত্রবরদীক্ষায়াং বর্ষত্রয় শুরুসেবানম্বমের দীক্ষেতি তত্ত্রবিদাং মতং লিখন্ দীক্ষাপ্রাক্তন শুরুসেবা বিধিঞ্চ সংক্ষেপেণ দর্শরতি সন্থোষয়েদিতি। তং শুরুং। বিবক্ষতু বজুমিচ্ছপ্ত দীক্ষার্থং প্রার্থনাং কুর্য্যাদিত্যর্থং। অন্ধত্রমিতাত্র বিশোষাগ্রস্থান্ত্রাক্ ক্ষরাঃ তথাহি ত্রিব্ বর্ষেষ্ বিপ্রস্যা ঘটবু বর্ষের্ ভূভূতঃ। বিশোনবস্ বর্ষের্ পরীক্ষা জ প্রশাস্তাত। সমাস্থাপি দাদশসু তেষাং যে ব্ধলাদয় ইতি। যক্ষ শারদাতিলকাদাবুক্তং। একাক্ষেন ভবেদিপ্রো ভবেদক্ষয়ায়্পঃ। ভবেদক্রইয়বৈশাঃ শুদ্রোবর্ষচপ্তক্ষইয়রিতি তদত্যন্ত পূর্ব্বপরিক্ষীলতবিষয়মিতি বিবেচনীয়ং॥৫১॥

সন্থোবন্ধেদিত্যাদিনা সামান্যতং সংক্ষেপেণ লিখিতং প্রীপ্তরুসেবাবিধিং বিশেষতো বিস্তার্য্য লিখতি। উদকুষ্টমিত্যাদিনা। অস্য গুরোঃ মার্জ্জানাদিকং গৃহুস্য অঙ্গনাং চেত্যর্থঃ তত্রাঞ্চানাং লেপনঞ্চলনাদিনেতি জ্বেয়ং। পালুকোপানহোশ্যুকাষ্ঠাদিভেদেনাবান্তরভেদঃ। আসন্দীং ভোক্তনপাত্রাধারত্রিপদিকাং॥ ৫২॥ সার্য়েৎ প্রসার্য়েৎ। আদি শব্দাদুকৈর্ভাষাদি। আক্ষোটন মঙ্গুল্যাদীনাং॥ ৫৩॥ নিত্যং গুরু পুত্রাদিব শ্রেয়ঃ হিতং সম্যগাচরেৎ। গুরুবদ্ধিঃ গুরাবিব গুরুপুত্রাদিঘিপি বৃত্তির্বারহারো যস্য তথাভূতঃ সন্স্বা জ্ঞাতয়ঃ বন্ধবঃ স্থান্ধিন স্তেমু। পাঠায়ুরে শ্রেয়াযথাস্যাত্তথা গুরাবিব তন্ধিয়া চরেৎ। যদাচরেৎ তৎশ্রেয়ইতি বা॥ ৫৪॥ তত্রাপ্রাদ্মাহ উৎসাদন্মিতি তিভিঃ। গাত্রাণামুৎসাদনং উদ্বর্জনং। শৌচং প্রকালনং। অসবর্ণাইতি পূর্বাং ব্রাহ্মণানাং ক্ষত্রিয়াদিকন্যাপরিগ্রহাৎ। যদ্যপ্যতৎ সর্বাং শ্রীব্যাসদেবেন

প্রজ্থোনাভিবাদনৈঃ। ভভ্ঞেন্ৎ সাপন্ধ গাত্রোৎসাদন্মের চ ৷ ওরুপজুন ন কার্য্যাণি কেশানাঞ্চ প্রসাধন । । ৫৫॥ দেব্যাগমে জ্রীশি'বাক্তৌ। হুরুশযা সনং যানং পাদুকেপাদপীঠকং। সানোদকং ভথাচ্ছারাং লংঘয়ের কদাচন। গুরোরপ্রে পথক্ পূজা নদ্বৈতঞ্চ পরিত।জেখা দীকাং বাখাগং প্রভত্তঞ্চ গুরোরগ্রে বিবজ্জ-প্রীনারদোভৌ। যত্র হত গুরুং পশ্যেৎ তত্র তত্র কভাঞ্জিঃ। প্রণমেৎ দশুবজুমৌ ছিল্লগুলইব ক্রমঃ ৷ গুরোর্বাক্যাসন্থ যান্থ পাদুকোপানছৌ তথা৷ বস্ত্রও ছায়াৎ তথা শিষ্যে৷ লংঘয়ের কদাচন ৷৷ ৫৭ ৷৷ জীমনুশ্ তৌ ৷ নোদা-হ রদারের নাম পরোক্ষমপি কেবলং। নচৈবাসানুকুক্তি গভিভাষণচেটিভং।। ৫৮।। ও রাও রৌ সলিহিতে গুরুবদ্তিমাচরে । নচাবিস্ফোওরণা স্থান্ত্র-নভিবাদয়ে ।। ৫১ ।। জীনারদপঞ্জরাতে । যথা তথা যত্র ভত্ত ন গৃহীয়াচ্চ কবলং। অভক্যা ন গুরা ন'ন গ্ছীয়াজ য শাল্লান। প্রাণ্ড শিল্ল প্রিক শক্ষাদন-ন্রং। পাদশক্ষ্মনেত্র নত চুক্ঞিলীযুতঃ।। ৬০।। কিলে। ন ত নাজাপয়ে-लागियम । कि । नह नाधाय १ में निरम्प खरता कि कि गु लग्न १ वे खातालया । অন রেচ। আরাখন প্রতোগচ্চেকাছন্তং তলন্ত্র জং ৷ আসা ন শায়নে বা পি ন তি ঠ দগ্রতো গুরোঃ। য়ং কি ঞ্চিদ্র পানাদি প্রিয়ং দ্রব্যং মনোর্মং। সমর্প্য গুরুবে 🕈 পশ্চাৎ সম্প্রাত প্রতঃহং। জীবিষনাতৌ। নগুবোর প্রিয়ৎ কুর্য্যাৎ তাড়িতঃ প্রতিভিত্তি বি । ন'বানেতে ভরক্তং নাপ্রিরং হি সমাচরেং। আচার্যান্য প্রিরং কুব্যাৎ প্রাণৈরপি ধনৈরপি । কম্মণা মনসা বাচা স হাতি পর্মাং গতিং ।। ৬১ ।। জন্য। দ্বোরপি মহাদোষঃ। শ্রীনারদপঞ্চরাত্রে। যাব্যক্তিন্যায় রহিত মন্যায়েন শ্লোতি যা । তাবু:ভী নরকৎ থোর**ৎ ব্রজতঃ কালমক্ষয়ৎ ।**। ৬২ ॥

অথ শিষ্যপ্রার্থনা। বৈক্ বভরে। তায়স্ব ভো জগলাথ গুরো সংসারবহ্নিনা।

বেদাধ্যাপক গুরুপেবা মধিকুতাে জিং তথাপি সাঙ্গবেদাধ্যাপনে মন্ত্রোপদেশত স্থান্ত নিধ্য ভীত্যেবং মন্ত্রগুরুবেদগুরোরভেদাং বিশেষতত সেবাবিধিসাম্যাদ্র নিথিতমিতি দিক্। এব-মন্ত্রাপ্যাহং।। ৫৫।। অবৈতং অভেদোক্তং। দীক্ষাং অন্যাইস্থ দীক্ষাপ্রদানং॥৫৬॥ পাদুক্রোপানহা কর্মকাঠাদিভেদেনাবাস্রভেদং পূর্বমেব নিথিতঃ॥৫৭॥ কেবলং শুদ্ধং নামাক্ষর মাত্রক মিত্যর্থঃ॥৫৮॥ স্বান্গুরুন্ পিত্রাদীন্॥৫৯॥ তহি কুত্রচিং কথং গৃহ্দীয়াদিত্যপেকায়ান্যাহ গৃহ্দীয়াচেত্যাদিনা। অপ্রনীতি দীর্ঘ্যার্ধং। ও শ্রীঅমুক্রিফুপাদাইভে,বং ভট্ট নত্মূর্দ্ধাপ্রক্তঃ সন্ গৃহ্দীয়াদিত্যর্থঃ॥ ৬০॥ মোহাদপি গুরোঃ কিঞ্চিন্ন ভোক্তব্যং ভট্টাজ্ঞাং বিনেতি পোদ্ধাং অক্যথাজ্ঞালগ্ধনদোষাপান্তেঃ। এতচ্চ সর্বাং দীক্ষানন্তর্মপি শিষ্যস্য কৃত্যং জ্ঞেরং। সদৈব গুরুভক্তেরন্ঠেরত্বাং। অতএবৈতং দীক্ষানন্তর্মপি ক্রিদুক্তমন্তি॥ ৬১॥ পরীক্ষাং বিনা গুরুপেবাদিং বিনাচ মন্ত্রস্য কথনে গ্রহণৈ চ মহানন্থ ইতিলিখতি যোবক্তীতি। ন্যায়ঃ দ্বেরারন্যান্য পরীক্ষণপূর্বকগুরুসেবাদিপ্রকারস্তক্তহিতং॥ ৬২॥

এবং দেবয়া গুরুষস্থোন্গানন্তরং মন্ত্রদীক্ষার্থং যথা শিষ্যেণ প্রার্থয়িতব্যং তদ্বিজ্ঞাপ্রিতুং লি-

দক্ষং নাং কালদট্যক স্থামহং শারণং গত ইতি । ৬৩ ।। তত্র জীবাসুদেবস্য সর্কাদেব শিরোধণেঃ। পাদাসুকৈকভাগেব দীক্ষা গ্রাহ্যা মনীষিভিঃ।। ৬৪ ।।

আন ঐতিগবনাহাত্মাৎ ।। প্রথমফ্রে । সত্ত্ব রজন্ত ই তি প্রকৃতের লিছি যুঁ ভিঃ
পরং পুরুষ এক ইহাস্য ধরে । স্থিত্যাদয়ে হরিবিরিঞ্চিং রেভিসংজ্ঞাং প্রোংসি
ভত্র থলু সত্ত্বনো নৃণিৎ সুঃ ।। ৬৫ ।। কিঞ্চ । তথাপি যৎ পাদনখাবস্টৎ জগবিরিঞ্জোপস্ভার্হণান্তঃ । সেশংপুনাত্যন্যত্বনোযুকুনাৎ কোনাম লোকে ভগবৎ
পদার্থঃ ।। ৬৬ ।। শ্রীদশমফ্রে । তরিশন্যাথ মুল্যো বিমিতা মুক্তসৎশায়ঃ ।
ভ্রাৎসৎ প্রপ্রিকৃৎ হতঃ কেনো যতোহ্ভয়ৎ ।। ৬৭ ।। পাছে বৈশ্বেমাহাজ্যে ।।
যমত্র জন্মংবাদে ।। ব্যামাহারে চরাচরস্য জগতন্তে তে পুরণাগ্যান্থাং তামেন্তি
দেবতাৎ পর্মিকাং ভপেন্ত কপোব্ধি । সিদ্ধান্তে পুনরেক এব ভগবান্ বিফুঃ সম্ভাগ্য ব্যাপারের বিবেচনব্যভিকরং নীতেষু নিশ্টায়তে ।। ৬৮ ।। নার্মিংহে ।।
সত্যং স্ত্রং পূনঃ সত মুহক্ষিপ্য ভুজমুচ্যতে । বেদাছান্ত্রং পরৎ নান্তি ন দেবঃ
কেশবাহগরঃ ।। ৬১ ।। যতঃ পালে । অরিমিতিৎ বিষ্ণ পথামধ্যমাহ্মাতাং
ক্রজেং । সুপ্রসায় জ্বীকেশে বিপরীতে বিপর্যায়ঃ । তত্তিব শ্রীভগবদাক্যং । ন্যি
বিত্র কৃতৎ পাপম্পি ধ্যায় কপেতে । মামনাদ্ত্য ধ্যোপি পাপৎ স্যায়হ
প্রভাবতঃ । অভ্রেভিৎ স্কান্দে । শ্রীব্রুক্রারদ্য্থবাদে । বাসুদেবং পরিত্যজ্য

খতি। ত্রারস্বেতি॥ ৬৩॥ তত্র তদ্যাং পৃহামাণারাং তু দীক্ষারাং পাদাযু**জনে**কনের ভজতি আশ্রহীতি তথা দা। মনীবিভিরিতি অন্যথা নিবু ক্ষিতৈবেতিভাবঃ ॥ ৬৪॥

ভত্র হেন্তং দর্শরন্ শ্রীবাসুদেবস্য ভগবতোমাহাত্মাং লিথতি। সত্ত্বমিত্যা দিনা । তত্রজ্ঞানীনাং ত্ররাণামপীশ্বর্থেপ্যকাত্ত্বপি চ শ্রীবাসুদেবস্য। বিব্যমাহ সত্ত্বমিতি। ইহ যদ্যপ্যেক এব পরঃ পুমান্ ঈশ্বঃ অস্য বিশ্বস্য স্থিতিস্টিলয়ার্থং ইরিবিরিঞ্চিহরেতিসংজ্ঞা ধতে তথাপি তত্র তেবাংমধ্যে সত্ত্তনাঃ শ্রীবাসুদেবাদেব শ্রেয়ংসি উভকলানি স্যুঃ॥ ৬৫.॥ অথাপি যদ্যপি ত্রয় এবৈতে ঈশ্বরান্তথাপীত্যর্থঃ। যদ্বা অথেত্যর্থান্তরে। বিরিঞ্জিনাপ্ততং সমর্পিতং অর্হণান্তঃ অর্ঘোদকং যম্যপাদন্থাদ্বস্ফাং নিঃস্ত্রমপি। যদ্বাপাদন্থেন ইবজ্ঞা ত্যক্তমপি ঈশসহিতং জগৎ পুনাতি। বিরিঞ্জোপ্ততং সেশমিত্যনেন শ্রীক্রজানিবেয়ারপ্যুপাসকত্বমুক্তং। তত্মামুকুন্দান্তাতিরিক্তঃ কোনাম ভগবৎ পদার্থঃ। অভিধেয়ঃ সর্ক্রেশ্বরং শবিষ্ণুরেকএবেত্যর্থঃ॥ ৬৬॥ তৎ ভৃগুর্বণিতং শ্রীভগবন্যাহাত্মং। বিন্মিতা তাদুশাপ্রাধেপি নির্বিকারত্বেন। যদ্ব। অবিন্মিতাঃ তদ্য স্বত্রব তথা সন্তাবন্যা। ভূয়াং সং মহন্তমং শ্রুদ্ধু নিশ্চিতবন্তঃ॥ ৬৭॥ জ্পস্তিত্যুপহাসে জানন্ত এব জানন্ত্বিত্যাদিবৎ। সমস্তানামাগমানাং শাস্ত্রাণাং ব্যাপারেমু, প্রয়োজনেমু বিবেচনস্য ব্যাপার্ব্য দূরণত্বেন তদেব কন্দপুরাণাদি বিচারস্য ব্যতিকরং আসঙ্গং প্রাপিতেয় পরং পরমং নাস্ত্রীতি দৃষ্টান্তত্বেনাক্তং। ৬৯॥ এবং ব্রন্ধাদিভ্যোহধিলদেবেভ্যোমাহাত্মাং বিলিখ্যাধুনা তৎপরিত্যাগেনানাদ্বেতাভ্জনস্য দূষণত্বেন তদেবকন্দপুরাণাদিবানিত্যিক চিন্নতি

যোহন্যদেব মুপাসতে। স্থাতিরং প্রিভারা শুল্চীং বাদ্তে হি লাং জাতিবান্ত।
বাস্দেবং পরিভারা যোহন্যদেবমুপানতে। ভালাইছিং স মূলারা ছুইছে হালাহলং বিষং ।। ৭০ ।। মহাভারতে। যন্ত বিষ্ণুং পরিভারা মোহাদ্রান্পানতে।
স হেমরাশিমুংস্লা পাংশুরাশিং জিব্লাত। জনাদ্তা ত যোবিষ্ণুমন্যদেবং
সমাল্রয়েং । গলান্তা স ত্যার্ভো মূলত্যাং প্রধাবতিনা ৭১ ।। পশ্বাতে। যো
নোহাদ্বিষ্ণুমন্যেন হীনদেবেন দুর্মাতিঃ। সাধারণং সক্ষুতে সোহন্তা লাভালোহল্তা ।। ৭২ ।৷ বৈষ্ণুবতক্তো । ন লভের্ই পুনভ্জিৎ হরে রৈকান্তিনাৎ জড়াঃ ।
একাগ্রমনসন্দাপি বিষ্ণুমানাদ্দশিনঃ। জন্যতে। যন্ত মারায়ণং দেবং ক্রম্ভাণি
দৈবতিঃ। সমান্তনৈব বীক্ষেত স পাষ্টা ভবেং সাদ্ভি।। ৭০ ।৷ সহসুনামন্তোলাদী
লোকোন্ত মন্তি চেনুশাঃ। বিশেষ্তঃ সন্ত্রিষ্ঠাং সেব্যোবিষ্ণুন্তাপরঃ। তথাচ হ'ববংশে শ্রীশিববাক্যং । হরিরের সদারাধ্যা ভবিন্তা সন্ত্রগংহিং। বিষ্ণুন্তাং

বাসুদেবমিত্যাদিনা। উপাসত ইত্য র্যং উপাস্তে।। ৭০।। গঙ্গান্তসঃ সকাশাৎ তৎ পরিভাজ্যে-ভাৰ্থঃ॥ ৭১॥ অস্তু তাৰ্থ প্রিভ্যাগে ন দোষঃ অন্যদেবদামান্যদূকৈটাৰ মহানৰ্থ ইভি লিখভি মুট্তি। মোহাদিপি ছীনেন বিষ্ণুপেক্ষয়া নিক্ষেটন দেবেন জাতাবেকত্বং। সাধারণং ভল্যং। সর্কু দিপি। অস্তাজঃ অত্যস্তনীচঃ সূত্রব নত্ত চাণ্ডালাদিরিত্যর্থঃ ।। বিষ্ণু। যন্তি,তি । আদিশকেন इन्द्रामग्रः। व्यार जारः खीतवाक्राको श्वनावष्टाको हेन्द्रामरमाविष्ट्रव्याः जगवान् खीनावाग्रस्ताः-বতারী পরমেশ্বরঃ ইত্যেত্ৎ শাইস্ত্রঃ প্রতিপাদ্যতে অতো২টনাঃ সহ তমা সামাদ্ট্যা শাস্ত্রানাদ-রেণ পাষণ্ডিত। নিজ্ঞাদ্যত ইতি। অতএবোক্তং বৃহৎসহস্নামস্তোত্তে জ্ঞীমহাদেবেন। নাইৰঞ্-বায় দ।তবাং বিকশ্পোপহতাক্সনে। ভক্তিশ্রদ্ধাবিহীনায় বিঞ্সামান্যদর্শিন ইতি। উদন্তে শ্রীদুর্গা-দেব্যাচ। অহে। সর্বেশ্রো বিষণুঃ সর্বদেবোত্তমোত্তমঃ। কগদাদিগুরুসূ টিঃ সামান্যইব বীক্ষাত ইতি।।৭৩।। ঈদৃশাঃ ঐভিগবসাহাত্মপরাইত্যর্থঃ। তথাচ তত্ত্বৈর শ্রীমহাদেরবাক্যং। ন যায়ি তং-পারং শ্রেরো বিক্তুং স্কেশ্বরেশ্বরং। স্কভাটবরনাশ্রিতা পুরাণং পর্যোগ্তমং। তমের তপ্সা নিত্যং ভজানি স্তৌমি চিন্তরে। তেনাদিতীয়নহিমা জগৎপুজ্যো ২স্মি পার্বভীতি। তত্তৈব নামনগ্রে। সর্বাদেবৈকশরণং সর্বাদেবৈকলৈবভং। সূর্যাকোটিপ্রতীকাশো যমকোটিদুরাসদঃ। ব্রহ্মকোট জগৎসুফা বারুকোটিমহাবল:। কোটীন্দ্জগদানন্দী শস্তুকোটিমহেশ্র ইত্যাদি। ভদত্তে প্রীদ্গা-प्तिरीवाकाः। **जार्श वक महरू कृष्टिः नमञ्जूशाम इ**तो । विष्नामात्मश्मि मह्नास् मः मृत्जी। यम् किमा महा महिशा महत्रभाषि कितश्तः। कक्रे जिल्लामा निश्च खर्भकी वीकः एक करेनः। ত্তেংধিকোইত্তি কোনেবো লক্ষীক ক্ষাপুদ্ধিয়ং ইত্যাদি।বীক্ষাতে জুইনবিতি নত্ত্বেত্তক্ষতাকং किन्छ मार्कार मर्काटक मृत्राज्यात जार्बः। आहिनात्क्रम संयूत्र म्यानात्क्राजामि। उत्र संयूत्र मृत् নামজেতে। আরস্তে। পরমং যে। মহতেজ্ঞঃ পরুমং যে। মহত পঃ। পরমং যে। মহত্ কা পরমং যঃ পরায়ণং। পবিত্রাণাংপবিতং যো মঙ্গুলান । ইদুবতং দেবজানীক ভুজানাংযো ২বায়ঃ পিতেতाकि। अरहा (मा)ः महत्त्वाक्तरहेका थः किना कृषारहाक्षिश वाम्यक्तेमा बीर्यान विध-ज्यानि गराज्यन है ज्यानि। विश्मवक है कि ठमना वक्षमा विभिन्द है किले कथिकनगः व। ज-

সদ। বিশ্বঃ পঠার ধাতি কেশব্যিতি। উদ্গাহাজালাকে গুসংগ্ছাতে যুদর্বতঃ গ্রন্থাত্লাদোবং স্যালিখাতে পেকিতানি তথা গৃহ ।।

অধ জীবৈক্ষণসভ্তনাহাত্তাং। আগমে। সন্তান্ শ্রীমন্তর জ দান্ হৈক্ষবান্ গুর্মনুগ্রহাং। সর্বৈশ্বর্থাং জপন্ প্রাপ্ত বিক্ষোঃ পাংশ পদং। পুলাশ বর্ষসহলৈ হৈ 
কৃতং সুবিপলং তপঃ। জপন্তি বৈক্ষ । যন্ত্রারালে লোকপাবনাঃ। বৈক্ষবে চ। প্রজ্
পান বৈক্ষবান্তান্ত্রান্ত্রাক্ষণ বং বং পশাতি চকুলা। পদা বা সংস্পাশন সদোমুচ্যতে হনৌ
মহাত্যা দিতি।। ৭৫। লিখ্যতে বিক্ষাত্তালাং মহিমাথ হিশেষ্তঃ। তাংপর্যাতঃ
শ্রিগোপাল মন্ত্রমাহাত্মা পুকীয়ে।। ৭৬।।

তত্র ভাদশাক্ষরান্টাক্ষরয়ান্ধ হিল্পি । ৭৭ ।। প্রমপুরাণে দেনদূত িরুপ্রের সংবাদে। সাক্ষণ সমুদ্রং সন্ধানং সংখ্যিত্নদৈবতং। সদাক্ষাবিধি সধ্যানং সহস্ত্রং ভাদশাক্ষরং। অফাক্ষরপ্র মান্ত্রশং যে জ্পন্তি নরোন্তম হ। তাল্ দল্ট্ ব্রক্ষণ শুদ্ধোল হৈ ছালশাক্ষরং। আফাক্ষরপ্র মান্ত্রশাল বিধি সধ্যানং সংগ্রের ভাদশাক্ষরং। তাল্ দল্ট্ ব্রক্ষণ শুদ্ধাল কিন্তু ব্রক্ষায় বুলিমালিনং। বসন্তি বৈফ্রেরলা ক্ষরিক্ষরপেণ তে নরং। প্রভাগ তিবে ছাদশাক্ষর স্থা । ১৯ ।। চত্ত ক্ষান্তা প্রবং প্রতি ব্রিনারদোক্ত্রী। জপ্যশ্চ প্রমোগ্রহার ক্ষয়তাং যে নৃপাত্মজা। যথ সপ্তরাত্রথ প্রস্থিন পুনান্ পশ্যতি থেচরান্। ৮০ ৷৷ ক্রিক্ষুপ্রাণে। গ্রাগ্রাণ নিবর্ভ তে

শ্বন্ধ নাম সাত্তিকৈন্ত্ৰনাং শ্ৰীবিষ্ণুরেৰ ভেগনীয়ঃ ইতার্থঃ অজোঘোহনাং ভজেৎ সতমোরজো দিতি ইতি ভাবঃ। প্ঠধং জপত। ধ্যাতেত্যাবং ধ্যায়ত। নুনু ঈদ্শানি হৃৎকর্ণনায়নানি শ্রিজগবস্মানাল্ল্যপরাণি বচনানি সর্বাশাস্ত্রতঃ সমাতৃত্যাপরাণ্যপি লিখাস্তাং তলাহ। উদ্গিতি। প্রস্থা বাহুল্যং বিশ্বরঃ তেন ভজ্ঞাপা গোনোভবেৎ। তৎ তন্মাৎ হেতোঃ। যদ্বা তদিতাবায়ং গোনীভার্থঃ। যাবস্কি, যত্রাপেকিতানি ভবত্তি তাবস্থোব তত্র লিখাস্তে নত্ত্বধিকানীভার্থঃ। এতেন চেদুশানি বছত্রাণি বচনানি সন্থীতিবোধিতং। লিখাস্ত ইতি বর্ত্তমান নির্দ্ধশাদ্বোপ্যেবমের লেখ্যানীতি জ্বেয়ং॥ ৭৪॥

৭৫॥ এবং সামান্যভোলিথিয়া বিশেষভোলিথিতুং প্রতিক্সানীতে। লিখ্যভইতি। অথসামান্যভোলিথিরে লিখনান্তরমধুনাবিশেষভোলিথাতে। ননু অথ্যে শ্রীমদনগোপালদেবস্যু সংমোহনাথ্যান্টা দশাক্ষরমন্ত্রমধুনাবিশেষভোলিথাতে। ননু অথ্যে শ্রীমদনগোপালদেবস্যু সংমোহনাথ্যান্টা দশাক্ষরমন্ত্রাবিধিরেব লেখাঃ তৎ কিমন্যমন্ত্রাক্সাহাত্মালিখনেন তত্রাহ ভাৎপর্যা ইতি। অয়াম্থঃ শ্রীগোপালদেবোহয়মবতারী কৃষ্ণস্ত ভগবান্স্থমিত্যুক্তেঃ বিটিত্রমাহাত্মাবিশেষপ্রকটনাচে। অতোহবভ্রোগং মাহাত্মান ত্রৈয়ব মাহাত্মাবিশেষ্কিদ্ধোঃ। সাক্ষাত্মস্ত্রস্যাপি মাহাত্মাং প্রভঃ পুটমেবস্যাৎ অতন্তর্বেশেব লিখাত ইতি॥ ৭৬॥

ওত এই বিক্ষবত শ্বেষ্ মধ্যে ॥ ৭০ ॥ ছনেতাদন্ত প্রমার্থ ছনে । ভিন্ন বিক্ষবইতি বিক্ষু - সাক্ষপ্যাপ্তঃ। বিক্ষোক্রপেণেতানুক্তবর্ণাকারাদিঞ্ছণার্থং॥ ৭৮ ॥ সামান্যতোদয়ারপি লিথিস্থাহবুনা বিশেষতো লিথিতি । তত্তেতি। উক্ত দয়োদ্ব দিশাক্ষরাফীক্ষরয়োরের মধ্যে॥ ৭৯ ॥
নৃপাদাক হে এইব ॥ ৮০ ॥ নপুনর্ভবতাত সমাসেপি নকার ফিতিরার্বস্থাৎ। মুখেষু পরিবর্ততে

## विवासिक करिशकी।

ठाम् नृर्वतानरवाश्वरः । अवतिशान निर्वेशिक विभिन्नाकति विक्रिका । अविभिन्न विभाग नावन शकतात्व। वदशारवनाः यद्रशामि हेन्सार निर्विविधाः मृताः । नत्विविधाः यक्तान। निश वाषाय । मर्बद्यमास्माता विकास निविधान । वार्षित्र में स्वीतान नार ন প্রভ্রক জিফাব ৷ যত্রাফাকর সুংলিক্ষো মহাভাগোমহীয়তে ন ওত্র সঞ্চরিব ডি ব্যাবিদ্ভিক্তফ্রাঃ। দেবদানবগল্পকরিঃ সিন্ধবিদ্যাধরাদয়ঃ। প্রণ্মস্তি মহাস্থান মন্টাক্ষর বিদেশ নর শা ব্যক্ত হৈ ভগবানের সাক্ষারারণঃ ধ্রহণ ভিন্তীকর স্বৰূপেন ন্থেষ্ পরিষত্তে ॥ ৮ > ॥ পাছোভরখণে । এবমটাক্রোমান্তা ভিরঃ সর্বাথ সাক্রঃ সপ্রস্থাংরঃ শ্রীমান্ সর্বাস্ত্রাত্মকঃ শুরু ।। ৮২ 🔃 লিক্স্রাণে। কিন্নো বঁত্তিগতিন কিমনৈ বিহুভিত্র তিঃ। নমোনারায়ণায়েতি মন্ত্র ক্ষাথ সাধকঃ। ভদাৎ সর্মেষ্ কালেষু নমোনারায়ণেতি যঃ। জল্পেৎ স যাতি বি প্রন্দু বিষ্ণ-লোকৎ সবাহ্ববঃ। ভবিষাপুরাশে। **অন্তাক্ষরে মহামন্ত্র**ীস্কাপাপী হঠঃ পরং। সর্কেষাৎ িবিষ্য মন্ত্রাণাং রাজত্বে পরিকীর্তিতঃ। জ্রীশুকব্যাসসংবাদে চ । নিমোনারায়ণায়েতি মত্রঃ সর্বাথ সাধকঃ। ভক্তানাৎ জপতাৎ ভাত ম্বগ্ন মাক্ষ্কলপ্রদঃ। এয়এব পরো-्माक अय अर्ग हिन छ हः । मर्कायमत्रहामा छ , मात्वय ममुक् हः । विकास देवस्ता-নান্ত ভিতার মনুমা পুরা। কীতিতিঃ সর্বপাপমুঃ সর্বকঃমঞ্চায়কঃ। নারায়ণারীমম ইত।রুমেবসতাৎ সংসার ঘােরবিযসৎহরণায় মস্ত্রঃ । শ্ণুস্তু সত।মতয়াে মুদিভাতরাগা छोफ खतामु शिष्णामा १ श्रृ र्क्षुवा छः । जुः वार्क्ष बा छत्र मु। इर मछ। शृक्षः व वीमि वः । (र 🛊 পুত্র শিষ্যাঃ শূণ্ত ন মন্ত্রোন্টাকরাৎ পরঃ ।। ৮৩ ।। । অভএবোক্তং গারুড়ে। আদীনোর। শ্রানোরা তিষ্ঠানোহত তত্ত্ব।। নমোনারায়ণায়েতি মত্ত্রকশরণো-ज्यदा । १४॥

অথ জীনার সিংহান ট্রু ভ্যন্তর জন্য। তাপনীয় ভ্রুতিষু । দেবা হবৈ প্রজা-প্রিয়ন্ত্রন তর্গ। আন্ট্রুভনন্তরাজন। নার সিংহ্যা ফলং নো বুলিত। সহো-বাচ প্রজাপ তিং। য এতং মন্ত্রাজং নার সিংহ্যান্ট্রুং নিভ্যান্থীতে স আদি- ।
তাপ্তোভ্রতি সোহরিপ্তোভ্রতি স বায় পুরো ভ্রতি স কুর্যপ্তোভরতি স
ক চদ্প্তোভরতি স সভাপ্তিভিত্রতি স বালপুর্ভোভরতি স
কলপ্তোভরতি সমর্প্রোভ্রতি। তবৈবাস্তে। অনুপ্রভাতর কিমেক মেকেনোপনীতন তৎসমং। উপনীতশভ্যেকমেকেন গৃহত্বন তৎসমং। গৃহত্ব শতমেক

আবিত্বতীতি বাগায়স্থান পদাধ। ৮১॥ ত্রীঃ নার্যালোডা সম্পতির ভ্রাস্। সেবকস্য প্রপ্রদ ইত্যাঃ। স্বত্য শুড়া মঙ্গলবাপঃ॥ ৮২॥ হে ছাছে হে প্রিশুর বিষ্ণুরা সম্ভতঃ। মনুনা কীর্তিঃ জপ্তঃ লোকেয়ু বা কবিতঃ। মুদিতাক ছেইন্তরাগাক বিরক্তাই হৈ শিব্যাঃ॥ ৮৩॥ তিটানইতার্যঃ তিটন্। ৮৪॥

নেকেন বান প্রন্থেন তৎসমৎ। বানপ্রত্বশত্তে ক্রেন হতিনা তৎসমৎ। ইতীনান্ত শতৎ পূণ রুদ্রজাপকেন তৎসমৎ। রুদ্রজাপকশত্যেকমেকেনাথর্কাঞ্জির স্পাথা-ধ্যাপকেন তৎসমৎ। অথকাঞ্জিরস্থাথাপকশত্যেকমেকেনাথর্কাঞ্জিরস্থাথা-তৎসমৎ। অথকাঞ্জিরস্থাথাপকশত্যেকমেকেন মন্তরাজাধ্যাপকেন তৎসমৎ। অভ্যাঞ্জির পর্বাভিয়ন নামুর্বাভিয়ন নামুর্বাভিয়া নামুর্বাভিয়ন ন

আৰু বিষাধান্ত লোগ নাহান্ত । অগন্ত সংহিতায়াং। সর্কেষ্ মন্তবর্গেষ্ এইং
বৈষ্ণ ধানুত তে । গানপতে বি নৈবেষ্ শালু সৌরেষতা উদং। বৈষণবেদি সালেষ্
রামমন্ত কলাধিকাং। গানপত গানিমন্তের্ কোটিকোটি ওণ ধিকাং। বিনৈব দীকাং
বিশেদ প্রশ্বর্গাং বিনৈষ হি। বিনৈব ন্যাসবিধিনা জপনাতেণ সিদ্ধিদাং। নল্ডেপ্ট
কায়াসকললোহয়ং ষড়করং। ষড়ক কোহয়ং মন্তর্গ মহার্ঘে ঘনিবারণং। মন্তর্গ ইতি
কোলেষং ভুলাচলমিবানলং। কৈন্দিনন্ত দুরিতং পক্ষমাস্ত্র্বর্ধ জং। সর্কাণ দেংতি
নিংলেষং ভুলাচলমিবানলং। ক্রেছত গ্রেছসু বি জ্ঞানাজ্ঞানক ভানি চ। হর্ণ তয়সুরাপানগুরু হল্প যুতানি চ। কোটিকোটি সহসাণি হুগপপাপানি যান্যপি। সর্কাণ্যি
প্রশানিত রামান্ত মুকীর্ত্নাং। ভাপনীয়ক্তিয় চ। য এতভারকং ব্রাক্ষণোনিত মধীতে স্বাণা্যানং তর্তি সম্বাণ তরতি স ভুণ্যত্যাং তরতি স স্বহ্ত্যাং তরতি বি

অথ জীলোপালদের মন্ত্রমাহাত্রং। মন্ত্রান্ত ক্ষণেরস্য সাক্ষাত্ত্বগবিষ্ণের মন্ত্রারবীজন্য সর্বভারবীজন্য সর্বভারবীজন্য সর্বভারবীজন্য সর্বভারবীজন্য সর্বভারবীজন্য সর্বভারবীজন্য সর্বভারবীজন্য সর্বের্ত্তানাং লেকেন্ট্রিক্তন্ত্রা বিশেষাৎ কৃষ্ণমন্ত্রা লোকেন্দ্রক্রাধনং। মন্ত্রমাণ ক্ষেত্রা ক্ষেত্র প্রশালদের ত্রাহা আভিদানন্দ্রিপ্রভাগ আভিদানিক্রণ আভিদানিক্রণ আভিদানিকরণ আভিদানিকর আভিদানিকরণ আভিদানিকরণ আভিদানিকর আভিদানিক

দেবভার বীজ্ঞা ক্রান্ত জন ক্রান্থাদিমরেভ্যোহপি বীর্ষাবস্তমাঃ পরমপ্রভাববৃদ্ধঃ তত্র হৈতঃ নর্বাবভারবীজ্ঞা কৃষ্ণস্ত ভগবান্ স্থামিতাবভারিত্বে জেল ॥ ৮৫॥ তত্র জেলু জীলারকানাখদৈবভালিন্দ্রেশী মধ্যে তথা জীক্র্ছদেবীসাধ গোপলীলয়া নিজাং জগবজাং তথ্কঃ বিস্তাবন্তঃ পতো যে মন্ত্রান্ত এব জ্লেভিড মাঃ। ক্রেছপি মধ্যে ইন্টাদলাক্ষরঃ সং মোহ্বাপায়। প্রশিদ্ধঃ
ক্রেছ ইতার্থঃ। ৮৬॥

অথাতীদশাক্ষরমাহাত্রং । তাপনীয়ঞ্ছিয়ু । ওঁ মুনয়ো হবৈ বাক্ষণমূচ্য কঃ পর্যো দেশঃ কুতোম্ত্রবিভিতি ক্স্য জ্ঞানেন্য থিলং জাত্য ভ্রতি কেনেদং বিশ্বং সংসরতীতি। তানুহোবাচ ব্রাহ্মণঃ। কৃষ্ণে বৈ পরমৎ দৈবতৎ গোবিন্দাম তুর্বি-ভেতি। গোপীজনবল্লভজানেনাখিলং বিজ্ঞাতং ভবতি। স্বাহয়েদং সংমন্ত। ত্যুহোচুঃ। কঃ কৃ দেখগোদিনঃ কোহদাবিতি গোপীজনবল্পভঃ কঃ কা স্বাহেতি। তানুবাচ ব্রাক্ষণ ৷ পাপকর্ষণো গোভূনিবেদবিদিতে৷ বেদিতা গোপীজনাবিদ্যা-কলাথেরকস্ত্রনায়৷ চেতি সকলং পরং ব্রহ্ম তদ্যোধ্যায়তি রস্তি ভঞ্জি সোহমৃতে৷ ভব গীতি৷ তে হোটুং৷ কিৎ ভদ্ৰূপৎ কিৎ রুসনং কথং হো ভডুজনং তৎসর্বং সুবি-বিদিয়তামাখ্যাহাতি। তদ্বোবাচ বৈরণঃ।গোপবেশমন্তাতং তরুণং কপ্সক্রমা-অিডলিভ্যাদ। কিঞা তেতিবাতো। ভক্তিরস্য ভন্তনং ভদিহামুত্রোপাধিনৈরাস্যের-নাস্জিলনংকপেনমেভাদেৰ চ নৈক্ষমতিং কৃষ্ণং তং ৰল্ধা বিপ্ৰা যজন্তি গোৰিলং সত্ত্ বজ্প। ধারয়ত্তি গোপীজনবল্লভো ভ্রনানি দধুে স্বাহাপ্রিভো জগদেজয়ং अरत जो । वात्र्व रेशवाश्यमः अविष्धा अरमा अरमा शक्तिशा वजृत । कृष्ण एरेश-কোলি জগদ্ধিতাগৃৎ শব্দেনামৌ পঞ্চপদে৷ ১বভাতীতি ৷ কিঞ্চ ভবৈবোপা-সদ্বিষ্টিক ব্ৰান্ডৰ্ম । একো ৰশী সর্ল্লঃ কৃষ্ণ উড্য একে।পি সন্ বছধা খেহিত-ভাতি ৷ তথ গাঁচ হং বেংলুহজতি ধারা তেষাৰ সুখ্য শাস্ত্ৰ নেতরেষাম ৷ নিতে ৷ নিভ্যানাৎ চেতনদেচভনানা <mark>মেকো ব</mark>হুনাম যো<sup>ঁ</sup> বিদ্ধাতি কামান্। তৎ প্টিগং যে হ্নুগজতি বিপ্রা ডেফাৎ সিদ্ধিঃ শাশ্বতা নেতরেয়াৎ ৷ এত্রি বিফোঃ প্রমৎ প্রথ নিতে। দ্যুক্তাঃ সংহজন্তে ন কামাং। তেষামসৌগোপৰপং প্ৰহন্তাং প্ৰকাশয়েদার, পদ্ম ভদ্ধের যোত্রাজ্বম বিদ্যাতি পূর্ব্বং যোবিদ্যান্ত সৈ গাপয়তি সাকৃক্ষ। ভং প্রেমাস্মবৃত্তিপ্রকাশং মুমুস্টুর শরণমুৎ ব্রজেত। ওঁকারেণাভরিতৎ যে জগতি গোবিনদে। পঞ্চপদ্ধ মনুধ তং। ভাষা চামৌ দশ্যেদাত্রপথ তথা মুমুকুগ্রভ্য-(मजिञ्रामारेष्ठ १ क्यामत्म । प्रश्निमाम्बूदण् (भाविन्ममः समर्वा मानवाना ५ । मनार्वाः দ্যান্তেপি স্কল্দনাদ্যৈ ভ্সান্তে ভৃতিকামৈৰ্থাব্থ। কিঞ্চ তেবৈ ৷ তদুহোৱাচ ব্রান্নোইসাবন্বরতং মে ধ্যাতঃ স্ততঃ প্রার্দ্রান্তে সোহবর্ধ্যত গোপ্রেশো মে পুরুষঃ পুরস্তাদাবির্ভূব ় ততঃ প্রণতেন ময়ানুক্লেন জদা মহামকীদশার্গ হরুপং স্ফীরে দ্রাহতর্হিতঃ। পুনঃ সিস্কা মে প্রাদুরভূৎ। তেহকরেয় ভবিষাক্রজাজপৎ थाकाश्वर । তिपर कापार्या नार श्थिवी दे छोर्रिवि लाहि मस्द्रीपार दे हैं छ ক্লীৎকারাদস্ত্রও ক্ষণদাকাশং মদায়ুরিত্যভরাৎ সুরভিৎ বিদ্যাৎ প্রাদুরকাষ্ ভদুত্রাভদুত্তরাৎ জ্রীপুমাদিচেদৎ সকল মিদমিতি। তথাচ জীতমীয় ভজে। জীৎকা-রাদস্জ দ্বিখনিতি প্রাহ্ প্রতঃ শিবঃ। লকার। ৎ প্থিবী জাতা ককার জিলসহ বঃ। ঈকারাদ্বক্লিক্ৎপলোদাদাদ্বায়ুরজায়ত। বিন্দোরাকাশসভূতিরিতি ভূতাজকোমনুঃ।

স্বাশকেন চ ক্ষেত্ৰজ্ঞা হৈতি চিৎপ্ৰকৃতিঃ পরা ৷ তরোরৈকাসমৃদ্ধুতিমুখাবেটন বর্কঃ। অতএব ছি বিশ্বস্য লয়ঃ স্বাহার্গকে ভবেং। পুনশ্চ সা শ্রুতিঃ। এছগৈ ব যজনেন চলুপুজোগতমোহনাত্মান্থ বেদয়িত্ব। ওঁক'রাভরালকং মন্মান্ত্রিং। ১৯৮ রহিতে(২৬), সয়ত। তদিলে ও পর্মণ পদং সদা পশাতি সূর্ধঃ। দিবীৰ চকুর।-ভতং। তক্ষাদেনং নিত্যমভ্যেদিত্যাদি। তত্তিবাগ্রে। তদত্ত গাথা। যসঃ পূর্বপদা জুমির্বিতীয়াৎ দলিলেডেফ । ত্তীয়াতেজ উদ্ভূতৎ চত্তথাদান্তবাহনঃ। পঞ্চমাদয়-'तार **পত्তि खरमरेतकर मग**ङ, मन्। छन्तुषु (काशमिति 'या। ३ शतमर भनगत। यर । ততा বিশন্ধং বিমলং বিশোক মশেব লোভাদিনিরস্ত সঙ্গং ৷ ২তং গদং পঞ্চাদং তদেব ল বাসদেৰো ন যতোহন।দন্তি ৷ তানেকং গোবিন্দং সভিদানন্দ্ৰিগ্ৰহং পাঞ্চাদং রকারনাস্রাজুক্তভালাসীনাম সভতা সাহাক্ষাণোলা পরময়া ভাতচা ভোষয়াগাঁভি ! কিলে ৷ স্তত্যনন্তর ২ লেশ্ প্রেপদং সম্ভাগ বর্ত্যেদহঃ স্হাত্রায়াসভঃ কেবলং ख २ । जात झरकक भनरमा जनीरव! न रस्तिवा जाश्नू नन् शृक्षम शांपि जि 11b 9'। उम्मा २ ক সংগ্রবপরোদেবক্ষং ধ্যায়ে ভং রলয়ে ভং যজেদিভেঁগভৎসদিভি ৷ ত্রৈকোক্য সং মোহনতন্তে চ দেবীং প্রতি জীনহাদেবে।ভাবিটাদশাক্ষরপ্রসম্ভব । ধ্মাথিক।ম লে কিবল নীশারো জগদীখরঃ। সন্তি তস। নহাভাগা অবতারাঃ সহসুশাঃ। কেবাং মংধ;১ৰতারাণাৎ বালস্বন্তিগুল্ডিং। অমানুষাণি কয়ণি ভালি ভানি কৃতানি চ। শাপানু এহকত ত্বে যেন সর্লৎ প্রতিষ্ঠিতং। তস্য মন্ত্রং প্রক্রোমি ন্যাঙ্গণাক হন্-

<sup>🕏</sup> ক্ষাটং বৈ প্রশিক্ষং । ত্রাহ্মণং ত্রহ্মবেশারং ত্রহ্মাণ মিতার্থঃ। তৎ ত্রহ্ম দৈবতমিভি পর্ত্ত প্রক্রান্তং বা । পাপকর্মণইতি দ্বিভীয়দ্য পদ্দ্যার্থঃ। গৌঃ স্বর্গঃ গোভূমিবেদেযু বিদিতঃ। তেখাঞ্চ বেদিতেতি তৃতীয়স্যার্থঃ। গোপীজনোহবিদ্যায়ঃ কলাঃ স্ত্রীত্বাৎ অংশাস্তপ্রেরকঃ শদ্বা গোপীজনা এব আ সম্যক্রিদ্যা প্রাপ্যুপায়ত্বাৎ সৈন কলা শক্তিবিশেষ স্থপাঃ প্রেরকইতি চত্তর্ঘ্য। ত্যায়া চেলি পঞ্চমস্যেতি দিক্। রুষতি আস্বাদয়তি কীর্জনাদিনা। এজয়ৎ ঐজয়ৎ চেন্টাং কাবয়াসাস গোপী জনবল্লভ এবেত্যর্থঃ স্ববেতাঃ স্বস্মাদ্দ্ভূভমিত্যর্থঃ। অপঘনং শরীরং। জন্যে জন্যে প্রতি শরীরং। অটাদশাক্ষরোহয়ং মন্তঃ। প্রেটমুবাত্মবৃত্তেঃ প্রকাশো যস্য তং। পাঠান্তরং সূর্বানং। নিভ্য শাইন্য নিত্যারে অবিনশ্বারে শাইন্য সুখায়। অবুধাত প্রবোধং প্রাপ্তঃ। পুনশ্চ স্তুতঃ সন্ প্রাকা-শ্রুৎ ভগবানের। যদ্বা ণিপ্রত্যয়শ্যাত্রানধিকার্থত্বং প্রাকাশতেত্যর্থঃ। প্রাকাশয়মিতি বা পাঠ:। কাৎককারাৎ। আপোজলং। লকারাৎ পৃথিবী। ঈকারাৎ অঘিঃ। বিন্দোঃ সকাশাচ্চন্দ্রঃ। তস্য নাদাদকঃ বাং যকারাদ্বাযুরভূদিতিশেষ। উত্তরাৎ গোবিন্দায়েত্যস্মাৎ সুরভিং গোজাতিং। তদুত্ত-রাৎ গোপীজনেত্যস্মাৎ বিদ্যাশ্চতর্দশ। তদুত্তরাৎ বল্লভেত্যাদিতঃ। বেদয়িত্বা বিদিত্বা। অম্যে-ভ্যোবা বিজ্ঞাপ্য। ওঁকারাম্ভরালকং প্রণবপুটিতমিতার্থঃ। অভিতঃ আনয়ৎ সাধয়ামাস। যদ্য পর্ববেদ।দিত্যাদি চ কম্পান্তরে প্রকার।ন্তরাভিপ্রায়েণ । পূর্ববর্ষাৎ পরামর্শাৎ যদ্ধা পূর্বেষাং র্মশ্থিবিচারাদপীতি।। ৮৭।। বালত্বং শৈশবং চাঞ্চল্যং বা । যেন বালত্ত্বেন হেন্তনা সর্বাই জগৎ শপনে হনু গ্রহণে চ প্রতিষ্ঠাং প্রাপ্তং। তদাল্য চরিতমহিমা বিশ্বমেব স্বার্থশক্তিবিশেষযুক্ত মভদি

রমং। যদ্য বিজ্ঞানমাত্রেণ নরং সর্বজ্ঞতানিরাৎ। পুত্রাথা পুল্লমাপ্রেভি ধনাথা ল ভতে ধনং। সর্কাশ্রেথিপারজ্ঞেভবতের ন সংশয়ং। তৈলোক্য কশীকুর্যাৎ ব্যাক্ শিক্লতে জগং। লোহ্যেৎ সকলং সোহপি মার্যেৎ সকলান রিপুন। বহুনা কিলিহোজেন নৃগ্লুকোক্ষনাপু,য়াং। যথাচিন্তানিং শ্রেষ্ঠা যথা গৌশ্চ যথাস্তী। যথা বিজ্ঞোব্যা গল্পা তথাসৌ মন্ত্র উত্তমং। যথাবদখিলশ্রেষ্ঠং যথা শান্ত্রন্ত বৈক্ষবং। যথা স্বংক্তা বাণী তথাসৌ মন্ত্র উত্তমং। যথাবদখিলশ্রেষ্ঠং যথা শান্ত্রন্ত বৈক্ষবং। যথা স্বংক্তা বাণী তথাসৌ মন্ত্র উত্তমং। চেনা। কিল্কা অতোময়া সুরেশানি প্রভাগ্ত কপা,তে মন্ত্রা। নৈতেন নদ্শং কশিচজ্জগত্য মিন্ চরাচরে। শ্রীসনৎকুমার কাপেলি। গোপালবিষয়ানত্রা ক্রয়ন্ত্রিংশৎ প্রভেদতঃ। তেমু সর্কেয়ু মন্ত্রেয় মন্ত্রোয়াক্র কিলে প্রাচিত্র ভিলা স্বাল্লমান্ত্র স্বাল্লমান্ত্র স্বাল্লমান্ত্র ক্রান্ত্রনাল করে ক্রেনা নিক্রান্তর ক্রান্ত্রনাল করি ক্রান্ত্র ক্রান্ত্রনাল করি ক্রান্ত্র ক্রেনা ক্রিনা ক্রান্ত্রনাল করি ক্রান্ত্রনাল করি ক্রান্ত্রনাল ক্রিলা প্রাচিত । বিলাপি জপমাত্রেণ লভতে স্বালিগিভিভিভি । দক্রা কিলিভোজেন পুরশ্চরণাঘনিঃ। বিনাপি জপমাত্রেণ লভতে স্বালিগিভিভিভি । দক্রা কিলিভোজেন পুরশ্চরণাঘনিঃ। বিনাপি জপমাত্রেণ লভতে স্বালিগালিভিভি । দক্রা ক্রান্ত্রাভ্রেমি প্রকালিভন্তন ও বং নভোছিমি গুরুত্তমাণ্ড বিং । ১০।।

অথাধিকারিনির্বঃ। তান্তিকেণু চ মন্ত্রেষুদীকারাং যোবিভাগিপ । সাধীনামধিকারে। কি শুলাদীনাঞ্চ সন্ধিরাং। তথাচ স্ত্রেথ সারে। পালে চ বৈশাথমালাজ্যে। আনারদায়র্বায়স্থাদে। আগমোজেন মার্গেল স্ত্রিশ্টকৈব পূলনং। কর্ত্ব এলাদ্ধয়া বিল্যে শিচন্থ বিহার পতি শুলা শুলাণাং চৈব ভবতি নামা বৈ দেবতার্চনং। সর্বেচ্চাগম্মা র্গণ কুষ্ট বেদিন সারিণা। স্ত্রীণামপ্যাধিকারো নি বিষ্ণোরারাধনাদি মপতিবিত্ত ক্রিষ্ণ করিন স্থাতিনা প্রিল্যেকাঃ। আগ্রুণ স্বিভারাং। শীরাম্যন্তর ভ্রুদিশা। শুচিত্রত তথা শুল ধার্মিকা বিজ্যেককাঃ। ব্রিয়ঃ পতিত্র ভাশ্চানের প্রতিলোমানুলামজাঃ। লোকাশ্চাণ্ডালপর্যান্তাঃ সর্বেপ ক্রিধিকারিণ ইতি ।। ৯১ ।। গুরুশ্চ সিদ্ধসাধ্যাদি ক্রম্বানে বিচার্যের্থ। স্ব্রুলানা কুলত্বক বালপ্রেট্রমেবচ। স্ত্রীপুণ্ড নপ্রসক্রম্ব রাশিনক্ষ্রান্মলন্থ। সুপ্রপ্রবোধকালক্ষ তথা ঋণধনাদিকং।। ৯২ ।।

ভার্থঃ। শ্রেষ্ঠঃ সর্বার্থশাধনে পরনোন্তমঃ। যথাচিন্তামণ্যাদয়ঃ সর্বার্থসাধকাঃ তথা মন্ত্রোন্তমোহদৌ অন্টাদশাক্ষরমন্ত্রোহিপি স্বার্থসাধকইত্যর্থঃ। যদ্বা যথা মণিযু চিন্তামণিঃ শ্রেষ্ঠঃ গোষু গৌঃ কাম-ধেনুঃ যদ্বা পশুরু গৌঃ নারীষু চ সভী বর্ণেষু বিপ্রঃ নদীষু গঙ্গা তথাসৌ মন্ত্রেষ্ঠ্রমঃ ইত্যথঃ এবমগ্রেপি। যথাবৎসমাক্তয়া অথিলেষু শাস্ত্রেষু শ্রেষ্ঠং।। ৮৮॥ মুনিপুঙ্গর হে নারদ।। ৮৯॥ এবং তত্ত্বনাহাত্বালিখনে হযোগ্যস্যাপ্যাত্মনো ভগবন্মহামহিমা যোগ্যতাং সম্ভাবয়ন্ পরমগুরুং শ্রীভগবন্তং প্রণমতি প্রভূমিতি॥ ৯:॥

সন্ধিয়াং উত্তমবুদ্ধীনাং বিপ্রসেবাদিপরাণামিত্যর্থঃ। ১১॥ রাশিমেলনং নক্ষত্রমেলনঞ্চ। আদিশব্দেন রাশিশুদ্ধি রিত্যেব মন্টধা শোধনং ক্তেয়ং।। ১২।।

অথ সিদ্ধসাধ্যাদিশোধনং। শারদাতিলকে। প্রাক্ প্রভাগেপ্রারখাঃ সুঃঃ পদ্দ যাম্যোত্তরাপ্রগাঃ। তাবত স্চ চতঃ কোষ্ঠ চন্তক্ষং মণ্ডলং ভবেৎ।। ৯০।। ইন্দ্রি-ক্ষনবনেত্রবৃগেন দিক্ষ্ খাত্বই বাড়শচন্তর্দশভৌতিকেরু। পাতাল পঞ্চশশ বাজুহিমাৎ শুকোষে বর্গা রিখেরিপিভবান ক্রমশন্ত ধীমান।। ৯৪।। জ্যার্কাক্ষরতোবীক্ষ্য যাব আন্তাদিমাক্ষরং। চন্তর্ভিঃ কোষ্ঠকৈন্তেক মিতিকোইচত্ইয়ে। পুনঃ কোষ্ঠককোষ্টেষ্ মক্তো জন্মভাক্ষরাহ। সিদ্ধসাধ্যসুসিদ্ধারিক্রমান্তর্যা বিচক্ষণা। ৯৫।। সিদ্ধঃ সিধ্যতিকালেন সাধ্যন্ত জপহে মতঃ। সুসিদ্ধোগ্রহ্যা ত্রণ ভরিমূল নিক্তনঃ।। ৯৬।।

যদ্যপ্যেতৎ সিদ্ধ সাধ্যাদিজ্ঞানং মুদ্রাদর্শনপ্রকারবদ্বিনা গুরুমুখাৎ সম্যক্বিজ্ঞাতং ন স্যাৎ তথাপ্যক্র'শব্দার্থ এব কেবলং লিখ্যতে । তথাহি। প্রাঞ্চি পূর্বাণি প্রত্যঞ্জি পশ্চিমানি অগ্রাণি যাসাং তাঃ পূর্বাপশ্চিমাভিমুণা উদ্ধাঃ পঞ্রেখা লেখ্যা ইত্যথঃ। তথা বাম্যোত্তরাপ্রগাঃ দক্তি-ণোক্তর মুখান্তাব ত্যঃপরিঞ্চ রেখাঃ উর্জরেখোপরি সমকে: ঠাতি প্রায়েণ তির্যাশ্লেখ্যা ইত্যথঃ। ভতশ্চ চত্ত্বারি কোষ্ঠচন্তক্ষানি যশ্মিন্ তথা ভূতং মণ্ডলং ভবেৎ। এবং চত্ত্বভিঃ কে:টেষ্ঠরেকং কে।ঠং জ্ঞের মিত্যেবং চত্ত্বারি কোণ্ঠানি মুখ্যানি ভবস্তি। পুনশ্চ একলৈয়বাবান্তরকোণ্ঠানি চত্ত্বারীভোক ষোড়শ কোষ্ঠানি ভবন্তি। তদ্রাপমেকং চাত্তরসূং মণ্ডলং স্যাদিত্যপঃ। এতচ্চ দীফাম ওলাদিবলা-বৈষুধ মণ্ডলং নপ্ত মণ্ডলাকারং চপ্তক্ষোণস্থাৎ॥৯৩॥ তিন্দ্রিমাণ্ডলে চ যথ কর্মব্যং ভদাহ ইন্দ্রি। লিপিভবান্ বর্ণান্ অকারাদি ক্ষকারান্তপঞ্চাশদক্ষরাণি। যত্না ককার্যকারসংযোগনিদ্ধ ক্ষার ব্যতিরিক্তোন্পঞ্চাশদ্বন্ন্। ইন্দ্রাদিসংখ্যাদক্ষেতিতেষু কোঠেছু ক্রমশঃ অকারাদিক্রমেণ ইন্দ্রান দিক্রমেণ চ লিথেৎ। তত্র ইন্দুশ্চন্দ্র একঃ। তিসান্ আদ্যে কোঠে অকারং লিথেদিতার্থঃ। এবং অথ্যে তৃতীয়ে আকারং। রুদ্রে একাদশে ইকরং। ইণে সূর্য্যে দ্বাদশ:কাঞ্চে। ভৌতিকে পঞ্মে মহাভূতপঞ্কত্বাৎ । বহুয়স্তায়ঃ হিমাংশুরেকঃ অঙ্কণা বামগতিত্বাদ্হিহিমাংশুভাগং দ্বাভাগং ত্রয়োদশৈতি জ্যেং তত্ত্রশত ত্রোদশে কোষ্ঠে অকারদ্য যোড়শবর্ণং অঃ ইতিবর্ণং লিখেদিতার্থঃ। পুনস্তবৈধৰ প্রথমকোষ্ঠে ককারইত্যেবং যাবছণাবনী সমাপ্তি পুনঃ পুনর্লিখেং। এবমেৰ এক্তি দেবাচার্যোণাপি নৃসিংহপরিচ্যাগ্রন্থে লিখিতং। আদ্যায়ীশগ্রহাকানি সূর্যাদিগ্রসদিগ্রজাঃ। কলামলিষু সপ্তাহবিশ্বে বর্ণান্ পুনর্দেদিতি ॥ ৯৪ ॥ ততঃ শিষ্যা ইজ্মনক্তান্কপ্নামা-দ্যাক্ষরং নামপ্রথমাক্ষরনিত্যর্থঃ মধ্যদেশাদাবতঃ প্রায়োজন্মনক্ষতানুরূপ নামাদ্যাক্ষরকরণাং। তস্মাদারভা মস্ত্রসা আফ্সা আদিমাক্ষরং আদাবর্ণং যাবৎ বীক্ষাং বিচারয়িতবাং। যদা সিদ্ধাদি গণনয়া গুণদোষাদিকং দ্রষ্টব্যমিত্যর্থঃ। কথং কুত্র তদাহ। চন্তর্ভিঃ কোষ্ঠেরেকং কোষ্ঠং দ্রুষ্টব্যং এবং তমগুলে কোষ্ঠচত্ত উয়ং সাং। ত স্মিন্প্রথমং বীক্ষা। যুদ্ধা সিদ্ধাদিক্রমা জেয়া ইত্য-নেন পরেণাম্বঃ। পশ্চাত্তৎকোষ্ঠচন্ত্রইয়্স্য যান্যবাস্থ্রাণি কোষ্ঠানি যোড়শ তেষু চ জ্ঞেয়াঃ ইতি প্রকারম্বয়ং। তচ জন্মনক্ষত্রাক্ষরাৎ সব্যতঃ বামগত্যেতার্থঃ। অভএবোক্তং এক্ষণেবা-চার্যোণ তবৈর । সব্যে নামান্যাক্ষরতঃ সিহ্নাদিক্রমইষ্যতইতি । সিদ্ধাদিকোর্যথানং চ তে देनव দর্শিতং । নবৈকপঞ্জিঃ সিদ্ধঃ সাধাঃ ষড়্দশপঞ্কৈঃ । সুসিদ্ধস্ত্রিসপ্তরু দৈস্তর্গাই দাদ-শৈরিপুরিতি।। ৯৫।। তত্ত্বচ গণনয়া সিদ্ধাদিস্থানং প্রাপ্তে সতি মন্ত্রাদ্যক্ষরে যৎফলং স্যাৎতদাহ বিশ্ব ইত্যাদি পঞ্জি:। এইং এইণং তুমাত্রেণ অচিরাদেব বিধ্যতীত্যর্থ:॥ ১৬॥

निक्षिनित्का यथार्जन विक्रगां निक्षमांथकः। मिक्षमुनित्का वर्कक्षां निक्षाति विक्र বান্ধবান্। সাধ্যসিদ্ধোদিগুণিকঃ সাধ্যসাধ্যোহ্যন্থ কঃ। তৎ সুসিদ্ধ স্ত্রিগুণিতাৎ সাধ্যারিইপ্তি গোত্রজান্। সুসিদ্ধসিদ্ধোহদ জপাত্তৎ সাধ্যস্ত গুণাধিকাৎ। তৎ সুসি-দ্ধো গ্রহাদেব সুসিদ্ধারিঃ স্থান্ছ। তারিসিদ্ধঃ স্ভান্ছন্যাদ্রিসাধ্যস্ত কন্যকাঃ। তৎ সুসিদ্ধস্ত পত্নীঘু স্তদ্ধিহন্তি সাধকমিতি।। ১৭।। অস্য চ মন্ত্রবিশেষেইপ বাদঃ ।। ১৮।। তথাচ ভত্তে।। নৃসিৎহার্কব্রাহাণাৎ প্রসাদপ্রণব্স্য চ। বৈদিক্স্য চ মন্ত্রদ্য সিদ্ধাদীরৈব শোধয়েং। সুপুলব্ধে ব্রিয়াদত্তে মালানন্তে চ ত্রাঞ্চরে। একা-ক্ষরে তথা মল্রে সিদ্ধাদীয়ৈব শোধয়েৎ। স্বকুলান্যকুলত্বাদি বিজ্যেং চাগমান্তরাৎ। न विख्र ज्यापित वार्थ ज्ञापि निया जि ॥ ३३॥ श्रीम काए ना निया के स्वी প্রদর্শিক। তাদ্ক্ শক্তিষু মন্ত্রেষু নহি কিঞ্ছিচার্য্তে।। ১০০।। তথাচ ক্রমদীপি-কারা । সর্বেষু বর্ণেষু তথা শ্রমেষ্ নারীষু নানাম্বয়জনতেষু। দাতা ফলানামভিবাঞ্ছি-ভানাৎ দ্রাগের গোপালকমন্ত্র এষ ।। ১০১ ।। ত্রৈলোক্য সম্মোহনতত্ত্ব চ। अঊ।দশা-ক্ষরমন্ত্রমধিক্ত; এ শিবেনোক্তৎ। নচাত্র শাত্রবাদোষা নর্গ স্থাদিবিচারণা। अक्ষরা-শিবিচারোবান কর্ত্রোমনৌ প্রিয়ে। কেচিডিছয়াশ্চ রুদ্ধাশ্চ কেচিমদসমুদ্ধতাঃ। মলিনাঃ স্তম্ভিত ঃ কেচিং কীলিতা দূষিতা অপি। এতৈর্দৌষৈযু তোনায়ৎ যত স্ত্রিভুব-নোভ্ৰমা ইতি ৷৷ ১০২ ৷৷ সামান্তশ্চ যথা বৃহক্ষোভনীয়ে ৷৷ অথ স্ক্ষন্ন্ वाका पके प्रकेषन थपान्। यान् वि विकास मूनासात्नि जित्र मुक्तिमक्षमा। शृहस्य दनश

ত্রবং চান্তঃকোষ্ঠ ব্যবস্থাকলম্জ্যুভধুনা ভদবাস্তর ষোড্শ কোষ্ঠ ব্যবস্থা পর্বাপরাভ্যাং চান্ত্রকান্যোন্য সংযোগেন কলমাহ সিদ্ধসিদ্ধইতি চপ্তভিঃ। তৎ সুসিদ্ধঃ সাধ্যস্সিদ্ধঃ। তৎসাধ্যঃ সৃসিদ্ধ
সাধ্যঃ। তৎ সৃসিদ্ধঃ সুসিদ্ধস্পিদ্ধঃ। এবমগ্রেপি ॥ ১৭॥ অস্য এবমুক্তস্য সিদ্ধাদিশোধনস্য ॥৯৮॥ ॥৯৯॥ ব্যর্থত্বে হেন্তং লিখিতি শ্রীমদিতি। তাদুশী শ্রীগোপালদেবসদৃশী শক্তি
র্যেথাং তেষ্॥ ১০০॥ ব্যর্থত্বে হেন্তং লিখিতি শ্রীমদিতি। তাদুশী শ্রীগোপালদেবসদৃশী শক্তি
র্যেথাং তেষ্॥ ১০০॥ নানাবিধাআক্রয়া নামানি ক্সন্তানি চ ক্ষমনক্ষত্রানি যেবাং বর্গাদীনাং
তেম্পি। যদ্ধা তেবাং নানাক্ষ্মজন্মতেষ্ সংস্থপিএয শ্রীগোপালমন্ত্রাইতিবাঞ্জিতানাং কলানাং
ক্রমপি। যদ্ধা তেবাং নানাক্ষ্মজন্মতেষ্ সংস্থপিএয শ্রীগোপালমন্ত্রাইতিবাঞ্জিতানাং কলানাং
শীর্মের দাতা।।১০১॥ অত্র অস্মিন্ মত্রে শাত্রাহাং দিয়ানাহ কেচিদিতি। উক্তঞ্চ ছিন্নাদীনাং লক্ষণং শারদাতিলকে। মনোর্যসাদিমধ্যান্তেম্বানীলং বীক্ষমুচ্যতে। সংযুক্তং বারিযুক্তং
বা স্বরাক্রান্তং বিধা প্রঃ। চন্তর্ধা পঞ্চধা বাথ সমন্ত্রশিক্ষমংক্তকঃ। মায়া নমামি চ পদং নান্তি
বিস্থিন্ স কীলিভঃ। একং মধ্যে দ্বাং মুর্দ্ধি বিদ্যান্ত্রপুরন্দরৌ। নবিদ্যেতে স মন্তঃ স্যাৎস্তন্তিভঃ
সিদ্ধিরোধনঃ। আদিমধ্যাবসানেষ্ ভবেদণ্ঠস্তক্টমং। যস্য মন্তঃ সমলিনো মন্ত্রনিতইভ্যাদি। অয়মন্ত্রাদশাক্ষরঃ শ্রীগোপালসন্তঃ॥১০২॥ এবংসন্থোছনভন্তবাদ্যুক্তপ্রকারেণ। অন্যেযুক্তীগোপালদেৰ

শৈচব যতয়োব্রহ্মচারিণঃ। ব্রিয়ঃ শূরাদয়শৈচব সর্বে যত্রাধিকারিণঃ। নাত্র চিন্ত্যাইরি শুক্রাদিনারিমিত্রাদিলকণং। নবাপ্রমাসবাজ্ল্যং সাধনে ন পরিশ্রমঃ। অজ্ঞানতূল্রাশেশ্চ অনলঃ ক্ষণমাত্রতঃ। সিদ্ধসাধ্যসুসিদ্ধারিকাপা নাত্র বিচারণা। সর্বেষাৎ সিদ্ধমন্ত্রাণাৎ যতো ব্রক্ষাক্ষরে। মনুঃ। প্রজ্ঞাপতিরবাপাত্র্যং দেবরাজ্যং শচীপতিঃ। অবাপুস্ত্রিদশাঃ স্বর্গং বাগীশত্বং বৃহস্পতিরিত্যাদি। তথাত্রৈবান্তে। বিষ্ণুভক্ত্যাবিশেষেণ কিং ন সিধ্যতি ভূতলে। কটিাদি ব্রহ্মপর্য্যতং গোবিন্দানুগ্রহামুনে। সর্বেসম্পত্তিনিলয়াঃ সর্বত্রাপ্যক্রতাভয়াঃ। ইত্যাদি কথিতৎ কিঞ্চিন্মাহাত্ম্যং বো মুনীশ্বরাঃ। আকাশে তারকা যধুৎ সিন্ধোঃ সৈক্তস্ফিবং। এতদ্বিজ্ঞানমাত্রেণ লভেন্মু জিৎ চত্তিবিধাং। এতদনেরমু মন্ত্রেমু দোষাঃ সন্তি পরে চ যে। তদ্ধ বিস্তুসংক্ষানরালিখ্যন্তে তন্ত্রতো দশা। ১০৩।।

অথমন্ত্রসংক্ষারাঃ। শারদাতিলকে। জননং জীবনঞ্চেতি তাড়নং রোধনং তথা।
অথাভিষেকোবিমলীকরণাপ্যায়নে পুনঃ। তপ্রণ দীপনং গুপ্তিদ শৈতামন্ত্রসংক্ষিয়াঃ। মন্ত্রাণাং মাতৃকামধ্যাদুদ্ধারো জননং স্মৃতং। প্রণবাস্তরিতান্ ক্ষা মন্ত্র
বর্ণান্ জপেৎ সুধীঃ। এতজ্জীবনমিত্যাক্সমান্ত্রতন্ত্রবিশারদাঃ। মনোবর্ণান্ সমালিখ্য
তাড়রেচন্দনাস্ত্রসা। প্রত্যেকং বায়ু না মন্ত্রী তাড়নং তদুদাক্তং। বিলিখ্য মন্ত্রং তং
মন্ত্রী প্রসূন্ধার্কা। প্রত্যেকং বায়ু না মন্ত্রী তাড়নং তদুদাক্তং। বিলিখ্য মন্ত্রং তং
মন্ত্রী প্রসূন্ধার্কা। অখ্যপলবির্মান্তর্নাদ্যন্তেন রোধনং। স্বতন্ত্রোক্ত
বিধানেন মন্ত্রী মন্ত্রাণিক্ষ্পায়া। অখ্যপলবির্মান্তর মভিষিঞ্চেক্ষিল্লয়ে। সংচিন্ত্র মনসা
মন্ত্রং জ্যোতির্মান্ত্রা। অখ্যপলবির্মান্তর মন্তিষিক্ষান্তর ক্রেনালকেন ক্রেনা প্রত্যাত্র ক্রেনালিক্ষান্তর মন্ত্রা বিমলীকরণং ছিদং। তারব্যোমারিমন্ত্রগ্রেণ জ্যোতির্মান্ত্রণ কুলোদকেন ক্রেনা প্রত্র তর্পন্থ তর্পন্থ মন্ত্রং।
তেন মন্ত্রেণ বিধিবদেতদাপ্যায়নং স্মৃতং। মন্ত্রেণ বারিণায়নে তর্পন্থ তর্পন্থ অপ্রকাশন্তর বিধিবদেতদাপ্যায়নং স্মৃত্য বা জপ্যমানস্য মন্ত্রস্য গোপনং স্বপ্রকাশন্তর বিলিহ্নিত্র বা । ।। ইতি জ্বীগোপালভত্তবিলিহিত্তেভগবডুক্তিবিলাসে
সৌরবোনাম প্রথনোবিলাসঃ

জ্যোতির্মরেণেত্যুক্তং ভ্রেবাহ তারমিতি। ব্যোম্যেত্যাদিনা তত্তদ্বীকং বোধ্যতে। এবমগ্রেন্ মায়াদাবপি।। •।। ইভিঞ্জিগবস্তুজিবিলাসটীকায়াংদিগ্দর্শিন্যাংপ্রথমোবিলাসঃ

মত্রব্যতিরিক্তেনু। পরে নিজাদিশোধনোক্তদোষতোধন্যপিছিন্নত্বাদয়:। তদর্থমিতি। যেকেচি-দন্যমত্রনাধকাভবেয়ু স্তেষাং তদ্ধোধশোধনার্থ মিত্যর্থ:। তচ্চ তাৎপর্য্যেণ শ্রীগোপালদেব্যক্ত মাহাত্ম্য বিধ্যাপনার্থ মেবেভিভাব:। তত্তভাগমশাদ্ধোক্তাইত্যর্থ:॥ ১০৩॥

## অথ দ্বিতীয় বিলাসঃ ৷

তং শ্রীমংক্ষ্ণ চৈতন্য দেবং বন্দে জগদ্গুরুং। হস্যানুকম্পায়া স্থাপি মহাব্রিং সন্তরেৎ সূথং ।। ১।৷ অথ দীক্ষাবিধিঃ। দীক্ষাবিধিলিখ্যতেইতানুস্ত্যক্রমদী-পিকাং। বিনা দীক্ষাং হি পূজায়াং নাধিকারোইস্তি কস্যচিৎ ।। ২।।

অথ দীক্ষানিত্যতা। আগমে। দিলানা মনুপেতানাং স্বক্ষাধ্যয়নাদিষু ।
বথাধিকারোনান্তীহ স্যাচ্চোপনয়নাদনু । তথাত্রাদীক্ষিতানাং ত মন্তদেবার্থনাদিষু ।
নাধিকারোহত্যতঃ কুর্য্যাদাস্থানং শিবসংস্থতং । স্কান্দে কার্তিকপ্রসঙ্গে জীব্রন্ধনারদ
সংবাদে । তে নরাঃ পশবোলোকে কিং তেষাং জীবনে ফলং । যৈর্ন লক্ষা হরেদ্য ক্ষা
নার্চিতোবা জনাদ্দ নঃ ।। ত ।। ত তৈবে জীক্র্যাঙ্গদমোহনীসংবাদে বিষ্ণুহামলেচ ।
আদীক্ষিত্স্য বামোরু কৃতৎ সর্মাৎ নির্থাকং । পশুযোনিমবাপ্রোতি দীক্ষাবিরহিতো
জনঃ ।। ৪ ।। বিশেষতোবিষ্ণুযামলে । সুহাদ্বা লোভতো বাপি যোগৃহীয়াদদীক্ষরা।

নমঃ জীকুফায়ভগবতে ভদ্রবনচন্দ্রা। অন্ধঃপশ্যতি শাস্ত্রাণি শিলা তরতি বারিধিং। যস্য প্রভাবতো বন্দে তং জীচৈতন্যমীশ্বরং। কর্জব্যাংশস্য বিজ্ঞানমবশ্যং সম্যাগয়তে। অতোয়স্তক্রশক্ষি প্রোগ্রন্থ লোক্ষয়ং প্রপঞ্চতে। ত্রাদৌবিবিধমতাকুলিতদীক্ষাবিধিলিখনে প্রমাশক্তস্যাপ্যাত্মনোভগবদনু গ্রুহেণ শক্ততাংসম্ভাবয়ন্নিব প্রারিপ্রিতিদিদ্ধায়ে পূর্ব্ববং গুরুত্রপমিষ্ট দৈবতং প্রণমন্তি তমিতি। জ্রীমান্ কৃষ্ণভাসৌ চৈতন্যদেবক্ষ পরমাত্মেতি তং পক্ষে জীকুফ্টেচতন্যেতি বিখ্যাতং দেব মীশ্বরং। সাক্ষাত্তগোপদেই বাসম্ভব্রত্যান্ত্রবেপি চিন্তাধিষ্ঠাত্ত্রাদিনা সর্ব্বেষামপি জীবানাং পরমগুরুত্যান্ত্রাণি স্থাবিশুরুত্রিকাত্ত্রাদিনা সর্ব্বেষামপি জীবানাং পরমগুরুত্যান্ত্রাণি স্থাবিশুরুত্বিত জগদা্রুমিতি পক্ষে সর্ববৈত্র ভগবন্নামনংকীর্ত্তনপ্রধান ভক্তি প্রচারণাজ্জগতাং গুরুত্বেন বিশেষতোদীনজনবিষয়কসমগ্রোপদেশানুগ্রহেণ গুরুমিতি॥।। ক্রমদীপিকামনুস্ত্যেতি জীকেশবাচার্য্যবিরচিতক্রমদীপিকাখ্যগ্রন্থোক্তানুসারেটণ্ড । নতু তদুক্ত বিরোধেনেত্যগ্র্যা দীক্ষাবিধিলিখনে হেন্তঃ বিনেতি। হি যতঃ॥ ২॥

অনুপেতানাং অক্কতোপনয়নানাং। উপনয়নাং যজ্ঞোপবীতদানাং অনু অনন্তরং তু অধি-কারঃ স্যাদের। শিবসংস্থত মিতি দীক্ষিতমিতার্থঃ। প্রধানত্বেন শ্রীবিফুদীক্ষাগ্রহণাং শ্রীশিব-স্যাপি সম্যক্সতিবিষয়মিতিভাবঃ। এবঞ্চ দীক্ষাং বিনা পূজায়ামনধিকারাং। তথা শালগ্রাম শিলাপূজ্ঞাং বিনা যোহশাতি কিঞ্চন। সচাণ্ডালাদিবিষ্ঠায়ামাকণ্পং জায়তে ক্রমিরিত্যাদিবচনেঃ পূজায়াক্ষবেশ্যকত্বাদীক্ষায়ানিতাত্বং বিধাতি। শ্রীশালগ্রামশিলাধিষ্ঠানং বর্গেরু মুখ্যত্বাং সর্বা-ণ্যেব ভগবদ্ধিষ্ঠানানুপলক্ষয়তি॥ নিতাত্বমেব ভ্রন্মবচনেন সাধ্যতি তে নরাইতি। জনার্দ্ধনো- বৈর্গিতিভঃ ইতি দীক্ষাং বিনা হর্জনাসিক্ষেঃ॥ ৩॥ ৪॥ অদীক্ষয়া দীক্ষাবিধিবাতিরেকেণ। দেব-তানাং সর্বাসামেব। তম্মধাধিষ্ঠাভ্দেবভায়া বা শাপঃ। যদ্যপি পূর্বাং নিথিভায়াঃ শ্রীগুরুপগত্তে-

তিমিন্ গুরো সশিষ্যে তাদেবতাশাপ আপত ।। ৫।। বিষ্ণুরহস্যে চ। অবিজ্ঞায় বিধানোক্তাৎ হরিপুজাবিধিক্রিয়াৎ। কুর্মন্ ভক্ত্যা সমাপ্নোতি শতভাগৎ বিধান নতঃ।। ৬।।

অথ দীক্ষামাহাত্ম্য বিষ্ণুযামলে। দিব্যং জ্ঞানং যতোদদ্যাৎ কুর্য্যাৎ পাপস্য সংক্ষয়ং। তন্মাদ্দীক্ষতি সা প্রোক্তা দেশিকৈন্তত্ত্বকোবিদৈঃ। অতাগুরুৎ প্রণ-বৈশ্বং সর্বস্থে বিনিবেদ্য চ। গৃহ্লীয়াদ্বৈক্ষবং নত্ত্বং দীক্ষাপূর্বং বিধানতঃ। স্কান্দে। তথি বিনিবেদ্য চ । গৃহ্লীয়াদ্বৈক্ষবং নত্ত্বং দীক্ষাপূর্বং বিধানতঃ। স্কান্দে। তথি বিভাগ কম্মনিষ্ঠাঃ শ্রেষ্ঠান্তে বৈ নরা ভুবি। প্রাপ্তা বৈশ্ব হরেদীক্ষা সর্বাদ্ধানা। তত্ত্বসাগরে চ। যথা কাঞ্চনতাৎ যাতি কাংস্যং রসবিধানতঃ। তথা দীক্ষা বিধানেন দ্বিজ্বং জায়তে নৃগাং।

শব্দ নিকাকালঃ। তত্র মাসশুদ্ধিঃ। আগমে। মন্ত্রমীকরণং চৈত্রে বহুদুঃখফল প্রদং। বৈশাথে রত্নলাভঃ স্যাইজ্ঞ্যে তুর্মরণং ধ্রবং। আযাঢ়ে বন্ধুনাশায় আবণে ত ভয়াবহং। প্রজাহানিভাঁত্রপদে সর্বত্র শুভুনাখিনে। কার্ত্তিকে ধনবৃদ্ধিঃ স্যান্মার্গার্মি শুভুপ্রদং। পৌবে তু জ্ঞানহানিঃ স্যান্মাহে মেধাবিবদ্ধ নিং। ফাল্ডুনেসর্ব্যবশ্যে মাচার্যিঃ পরিকীর্ত্তিৎ।। ৭।। কুচিচ্চ। সমৃদ্ধিঃ প্রাবণে নূনং জ্ঞানংস্যাৎ কার্ত্তিকে তথা! ফাল্ডুণেপি সমৃদ্ধিঃ স্যান্মাসং পরিভ্যক্তেৎ। গোত্তমীয়ে। মত্রারম্ম চৈত্রে স্যাৎ সমস্ত পুরুষার্থ দিং। বৈশাথে রত্ত্রনাভঃ স্যাৎ ক্যৈতে মুরণং ক্রবং। আন্বাচ়ে বন্ধুনাশাঃ স্যাৎ পূর্ণায়ুঃ আবণে ভবেৎ। প্রজানাশো ভবেৎ ভাত্রে আখিনে রত্ত্রসঞ্চয়ঃ। কার্ত্তিকে মত্রসিদ্ধিঃ স্যাৎ মার্গানিহি তথা ভবেৎ। পৌষেত্র শত্রপীড়া স্যাৎ মাঘে মেধা বিবন্ধ নিং। ফাল্ডুণে সর্ব্রকামাঃ স্যুর্মলমাসং পরিভ্যক্তেৎ। ক্যান্দে তব্রেব জ্ঞিক্যান্থদ মোহিনীসংবাদে। কার্ত্তিকে ভ ক্তাদীক্ষা নৃণাং জন্মনিক্স্তনী। ভক্ষাৎ সর্ব্বিত কার্ত্তিকে ইভি।। স্থা জ্ঞামদোগীলমন্ত্রাণাং

নিতাতয়া দীক্ষায়াঅপি নিতাতা দিকৈব তথাপুপেদত্তেরাশ্রয়ণমাত্রতা বিবক্ষয়। দীক্ষায়াশ্চ
দবিধিমন্ত্রহণাদিরপভয়। প্থগুল্লেথহতি দিক্॥৫॥ ননু যথাকথঞ্চিত্রগবদর্চনেন মহাফলং
ক্রায়তে অতোগুরোঃ দকাশাদ্দীক্ষাগ্রহণে কোহয়মাগ্রহঃ তত্রাহ অবিজ্ঞায়েতি। হরিপূজাবিধেঃ
ক্রিয়ামনুষ্ঠানংবিধানোক্রাং পূর্ব্বপূর্বৈরুপদেষ্ট্রির্যথাবিধ্যেবোপদিষ্টাং ত্রীগুরুমুখাদবিজ্ঞায়
বিশেষেণাজ্ঞাত্রা বিধানতোভক্ত্যাকুর্বরূপি শতাংশানামেকমংশং লভতে। গুর্বনপেক্ষয়া পূর্ববিশ্বিদিষ্টদর্শিত্যার্গানাদরেণ পূজাফলং ন দম্যগ্রবতীতিভাবঃ॥ ৬॥

নিতাত্বনের দ্রুলন্ নিতাত্বপি দর্শপৌর্ণাদাদিবৎ কলবিশেষথা দর্শর্ন্ দীক্ষামাহাত্মাং লিখতি দিবামিতি ত্রিভিঃ। তপস্থিন ইতি। শ্রেষ্ঠা জ্ঞানাদিনিষ্ঠেভাঃ পরমোন্তমাঃ। নৃণাং সর্বেষা-মেব। দিজত্বং বিপ্রতা।।।।। ক্রচিচেতি অগস্তাসংহিতাদানুসারি শ্রীরামার্চনচন্দ্রিলায়াং। পূর্বো-জেনাবিরোধস্ত মন্ত্রভেদেন বিবিধফলভেদাপেক্ষরা মতভেদেন বা জ্ঞেয়ঃ এবমগ্রেপি।। ৮।। এবং নিষিদ্বেপি হৈতে শ্রীগোপালমন্ত্রদানন্দ্রানাতি শ্রীমদিতি। যদ্যমান্তেষাং শ্রীগোপাল স্বাণাং দীক্ষা ভত্ত হৈত্রএব উক্তা শ্রীকেশবাচার্যাদিতিঃ। তথাচ ক্রমদীপিকায়াং। চৈত্রে কৃত্যেব

मीकाशांश्व न मूर्। कि । रेडजमारन समुख्या ककीका कर्रवंद समिरेकः ॥ ৯ ॥ व्यथ वात्रस्यक्तिः । तरवो स्टर्जा स्था लाग्य कर्रवः भ वृथस्यकात्राः ॥

অথ নক্ষত্রশুদ্ধিঃ। নারদতন্তে। রোহিনী অবণার্ক্সচি ধনিষ্ঠাচোন্তরান্তরং। পুষ্পং
শতভিষ্ঠেতব দীক্ষা নক্ষত্র মুচ্যতে। কৃচিচ্চ। অখিনী রোহিনী খাতি বিশাখা হস্তভেষ্চ। জ্যেষ্টের্যাত্রশ্বের কুর্য্যান্ত্রাভিষ্টেনং।। ১০ ।।

चय िथिन्धिकः। मात्रम्श्वरः। विजीया श्वमो देव वकी देव विश्वप्यकः। वारमाग्रमि कर्ज्ञ वाद ज्ञारमाग्रम्थानि । कृष्टिकः। शृतिमा शक्षमो देव विजीया मध्यो ज्या। ज्ञारमाने एम्प्यो श्वम्खा नक्षकायमः। ইजि। अवद स्वक्ष दिन स्क शक्ष स्कुरुक्तरया। महाराजन्युजातानुकृ स्व मोका श्वमाग्रका। ১১।।

व्याजाभनामः । क्रज्यामरम । मछीर्थं क्रविधू आरम उन्हण्यममभर्कालाः ।

मजनीकाः श्रक्को ज मामकां मि न स्माध्याः ।। १ ।। मूनग्रम् जामिनन प्रज्ञ गरेमन दि। निका क्रज्ञ मिर्ना मुर्ग्। अस्प दि। निका क्रज्ञ मिर्ना मुर्ग्। अस्प दि। निका क्रज्ञ मिर्ना ज्ञ यम। क्रज्ञ मुर्ग्। अस्प दि। निका क्रज्ञ मार्ग्य। व्याप क्रज्ञ मार्ग्य। व्याप क्रज्ञ मार्ग्य। व्याप क्रज्ञ महा क्रज्ञ विश्व विश्

অথ মন্ত্ৰপনিমাণিবিধিঃ। ক্ৰিয়াবত্যাদিভেদেন ভবেদীকা চত্তৰিধা। তত্ৰ ক্ৰিয়াবতী দীকা সংক্ষেপেণৈৰ লিখ্যতে ।। ১৬ ।। ভূমিৎ সংস্কৃত্য ভস্যাৎ চাচ্চ-

তথানি কর্মেতি। বৈলোক্যনশোহনভত্তে চ। মধুমানে ত সংপ্রাপ্তে দাদশ্যং সমুপোষিতঃ। আপূর্য্যমাণপক্ষে ত সংশ্রদ্ধ ভাবশ্বেত ইতি॥ ১॥

অখিন্যাদিনক্ষত্রেশ্বত্র পূর্ব্বোক্তেন বিরোধাজ্ঞাবেপি ততোবিশেষলাতেম কৃষ্টিচেতি প্রয়োগঃ। এবমগ্রেপি। মস্ত্রাভিষেচনং দীক্ষাং॥ ১০॥

শুক্রদা গুরোন্চ বৃহস্পতে রুদরে নতি নত্তসময়ে॥ ১১॥

তন্তপর্ব আবণে পৰিক্রারোপণোৎসবঃ শামনপর্ব হৈত্তেদমনকারোপণোৎসবস্থরে।: ॥ ১২ ॥ অত্ত সন্তীর্থাদৌ ॥১৩॥ সন্তীর্থাদিয়পি মধ্যে সূর্য্যপর্বেণঃ প্রাশস্ত্যং দর্শরতি সূর্য্যেতি পার্দ্ধেন ॥১৪॥ তত্ত তত্রাপি পুনরপরাদং দর্শরতি যদৈবেতি সার্দ্ধেন।।১৫॥

আদিশক্ষে কলায়া বর্ণমন্ত্রী বেধমন্ত্রী চা ওথাচ সারদান্তিলকে। চন্তবিধা সা সন্দিন্তী ক্রিয়া বত্যাদিতেদতঃ। ক্রিয়ামন্ত্রী বর্ণমন্ত্রী কলায়া বেধমন্যপীতি॥ ১৬॥ সংক্তা তুবকেশাসারাছি শর্করাদিদোবাপসারণেনোপক্তা। বাস্তদেবতাক্র নিবিছ্তি প্রনিদ্ধতব শারদান্তিলকাদিপ্রস্থ-সম্ম ব্যোহ্যে প্রানাদনির্মাণে লেখাঃ বাইলাভ্রাদক্র ন দিখাতে। সঞ্জিতি তৈঃ পরিনিতং। কেচিচ্চ রিস্থা বাস্তদেবতাঃ। সপ্তহন্তমিতং কুর্য্যামণ্ডপংরম্যবেদিকং।। ১৭।। অইপুজং চন্তর্ধারং ক্লারিপাদপতোরণং। ত্রিগুণীরুতসূত্রাচ্যৎ কুশ্যালাভিবেন্টিভং।। ১৮।। অথ কুণ্ডনির্মাণবিধিঃ। তিমাংশ্চ দিশি কৌবের্য্যাৎ চতুক্ষোণং ত্রিমেখলং। কুণ্ডং কুর্য্যাচন্তর্বিৎশত্যক্সুলিপ্রমিতং বুধঃ।। ১৯।। খাতং ত্রিমেখলোচ্গুরসহিতং তাবদাচরেৎ। তন্মাৎ খাতাদ্বহিঃ কুর্য্যাৎ কঠমেকাক্সুলৎ ধ্রবং।। ২০।। তত্রাদ্য নেখলোচ্ছুার বিস্তারৌ চন্তরক্সুলৌ। ত্রক্সুলৌতৌ দিতীরায়া স্তৃতীয়ায়া মুগা-ক্সুলৌ।। ব্যানিঞ্চ পশ্চিমে ভাগে মেখলাত্রিতয়োপরি। ষড়ক্সুলাঞ্চ বিস্তারে

যত্ভিরক্তিভ্ব দিশভিঃ ধোড়শভির্বা হস্তৈর্ব্বিতং মন্তপমিজ্বন্তি। তথাচ বশিষ্ঠসংহিতায়াং। বড় বাদশাক্তিভ্ব সৈঃ যোড়শৈব্যা সমন্ততইতি। রম্যা অত্যন্ত দৈঘ্য হস্বোচ্চনীচ্বাদিরা হিত্যেন শোভনা বেদিকা' বিমান্ তং। তঞ্চ মন্তপমধ্যে রচয়েং। তথাচোক্তং। পঞ্চহস্তমিতাং তক্র চতুর নাং চতু মুর্বাং। হস্তমাত্রোচ্ছিতাং রম্যাং মধ্যে বেদীং প্রকাপয়েদিতি। বিশিষ্ঠ সংহিতায়াঞ্চ। বায়ব্যে বাথ ঐশান্যে পূজাবেদীং প্রকাপয়েং। হস্তোমতাং চ বিস্তার্থাং চতুর নুং সমন্তত ইতি। অকচ বিরোধামতভেদাদিনা মন্তপভেদেন পরিহরণীয়ঃ। মন্তপানুমানেনৈর মধ্যে বেদীমুন্তমাং রচয়েদিতি স্থিতিঃ॥ ১১॥ মন্তপমের বিশিন্তি অক্টেতি। অক্টিদিক্তু অকটো ধ্রজা যামান্তং। ক্রিষ্ট্রেন্তং পাদপ্রে পুক্লাদিভির্ত্তমাত্রং ভূমান্ত্রিথাতৈস্তোরণং বহিদ্বারং বামিন্তং তথাচ মহস্যগুরাণে। প্লাক্ষং ভারেং তবেৎপূর্বাং যাম্যমৌড়্যরং ভবেৎ। পশ্চাদম্পঘটিতং নৈয়প্রোধং তথোজরমিতি। ক্রিন্তানিক্তেন শূত্রেণ আঢায়া যুক্তয়া কুশমালয়া অভিতো বেক্তিং। সক্রতো নিরুজাকুশঙ্গাতেন ক্রিণ্ডিন্ত্রণ পরিবৃত্তমিতার্থঃ। কেচিচ্চ ত্রিনূত্রা কুশময়রজ্জাপবেন্তিত মিত্যান্তঃ। ১৮।।

তিশান্ মণ্ডপে। তিলোমেখলাঃ খাতাদ্বহিত্তপর্যাপরি যথাবিধি নির্মায়মাণবপ্রা যশিন্ত । ১৯॥ তাণচ্চত্রিংশতাঙ্গুলিপরিমিতং খাতঞ্ তিস্ণাং মেখলানামুজ্যারে। নবাঙ্গুল-পরিমিত তেন দহিত্যের কুর্যাৎ নতু ভূমান্তরে চ তাবৎ সর্বাং খাতং খনেদিত্যর্থঃ। এবঞ্চ মেখলাত্রাদ্বঃ পঞ্চদশাঙ্গুলানি খনেৎ। তেন চ মেখলাত্রাচ্ছ্যায়েণ চ মিলিত্বা চতরিংশতাঙ্গুলাগর্জিক প্রা যথোক্তং কুণ্ডং দিধাতীতি জ্বেয়ং। কেচিচ্চ মন্যান্ত ভূমান্তরে চতুর্বিংশতাঙ্গুলিপরিমিতং খাতং। তক্মাদুপরি মেখলাত্রয়ং পৃথগেবেতি। যৎখাতং মেখলাত্রয়ণ্ডান্ত্রমুলিপরিমিতং থাতং। তক্মাদুপরি মেখলাত্রয়ং পৃথগেবেতি। যৎখাতং মেখলাত্রয়ণ্ডান্ত্রমুলারার জ্বারুঃ দ্বিতার ক্রমান্ত্রমান্তর লিতার দ্বিতার দ্বিতার

দৈর্ঘে চ দ্বাদশাঙ্গুলাৎ। একাঙ্গুলাৎ তথোচ্ছায়ে মধ্যে ছিদ্র সমন্তিং। গজাধরাক্তিৎ কুর্য্যাদ্বিধিবন্ধেখলান্তি। ।।২২ ।। শতাদ্ধি হোমে কুণ্ডং স্যাদূর্দ্ধ মুটিকরোলতং ।।২৩।। শতহোমে হর দ্বিমাত্রৎ সহস্তে পাণিন। মিতৎ লক্ষে চন্ড ভির্ন হৈশ্চ কোটৌ তৈর উভিমিতি ।। চন্তরসুৎ কুণ্ডথাতং কুর্মাতা গল্ড তাদ্শা ।।২৪।। হোমস্ত্র ধিক সংখ্যাকঃ কুণ্ডে বৈ ন্যুনসংখ্যা। কুতে কার্য্যো নচ ন্যুনসংখ্যাকঃ সংখ্যাকালিকে ।। ২৫ ।। যথাবিধ্যের কর্ত্র্যং কুণ্ডং যতেন ধীমতা। জন্যথা বহবোদোষা ভবেয়ুর্ব ভূদৃংখদাঃ। তদুক্তৎ তান্ত্রিকৈঃ। এবং লক্ষণসংযুক্তৎ কুণ্ডমিউফলপ্রদং। জন্তন কে দোষদং কুণ্ডং যত্ত ন্যুনাধিকং ভবেৎ। তন্মাৎ সম্যক্ প্রীক্ষ্যের কর্ত্র্যং শুভ নিজ্তা। হস্তমাত্রৎ হুলিখন বা সংক্ষিপ্তে হোমকর্মাণি। হারীতেনাপি। বিস্তারাধিক্য ভীনম্বে অপ্পায়ুর্জায়তে প্রবং । খাতাধিক্যে ভবেন্দোনি হীনে তুধনসংক্ষয়ঃ। কুণ্ডে ব্যুনাশো যোনিহীনে কণ্ঠনিন শুভক্ষয়ঃ। ২৭।। অঙ্গুলিপরিমাণং চোতং।

দ্বাঙ্গুলাধিকাং শূদ্রাণাং হস্তমাত্রকং। প্রথমা মেথলা তত্র দ্বাদশাঞ্লবিস্তা। চতুর্ভিরঞ্টল-স্থান্য কোনত দুং সময়তঃ। তস্যাশ্চোপরি বপ্তঃ স্যাচ্চত্তরঙ্গুলমুন্নতঃ। বপ্তোমেখলা। অফাভি রঙ্গুল্যে সম্যাধিস্থানস্ত সমন্ততঃ। তস্যোপরি পুনঃ কার্য্যোবপ্তঃ সোপি তৃতীয়কঃ। চত্তরঙ্গুল বিস্টীর্ণশ্চোল্লত্রুচ তথাবিধঃ। বোনিশ্চ পশ্চিমে ভাগে প্রাত্মুখা মধ্যসংস্থিতা। ষড়ঙ্গ,লৈশ্চ বিস্তীর্ণা চায়তা দাদশাঙ্গুলৈঃ। পৃষ্ঠোত্মতা গজৌষ্ঠোব সচ্ছিদ্রা মধ্যমোত্মতা। কণ্ঠোইইইযবমাত্রঃ দ্যাৎ কুখে চ করমাত্রকে। কঠোবত্নেন কর্ত্তব্যা ভুক্তিমুক্তিফলেপ্স্ভিঃ। নাভিরপ্যথ বা কুওমেকমেথলকং ভবেদিতি॥২২॥ অপরমপি কিঞ্ছিদেশেষং লিখতি শতার্ক্ষেতি। সহসে হোমানাং। এবম-এেপি ॥ ২৩॥ তৈঃ হজৈঃ। ভাদৃশমিতি যাবলৈর্ঘ্যে বিস্তারে চ তাবদধস্তাদপি খাতং কুর্য্যা-দিত্যথঃ। তচ মেথলোচ্ছুায়সহিত্মেব জেয়মিতি পূর্বং লিখিতমেব।। ২৪।। ততৈবাপরম্পি বিশেষং লিখতি হোমন্তি, ন্যুনয়া হোমসংখ্যাতে।২ পিয়া সংখ্যয়া ক্তে কুওে অধিকা কুও শংখ্যাভোবছলা সংখ্যা যাস্য স কার্যাঃ ন্যুনসংখ্যায়া ছধিকসংখ্যায়ামন্তর্ভাবাৎ। নচ ন্যুনসং-খ্যাকো হোমোহধিকসংখ্যাকৈ কুণ্ডে কার্যাইত্যর্থঃ। তদুক্তঞাভিযুক্তঃ। ন্যুনসংখ্যাদিতে কুণ্ডে-শ্বিকোহোমোবিধীয়তে। অনুক্তকুণ্ডোন্যুনস্ত নাধিকে শন্যতে ক্চিলিতি ॥ ২৫॥ বথাক্তবিধি কুওনির্মানে গুণং তদুল্ল গ্রনেচ দোষং লিখতি যথেতি।।২৬।। মেখলায়াউনত্বে ন্যুনতায়াং সভ্যাং। ত্স্যা মেথলায়াআধিক্যে॥২৭॥ কুণ্ডনিশাণাদাবপেক্ষ্যাস্পুলমানগুলিথতি। মধ্যমায়া অঙ্গুলে মধ্যং পর্বা। অন্যত্তাপ্যক্তং। আঁত্র্মন্ত্রিদো২স্কুলং বসুযবৈতিষ্যুক্ চ সংস্থাপিতৈ স্তালং ছাদ-শভিশ্চ তৈঃ পরিমিতং হস্তোদ্বিতালঃ পুনঃ। তৌদৌ কিন্ধুরিমৌ ধনুশ্চ ধনুষাং ক্রোশঃ সহসুং ভবে ত্তৌ গব্যতিমুদাহরন্তি মুনয়ন্তাভিত্রিভির্যোজনমিতি। বসুষ্টেং অফভির্য হৈঃ তৈরঙ্গুলৈঃ। ইমৌ দ্বৌ কিন্ধুঃ। ত্রুকত্রুবয়োর্হোমার্থকপাত্রয়োঃ। প্রক্রিয়া নির্দ্মাণাদিবিধিঃ। তৎপ্রভূতিকোইত্র কুণ্ডাদিনির্মাণপ্রকরণে যোহন্যোবিশেষোহপেক্ষিতঃ স্যাৎ স বশিষ্ঠসংহিতাদিগ্রন্থাদ্বিজ্ঞাত-ব্যোহভিজ্ঞৈঃ। আদিশব্দেন অঙ্কুরারোপণবিধ্যাদিং। অত্র গ্রন্থে চ আধিক্যভীত্যা গ্রন্থবিস্তার

তির্যাগ্যবোদরাণ্যকীবৃদ্ধা বা ক্রীহয়স্ত্রয়ং। জ্য়েমঞ্চু লিমান তু নধ্যমা মধ্যপর্বা নেতি। বিশেষোংপি ফিতোইন্যত্র শ্রুক্শবপ্রক্রিয়াদিকঃ। জ্য়েয়া গ্রন্থারাৎ সোত্রাধিক্যভীত্যা ন লিখ্যতে 11 ২৮ ।।

তথ দীক্ষামণ্ডলবিধিঃ। অথােক্ষিতে পঞ্চাবৈ গ্রন্ধান্তোভিশ্চ মণ্ডপে। যথাবিধি লিখেদীক্ষামণ্ডলং বেদিকোপরি।। ২১।। তল্পান্ত চাইপতাক্তং বহিব্রতিরং

ভয়েন স ন লিখাতে। শ্রুকপ্রকলক্ষণং চ বশিষ্ঠসংহিতায়ামুক্তং। প্রুবং বাহুপ্রমাণেন হোমার্থং বিদধীত বৈ। চত্তর্নুং বিধারাদৌ সপ্তপঞ্চাঙ্গুলক্রমাৎ। তৃতীয়াংশেন গর্জঃ স্যান্তদন্ত্র্তনো-ভিতং। বাত্তা সমং তির্য্যপূর্দ্ধং তদধঃ শোভয়েদ্ধিঃ। চত্তর্যাংশং চাঙ্গুলস্য শেষাচ্চার্দ্ধং তদস্তহঃ। রম্যাঞ্চমেখলাংখাতেশিষ্টেনার্দ্ধেন কারয়েছ। কুর্য্যাছ ত্রিভাগবিস্তারমজুষ্ঠেন সমাযুতং। সার্দ্ধমজু-र्थकः চ স্যাত্তদত্রে তুম্থং ভবেং। চত্তরঙ্গুলবিস্তাঃং পঞ্চাঞ্ল মধাপি বা। ত্রিদরাঞ্লকং তদা মধ্যান্তস্ত সুশোভনং। সুষিরং কঠদেশে স্যাদিশেদ্যাবৎ কনীয়সী। শেষং দণ্ডং তু কপ্তব্যং যথাকৃতি বিচিত্রিতং। চত্জেণসমামুক্তোহস্তমাতঃ শ্রুণোভবেৎ। চতুক্কং শোভনং বৃত্তং দ্যাঞ্লং বিদ্যাত বৈ। যথাপ্পপক্ষেগোঃ পাদং রুচিরংদুশাতে তথা। পলাশপতে নিশ্ছিদ্রে রুচিরে প্রুক্ত ক্রিন্ট্র বিদধ্যাৰাশ্বপ্ৰপত্ৰে সংক্ষিপ্তে হোমকৰ্মনীতি। শারদাতিলকে চ। প্রক্পায়েৎ ক্রচং বিদ্বান্ বক্ষ্য-মাণেন বর্জানা। জ্রীপন্নশিংলপাক্ষীরশাথিধেকভমং বুধঃ। গৃহীস্থা বিভক্তেদ্ধসমাজং ঘট্তিংশত। পুনঃ। বিংশতাংকৈ ভবেৎকুণ্ডো বেদী তৈর্কীভিভবেৎ। একাংশেন মিতঃকঠঃ সপ্তভাগমিতং সুধং। বেদীত্রংশেনবিস্তারঃ কণ্ঠদ্য পরিফার্ডিতঃ। অগ্রং কণ্ঠদমানং স্যাসুথে মার্গাং প্রকল্পয়েও। কনি-ষ্ঠাঙ্গুলিমানেন দর্পিনে।নিগ্নায় চ । বেদীনধ্যে বিধাতব্যা ভাগেনৈকেন কর্ণিক। বিদ্পীত বিহিন্ত দ্যা একাংশেনাভিতোহৰটঃ। তৃদ্য থাতং ত্রিভির্ভাবৈগ্র ন্তমন্ধাংশতোবহিঃ। অংশেটনকেন পরিতো দলানি পরিক পরিছে। মেখলামুখবেদ্যোঃ স্যাৎ পরিতে।র্দ্ধাংশমানতঃ। দওমূলাএয়োঃ কু छो छ গবেদ ংশ কৈঃ ক্রমার। কু ভাবমধু গাংশে স্যাদ্দ ওস্যানা হল রিতঃ। বছ ভিরং শৈঃ পূষ্ঠভাগো दिवनाः कृषांक्रिज्यतः । इश्ममा रा इस्तिनावा शिकिता वा मूथः लिथिए। मूथमा शृष्ठजाता স্যাৎ সুপ্রোফ লক্ষণং শ্রুচঃ। শ্রুচণ্টত্তবিংশতিভিভিটিগব্বারচয়েৎ শ্রুবং। দ্বাবিংশত্যাদ গুমানমং-বৈশরেত্রস্যকীর্ত্তিতং। চত্তবিংশতিবানাহঃ কর্যাছাগ্রাছিতচ্ছির্ঃ। অংশদ্বয়েন নিখনেৎ পক্ষেম্গ-পদাক্ততিং। দণ্ডমূলাগ্রয়েঃ কুড়ী ভবেৎ কন্ধণভূবিতেতি।। ২৮॥

অধুনা মণ্ডলবিধিং দর্শয়তি অথেতিত্রিভিঃ। উক্ষিতে প্রোক্ষিতে পঞ্গবৈঃ দুগান্ধিভিজ্ঞবৈশ্ব। যথাবিবীতি সর্বার্ত্রেপানুরপ্রনীরং। বেদিকায়া মণ্ডপান্ধবিরচিতায়া বেদ্যা উপরি ॥২৯॥
তস্য মণ্ডলদ্য মধ্যেইউপত্রং প্রাং লিখেদিতি পরেণ পূর্বেণ বাষয়ঃ। ততন্ত্রমাদ্জাদ্ধির্প্ত
ত্রং। ততাব্ত্রয়াদ্ধিঃ রাশীন্ মেষাদীন্ দাদশ। তেভ্যোবিহঃ পাদ্বভ্তয়য়্বুক্তং পীঠং
আননং। তক্মাদ্ধিশতকো বীথীঃ। তক্মাদ্ধিশত্বারি দায়ানি। তদুভয়তঃ সর্বত্র শোভাং। তৎ
পাশ্ব ভিশ্বেপশোভাং। তৎপ্রান্তেব্ চয়ারি কোণানীতার্থঃ। অতায়ং সন্নিবেশঃ। আদৌসপ্ত
দশোর্দ্ধ লেখা লিখেৎ পশ্চাতদ্পরি সমভাগেন তাবতীন্তির্যার্থেখা লিখেৎ। এবং ষট্পঞ্চাশ
দধিকং কোঠানাং শতদ্বং ভবিত তেবু চ সধ্যে বাড়ণ কোঠানি মার্জ্রিয়া তত্র পৃত্বং

তভঃ। ভভোরাশীংস্তভঃ পীঠং চত্তঃ পাদসমনিতং। তক্ষাম্বহিশ্চন্ত দিক্ষু লিখেদ্বীথী চত্তউয়ং। শোভোপশোভাকোণাচ্যংততোদার চত্তউয়ং।৷ ৩০ ।৷

অথ দীকাঞ্পূজা। প্রাভঃ কৃত্যং গুরুঃ কৃত্রা যথাস্থানং ন্যদেওতঃ। শব্ধং পূজোপচারাংশ্য পুরোলেখ্যপ্রকারতঃ।। ৩১।। তত্রাদৌ কৃত্তস্থাপনবিধিঃ। গুরুন্ গণেশং চাভ চ্য পাঠপূজাং বিধায় চ। পালনধ্যে ন্যদেং শালীং গুগুলাংশ্য কুশাং ভথা ।। ৩২।। বাহুদশকলা যাদিবর্ণাদ্যাশ্য কুশোপরি। ন্যাভ্যন্ত্য জপংভারং

তাহিবৃতিত্রতং চাদ্ধয়েৎ। তদহিং পংক্তিদ্বয়ন্তানানীধিকচত্বারিংশংমাজ্র বিদ্বাভিত্র দাদশ বিদ্বালি কপেরেং। তার রাশিসারিকোর্থিং পদলোগ্রবান্তিব্যুত্রয়স্য পাঁচসম্প্রিনাহ্পণ্ডেলক মণ্ডেই কর্মানান বিদ্বালি বি

অধ্যা ক্লসন্থাপনবিধিং দশ্য়তি। প্রাভংকুতামিত্যাদিনা ভোজলপণাবধীতাতেন। প্রাচন মুত্যু প্রতিঃস্থানমারভাজার্পিণান্তং ভগবদর্চ্চনং যাবন্ধিত্যকর্মা ক্রত্বা নমাপ্য দ্বং প্রোইটা োগা প্রকারেণ্। তৎপ্রকারশ্চাথে মৃখ্যপূজাপ্রসঙ্গে ব্যক্তোভাবীতার্থঃ। এবসন্যত্রাগ্যথে সরুত্র বোজাব্যং। যথা স্থানমিতি। প্রাত্মুখে।মওলস্যাত্রে স্থাসনোপবিফো দীকাসহপাং বিধার মাড্-कानिन्यानान् कृत्र। सवाभाष्य भञ्चः शृष्काश्रवादाः न्वायानिकव्यानि यस्त्रास्त श्रात्रभूग्री एतः। ত্তবং স্কাপত্রিয়া দক্ষিভাগে চ পুষ্পাদীনি ন্যাদেত্যিদিকং জ্ঞেরং। এতচ্যত্রে মুখ্যসূজা প্রক-রণে প্রপঞ্চা লেখ্যমের। ৩১॥ । গুরুন্ নিজগুরুপরমওবাদীন্ আনারদাদীংশ্চান্যানলি পুরু শিদ্ধান্ ভাগেৰতান্ মণ্ডলাতঃ পীঠন্যোভরে বায়ব্যকোণাৰৈশানকোণপ্যান্তমভাৰ্চ্য। চত্তবীন মেহেতৈত্বজন্তমভির্মাদিনা সংপূজ্য প্রণামসুদাং প্রদর্শ্যানুভ্রামাদার। গণেশঞ্চ তদ্ধকিণভাগে বীথাং ব্ৰোজনভাচ্য নিক্ষিত্বভাং প্ৰাথ্য মণ্ডলমধ্যভাগে। পীঠদ্য পূজাং চ লেখ্যবিধিট্নৰ কুছা প্রদাম ওলাভুলিখিত্যা মধ্যে ক্রিকোপরি শালীন্ধান্যানি একাচকপরিমিতানি তথা তদ্জ-মাংশপরি ভিত্ত ক্রান্যপি ন্যা তদুপরি দর্ভান্ বিন্সেদিতোবং গ্রন্থারেণ বি-জ্ঞেরং। তত্ত চ কুঠাক ত্যুতান্দর্ভানিতি জ্ঞেরং। কুর্চোইত কুশ্রয়ঘটিত বেল্পপ্রিং। কুশ্মুফি রিতি কেচিদাতঃ।। ওহ।। কুশানামুপরি চ বহের্দশকলাঃ প্রাদক্ষিণ্যেন, ন্যাস্য গল্প ক্রিনা তাএব পূজনিত্ব। তারং প্রণবং জপন্মন্তজ্তোপর্যোব কলসং স্থাপরেছ। কথং ভূতাঃ। বকরে আদির্যেষাং তে বর্ণা আদ্যা আদিস্থিতা যাসাং তঃ যকারাদিক্ষকারান্তদশাক্ষরশিরস্কা ইত্যর্থন। মংখাদিতং শাস্ত্রবিদ্ধিকুত্তমনতিক্রম্য অনেন নবং লোহিতমত্রণং ত্রিগুণীকুতকন্যাক্তিতশোভন কার্পাদস্ট্ররস্ত্রমন্ত্রেণ ত্রিবেঁটিভগগুরুধূ পামোদিতমিত্যাদিকং বোদ্ধবাং। যথোদিত মিত্যেতদ-গ্রেপ্যনুবর্ত্তনীয়ং। ৩৩॥ হব্যবহা ক্র্যবহাচেতি ছে। প্রয়েপশ্চায়ং গুনুর্চিটে নম ইত্যাদি। ফেচিট্ট দশদলকমলং সঞ্চিন্তা তৎকর্ণিকায়াং মং বহ্নিগুলায় নমঃ ইতি ন্যাস্য তদ্দশ দলেন দণ বহিংকলা ন্যাদেভিয়াভঃ। এবনেব হৃদি দাদশদনং ভুমধ্যে চ যোড়শদলং কমলং সংচিষ্কা অং অক্ম ওলায়নমঃ উং সোমম ওলায় নম ইতি ক্রমেণ ততত্কণিকয়োনাস্য তত্তদলেম্বের সূষ্যসোম কলা ন্যাদেদিত্যাক্তঃ। অন্যেত আধামইতিহিশতাং বহুচাদিকলানামন্যাদাঞ্চ পঞ্চাশতাং প্রথব কলানাং শুদ্ধজলপূর্ণে শন্থাএব ন্যাসমাভঃ।। ৩৪॥ অধুনা তব্মিন্ কুন্তে স্থাকলানাং ন্যাসা-দিকং লিখতি কালৈচাইতি । ককারালৈচ্যুঠকারালৈরইণ্রিইণ্যভাঃ দ্বাদশাপি কলাঃ। চকারঃ সমুক্তয়ে। ভকারটেন্যর্ডকারটেন্তর্বটের্বেপি যুক্তঃ। ননু ভকারাদীনাং দাদশবর্ণনাং ডকারান্ততা ক্রপংস্যাৎ ক্রমেণ ফ্রকারান্তভাপ্রাপ্তেঃ তত্রাহ বিলোমধ্যেঃ বুাৎক্রমপ্রাপ্তেঃ। অর্মর্থঃ। অনুশোগ পচিতককারাদ্যেকৈকমক্ষরং প্রতিলোমপটিতভকারাদ্যেকৈকাক্ষরেণ সহিত্যাটো সূর্যাকলানু সংযোজ্য ন্যাসাদিকং কুর্যাদিতি। প্রয়োগশ্চ কং ভং তপ্রেন্য নমইত্যাদি॥ ৩৫॥ তত্তেজ্য প্রকারেণাধাররূপম্মিং কৃষ্টরূপং নূর্যাঞ্চ বিচিন্তা কুম্ভদ্য তদ্য অন্তর্মধ্যে শুক্লকুদুমাদিকং কিপেৎ সনিতং সশর্করং। তদুক্তং। প্রোভোলরিত্বা তন্মধ্যে শুক্রপুষ্পাং দিতাযুত্য। স্বর্ণং রত্নপ্র কূর্চ্চঞ্চ মূলে ইনৰ বিনিক্ষিপেদিতি। যাত মূলগ্ৰন্থাদিবিকং কিঞ্চিল্লিখাতে তৎ পূৰ্বাগতস্য যথোদিত মিত্য-বিধিনেতি পীঠকুন্তয়োরৈক্যং বিচিন্তা বিলোমপঠিতৈঃ স্যান্বর্জনাদিতি জ্ঞেয়ং॥ ৩৬॥ ক্ষকার। দৈ। রকারাতে মতিকাক্ষরে র্বারত্রয়ং মূলমন্ত্রজপেন কুন্তং কেবলবিমলতীর্থেদেকেন প্রয়েং। অত্রচ শক্তৌ কপূরাদিজলৈঃ গবাদুদ্ধিঃ পঞ্গতিবাঃ সব্বৌধবিজলৈঃ ক্ষীরদ্রুমাদিক্রথ জ লৈর নাকা মহৌবধিতে টিয়ঃ পুরয়েদিতি। স্বরাঃ অকারাদ্যাশ্চত্তদিশ। সাহ্চর্যাদ্ভিশর্গানুস্ট্রৌ ८७ डि या फ्रम । ७९न हिला इत्नाः कनाः या फ्रम कु:खान देक विविना करमण नामा भूष्मानिना পুলয়েৎ॥ ৩৭॥ জ্যোৎলা চৈকাঞ্জিকা পূর্ণাম্তাচৈকা ইতিছে। প্রয়োগশ্চ। অংমম্তাইয় नम हेलामि॥ ७৮॥

অথশঋপুরণবিধিংদর্শয়তি শুদ্ধেতি। পূর্বায়োকস্থং বিধিনেত্যনুবর্ত্তত এব। অতোহি মূলমস্ত্রেণ

স্থা শশ্বপ্রাপনবিধিঃ। শুদ্ধায় পূরিতে শশ্বে ক্ষিপ্ত্বা গল্পান্টকৎ কলাং। আবাহ্য সন্ধান্তাঃ প্রাণপ্রতিষ্ঠানাচরে ক্রমাৎ 11 ৩৯ 11 গল্পান্টকং চোক্তং। উশীরং ক্র্মাৎ কুর্ম কুষ্ঠং বালকং চাগুক্যুরা। জটামাৎসী চন্দনক্ষেতীটে ওাল্পান্টকং হরে রিতি 11 ৪০ 11 কৈশ্চিচন্দনকপূরি হর কুল্মুমবোচনাঃ। ক্রোলক দি মাংস্যুশ্চ গল্পান্টকমিদং মতং 11 ৪১ 11 তথৈবাকার জা বর্ণাই কাদিভিদ্শাভিদ্দা । উকার জাইকারালৈটাঃ পকারালৈট্য ক্রোরজাঃ। চত্যে বিল্লুজাঃ মান্টেশ্চন্তভিন্নিদজ্ঞ কলাঃ। স্বরৈঃ ঘোড়শভিষ্ক জান্যসেচ্ছন্তে বিদ্যান্তলাঃ। স্ফির্ম কিঃ মৃতি র্যোর্থ কিঃ মৃতি প্রাণি কান্তিলক্ষ্মীপৃতিঃ ত্রিবা। স্থিতিঃ সিদ্ধিরকারোপা, কলা দশ সমীরিতাঃ ভর্মচ পালিনী শান্তিরৈ মরী রতিকামিকে। বরদা জ্যানিনী প্রতিদ্বিনি চোকারজাঃ কলাঃ। তাল্যা ক্রোভায়া নিদ্রা তন্ত্রী কুৎ ক্রোধনী ক্রিরা। উৎকারীকৈ মৃত্যুশ্চ মকারাক্ষ্য রজাই কলাঃ। বিন্দোরপি চতসুঃ সুঃ পীতা খেতারু নাসিতা যা ৪২ যা নিবৃত্তিশ্চ প্রতিটা বিদ্যালিন্তি ত্রিবা চাল্যায়নী তথা। ব্যাপিনী ব্যোমকপা চ জমন্তা নাদসন্ত্রা ইতিয়া ৪৩ যা ন্যাসং কলানাং সন্ধাসাং কুর্বানেকৈকশাং ক্রমাহ যানাবাহনাৎ চত্ত্রি তথা তং তত্ত্ববৈর্ণিশ্বাহন্তকং যা ৪৪ যা পূর্বাহ প্রাণ্ডিভিত্যিয়া নাবাহনাৎ

শদ্ধায়ুনা পরিপূরিতে। শক্তে চ পূর্ব্ববৎ কপূর জনাদিনা পূরিত ইতি জ্ঞেন্নং। তাঃ পূর্ব্বোক্তাঃ। वक्राकिन्मूकलाः मुखाः मञ्चवि क्रमां १ शृथक शृथनावाश जामार आवश्वि छार क्रिमरेवि क्र्यार। তত্ত্বৎ প্রণিপ্রতিষ্ঠাপ্রক'রশ্চ শ্রীপুরুষোত্তমবনবিরচিতক্রমদীপিকাটীকাদি এন্থ।ন্তরভোবিজেয়ঃ॥ ়ুক্ত। ইত্যেতৎ গন্ধাইকং হরেঃ শ্রীক্লফদ্য ইফ্টং প্রিরং।। ৪০॥ কপিঃ শিহলকঃ।: ৪১।। অথ পঞ্চাশৎ প্রণব কলানাং ন্যাসং লিখতি তথৈবেতি অকারজা দশকলাঃ ককারাদিভিদশভিশ্বতৈ যুক্তান্তন্মিন্নের শক্ষে ন্যাদিতি দ্বাভ্যামন্বরঃ। দশেতি দশভিরিতি চানুবর্ত্ত এব। অত উকা-तका मन ठेकातारेमाम्निज्यरेर्गय्काः। . मकाताकाक मन পकातारेमार्निजयूकाहे डि एक शः। ষকারালৈয়ক্তর্ভির্বেটেণ্রু ক্তাক্তত্রেনিকুজাঃ কলা ন্যমেৎ। নাদজাঃ বেড়েশ চ কলাঃ ঘে ড়শভিঃ স্বরৈঃ অকারাদিভিযুক্তা ন্যসেৎ।। ৪২।। নিব্র্যাদয়োনাদজাঃ বোড়শ। ক্রিচে। সূক্ষানুক্ষেতি পাঠঃ। ততক সূক্ষামৃতাটেকা পূর্ণাম্তেতিবৎ। কেষা গিলতে চ অনভা ইতি বছবটনাভং নাদ-मञ्जराইতাসা বিশেষণং তথাচ শারদাতিলকে অনস্তঃ স্বর্তাইতি। ততক সূক্ষা একা অসুক্ষা-रिচকা মূভাটেচকেতি ভিসুঃ॥ ৪৩॥ न্যার্শপ্রকারং লিখতি ন্যাসমিতি। তৈওঁন্তঃ প্রাগুদ্দিইফর্কেইর্ণঃ সহ। প্রয়োগশ্চ কংস্ফ্টো নম ইত্যাদি। কেচিচ্চ প্রন্বাদ্যমেব সর্বাং তত্ত্রয়াসমাহঃ। তথানো চ অকারকলানাং পাদদ্য়সক্ষাত্রেষু উকারকলানাঞ্করদ্য সন্ধাত্রেষ্ মকারকলানাঞ্ভদাদ্য-ক্ষেষ্ দশস্ বিন্দুকলানাঞ্ব ঠিচিবুকভুদ্বয়েষু নাদকলানাঞ্চ তত্তন্তাসস্থানেষু প্রকারভেদেন ন্যান মাহঃ। তত্ত্বৎ প্রতিষ্ঠাদিবিধিশ্চ শ্রীপুরুষোভ্তমবনবির্চিত ক্রমদীপিকাটীকাদিগ্রন্থতা বিশেষে ণাবগন্তব্যঃ।। ১৪ ।। কিঞ্চ পূর্ব্বমিতি তাদামকারজাদিকলানাং যথাস্থানমিতি শস্থজলে ২কার প্রভবাণাং কলানামাবাহনানন্তরং প্রাণপ্রতিষ্ঠায়াশ্চ প্রাক্হংসঃ শুচিবদিত্যিং। উকার প্রভ পরং। ঋচঃ পঞ্চ যথাস্থানং পঠেতাশ্চার্চয়েৎ কলাঃ। হংসঃ শুচিষদিত্যাদো প্রতদ্বিষ্ণু স্তভঃপরং। ত্রিজয়কং তৎসবিত্তবিষ্ণু র্যোনিমিতি ক্রমাৎ ।।৪৫।। তক্র শন্থোদকং কুন্তে নূলনন্ত্রেণ নিক্ষিপেৎ। পিদ্ব্যাত্তরা খং শক্রবল্লাচূতাদিপল্লবৈঃ।। ৪৬।।
শরাবেণাথ পুস্পাদিনুক্তেনাচ্ছাদ্য তৎ পুনঃ। সংবেষ্ট্য বস্ত্রমুগ্যেন তওঃ কুষ্ঠ মণ্ডয়েং ।। ৪৭।।

অথ কুন্তে শ্রীভগবংপূজাবিধিঃ। তিমায়াবাহ্য কলসে পরৎ তেজোযথাবিধি।
সকলীক্ত্য চাচার্যঃ পূজ্যোদাসনাদিভিঃ। সকলীকরণং চোক্তং। দেবতাপ্তে বড়
জানাং ন্যাসঃ স্যাৎ সকলাকৃতি ।! ৪৮॥ কেচিচ্চাত্য করন্যাসপীঠন্যাসো বিনাথিলৈঃ। ন্যাসৈস্তত্তেক্ষঃ সাজীকরণং সকলীকৃতিঃ।। ৪৯॥ এবঞ্চ কুন্তে তৎ সাজ্যে
পাঙ্গং সাবরণং প্রভুং। অগ্রতোলেখ্যবিধিনার্চয়েড্রোজ্যাপ্ন বিধিয়া ৫০॥ নৈবেদার্পন্তঃ পশ্চান্মগুলস্য চ সর্বতঃ। সদীপান্ পৈঠিকান্ন্যস্যেৎ স্বীজাক্ত্র ভাজন

অথ দীক্ষাহোমবিধিঃ। ততোদীক্ষাঙ্গগোমার্থং কুগুৎ প্রাগিছিতৎ ওরঃ। সং মার্জ্য দর্ভমাজ্জন্য যথাবিধ্যুপলেপয়েং। বিকীর্য্য সর্যপাং তত্র গবৈঃ সংপ্রোক্ষ্য

বাণাঞ্চ প্রতি বিজ্বোনিনিতি ক্রমাৎ পঠেদিতি জ্ঞেয় বিজ্ব প্রতি তামকনিতি পাঠঃ। ১৫ । তৎ কলান্যাদসংস্তঞ্চ শছান্তম্প কুল্লে প্রাকৃতি জ্ঞাং। ক্রিচ তামকনিতি পাঠঃ। ১৫ । তৎ কলান্যাদসংস্তঞ্চ শছান্তমূদকং কুল্লে প্রাকৃত ক্রিপতে তিমান্ অপরেছে। তথ্য কুত্রা মুখণ শক্রেলাই ক্রেলা আমাদিপলাবৈ ক্রিছাদয়েছ। আদিশকাদখণাদি ॥ ৪৬ ॥ তৎ কৃত্রমুখণ পুষ্পাদি সহিতেন শরাবেণ পুনক্রপরি আছোদ্য। আদিশকোন ফল তণুলাদি। পুনক্ষ তন্মুখমেব বস্ত্রয়েন বেকরিছা মণ্ডরেছ পুষ্পাচকনাদিনা॥ ৪৭॥

পরং তেজঃ নরাকৃতি পরংব্রদ্ধ শ্রীকৃষ্ণং। যথাবিধীতি মূলমন্ত্রেণ শ্রীমূর্ত্তিং দঞ্জি করাজাং পুজাঞ্জিনাদার প্রবহনাদাপুটেন হৃদরাদ্দেবতেজঃ পুজাঞ্জাবানীর কলদাদি কণ্পিত্মূর্ত্তা-বাবাহনং তথ্যন্ত্রেণ কুর্যাদিতার্গঃ। আদনাদিভিক্পচারেঃ। তেচাথ্রে নিত্যপূজাপ্রসঙ্গে বিস্থায়া লেখাঃ।। ৪৮।। কিমান্ত্রণেব লিখতি করেত্যাদি। তদ্য ব্রহ্মস্বন্ধপা তেজদঃ সাঙ্গীকরণং ধ্যানেন দাকারতাপাদনং।। ৪৯।। তং নরাকৃতিপরব্রহ্মবাপং প্রভুং শ্রীকৃষ্ণং এবমাবাহনাদিনা নৈবেদ্যমর্পণাত্মর্চরেং। কথং অথে নিত্যপূজাপ্রসঙ্গে মুখ্যস্থানে লেখ্যেন প্রকারেণ অভস্তরেব তৎসক্ষপ্রকারোবিস্থায়্য লেখ্যস্কৃত্যাহ্তাপি তথৈব পূজা কর্ত্ব্যা অধুনা তলিখনেনাল-মিত্যর্থা। ৫০॥ বীজাঙ্করপাত্রসহিতান্ সতঃ উত্তমান্ গ্রাঘ্তাদিদাধিতান্ সম্যগুজ্লিতান্ দ্বীপান্ মণ্ডল্ল্য পরিতঃ স্থাপরেং। গৈটিকান্ পিন্টেন যবচুর্ণাদিনা নির্মিতাপাত্রানিত্যর্থঃ।৫১॥

দীক্ষাহোমবিধিং লিখতি তত ইত্যাদিনা যথোদিতমিত্যন্তেন। যথাবিধীতি বায়ুবীজন্তপ্ত দর্ভমাজ্জন্যাদিসমম্বায়েয়ীমারভ্য প্রাদক্ষিণ্যেন.সংমাক্র্যতথৈব বরুণবীজেন লেপনং কুর্য্যাদি-ভার্থঃ। যথাবিধীতাস্যাথেপি সর্ব্যানুবস্ত নং কার্য্যং। তত্তৎপ্রকারবিশেষক্ষ প্রস্থান্ত ক্রেয়ঃ।

## विक्रिकिक विशापक

शक्षिः । मेर्थः गर्भवातको । शुक्रमः क्रिक् खर्भकीम् ॥ ७२ ॥ । भौष्याकीम কুলস্য কৃষা প্রোক্ষর কুশাষুভিঃ। উলিখ্যাসিনিন যোদ্যাদিসহিতং মণ্ডলং লি-থে ।। ৫৩।। জীবীজং মধ্যখোনো চ বিলিখ্যাভুগক্ষ্য পূক্ষরে । বিধায় তত্ত্ব পূজা निविधेत नाधू कण्म (त्र ।। a8।। তত नचीम्जून्। जा विकृकावार। भृक्रात ! ভানুদিপাত্রেণানীয়াপ্রভোষ্যিৎ স্থাপয়েচ্ছুভং ৷৷ ৫৫ ৷৷ গন্ধাদিনা গ্রিমড ক্র বিকোঃ সংক্রীড়তঃ প্রিয়া। রেতোরপৎ বিচিন্ত্যামুৎ কুগুৎ তারেণ চার্চ্চয়েৎ।! ८५ ॥ देवश्वानद्वि माख्यांक्वामग्राधि ७९ मिस्स्तेनः । हि ९ शिक्षां कि अक्षां क्याः পতি ঠেদরি নিত্যমুশ্য ৫৭।৷ জিলান্তেশ্ব সপ্ত ভিন্মিরপ্ত কেমুক্দেবত যে ঘটসু यह नामा मूडो कि नामाधि छ। छ दिशक जाः ।। ८৮ ।। मल बिला का छा। विद्रना গগনা রক্তা তথা কৃষ্ণা চ সূপ্রভা। বহুৰূপাভিক্রপা চ সপ্ত জিছাবসোরিম। গা ৫৯।। অথাঙ্গদেবতাঃ। সহসাচিঃ ষতিপূর্ণ উত্তিষ্ঠ পুরুষত্তথা। ধূমব্যাপী সপ্তকিলা ধনুর্ধর ইতি মাৃতঃ। হুট্যুক্রক। জাতবেদাঃ সপ্তক্ষিত্বা হব্যবাহন এবচ। অস্থাদরজ সং জ্ঞ তথা বৈধানরোহপরঃ। কৌমারতেজাশ্চ তথা বিশ্বদেবমুখালয়াবিভি যাওলা ততো ব'হ্ন পরিস্তার্য্য সংস্ত্যাজ্যং যথাবিধি । ছত্তা চ ব্যাহ্মতীঃ পশ্চাত্রীন্ বারান্ জল্যাৎ পুনঃ । ভতোহস্য গভাধানাদীন্ বিবাহাভান্ যথাক্ষ ।

সর্পান্ অস্ত্রমন্ত্র কুথে দিক্ চদশসু তৎপতীন্ দিক্পালান্।। ৫২।। আদিশতে -परमार्यनकाठिनामीन। कुगय्देकत्रमु जिः। छैलिया উल्यंनक्ष कृषा। व्यामन् कृत्य। व्याम শব্দাচ্চক্রবৃত্তাদি॥ ৫৩॥ অথাগ্নিশংক্ষারং লিখিষায়াদৌ তৎপ্রতিষ্ঠাং লিখতি এবীলমিতি ত্রিভিঃ। পুষ্পাদিনা যদ্ধিরং শধ্যা তহ। यहा পুষ্পাদিকমেব বিষ্টরত্বেন কম্পায়িত্বা ভক্র মধ্য-যোনাবেব নিধায়। আদিশব্দেন অক্ষতকুচ্চৌ।। ৫৪।। শুভং অনিন্দিতং। তথাচোক্তং। প্রনগ্য বিধিনৈবামিমাহিতামেপু হাদপি। আনীয় চাদধীতাত কুলৈঃ প্রজালা যত্নতইতি॥ ২৫॥ প্রিয় সহ সংক্রীড়ভঃ আদ্যন্ত্রতঃ। অমুং অগ্নিং। তারেণ প্রণবেন।। ৫৬॥ এবমপ্লেঃ প্রতিষ্ঠ'-বিধিং লিখিছোপস্থানবিধিং লিখতি বৈশ্বেতি। বৈশ্বানরেকি মন্ত্রদ্যাক্তরাণি। এবমগ্রেপি। সন্তিরুপ্ট মর্বিহিতৈরু স্তর্ট মরিক্ষনৈর।চ্ছাদ্য। চিৎপিঞ্চলেতি মস্ত্রেণ পি অগ্নিমিতি মস্ত্রেণ স্বামুণ অগ্নি মুপতিঠেৎ।। ৫৭।। অথ সংস্কারার্থমেব থ্রিথমং ন্যাসাদিকং লিখতি জিহব। ইভিচতুর্জিঃ। ষট্স অক্ষেৰ্ মূৰ্দ্ধাদিবু। ষট্ অঙ্গদেবতান্যদা অটো মূৰ্ত্তীশ্চ ন্যা তাশ্চ জিহ্বাঞ্চৰেতামুক্তীঃ প্ৰভাব-চতুর্থীনমোন্তত জনাম জিঃ পুরুরে । ৫৮॥ বলোর গ্রেঃ। কেচিচ্চ প্রত্মানা বুপ্নী ভ্যানা দ্রুপ্ किर्दा वा मनारा ॥৫৯॥ विश्वमूर्थाम्ब मूथान्छि को। তথাচ শারদাভিলকে। জাতবেদাঃ সঞ किस्साह्यावारममः करः। यानाम्यकमः । कामान्यकमः माहिन्द मूर्यात्मरम्थखर्यि ॥ ७० ॥ भतिखीर्ग कूभाम् तामिमाण्याः भतिखतभर क्र्या। यथाविधीरि नर्य-रेजन मक्कानीतः। ७७ क जान बाजिएका जिनाका मश्यातामि अकातक वास्तिक्य मुखानिक धन আত্রাপেক্ষিতক্ষেৎ জ্রীগুরুষোত্তমবনবিরচিত ক্রমদীপিকাটীকাগ্রন্থতে। জ্রেয়ঃ । পশ্চাৎ প্রণক্র সংস্কারানাচনে বুজুম ত্রেণান্টান্ত তিন্তথা। 1651 ইশ্বং হি সংস্কৃতে বল্লো পীঠনভার্চ্য তর চা দেবনাবাহ্য গন্ধাদিদীপান্তবিধিনার্চয়েও ।। ৬২ ।। ওঞারিও দেবর সনাৎ সংকল্প্যান্টোত্তরও বুধঃ । সহসুৎজুল্লয়াৎসর্পিঃ শার্করাপায় সৈর্ঘু তৈ ।। ৬৩ ।। ভ্রাজ্যেনাথ মহতীব গল্ভীবিধিনা কতী। গ্রহর্জকরণাদিভ্যোবলিও দদ্যাদ্যথোদ্বিধিনা

অথ হোমদ্র সরিমাণং। কর্ষমাত্রং যুতং হোমে শুক্তিমাত্রং পয়ঃ ক্ষৃতং। উক্তানি পঞ্চব্যানি তৎসমানি মনীষিভিঃ। তৎসমং মধুদুগ্ধান্ন মক্ষমাত্রমুদাহৃতং। দ্বিপ্রসৃতিমাত্রং স্যাৎ লাজাঃ সুমুষ্টিসংমিতাঃ ইত্যাদি॥ ৬৪॥

অথ নত্তা সুপানার্থ প্রদায় চিমনানিচ। আত্মার্পণান্তমভ্যুচ্ট লেখ্যেন বিধিনা চরেখ্যা ৬৫ ।।

অথ গুরুশিষ্যনিয়মাদিঃ । ক্রভন্থং বাগ্যতং শিষ্যং প্রবেশ্যাথ যথাবিধি। তদ্দেহে মাত্কাং সাঙ্গাং ন্যাথোপদিশেচ তাং ॥৬৬॥ দেবং মাবরণং কুন্তগতং

বাহ্নতীর্ষথাবিধি হুলা বৈশ্বানরেত্যাদিনা অগ্নের্লমন্ত্রেণ পুনস্ত্রিরুল্বান্তু হুলাং। শাল্রোক্তেন মল্রেণ স্বাহান্তপ্রণবেনানেরনচ তত্তৎকর্দাবিষয়কেন মল্রেণ আছত্যন্তকেন চ অদ্য বহ্নে সংস্থানির ক্রেমণ কুর্যাং। তত্তদিবিরপি তত্তক্ষরতএব বিশেষতো জ্রেয়ঃ ॥৬১॥ তত্ত তত্মিন্ পীঠে। ক্রেমণের কুর্যাং। তত্তদিবিরপি তত্তক্ষরতএব বিশেষতো জ্রেয়ঃ ॥৬১॥ তত্ত তত্মিন্ পীঠে। কর্মার্পনারত্য দীপার্পার্যক্রেলারী ॥৬২॥ তং সংস্কৃত্যগ্রিঞ্চ দেবস্য ভূগবতো জিহ্বান্ত্রেন সংকল্পা। যতৈর্দ্মি লিইত্যা।৬৩॥ অর্থঅনন্তরংমহাব্যাহ্মতীকিবিনা শাল্রোক্ত প্রকারেণ আক্রেনহল্বা। কৃতীতি। এবং হোমং সমাপ্যাল্থানং শিষ্যক্ষ প্রসাদায় ভির্ত্যুক্ষ্য হত্তক্মনা ভিলকং কুর্যাদিত্যাদিকং কুতিত্বং ক্রেয়ং ব্যোদিত্যাকি মণ্ডলমধ্যে রাশিস্থানের তত্ত্বান্ত্রেস্তত্তক্রেন হোমাবশিষ্টপায়সভূতীয়াং শেন গ্রহাদিত্যাব্রিং দদ্যাং। তত্তংপ্রকারবিশেষোপি তথৈব ক্রেয়ঃ। আদিশক্ষান্ত মীনমেবয়ো-রন্তরালে সিংহ্ব্যাঘুবরাহথরগজব্যভাদীনাং বলিজ্রেরঃ। তথা চতুর্থাংশের মণ্ডলস্য দক্ষিণভাগে গোময়োপলিপ্রপ্রদেশেহগ্রয়ে তেজোহবিপতয়ে বিষ্ণুপার্যদেভাশ্চ সর্বেভ্যোবলির্দেরঃ ইত্যাদি বোদ্ধবিং। তত্ত চ সর্ব্যেত্তরান্ত্রা জলগঙ্গপুদানে নমোহন্তা বলিদানে স্বাহান্তাঃ। পুনর্জলদানে ভূপ্রান্থাং অগন্তব্যাইতি দিক্। যথোদিতমিত্যস্যাগ্রেপ্যনুর্বনং কার্যাং।।

৬৪॥ অথ বলিদানানম্বরং প্রণামং কৃত্ব। পানার্থং সংকৃতং জলং পশ্চাদাচমনার্থপ জলং প্রদায়। তন্তংপ্রকারোপ্যপেক্ষিতোনিত্যপূজাপ্রসঙ্গে ব্যক্তোভাব্যেব। অমুপ্রদানাদনন্তরমন্থ কৃত্যং
বিষক্ষেনায় নৈবেদ্যাংশপ্রদানং ভগবতে চ গণ্ডু যাদ্যপ্রমারত্য আত্মার্থণান্তং সর্বাং সমাপ্তেরং।
ভক্তাগ্রে নিত্যপূজাপ্রসঙ্গে লেখ্যপ্রকারেশৈবেত্যথঃ।। ৬৫॥

অথানন্তরং উপবাসপরং মৌনিনং শিষ্যং পূর্বেশিষ্টোঃ প্রবেশ্য। যথাবিধীতি প্রণামং কার-য়িত্বা প্রোক্ষণীবারিণাইস্ত্রমস্ত্রেণ তং সংপ্রোক্ষ্য কিঞ্চিৎ পঞ্চাব্যপ্রাশনং কার্য়িত্বা চ তদ্দেহে মাতৃকাঙ্গানি মাতৃকাঞ্চ ন্যা ধ্যানপূর্বাং মাতৃকাং তল্মৈ গুরুরুপদিশেদিত্যর্থঃ॥ ৬৬॥ যথা- চানুশারম্গুরুঃ। জপ্তাধীেত্রসাহসুৎ শরীত প্রাশান কিঞ্ন ।। ৬৭।। দর্ভোপর্য্যানি কিঞ্ন ।। ৬৭।। দর্ভোপর্যানি কিঞ্ন ।। ৬৭।। দর্ভোপর্যানি ক্রান্ত জপন্
ব্রতী ।। ৬৮।। ইতি পূর্বাদিনক্ত্যুৎ ।

অথ তদিনক্ত্যানি। প্রাতঃক্ত্যং গুরুং ক্ত্রা কুডং চাত্যর্চ্যপূর্ববং। হৃত্রা দত্ত্বা বলিং কর্মান্যং কুর্য্যাৎ স্বার্পনাবধি।। ৬৯।। সংহারমুদ্রা ক্ষে সংযোজ্যা-বৃতিদেবতাঃ। তঞ্চামৃত্যমং ধ্যাত্বা স্বন্সিংশ্চারিং বিলাপয়েৎ।। ৭০।। পুরু তোরণদিক্কুন্তনগুপাদ্যধিদেবতাঃ। সর্বাবিভাব্য চিদ্রাপাঃ কুন্তে সংযোজ্য পূর্ব রেং।। ৭১।। অতোগুরুং গণেশঞ্চ বিষুক্সেনঞ্চ পূর্বারেং। ইল্লাস্য কলসং স্পৃষ্ট্রা শতমন্টোত্তরং জপেও।। ৭২।। ক্তেতাপবাসঃ শিষ্যোহ্থ প্রাতঃক্ত্যং বিধায় সঃ। শুরুবন্তঃ সুবেশঃ সন্ বিপ্রান্ দ্রব্যে তোষয়েছ।। ৭০।। গুরুঞ্ব ভগবদৃষ্ট্যা পরিক্রম্য প্রন্য চাদত্ত্বাক্তাং দক্ষিণাৎ তথা স্বশ্বরারং সমর্পয়েও।। ৭৪।। তথাচ দশমক্ষরে। ইয়দেব হি সং শিষ্যঃ কর্ত্ব্যং গুরুনিক্ত্রং। মন্ত্রি বিশুদ্ধভাবেন স্বার্থি আর্পণ্ণ গুরৌ।। ৭৫।।

অথাভিষেচনবিধিঃ। যাগালয়াদুভরস্যানাশায়াৎ স্থানমগুপে । পীঠে নিবেশ্য

বিধীতানুবর্ত্তএব। অতশ্চ আবরণসহিতং ভগবন্তং তংস্থাপিতকলসগতং চিন্তয়ন্সন্ তৎকলস জলং স্পৃষ্ট্রিটান্তরসহসুং অপ্তব্ব পুজাঞ্জলিং কৃত্বাহ্তিবন্দা পঞ্গব্যাদিকং কিঞিৎ প্রাশ্য দীক্ষাসম্মাক্রিয়াকা ওাদিকং চানুসন্ধানঃ পবিত্রশ্যায়াং শয়নং কুর্যাদিত্যর্গঃ॥ ৬৭॥ শিয্যোহপি মাত্কোপদেশং প্রাপ্য দর্ভোপরি কৃষ্ণাজিনে উপবিষ্টঃ সন্ মাত্কাং গুরুঞ্গ ধ্যায়ন্ মাত্কাং নিদ্রাবশান্তং জ্পন্ কৃত্তোপবাসঃ প্র্কশিরস্কউত্তরাশিরস্কোবা শ্যীতেতি॥ ৬৮॥

প্রাতঃকৃত্যং প্রাতঃস্থানমারভ্যাত্মার্পণান্তং যাবদশেষং কর্ম সমাপ্য। কুন্তুস্থং ভগবন্তং পূর্ববদ্ ভার্চ্য হোমঞ্ তবৈর কৃত্যা বলিঞ্চ দল্প বলিদানানন্তরং যদনাৎ পানার্থজ্ঞলসমর্পণাদিকর্মআত্মান্তরং স্বাদের পুনঃ কুন্তে কুর্যাদিতার্গঃ ।। ৬৯।। অংবরণদের ভাগুক্রগণেশব্যতিরিক্তাঃ ভগবতি উদ্বাদনেন সংযোজ্য লীনাইতি বিভাব্য। তঞ্চ দেবং অমৃত্যয়ং নিজলপূণানন্দরপেণাবস্থিতং ব্যাত্ম। বিলাপয়েৎ লীনত্বেন চিন্তুয়েৎ ।।৭০॥ ধুজাদীনামধিঠাত্দেবতাঃ আদিশন্দেন মণ্ডল কুণ্ডলাদিঃ॥৭১॥ অতইতি গুরুং শিরস্যুদ্বাসাভার্চ্য গণেশঞ্চাকাশ উদ্বাসাভার্চ্য যাগাবশিক্তবেশ বিশ্বক্সেনং চাভার্চ্যাকাশ এবোদ্বাস্ত্যর্থঃ ॥৭২।। প্রাতঃকৃত্যং স্থানাদ্যাবশ্যকংকর্ম। স দীক্ষার্থী শুক্রেবন্তে অন্ত্যা তথাভূতঃ সন্ হোমাদিকতে:-বিপ্লান্ গোভ্মিবন্তার্থান্য ভিলেব্যে (ভাষয়েৎ ॥৭৩॥ ভগবদ্দ্রী। ভগবানেবায়ং সাক্ষান্দিত্যবং বুদ্ধোত্যর্থঃ। উক্তাং শাস্ত্রেণ। তথাহি। স্ববিন্তার্জং চতুর্গংশং দশাংশং বাধ শক্তিত ইতি। এষাচ গুরু সন্তোষণার্থা প্রথমা দক্ষিণা। মন্ত্রদক্ষিণা চান্যা মন্ত্রদানানন্তরং লেখ্যা॥ ৭৪॥ নিজ্বং প্রভাপকারঃ। সর্বেষামর্থানামান্ধনন্ত্যপর্ণং॥ ৭৫॥

গুরুক্তাং লিথতি যাগেত্যাদিষভ্তিঃ। আশায়াং দিশি। অত্র চায়ং বিধিত্র কীবাঃ। গোমরাদি-নোপলিপ্তে বিবিক্তে বিতানাদ্যলংক্তে মণ্ডপে প্রত্মন্তিকাদিকমুদ্ধ্য তত্র পীঠং স্থাপয়িস্বা অথাতিষেক্মন্তঃ। বশিষ্ঠিন হিতায়াৎ। সুরাস্থামতিবিঞ্জ ব্রহ্মবি ফুমহেশরাঃ। বাস্দেবোজগয়াথস্থাসকর্বণোবিতঃ। প্রাদ্যুম্নচানিরুদ্ধন তবন্ত বিত্বায় তে। আথগুলোহয়ির্ভগবান্ যমোবৈনিশ্ব তিত্থা। বরুণঃ পবনশ্চৈব ধনাধ্যক্ষয়থাশিবঃ। ব্রহ্মণা সহিতাহেরতে দিক্পালাঃ পান্ত বঃ সদা। কীর্ত্তিলক্ষীধ্ তিমেধা পুষ্টিঃ প্রদ্ধা ক্রিয়া গতিঃ। বৃদ্ধিলক্তা বপুঃ শান্তির্মায়া নিদ্রা চ ভাবনা। এতাস্থামভিষিক্ষয় রাভঃ কেত্রশ্ব প্রিজাঃ। দেবদানবগন্ধবা যক্ষরাক্ষসপর্গাঃ। শ্বর্মাম্নয়োগাবো দেবমাতরএবচ। দেবপত্রোক্রবানাগাদৈত্যাত্রপ্ররাণ্ গণাঃ। অস্ত্রাণি সর্ব্বশন্তানি রাজানোবাহনানি চ। ঔষধানি চ রত্থানি কালস্যাব্যবাশ্বয়ে। ৮২।। শ্বেলান্তারির্মানি জলদানদাঃ। এতে স্থামভিষ্কিস্ত ধর্ম কামার্থনিদ্ধয়ে। ৮২।।

অথমন্ত্রকথনবিধিঃ ৷ পরিধারাণ্ডকে শিষ্যআচান্তোহাগমণ্ডপে ৷ গত্বা ভক্তা

দানবাঃ দনেঃ পুতাঃ দৈত্যাঃ দিলেঃ পুতাইতি ভেদঃ। অস্ত্রাণি শরাদীনি শস্ত্রাণি খড়্গান দীনি ॥৮২॥

অংশুকে বস্ত্রযুগাং নবং নিতং পরিবায় সানবাংশাহস্পূশন্ কুতাচমনঃ পন্। ভক্তা নত্বেতি ভগবদ্ধ্যা বহুশোহউজিপ্প্রামং স্পাদপ্রহণং কুত্র চার্থঃ। গুরোস্তায় পূর্বাভিনপ্রমূপবিষ্ট্য্য প্রাধেব কৃতপ্রাণায়াম্বড্জন্যাশাদিক্যা দক্ষিণভাগে তদেকচিছোইভিমুখো ছোলালঃ সন্

ভিন্দিংক শিষ্যং পূর্বাভিনুথম্পবেশ্য স্বয়য় তদভিমুথমুপবিশ্য শোষণদহনপুবিনাদিরপাং
ভূতশুদ্ধিং তদ্য কারয়েদিতি।। ৭৬॥ পৃজয়েওদ্দেহএব ভগবয়ম্দিশ্য পুস্পাঞ্জলিং কুর্যাদিতার্থ॥ ৭৭॥ দূর্বাক্ষতপ্তসাহিতাং গোরোচনাং। তয়া তিলকং তদ্য কারয়েদিতি কেচিদাছঃ।
তদ্য শিষ্যমান্তিকে কলসং পূর্বেশংক্তকুস্তং বিশ্বস্তম ধুজন হৃষ্টেন নয়েছ। আদিশন্দেন বিপ্রাশীর্বাদমঙ্গলঘোষণীতকীর্তনাদি॥৭৮॥ অথানতরং হে ভগবয়দীয়ান্তঃকরণে সন্নিধিবিশেষং কৃত্বা
শিশোরদ্য সাধুঞ্গদন্পান্তাহং কর্তুমহদীতি সংপ্রার্থ্য। স্বয়মুতরাভিমুথোবামহন্তেন কৃত্তং
ধারয়ন্ কৃত্তমুথবর্তিবস্তেণ শিষ্যং নীরাজ্য তৎকৃত্রমুথস্পল্লবাদিকং শিষ্যদ্য মন্তকেহপ্রেদিতি
বিধিরত দ্রুষ্থারতিবস্থানিত। তদেবাভিব্যঞ্য়তি বিধিবদিতি। সুরক্রমান্ কৃত্তমুথনান্তান্ অশ্ব্য
পল্লবানিত্যর্থঃ॥ ৮০॥ বারত্রয়ং গুলমন্ত্রণ প্রথমং প্রোক্ষ্য পশ্চাৎ কৃত্তং তং করাভ্যাং গৃহীত্বা
ভক্তালেন শিষ্যদ্য সর্বাঙ্গং পূরয়ন্ ফুর্ননাভিষেকং কুর্যাদিত্যর্থঃ। মন্মন্তান্॥ ৮১॥ ত

প্রকং নত্রা গুরোরাসীত দক্ষিণে !! ৮৩ !৷ গুরুং সমর্প্য গন্ধাদীন্ পুরুষাহারসং
নিতং ! নিবেদ্য পায়সং রুষ্ণে কুর্য্যাৎ পুস্পাঞ্জলিং ততঃ !!৮৪!৷ সাম্পুদারিক মৃদ্রাদি ভূষিতং তং রুতাঞ্জলিং ! পঞ্চাঙ্গপ্রমূথৈর্ন্যাকৈঃ কুর্য্যাৎ শ্রীক্রন্ধং সাচ্চিন্তং !৮৫!
নাস্য পাণিতলং সূর্দ্ধি তস্য কর্ণে চ দক্ষিণে। খায়্যাদিমুক্তং বিধিবলাক্রং বারতারং
বদেহ !৷ দীর্মান্ত্রপ্র শিষ্যস্য যাবদাগ্রহণং পঠেহ ৷ গুরুংদ্বত মন্ত্রৈক্যং শিষ্যতং
ভাবয়ন্ পঠেহ ৷৷ ৮৬ ৷৷ সাক্ষতং গুরুরাদায় বারি শিষ্যস্য দক্ষিণে ৷ করেহ
প্রের্দল্যন্ত্রাহ্রংসমোহস্থাবয়োরিতি ৷৷ ৮৭ ৷৷ স্বুলাজ্ক্যোত্রমাইং বিদ্যাং
গজ্তীং ভাবয়েদারুরং ৷ আগতাং ভাবয়েছিয়্ব্যোধন্যাম্বাতি বিশেষতঃ ৷৷ ৮৮ ৷৷
মহাপ্রসাদং শিব্যায় দত্ত্বা তহ পায়্যং গুরুং ৷ নিদ্ধ্যাদক্ষতামূর্দ্ধি তস্য যক্তন্
শুভাশিষ্য ৷৷ গুরুণা রুপয়া দত্তং শিষ্যশ্রাবাপ্য তং মনুং ৷ অকৌভরশতং জপ্ত্রা
সময়ান্ শূণ্যাত্রতঃ ৷৷ ৮৯ ৷৷

স্থ সময়ঃ । শ্রীনারদ পঞ্চরাত্রে । অন্ত্রোনোপদ্ধেই ব্যেবক্তব্যক্ষ ন সংসদি। গোপনীরং তথা শাস্ত্রৎ রক্ষণীয়ৎ শর্রারবং । বৈফবানাং গরাভক্তি রাচার্য এং বিশেষতঃ । পূজ্নক যথাশক্তি ভানপেরাংশ্চ পালরেং ।। ৯০ ।। প্রত্যায়তন,দিক্ষোঃ শির্মা প্রণতোবহেঃ। নিংক্রিপেদন্ত্রি ততে। ন পতে

উপবিশেনিভিত্তেরং ॥৮৩॥ আদিশকেন পুষ্পাধৃশাদীন্।।৮৪॥ সাংগ্রনারিকং গুরুপরম্পরানিকং। সুদা তিলকমালাদি। অণাজ্লীয়কাদি চ তেন ভূবিতং । শিশুং নি জশিশুত্বেন বর্ত্তমানমিতিল্লেছ-বিবয়তাসূচিতা। তংশিম্যং একুঞ্দাৎ কুর্মাং একুঞ্চার সমর্পয়েছ। ৮৫। তদ্য শিষ্যস্য মুর্জিন্ত্রকর-ভলং নিধায় । বিধিবদিতাত্রায়ং বিধিদ্ধিব্যঃ নিমীলিতনয়নং শিষ্যং পটান্তরিত্রপতিকো গুরুরিদং বদেৎ দিব্যদ্ট্যা ভগবন্তমবংলাকয়েতি ততঃসবর্ণশলাকয়া তং বক্ষনি স্পূদেৎ অধ শিব্য্যোমহাফলমেকং দৈয়। বদৈদিদং ময়ি প্রদীদ লোচনাভ্যাং বিলোকয়েতি। অজ্ঞানতিমিরাক্স-স্মেত্যাদি পঠেচ্চ। অধোন্সীলিতনয়নস্য শিধ্যস্য তনৌ ভগবস্তনাবিভূতিং ভা ধ্য়ন্ গল্ধাদিভিরল-कृष्ण পঞ্চোপচারৈশ্চ সংপূজা সুমুহুর্ত্তে গীতবাদ্যাদিমঙ্গলঘোষেণ শিব্যস্য শিব্দি করতলং মাস্য খীবিচ্চেনেচেৰতাদিক মুপদিশ্য মূল মন্ত্রং বারতয়ং দকিণকরে ব্রুয়াদিতি ॥ আ সম্ক্রছণং বাবৎ শিষ্যেণ মস্ত্রোযাবভাধতোভবেন্তাবদারং পঠেদিতার্থঃ। গুরুশ্চ দেবভাচ মন্ত্রশ্চ তেষাইমক্যং চিত্তরন্তং মন্ত্রমুক্তরিয়েৎ ॥ ৮৬ ॥ ইতঃপরময়ংমন্ত্রোমম তব চ সমোহস্ত তুল্যকগদো-ভক্ত্বিভাতম্বন্। ৮৭ .।। স্বস্মাদাচ্ট্টীং মন্ত্রাত্মিকাং বিদ্যাং । ধন্যোস্মীতি বিশেষতোভাব-য়েৎ।। ৮৮ ॥.তন্তগৰনিবেদিতংপুরুষাখারপরিমিতং মহাপ্রদাদৰূপং পায়সং দত্ত্ব।। শুভাশিবঃ। আয়ুরারোগ্য ইমশ্র্যামবিনাশঃ স্বয়ং জয়ঃ। দৌভাগ্যঞ্ পুনশ্চায়ুযুঁ ছাকং চাস্তু সর্বদেভ্যাদ্যুক্তাঃ। অপ্ত্রা আবর্ত্তা। তত্তসালোরোঃ সকাশাৎ সময়ান্ আচারান্ ন্যাসধ্যানাদীন্ অন্যানপি বৈষ্ণব ধর্মান্ শ্ণুয়াৎ॥৮৯॥ শাস্ত্রংঞ্জীভাগবতাদি।পূজাদিসম্বিধ্বা॥ ৯০॥ আপুনান্ আপদাতান্ সন্ত:। প্রাপ্তংনির্মাল্টীদি। অতএবোক্তং ভবৈত্রব প্রায়শ্চিত্তপ্রকরণে। বিষ্ণোনিবেদিতংপ্রাপ্য নি-

मवरनी यथा ।। ৯১ ।। माममूर्य। छत्रक्ष गवाचचात्रिमधानः । छात्रक्षेक्रवरू विक्रुर গুরুবিপ্রশরীরগং। যত্র যত্র পরীবাদোমাৎ সর্য্যাচ্চ্য়তে গুরোঃ। তত্র তত্র ন বস্তব্যং নির্যাহাৎ সংসারন্ছরিং। থৈঃ কভাচ গুরোনিন। বিভোঃ শাস্ত্র নারদ। নাপি তৈঃ সহবস্তব্যৎ বক্তব্যৎ বা কথঞ্জন। প্রদক্ষিণে প্রয়াণে চ প্রদানে চ কিন্দেষ্ডঃ। প্রভাতে চ প্রবাসে চ স্বমন্ত্র কৃশঃ স্বারে ৷ স্বপুরাক্ষিসনকং বা ভাশ্চর্চাতি-रुपन् । अक्यान्यित आरय्य न था। उर्दार्विन। ।। ১२ ।। शक्षवाजास्य । সময়াৎ 🗝 প্রবক্ষ্যামি সংক্ষেপাৎ পাঞ্চরাত্রিকাৎ। নভক্ষয়ের সংসাৎসংকৃষ্য-শূকরকাংস্তথা !। ৯৩ ।। কাংসাপাত্রে ন ভুঞ্জীত ন পুক্ষবউপত্রে: । দেবাগারে ন নিষ্ঠীবেং ক্ষৃত্ৎ চাত্র বিবর্জ্ঞারে ৷ ন সোপানংকচরণঃ প্রবিশেদন্তরং ক্তিৎ।। ৯৪ ।। একাদশ্যাং নচাশীয়াৎ পক্ষয়োরভয়োরপি । জাগরং নিশি কুর্মাত বিশেষাচার্জয়েধিভুৎ ।। ১৫ ।। সমোহনতন্তে চ। গোপয়েদেবতাগিফীং গোপরেপুরুমান্ত্রনঃ ৷ গোপয়েচ্চ নিজংমন্ত্রং গোপায়েরিজ্মালিকামিতি ৷৷ ১৬ ৷৷ চত্তমুক্শতসংখ্যে প্রাগ্ওরে: সময়েষু চ। শিষে/গান্ধীরুতেষের দীকা কৈশ্চন মন্তে ॥ ১१ ॥ তথাচ বিষ্ফামলে। গুরুঃ পরীক্ষয়েচ্ছিষ্য সংবহসর্মতন্ত্রিতঃ। নিয়মান্ বিহিতান্বর্জ্যান্ আবয়েচ চ্তঃশতং ।। ১৮ ।। ব্রাক্ষে গুহুওঁউথানৎ মহাবিকোঃ প্রবোধনং । নীরাজনঞ্চ বাদ্যেন প্রাতঃ সুনিং বিধানতঃ ।। ১১ ।। বিশুদ্ধাহতযুগুল্পধারণৎ দেবতার্জন । গোপীচন্দনমূৎস্নায়াঃ সর্বদা চোদুপুঞ্কং। পঞায়ুধানাৎ বিধৃতিশ্চরণামৃতসেবনং । ভলগীমণিমালাদিভূষাধারণমনুহৎ ।। নির্মাল্যোদ্বাসনং বিক্ষোন্তচন্দনবিলেপনং ॥ ১০০॥ শালগ্রামশিলাপূ্দা প্রতিমা-সূচ ভক্তিতঃ ! নির্মাল্যন্তলসীভক্ষন্তলস্যবচয়োবিধেঃ ।। ১০১ ।। বিধিনা ডান্ত্রিকী

ক্ষিপেৎ যত্র কৃত্রচিৎ। অযোগ্যসাধবা দদ্যাৎ সোহয়মন্ত্রশানতং জপেদিতি ॥৯১॥ বিভাঃ ভগবভঃ

।। ৯২ ॥ মৎস্যমাংসে নিষিদ্ধেপি পুনঃ কূর্মাদিনিষেধঃ কদাচিদ্রোগাদিনা মাংসাশিনোপ্যবশ্যং
তদ্ধনক্র্যায় ।। ৯৩ ॥ দেবাগারইতাগ্রেপানুবর্ত্তএব । ততক্ষ অন্তরং দেবাগারাভান্তরমিতার্থঃ ।
কৃচিৎ কদাচিদিপি। যদ্ধা কন্মিংশ্চিদপি দেবাগারে ॥ ৯৪ ॥ বিশেষাদিতি অনাতিথিভ্যোবিশে-বেণ একাদশ্যাং তত্রাপি বিশেষতোজাগরণেহর্চয়েদিতার্থঃ। ৯৫ ॥ ৯৩ ॥ সময়্পরণে মতান্তরং লিখতি চপ্তযুগিতি। প্রাক্ প্রথমংগুরোঃ সকাশাদঙ্গীক্তেঘেব ॥৯৭ । বিহিতান্ বিধেয়ানিত্যর্থঃ।
চন্তযুক্তশতং ॥৯৮ ॥ তত্রাদে দিপঞ্চাশদ্বিহিতানাহ ব্রাক্ষইত্যাদিনা চিন্তনমিত্রান্তেন ॥৯৯।
বিশুক্তপথিতাং অহতঞ্চ নৃত্রং পাঠান্তরে বিশুদ্ধেন জলেনাক্রতমানীতং যথ যুগ্রেং বস্ত্রযুগ্যং
ভঙ্গ্য ধারণং দেবতার। নিক্রেইটেদবত্যা অর্চনংতর্ণগদিনা জলে পুরুনং। পাঠান্তরেপি সঞ্কার্থঃ। ১০০। শালগ্রামশিলারাং পূজা প্রতিমাসু চ পুজেত্যেয়াক্রোনার্মঃ নির্মান্যতলস্যাভক্ষঃ
ভক্ষণং। ভূষেতিবাপাঠঃ। ভূষণত্বেন মন্তক্ষাদে ধারণমিত্যর্থঃ। বিধের্যথিবিধীত্যর্থঃ ॥ ১০১ ॥

সন্ধ্যা শিখাবদ্বোহি কর্মণি। বিষ্ণুপাদোদকেইনব পিতৃশাদ তর্পক্রিয়া।। মহারা-জোপচারে ক শক্তাং সংপূজন হরেঃ।। ১০২।। বিখৃতক্তাবিয়োধেন নিভানে-নিভিকা ক্রিয়া। ভূতশুক্রাদিকরণং ন্যাসাং সর্বে যথাবিধি। ন্বান্ফল পুত্থাদে-র্লান্ত তং সংনিবেদনং। তুলসাপুজনং নিত্যং শ্রীভাগবত পূজনং।। ১০৩।। ত্রিকালং বিলুপূজাচ পুরাণশ্রুতিরনুহৎ।বিফোর্নিবেদিতানাৎ বৈবস্তাদীনাঞ্চধারণং।। ১০৪।। मर्दियाः भूगाकार्यानाः स्रामिष्केत श्रवर्षकः । असीका शहनः एव विश्वासा গুরুণোদিতে ।। ১০৫ ।। যথাসমুদ্রারচনৎ গীতনৃত্যাদি ভক্তিতঃ। শখাদিপুনি-মাঞ্জ লৌলাদ;ভিনয়োহরে:। নিত্যং হোমবিধানঞ্চ বলিদানং যথাবধি।। ১০৬ ।। সাধুনাং স্বাগতং পূজা শেষনৈবেদ্যভোজনং । তামূলশেষপ্রহণং বৈষ্ট্**বঃ সহ সঙ্গ**ঃ। বিশিক্তিপ্তালিজনানা দশন। দিদিনত্তয়ে। ব্ৰতে নিয়মতঃ স্বাস্থ্যং সন্তোষোহেন কেন বৈ। পর্কাযাত্রাদিকরণং বাসরাফীকসদ্বিধিঃ। বিক্ষোঃ সর্বপ্রুচর্য্যাচ মহারাজোপ চারতঃ। সর্বেষাং বৈক্ষবানাঞ ব্রতানাং পরিপালনং। গুরাবীশ্রভাবশ্য তুল্সী নংগ্রহঃ সদা ।। ১০৭ ।। শয়নাদ্যপচারশ্চ রামাদীনাঞ্চ চিত্তনং ।। ১০৮ ।। স্থানেঃ শয়ন্ং নৈৰ ন শোচৎ মৃত্তিকাৎ বিনা। তিন্ঠতাচমন্ৎ নৈৰ তথা গুৰ্কাসনা সনং। গুর্ম্বগ্রে পাদবিস্তারশ্চয়ায়ালংঘনংগুরেঃ। শক্তৌ সুানক্রিয়াহানিদেবভার্মন লোপন্থ ৷৷ ১০৯ ৷৷ দেবতানাৎ গুৰুণাঞ্চ প্ৰত্যুখানাদ্যভাবন্থ ৷ গুরেয়ঃ পুরস্তাৎ পাণ্ডিতাং প্রৌচপাদক্রিয়া তথা ।। ১১০।। অমন্ত্রতিলকাচামোনীলীবস্ত্রবিধারণং।

শক্তাং শক্তৌ সত্যাং।শক্ত্যেতি পাঠেপি সএবার্থঃ। এবমগ্রেপি॥ ১০২॥ বা বিষণুভক্ত্যা সহ বিরুদ্ধা ন ভবতীতার্থঃ। পাঠান্তরংস্পন্টং॥ ১০৩॥ পুরাণানাং শ্রীভগবতাদীনাং শ্রুতিঃ শ্রবণং॥ ১০৪॥ স্বামিদৃষ্ট্যা ভগবদ্যজ্ঞাবুদ্ধ্যা যথানিযুক্তোস্মি তথা করোমীতি বুদ্ধ্যা হা। যদ্বা স্বামীতিবৃদ্ধা দাসভাবেনেতার্থঃ॥ ১০৫ ॥ যথাসং নিজমন্তদেবতানুসারেণ মুদ্রানাং রচনং বন্ধনং। তথাস্বেতিপাঠেপি সুএবার্থঃ॥ ১৬॥ স্থাগতং পূজাচেত্যেক এব নিয়মঃ। বিশেষতো ধর্ম্মস্য বৈফ্বর্ত্ত্যস্য। যদ্ধা। বিশিষ্টধর্মস্য ভগবদ্ধস্য জিজ্ঞাসা। দশম্যাদিদিনত্ত্রে দশ্ম্যেক।-দশীদাদশীধু যদু তঞ্ ভক্ষাণাদিনিয়মঃ তক্মিন্ নিয়মেন স্বাস্থ্য শ্ৰদ্ধা ইস্থামিতাৰ্থঃ। প্ৰ জনাতমাদিমহে । হাতা দেবালয়াদিগমনং। আদিশব্দেন তলসীপুষ্পবাটিকাদি তত্ত-দ্বিধানং। বাসরাইতকং অই মহাদ্বাদশ্যঃ তস্য সদ্বিধিঃ সংকারঃ থথাবিধি প্রতিপালনমিত্যর্থঃ। সংক্ষেষ্ ঋত্তমু বসস্থাদিয় চর্য্যা ত্ত্তৎকালীন পুষ্পাদিভিঃ পরিচর্য্যা দোলান্দোলনাদিক্রিয়া বা। সা চ মহারাজোপচারতঃ শক্তো সত্যামিতি জেয়ং॥ ১০৭॥ শয়নং শয্যা আদিশকাৎ পাদস্যা-হনাদিঃ। ত র'দ্রপোবাউপঢারঃ। রামাদীনাং চিস্তনং রামংস্কন্দং হনুমন্তং বৈনতে য়ং বৃকোদরং। শ্য়নে সংস্মরেরিত।মিত্যুক্তেঃ॥ ১০৮॥ অধুনা বর্জ্যান্ দিপঞাশনিয়মানাই। সন্ধ্যারিত্যা-দিনা সদেত্যকেন। তথাশব্দেন নৈবেতি সর্ব্বতাগ্রেপ্যনুবর্গ্যতে॥ ১০৯।। প্রত্যুত্থানাদীনাং অভা-বনং অকরণমিত্যর্থঃ। প্রৌঢ়পাদলক্ষণমুক্তং। আসনাক্চপাদস্ত জানুনোর্বাথ জন্বয়োঃ। রুতা-বশকিথকোযস্ত প্রোচপাদঃ সউচ্যতে ॥ ১১০ ॥ মস্ত্রং বিনা তিলকং আচামশ্চাচমনমিতি।

অভক্তৈঃ সহ মৈত্রাদি অসচ্চান্ত্রপরিগ্রহঃ ৷ তুচ্ছসঞ্চস্থাসক্তির্মদ্যমাৎস্থি-ষেবন ।। ১১১।। নাদকৌষধদেবা চ মসূরাদ। মভোজনং । শাকং ভুগা কলঞ্জাদি তথাহভক্তান্নসংগ্রহঃ। অবৈক্ষবব্রতারম্ভরণা জপ্যনবৈক্ষবং ।। ১১২ ।। অভিচারাদি করণং শক্ত্যা গৌণোপচারকৎ। শোকাদিপারবশ্যঞ্জ দিগ্রিদ্ধকাদশীব্রতং। শুক্রা ক্ষাবিভেদশ্চাসদ্ব্যাপারোত্রতে তথা । শক্তৌ ফলাদিভ্ক্তিশ্চ আদং চৈকাদশী-দিনে।। ১১৩ ।। দ্বাদশ্যাঞ্চ দিবাস্বাপস্থলস্যব্দয়ত্তথা । তত্ৰ বিষ্ণোদিবাসানং আদ্ধে হর্যনিবেদিতৈঃ ।। ১১৪।। বৃদ্ধাবতলস্থাদ্ধে তথাআদ্মট্রফাবং। চরণা-মৃতপানেপি ঋদ্যর্থাচমনক্রিয়া ।। ১১৫ ।। কাঠাসনোপবিফেন বাস্দেবস্য পূজনং। পূক্ষাকালেইসদালাপঃ করবীরাদি পূজনং।। ১১৬।। আয়সং ধূপপাত্রাদি তিয্যক্ পুঞ্ প্রনাদভঃ । পূজা চাসংস্কৃতিত বৈ তথা চক্ষল চিত্তভঃ ।। ১১৭ ।। এক হত্তপ্রণামাদি অকালে মানিদর্শনং। প্রমূতিবিতাদিদুন্তানামন্নাদীনাৎ নিবেদনং॥ ১১৮ সংখ্যাৎ বিনা মন্ত্রজপত্তথামন্ত্রপান্ধ। সদা শক্ত্যাং মুখ্যলোপো গৌণকাল পরিগ্রহঃ ৷ প্রসাদাগ্রহণং বিযোক্ষেজ্জ হৈছে ফবং সদা ৷ চরঃশতং বিধীনেতান্ नियंथान् আবয়েশ্যু রুঃ।। ১১৯।। অঙ্গাকারে ক্তে বাছ্ধতর্গারাজন পূর্বকং। দেব-পূজাৎ কার্যায় দক্ষকরে নিন্ধ জপেদিভি ॥ ১২০ ॥ ততশ্চোতার পূর্নাত্রা দশুবং প্রণাদপক্ষ শিষ্যঃ প্রতিঠাপ্রমৃদ্ধনি !! ১১॥ অথ ন্যাসান্গুরু স্মিন্ রুদ্ব। ইর্থজনৎ তথা । সাফৎ সহসুং ত্যান্তং স্পাক্তাক্তানে

জাত্যামেকএব নিরমঃ॥ ১১১॥ আদিশকোন দগ্ধানাদি। আদিশকাৎ বৃত্তাকাদি। অভক্তাৎ অবৈক্ষবাৎ অনুস্য সংগ্রহং পরিগ্রহঃ। সংগ্রহশকোন কুৎপীড়বোদরত্বগমাত্রানগ্রহণমনুজ্ঞাতং ১১২॥ দিলাশমী।ব্রতেঅসদ্যাপারঃ দৃত্তকীড়াদি॥ ১১৩॥ তকু দ্বাদ্যাং॥ ১১৪॥ বৃদ্ধৌ বৃদ্ধিশ্রাদ্ধে জলস্থি বিনা আদ্ধে। অবৈক্ষবং বৈক্ষবজনরহিতং ভগবদনিবেদিতারাদিবিহিতং বা। চরণাম্তপানে সত্যাপি শুদ্ধার্থং ইতরজ্ঞলপানবিহিতাচমনং যথাকথঞ্জিং পূর্বজ্ঞাতশুদ্ধেং পাবিত্রাায়াচমনমিত্যর্থঃ॥ ১১৫॥ করবীরশকোন গৃহকরবীরং। আদিশকাচ্চার্কাদি জ্রেরং। তেন মন্তগবত্বং পুজনংতহ।। ১১৬॥ করবীরশকোন গৃহকরবীরং। আদিশকাচ্চার্কাদি জ্রেরং। তেন মন্তগবত্বং পুজনংতহ।। ১১৬॥ প্রমাদতোপি। ১১৭॥ আদিশকেন একপ্রদাহিণাদি। যদ্যপি এতং সর্বময়ে লেখ্যত্তহংপ্রকরণে বিশেষতে। হতিব্যক্তংভাবি তথাপি সুথবোধায়াত্র কিঞ্চিদ্বিত্তং॥ ১১৮॥ শক্ত্যাং শক্তো সত্যামপি। কদাসক্যেতিপাঠে কুৎসিতকর্মাদ্যভিনিবেশেন মুখ্যকালস্য লোপঃ। অতএব গৌণকালস্য পরিগ্রহুইত্যেকএবনিয়মঃ॥ ১১৯॥ বাঢ়ং অঙ্গীকারে। শিব্যেণ তেবাং স্বীকারে কুতে সভি। তস্য শিব্যাস্য নীরজনপূর্বকং॥ ১২০॥ তস্য গুরোঃ পাদপঙ্কা তেবাং স্বীম্মূর্দ্ধনি প্রতিষ্ঠাপ্য চিরং ভক্ত্যা নিধারু॥ ১২১।। তমুপদিষ্টং মন্ত্রং অফোন্তর্বসহস্থারান জপেৎ। স্বশক্তেং অক্ষতয়ে অহানয়ে স্ব্যামর্থ্রকণার্থমিত্যর্গঃ। তৎ দীক্ষার্থানীতং মন্তগৃতিং কুন্তাদিকং সর্বমেব ক্রবং। অন্যচ্চ মন্ত্রদক্ষিণাদিরপং। তছুক্তং। প্রকারান্তর-সালন্ত্য গুরুং ব্যেষং ব্যাব্রেং। তির বিপ্রান্তর স্বালন্ত্য গ্রুং ব্যেষং ব্যাব্রেং। বিপ্রান্তর স্বালন্ত্য গ্রুং ব্যেষং ব্যাব্রেং। বিপ্রান্তর ক্রালন্ত্র গ্রেষং ব্যাব্রেং। তিরিতি। বিপ্রান্তর স্বালন্ত্র গ্রেষং ব্যাব্রেং। তার্বরেং। ত্যাব্রেং বনকাদিভিরিতি। বিপ্রান্তি

জপে । শিশ্যঃ কুল্ডাদি ত বর্ষ থেবে মন্ত্র শিক্তি গোন্ত্র হিল্ডা দ্ব্র হিল্ডা শ্রহণ নিমান বিপ্রান্ত প্র ভালাবিধানের যোন হৈছে। জিলাবিধানের যোন হৈছে। তাননুজাপ্য গুর্বাদীন ভূঞাত সহ বলুভিং ।। ১২৩ ।। ইতি দীকাবিধানের যোন হৈছে লভতে গুরেঃ। সভাগ্যবান চির্প্তাবী কৃতক্রত্যশ্চ কায়তে ।। ১২৪ ।। তথাচ সংক্ষেত্র জীশিবোমাসম্বাদে । এবং মঃ কুরুতে মর্ত্যঃ করে তস্য বিভূতরঃ । আতঃ পরং মহাভাগে নান্ত্র কর্মান্তি ভূতলে । যস্যাচরণমাত্রেণ সাক্ষাৎ ক্ষঃ প্রসাদিতি।। ১২৫ ।। প্রায়ঃ প্রপঞ্চসারাদাবুজোহর তান্ত্রিকোবিধিঃ । দীক্ষায়া লিখ্যতে দিব্যারিধিঃ পৌরাণিকোহধুনা ।। ১২৬ ।।

অথ বরাহপুরাণোজনীকাবিধিঃ। ইদানীং শৃণু মে দেবি পঞ্চপাতকনাশনং।

যজনং দেবদেবস্য বিক্ষাঃ পুত্রবস্প্রদং। ইহ জন্মনি দারিদ্রারাধিকুঠাদিপীড়িভঃ।

অলক্ষীবানপুত্রস্ত যোভবেৎ পুরুষোভূবি। তস্য সদ্যোভবেলক্ষীরায়ুর্বিত্তং সুতাঃ

সৃথং।। ১২৭।। ১২৮।। দৃষ্ট্রান্ত মণ্ডলে দেবি দেবং দেব্যা সমন্তিং। নারায়ণং পরং

দেবং যঃ পশাতি বিধানতঃ। পূজিত নবনাভে তু ষোড়শাফদলে তথা। ক্লাচার্যান্দর্শিতৎ দেবং মন্ত্রমূর্তিমযোনিজৎ।। ১২৯।। কার্ত্তিকে মাসি শুদ্ধারাং দাশশান্ত

বিশেষতঃ। সর্বাসু চ যজেদেবং দাদশায়ু বিধানতঃ।। সংক্রান্তো চ মহাভাগে চন্দ্র্ব্যান্তঃ। সর্বাস্তাহিপি বা। যা পশাতি হরিং দেবং পূজিতং গুরুণা শুভে। তস্য সদ্যোভবেত্রি পাপধুৎসোপ্যশেষতঃ।। ৩০।। সসামান্যোহি দেবানাং ভবতীতি ন

ক্ষণান্ শক্ত্যা সম্যক্ পূজরিত্বা ॥ ১২২ ॥ সমেধিতঃ সম্যাধ দ্ধিতঃ ॥ ১২৩॥ ইতি অনেনাক্তেম গুরোঃ সকাশাৎ ॥ ১২৪ ॥ এবমুক্তপ্রকারেণ । হেমহাভাগে দেবি ॥ ১২৫ ॥ অরং লিখিভোষোদী-ক্ষাবিধিঃ স প্রারস্তান্ত্রিকঃ । যতঃপ্রপঞ্চশারাদৌ তল্প্রোক্তানুসারিণি গ্রন্থে উক্তঃ । তথাচ ক্রম-দিনিকারাং । প্রপঞ্চশারপ্রতিত্র দীক্ষেত্যাদি । দিব্য ইতি পুরাণানাং মহাত্মাবিশেষাং । তথাচ পালে শ্রীশিবপার্বিতীসংবাদে । বেদার্থাদিধিকং মান্যংপুরাণার্থঞ্জ ভামিনীতি। যহা নিজ-প্রিরত্যাং শ্রীধরণীং প্রতি পূথীসমুদ্ধারকেণ শ্রীভগবতা সাক্ষাহক্তত্বাৎ ॥ ১২৬ ॥

(हरनिव धर्ति। यक्रनः शृकाविधिः। यमाणि श्रास्त्रवारः छर्गवान् विक् स्थाणि श्रास्त्रिनाः काञ्चानः नाक्रामिनिर्मिन् विस्थाति द्याक्रवान्। वदमर्थाणि राक्ष्त्राः॥ २२१॥ ॥ १२४॥ क्रिक्ताः॥ निर्मिनि क्रिक्ताः॥ १२१॥ ॥ १८४॥ क्रिक्ताः॥ विद्यान् । प्रदेश निर्मित्र क्रिक्ताः॥ १८१॥ मर्गिनिकः कर्वाः कर्षाः विद्यान् । प्रदेशः। प्रदेशः। प्रदेशः। प्रदेशः। प्रदेशः। व्यानिकः महाविष्ठं । व्यानिकः प्रदेशः। विद्यान् । व्यानिकः महाविष्ठं नामानिकः विद्यानिकः। विद्यानिकः विद्यानिकः। विद्यानिकः।

সংশব্ধ: 11 ১৩১ 11 ব্রাক্ষণকরিয়বিশাং শুদ্রাণাঞ্চ পরীক্ষণং । সম্বর্ধ প্রক্রঃ
কুর্যাজ্জাতিশৌচক্রিয়াদিভিঃ 11 ১৩২ 11 উপসমাৎস্ত ভোজাত্বা হৃদয়েনাবধারয়েং।
তেপি ভক্তিনতোজাত্বা আত্মনঃ পরমেশ্বং । সংবর্ধ করে। ভক্তিং কুর্যাবিক্ষাবিবাচলাং 11 ১৩৩ 11 সংবর্ধরে ততঃ পূর্ণে গুরুক্তিব প্রসাদ্ধের 11 ১৩৪ 11 ভগ্রং সুরুক্তাবাদেন সংসারাণিবতারণং । ইচ্ছামক্রৈইকাং লক্ষ্মীং বিশোঘেণ তপোধন ।। ১৩৫ 11 এবমভার্যা মেধাবা গুরুং বিব্রুমিবাপ্রতঃ । অভ্যত্তি চদনুজাতোদশন্যাং কার্তিকস্যন্ত । ক্ষাবর্ক্ষসমৃদ্ধুত্বং সন্তিবং পরমেতিনা । ভক্ষাহত্বা শারীতোর্ব্যাং দেবদেবস্য সন্নিধৌ ।। ১৩৬ 11 স্বপান দৃষ্ট্যা গুরোরপ্রে প্রাব্য়েত বিচক্ষণঃ । ততঃ শুভাশুভং তম্বদালপের পরমোগুরুঃ । একাদশ্যামুপোধ্যাক্ষ মৃদ্ধা দেবালয়ং ব্রজের ।। ১৩৭ ।। গুরুশ্চ মন্তল্বং একাদশ্যামুপোধ্যাক্ষ মৃদ্ধার্যার বিধানতঃ । ব্যিড্রুমারং লিখেছক্রং নবনাভ্যম্বাপিবা। অফীপত্রমথোবাপি লিখিত্বা দর্শয়েচুধঃ ।৷ ১৩৮ ।। নেত্রকরং প্রক্রেরিত সিত্বারেণ যত হং । বর্ণানুক্রনতঃ শিষ্যান্ পুষ্পাহস্তান্ প্রবেশয়ের ।৷ ১৩৯ ৷৷ নবনাভং বিশ্রেণ যত হং ৷ বর্ণানুক্রনতঃ শিষ্যান্ পুষ্পাহস্তান্ প্রবেশয়ের ।৷ ১৩৯ ৷৷ নবনাভং

সৰ্শইত্যর্থঃ ১১৩১॥ দীক্ষাধিকারিশআহ ত্রাহ্মণেতি সার্দ্ধয়েন। ভক্তানাঘিতি পার্চেলি **শেবকানাং শূজাণামিত্যর্থঃ।। ১৩২ ।। উপসন্নান্ নিকটগতান্প্রতি ততঃ সংবংশরানন্তর্মের** জ্ঞাত্যাদি জ্ঞাত্মা দীক্ষায়াযোগ্যা অযোগ্যাবেতি মনসা বিচারয়েং । यहा সহবাধাদিনা নিকট বর্ত্তিনঃ সভন্তান্তান্তান্তারাদিনা পরীক্ষা হৃদয়েন বুহ্না অবধারয়েং । দীক্ষাঝানাসের নিশ্বিরাৎ। यद्यो উপসন্নান্ ক্তোপসন্তিকান্ দীকাপ্পিকারিণইতি দূঢ়ং জানীরাদিতার্থঃ। উপগ্র লানিভিপাঠেপিতথৈবার্থ:। ভক্তিমতঃ ভক্তিযুক্তান্ আত্মনঃ স্থান্ প্রতি পর্যেশ্বরং শুরং জার। ষদ্ধা ষষ্ঠান্তমের পদন্বরং ততক্ষ ভক্তিমতইত্যাল্পনোধিশেষণং। যদ্ধা ভক্তিমন্তঃ প্রতিযুক্তাঃ সন্তঃ গুরুমাত্মনঃ পরমেশ্বরং জ্ঞাত্ম। ততক ভক্তিমতইত্যার্যং ॥ ১৩৩॥। তেযু যঃ পরীকিতঃ শিষ্যঃ স প্রসাদয়েৎ।।১৩৪॥ তংপ্রকারমেবাহ ভগবন্নিতি। ইচ্ছামইতি বহুত্বং নি এপুল্রান্যপেক্ষর।।১৩৫॥ অভ্যর্থ্য প্রার্থ্য। অভ্যর্চ্য ধনাদিনা সংমান্য। তেন গুরুণাহনুজ্ঞাতঃ দুন্। ক্বার্ত্তিকস্য দশম্যাং ক্ষীর युक्कव्यक्तास्तृ তং দন্তকাঠং পরনেষ্ঠিনা মূলমন্ত্রেণ মন্ত্রিতং সায়ংসক্ষান হরং ভক্ষয়িত্রা দেবা-লয়ে ভূমৌ শয়ীত।। ১৩৬।। তমনিতি স্বপু:নুদারেণেতার্গঃ। তহক্তং। ক্রেম্বেশুহধমা দীক্ষাই ছফ স্বপু ও মধ্যমা । উত্তমস্বপুপ্ৰবাত্দীক। সংক্ষাওমা মতা ইতি ॥ ১৩৭ ॥ কিল্পিতায়াং সংক্ তারাং ♦বর্তন্তেৎ নির্চয়েৎ। বিধানতইতি পুণ্যাহং স্বস্ত্যাদিকং রাচরিত্বেত্যাদিকং ৰোদ্ধব্যং। এম মগ্রেপ্যদ্য পদ্সানুবর্ত্তনাদ্বিজ্যেমিতি দিক্। পঞ্বর্ণেন রক্ষদা যথাশোভং লিখেছ ॥ ১৩৮ ॥ জ্ঞানত্ত্বণ নেত্রবন্ধাং নিধ্যাণাং কুর্যাৎ । নিষ্যাণাং প্রবেশনঞ্চ মণ্ডলাভঃস্থাপিতকলসেষ্ ভগ-**ৰতঃ ইন্দ্রাদীনাঞ্চ প্রকানন্তরমের জ্ঞে**য়ৼ ॥ ১৩৯॥ বর্মকঃ পঞ্চরমৈশুলুর্মানিভিঃ। ইক্রমৈক্রাং शृक्षिपिछा किषा थएन ह विनारमाञ्जानि वकामान वहनर जो श्रष्टानुमात्र के दियान र एक सर त्रवेनाजमेखरत आंग निकत्मनाकीमू निकृषे कृतमान् मः भारे हिक्सिर्डा वर नवकतमान् अका 

यमा कूर्यतामाध्यमः वर्गरकर्षः । छमामीः भूक्ताचारमविक्तुरमण्डाः जु भूकाराः । १८०। लाकशासम्यादियामिकि नः नःशृक्तसिष्विः। यमः जमन् यानासिः रेनक्षित्रः निक्ष छि नात्म । वांक्रगार वक्र रेवव वांग्रवार शवनर याज्य ॥ २८ ॥ १ नम् চোত্তরে ন্যার রুদ্রমৈশানগোচরে। সংপূজ্যের বিধানেন দিক্পতেষু বিশেষতঃ। মধ্যপত্তে তথা বিষ্ণুমচ্চ রেৎ পর্মেশ্বরং ।। ১৪২ ।। পূর্বপত্তে বলং পূজ্যং প্রদ্যমুং দক্ষিণে তথা। অনিরুদ্ধং তথা পূজাং পশ্চিমে চোত্তরে তথা। পূজায়ে-षामुरमव९ <mark>ख मर्वभाष्ठकभाष्</mark>ठिमः ॥ ५८० ॥ ঐশাनऽ९ विनऽरमष्ट्रश्वभारद्वरा५ চক্রমেব চ। সৌম্যারান্ত গদা পূজ্যা বারব্যাৎ পদ্যুমেবচ। নৈখাত্যাৎ মুষলং পূজাং लिकित शक्त ए॰ छथा। वामरछादिन।रमलक्षी॰रमवरमवमा वृक्तिमान्। धनुरेम्छन्छ थएनह দেবস) পুরতোন্যসেত। শ্রীবৎসং কৌস্তভক্ষিব দেবস। পুরতোহর্চয়েৎ। এবং পূজ্য यथान। स्थान। स्वाप्त प्रकार्मन । पिड्म खान ह विनाम। हार्की कूडान् विधान छः । বৈক্ষবং কলসং চৈব নবমৎ তত্ৰ কম্পায়েৎ 11 ১৪৪ 11 সাপায়েলা জিকানাৎস্থ रिक्षात्वन घटिन छ। बी हामान् मान्यात्र एवरिन जुनाथ घटिन छ। अयथ शतकाना उ कार्यस्यनाजिस्यवस्य । मृज्ञक्षप्रविधारनन यास्त्रिन मणन९ ज्या। मृष्टुप्रुश्रभनः গুলিং নৈখ্তিল বিধীয়তে। শান্তয়ে বারুণেনাথ পাপনাশায় বায়বং। এব সম্প্রি কামস্যকৌবেরেণ বিধারতে। রোজ্যেণ জ্ঞানহেরত্ত লোকপাল্ঘটান্তিয়েম।। ১৪৫।। একৈকেন নরঃ সাতঃ সর্বপাপবিবজিতিঃ। ভবেদব্যাহতজানঃ গ্রীমাৎশচ পুরুষঃ স্দা। কিৎপুননবভিঃ সাতোনরঃ পাতকবিজিভিঃ। জারতে বিফ্সদৃশঃ মদ্যোরাজ্যেব। পুনঃ ।! ১৪৬ ।। ভাগবা দিক্ষ্ সর্বাসু যথাসংখ্যেন লোকপান্। পূক্ষেৎ হত্নন্

ভীর্থাদকপরিপুরিতান্ উপরিস্থাপিত্যবশা বানাতরপূর্র সদীপশরাবমুথান্ যবানাং বুলিবিনিচোপরি বিনাস্যাদৌ মধ্যকলসে তুলমন্ত্রেণ ভগবন্ত্যাবাহনাদি গলপুপাইস্কুর্পচারৈঃ সংগু ভা
পশ্চাদিক্রং পূর্ব্যাং দিশি অগ্নাদীংশ্চ স্বৃস্থদিনি ক্রমেণ পূল্বেদিতি ॥ ১৪০ ॥ দিকোন্তরুঃ ।
নাসেদিতি তত্র স্থাপিতকলসে আবাহ্য পূল্বেদিতার্থঃ ॥ ১৪১ ॥ সংপুজাপুজরিয়া । বিধানেভুক্তেরেবং জেরং বাহ্নতিত্তিঃ শুক্রাক্ষতিঃ ইন্দ্রাগছেত্যাদিপ্রেরোগেনাবাহ্য প্রণবাদিনা চন্ত্রী
নমোহস্তেন ভর্লানম ন্ত্রণ সশক্তিকান্ সপরিবারান্ নার্বান্বাহনান্ সগলপুদ্পাদৈনা চন্ত্রী
নমোহস্তেন ভর্লানম ন্ত্রণ সশক্তিকান্ সপরিবারান্ নার্বান্বাহনান্ সগলপুদ্পাদৈনাক পরিতঃ প্রবাদ্
সংপ্রেরাতি । বিধানেনিতিপদম্প্রেপ্যান্বর্তনীরং ॥১৪২॥ ততোমধ্যমকলসইস্যাব পরিতঃ প্রবাদ
ক্রিকাপিন্তিয়াত্ত্রপত্রে জীসঙ্কর্মণপ্রত্যান্নিক্র্রাপুদ্বান্ ক্রমেণ্ ভবৈব প্রুজ্মেদিত্যাহ্পুর্ব্বেতি
সার্ব্রেরা ॥১৪৩॥ যথানাগারং যথোচিতং পূজ্য সংপ্রতা। তচ্চ ক্রমদীপিকাদ্যনুদ্ধীরেণ দ্রুত্রগ
১৪৪॥ ততোধুগদীপটেন্যরণ্ট্যক্রপচারৈর্ভগব স্থানালিক্রবিভাবিতিরের কলন্ত্রায় মন্ত্রনং দশবিত্রা পূল্পাঞ্জনিপ্রকং প্রণানং করেরিয়া বৈক্ষবানিভিন্নতিরের কলন্ত্রাই নিষ্যং স্থাপয়েদিতি
ক্রের্থা তত্র চ কলসভেনেন কলভেন্সাহ স্থাপয়েদিতি চন্ত্রতিঃ ॥ ১৪৫ ॥ পুলান্তেনৈকেন
আনস্য কলরিশেষং সমুতিতৈশ্চ তৈর্মহাক্রলমাহ ॥ একৈকেনেতি স্বাভ্যাং ॥ ৪৬ ॥ পুলানাং
প্রক্রমাহ অর্বেনিত স্বর্মামা স্থাবনামনত্রেণ ক্রমাদিক্রমেণ ষড্ভিবেন ইন্দ্রাদীনাং

তু বড় ভিষেদ বিধানতঃ ।। ১৪৭ ।। এবং সংশুদ্ধা দেৱাং গুলোক পালান প্রস্নধীঃ।
পশ্চাং পরীক্ষিতান্ শিব্যান্ বন্ধনেজান্ প্রবেশয়েং । আয়েগারণাদধান্ বায়ুনা
বিপুতাং ন্ততঃ । সোনোমাপ্যায়িতান্ পশ্চাজ্বায়েন্নিয়নান্ বৃধঃ ।। স্প্রচা
ন নিন্দেল্লালান্দেবান্ বিষ্ণুং ক্রন্ধাণমের চা ক্রন্দানিত্যমগ্রিষ্ণ লোকপালান্ গ্রহাং
স্থা। বন্দেত বৈষ্ণবং চাপি পুরুষঃ পূর্মনীক্ষিতং ।। ১৪১ ।। এবন্ধ সময়ান্তাব্য
শিক্ষাদেশে ভ কার্যেং । তন্ত্রানি শিষ্যদেহেয়ু বিন্যায় চ বিশোধ্যেং । ত নমো
ভগবতে বিষ্ণবে স্প্রিকিপিণে ভ্ স্থাহা। যোড়শাক্ষরমন্ত্রেণ হোময়েজ্ব লিতানলঃ ।
গর্ভাধানাদিকাশ্চের ক্রিয়াঃ স্প্রিশ্চ কার্যেং । ক্রিভিন্তিভিন্নিন্দ্রস্য
সন্নিধী। ততোহপর্নায় দৃগ্রাং পুরঃ শিষ্যং নিবেশ্য চ । প্রায়ঃ পূর্বোত্ত বিধিনা

ষড়ঙ্গপূজা কার্য্যেত্যর্থঃ॥ ১৪৭॥ । অর্থ পরিহিতশুক্লনবৰস্তং তাদৃগুত্তরীরমাচা শুমলস্তং শুক্ল বস্ত্রবন্ধনেত্রং শিষ্যং মণ্ডলং প্রদক্ষিণেন প্রবেশ্য প্রাঙ্মুখমুপবিষ্ঠং তং বাধ্রিবরুণবীকৈঃ কুত ভূতশুদ্ধিং প্রণতং প্রহ্বীভূতং সময়ান্ আবয়েদিত্যাহ এবমিতি দ্বাভ্যাং । আগ্লেয়া ধার্ণয়া দক্ষানিতি ত পাত্বং ধ্যানেনৈবেতি জ্ঞেয়ং এবমগ্রেপি ॥ ১৪৮ ॥ সময়ানেবাহ ন নিন্দেদিভি সার্দ্ধেন। পূর্ব্বদীক্ষিতং দীক্ষাক্রমেণ স্বস্মাৎ জ্যেষ্ঠমিত্যর্থঃ। ব্রাহ্মণাদীনামেতেধাং বন্দনাদিনা স্মাননৈৰ কাষ্য। নক্ত কদাচিদ্পি নিন্দেত্যুৰ্থঃ ॥ ১৪৯ । আব্য আৰ্ব্য়েক্। নিষ্যেণ সহ্যং তদ-জীকারে ক্তে পশ্চাদ্ধোমং কুর্যাং। তত্ত্বানিবিন্যন্য ক্রমদীপিকাণ্যক্ততত্ত্বন্যানাদিকং ক্রয়া ভাচ্চেহাৎ বিশোধয়েছ। হোমবিধিমাহ। বোড়শেতিসার্জেন। হোময়েছ হোমং কুর্যাহ। তং প্রকারমেব শিষাং দশ্যতি গর্ভেতি । আদিশব্দেন পুংসবনসীমস্তোল্লয়নজাতকর্মনাম-করণালপ্রশেনচৌড়োপনয়নস্থানবিবাহাখ্যাঃ সংস্কারাঃ। অত্তচারং প্রকারেতিভাভরানুসারে। ক্রষ্টব্যঃ। বেংড্শারচক্রেইউদলকমলে বা পীঠপুকাং ক্রত্বাবাহনাদিভিরুপচারৈরভবন্তমভার্চ্য সুগ্ছোক্তবিধিনাগ্নিস্পনাদিকর্ম পূর্বলিথিতবিধিগায়োত্রোক্তেন ধোড়শাক্ষরমক্ষেণাগ্নেগভাধা-নাদিশংস্থারান্ ক্যাং। তত্র চ প্রত্যেকশংস্থারমাহুতিত্রং জুছয়াদিতি। কিঞ্। অনন্তর্মাল্য ভাগাস্তে মূলমস্ত্রেণাগ্রৌ দেবমাবাস্থ গলাদিভিরুপটারৈরভার্চ্য বোড়ণাক্ষরমস্ত্রেণাফ্টোতরং সহসুং শতং বা সংস্তাজ্যেন জুছয়াৎ।ততঃ শিষ্টিকৃতাদিহোমশেষং সমাপ্য পূৰ্ণাছতিং দত্ত্ব। বৈ-শানরং প্রণবাদিননোহন্তমন্ত্রেণ গন্ধাদিভিরুপচারেরভার্চ্চা শিষ্যং প্রণম্যা মণ্ডলগৈশান দিশি পূজ্পাদিবিভূষিতায়াং ভূবি রচিতভদ্রপীঠমানীয়াস্ত্রমন্ত্রাদিমন্ত্রিতঃ পুট্পাঃ সম্ভাব্য পাশনিরাক্রণ বুক্ষা। নেত্ৰবন্ধনুৰস্ত্ৰমূপ্নীয় জ্ঞানৰপ্তৈমশগাক্ষা নয়নে উন্নীলা পুস্পাঞ্জলিং আহ্যিত্বা। অজ্ঞান তিমিরাস্কাস্য জ্ঞানাজনশলাকয়া। চক্ষুরুলীশিতং যেন তল্মৈ শ্রীগুরবে নমঃ ইতি গুরুপাদয়োর্দত্ত-পুষ্পাঞ্জলিং ভদ্রপীঠে পুরতঃ উপবিষ্টোগুরুঃ স্বন্যস্তাসনে তমুপবেশ্য শক্ত্যুচ্ছলনমার্গেণ নিজ মধ্যমনাডীং তম্বধ্যমনাড্যাং সমাবিশন্তীং বিচিন্ত্য শক্তিঞ্চ তরাশিকতয়া ক্রদয়ে সমূলসন্তীং পরিভাব্য স্বহৃদয়াষ্ঠ পরবিদ্যাং বর্ণরূপেণ চিদানন্দকুলিক্সমালামিব তছদনং প্রবিশন্তীং भ्यार्यः। তত্ত মূলমন্ত্রং তিঃ শিষ্যকর্ণে ভাবেরে । পশ্চাদঘ্যপাত্ত লেন অমুকর্ষিমমুকছন্দক সমক্দেবতাক সমুক্নামে মদংশায় তুভামহং সংপ্রদদে অয়ং চাবয়োঃ সমানকলপ্রদোভবিত্বিতি

মন্ত্র তকৈ ওর বিশেষ। ১৫০ ।। হোমান্তে দীকিতঃ পশ্চাদাপরে ক্রুক্তিশং।

১০৪ খর জুক টকং হেমপ্রামান্তিকং নৃপঃ। বাপয়েকারবে প্রাজ্ঞো নধ্যমোধ্যমাং

ভথা । দাপয়েনিতরোম্বাং সহিবণ্যৎ ব্রাবিধি। ১৫১ ।। এবং কতে তু যৎ
পুণ্যং মাহান্ত্রাং জায়তে ধরে। তদশক্যং ও গ্রিভ্যাপি বর্ষতিরপি ।। ১৫২ ।।

দীক্ষিতাআণ্ডরোভূজা বারাহৎ শৃণুয়াদ্যদি। তেন বেদাঃ পুরাণানি দর্বে মন্তাঃ
সুসংগ্রহাঃ। জপ্তাঃ সুট পুকরে তাথে প্রয়াণে দিকুসাগরে। দেবহুতে কুরুক্তেতে
বারাণস্যাৎ বিশেষতঃ। প্রহণ বিষুবে চৈব যৎফলং জপতাৎ ভবেৎ। তৎফলৎ
বিশুণং তস্যদীক্ষিতোয়ঃ শৃণোভি চা দেবাজ্ঞাপি তপঃ রুদ্ধা ধ্যায়ভি চ বদভি চা
কদানে ভারতে বর্ষে জন্ম স্যাজুভ্রধারিণি। দীক্ষিতাশ্চ ভবিষ্যামোবারাহং শৃণুমঃ
কদান বারাহৎ বোড়শাআনং যুজ্যা দেহে কদাচন। পশ্যামঃ পরমৎ স্থামং যদাত্বা
ন প্নভবিৎ।। ১৫৩।। এবং জপেভি বিবুধামনসা চিন্তয়ভি চা বারাহ্যাগৎ
কার্ত্রিক্যাৎ কদা দ্বন্ধ্যামহে ধরে।। ১৫৪।। এষ ভে বিধিরুদ্ধিটো ময়া তে ভূতধারিণি। দেবগদ্ধর্মযক্ষণাং সর্ব্যা দুর্লভোহ্যসোঁ। এবং যোবেভি ভত্তেন যশ্চ
পশ্যতি নণ্ডলং। যদেচমং শৃণুয়াদেবি সর্ক্ষে মুক্তাইতি শ্রুভিঃ।। ১৫৫।।

অথ সংক্রিপ্তদীকা। সংক্রিপ্তশ্ব দীকায়াবিধিরেষ বিলিখ্যতে। মুখ্যকশ্পে হাশক্তন; জনসঃ স্যাদ্ধিতায় হঃ। সুমুহুর্তেইথ সংপ্রাপ্তে সর্বতোভত্তমগুলে। নৃতনংগদ্ধপুস্পাদিমপ্তিতং কলসং ন্যানে । বস্তাবৃতং পয়ঃপূর্ণ পঞ্চপল্লবসংযুত্থ। সর্বেষধীপঞ্চর সুমূৎসাম্প্তকগভিতিং। মৃতিকাশ্চ সপ্তোক্তাং। তশ্বহানাদাজ্বানা-

জনং তরুত্তে নিক্ষিপেও। তথৈব নিব্যোপি গুরুদেবতামদ্রৈকাং ভাবয়ন্ যথাশক্তি অপেনিতি ॥ ১৫০॥ ততশ্চ পুণাহং বাচয়িত্বা গুরুবে দক্ষিণাং দদ্যাদিত্যাহ হোমান্তইতি।
দৌকিতঃ গহীতদীক্ষাকঃ সন্। নৃপইতি রাজজন্যশক্তিশেদিতার্থঃ । যুগ্নং বস্তুদ্ধরং । তৎপশ্চান্
কৈবমত্র বিধানং জেরং অদ্যপ্রভৃতি যাবজ্জীবং শ্রীবিষ্ণু শ্রীতিকামঃ প্রত্যহং ভগবন্তং শ্রীকৃষ্ণংগুজারিষ্ট্রতি সঙ্কণ্যা,দেবং গুরুপদিউমার্গেণ পূজারিত্বা সর্বদেবতা উদ্বাস্য প্রাক্ষণান্ ভোজরিত্রা দীক্ষোপকরণজ্ঞাতং গুরুবে নিবেদ্য স্ক্রনানপি ন্যান্যেদিতি ॥ ১৫১ ॥ দীক্ষাকল্মাহ্
এবমিত্যাদিন। শ্রুভিরিত্যন্তেন ॥ ১৫২ ॥

<sup>(</sup>জয়মাধবশকার্থমানসোল্লাসপুস্তকান্। দীক্ষাপদ্ধতি মালোচা টাকেয়ং লিখিতা ময়।)
বারাহং বরাহপুরাণং ধোড়শানাং শ্রীভাগবতব্যতিরিক্ত পঅপুরাগাদীনাং আত্মানং
আশ্রয়ং প্রবর্তকং বা প্রথমং শ্রীব্যাসতস্ত সৈয়বঃবিভাবপ্রসিদ্ধেঃ দেহে যুক্ত্যা শ্রবণাদিনা
সংপুদ্ধা। যদা যোড়শানাং তত্ত্বানামাত্মানমধিষ্ঠতারং ঘোড়শযক্তম্তিং বা শ্রীবরাহরপং
ভগবন্তং দেহে মনঃ প্রধানে ইন্দ্রিয়াদ্যাত্মকে বা ধ্যানাদিনা সাক্ষাদিব ক্ষোর্য়িয়া।। ১৫৩॥
কিং চিন্তর্মন্তি ভদাহ বারাহ্যাগমিতি। হেধরেইতি ভচ্চিন্তনং কর্থয়ন্ শ্রীবরাহহাজগবান,
ধরণিংসয়োধয়তি।। ১৫৪॥ উদ্দিক্তঃসংক্ষেপেণ্ কথিতঃ [॥ ১৫৫॥

দ্বন্যকান্ত চরক্ষাথা থা রাজ্বারাক্ত গোষ্ঠাক্ত নদ্যাঃ কুলাআ্ দং শ্বাই তি । রক্ষমত্যর্চ্য তং কু বং কুণ গ্র্কেন দেশিকঃ । দেয়নত্রেণ সাইন্ত সহস্মভিমন্তরে থা ১৫৬ ।। তদন্তিঃ পূর্যবাক্ত্যি মভিষিচ্য দিশেলারুণ । শিষ্যোহর্চয়েলারুণ ভক্ত্যা যথাশক্তি দিশেলারুণ । শিষ্যোহর্চয়েলারুণ ভক্ত্যা যথাশক্তি দিশেলারুণ । কিষ্যোহর্চয়েলারুণ ভক্ত্যা যথাশক্তি দিলালার । ১৫৭ ।। অবাপ্যদত্তর বিশ্বের হিলালার । কর্ত্যা তার্বারা আলেন কে করং । নিধায়ামুণ জপেৎ কর্নে উপদেশে ত্বরুণ বিধিঃ। চলুসূর্য্পত্রেই তার্থে সিদ্ধক্ষত্রে শিবালারে । মন্ত্রনাত্রপ্রকান মুপদেশার উচ্যতে ।। ১৫৮ ।। তত্র তবৈর বিশেষঃ জ্রীনার্দপঞ্চরাত্রে । নিভলোলারি কুলার দেহিনঃ । সংসারভয়ভীতস্য বিষ্ণুভক্তস্য ভত্তথা আরাবান্ত । নিভলোলার গলিতে বীকৈঃ সলিলাঃ কেবলৈশ্চ বা । ত্রবার্হানস্য কুর্কাত বচসান্ত্রাংণ ভ্রমণ ।। ১৫৯ ।। যঃ সমঃ সর্বভূতেযু বিরাগোবীতনাৎসকঃ। জিভেন্নিরুং শার্দকঃ সর্বান্তার্যবান্তিঃ: কর্মাণা মনসা বাচ। ভীতে চাভয়দঃ সদা। সম্বৃদ্ধিপদ্ধ প্রান্ত শ্বন্ধ একণ তাপি ভগবল্যঃ। পঞ্চকালপর শৈচব পঞ্চরাত্রার্থিবিত্রথা। বিষ্ণুভক্ত্বণ প্রিক্রায় একণ চানেকভেন্গং। দীক্ষয়েরেদিনীং সর্ব্যাৎ কিং প্রশ্বচাপসম্ভলন্ ।। ১৬০ ।।

অথ সন্ত্রদানমাহাত্মা । ক্ষানের ব্রহ্মনার দ্যংথাদে । ইহ ক্টিভিং বর্ণান্তং প্রজাবৃদ্ধিং ধনং সুখং। বিদ্যাদানেন লভতে সাজিকোনাত্র সংশরং। যথা সুরাণাং সর্বেষাং পরমঃ পরমেশ্বরং। অথৈব সর্বাদ্যানাং বিদ্যাদানং পরং মৃতং । ১৬১। যাবচ্চ পাতকং তেন কৃতং জন্মনতৈর পি। তৎ স্বাধং নাশ্যাপ্রেডি বিদ্যাদানেন দেছিনাং। বিদ্যাদানাৎ পরং দানং ন ভূতং ন ভবিব ভি। যেন দ্ভেন চাপ্রেডি শিবং পরমকারণং। ইতিশীগোপালভউবিলিখিতেভগবড়াভিবিলাগেদিছি বেশ্নাম দিছিলীয়োবিলাসং।

অশক্তম্য হিভায় যঃস্যাৎ ॥১৫৬ ॥ সংউংঅফে তেবংসহসুং ॥১৫৬॥ দিশেং ৮৩রেৎ ॥১৫৭ ॥ ৫ফ মস্তকেরং নিধায়। অমুং মূলমস্ত ॥১৫৮॥ গুর্কালি বিভবিস্তারে সংক্ষিপ্তে চ বিধাবপবাদং লিখাতি বিত্তেতিসার্কৈঃ পঞ্চতি। বাইজর্বাদিভিঃ। বচর্বের বাং॥১৫৯॥ নকুতথ লাকারিধিঃ কথং সংগ্রুকাছি স্থিতি সার্ক্ষাজিভিঃ। সর্কেরস্ক্স, দেহস্যাবর্তের নৃতঃ। সমবুদ্ধানাং জ্ঞানিনাং পদং। পঞ্চসু কালেষু যৎকৃত্যং ভৎপরইতার্থঃ। একমপ্যানেকভেদপ্র গুমিভি ভেদাভেদসিদ্ধাতা- সেক্ষা উপসন্ধতান্ ভক্তা প্রপ্নানিতার্থঃ।। ১৬০ ॥

বিদ্যা মন্ত্রএবাত্র সর্ব্যব্রে পার্ত্রাং। অত এব ক্রমাদী পিকায়াং বিদ্যাং ন যঃসংবিবিংসু-রিতি। কীর্ত্তিং প্রতিষ্ঠাং। বদান্যত্বঞ্চ দানশীলতাং। যদ্ধা বদানাত্রকপাং কীর্ত্তিশক্তমহাদানা আং। সান্ত্রিকঃ নিক্পটঃ প্রদাবান্ব।।। ১৬১।। দেহিনাং দেহিনঃ প্রতি। শিবং মঙ্গলবাণং প্রাস্থাত্রকং বা প্রমকারণং শীব্রদা ক্রংবে,।। ইতিহিতীয়ঃ

## অথ তৃতীয় বিলাসঃ।

বন্দেহ্নন্তাড়ু ভৈশ্বন্য এটিচতন্যং মহাপ্রভুৎ ৷ নীচোহপি মংপ্রসাদাহ সাহ সদাচারপ্রবর্তকঃ ৷৷ ১ ৷৷ পুৎসোগ্ছীতদীক্ষণ্য জীক্ষণং পূজ্যিষ্যতঃ ৷ আচা-রোলিখ্যতে ক্রভঃ প্রতিষ্যতানুসারতঃ ৷৷ ২ ৷৷

তাথ দীক্ষিত্র পূজায়ানিত্যতা। আগনে । লক্ষ্মানন্ত যোনিত্যৎ নার্চায়েন্দ্র দেবতাৎ। সর্বকর্মাক্লৎ তস্যানিউৎ যুদ্ধতি দেবতেতি।

ভাগ নদটোরঃ । নকিঞ্চিৎ কস্যচিৎ সিধ্যেৎ সদাচারৎ বিনা হতঃ। ভন্মাদ বশ্যং সর্বত্র সন্চারোহ্যপেক্ষ্যতে ।। ৩ ।।

ভাগ সদাচারদ)নিত্ত। মার্কভেয়পুরাণে । শ্রীমদালসালকসন্থাদে । গৃহতেন সদাকনে) মাচারণারিপালনং। নহাচারবিহীনসং স্থমত পরত চ। মজদানতপাং সীহ্পুরুষদান নজুভারে। ভবতি ফ সদাচারং সম্লত্যা প্রতিতে । ৪ ।। ভবিষ্যে

শ্রিংরিল। প্রভু, শ্রীক্রন্ট ইতনো জীয়াই বহুকুপয়া ভাবে । খাপি সিংইস্থ গংমার্ল্ খোলি ক্রিক্রিল। ক্রিক্রিরা পালি ক্রিক্রিরার সামন্ত্র ক্রেক্রিরার প্রান্তর প্রান্তর প্রান্তর বন্দইতি । ইন্রান্তর প্রান্তর ক্রেক্রেরার ক্রিরার সামন্ত্র লাভ্যান্তর ভাবিতর ভাবিত ভাবিতর হৈ করে । অনন্তর ভাবিতর করে প্রান্তর পর্যান্তর । তালি করে প্রান্তর পর্যান্তর লাভ্যান্তর প্রান্তর করে প্রান্তর শ্রেক্রিরার । বদ্যান্তর শ্রেক্রিরার ভাবিকারার । বদ্যান্তর শ্রেক্রিরার প্রান্তর শ্রেক্রিরার প্রান্তর লিখিতং। এবমত্রে লোখাং ব্রাহ্রন্থ করে লিখিতং তথাপি কর্মান্তর প্রান্তর ইতি তংগুজার্থ ইতি তংগুজার ক্রির্বার প্রান্তর করে প্র

ননু পূজাবিবিরের লিখ্যতাং কিমন্যাচারলিখনেনেত্যাশস্ক্য প্রথমং সদাচারসা নিত্যতাং লিখতি নকিঞ্চিদিতি । হি নিশ্চয়ে এতেন শাস্ত্রাদিপ্রমাণংস্চিতং॥ ৩॥

• অন্যঃ সদাগর্ঘবিংক্ষারাধনাৎ পরঃ পড়াঃ কেবলযোগাভ্যাদাদিঃ তদ্য বিক্ষোস্থোব কারকোন ভ.তি অতএবোক্তং প্রথমস্বলে দবৈ পুংসাংপরোধর্মোবভোভক্তিরধোক্ষজইতি। ধর্মস্ত সদাচারলক্ষণএব ॥ ৪॥ ত্তরে চ জিক্ষণু বিজিরসমাদে। আচারহীনং ন পুনস্তি বেদাহদ্যপ্রধীতঃ সহ যড়ভি রক্ষৈণ ছল্পানেরনং মৃত্যুকালে ভ্যজন্তি নীড়ং শকুন্তাইব জাভসক্ষাঃ ।। ৫ ।। কপালস্থ যথা তোয়ং শুদ্তো বা যথা, পয়ঃ। দুক্তং স্যাৎ স্থানদোষেণ বৃত্তীনে ভ্যাংশুড়ং। আচাররহিভারাজ্বাহে নামুত্র নন্দতীতি । লেখ্যেন ম্যরণাদীনাং নিত্যন্তানিব শেহস্যতি। অরণাদ্যান্ত্রক্যাপি সদাচারস্য নিত্যভা ।। ৬ ।।

অথ সদাচারমাহাল্যং বিষ্ণুপুরাণে। তত্তিব গ্হিথম্প্রসঙ্গে। সদাচারবতা 
ক্ষা জিতো লোকাব্ভাবিপি ।। ৭ ।। সাধবঃ ক্ষাণ্দোযান্ত সচ্ছকঃ সাধুবাচকঃ।
তবামাচরণং যত্সদাচারঃ সউচ্যতে ।। কাশীখণ্ডে ক্ষাণান্ত্যসংবাদে। অনধ্যয়ন্দীলঞ্জ সদাচারবিলংঘনং। সালস্যঞ্জ দুর্মাদং ব্রাহ্মণং বাধেতে হন্তকঃ। ততোহভ্যমেং প্রয়েল্ন সদাচারৎ সদা দ্বিজঃ। তার্থান্য প্যভিলষ্যন্তি সদাচারসমাগ্রম । ৯।।
ভবিষ্যোত্তরে চ তত্তিব ।। আচারপ্রভবোধর্মঃ সভ্স্চাচারলক্ষণাঃ। সাধূনাঞ্চ যথাব্রং স সদাচারইব্যতে ।। তিলাং কুর্য্যাৎ সদাচারৎ ঘইচ্ছে দাভিনাত্মনং। সঞ্চলকণ্যীনোপি সমুদাচারবান্ত্প। প্রদাধনোহনসূযুস্চ স্কান্ কামানবাপুয়াৎ ।।
১০ ।। কিঞ্চ ।। আচারপ্র ধর্মস্য মূলং রাজনকুলস্যাচ । আচারাদ্বিচ্যতোজন্ত্রন
কুলীনোন ধান্মিকঃ ।। কিঞ্চ ।। আচারগ্রিভ্তিজনন আচারঃকীভিবিদ্ধনিঃ। আচারগ্রাহ্যায়ুরাচারোহত্যলক্ষণং। ১১।। আচারপ্র নৃপপুষ্ণুর সেব্যুমানোধ্র্যার্থকাস
কলদোভবিতেইপুৎসাৎ। তন্মাৎ সদৈব বিদুমাবহিত্বন রাম্বন্ স্যান্ত্রোদিতে হ্রন্
দিন্ধ পরিপালনীয়ঃ।। ১২ ।।

মত্যকালে ত্যক্ষন্তি প্রলোকে কিনপি কনং ন, প্রয়ছন্তীত্যর্থই ।। ৫ ॥ বৃদ্ধং সদাচারং তেন হীনে শুভংতীর্থাটনাদিপুণ্যকর্ম। ননু অনৈরপি বিশেষবঢ়নেং স্পাইসদাচ চারদ্য নিত্যন্তং লিখ্যতাং তত্র লিখতি লেখ্যেনেতি। স্মরণাদীনাং স্মরণমান্ত্যাত্র প্রস্তে লেখ্যানাং প্রক্ষমানাদিকত্যানাং অত্যে লেখ্যেন নিত্যন্তেইনর স্দাচারস্যাপি নিত্যতা সেৎস্য ত্যের অত্তর অধুনা ভন্তক্ষনলিখনবাছলোনাসমিতি ভাবং। ননু ভন্তবংশ্মরণাদেনিভ্যত্যা সদাচারস্য নিত্যতা কথমস্ত তত্র লিখতি স্মরণাদ্যাম্বক্ষেয়েতি। সদাচারটায়বত্তক্র ক্ষণনুদ্দিত্যাল্যুর্গঃ॥ ৬॥ ৭॥ সদাচারটায়বলক্ষণমাহ সাধবইতি ॥ ৮॥ যদ্যাপি কাশীর্থ প্রমাধ্নিকং কলিপতং কার্যামিতি পুরাণতত্ত্বিৎসু প্রামিন্ধং তথাপি তদাকার স্কান্দ্রায়ব্যকৌর্মাদিপ্রতিপাদিত্যক্ষাহারিষয়কাণি কানিচিন্ধচনানি স্মৃতিস্থলিতান্যত্র সংগৃহীভানি ইত্যদেখাং। তনস্যান স্মালমিতি সালস্যমিতি প্রনাদ্মিতি দ্র্যান্তন্ত্বন হেন্তত্বেন বোক্তং। তত্র চ তেমাং হেন্তহেন্দ্রো যথাক্রমমূহ্যা॥ ৯॥ সম্যন্তংক্ত স্মাচারং সমুদ্যানারং স্দ্যাচারং ক্লাচার্য কব তদ্বান্য নিত্যভা ভর্ষা বেষাং মাহান্মোনাপ্যাস্য মাহান্মং সিন্ধ্যেদেখেতি লিখিতন্যান্ত্রন স্পাইজ্যান্ত্র লিখিতন্যান্ত্রন স্পাইজ্যান্ত্র নিত্যভা ভর্ষা কেবাং মাহান্ত্রোনাপ্যাস্য মাহান্মং সিন্ধ্যেকে তিতি লিখিতন্যান্ত্রন স্পাইজ্যান্ত্রিতং।। ১২॥

তথ তত্ত শিত্যক্ত্যানি।। বাংলা মুহূর্ত আয় ক্ষক্ষেতি কীর্ত্যন্। প্রফাল্য পাণীপাদৌ চ দন্তধাবননাচরেৎ ।। ১৩ ।। আচম্য বসনং রাত্তেন্তল্যান্ত পরি ধায়চ। পুনরাচননে কুর্যালেখ্যেন বিধিনাগ্রতঃ ।। ১৪ ।। অথেচ্ছন্ পরমাৎ শুদ্ধি মূর্ন্নি ধ্যাত্বা গুরোঃ পদৌ । শুত্বা চ কর্তিয়ন্ ক্ষং সারংকৈচতদুদী-ব্যেৎ।। ১৫ ।।

তাথ প্রাতঃক্ষরণকীর্ত্তনে । জয়তি জননিবাসোদেবকীজন্মবাদোহদুবরপরি-যংক্রিদিভিন্স্যন্নধর্ম । স্থিরচরবৃজিনঘুঃ সুস্মিতভীমুখেন ব্রজপুরবনিতানাৎ

সদাচাব্যের নিত্যপক্ষমাসাদি ক্রত্যেন গ্রন্থ সমাপ্তিপর্যান্তং লিখন আদৌ তত্র নিত্যক্ত্যানি লিগতি ব্রাক্ষ ইত্যাদিনা। কৃষ্ক্ষেতি কীর্ত্যন্তমুখায় দন্তানাং ধাবনং শোধনং। তচ্চ কদাচিত্র কিন্তানাইটাই কদাচিত্র পাদিতিক। তত্ত পুঞ্জানিরতানাংশ্রীভগবংপ্রবোধনাদার্থং তদপ্রে গমিন্তাল তত্ত প্রাগধুনৈর যুক্তং যতউক্তং জ্রীররাহেণ । দন্তকার্তমগাদিরা যন্ত্র মামুপস্পতি। ত্রকালাক্তং কর্মাতেনৈবৈকেন নশাতীতি। তত্র চাদক্রতার্থাদিরেতি দন্তানহশোধ্যিত্বতি ক্রেন্থ। প্রতিগলাদিয়া দ্বানহশোধ্যিত্বতি ক্রেন্থ। প্রতিগলাদিয়া দ্বানহশোধ্যিত্বতি ক্রেন্থ। প্রতিগলাদিয়া দ্বানহশোধ্যি তিরি

জয়তি সর্কোত্তমতয়া বর্ততে শ্রিক্ষঃ। জনেবু নিব দতি অন্তর্যামিতয়েতি তথা সং ভাতোদৈবক্যাং জন্মতি বাদমাত্রং থন্য সং। যত্রবরাঃ পরিবং সভাদেরক্রপাঃ থদ্য সং। ইত্যানতের
নিরসমসমর্থাপি দোর্ভিরধর্মং নিরস্যন্ কিপন্। স্থিরচরগ্জিনম্বঃ অধিকারিবিশেবানপেক্ষয়া
বুন্দাবনতয়গরাদীনাং সংসারছ্বংস্থা। তথা বিলাসবৈদ্ধানপেক্ষয়া ত্রেজবনিতানাং পুরবনিতানাঞ্ স্প্রতেন শ্রীমতা মুখেনৈর কামদেবং বর্জয়ন্। কামন্টাসৌ দীব্যতি বিশ্বিগীষতে সংসার্মিতি দেবশ্চ তং ভোগদারা মোক্ষপ্রদ্মিতার্থঃ। এথবা। শ্রীধর্ম্বামিপাদানাং ব্যাখ্যাতো-

## গ্রিইরিড কি বিশাসঃ।

E o

বর্দ্ধন্ কামদেবং । ১৬ ।। স্মৃতে সকলকল্যাণভাজনং যত্ত জায়তে । পুরুষস্থন জংনিত্যং ব্রজামি শরণং হরিং।। ১৭ ।। বিদ্ধাগোপালবিলাসিনীনাং সংভোগ চিহ্লান্ধিতসর্বাগাত্রং।পবিত্রমামায়গিরামগন্যং ব্রহ্ম প্রপদ্যে নবনীতচৌরং।। ১৮ ।। উল্লায়তীনামরবিদ্ধাচনং ব্রজ্ঞাঙ্গনাং দিবমস্পৃশদ্ধনিঃ। দধুশ্চ নিম্মুত্রন-

হধিকমত্রবং। কিঞ্চিল্লিখামি ততৈন্ত ক্ষন্তব্যং গুরবোহি তে। একুফোজয়তি সর্বোৎকর্যেণ বর্ত্তে। তদেব প্রতিপাদয়তি জনানাং নিবাদআগ্রাঃ যদা জনেযু নিজভক্তেমু নিতরাং প্রা-কট্যেন বাদোষ্য্য। অতএব ভক্তবাৎ্যল্যেন দেবক্যাং জন্ম আবিতাৰঃ বাদশ্চ ভাষণং ভদাশ্বাস-নাদ্যর্থং তাদৃশনিজভক্তেমুজন্মকারণাদিকথন রূপং যস্য তথা যদুব রস্য যাদবরাজস্যকংসপিওরিপি উত্রসেনস্য যদ্বা যদুনাং সামান্যেন সর্বেষামের যাদবানাং বরা দিব্যা সভা স্থর্মাথ্যা যস্মাৎ। তথা জন্মমাতে শৈবাপনীতমপি অধৰ্মং নিজভক্তবিনোদাৰ্থং স্থৈঃ সৌন্দৰ্য্যাদিনা অধাধারতী র্নোর্ভিরসামধর্মহেত্তদৈত্যাদিবধেন বিনাশয়ন্। দোর্ভিরিতি বছরং ভারতাত্যক্রানুসারেণ ভারতযুদ্ধাদৌ চন্তভুজানাং তথাহরিবংশোক্তানুসারেণ বাণযুদ্ধাদাবষ্টভুজানাং চ প্রকটনাৎ। যদ্ব। দোর্ভিরিব দোর্ভিঃ ভক্তবাৎসল্যেন সাহার্য্যকম্পিতৈরিত্যর্থঃ। যদ্ব। ক্ষত্রিয়াণাং ভগবতোবাভ জাহ্বাৎ বলাধিক্যাদ্যপেক্ষয়া কার্য্যকারণাভেদেন দে। জিঃ ক্ষত্রিট্যৈরিত্যক্তং। তত্রাপি দৈর্ঘনি হৈজঃ যাদবপাগুবাদিভিঃ। স্থিরাণাং চরাণাঞ্চ সর্বেষামপি তদানীস্তনানাং জীবানাং সংসারতুঃথইন্ডা। व्कार्तरः स्तिनिजानाः । यदा वक्क वर भूतः विविवित्तानरे विषयाचार जदनिजानाः। কামেৰ দেবং শ্রেষ্ঠন্তদেকনিষ্ঠত্বাৎ প্রমপ্রেমপরিণতিরপকামবিশেষাচ্চ তং বর্দ্ধান্ । তচ্চ নি জেন সুস্মিতেন এমুথেটনর। এবং তেনৈর পরমমোছনসৌন্দর্যাদিনা তাদৃশকামবর্দ্ধনামোকা-নন্দেইপি সামান্যভজনানন্দেইপি চ প্রন্নেরপেফাছ্যক্তমেব তৎকাম্স্য শ্রৈষ্ঠাং ৷ বর্দ্ধর্যাতি বর্ত্তমানত্বেন তাদৃশকামসা পরমপ্রেমপরিণামলকণতয়া প্রেমুশ্চাতৃপ্তিশ্বভাবকতয়া প্রিছেদ: ভাবোদর্শিতঃ । এবং দশমক্ষদ্রশেষে নিথিললীলাকথনান্তে তথোক্ত্যা সর্বাদৈব তালিঃ সহ সংযোগঃ স্তিতঃ । কিঞা । শত্ওৱপদন্যাবশাককিয়াপদশহিতারয়েন তাসাং তাদৃশকাম ৰদ্ধনেনৈৰ জয়তীতি প্ৰমোক্ষতাভিপ্ৰেভা এবং তৃদ্ধমেৰ দ্বক্যাং জ্ঞাদিকমিতে বং ः সর্বারপ্রাঞ্জনং তত্ত্রব পর্যাবদাতীতি দিক্। মঙ্গায়াস্য পদ্যস্ত পঠামানদ্যসর্বতঃ। বিস্তার্য্য লিখিতোহতার্থোলেখ্যোহতো যোহি ছুর্গমঃ ॥ ১৬ ॥ এবংমঞ্চলমাচর্য্য সর্ব্ব কর্মদিদ্ধরে ভগবদেকশরণোভবেদিত্যাশয়েন লিখতি সাতইতি। যত যিমান্হরে।। ১৭।। কৈশিকীবৃত্তিগানাদ্যভিপ্রায়েণ শ্রীক্লফ্দ্য প্রাতঃকালীনরূপ, লীলাদিস্মরণ विषय्क्षि । अविज्ञमित्र विषयाक्यार्गाहतः श्रुतक्कात्रि विषक्षानाः र्गाश्रु-চিহৈন্বপক্তাদিভিরক্তিতানি সর্বগাত্রাণি যস্য মণীনাংসম্ভোগস্য তৃষ্য প্রাতর্ণধিমন্ত্রনাপিত্স্য চৌরং চৌর্য্যেণ ভক্ষয়ন্তমিত্যর্থঃ তল্কিছাক্ষিডমপি জেয়ং ।। ১৮ ॥ এবং সাক্ষান্তগবভঃ কীর্ত্তনন্মরণে লিখিত্বা প্রিয়জনপ্রেমদ্বারাপি কীর্ত্তনন্মরণ [ विश्नयः लिथि উक्तां सङीनामिछि । पिनाः प्रमानिक् हानाः कीवानाः व्यमक्रवः वेदिका मूश्चिक-সধিলমভরং,। यहा অকারোধিকুন্তজপং মঙ্গনং। কিয়া ন বিদ্যতে মঙ্গলং যদ্যাৎ তদমঙ্গলং অনুষ্ঠমাদিবৎ পরমমঙ্গলমিতার্থঃ। তচ্চ মুধ্যবৃদ্ধা শ্রীভগবংপ্রেমব । যেন ধুনিনা দিশঃ প্রতি শব্দমিশ্রিতে। নিরস্তিত যেন দিশামমঙ্গলমিতি।। ১৯।। পঠেৎ পুনশ্চ সাধুনাৎ मन्भुमाशानुमात्रकः । फलः भाकी बिमा । मर्कामारिका एका खारा ।। २०।। । । সারামি ভবভীতিমহার্ভিশান্তৈ। নারায়ণং গরুড়বাহনমজনাভং। গ্রাহাভিভূতবর-বারণমুক্তিহেত্ত চক্রায়ুধং তরুণবারিজপত্রনেত্র । প্রাতর্নামি মনসা বঁচসা চ गृह्मी शामात्र विषम् यूगल १ शतमा १ शूपमः । नातायगमा नतकार्ववावगमा शाता-য়ণপ্রবণবিপ্রপরায়ণসঃ। প্রতিভঁজামি ভজ্তামভয়ঙ্করং তং প্রাক্সর্বজ্ঞপাপ-ভয়াবহুতৈয়ে যোগ্রাহবক্তুপতিতান্ত্রিগজেন্দ্র্যোরশোকপ্রণাশমকরোদ্ধ্নশন্তকঃ 11 শ্লোকত্রয়মিদং পুণ্যং প্রাতঃ প্রাতঃ পঠেভু যঃ। লোকত্রয়গুরুস্তবৈ দদ্যাদাত্বাপদং হরিরিতি। তদেত লিখিতং কুত্র কুত্রচিষ্ব্যবহারতঃ। কিন্তু স্বাভীষ্ট ৰপাদি এক্ষিদ্য বিচিন্তয়েং। ইতাং বিদধ্যান্তগৰৎকীর্ত্তনদারণাদিকং। সর্বতীর্থাভিষেকং বৈ বহি-রত্তবিশোধনৎ ।।২১ ।। অথাচ স্কান্দে কন্দং প্রতি শ্রীনিবোক্তৌ। সক্ষারায়ণে-জু।জুন পুমান্ কপেশ তত্র য়ং। গঙ্গাদি সর্বতি থি বু সুাতোভবতি পুত্রক।। ২২।। অন্ত্ৰ চাশয়নাদুখিতোমস্ত কীৰ্ত্যেমধুসূদনং ৷ কীৰ্ত্তনাত্ৰস্পাপস্য নাশনায়ত্য শেষতইতি।।২৩।। মাহাত্ম্যৎ কভিন্স্যাগ্রে লেখ্যং মুখ্যপ্রসঙ্গতঃ। মারণস্য ত মাহার্য মধুনা লিখ্যতে কিয়ৎ ॥ ২৪ ॥ ত্তাদৌ ত্স্য নিত্যতা ৷ পাদে ুবৃহৎ সহসুনামত্যেত্র। স্মর্ত্তব্যঃ সতত্ৎবিষ্ণুর্বিষ্ণার্তব্যোন জাত্তচিৎ। সর্বে বিধিনিষ্ণেঃ স্যুরেতয়োরের কিঙ্করাঃ ।। ২৫ ।। স্কান্দে কার্ত্তিক প্রসঙ্গে শ্রীমদগন্ত্যোক্তৌ। সাহানিত্ত স্হচ্ছিত্র সাচারজ জড়মূকতা । যমুহুর্তিৎ ক্লুণং বাপি বাদুদেবোন চিস্তাতে । কাশাখণ্ডেচ শীক্রণচরিতে । ইয়মেবপরাহানিরূপদর্গোয়মেব চ । অভাগ্যৎ পরমং চৈতদ্বাসুদেবং ন যৎ কারেং। যে মুভূর্তাঃ ক্ষণাযে চ যাঃ কাঠাযে

নিতরাং রস্যতে আস্বাদং কার্য্তইতর্থঃ ॥ ১৯॥ যদ্যপি লেখ্যশ্লোকচন্ত উরে প্রীগোপাল দেবস্য কীর্ত্তনন্ধরণবিশেষালাকৈ তথাপি বছলশিকীচারাপেক্ষয়া তৎ পচিতব্যমিতি লিখতি পঠে-দিতি। সর্ব্বেষাং ছঃস্বপাদিদোষাণাং শান্তয়ইত্যেষা শ্লোকানাং প্রায়োগকেন্দ্রমোক্ষাখ্যানপর-তয়া ছঃস্বপাদ্যপশান্তয়ইত্যাদি ভত্রত্যাক্তাভিপ্রায়েণ ॥ ২০॥ পারায়ণং বৈদাধ্যয়নসাকল্যং ত্র্মিন্ প্রবণন্তৎপরইত্যর্থঃ । যদ্বা পারায়ণেন প্রবণঃ প্রণতোযোবিপ্রস্তম্য পরং পরমং অয়নমাশ্রম্ভস্য ॥ ২১॥ ভগবৎকীর্ত্তনন্মরণে এব সর্ব্বভীর্থাভিষেকইত্যত্র প্রমাণং লিখতি সক্র-দিতি। কণ্পশতত্রয়মিত্যস্য নিত্যে ভাৎপর্যাং সদৈবেত্যর্থঃ ॥ ২২॥ কথং বহিরম্ভবিশোধনং তল্লিখতি শয়ন্দিতি। কীর্ত্তনাহ কেবলাদেব ॥ ২৩॥ মুগ্যে প্রসঙ্গেইতি কীর্ত্তনবৈদ্য প্রামানেন প্রসঙ্গে কার্যাচান্যসক্ষত্যা গৌণস্বাহ লিখিতুম্যোগ্যমিত্যর্থঃ। এবমক্রেপি জ্রেয়ং॥ ২৪॥ জাস্তাচিৎ কদাচিদ্যপি ন নিন্মন্ত্র্বয়ঃ। এতয়োঃ স্মরণবিস্মরণয়োরেব ক্রেয়রাঃ অনুগাঃ ন্যুতৌ সর্বের বিগয়ঃতৎক্রতপুণ্যামিনিক্য ভৌ চ কর্বেন নিষেধান্তহক্তপ্রপানি স্বয়্যমেবানুগছন্তীত্যর্থঃ॥ ২৫॥ স্বতে বিফ্লুম্তের্গ্রেক্স্মরণং বিনা যস্য জনস্য যাতাঅপগতাঃ তেরু মুহূর্ত্ববিদ্বু

নিনেষকাৰ। ঋতে বিশ্বস্ত তেহাতাতে যুস্টো হনেন স ইতি ।। ২৬ ।। নিত্য ত্বেপাস্থা নাহাজ্য ংবিচিত্রফলদানতঃ। তেইয়ং শাস্তোদিতং দর্শপূর্ণমাসা-দিবসুধৈঃ।। ২৭।।

অধ্বরণুমাহাত্বাৎ। তত্তসর্বতীর্থসানাধিকত্বং। উক্তঞ্চ ক্ষাতৈরিপি। মাত্র্রণ পার্থিবিধারের বারব্যং দিব্যমের চ। বারুণং মানসং চেতি সান্ধ্য স্থান্থ ক্ষ্ত্রার মাত্রং মুদালন্তর পার্থিবং। ভক্ষনা ম্যানমারেরং স্থান্থ গোরজসানিলং। আতপে সতি যা বৃট্টির্দিব্যং স্থান্থ তদুচ্যতে। বহিন্দ্যাদির স্থান্থ বারুণং প্রাচ্যতে বুধৈং। ধ্যান্থ য্যান্যা বিক্ষোম্যান্যথ তৎ প্রকীতিত্ব। ২৮।। কিঞ্চা অসামর্থেনে কারস্য কালদেশাদ্যপেক্ষয়া। ভল্যকলানি স্বাণি স্থারিত্যাহ পরাশরঃ। স্থানাশং মানসং স্থানং মন্ত্রাক্ত্রং পরমং মৃত্রং। ক্তেন যেন মুদ্যন্তে গৃহস্তাঅপি বৈ দিজাং।। ২৯ ।। পরমন্থেকত্বং গারুড়ে জীনারদোক্তো। বিষ্পর্যের্চ প্লস্ত্রোক্তো।। অপবিত্রং পবিত্রোবা সর্ব্যাব্রাণ্ণ গভোপি বা। যাল্লাক্তরিং প্রবিশ্বাধিকত্বং নার্ন্তর পার্ণাক্তির পারিক্রান্য স্থানিক্তান্য ভাল্তরঃ শুচিং।। ৩০।। যদ্যপ্রেণাক্ত পার্ণাক্তিং গালিক্তান্য স্থানিক্তান্য ভাল্তরঃ শুচিং।। ৩১ ।। পাপোন্য লন্ত্রং শুকিং না প্রামন্ত্রান্য ক্রিক্রান্ত্র । তথাপি সংক্রেন্ বিষ্ণুং স্বাহ্যভাল্তরঃ শুচিং।। ৩১ ।। পাপোন্য লন্ত্রং শুকিং নিক্র্পুরাণে।। প্রায়ন্তিত্রান্য ক্রের্ণাক্তিরং নিক্র্পুরাণে।। প্রায়ন্তিত্রান্য ক্রেরিক্রান্ত্রান্ত্রিরাক্তিরান্য ক্রের্ণ শুকির্বান্ত্রিরাক্তিরান্য সংক্রান্ত্রিরাক্তিরান্য সংক্রিক্রান্ত্রান্য বিষ্ণুং স্বাহ্যভাল্তরঃ শুচিং।। ৩১ ।। পাপোন্য লন্ত্রং শুকির্বাণে।। প্রায়ন্তিত্রান্য ক্রেরিক্রান্ত্রান্য ভালিত

নুটোৰঞ্জিতঃ বশীক্তইতাৰ্থঃ । ২৬॥ ননু শাস্ত্রেদু অরণস্য তত্তৎকলপ্রবণাৎ কথং নিতারং নিজেদিত্যাশক্ষাহ নিতার্থণীতি ॥ অস্য অরণস্য শাস্ত্রোদিতঃ বিচিত্রকলদানতোমাহাত্মাং দশপেনিমাসাদিতিবং । আদিশলাদগ্রিহোত্রাদি। যথা তেবাং নিতার্থেপি সতি কলানি প্রয়ন্ত তথাত্রাপি। বুবৈঃ শাস্ত্রবিভিজেরঃ । এতচ্চ মীমাংসাশাস্ত্রনিপুণেঃ প্রক্রন্থদোনাহার্যাদিভিরেকাদ্দীপ্রসক্ষে বিবৃত্য লিখিত্তমন্তীতি নাত্র বিস্তার্যাতে । এবমপ্রেপি সর্বহৈত্র বোদ্ধরামিতি ॥ ২৭ ॥ আর্প্রেপীতি ভগরস্ভব্জিপরৈরচ্যতএব আ্তুাক্তর্কপ্রপরিরগৃত্তমিন্তার্থঃ । শং ন আপন্তিতি মন্ত্রাদ্বর্ণাঃ । ইদম্পি আর্ত্তানাহেমব নতং বৈক্রানান্তমূলমন্ত্রাদিনৈব । মূদঃ মুত্তিকারাঃ আর্ত্তঃস্পর্নার হৈ মন্য ধ্যানমিতি কেবলমনঃসংযোগমাত্ররপং অরণং লক্ষ্য ত ধ্যানমিত্যক্তেপি মনগেতিপ্রযোগাৎ ॥ ২৮ ॥ নহৈতেরু ব্যাপারতারতম্যাদিনা ভারতম্যং জের্মিতি লিখতি অসামর্থেনেতি। কালাদ্যপেক্ষরাত্র । আদিশব্দেন অধিকারী গ্রাহঃ ॥ ২৯ ॥ বিশ্বঃ মানানামিতি । বিশ্বাইতি তেঘামের স্নানামেদী মুখ্যমাৎ হে বিশ্বাইতি বা ॥ ২৯ ॥ ব বাহাভাশুরইতি থাক্তেন পরীরাদিনা আভ্যন্তরেণ চ মন আদিনা সহ শুদ্ধোহুত্রিং ৷৷ ১৯ ॥ ব বাহাভাশুরইতি থাক্তেন পরীরাদিনা আভ্যন্তরেণ চ মন আদিনা সহ শুদ্ধোহুত্রগর্ণঃ ৷৷ ১৯ ॥ নমনাপি অন্তর্ভ্রন্থ আন্তর্ভাই গণ্যিত্তমাণ্ড কিং পুনঃ স্বাক্ষাৎ প্রারন্তিতকর্মানুর্ভানেনেত্রগর্ণ ভালা ক্রমাপরিছারির নই ভালাং কিং পুনঃ স্বাক্ষাৎ প্রারন্তিতকর্মানুর্ভানেনেত্রগর্ণ ভালা ক্রমাণির কর্মাণির দানক্রপাদীনি তদাস্ত্রকৃত্তিঃ ত্রমাণ্ড মুধ্যে শ্বেয়

কর্মাজকানি বৈ । যানি তেবামশেবাণাৎ কুশানুবারণং পরং ।। ৩২ ।। রুতে পাশেহনুতাপোৰৈ যদ্য পৃংদঃ প্রসায়তে । প্রায়শ্ভিন্ত তলৈয়কং ত্রিসংব্দরণং
পরং ।। ৩৩ ।। কিঞ্ ।। কলিকল্বেমতু গ্রাৎ নরকার্তিপ্রদ্ধ নৃণাং । প্রমাতি বিলয়ৎ ল সদ্যান্ত্রহু হত্তানু সংক্ষ্তে ।। ৩৪ ।। কৌর্মে প্রভিগবদুক্তো । যে মাৎ জনাঃ সংক্ষরন্তি
কলো সক্রদিশি প্রভূথ । তেবাং নালাতি তৎ পাপথ তন্তানাং পুরুষোভ্রমে ।। ৩৫ ।।
বৃহয়ারদীয়ে শুরুবলিসয়াদে । হরিহুর্তি পাপানি দুইটিরের্গি ব্লুভঃ । অনিচ্ছ\_
য়াপি সংস্পৃটোদহত্তাব হি পাবকঃ । তত্ত্রব প্রায়শিত প্রস্কান্তে । মহাপাতক
যুক্তোবা যুক্তোবা সর্ব্যাতকৈঃ । সর্বৈ বিমুচাতে সদ্যো যদ্য বিষ্ণুপরং মনঃ ।
বুক্ষবৈবর্তে । কর্মাণা মনসা বাচা যাংক্তঃ পাপসঞ্চয়ঃ । সোহপ্যদেশার ক্ষয়ং যাতি
স্থা ক্ষাৎ গ্রিপ্রক্ষম । অতত্রবাক্তংকান্দে কার্তিকপ্রসঙ্গে প্রাণারেণ ।
যমমার্গি মহাঘোরৎ নরকাংশ্চ যম্ম তথা । স্বপ্রেপি ন নরঃপশ্যেদ্যঃ
সারেলাক্রড্গুজং ।। ৩৬ ।। ষঠক্বন্ধে প্রীশুকেন । সক্রমনঃ ক্ষপদারবিন্দয়োর্নিবেশিতং
তদ্গুণরাণি যৈরিহ । নতে যমং পাশভ্তশ্চ তন্তুটান স্থাপুহপি পশ্যন্তি হি চীর্ন-

তেভ্যোবা পরং শ্রেষ্ঠং।। ৩২।। শ্রেষ্ঠত্বমেবাহ কৃতইতি। প্রকর্মেণ্টল।য়তে। তলৈয়ব মন্ত্রাভ্য ক্তানাং তপোদানাদীনাং মধ্যে একং ফিঞ্জিদনুরপং প্রায়শ্চিত্তং। অননুতপ্তস্য তেখুনধিকারাৎ। হরিসারণস্ত পরং অনুতাপানপেক্ষয়া নিংশেষপাপক্ষয়হৈতত্বাৎ অবশেনাপি যলাম্রিকীর্তত ইতি হরিহরতি পাপানীত্যাদ্রাক্তে: ॥ ৩৩॥ অধুনা পরম ছম্পরিইর কলিমছাপাতকস্যাপি নাশক-মিত্যাহ কলীতি। যত্র যশ্মিন্ হরৌ অনুকরণেনাপি সংস্তে সতি। অনুকরণেনাপি স্তেঃ সম্ত-ত্রাভিপ্রায়েণ সংশব্দঃ।। ৩৪ ॥ সদ্যঃ তৎ কালীনমেব কলি সুত্তরং যদ্বা তস্য কলেরপি পাপং। যতন্তেন স্মরণেটনব। পুরুষোত্তমে ময়ি ভক্তানাং ভক্তিমতাং গতাং॥ ৩৫॥ স্বপুপিন নরঃ পশ্যেৎ ইতি পাপানুৎপত্তে: কথঞ্চিৎ জাতস্যাপি সংক্ষয়াঘা॥ ৩৬॥ সক্কাপি এবং অপিশক্ষ্য সর্ব্বতান্ত্রমাদয়মর্থঃ কিং পুনঃ সদ। কিং পুনঃ সর্ব্বক্রিয়াণি কিং পুনঃ সর্ব্বাঙ্গসৌন্দর্য্যাদে কিং পুনঃ স্বতোনিবিষ্টং কিং পুনস্তর্জ্রপনামানুরাগীতি । কারুণ্যাদিনা গুণরাগিত্বেনোপকারাপেক্ষরা লোপাধিকত্বাপত্তেন্তদ্য ন্যুনতয়া কৈমুভিক্ন্যায়দিদ্ধিः। তথা থৈরণি কৈশ্চিৎ ই ছাপি যত্ত্ব কুত্রচিৎ हेि । । ७था कूटायामायाजनाः कूरुक वक्षनार्थानी जशानान् कूरुक निर्स्तनान् यममृशानि । তथा कुङः नाकास्त्रपञ्क नामिकमन् एत्यु ति । यदः हीर्गनिष्ठ्ाः (उरेनव क्रुथांशिक्षाः वंदुः यथाकथिकः व्यवनगात्वन मर्द्धभाभक्षेत्राः मर्द्धमात्मव नवकानाकात्वारमञ्ज्ञाद हेन्द्रश्च विष्णू भतः मन्हे छाज विक्ष्या अवश्व कथिक छ । जना हित महात्र विष्णु । जना हित महात्र विकासि সংশব্দাদিকং ভগবৎস্মরণস্য স্ক্রিস্মরণতঃ সমাক্তয়া স্ক্রপনির্দেশমত্রেপরং নক্তে বিশেষণপর্মিতি দিক্। যদ।পি পরমশোধকত্বপাপোক্ষুলনত্ত্যোরভেদএর পর্যাবদ্যতি তথাপি পরমশোধকত্বদ্য তাৎকালিকপাপাদ্যশুদ্ধিতঃ বাহাভ্যন্তরপবিত্তামাত্রলক্ণত্বেন পাপোমূলনত্বস চানেকল্ম-

निक्षाः।। ७१।। मसीर्शादमाठकष् । जीविस्पृतात जीशकारणां छ । महा ं अवागाः कृतिभाश्चित्रिकृताः भोगीयसाउ न वनः मरेमछ । महाविशरशाखिनाभाः ্নো হয়ং জনাৰ্দনানু অৱণানু ভাৰঃ। বামনপুরাণেচ। বিষ্টিয়োব্য তিপাতাশ্চ যে ২ নে । দুর্নী তিসম্ভবাঃ । তে শর্কে স্মর্থান্বিফোর্নাশমায়ান্ত্যপত্রপাঃ । পালে । মাঘ্যাহাত্য্যে দেবদু । তিন্ত । যস। সারণ মাত্রেণ ন মোহো নচ দুর্গতিঃ। ন রোগোন চ দুঃখানি जमनख् नमाम हर ॥ पूर्वामत्नाम नन्द्रः। द्वाममक्तत्न। यथा द्विम विकारिक पोर्क्सर्वः इति **धाजूबर । अवमाज्ञ**शास्त्राविक्युर्धाशिनाम छङ्गामा । । ।। মঙ্গলকারিত্বৎ পাণ্ডবগীতায়াৎ । লাভন্তেষাং ক্ষয়ন্তেষাং কৃতন্তেষাং পরাভ্বঃ । यियामिन्नीवत्र नार्धास्य व्यवस्था स्वाप्त नार्षिकः । अस्ति मध्य स्वाप्त कार्षिक প্রসঙ্গের্যাক্তো । प्रतिष् याळाषु তপঃস্ চৈব সানেষু তীর্থেয় ব্রতেয় চৈব। हे सि म् शृर्दिष् व य श्रामिष् नृगार मा एक छ दक्त म वृद्ध हो। क्या माम्ग्राकातियर বৃহন্নারদীয়ে । নুনোভিরিক্তা সিদ্ধা কলো বেদোক্তক্ম ণাং । হরিকারণমেবাত সংপূর্ণফলদায়কং।। ৩৯।। স্থৃতৌ চ। প্রমাদাৎ কুর্বভাং কম্ম প্রচ্যবেভাধুরে মু यः । व्यवनारम्व ७ विष्णाः मः पूर्व भाषि व्यक्तिः । मर्वकर्माधिकष् । वृह्माव-मोरत किल्लिमरङ्गः उनापूक्रमानामाः तास्मृशायस्यभरग्नाः । कनः विस्माः मृ ि সম্ ন আৰু ছিজসভ্স । ছাদশক্ষদে । বিদ্যা তপঃপ্ৰাণনিরোধনৈতীতীর্থাভিষেক ব্ৰভদানজপৈ ৷ নাভ্যন্তশুদ্ধিং লভতে হন্তরাত্মা যথা ছদিত্বে ভগবভানন্তে ৷৷ ৪০ ৷৷ সর্বভরাপহারিত্ব । বিষ্ণুপুরাণে । হিরণ্যকশিপুং প্রতি এপ্রিক্সাদোক্তৌ । ভয়ং ভরানামপহারিণি ভিতে মনস্যান্তে নম কুত্র তিইতি ৷ যব্মিন্ ক্তে জ্যাঞ্রোড্র-বানি ভয়ানি সর্বাণ্যপযান্তিভাত । মোকপ্রদত্ত ওতৈবান্যত্র। বিফুসৎক্ষরণাৎ क्योनमञ्चरक्रममक्षयः । मुल्जि५ अयोजि सर्नाखिखमा विष्युव्युत्रेमोग्ररज ॥ ४५ ॥ বৃহন্নারদীয়ে । বরং বরেণ্যং বরদং পুরাণং নিজপ্রভাভাসিতসর্কলোকং । সঙ্কণ্ণি-कार्यक्षमाहित्स्व अपूषा उ कार्याकर्णहर मन्यं ।। १२ ।। कार्या यम् ग्रावन

भारतन वन्तरभातवसमार । विश्वहारक समन्त्रेमा विकाद शक्रविकाद ॥ ८० ॥ उदेवर कार्ष्टिकश्चमत्म श्रीभारतारको । उदेवर भूक्तरमामूरकाममूर्थभक्षतानिकिः। ख्ला छ शतशा नृम९ वरेमच आकरण दक्षि । **७गव था गा**मन । वृद्यात्र मीरत । যেন কেনাপু পোয়েন অ ভোনারায়ণোছক মঃ । অশি পাতক যুক্তন্য প্রসন্ধ স্যান্ত্র-সংশয়ঃ। জীবৈকুণ্ঠলোকপ্রাপকত্বং। বাসনপুরাণে। অসাদ্যনন্তমজরামরংহরিৎ যে সংসারত্যহর হোনিয়ত্ত নরাভূবি ৷ তৎ স্ক্রিণ ব্রহ্ম পরং পুরাণং তে যাতি বৈফব-পদং क्षत्रवायक ।। ८८ ।। भाषा एत्वम् खविक् खननः वारम समना मृखानु नामतः । य मात्र मिक्न का विभाग कि निर्मा । एक विभुक्त विभाग विश्व विश्व । পরং পদ্ধ ।। ৪৫ ।। जन्म পুরাণে । বিষ্ণুরহর্ণের छ। শাঠেরনাপি নরোবিষ্ণুৎ যে পার জি জনার্দন । তেপি যান্তি ভদু ত্যক্ত্য বিষ্ণু লোকননাময়ং ॥ ৪৬ ॥ বিষ্ণু थर्चाखरत । नित्रामी निर्मागायः विस्थार्थानशरता छर । छर शमः समदारशाछि यत शक्षा न म्नाइकि । अवन्या अभव निष्य कामीथर अविन्यू माधव अविन्यू माधव अविन्यू न कुछो। य जाः जिविज्ञम नमा कपि भोनग्रस्थि कापियमीकृष्टित्रदावियमभूकाक 1 সৌদামিনীবিলসিতাংশুকবীভমুর্জে তেইপি স্পৃশন্তিতৰ কান্তিমচিন্তাৰপাং ।। ৪৭ ।। জীভগবলাতাসু। অন্তকালে চমামেব স্বর্গুজ্ব কলেবরং। যা প্রয়াতি সমদ্ভাবৎ যাতি নান্ত্যত্র সংশয়ঃ ।। ৪৮ ।। এতগবদ্ধশীকরণ্ । দশমকদে পৃথুকোপা-थाति। यात्रकः शास्क्रमणभाषानमणि यष्ट्छि। कि ष्वर्थकामान् छक्षानां छ। छी-क्यान् क्यालां तः ॥ ८०॥ विष्यः भारत्मकाष्यः दिक्षातः । वीमुद्यातः मानायमः क्रम

অতাহর ন কিমপি বিচার্যমিতি ভাবং। তথাছি পাছে কার্ত্তিকমাহান্যো। নচাত্র সংশয়ং কার্য্যঃ ঈশিতৃত্বমিদংইরেঃ। রাজাহি ক্সাচিজ্যা সর্ব্বং চেৎ প্রযক্তি। পরক্ষৈ তথা কন্তত্র নিয়ন্তা সাথ প্রভোর্যথিতি॥ ৩৩॥ বৈক্ষবপদং শ্রীবিক্ষাঃ স্থানং উলাব বিশেষণং সর্ব্বর্ণারিতাদি সচিদানন্দ্রপত্তাৎ ॥ ৪৪॥ হে দুতাঃ। পরং সর্বতঃ শ্রেষ্ঠং॥ ৪৫॥ অনাময়ং সর্ব্বদোষরহিতং॥ ৪৬॥ শীলয়ন্তি অভাগান্তি। স্পৃশন্তি কিঞ্জিৎ সাদুশোর লভতে ইইবর যথা প্রপ্রপ্রাদেশের বাদয়ঃ॥ ৪৭॥ অপার্থে চকারঃ অন্তকালেশি কিং পুনং সর্ব্বকালৎ স্থাবন্থায়ামিতার্থঃ মন্তাবংমজ্বং মৎমার্মপামিতি যাবৎ॥ ৪৮॥ অর্থান্ কামাংশ্চ মন্ত্রতি ইতি কিয়ন্তবামিতার্থঃ। কথ্যকুতান্ নাতাভীকান্ ভগবডোভজতোবা জনস্য অনজিয়ায়ান্ পরিণামবির্গায়াও অগদ্ভর্মরিতি ভক্তা কথ্যিক্ষতাভীটান্থি সতঃ তক্ষৈ পিছা প্রায়াপথানির ন দদ্যাদিতি ভাবঃ॥ ৪৯॥ অপাদির কর্মাস্ তৎসাদ্গুণ্যার্থমিপি মন্ত তক্ষে পিছা প্রায়াপথানির ন দদ্যাদিতি ভাবঃ॥ ৪৯॥ অপাদির কর্মাস্ তৎসাদ্গুণ্যার্থমিপি মন্ত মান্ধদেবে মনঃ ধেন শ্রিক্ষার্বণং ক্তমিতার্থঃ। যন্ধ। বেষু ক্রিয়্মাণেবৃপি বাসুদেবব্যৰ মন্য অপাদি সাধাং ঐত্যাপদং আদিশ্বান্ত ক্রমিতার্থঃ। যন্ধ। তেরু ক্রিয়্মাণেবৃপি বাসুদেবব্যৰ মন্য অপাদি সাধাং ঐত্যাপদং আদিশ্বান্ত ক্রমিত তত্তেই তিন্ত জ্যাদিলাতং মুক্ত্যাধিকমিপি সর্ব্বমাৎ করণং বিস্থিব

होत्रार्कनानियू। उत्र । अति । अवि ।

তৎস্মরণসৈাব পরমকলত্বাৎ ॥ ৫-॥ প্রসবঃ কলং নিয়তং নিশ্চিতমেব ॥ ৫১॥ সাংখ্যং আ ব্লানাস্থাবিবেকঃ যোগোইউাঙ্গস্তাভ্যাং। তথা স্বধর্মে পরিতোনিষ্ঠয়াচ কৃত্বা পুংসাং জন্মনোযো-लाङः क्लः এতাব। त्वर नज्ञना दे िर्याभाषीनाः তদেকপরতোক্তা কোংলৈ তমাহ নারায়ণস্য স্মৃতিরিতি অন্তে জ্ব স্মৃতিঃ পরমোলাভঃ ন তন্মহিমানং বক্তুংশক্যতইত্যর্থঃ। যদা অন্তেপি স্তি॰ পরমোলাভঃ কিংপুনরাজন্ম সদাস্তিরিতার্থঃ। অন্যৎসমানং॥ ৫২।। ধেন উপায়েন যথা যথা-বং স্তিঃ প্রেমস্মরণমিতার্থঃ। यदा যথাবং সংস্মরতাংদেহাদ্যাসক্ত্যা নিতরাং সংসারতঃখং লভমানানামপীত্যর্থঃ ॥৫৩॥ জনতায়াভক্তবর্গস্যাপবগরূপং। ত্রন্ধাদিভিরপি হৃদি চিস্ত্যমেব। সংসারকৃপে পতিতানাং উত্তরণায় স্বথোথানায় **অবলম্বং আশ্র**য়ং। ঈদৃশং তবারিূকমলং ময়া দৃষ্টং অতঃ ক্তার্থাক্ম। তথাপি ভবৎক্ষ তির্থা স্যাত্তথানুগৃহাণ যেন তবা দ্বী ধ্যায়নেব চরানি। যন্ত্ৰা অধুনা দৃষ্টং অন্যত্ৰ গভোপীমং স্বদন্তিং ধ্যায়ন্ত্ৰেব্। কিঞ্চ। যথাবৎ স্মৃতিং স্যাদিত্যনুগ্ৰহং কিন্তু মদিষরিকা তব স্মৃতিশ্বনোবৃত্তির্যথা স্যাত্তথানুগৃহাণ। যদা দৃষ্টত্বাদন্যত্র গভোপ্যেতদেব विख्यन वित्यामि किश्यानमान् शहरानः व्ययुना व्यानुश्रदः कुक् यथा व्यया विः स्वत्या वातः मा। अनाजगडमा मञ्छरन्मतरः न वित्रदृष्ट्यं वृष्ट्यं वित्रवित्रम्मत्। मूर्यदेशे । এउक मा **জিক্**ঞপাদপদান্তিকে বাসমলভমানস্য প্রেমোক্রেকবাক্যগান্তীর্য্যং এবমপি স্মরণসৈত্র প্রম মাহান্যাং পৰ্য্যবস্য হীতি দিক্।।৫৪।। অধিয়া দৃস্তরঃ অর্থতোৰচনতক্ষ বৃদ্ধ্যাপি অস্ত তাবল্লিখনেন স্কারং গম্ভমশক্যমিত্যর্পঃ। বিয়েত্যন্যাগ্রেএবানুরঃ তদ্য পারং যোগান্তমিচ্ছতি দ চৈতনোনু বঞ্চিতঃ অঞ্তন ইত্যর্থ:। স্বনতে এটিচতন্যদেবেন মায়য়া প্রতারিত: পরিত্যাক্তাবেত্যর্থ: নিজাশক্যে ্রিক্রি প্রবৃত্তে:।। ৫৫।। পাদোদকং ঐভিগবচ্চরণামৃতং প্রাক্ আদৌ পীত্বেত্যক কারণ-মর্ক্তে মেখ্যং। শালপ্রামশিলাভোরমপীতা বস্তু মঁন্তকে। প্রকেপণং প্রকৃর্বাত বন্ধ হা দ নিগদ্যতে ₹ि जूननीमटेनः क्र्या नर वा ग्रीएन टिम शालामटकटेनव समस्र कर्शक्यकः कूर्या । । e७।। गर्कबरूकान्। भरत्रवरमयः ।। 'अव क्षाकाक्ष्मीका विभिन्निर्देश । ' ग्रेसीकानेकार्रः वरत्रगरः वत्रवर भिवरः। मोत्रोत्रवरः भम्रक्ष्माः अवस्थानि कात्रवर्दः। ' का ।।' का

चथ विकाशनर विक्षाचां करते। अंतु र अवासिक संबद्धा (अतिहासंसः। कतिता। करिता विकाशनर विकाशनर का उच्छा विकाशनर विकाशनर का उच्छा विकाशनर विकाशनर का उच्छा विकाशनर विकाशनर विकाशनर का उच्छा विकाशनर विकाश विकाशनर विकाशनर विकाशनर विकाश विकाश विकाशनर विकाशनर विकाशनर विकाशनर विकाशनर विकाशनर विकाश व शबुद्रा । यम्बरकाद्रेयनोभान एक करनामि <del>केनावादा</del> १ ६३ ।। देखानाकः देवकाः मग्राविष्ट्य जीनाथविद्या क्रमाळदेवय । जीका नव्योध कर विकार्य मध्यात्राजा-गः नात्रवाख्यम् वर्षयां मरस्याख्याः अपृश्रत्वर वास् यम्दर्जनित्यः ॥ ७० ॥ न्मक्षां क्रिकां क्रकां क्रकां क्रिकां त्य श्रवृत्तिक्षामाम्बर्धाः मह त्म निवृत्तिः होः स्वता संवीत्वण समित्रिकन यथा जान क्षामनाकार्यि ।। यहाजातरकभाग्मरमा नियुक्ताश्चा ७४। करवामिः । उक्तनः दिना अभिनिष्ठां । क्षत्रिकां क्रमान त्याविकां व क्षानिका शक्रकृत्रात्। । अनुव्रविवृक्षनिरेक्षका ब्रह्म भना मास्य गलनमूर्मिक ब्रह्मिन्छ। स्य विश्वकः । निविध्वक्षिमिनिविध्छै। दिश्वकं अर्थमाको छमसम्बन्धिन वागुरस्व न छ। श्रेष ।। विक्रू नृतारा ।। यक्ति छर्यक्र मृत्राया वाम्राप्त मा घरेष । विषाध विमिष्टिर्विकः व्याहार् वामरणार्भि स्विष्टि ॥ ७० ॥ अवर विकाशयम् यायम् की ख सर मह यथा विधि । धार्मामा हा द छहु छो। हजूः मर बा ब द्राम वृधः ॥ ७२ ॥ জীগোপীচলদেনে। দুৰ্পুং কৰা ৰথাবিধি i আগাতপ্ৰাত্মুখোভূছা শুক্ষানে खंडामरन ॥ ७० ॥ 'एथाह नाबमीय्रशक्षत्रात्व ॥ निर्श्वाहमा विधिव श्राविमाह भूनः मुधीः। **आमरन आङ्म्र्याङ्घा विस्टिः** চোপविमा वि<sup>\*</sup>।। ७८ ।। मम्भूना-বানুসারেণ ভূতশুদ্ধিং বিধায়ত । প্রাণায়ামাংশ্চ বিধিবৎ কৃষ্ণংধ্যায়েৎখ্যো निरुषे ।। ७६ ।। **७५**। छा ।। छा शाक्षक्यू मर्क्यू शाक्षक्यु सह १ ।

विकालनहादित वर्षानि चना क्रुगानि चर्त्रम् मार्गेष्ठ धनामः कूर्यार्वादेशीकि निथनार ॥ ६९ ॥

विकाशस्ति तिथिए उर्थक्षित्रमार निष्ठि यपिछ । उर्क उरारक्षिपिएक कि निम्ना स्थापिक । उर्क उरारक्षिप्रकृष्टि । उर्क उर्वादक्षिप्रकृष्टि । उर्क उर्वादक्षिप्रकृष्टि । उर्वादक्षिप्रकृष्टि । उर्व विकाशक वर्षक । उर्वादक । उर्वादक । वर्षक विकाशक वर्षक । वर्षक विकाशक वर्षक । वर्षक वर्षक वर्षक वर्षक वर्षक । वर्षक वर्षक वर्षक वर्षक । वर्षक वर्षक वर्षक वर्षक वर्षक । वर्षक वर्षक वर्षक वर्षक वर्षक वर्षक । वर्षक वर्षक वर्षक वर्षक वर्षक वर्षक वर्षक । वर्षक वर

# विभिन्नेष के विनामः।

C.b

প্রাক্তিশেষত্ব কালংসূর্য্যোদ্যাদ্ধি। কর্ত্ত্ব্যুদ্ সঞ্জন গ্রান্তিশেষত্ব কালংসূর্য্যোদ্যাদ্ধি। কর্ত্ত্ব্যুদ্ সঞ্জন গ্রান্ত্রাধ্যেদ বিভাগারাধ্যেদ বৈ । জলং পঞ্ধা রাজ্ত্বিদ লেকে দেবার্জনাদিক । জলং তোমং তথা ধ্যানং নিজ্যাক্র্কীত সাধকঃ । অভএককিফুক্স্তৌ। রাত্রেভ পশ্চিমোঘামোদ মুহূর্কোব্রাক্ষ উচ্যতো ইতি । ৬৯ ।। পাদোদপানাদীনাঞ্চ মবিধিম্ভিমাগ্রতঃ । লেক্ষ্যোহধুনা তু ধ্যানস্য স সংক্ষেপেন জিধ্যতে ।। ৬৮ ।।

ভাষরক । ভিত্তমং মৌনমুদ্রাচ্যক বনমালিনমীশ্বরক । গোপগোপীগন্ধানীতং সুরক্রমনভান্তর মৌনমুদ্রাচ্যক বনমালিনমীশ্বরক। গোপগোপীগন্ধানীতং সুরক্রমনভান্তর । কিব্যালকরণোপেত কল্পক্ষমধ্যগং । কালিদ্যালল কলোলসঞ্জিনার চনেবিভং । চিন্তরংশেচ ভি তং রুষণ মুক্তোভনতি সংস্তেঃ । ৬৯।। মৃত্যুক্তাসক্রিলার বিভেশারদাভিলকে চ । মারেছ্নদাবনে রম্যে মোহয়ন্ত মনারতক । গোনিদং পুঞ্জীকাকক গোপকন্যাঃমহসুদাং । আজানোবদনাভোল্প প্রেরিভাক্তিমধুব্রতাঃ । কামবাণেন বিবন্ধান্তির মান্দ্রেগণাৎসুকাঃ । মুক্তাহার লসংপানক্তমনভাঃ । কামবাণেন বিবন্ধান্তির মান্দ্রেগণাৎসুকাঃ । মুক্তাহার লসংপানক্তমনভাঃ । সুন্তধ্যিলবসনা মদখালিভভাবণাঃ । দলপৎক্তিপ্রভোল্যাসিম্পক্ষানাধ্যাঞ্চিতাঃ । বিলোভক্তাক্রিবিধিবিভিন্তি বিগতিতঃ ।। ৭০ ।। ফুলেন্ট্রকান্তিনিমুবদনং বর্হাবিভংগাঞ্জীবংগান্তিভিতনুৎ গোগোপসংঘানৃতং । ব্যাপীনাক নয়নোৎপলার্চিভিতনুৎ গোগোপসংঘানৃতং ।

বিষ্ণুধ্যানার্থঃ॥ রাজে: শেষং কালং ব্যাপ্য তন্মাদারভ্যেতার্থঃ॥ ৬৬॥ আদিশক্ষেন প্রণামে।
র্কুপুঞ্জ ভূতশুদ্ধি প্রাণায়ামাদিঃ॥ ৬৭॥ বিধিঃ তন্মস্রোচ্চার্থাদিপ্রকারস্তংনহিতঃ। স্ধ্যানস্য বিধিমহিমা চেত্যর্থঃ॥ ৬৮॥

গোলৈগের্নাপীতির্গোভিক্ষ বীতং পরিবেটিতং ॥ ৬৯ ॥ গোপকন্যাএব বিশিন্টি আত্মন ইন্তি ত্রিভিঃ। গোরিক্ষদা বদনান্তোকে প্রেরিড়া অক্ষি মধু ত্রতা বাভি স্তাঃ। বিলোভয়ন্তীর্গোবিন্দরের ॥ ৭০ ॥ আদিশকেন ত্রৈলোক্য সন্মোহনতক্ষ পনংকুমার কণ্পাদি তন্তাঃ । তদ্য গোবিক্ষদ্য পরস্বধ্যানং প্রসিদ্ধমের অত্র প্রস্থেতালেখ্যং ক্রমদীপি কোক্ত মধ্ প্রকট সৌরভেড্যাদি প্রিগৌতমীয় ভল্কেচ পীতায়রধর ইত্যাদি । তত্র ধ্যানে যদ্য বহু প্রিয়ং দ্যাং তহু সংক্ষেতাং। তত্র প্রিগৌতমীয় ভল্কে নবীন্নীরদশ্যামদিত্যাদিকং স্থপ্রদিদ্ধ মেব।সংযোহনতক্ষেক ক্রিলিবেনোক্তং। শূণু দেবি প্রবক্ষ্যামি রহদ্যাং ভূবনেশ্রি। আইবে পৌরুবং কাণং গোপিকাবদনামূতং। নদা নিসেবিতং রাগান্তবন্ধিয়াই তীরুণা। সভ্যন্তামদি ক্ষাত্রিমা রামুর্ভিভির্টিভিঃ । খ্যারেক্ষদনগোপালং সংক্ষরা ভূবনত্রের। খ্যানং তদ্য প্রবক্ষ্যামি সর্ব্ধ পাপ প্রণাদনহ। সর্ব্রোগোপশ্রমণ সংপ্রোবান্তি কারকং। সৌজাগাদারকং স্থাং ত্রীণাঞ্চৈব বিশেষতঃ। ক্রিকালাক্ষ্যান্তবন্ধিয়া গানেনাক্র বালিনি। যদ্যদিক্ষ্তি তৎসর্ব্ধং দরংপ্রাপ্রেশতাসং লক্ষং। প্রিম্বালাক্সকালং প্রানান্যপঞ্জন । বন্ধুক্ষবন্ধ্রালোক্ষ সন্ধানিসাদ্যভিং। মুকুটানেক্সাণিক্য প্রভা পরবিভাষরং। কিরীটোপান্তবিদ্যন্ত বহি বর্ষার্ভং সকং। কন্ত্রির

## - প্রপ্রতাত বিশাস।

গোবিদাৎ কলবেশুৰাদনপরৎ দিবগ্রজ্বং উল্লে ইভি। এগৌতসীয়াডলাদৌ তথ্যানৎ, প্রথিতৎ পরং। অপ্রতোহলাপি সংগোধ্য বিশ্বিভ তত্ত তত্তক্ত । শেব । অথ ধ্যানমাহাত্মাণ। তত্র পাপপ্রধাশনত্তং বৃহত্তীভাতপ্রতা। প্রকোশবাদ সাৎ যৎ পাগংপুরুষ্ধ্য প্রথমান্তি: প্রাধায়ামশতেনৈর তৎ পাগং মদ্যতে বৃধী ।

তিলকাকান্ত কমনীয়ালকস্কলং । সারকোদও বিনাত ক্যান্তকৃতিল ভুবং। স্বেরগওছলং শ্রম-ছনতোলত নাসিকং । कल्ला जहरी पूर्व कर्नावाह लाहनः । कर्नावलिश मोवर्व कर्निकात्रावछः দিনং। নিস্তুলস্থানিকাচারুমৌজিক কুগুল্প দ্বাংশু স্ব্যালিক কোমলাধ্রপল্লবং। অসাধারণ मोजागा विवृत्कारम्य भाष्टिकः। मामाक विद्याहकात ज्ञाचामस्य वाननः। अनर्धातक देशाव य विनमश्कम् क्यातः । त्मोत्र जात्नानद्वानदेशः शहस्मात्रमायिः । उत्रश्चरमे विदेशकारेय देविकारणा ह मानसा । अवरमदकोञ्जाकाक शतिक छुकारतः । तजुकस्वरक मृदेवक विटेज र्फगि छिर् देखः । ठकः भूष्मभातः भाषः मृतः मास्यामुकार्युकः । भागः भागः प्रमार प्रमार विजानः মোহনাক্তিং। নিমুনাভিং রোমরাজিবলিমৎ প্রক্লেদরং। বিশক্তকটীদেশংবাচালমণিমেখলং। क्तृ तथ्योगामिनी क्लाम नामानकनकामतः। मनिमञ्जीत कित्ररेगः किञ्चन्किञ भनाम जर। नारनाली চমণিশ্রেণী রম্যাদ্ধিনখমগুলং। আপাদকওমানুক ভূষাশতমনোহরং। কপেবৃক্ষ মহারামে মহিতে রত্ম ওপে। চিন্তামণিম হাপীঠে মধ্যে देश्यमत्त्राङ्गरह। কর্ণিকাপরিসংদীপ্তে জীমচকা-সনে শুভে। ভিষ্ঠন্তং দেবদেবেশং ত্রিভঙ্গীললিভাক্তভিং। বামাংশশিশব্রোপান্তে ব্যালোলমণি-कु छनः । **উपक्षिञ्जूतः कि**क्षिर स्मानाधतं पञ्जतः । गानवाा**जाम्छत्रेतर्साक्षिञ क**िरविज्देतः । ত उ॰ यतान थान ति ते ते ते ते के प्राची कार्ण कि विवृत्त कि प्राची कि विवास के कि विवास के कि विवास के कि विवास নমানন্দাৎ नम्दिति विषकारे १:। কৃত ছন্দভিনির্ঘোরে মুক্ত প্রস্ববৃত্তি ভি:। ধ্যায়েশ্বদনগোপালং মন্ত্রী শুচিরলক্তঃ। সর্বান্ কামানংকাপোতি ছল্লানপাযত্রতই ডি ॥ তত্রৈবানাত্র। ধ্যায়েৎ বৃন্দাবনে সম্যক্ সিদ্ধচার্থবেটিতে। গোগোপগোপিকাক্রান্তে কম্পপাদপশোভিতে। তন্মধ্যে षि जुकः धारायः পঞ্চবর্ষমধানুতে । সিংগ্রন্তনীলরুনিরং পূর্ণচন্ত্রনিভাননং । প্রসন্নবদনং শান্তং सिथानीनानकान्छः। काक्र भक्तरं सञ्जी माम्यू विख्यू संबरः। किकिनी नानमञ्जूकि एव विख्यितः। मुकामामनमाजः इतिक्ष्यक्रिकः। क्ष्रांत्रक्रिकानम् तर्वालिकिक् थलः। मधानः मकित्-शादनी नवनीज्ञत्र्याजम् । यात्र काठकमझकार विकिशकार मुद्रमाजनारे । दिमभत्याभिति, देखदर नृष्ण्यः वनमानिनमिष्ठि । अन्त्रिश्फ धाटन शक्ष्यवद्यापिमा शूर्वन्त्रिश्काक्षणकान्त्रिप्रमेख्कद्या-निनानिकमनखुखा शानवस्त्रिनः मृतन स निविष्ठिमिछि एकतः। व्यवहानारमेन्सर्वे दिल्मी-श्राकारभक्ता निविष्टः ननरक्मातकरभा कस्नातक्न्ममाम्यमस्यात्रविष्क्रनेशा त्वनुनामत्रष्टः ८मवः वर्दिवर्दावण्यकः। विवाशीलावत्रवङ्गः श्रव्यक्तिकानमः। वरेनाल्यानमृत्रवः द्वालिलः वनमालक्षा। (नत्वारशदेशक लालीनामक्तितः नुक्ताकृष्टिः। सत्रकृत्वपूर्वेकुखरमार्वेतवस्तिः। वित्राक्षमामः औरश्नरकोखाकामिराक्षमः। शाशीकरेमः भतिवृत्तः मूला कृष्णत्ताः वितः। भाशादिनदर्शाशनिवदेश अवन्देक्षक्रकाद्रतः । वान्छर सम्बद्धान्देकः भूकाञ्चलिकदेतिनिति । বেণুনাদ্যম।বিউচিত্তর্তিতিরবিতং । কিন্তোন বেণুলাদেন নয়তং প্রশং জগদিতি। এতক शृक्षागरेर्गार्विष्ठपारव निविष्ठमिष्ठि मिक्षावर्गा

व्यानीयामहामून युर भाभर नषाटक मृनार । कनमोटकन यर भाभर इरवर्धामार প্রথম তি । বিকুপমে । সর্মপাপপ্রসক্তোপি ধ্যায়িমিবমচ্যুত্র । ভূয়ত্তপস্থী ভবতি शर् जिलावनलावनः ॥ विकृ भूताति । धारमताताम् १९ तिवः मानापियु ह कम् भू। आधिन्छतः हि मसमा मुक्क जित्रा कि निन्छितः ।। किनित्रा वह विद्याति । কলিপ্ৰসঙ্গে। সমন্তৰগতাধারং পরমার্যস্বৰাপিণং। ঘোরে কলিযুগে প্রাপ্তে বিফুৎ भावमंत्रीमिछि।। त्रवंशमाधिकातिष्यः कात्म कार्षिकमाशास्त्राधाराखाः किछ तर बङ्ख्डिरिर्वः किछम। बङ्ख्जिरिष्ठः । यो निष्ठा ४। या प्रायः ए दिवः नातां स्वयनमन् धीः ॥ १२ ॥ याकश्वमंद् वृह्मात्रमीय अमिकशामाश्चाराख । यमानवावि-গভরাগপরাপরজ্ঞা নারায়ণৎ সুরগুরুৎ সভতং স্বরন্তি । ধ্যানেন তেন হতকিলুযবেদ-नार्छ माङ्ग भरमाध्वत्रम् न भूनः भिविष्टि ॥ १७. ॥ 🕮 देवकूर्वे शामकष्यः कात्म ঞীব্র ক্ষোক্তে। মুহুর্জমপি যোধ্যারেয়ারায়ণমত দ্রিতঃ। সোপি সদাতিমাপ্রোতি कि॰ পून्छ॰ भहाम्बनः ॥ १८ ॥ भाष्यिये सांशास्त्राध्याञ्चाका गर्यापः ॥ धामित পুরুষ্ দিব্যমচ্যুত্ঞ কারতি যে ৷ লভত্তে তে২চ্যুত্সান্থ শ্রুতিরেষা প্রা-ভনী ৷৷ ৭৫ ৷৷ সাৰপ্যপ্ৰাপণ্য একাদশক্ষে ৷ বৈরেণ যং নৃপভয়ঃ শিশুপালশাম্ব-পৌঞাদরোগতিবিলাকবিলোকানদৈ। ধ্যায়ন্ততাকৃতধিয়ঃ শয়নাসনাদৌ তৎ সাম্যমাপুরনুরক্তধিরাং পুনঃ কিং।। १७।। স্বতঃ পরমফলত্বং চত্তর্থক্ত জ্ঞীপৃথু-को। ভक्छ। य यायक এব সাধবোৰু। দত माम्राखनियस्मारम् । ভবৎপদ। नृत्रात-

ভূরোহিধিকং বথাস্যান্তবা। পগুজেং পাবনাদিগি পাবনং পরমপাবন ইতার্থং॥ ৭২॥ বিগতরাগাল তে পরাপরজ্ঞাল কারণকার্য্যাভিজ্ঞাং পরমেশ্রকীবতবুজ্ঞা বা ধ্যানরপেণ ডেন স্মরণেন সততস্মরণাৎ। অতচ ব শমনপুরাণে। তে ধৌতপাণ্ডুরপটা ইব রাজহংসাং। সংসার সাগর জলন্য তর্দ্ধি পারমিতি পরার্ক্তং॥ ৭৩॥ অতন্তিতং অনলস্ঃ সন্,। সতী মুন্তমাং সভাং বা ভক্তানাং গ্রন্তিং গমাং প্রাপ্যে শ্রীকৈ কুঠলোকং॥ ৭৪॥ ধ্যায়ন্তি প্রপাণাজ্ঞলমারভা শ্রীকেশাগ্র পর্যান্তং গৌদ্দর্যাদিসহিতং চিন্তয়ন্তি। অপ্যর্থে চকারং॥ ধ্যায়ন্তীত্যেতদন্ত বে স্মরন্তাপি যথা কথিছিৎ ভগবতি মনং সংযোজয়ন্তি তেহপি। এবং ধ্যানস্মরণয়োর্ভেন্ন কপানীয়ং ধ্যায়ন্তীতি স্মরন্তাতি পৃথক প্রয়োমাৎ। অতএবাত্রে লেখ্যুৎ ভেদং কণ্ণেগ্যুত সামান্যবিশেষাভ্যাং তরোরিতি কেচিচ্চ কন্সরন্তি লামুল্যকারণং স্মরণং কীর্ত্তনন্তি কুত্রচিম।মকীর্ত্তনপ্রস্কেশ্যুবেণাজ্যে । অবধ্য নামনীর্ত্তনপ্রস্কেশ্যুবেণাজ্য সাম্বান্য পৃথপ্তজ্ঞে । এবধ্য নামনীর্ত্তনপ্রস্কেশ্যুবণং নামুত্রমান্তি ক্রের্মিতি ক্রের্মিতি ক্রের্মিতি ক্রের্মিতি ক্রের্মিতি ক্রের্মিতি ক্রের্মিতি ক্রের্মিতি দিক্॥ ৭৫॥ সামান্যে সাম্বান্য সাম্বান্য আর্বাহিত্ব স্ক্রের্মির ত্রের্মান্য বির্মিত্ত ক্রের্মির ত্রের্মান্য বির্মিত্ত ক্রের্মির ত্রের্মান্তির্মির ত্রের্মানির ধীর্বেমাং ত্রেক্ত্রাঃ স্করণ্যান্যং নাম্বর্স্য আতোহনুর্ক্তিবিরাং ত্রেন্মান্তর্ভারিতি কিং বাচাং। ৭৬॥ সামান্যং ভনবন্তি মন্ত্রন্তর্মান ক্রান্তর্থিরাং ত্রের্মান্য নাম্বর্ণানিতাবেণা নাম্বর্ণান তাজ্যাং তরোঃ স্করণ্যানরোঃ কিয়ান্ অন্পত্র বারিং। বির্মেণ ক্রের্মিন বির্মেণ তাজ্যাং তরোঃ স্করণ্যানরোঃ কিয়ান্ অন্পত্র

ণাদ্তে সতাৎ নিসিত্তমন্ত্ৰ ভগবন্ধ বিলহে ।। ক্ষনপুরাণে ব্রক্ষ্পাক্তিচ । আ-লোড। সর্ক্ষণান্ত্রাণি বিচার্যন্ত পুনঃ পুনঃ । ইদমেব সুনিজান্ত্র ধ্যোনারায়ণঃ সদা ।। অভ এবোক্তা হয়শীর্ষপঞ্চরাত্রে নারায়ণবূর্যন্তবে । যে চাত্রলোকাধ্যা থা বিষ্ণুভত্তিবশাৎ গভাঃ । ধ্যায়ন্তি পর্মাত্মানং তেভ্যোনিতাং নমোনমঃ । ইতি ।। ৭৬ ।। স্মরণে যতু মাহাত্মাৎ ভদ্যানে ২প্যথিলং বিদৃষ্ণ ভেদঃ কংশ্যেত্র সামান্যবিশেষাভ্যাৎ তন্নোঃ কিয়ান্ ।। ৭৭ ।।

खार बिजा ५० श्वासिन । जिला प्रताल सं शक्षा च ने प्रमुद्ध कर । श्वासि इं इंडिंड इक्ष्र नी ताका व्यार्थ स्विम । १৮ ॥ सार्थ प्रमुद्ध कर । ज्यान विवृक्ष त्या विव्यविक्ष साम इंडिंड इक्ष्र नी ताका व्यार्थ स्वर्थ । विव्यविक्ष साम इंडिंड विव्यविद्या । विव्यविक्ष साम के स्वर्थ विव्यविद्या । विव्यविक्ष साम विव्यविक्ष साम विव्यविद्या । विव्यविक्ष प्राप्त । विव्यविद्या । विव

অথ নিম্বিলালারবণ । অতিক্তি । প্রতিকালে সদা কুর্যামিদ্রিলিলারবণ বৃধ্ব । তৃষিতাঃ পশবোৰদ্ধাঃ কন্যকা চ রজমলা । দেবতা চ সনিম্বিলারহিও প্রাথ পরাক্তি । নারসিংতে প্রীয়নোক্তেই । দেবমাল্যাপনমুন্থ দেবাগারে সমূহনং । সাপনং সর্বদেবানাং গোপ্রদানসমংক্ষ্তিং । ৮০ ।। নারসপঞ্জাতে । যং প্রাভক্তায় বিশায় নিত্যৎ নিম্বালা মাশ্যা নিরাকালের । নারসপঞ্জাতে । যং প্রাভক্তায় বিশায় নিত্যৎ নিম্বালা মাশ্যা নিরাকালের । নারস্বালাৎ শল্যতাং ব্রদেং । প্রাতম্ভ স্যামহাশলাৎ ঘটিকামাত্র যোগতং । অতিশল্যং বিজ্ঞানীয়ান্ততো বজ্পুলারবং ॥ জন্ধান্মবেলায়াৎ শাল্যং তৎ ক্ষমতে হরিঃ । ঘটিকায়ামভিক্রান্তে ক্রুপ্রলারবং ॥ জন্ধান্মবেলায়াৎ শাল্যং তৎ ক্ষমতে হরিঃ । ঘটিকায়ামভিক্রান্তে ক্রুপ্রারবং ॥ জন্ধান্মবেলায়াৎ শাল্যং তৎ ক্ষমতে হরিঃ । ঘটিকায়ামভিক্রান্তে ক্রুপ্রারবং ॥ জন্ধান্মবেলায়াৎ মাল্যক্তিরের পূর্বে মহাপাতকমুচ্যতে । অতিপাত্তমেব স্যাৎ ঘটিকানাং চন্তফীয়ে। মুহূর্ত্তিরিতয়ে পূর্বে মহাপাতকমুচ্যতে । ততঃ পরং ব্রহ্মবধামহাপাতকপঞ্চকং । প্রহরে পূর্বতাৎ যাতে প্রায়শিকতং তলোনহি ॥ নির্মাল্যান নিলম্বে তু প্রায়শিকত মধ্যেচ্যতে । অতিলান্তে মুহূর্ত্রে সংস্কাত্ত

ভেদঃ-কণ্প্যাতে এতচ্চ বিবিচ্য লিখিতমেব ॥ ৭৭॥

স্তৃতি জাতিস্থতা অন্যতিক প্রবোধনোপযুক্তাতিঃ । নীরাজ্য প্রথমং দীপমাতেও নীরাজনং ক্ষা ॥ ৭৮ ॥ বিজ্ঞন্ বিজ্ঞান্ প্রকাশয়ন্ ॥ ৭৯ ॥ ইকানি স্বস্কুঞ্সা বা প্রিয়াণি সহসুনামাদীনি ।

দেবস্য মাল্যং নিশ্বাল্যং তস্য অপময়নমুভারণং । সমূহনংমাজ্জন্য ভূণান্যপ্সারণং ॥ ৮০॥

সংসুৎ সাধাৰ্ত । সংসুদিতীয়ং কুৰ্যাৎ ঘটিকানাৎ চন্ত্ৰীয়ে। মুহূৰ্ত্তি-ভয়েংতীতে অযুত্ত জপমাচরেও। প্রহরেপূর্ণতাৎ যাতে পুরস্চরণমূচ্যতে। প্রহরে সমতিকাতে প্রায়শ্চিত্তৎ ন বিদ্যতে।।

অথ শ্রীন্থপ্রকালনং। শ্রীহন্তার্ত্তিকালনায় চ তল্প হে। গণ্ডুবানি জলৈদ্বা দন্তকাঠং সমর্পয়েৎ। জিলোলেখনিকাৎ দত্ত্বা পাদুকে শুদ্দাতিকাং। সলিলক্ষ পুনর্দ্যালাপি মুখমার্জনং। ততঃ শ্রিতলসীং পুণ্যামর্পয়েৎ ভগবং প্রিয়াৎ।। তন্মাহাত্মাঞ্চতমুখ্যপ্রসঙ্গে লেখ্যমগ্রতঃ।। ৮১।।

অথ দন্তকাষ্ঠার্পনমাহাত্মীং বিষ্ণুধর্মোতিরে। দন্তকাষ্ঠ প্রদানেন দন্তসৌভাগ্য-মৃদ্ধতি। জিজোলেথনিকাং দন্তা বিরোগস্তৃতিলায়তে। পাদ্কায়াঃ প্রদানেন গতি-নিন্তানবাপু, য়াৎ। মৃদ্ধাগ দানাদেবসা ভূমিমাপ্যোত্য নৃত্মাং।

ख्यमञ्जनीताजन । পঠিছাথ প্রিয়ান্ শ্লোকান্ মহাবাদিত্নিস্থানি । তালানীরাজন ক্রম্যানাস্লাখ্যংকগদ্ধিতং ।। নীরাজন স্থিদং সংক্ষি কর্তব ও শুচিবিগ্রাইং । পরমশ্রদ্ধোখায় ভাউব্যক্ষ সদা নারেং । জ্রীণাং পুংসাঞ্জ সদ্পোধানে তং সংক্ষিত পূরকং । সনস্ভাদন্দারিজ্যদুরিভাদ্যুপশান্তির্হং ।। ৮২ ।।

তথ প্রতিঃপানার্থেদিনে । ততেতির গোদরস্যান্ত শুনার্থং নিঃমনেদ্ভিঃ। কীর্ত্তরন্ ক্ষনামানি তীর্থং গজেদনন্তরং। তথাত শুক্রন্তা। ব্রাক্ষে মুদুর্থে চোখার শুটিভূদ্ধা সমাহিতঃ। স্বতিকাদাসন্দ বৃদ্ধা ধ্যাত্বা ক্ষপদায়জং। ততে নির্গত্য নিল্লামানানীমানি কীর্ত্তরেং। শীবাসদেবানিক্ষ প্রদূর্যাধ্যেক জাচুতে। শীক্ষানন্ত গোবিদ্দ সম্বর্ধন নামাহন্ত তো গল্পা তীর্থাদিকং তত্র নিংকিপ্র শান্মান্থনং । বিবিনার্ধ্য বৈত্রাদিক্ত্রং শৌতং বিধার চ। আচন্য থানি সংঘাছে; স্থানং কুর্যাৎ যথোচিতং। ৮৩।।

ত্ত তথ নৈত্রাদিকত্যবিধিং জীবিকপুর্রাণে ওর্জ সগরসংবাদে গৃহিণম কথনে।
ততঃ কল্যে সমুখা য় কুর্য্যানৈত্রে নরেশ্বর । নৈশ্বতিগানিব বিক্ষেপনতীত্যাত্য
বিকং গৃহাৎ ।। ৮৪ ।। দুরাদাবস্থান্ত্রং পুরীষঞ্জ সমুংস্জেৎ । পাদা-

ভগবৎপ্রিয়ামিতি মুখপ্রকালনাবসরে প্যান্মিন্ তৎসমপ্রে তথা তুলসীগ্রভিরিক্তনির্দাল্যে:-ভারণে চ কারণং জেরং ॥৮১॥

स्माकान् वदाशीषु कृषिविधि वनामरश्रामीन्। यम्न निर्णाशी यमा उर ॥ ४२ ॥

विधिति निर्माण्या । देशवाः भूतीयादमर्गन्त । विधित्र क्षित्र क

বসেচনোল্ড্ফেপ্রাক্সপের গৃহাঞ্নে ৷৷ ৮৫ ৷৷ আত্মছারাৎ ভরে ভারাৎ গোসূর্ব্যার্যানিলাৎস্তথা। গুরুৎ ছিজাতীৎস্চ বুধোনমেহেত 🗣 দাচন ।। ন রুটে माग्रामाथ। वा लाखाङ जनम्यान । न दश्चिन न नम्यानि छीर्थम् भुक्षमर्थ । भाष्म देनवासमञ्जाद न भागारम मगाहरत । उरमर्श्रीय भूतीयम् मृद्यम्ह বিশঙ্জনং। উদত্যুগোদিবোৎদর্গৎ বিপরীত্যুখোনিশি। কুর্ম তিলাপদিপ্রাক্তো মূত্রোৎসর্গৎ চ পার্থিব । জ্বৈরাজ্ঞাদ্য বসুধাৎ বন্ত্রপাব্তমন্তকঃ। তিপ্তেলাতি চির্ তত্র নৈব কিঞ্ছিদুদীরয়েৎ।। ৮৬।। তথা কৌমেব্যাসগীভায়াং নিধায় দক্ষিণে कर्भ उम्ममृत मुम्ध्रम्थः। जल्मांभा मशे कारेकेः शरेतालीरिं कृत्व वा। आतृ ত্য ত শিরঃ কুর্য্যাদ্বিমূত্রশ্য বিসজ্জনিৎ । নচৈবাভিমূখঃ স্ত্রীণাৎ গুরুক্তাক্ষণয়ো-श्वारी नरम्यरम्यानस्यानीयामिश कनाठन ॥ ५१॥ नमीर ज्याकीरिय वीकि জা নবাভুতিমুখোপি বা । প্রত্যাদিত্যং প্রত্যনলৎ প্রতিসোমং তথৈবচ'।। হাশীখারে এক্ষিদাগন্তাসম্বাদে। ততশ্চাবশ্যকৎ কর্ত্তুং নৈখাতীং দিশামাশ্রয়েৎ । আ। শাদ্দেশু শতং গচ্ছেলগরান্ত চত্তপ্র গং। কর্ণোপবীতু দেগুক্ত্বোদিবসে সন্ধ্যয়ে। দেগ বিশ্তে বিস্দেশ্টো নিশায়াংদক্ষিণামুখণ নালোকয়েদিশে,ভাগান্ জ্যোতিশ্চক্ৰং মতে। লেখা বামেন পাণিনা শিশুখেইছোতিটেখ প্রহল্বান্ ।। ভলৈবাগ্রে। ন ्यः शाखाः क्रांत्रवन्तीत्क न ज्यान । नगर्छ्यु ममस्यु न ভिष्ठेश्व क्राणि। र । जुणमूरवातात्वी मिवाष्ट्रायाक्षकात्रस्याः । जीवियु व्यागवाशायाः कूर्वग्रमण-लियां नर 11 ५५ ॥

তার শৌচবিধিঃ। প্রীরিষ্ণপুরাণে তত্তিব : বল্যীকম্ঘিকো থখাতাং মৃদ্র নান্ত তালান্তারা । শৌচাবশিষ্টাৎ গেছাকী নাদদারেপসম্ভবাং ।। ৮৯।। অন্তঃপ্রাণ্য বালাঞ্জ হলোৎখাতাঞ্চ পার্থিব । পরিত্যজেম্দুদৈচতাঃ সকলাঃ শৌচসাধ্যন । একা লিঙ্গে গুদে তিস্যুদ্শবামকরেন্প । হস্তম্বরে চ সপ্তান্যা মৃদঃশৌচোপ পাদিকা: ।। ৯০ ।। যসমৃতৌ । তিসুস্ত পাদয়োদেরাঃ শুদ্ধিকামেন নিত্যশঃ। কিঞা তিসুস্ত মৃতিকা দেরাঃ কৃত্যা তু নথশোধন্য ।। ৯১ ।। কাশীখণ্ডে চ তত্তিব । গুছে। দিদ্যাল্য দ্ব কৈম পায়ৌ পঞ্চাম্বসান্তরাঃ। দশ বামকরেচাপি সপ্তপাণিদ্বয়ে

কুর্য্যাৎ ॥ ৮৫ ॥ গবাদীন্ গুরুং দ্বিজাতীংশ্চ প্রতি তদাঁভমুখোন মেছেদিতার্থঃ । ৮৬ ।। তথেতি গৃহিধর্মকথনএবেতার্ধঃ । প্রীনিমপুরুরাণতঃ কিঞ্জিদ্বিশেষমপেক্ষা প্রীকৃর্মপুরাণকাশীগও বচনানি লিথতি নিধায়েত্যাদি।এ২মগ্রেপি সর্বান্তঃ ॥ ৮৭ ॥ বীক্ষিত্বত্যার্থং, পশামিতার্থঃ। প্রত্যাদিত্যমিতি তত্তদভিমুধঃ সম্মুর্যাদিতি পূর্বাবদর্থঃ ॥ ৮৮ ॥

লেপসম্ভবাং ভিত্তিগতাং ॥ ৮৯ ॥ অন্তমধ্যে প্রাণিভিঃ কীটেঃ অবপনাং উপহতাং। পাঠান্তরে অণুভিঃ স্থাক্ষিঃ প্রাণিভিরবপনাং॥ ৯০ ॥ এবং মতভেদঃ সপাত্তকনিষ্পাত্তাদিভেদেন কল্প্যঃ পাদয়োরিতি প্রত্যেকং ভিশুইভি জেন্নং। দেয়াহস্তমোরিতি শেষঃ ॥ ৯১ ॥ অনুসান্তরাঃ

ন্দং। একৈকাং পাদয়োদদ্যাৎ তিসুঃ পাণ্যান্দঃ মাৃতাঃ। ইঅং দৌচং গৃহী কুর্যান্দার্থকি করাৎ বিশুণমেতভু ব্রজ্ঞ হাদিবু বিষু । দিবাবিহিত শোচাভ রাবাবলং সমাচারেৎ। রুজার্জি তদক্ষ পথি চৌরাদিপীড়িতে। তদক্ষ বোলিভাগেশি ষাস্থ্যেন্দ্র ন কারয়েৎ। আত্রধাবীফলোমালী মৃদঃ দৌচে প্রকীভিতাঃ। ১২ ।। শশ্বস্তো। মৃতিকা তু সনুদিন্তা বিপবী পূর্য তে যয়া। ১৩ ।। দক্ষ তৌ। অর্পপ্রস্তিমাবা ত প্রথমা মৃতিকা মৃতা। ঘিতায়াচ তৃতীয়াচ তদর্দ্ধ পরিকীর্জিতা। ১৪ ।। অথ কেবলমূত্রে ২সর্গে দক্ষঃ। একা লিজে ত সব্যে বিরুজ্জরার্দ্রং ম্তং। ব্রাক্ষে। পাদয়োর্ধি গৃহীয়াচ স্প্রদালিভপাণিনা। আচম্য তু ততঃ শুদ্ধঃ মৃত্রা বিষ্যুৎ সনাতনং। ১৫ ।।

অথাচননবিধিঃ। বিষ্ণুপ্রাণে ততৈব । অচ্ছেনাগল্লফেণেন কলেনাবুদুদেন
চ। আচামেত মূদৎ ভূয়ন্তথা দদ্যাৎ সমাহিতঃ। নিশানিতা ্রিশান্তর পাদাবভূক্ষ্য বৈ পুনঃ। তিঃ পিবেৎ সলিলং তেন তথা দিঃ পরিমান্তর থেছে।। ১৬ ।।
শার্ষণানি ততঃ খানি মূর্জান্ধ্য মুদালতেছে। বাহুৎ নাভিঞ্ন তোমেন হ্রম্যুণাপি
সৎস্পাদেছ ।। অত চ বিশোষাদক্ষেণাক্তঃ । প্রকাল্য হন্তৌ পাদৌ চ তিঃপিবে
দমুবীক্ষিতং। সংবৃত্তাক্ষুঠমূলেন দিঃ প্রস্কান্ততোমুখং। সংহত্য তিস্ভিঃ পূর্ধমাস্যমেবমুপস্পাদেছ। অফুঠেন প্রদেশনা ঘুণিছ প্রদানত্ত্রছ । ভকুঠানামিকাভ্যান্ত চক্ষুং প্রোত্রে পুনঃপুনঃ। কনিচাক্ষ্ম্ক্রামাণিছ হ্রমন্ত্রন বৈ ।
সর্বাভিন্ত শিয়ঃ পশ্চাদ্বাহু চাপ্রেণ সংস্পাদেছ। তথাকাশীব্যন্তে তাত্রেন । প্রাণাল্য
উদ্গাদ্যোবা সূপ্রিফঃ শুচৌ ভূবি। উপস্প্রেদিহিনায়াছ ভ্যান্তারাছিভ্যাভিঃ।
অনুফাভিরফেণাভির্ট্রিন্ত দ্গাভিরত্বঃ। ব্যান্তান্তর ক্তির্থন দ্ফিণুভাভি
রাচমেছ। কওলাভিন্পঃ শুক্রোভ্রালুগাভিন্তথোক্তঃ । দ্রীশুজাবাস্যম্বস্প্রস্ক্রান্তির বিশ্বাধান বিশুজ্যতঃ। ১৭।। যান্তবলকাস্বতৌ। পাদ্যালনশেষেণ নাচামেছ বারিণাদ্বিজঃ। যদ্যাচমেছ সুবিয়িত্বা ভূনৌ বৌধায়নোহত্রবীছ ।। ১৮ ।।
ভর্ষাক্ষ্মেটেন। পাণিনা দক্ষিণেনৈর সংহ্তাক্স্লিনাচমেছ। মৃক্তাক্স্প্রক্রিটেন

মণ্যে জলস্হিতাঃ ।। ৯২ ॥ ত্রিপবী মধ্যবর্দ্ধাঞ্জুলিত্রয়স্যাদিপর্ব্বশ্রং । এবা চ গুণব্যতিরিক্তে জেরা ॥ ৯৩॥ অতএব লিথতি অর্দ্ধেতি প্রথমা গুদে দেয়া নামাদ্যা ॥ ৯৪ ॥ সব্যে হস্তে উভয়োহস্তরোঃ ॥ ৯৫॥

আচামেতেতা চমনং প্রস্তাত তা পূর্বাক্ষাই মৃদমিতি। জন্যাং মৃদমাদদ্যাৎ তথাচ নিজ্ঞাদিতমন্তি শৌচং যেন সং। যথা ভূয়োইন্যাং মৃদং দদ্যাৎ পাদরোরিতি শেষং ততলাচামেদিত্যর্থঃ।
তেনপাদাভূক্ষণতিংপানশেষ সলিলেন দিংপরিমাক্ত য়েলুখমিতি শেষং॥ ৯৬॥ আলভেৎ
স্পূশেৎ অসঞ্জপনিতিপাঠে মৌনী ভূত্বেতার্থঃ॥ ৯৭॥ ভূমৌ সাব্যাহ্বা কিঞ্ছিবারি প্রক্ষিপ্য॥৯৮।

নগস্থী অপস্ত ক্ষেত্ৰ। কৌর্মে চ ব্যাসগীতায়াং। ভ্লু । পীত্রাচ সুপ্রাচ সুম্বাচ সুম্বাচ ব্যামার রথ্যাপনপ্রি। ওঠোবিলামকৌ স্পৃন্ধী বাংলাবিপরিধায় চ। রেভাম্ত্রপূরীষাণানুহার্মেইন্তভাষণে। ঠাবিত্রাধ্যয়নার ডে কাশখাসাগ্যে তথা। চত্তরং বা খাশানয়া সমভ্যম্য দিজোত্তমঃ। সক্ষ্যয়োভয়োত্য়দাচান্ডোপ্যাচমেৎ পুনঃ।। ৯৯।।
কিঞ্চ। শিরঃ প্রাবৃত্য কঠং বা মুক্তকচ্ছ শিখোপি বা। তক্তমা পাদয়োঃ শৌচমাচাভোপ্যশুচিভবিৎ।। ১০০ ।। সোপানহকোজলত্বোবা নোফাষী চাচমেদুখঃ।
নিচৰ বর্ষধারাভিত ভোডিইটে তথা বুখঃ। নৈকহ ভাপিত জলৈর্বনা সূত্রেণ বা পুনঃ।
ন পাদুকাসনস্থোবা বহির্জানুর্থাপি বা।। ১০১।।

ভাগবৈশ্বাচমন। তিঃপানে কেশবং নারায়ণ মাধ্বমপ্যথ। প্রাক্ষালনে দ্রোঃ পাণ্যোর্গাবিদ্দ বিষ্ণুমপুরভৌ ॥ ১০২ ॥ মধুসুদনমেকক মার্জনেইন্যুদ্ধ বিক্রিমণ ॥ ১০৩ ॥ উন্মার্জনেইপরেয়েরার্কামনশ্রীধরাবুভৌ ॥ ১০৪ ॥ প্রকালনে পুনঃ পাণ্যান্ত্র বিকেশক গাদয়োঃ। পদ্মনাভৎ প্রোক্রণে তু মূর্দ্ধো দামোদয়ণ্ডভঃ ॥ ১০৫ ॥ বা দেবং মুখে সক্ষর্ষণৎ প্রদ্যুদ্মমিত্রভৌ । নাসয়েরেরিন্রুগলেইনিক্রমণ পুরুষোজুমং । অধ্যাক্ষজং নৃসিৎইঞ্চ কর্ণয়োর্নভিতোইচুরতং ১০৩ ॥ জনার্দ্রনক হাদয়ে উপেন্তুং মন্তকে ততঃ । দক্ষিণে ভূহরিৎ বাহৌ

সমন্সা পরিভ্রমণেন সমাক্ স্পৃট্থী ইতার্থঃ ॥ ৯৯ ॥ পাদয়োঃ শৌচমকুত্বেতি ভোজন পানশয়নাদৌ পাদয়োরশুদ্ধাভাবে২প্যাচমনসাঙ্গতার্থং শৌচমুক্তং ॥ ১০০ ॥ হত্তেউছিক্টে দতি সন্ধিরাধঃ॥১০১॥

তত্র লিখিতাচমনবিধৌ প্রভিগবনামজপেন কঞ্চিদ্বিশং ভাত্তিকসমতংলিখিত ত্রিঃপানইতি সভ্তিঃ। ত্রিঃ পানাদৌ কেশবাদিকং কৃষ্ণান্তং চন্তর্বিশতিসংখ্যং প্রভিগবনাম নমোহন্তং চন্তর্বান্ত্রঞ্জ কেশবায় নমইত্যাদি প্রয়োগেণ ক্রমাজ্ঞপন্ দন্ বথাবিধি আচামনং কুর্য্যানিতি সক্ষৈর্দ্ধ ত্রিঃপানে বার্ত্রয়ঞ্জলাচমনে কেশবাদিত্রয়ং॥ ১০২॥ মধুস্তদনমেকমন্যঞ্জ ত্রিবিজনম মিত্যুভাবিত্যর্বং॥ ১০৩॥ অপিশব্দাদধরয়োর্মাজ্জনইতি জ্ঞেয়ং॥ উভাবিপ পুংস্তঃ সংজ্ঞা সংবিনোরভেদবিবক্ষয়া॥ ১০৪॥ পাণ্যোদ্বিয়েঃ প্রফালনে ক্ষবিকেশমেকমেব। পানয়োশ্ধ প্রকালনে পত্যনাভ্যেক্ষর । ততন্তদনন্তরং মুর্জ্বঃ প্রোক্ষণে দামোদরমেকং॥ ১০৫॥ নাসয়োশ্ধ দ্বায়াঃ সক্ষর্বণং প্রভ্যুমুঞ্চেতি দ্বৌ॥ নাভিতঃ নাভৌ॥ ১০৬ ॥ বথাবিধীতি প্রকালিখিতাচমন বিধ্যানুশারেণ । ত্রিঃ পানপ্রকারঃ মার্জ্জনাদাবক্সুলিনিয়মৃশ্চ তথা ওইমার্জ্জনিমুর্জ্জাইক্রমেণ নাসাদিশ্পশিল দক্ষিণক্রমেণেত্যাদি প্রকার্ল্ফ সদ্চোরতোজ্যেইত্যর্বঃ । ভ্রথাচালমতঃ শ্রীরমার্চনচন্দ্রিকারাং। কেশবাদ্যৈপ্রভিঃ পীত্রা দ্বাভ্যাং প্রকালমেৎ করৌ। দ্বাভ্যামৌন্তে চ সংমার্জ্যি দ্বাভায় মুর্জানত নন্তথা। একেন হস্তে প্রকাল্য পাদাবিপি তবৈকতঃ । সংপ্রেটক্রাকেন মুর্জানং ভতঃসম্ভর্ষণাদিভিঃ। আস্যনাসাক্ষিকর্ণাংশ্চ নাভ্যুরঃক্ষ্মকান্ স্পৃন্ধ। এবমাচমনং কুরঃ সাক্ষারায়বোভববেং॥ কেশব নারায়ণ মাধব গোবিন্ধ বিঞ্চু মধুন্দন ত্রিবিক্রম বানন প্রথর

## শীশীহরত কি বিলাম:।

বানে রক্ষং যথাবিধি ৷ নমোহন্তক চত্তর্যন্তমাচামেৎ ক্রমভোরপন্ ৷৷ ১০৭ ৷৷ অশস্তঃ কেবলৎ দক্ষং স্পৃশেৎ কর্ণং ভথাচ বাক্ ৷ কুর্ফাতালভন্ বাপি দক্ষিণশ্রবণস্থ বৈ ৷৷ ১০৮ ৷৷

অথদন্তধাৰদ্বিধিঃ। তত্ৰ কাত্যায়নঃ। উপায় নেত্ৰং প্ৰকাল্য শুচিভূ ত্বা সমাহিতঃ। পরিজপ্য চ মন্ত্ৰেণ ভক্ষয়েদ্ভধাৰদং। মন্ত্ৰুলায়ং। আয়ুৰ্বালং যশোবেচিঃ
প্ৰজাপশুৰুসূনি চ । ব্ৰহ্ম প্ৰজাঞ্চ মেধাঞ্চ ত্বং মোধেহি ধনস্পতে। অস্য
নিজ্যভা কাশ্যিংগু। অথোম্থবিশুদ্ধ্যথং গৃহ্বীয়াৎ দন্তধাৰনং। আচান্তোপ্য
শুচিৰ্যনাদক্ত্বা দন্তধাৰনং। বারাহে চ । দন্তকাঠমখাদিত্বা যন্ত্ৰ মামুপসপতি। সৰ্বালক্ত্বং ক্মা জেল চৈকেন নশ্যভি । দন্তকাঠ নিষিদ্ধদিনানি । মনুঃ।
চন্ত্ৰদ্দান্ত্ৰী দশ্পৌৰ্শমান্ত্ৰসংক্ৰমঃ। এমু স্ত্ৰাভৈলমাংসানি দন্তকাঠানি বক্ত্ৰ
রেং। সম্বৰ্ত্তকঃ। আন্যে ভিথেনিক্ম্যাঞ্চ ক্ষয়ে চন্ত্ৰমসন্তথা। আদিত্যবারে শৌরে
চ বক্ত্রহিৎ দন্তধাৰনং। ১০৯ ৷ কাত্যায়নঃ। প্রতিপদ্ধ্যিঠীয়ু নব্য্যাঞ্চ বিশ্বো-

ক্রীকেশ পদানাত দামোদর বাস্থদেব সক্ষণ প্রত্যমু অনিকৃত্ব প্রবোত্তম অধোকজ ন্সিংছ সচ্যত জনার্দন উপেন্দ্র ইরি কৃষ্ণ তগবন্ধামভিরেভিশ্চ তথ্য দৈর্দমাহস্ত কৈরিত্যাদি ॥ ১০৭॥ ইন্দ্রিরিচ্ছিদ্রাদি আজাল্য কেন্দ্র মৃত্যুক্তংপক্ষান্তরং লিখতি অশক্তইতি । রোগাদিনা অসমর্থশেচত্তর্হি কেবলং দক্ষং নিজ্ঞ দক্ষিণং কর্ণং স্পাশেৎ । মনু তত্র কিং প্রমাণং তত্র লিখতি। তথাচ বালিতি। মন্তত্ত থৈব বচনমন্তীত্যর্থং। তামের মার্কত্তেরপুরাণে শ্রীমদালদোক্তাং লিখতি ক্র্রীতেতি। আলভনং স্পর্শনং বৈ প্রসিদ্ধ্যোই তচ্চ মৃতিপুরাণাদিবং মপ্রশিদ্ধমেবেত্যর্থং। কেচিচ্চ ক্রিক্ত লাচমনাশক্তাবপি পক্ষমেতং মন্যন্তে। জলাদাসন্তবেপি । এতচ্চ কেবল মিত্যনেনাপি স্টত্তং। তচ্চ তত্তিবোক্তং । যথাবিভবতোহেত্তং প্র্রোভাবে ততঃপ্রমিতি। অস্যার্থং বিভবং নামর্থ্যাদি প্রেলাক্তিরিরাচমনাশন্তবে ততোহনন্তরমুক্তং দক্ষিণকর্ণালভনাদিকং ক্রার্থং নান্যদিত্যর্থঃ। ১০৮ ॥

প্রিভাগবৎপূজানিরতাঃ শর্নাতৃপারের দন্তধারন মাচরেয়ুরিতি পূর্কাং লিখতং অধুনা শৌচবর্গবিধিপ্রদক্ষে তদ্বিধিলিখাতে উপারেত্যাদিনা। প্রকাল্য মার্জ্জনাদিনা নেত্রে উন্মীল্য। এবফ প্রাতঃরুজ্যমেবেদং ব্যক্তং। তথাচ ব্যাসঃ । শুদ্ধার্থং প্রাতরুপার ভক্ষরে দন্তধারনমিতি। অশক্তো চ সানকালেশি দন্তধারনং ন দোষাবহুং বিরক্তানাং সতাং কেষাঞ্জিং তাদৃশাচারদর্শনাৎ। অতএব কৌর্শ্বে প্রীব্যাসগীতায়াং। প্রকাল্য দন্তকাষ্ঠরৈ ভক্ষরিত্ব। বিধানতঃ। আচম্য প্রবতোনিত্যং স্মানং প্রাতঃসমাচারেদিতি প্রাতঃসানকাল এবোক্তং। মার্কণ্ডেয়পুরাণে চ কেশপ্রসাধনাদর্শদর্শনং দন্তধারনং। পূর্ব্বাহু এব কার্যাণি ইতি প্রবাহুমাত্রহত্যমিত্যুক্তং। যচোক্তং যোমোহাৎ স্নানবেলায়াং ভক্ষয়েদন্তধারনং। নিরাশান্তস্য পাছন্তি দেবতাঃপিতরন্তথেতি তচ্চ মধ্যাহুস্মানবিষয়্য জ্বেয়ং। ১০৯।। বিশেষত-ইত্যনেন কৃতিৎ চন্তর্দশ্যাদে কৃতিচ্চ ব্যতীপাতশ্বদাদিনাদে রুত্বদন্তকান্তনিবেধাপেক্ষয়া প্রতি-

यकः। म्हानां कार्क म्यां गामहक्ष्णां मध्य क्रुण्याः। ५०।। वृद्धविक्षिः। उन्नां मध्य क्रियां मध्य क्रियां कार्क मथां कार्

অথ তবৈষাপবাদঃ। কাঠিঃ প্রতিপদাদো যদ্ধিকং দন্তধাবনং। তৃণপর্বৈ তথ কুর্য্যাদমামেকাদশীং বিনা ।। ১১৪।। অতএব ব্যাসস্য বচনান্তরং। অলাভে দন্তকান্তানাং নিবিদ্ধায়াং তথা তিথোঁ ।। অপাং দাদশগ্রুবৈবিদ্ধ্যাদ্ভধাবনং। কাশাখণ্ডে চ তবৈব । অলাভে দন্তকান্তানাং নিবিদ্ধোবাথ বাসরে। গণ্ডুষাদ্বাদশ গ্রাহ্যা মুখস্য পরিশুদ্ধাইতি ।। ১১৫ ।। তৃণপর্বাদিনা কেচিৎ উপবাসদিনেষুপি। দন্তধাবনাম্ভন্তি মুখশোধনত্ৎপরাঃ। তথাচ কাশাখণ্ডে তবৈব। মুখে পর্যুবিতে যক্ষাৎ ভবেদশুচিভাগ্নরং। ততঃ কুর্য্যাৎ প্রযুক্তন শুদ্ধাবনং। উপবাসে পি নো দুষ্যেদন্তধাবনমঞ্জনং। গন্তালক্ষারসদ্ভ্রপুশ্যালান্লেপনং।।

অথ দন্তকান্তানি শৃতো। সর্বে কণ্টকিনঃ পুণ্যাঃ আয়ুর্দাঃ ক্ষারিনঃ শৃতাঃ। কটুতিক্তকষায়াশ্চ বলারোগ্যস্থপ্রদাঃ। কিঞা। পলাশানা দন্তকান্তংপাদুকে

পদাদিযু ভন্নিষেধাধিক্যং বোধ্যতে অভএব দহতীত্যাদিত্যাদিনা তত্র দোষোপিমহান্ দর্শিতইতি দিক্॥ ১১০॥ নবম্যামেক্লাদশ্যাং রবিবারেচেত্যর্থঃ ॥ ১১॥ এতে যু প্রতিপদাদিযু নিষিদ্ধদিনে যু কাটেঃ কৃষা দন্ত নাং ধাবনস্য নিষিদ্ধাহাৎ নিষেধনাৎ । তত্তদেশুধাবনং তৃণৈঃ পর্ণঃ কাষ্ঠাদিত- রৈরবিন্যশ্চ স্বাদিভিঃ কৃষ্যাৎ। যদ্ধা কাষ্ঠেতরৈরিতি হেতৌ বিশেষণং । ততশ্চ কাষ্টেরের নিষেধনাৎ তৃণাদীনাঞ্চ কাষ্ঠেতরত্বাৎ তৈর্দেশুধাবনমন্ত্রীমিত্যর্থঃ॥১১২॥ অন্যত্র প্রতিপদাদিব্যতিরিক্ত দিনে যু অত্ত চ রবিবারাদাবিপির্বাধ্রের তথাতৃণৈশ্যাপীতি প্র্যাপরবচনানুসারেণ বোদ্ধব্যং॥১১৩।

অসাং অমাবাসাং একাদশীমিত্যুপবাসদিনং লক্ষয়তি কদাচিন্দাদশীয় জন্মানীয়াদিয় চোপবাসাং। অমাবাসায়াং দন্তকাষ্ঠ গ্রহণং ন কার্যাং তথাচ মংশ্যবিষ্ণুপুরাণরোঃ। ছিনতি বীরুংবায়স্ত বীরুংশংস্থে নিশাকরে। পকং বা পাত্যতোকং ব্রহ্মহত্যাং সবিন্দতীতি॥ ১১৪॥ নিষিদ্ধায়ামিতি পূর্বাং প্রতিপদাদিয়ু নিষিদ্ধাদিনেয়ু পর্বর্দিস্তধাবনস্যানুজ্ঞাতত্বাং পুনশ্চ অপাং দাদশগপুবৈরিত্যনুজ্ঞাতত্বাদেকাদশাভ্যপবাসদিনেয়ু অপাংগপ্তৃবৈরিত্য ব্যবস্থাপয়িতবাং । এবঞ্জ অমামেকাদশীং বিনেতি বাক্ষাং হসঙ্গভ্মিতি দিক্॥ ১১৫॥ উপবাসেপি নোদ্ধ্যে দিতি বচনঞ্চ স্বমতেপান্ত্রীবিষয়কং জ্যেই ত্রাঞ্জনাদিনিষেধনাং। অত্তব্বক্টিদিছ্নীতি লিখিতং।

চৈব বজ্ঞা হৈছে । বজ্ঞা বেচচ প্রয়ত্ত্ব ব টং বাশ্বখাৰের চা। ১১৬।। কোমে প্রির্গাসগীতারাং। মধ্যাক্ষ লিসমস্থোল্ডাং ছাদশাক্ষ লসমিতং। সন্তচং দন্তকা চং যৎ তদপ্তে নন্ত থাৰায়ে হা। ১১৭।। ক্ষীরিবৃক্ষসমৃত্যুত্তং সালভীসন্তবং শুভং। অপানার্গাধ্ব বিশ্বাধ্ব করে বিশেষতঃ। বজ্ঞা হিছা নিশিকানি গৃহীছৈকং যথোদিতং। পরি হৃত্যু দিনং পাপং ভক্ষয়েরে বিধানবিং। ন পাটায়েং দন্তকা চং নাজুল্যগ্রেণ ধাবয়েং। প্রক্ষাল্য ভূত্যু ভজ্জহ্যাৎ শুচে দেশে সমাহিতঃ।। ১১৮।। কাশীথণ্ডে চ ভত্তিব। কনিভাগ্রপরীগাহং সন্তচং নিত্র গং ক্ষুণ্থ। ছাদশাক্ষ লমানগ্রুণ স্বাদ্যগাক্ষপাবনং। জিলো থেনিকাং বাপি কুর্য্যাক্ষাপাক্ষতিং শুভাং। ১১৯। রামার্চানকন্তিকারাক্ষ । দন্তোলেথোবিভন্ত্যাভবভি পরি মিতাদ্যমিত্যাদ্যন্তাং প্রাতঃ করিয়াদিকা ছাদ্যস্তাধ্বির পলাশৈর্ধিনার্কামূবিকাঃ। ভূত্যু গগুষ্যটকং হিবি কুশামূতে দেশিনীমকুলীভির্নদাভূতাইপর্বাণ্যি নথলু নব্য্যার্ক সংক্রান্তি-পাতে।। ১২০।।

অথ কেশপ্রসাধনাদিঃ। ততশ্চাচম্য বিধিব ২ কৃত্বা কেশপ্রসাধন । স্মৃত্বা প্রথায়ক্রেটা নিবধীয়াচ্ছিথা ছিলঃ।। ১২১ ।। তথাচোক্ত । ন দক্ষিণাসুখো নোর্দ্ধ কুর্য্যাৎ কেশপ্রসাধনং। স্মৃত্রোকারঞ্গায়ত্রীং নিবধীয়াচ্ছিথান্ত হ। ১২২।

অথ সানং বিষ্পুরাণে তত্ত্রব । নদীনদতভাগেষু দেবখাতজ্ঞলেষু চ। নিত্য ক্রিয়ার্থৎ সায়ীত গিরিপ্রসূবণেষু চ। কৃপেষ্দৃতভোয়েন সানৎ কুর্ব্বতি ব। ভূবি।। সায়ীভোদ্বতোয়েন অথবা ভুব্যসম্ভবে । অথ সাননিভ্যতা । তত্র কাত্যায়নঃ। যথাহনি তথা প্রতিনিভ্যং সায়াদনাতুরঃ। অত্যক্তমলিনঃ কায়োনবচ্ছিদ্রসমন্তিঃ।

ব্রত্তিনে পণীদিনাদন্তানাং ধাবনে দক্ষিণাত্যশ্রীবৈশ্বানাং ব্যবহারোহপি প্রমাণমিতিদিক্
।। ১১৬।। সত্ত্তমিতি। অদম্ভত্তশব্দোপ্যন্তি আবন্ধোবা ত্রচা সহিত্তমিত্যর্থঃ ॥ ১১৭।। নিন্দিতানি
অর্ক কর্বেরাদীনি পাপং বক্ষ্যাং দিনং প্রতিপ্রদাদি।। ১১৮ ॥পরীণাহং হোলাং সার্দ্ধং আদ্রতাবৃক্তং ॥ ১১৯ ॥ বটাদিকাঠেরিন। ক্ষীর্যাদিকান্তাং প্রতিদক্ষানামুল্লেধোবাধনং ভবতি
কীদুশাংবিতন্ত্যান্তাদশাক্ষ লৈঃ পরিমিতাং কুলং দেশিনীক্ষ বিনা । অঙ্গুলীভির্গপ্ত্র্বষ্ট্রহং
বিভ্রত্যান্তাদশাক্ষ কৈঃ পরিমিতাং কুলং দেশিনীক্ষ বিনা । অঙ্গুলীভির্গপ্ত্র্বষ্ট্রহং
বিভ্রত্যান্তাদশাক্ষ কৈঃ পরিমিতাং কুলং দেশিনীক্ষ বিনা । অঙ্গুলীভির্গপ্ত্র্বষ্ট্রহং
বর্তী একাদশী চ ভূতং চন্তর্কেশী অউঅউমী পর্ব্ব অমাবস্যাপৌর্ণমাস্যাদি পাতোব্যতীপাতো
কন্দ্রেকাং। এবংনিষেধবৈবিধাং বিবিধবেদশাধাসেবিনাং কর্মপরাণাং নানাদেবতাভক্তানাং
মতভেদেন মন্ত্রশ্ব ক্রোভোরং অমাদ্যায়াদ্যাপ্যুহকং সোমোরাজা ব্যা গমন্ সমে মুথং সংমাকর্মান্ত বশ্বা চ ভর্গেনবেন্তি ॥ ১২০।।

श्विकारेजियात শূদ্রন্য মুক্তশিবত্বাৎ ॥ ১২১॥ বিধিবদিতি লিখিতং তংবিধিমেবলিখতি নদক্ষিণেতি ॥ ১২২॥

কূপেৰু কৰ্নাদিভিক্ত ভতোৱেন ভূবি তভটভূমৌ সায়াৎ গমনাদ্যশক্তয়া। তওঁটভূবি সানাসম্ভবে কূপাছ্ভূতেন শীভোদকেন সায়াৎ ভজাপ্যশক্তো উফোদকেন সায়াৎ ইতি জ্বেঃং॥

সূৰত্যেৰ দিবারাত্রোপ্রাভঃসান বিশোধনং। দকঃ। প্রাতর্ন্ধ্যাঞ্যাঃ সানং বান প্রস্গৃহ রোঃ। মতে দ্রিসবনং সুনিৎ সক্তব্ত্ত ক্রজচারিণঃ।। ১২৩ ।। সর্বোচাপি সক্ত কুর্যুরশক্তো চোদকং বিনা।। ১২৪।। কিঞা অশিরক্ষণ ভবেৎ স্থানমশত্তো कमिना महा। আছেन वाममा वानि शानिना वानि मार्क्क न १ मधान । यमा-ত अभावार श्वामिक्तमां नियु । किरमा श्वीनां मिना शाकः नामः विना পুংসাং পাপিত্রং কর্মানু স্তুম। হোমে জপে বিশেষেণ তলাৎ সান্দ সমাচরে । কাপীথণ্ডে । প্রস্তেদনাদ্যাক্লিকোনিদ্রাধীনোঁয়তোনরঃ । প্রাতঃসুনান্ততোহহ म्यानानानानाना विष्या शार्षा ह त्रवष्ट् चिविक् खनम् बारम्। मानः विना कू यां चु एरळ मलामी म मना नतः । अम शिर्ता रेखिक एम। विग्याः भिज्राविकाः । मानहोता नवः भाभी नानशेत्ना १ एकिः नमा । अनुष्ति नवकः जुङ्गा भूक्रमानियु जायरव।। >२०। অথ সানমাহাত্যাৎ। মহাভারতে উদ্যোগপর্কাণ জীবিদুরোজে। ওণাদশ সুন শীলৎ ভজত্তে বলং কপং স্বরবর্গপ্রসিদ্ধিঃ। স্পর্শক্ষ গন্ধশচ বিশুদ্ধতা চ জীঃ দৌকু-মার্যাৎ প্রবরাশ্চ নার্যাঃ। পাত্মে চ তত্ত্রৈব। যাম্যৎ হি যাতনা দুঃখৎ নিভ্যস্থায়ী ন পশ্যতি। নিত্যসানেন পূয়তে অপি পাপ কভোনরাঃ। প্রাতঃ সাুনৎ হরেছৈশ্যন-বাহ্যভাতর মলং। প্রাতঃ সানেন নিস্পাপো নরো ন নিরয় একে । যে পুন: শুতি সি খানমাচরতী স্প্রাণী। তে নৈব দুর্গতিং যাতি न জারতে কুষোনিষ্। দঃদ্বপুৎ দুউটিন্তা চ বন্ধ্যা ভবতি সর্বদা। প্রাতঃস্থান বিশুদ্ধানাৎ পূরুবাণীং বিশাসর। অতি অতি । সানে মনঃ প্রসামঃ স্যাদেবা অভিমুখাঃ সদ।। সৌভাগ্যৎ এঃ সুখৎ পুষ্টিঃ পুণ্যৎ বিদ্যা যশো ধৃতিঃ । মহাপাপান্যলক্ষ্মঞ मुलि उ दिस्ति विखित्र । स्नाकमू श्यामि इत्र दे थात्र मान दिस्मिष्ठः ॥ ১২৬ ॥ को विवि । श्रीकः मानः श्रामः श्रीमृकं कतः हि छ । श्रीकः मानि श পানি পূষ্টে নাতু সংশ্রঃ । কাশী্থতে চ। প্রাভঃস্বানাৎ যতঃ শুদ্ধের ৎ কারোহয়ং মলিনঃ गमा। ছি জিতোনবভিশ্ছিতৈঃ সুবত্যের দিবানিশং। উৎসাহমেধাসৌভাগ্য-রপদম্পং প্রবর্ত্তকং। মনঃপ্রদ্মতাহের প্রাতঃসাুনং প্রশাস্তে। প্রাতঃ প্রাত্ত য়ং সুনিৎ সংজাতে চারুণোদয়ে ৷ প্রজাপতঃসমৎ প্রাক্তমহাঘবিঘাতরুৎ ৷ প্রাতঃ সান ২ হরে পোপমলক্ষাৎগ্নানিমেৰ চ। অশুচিত্বক দুংস্বপুৎ তুক্তিং পুক্তিং প্রফৃতি !

তথাচোক্তং। আপঃ স্বভাবতোমেধ্যাঃ কিং পুনর্বাহ্নিশংগৃতাঃ। তত্মাৎ সন্তঃ প্রশংসন্তি স্নান্যুক্ষেন বারিণেতি ॥ ১২৩॥ অশক্তৌ সভ্যাং। অপি নিশ্চিতং সক্ষণপীতি বা কুর্যুরেব। তত্ত্রাপ্যশক্তি উদকং বিনেতি মন্ত্রসানাদিকং কুর্যুরিত্যর্থঃ । যদ্ধা অশক্তৌ সভ্যাং উদকং বিনা জলাভাবে চ সতি সক্ষং কুর্যুঃ। এবং স্নানস্যানিত্যভা সিইক্ষব।। ১২৪॥ অশিরক্ষমিত্যাদিনাপি নিত্যতৈ রাভিপ্রেতা॥ ১২৫ ॥ ব্যাবর্ণয়োঃ প্রকর্ষেণ ক্রিক্ষির্তি। মহাগাতকাদিকং হরতি॥ ১২৬॥

নোপসপত্তি বৈ দুষ্টাঃ প্রাতঃস্থায়ি জন্ম কচিৎ। দৃষ্টা দৃষ্টকলং ভন্মাৎ প্রাতঃস্থান্ম স্মাচরেৎ। সান্মাত্রৎ তথা প্রাতঃ স্থানং চাত্র নিযোজিতং। যদ্যপ্যন্যোন্যমিলিতে পৃথগ্জেয়ে তথাপ্যমূ !৷ ১২৭ ৷৷

অধ সানবিধিঃ। অথ ভীৰ্গাভন্তত্ৰ ধৌতবদ্ধং কুশাংতথা । মৃত্তিকাঞ্চ তটে ন্যস্ঠ বায়া বস্থবিধানতঃ। অধৌতেন তু বস্ত্রেণ নিভঃনৈমিত্তিকীৎ ক্রিয়াৎ। কুর্মন্ন ফলমাপোতি কভাচেমিক্লা ভবেং।ধৌতাজিপানিরাচাতঃ কতা সংকপ माम्ब्रां । शकां मिम्ब्रक् कृषा कीशीयार्च , ममर्शिय । मागवस्त्रनिर्धाय मध-क्छा मूता खक । का रमु खेड कि नविर्मिन् नमामि जार मूत्र थत । है भरम छ र ममूका वीर ভोर्शनान् ममाठातः । जनाया छ्रकनमार्कि छोर्थानावति सत्र । नजाय তोर्थर ज्ञानार्थमनुष्ठार आर्थरप्रिमगरा त्मवत्मव कणजाय मध्यठळ गमाधत । त्मि वित्का মমানুজ্ঞাং তব তীর্থনিষেবণইতি ॥ ১২৮ ॥ বিধিবলুদনাদায় তীর্থতোয়ে প্রবিশ্য চ । প্রবাহাভিমুখো নদ্যাৎ স্যাদন্ত্রাক্সংমুখঃ । দিগুৰুৎ বিধিনাচ্য্য छीर्थानि পরিকল্প্য চ। আবাহয়েদ্ভগবতীং গঙ্গাম।দিত্যমণ্ডলাং। দর্ভপাণিঃ কৃতপ্রাণায়ামঃ কৃষ্ণপদায়ুজ্ম। ধ্যাত্বা তন্নাম সংকীর্ত্ত্যনিমজ্জেৎ পুণ্যবারিণি । আहम् मृत्मखक नथानायामक अलम् । क्षः धायन् अल ভृषानिमञ्जा नान-মাচরে । কৃত্বাঘমর্ঘনান্তঞ্জ নামভিঃ কেশবাদিভিঃ । তত্র দাদশধা তোয়ে নিম্ভ সুন্নমাচরে । ১২৯। ভত্র বিশেষঃ খ্রীনারদপঞ্চরতে। প্রসিদ্ধেষ্ চ তীর্থেষ্ যদ্যদ্যস্যতিধাং ক্ষরে । স্নাতকং তন্ত তত্তীর্থমভিশপ্য ক্ষণাদ্রকেদিতি। ইতি रेविषकाञ्चिकिमिखिरणविदिः ॥ ५७० ॥

অথ তত্ত্ব বিশেষঃ পাছে বৈশাখনাহাত্মে শ্রীনারদায়রীষসমাদে । এবমুচ্চার্য্য তত্ত্বীর্থে পাদৌ প্রকাল্য বাগ্যতঃ । স্বরমারায়ণং দেবং স্থানং কুর্যাদিখানতঃ । তীর্থং প্রকল্পয়েদ্ধীমান মূলমন্ত্রমিমৎ পঠন । ও নমোনারায়ণায়েতি মূলমন্ত্র
উদাহতঃ । দর্ভপাণিস্ত বিধিবদাচাস্তঃ প্রণতোভুবি । চত্ত্রসমাযুক্তৎ চত্রসূৎ

मृग्रीमृचेक्दर **बेहिकामूशिक** ७ जनाति। शृशस्य मगास्ति ॥ ১२१ ॥

हेनानीः नानित्रिः निथन् जामि दैविनकदैवक्षवश्चव क्रैक् क्ष्यम् वार्गामिनम् उट देविकठान्निक्विविविविश्विख्य नानिति निथि ज्यार्थणानिना । श्वष्यविधानकः निज्ञनिक वर्गाश्चाननाथानामः वान् नाद्यन् ॥ २२৮ ॥ जनाज ननीश्चवाह्याजिति क्ष्या । २२०॥ जनानामा जीर्थनाजिधाः नाम क्ष्याः नम् अवविविध्याः । ज्यार्थः । ज्यार्थनिक्षजीर्थम् विक्ष्युणिर्धमिति श्विनिक्ष्य । ज्यान् विक्षः । ज्यार्थन् विक्ष्यः । ज्याप्यक्षयः । ज्याप

नगरुठः । श्रक्षणावार्यमाङ्गः यञ्जातन मानयः । विकृशांमश्रम् । रेव क्षेत्रो विक्ट्रात्वण । जाहि नत्युनमुखमार आक्रममत्रगांखिका पिणापि । मश्र वादा जिल खें के के कर मेर पूर्व राशिक छ । मूर्ति के चा कन ए ज्य के खे वा । সানং কুর্য্যান্দা ভদ্দানভ্রতু বিধানতঃ। অস্ত্রান্তে রপজান্তে বিশৃক্তান্তে বসুস্থারে। মৃত্তিকে হর মে পাপং যক্ষয়। দুক্তং ক্তং। উদ্ভাসি বরাহেণ ক্ষেন শতবাহন।। নমত্তে সর্বভূতানাং প্রভবারিণি সূত্রতেইতি।। ১৩১।। গুরোঃ সমিহিতস্যাথ পিত্রোশ্চ চরণোদকৈঃ । বিপ্রাণাঞ্চ পদান্তোভিঃ কুর্ম্যান্যুর্সুভিষেচনং। তথাচ भाष्य। श्रद्धाः भाषामकः भूत छीर्थाकाणिकनश्रमः । किथा । विश्रभाषामक ক্লিন্নং যস্য তিন্ঠ তি বৈ শিরঃ। তস্য ভাগীরখী স্লান্মহন্যহ্নি জায়তে। তথা গৌত-মীয় তত্তে। পৃথিব্যাৎ যানি ভীর্থানি ভানি ভীর্থানি সাগরে । সসাগরানি তীর্থানি পাদে বিপ্রস্য দক্ষিণে ইতি ।। ১৩২ ।: শশ্বে বসন্তি সর্বাণি তীর্থানিচ বিশেষতঃ । শক্ষেন মূলমন্ত্রেণাভিষেকৎ পুনরাচরেৎ ।। ১৩৩ ।। তথৈব তুলসীনিশ্রশালীগ্রামশিলান্তসা । অভিষেকৎ বিদ্ধ্যান্ত পীম্বা তৎ কিঞ্চিদগ্রতঃ। তদুক্তং গৌতমীয়তন্ত্র। শালগ্রামশিলাতোয়ং তুলসীগন্ধমিশ্রিতং। কৃত্বা শত্থে ভানয়ংস্তিঃ প্রকিপেরিজমূর্দ্ধনি । শালগ্রামশিলাতোয়মপীতা যন্ত মন্তকে । প্রক্ষেপণং প্রকৃষ্ধীত ব্রহ্মহা স নিগদ্যতে। বিষ্ণুপাদোদকাৎ পূর্বং বিপ্রপাদোদকং পিবেং। বিরুদ্ধমাচর মোহাৎ একাছা স নিগদ্যতে। প্রীচরণামৃতধারণমন্ত্রঃ। অকাল মৃত্যুহ্রণৎ সর্বব্যাধি বিনাশনং। বিফোঃ পাদোদকং পীছা শির্সা ধারয়ান্যহ মিতি ।।১৩৪।। লেখ্যোইত্রো রুঞ্পাদাজতীর্থধারণপানয়ো:। মহিমার ভু ভত্তীর্থে-नाजिएकमा नियाला। ১०৫ ॥

এবং বিমিপ্রিতয়ানবিধিংলিখিয়া ইদানীং তত্রৈবাতীর্থকপেনাদো পুরাণোক্তং কঞিছিলেধং লিখতি এবমিত্যাদিনা। দেবছেব জগন্নাথ ইত্যাদিকমেতছুচার্য উক্তেন মূলমন্ত্রেণৈব সপ্তবারান্ যদভিজপ্রসভিমন্ত্রিতং জলং তথে। তৃতীয়াস্তপাঠে ভাবে ক্তপ্রভায়ঃ । মূল্যুংগানস্তরং পনঃ স্নানাদিকস্ত সমানমেবেতি বিশেষেণ তত্র লিখিতং॥ ১৩১॥ সন্নিহিতস্যেতি যদি জদানীং তত্র সন্নিবৌ গুর্ঝাদয়োবর্ত্তেরন্ তহী ত্যর্থঃ॥ ১৩২॥ সর্কাণি তীর্থানি শক্ষে বসস্তীতি হেতোঃ পুন রভিষেকং শক্ষেন বিশেষতঃ কুর্যাথ। তচ্চ নিজমূলমন্ত্রেণৈব॥ ১৩৩॥ তথ প্রশালগ্রামশিলান্তঃ কিঞ্দোদো পীয়া প্রাশ্য ॥ ১৩৪॥ কৃষ্ণপাদাক্তরোঃ তীর্থং স্নানোদকং তস্য ধারণং পানম্ব ত্রোঃ। তেন কৃষ্ণপাদাক্তরানোদকর্বপেণ তীর্থেন বোহভিষেক্ত্রস্য মহিমা মাহান্ত্যং। অন ক্ষিপাদাক্তরানোদকর্বপেণ তীর্থেন বোহভিষেক্ত্রস্য মহিমা মাহান্ত্যং। অন

ভীর্থসহসৈ, ত সেবিভৈঃ কিং প্রয়োজনং। তীর্থ হদি ভবেৎ পুন্তং শালগ্রাম-শিলোদ্ভবং। তত্ত্বৈব গৌতমায়রীষসমাদে। যেষাৎ ধৌতানি গাতানি হরেঃ পাদো-দকেন বৈ। অস্থ্রীয় কুলে তেযাং দাসোহস্মি বশগঃ সদা। রাজন্তে তানি তারচ্চ তীথানি ভুবনত্রয়ে। যাবন প্রাপ্ততে ভোয়ং শালগ্রামাভিষেকজং ।। ক্ষান্দে कार्डिकमाहारचारा शृह्द्रि वमञ्चमा शृक्षामान दिन दिन । मान्यामिना-ভোৱৈর্যোইভিষিঞ্জি মানবং। তবৈবান্যত্র চ। যানি কানিচ ভার্থানি ব্রহ্মাদ্যা-দেবভাতথা। বিষ্ণুপাদোদকলৈ তে কলাং নার্ছন্তি যোড়শীং। শাল্প্রামোড়বো দেবোদেবো দ্বারবতীভবঃ । উভয়োঃ স্নানতোয়েন ব্রহ্মহত্যা নিবর্ভতে ৷ কিঞ্চ ৷ সবৈ চাব ভৃথস্পাতঃ সচ গঙ্গাজলাপুতঃ। বিষ্পাদোদকং ক্ত্রা শভোহঃ স্লাভি মানবঃ।। জীন্দিৎহপুরাণে। গঙ্গার্পরাগায়নৈমিষপুষরাণি পণ্যানি যানি কুরুজা-ঙ্গলযান্নানি। কালেন তীর্থনলিলানি পুনন্তি পাপংপাদোদক্ ভগবতঃ প্রপুনাতি সদ্যঃ। স্তাচ। ত্রিরাত্রিফলদান্দ্রাযাং কাশ্চিদস্মুদ্রগাং। সম্দ্রগাশ্চ পক্ষর মাসদ্য সরিতাংপতিঃ। যণ্যাসফলদা গোদা বংসরস্য তু জাঙ্কুবী । স্পাদোদকং ভগ-বতো দ্বাদশাক্ষলপ্রদং ৷৷ ১৩৬ ৷৷ তল্লিত্যতাচ গরুড়প্রাণে ৷ জলঞ্চ যেযা রলগী বিমিত্রিতং পাদেকংচক্রশিলাসমূদ্রবং । নিতাৎ ত্রিসন্ধাৎ পুরতে ন গাত্রং খনেন্তে ধর্ম বহিষ্তা নর। ইতি । ততোজলাঞ্লীন্ কি পু। মূর্জি তীন্ কুড মুদ্রয়া। মূলেনাথ বিশেষেণ কুর্য্যাদেবাদিতর্পণং ।। ১৩৭ ।।

অথ সামান্তো দেবাদিতপঁণং । তচ্চ বৈদিকেষু প্রসিদ্ধমের । ব্রহ্মান্ত্রো যে দেবা স্তান্দেবান্তপ য়ামি । ভূদেরি বিশ্বপ্রামি ভূবদেবাৎস্তপ্রামি ভূভূবিঃমর্দেবাৎস্তপ্রামিইত্যাদি ।। ১৩৮ ।। আচম্যাঙ্গানি সংমাজ্জি স্থানবস্তান্তানসম । পরিধায়াংশুকে শুক্লে নিবিশ্যাচমন্থ চরেৎ ।। ১৩৯ ।।

গঙ্গা গোদাবরীত্যাদিয়ু শ্লোকেষ্ ভিষেকশব্দোনান্তি তেইপ্যত্র'পাদোদকাভিষেকমাই রো কেচিল্লিথিতাঃ স্নানে তীর্থাপেক্যা তেষু চ শ্লোকেষু পাদোদক্ষ্য তীর্থস্বাছ্যক্তেরিতি দিক্॥ ১৩৬॥ চক্রদিলা শ্রীশাল্পানশিলা শ্রীদারকাচক্রান্ধশিলাচ,তৎ স্থানাছ্ডুতং পাদো দক্ষ ন পুরতে ন স্পর্যতীত্যর্থঃ॥ ১৩৭॥

মূলমন্ত্রণ কুন্তমুদ্রা ত্রীন্ জলাঞ্জনীন্ নিজমুর্দ্ধি প্রক্রিপ্য। অধানন্তরং অবিশেষণ সামান্য-তোদেবাদিতপণং কুর্যাৎ! আদিশন্তেন ঋষীণাং পিতৃণাঞ্চ তক্তরামভিঃ। বিশেষতোদেবাদি তর্পনত্র লেখ্যমেব॥ ১৩৮॥ ইত্যাদীত্যাদিশন্তেন কৃষ্ট্রপায়নাদয়োযে ঋষয়স্তান্ধীন্ তর্পরামি। ভূঋষীংস্তর্পয়ামি। ভ্রেষ্ট্রপ্রামি। ভ্রেষ্ট্রপ্রামি। ভ্রেষ্ট্রপ্রামি। ভ্রেষ্ট্রপ্রামি। ভ্রেষ্ট্রস্তর্গরামি। ভ্রেষ্ট্রস্তর্গরামি। ত্রেষ্ট্রস্তর্গরামি। ক্রেম্ব্রালিয়েয়ে পিতরস্তান্পিতৃংস্তর্পরামী-তোবং প্রেবিৎ ॥ ১৩৯॥ স্নানস্য বছত্রং বৎ পরিধায় স্নানং কৃতং তত্যাদ্রনান বাসস্য। গ্রেম্বর্লন গ্রানশ্রীক্রেমন প্রাণিনা বা গাত্রং ন সংমাজে ব্রেদিত্যর্থঃ। তথাত বিক্রপ্রাণে স্বাচারক্রেন।

বিধিৰৎ তিলকং কৃত্বা পুনশ্চাচন্য বৈক্ষবঃ। বিধায় বৈদিকীংসন্ধানথোশানীত ভাঞ্জিকীং 11 ১৪০ 11

ভাগ বৈদিকীসন্ধা। কৌমে তিত্রবা প্রাক্ত কেব্রুত্তঃ হিন্তা দর্ভের স্পুমাহিতঃ।
প্রাণায়ামত্রয় হল্যা ধ্যায়েৎ সন্ধ্যামিতি প্রতিতঃ। মনুস্মৃতিঃ। ক্রান্ধণাঃ লাজিকাঃ
সর্বেন শৈবা নচ বৈন্ধবাঃ। যতউপাসতে দেবীং গায়ত্রীং দেবমাতরং। যা চ
সন্ধ্যা জনৎস্তির্মায়তীতা হি নিজ্লা । ঐশ্বরী কেবলাশজিওত্ত্রয়সমৃদ্রবা।
ধ্যাত্মার্কমঞ্জলগতাৎ সাবিত্রীৎ তাৎ জ্পের্ধঃ। প্রাড্মুখঃ সভতং বিপ্রঃ সন্ধ্যো
পাসনমান্তরেৎ।। ১৪১ ।। কিঞ্চ । সহসুপরমাৎ নিভ্যং শতমধ্যাং দশাবরাং।
সাবিত্রীং বৈ জপেরিদ্বান্প্রাড্মুখঃ প্রযতস্থিতঃ।। ১৪২ ।। কিঞ্চ । সন্ধ্যাহীনো
হশুনিভিন্নহংসর্ককর্মসু। যদন্যং কুরুতে কিঞ্চিন্ন তস্য ফলমাপু য়াং। যোহন্যত্র কুরুতে যতুৎ ধর্মাকার্য্যে বিজ্ঞান্তমঃ। বিহায় সন্ধ্যাপ্রণতিৎ স যাতি নরকান্
য্তং।। ১৪৩ ।। অনন্যচেত্সঃ শান্তা ব্রাহ্মণাবেদপারগাঃ । উপাস্য বিধিবং
সন্ধ্যাং প্রাপ্তাংপুর্দ্ধে পরাৎ গতিং।। ১৪৪ ।।

অথতান্ত্রিকী সন্ধ্যা। ততঃ সংপূজ্য সলিলে নিজাং শ্রীসন্ত্রদেবতাং। তপ্রে-দিখিনা তস্য তথৈবাবরণানি চ। তথাচ বৌধায়নক্ষাতী। হবিষায়ে জলে পুস্পৈ ধ্যানেন ক্ষয়ে হরিং। অর্চন্তি পূরয়োনিত্যং জপেন রবিমণ্ডলে।। পালেচ তত্রৈব । সূর্যোচাভ্যহণং শ্রেষ্ঠং সলিলে সলিলাদিভিঃ।

व्यक्षितिः । मृनमञ्जमश्याकार्य। भाष्यन् इक्षाङ्गिकारका श्रीकृष्णः वर्णश्रीन्मिकि जिः मग्रक् वर्णस्य इवी । भारमिकि व्यक्षभाषः मूर्यम्भवन्य दिन् । इक्ष्यः कामगाराज्ञ । पराप्तर्यामनव्य । १८८ ।। कामगाराज्ञ । व्यक्षित्र क्ष्यान्य कामगाराज्ञ । वर्षामनव्य । वर्षास्य वर्षः । वर्षाः । वर्षः । वर्षः

স্নাতোনাঙ্গানি মাজেতি স্নানশাট্যা ন পাণিনেতি। বিধিব ভত্তদ্বিধিযুক্তং যথাস্যাদিতি সক্ষ তৈবানুবর্ত্তশ্লিতব্যং॥ ১৪০॥ .

প্রাক্কুরেষু প্রাণত্রেষিত্যর্থ: ॥ ১৪১॥ সহসং সহস্বারক্ষপ: পরম: জপে; জের্চপকোষশঃ ইতি তথাভূতামিত্যর্থ: ॥ ১৪২॥ এবং সন্ধ্যোপাসনশ্য বিধিং নিখিত্বা নিত্যতাঞ্চ নিখুতি শক্ষ্যাহীনইতিদ্বাভ্যাং ॥ ১৪৩॥ মাহান্মং নিখতি অনন্যতি॥ ১৪৪॥

অৰ্চন্ডিঅৰ্চনৃত্তি॥

<sup>।।</sup> ১৪৫ ॥ সন্মধং কামবীঙ্কং আদৌ বদেহ ততঃ কামদেবেতি ততঃ আয়েতি তদত্তে বিশ্বছে ইতি ততঃ প্ৰপাবাণায়েতি ততক্ষ ধীমহীতি ততক্ষ তল্লোহনঙ্কঃ প্ৰচোদয়াদিতি বদেদিতাৰ্থঃ। ক্লীং

বিবস্থতে । ১৪৭ । বিধিন্তান্ত্রিকসন্ধ্যায়া**জলে২চ্চ (রাশ্চ**কশ্চন । যোগোমনে তে সোপাত্র তদিশেষায় লিখাতে ॥ ১৪৮ ॥

অথমতান্তরতান্তিকসন্ধ্যাবিধিঃ। আদৌ দক্ষিণ্ছন্তেন গৃদ্ধীয়াদ্বারি বৈশ্ববৃথা ততোহৃদ্যমন্ত্রেণ বামপাণিতলেহপ্যেৎ ।। ১৪৯ ।। তদঙ্গুলাবিনির্যাভান্তঃ কণৈ দক্ষপাণিনা। মন্তকে নেত্রমন্ত্রেণ কুর্য্যাৎ সংপ্রোক্ষণং ততঃ। শিক্টৎ তচ্চান্ত্র মন্ত্রেণালায়ান্তোদক্ষপাণিনা। অধঃ ক্ষিপেৎ পুনদৈচবমিতি বারচন্তক্টয়ৎ ।৷ ১৫০ ।। পুনহ্ব দ্য়মন্ত্রেণাদায়ান্তোদক্ষপাণিনা। নাসাপুটেন বামেনাদ্বায়ান্যেন বিস্ক্তিন্তে ।। মহান্তালায়ান্যেন বিস্ক্তিন্ত্রে । অর্থান্তোইঞ্জলিমাদায় সূর্য্যমণ্ডলবর্ত্তিনে। অর্থান্তোইজ্ললিমাদায় সূর্য্যমণ্ডলবর্ত্তিনে। অর্থান্তোপালালায়ত্র্যা ক্ষণায় ত্রিনিবেদয়েৎ ॥ সাচোক্তা। বৃয়াদেগাপীক্ষনং ভেন্তং বিক্তেই ইত্যতঃপরং। পুনর্গোপীক্ষনং তম্বদ্ধীমহীতি ততঃ পরং। তয়ঃ ক্ষণ ইতি প্রান্তে প্রপ্রিং চোদ্যাদিতি।। ১৫২ ॥ মূর্দ্ধি ন্যমেৎ তদঙ্গানি ললাটে নেত্রয়োর্যায়ে। ভুক্লয়োঃ পাদয়োকৈব সর্ব্যাক্ষেয় তথা ক্রমাৎ ॥ ১৫৩ ॥ ভানি চোক্তানি পঞ্চতিশ্ব ত্রিভিক্টিক পঞ্চতিশ্ব তিতিঃ পুনঃ। চত্তর্ভিশ্ব কর্ম্যাদঙ্গানি বর্ণকরিতি ॥ ১৫৪ ॥ রাসক্রাড়ারতং ক্রম্বং ধ্যাত্বা চাদিত্যমণ্ডলে। তৎসংমুধ্যেথ ক্রিন্তিলগায়ত্রীং তাং ক্রপেই ক্ষণং ।। ১৫৫ ॥

তথ তত্র জলে প্রীভগবৎপূজাবিধিঃ। অঙ্গন্যাসং স্থমন্ত্রণ ক্রাথাজ্ঞৎ জলা-ভারে । সংচিন্ত্য পীঠনত্ত্রণ তর্পয়েচ্চ সর্হস্ক্রহ । তিমিংশ্চ রক্ষমাবাহ্য সকলী-ক্ত্য মানসান্ । প্রকোপচারান্ দ্যাপ্সু ধেনুমুদ্রাং প্রদর্শয়েহ ।। ১৫৬।। ভজ্জলং চামূত্র ধ্যাত্ম স্থমত্ত্রণাভিমন্ত্র্য চ। অফোভরশতং রুফোভ্যাঞ্চে তর্পয়েহ

কামদেবায় বিদ্নহে পুষ্পাধাণায় ধীমহি তলোহনঙ্গ প্রচোদয়াদিতি ভবতি॥ ১৪৬॥ এতাং কানগায়ত্রীং দশধা দশবারান্জপন্ সন্। তং কুফং॥ ১৪৭॥

ত্যোত্ত বিক্র ক্রাজ লার্চ রোকি ধিবিশেষজ্ঞাপনায়েত্যর্থঃ ॥ ১৪৮ ॥ ।
তার্গরেৎন্য সেইত ছার্যের গা১৪৯॥ তদ্য বামপাণেরক্স লিভ্যোবিনির্যাইতঃ বিনিঃস্টতঃ অন্তঃ করিণঃ
কলবিন্দ্ভি র্দকেণ দক্ষিণেন পাণিনা। শিষ্টং অবশিষ্টং যদ্য পাণিতলস্থং তৎ। ইতি বারচতুট্যং
কুর্য্যাদিত্যর্থঃ ॥ ১৫০ ॥ পুনঃ অন্তোজলং দক্ষপাণিনা আদায় গৃহীয়া। বামেন নাসাপুটেনাঘায়েতি
আয়োণেনান্তর্গতদোষং প্রকাল্য। অন্যেন দক্ষিণেন নাসাপুটেন নিঃসার্য্য বিস্তোদিত্যর্থঃ ॥ ১৫১ ॥
তেইতি চন্তর্থ্যকবচনং অন্তে মস্য তং গোপীজনং। তদ্বতন্তর্থ্যন্ত্যিত্যর্থঃ। প্রান্তে সর্বাদের প্রশক্ষপূর্বকং চোদয়াদিতি বুয়াং। তত্তৈ বং স্যাং। গোপীজনায় বিস্তুহে গোপীজনায় ধীমান্তি
তক্ষঃ ক্ষঃ প্রচোদয়াদিতি ॥ ১৫২ ॥ অস্যাগোপালগায়ত্যাঃ অক্সানি বট মূর্জাদিষট্স্যানেযু ক্রমান্যাসেদিত্যর্থঃ ॥ ১৫৩ ॥ অক্সান্যের বিভক্স দর্শয়তি পঞ্জিরিতি বণ্টক্রের্ণঃ স্থার্থকঃ ॥ ১৫৪ ॥
তদ্য আদিত্যসপ্রকায় সংমুখে অভিনুখে উৎক্ষিথী জুম্বো যেন ভ্রাক্তঃ সন্॥ ১৫৫ ॥
তদ্য আদিত্যসপ্রকায় সংমুখে অভিনুখে উৎক্ষিথী জুমো যেন ভ্রাক্তঃ সন্॥ ১৫৫ ॥
তিমিন্ অক্সে মান্যান্ মনঃক্পিতান্ প্রাকানি পঞ্চোপচারান্ ॥ ১৫৬ গা অমৃত

क्छो। ७७० मृलमाञ्चन वादान् रेव शक्षविः मण्डिः । जिल्लाहरकानाहमनः विधिनाहरवः ।। ७७ ।।

. অথ বিশেষতোদেবাদিতপূর্ণৎ পাছে তত্তিব। ব্রহ্মাণ্ড তর্পয়েৎ পৃর্বাং বিষ্ণুং রুত্রৎ প্রজাপতিং। দেবাযক্ষান্তথানাগা গলকাপ্সরসোহসুরাং। ক্রাঃ সপতি সুপর্শিত তরবোজিক্ষিগাঃ থগাঃ। বিদ্যাধরা জলাধারা স্ত থৈবাকাশগামিনঃ। নিরা-হারাশ্চ যে জীবাঃ পাপকর্মারভাশ্চ যে। ভেষামাপ্রায়নায়ৈত্ত দীয়তে সলিলং ময়া। রুভোপবীতী দৈবে তু নিবীতী চ ভবেনরঃ। মানুষাংস্পরিষ্ভক্ত্যা শ্ল্ষিপুত্রান্ ঋষীৎ उथ। 1 उँ मनकम्ह मनमम्ह ज्ञीयम्ह मनाजनः । किम्लम्हामू तिरेम्हव वाहूः शक्ष শিখন্তথা। দর্বে তে তৃপ্তিমায়ান্ত মদত্তেনাসুনা সদা । মরীচিমত্র্যাঞ্চরসৌ পুলস্ত্যৎ প্লহংক্রন্তং। প্রচেত্রমৎ বশিষ্ঠঞ্জ ভূঞ্জ নারদমের চা দেবব্রহ্মশ্ববীন্ সর্বাৎ স্প্রে দক্ষতোদকৈ:।অপসব্যৎ ততঃ কুর্য্যাৎসব্যৎ জানু চ ভূতলে । অগ্নিষ্বাত্তা-ख्या सोमग्रवर्श्विष्ठख्याम्याः । कवरानत्नीवर्श्विष्ठया देववाकर्याः सूनः । তপ্রেং পিতৃভক্ত্যা চ সতিলোদকচন্দ্নৈঃ। যনায় ধম্বাজায় মৃত্যুবে চাতকায় চাবৈবস্বতায় কালায় সর্বাভূতক্ষয়ায় চা ওজুমরায় দ্ধায়নীলায় পরমেষ্ঠিনে। ব্কোদরায় চিত্রায় চিত্রগুপ্তায় বৈ নমঃ। দর্ভপাণিঃ সুপ্রযতঃপিতৃন্ স্থান্ তর্ণয়ে-ত্তঃ। পিত্রাদীন্ নামগোত্রেণ তথা মাতামহানপি । সন্তর্গ, বিধিনা সর্কান্ ইমৎ মন্ত মদীরয়েং । যে বান্ধবাবান্ধবাবা যেইন্যজননি বান্ধবাং।তে ভূপুম্থিলাং ঘান্ত যে চান্সতোয়কাংক্ষিণঃ ইতি :৷ ১৫৮ ৷৷ সক্ষ্যোপাসনতঃ পূর্বং কেচিদ্দেবাদিভর্নং ৷ মন্যত্তেসক্রদেবেদৎ পুরাণোক্তানুসারতঃ। ১৫৯।। তথাচ পাছে স্বানে মৃদ্যা হণানন্তর। এবং নাত্তা ততঃ পশ্চাদাচম্য সুবিধানতঃ। উত্থায় বাসনী শুক্লে শুদ্ধে ভ পৰিধায়

ৰূপং চিন্দুয়িত্ব। । ক্তীত্যনেন আবরণতর্পণাদিকমুদ্বাসনঞ্চ হ্ববানুসারেণ কুর্য্যাদেবেতি বোধ্যতে॥ ১৫৭॥

<sup>॥</sup> ১৫৮॥ ইদং তওলামভির্বিশেষতোদেবাদিতপূনং। তচ্চ সক্লদেব মন্যন্তে নপ্ত সামান্য বিশেষভ্যাং বারদ্বমিত্যুর্থঃ কুতঃ পুরাণানি পাছকৌর্মাদীনি তগুজানুসারাৎ।। ১৫৯॥ তত্ত্ব তপূনং কুর্যাদিতি সামান্যভন্তপূনং ন স্যাৎ তরিরস্তমেব ব্রহ্মাণং ইত্যাদি বিশেষোক্তঃ। তথা কৌর্মেণি। স্নাত্বা সম্ভর্গয়েদেবান্ ঋষীম্ পিতৃগণঃংস্তথা। আচম্য মন্তব্র রিত্যং পুনরাচম্য বাগ্যতঃ। সংমার্ল্য মট্রেরাত্মানং কুশেঃ সোদকবিন্দুভিঃ। আপোহিটা ব্যাহ্রতিভিঃ সাবিত্রা বার্দণেঃ শুভৈঃ। ওঁকারব্যাহ্রতিত্বতাং গায়্রতীং দেবমাতরং। জপ্তা জলাঞ্জনিং দদ্যাৎ ভাষরং প্রতি ত্যানাইতি। ভাষরোপস্থানঞ্চ দক্ষ্যোপাননান্তরং। অথোপতিঠেদাদিত্যমুদ্রতং স্মাহিতইত্যাদিনা তলৈবোক্তমন্তি। এবং মতভেদঃ শার্থাদি

বৈ ।। ১৬০ ।। অতএব জীরামার্চনিচন্দ্রিরাং। নিস্পীড়িয়িত্বা বস্তুত্র পশ্চাৎ সম্ভাগে সমাচরেং । অন্যথা কুরুতে যস্তু সানং ত্য্যাফলং ভবেং ॥ ১৬১ ।। কিঞ্চা বস্ত্রং ত্রিগুণিতং যস্তু নিস্পীড়য়তি মূচ্ধীং। বৃথা সানং ভবেত্ত্য্য নিস্পাড়য়তি চামুনি ।। ১৬২ ।।

অথ সুনাদে সদ্ভাবা পকা । কাশখিওে । অপি সর্কানদিতা হৈ সূহ কুটেশ্চাথ গোরসৈঃ। আপাত্যাচরে চ্ছেচিং ভাবদুফোন শুদ্ধিভাক্। নক্তং দিনং নিমজ্ঞাপ্সু কৈবর্তাঃ কিমুপাবনাঃ। শতশোপি তথা সুভা ন শুদ্ধা ভাবদূধিভাঃ। পাছে বৈশাথমাহাজ্যে শ্রীনারদায়রী বসমাদে। পুণ্যেন গাঙ্গেন জলেন কালে দেশেপি যঃ সানপরঃ কথিছিং। আজ্মনোভাবহতোহিপি দাতা ন শুদ্ধাভিত্যের মতং মমৈতং। প্রজ্ঞাল্য বহ্নিং ঘৃততৈলসিক্তং প্রদক্ষিণাবর্ত্ত শিথং স্বকালে। প্রবিশায় দক্ষঃ কিল ভাবদুফোন স্বর্গমাপ্রেতি ফলং নচান্ত।। ১৬০।। অভএব ভবিষ্যোত্তরে। যস্য হস্তোচ পাদৌ চ বাজানশ্চ সুসংযতং। বিদ্যাত্পশ্চ কার্তিশ্চ সতীর্থফলমাপুয়াং। অগ্রদ্ধানঃ পাপাত্মা নাম্বিকোইচ্ছিন্নসংশায়। হেন্ড নিউশ্চ প্রথতেন তার্থফলভাগিনঃ। ইতিশ্বীগোপালভট্টবিলিখিতে ভগবড়িকিনিলাসে সৌচীয়োনামত্ তীয়বিলাসং

ভেদেনোক্তঃ।। ১৬০।। নিক্ষীডায়িত্যেত্যার্যং নিক্ষীতা।। ১৬১।। প্রসঙ্গাদস্তনির্দিধিবিশেষং প্রীরামার্চনচন্দ্রিকাক্তমের লিখতি বস্ত্রনিতি।। ১৬২।।

আপুতিংমরণপর্যান্তরন্ধি। ভাবছুটিং নাস্তিকইতার্থং॥ ১৬৩॥ নস্যেতি হস্তাদিশংয-নেনতীর্থে পাপানুৎপত্তেং বিদ্যাদিনাচ শ্রন্ধাবিশেযাছ্যৎপত্তের্যথাক্তফললাভং স্যাদিতার্থঃ॥ ইতিতৃতীয়ঃ——

#### **চ** हर्थ विकास ।

নাত্বা প্রীর্ফটেতন্যনামভার্থেতিমে সর্থ । নিত্যাশুটিঃশুটান্টুঃ সন্ স্থর্মণ্ বজু নহতি ।। ১।। অথ স্থানাগচেত্দাদৌ নত্বেউদেবতাং । গুরুন্জ্যেতাংশ্চ পুলিপাধঃকুশান্তোধারকেতরান্ : তথাচ ন্সিংহপুরাণে । জলে দেবং নমস্ত্য ততোগচেত্দাহং পুমান্। পৌরুষেণ ত সূজেন ততোবিষ্ণুং সমচ্চিয়েং।।

অথ জ্বিত্যবদানিরসৎক্ষারঃ । মনিরৎ মার্জ্রেরিফার্কিধারাচমনাদিকৎ।
রক্ষং পশ্যন্কতিরংশ্চদান্যেনাজ্ঞানমর্গরেও।। ২।। শুদ্ধং গোময়মাদার ততে।
মুখ্যাথ জলং তথা । ভক্ত্যা তথপিরতোলিস্পোদভুক্ষেন্ত তদঙ্গনং ।। ৩।।
তথাত নবমক্রে জ্বীমদম্বরীষোপাথ্যানে। [সবৈ মনঃ রক্ষপদারবিন্ধয়োর্কিচাৎনি
বৈকৃত ওণানুবর্ণনে । করে হরের্মিদরমার্জ্জনাদিযু ক্ষতিং চকারাচ্যুতস্থকথোদয়ে।। ৪।। একাদশক্ষরে চ জ্বিভগবদৃদ্ধবসম্বাদে। ভগবদ্ধম্কথনে। সংমার্জ্জনাপলেগাভ্যাং সেকমগুলবর্তনিঃ। গৃহশুক্রম্বণ্থমহাং দাসবদ্যদ্মার্যা।।

অথ তত্র সৎমাজ্জনিনাহাত্ম্য । নৃসিংহপুরাণে। নর্সিৎহগৃহে নিত্যৎ হঃ
সংনাজ্জনিমাচরে । সনস্তপাপনিমুক্তাবিষ্ণুলোকে স মোদতে। বিষ্-্
ধ্যোত্রে । সংমাজ্জনিস্ত যঃ কুর্য্যাৎ পুরুষঃ কেশবালয়ে । রজস্তনে ভ্যাং নিমুক্তঃ
স ভবেয়াত্র সংশারঃ।পাংশূনাৎ যাবতাৎ রাজন্কুর্য্যাৎ সংমাজ্জনিৎনরঃ।ভাবত্য

এতাদৃশস্থানাদপি ভগৰমাম্দেৰনমেৰ প্রমশোধনমিত্যভিপ্রেত্য তেনচানধিকারিশোপ্যাত্মনোভগৰদ্ধালিখনে যোগাতাং সন্তাব্যন্ শিথতি সাত্মেতি। এক্ফটেচতন্যতি নামেৰ
তার্থোত্তমং তন্মন্ সক্লপি সাত্মা কলাচিত্তংকেবিত্বতার্থঃ। নিত্যাশুচিঃ জাত্যাদিনা প্রমাপ্রিরোপি জনঃ শুচিগণভোঠঃ সন্ বক্তু মুহতি প্রবচনযোগ্যোভবতীতার্থঃ।।১॥ এবঃ কাছং;
পূজাদীনাং ধারকেভ্যঃইতরান্ জন্যান্। তথাচ বৃহ্মারদীয়ে সদাচারপ্রসঙ্গে। তথা স্থানং
প্রকৃষ্যান্থ সমিংপুলাহরং তথা। উদ্পাত্রধরক্ষৈব ভুঞ্জন্তং নাভিবাদয়েদিতি॥

<sup>॥</sup>२॥ তং বিষণু মন্দিরং তদ্যাঞ্চনং অভাকেচ্চ॥ ৩॥ আদিশকেন উপলেপনাদীনি। এতিং শোতাং। অচ্যুত্সা সংকথানাং উদয়ে প্রবংগ প্রাত্তাবে বা চকার॥ ৪॥ সংমাজ্র নং রজদোহ পাকরণং উপলেপঃ গোসরোদকাদিভিরালেপনং। সেকঃতৈত্বেই প্রোক্ষণং। মণ্ডল বর্তনং সর্বাতোভজাদিরচনং। মন্থ্যম গৃহজ্ঞাষণং আলম্সংস্কারং॥

#### विविद्युक्त के विश्वास्त

কানি সসুথী নাকমাসাদ্য মোদতে ।। ৫ ।। বারাহে । যাবৎকানি প্রছারানি ভূমিসংমাজ্রনে দদুং । তাবদ্বসহস্যানি শাকদীপো মহীয়তে ।। ৬ ।। জায়তে মম
ভক্তশ্ব সর্বাধ্যা সমন্তঃ । শুর্চির্ভাগ্রতঃ শুদ্ধোহ্যপরাধ্যিবজ্ঞিতঃ । তত্যেভুজ্ঞা
সর্বভোগান্ ভীজ্ঞা সংসারসাগরং । শাকদ্বীপাৎ পরিভ্রমীঃ স্বর্গলোকং স গছেতি ।
নন্দনং বনমাজ্রিত্য যোদতে চাপ্সরৈঃ সহ।নন্দনাচ্চ পরিভ্রমীয়ম ক্যাব্যবস্থিতঃ ।

সর্বসঙ্গান্ পরিভ্যজ্য মম লোকস্ত গচ্ছতি।। १।।

অথোপলেপনমাহাত্ম্য ৷ তত্তিব ৷ গোময়ং গৃহ্য বৈ ভূমি মম বেশ্মোপলে-পায়েও। যাবতস্ত পদাংস্কৃত্র সমন্ত দুপলেপয়েও। তাবদ্বর্মহসাণি মড়ক্তোজায়তে তथा। मनीत्य यपि वा मृत्र यन्छालयं कि लामयः। यावलम् अमाञ्चानि कावर सर्वा মহীয়তে।। ৮।। শাল্মলো তৎ পরিভ্রফোরাজা ভবতি ধামিকিঃ। মড়কুলৈচব জায়েত সর্বশাস্ত্রবিশারদঃ। যশ্চালেপয়তে ভূমিং গোময়েন দৃঢ়ব্রতঃ। তস্য দৃল্বান্-েলেপন্ত মন ভঞ্চিঃ প্রজায়তে।। ১।। গোশ্চ যস্যাঃ পুরীযেণ ক্রিয়তে ভূমিলেপনং। একেনৈব ভ'লেপেন গোষোন্যা বিপ্রযুচ্যতে 11 ১০ 11 স্থানোপলেপনে ভূমে সলিল থ যোদদাতি মে । তস্য পুণাং মহাভাগে শৃণু তত্ত্বেন নিম্নল ।। ১১ ।। যাবন্তি জলবিন্দুনি লিপ্যমানস্য সুন্দরি। ভাবদ্বস্থস্থস্থান স্থলাকে মহীয়তে। যাবন্তোবিন্দৰঃ কেচিং পানীয়স্ত বসুন্ধরে। তাবদ্যসহসূতি ক্রেঞ্চাপে মহী-য়তে।। ১২।। ক্রেঞ্দ্বীপাৎ পরিভ্রমীঃ সর্বধ্যা পরায়ণঃ। সর্বাসস্থান্ পরিভ্রজ্য মম লোকঞ্চ গড়তি।। विक्धायां छत्तं।। कृष्णाशालशनः विक्थानं तृष्ट्राय्यकतन महा । शामरयन सञाद्भाकानयज्ञारमव गण्ड्ि। इस्थ्यमान् ज्ञानमूर्णानेया नद्रा. খিপঃ। দেবরামাশতং নাকে লভতে সততং নরঃ। নারসিংহৈ। গোল্যেন মূদা তোরৈর্ঘঃ কুর্য্যাদুপলেপনং। চল্টায়ণফলৎ প্রাপ্য বিষ্ণুলোকে মহীয়তে ।। ১৩ ।। তক্ত্রৰ জীধন্মরিজিস্য দূতান্শাসনে । সংনাজ্জনং যঃ কুরুতে, গোময়েনোপ-লেপনং। করোতি ভবনে বিক্ষোন্ত্যাজ্যৎ তেবাং কুলত্রয়ং।।

<sup>॥</sup> ৫।। যাবৎকানি প্রহারাণি নপুংসকত্বমার্য। যাবতঃ সংমাজ্জন্য। প্রহারান্। ভূমেঃ সংমাজ্জনে। ছে ভূমীতি পৃথক পদং বা॥ ৬॥ মম কর্মব্যবস্থিতঃ মদ্ভক্তিনিতঃ সন্নিভার্যঃ॥ ৭॥ গৃহা গৃহীত্বা। যাবতঃ পদানিতি পুংস্কুমার্যং॥ ৮॥ তক্ষাৎ স্থর্গাৎ পরিভ্রুটঃ সন্॥ ৯॥ লাগৌ-ক্ষিণেবেণ প্রকর্বেট মুচ্যতে। গোলোকং যাতি ইত্যর্যঃ॥ ১০॥ নিঙ্কলং শুদ্ধং॥ ১১॥ ফারস্থি কলবিন্দ্নীতি নপুংসকত্বমার্যং। স্থানস্য লিপ্যমানস্য সতঃ যত্র যাবস্থোক সবিন্দবোভকত্তি তিথা ।। ১২ ॥ পশ্চাক্ত স্থাৎ পরিভ্রুটঃ সন্ কৌঞ্জীপে গতোমহীয়তে তত্রতাঃ প্রভ্রুত্তার্থঃ॥ ১৩॥ উপলেকপস্য পাপক্ষয়াদিকং কিং বাচাং তন্য সম্বাধানামণি তথৈব স্থানিতি লিখতি সংমার্জনমিতি। কুলত্রাং পিতৃকুল্বং মাত্কুলং ভার্যাকুলংচেতি॥

### অঞ্চিত ত বিশানঃ।

অথাভ্যক্ষণনাহান্তঃ। বিষ্পম্মেভিরে । অভ্যক্ষণন্ত মং কুর্যাৎ পানীয়েন স্রালয়ে। স শান্তভাপোভবভি মাত্র কার্য্যা বিচারণা ।। ১৪।। অভ্যক্ষণন্ত মঃ কুর্য্যাদেবদেনাজিরে নরঃ। সর্ব্যাপবিনিমু ক্তোবাক্ষণ লোকমশু ভইছি ।। ১৫ ।। সর্ব্যাভ ত্রপলাদীনভিত্তঃ স্বন্তিকানি চ। বিরচ্য্য বিচিত্রানি মগুয়েদ্ধরিসন্দির । তথাচ নারসিংহে। সংমান্তর্ভনোপলেপাভ্যাৎ রঙ্গণলাদিশোভন । কুর্য্যাৎ স্থান মহাবিষ্ণোঃ সোজ্লাঙ্গৎ মুদানিভঃ ।। ১৬ ।।

অথ মণ্ডলমাহাত্ত্যং । ক্ষপ্রাণে কার্ত্তিকপ্রসঙ্গে । অগম্যাগমনে পাপমভক্ষাস্য চ ভক্ষণে। সর্বাৎ তলাশমাপ্রেতি মণ্ড্রিত্বা হুরেগ্র্হং। অনুমাত্তত্ব হং
কুর্যানগুলং কেশবাগ্রতং। মৃদা ধার্ত্বিকারৈ হুচ দিবি কম্পশতং বদের । শালগ্রাম
শিলাগ্রে তু যং কুর্যাৎ স্বস্তিকং শুভং। কার্ত্তিকে তু বিশেষেণ পুনাত্যাসপ্তমন্ত্বলং। মণ্ডলং কুরুতে নিতাং যা নারী কেশবাগ্রতং। সপ্তজ্বানি
বৈধব্যং ন প্রাপ্রেতি কদাচন। গৃহীত্বা গোময়ং যা তু মণ্ডলং কেশবাগ্রতং। ভর্ত্বি
যোগং নাপ্রেতি সন্ততেক্চ ধনস্য চ। প্রাক্ষনং বর্ণকোপেতং স্বন্তিকৈক্চ সমন্তিং।
দেবস্য কুরুতে যন্ত ক্রীড়তে ভুবন্ত্রেয়ে। ১৭।। নারদীয়ে। মৃদা ধান্তবিকারৈর্বা।
বর্ণকৈর্গোময়েন বা। উপলেপনকৃদ্যন্ত নরেইব্যানিকোভবেং। হরিভক্তিসুধোদয়ে
চ। উপলিপ্যালয়ং বিকোশিতব্যিত্বাথ বর্ণকৈং। বিক্ষ্লোকে ২থ তত্তিং সম্পূহ্ণ
ব্যক্ষতে সুখী।। ১৮।।

चर्य विख्य क्षित्र कार्य । जागरम । विषिण्ग कार्यका विख्य । साष्ट्र मधा मूधीः । नाष्ट्र (उ.ट. श्राहिकाका इ.ट. विष्णु कार्य । एक क भक्ष इं विकास । तक्ष दिन भक्ष वर्णा मध्य । सामि क्ष कार्य । सामि क्ष कार्य । सामि क्ष कार्य । सामि क्ष कार्य । स्व कार्य । स्व कार्य कार्य । स्व कार्य क

অথ তত্র ধুজপতাকাদ্যারে।পর্ণং । তত্তোধুজপতাকাদি বিন্যস্য হরিমন্দিরে। বিচিত্রৎ ভূষয়েত্রজভগব দ্বাজিমানরঃ।।

<sup>॥</sup> ১৪।। দেবদেবস্যা, অজিরে অঙ্গনে ॥ ১৫।। রঙ্গং বিবিধবর্ণচিত্রং পদ্মাদিচ। যদ্ধা রক্তৈরিচিত্র-বর্ণচূলৈয়ং পদ্মাদি তেন শোভিতং আদিশব্দেন স্বস্থিকাদি। উজ্জ্বলানি শোভনানি অঞ্চানি ভিত্তি প্রাকারাদীনি তৎসহিতঞ্চ কুর্যাং। অঞ্চান্যপি বিভ্রম্মেদিতার্থঃ। ক্রিয়াবিশেষণং বা তথাপি সক্রার্থঃ। ১৬॥

মণ্ডলং সর্বতোভজাদি ॥ কেশবাগ্রতো মণ্ডলং করোতীতি শেষঃ। কুরুতইতি পূর্বে বৈবানুষক্ষঃ॥,১৭॥ উপলেপনং মণ্ডলাদিকং করোতীতি তথাসঃ॥ ১৮॥ শেতাদিবলৈন্ট্রেঃ হরিংঘবৈঃ হরিদ্বর্গ্যবৈদ্ধিষ্ণঃ কুফার্বর্ণং স্যাৎ। তচ্চ প্রতির্ক্ষিশ্রিতং হরিদ্বর্ণংস্যাদিত্যর্থঃ এবং বর্ণপঞ্চকমুক্তাং॥ ১৯॥

### শ্ৰীপ্ৰত ক বিনাস:।

অথ ধুজারোপন মাহাআং। ক্ষনপুরাণে দারকামাহাজ্যে। শ্রীমার্কণ্ডে রপ্রদ্রাদে। ধুজমারোপয়েদ্যস্ত প্রাসাদোপরিভক্তিতঃ। তস্য ব্রহ্মারদায়ে। যং ক্র্য্যাদ্বি ক্ষুভবনে ধুজারোপন্মুভ্রম । সপূজ্যতে বিরিপ্রাদ্যাং কিমনৈ র্ক্সভাবিতঃ।। তবৈবাত্রে চ । পটোধুজস্য বিপ্রেন্দ্র বার্না। তাবন্তি পাপজালানি নশ্যন্ত্যেব ন সংশয়ং। মহাপাতক্ষুক্তোরা মুক্তোরা সক্রপাতকৈঃ। ধুজং বিফুগ্হে কুত্বা সক্রপাইপঃ প্রমুচ্যতে। আরো পিতৎ ধুজং দৃষ্ট্য যেইভিনন্দন্তি ধার্মিকাঃ। তেপি সদ্যোবিমুচ্যন্তে হুপেপাতক্কোটিভিরিতি। এবং বৃহন্নারদীয়ে খ্যাতং হুজান্যদ্ভূতং। ধুজারোপন্মাহাত্যাং ভদ্টব্যমিহাখিলং।।

অথ পতাকারোপণমাছাল্যৎ দারকামাহাজ্যে। তত্তিব । রক্ষালয়ৎ হঃ
কুরুতে পতাকাভিশ্চ শোভিতৎ। সদৈব তস্য লোকে ভ বাসস্তম্য নচান্তঃ।।
বিষ্পুধ্যোভিরে । পতাকাঞ্জভাৎ দল্ধ। তথা কেশববেশ্মনি । বায়ুলোকমবাপ্যোতি বছনক্রণান দ্বিজাঃ। দোধ্যতে যথা সাতুবায়ুনা কেশবালয়ে। তথা তম্যাপি
সকলং দেহাৎ পাপৎ বিধূয়তে।। ২০।।

তাথ বন্দনমালাকদলীস্তম্ভারোগণনাহাত্ম্য । দ্বারকীমাহাত্ম্যে তত্ত্বি । ভূপ বন্দনমালাস্ত কুরুতে রুঞ্বেশানি । দেবকন্যাবৃতিতর্ল কৈঃ সেব্যতে সুরনায়কৈঃ ।। ২১ । যঃ কুর্য্যাৎ রুঞ্জবনং কদলীস্তমশোভিতং । নন্দতে চাপ্সরোযুক্তঃ আগভং তথ্য দেবরাট্ ।

অথ পীঠপাত্রবস্ত্রাদিসংক্ষারঃ। তত্র তাসুদিপাত্রৎ যৎপ্রভোর্কস্ত্রাদিকর যথ। পীঠাদিকর তথ সর্কাৎ যথোক্তঞ্চ বিশোধয়েছ। তত্র পীঠস্যানারসিংছে। গাদি পীঠঞ্চ ক্রফস্য বিল্পাত্রেণ ঘর্যয়েছ। উফাসুনা চ প্রকাল্য সর্কাগাপৈঃ প্রসূচ্যতে। ২২।

অথ তৈজসাদিপাত্রাণাং। মার্কণ্ডেয়পুরাণে। উতুহরাণামমুেন ক্ষারেণ ত্রপুসী-সয়োঃ। ভক্ষামুভিশ্চ কাংসানাং শুদ্ধিঃ প্রাণোডাঁবস্টে।। ২৩।। বায়ুপুরাণে চ। মণি বজুপ্রবালানাং মুক্তা শাখোপলস্ট । সিদ্ধার্থ কানাং কল্কেন তিলকল্কেন বা

তং হরিমনিরঞ বিচিত্রং यंशानगाख्या ভূষয়েং॥२०॥

ধুজপতাকাদি বিন্যাপেদিত্যাদিশকেন গৃহীতস্য বন্দন্যালাদেরপি বিন্যাসমাহাত্মং
লিখতি ভূপেতি ছাভ্যাং ॥ ২১ ॥ তস্য স্বাগতং যথাস্যাপ্তথা নন্দতে তমভিনন্দতি
হুটোভবতি ইতিবা । বছাতস্যশুভাগমনমভিনন্দতি । বন্দতইতিবাপাঠঃ ॥ ২২ ॥
উক্তবিধিং লিখতি উভুমরাণামিত্যাদিনা শুচিত মিয়াদিত্যন্তেন উভুমরাণাং তামাণাং
তম্মপাত্রাণামিত্যর্থঃ । ত্রপুরঙ্গং । ভ্রম্যুক্তৈরমুভিঃ ক্রম্য গোরসাদেঃ ।প্লাবঃ প্লাবনহ । তথা
চোক্তং বলিচেন । দ্বাণাং প্লাবনেনৈবেতি তিলিশেষাহত্রে ব্যক্তোভাবী ॥ ২৩॥ মুক্তারাঃ
ক্লাশ্বা উপলক্ষ্য চ পাবাণস্য ছবৈদ্বত্যং । ব্যক্তাবাণাং সর্বপাণাং । শুলিরিতি শেষঃ প্রকরণ-

# Sayle's This I

প্না । ২৪ পা আনো। সূর্ণ্রপ্রশালাভাতির বুলয়ালিয়। কাংসালিয়ভালুর ত্যানি
ত্রপ্রাসময়নিক। নির্দেশনানি কুন্তর্লান্তি কেবলেনােদকেন তু। শুদ্রোচ্ছিনীনি
নােধ্যানি ত্রিলালারামুবারিভিরিভিয়া ২৫ যা অভিনুক্তর পাত্রাদি বিশোধ্যাতিব্য
কর্মনে । বুল্ল্যান্ত পরিবর্জার প্রভুক্তর্মান্তর্লয় বা । এতস্যপরিবর্জেন প্রভবেষনা থ
সমর্গরেথ। ইত্যর সর্বভোলােকে সদালাকোর্বিল্লান্ত । মন্ত । তামায়ঃকাংস্যরৈত্যালাং ত্রপুন্ধ সীসক্ষা, চ যা শৈলিৎ বর্ধার্ছ কর্ত্র্য কর্ত্রাহ্যাদকবারিভিঃ । ২৬ ।
শহা ।। অন্মোদকেন তামুস্য সীসস্য ত্রপুন্তর্থা । ক্লারেন শুদ্ধি কাংস্যস্য
লোহস্য চ বিনিন্দি শেথ ।। ২৭ ।। কিঞ্চা সৃতিকোচ্ছিন্টভান্তস্য সুরাদ্যুপ্রভস্যত ।
ত্রিঃ সপ্ত মার্ছ্রনাথ শুদ্ধিনত্ত কাংস্যস্য ভাপন ।। অন্যতে ।। তামুম্বেল শুদ্ধান্ত ভ্রেল্ড নামিবেল তু ব্রিপ্তংপুন্দাহেন শুদ্ধানি ভালিহেল
ক্রেল্ড নচেদামিবলেপনং । আনিবেল তু ব্রিপ্তংপুন্দাহেন শুদ্ধানি হচ যাবৎ
স্বেদ্ধি ।। ২১ ।। অভ্রেবদেবলঃ । লৌহানাং দাহনাচ্ছুদ্ধিভ্রননা গোময়েন বা ।
দহনাৎ খননাদ্বাপি শৈলানামন্তর্মাপি বা ।। কান্তানাৎ ভক্ষণাজ্বিদ্ধি

বলাং ॥ ২৪ । রত্মসরানি ক্ষ**টিকাদিঘটিতানি পাত্রাণীতি শেষঃ । রৈত্যানি পিওল**রটিতানি নি-পোনি অন্নাদিলেপরহিতানি। শুদ্রোচ্ছিই।নি শুদ্রোচ্ছিইস্পূইগনীতার্থঃ। বদ্যপি এতগ-বংগাত্রেণু সূত্রে চ্ছিফ স্পশোপি ন সম্ভবেং। তথাপি কথঞ্চিং ভ্রমপ্রমাদতঃ স্যাদিতি তকু দ্বি রুতা। এবনতাপি সর্বকোহং। তিধা ব।রতয়মিত্যর্থঃ ক রোভকা। ২৫॥ বথাইং মলাপ্রমান নুস রেশেতার্থঃ। অম্নোদকং জন্বীরাদিরসঃ। তত্রাম্নোদকেন তামুদ্য ক্ষারেণেতরেষাং বারিণা তৃ ভত্তৎসম্জিতেনোভয়েষামেবেতি জেয়ং যথাইমিত্যুক্তে।। ২৬॥ তদেবাভিব্যঞ্জাতি অমে এতট সর্বাংস্বল্পোপহতিবিষয়কং। অত্যন্তোপহতৌ শুদ্ধিং লিগতি मक्तिमिंड ॥२१॥ গতকৈতি ত্রিভিঃ। স্থতিকা নবপ্রস্থতা অঞ্তেশৌচা। যত্তা প্রাথবকার্রিক্রী তত্ত্তিউস্য তড়চ্ছিউ-স্থান্য তয়া বা বক ভুক্তং তসা ভাওনা তৈজসপাত্রনা তৎপ্রকরণাং। আদিশবদাং শোনি-তাদি। তিঃসপ্ত একবিংশতিবারান্ মার্জনাদিতার্থঃ। কেটিদাছঃ সপ্ততির্ধবর্গোপূমকলায়মাধানি-চূর্বিঃ প্রত্যেকং ত্রিমাজ্জ নাচ্ছু দ্বিরিতি। কাংসাপাত্রসা তুন তথা শুদ্ধিঃ কিন্তু তদ্য তাপনং দহনমেব।ভাজন ইতি পাঠঃ কুগমঃ।।২৮॥ দাহে বিশেষং লিখতি স্তিকেতি।রঞ্জল-ত্যাকারাভাব আর্যঃ। স্তিকাদিভিহ্তানি উপহ্তানি তত্ত স্তিকারজস্বলোপহতত্ত্বং তত্তনুদ্ধি-के म्लानां ए उठ एरडा बनाया। मत्विष्यामिलादं भागतामाः। याविष्ठि यावसम्बार कालः वा यम् वार मदस्य जावकात्मी छ।वस्र वा कामर, कम् वार अत्मक्षवामिकार्यः ॥ २०॥ मृजा-विकर्णमा निश्चित्रः **ए उर्द नर्दाः ए** दरमाङ्गा नयामग्रिष्ठ । निश्चनामिति । स्वनामीनाः धार्वनाः जनाशीजागिमिछार्थः। अकारकाश्वरको महनाए। जनाथा छ उन्मानिर्मछार्थः। এदग्रहाल ट्रिशार। धननर ज्यार थाया दिनवानुमारक्रण मक्षाशिकिकातर जमार मिश्कालनर जमार। देनला-नाः मिलानिर्मिकानाः परनार भूनः भाकार। छवा ह याक्षतंक्काः। भूनः भाकायशीमशरेखि॥ ७०॥

মনুগ। মদৈ গুর্তী পুরী ধৈর্বা শ্লেক্ষ পুয়ান্তি গীব নৈং। সংস্পৃষ্টিং নৈর শুদ্ধে তে পুনঃ পাকেন মৃণ্যুয়ং ।। ৩১ ।। বৃদ্ধশাতাতপঃ। সংইতানান্ত পাত্রালাং ঘদেক পুণহন্যতে। তবৈ গুৰু পোৰনং প্রোক্তং সামান দেব্যশুদ্ধিকং।। ৩২ ।।

অथ रह्यांकीनार । তত्रभाषाः । তार्स्वर मनिनर शृक्षमस्तिः कारेत्र म्ह स्माधरस्य । অংশুভিঃ শোধয়িতা বা বায়ুনা বা সমাহরেৎ । উপপ্টা শুক্কেমিদুকুলাবিক চর্মাণা । অস্পান্দৌচে ভবেচ্ছ দিঃ শোষণাপ্রোক্ষণাদিভিঃ। তান্যেবামের্ব্যলিস্তানি त्मिकारिकारिकार्येथाः। थानाकरेल्वः अर्वकरेल्वतरेमण कनवल्करेनः। कृतिकाम्। अथा-নানি পু স্পরত্বায়রাণি চ। শোধয়িত্বাভপে কিঞ্চিৎ করৈরন্যাজ্জ য়েমুভঃ। পশ্চাচ বারিণা প্রাক্ষ্য শুচীভোবমুদাহরে । তান্যপ্যতিমলাক্তানি যথাব ৎ পরিশোধ-শাততিপঃ। কুসুওকুকু নারক্তান্তথালাকারসেন চ। প্রকালনেন (यद ॥ ७० ॥ শুদ্ধান্তি চাণ্ডালস্পৰ্যনে তথা ৷৷ ৩৪ ৷৷ যমঃ ৷ কৃষ্ণাজিনানায়াতৈ ক বালানাৎ মৃদ্ধি त्र छेगा। शामूरजनाष्ट्रिक्छाना १ कोमाना १ शीत मर्च रेशः ।। ৩৫ ।। अधः । निकार-कानाः कल्कन पंछन् अध्यान। हा शावरिनः कनभावानामञ्जार नाम्ब्रह्म उर्था ।। ०७ ।। কিঞ্চ। নির্বাসানাং গুড়ানাঞ্চ লবণানাং তথৈব চ 🛡 কুসুস্ত কুষুমান ঞ উর্ণাকার্পাসয়ে। তথা। প্রোক্ষণাৎ কথিত। শুদ্ধিরিত্যাহ ভগবান্যমঃ।। ৩৭।। মনুঃ। অভিন্ত প্রোক্ষণ শৌষ্ বছুনাৎ ধান্যাসসাৎ। প্রকালনেন স্বস্থানামন্তিরেব বিধীয়তে। **हिन्दक्रम् नाः अकिरेक्पनानाः उरेथद ह । भाकमृनकनानाक्य थान।दम्बक्ति त्रवः ।** প্রোক্ষণাভূণকাষ্ঠানি পলালঞ্চ বিশুদ্ধ্যতি । মার্জ্জনোপাঞ্জনৈর্কেশ্ম পুনঃ পাকেন

শ্তেত্রচাপ্পোপছতো অত্যন্ত্যোপইতো চ মৃণ্যুরংত্যাজ্যমেবেতি লিথতি মদ্যৈরিতি। চীইনৈঃ
লালাপ্রক্ষেপে:।পাঠান্তরং স্পাটং॥ ৩১॥ সংহতানাং অন্যোন্যং মিলিত্রা সংঘশঃ স্থিতানাং।
তাস্যের তৎ লিথিতং শোধনং প্রোক্তং নপ্ত তেন স্পৃতীনামন্যেবামিতার্থঃ। পাঠান্তরে সামান্যং সমানৈকদ্রব্যবিষয়কং শোধনং দ্রব্যাগাং সর্বৈষ্ঠেবামেবান্যেষাং শুদ্ধিক্দিত্যর্থঃ। অতএবোক্তং শাতাতপেনের। অশুচিং সংস্পৃশেদ্যস্ত একএব স ছ্ব্যতি। তং স্পৃট্যান্যোন
ছুষ্যেত্রু সর্বাদ্রব্যেপারং বিবিরিতি॥ ৩২॥

ভান্তবং কার্পাসিকস্তানির্মিতং বস্তাদি। অংশুভিঃ স্থারশিভিঃ বায়ুনা বা শোষয়িত্বা
শুল্বং ক্রয়। উর্ণাংশুকাবিকয়োঃ পশুরোমভেদেন দ্রবাজেদেন বা ভেদঃ। অপেইশোচে অশুদ্ধৌ
সত্যাং শোষণং স্থাঃশুরাতাদিনা নেনিক্রাছ শোধয়েছ। কলবল্কনৈঃ ভক্তিরত্যেগঃ।
পুষ্পরত্বায়রাণি চিত্রপুষ্পময়ায়য়াণি স্বর্ত্তথা চিতায়য়াণি চেতার্থঃ॥ ৩৩॥ কুমুড্রেন কুলুমেন বা মারক্রা রঞ্জিতাঃ। লাক্ষারদেন বা রক্তাঃ পটাঃ চাগুলেনান্যেনাপ্যাস্পুর্মা। উপলক্ষ্যাঃ
তৎস্পর্শে সতি প্রকালনেন শুক্রান্ত॥ ৩৪ ॥ বালানাং চামরাগাং। ক্রান্থি শুন্থাদি। দন্তঃ
হস্তাদেঃ॥ ৩৫॥ কলপাতাগাং নারিকেলাদিপাতাগাং অস্থাং শুন্থাদীনাং। শুলুবদিক্তি সম্পাণাং

মৃণ্যুরং ।। ৩৮-।। কিঞ্চ । বাবলাগৈত মেধ্যক্তালাজোগেত তলতঃ ।
তাবল্যারিঃবা দের সর্বাসু প্রব্রুজিয় । বৃহত্পক্ষি । বস্ত্রবিদলচন্দ্রাদেং শুরিঃ
প্রকালনং ক্তং। অভিদুষ্টস্যুত্র্যাত্রং, জ্যুজেকিছ্য়া তু শুরুরে । বিষ্ণুঃ। মৃৎপর্ণতৃণকাঠানাং শান্তিচাপ্রালবায়নৈঃ । স্পর্শনে বিহিতং শৌচং নোমসূর্য্যংশুলাকতিঃ ।। ৩৯।। বেল্লায়নঃ । আসনং শয়নং যানং নাবং পত্নান্দ্রানি চ। মারুতার্কেন্স্ক্রেজি প্রেক্টক চিডানি চ।

অথ ধান্যাদীনা। । তত্র বৌধারনঃ । ত্রীহয়ঃ প্রোক্ষণায় বিষ্কৃত্রকলানি চ । তন্যাত্রস্যাথহারাহা নিজ্ঞবীকরণেন চ ।। ৪০ ।। শাখাঃ সুপুর্কী, বৃত্তইজ্ঞলানাৎ প্রাবনং গোরনস্কৃত্র। ভাজানি প্রাবয়েদন্তিঃ শাক্ষ্লফলানিচ । ত্রাক্ষে তেরজ্ঞানি চ । ভালানি চান্তর্যানি চান্তর্যা ।। ৪১ ।। শাস্যানি ত্রীহয়শ্চিব শাক্ষ্লফলানিচ । তাজানং বৃত্তরালি পরিপ্রাব্যানি চান্তর্যা ।। ৪১ ।। বৃহস্পতিঃ । তাপনং বৃত্ত তৈলানাং প্রাবনং গোরসম্য চ । তন্যাত্রমুদ্দ্হং শুধ্যেৎ কঠিনত্ত পরোদ্ধি । তাবিলানং তথা স্পি বিলানং অপলেন তু ।। ৪০ ।। আধারদোধে তু নরেং পাত্রাৎ পাত্রান্তর তথা নপ্র দ্বং । ঘৃতঞ্জ্পার্মণ করিৎ তথৈকবরসোগুড়া । শুক্রভাগুড়িতং তক্রং তথা নপুন দুব্য তি ।। ৪৪ ।। কিঞ্চা মনুঃ । উচ্চিটেন তু সংস্টো ত্রব্যহস্তঃ

দ নির্দ্ধিতানাং। মাজ্র নৈঃ রজংশোধনৈঃ উপাঞ্জনৈং লেপনৈশ্চ।। ৩৮॥ তন্মাত্রমিতি যাবদতাস্তত্ত্বীং তাবনাত্রমেব নত্ত্বীদিত্যর্থঃ ॥ ৩৯॥ মারুতযুক্তেন অর্কেণ তদংশুনা। পাঠাদূবং স্পান্টং।

<sup>॥</sup> ৪০॥ স্পণং পুরবনং। পুরবিশ্যের বিবৃণোতি। অন্তিপ্তক্তাণ্ডানি পুরবন্ধে অপ্স্ নিমজ্জয়েনিত্রগিঃ ॥ ঘৃতাদীনামপি সুপণাসম্ভবে সজ্জীয়দ্রবাপুরবন্দ শুদ্ধিকোঁদ্ধরা।। ৪১॥ দুবিতং ভাগত্তাক্ত্রে জি অভ্যন্ত্রোপ্রতৌ ॥ ৪২॥ ভন্মাত্রং যাবছপর্ছং ভাবন্দাত্রমিত্রগিঃ এতচ্চানাকর বিষয়ং ॥ ৪০॥ আকারভাণ্ডে বিশেবং লিখতি। আধারেছি। আধারঃ আকরভাণ্ডং তদ্দোবেণ। পারসং প্রোনির্ক্ তাং দির্দ পুরভাণ্ডান্থিতমপি পাত্রাস্তরং নীতং সং ন ছ্বান্তীত্রর্গিং। তথাচ যমঃ। আমমাংসং ঘৃতং ক্ষোজং শ্লেহান্দ ফলসম্ভবাঃ। মেছভাণ্ডান্থিতাছ্যা। নিয্কান্তাঃ শুচমঃ স্বৃত্তি। অন্যত্র চ আকরাঃ শুচমঃ সর্কাইতি ॥ ৪৪॥ শুচিতামিয়াং। ত্রবাং চাত্রাম্বান্তিরিক্তং জ্যেং সদাচাবাং। অনবিষয়ে চোক্তমাপন্তম্বেন। ক্রবা মূত্রং পুরীষঞ্চ ত্রবাং কর্মক্রম। ভূম। বন্ধং প্রতিঠাপ্য ক্রমা স্থানত ধ্বাবিধি। তৎসংযোগান্ত প্রকান্ত্রম্পান্ত ভঙ্গ শুচিরতি। বৃহ্ত্তিতিনা চ।শৌচন্ত কুর্বাং প্রবাহ্ব তিরুপ্রাধিনার ভিত্তি তথার্পি ভগবদর্থতিরিত। বিরুদ্ধিনিতি। যাসি ভগবদর্থের বিস্তৃপ্রাব্রমান মার্টিতে তথার্পি ভগবদর্থিক ব্যাপ্রাপ্রাদিতি। বিরুদ্ধিনার ক্রম্প্রমানানির তন্তম্বান্তর্বার নামান্ত ত্রান্ত্রা ক্রম্প্রমানাদিনা তন্তম্বান্তর্বার নামান্ত্রিক বির্নান্ত বির্নান্তির বির্নান্ত সম্প্রমানানির বির্নান্ত সম্প্রমানানির ভিন্ত্রিভার ক্রমানার প্রতিশান্ত্রিভার বির্নান্ত সম্প্রমানার ক্রম্প্রমানার ক্রমান্ত্রা। ক্রেরাঃ। তীর্থে বির্বান্ত বিরান্ত বির্নান্ত সম্প্রমানার বিদ্বান্ত বির্নান্ত বির্নান্ত বির্নান্ত ক্রমানার বির্নান্ত বির্নান্ত বির্নান্ত বির্বান্ত বির্নান্তর্বান্তর্বান্তর বির্বান্ত বির্বান্ত বির্বান্ত বির্বান্তর বির্বান্ত বির্বান্তর বির্বান্তর বির্বান্তর বির্বান্তর বির্বান্তর বির্বান্তর বির্বান্তর বির্বান্তর বির্বান্তর বির্বান্ত বির্বান্তর বির্বান্তর বির্বান্তর বির্বান্তর বির্বান্তর বির্বান্ত বির্বান্তর বির্বান্ত বির্বান্ত বির্বান্তর বির্বান্তর বির্বান্ত বির্বান্তর বির্বান্ত বির্বান্তর বির্বান্তর বির্বান্তর বির্বান্ত বির্বান্ত বির্বান্তর বির্বান্তর বির্বান্তর বির্বান্তর বির্বান্ত বির্বান্তর বির্বান্ত বির্বান্তর বির

কথঞ্নঃ । অনিধারৈর তদুর মোচান্তঃ শুচিতা নিয়াৎ । ইতি । অন্যেপি শুদ্ধিবিধয়ে। ত্রব্যাণাং স্তিশাস্ত্রতঃ। অপেক্ষাবৈষ্ণবৈক্রেয়া শুক্ত দিস্তারণৈরলং ।। ৪৫ ॥

অথপূলার্থ তুলদাপুজ্পাদ্যাহরণ । প্রণম্যাথ মহাবিষ্ণুং প্রার্থানুজান্ত বৈক্ষরং।
সমাহরেৎ প্রীন্তলদাৎ পুস্পাদি চ যথোদিত । হচ্চ হারীতবচনং। সানৎ কৃত্বা তৃ যে
কিচিৎ পুলাং গৃহ্বন্তি বৈ ধিলাং। দেবতান্তরগৃহ্বিত ভদ্মীভবিত কাঠবং ইতি। তচ্চ
নথ্যাহ্ব সান বিষয়ং। ততউক্তং পালে বৈশাখমাহাত্মো। অসাত্ম তুলদাং, ছিত্রা
দেবার্থে পিতৃক্মানি। তৎ সক্ষং নিজ্ফলং যাতি পঞ্চাব্যেন শুকাতি। কিনুত্র
বাক্যান্তর্থ ম্গাহ্বা ৪৬।।

অश्र शृहन्त्रानविधि। अभृरह या इतन् नान शकाना ही करते उथा। आहमा रामा ह প্রাণান্ রতন্য়নোছরিং মারে । ততোগস্থাদিকং মৃত্যা ভলগীমিপ্রিতৈ জলৈঃ ৷ পূর্বে পাত্রে সমস্তানি তীর্থান্যাবাহয়েৎ কৃতী।। ভাবাহনমন্ত্রনায়ৎ। গঙ্গে চ যমুনে চৈব গোদাবরি সরস্তি। नश्चरित शिक्षु कार्यिति कल्ला श्रीमिन मिनि कुङ । ইতি । जायाना জাহ্নবামের সর্বতীর্থয়য়াং বুধঃ। আবাহয়েদ্রাদশভিনামভিল লভাজনে।। ভানি टाकानि। निनने निमनो नीका मालिनी ह महाश्रा । वियुशामार्यमञ्जा शका ত্রিপ্যগামিনী। ভাগার্থী ভোগবতা জাত্র্বী তিদদেশ্রী।। প্রপুরাণে চুবৈশাখ মাহাত্যো ।। ননিদনীত্তাৰ তে নাম দেবেশু নলিনীতি চা দকাপৃথী চ বিহগা বিশ্ব নাথা শিবামৃতা। বিদ্যাধরী মহাদেবী তথালোকপ্রসাদনী। ক্ষমাবভী জাহ্লবী চ मास्रामास्रिक्षमास्रिनीि ।। ४१ ।। व्याप्तमा एकः स्युक्षानुष्ठाः थार्था प्रभूक्षितः । क्ष भामाखाराशकार भावहीर मूर्कि विख्यार । ज्यारवाळ मेनातमभक्तार्ज । विष्ठः পুঞ दोकाकः मस्मृद्धिः श्रेष्ट्ः चादः। जनसामिन्। मक्षामः वामूरमवः ठज् र्कि । मञ्जठक्र गामिक्स स्वर्शी जीवती वृद्धा मामिक मोख तमनः श्रमतः वर्तमकनः। निवाहन्त्रति श्रीकः हा स्थान्याम् अ१। अत्नकत् जूनः इसक्तमकत् कुछनः । वनमाना পরিবৃতৎ নারদাদিভিরচিত হং। কেয়্রবলয়োপেতং সুবর্ণমুকুটো জ্বলং। সর্বাঞ্ সুন্দর ৭ দেবং স্বাভরণভূষিতং। তৎপাদপক্ষজাদ্ধারাং নিপতন্তীং স্মূর্দ্ধনি। চিন্ত रम्बुका बर्त्यु अविभाग्नीः स्रकार उत्र । उत्रागरका नास्य मसंगष्टामं स्थाउः मनः। उद क्षावित्रकामजी जात्रां क्रिकिंगिमः। देनः मानवत्रः मञ्जाद महमूगिधिकः मार्ठ-মিতি।। ৪৮।। সক্লারায়ণেত্যাদি বচনস্ত্র কতিয়েৎ। সুানকালে তৃ ভলাম সংস্থারেচ

সাংসামি শৌচানি স্ত্রীযু বালান্তরেষু চেত্যান্ত্রতঃ। তত্তকাত্তেষাং বিভারতে বিবিতরেশ লিখনৈরলং তত্ত প্রয়োজনং নাঁভি এত্বিস্তর্ভগাদিত্যর্ণ॥ ৪৫॥

পুष्णः आमिमास्मन भजाय तामि॥ १७॥

यद्यानिङ তত निविधारक नामानुमाद्य है छार्थः ॥ ८१ ॥ श्रामान्यायमा श्रीमान्नायमा । श्रीमान्यायमा श्रीमान्यायमा । श्रीमान्यायमा श्रीमान्यायमा । श्रीमान्यायमा श्रीमान्यायमा ।

মহাপ্রত্থ । তথাচ কুমপ্রাণে । আপোনারায়ণোড় ভাস্তা এবাস্যায়ন হতঃ । তন্মারারাগং দেবং সানকালে ন্মরেষ্ধঃ । ইতি ।। ৪৯ ।। স্নায়াদুফোদকেনাপি শক্তোপ্যামলকৈন্তথা। তিলৈতৈলৈক সম্বন্ধ্য প্রতিসিদ্ধ দিনানি তু ।। অথোকোদকস্থানং । ষট্ ত্রিংশনতে । আপাং স্থাভাবতোমেধ্যা বিশেষাদ্ধিযোগতঃ । তেন সন্তঃ প্রশংসন্তি স্থানমুক্ষেন রারিণা। যলক । আপাং স্বয়ং সদা পূভাবত্নিত প্রাবিশেষতঃ । তন্মাৎ সর্কেষ্ কালেষ্ উষ্ণান্তঃ পাবনং ন্যুতং । যদ্যেতিং শক্ষেন । স্থাতস্য বহ্নিতপ্তোন তথৈবাতপ্রারিণা । শ্রীরশুদ্ধিকিজ্যো নত স্থান্দলং ভবেদিতি । ততু কাম্যনৈমিত্তিকবিষয়ং ।। ৫০ ।। অত্এবোক্তং গর্গেণ । কুর্যানেমিতিককং স্থানং শীতাড়িঃ কাম্যমেব চ। নিত্যং যাদ্দিত্ককৈণ্ড যথাক্রচি স্মাচ্বেৎ ।।

অথ তত্র নিষিদ্ধদিনানি। তত্র হমঃ। পুত্রজ্যানি সংক্রোন্তৌ গ্রহণে চন্দু সূর্যায়োঃ। অস্পৃশ্যস্পর্শনে চৈব ন সায়াদুক্ষবারিণা। বৃদ্ধমনুঃ। পৌর্নাস্যাৎ তথা দর্শে হঃ সায়াদুক্ষবারিণা। সংগাহত্যাক্তৎ পাপং প্রাপ্যেতীহ ন সংশয়ঃ।

অথানলক সুনিং। তত্র মার্ক গুরুঃ: তুষ্যত্যামলকৈ বিষ্ণেরকাদশায় বিশেষতঃ। জীকামঃ সর্বাদশার কুর্মাতামলকৈ নিঃ। সপ্তম্যাং ন স্পৃশেত্তলং নালিবজ্ঞং ন ধার্বেছে। নচাপামলকৈঃ সুয়ায় কুর্যাৎ কলহং ভূতঃ। অমাংষ্ঠ হি সপ্তমাঞ্চ নব্যাঞ্চ ত্রেয়াদশাং। সংক্রান্তৌরবিবারে চ সুনিম্মলকৈন্ত্যজেছে। যাত্তবিক্তঃ । ধাত্রাফলৈরমাবস্যাসপ্তমানব্যামৃচ । যঃ সুয়াভস্য হীয়ন্তে তেজশ্চাযুর্পনং সুভাঃ।

অথতিলসানং। তত্র বৃহস্পতিঃ। সর্কালং তিলৈঃসানং পুনর্ক্যাসোহত্রবীআুনিঃ। ষট্তিংশনতে। তথা সপ্তম্যাব্দ্যাসংক্রান্তিগ্রহণেষু চ। ধনপুত্রকলত্রাথী
তিলম্পৃষ্টিং ন সংস্পৃশেৎ।

অথ তৈলসুনিং । তত্তিব । ষ্ঠাংতৈলমনায়ুষ্য ১ চন্ত্রপি চ পর্বসু ।। ৫১ ।। যাগিযাক্তবক্রাঃ । দশম্যাৎ তৈলমস্পৃদ্ধী যা সায়াদবিচক্ষণঃ । চন্ত্রারি ত্র্সানশ্যন্তি আয়ুঃ প্রক্রা যশো ধনং ।। ৫২ ।। মোহাৎ প্রতিপদং ষ্ঠাৎ কুইৎ

আদিশকেন খ্যায়েলারায়ণং দেবমিত্যাদিলক্ষণাছচনাক্ষেতোঃ তস্য নারায়ণস্য নাম কীর্ত্রং ॥৪৯॥ নকেবলং শীতোদকেন। উফোদকেনাপি তত্রাপি নকেবলমশক্তঃ শক্তোরোগাদিইীনো প্রীত্যর্থঃ। রোগিণস্ত সদৈবোফোদকেন স্থানমুক্তং যমেন। আদিত্যকির শৈস্তপ্তং পুনঃ প্রঞ্ব বিছ্না। আমাত্রমান্তরস্থানে প্রশস্তম্ভ শ্তোদকমিতি ॥ প্রতিসিদ্ধদিনান্যগ্রেলেখ্যানি ॥ ॥৫০॥ নিত্যস্থানঞ্চ যাদ্ছিকং অনিয়তং । অত্যোনিজ্ঞাচ্যনুসারেণ শীতাভিক্ত ভিক্তাইন্তিস্থ কুর্যাদিত্যর্থঃ। যাদ্ছিকং স্বথার্থসানমিতিবা ॥

রিভাতি থিতথা। তৈলেনাভাঞ্জয়েদ্যস্ত চত্ত জিল্পরিহীয়তে। পঞ্চদশ্যাৎ চক্রদশ্যাৎ সপ্তন্যাং রবিসংক্রমে। দ্বাদশ্যাং সপ্তনীৎ ষঠীৎ তৈলস্পর্শং বিবছ্জ য়েং।। ৫৩।। জন্যজাসপ্তনাং ন স্পৃদ্ধেত্তলং নবন্যাৎ প্রতিপদ্যাপ। অইন্যাঞ্চ চন্তদ্শ্যান্তন্যাক্ষ্যাক্ম্যাক্ষ্যাক

অথ তলন জলাভিষেক্যাহাত্বাং । গাকুড়ে । মার্জ্যত ভিষেকে ক্রলস।
বৈশ্বোনরঃ । সর্বতীর্থনরং দেহং তৎক্ষণাং দ্বিজ জায়তে । তলনাদলজমানে একাদশ্যাং বিশ্বতঃ । মুচ্যতে সর্বাপাপেভ্যোযদ্যপি ব্রহ্মহা ভবেং । তলুলম্ভিকাভঙ্গং কুরা মুটি দিনে দিনে । দশাশ্বমেধাবভূতং লভতে মুানজং ফলং । তলসাদলসংনিশ্রং তোরং গলানমং বিদুঃ । যোবহেচ্ছিরসা দিত্যং পূতাভবতি জানুবী ।
তলসী দলসংনিশ্রং যন্তোয়ং শির্মাবহেং । সর্বতীর্থাভিষেক্স তেন প্রাপ্তে ।
তলসী দলসংনিশ্রং যন্তোয়ং শির্মাবহেং । সর্বতীর্থাভিষেক্স তেন প্রাপ্তিষিপ্তে
মূলেনৈব স্বমূর্জনি । তলাহাত্বাং চোক্তংপালে কার্ত্তিকমাহাত্বো । দারকাচক্রসংযুক্তশালপ্রামশিলাজলং । শছো কুরা তু নিংক্ষিপ্তং সুনার্থং ভাত্রভাজনে । তলসীদলসংযুক্তংব্রহ্মহত্যাবিনাশন্মিতি । ওণ্। স্যানশানীতরেনেব
বাসসান্তাংসি গারভং । সংমান্ত্রিবাসসী দ্ব্যাং পরিবানোত্রীয়কে । ও৮ ।।

অথবস্ত্রধারণবিধিঃ । তত্রাত্রিঃ । অধৌতৎ কার্রধৌতং বা পরেদ্র্রেতিমেব বা । কাষায়ং মলিনং বস্ত্রং কৌপীনথা পরিত্যজেত। নচার্দ্র বেসনং পরিদধ্যতে কদাচন ।। ৫৯। নগ্নোমলিনবস্ত্রঃ স্যাত্র নগ্রু কিন্দুরার জিপাটস্থা দিকচ্ছোঃন্ স্যান্নগ্রোরক্তপট্তথা । নগ্রু দৃত্বস্ত্রঃ স্যাত্র নগ্রু কিন্দুর্গা দিকচ্ছোঃন্ ভরীয়েশ্য নগ্রুশ্বরধাগচেছ্ভজ্বেদাসূরং রুত্থ । জপহোনোপবাদেষ ধৌতবস্ত্র-

রাদিভিঃ। ৫৩। বিশেষভইত্যনেন সপ্তম্যাদৌ তৈলত্যাগাবশ্যকতাভিপ্রেতা ॥ ৫৪॥ পাক তৈলঞ্চ কদাচিদপি ন দোষাবহমিতি পূর্ব্বোক্তেহপবাদং লিথতি স্নানেবেতি॥ ৫৫॥ কৃততৈলা ভাঙ্গস্ত বিশ্বতাৎসর্গং ন কুর্য্যাদিতি প্রসঙ্গালিথতি তৈলেতি। অহোরাত্রং উবিতোভূত্বা পঞ্চ গব্যপানেন শুদ্ধোভবেৎ। পাঠান্তরে তুঅন্তাঞ্জশর্শং তদানীং মত্নেন্বর্জুয়েদিতিভাবঃ॥ ৫৬॥ ॥ ৫৭॥ স্নানশাট্যাঃইতরেণঅন্যেক্॥ ৫৮॥ ৫৯॥

ধরেভিবেং । অলক্তঃ শুচিমোনী আন্ধাদী চ জিতে দ্বিঃ । গেণ্ডিলঃ । এক-বারোন ভূজীত ন কুর্যাদিবতার্চনং । তৈলোক্যমাহনপঞ্চ রাত্রে । শুক্রবাসাভ্যেনিছাং রহুদ্ধৈর বিবজ্জারে । ১০০০ অভিরাই । শেচিং সহসুরোমাণাৎ বাসু্রাক্রিশ্রেশাভিঃ । রেতঃ স্পৃষ্টিং শবস্পৃষ্টমাবিকং নৈব দুষ্যতি । আন্তরে চ । ছিনং বা সন্ধিতং দক্ষমাবিকং ন প্রদুষ্যতি । আবিকেন ভ বন্ত্রেণ মানবঃ আদ্ধাচরে । গরাআদ্ধাসমং প্রোক্তং পিতৃভ্যোদ্ভমক্ষয়ং । ন কুর্যাৎ সন্ধিতং বস্ত্রং দেবকর্মাণি ভূমিপা। ন দক্ষং নচবৈ ছিন্নং পারক্যং নত ধারয়ে । কাক্বিছাণ সমাংকৃত্রেমবিধাত্র যন্ত্রেহা রজকালাজ্তং যদ্ভ ন তদ্পন্তং ত্রেহছানি নিটম্পৃষ্টন্ত যন্ত্রমবিধাত্র যন্ত্রেহা নিতৃন্দ্রমাণি তন্ত্রং পরিবছ্জায়ে । আহিকন্ত্র সদাবস্ত্রং পরিব্রং রাজসভ্য । পিতৃদেবননুষ্যণাৎ ক্রিয়ায়াঞ্চ প্রমণ্ড ভারেই শুচি। আরিনাবিকবন্ত্রঞ্জ ব্রাক্রণাশ্রত থা কুশাঃ । চহুন্ধি ন হতোদে ব্যব্রহ্মণ পরমেন্তরিক। অচ্ছিন্তুন্দ্রেহ্মপ্রিরিকবন্ত্রঞ্জ ব্রাক্ষণালত তথা কুশাঃ । চহুন্ধি ন হতোদে ব্যব্রহ্মণ পরমেন্তরিক। অচ্ছিন্তুন্দ্রেহা শ্রাচমেৎ পারস্বাহ্রিক। অচ্ছিন্তুন্দ্রেহা শ্রাচমেৎ পারস্বাহিক। আচ্ছিন্তুন্দ্রেহা শ্রাচমেৎ পারস্বাহিক। আচ্ছিন্তুন্দ্র শ্রাচমেৎ পারস্বাহিক। আচ্ছিন্তুন্ত্রিক লাচমেৎ পারস্বাহিক। আচ্ছিন্তুন্ত্রিক পার্কিক লাচমেৎ পারস্বাহিক। আচ্ছিন্তুন্ত্রিক পার্কিক লাচমেৎ পার্কিক লাচমেৎ স্বাহিক লাচমেৎ পার্কিক লাচমেৎ পার্কিক লাচমেনিক লাচম

ভাগপীসং। বিল্টপরিশিটে । যতানামাসনং কলং কুর্মাকারয় কারয়েছ।
আন্যেল্য চতৃপাদং চত্রসুদ্ধ কারয়েছ। গোশকুল্লুয়ং ভিন্নং তথা পালাশলৈপ্গলং। লোহবদ্ধং সদৈবার্কং বজ্জায়েদাসনং বুধঃ। ভাগাসনবিধিঃ। তারের ম
দানমাচমনং হোমং ভোজনং দেবতার্চনং। প্রৌল্পাদোন কুর্মীত স্বাধ্যায়ধ্বৈব
তপ্রি। আসনার্চপাদন্ত জানুনোর্কাথ জয়য়েঃ। কুতাবসক্থিকোইস্ত পৌল্পাদঃ
সউচ্যতে ইতি ।। ৬৩ ।। ততোভ্মিগতার্দ্রিঃ সন্নিবিশ্যাচম্য দর্ভভ্থ। উর্দ্বপুঞ্ছাদিকং কুর্যাহ শ্রীগোপীচলনাদিনা ।। ৬৪ ।। তত্রাদাবন্লপেন ভগবছণাজায়োঃ। নির্মালেয়ন প্রসাদেন সর্বাণ্যসানি নাজ্জায়েছ। তদুভংক্রাজ্যে জ্যান্ত্রান্ত্রান্ত্রাম্পালালগ্রং চন্দনং ধারয়েছ সদা। সর্বাঙ্কেষ্ মহাশুদ্ধিসিদ্ধরে কমলাসনেতি।। ৬৫ ।। ততোদ্বাদশভিঃ কুর্যায়ামভিঃ কেশবাদিভিঃ। দ্বাদশক্ষেষ্

নগ্নোদিগম্বরঃ জৈনতেদোবা ॥ ৬০॥ সহনাণি অসংখ্যোমনি রোম'ণি যেযু তেষ'ংউর্ণাদিনির্মিতানাং কমলাদীনামিতার্থঃ। আবিকং মেবরোমনির্মিতং কমলাদি॥ ৬১॥ অছিনা স্শোতনা চ দশা যয়োস্তে॥ ৬২॥

<sup>়</sup> বস্ত্রপরিধানানন্তরং পীঠে সংস্থিতঃ সন্নাচামেদিত্যুক্তং তৎপীঠমেব লিখতি। যতীনামিত্যাদিনা॥ ৩০॥ দর্ভত্ কুশপাণিঃ সন্। যদ্যপূর্দ্ধি পুণ্ডনির্মাণানন্তরমেবাচমনং যুক্তং তথাপ্যত্র
পূজার্থতিলকবিশেষাদিনিমিন্তমাদাবাচমনং সংসম্পাদায়ানুসারেণ লিখিতং। তিলকানন্তরমাচ
মনঞ্চ পূর্বাং বহিঃ স্থানে লিখিতমেবান্তি॥ ৬৪॥ প্রসাদরপেণ নির্মাল্যেন॥ ৬৫॥ কেশবাদিভি
মৃর্প্রিপঞ্জরন্যাসোকৈ দ্বিশভিন্মিভিঃ ক্রমেণ ললাটাদিন্তাদশাকেষু উর্দ্ধিপুণ্ডাদিন্তাদশ কুর্যাৎ

विधिवमृर्भुभुषु। विकथवः ॥ ७७॥

অথ द्वानम्गि जिनक विधिः। পদ্মপ্রাণে উত্রখণ্ডে। ললাটে কেশবং ধ্যায়েমারায়ন্মথাদরে। বৃদ্ধান্তল নাধবন্ত গোবিন্দং কঠকূপকে।। ৬৭।। বিষ্ণুঞ্গ দক্ষিণে
কুক্ষী বাহৌ চ মধুসূদনং। ত্রিবিক্রমং কন্ধরে তু বামনং বামপার্শকে। প্রাপ্রং বাম
বাহৌ ত্ হাষীকেশন্ত কন্ধরে। পৃষ্ঠে তু পদ্মনাভঞ্চ কট্যাংদান্যেদরং ন্যমেন । ৬৮।
তংশ্রালনতোয়ন্ত বাস্দেবাদি মুর্নানি। কিঞ্চ । উর্দ্ধু পুতু ললাটে তু সক্ষেষাং
প্রথমং স্মৃতং । ললাটাদিক্রমেণের ধারণন্ত বিধায়তইতি ।। ৬৯।। এবং
ন্যামং সমাচর্য্য সম্প্রদায়ান্সারতঃ। ন্যালং কিন্নীটমন্ত্রঞ্চ মূর্দ্ধি সক্ষার্থান্দ্রয়ে।
অথকিরীটমন্তঃ। ওঁ প্রীকিরীটকেয়ুরহারমকরকুগুলচক্রশন্থাদাপদ্যুহন্ত পীতায়রধর
প্রীবংসান্ধিতবক্ষঃস্থল প্রভিন্নিহিত স্বান্ধক্রোতিদ্যি প্রিক্রায় সহস্থাদিত্যতেজ্বনে
নমোনমঃইতি।। ৭০।।

অথোর্দ্ধ পুণ্ডু নিত্যতা। পাদ্যে শীভগবদুকো । মংপ্রিয়ার্থং শুভার্থয়া রক্ষার্থে চতরানন। মংপূজাহোমকালে চ সায়ং প্রাভঃ সমাহিতঃ। মদ্রকোধারয়েলিত্য মূর্দ্ধপুণ্ডুৎ ভয়াপহং॥ ৭১॥ তত্ত্রৈব শীনারদোকো । যজোদানং তপোহোমঃ বাধ্যায়ঃ পিত্তপ্রং ব্যর্থাৎ ভবতি তংসকাসূর্দ্ধপুণ্ডুৎবিনা ক্রতং। তত্ত্রৈবোল্রথণ্ডে

বৈষ্ণবইতি বিশেষতোবৈক্ষবন্য বিধেয় স্বং স্চলতি। বিধির্যথাস্যাদিত্য তারং বিধিঃ। সৃতিপঞ্জর ন্যান্যান্যারেণ প্রণবস্থাকং স্বিন্দুকারাদিদাদশ্বশৈর্ছ দিশাদিত্য সহিতান্ কেশবাদীন্দাদ দাদশাদিত্য শেলাজাঃ। তাত্র কেচিং কেশবাদিন্যাসোজকীর্জ্যাদি দাদশশক্তিভিরপি সহ ন্যান্তি। বাদশাদিত্য শেলাজাঃ। ধাতার্যামা চ নিত্রশ্ব বরুণোহংশুর্ভগন্তথা। বিবস্থানিজঃপুষা চ প্রজ্ঞান্ত্র বিশ্বের ইতি। ততশ্বারং প্রয়োগঃ ওঁ অংপাত্রহিতায় কেশবার কীর্ষ্ণ্য নমঃ ললাটে ইত্যাদি। কিঞ্চালাটোর্দ্ধ্বপুত্রমালাদিকমত্যে ব্যক্তং ভাবি। অন্যাজ্যেদ্ধিন্ত্র কেচিন্দিশাকারতয়াকেচিচ্চ বাহ্যোক্ষকঃস্থলে পুত্রমন্ত্রাক্ষ্মুল্মুদাহতমিত্যাদি প্রস্বাণান্তর প্রভালনুসারেণ বাহ্যোক্ষকঃস্থলে চান্তাক্ষ্মুলপ্রমাণ মন্যত্র চতুরক্ষ্মুলপ্রমাণমিত্যেবং তত্রাপি কেচিন্মধ্যে ছিদ্রতয়ে চ্ন্ত্রীতি বিবিধাবিধিঃ। অত্র চ নিজ্যংপ্রদায়ব্যবহার এবানুস্ত্র্যঃ। ইত্যাদ্যভিপ্রায়েশেবাত্রে লেখ্যং সংপ্রদায়ানুসারতইতি॥ ৬৬॥

ত ব্রন্নানি অঙ্গানি চ বিভজ্ঞা দর্শবৃতি ললাটেতি তিভিঃ ধ্যায়েৎ ন্যাস্থ ॥ ৬৭।। তিবিক্রমং দক্ষিণে কন্ধারে ক্র্বীকেশং বামে কন্ধারে ॥ ৬৮।। এবং কেশবাদ্যানাং দামোদরাস্থানাং
দাদশানাং ন্যাসমুক্ত্বা মন্তকে শ্রীবাহ্দেবস্য ন্যাসমাহ তদিতি। বাহ্দেবেতি বাহ্দেবায়ব্য
ইতি এতচ্চ সমন্তন্ত্রেং সহ ন্যাসেদিতি জ্বেয়ং কেচিচ্চ দ্বাদশাক্ষরমন্ত্রং নৃদ্ধি বিন্যাস্থি।
আত্রাপি সংসম্পুদায়াচার এব গতিরিতি দিক্॥ ৬৯।। সংপ্রদায়ানুসারতইতি সর্ব্রাথেপ্যানুবর্ত্তনীয়ং॥ ৭০॥

নিতাং ধাবয়েদিতি নিতাতা শিক্ষা।। ৭১॥ অধুনা অকরণে প্রত্যবায়পুঞ্জং দর্শয়তি যজ্জ-

উর্পুর্টের্ বিশিষ্ট কিঞ্চিত কম্ম করোতি যাং। ইন্টাপূর্ভাদিকৎ সর্বাং নিজ্ঞাণ স্যান্ত্র-সংশয়ঃ। উর্দ্ধৃপ্তে কিহানস্ত সন্ত্যাকমানিকঞারে । তৎসর্কং রাক্ষসৎ নিত্যং নরক-ঞাধিগচ্ছতি ।। १२।। অন্যচ্চ। উর্দ্বপুণ্ডে, ত্রিপুণ্ডে, যং কুরুতে সনরাধনং। ভংজ্বা বিক্পৃহং পুঞুং স্থাতি নরকৎ দ্রবং। অতএব পাদে জীনারদোক্তৌ। যচ্ছরীরৎ মনুষ্যাণা মূর্দ্বপুঞ্ বিনা ক্তং। এটাব্যং নৈৰ ভতাৰং শাশানসদৃশংভবেৎ।। ৭৩ ।। তবৈবোভরখণ্ডে । উদ্ধুপুত্র ধরে বিপ্রোস্দ। শুক্রেণ বৈদিকঃ । ন তির্য্যক্ ধারয়ে দ্বি-দ্বানাপদ্যপি কদাচন।। ৭৪।। স্কান্দে। তির্য্যক্ পুঞুং ন কুর্ব্ববিত সংপ্রাপ্তে মরণেপি চ। নৈবান্যলান্ত বুয়াৎ পুমালারায়ণাদৃত্তে । ধার্য়ে দ্বিফ্নিম্লিরং ধূপশেষং विलाभनः । रेवक्षवः कातरमः भूष्ट्रः शाभीवन्त्रनम् वरः । তত্ত্বि कार्डिक्श्रमः । যস্যের্ক্পেণ্ডুংদ্শ্যেত ললাটে নোনরস্য হি। তদ্শনিং ন কর্ত্তব্যং দৃট্যা সূর্য্যং নিরী-ক্ষয়েং। १৫। অন্যত্রাপি। বৈষ্ণবানাং ত্রাহ্মণানাং উর্দ্পুণ্ডুৎ বিধায়তে। খনে বাস্ত ত্রিপুণ্ড্ং স্যাদিতি জন্ধবিদোবিদুং। ত্রিপুণ্ডুং যস্য বিপ্রস্ট র্ন্ধুপুণ্ডুং ম দৃশ্যতে। তং স্পান্ত্রাপ্রথবা দৃষ্ট্রা সচেলংস্নানমাচরে । উদ্বৃপ্ত্রে ন কুর্বাত বৈঞ্বানাং রিপুভুকং। রুত্তিপুভুষর্ত্তান্য ক্রিয়ান প্রতিয়ে হরেঃ।। १৬ বা অতএবোভরখণ্ড। অশ্বর্থপত্র সংকাশো বেণুপত্রাক্রতিন্তথা । পদকুট্যুলদক্ষাশোঘোহনংত্রিতয়ং ष्युडः ११ ११ ११

अर्थाक्ष्पृण्याश्चार । कात्म कार्डिक श्चित । क्षेत्र्पृण्याश्वा ननार । क्ष्र्पृण्याश्वा निक्षा । विक्ष्राचा मार्चि विक्ष्या मार्चि । विक्ष्र्पृण्याश्वा । विक्ष्र्पृण्याश्वा । विक्ष्र्पृण्याश्वा । क्ष्र्या । विक्ष्या । विक्ष्य विक्ष्या । विक्ष्या । विक्ष्या । विक्ष्या । विक्ष्या । विक्ष्य विक्ष्य । विक्ष्या । विक्ष्य । विक्ष्या । विक्ष्य । विक्ष्य । विक्ष्य विक्ष्य । विक्ष्य । विक्ष्य विक्ष्य । विक्ष्य विक्ष्य । विक्ष्य विक्ष्य । विक्ष्य । विक्ष्य । विक्ष्य विक्ष्य । विक्ष्य विक्ष्य विक्ष्य विक्ष्य विक्ष्य विक्ष्य विक्ष्य । विक्ष्य विक्ष्य विक्ष्य विक्ष्य । विक्ष्य विक्ष्य विक्ष्य विक्ष्य विक्ष्य । विक्ष्य विक्ष्य विक्ष्य विक्ष्य विक्ष्य । विक्ष्य विक्षय विक्ष्य विक्ष्य विक्ष्य विक्षय विक्ष्य

ইত্যাদিনা॥ চরেৎ আচরেৎ॥ १२॥ বিষ্ণু গৃহং হরিননিরং॥ १०॥ ধরেৎ ধারয়েছ। १৪॥ বৈষ্ণবং হরিমনিরলক্ষণমূলপুঞ্ । ললাটইতি উর্দ্ধপুঞ্ সাত তৈবে বিহিত হাৎ॥ १৫॥ বাক্ষণালাগ অনোষাং অবৈষ্ণবশূদাণাগ॥ ৭৬॥ এবমত্রোদ্ধপুঞ্ ধারণসা বিহিত হাদপ্রে চ বক্ষোবাহ্মলাদৌ থড্গচকাদি মুদ্রাধারণসা বিহিত হাদবৈক্ষবস্মার্ত্ত দশ্বত মশ্রপারাকারাদিকং বক্ষাহ্মলাদৌ বিষ্ঠিত বিশ্বতি অশ্বপ্রেতি। মোহ্নং অন্তরানু সারিশ্রকাদি মায়াবিহিত মিত্যর্থঃ॥ ৭৭॥

উर्कপু छे डि पूरस्यार्यः। १৮॥ समामीतारस्य ॥ १०॥

পরৎ পদং। উদ্ধৃপৃত্ধরৎ বিপ্রং দৃদ্বা পাপেঃ প্রমুচ্যতে। নাল লাজা তথা ভত্তা সর্বদানকলৎ লভেৎ। উদ্ধৃপৃত্ধরং বিপ্রং যা প্রাদ্ধে ভালারিয়াতি। আকংপকোটি পিতরস্তম্য তৃপ্তা ন সংশয়ং। উদ্ধৃপৃত্ধরোষস্ত কুর্যাৎ প্রাদ্ধং শুভাননে। কংপকোটি সহস্যানি বৈকুঠে বাসমাপুরাহ ! যজনানতপশ্চর্যাক্তপহোমাদিকক হং। উদ্ধৃপৃত্ধরঃ কুর্যাৎ ভস্য পুন্যমনন্তকং। ব্রহ্মাণ্ডপুরানে। অশুচিকাপ্যনাচারো মনসাপাপমাচরন্ । শুচিবের ভবেনিভাগ্দুর্পৃত্ধিক্তিনেরঃ। তত্তির জ্ঞাভগ্র দ্বন্ধ। উদ্ধৃপৃত্ধরোমর্ভ্যান্তিয়তে হত্র কুত্তিহ। শ্বপাকোপি বিমানস্থোমম লোকে মহায়তে ৷ ১ টা উদ্ধৃপৃত্ধরোমর্ভ্যান্তিয়ে ব্যান্ত্রাগৃহে যস্যান্ত্রমূত্ত ৷ তদা বিংশং কুলং ভস্যনরকাদৃদ্ধরাম্যহং।। ৮০।।

অথার্ক্ পুণ্ডু নির্মাণবিধিং । ব্রহ্মাণ্ডপুরাণে। বীক্ষ্যাদশে জলে বাপি যোবি
দধ্যাৎ প্রযত্তঃ। উর্জ্বপুণ্ডুং মহাভাগ স যাতি পরমাংগতিং।। ৮১।। দশাঙ্গলপ্রমাণয় উত্তমোত্তমমূচ্যতে। নবাজুলং মধ্যমং স্যাৎ অকীক্ষুলমতঃপরং। এতিরঙ্গুলিভেদিন্ত কারয়েল নথিং স্পুণ্ডা। ৮২ ।। পদ্মপুরাণে উত্তর্থতে তত্তিব।
একান্তিনোমহাভাগাঃ সর্বভূতহিতে রতাঃ । সাত্তরালং প্রকৃবিন্তি পুণ্ডুং হরিপদাকৃতি ।। ৮৩ ।। শ্যামং শান্তিকরং প্রোক্তং রক্তং বশ্যকরং তথা। শ্রীকরং পীতমিত্যাত্তং খেতং মোক্ষপ্রদং শুভং। বর্তুলং তির্যগাত্তিমং জন্মং দীর্ঘতরং তন্।
বক্রং বিরূপং বদ্ধাপ্রং ভিন্তং। কর্তুলং তির্যগাত্তমং জন্মং দীর্ঘতরং তন্।
বক্রং বিরূপং বদ্ধাপ্রং ভিন্তং। ক্রেন্ড্রু কক্ষমাসক্তং তথা নাঙ্গুলিকল্পিতং । বিগল্পমপ্রস্থ পুণ্ডুমাত্রনর্থকং ।। ৮৪।। আরভ্য নাসিকামূলং
ললাটান্তং লিথেম্দং । নাসিকায়ান্ত্রয়োভাগা নাসামূলং প্রচন্ধতে। সমারভ্য
ভূবোমূলমন্তরালং প্রকল্পয়েৎ।। ৮৫।।

অথাদ্পূর্স্য মধ্য চ্ছিত্রনিত্যতা ততৈব। নিরন্তরালং যাং কুর্য্যাদূর্দ্ধৃপৃত্ত দ্বিজাধমা। সহিত্র স্থিতং বিষ্ণুং লক্ষাকৈব ব্যপোহতি।। ৮৬।। অচ্ছিত্রসূর্দ্ধ্ পূ গুলু যে কুর্কন্তি বিজাধমাঃ। তেষাং ললাটে সততং শুনঃপাদো ন সংগায়ঃ। তক্ষাচ্ছিত্রান্তিং পু গুং দণ্ডাকারং সুশোভনং। বিপ্রাণাং সততং ধার্য্য মুর্দ্ধ পূ গুং শুভদর্শনে। অতএবোক্তং হরিমন্বিলক্ষণং। নাসাদিকেশ্পর্যান্ত মূর্দ্ধ পূ গুং

বিংশংকুলং বিংশতিক্লানি ॥৮০॥ উদ্ধপুশু স্য ললাটে মুখ্যত্বাৎ তত্রত্যােদ্ধপুণু নির্মাণ প্রকারং লিখতি বীক্ষ্যেত্যাদিন।॥৮১॥ অতঃ পরং কনিষ্ঠমিত্যর্থঃ॥৮২॥ সান্তরালং মধ্যে ছিদ্রা-বিতং তদেবাই ইরিপদার্কতীতি তত্মিতি পাঠে বিস্তৃতং ॥৮৩॥ পদচ্যতং স্থানভ্রতং । অভঃ মলিনং আসক্তমন্যোন্য সংলগ্নং। পাঠান্তরং স্থামং। বিগন্ধং দুর্গন্ধি অপস্বাং বামহস্ত ক্পিতং॥৮৪॥ ত্রয়োভাগান্ত তীয়োবিভাগ ইত্যর্থঃ তথা সদাচারদর্শনাং ॥৮৫॥

ব্যপোহতি নির্দাতীতি মহাদোষোক্ত্যা নিত্যতা বোধিতা। এবসতো পূষ্ণ।। ৮৬॥

সুশোভনং । মধ্যে ছিদ্রসমাযুক্তংত দ্বিদ্যান্ধরিমন্দিরং । বামপার্ধে স্থিতীব্রহ্মা দক্ষিণে তু সদাশিবং । মধ্যে বিষ্ণুং বিজানীয়াৎ তন্মান্মধ্যং ন লেপয়েৎ। বারু পুরাণে সেবাগরাধে । অপৃত্বা চোর্দ্ধপুঞ্জ হরেঃ পূজাং করোতি যং । তর্যাক্ পুঞ্জ হরেঃ পূজাং করোতি যং । তর্যাক্ষিনা । অপৃত্বা মন্ত্রা যন্ত্র যজেদ্দেবং জনাদ্দ নং । অদ্ভিদ্রেণােদ্ধুপুঞ্জে ভন্মনা তির্যাগিক্ষিনা । অপৃত্বা শন্তাভিনা দোঘউক্তং ।। অফতিন্দ । যজুর্কেদেস্ট্রিরণ্যকেশীয় শাংশারাং । হরেঃ পদাক্রান্তিমাল্মনি ধারয়তি যং স্পরস্য প্রিয়োভবিতি স্পূন্বান্ । মধ্যে ছিদ্রমূর্দ্ধ পুঞ্জ যোধারয়তি স্মুক্তিভাগ্ভবভীতি ।। তিলকরচনাঙ্গুলি নিয়্যে স্মৃতিভ: । অনামিকা কামদোক্তা মধ্যমায় দ্বরী ভবেৎ। অঙ্কু তঃ পুষ্টিদং প্রোক্তর্জনীমোক্ষসাধনী।।

অথার্ক্ পুণ্ডুমৃতিকাঃ। পলপুরাণে তত্তিব। পর্বান্ত নদীতীরে বিলুমূলে জলাশয়ে। দির্কারে চ বল্লাকে হরিক্ষেতে বিশেষতঃ। বিষ্ণাঃ শুনোদকং হত্ত প্রবাহয়তি নিত্যশাঃ। পুণ্ডুাণাংধারণার্থায় গৃহ্লীয়ান্তত্ত মৃত্তিকাং। প্রীরঙ্গে বেক্কটান্টো চ শ্রিক্মেরিকে শুভে। প্রয়াগেনার নিংহাদৌ বারাহে ভলসীবনে। গৃহীদ্বা মৃত্তিকাং ভক্ত্যা বিষ্ণুগাদজলৈঃ সহ। ধৃত্তা পুণ্ডু'নি চাঙ্গেষু বিষ্ণুসামুজ্যমাপ মাং । তত্তিব। যতু দিবাং হরিক্তেরং তবৈয়ব মৃদ্যাহরেহ।।

তত্র প্রিগোপীচন্দনমাহান্ত্যং । উক্তঞ্চ পালে প্রীনারদেন । ব্রহ্মানাথ গোনোবা হেত্তকঃ সর্বাপাপরং । গোপীচন্দনসম্পর্কাৎ পূতোভবতি ভৎক্ষণাং । গোপীচন্দনখঞ্জ যোদদাতি হি বৈষ্ণবে । কুলনেকোত্তরং তেন সম্ভবেতারিতং শতং । ফুন্দপুরাণে প্রীক্রবেণ। শঙ্খচক্রাক্ষিত্তনুঃ শিরসা মঞ্জরীধরঃ । গোপীচন্দনগুলি দ্উন্দেত্তদ্বং কুতঃ । ৮৭ ।। গোপীস্তুলসী শঙ্খঃ শালগ্রামঃ সচক্রকঃ। গৃহেপি যান্য পঞ্চৈতে তস্যপাপভয়ং কুতঃ । কাশীখণ্ডে চ প্রীযমেন । প্রীথণ্ডে কু সমামোদঃ স্বরোবর্ণঃ কুতাদ্শ । তৎপাবিত্র্যং কু বৈ তীর্থে প্রিগোপীচন্দনে যথা। ৮৮ ।

অথ গোপীচনিনার্দ্ধ পুণ্ডুমাহান্তাং। উক্তঞ্চ গরুড়পুরাণে নারদেন। যোমৃতিকাং দ্বারবভীসমুদ্ধবাং করে সমাদার ললাটপটে। করেতি নিতাং ত্বথ চোর্দ্ধ পুণ্ডুং ক্রিয়াফলং কোটিগুণ সদা ভবেং।। ৮৯।। ক্রিয়াবিহীনং যদি মন্ত্রহীনং শ্রদাবিহীনং যদি কালবজ্জিতিং। ক্র্বাললাটে যদি গোপিচন্দনং প্রাপ্তেতং কর্মফলং

ছারকে ভারকায়াং। বারাহে শুকরক্ষতো।।

<sup>॥</sup> ৮৭॥ শালপ্রামঃ শালপ্রামশিলা সচক্রকঃ দ্বারকাচক্রান্ধ দহিতঃ ॥ ৮৮॥
। ৮৯॥ গোপিচন্দনমিতি হুস্বত্রমার্যং। যদীত্যস্য পূর্বার্দ্ধেনৈব সম্বন্ধঃ যদ্যপি ক্রিয়াদিছীনং কর্ম্ম
শ্যান্তথাপি গোপীচন্দনং ললাটে কৃত্রা তেনোর্দ্ধপুণ্ডুং নির্মায় তৎফলমক্ষয়ং প্রাপ্যে-

সদাক্ষয়ং।। ৯০।। গোপীচন্দনসম্ভবং সুরুচিরং পুণ্ডং ললাটে দ্বিজোনিভ্যং ধারয়তে যদি দ্বিজপতে রাত্রৌ দিব। সর্বদা। যং পুণাং কুরুজান্ধলে রবিপ্রত্ সাঘ্যাৎ
প্রয়াগে তথা তৎ প্রাপ্রেরি থগেন্দু বিষ্ণুসদনে সন্তিষ্ঠতে দেববং ।। যক্ষিন্ গৃহে
তিষ্ঠতি গোপিচন্দনং ভক্ত্রো ললাটে মনুজোবিভর্তি । ভক্ষিন্ গৃহে তিষ্ঠতি সক্ষদা
হরিং শ্রদ্ধানিতং কংসনিহা বিহঙ্গন ।। ৯১ ।। যোধারয়েৎ কৃষ্ণপুরীসমুদ্ধবাৎ সদা
পবিত্রাং কলিকিলিম্বাপহাং। নিত্যং ললাটে হরিমন্ত্রসংযুতাং যমৎ ন প্রেন্থত যদি
পাপসংবৃতঃ । যস্যান্তকালে থগ গোপিচন্দনং বাজ্যেলাটিটে হাদি মন্তকে চ ।
প্রয়াতি লোকং কমলালয় প্রভো গোবালঘাতী যদি ব্রহ্মহা ভবেং।। ৯২ ।। প্রহা ন
পীড়ন্তিন রক্ষসাৎগণা যক্ষাং পিশাচোরগভূতদানবাং। ললাটপটে খগ গোপিচন্দনং
সন্তিষ্ঠতে। যস্য হরেং প্রসাদতঃ । পলপুরাণে। জ্রিগৌতমেন । জয়রীয় মহাযস্য
ক্ষয়ার্থেকুরু বীক্ষণং। ললাটে যৈং রুতং নিত্যৎ গোপীচন্দনপুভুকং।। ৯৩ ।। কাশী
থণ্ডে চ প্রীয়মেন । দূতাং শৃণুত যদ্ভালং গোপীচন্দনলাঞ্জিতং। জ্লদিন্ধনবৎ
সোপি ভ্যাজ্যোদ্রেপ্রযত্বত ইতি। অথ তম্যোপরিজীমতুলসীমূলমূৎস্বরা। তবৈব
বৈষ্ঠবিং কার্য্যমূর্পুৎ মনোহরং।। ৯৪।।

অথ প্রতিনসীমূলমৃতিকাপুণুমাহাত্র । তম্দং গৃহ্য হৈ পুণুংললাটে ধারিতং নরৈঃ । প্রনাণকংক্তং তৈন্ত মোক্ষায় গমনংপ্রতি ।। ৯৫ ।। তত্ত্বি চ কার্তিকমাহাত্রে ব্রহ্মনারদ সম্বাদে । তলসীমৃতিকাপুণ্ডুং ললাটে যস্য দৃশ্যতে । দেহং ন স্পৃশতে পাপং ক্রিয়মাণন্ত নারদ । গরুড় পুরাণে । তলসীমৃতিকাপুণ্ডুং য়ঃ করোতি দিনেদিনে । তস্যাবলোকনাৎ পাপং যাতি বর্ষকৃতং নৃণামিতি ।। ২৬ । তদ্যোপরিষ্ঠাত্রগবন্ধিয়াল্যমনুলেপনং । তথৈব ধার্য্যমেবং হি ত্রিবিধং তিলকং স্কৃতং । ততোনারায়ণীং মুদ্রাংধারয়েৎ প্রতিয়ে হরেঃ । মৎস্যকৃর্মাদিচিত্রানি চক্রাদীন্যায়ুধানি চ ।।

অথমুদ্রাধারণনিত্যতা। মৃতে । ত হিল্ড: শেষ্টক্রাভ্যামুভয়োর্বাহুমূলয়োঃ।
সমর্চয়েদ্ধরিং নিত্যং নান্যথা পূজনং ভবেং। আদিত্যপূরাণে। শঙ্কটক্রাদ্ধরু পুঞাদি
রহিতং ব্রাহ্মণাধমং। গর্দ্দভন্ত সমারোপ্য রাজা রাষ্ট্রাৎ প্রবাসয়েং। গারুড়ে
আভগবদুক্রো। সর্বাক্সমাধিকারশ্চ শুটানামেব টোদিতঃ। শুটিত্বক বিজ্ঞানীয়ান্দীয়ায়ুধধারণাং। পালে টোভরখণ্ডে। শঙ্কাক্রাদিভিশিটাই বিশ্বাহ প্রিয়তমৈর্হরেঃ। রহিতঃ

তীত্যর্থঃ।। ৯০॥ দিজপতে হে এগরুড়॥ ৯১॥ রুক্তপুরী এদারকা তৎসমুদ্ভবাং মৃদমিতি শেষঃ॥ ৯২॥ ন প্রীড়ন্তি নপ্রীড়য়ন্তি।। ৯৩॥ ইস্কানমঙ্গারঃ॥ ৯৪॥

তক্দংশ্রীত্তলসীমূলমৃত্তিকাং তৎপ্রসঙ্গাং। গৃহ গৃহীত্বা।। ৯৫॥ অপ্যর্থে তু শদং ক্রিয়মাণ মুপি পাপংকর্দেহমপি ন স্পৃশতি কুতোমনআদীত্যর্থঃ। ১৬॥

সর্বধর্মেভিয় প্রচুতেনিরকং ব্রজেও।। ৯৭ ।। প্রন্তাচ মঞ্চকঠশাধায়াং ।
ধৃতোর্দ্ধপুত্র কত চক্রধারী বিষ্ণুৎ পরংধ্যারভি ধোমহাত্মা। মরেপ মত্রেপ সদা
ক্রিছিতং পরাৎপর্বহাহতোমহান্তং। অথকাণিচ। এভিকারমুক্ত্রুমস্য চিত্রৈ
রিজিত।লোকে সুভনাভবেম । জুলিকোঃ পরমং শদং যে গছান্তি লাঞ্জিতা
ইত্যাদি। অত এব ব্রহ্মপুরাণে। ক্রমান্ত্রি। ৯৮।।
দ্বাদশাকান্তির্ভং পুণ্যং চাফলারোপগজ্তি। ৯৮।।

व्यथ मुजाधात्रनमाश्याः कारम । बीनन रक्माद्रमार्केट अप्रमधारम । यानियः-ভক্তোবিপ্রেন্দু শঞ্চক্রাদিচিহ্নিতঃ। न যাতি বিষ্ণুলোকং বৈ দাহপ্রলয়ব্দ্ধিতং । क देववानाव है। नादाश्रवाश्चेषिक १९ विद्विष्ठ श्यमे विश्व इर । भाभका विश्वयुक्तमा ত্য্য কিং কুরুতে যমঃ । শভোদ্ধারে তু যৎ প্রোক্তং বসতাৎ বর্ষকোটিভিঃ। তংফলং লিখিতে শত্থে প্রত্যুহং দক্ষিণে ভুজে ৷ খং ফলং পুষ্করে নিভ্যং পুণ্ডরাকাক্ষ मर्गान । भाष्याभिति कृत्व भाषा जश्कम नगर्वाभुद्वार । वास कृत्व भना यमः निथिना मृनारक करनी । शमाधरदाशशाभूना अन्तर अन्तर कमा याक्ति । यानानमाभूरद । প্রোক্ত৭ চক্রস্থানি। সমীপতঃ । গদাধোলিখিতে চক্রে তৎফলং ক্রফ দর্শনে ।। ১১ ।। ঞীভগবদু ক্রীচা। যং পুনং কলিকালে তু মৎপুনীসম্ভবাং মৃদ্ধ । মৎস্যকুর্মাধিকৎ চিহ্ন গৃহাত্বা কুরুতে নরঃ। দেহে তন্য প্রবিষ্টোহৎ আনম্ভ তিদশোভমাঃ। ভ্সা নে নান্তর্থ কিঞ্চিথ কর্জব্যথ শ্রেয়ইচ্ছতা।। ১০০ ৷৷ মমাবভারচিক্লানি দৃশ্যন্তে যস্য বিপ্রাহে। নতৈ গ্রতিরানে বিজেয়া সন্নৎ মামকী তনুং ॥ ১০১ ।। পাপৎ मक्र ठक्ष शब्द छ का अपि हिनः । समायुधानि यम आद्भ निथि जानि करनी यूर्ण। উভাভাগিপি চিহ্নাভাগি যোহিকিতোমংসামুদ্রা। কুর্ময়াপি স্বকং তেজো নিকি গুণ ভস্যবিগ্ৰহে ii শৃষ্ঞ পল্ল গদাং ব**থাক**ণ মংস্থা কূমণ রচিতণ স্বদেহে। করোতি নিত্যং সুক্তস্য বৃদ্ধিৎ পাপক্ষয়ৎ জন্মশতাব্দ্ধিতিস্যা। ১০২। ভবৈৰ জীব্ৰ জ্বারদসম্বাদে । রুশশন্ত্ৰাক্ষকৰচৎ দুর্ভেদ্যং দেবদানবৈঃ । অদৃশ্যং সর্ব্ধ-ভূতানাৎ শত্তুগাৎ রক্ষসামপি । লক্ষ্যাঃ সরস্বতী দুর্গা সাবিত্রী হরবলভা। নিত্যৎ তস্য বসেদেহে যস্য শব্দাঞ্জিতা তনুঃ ৷ গজা গ্রা কুরুকেতাং প্রাগৎ পুষরাদিচ ৷ निकार कमा मना किर्छ र यमा अवाक्षिकर वर्षः । यमा कोमानको हिन्नर जूरन

<sup>॥</sup> ৯৭॥ কৃতং গোপীচন্দনাদিনা নির্শিতমঙ্কিতং চক্রং ধর্জুং শীলমস্যেতি তথা সং॥ কিং বক্তব্যং মুদ্রাধারণণ্য নিত্যত্ত্বং তদ্ধারকসম্মাননশ্যাপি নিত্যতা আক্ষাবচনেন গম্যত ইতি নির্থতি কুক্ষেতি॥ ৯৮॥

মূদংগৃহীত্বা চিহ্নং কুরুতে ॥ ৯৯ ॥ মে ময়া সহ অন্তরং ভেদঃ ন কর্ত্তবাং ॥ ১০০॥ নামকী ভনুঃ মদবভারইতার্থঃ ॥ ১০১ ॥ নিক্ষিপ্তং ময়ন ॥ যঃ শ্বৰেছে রচিত্তং করোতি স হরুতব্দ্যাদি করোতীতার্থঃ । সমাসহস্যাপি পাপশক্ষা ক্রমশতাক্ষিত্বগাতি বিশেষণমানং ॥ ১০২॥

বানে কলিপ্রির । প্রত্যুহংতত ত্রেটব্যাগঙ্গাসাগরসঙ্গা । সব্যেকরে গদাধস্তাত্র থাক্ত্ৰ তিষ্ঠতে যদি। ক্ষেদ সহিতং তত্ৰ তৈলোক্ত্ৰ সচরাচরং। তায়োই গ্ৰন্থী-- (मर्व) विस्थाखीनि नमानि हा निवमण्डि गमा छमा यमा (मरह मूममनिशा किथा। क्या-যু ধান্ধিতা মুন্তা যস্য নারায়ণী করে । উদ্ধান্ধিকারী চ সভেষ্ট্রদশাস্পতিঃ। রক্ষমুত্রাপ্রযুক্তত দৈবং পিত্রাং করোতি যা। নিত্যং নৈমিতিকং কামাং প্রত্যহং চাক্ষম ভবেং। পীভ্যন্তিন ততৈক গ্রহাঋকাণি রাশয়ঃ। অফাক্ষরাঞ্চিতা মুদ্রা यना थोखनशो करत ।। वातारङ् श्रीनन बकूमारताख्नो । क्रकां श्रूथाक्रिकः (महः (गार्शी-চন্দনমূৎস্করা। প্ররাগাদিষু তীর্থেষু স গছা কিং করিষ্যতি । যদা যস্য প্রপশ্যেত দেহংশশাদিচিক্লিত্ব। তদা তদা জগৎস্থামী ত্রফী হরতি পাতকং। ভবতে যস্য দেহে তু অহোরাত্র দিনে দিনে। শব্দক্রগদাপক্ষ লিখিত ৭ সোইচ্যতঃ স্বয়ং ।। ১০৩।। নারায়ণায়ুধৈযুক্তিং ক্রত্বাত্মানং কলৌ যুগে ৷ কুরুতে পুণ্যক্ষাণি নেরুত্বাদী তানি বৈ। শৃश्वापिनाकित्वा ভক্ত্যা আहर यः कूक़ ए दिखः। विधिशीन स गण्यार् পিতৃণাস্ক গ্রাসমং ।। ১০৪ ।। যথা নির্দ্হতে কাঠং বায়ুনা প্রেরিভোভ্শং । তথা पर्छ भाभानि मृष्णे कृष्णायु धानि रेव। जारका श शक्ति वात्र ना विष्नामा-কিতাৎ মুদ্রামফীকরসমন্বিতাং। শশ্বাদিকায়ুধৈযুঁ ক্তাং স্বর্ণকাসময়ীমপি। ধতে ভাগৰভোমস্ত কলিকালে বিশেষভঃ ৷ প্ৰহ্লাদস্য সমোজেয়ো নান্যথা কলিবলভ ৷ কিঞ্চ শআক্ষিততনুর্বিপ্রো ভুছ্তে যন্ত বেশানি ৷ তদন্ত্র্মশাতি পিতৃভিঃ সহ কেশবঃ ৷৷ ১০৫ ৷৷ কৃষ্ণায়ুধাক্ষিতোযন্ত শ্মশানে নিয়তে যদি ৷ প্রয়াগে যা গতিঃ প্রোক্তা সা গতিস্তস্য নারদঃ ।। ১০৬ ।। রক্ষায়ু ধৈঃ কলৌ নিত্যং মণ্ডিত । যস্য বিগ্রহং। তত্রাশ্রম্ প্রকুর্কন্তি বিবুধা বাসবাদয়ঃ।। ১০৭।। যং করোতি হরেঃ পূজাং রুক্তশস্ত্রাঞ্চিতোনর:। অপরাধসহস্থাণি নিত্যং হরতি কেশব:। রুক্তা কাষ্ঠ-ময়ৎ বিশ্বং কৃষ্ণশাস্ত্রৈস্ত চিল্লিতৎ। যোহ্যকয়তি চ্যুত্মানৎ তৎসংমানান্তি বৈশ্বঃ। পাষ্ডিপতিভবাতৈ। নান্তিকালাপপাতকৈঃ। ন লিপ্যতে কলিক্তিঃ ক্ষাশস্ত্রা-ক্ষিতোমরঃ। কিঞা অফীকরাক্ষিতামুদ্রামস্যধান্তময়ী ভবে । শশ্বপদাদিভি-রু ক্তা পূজ্যতে ২সৌ সুরাসুরৈঃ ॥ ১০৮ ॥ ধৃতা নারায়ণী মুদ্র। প্রহ্লাদেন পুরা কৃতে।

ত্রিদশাং ত্রিদশানামিত্যর্থঃ । প্রপশ্যেতেত্যার্ধমাত্মনেপদং । ভবতে ইতি চ ॥ ১০৩ ॥ আরানং দেহং ॥ ১০৪ ॥ দছন্তি দহন্তি পাপানি স্বস্যান্যেষাং বা । অথবা দছন্তে স্বয়মেব নশান্তীত্যর্থঃ ॥ ১০৫ ॥ যদীতি ন শাশানে মিয়তএব যদি কদাচিল্যিয়তইত্যর্থঃ ॥ ১০৬ ॥ বিগ্রহমিতি নপুংসকত্মার্যং॥ ১০৭ ॥ কার্চময়মিতি কার্চেত্যুপলক্ষণং তামাদিধান্তময়- মিত্যপি জ্বেরং স্থান্তপ্রস্থামপীত্যাদিনা মুদ্রায়া অপি তাদৃশত্যেক্তেঃ অনেন বচনেন ইচনা মুদ্রা প্রতিবিধনীয়েতি কেষাঞ্জিমতং নিরস্তং॥ ১০৮ ॥ কতে স্তায়ুগে নারায়ণান্ধিতা

বিভীষণেন বলিনা ধ্রুবেণ চুশুকেন চ।। ১০৯।। মাজাতৃণাশ্বরীষেণ শার্কপ্রশ্রুখিন দিনিছিলৈ শাল্পদেহ ক্রুলা কলিপ্রির। আরাধ্য কেশবাৎ প্রাপ্তথি সমাহিতফলং মহৎ।। ১১০।। কিঞা গোপীচন্দনমূহস্থায়া লিখিন্তং যায় বিগ্রাহে। শাস্ত্রপাদি চক্রন্না ভাস্য দেহে ব্যেদ্ধরিং। ভবৈর জীসনৎকুমারোক্তে। হাসা নারাম্যণী মুদ্রা দেহং শাস্ত্রাদিচিছিভেং। ধাত্রীফলক্তা মালা ভলসীকাইসম্ভবা। দ্বাদশাক্ষর মন্ত্রেন্ত নিযুক্তানি কলেবরে। আয়্ধানি চ বিপ্রায় মৎসমং সচ বৈক্ষরং। কিঞা। যায় নারাম্বানি কুলেবরে। আয়্ধানি চ বিপ্রায় মৎসমং সচ বৈক্ষরং। কিঞা। যায় নারাম্বানী মুদ্রা দেহে শাস্ত্রাদিচিছিভা। সর্বাঙ্গিভিছেভং যায় শাল্তেনারায়ণোদ্রেরং। প্রবেশানান্তি পাপস্য কবচং ভস্য বৈক্ষরং। অন্যত্র চ। এভিন্তাগ্রহণ দিচিছিভা কলিকালে দ্বিজ্ঞাত্যঃ। ভবন্তি মন্ত্র্যাকে তে শাপানুগ্রহকারকাঃ।

অধন্দাধারণবিধিঃ। গৌডনীয়ে চক্রক দক্ষিণে বাহৌ শব্ধং বামেপি দক্ষিণে। গাদাৎ বামে গদাধন্তাৎ প্নশ্চক্রক ধাররে । শুন্তোপরি তথা পদাং পূনঃ পদ্মক দক্ষিণে। গাড়গৎ বক্ষসি চাপক্ষ সশরং শীক্ষি ধারয়েছে।। ১১১।। ইতিপঞ্চায়ুধান্ন্যাদৌধারয়েইক্ষবোজনঃ। মহস্যক্ষ দক্ষিণে হত্তে কূম্ম ্বামকরে তথা।। ১১২।। তথাচোক্তং। দক্ষিণে তু ভুক্তে বিপ্রোবিভ্য়াদৈ সুদর্শনং। মহস্যৎ পদাং চাপরেহথ শব্ধৎ পদাং গদান্তথেতি ।। ১১০।। সাম্প্রদায়িকশিন্টানামাচারাক্ষ থথারুচি । শব্ধক্রাদিচিক্লানি সর্বেষ্প্রেষ্থারয়েছ। ভক্ত্যা নিজেইদেবস্য থারয়েলকণান্তিপি ।। ১১৪।। চক্রশন্থে চ ধার্মিতে সংশিল্লাবের কৈশ্চন ।। ১১৫।। জ্বিগোপী-

সুদ্রা প্রহ্লাদেন ধূতা। পুরেতি কৃচিৎ পাঠঃ ॥১০৯॥ মান্ধাত্েতি মার্কণ্ডেতিচার্যং ছন্দে।নু-বোধেন।শক্তৈঃ সহ দেহে কৃত্ব। মুদ্রামিতি শেষঃ। আরাধ্য তেনৈব কেশবং সভোষ্য।। ১১০॥ দক্ষিণেপি শঙ্খং ধারয়েছ। যদাপি দক্ষিণে তু ভুক্তে বিপ্রোবিভূয়াদৈ স্থদশনমিত্যাদিবচনেন বামে শশ্বস্য ধারণমুক্তং তথাপি শশ্বোদ্ধারে তু যৎ প্রোক্তমিত্যাদি লিখিতবচনানুসারেণ पिकर्षहिल भूनः मञ्च्यात्वापिकः विश्विष्टः । थङ्गमा वक्ति नवत्वालमा ह मूर्क् यात्रवः। ললাটে চ গদা ধার্যা মূর্দ্ধি, চাপশরস্থা। নন্দককৈর হৃত্যধ্যে শৃষ্ব চক্রে ভুক্তরে। ইতি সপ্ত মুক্রাধারণং বারাহ্বচনানুসারেণ লিখিতং। কিন্তু নিজরুচানুসারেণ সর্বাণি সর্ব-কৈব ধারয়েদিতাতো স্বয়ং লেখামেবেতি দিক্ ॥ ১১১ ॥ শস্ত্রকাগদাখড়্গশ্বপ-শ্চেত্যেতানি পঞ্চায়ুধানি ॥ ১১২ ॥ মংস্যং পদ্মঞ্চ দক্ষিণে । অথানন্তরং অপরে বামে পাণৌশস্থাদিকং বিভূষাৎ ॥ ১১৩॥ লক্ষণানি বেণুপ্রভূতীনি। যচ প্রঞায়ুধেতরভগব-फिङ्गानाः धात्राः निषिकः । তথাচ প্রােজরখণ্ডে । অনৈ। ন দাংয়েক্লাতং ত্রাহ্মণােইরি-লাপ্তনাৎ । শত্মচক্রগদাপঅশাঙ্গাদনৈ সুহরেরপিইতি তত্তু তপ্তমুক্রাদিবিষয়ং ॥ ১১৪ ॥ যদ্যপি নিত্যপার্যদস্য ভাগবতপ্রবর্ষ্য শ্রীশশ্বস্য মুদ্রাধারণে কর্মফিনপি দোষোন ঘটেত। তথাপি ভন্নাদ্যুম্ভপত্নীগভূস্য ক্স্যাভিৎ ব্রাহ্মণস্য শাপসভাতার্থমন্ত্রযোনৌ পাঞ্জনাসংজ্ঞা-হবতীর্ণস্য শব্দস্য তগ্যাহ্ররমুদ্ধাব্য কৈশ্চিবৈঞ্চৈবস্তাচ্চহ্নং কেবলং পৃথগ্ধার্য্যতইভিতন্মতং লিখতি চক্রশক্ষৌচেতি।। ১১৫॥ তানি চক্রাদীনি তু তপ্তানি বহ্নৌবিধিবৎ সম্ভপ্য শয়ন

চন্দ্রনৈবং চক্রাদীনি বুধোনুহং। ধারয়েচ্ছ্য়নাদৌ তু তপ্তানি কিল তানি হি 1১১৬। তথা চক্রাদীনাং লক্ষণানি। দ্বাদশাবস্ত ঘট্কোণংবলয়ত্রয়সংযুত্থ। চক্রং স্যাদ্দিকণাবর্ত্তঃ শত্থশ্চ শ্রীহরেঃ শ্বৃতঃ। গদাপদ্মাদিকথ লোকসিদ্ধমেব মতথ বুধৈঃ। মুদ্র। বাংভগবারামুণিক্ষিতা বান্টাক্ষরাদিভিঃ।। ১১৭।।

অথমালাদিধারণং। ততঃ ক্ষাপিতা মালা ধারয়েত্লসীদলৈঃ। পদালৈছলসীকাতৈঃ কলৈথাত্যাশ্চ নিৰ্মিতাঃ। ধারয়েত্লসীকাতভূষণানি চ বৈক্ষবঃ।। নতকে
কর্ণয়োকাছোঃ করয়োশ্চ যথাক্তি।।

মালাধারণনিত্যতা। তত্ত্বিব কার্ত্তিকপ্রসঙ্গে ।। ধাত্রীফলরুতাংমালাৎ কণ্টস্থাৎ যোবহেন্নহি বৈক্ষবোন স বিজেয়োবিষ্ণপূজারতোযদি।। ১১৯।। গারুড়ে। ধাবয়ন্তি ন যে মালাৎ হৈন্তকা পাপবুরুষঃ। নরকান নিবর্তন্তে দক্ষাঃ কোপারিমা হরেঃ।।১২০। অতএর স্কান্দে। ন জহ্যাৎ তুলসীমালাং ধাত্রীমালাং বিশেষতঃ। নুনহাপাতকসং হত্রীংধ্যাকামার্থনায়িনীং।।১২১।।

অথ মালাধারণ মাহাত্মাং। অগন্তঃসংহিতায়াং। নিমালি।তলসীমালাযুক্তো যশ্চার্ক্রেন্ধরিং। যং যৎ করে।তি তৎ সর্ধমনন্তকলদ্ভবেৎ ।। ১২২ ।। নারদীয়ে।

বাদশ্যাং আদিশব্দাছ্পানাদিঘাদশীযুচ ধাররেছ। অতোহত্র নিত্যকর্মনিখনে ভদ্বিধ্যাদিকং ন লিগিতমিতিভাবঃ। কিলেতি তত্র ক্রুতিসমৃত্যাদিবাক্যপ্রামাণ্যং বোধরতি ।। ১১৬।।

লোকশিদ্ধমের যথা লোকে দৃশাতে তদাকারমেবেত্যর্থঃ । ভগলামুা ক্ষ্ণরামেত্যাদিন।। ভাষাক্ষরমন্ত্রাদিভির্বাক্ষিতা। আদিশব্দেন পঞ্চাক্ষরাদি॥ ১১৭॥

ত্তলসীদলাদিভিনিবিতামালাঃ কৃঞাপিতাঃ সতীর্ধারয়েই।।

<sup>॥</sup> ১১৮॥ यनि यमाপि॥ ১১৯॥ देशवका द्ख्वाम्निछ। ॥ ১২०॥ न अञ्चाद निजाञ्चाद ধাতী আলাঞ্চ। নিত্যত্বেহপিফলং দর্শয়তি বিশেষতঃ সমাক্তয়েতার্থঃ । যন্তা ইবিশেষতোধাতীসালাং ন অহাদিতি তরিতাত্বংনিতরামভিপ্রেতঃ ॥ ১২১।

নির্মাল্যং ভগবছেষং তদ্রপা যা উলসীমালা তয়া মুক্তং সন্॥ ১২২॥

যে কণ্ঠল গ্ৰহল সীন লিনাক্ষালা যে বা ললা টফলকে লসদূর্দ্ধ্পুণ্ডাঃ। যে বাহুমূলপরি চিক্লিতশশ্বচক্রান্তে বৈষ্ণবাভূবনমাশু পবিত্রয়ন্তি 11 ১২৩ 11 কিঞ্চ।ভূঞ্জযুগমপিচিক্লৈ রক্ষিতং যদ্য বিষ্ণোঃ পরমপুরুষনামাৎ কীর্ত্তনংযদ্য বাচি। ঋজুতরমপি পুরুৎ মন্তকে যস্য কণ্ঠে সর্বিজ্মণিমালা যস্য তস্যাম্মি দাসং ।৷ ১২৪ ৷৷ বিজ্পম্মোত্র আভগবদুক্তো তুলসীকাষ্ঠমালাঞ্চ কণ্ঠস্থাংবছতে তু যঃ। অপ্যশৌচোপ্যনাচারো-মা মবৈতি ন সংশয়ঃ। স্কান্দে। ধাতীফলক্লতামালা তলসীকাষ্ঠসম্ভবঃ। দৃশ্যতে হসঃ দেহে তু স বৈ ভাগবভোত্তমঃ ৷৷ ১১৫ ৷৷ ত্লসীদলজাৎ মালাৎ কণ্ঠতাৎ বহতে ज्यः। विकृञीनी पित्रायम न नमरम। पित्रोकमा । जूनमी मलका म। वा धाडीकन ক্তা২পি চ । দদাতি পাপিনাং মুক্তিং কিম্পুনবিক্তুসেবিনংং। তত্ত্ৰৈব কাৰ্ডিক প্রসঙ্গে যা প্রস্তুলসীমালাং কর। কতে জনাদ্নং। পূজ্ঞে পুণ্যনাপ্যোতি প্রতি পুস্পাং গ্ৰাযুত্থ। ১২৬।। যাৰলুঠতি কণ্ডতা ধাৰ্তামালা নরসঃ হি। তাৰ্ভসঃ শ্রারে তৃ প্রতির লুঠতি কেশবং। স্পৃশেজ যানি লোমংনি প্রতীমালা কলৌ ন্ণ!ং। তাবদ্বন্যহসূত্রি বসতে কেশবালয়ে। যাবদ্দিনানি বহতে ধাত্রীমালাৎ কলো নরঃ: ভাৰদ্যগ্ৰহসুণি বৈক্ঞে বসভিভবিং । মাল'ব্ুুঞ **যোনিতঃং ধ**৷তীতুল**সিম্মৰং** । বছতে কণ্ডদেশে চ কম্পকোটি দিবং বসেৎ ॥ ১২৭॥ পারুড়েচ মার্কণ্ডেয়োক্রে। ভলগীদলজাৎ মালাৎ রুফোভীব ;ং বহেতু যঃ। পত্তে পত্তেইস্মেধানাৎ দশ;নাংলভতে ফল॰। ভলসাক, ১নংভূত।৭ যোমালাৎবহতে নরঃ। ফলৎ যড়ভি দৈত্রারিঃ প্রতঃহুৎ দ্বাৰকে। দ্বৰিদ্য বিষ্ণবে মালাৎ ভুলসীকাঠসম্ভবাং। বহুতে হোনৱোভক্ত । ভদ্য বৈ নান্তি পাতক । সদা প্রতিমনান্তম্য ক্লফোদেবকিনদনঃ । তলসীক:১ সমূতাং যোমালাং বহতে নরঃ । প্রায়শ্চিতং ন তস্যান্তি নাশৌচং তস বিপ্রতে । ভালনাকাঠসংভূত্ৎ শিরসোম্স্যভূষণং 1 বাংগ্রোঃ করে চ মর্ভ্রস্য দেহে তল্য সদা হরিং।। ১২৮।। তুলসীকাপ্তমালাভিভূষিতঃ পুলামাচরে । পিতৃণাং দেবতানাঞ্চ রুতং কোটি গুণং কলো। ১২৯।। তলসীকা সমালান্ত প্রেতরাজস্য দূতকাঃ। দূরী নশান্তি দূরেণ বাতে: দূতং যথা দলং ৷ ভলসীকাঠমালাভিভূষিভোভমতে ২দি ৷ দুঃস্বপুং দূর্নিমিত্র ন ভয়ৎ শস্ত্রজং কৃচিৎ ॥ ১৩०॥

লসংশ্রীহরিমন্দিরতয়। শোভমানমূর্কপুঞ্ গেষাং তে ॥ ১২৩ ॥ বিঞ্চোশ্চিকৈঃ। যস্য বাচি নামাং কীর্ত্তনমিত্যক্ত দৃষ্টাভয়েন জেয়ে। এবমন্যক্রাপূচ্ছ ॥ ১২৪ ॥ জলসীকাঞ্চমন্তবা চ ॥ ১২৫ ॥ গবায়তং অবুতসংখ্যগোদানকলমিত্যর্থঃ ॥ ১২৬ ॥ জলসিমন্তবমিতি ভুম্বন্ধার্যং ॥ ১২৬ ॥ জলসিমন্তবমিতি ভুম্বন্ধার্যং ॥ ১২৬ ॥ স্বাং পুণাং পুণাকশ্ম পিতৃণাং দেবতান লাপ্ত তংসবিধা কর্মা কৃতংকোটিগুণং ভবেৎ । বিশেষতঃ কলৌ॥ ১২৯ ॥ নশ্যন্তি অদুশ্যাভর্নিত প্লায়ন্তইত্যর্থঃ॥ ১৩০ ॥

অথ গৃহে সক্ষ্যোপাসনবিধিং।৷ সক্ষ্যোপাস্ত্যাদিকৎ কর্ম ততঃ কুর্ম্যাহ যথাবিধি ৷ কৃষ্ণপাদোদকেনৈব তত্র দেবাদিতপ্রং ৷৷ ১৩১ ৷৷ শিরসা নিষ্ণৃ-নির্মাল্যং পাদোদেনাপি তপ্রং ৷ পিতৃগাৎ দেবতানাঞ্চ বৈষ্ণবৈস্ত সমৎ মতং ৷৷ ১৩২ ৷৷ সক্ষ্যোপান্তৌ চ বশিষ্ঠবচনং ৷গৃহে ত্বেকগুরা সন্ধ্যা গোটে দশগুরা মৃতা ৷ শতসাহসূকা নদ্যামনন্তাবিষ্ণসন্নিধৌ ৷৷

আথ প্রিন্তরপূজা।। পূজরিষ্যৎস্ততঃ কৃষণ্যাদৌ সনিহিতং গুরুং। প্রণার পূজরেদ্বজ্ঞা দল্পা কিঞ্চিদুপায়নং। মৃতিমহার্ণবে। রিক্তপাণি ন পশ্যেত রাজানৎ ভিষজৎ গুরুৎ। নোপায়নকরঃ পুত্রৎ শিষ্যৎ ভৃত্যৎ নিরীক্ষয়েৎ।। ১৩৩।। কিঞ্চ। প্রভিগবদুক্তৌ প্রথমন্ত গুরুং পূজ্য তত্তৈকের মমার্চ্চনং। কুর্কন্ সিদ্ধিমবাপ্রোতি হ্যন্যথানিক্ষলৎ ভবেৎ। প্রীনাইদেনচ। গুরৌ সনিহিতে যন্ত পূজ্যেদন্যন্ত্রতঃ। সদ্র্গতিমবাপ্রোতি পূজ্নৎ তস্য নিক্ষলং।। ১৩৪।।

অথ প্রীপ্তরুমাহাত্মাৎ। শ্রুতিষ্। যস্য দেবে পরা ভক্তি র্যথা দেবে তথা গুরৌ। তিস্যতে ক্থিতাহ্যর্থাঃ প্রকাশন্তে মহাত্মনঃ। ১৩৫।। একাদশক্ষরে প্রীভগবদ্ধেলী। আচার্যুৎ মাৎবিজ্ঞানীয়ায়াব্যনেত্রত কর্ছি চিৎ। ন মর্ত্যবৃদ্ধ্যাসূয়েত সর্বদেব-ময়োগুরুঃ। ১৩৬।। দশমক্ষকে চ। নাহ্মিজ্যাপ্রজাতিভ্যাৎ তপসোপশ্যেন চ। তুষ্যেয়ং সর্বভূতাত্মা গুরুগুশ্বয়া যথা।। ১৩৭।। সপ্তমক্ষরে প্রীনারদোক্তৌ। যস্য সাক্ষাত্মগবৃতি জ্ঞানদীপপ্রদে ভরৌ। মর্ত্যাসন্ধীঃ শ্রুতং তস্য সর্বাৎ কুঞ্জুরশৌচ বৎ।।১৩৮।। অন্যত্রাপি। সাধক্য্য গুরৌ ভক্তিং মন্দীকুর্বান্ত ক্ষেত্রাং। যমোতীত্য ব্রুক্তির্থা শিষ্যোভক্ত্যা গুরৌ প্রবং। মনুস্মৃতৌ। অজ্যোভবতি বৈ বালঃ পিতা ভরতি মন্ত্রাং। তজ্ঞৎ হি বাল্যিত্যান্তঃ পিতেত্যের তু মন্ত্রদং। কিঞ্চ। গুরুর্ত্রাণা গুরুর্বিকৃর্ব্রুদ্ধেরিক্রের্য গুরুর্বের পরৎ ক্রন্ম ত্যাৎ সংপূদ্ধেরৎ সদ্য। ১৩৯।

পূর্বাং বহিন্ত্রীর্থারানে সন্ন্যোপাসনাদিকং লিখিতং ইদানীং গৃহ্বিষয়কং তল্লিখতি সন্ধ্যোতি তত্ত্ত তিমান্ কর্মণি ॥ ১৩১॥ বিজ্বাধাল্য তদ্বহ সিভ্যাধ্য । ভদ্য সমৎ উল্যাং মতং॥ ১৩২॥

পশ্যেত পশ্যেৎ। নিরীক্ষয়েং স্থেইন্ নিরীক্ষেত।। ১৩৩।। এবং কিঞ্জিপায়নং দত্ত্বে প্রমাণবচনং সংগৃহাধুনা সন্নিহিতং সন্তং গুরুমানে পূজারেদিতি আভগবদ্ধনাদিন। প্রমাণ-য়তি প্রথমমিতি দ্বান্তাং। পূজ্য গুল্মিয়া।। ১৩৪।।

অর্থাঃ পুরুষার্থাঃ।। ১৩৫।। নাহুয়েত মা দোধদ্টিং কুর্য্যাৎ।। ১৩৬।। ইজ্যা যক্তঃ গহস্তধর্মাঃ।
প্রজাতিঃ প্ররুষ্ট ক্ষন্ম উপনয়নং তেনব্রক্ষচারিধর্মউপলক্ষ্যতে তাত্যাং। তথা তপনা বনস্থধর্মেণ
উপশ্মেন যতিধর্মেণ বা অহং প্রমেশ্বস্তথা ন ক্রিষ্যেং যথা সর্বভূতাত্মাণি গুরু শুনান্ধার । ১৫৭।। ৬ বিভ্তা প্রমানর্থাক্ত্যা গুরুভক্তিমের ক্রায়তি যস্যেতি। সাক্ষান্ত তে। মান্ধারীঃ মর্তাইতি অসদ্ধৃদিঃ। প্রাভ্যান্য কুঞ্গেশোচবৎ ব্যর্থমেবেত্যুর্থঃ॥১৩৮॥
সম্বাহ্যব্যাক্তর্থা

দাৰুমের॥ ১৩৯॥

বামনকংশে ব্রহ্মণোবাক্যং ৷ যোমন্ত্রং সগুরুং সাক্ষাৎ যোগুরুং স হরিং স্তঃ ৷ গুরুষ্প্য ভবেতুফীস্তস্য তুদ্টোহরিঃ স্বয়ং। গুরোঃ সমাসনে নৈব নচৈবে।চ্চাসনে ৰসেং। বিষ্ণু রহসে । ভদাং সর্বপ্রেয়ত্ত্ব যথাবিধি তথা পুরুৎ । অভেদে-नार्फरियम्यस म मुक्तिकनमाभुतार । বিষ্পধরে জীভাগবতে চ হরিক্দন্স্য । গ্রুশুক্রমণং নাম সর্বধর্মোত্রনাত্রং ৷ তেলাদ্বর্মাৎ পরোধর্মঃ পবিত্র নৈব বিদ্যতে ৷ কামক্রোধাদিকং যদ্যদাত্মনোহনিষ্টকারণং ৷ এতৎ সর্বং গুরৌ ভক্ত্যা পুরুষোহাঞ্জনা জয়েং। পালে। পিত্রাধিক।ভাবেন যে২চরিতি গুরুং সদা। ভবন্তঃ তিথয়োলোকে ব্রহ্মণস্থে বিশাম্বর। তব্রৈব দেবসৃতিস্ততৌ। ভক্তির্যথাহরে। মেইস্তি তদলিলা গুরৌ যদি। মমাজি তেন সত্যেন স্বং দর্শয়তু মে হরিঃ। আদিত্য পুরাণে। श्वितिकाता प्रतिरम्हाता शुक्रदात कनार्कनः । यार्शस्थाताश्वाशिक्षाशुक्रदात मना গতিঃ। অন্যত্তচ। হরৌ রুটে গুরুস্তাত: গুরৌ রুটে ন কশ্চন। ভঙ্গাৎ সর্বপ্রয়ত্ত্বন अङ्गापत अमानराष्ट्र । जन्मरिवदार्ख । जिनिषु सः मानराष्ट्रा विसन्धा मानि या ज्रुषा । প্রবং পূজনীয়ান্তে গৃহং নত্তা নয়েত তান্। তৎশু ঘ্যং জন্ম ধন্যৎ তৎ দিনং পুণ্যাথ নাড়িকা। যস্যাৎ গুরুং প্রণমতে সমুপাস্ত্য ভক্তিতঃ ।। ১৪০।। কিঞ্চ । উপদেষ্টা-রমাগায়াগত১ পরিহরতিযে ৷ তান্মূতানপি ক্রেগদাঃ ক্তম ানোপভুঞ্তে ৷ ১৪১ ৷ বোধঃ কলুষিতত্তেন দৌরান্যাৎ প্রকটীকৃতং ৷ গুরুর্যেন পরিত্যক্ত তেন ত্যক্তঃ পরা হরিঃ।। ১৪২ ।। অন্যত্র চা প্রতিপদ্য গুরুং যস্ত মোহাদিপ্রতিপদ্যতে। সক্ষ্প কোটিং নরকে পচ্যতে পুরুষাধমঃ 11 ১৪৩।। অত্রাপবাদঃ। পঞ্চরাত্রে। তবৈষ্ণবো-পদিক্টেন মন্ত্রেণ নিরয়ং ব্রক্তে । পুনশ্চ বিধিন: সমাগ্রাহয়ে বৈক্ষবাক্রোঃ । অথ জিতুর্বভক্তফলং ৷ অগন্ত্যসংহিতায়াৎ ৷ যে ওকাজাং ন কুর্বন্তি পাণিষ্ঠাঃ পুরুষাধ্যাঃ। ন তেষাং নরকক্রেশনিস্তারোগুনিসভ্রম। যৈঃ শিষ্টেঃ শশ দারাধ্য গুরবোহ বমানিতাঃ । পুত্রমিত্রকলতাদি সম্পদ্ধাঃ প্রচুতাহি তে । ভারিকিপ। গুরুৎ মোহাৎ পরিষং প্রবদক্তি যে । শকরত্ত্ব ভবত্যের তেষ্ট জন্মশতেষ্পি। যে

গুরবইতি বহুবচনং গৌরবেণ। যদ্বাপ্রস্কাদন্যেযামপি গুরুণং সংগ্রহার্থং। তেচোক্রাই কৌর্মো। উপাধ্যারঃ পিতা ক্লোকোভাত চৈব মহীপতিঃ। মাতুলঃ শৃশুরঃ স্থামাতা-মহপিতামহৌ। বণ্জোটঃ পিতৃবান্ধ সর্বো তে গুরবঃ স্মৃতাঃ। গুরুণামপি সবেষাং পূজ্যাঃ পঞ্চ বিশেষতঃ। তেষামাদ্যাস্ত্রয়ঃ শ্রেষাং মাতা স্বপূজিতা। কিঞা। যোভাবয়তি যাহতে যেন বিদ্যোপদিশাতে। জ্যেটোভাতা চ ভর্তা চ পঞ্চৈতে গুরবঃ স্মৃতাঃ। আহানঃ সর্বয়েমেন প্রাণত্যাগেন বা পুনঃ। পূজনীয়াবিশেষেণ প্রেণতে ভূতিমিচ্নতি।। ১৪০।। গুরুত্যাগেন প্রমানর্থং দশ্যন্ গুরুমাহাত্মানের ক্রুয়তি উপদেকীর্মিতি ব্রিভিঃ। আনুয়াগতং কুলক্রমায়াতং বেদবিহিত্যা।। ১৪১॥ বোধঃ জ্ঞানং বিদ্যা বা ।। ১৪২॥ গুরুং প্রতিপদ্য গুরুত্বেন স্বান্তায়িমিত্যাদিনাচ কথ্ঞিদপি গুরুনত্যাক্র্য

শুরুদ্রে হিলে মৃটাঃ সভতং পাপকারিণঃ। তেষাঞ্চ যাবৎসুকৃতং দুক্তং স্যান্ত্র সংসায়। ১৪৫। অতঃ প্রাগ্যুক্তমভার্চ্য কৃষ্ণভাবেন বুদ্ধিমান্। তাবরানসমান্কুর্যাৎ প্রণামান্দগুলাতবং। অতএব কৌর্মে প্রীব্যাসবচনং। ব্যত্যশুপানিমা কার্য্যম্পসংগৃহনং গুরোঃ। সব্যেন সব্যঃস্পৃষ্টব্যোদক্ষিণেন তু দক্ষিণইতি।। ১৪৬।। অথ প্রীগুরুপাদানাৎ প্রাপানুজ্ঞাঞ্চ সাধকঃ। প্রাক্ সংস্কৃতৎ হরের্গেইং প্রবেক্ষ্যন্পাদ্কে ভ্যক্ষেং। তথাচাপস্তয়ঃ। অগ্যাগারে গ্রাংগোঠে দেবব্রাহ্মনসমিধী। জপে ভোজনকালে চ পাদুকে পরিবজ্জরিদিতি।। ১৪৭।। ততঃ প্রীভগবৎপূজা মন্দিরস্যান্ত্রমান্তরং। প্রকাল্য হস্তো পাদৌ চ দ্বিরাচমনমাচরেং। তথাচ মার্কণ্ডেরে। দেবার্চ্চনাদিক। র্য্যাণি তথা গুর্জভিবাদনং। কুর্জাত সম্যগাচম্য তদ্বদেব ভূজিক্রিয়া মিতি।। ১৪৮।। ইতিপ্রিগোপালভট্টবিলিখিতে ভগড়ক্তিবিলাসে প্রীবৈক্ষবালক্ষারান্য চতর্থেবিলাসঃ।। ৪।।

ইতি লিখিতং অধুনা তত্র মোহাদবৈষ্ণবোগুৰুঃ কৃতক্ষেন্তর্হি স পরিত্যাক্য ইতি প্রসঙ্গং পূর্বাবাদা নিথতি অবৈষ্ণবৈতি। প্রাহরেদিতি স্বার্থেইন মন্ত্রং গৃহ্নীয়াদিত্যর্থঃ। যবা সাধুক নত্যাদ্শং জনংকুপয়া মন্ত্রং প্রাহরেদিত্যর্থঃ। বৈক্ষবাং প্রায়োব্রাহ্মণাদেবেতি জ্বেয়ং পূর্বারং গুরুলক্ষণে তথালিখনাং॥ ১৪৪॥ প্রীগুরুতক্রেদিতাবিয়ব তদ্ভক্তানাং তুর্গতিদোঘান্ নিথতি বে গুর্বাজ্যাদিনা। তথব সততং পাপকারিণোভবত্তি॥ ১৪৫॥ ত্রায়হবরা অন্ত্যা থেয়ু তান্ ত্রিভ্যোহন্য নানিভার্থঃ অসমান্ অমুগ্মান্। উপসংগ্রহণং প্রীপাদলয়ধারণং তৎপ্রকারমেবাহ সব্যোনেতি নিজ সব্যপাণিনা গুরোঃ সব্যাপাদইতার্থঃ। এবমগ্রেপি॥ ১৪৬॥ প্রীগুরুপাদানামিতি গৌরবেণ বছত্ত্বং। সাধকঃশ্রীভগবদারাধকঃ। প্রবেক্ষান্ প্রবেশং করিষ্যন্ প্রবেশাৎ পূর্বেমেবেত্যর্থঃ। পরিবজ্জ গ্রেং অগ্যাগারাদিভ্যোদূরতস্থাকেদিত্যর্থঃ॥ ১৪৭॥ সম্যগাচম্যেতি দ্বিরাচমনংবোধয়তি তথৈব সম্যক্রীং॥ ১৪৮॥ ইতিচন্তর্থঃ

## शक्षमानः।

প্রতিতন্যপ্রভূ বন্ধে বালোপি যদনু গ্রহাৎ । তরেয়ানামত গ্রাহব্যাপ্তং পূজাক্রমার্বং । মা প্রিমান্তের প্রাক্রমার্বং । লিখ্যতে হর্জাবিধি গড়িং ক্রমদীপিকয়েকিতঃ । আগ্রুমোজেন মার্গের ভগবান্ ব্রাহ্মণৈরপি । সদৈব প্রেলাহতালেখ্যঃ প্রায়ন্তাগনিকে।বিধিং ।। ২ ।। তথা চ বিষুষ্মানলে । ক্রতে প্রভার্কি ন্যাৎ ত্রেভায়াং মৃতিভাবিভঃ । ঘাপরে তু পুরাণোক্তঃ কলাবাগম সম্ভবঃ । অন্তর্জা শুক্রকপাহি ব্রাহ্মণাঃ কলিসম্ভবাঃ । তেরামান্মমার্গের শুক্রিক প্রাহ্মনার বিধিন । এ ।।

অথ দারপূজা। এক্ষণ্ধারদেবেভ্যোদন্তা পাদ্যাদিকন্ততঃ। গদ্ধপুলৈর ক্ষেত্রান্
যথাস্থান যথাক্রম ।। ৪।। দারাত্রে সপরীবারান ভূপীঠে ক্ষপার্ধদান্।
তদ্প্রে গরুড় দারস্যোর্দ্ধে দারশ্রিয় যজে । প্রাগ্রাভরপার্দ্ধে তৃ যদেকতও
প্রচণ্ডকৌ। দ্বারে চ দক্ষিণে ধাতৃ বিধাভারৌ চ পশ্চিমে। দ্বয়ঞ্চ বিদ্যুদ্ধিব বল

শ্রীতৈতন্যায় নমঃ। বালে। হজ্ঞঃ পক্ষে শিশুঃ। নানা বিধমতান্যের গ্রাহাটে জ্ব্যাপ্তং। পূজায়াঃ ক্রমে বিধিঃ বিধ্যনুক্রমোরা স এবার্ণবস্তং।। ১ ॥ অফ্রাদশান্তর মন্ত্রেণ বোর্চাবিধিঃ পূজা প্রকারঃ স লিখ্যতে। যদ্যপি দশান্তরাদিনাপি পূজাবিধে ভেদোনান্তি তথাপি স্থানাদিভেদ্য পেক্রা তথা লিখিতং। গুঢ়োপি ক্রমদীপিকয়া শ্রীকেশবাচার্যাবির্ভিতয়া ঈক্ষিতঃ দশিতঃ সন্। আতঃ ক্রমদীপিকোক্রামুগারেণ লেখাইতিভাবঃ ।। ২ ॥ তেখামাগমমার্গেণ শুদ্ধিন শ্রোতবয় নেতানেন তৈরপি আগ্রমকবিধিনের পূজা কার্যোতি ভাবঃ। তথাতৈকাদশক্রে । নানাতন্ত্রিধানেন কলাবপি তথাশূলুইতি। তত্র শ্রীধরশ্বামিপাদাঃ। নানাতন্ত্রবিধানেনেতি কলৌ তন্ত্রমার্গস্য প্রধান্যং দশ্রতীতি॥ ৩ ॥

তান্ এর্কজনারদেবান্ । প্রণবাদিচন্তর্গন্তং দেবনাম নমোন্তকমিতাথে লেখাজাদত্রৈষ প্রয়োগঃ । জিরকজনারদেবতাভোঁনেমঃ । জনেন মপ্রেণ পাদ্য ব্যাদকং দক্তা গল্ধাদিতিঃ পুনর্বিশেষেণ পূক্রদেবিতার্গঃ । এবম্প্রেপি সপরিবার্রভাঃ প্রিরক্ষণার্যদেভোনম ইত্যাদি প্রয়োগোদেইবাঃ ॥ ৪ ॥ এবং সামানোন সর্বেষ মের পূজাবিধিলিখিতঃ ইদানীং ষথাজানং ঘথাজামমিতি ষল্লিখিতং ওদের বিবিচা লিখতি দারাগ্রেইতি দাভাগং। ভ্রাপ্যাদৌ দাব ন্যাথে যহভূরণং পীঠং তত্র সমন্তপরিবারাত্বিভান্ প্রিরক্ষপার্যদান্ বক্ষেৎ পূজ্বেছ । জনস্তবং তথা দারস্যাথে গল্পং। বদাপি দার্ভিয়োহর্তনং প্রলাত্তনানন্তর্মের ক্রমনীপিকারাম্ভং তথাপি ইক্টেতি জ্বাপ্রতারেন্ত থাদিপুজাতঃ পূর্বকালএবেতি বোধিতং তথৈর সদাচারাত।

প্রকাষ্ট্রে। রন্দৃশংশুর মভার্চ্য দেহল্যাং বাস্তপূরুষং 11 ৫ 11 দ্বারান্তঃ পার্ধরোল্কাং মন্নাঞ্চ ততাং সরিহ । তৎপার্ধরোঃ শশুনিধিং তথা পদ্মনিধিং
হলেং ।। ৬।। গণেশং মন্দির্ম্যাধিকোর গিঞ্চ নৈখাতে । বানীং বারব্য এশানে
ক্রেপালং তথার্চরেহ ।। ৭।। দ্বাংশাথামাশ্রুষ্ বামাৎ সক্ষোচ্যান্ধানি দেহলাও ।
তালপ্রিট্র প্রবিশেরেশা নাস্ট্র প্রাগ্দ্ধিনাং পদ্ধা ৮ ।। তথার শারদাতিলকে ।
বিঞ্জিৎ লপুনন্ বামশাথাং দেহলাও লন্ত্রন্ গুরুঃ । অঙ্কং সক্ষোচ্যান্তঃ প্রবিশেদ্দিনার্দ্ধিনিধি লাগ্রন্থ বিশ্বোর্দ্ধানিধি
কৃতিবিশান্ । তথাহান্ধাঞ্চ হরিভক্তিস্বোদ্ধার । প্রবিশারালয়ৎ বিশ্বোর্দ্ধার্থি
কৃতিবিশান্ । ন ভূয়াং প্রবিশেষাতঃ কুক্ষিকারাগৃহং স্থীঃ ।। ১ ।।

অথ গৃহান্তঃপূজা । নৈশ্বতে বাস্তপুরুষৎ ব্রহ্মাণমপি পূজ্যেও। আসনস্থেষেজেন্তাৎস্তানহন্ত্র ভগবিদ্যুগাও ॥ ১০ ॥ তত্ত্পূজামন্ত্রশ্বেজান্তঃ । প্রান্ত্রাদিও প্রান্তঃ দেবনাম নমোন্তকঃ । পূজামন্ত্রমিদং প্রোক্তঃ সক্রো-চর্চনকর্মনীতি॥ ১১ ॥ অথক্ষাগ্রতিন্তিগুল্কান্ত দিগুল্বনং ক্লিপের । পূজ্যাক্ষতান্ সমস্তাদ্ধিক ত্রোক্তমন্ত্রতঃ ॥ ১২ ॥

কিঞ্ছ দৃদ্দইতাতো লিখনাৎ চণ্ডপ্রচণ্ডাভ্যাং নম ইত্যেবং যুগান্থেন প্রয়োগো জেয়।। ৫।। দারস্যান্তঃ অভ্যন্তরে তৎপাপ্দিয়ে তয়োগঞ্চাযমুনয়োঃ পাশ্বদ্ধয়ে। ৬॥ আগ্নেয়ে কোণে গণেশমর্চ্চয়েও। তথাচোক্তং ক্রমদীপিকায়াং। পরিবারাঃ ক্রতাঃ সর্ব্বে পুনঃ এবিঞ্পাযদল স্বারাত্রাবলিপীঠে২র্চ্চাঃ পক্ষীক্রণ তদ্প্রতঃ । চহপ্রচণ্ডৌ প্রাগ্ধাভূবিধাতারৌ চ দক্ষিণে॥ জয়শ্চ বিজয়ঃ পশ্চাৎ বলঃ গ্রার উত্তর । উর্জে দার গ্রিয়ং চেফ্রা দার্যোতান্ যুগ্মশোহর্চয়েং। পুরোবাস্তপুমাংস্কত্র তত্র দ্বালীঠমধ্যতঃ। দ্বারান্তঃ পশ্বিয়োরচ্চ্যা গজা চ যমুনানদী। কোনেষু বিষ্ণুং তুর্গঞ্জি বাণীং কোতে সমচ্চ য়েদিতি ॥ ৭ ॥ ব।মাং স্ববামভাগবর্তিনীং দ্বরিশাখাং আশ্রয়ন্ ঈষৎ স্পৃশন্। নিজাঙ্গানি সংকোচ্য দেহলীং অস্পৃষ্ঠ। ন লগ্ধয়িত্বেত্যৰ্থ:। দক্ষিণং পদং প্রাক্ আদৌ ন্যস্ন্। নিকিণপাদন্যিক্মেণেত্যর্থঃ। বেশ্য শ্রীভগবন্দরং ইরের্গেইং প্রবেক্ষ্যার তি পূর্ব্বলিখনাৎ। প্রবিশেৎ তল্পখ্যং শনৈঃ পূজকোগচ্ছেৎ।। ৮॥ গুরুর্তি দীক্ষাবিধানোক্তঃ।। ৯॥ ভগবল্ছাৎ দেবগলয়াদন্যত্র পরিমন্ স্থানে তাংস্তান্ শীক্ষপার্ধদাদীন্ সর্বান্। আক্ষমত্বঃ আক্ষমে উপবিকঃ সন্মেব পূজারেও অতএব তথাগ্রে লেখ্যং বিঘুনিবঃরাং । পূজারন্তে দারদেবতাপ্জায়াঃ প্রাণেব ভগবদগৃহে তুতিষ্ঠন্নেবতাংস্তান্ পূক্ষয়েদিতার্থঃ ভগবদগ্রেইন্য পূজার্থাসনাযোগ্যস্থাৎ। মদ্বা তত্তৎপূঞার্থং তত্তদত্তা গমনেন পুনঃপুনরাসনাসম্ভবাৎ। মুহুরাস নেন কালাপেকাচ্চ। অতএব পাঞ্চিপ্রহারাদিন। বিঘুনিবারণমতালিখিত্বা নিশ্চলাসনাৎসরে হগ্রে লিথিষ্যতে ॥ ১০ ॥ অত্র প্রায়েদ্বালয়ান্তঃপূজাবিধিলিখনাৎ কেচিচ্চ ছারপুঞ্চানন্তরং গৃহান্তঃপ্রবেশাৎ প্রাণের বিম্ননিংরণমিছন্তি। অত্র সংসম্পুদায়াচারএব গতিরিতি দিক্। দেবস্য পূজাস্য নাম। পূজামন্ত্রমিতি নপুংসকত্রমার্যং॥ ১১॥ তত দিগুল্ধানে পুস্পাক্ষেপণে চ উক্তঃ শাস্ত্রে যোমন্ত্রঃ ওঁ শাঞ্চ ায় দশরায় হংকট্নগইতি তেনেত্যর্থঃ॥ ১২॥

অথ পূজার্থাসনং। ততশ্চাসনমত্ত্রণাভিমন্ত্রণাভ্যক্ত চাসনং। তল্মিয়ুপবিশেৎ প্রমাননেন স্বত্তিকেন বা।। ১৩।। তত্ত্বকার্তকং প্রায়া দিবলে প্রাঙ্গুম্থোভিবেং। উদঙ্গুথোরজন্যান্ত শ্বির্মূর্ত্তি সংমুখং। তথাটেচনাদ স্কলে। তাসীনং প্রাঞ্গুলি সংমুখং। অথাসনমন্ত্রং। আসনমন্ত্রস্থা মারুপ্রস্থাবিং স্তলংছনদং। ক্র্যোদেবতা আসনাভিমন্ত্রণে বিনিয়োগং। পৃথি স্বয়া ধৃতা লোকা দেবিত্বং বিশুনাধৃতা। স্বঞ্চ ধারয় মাৎ নিত্যং পবিত্রমাসনং কুরু।। ১৪।।

অথাসনানি । নারদপঞ্রাত্রে । বংশাশ্যদারধরণী ত্ণপল্পরিনিমিতং । বর্জয়ে দাসনং বিদ্বান্দারিত্যের নিমিত্ব । রক্ষাজিনং কয়লয়া নান্দাসনমিষ্টে । ১৫। অন ত্রচ। রক্ষাজিনং ব্যাযুচ্ম কৌশেরং বেত্রনিমিতিং। বস্ত্রাজিনং কয়লয়া কল্পার্দাসনং মৃদু ।। ১৬ ।।

অথ বিশেষতআসনদোষগুণে। নারদপঞ্চরাতো। বংশাদান্তর্দরি ছবং পাষাণে ব্যাধিসম্রবং। ধরণ্যাং দৃংখসমূতিং দৌর্ভাগ্যং দারবাসনে। তৃণাসনে যশোনানিং পল্লবে চিত্তবিভ্রমং। দক্তাসনে ব্যাধিনানং কমলং দৃঃখমোচনং।। কিঞ্চ শীতণবদ্যাভাগু। শুচো দেশে প্রতিষ্ঠাপ্য স্থিরমাসনমান্ত্রনঃ। নাজ্যুচ্ছিতং নাতিনাচং চৈলাজিনকুশোত্তরনিতি।। ১৭।। স্কৃথাক্তমুপবিশ্যাথ সংপ্রদায়ানুসারতঃ। শাখাদিপুজাসম্ভারান্ন্যস্তত্তংপদেশু তান্।। ১৮।।

অত্র পাত্রাসাদন । স্বস্থানা এতঃ শত্রং সাধারং স্থাপয়েচ্পঃ। তত্রবার্ঘাদি-পাত্রাণি ন্যাসেচ স্থারি ভাগশঃ।। ত্লসাগ্রপুস্পাদি ভাজনানি চ দক্ষিণে। বানে চ স্থাপয়েৎ পাশ্বে কলসংপূর্মন্তসা। দক্ষিণে ঘৃতদীপঞ্জ তৈলদীপঞ্চ বামতঃ।

অভার্চ্য ওঁ আধারশক্তয়ে নম ইতি সংগূজা। তিমান্ আসনে। তত্র পদাসনং। সবাং পাদমুপাদায় দক্ষিণোপরি বিনাদেং। তথৈব দক্ষিণং সব্যাদ্যোপরিফারিধাপয়েং। বিফ ভা কটারোগ্রীবানাসাগ্রনাজ্বলোচনং। পদাসনংভবেকেতংসক্ষেমাপি পুজিভমিতি। কৃচিচ্চ। বামেরপরি দক্ষিণংছি চরণং সংস্থাপা বামস্ততইত।।দি। স্থান্তকং চোভংং। জানুক্রেরের সমাক্ কৃত্রা পাদতকে উভে। ঋজুকায়োবিশোদ্যোগী স্বন্তিকং তং প্রচক্ষতইত।। ১৩।। তত্র আসনে। প্রায়ইতি দিবা প্রাঙ্মুখত্বস্য নক্তং চোদঙা খুস্বস্য প্রশন্তত্বাং।। ১৪।।

তৃণাসনঞ্চ দভাতিরিক্ততৃণনির্মিতং জ্বেরং। একাদশস্ক্ষে প্রাক্দর্ভিঃ কম্পিতাসনইতি শ্রীভগবদ্ধক্তেঃ।। ২৫।। ক্বৃষ্ণাঞ্চিনং ব্যাঘ্চর্মেত্যাদিনা আসনাদৌ মতভেদ আশ্রমাদিভেদেন। তক্র বহুনাং সতাং যায়তং তদেব শ্বসংপ্রদায়ানুসারেণ গ্রাহ্মিতিদিক্।। ১৬।।

চেলাজিনকুশোওরমিতি প্রথমং প্রাগগ্রক্শান্তত্পরি কৃষণজিনং উত্পরি চীর-মিতার্থঃ।। ১৭।। সংপ্রদায়ানুসারতইতি বিবিধমতভেদাভিপ্রায়েণ। তত্তৎপদেষু তেঘাত্তে-ষামুচিতস্থানেষু তান্ প্রসিদ্ধান্ অগ্রে লেখ্যান্ বা।। ১৮।।

তদেব বিবিচ্য লিখতি স্থান্যেতি সার্দ্ধক্রয়েণ। আধারঃ শঋসাশ্রয়ন্তৎসহিতং।তত্র স্বা

সম্ভারানহপরার্গনে ও স্বদ্ফিবিষয়ে পদে । করপ্রকালনার্থক পাত্রমেরং স্বপ্ততঃ।

অথ পাত্রাণি তয়াহাত্রঞ্জ। দেবীপুরাণে। নানাবিচিত্ররপাণি পুণ্ডরীকার্ক্তীনি চ। শশ্বনীলোপলাভানি পাত্রাণি পরিকণ্পয়েৎ। রত্যাদিরচিতান্যের কাঞ্চীমূলযুতানি চ। যথাশোভং যথালাভং তথা পাত্রাণি কারয়েং। কিঞ্চ। হৈমপাত্রেণ
সর্বাণি চেপ্সিতানি লভেমুনে। অর্ঘ্যং দল্প। তথা রৌপ্যোগায়ুরাজ্যং শুভং ভবেং।
তামুপাত্রেণ সৌভাগ্যং ধর্মং মৃণ্যুয়নন্তবং। বারাহে। সৌবর্ণং রাজতং কাস্যং যেন
দীয়েত ভাজনং। তান্ সর্বান্ সংপরিত,জ্য তামুদ্ধ মম বোচতে। পবিত্রাণাংপবিত্রং
যোমঙ্গলানাঞ্চ মঙ্গলং। বিশুদ্ধানাং শুটিঞের তামুং সংসারমোক্ষণং।। ১৯।।
দীক্ষিত্যানাং বিশুদ্ধানাং মম কর্মপ্রায়ণঃ। সদা তামেণ কর্তব্যয়েবং ভূমি মমপ্রিয়মিতি।। ২০।। কেচিচ তামপাত্রেষ্ব গ্র্যাদেযোগদোষতঃ। তামুভিরিক্তমিছেভি
মঙ্গপর্কস্য ভাজনং।। ১১।। তথৈর শশ্বমেবার্ঘপাত্রমিছন্তি কেচন। শশ্বে ক্রাত্র পানীয়ং সপ্রস্পং সলিলাক্ষতং। তর্ঘৎ দদাতি দেবংস্যত্যেবং স্কান্দেংভিধানতঃ।। ২২।।

আথ মঙ্গলঘটস্থাপনং । মঙ্গলার্জ্য কলসং সজলং ক্রকাল্বিতং। ফলাদি-সহিতং দিবাং নাস্যেজগবতো হাতং। তথাচ স্কান্দে। কুন্তং সকরকং দিবাং ফল-কপূরি সংমৃতং। নাসে দের্জনকালে জু কুফস্যাতীর বাভমিতি।। ২৩।। কিলা। সনীর্জ্য সকপূরিং কুন্তং কুলার যোন্যাং। কম্পেং তস্যান পাপেকাং কুর্কান্তি প্রসিতামহাং ।। ২৪।।

অথ। ঘ্যাদিপাত। বি । প্রকিপে দ্র্যাতিত গুলম্পুসাক্ত। ন্যবান্। কুশাগ্রতি-

মাগ্রে এব । আদিশকেন পাদ্যাচমনীয়মধপকাঃ । ভাগশঃ পৃথক্ পৃথগিতার্থঃ । দকিণে জলস্যাদিপত্রাণি । কলসং প্রোকণীয়জলকুস্তং । অপরান্ বস্তালক্ষারাদীন্। স্বস্যায়নো দৃক্টেকিবিষয়ে গোচরে যৎ পদং স্থানং তিমিন্।

<sup>॥</sup> ১৯॥ দীকিতানাং মধ্যে যোমংকর্মপরারণস্তেন সদা তামেন কর্ত্তব্যমিত্যর্থঃ ॥ ২০॥ গবার্য ইত্বাতিরিজ্ন্য হক্ষাদিগোরপন্য আদিশকান্যধ্নশ্ধ যোগে সংযোগে দোনাক্ষেতোঃ। তথাচ স্মতিঃ। তামুপাত্তে হিতং গবাং মদ্যত্তন্য বৃতং বিনেতি। মধুনক হরাপরিবর্তেন তাম্পত্তে দেরত্বাং । কেচিদিতি হ্বনতং ব্যাবর্ত্তাত। দিনি দিনি মধুনক প্রেউদ্পুর মমেতি সাক্ষেত্র বিদ্যাক্ষর হেবজ্ঞে। ২১॥ কেচনেক্ষ্ত্র হাত্র হেন্তং লিখাত শত্থে কুত্তেতি। কান্দে ইতিধানতং ক্ষেপ্রাণেত্তিঃ॥ ২২॥

পূর্বাং প্রোক্ষণীয়বটন্থাপনং নিখিতং ইদানীং মঙ্গুসঘটনাসং লিখতি মঙ্গলার্থমিতি। আদিশব্দেন কপ্রাক্ষতাদি। দিব্যং পর্মন্থনরং॥২৩॥ কণ্পং ব্রহ্মদিনং ব্যাপ্য পাণে ঈক্ষাং দৃটিং ন কুর্বন্তি ক্রিয়মাণমপি পাপং ন গ্রন্থাত্যর্থঃ। ২৪॥

লদুর্বাশ্চ নিদ্ধার্থনিপি সাধকঃ। কেচিচাত্র জলাদীনি ত্রব্যাণ্যফৌ বদ ভি হি । মতণ উত্তং ভবিষয়। আপঃ করিৎ কুলাগ্রাণি দধ্যক ভতিলাক্তথা। হবাঃ নিদ্ধার্থকা শবে মর্ব্যাহটীক্ষঃ প্রকীজিতঃ। পাদ্যপাত্রে চ কমলং দুর্বাং শ্যামাকমেন চ। নিশ্বিংশদিয়ু পত্রী ক্রত্যেং ত্রব্যাচন্ত্র ইয়ং। তথৈবাচমনীয়ার্থপাত্রে প্রবাহ বৃংঃ। জাত্রীফলংলবহুঞ্চ করোলমাপি নিন্ধিপেথ । মধুপর্কীয়পাত্রে চ গবাং দধি পয়োঘৃতং।
মধুপত্রপীত্যেবং নিক্ষিপেদুব্যপঞ্চকং।।২৫।। কেচিন্রীন্ধের পাত্রেহলিন ত্র্ব্যাগীচ্চন্তি সাধবঃ। যতউত্তং শ্রীহিমুধ্যে । বৃত্তং দধি তথা ক্রেড্র মধ্পর্কোবিধীয়তে।
আদিবার্গিছে চ। দধি সর্পির্মধু সমৎপাত্রে ওতুম্বর মম। মধনস্ত জলাতে ত হুড়েন
সহ নিশ্রেয়ে । যুভন্যালাতে সুলোণি লাজৈশ্ব সহ নিশ্রেয়ে । তথা দুল্লোহপ্রলাতে
ত ক্রীরেণ সহ নিশ্রেয়েদিতি।।২৬।। তেয়ামভাবে পৃক্যাদি তত্ত্যাবন্যাক্রিণে ও।
নারদ্পাত বিমলেনোদকেনৈর পূর্য্যতে।।২৭।। মূলেন পাত্রেণিকৈকমন্টরুড্রোহ্ন ভিমন্ত্রয় । কুর্য্যাচ্চ তেয়াৎ পাত্রাণাৎ বক্ষণগুক্রমুদ্রয় । পূজামারভমাণ্যেহি
হথোক্তাসন্মাহিতঃ। পঠেনজ্ললশান্তিত্রং যাহচনে সম্মতঃ সতাং।।

অথ মজলশান্তিঃ । ওঁ ভদ্রৎ কর্নে ভঃ শৃণুয়াম দেবান্ ভদ্রৎ পশো,মাঞ্চি ভি
ইঞ্জীঃ । ভিরেরজৈন্ত্রনাৎসন্তর্ভারি শোলম দেবছিতং হদঃমুঃ । স্বন্ধি ন ইন্দ্রে কৃত্রমাঃ স্বান্ত নঃ পূষা বিশ্ববিদাঃ স্বন্তি নন্তাক্ষোই রেউনেমিং হাতি নোব্যক্ষতি দ্বিত্তি পঠন ও শান্তিঃ শীক্ষপাদপ্রার ধনেষু শান্তির্ভাতি ।। ২৮ ।।

তথিবিঘুনিবারণং। অপসপ্ত তে ভূতা যে ভূতি:ভূবি সংস্থিতাঃ। যে ভূত।বিঘুকর্তারতে নশ স্ত শিবাজয়। ইত্যদীর্য াস্ত্রমন্ত্রেণ বামপাদসঃ পার্ফিনা। ঘাতৈত্তিভি - ক্রোবিঘান ভৌমান স্কায়িবারয়েৎ ।। ২৯ ।। অভ্রীক্ষাৎস্য তেনৈবাছে।
ক্রোলত্রেণ চি। নিরস্যোৎসারয়োদিব্যান্ মান্তিকো দিব্যদ্কিতঃ।। ৩০ ।।

অত্ত অর্থাপারে । ২৫ ॥ অবিশ্বধপর্কপাত্তে । উত্তর্বে তামে। অত্ত ঘৃতং বিনেতি সা ত্রাক্তা ঘৃতসাহিতে ন তামেপি গবাসা সংযোগে দ্রবান্তরসংযোগেন চ মধুনোপি ন ছুষ্যত্যেবিতি হাছিতং॥ ২৬ ॥ নন্ গুড়াদাভাবে তথানাসাপি কসাচিদভাবে সতি কিং কার্যমিত্যপেকান্যামাহ তেথামিতি । উজ্ঞানাম্হাদিদ্রব্যাণামভাবে সতি তল্পজ্ঞানন্যেতিতেখাশ্বেষাংদ্র্যাণাং মধ্যে যদ্যর লভীতে তথা তসা ভাবনয়া তভ্তদিদ্মিতি চিন্তরিত্ব তত্তৎপরিবর্তেন তত্তৎ পাত্রেষু পুলাদিকং নিন্ধিপেদিতার্থঃ । আদিশকেন জ্বসীপত্রাদি । নন্ পুলাদাভাবে হপি কিং কার্যং তত্ত লিখতি নার্মন্তি । পুষাতে তত্তৎপরিপূর্ণতা ভবতীত্যর্থঃ॥ ২৭ ॥ মুলেন মূলমন্ত্রের ॥ ২৮ ॥

<sup>্</sup> অস্ত্রমন্ত্রং অস্ত্রার কভিতি। যথা যশ্মিন্ মন্ত্রে যোহস্ত্রমন্ত্রেইনর। পাঞ্জিনা যে ঘাতঃ প্রহারাত্তঃ ॥ ২৯॥ তেন অস্ত্রমন্ত্রেণ। দিব্যদ্যিতইতি মূলমন্ত্রসঞ্জিত চদিব্যদ্যা দিব্যান্ বিশ্বান্ৎসারয়েদিত্যর্থঃ॥ ৩০

- অথপ্রীপ্রবাদিনতি: । ততঃ কৃত্বাঞ্চলিং বামে প্রীপ্তরুৎ পরমং শুরুৎ। পরমেন্টি-শুরুঞ্চেতি নমেন্টুরুপরম্পরাৎ । গণেশৎ দক্ষিণে ভাগে দুর্গানপ্রেছ্থ পৃষ্ঠতঃ। ক্ষেত্রপালং নমেন্ত্রন্তঃ মধ্যে চাত্মেন্টবৈবতং ।। ৩১।। ততশ্চান্ত্রেণ সংশোধ্য করৌ কুর্ম্বীত তেন হি। তালত্র্যুৎ দিশাৎ বন্ধমিগ্রপ্রাকার্যের চ ।। ৩২ ।।

অথভূতশুদ্ধিঃ । শরীরাকারভূতানাং ভূতানাং যদ্বিশোধনং । অব্যয়ব্রহ্মসম্পর্কাৎ ভূতশুদ্ধিরিয়ং মুতা।। ৩৩ ।। ভূতশুদ্ধিং বিনা কর্ত্র্কপহোসাদিকাঃ ক্রিয়াঃ। ভরম্ভি, নিজ্ফলাঃ সর্বা যথাবিধ্যপ্যনুষ্ঠিতাঃ ।। ৩৪ ।। ভৎপ্রকার শ্চায়ং । করক ভ্রিনাং রন্ধানাং বৃদ্ধা ভ্রমজ্জতঃ । শিরংসহস্পত্রাজ্ঞে পরমাত্মনি যোজ্যেং । পূরিয়াদ নি ত্রু নি ভ্রমন্ লীনানি ভাবয়েং ।। ৩৫ ।। বামহন্তংভ্রোজানমধোদ্ধিণ বিজ্ঞাই করকভ্রপিকা মুদ্ধ ভূতশুদ্ধী প্রকার্ত্তিতা ।। ৩৬ ।। দেহৎসংশোষ্য

বামে গুরুপরম্পরাং নমেৎ। অত্র প্রয়োগঃ। ওঁগুরুভ্যোনমঃ গংগণেশায়নমঃ ইত্যাদি॥ ৩১॥ এবার্থো হিশকঃ তেন অক্রমক্রেণৈব উর্দ্ধোর্কভালত্রয়াদি কুর্য্যাৎ। তত্তঃগ্লিপ্রাকারমান্সনঃ পরিতঃ কুর্যাং।। ৩২॥

অথভূতভাষিং লিখিষ্যশ্লাদৌ ভদর্থং লিখতি শরীরেতি। শরীরস্য আকারভূতানাং আরু-ভিত্তং প্রাপ্তালাং শরীরতয়া পঁনিণভালামিতার্থঃ পঞ্মহাভূতানামুপলক্ষণমেত্ৎ সংক্ষো-মেব দৈহিকতত্ত্বানাং অব্যয়ত্ৰকাণোজীবভজুস্য সম্পৰ্কান্তদীত্মকত্মা বৰা শ্ৰীভগৰতো ২ংশত্ত্বন সম্বন্ধান্তে ক্রিশোধনং কার্য্যকারণাদি ভিন্নতয়া বিজানং যং ইয়নের ভৃতশুদ্ধিমতাই ভিজ্ঞৈঃ॥ ৩৩॥ অধুনা ভূতশুদ্ধেনিভাতাং লিখতি ভূতশুদ্ধিনিত। কর্জপাদিকারিণঃ। যথা-'বিধি বিধানতিক্রমেণ অনৃষ্ঠিতা নিজ্ঞাদিতা অপি নিক্ষণা ভবন্তি আত্মশোধনং বিনা মূলা-স্ভদ্ধেঃ॥ ৩৪॥ আত্মানং জীবাক্মানং প্রদীপকলিকাকারং সোহমিতি মন্ত্রেণ হ্বংপত্মাৎ শিরঃ . স্থিতস**হসুদলকম**লমধ্যবর্ত্তিপরমাজনি বুদ্ধা ভাবনয়া বিচারেণ বা যোজনেৎ। তদংশত্বাস্তদ-ভিন্নত্বেন ভদীয়ত্বেন বা স্বাঝানং বিজ্ঞানীয়াদিতাৰ্থঃ এবঞ সতি সোহ্মিতি সং প্রীভগ্রদংশঃ শুদ্ধবুদ্ধমুক্তস্বভাবোহং। যদা তদংশত্বেন তদধীবোলি গ্ৰেষ্বকোইস্মীতাৰ্থঃ। তভ্ৰু তিমিন্ পরমান্ত্রের পৃথিব্যাদীনি কার্যাক।রণতত্ত্বনি সর্বাংগ্যের তদেকমূলত্বেন লীনানি ভদন্ত-ক:নি ভন্মাময়ানি ব। বিভাবয়েদিভার্থঃ । তত্ত চু প্রলয়রীত্যা সাংখ্যোক্তস্ফিপ্রাভিলৌম্যেন কার্যাস্য কারণে লয়দ্বারা তেষাং সর্কেবামের পর্নিকারণেছধিভূতে ভাগবতি লয়ে। ফুটবাইতি দিক্ ।৷ ৩৫ ।৷ করকজুপিকাং ক্রেতি লি**খিতং তামেব দর্গছতি বামহন্ত মি**তি ॥ ৩৬ ॥ অধুনাভূতশুদ্ধিপ্রকারমেব-লিখতি দেহমিতি ছাজাং। বিধিনেতাস্য স্বীতৈব সম্বল্ধ:। ইদং পাঞ্চেট্ডিকং পাপমরং দেহং-সংশোষ্য সম্যক্ শোষং নীম্বা ডতোদগ্ধ্যা তদেৰ ভত্তামৃতবৃষ্ট্যা আপুরে পশ্চান্ত্পাদ্য তট্চাম্তবৃটিটাবেতুভিয়েরপোককারণভাদতাম্তবর্বতইভিকারণোলেধঃ। আনন্তরং দৃত্তীক্ষত্য এতচ্চ সহ্বাং ভাবনয়ৈব ততঃ প্রাণপ্রতিষ্ঠাং কুর্য্যাদিত্যর্থঃ। তত্র চায়ং বিধিঃ। আদৌ পাপপুরুষং हिन्তয়েৼ'। তথাচোকাং। মূলাজ্ঞানং ততঃ পাপং अञ्चानिছঃখনঞ যং। প্রোণাপানৌ নিরুধ্যাথ তথা ৰূপং বিচিত্তরেও। মহাপাতকপঞ্চাক্ত পাতকোপাক্ষণশ্রহ। উপপাতকরোমাণং কৃষ্ণ কুরাতিভীষণমিতি । অন্যত্র চ । ব্রহ্মহত্যাশিরকঞ্চ স্বর্ণন্তেয়

ভুজদমং। হাপানজ্বাবুক্তং গুরুত প্রকৃতিকরং। তৎসংযোগি প্রদ্ধন্ত রক্ষাতকং। উপপাতকরোমাণ্ং রক্তশ্রক্রবিলোচনং। খড্গ্চর্মধরং পাপমঙ্গুপ্রিমাণবংলা অধো-মুখং কৃষ্ণবর্ণং দৃক্ষকুকৌ বিচিন্ত গোদিত । তলাশার্থমাদৌ খুমিতি বায়ুবীলং ধুমুবর্ণং প্রম-শোষণং বামনাসাপুটে বিচিন্ত তলা বোড়শবার্লপেন বায়ুমাপুর্যা নাভিমপুরে বীজং মনদা নীজা চল্ডঃবৃত্তিবারলপেন কৃষ্ডকংক্ত্রা যং বীজোপবায়ুনা সপাপপুরুষং স্ব্বি-শ্রীরং সংশোষ্য যংবীজন্য দালিংশদারলপেন দ্কিণনাসাপুটেন তং বায়ুং রেচরেং। তভোর্মিতি বহ্নিবীলং রক্তবর্ণং বায়সম্বাং দক্ষিণনাসাপুটে বিচিন্তা তন্য বোড়শবার জপেন বায়ুমাপূর্য্য মূলাধারে বীকংনীত্বা চন্তঃযতিবারজপেন কুন্তকং হৃত্বা বীজোপবছুনা ন পाপপুরুষং সমন্তদেহং দক্ষা ভাত্তিংশভার**ভণেন ভশালা সহিতং বায়ুং বামনাসাপু**টেন বেচয়েছ। ভত্ঠমিতি চন্দ্ৰবীঞ্ খেতবৰ্ণ বামমাশাপুটে বিচিন্তা তথা বোড়শবারজপেন বায়ু माशृध्य कीवः जन्नवसुद्धः ठलः नीदा उक्तक्षयधनमध्य विमित्रि वद्भगवीकः धादा उना চতঃৰ্ফিৰারজপেন কুন্তকং কৃত্ৰা ঠং বীঞাত্মকচক্ৰান্ত্ৰ্ময়ীমমূতবৃ্ফিমুৎপাদ্য তয়াপুৰা ততঃ শরীরমুংপন্নং বিভাব্য পুনরকারাদিবর্ণরূপয়া ভয়া মাত্রান্যানানুসংরেণ করচরণাদিকমূৎ-পাদ্য লমিতি পৃথীবীজ্ঞস্য পীতবর্ণ্য ছাত্রিংশছারজপেন সমস্তং শরীরং দূটীকুর্বান্ দকিণ-নাসাপুটেন বায়ুং বেচয়েদিতি । অত চ তত্ত তত্ত ছাত্রিংশদ্বারক্সপেন পূর্ণং বেচনঞ্চ বোড়শবারজপেনেতি। রেচঃবোড়শমাত্রাভিঃ পূরোদাত্রিংশতা ভবেদিতি বচনাৎ। এডচ্চ কস্যচি-দেব মতং নত্ত ৰচ্ন।মিতাগ্ৰে ব্যক্তংভাবি । প্ৰাণপ্ৰতিষ্ঠাৰিধিশ্চায়ং । প্ৰাণগ্ৰতিষ্ঠামন্ত্ৰস্য ব্ৰহ্মবিষ্ণুক্ত সাখ ষয়ঃ ঋগ্যজুঃলামানি ছন্দাংসি অভিজ্ঞানাব। ছন্দঃ ক্রিয়াময়বপৃঃপ্রাণাখ্যাদেবত। প্রাণপ্রতিষ্ঠার্থে বিনিয়োগঃ। ওঁ কং খং গং ষং ঙং অং পৃথিব্যপ্তে জে।বামুাকাশাস্থনে আং হৃদয়ার নমঃ। ওঁ চং ছং জং এবং ইং শক্ষাশ্রপর্দগদ্ধাত্মনে ঈং শির্দে স্বাহা ওঁ টং ঠং ডং নং উং শ্রোত্রত্বক্রক্রিক্রামুগাত্মনে উং শিখারে বৌষ্ট । ওঁ তং ধং দং ধং নং এং वाक्পानिभामभागृभञ्चात्रात केर का कांग्र छः। उँ भः कः वः चः मः उँ वहमामानग्रमनिवर्गा-নন্দার্নে ও নেতৃত্রায় বৌষট্। ও যং রং লং বং শং বং শং হং লং কাং অং মনে। বুদ্ধাইংকার 6 ঙারনে অ: অস্ত্রায় ফট্। ওঁ আং নাতেরধঃ। ওঁ কীং ছাদয়াদানাতি।ওঁ ক্রৌ মন্তর্নাদাহৃদয়ং। **७७: ७ यर जुशाकात्व नमः क्रमि। ७ तर् धन्ताकात्व नमः मकि**गारम। ७ तर मारमाकात्व না ককুদি। বং মেদআল্লনে না ৰামাংসে। ওঁশং অস্থ্যাল্লনে না হৃদয়াদিকিণপানি পর্বান্তং। ও বং মজ্জাত্মনে নমঃ হৃদয়াত্মপাণিপর্যান্তং। ও সং শুক্রাত্মনে নমঃ হৃদয়াত্মকিণ-भाक्षभर्गतुः । इर श्रानाञ्चरन नमः क्रवशकांमभाक श्रमाञ्चर । ७ तर कीवाञ्चरन नमः क्रवशः-ন্নাভিপর্যান্তঃ। ওঁ ক্ষং পরমাত্মনে নমঃ হৃদয় অন্তর্কপর্যান্তং। তত্র ধ্যানং। বকু বিভাধিস্থপোতে:-লসদর ণসরোজ। ধিবঢ়া করাত্রৈঃ পাশকোদওমিক্দুত্তবস্থ গুণুস্থাকু পুত্রবাণ ন্।বিদ্রাণাসূক্ পালং जिनस्नशिका, भीमनत्काक्षराणा (प्रवीवामाकंदर्ग जवन अजकती आवमनिकः भन्ना म हें जि । प्राय कि पि हरूर मिथारम क्रिक्त हर हर थे जा की की का यर नर नर दर भर पर पर पर लः कः रहा दरमः मम धाना देव धाना देखि। नुबद्धात्व वीका मूकार्या प्रम कीव देव रिङ देखि। পूनकारन<ाकार्या मम नर्व्य अशाणि। भूनखाक्कार्या मम वाष्मनख् कवकृत्वाज णानवान हेशब्राह, वर्षात्र जित्र वर्षन विश्वेष व्यक्ष हेि सञ्चः। उत्याजनानिकषाण অথ প্রাণান্ত্রীয়া রেচঃ বেড়িশমান্ত্রাভিঃ পূরোদ্বাত্রিৎশতা ভবেৎ। চতঃষ্ট্রা ভবেৎ কুন্ত এবং স্থাৎ প্রাণসংহ্রা বিরেচ্য প্রনং পূর্বে সংকোচ্য গুদমগুলং। পূর্বিদ্ধা বিধানেন স্থাক্ত্রা কুন্তকে স্থিতঃ ।। ৪২ ।। ছত্র প্রণ্ডমতাস্থান্ বীজং বা মন্ত্রমূর্তিং। ক্ষাদিকারণং কৃত্র কুর্য্যান্ত্রানমত ক্রিভঃ। ভদ্যানক্ষোক্তং । বিষ্ণুৎ ভাসংকিরীটাকাদবলয়ককাক প্রধানে বাদ্যান্ত্রিশ্রাণী ভূষং স্বক্ষোম নিকারমত কুট্র-

সংখ্যার স্থানে যোড় শপ্রণবাব্দ্তীঃ কৃত্ব। শক্তিং পরাং স্থারদিতি ॥ ৩৭॥ এবং লিখিত প্রকালের পালানং সমাক্ শোধরিত্বা তেনচ উক্ষণা অর্চনাই রাং প্রভাবোর্যান্তাং নীত্বা পালাগ পুনস্তং ক্ষম্বমগ্রমানরে কিমর্থং কৃষ্ণং যত্ত্বং প্রায়ন্তং। ননু ভগবান্ প্রমায়ন্তং প্রেপ্রায়া পূর্ণি সংস্কলকমলে বর্ডতে ভত্র লিখতি বৃৎস্ত্রাং ভত্তর লেখতে ক্রান্তানি অভএব ভগবতো ধ্যানাদিকং ক্ষম্য়এব সর্বার নির্দ্ধিশ্যতই তি ॥ ৩৮ ॥ এত-দেব প্রমাণ্যান্য ভৃত্তি বিশ্বকারে কিঞ্জিং প্রপঞ্চা দল্যতি তথাচেতি সপাপং পাপপুরুষ সহিতং পৃষ্ঠাং দাহেন ভল্মসান্ত তং আভির্দারাভিঃ ॥ ৩৯।। ততঃ শরীরোৎপত্যাদ্যনন্তরং তলাৎ সংস্কালকমলাৎ প্রমাত্মনোবা সকাশাৎ তৎশুদ্ধাত্মত্ত্রপং ভেকঃ ॥ ৪০॥ তত্তা-শক্তে প্রকারান্তরং লিখতি কিয়েতি । চিন্তনমাত্রেণেতি প্রকর্ত্তকাদিকং বিনা কেবলং ভাবনাব্রে দেহশোধনাদিকং ক্রেত্তার্থঃ। সংপ্রদায়ানুসারতঃ ইতি ভৃত্তানী মন্তভেদায়ানাপ্রকার ত্রোপি তথা প্রশ্নিকার ক্রেন্তার্থং। ক্রেন্তিয়াত ইন্মির্বস্বেহ্বর বাং ক্রেন্তিয়া তিলালি তথা প্রমান্তিয়া তথা প্রমান্তিয়া তথা প্রশ্নিকার ক্রেন্তিয়া তথা প্রশান্তিয়া ক্রেন্তিয়া তথা প্রমান্তিয়া তথা প্রমান্তিয়া তথা ক্রিন্তিয়া ক্রেন্তিয়া ক্রিন্তিয়া বিশ্বতি বিশ্বনার স্বিত্তি বিশ্বনার স্বিত্তি বিশ্বনার ক্রেন্তিয়া তথা প্রমান্তিয়া ক্রিন্তিয়া ক্রিন্তিয়া ক্রিন্তিয়া ক্রিন্তিয়া ক্রিন্তিয়া ক্রিন্তিয়া বিশ্বতিয়া বিশ্বনার ক্রেন্তিয়া ক্রিন্তিয়া বিশ্বনার ক্রিক্তিয়া বিশ্বতিয়া বিশ্বনার ক্রিক্তিয়া বিশ্বতিয়া বিশ্বনার বিশ্বনার ক্রিক্তিয়া বিশ্বনার ক্রিক্তিত ক্রিক্তিয়া বিশ্বনার ক্রিক্তিয়া

মাত্রাভিক বোড়প্রীরেইঃ বাত্রিংশতার্চ পুরেভিবের এবংবতাদে রেইনং করে পুরণং ভুটিরেরা ব্যবহা জেয় মার চাই জ্যোগান্ত গতিপ্রীশায়ামাদে ভুটারিপর্যার্থন মাত্রাবৈপরী-ভামপি জেরং অভ্যান ভুলারী তথা লিখিছে। মাত্রা চোজা। ফালোন বার্বভা সীয়োহতঃ স্বস্তানু মঙলং। পর্ব্যেত মার্লা সা জেয়াইভি । ১২ ।। মত্রার্থক ক্রিণ্ডাকর্মজনিরঃ বিভাগ মার্থং বীজংবাজভাগেন। মন্থ আহত্রন্ প্রণবাভ্যাসে চ ক্র্যাদিক মুক্তং। অস্য প্রণব লাম্ফীগণ্ডং ৷ হস্তোদ্যছে ছাচক্রামুজগদমমলং পীতকৌশোরবাসং বিদ্যান্ত দ্রাসমৃদ্যদিন করসদৃশাৎ পলসংস্থাং নমামি ৷৷ ৪৩ ৷৷ কৃচিচ্চ ৷ রুজন্ত রেচকে ব্রহ্মা পূরকে রেবিদ্যান প্রিক্রেরে ক্রিরেদেবতা ৷ জ্রীবিষ্ণুঃ কুন্তকে জেয়োধ্যানস্থানং গুরোমুখাং ৷ তথাহি ৷ নাভিস্থানে পূরকেণ চিন্তয়েৎ কনলাসনং ৷ ব্রহ্মাণং রক্তগৌরাঙ্গং চন্তর্কুণ্ডং পিতামহং ৷ নালোংপলদলশ্যামং কৃদি মধ্যে প্রতিষ্ঠিতং ৷ চতুতু জং মহাআনং কুন্তকেন তু চিন্তয়েং ৷ রেচকেনৈশ্রং ধ্যানং ললাটে সর্বাপাপহং ৷ শুদ্ধক্রিকসন্ধাশং কুর্যাইদি নির্মালং বুধঃ ৷ ইতি ৷৷ ৪৪ ৷৷ একান্ডিভিশ্চ ভগবান্স্রাক্রেকেয়াই প্রভঃ প্রিয় জনোপেতি শিচন্তনীয়ে হি সর্বতঃ ৷৷ ৪৫ ৷৷

অথ প্রাণায়াম মাহালার । পালে দেবচুতিবিকুওলসয়াদে। য়মলোকং ন পশান্তি প্রাণায়ামরতানরাঃ। অপি দুক্তকর্মাণ দৈরেব হতকিলিয়াঃ 11 ৪৬ 11 দিবসে দিবসে বৈশা প্রাণায়ামাস্ত যোড়শ। অপি জুণ্হনং মাসাৎ পুনন্তাহরহঃ রুতাঃ। তপাংসি যানি তপান্তে ব্রতানি নিয়মাশ্চ যে। গোসহস্প্রদানন্ত প্রাণা য়ামস্ত তৎসমঃ। অয়্বিলুৎ কুশাগ্রেণ মাসে মাসে মরঃ শিবেং। সয়ৎসরশতং সাগ্রং প্রাণামস্ত তৎসমঃ। পাতকত্ম মহদ্যক্ত তথা কুদ্রোপপাতকং। প্রাণা য়ামিঃ ক্লাৎ সর্কাৎ ভক্ষমাৎ সাাদ্বিশায়্রেতি।। ৪৭।। ন্যামান্বিনা জ্পং

মন্ত্রপ্য প্রজাপতিখা বিদেবীগায়ত্রীচ্চুন্দং প্রমান্নাদেরতা অকারোরীজং উকার: শক্তিমকার: কীলকং প্র:শায়ামে বিনিয়োগঃ ইতি বীজাভ্যানে চ তত্মন্ত্রস্য খ্যাদিকং ধ্যানঞ্চ তেক্বতায়া এনে তা হং বিকণপশ্চ মুক্তিভুক্ত্যাদিক লভেদেন বন্যশ্ৰমাদিভেদেন বেতি দিক্॥ ৪৩ ॥ ধ্যান স্থানং গুরোম্থাদের ভেরমিভ্যুক্তং তদেবান্তাগ্রচনৈব্বিজ্ঞাপরন্ তম্ভয়ানমের বিলিষ্য লিখতি নাভিস্থানইতি ত্রিভিঃ ঐশ্বং শিক্ষামধির ।। ৪৪ ।। নন্ শ্রীমদনগোপাল দেবৈক ভিজি নিষ্ঠে কথমেবং বিবিধুধ্যানং রোচেত তত্র লিখতি একান্ডিভিশ্চেতি। একান্ডিভিঃ জ্রীরুঞ্চরণার-বিলৈকভক্তিনিষ্ঠেপ্ত কুঞ্এৰ সঞ্চিত্ৰৰ ধ্যেয়ঃ সচ প্ৰিয়ক্ষনৈৰ্গোপগোপ্যাদিভিৰুপেত্এব নত্বেকাকী ভক্তিরনবিশেষবিহাতাপত্তেঃ। ননুত্ত্র তত্ত্র তের ভারাধ্যানাভাবেনাসংপ্রতা স্যাত্তত লিখতি ভগৰান্সকৈ ধ্র্তিয়ক্তঃ সর্বদেৰ্ময়ঃ গুভুশ্চ সর্বদেৰেশ্বরঃ সর্বশক্তিমান্ বেতি। এৰমেকান্তিনামগ্রেপি সর্কাতের 'বুদ্যাবলন্তব্যং। অতঃ গুল্বলিগিতদারপুজাদাবপ্যেকান্তিনাং জ্ঞীগরুড়াদিপরিবর্ত্তেন তত্র জ্ঞানাদাদিগোপানাং যার্থ্রীগঙ্গাদিপরিবর্তেন চ জ্ঞীগোপীনাং পুজে(ছ্যা অন্যথা তদেকনিঠানাং তদন্যক্লচাসম্ভবাদ্জিবিশেষহান্যা পুজালকণকৰ্ম।এব্ যথোক্তফলানিদ্ধে:। এবং শ্রীভাগবভাগ্নকোনাঞ্চ োকুলে শ্রীগোপানদেবস্য তদন্যাখিলরাগ-বিস্মারকাণাং তত্তৎপরিচ্ছদপরিবারাদীনামতিক্রমেণান্যপরিজনাদিপুস্থনাদিকং কামিনাং জয়দং প্রধনেহভরদং বিপিনইত্যাদ্যক্ততত্তৎফলাবাপ্তয়ে তান্ত্রিকাঃ সমাদিশভীতি **ट्टिश व्यवभिक्ट विख्या** । ५८ ॥

তৈঃ প্রাণাল্পাটনরের ॥ ৪৬ ॥ সাত্রং সহৎসরং পিবেৎ ॥ ১৭ ॥ আছরং অস্তরটেন ভ্রং

প্রান্ত্রং বিফলং বুধাঃ ৷ অভা যথাসংপ্রদায়ং ন্যান্ কুর্যাদ্যথাবিধি ৷৷ ৪৮ ৷৷
ভব্রাদৌ মাতৃকান্যাসং ৷ ঋষিচ্ছনোদেবভাদি ফ্রাদৌ মাতৃকাননাঃ ৷ শিরে বিজ্
হ্লাদৌ চ ন্যাত্জ্যান্যাচরেং ৷ ভচ্চোক্তং ৷ পঞ্চাশল্লিপি ভির্নিভক্তমুখনোংপ্রধ্যবক্ষঃস্থলাং ভাষ্বমৌলিনিব্দ্ধান্ত্রামাপীনভঙ্গনেনাং ৷ মুদ্রামক্ষণ্ডণং সুধাটাকলসং
বিদ্যাঞ্চ হস্তাষ্টের্কিভ্রাণাং বিশদপ্রভাং তিনয়নাং বাগ্দেবভামাশ্রয়ে ৷৷ ৪৯ ৷৷
অকারাদীন্ ক্ষকারাস্তান্ বর্ণানাদৌ তু কেবলান্ ৷ ললাটাদিয় চাঙ্গেষ ন্যাস্চিদ্বান্
যথাক্রমং ৷ ভচ্চ বিবিচ্যোক্তং ৷ ললাটম্থবিয়াক্ষিশ্রভিয়াণেযুগগুরোঃ ৷ পৃষ্ঠদন্তোভ্রমান্থানে দোঃপংসন্ত্রকেষ্ চ ৷ পাশ্রেরা পৃষ্ঠভোনাভৌ জঠরে হৃদ্যেহংসকে ৷
কক্দ্যংসে চ হৃংপুর্কং পাণিপাদ্যুগে ভভঃ ৷ জ্বরাননয়োন্স্রভাত্কার্ণান্ যথাক্রম্বিভি ৷ ৫০ ৷৷ সান্স্বারান্ বিস্থাচ্যান্ সান্স্বারবিদ্র্কান্ ৷ ন্যুস্তুয়োঃ
হিপি ভান্বিদ্বানেবংবারচন্ত্রীয়ং ৷৷৫১ ৷৷

অত্তব বিফলং প্রান্থঃ ।। ৪৮ !। ঋষ্যাদিকঞোক্তং ব্রহ্মখনি গায়ন্ত্রীচ্ছকো মাতৃকালর স্তী: দেবতা হলোবীজানি স্বরাঃ শক্তরোঃ মাতৃকান্যাদে বিনিয়োগ ইতি শিরোবজুনদৌ ক্রেণ ঋব্যাদিকমেৰ নাস্য তথাচোক্তং উচ্চ।ধৈৰ্যৰং ঋষিচ্ছান্দোদেবতাৰীক্ষশক্তয়ঃ । শিৱে বদনহাস্থ্য পাদেষু ক্রমভোন্যদেদিতি। ন্যাস্ট্রতি বক্তব্যে ন্যাসেদিত্যার্যং। প্রঞাশল্লিপি ভিরিতি বর্ণানামেক পঞ্চাশত্ত্বেপি লক।রদ্বয়নৈয়ক্যাভিপ্রায়েণ। ভাষতি প্রভাবতে মৌলৌ নিতরাং বদ্ধগুলুশকলং চন্দ্রার্শ্বর তাং ॥ ৪৯ ॥ তং ন্যাপবিধিং লিখতি অকারাদীনিতি। কেবলান্ অনুসারাদি হীনান্ প্রথমং ন্যাসেং। কং কুত্র ন্যাসেদিত্যপেকারাং লিখতি ললাটেত্যাদিসার্দ্ধদ্বয়েন। মাতৃকায়। 'লিপিসংস্থায়া অবান্ বৰান্ ৰথাক্ৰমং ললাটাদিলু ন্যােদিতি দ্বাভ্যামলয়ঃ । তুল চৈক্পঞাশ-দর্শেষ্ মধ্যে অকারাদীন্ অভত্বকারাভান্ পঞ্চর।রিংশ্রণান্ ললাটাদিয় বামাংস!তেযু প্রফারারিংশদবয়বেষু ন্যস্থে। তথাহি অলাউমেকং মুখবিষং মুধ্য ওলক্ষৈকং অফ্যাদিদন্তা-ন্তানাং প্রত্যেকং দ্বয়নিত্যেকং দাকশ। তত্র দন্তানাং পর্জেছিল্মন দ্বিদ্ধং জ্ঞেয়ং। কিঞ্চ উত্তমাঞ্চং মন্তকমেকং আলাং মুখ্ছিজনেকং ইতোবং ৰেড়িশমু বেচ্ছাস্বান্ চতঃ দেখোলু জিয়োঃ সন্ধাঃ প্রত্যেকং মূলকুপরমণিবজাঙ্গ, লিমূলভেদেন চত্ত্তারঃ এবং ছয়োরই পদোশ্চ সন্ধাঃ উঞ্-মূলজানুগুল্কাঙ্গুলিমূলভেদেন প্রত্যেকং চত্বারএবং দ্বারেট । তথাদোশোরএদ্য়নিত্যেবং দোঃপংসম্বিরিংশত্যাক্ষমু ব্যঞ্জনালাং মধ্যে ককারাদিনকারাত্তিংশতিবর্ণান । ততশ্চ পাশ্বা-দিয়ু দিজু নবস্বস্থেষু মকারাদীন্বকারামান্নৰ বর্ণান্ ন্যাস্থেত তত্ত্ পার্থ যোরিতি তয়োদ্বি হ্রমের অংস্যা দক্ষিণবামতয়া দ্বিত্বাৎ পুনরুক্তিরিতি। হৃৎ পূর্বমিতি অবশিফীন্ শকরে।দিককারান্তান্ यहै वर्गन् ऋषत्रमात् छ। कका पिशां विष्यान शाष्यु गलक ठेतान न श्यां एः वाश्या छ छ । या विष्या विष्या ন্যাদ্যেদিতার্থঃ তত্র প্রব্যোগঃ অংনমইত্যাদি॥ ৫০॥ ভূয়োপীত্যাস্য সর্বাক্তরান্তরঃ। বারচন্তর্মিতি লিখনাৎ তান, মাতৃকাণান্ তথৈব ভূয়োপি সাক্ষারান্ অক্ষারেণ স্তিলন্ ন্যাস্থেত তক প্রয়োগঃ। অংনমঃ ইত্যাদি।ভূয়োপি তথৈব বিসর্গাঢ়ান্বিসজ্জ নীযুক্তান্ ন্যেণেৎ তত্র প্রয়োগঃ অঃনমইত্যাদি । ভূরোপি তথৈব সাত্রখার বিসর্গকান্ অকুস্বারবিস্গাভ্যাং যুগপদেব সহিতান্ ন্লোংতত প্রয়োগঃ অঃনমইত্যাদি এবং লিখিতপ্র চারেণ কেবলসংযুক্তভেদেন বারচন্তক্ষর মাতৃকাবর্ণান্ ন্যস্টেলিভ্যর্থঃ।। ৫১।।

অথান্তর্গান্যাসং। কণ্ট্রনাভিগুছে যুব্ পায় ভুমধ্যয়োদ্রথা। ছিতে যোড়শ-পত্রাজ্যে ক্রনেণ দ্বাদশচ্দে। দশপত্রে চ ষট্পত্রে চত্তংগতে দ্বিপত্রকে। ন্যাসে-দেকৈকপত্রান্তে স্বিন্দ্কেকম্কর ২ ।। ৫২ ।।

ত্যকেশরাদি ন্যাসং। সমূহা ঋষ্যাদিকৎ বর্ণন্ মূর্ভিভিঃ কেশরাদিভিঃ। ক্রিলিদিভিঃ শক্তিভিশ্চ ন্যেগ্রান্ পূর্ব্বৎ ক্রমাৎ য় ৫৩ ।। ন্যুদ্দের্থী নত্যে মূর্তীঃ শক্তাশ্চ ষাদিভিঃ। সপ্তধাতূন্ প্রাণজীবে ক্রোধ্যপ্যাত্ত্বেহনুকান্য ৫৪।। তত্র ধ্যানং য উদ্যথ প্রদ্যোতনশতর চিৎ তপ্তহেমাবদাতৎ পার্শ্বন্দ্র জলবিসুত্যা বিশ্বত্যা চ জুন্তং । নানার ত্রোল্লনিত্বিধাক প্রমাণীত বন্ধং বিশ্বুৎ বন্দে দরক্যলকোনোদকাচক্রপাণিং।। ৫৫।।

অথপ্রীমৃত্রঃ। প্রথম কেশরোনারায়ণঃ পশ্চাচ্চমাধরঃ। গোবিদ্দশ্চ তথা বিফ্
মপুসুদন এব চ । তিবিক্রমোবামনোথ প্রথমেন ভভঃপরং। হুষীকেশঃ পদ্মনাভসতোদানোদরস্তথা। বাসুদেবঃ সম্বর্ধাঃ প্রদুগ্রেমাথানিরুদ্ধকঃ। চক্রী গদী তথা শার্দ্ধরি প্রদান কল খড়গা শল্পী হলী তথা। মুষলী চ তথা শূলা পাশী চৈবাদ্ধুশা তথা ১ মুর্দ্ধানকল
শৈচ্ব তথানকী নর প্রথা। নরকজিদ্ধরিঃ রুফঃ সভ্যঃ সাত্তএব চ । ততঃ শৌরস্তথা
শ্রস্তঃ পশ্চাজ্জনার্দ্ধরঃ। ভূধরোবিশ্ব প্রতিশ্চ বৈকুঠঃপুরুষোত্মঃ। বলী বলানুজোবালোব্য ঘাব্য এব চ। হংসোবরাজোবিমলোন্ সিংহশ্চেতিমূর্জয়ঃ।

অথ শক্তিই । কীর্ত্তিংকাতিস্থ কি পৃষ্টী পৃতিং শান্তিং ক্রিয়া দয়া । নেধাইধা তথা শ্রন্ধা লক্ষ্যা লক্ষ্যাই সরস্থতী । প্রতিরিতির্জায় দুর্গা প্রভাসত গ্রহ চাওকা । বাণী বিশ্বসিনা চৈব বিজয়াবিধকা তথা । বিশ্বাচ বিনদা চৈব সুনন্দ চফা তিত্তথা । ঋদিং

কংগদিষট্খানেমু ক্রমেণ স্থিতে বোড়শপত্যাদিকমলবট্কে তৎপঞ্গেৎপত্তি একৈকিমিন্
পত্রে বিন্দুসাইতসেইককমক্ষরমিতি পঞ্গাদ্বণান্ তত্ত্বপত্তাত্তে মনসা ন নাদিত্যকঃ॥ ৫২ ॥
খন্যাদিকঞ্জেভ অনু্যু কেশ্রাদিনাসন্য প্রজাপতিঋ্বিদেবীগায়ত্রীক্তন্দোলক্ষ্মীনারারণে
দেবতা ইলোবীজানি স্বাংশক্তয়ঃ আত্মনোইচাতায়ত্বে বিনিয়োগ ইতি ভান্ একপঞ্চশিখাত্কাবণান্ কেশ্রাদিভিকে পঞ্চাশ্যু তিভিঃ তাবতীভিরেব কীর্ত্যাদিভিক শক্তিভিঃ সহ পূর্ববং ললাটাদিয়ু অন্ধারসহিতান্ তথৈব ন্যাসাদিত্যকঃ॥ ৫৩॥ তত্র মৃত্য়ঃ শক্তয়ক কথং ন্যায়াইতাপেক্ষায়াং তৎপ্রকারং লিখন্ তবৈব কাহ্নটোন্থং ॥ ৫৩॥ তত্র মৃত্য়ঃ শক্তয়ক কথং ন্যায়াইতাপেক্ষায়াং তৎপ্রকারং লিখন্ তবৈব কাহ্নটোন্থং ॥ ৫৩॥ তত্র মৃত্য়ঃ শক্তয়ক কথং ন্যায়াইতাপেক্ষায়াং তৎপ্রকারং লিখন্ তবৈব কাহ্নটান্থং নিশ্বং লিখতি নাম্যোদিতি।
মৃত্যাঃ শক্তীক চন্তর্যান্তা নমইত্যাক ন্যান্যং অত্র প্রয়োগঃ অংকেশ্রায় কীর্ত্যা নমইত্যাকি ন্যাদিভিরিতি তত্র যকারাদিদশ্বনৈ সহ্যা মৃত্যীঃ পুরুষোন্তমান্যা দশশক্তীক বন্ধবাদ্যা ন্যাস্যাং । তত্র স্বগ্রাংসমেদোইন্থিমজ্ঞাপ্তকানীতি সপ্রধাত্মাণ্য কাবিপ্র ক্রোধমপীত্যবং দশ ন্যাদিত্যক্ষ ক্রান্ত্রান্য স্থাানিন্ প্রাণাদিক আজনে ইতি অত্যে ঘেষাং তান্ ত্রীহৌক্ষ এতচ্চ সর্ক্রোন্যের বিশেষণ্যাপি শক্ষাং। অত্র প্রয়োগ্রাহা বং স্বগান্থনে পুরুষোন্তমায় বৃত্যানি নাম ইত্যাদি।। ৫৪॥ প্রদ্যোত্নঃ স্ব্যাঃ বিশেষাত্যাপ্তিয়ার বালানী বিশেষাত্যাপ্তিয়ার ব্যাগ্রীধর্ণ্যা। ৫৫॥

সমৃদ্ধিং শুদ্ধিক বৃদ্ধিমু ক্তিন তিঃ ক্ষমা। রমোমা ক্রেদিনী ক্রিয়া বসুদা বস্ধা পরা। পরায়ণাচ সৃত্ধা চ সন্ধ্যা প্রজা প্রভা প্রভা নিশা। অমোঘা বিদ্যুতেত্যেক পঞ্চাশং শক্ত-য়োমতাঃ । দদত্যে কেশরাদিন্যামোত্রাখিলসম্পদং । অমৃত্রাচ্যুত সার্বপাং নয়তি ন্যাসমাত্রতঃ । ৫৬।। তদুক্তং । ধ্যাইদ্বং পরমপ্রাংসমক্ষরৈ র্যোবিন্যাদ্যাদ্দিনমনু কেশরাদিযুক্তঃ । মেধায়ঃ ম্বৃতিধৃতিকান্তিলক্ষীসোভাগ্যৈ শিচরমুপ-বৃংহিতোভবেৎ সং। অন্যত্র চ।কেশরাদিরয়ং ন্যাসোন্যাম্যাত্রেণ দেহিনঃ । অচুয়াতত্বং দদাত্যের সভ্যং সভ্যং ন সংশায়ঃ ইতি ।। ৫৭।। যশ্চ কুর্য্যাদিমং ন্যাসং লক্ষীবীজপুরঃ সরং। ভক্তিংমুক্তিঞ্জ্বভ্রুক্তঞ্জলভতে ইচিরাৎ।। ৫৮।। তথালিজং। অমুমের ব্যাপুরঃসরং প্রভ্রেক্তিঞ্কুক্তঞ্জলভতে ইচিরাৎ।। ৫৮।। তথালিজং। অমুমের ব্যাপুরঃসরং প্রভ্রেক্তিক্তানিধিং বুধঃ। সমুপেত্য রমাং প্রথীয়সাং পুনরন্তে হরিভাং ব্রজ্ব্যানা। ৫৯।।

অথ তত্ত্বন্যাসঃ । মকারাদিককারান্তর বৈর্দ্ধি সবিক্তৃকৈঃ। নমঃ পরায়েতি পূর্ম্বমাত্মনে নমইত্যন্। নাম জীবাদিতত্ত্বানাং ন্যমেয়ত্ত্তৎপদে ক্রমাং। ন্যাসেনানেন লোকোহি ভবেৎ পূজাধিকারবান্।। ৬০।। তত্রাদৌ সকলে ন্যমেয়ক্ত্বিপ্রাণৌ কলেবরে। হাদ্যে মত্যহৎকারমনাংসীতি ত্রয়ন্তভঃ।। ৬১।। শকং স্পর্শং তত্তো-ক্রমং গল্পক্ষ মন্তকে। মুথে হাদি চ গুহের চ পাদ্যোশ্চ যথাক্রমং ।। ৬২।।

অত্র অস্মিন্ নোকে অমূত্র পরলোকে শ্রীকৃষ্ণনারপ্যং প্রাপরতি।। ৫৬।। এবং উদ্যৎ প্রদ্যোতনশতরু চিমিত্যাদি প্রকারেণ । পরমপুমাংসং শ্রীভগবত্তং দিনমন্থ অনুদিনং।। ৫৭।। ইমং কেশরাদিন্যাসং। লক্ষীবীজং শ্রীশক্তং পূর্ব্বকং যং কুর্যাং সেংহচিরাৎ ভক্ত্যাদিকং লভতে।। ৫৮॥ হরিতাং শ্রীকৃষ্ণস্থমিতি তৎসারপ্যপ্রাপ্তঃ।। ৫১॥

জীবংদিতত্ত্বানাং নাম জীবেত্যাদিকং তত্তৎপদে তিম্মন্ তিমন্ লেখ্য স্থানে ক্রমাৎ লিখন-ক্রমেণ ন্যাস্যে । আদিশন্দেন অত্যে লেখ্যানি প্রাণমহদংহংকারাদীনি তত্ত্বানি । কথমিত্যপে ক্ষায়াং তদেব বিশিন্তি সবিন্দুকৈঃ অনুস্বায়নহিতেঃ অকারাদিভিঃ ককারাত্তৈর্বিং যুক্তং । মকারাদীনাং ককারান্ততা চাত্র প্রাতিলোম্যেন জ্রেয়া । কিঞ্চনমং পরায়েতি বাক্যং হর্বাং যিমন্ তং । তথা আত্মনে নমইতি অন্ত পশ্চাং যিমন্ তং । যদ্বা নমং পরায়েতি নাম্যং পূর্বাং ন্যাসাং । আত্মনেনমইতি চ অন্ত পশ্চাং ন্যাসাংহ হি যতঃ অনেন তত্ত্বন্যাসাথেট্য পূজায়ামধিকারী জনোভ্রতি । তথাচ ক্রমাদীপিকায়াং । ইতি ক্রতেছধিক্রতোভ্রতি প্রবং সকলবৈফ্রমন্ত জ্পাদিদিলি । তত্ত্র প্রয়োগঃ মংনমং পরায় জীবাত্মনে নমঃ ভংনমং পরায় প্রাণাত্মনে নমইত্যাদি । কেচিচ্চ জীবতত্ত্বাত্মনে নমং প্রায় জীবাত্মনে নমঃ ইত্যাদি তত্ত্বশদ্দিশি প্রযুপ্তি ॥ ৬০ ॥ তানি তত্ত্বান্বান লিখন্ তত্ত্বন্যাসস্থানং বিবিচ্য । লিখতি তত্ত্বাদাবিতি । তত্মিন তত্ত্বন্যানে সকলে কলেবরে সর্বাণরীরে জীবং প্রায় মত্যাত্মনে নমঃ ইত্যাদি এবমগ্রেপ্রয়োগঃ সর্বত্রেহাং ন্যসেহ । অত্যাদিতত্ত্বরাং ন্যসেহ । অত্যাদিতত্ত্বরাং ন্যসেহ । আত্ম প্রয়ায় মত্যাত্মনে নমঃ ইত্যাদি এবমগ্রেপ্রয়োগঃ সর্বত্রেহাং ॥ ৬১ ॥ নাস্যেদি ভাসুম্বর্ত্তএব ততঃ শক্ষাদি পঞ্চকং মন্তকাদিপঞ্চকে ব্রাজন্মং লিখিতক্রমেণ ন্যসেহ ॥ ৬২ ॥

শোর জিং দৃশং জিলাং ঘুলং স্বস্থাদে ততঃ। বাক্পালিপাদপায়পতানি স্বস্থাদে তথা। ৬৩।। আকাশবায় তেজাংসি জলং পৃথীক মূর্জনি । বদনে হৃদয়ে লিঙ্গে পাদয়োশ্চ যথাক্রমং।। ৬৪।। হৃদি হৃৎপুগুরীকক্ষ দ্বিষট্দৢইটদশাদিকং। কলাব্যাপ্তেতিপূর্দ্ধিক সূর্য্যচন্দু।য়িমগুলং । বলৈঃ সহ সরেফৈশ্চ ক্রমায়্যস্থে স্বিন্ট্রেঃ ।। ৬৫।। বাসুদেবং হকারেল পরমেষ্ঠিযুতক কে। মকারেল মুখে সক্ষর্ণ ন্যেত্ব পুনহিতং।। ৬৬।। হৃদি ন্যাস্যলকারেল প্রদ্যুং বিশ্বসংযুত্থ। জনিক্তরণ নিবৃত্যাটাং বকারেল চ গুহাকে। নারায়ণক সর্বাচ্যং লকারেল্ব

ততঃ শ্রোতাদিপঞ্কং যথাক্রমমের স্বস্থপদে নিজনিজস্থানে শ্রোতাদিপঞ্কএর তত্তিব রাগাদিপঞ্কঞ্ ন্যস্যে । তত্র চ যস্য দ্বিত্বং তয়েছি য়োরেব ন্যাসঃ । এবঞ্চ শ্রোত্রােচ শোঃ পাণোঃ পাদয়োশ্চ তত্ত্বসৈয়কলৈয়ৰ ন্যানোজেয়ঃ পশ্চাদত্ত্বে চ পাদয়োৱিতি লিখনাং ॥৬৩॥ আকাশাদিপঞ্চক্ মূর্দ্ধাদিপঞ্চকে ন্যান্যেৎ এবং মকারাদিককারান্তানাং পঞ্চবিংশতি বর্ণানাং ন্যাসঃ সমপ্তেঃ॥ ৬৪॥ অধুনাবশিফানাং বঞ্জনবর্ণানাং দ্শানাং ন্যাসং লিখতি ফ্টাতি সংদ্ধি চন্ত্রভিঃ। হৃৎপুওরীকমিতোকং তথা সূর্য্যমণ্ডলং চন্দ্রমণ্ডলং অগ্নিমণ্ডলং চেতি ত্রন্ধং। এতচ্চত্ত্ব-की १९ वि मू मिटिए भकावा मिठ खबरे वें स्व करमन इत्नाव नात्मा १। कथ सुख मूर्या। मिन खल १। কলাব্যাপ্তেতিশকঃ পূর্বমাদ্যং যিমন্তং । পুনঃ কথ গুতংদিষট্ ছাদশ দ্বাফ সোড়শ ক্রমেণ্ দ্বিষট্ইত্য:দি আদৌ যদ্য তং।তথাচ ক্রমনীপিকারাং । বিশ্বানি দ্বিষ্**উযুগদশকলা**ব্যাপ্তানি সুযোডুরাড্বহ্লীনাঞ্বতস্ত ভূতৰ হুমুনাকাকেবৈম্ত্রবিদিতি।অস্যার্থঃ। সুর্যাচন্দ্রহ্লীনাং মওলানি ক্রেণ রাদশ বোড়শ দশকলাব্যাপ্তানি চ তত্তৎকলাব্যাপ্তেত্যেতান্যপি। যতঃ যকারাৎ যোজু-তাকরং পঞ্মবর্ণ শকারঃ বস্বকরং অউমোবর্ণ হকারঃ মুন্যকরং সপ্তমবর্ণ সকারঃ অক্যকরং দ্বিতীয়বংগারে 🕫 এতৈঃ সংহতি। অত্র প্রয়োগঃ। শং নমঃ প্রায় প্রত্তীকাত্মনে নমঃ। হংনমঃ পর য় দাদশকলাব্যাপ্তসূর্যমণ্ডলাত্মনে নমঃ। সংনমঃ পরায় ধোড়শকলাব্যাপ্তচন্দ্রমণ্ডলাত্মন নমঃ। রংনমঃ পরায় দুশকলাব্যাপ্তবজিম্ওলাল্পনে নমঃ ইতি॥ ৬৫॥ অধুনাহবশিষ্ট্যভ্বতিঃ সহ পঞ্চোপনিবদ।দিন্যাসং লিখতি বাস্থদেবমিতি ত্রিভি. । সূর্দ্ধনাষকারেণ সহ প্রমেষ্ঠিযুত্ংপ্রমে ষ্ঠীতি সহিতং বাস্তদেবংকে মস্তকে ন্যাস্যে।অত্র প্রয়োগঃ। ষংনমঃ পরায় বাস্তদেবার পরমেষ্ট্যা-ত্মনে নমঃ ইতি। পুমন্নিতং পুংদা দহিতং। অত প্রয়োগঃ। যংনমঃ পরায় দক্ষর্ণায় পুমাত্মনে নম ইতি॥ ৬৬॥ লকারেণ সহ প্রভ্যেমুং ন্যাদেতাত্র কেচিদ্রেফেণ ন্যাদং মন্যায়ে তদ্যুক্তমেব যতঃ পূৰ্বং বহ্নিওলেন সহ রেফ্স্য ন্যানে। বৃত্তঃ অত্রাপিপুনতদ্যৈত ন্যাসান্ত্রিয় প্রসজ্যেত তচ্চ ন সম্ভবেদেব বর্ণসমামায়েত্যগৈরত্বাৎ অতোহত্র লকারসৈর ন্যাসেশ্যুক্তঃ। অত্যে নারায়ণেন সহ তস্য পুনর্যাসকৈ কপঞাশ্যাতৃক, বর্ণেষু তস্য দ্বিস্থান্যুক্ত এবেতি অত-এব ক্রমদীপিকায়াং। যোপরবলার্গকৈঃ সলবকৈরিতি ছিল্যার্থঃ যেতি ধকারঃ উপ রেতি রেকস্য-উপ সমীপে তিন্ঠতীতি যকারোলকারশ্চ তথা বকারোলকারশ্চ দ্বিতীয়া। এবংপঞ্চিঠ্বইর্ণঃ সল-ৰকৈঃসাত্মস্বারে রিভি।যোষৰলবারেনিরিভিপাঠস্ত চিস্তাঃ। আয্যাভেদঃ স্কল্পকজ্নদি চভ্চ্চল-অঙ্গোষাপত্তেঃ। তথা তত্ত্ব্যাসেই স্মিন্প্রথমতঃ প্রস্তানাং পঞ্জিংশং বাঞ্চলবর্ণানাং মধ্যে

পাদয়োও। ৬१।। নৃসিৎহং কোপসংযুক্তং তদীজেনাথিলায়নি। তত্ত্বনাপোইয়মচিরাৎ ক্ষমানিধ্যকারকঃ ।। ৬৮ ।। তথাচোক্তং । অভত্ত্বনাপ্যক্রপম্য তৎপ্রাপ্তের্ভেরনা পুনঃ । তত্ত্বন্যামনিভিপ্রাহ্রন্যামতত্ত্বিদোবুধাঃ ।। ৬৯ ।। যঃ কুষ্টাভত্ত্ববিন্যামৎ স প্তোভবাত ক্রবং । তদাত্মনানুপ্রবিশ্য ভগবানিই তিঠতি । যতঃ
সএব তত্ত্বানি সর্বাং তিমান্ প্রতিঠিতং ।। ৭০ ।।

ষোইত্যস্য বা ইত্যস্য চ ক্ত্রাপ্যশ্রবণাৎ । অন্তে ন্যস্য্য ক্ষকারস্য চরেফৌকারসংযোগঃ স্নিংহবীজ্বত্বেন তস্য তাদৃশ্বাদেব । অতঃ পূর্বেং পঞ্চবর্গাণাং বর্ণানাং ন্যাসঃ ততঃ প্রমন্ত্য স্থাদীনাং মধ্যে শকারাদিচতুর্ণাং অগ্রে হিশংহবীজ্বময়স্য ক্ষকারস্যাস্ত্যেব । অত্র চ পঞ্চোপনিষ্থ অবশিষ্টানাং ধকারাদীনাং পঞ্চানামেব যুক্তইতি দিক্ । অত্র প্রয়োগঃ । লংনম প্রায় প্রিয়ান্থনে নমঃ ইতি । ৬৭ ॥ ন্যাদেচিত্যসূবর্ত্তি এব । তস্য স্নিংহস্য বীজেন সহ্ আখলাত্মনি সর্ব্বগাত্তের্ । অত্র প্রয়োগঃ । ক্ষোঁনমঃ পরায় হিশংহায় কোপাত্মনে নমঃ ইতি । এবং তত্ত্বন্যাস্থলং লিখতি তত্ত্বেতি ক্ষুণান্ধিগ্রকারকঃ ক্ষুণ্থ সন্মিধে কার্য়তি প্রাপ্যান্তার্থঃ ॥ ৬৮ ॥ অত্যঞ্চতৎ অতএব ব্যাপ্যরূপঞ্চ ত্যা পুনঃ তৎপ্রাপ্তেম্বর্যার হেলতোঃ ॥ ৬৯ ॥ তদাত্মনা ন্যাস্কর্ত্রপেণ তত্ত্বস্বরপেণ বা ইহু শরীরে লোকে বা ॥ ৭০ ॥

তত্তত্ত্বন্যাসানন্তরং। ক্রমাদিতি রেচকে দ্বৌ বারৌ প্রকে চপ্তরোবারান্ ক্সকে বট্ বারান্ অফীদশাক্ষরমন্ত্রং অপনিত্যর্থঃ। রেচক প্রককুস্তকইতি দ্বল্যুক্যং॥ ৭১॥ তত্তাশক্ষে প্রকারান্তরং লিখতি। অথবেতি কামবীজং ক্রমাৎ রেচকপ্রককুস্তকের প্রকাৎ ক্রমণ আড়েশ দ্বাত্রিংশচ্চত্তঃঘটিবারান্ অপন্ তান্ রেচকপ্রককুস্তকাংস্ত্রীন্ কুর্যাৎ॥ ৭২॥ তদেব ক্রমদী পিকোক্ত্যা সম্বাদ্য়ন্ তবৈর কিফিদিশেবঞ্চ দর্শয়তি রেচমেদিতি। দক্ষয়া দক্ষিণনাড্যা। দক্ষিণঃ বিদ্বান্ জনঃ। মধ্যনাড্যা স্বসুমুয়া ধারয়েছে। এবং রেচকপ্রককুস্তকাখ্যং তায়ং স্যাৎ। রেচকানিয় ক্রিম ক্রমেণাবিকিলমাহ কলাঃ বোড়শ দন্তা দ্বাত্রংশহ বিদ্যাশ্চন্তঃ ঘটিং তত্তৎসংখ্যাক মাত্রাত্মক্রিত্রর্থঃ। মাত্রা চ বামাঙ্গুর্তেন বামকনিষ্ঠাদ্যঙ্গুলীনাংপ্রত্যেকং পর্বত্রসম্পর্ককালঃ বামহন্তেন বামজাত্মগুলস্য প্রাদক্ষিণ্যেন স্পর্শকালোবা তত্রাপ্যঞ্জুলিনিয়মোপ্যক্তঃ। কনিষ্ঠানামিকাঙ্গুইন্ঠর্যনাসাপ্রধারণং। প্রাণায়ামঃ স বিজ্ঞেয় স্তর্জনীমধ্যমে বিনেতি। তত্র প্রাণায়ামেষ্ প্রকং রেচকাদির সংখ্যাক্রণ অত্র চ প্রাণায়ামেষ্টিত ভেদঃ॥ ৭৩।।

তত্র কালঃ সংখ্যাদিকথা ভত্তিব। পুরভোজগদ্য পরতোপি বিহিত্মথ তথায়ং বুধিঃ। যোড়শ ঘইহাচরেদিনশাঃ পরিপূগ্রতে স থলু মাসতোহংহদঃ ।। ৭৪ ।।

ভাষা পাঠ ন্যাসঃ । ততানিজ্বনূমের পূজাপীঠং প্রকল্পয়ন্ । পীঠস্যাধারশক্ত্যাদীন্ ন্যাসঃ থ বাজেষু ভারবং ।। ৭৫ ।। আধারশক্তিং প্রকৃতিং কূর্মানস্তৌ
চ তত্র তু । পৃথিবীং ক্ষীরসিজ্ব গুলভাষীপঞ্চ ভাষরং । শ্রীরত্মশুপঞ্চির কল্পকৃক্ষন্তথা হাদি। ন্যাস্থে প্রদক্ষিণত্বেন ধর্মজ্ঞানে ততোহংসয়োঃ ।। ৭৬ ।। উর্বোর্মরাগ্য নৈশ্বর্যাৎ তথিবাধর্মমাননে । ত্রিকে জ্ঞানমবৈরাগ্যমনৈশ্বর্যাঞ্চ পার্যয়োঃ । ৭৭।
হুদজ্জেহনন্ত পল্লা সূর্য্যেল্ শিথিনান্তথা । মণ্ডলানি ক্রমান্তর্নাই প্রবাদ্যাদ্যাদ্যবিদ্যালয় রজন্তমশ্চাল্লান্তরাল্লানী চ তত্র হি । পরমাল্লানমপ্যাল্লাদ্যাদ্যবিদ্যালয় নাবিদ্যুকৈঃ । গল্প রজন্তমশ্চাল্লান্তরাল্লানী চ তত্র হি । পরমাল্লানমপ্যাল্লাদ্যাদ্যবিদ্যালয় বিল্লাইনঃ । ৭৮ ।। জ্ঞানাল্লান্ত্র ভ্রেনেশ্বরী বীজেন সংযুত্থ ।
ত্ন্যান্টদিক্ষ মধ্যেপি নব শক্তীশ্চ দিক্ত্রমাৎ । তাশ্চেক্তাঃ । বিমলোৎকর্ষিণী

জপস্য পুরতআনে পরতঃ অন্তে চ ইতি প্রাণায়ামেষু কালঃ। তন্ত্রয়ং প্রাণায়ামত্রয়মিতি সংখ্যা। যোজনো দিনশঃ প্রত্যহং যোড়শ প্রাণায়ামানাচরেৎ স মাসতঃ মাসেনৈকেন অংহ্নঃ পাপাৎ পরিপূর্যতে শুদ্ধোত্রতীতি সামান্যতঃ কলং। পরঞ্চ সর্বাংপূর্বাং লিখিতমের॥ ৭৪॥

তারঃ প্রণবঃ তদ্বৎ তৎ সহিতং যথা স্যাধ ।। ৭৫॥ তদেব বিবিচ্য নিথতি আধারে ত্যাদিনা ক্রমাদিত্যত্ত্বন । তত্ত্র তিমিংস্ত্র পীঠন্যাদে আধার্শক্ত্যাদিকম্পবৃক্ষপযান্ত্রান্ নব হৃদি ন্যাস্যেৎ ভাস্করং প্রকাশস্থভাবং জীমন্তং রত্নমণ্ডপং তথাচ ক্রমণীপিকায়াং । ন্যাস্য-দাধারশক্তিপ্রকৃতিকমঠশেষক্ষমাক্ষীরসিন্ধূন্ খেতদ্বীপঞ্চরতোজ্জ্বলসহিতমহামণ্ডপৎ কম্পেবৃক্ষ-মিতি। অত্র প্রয়োগঃ ওঁ আধারশক্তার নম ইত্যাদি প্রণবাদিচপ্তর্যান্তং দেবনাম নমোহন্তকমিতি প্রাণুলিখনাৎ। তত স্তদন ন্তরং ধর্মাং জ্ঞানঞ্চেত দ্বাং প্রদক্ষিণত্বেন প্রাদক্ষিণ্যক্রমেণ ক্ষক্ষদ্বরে ন্যাস্থে ॥ ৭৬ ॥ ন্যাদেত্যগ্রেহ্পান্থবর্ত্তএব । তথৈব প্রদক্ষিণত্ত্বন বৈরাগ্যমেশ্র্যাঞ্চেতি দয়মূরুদ্বয়ে ন্যস্যে । অ্বর্দাৎ মুখে । তিকে কট্যামজ্ঞানং । অবৈরাগ্যমনৈশ্বর্যঞ্তি দ্বরং তথৈব পাশ্ব হিয়ে ন্যাস্থে। তথাচ ক্রমদীপিকায়াং। অংসহয়োরুদ্বর্বদনকটীপাশ্ব গুগেষ্ ভূরইতি।তথা ধর্মাদ্যধর্মাদি চ পাদগাত্রচক্তক্রমিতি। অন্যার্থঃ। পাদগাত্রয়োশ্চত্ত ইয়মিতিপাদ্চত্তইয়ং গাত্র চপ্তক্ষয়ঞ্জেতি । অংশদ্বয়াদিষু ক্রমেণ ধর্মাদিরপংপাদচত্তক্ষয়ং আদিশব্দেন জ্ঞানবৈরালগ্যস্থ-ৰ্য্যাণি তথা অধৰ্মাদিৰপঞ্চ গাত্ৰে চন্ত্ৰইয়ং ন্যাস্থে আদিশব্দেনাক্ৰাজ্ঞানাবৈরাগ্যানেশ্বৰ্য্য তক্ৰ চ প্রদক্ষিণক্রমেণেতি বৌদ্ধব্যং । অংসোরুবুগারোর্বিদ্বান্ প্রাদক্ষিণ্যেন দেশিকঃ । ধর্মং জ্ঞানঞ্ বৈরাগ্যমৈশ্বর্যাঞ্চ ন্যাসোৎ ক্রমাদিতি শারদাতিলকোকোকেরিতি ॥৭৭ ॥ বিন্দুপহিতেঃ প্রনবাংশেঃ অকারোকারমকারেঃ সহ ক্রমেণ সূর্যোল্বুরুনাং মগুলানি চ হৃদক্ত এব ন্রাসং। প্রয়োগ:। ওঁ অংহর্যমণ্ডলায় নম ইত্যাদি। সত্ত্বাদিপঞ্কঞ্চ বিন্দুশহিতৈঃ আত্বাল্যৈঃ স্বস্থপ্রথমৈঃ বঁটেণঃ সহ তত্ত হৃদজ্জএব ন্যাস্থে। প্রয়োগঃ। ওঁ স্ংস্তারনম ইত্যাদি।। ৭৮॥ ভুবনেশ্বরী-বীক্ষং জীঁ তৎশহিতং জ্ঞানাত্মানঞ্ছ হৃদজ্জএব ন্যুস্যেৎ। চকারস্যোক্তশমুচ্চরার্থত্বাৎ তস্য হৃদজ্জন্য অউহ দিক্ষু অউদলেষু কেশরমধ্যে দিক্কমাৎ পূর্কাদিকমেণ বিমলাদা।: শক্তীরউ ন্যাস্থ

জ্ঞানক্রিরাযোগেতিশক্তরঃ ! প্রস্লীসত্যা তথেশানানুগ্রহা নবমী স্থাতিতি ।
ন্যের্ভুপ্রিফাচ্চ পাঠমন্ত্রং যথোদিতং । ঋষ্যাদিকং স্থারেদ্স্যাফাদ্শা
ন্মনোস্তভঃ । ৭৯ ।। জ্যোক্তিকাভিভিঃ ক্রারসমুদ্রাদিচন্ত্রইয়ং । ক্রমাচ্ছ্রীমথুরাবৃদাবন্ত্রকুঞ্জনীপকাঃ ।। ৮০ ।। তথাচ ব্রহ্মংহিতায়ামাদিপুরুষরহস্যত্যোত্রে ।

স্ত্রোক্তানুসারেণেত্যথে লিখনাং ॥ ৭৯॥ নমু আধারশক্ত্যাদিপঞ্কং শ্রীমধুরায়াঅপ্যাশ্রয়-ভূতমিতি তত্তর্যাসঃ একান্তিনাং মতেনাপি ন বিরুদ্ধঃ স্যাৎ । কিন্তু ভাষ্যাবর্তা হর্মের্ছিনীং জ্ঞীগোপালদেবন্য নিরন্তরপ্রেমণিহাররসময়ীং জ্ঞীমাথুরবৃন্দাবনাদিত্রজভূমিং বিহার কথং তৈঃ ক্ষীরসিক্ষাদিন্যাদঃ কার্য্যঃ তত্র লিখতি জ্ঞেয়াশেচতি ক্রমাদিতি ক্ষীরসিক্ষ্যঃ শ্রমধুরেতি-শ্বেভদীপঃ শ্রীবৃন্দাবনমিতি রত্নমগুপস্তস্য শ্রীবৃন্দাবনস্য শ্রীকুঞ্জলতামগুপইতি কণ্পবৃক্ষণ শ্রীবৃন্দা বনবর্দ্ধিশীনীপবৃক্ষইতি জ্যেইত্যর্থঃ। গোসমৃদ্ধিং শ্রিয়াজৃষ্টমাভীরপ্রায়মানুষমিত্যাদি শীহরি-বংশাগ্যক্ত্যা জ্রীমপুরায়াঃ গোপ্রধানদেশতয়া ক্রীরময়ত্বাৎ ক্রীরদমুদ্রত্বং জ্রীবৃন্দীবন্ধা চততত্য-ব্ৰজভূমিপ্ৰধানস্থানস্য বিশেষতঃ ক্ষীরসুংবক্লতধাবল্যাদিনা শ্বেডদ্বীপত্বাদিভ্যগ্রে ব্ৰহ্মসংহিতা বচনতোইভিব্যক্তং ভাবি। রত্নমগুপকপেদ্রমৌ চ ভূমি শ্চিম্বামণিমরীতি ব্রহ্মসংহিতা স্থোরে:-ক্রেঃ। ততঃ প্রভৃতি নন্দ্যা ব্রকঃ স্ক্রেম্জিমান্ ইরেনিবাসাল্টবৈর্মাকীড়মভূল্পেত্যাদি জ্ঞীদশমস্বস্বাহ্যক্তশ্চ জ্বৃন্দাবনান্তর্টতে এব। তেন যদ্যপি তয়েগরেকান্তিমতেনাপি ন বিরোধঃ স্যাৎ তথাপি সদা বনবন্যজনপ্রিয়ায় ভগবতে জ্রীগোপালদেবায় জ্রীবৃন্দাবননিকুঞ্-ক্রদম্বাদিবনিকাবিহার এব নিতরাং রোচতে । অতঃশ্রীভাগবতাদিযু তাদৃশএব জায়তে। অত একান্তিভ্যোপি স্থব প্ররোচ্ভইত্যেবং রত্নমণ্ডপকপ্পদ্রুমৌ শ্রীবৃন্দ।বননিকুঞ্জনীপৌ জ্যেয়াবিতি লিথিতং। কিঞা তত্ততা লতাদি পুষ্পানাং বিচিত্তবর্ণগুণত্বেন রত্নসাদৃশ্যাৎ পুষ্পময়ং কুঞ্জং রত্ন-মণ্ডপএব তথা তত্ৰত্যকদয়াদিপাদপাশ্চ সহ্বাভীউপূরণাং কল্পদ্রমাএব। ওথাচদশমস্বাস্কো। তাহোএষাং বরং জন্ম সর্ব্ধপ্রাণ্যপঞ্জীবিনাং। স্ক্রনস্যের থেষাং বৈ বিমুখা যান্তি নার্থিনঃ ইত্যাদি। যদ্যপি চম্প্রকাদয়োপি বহুবোর্ক্ষা রুন্দারণ্যে বিরাজন্তে তথাচ তত্তৈব জ্ঞীগোপীনাং শ্রীভগবদন্তেষণে কচ্চিৎ কুরুবকাশোক নাগ পুমাগ চম্পক ইত্যাদি। তথাপি কদম্বপাদপপ্রায়-মিতি হরিবংশোক্তেঃ বিশেষতোভগবৎপ্রিয়ত্ত্বেন অতএব কদমপাদপচ্ছায়ে স্থিতং বৃন্দাবনে কুচিৎ ইতিগৌতমীয়ওস্ত্রোক্তেশ্চাত্র নীপোলিখিতঃ। অথ ধর্মাদীনাং শ্রীভগবদাসনপাদৈকা-অয়ত্বাৎ অধর্মাদীনামপি ভগবতোভক্তবর্গস্য বা কস্যচিদ্ধক্তবাৎসল্যেন কদাচিৎ ধর্মাতিক্রম <u>भौतिनक्रभानाः उत्तरुवाश्यश्रदाः व्यथम्। त्रीनामिश जगर्जाजङ्यर्गमा न्यात्मारेनक्रीस्त्रनाः</u> মতেইপি বিরুদ্ধঃ স্যাৎ । হৃদজ্জে ন্যাসোধনন্তঃ জীবলদেবঃ। সূর্য্যাদিমগুলৰপঞ্চ সংৰতঃ প্রস্থার মশীতামুফং মনোনয়নাহলাদকপরস্পার্মিলিত সূর্য্যচন্দ্রাদিতেজ ইব সহজং ঞীভগবত্তেজ এব সত্বাদীনাঞ্চ নিজভক্তাদ্যর্থং স্বীকৃতানাং তথা আত্মাদীনাঞ্চ তদংশত্বাদিনা স্বত্তএব সেবকাদি-ৰূপাণাং তদেকাশ্ৰয়তাপি নৈব বিৰুধ্যতে তান্ত্ৰিকৈন্ত কেবলং বিচিত্ৰতন্ত্ৰৎফলাভিসন্ধিস-কামতান্ত্রিকভক্তেয় শ্রীভগবদৈশ্বর্যাবিশেষপ্রদর্শনেন শ্রদ্ধাতিশয়োৎপাদনায় ক্ষীরসিক্ষাদিন্যা-সোবিহিতঃ নত্ত সাক্ষাৎ শ্রীমধুরাদিনামনির্দেশাদিকং কৃত্যিতি অলমভিবিস্তরেণ ॥৮০॥ স যত্র ক্ষীরাক্ষিং সরতি সুরভীভাশ্চ সুমহামিনেযার্দ্ধাথ্যা বা ব্রজ্ঞ নিহি যত্রাপি সময়ং ৷ ভল্পে খেতরীপং ভমছমিহ গোলোকমিতি যং বিদন্তন্তে সন্তঃ ক্ষিতিবিরলচারাঃ কতিপয়ে ৷৷ ৮১ ৷৷

ফীরসিক্ষুঃ শ্রীমধুরা শ্বেভদ্বীপশ্চ শ্রীবৃন্দাবনমিতি শ্রীব্রহ্মসংহিতাবচনেন সাধয়তি স ঘতেতি। তং শেতদীপং ভজে আশ্রয়ে যং শেতদ্বীপং গোলোকং বৈকুঠলোকোপরি স্থিতং গবাং লোকমিতি বিদ্সুঃ তে অনিকাচনীয়াঃ কতিপয়ে অপ্পএব ভবস্থি নপ্ত বছ্বঃ অতঃ ক্ষিতিবিরলচার্জঃ প্রম-ডলভাইত্যর্গঃ। যদ্বা প্রম্বোপ্যপ্রকাশশঙ্কয়। প্রেম্বিশেষোদ্যাপাদিত্সর্ক্রসঞ্পরিত্যাবের বা লোকেরু নিভূতং চরন্তীভার্যঃ। ননু শাকদ্বীপে ক্ষীর্দিক্ষো বর্ত্তমানং প্রপঞ্চান্তর্বতং প্রদিদ্ধং শেতদীপং নিত্যপর্মানন্দর্সাত্মকান ক্রকীর্সাগরাকীর্ণপ্রপঞ্চতীতগোলোকমিতি ক্ষং তে জ্ঞান্তমর্সন্তি পরস্পরবিরোধেনৈক্যাসম্ভবাৎ। সভ্যং। সোপি তাদৃশএবেতি বিশেষ দেয়েন সাগ্যতি। সং অনির্বাচনীয়ঃ ইত্যপ্রাক্কতত্বং প্রমানন্দ্রসময়ত্বাদিকঞ্চ স্টিতং। স্থ্রভীভাঃ কাম--ধেক্তাঃ প্রসর্তীতি বর্ত্তমাননির্দেশাদিনা নিতাত্মঞ্ছ দশিতং। কিঞ্চ। স্থমহান বৎসরার্ভা। পর্-দ্ব্যােরা নিমেষাদ্বাধাঃ অতার ফুক্ষােরা সময়ঃ কালেগি ন যত্র এছতি যত্তাার প্রাপ্নাতী ত্যর্থঃ। শ্রীমণ্রায়াশ্চ তাদৃশন্নাৎ শ্রীমণুরৈর জিগোলোক ইতি শ্রীভাগরতামূতো ভরধতে গোলোক মালাল্যে বিস্তরেণোক্তমেবাস্থি। এবং গোলোক্স্য শ্বেতদ্বীপেন সঙ্গাভেদাৎ ক্ষীর্নিজ্পেত-দ্বীপন্যালোপি ন বিরুদ্ধ ইতি ভাবঃ। যদ্বা গ্রাং লোকঃ নিবাসস্থ,নং গোকুলমিতি প্রিসিদ্ধা উবৃন্দ।বনাদিঞ্নিন্দ্রজভূমিঃ। যং গোলোকং শেতদীপমিতি বিদ্যঃ। তং গোলোকং ভঞ্জ ইত্যায়ঃ । এবং শ্রীগোলোকস্য মাহাল্যবিশেষসম্পত্যা হুরস্বয়েপি সোটব্যঃ। নমু শ্রেভর্বীগো ক্ষীরসমুদ্যে নিতাং বর্তত্ত্তগবদেকনিষ্ঠানাং স্থেতমহাপ্রক্ষাণাং নিবাসেন কালভয়ঞ্চ নাজী-ত্যাশ্জ্য গোলোকস্যাপ্যস্য ভাচুশত্বং বিশেষণ্ডিয়ামাহ যত্র যদ্মিন্ গোলোকে সইতানেন স্থায়-ভীভ্যঃ মরতীত্যাদিনা চ শ্বেতদ্বীপতো২প্যস্য বিশেষউক্তঃ। অন্যৎ সমানং। এবং শ্রীবৃন্দাবনাদি-ব্ৰজভূমেমণ্রান্তর্গতত্বেন এমথুর, ক্ষীরসিক্ষুত্তৰ জভূমিপ্রধানঞ্চ এরেগাবর্জন দিব্যাপি এরেন্দ্র-বনং শেতদ্বীপ ইতি.শিদ্ধং। যথা। আয়াবর্ডান্তর্বান্তি শ্রীকৃন্দাবনমেবেদং শ্রেতদ্বীপঃ তঞ্চ পর্যোদ ৰ্কতর গোলোকমিতি বিদন্তইতি যথাক্রমমেবান্বয়ঃ। মুদ্দাবনস্য শ্বেতদ্বীপত্ত্বে হেল্ডঃ স যত্রেতি অন্যৎ পূর্ববদেব। এবং সন্ততানন্ত্রীনন্দগোপরাজ্ঞজকামধেনুষ্থনিবাসভোহসুক্ষণকীর-ধারাপরিক্ষরণেন ধবলিতত্বাৎ ঐকালিকীে েটিতত্বেন মণ্ডলাকারতয়া দ্বীপনক্শ্যমানত্বাজ তথা সর্বাথা বিশুদ্ধানাং লোকানাং শ্রীনন্দাদীনামাশ্রয়ন্ত্রাচ্চ তথা তদ্দেশাধিকারিণঃ শে্তবর্ণসং নিবাদস্বাদপি শ্রীবৃক্দাবনমেব শ্বেভদ্বীপইতি যুক্তমেব অন্যথা শাকদ্বীপে নিত্যং ক্ষীরসমূদ্র-সিন্ধেঃ শেতদ্বীপে স্থরভীভ্যঃসরতীত্যুক্তেরঘটনাদিতি দিক্। তস্য গোলোকত্বেন বেদনেপ্যেষএব হেওরুস্থেরঃ গোলোকস্যাপি তম্য তথাভূতস্বাৎ এবং প্রপঞ্চান্তর্ভিন্ত্রীমথুরামণ্ডলভ্রেত দ্বীপাখ্য শ্রবন্দাবনমিদং প্রপঞাজীতবৈকুঠোপরিস্থিতগোলকমিতি যে বিদন্তি তে ফিতি বিরলচারা ইতি পূর্ববেদেবার্থঃ এবং শ্রীবৃন্দাবনংশ্বেতদ্বীপ্রব তৎপ্রধানকত্রজভূমিময়ত্বঃ 🕮 মথুরা কীর সিক্ষুরিতি সিদ্ধং ॥ ৮১॥

অথ পীঠমন্ত্রঃ। ক্রমদীপিকায়া৲। তারোহাদয়ং ভগবান্ বিষ্ণুঃ সর্বাদ্বিতশ্চ ভূতাস্থা। ডেন্তাঃ সবাসুদেবাঃ সর্বাত্মযুতঞ্চ সংযোগ৲। যোগবিধৌ চ পদ্মৎ পীঠাত্মা ডেযুভোনতিশ্চান্তে। পীঠমহামন্ক্রক্তঃ পর্য্যাপ্তোইয়৲ সপর্য্যাসু।

অথ ঋষ্যাদিশারণং । ওঁ অফাদশাক্ষরমন্ত্রস্য শ্রীনারদ্খিষ গাঁয়ত্রীচ্ছন্দঃ
সকললোকমঙ্গলানন্দতনয়োদেবতা হুীৎবীজং স্বাহা শক্তিঃ কৃষ্ণঃপ্রকৃতিদুর্গাধিষ্ঠাত্রী
দেবতাহভিমতার্থে বিনিয়োগঃ । ভথাচ সংমোহনতন্ত্রে শিবোমা সম্বাদে । ঋষিনারদইত্যুক্তোগায়ত্রীচ্ছন্দ উচ্যতে । গোপবেশধরঃ কৃষ্ণো দেবতা পরিকীর্ভিতঃ ।
বীজং মন্যামৎজন্ত প্রিয়াশক্তির্হবিভূজঃ । দ্বমেব পরমেশানি অস্যাধিষ্ঠাত্দেবতা ।
চত্তর্বর্গফলাবাইপ্ত্য বিনিয়োগঃ প্রকীর্ভিতঃ ।। ৮২ ।।

অথাঙ্গন্যাসং । চত্ত্ৰশ্চত্তৰ্ভিৰ্কবৈৰ্ণিচ চত্ত্বাৰ্য্যাঞ্চানি কণ্পয়েৎ । দ্বাভ্যামস্ত্ৰাখ্য-মঙ্গুঞ্চ তস্যেত্যঙ্গানি পঞ্চ বৈ ॥৮৩॥ ন্যাসেচ্চ ব্যাপকত্বেন ভান্যঙ্গানি করন্বয়ে । ভান্যঙ্গুলীষু পঞ্চাথ কেচিদ্বৰ্ণান্ শ্বরানপি ॥ ৮৪॥ তেচোক্তাং । ভাবণক্ষোভণা-

তারঃ প্রণবঃ ততোহৃদয়ং নমঃ ইতিপদং তত্ত তগানিতি বিষ্ণুরিতি চ। সর্বান্থিতঃ সর্বান্ধর্ক্তণভূতায়া সর্বভূতায়েতি এতে ত্রয়ঃ স্বাস্থদেবাঃ বাস্তদেবসহিতাঃ প্রত্যেকং ওেয়াঃ চত্তর্থাস্তাঃ। তত্ত স্বাস্থনা মৃতং সংযোগং সর্বান্ধসংযোগমিতি নপুংসকত্বমার্যং। তত্ত যোগসাঃবধৌ অন্তে পত্তং যোগপত্মমিতি। তদত্তে ওেয়ুক্তভত্তর্যন্তঃ পীঠায়া তদত্তে চ নিতঃ নমঃ শকঃ
এবং ওঁনমোভগবতেবিষ্ণবে সর্বভূতায়নে বাস্ক্রেদবায় সর্বান্ধসংযোগপত্তপতি লানে নম ইতি
সিদ্ধং। তথাচ শার্দাতিলকে। নমোভগবতে বুয়াৎ বিষ্ণবে চ পদং বদেং। সর্বভূতায়নে বাস্ক্রেরিতি বদেন্ততঃ। সর্বান্ধসংযোগপদাদ্বোগপত্মপদং পুনঃ। পীঠায়নে হৃদন্তাহ্রং মত্রস্থারাদিরীরিত ইতি। সনৎকুমারকণ্পে চ। ওঁনমঃ পদমাভাষ্য তথা ভগবতে পদং। বাস্থদেবায়
ইত্যুক্ত্বা সর্বান্ধেতি পদং তথা। সংযোগ যোগেত্যুক্ত্বা চঁ তথা পীঠায়নে পদং। বহিপত্নী সমাযুক্তং পীঠমন্ত্র ইতীরিতইতি॥ ৮২॥

দ্বাভ্যামন্ত্র্যাভ্যাং ধর্ণাভ্যাং অস্ত্রাখ্যং পঞ্চমমঙ্গং কণ্পয়ে ইতি অনেন প্রকারেণ তল্যান্টা-করমন্ত্রন্য পঞ্চাঙ্গানি ভবস্তি। বৈ প্রসিদ্ধৌ ॥ ৮৩॥ ব্যাপকত্বেনেতি। করয়োরন্তর্মি ইঃপাশ্বে চ ব্যাপব্য তানি পঞ্চাঙ্গানি নর্মেবে মন্ত্রমিত্যর্থঃ করদ্বয়ে ন্যাপ্যেও অত্র প্রণবদস্পতিভমিতি কেচিদাত্রঃ। অধানন্তরং তানি পঞ্চাঙ্গানি ক্রমেণ করদ্বয়্যাঙ্গু প্রাঙ্গু লীয়ু ন্যাস্যেও। কেচিচ্চ তৈঃ পঞ্চাক্ষঃ সহ করদ্বয়াঙ্গু লীঘেব মহাবাণপঞ্চকস্যানঙ্গপঞ্চক্যা চ ন্যা,সমিচ্ছন্ত্রীতি লিখতি কেচিদিতি। অপিক্ষস্যাত্র সমুচ্চয়ার্থিরাং তানি পঞ্চাঙ্গানি পঞ্চবাণান্ পঞ্চম্মরাংক্ষান্ত্রাক্ষ্ তাব্বে-হাঙ্গু লীয়ু মুগলন্যসান্ত্রীত্রর্থঃ। তত্রচ বীক্ষপূর্ব্বকং ন্যসান্তি। তত্রাপি বাণেষ্ বাণশকং বীজন্ত্র নাদ্যাক্ষরঞ্চ তথাই নঙ্গেষু চ শোষণানঙ্গমোহন্মদ্বাদিশকংপ্রযুপ্তন্তি॥ ৮৪॥ দ্রাবণাদয়ঃ পঞ্চ-

কর্বশীরুং সুবিণান্তথা। শোষণোমোহনঃ সন্দীপনন্তাপনমাদনাবিতি। ৮৫।।
কিঞান নামাহন্তং হৃদয়ঞ্চাইলঃ শিরঃ স্বাহাস্থিত শিখা । ব্যত্যুতঞ্চ ক্বচ হং
যুগন্তাং চ ফড়যুতং ।। ৮৬।। ন্যস্তি পুনরজুঠো তহ্জন্যে মধ্যমে তথা। অনা
মিকে কনিঠে চ ক্রনাদকৈল পঞ্চিঃ ।। ৮৭।। পুনশ্চ হৃদয়াদীনি তথাঙ্গুঠাদিকানি চ। ন্যস্তি যুগপং সর্বাণ্যকৈত্যঃ পঞ্চিঃ ক্রনাং ।। ৮৮ ।। ন্যস্তি চ
যড়ঙ্গানি হৃদয়াদীনি তন্মনোঃ। হৃদয়াদিষ্ চৈতেষা পঞ্চৈকং দিল্লু চ ক্রনাং । ৮৯।
যড়ঙ্গানি চোক্তানি সংমোহনতন্তে সনংকুমারকশেশ। বর্ণেনকেন হৃদয়ৎ ত্রিভিরেব শিরোমতং । চন্তর্ভিশ্চ শিখা প্রাক্তা তথৈব ক্বচ মতং । নেত্র তথা
চতুর্বিণিরস্তাং দ্বাভ্যাং তথা মত্যিতি ।। ১০ ।। তত্শচাপাদমাকেশায়্যসের
দ্বোভ্যামিমংমনুং । বারাংস্ত্রীন্ ব্যাপকত্বেন ন্যস্যেচ্চ প্রবং সক্তং ।। ১১ ।।

বাণাঃ। তত্র আকর্ষঃ আকর্ষণঃ বশীকৃং বশীকরণঃ। শোষণাদয়ঃ পঞ্চ শরাঃ। প্রযোগঃ। ক্লীঁকুকায়া क्री हाँ जावनात क्री भावनानकाथ नमः । क्री त्याविकात ही क्री क्रिका क्रांडनात्र नमः । ही সোহনমদনার নমঃ। ত্রী গোপীজনার ত্রী আংআকর্ষণবাণার ক্রীসন্দীপনমদনাত্তরায় নমঃ। হ্রীবলভার হাবশীকরণবাণার হ্রীতাপনরতানঙ্গার নমঃ। হ্রীসাহা হ্রীসুাংসুবেণায় নমঃ। হাঁমাদনমকর ধজার নমঃ। এষু চ মধ্যে নমঃ শব্দং কেচিন্ন প্রযুক্ত যে। অত্র স্বসংপ্রদায়ব্যব্ছার এবাত্মসর্ত্রব্যঃ ইতিপূর্বাং লিখতমেব । ভচ্চান্যত্রাপ্যহাং। কেচিদিতি ক্রমাদীকিকায়াং । অথ ন্তুগর্ক্ত্রার্ণ স্যাহংমনোর্ন্যাদনং ক্রেরে রচয়য় করম্বন্দে পঞ্চাক্সমন্কুলিপঞ্কে । তনুমন্ মন্ত্রাপায়াথো ত্রিশঃ প্রণবং সক্ষমস্ক্রনিপয়ান্যস্যাভূয়ঃ পদানি চ সাদরমিত্যক্তেমঁহাবাণা-নঙ্গাদিন্যাসাপ্রতিপাদনাৎ এবমগ্রেসি জ্ঞেরং॥৮৫॥ অন্যদ্পি পর্মত্মেব লিখতি নমোস্ত মিতি ত্রিভিঃ। অক্টেম্বরের পঞ্জভিঃ **সহ নমঃশব্দান্ত হৃদ**রাদিপঞ্চকং নাস্যন্তি। প্রয়োগঃ। ক্লী কুঞ্চায় হৃদয়ায় নমঃ। গোবিনদার শিরসে স্বাহা। গোপীজনশিধারে ব্রট্। বল্লভায় ক্রচায় তুং স্বাহা অস্ত্রায় কড়িতি। অত্রচ হৃদয়াদীনাং হৃদয়াদিস্থানেম্বে ন্যাসঃ ক্রচস্য সর্বাগাত্রেযু অস্ত্রস্য চ চত্ত দিক্তু জ্ঞেরঃ॥ ৮৬ শ পুনঃ পঞ্জির কৈতেঃ সহ অঙ্গু ঠদ্যাদিপঞ্কং ক্রমান্যগান্তি। প্রয়োগঃ ক্লী কৃষ্ণায় অঙ্গু ঠাভ্যাং নমঃ ইত্যাদি। এষাঞ্চ তত্তদঙ্গু লীয়েব ন্যাসোজেয়ঃ॥৮৭॥ পুনশ্চ তৈরেব পঞ্জিরকৈঃ সহ তানি হৃদয়াদীনি অঙ্গুঞ্চাদীনি চ স্কাণোব যুগপৎ একদৈব ন্যায়তি। প্রয়োগঃ ক্লীকৃষ্ণায় ক্রদরায় নমঃ। অঙ্গুডাভ্যাং নম ইত্যাদি এতেষাঞ্চ করাঙ্গুলিঘের ন্যানঃ ॥ ৮৮॥ এবং পঞ্চাঙ্গন্যাদং দংলিখ্য ষড়ঙ্গন্যাদং প্রমত্মের লিখতি ন্যুগান্তি চেতি। তেষাং ন্যাদস্তানং দর্শয়তি হৃদয়েতি। এতেষাং বড়ক্সানাং পঞ্চাক্সানি হৃদয়শিরঃ শিথাক্বচনেত্রাখ্যানি ক্রমেণ হৃদ্য়াদিষু নিজহৃদয়শির:শিথাকবচনেত্রেষের নাস্যন্তি। অত্রচ কবচ্যা পূর্ববেৎ সর্বাঙ্গেষ্ ন্যানোজ্যের এবমস্তামক্ষমস্ত্রাখ্যঞ্জ সক্ষদিক্ষু ন্যস্যন্তি॥ ৮৯॥ তথেবতি চন্তর্ভিরিত্যর্থঃ॥৯০॥ এবমঙ্গন্যাসং লিখিত্বা অধুনা মন্ত্ৰাক্ষরন্যাসংলিথিয়ান্তনুমনুমনুষ্যাপয়েতি ক্রমদীপিকোজানু-শারেণ মন্ত্রণ্য ব্যাপকন্যাসমাদৌ লিখতি ততকেতি। কেশমারভ্য পাদপর্যান্তং ব্যাপকত্ত্বন ইমমন্তাদশাক্ষরং মূলমন্ত্রং দোভাাং কৃত্বা বারতয়ং ন্যাসেত্র প্রণবঞ্চ সক্ষারমেকং তথৈব नारमार ॥ २० ॥

অথাক্ষরন্যাসঃ । ততোহ্টাদশবর্ণাৎশ্চ মন্ত্রন্যাস্য যথাক্রমৎ । দন্তে ললাটে ভ্রমধ্যে কর্ণয়োর্নেক্রয়োর্দ্ধয়োঃ। নাসয়োর্ক্রদনে কণ্ঠে হৃদি নাভৌ কটিদ্বয়ে। গুছেঃ জানুত্বয়ে চৈকং ন্যাদেকঞ্চ পাদয়োঃ।। ১২।। সন্তোন্যসান্তি ভারাদিনয়োন্তাং-ন্তান স্বিন্দুকান্। শ্রীশক্তিকামবীজৈশ্চ স্ক্রাদিক্রমভোহপরে।। ১৩।।

অথপদন্যাসঃ । তারং শিরসি বিন্যার পঞ্চয়ন্ত্রপদানি চ। নাস্যেরেত্রদ্বরে বক্তে ক্লুক্রান্ত্রিদ্র ক্লমান । দেহে চ ব্যাপকত্বেন নাস্যেন্তান্যথিলে পুনঃ। কেচি-ভানি নমোন্তানি নাস্যন্ত্রাদ্যাক্ষরৈঃ সহ।। ১৪।। স্বাহান্তানি তথা ত্রীনি সংনিশ্রা-ণু ত্ররোত্রৈঃ। শুহ্যাকালান্যন্তকাচ্চ ব্যাপম্য চরণাব্ধি।। ১৫।। ন্যাসোহত জ্ঞান-নিষ্ঠানাং গুহ্যাকিবিষয়স্থ যা । স্বস্ত্রবর্তনোঃ কার্যান্তব্রহর্ণেষ্ বৈষ্ট্রেঃ। ১৬।।

ছয়োরিত্যনেন কর্ণাদিত্রয়ে প্রত্যেকং ছৌবণে তথা কটিদ্বয়েপি দ্বাবেব অগ্রেজাল্ড দ্বান্থকি মিতি লিখনাথ ॥ ৯২॥ তেষামেব ন্যাসপ্রকারং সৎসংপ্রানায়ানুসারেণ লিখিতি সম্বইতি। তান্ অফাদশবর্ণান্ বিন্দুসহিতানের ন্যামান্ত তথা তারঃ প্রণবঃ আদৌ যেযাং নমইতি অতে যেযাং তাংশ্চ তান্। প্রয়োগঃ। ওঁ ক্লীং নমঃ কং নম ইত্যাদি। অপরে কেচিচ্চ তানের লক্ষী শক্তি কামানাং বীজৈঃ সহ তথা চকারন্যোক্তসমৃচ্যোর্থিত্বাৎ প্রব্রেণ তারনমোবিন্দুসহিতানের চ তত্রত সৃষ্টিস্থিতিসংক্ত্তিক্রমেণৈর ন্যামানি । তত্র সৃষ্টিশ্বিত্বকাদিক্রমেণের স্থিতি প্রথার্থ পাদাদিক।। এবং ন্যামানাং নানাপ্রকারতাভিপ্রায়েণ্য প্র্রেং লিখি হং যথাসংপ্রদায়ং ন্যাসান্ কুর্যাদিতি॥ ৯৩॥

আদৌ তারং প্রণবং স্থানরসি বিন্যায় পশ্চামন্ত্রম্য পদপঞ্চকং ক্রমান্নেত্রদ্বয়াদ্যদ্পপ্রে नारमाथ। भूनक जानि अक्षभावानि व्यथित (नरह वा। भक्र द्वन मर्ख गांवः वा। भया नारमाथ। उरे वव মতান্তরং লিখতি কেচিদিতি। তানি পঞ্ পদানি আদ্যাক্ষরৈঃ তত্তৎপদপ্রথমাক্ষরৈঃ সহ। প্রয়োগঃ। ক্লীক্রানমঃ কুংকুঞায় নমঃ গোংগোবিন্দায় নমঃ গোংগোপীক্রবল্লভায় নমঃ স্বাণ স্বাহানমইতি॥৯৪॥ তথেতি সমুচ্চয়ে। পূর্ববেদাদৌ তারং শিরনি বিন্যস্য পশ্চাৎ ত্রীণি ন ু । দা-নি ক্রমেণ গুহ্যাদিস্থানতয়মারভ্য পাদপথ্যতঃ কেচিল্যুস্যতি । উত্তরোজরুসংমিশ্রাণীতি পূর্বাপূর্বা পদেন উত্তরোত্তরপদং সংযোজ্যেতার্থঃ। প্রয়োগঃ ক্লী কৃষ্ণায় স্বাহা ক্লী কৃষ্ণায় গোবিন্দায় স্বাহা ক্লাঁ ক্ষণায় গোবিনদায় গোপীজনবল্লভায় স্বাহা ইতি ॥ ৯৫ ॥ ননু পূৰ্বাং কেশরাদিন্যানে মুকু-न्मानौनाः शानमूलात्ने उञ्जनात्म ठानिक्कमा छत्श वर्गमनगौत्मभाव क्याक्षिवर्गभनाः গুহ্যাদৌ ন্যাশোবৃত্তঃ জ্রীক্লঞ্চরণাজভক্তিনিষ্ঠেশ্চ সাধৃভিত্তত্ত্ব তেন তেন প্রকারেণ কথং ন্যাসং কার্যাঃ অস্থানেযু তত্তন্মাদেন মহাদোষশঙ্কাপত্তেঃ তত্ত্র লিথতি ন্যাসইতি । অত্র ন্যাসপ্র করণে এষু লিখিতেষু ন্যাসেষু মধ্যে ইতি বা জ্ঞাননিষ্ঠানামিতি জ্ঞানপরৈ ঝিধীয়ম।নইত্যর্থঃ। তেষামধ্যৈতজ্ঞানতোভেদাভাবেন তত্র তত্ত্রভাদে দোষশঙ্কাপি নোৎপদ্যত ইতিভাবঃ। স গুহ্যাদিবিষয়োন্যাসঃ বৈষ্ণবৈঃ শ্রীভগদ্ধক্রিপরৈস্থ স্বস্থ বর্ণতনোঃ ভূতগুদ্ধ্যা নিজপূর্ব্বশরীরং দগ্ধ্বা বর্ণময়ামৃতর্ক্তা সমুৎপাদিত্স। মাতৃকার্ণময়স্য শরীরস্য তত্ত্বর্লেষু মাতৃকান্য,সব,বস্থয়। গুহাপদাদিন্যাদেষু তত্তদক্ষরপেদকরেম্বের কার্য্য ইতার্থঃ এবঞ্চ ভারনয়া তত্ত্বর্ণেম্বর ন্যাসাল कालि मार्यका ७४। उत्पारम् वर्गानाः निकाकात्रा यात्रादाव नात्रामालि निकारे निकार ৰ্দ্যমিতি দিক্॥ ৯৬॥

তথ ঋষাদিন্যাসঃ । ঋষ্যাদীন্ সপ্তভাগাংশ্চন্যসেদ্স্য মনোঃ ক্রমাৎ । মূর্দ্ধাস্যজ্ৎসুকুচয়োঃ পুনর্জুদি পুনর্জুদি ৷৷ ১৭ ৷৷

অথ মৃদ্রাপঞ্চকং। বেণাখ্যাৎ বনমালাখ্যাং মুদ্রাং সংদর্শয়েন্তভঃ। এবিং-সাখ্যাং কৌস্তভাখ্যাৎ বিল্যখ্যাঞ্চ মনোরমাং।। ৯৮।। ইত্থৎ ন্যন্তশরীরঃ সন্ ক্রা দিগুরানং পুনঃ। করকচ্ছপিকাং ক্রডাধ্যায়েচ্ছ্রীনন্দনন্দনং।। ৯৯।।

অথ জ্ঞানদনন্দনভগৰদ্ধানবিধিঃ । অথ প্রকটসৌরভোদালিভসাধিকাৎ ক্রসংপ্রস্ননবপল্লবপ্রকরনমূশাথৈজে মৈঃ । প্রফুলনবমঞ্জরীললিভবল্লরীবেটিভৈঃ সরে চিছ্লিরিভং শিবং সিত্যভিস্ত বৃন্দাবনং ।। ১০০ ।। বিকাসিসুমনোরসাস্থাদন-মঞ্জীলঃ সঞ্জরিছিলীমুখম্থোদাতৈমুখিরিতান্তরং বৃদ্ধুতিঃ। কপোতন্তকশারিকাপর-ভ্রাদিভিঃ পত্রিভির্মিরাণিত্রমিতন্তভোভুজগশক্রন্ত্রাকুলং ।। ১০১ ।। কলিন্দ-

খ্যাদীনাং মুর্দাদি এয়ে ত্রীন্ স্তনদ্বয়ে দ্বৌ পুনহ্র দয়এব দ্বাবিত্যবং স্থানসপ্তকে ক্রেক্
এতদন্তীদশক্ষেরমন্ত্রস্য খ্যাদিভাগসপ্তকং ন্যাস্যেদিতার্থঃ। অত্র চ প্রবাদিচত্র্যান্তিয়াদি
প্রবিলিপিতান্দারেণ স্করি চতুর্থীনমোন্ত। জ্যো। প্রয়োগঃ। অন্তাদশাক্ষর প্রীগোপারমন্ত্রস্থানার খ্যায় নমঃ গায়ক্রৈ ছন্দ্রেনমঃ সকললোকমঞ্চল জ্বিন্নদতনরায় দেবতারে নমঃ
ইত্যাদি।। ৯৭।

বেণাদিমুন্তালকণণতো মুদ্রাসমুক্তয়প্রসঙ্গে লেখাং।মনোরমানিতি বদ্যাপি বহ্বোমুদ্রাং সন্থি
ভথাপি বেণাদিপথাকমিদং ভগৰৎ প্রির্ভমন্তাদাদৌ দশরিতবামিতি ভাবং॥৯৮॥ দিগুক্রানে মন্ত্রশ্চায়ং ওঁন্মং সৃদর্শনায় অস্ত্রায় কড়িতি। তথাত ক্রমদীপিকায়াং। প্রণবহৃদোরবসানে
সচন্ত্রি সৃদর্শনং তথা স্ত্রপদং। উজ্বা কড়ন্তমমুনা কলয়েমানুনাস্ত্রমৃদ্রয় দশ হরি টেতি অস্যার্থত প্রণারঃ ত্রং নমঃ এতয়োরন্তে চক্তনীবিভজিসহিতং স্থাদানিতি পদং তথা চত্ত্যিন্তমেবাল্রপদং কীদৃশং ফড়িতি শন্দান্তং অনেন মান্ত্রণ অস্ত্রমুদ্রয়া দশদিগুরুনং কুর্বাাদিতি। কর্বনচ্চ্পিকামুদ্রালকণ্ড ভুতগুদ্ধী প্রবং লিখিতমেবান্তি। স্বাক্ষে কর্বয়ম্বাদং বিন্যাস্ত্রপ্রথ হন্তাবুৎসঞ্চমাধায়েতি শ্রীভৃতেবক্তঃ॥৯৯॥

অথানন্তরং দিত্নতিঃ শুদ্ধনাঃ সন্ বৃদ্ধাবনং চিন্তরেৎ কীদৃশং দ্রুটিঃ শিলিরিতং শীতলীকুতং কীদ্শৈঃ প্রকটমুদ্ভিং সৌরভং যদা তচ্চ তৎ উদ্যালিতমাধিকঞ্চ প্রচাতমধ্র উৎফুল্লঞ্চ বিক
দিতং সচ্চ উত্তমং বহপ্রস্নাং পুজাং নবপল্লবঞ্চ তয়েঃ প্রকরঃ সমূহঃ তেন ন্যাঃ শাখা যেষাং
তৈঃ। মান্তিকেতি ক্রুম্বাং মহাকবিনিবদ্ধাবাৎ গোঢ়বাং। প্রকটসৌরভাকুলিতমন্তভ্রে লেস্দিতি
পাঠস্ত স্থাম এব। পুনঃ কীদৃশাঃ প্রফুলাভির্নবমঞ্জরীভির্লিতা মনোহরা যা বল্লয়ঃ অপ্রশাখাঃ
লভা বা তাভির্বিটিতৈঃ। শিবং মঙ্গলকপং নিকাধ দৃশ্ধ প্রমকল্যাণকর জাচ্চ॥ ১০০॥ বৃন্দাবনমেব বিশিন্তি বিকাশীতি দ্বাভাাং। সঞ্জরতামিতস্ততো অমতাং শিলীসুখানাং অমরাণাং
মুখেভাঃ উদ্গাতৈরুপিতেঃ বাকুটিঃ বাক্বানিং মুখারতং মুখারতং মুখারতাং নীতং অন্তরং মধাং
যায় তহ। কীদৃশাঃ বিকাশিনাং স্থমনসাং পুজানাং রস্মা আখাদনং অমরৈরবলেহনং তেন
মঞ্জুলৈর্মনোহরৈঃ বিরাণিতং শক্ষায়িতং। ভুক্তাশতোর্মহ্বস্য নৃত্যেন আকুলং ব্যাপ্তং।। ১০০ গ্র

পুরিত্ত শ্লেল হরিবিপুরাৎ বাহিভির্মিনি প্রদার দার রজশ্চ য়ে দুষ্টরে: । প্রদীপিত মনোভব ব্রজবিলা দিনীবাসসাং বিলোলন বিহারি ভিঃ সভত সেবিতৎ মারু হৈ: । ১০২। প্রবালনবপল্লবং মরক ভাজদং বজুমৌ ক্তিকপ্রকরকোরকং কমলর গিনানাফলং। হবিষ্ঠমখিল জুভিঃ সভত সেবিতৎ কামদং ভদন্তর পি কণ্পকাং ঘুপমুদ্ঞিতৎ চিন্ত- রেং ।। ১০৩ ।। স্হেমশিখরাবলের দিতভানু বড়ু স্বরামধোহস্য কনক হলী মমৃত-শীকরা সারিণঃ । প্রদী প্রমণিকু উমাং কুসুমরে পুপ্ঞোজ্জ্লাং মারে ৎ পুনরভল্রিতোলি ক্রম্বিত্র স্থাং বুং বুং বা ১০৪।। ভদ্রকু দ্রিমনি বিষ্টমহিষ্ঠ যোগপী ঠেই ইপত্রমরূ বুং কমলং বিচন্ত্র । উদ্যদিরো চনসরোচির মৃষ্য মধ্যে সঞ্চিন্ত য়েৎ সুখনি বিষ্টমথো মুকুন্দং ।। ১০৫ ।। সূত্রামর জুদলি ভাঞ্জন মেঘপুঞ্জপ্রত্য প্রনীল জল জন্মসমান ভাসং ।

যমুনায় শেলন্তীনাং লহরীণাং বিপুষং জলবিন্দবং তাদাং বাহিভিনেতৃভিঃ মারুতৈঃ সততং সেৰিতং। বিলোলনং সঞ্চালনং ভদ্রপবিহারবদ্ধিঃ বিলোলনপরেরনারতনিষেবিতমিতি পাঠঃ সুগম এব। বিশেষণক্রয়েণ মারুভদ্য ক্রমেণ শৈত্যদৌগস্ধ্যমান্দ্যান্ম্যক্তানি॥ ১০২ ॥ তদ্য বৃন্দ্য-বন্দ্য অন্তর্মধ্যে কণ্পবৃক্ষমপি চিন্তয়েৎ। প্রবালং বিদ্রুমমেৰ ন্বপল্লবং যদ্য তং। মরকতং এব চ্চদঃ পত্রং যদ্য তং। বজুদ্য হীরকদ্য মৌজিকদ্য চ প্রকরঃ দমূহ এব কোরকঃপুষ্পকলিকা যদ্য তং। কমলরাগঃ পদারাগমণিরের নানাবিধং ফলং যাগ্য তং। স্থবিঠং স্কুলতরং। অথিলৈঃ যড্ভি-রেব ঋত্তভিঃ সততং সেবিতং। এতেন সর্বাদা সর্বাধুপ্পাঞ্চিত্র মুক্তং। উদঞ্চিতং উচ্ছি তং॥ ১০৩॥ অমৃতশীকরা সারিণঃ অমৃতবিন্দুবর্ষিণা হল্য কম্পেকাংঘ্রিপদ্য অধঃ কনকস্থলীং চিন্তয়েছ। শীকরা সানিণঃ ইতি পাঠেহপি উথৈবার্থঃ। কীদৃশীং সুহেমুঃ শোভনসুবর্ণস্য শিশুরং শৃঙ্গং তস্য আবলিঃ भरकिछगाः नकाभानुनिटायाजाञ्च छष् जाखेताः (मनीभामानाः । यदा मूट्स्मेमश्री निथताविकः শাখাপংক্তির্যন্য তস্যেতি কল্পকাংঘ্রপটেশ্যব বিশেষণং । পুনঃ কীদৃশীং প্রদীপ্তৈদ্দেদীপ্য-মানৈমণিভিঃ পদারাগাদিভিঃ কুটিমং রত্নবদ্ধভূমির্ঘস্যাস্তাং। অভন্তিতঃ অনলসঃ। বিগতা দূরী-ভূতাঃ বট্ তরক। ঊর্ময়ে। যদ্যান্তাং শোকমাছৌ জরামৃত্যু কুন্তু ট্ চেতি বভূপারঃ ॥ ১০৪ ॥ ত্যাঃ কনকস্থল্যা যদ্ৰত্নকুট্টিমং রত্নবন্ধভূভাগঃ ভশ্মিনিবিটং স্থিতং যথ মহিচাং মহন্তরং যোগ-প্রীয়ং তামিন্। কীদৃশং কমলং উদাতে:বিরোচনস্য রবেঃ সরোচিঃ সমানপ্রভং অতএবারুণং অমুষ্য কমলস্য মধ্যে স্থানিবিষ্টং স্থামানীনং যদ্বা কুট্তিমনিবিটেত্যতা নিবিষ্টশন্দার্থাসুসারে-ণাত্রাপি স্থাস্থিমিতার্থঃ বিলয়মানসন্তানকপ্রস্বদামেত্যগ্রে বক্ষামাণমালাবিলয়মানতায়াঃ তথা মৎস্যাঙ্গুশেতি বর্ণরিয়্মাণভক্ত জনৈকাশ্রয় শ্রীচরণকমল সন্দর্শনাসম্পত্তেশ্চ অতএব তৃতীয়-ক্ষাপে স্থিতং ব্ৰন্থ সাদীনং শ্রানয়া গুলাশয়মিত্যক্র মুখ্য স্বাভিপ্রায়েণাদৌ স্থিতমিতি জীকপিল-দেবেন নির্দ্দিষ্টং। সংমোহনতন্তে চ শ্রীশিবেনোক্তং। বেণুং গৃহীত্বা হস্তাভ্যাং মুখে সংযোজ্য সংস্থিতমিতি। সম্যক্ ত্রিভঙ্গলিতিং স্থিতমিত্যর্বঃ। যতন্তত্ত্র তেনৈব্যেকং। তিষ্ঠন্তং, দেবদেবেশং ত্রিভঙ্গললিতাক্তিনিতি। অতএবোক্তং শ্রীবিষ্কুধর্মোত্তরে। ধ্যাপালপ্রতিমাং কুর্যাছেণুবাদন-ত্তপ্রাং। বর্হাপীড়াং 'ঘনশ্যামাং দিভুক্ষামূর্দ্ধসংস্থিতামিতি।। ১০৫॥ - 🕮 মুকুন্দমের বিশিন্টি ্ত্তামেতি পঞ্বিংশতিভিঃ। স্থতামরত্নং ইক্রনীল্মণিঃ দণিতাঞ্জনং ঘৃষ্টকজ্জলং প্রত্যতাং নবং সুস্থানীলঘনকুঞ্ভিতকেশজালং রাজ্মনোজ্ঞশিতিকওলিখণ্ডচুড্ং 11 ১০৬ 11 রোলমলালিতসুরক্রেমপ্রসূন কল্পিতোত্ৎসমুৎকচনবোংপলকর্ণপূরং 1 লোলালককুরিভভালভলপ্রদাপ্তগোরোচনাভিলকমুক্তলচিল্লিমালং 11 ১০৭ 11 আপূর্ণশারদগতাৎকশশাক্ষবিষকান্তাননং ক্ষলপত্রবিশালনেত্রং 1 রত্ক্রুর্ত্বরুক্তলর্গ্রিন
দীপ্তগণ্ডস্থলীমুকুরমুনভচারুনাসং 11 ১০৮ 11 সিন্দুরসুন্দরভরাধর মিন্দুকুন্দরন্দার
মন্দ্রসিভ্দুতিদাপিতাশং 1 বন্ধপ্রালকুসুমপ্রচয়াবক প্রত্থৈবেয়কোজ্জ্লমনোহর
ক্ষকওং 11 ১০৯ 11 মন্তভ্রমন্ত্র্বরুক্তিবিল্লম্বানসন্তানকপ্রস্বদামপরিষ্কৃত্বাংসং 1
হারাবলীভগণরাজিতপবিরোবোনে গমন্থলীলিভিক্রেম্ভভভানুমন্তং 11১১০ 11 প্রীবৎ
সলক্ষণপুলক্ষিতমুন্নতাংসমাজানুপীনপরিবৃত্তমুজাভবাহুং 1 আবেজুরোদ্রমুদারগভীরনাভিৎ ভূঙ্গান্ধনানিকরমপ্রলুবোমরাজিং 11 ১১১ 11 দাদামণিপ্রঘটিতাঙ্গদকস্বোমিতিপ্রবেয়নারসনন্পুরন্তন্দ্বক্রং। দিব গাঙ্গরাগপরিপিঞ্জনিভাঙ্গ্যন্তিমাপীতবন্ত্র
পরিবীভনিভ্রনিভিত্রবিস্থ 11১১২ 11 চাক্রজ্ঞানুমনুবৃত্তমনোজ্জের্ডং কান্ডোন্নতপ্রপদিনিন্দ
তক্র্মকান্তিং 1 মানিকগদর্পনসন্মধনাজিরাজ্যভাজ্বিভিত্বদনসুন্দরপাদপদ্ব 1১১০ 1
মংস্যান্ধু শারদরকেত্ববনাজ্যবজ্বক্রিভারণকরাজ্ঞ্বিজ্যভিরামং 1 লাবণ্যসার-

নীলং জলজন্ম উৎপলং তৈঃ সম।না ভাঃ কাস্থিপ্সা তং। রাজৎ শোভমানং মনোজ্ঞং শিতিকঠ শিখ ওং ময়ুর পিচছং তেন চূড়া মৌলিঃ যস্য তং ! যদ্ধা তদেব চূড়ায়াং যস্য তং । কুচিচ কেশ-জালরাজদিতি সমস্তপাঠঃ ॥ ১০৬ ॥ রোলধৈঅ মিরৈলালিতং প্রীত্যা সেবিতং স্থাদ্রমপ্রহনং পারিক্ষাতপুষ্পং তেন কম্পিতঃ রচিতঃ উত্তংসঃশিরোভূষণং বেন তং। উচ্চলে উচ্চাতে হত্যন্তের) বা চিল্লিমালে ভুলতে যস্য তং ॥ ১০৭ ॥ আপুর্বং শারদঞ্চ পতাস্কঞ্চ নিক্ষলঙ্গং যচ্ছশাঙ্কবিষ্কং চন্দ্রমণ্ডলং তক্ষাদিপি কান্তং স্থন্দরমাননং যদ্য তং॥ ১০৮॥ প্রচলার্ক কমপ্তেতি পাঠে প্রচ লাকেনিম্যুরপিক্ষং ॥ ১০৯ ॥ মতৈজ্ঞমিদ্ভিদ্র মতৈরজু নিং দেবিতং । বিলয়মানং আপাদলয়ি পাঠা-শ্বে স্থাতি স্থান্ধি অ্কালং চামানং যৎ শস্তানকপ্রসবদাম কম্পব্দপ্রসালা তেন পরিষ্কৃতৌ অলক্ষতে অংসে যস্য তং। ছারাবল্যের ভগণঃ নক্ষত্ররগঃ তেন রাজিতং শোভিতং পীররং পীনং উরঃ বক্ষএব ব্যোমস্থলী তয়া লসিতঃ শোভিতঃ কৌস্তভএব ভারঃ স্বয়স্তদ্মুক্তং ।। ১১০॥ এবিংসলক্ষণেন স্থলক্ষিতং প্রধাঞ্জিতং আজাম জামুপর্যান্তব্যাপিনে। পীনৌচ পরিবৃত্তে চ ক্রমবলিতৌ স্কলাতৌ স্কুমারে নির্দেট্রী বাহু যদ্য তং । আবন্ধুরং নিম্নোলতং অভিশয়েন ভদ্রং বা উদরং যস্য তং ॥ ১১১ ॥ নানামণিভিঃ প্রকর্ষেণ ঘটিতাঃ কম্পিতাঃ অঞ্চলদয়োযস্য তং.। তক্রউর্শ্মিমু ক্রিকা সার্লনং রুসনা তুল্দবন্ধঃ উদরবন্ধনার্থস্থরণডোরকং। দিব্যৈরক্ষরালৈ রমুলেপনৈঃ পরিপিঞ্জরিত। নামাবর্ণভাংনীতা অক্সয়ফির্যন্য তং ॥ ১১২॥ মাণিক্যময়দর্পণে-ভ্যোপি বিলস্তাং শোভমানীনাং মথানাং রাজিস্তয়া রাজস্তো রত্নাক লয়ঃ ডাঃ ছনাঃ পতানি তৈঃ স্থল্দরে পাদপত্মে যদ্য তং। রত্নেতি পাঠঃ স্থগমঃ।। ১৩।। মৎদ্যাদিভিঃ রেধাত্মকৈশ্চিক্রেঃ শংলক্ষিতং অরুণতরং চাতিরক্তং অদ্বিতসং। করাদ্রীতি পাঠে অরুণং করাদ্যোত্তলং তেন অভিরামং মনোরমং। আরংচক্রং দরং শত্থা। নিজ্জিতিতাত নিন্দিতেতি কুচিৎ পাঠা। কান্তিঃ

সমুদারবিনিমি তাঙ্গদৌল্দর্য্যনিজ্জিতমনোভবদেহকান্তিং ।। ১১৪ ।। তাস্যারবিন্দল পরিপূরিভবেণ্রজুলোলৎকরাজুলিসমারিভদিব্যরাগৈঃ ! শাখদুবীরভবির্ইসমস্ত-জ্ঞুসম্ভানসম্ভতিমনন্তসুথামুরালিং ।৷ ১১৫ ।। গোভিমু থাযুজ্ঞবিলানবিলোচনাভি-রধোভরঅলিভমন্তরমন্দগাভিঃ ৷ দন্তাগ্রদইপরিশিইত্বাক্তরাজুরাভিরাল্মিবাল্মিল্লাভির্থাভিরীত্ব। ১১৬ ।৷ সপ্রস্বস্তনবিভূ ণপূর্ণনিশ্চলাস্যাবটক্ষরিভফেনিল্লাল্কম্মুক্রেঃ ৷ বেণুপ্রবিভিত্তমনোহরমন্দ্র্গাভদত্যোচ্চকর্ন্গালৈরপিভণকৈশ্চ ।৷ ১১৭ ৷৷ প্রস্কুল্মুক্রক্রসম্পূর্ভারসংর্ভবল্যানবিলোল্পুরাগ্রপাতিঃ ৷ আমেদুরের্কভ্লাস্মুনকৈর্ক্রিভ্লাক্র্রান্ত্রিক্রিভ্লাকর্বিলাল্মুনক্রিক্রিভিন্ত পৃথুককুত্ররভারথিয়েঃ ৷ উভ্ততিশ্রভিপ্রিগরিবিভিবংশপানাম্ভোদ্ত বিশাল্মোনিঃ ৷৷ ১১১ ৷৷ গোপিঃ সম্যানগুলিলিব্যাবিলাক্রান্ত্রান্তির মৃচ্ছিভকলস্বরবেণুরাকৈঃ ৷ মন্দ্রেভ্লাক্রিল্লাল্মেল্লির্নাল্লাস্যবিধানদক্ষেঃ ৷৷ ১২০ ৷৷ জ্যান্ত্রালপট্রানপ্রেরিভিন্ত মঞ্জবচনিঃ পৃথুকৈর ক্রান্তলাস্যবিধানদক্ষঃ ৷ মুধ্যেত্রজুনথক্লিত্রতাল্পট্রেরব্রভ্লমঞ্জবচনিঃ পৃথুকৈর ক্রিল্লাল্মেল্লিরিভিন্তলাস্যবিধানদক্ষঃ ৷ মুধ্যেত্রজুনথক্লিত্বত্তির ভূবৈরব্যক্তমঞ্জবচনিঃ পৃথুকৈর ক্রিল্ভিন্ত ৷ মুধ্যেত্রজুনথক্লিত্বত্তির ভূবেরব্যক্তমঞ্জবচনৈঃ পৃথুকৈঃ

শোভা॥ ১১৪॥ শশ্বৎ মুভ্ঃ দ্রবীক্তা আদ্রিতা বিক্ষী চ সমাক্রটা সমস্ত্রভূনাং সভান-সন্ততির্বংশসমূকেমেন তং।। ১১৫।। অথ্যনন্তরং গোভিঃ অভিতে:বাতং বেটিতং। উধোভারেণ স্তনগৌরবেণ স্থালিত সত্ত্রং চালসং মন্দঞ্ যথাস্যাত্তথা গচ্ছন্তীভিরিত্যর্থঃ বালধিঃ পুচ্ছং ॥১১৬॥ তর্ণকৈ নূ ভনবৎলৈকঃভিবীভমিত্যয়য়ঃ। এবমগ্রেপি। কীদুলৈঃ প্রপুবঃ ছগ্ধক্ষরণং ভৎশহিত্স্য खनमा विভূষণং দক্টোষ্ঠেনারুষ্য পানং তেন পূর্ণঃ ছগ্ধভূতোনিশ্চলশ্চ আস্যাবটোমুখবিবরং ভস্মাৎ ক্ষরিতং যৎ ফেনিলং ফেনময়ং জ্গ্ধং তেন মুক্তিঃ স্থান্দরিঃ।মক্ত্রোগস্ত্রীরধ্বনিঃ।কৃচিম্মন্দেতি পাঠঃ।। ১১৭॥ প্রত্যাণ নবং শৃঙ্গং থিমিন্ তেন মৃত্যনা মন্তকেন সংপ্রহারঃ অন্যেন সহ যুদ্ধে অভিযাতস্ত্রিন্বা অন্যেন প্রহারস্তেন সংরম্ভঃ ক্রোধস্ত্রিন্ আবেশোবা তেন বল্যানং ইতস্ত-তোবিচলনং তেন বিলোকঃ খুরাগ্রপাতো থেষাং তৈঃ আমেএইরঃ স্থামিটকঃ পুটেটরিতি বা বছ লা স্থলা সামা গলকয়লঃ যিমিন্ তাদুশোগলো বেষাং তৈঃ। বংশএব স্তনপানাবস্থামতিক্রান্তো বৎসঁতরঃ ত্রৈবাধিকোবলীবর্দ্দ ২তি কেচিৎতাদৃশ্যের বৎসতরী ভয়োনিকারেঃ সমূহৈঞাভি বীতং ॥১১৮॥ উক্ষভিঃ বৃট্ররপ্যভিনীতং। পৃথুককুদ্ধর এব ভারস্তেন শিটনঃ অলটেশঃ। উন্তব্তি-ভয়া উদ্দুর্শকুতা স্তক্ষতাং প্রাপিতয়া শ্রুভিপ্ট্যা পরিবীতং যৎ একুঞ্বংশধান।মূতং তশ্মিন্ উদ্ধতা উদ্ভটা তেন বা উদ্ধর্গীক্ততা বিকাশিনী চ প্রস্ফুটপুটা বিশালা ঘোণা নাসা যেষাং তৈঃ॥১১৯॥ গোটপশ্চাভিবাতং গুণাঃ করুণাদয়ঃ শীলং স্বভাবঃ জগদান দকত্বাদি। মৃচ্ছিতঃ মৃচ্ছিণাং প্রাপিতঃ কলস্বনঃ মধ্রাক্ট্রানিঃ স্বরেতি পাঠে মধুবাক্ষ্টরাগোবিস্মিন্ তাদ্রেণাবেণুরীণা চ বেষাং তৈঃ মূর্চ্ছনা চোক্রা। স্বরঃ সংমূচ্চিতোয়ত রাগতাং প্রতিপদ্যতে। মূলনামিতি তাং প্রান্তঃ কবয়ো-প্রামসম্ভবাং। সপ্ত স্বরাস্ত্রোগ্রাম। মুর্জনাস্থ্রেকবিংশতিরিতি। মন্দ্রোচ্চতারেপ্র নিভেদেঃ পটু বাক্তং यक्ता । নং তৎপরেঃ। লাস্যং নৃত্যং ॥ ১২০ ॥ পৃথুকৈবাল কৈঃ পরাতং বে ঊতং। কাঁচ্টশঃ জগ্গ-স্তেপীবরকটীরতট্যাং চ পানকটিস্থল্যাং নিবন্ধা চ ব্যালোলা চ যা কিন্ধিনানাং ঘটা সমূহঃ তস্যাঃ

পরীত্র ৷৷ ১২১ ৷৷ অথ সুল লিতগোপসুন্দরীলা পুথুনিবিবীষ্নিতম্মন্থরার । ১৯ কু চভরভঙ্গুরাবলয় ত্রিবলিবিজ্ ডিতরোমরা জিভাজা । ১২২ ৷৷ তদভিমধুর-চাক্রবেণু বাদ্যাম্তরসপলবিভাগজা ডিপালা ৷ মুকুলবিসরম্যকারে বােলা মস্মল-ক্ত্রাত্রল্পরীলা ৷৷ ১২৩ ৷৷ তদভিক্রিরমন্দরাস্চন্দু তপপরিজ্ ডিতরাগবারি-রান্দে ৷ তরলতরতর স্বিপুট্পুকরস্মশামবিন্দু সন্ততানা ৷৷ ১২৪ ৷৷ তদভিললিত-মন্দ্রিলিচাপচ্যুতনি শিতেজ্বনারবাণবৃষ্ট্য ৷ দলিতস্কলম্ম বিজ্লাজ্পবিস্তদুঃ সহ্বেপথুর থোনা ৷৷ ১২৫ ৷৷ তদভিস্ভগক্মকপশোভা মৃতরস্পান বিধানলালসাভ্যা ৷ প্রথমলিলপূরবাহিনীনামলস্বিলোলবিলোচনাম্ম জাভ্যা ৷৷ ১২৬ ৷৷ বিসু সহকরবীকলাপবিগল হফুল প্রস্কুল মুন্সু মাধীলম্পট্চপ্রেরীক্ষট্যা সংস্বিতানা ৷ মুকুঃ ৷ মারোলাদমদ্খলম্দ্রিরামালোলকাপুগুচ্ছু স্মীবীবিশ্লণমানচীনসিচয় :-

র্টিটেডঃ শকৈঃ রুত্বা রউদ্ভিঃ শকায়মানেঃ। তরক্ষুক্রাঘুং ॥ ১২১॥ অথেত্যানস্থর্যে মাঞ্জল্যে বা। বুললিভানাং প্রম্মনোহরাণাং গোপস্থক্রীণাং গোপীনাং আলিভিঃ পংক্তিভিঃ স্মন্তুত্ত সর্বতঃ সভতং নিতরাং মেবিভমিতি অফীমশ্লোকেনাম্বয়ঃ তাএব বিশিন্ফি পূথাদিনা করাই-ভানামিতাত্মেন পাদ্ধয়োনস্থোকাইকেন। ।নবিবীষং নিবিড়ং। অবলগং মধ্যদেশঃ॥ ১২২॥ তগ্য এক্রিঞ্চা অতিমধ্রং সুখদং চারুচ সুন্দরং বেণুবাদ্যমেবামৃতরসপ্তেম পল্লবিভোবিস্তারিভো হঙ্গজান্ত্রিপঃ কামবুক্টোযাসাং তাসাং। অঙ্গজান্ত্রিপস্যেতি পাঠে পরেণ সম্বর্জঃ। মৃকুল নিসরঃ কুটালসমূহস্তদ্দ্রমাঃ রচ্শ জাতোযোরোমে কোনঃ পুলকং তেন সম্যালক্তা গাত্রবল্লরী দেহ লতা যাসাং॥২৩॥ ত্ন্য এক্ঞস্য অতিরুচিরোমন্দ্রশস্থব চন্দ্রস্যাতপোরশিস্তেন পরি দৃদ্ভি ত্রা বিবর্দ্ধিত্স। রাগবারিরাশেঃ প্রেমসমুদ্রস্য যে তরলতরাঅতিচঞ্চলান্তরঙ্গালিকলোলান্তরঙ্গ পরম্পারা বা তেষাং বিপুরোজলবিন্দবস্ত:সাং প্রকরঃ সমূহস্তেন সমাস্তল্যা যে এমে:ৎ পরস্তেদ-বিন্দৰ্বস্তঃ সম্ভত্যনাং ব্যাপ্তানাং। প্ৰদৰ্বেভি পাঠে২পি সত্ৰবাৰ্থঃ। সম্ভতীনামিভিপাঠে শ্ৰমবিন্দূ-নাং সম্ভতিঃ পরম্পারা মাসাং।। ১২৪।। তদ্য একুফাস্য অতিললিতা পরমমনোইরা মন্দা চ আয়তা প্রেগল্ভা বা যা চিল্লিভু নৈ হাপঃ তত্মাৎ চ্যুতঃ নিশিতক তীক্ষ্ ঈক্ষণং মারবাণঃ কটাক্ষরপঃ কামশরঃ তদ্য বৃষ্ট্যা দলিভসকলমর্শ্বস্থ অভএব বিহ্বলেষু অক্ষেষ্ প্রস্তা বিস্তৃতা তুঃসহা বেপধু ৰূপা বেদনা যাসাং ॥ ২৫॥ অনুসাভ্যাং লক্ষ্যাদিন।ৰ্দ্ধনীলিতাভ্যাং বিশোলাভ্যাঞ্চ বিশিক্ষী লোচনাৰ জাভ্যাং কৃত্বা প্ৰেমজলগ্ৰাবাহৰ হ্নশীলানাং। কথন্ত হাভ্যাং তদ্য ই কৃষ্ণদ্য অভিস্কলাৎ পরমকমনীয়াদিপি কৃষ্ণ কমনীয়ণ ৰূপণ তলা শোলা কৈশোরে নৰযৌৰনোন্ডেদ 🕮ঃ সৈৰ যহা তদেব শোভাযুক্তামৃতরসস্তস্য পানবিধানে লালগা অত্যৌৎস্বকং ধয়োস্তাভ্যাং ॥ ১১৬॥ মাধী মাধীকং। 'চঞ্চরীকঃ ভ্রমরঃ। মারে।আদেন যোমদঃ মস্ততা তেন খলস্তী অস্পাঠাক্ষরা মৃতঃ কোমলা গীর্ঝাণী যাসাং। উত্মাদলক্ষণং চোক্তং) শ্বাসপ্ররেদেনোৎকল্পৈর্বছধা লোকনৈরণি : ব্যাপারোজায়তে যস্ত সউন্থাদঃ স্ত্তোযথেতি। আলোনয়া সঞ্লন্তা কাঞ্চা হেন্তনা উচ্ছৃসতী अधीखन्छी या नीवी প्रतिधानन्छं बका उरेग्र। विद्याग्यानः विक्षणी छन् हीनामरणाखनः उरकाषा

ন্তাবিনিত্যন্ত্রাং ।। ১২৭ ।। স্থালিতললিতপাদান্তোজমন্দান্তিয়াতকুনিতমনিতুলা-কোট্যাকুলাশামুখানাং । চলদধরদলানাৎ কুট্যলংপক্ষলাক্ষিয়সরসিরুহাণামুলসং কুণ্ডলানাং।। ১২৮ ।। দ্রিষ্ঠিশসনস্থারণাভিতাপপ্রমানীভবদরুণােষ্ঠপল্লনাম্। নানোপায়নবিলসংকরাযুক্জানামালীভিং সভতনিসেবিতৎ সমন্তাৎ ।। ১২৯ ।। তাসামায়তলোলনীলনমনব্যাকোষনীলায়ুক্ষসূগ্ভিং সম্পারিপুক্ষিভাথিলভনুং নানাবিনাদাম্পদ্ধ । তম্মুক্ষানালম্পদ্ধ । তম্মুক্ষানালম্পদ্ধ । তম্মুক্ষানালম্পদ্ধ । তম্মুক্ষানালম্পদ্ধ । তম্মুক্ষালাৎ মনোহারিনীং ।। ১৩০ ।। গোপীগোপপশ্নাং বহিং ক্ষরেদপ্রভোস্য গার্কাণঘটাৎ । বিভার্থিনীং বিরিঞ্জিত্রিনয়নশত্মন্যুপুক্ষিকাং জোত্রপরাং ।। ১৩১ ।। তদ্দিণভোসুনিনিকরৎ দৃত্ধর্মবাঞ্জ্যামুায়পরং । যোগীন্দ্রানথ পৃষ্ঠে মুমুক্ষমাণান্সমাধিনা শনকাদ্যান্ ।। ১৩২ ।। সব্যে সকান্তানথ ফ্লেসিন্ধর্মবিদ্যাধরচার-গাংক্ষণ সকলাগ্যক্ষং স্বাদ্যামিনীতভিপিষ্প্রক্ষীকলাপং । তৎপাদপক্ষজ্গতাম্বলঞ্চি ভক্তিব্যাপ্রক্ষুক্রিভিত্রান্যসমন্তসঙ্ক্ষ ।। ১৩৪ ।। নানাবিধ্বাহ্নতিগণান্থিত

সিচয়ঃ পট্টবস্ত্ৰবিশেষস্তৃস্যাক্ষেশ্বৰূপে আবিঃপ্ৰকটা নিতম্বিট্ যাসাং অন্তঃশ্বৰূপে বিনাশে চান্তি-কেপি চেতি কোশ: ॥ ১২৭ ॥ ঋণিতস্য ঋলনযুক্তস্য ললিতস্য চ পাদান্তোজস্য মন্দাভি-ঘাতেন ঈষৎ ভূভাগপ্রহারেণ কৃণিতঃ কৃতশব্দঃ মণিময়োযস্তলাকোটিনূপুরং তেন আকুলং শব্দব্যাপ্তং আশানাং দিশাং মুখং याভাস্তাশাং । কুটালং মুকুলায়মানং পক্ষালঞ্চ উৎকৃষ্ট-পক্ষমুক্তং অক্ষিদ্বয়সর সিরুহং থাসাং ॥ ১২৮॥ দ্রাঘিষ্ঠোহতিদীর্ঘ: শ্বসনসমীরণ: শ্বাসবায়-ত্তেন অভিতাপ: সম্ভাপত্তেন প্রমানীভবন্ অরুণৌষ্ঠপল্লবোযাসাং ॥ ১২৯॥ ব্যাকোষ: বিক-সিতং। প্রণয়াছ্মদে উদ্গাতমদে অফিণী এব মধুকুমালা ভ্রমরপংক্তিঃ তাং বিভ্রাণং প্রকটয়স্তং। ঞ্জিলোচনয়োরিতন্ততোৰছধা নিপতনেন শর্কাতে।দর্শনাঝানেত্যুক্তং। কীদৃশীং। তাসাং যম্মুগ্র মনোহরমাননপক্ষজং তদ্মাৎ প্রবিগলতে।মাধীরসম্য মকরন্দ্স্য আস্থাদনশীলাং । অতএব মনোহারিণীং।। ১৩-।। ইদানাং ক্রমেণ বিত্তধর্মমোক্ষকামাখ্যপুরুষার্থচক্তইন্স্য তথা সর্বতঃ শ্রেষ্ঠস্য পঞ্চমপুরুষার্থকপায়াভক্তেশ্চ বাঞ্ছায়াঃ প্রদানং দেবাদীনাং ধ্যানমাহ গোপেত পঞ্চ ভিঃ। অস্য ক্ষেস্য অগ্রতঃ সংমুখে।। ১৩১।। দক্ষিণে চাস্য মুনিনিকরং স্মরেৎ। দৃঢ়া ধর্মে বাঞ্ছা ষস্য তং ॥ ১৩২ ॥ সকান্তান্ পত্নীসহিতান্ যকাদীংশ্চ স্ময়েৎ । কথন্তান্ নর্ত্নালৈয়ঃ কামার্থিনঃ নিজাভীউপ্রার্থকান্। মুখ্যাঃ শ্রেষ্ঠা উর্বেশ্যাদ্যা অপ্নরসক্ষারেৎ ॥ ১৩৩॥ তস্য শ্রীরুঞ্চ্যা পাদপক্ষজগতাং তদ্বিষয়িণীমিত্যর্থঃ। উজ্ঝিততরোনিতরাং পরিত্যক্তে।২ন্য-স্মিন্ ভক্তিব্যতিরিক্তে সমস্তে সঙ্গ আগজিধেন তং ॥ ১৩৪॥ অতএব অমুং এক্সিঞ্চংমধ-कष्ठिशकशा श्वकीश्रवीगशा श्वीगश्रसः । कालिनानाविधः वर्षे जिः भटसमाञ्चरकायः ঞ্তিগণোদাদসমূহস্তেনান্তিতা যে সপ্ত রাগা নিধাদাদিস্বরা মেঘনাদ্বসন্ত।দিরাগা বা তেযু গ্রামত্ররী গ্রামাণাং ত্রয়াগাং সমাহারস্তদ্যাংপ্রতাঃ প্রাপ্তা যা মনোহরামূর্ছনাস্তাভিঃ। কথ-পুতাভিঃ উদিতাভিঃ স্বয়মের প্রাকট্যং প্রাপ্তাভিঃ মহত্যোদিতাভিরিভি বা সম্বন্ধঃ। অভএব

সপ্তরাগগ্রামত্রয়ীগতমনোহরমূচ্ছনাতি: । সংগ্রাণয়ভ্নু দিভাভিরমুং মহত্যা সঞ্চি-ন্তার্মভিসি ধাত্সূতং মুনীন্দু ।। ১৩৫ ।। এগিভিমীয়ভন্তে । অথ ধ্যানং প্রব क्तामि नर्सिशारिके नामने । भीषाञ्चत्रस्त क्षणः भूखत्रोकिनिष्ककः। त्रक्रानि ধরং রক্তপাণিপাদনখং শুভং । কৌস্তভোড্রাসিতোরক্ষং নানারত্বিভূষিতং । ভদ্ধামবিলসলাুক্তাবদ্ধহারোপশোভিতং। নানারত্বভোদ্ভাসিমুকুটৎ দিব্যভেত্সং। হারকেয়্রকটককুণ্ডলৈঃ পরিমণ্ডিতং। শ্রীবৎসৰক্ষসং চারুন্পুরাদ্যুপশোভিতং। নানারত্বিচিত্রেশ্চ কটিসুত্রাঙ্গুলীয়কৈঃ। বহিপত্রহৃতাপীড় বন্যপুটেপারলফুত । कम्यकूर्यसम्बद्धनमानाविज्यिष्ठः । महन्त्रुवादकानमविमनायद्वमिष्ठः । विश्व গৃহীত্বা ইন্তাভ্যাৎ মুখে সংযোজ্য সংস্থিত। গায়ন্তং দিব্যগানৈশ্চ গোঠমধ্যগভং ছরিং। স্বর্গাদিব পরিভাষকন্যকাশতবেষ্টিতং। সর্ববেক্ষণসম্পন্নং সৌন্দর্য্যেণাতি-শোভিতং। মোহনং সর্বগোপীনাং সর্বাসাঞ্চ গ্রামপি। লেলিছ্যনানং বংসৈক্ষ ধেনুভিশ্চ সমন্তভঃ! সিদ্ধগন্ধবিধক্ষণত অপ্সরোভির্বিহৃত্বমিঃ। সুরাসুরমনুষ্যৈশ্চ ञ्चावरेतः भन्नरेगति । ग्रेगर्विष्णाभरेतरेम्हव वीक्यामान मूर्विष्यरेष्ठः । नातरम् विष्-ষ্ঠেন বিশ্বামিত্রেণ ধীমতা। পরাশরেণ ব্যাসেন ভৃগুণাঙ্গির সা তথা। দক্ষেণ পৌনকা-ত্রিভ্যাং সিদ্ধেন কপিলেন চ। শনকাদৈঃমু নীল্ডুশ্চ ব্রহ্মলোকগতৈরপি। অনৈ্যরপি ह मर्युक्तर क्षः प्रारम्हिन मर् !! ১৩৬ !। मर्क्लिन श्रीमन एकुमां दक्ष्ण हिन । অব্যান্মীলৎকলায়দুঃতিরহিরিপুপিচ্ছোল্লসংকেশজালো গোপীনেত্রোৎপলারাধিত ললিতবপুর্গোপগোবৃন্দবীতঃ। ঞীমদ্বজারবিন্দপ্রতিহসিতশশাক্ষারুতিঃ পীতবাসা দেৰোহসৌ বেণুনাদক্ষপিতজনধৃতিদেৰকীনন্দনোনইতি ৷৷ ১৩৭ ৷৷ ধ্যাজৈবৎ ভগবন্ত । जारी मश्कार्या ह यथानुयः । जारी मश्कार्यवनरेक्क्र नहारेद्र मह मानरेमः ॥ ५०৮॥

অথান্তর্যাগঃ। লেখ্যা যে বহিরচ্জায়ামুপচারা বিভাগশঃ। তে সর্বে ২পান্তরচ্চায়াং

মুনীন্দ্রং মুনিগণশ্রেষ্ঠং ধাতৃষ্ঠ গ্রীনারদং নভিদি সমাক্ চিস্তয়ে ।। ১৩৫। শুভং জগমকলরপং। তস্য কৌস্তভাগ ধামা তেজসা বিলসন্তীতিমু জাভিরাচ্ছনেন সমেটিতেন হারেণ উপশোভিতং। মুক্তাবন্ধেতি বা পাঠঃ। কটি প্রেণাকুলীয়কৈ কালকুতং সচন্দ্র।ভিত্তারাভিঃ আনন্দং স্বথ করং যদিনং অস্বরং ব্যোম তৎ সদৃশং। অরু চন্দ্রখানে কৌস্তভঃ তারাস্থানে কদমমালা অম্বর্থানে শ্রীমদ্বক্ষলমূহাং। স্বর্গাদিব পরিভ্রিটানাং পরমন্ত্রনামিতার্থঃ তাদশীনাং কন্যানাং শ্রীগোপকুমারীণাং শভেন বেন্টিতং। শভশব্দোত্রাসংখ্যত্বে। ১৩৬। অসৌ অনির্বাচনীয়নাহাত্মঃ শ্রীদেবকীনন্দনোদেবং নং অস্থান্ অব্যাৎরক্ষপ্ত। কলায়স্য পুষ্পাস্যের ছাতিঃ শ্যামানকান্তির্যা সং॥ ১৩৭॥ যথান্থমিতি যাবভান্মনন্ত প্রিঃ স্যান্তাবিতা প্রকারেণ তাবৎকালঞ্চ পুদ্বমেদিত্যর্থঃ। মানসৈঃ মনং কম্পিতেঃ॥ ১৩৮ ॥
তে চ কতি কীদৃশাঃ কথং বার্চমিতব্যা ইত্যপেক্ষায়াং লিখতি লেখ্যাইতি। যে যাবন্তইত্যর্থঃ

কম্পনীরা যথারুটি । ১৩৯ । তত্র প্রার্থনাবিধিঃ । শ্রীনারদপঞ্চরাত্রে । স্থাগতৎ দেবদেবেশ সন্নিধৌ ভব কেশব । গৃহাণ মানসীং পূজাৎ যথার্থপরিভাবিতা-মিতি । ১৪০ ।। অথোপচারের্কাইছাশ্চ স্বাস্থান্যেব স্থিতং প্রভুৎ । পূজায়ন্ স্থাপ-রেদাদৌ শাস্থাৎ সৎসম্পূদারতঃ । ১৪১ ।।

অথ শশ্বপ্রি ঠা। স্বস্রামাগ্রতোভূমাবুলিখ্য ত্রাসুমণ্ডলং। তত্রাস্ত্রকালিতং
শশ্বং সাধারৎ স্থাপয়েদুধঃ ।। ১৪২ ।। শশ্বে হৃদয়মন্ত্রেণ গল্ধপুষ্পাক্ষতান্ ক্ষিপেৎ।
বুংৎক্রান্তর্কার্কিং শিরোন্ডিঃ কেন পূর্য়েৎ ।। ১৪৩ ।। সবিন্দুনা মকারেণ
তদাধারে হিমিণ্ডলং । সংপূজ্যেদকারেণ শশ্বে চাদিত্যমণ্ডলং । উকারেণ জলে
সোমন্ডলঞ্চ তথার্চ্যেৎ । তীর্থমন্ত্রেণ তীর্থান্যাবাহয়েচ্চার্কমণ্ডলাৎ। কৃষ্ণাবাহ্য

বিভাগশং পৃথক্ পৃথক্। যথারুচীতি নিজরুচাসুসারেণ যাবন্তে যাদুশা যথা চ কম্পারিত্তমুপযুক্তান্তে ভাগন্তস্তাদশন্তথৈব তে কম্পারিতবা। ইতার্থঃ । ভৎপ্রকারশ্চ শ্রনারনপঞ্চরাত্রাদৌ হাক্ত
এবান্তীতি বিস্তার্য্যাত্র ন লিখিতঃ ॥ ১৩৯ ॥ সংপ্রার্থ্যতি নিখিতেং কর্থং সংপ্রার্থাতি তংপ্রকারং ভন্মন্ত্রনারৈর লিখিতি স্বাগভমিতি॥ ১৪০ ॥ পূক্তর্যান্তং তত্র তত্র নিবিধান্তনাতি
প্রায়েণ লিখিতি সংসংপ্রদারত ইতি সংসংপ্রদারিকাচারান্ত্রনারত ইতার্থঃ । ননু বাহ্যোপ্রচারের
রার্চনং কর্থমন্তর্যাগমন্যে লিখ্যতে । সভাং । পূর্বাং মানসৈরুপচারের ন্তঃপূক্তা অধুনা চ বাইছরুপচারের ন্তরের স্থিত্যা পূক্তা অভোহন্তর্যাগে ইয়ম্পি পর্যাব্যাতি । বিষ্ণিং পূক্তা চ শ্রীমূর্তিবিষ্তিরকাত্রে লেখ্যা। এভচ্চ শ্রীভগবন্তক্তিপরাণাং সন্মতং অভএব লিখিতং সংসংপ্রদারত ইতি। অন্যে
চ শ্রীভগবতা সংগ্রানোহভেদং ধ্যাত্রা নিজবপ্রয়েব বহিঃ পূক্তাং কুর্বস্তোনিক্রপান্যান্তরিব্রপ্রানিন্ত পাদ্যানাবের
পুক্তাঞ্জলীন্ সমর্গরিতীতি দিক্।। ১৪১ ॥

অথ বাহোপচারকরণক পূজনায় পূর্বাং জলাদিশোধনেন শোধিতানামপি জ্ব্যাণাং তথালানালিনা শোধিতদাপি যজমানদেহদা প্রতিষ্ঠিতশন্ত্র জলপ্রোক্ষণেন বিশেষতঃ শোধনার্থং শক্ষপ্রতিষ্ঠাং প্রিখতি। বামভাগে পুরস্তাৎ ত্রসুং ত্রিকোণং মণ্ডলং উল্লিখ্য চন্তক্ষোণিমিকতাভিরক্ষেনির্দায় তত্র তন্মিন্মগুলে অস্ত্রেন অস্ত্রনপ্রেণ প্রকালিতং সাধারং আধারং শক্ষ্ণা শুরুং ত্রিপদিকাদিঃ তেন সহিত্যিতি। আদৌ অস্ত্রমন্ত্রেনাধারং প্রকাল্য ও আধারশক্ষয়ে নমঃ ইতিপ্রতিষ্ঠাপ্য তত্বপরি অস্ত্রকালিতংমব শক্ষং প্রতিষ্ঠাপরেদিত্যর্থঃ। যতোবুধঃ তত্তৎপ্রকারং স্থত্রব জানাতীত্যর্থঃ বুধইতি সর্ক্রাপ্রেপাস্থ্রত্তনীয়ং যথা। সভানাচারতঃ ইত্যতাতোলেখ্যাত্বি শিকাচারাক্ষারতস্ত্রভূত্যং। এবমগ্রেপি সর্ক্রি জ্রেমিতি দিক্।। ১৪২।। ভ্রুদয়ায় নমঃ ইতি ভ্রুদয়ামস্ত্রেন গল্ধাদীন্ ক্ষিপেৎ নিক্ষিপেৎ। বুৎক্রান্তির্দয়্রাইরেরিত জ্বেয়ঃ। ক্রেরানিককারান্তর্ক্রাপ্রনিন ততঃ অং আদি অকারান্ত্রকর্ত্রাইরেরিতার্থঃ সাত্রবাক্ষয়ে। কেবলৈরিতি কেচিং। কীদুলৈঃ শিরঃ শিরোমস্ত্রঃ শিরদে স্বাহেতি তদম্যে যেবাং তৈঃ এবচ শস্থাপ্রবেণ মস্ত্রঃ। তং শক্ষং কেন জনোন পূর্রেং। ১৪৩।। তদ্য শস্ত্রসাধানির বিন্দুব্রিতেন মকাবেণ ব্রাদ্ধিম গুলং জলগল্যাদিনা সংস্ক্রেং। অত্রচ বহিনগুলাদের্দশক্রালানিবিশেষণংপূর্ববৎ বুধস্বাদ্ধ উর্বাসেব। অত্রব প্রয়োগঃ মংশ্বিক্রায় দশকলাভ্যনে নমঃ। শক্ষেচ চিনিন্দ্রিরেতি

হৃৎপদাদালিনীং শিথয়েকয়ে । নেত্রমন্ত্রণ বীক্ষ্যান্তঃ কবচেনাবওঠয়ে । কুর্যান্ত্রান্তান্ত্রাদ্ধ তলেন্নু ব্রান্তান্ত্রান্ত্রাক্ষানাং ততাদিশঃ । বদ্ধান্ত্রেণামূত্রাকুর্যাদ্ধ তলেন্নু নুত্রা। তচ্চক্রুত্রা রক্ষ্য সলিলং মৎস্যুত্রয়া আচ্ছাদ্য সংস্পৃত্র শ্রুৎ জপেন্যুলং ততে!২ইটশঃ । ১৪৪ ।। তত্তলং প্রোক্ষণীপাত্রে কিঞ্চিৎ কিপ্যাত্রিকক্ষয়ে । তত্ত্বেণার্চনত্র জাতানি স্বতন্মপি । ১৪৫ ।। কনিঠাক্ষুঠকৌ সক্তৌ করয়োরিত্রের । তত্ত্রনীমধ্যমানামাঃ সংহতাভুগ্রস্ভিত্রাঃ । মুদ্র্যা গলিনী প্রোক্তা শত্ত্বাপরি চালিতা । তত্তাহপাস্যাবশিক্ষান্তঃ শত্ত্বং বর্দ্ধনিকামুনা । পুনরাপ্র্যাক্ষ্ণাত্রে ন্যুদ্বাচারতঃ সভাং । ১৪৬ ।।

নৈবাকারেণ সহাদিত্যমণ্ডলং পূজয়েও। প্রয়োগঃ। অংঅক্মণ্ডলায় দাদশকলাল্যনে নমঃ।ভবঃ স্বিন্দ্রনিব্যেকারেণ স্কুট্র প্রয়োগঃ। ওঁ উৎসোম্ম ওলায় বেশু স্কুলায়নে ন্যঃ ইতি। তীর্থমন্ত্রশু পূর্বাং গছস্নানে লিখিতোছন্তি গজে চ যমুনে চেতা।দিঃ। তেন শঙ্গাঞ্জলএকাক্ষ্যামুদ্রয়া ভীর্থান্যা-বাহয়েই। কুক্ত্পত তাত্রৰ নিজহৃৎপদাৎ শ্রীকৃষ্ণ ইহাগচ্ছেত্যাবাহ্য শিখ্যা শিখায়ৈ ব্যজিতি শিখামস্ত্রেণ গালিনীং মুদ্রাং ঈক্ষয়েৎ দর্শয়েৎ অন্তঃ তৎ জলং নেত্রাভ্যাৎ বৌষড়িতি নেত্র মল্রেণ নীক্ষ্য। অত্র চ কেচিদাতঃ পঞ্চাঞ্চেইটাদশাক্ষরে মল্রেইস্মিন্ নেত্রমন্ত্রাভাবাৎ তন্ন কার্য্য মিতি।কৰচায় ছমিতি কৰচমন্ত্ৰেণ অম্ভুনেৰ হস্তাভ্যামৰগুণ্ঠয়েৎ। মূলমন্ত্ৰস্য অঙ্গানাং প্ৰণেনাং ন্যাসংজ্ঞান তিখানেৰ কুৰ্য্যাৎ। কেচিচ্চ ষড়ক্ষানাং হৃদয়ানীনাংভত্ৰ ন্যাসমাছঃ। ততন্ত্ৰন্ত্ৰং ভক্তমন্ত্রণ দিশোবন্ধা দিখন্ধনং ক্লত্না ধেল্ম দুক্র হাই মৃতীকুর্ণাদিত্য ত্রৈবং বিশেষোবুধত্বাৎ সদা-চারতোজ্জের। দিগ্রক্ষনানন্তরং গল্ধাদিকং দল্ধা ধেলুমুলাং প্রদর্শ্য কূর্চেটন জলং স্পান্ধীনমূত-বীলংঘ'দশবারান্সপ্রণবং জ্ঞা সোমমগুলার যোড়শকলাল্যন নমঃ ইতি পুনগ্রাদিনভেঃ-চিয়েনিতি। তজ্ঞলংচক্রমুদ্রা আ সম্ক্রজিত্বা শত্থে সংস্পূশন্ কুর্চেন তজ্ঞার সংস্পা মূলমন্ত্রং অফাশোবার্শ্টকং জপেৎ॥ ১৪৪॥ তৎশখ্যজলং িঞ্ছিৎ কিপ্তা নিকিপ্য । তথ্য প্রোক্ষণীপাত্রনিক্ষিপ্তজ্বস্য শেষের শৃষ্খস্থেন সর্বাণি প্রজাপকরণানি নিজ্পরীরঞ্চ বার্ত্রর মূলমন্ত্রেণ প্রোক্ষণের । এবং প্রোক্ষণেন প্রায়োদ্রগশুদ্ধিরাত্মশুদ্ধিশ্যেতা ॥ ১৪৫॥ কনি-छिত। বামকরে কনিষ্ঠাঙ্গু ফকৌ সক্তৌ সংলগ্নৌ কৃত্বা তয়োর ন্তর্দ্ধকিণত াঙ্গু তং নিধায় তথ্য তং কনিষ্ঠরা শংযোজ্য করয়েছি য়োরপি তজ্জ নীমধ্যমান।মিকাঃ সংহত। মিনিতাঃ কৃত্বা ভুগ্নাশ্চ কিঞ্চিদাকুঞ্চিতাঃ সজ্জিতাশ্চ পরস্পারং সক্তাগ্রাশ্চ কার্য্যাইত্যর্থঃ৷ চালিতা সভী দেবপ্রীতিং সম্পা-দয়োদিতি শেষঃ।ততঃ অর্চনদ্রব্যজাতাভাক্ষণানন্তরং তদুক্ষণাসশিষ্টং শশুস্থিতং জলং অপাদ্য প্রক্ষিপ্য বর্দ্ধনীঞ্জলন শত্থং তং পুনরাপূর্য্য ভগবদগ্রতঃ স্থাপয়েৎ। সতামাচারতইতি যদ্যপি ক্রমদীপিকাদৌ ব্যক্তমেতলোক্তমন্তি তথাপি শিষ্টাচারাত্মসারেণ তৎস্থাপনং ক্রায়মিত্যর্থঃ। তন্মাহান্ত্যং চাত্রে শভোদকপাদোদকগ্রহণানম্তরং পুনঃ শব্দস্থানে লেখ্যমের। অভেহিত্রে লেখ্যং ক্ষীরস্থপনাদিকং শঙ্খান্তরেণেতি জ্ঞেয়মিতি দিক্॥ ১৬৬॥

অথ স্বদেহে পীঠপূজা ।। গুৰুন্ মূর্দ্ধি গণেশক মূলাধারে হতিপুজ্য তং । পীঠন্যা-সানুসারেণ পীঠৎ চাত্মনি পূজয়েৎ ।। ১৪৭ ।।

অথ দেবাঙ্গেষ্ মন্ত্রাঙ্গাদিন্যাসঃ । তভোজপন্ কামবীজৎ ত্রিস্থানসং পরং মহঃ । মূলমন্ত্রাজ্যকং বীজেনৈকীভূতৎ বিচিন্তরেৎ ।। ১৪৮ ।। তচ্চ পঞ্চাঞ্জন্যাসেন সাকারং স্বেটদেবতং । বিচিন্তর পঞ্চাঞ্জাদীনি ন্যান্ত্রিমান্ যথাজ্যনি ।। ১৪৯ ।। কুযুর্তিগবতি প্রাদুভূতি ক্ষে চ বৈষ্ণবাঃ । তত্ত্রগ্রামান তেশার মনোর্ভগবতান

ভাধুনা বাহোপচারকরণকান্তঃপুজার্থমেবান্ধদেহে পীঠপুজাং লিখতি গুরুলিত। তং বিশ্ব বিঘাতকং। প্রয়োগঃ। ওঁগুরুভোগনমঃ মূর্দ্ধি। গংগণপতয়ে নমঃমূলাধারে।পীঠন্যাসামুসারেণেতি পূর্বাং পীঠন্যাদে আধারশক্ত্যাদীনাং যদ্য যত্র যথা পুজা লিখিতান্তি তদমুক্রমেণ আশ্বানি স্ববপ্র ন্যোব জলগন্ধাক্তপুপ্রপদীপেঃ পীঠপুজাং কুর্য্যাদিত্যর্থঃ। স্বদেহমেব ভগবংপীঠত্বেনোপক্রপাত তৈর্ব পূর্ব্ব। দাধারশক্ত্যাদীন্ পূজয়েদিতি ভাবঃ। তত্র প্রয়োগঃ। আধারশক্তারে নমঃইত্যাদি।। ১৪৭।।

তত্র চ মস্ত্রোপাদনেনৈব শ্রীভগবছপাদনংতথা শ্রীভগবছপাদনেনৈব মস্ত্রোপাদনমিতি বোধ-য়িত্তং মন্ত্রমাহাত্মাবিশেষঞ্চ দর্শয়িত্তং শ্রীক্তগবতা সহ মন্ত্রদ্যাভেদমাপাদরতি ততইতি দ্বাভ্যাং। ত্রীণি স্থানানি নিজমূলাধারকদয়ভুমধ্যানি তৎস্থ মূলমন্ত্রাত্মকং পরং মহঃ আনন্দঘনং তড়িং কোটিপ্রভুং তেজঃ কামবীজেন সহৈকীভূতং ঐক্যং প্রাপ্তং বিচিন্তরেৎ। শব্দত্রহ্মময়ত্বেন তত্তৎ छ। त्न कृष्य वर्श वर्श्वमानम् मञ्जमाम् आरश्चामामग्रद्य ज्ञावमाञ्चकम् वीरक व मञ्जमम् स्थान তাদুশত্বং ত্রসাপি জানীয়াদিত্যর্থঃ। তত্র চ তত্তৎস্থানে পূথক্ পৃথক্ বিচিন্তা জলগন্ধাক্ষতপ্রস্থা দিভিরভাষ্ঠ্য পশ্চাপ্তৎস্থানত্রয়গতং তক্ষহঃ কামবীজেনৈকীভূতং ভাবয়েদিতি শিক্ষাচারাৎ বোধ্যং ॥ ১৪৮ ॥ পঞ্চালানি মূলমন্ত্রসম্বনীনি তেষাং তিমান্ ন্যাদেন তৎ পরং মহঃ সাকারং বিচিন্তা ভচ্চ নিজেফলৈবতং পূৰ্ব্বধ্যাতাৰিভূতি ক্ৰিক্জনে ৰস্বৰূপং বিচিন্তা। তথাচ ক্ৰমদীপি-কায়াং। অথ মূলমন্ত্রঃতেজে।নিজমূলে হৃদয়ে ভূবোশ্চ মধ্যে তিতয়ং স্মরতঃ স্মরেণ কামনীজেনৈ-কীভূতং স্মরেৎ তদেকীভূতমানন্দ্যনং তড়িল্লতাভং। তত্তেজঃ সাবয়বীক্ষ্ট্রেতি তন্মিন্ তাদুশে নিজ্ফীদৈবতে মন্ত্রস্য পঞ্চালা আদিশব্দাদটাদশাক্ষরাণি পঞ্পদানি চু ন্যান্ত্র । তথাচ ক্রমদীপিকায়াং। यनाका দশলিপিনা স্বর্ণপদাকৈত বেণুপূর্কে বিধিঃ প্রোক্তইতি। অস্যার্থঃ। यन। অন্তাদশাক্ষরমন্ত্রেণ পূজাতনা মন্ত্রাক্ষরপদপঞ্চকাঙ্গপঞ্কন্যালৈর্ব্যাদিভিশ্চ বিধিঃ প্রোক্ত ইতি। তত্র চ কথং কুত্র কিং ভাগেসমিত্যপেক্ষায়াং লিখতি ষথাত্মনীতি। পূর্কাং যথা স্বদেহে তন্ত্র-ন্যানোলিখিতস্তদ্দিত্যর্থঃ। তথাহি প্রথমং মূলমন্ত্রং ব্যাপকত্ত্বেম বারত্রং বিন্যুস্য পশ্চাচ্ছীকর षरा वाभिकरत्वनारमे दिनामा जीकत्वयाक लियू भक्षाकानि नारमा । उटा इकोममाकतानि মস্ত্রু দিয়ু পঞ্চ পদানি চ নৈত্রদ্য়াদিযু ক্রমেণ ন্যাদেতি পূর্ব্বলিথিতারু দারেণ জেরং।।১৪৯।। নত্ত সচিদানন্দবিগ্ৰহোহখিলদৈবমন্ত্ৰময়োভগবান্ জীক্ষঃ ধ্যানবিশেষবলাং পূৰ্ব্বমাৰিভূতিগ্ৰ মানদোপচারেরর্চিত ভ অধুনা মূলমন্ত্রতে জলস্তত্ত তথা তথা চিম্বনং কিমর্থং। মন্ত্রদা মাহা-आदिरमयास औछगवण मह मञ्जरेमाकारवाधनात हिडि हिड्यां शिक्षाक्रनारमन मोकात्रजा সহ । ১৫০ । কেচিম্বাস্তি ভজ্বাদীন্যেক্তানি যথোদিত । মন্ত্রা কি স্বরহৎসাদ্যৈ ভূষণেশু প্রভোঃ ক্রমাৎ । ১৫১ ।।

অথ বাহ্যোপচারৈরন্তঃপূজা। ভিন্মিন্ পীঠে ত্যাসীনং ভগবন্তৎ বিভাবয়ন্।

চিন্তনাদিকং বৈক্ষব সিদ্ধান্ত বিরুদ্ধং স্যাদিত্যাশঙ্ক্য বৈষ্ণবমতংলিথতি কুর্যুরিতি । ভগবতীতি। ইক্ষিদ্যা সাক্ষান্তগৰত্ত্বন প্ৰব্ৰহ্মৰূপত্বাৎ সৰ্ব্বমন্ত্ৰাদিময়ত্বাৎ মন্ত্ৰতেজ আদিকং তভোভিন্নং নাস্তোবেত্যর্থঃ। তথামন্ত্রশ্যাপি প্রায়োশামবিশেষময়ত্ত্বন পরমং ভগবন্ধপত্বমেব। অত্যেভগবৎ প্রাতর্ভাবেণ মন্ত্রস্যাপি প্রাত্র্ভাবোনূনং বৃত্তএব। অতঃ পুনস্তচিন্তনস্য পৌনরুক্ত্যাপত্ত্যা ব্যর্থতৈব স্যাদি ত্যুগঃ। অতোধ্যানভক্তাবিভূতি ভগৰতোৰ সাক্ষাভভল্যাসান্ মন্ত্ৰপঞ্চাসনামান্ কুৰ্যাৎ ন সূত্রি তত্তন্ত্রাসকরণমপাকুপযুক্তমের তত্ত্র লিখতি। ভগরতা ক্লেফেন সহ মনোঃ মন্ত্রস্য ভেদা য়েতি। শব্বথা তল্ময়এবায়ং মস্ত্রইত্যৈক্যজ্ঞানেন সর্ব্বেবাং মন্ত্রে ভক্তিবিশেষার্থমিতি ভাবঃ। বৈষ্ণবাইতি অয়মেব ঞ্জিলবন্দ্ৰজানাং পক্ষইতি স্চয়তীতি দিক্॥ ১৫০॥ অধুনা প্রমহৃদ্য-ত্বেন শ্রীভগবস্ভূষণোত্তমন্যাসং লিখতি কেচিদিতি। স্বরাঃ ষোড়শঃ। হংসৈতি দ্বৌ বণৌ । তে আদ্যা আদৌ वर्डमाना ययारेखः मञ्जमा अर्रेनः अक्षामनवर्रेनः मह उद्घानि প্রভোঃ ভগবতঃ ক্ৰীকৃষ্ণস্য ভূষণেষু ক্ৰমাৎ যথাক্ৰমং কেচিন্তগৰন্তক্তা ন্যস্যন্তি অব্যক্তাদীনীতি বিশেষণং পূৰ্ব্বং তত্ত্বন্যাদে লিখিততত্ত্বানাং ব্যাবৃত্ত্যর্থং। আদিশব্দেন মহদহক্ষার্মনোবুদ্ধ্যাদীনি। ক্রমাদিতি স্থ্যাদ্যকীদশাক্ষ্যানস্ত্রং মন্ত্রস্য বীজাদ্যক্ত করোণাং তদনস্তরং চাব্যক্তাদীনমেক দশতজ্বানাংকু ও-लामाकीम मञ्चर गयु करमन अरशान हे जिल्ला । यर गामिकः जल्लाक ममिक समर्वे अनव श्रीकः প্রত্যেকঞ্ বিন্দুসহিতং তথা হংদেতাস্য সকারং সবিসর্গঞ্ তথা আকারাদিযোড়শস্বান্ শিরসি নাসা বেণুমুদ্রাং মূথে প্রদর্শ্য মন্ত্রং তমকুম্মৃত্য পশান্তভেদণতত্ত্বময়ভূষণেষু নাসান্তি। তত্ত চ তত্তদৰ্গতন্ত্ৰাত্মকত্বংতস্য ভস্য ভূষণস্যাসুচিন্তা তত্তমুদ্রাভিন্তত্ত তত্ত ন্যাসং কুর্বন্তি। তত্রাপি আত্ম-সম্বিশেশব্যতিরিক্তে যু সর্বেষু তত্ত্বে আত্মনে ইতি পদং তদন্তে চ সহসুশীর্ষায় পুরুষায় নমঃ ইতিমন্ত্রোক্তানুসারেণ দ্রক্তব্যং। প্রয়োগঃ। ওঁ অংক্লী অব্যক্ত।ত্মনে সংসুশীর্ষায় পুরুষায় নমইতি কুওলে। ১। সহসুশীর্যেত্যাদিকং সর্বাত জ্লামেব। ওঁআঁ। কুঁমহদাত্মনে নিধিপিচ্ছেপঞ্চাত্মকে। ২। ওঁইংকাং অহলারাত্মনে কর্ণোৎপলে। ৩। ওঁঈংয়ং মনআত্মনে তিলকে। ৪। ওঁউংগোং বুদ্ধাত্মনে মুক্তাকুওলে।। ৫।। ওঁউংবিংঅছ্সারাত্মনে বনমালায়ং তমতাত্মনে পঞ্চাত্মনে ইতি কৃচিৎ ॥ ৬ ॥ ওঁ ঋংদাং চিন্তাত্মনে হারে ॥ ৭ ॥ ওঁ স্লংযং আত্মনে কেয়ুরে ॥ ৮ ॥ ওঁ ১ং গোং অস্তরাত্মনে বলয়ে॥ ৯॥ । ওঁ৯৯ংপীংপরমাত্মনে কটকে॥ ১০। ওঁ ঐংজংজ্ঞানাত্মনে রত্না-পুলীয়কেষু ॥ ১১॥ ওঁ ঐংনংপ্রাণাতাুনে জীবংসে কৌস্তভেচ ॥ ১২ ॥ ওঁ ওংবং শব্দ্যাতাুনে উদ-ৰক্ষে।১৩। ও ঔ লং কাৰাভানে পীতবাসিম।১৪॥ ও অংভাংরাগাতানে কগ্রাভূষণে ॥১৫॥ **७ जः यः यः त्यानाज्ञात्म नृश्रद्ध ॥ ১७ । ७ इः याः जानमाज्ञत्म श्रमात्र**्ली स्टक्षू । १९ ॥ ७ मः हाः প্রকৃত্যাত্মনে চক্রভ্রমণেইভি। ১৮।১৫১।।

তিমান্ স্বদেহবিষয়কপুজিতে পীঠে নিধিউং তং ক্তন্যাসং প্রদাদাভিমুখং লিখিত লক্ষণং শ্রীক্ষণং। আদ্যাদকেন স্থাগতার্ঘ্যপাদ্যাচমনীয়স্থানীয় বস্ত্রগুলপুনরাচমনীয়ভূষণামু লেপনানি। যথা বিধীতি। আদনাদ্যৈভূষণাদ্যৈরভার্চ্য ন্যাসস্থানেষু তত্তদক্ষরাদিন্যাসাত্মক कामनारेम अ भूष्णा रिखर्य विश्व हार्य हुन ।। ১৫২ ।। ততো मूर्य २ कर्म मानाक वक्ष मि । मक्क खाना र्यु व्याप्त विश्व कर्म मानाक वक्ष मि । मक्क खाना र्यु व्याप्त कर्म मानाक वक्ष मि । मक्क खाना र्यु व्याप्त कर्म मानाक विश्व कर्म मानाक विश्व कर्म कर्म कर्म विष्ठ विश्व विष्य विश्व व

অথান্তর্যাগমাহাত্মাং। বৈশ্বতন্তে। অশ্বনেধসহস্যুণি বাজপেয়শতানি চ।
একস্যধ্যানযোগস্য কলাং নাইন্তি ষোড়শীং। বৃহন্নারদীয়ে শ্রীবামনপ্রাদুর্ভাবে।
যন্নামোচ্চারণাদেব সর্ফো নশ্যন্ত্যুপদ্রবাং। স্তোত্রের্জা অর্হণাত্রির্জা কিমুধ্যানেন
কথ্যতে। নারদপঞ্চরাত্রে শ্রীভগবন্নারদসম্বাদে। অয়ং যোমানসোঘাগোজরাব্যাধিভয়াপহং। সর্ফ্রপাপৌঘশমনোভাবাভাবকরোদ্বিজ্ঞ। সতভাভ্যাস্থোগেন
দেহবন্ধাদ্বিমোচয়েং। যশৈচবং পরয়া ভক্ত্যা সক্ত্র কুর্য্যাত্রহামতে। ক্রমোদিতেন
বিধিনা তস্য ভ্রষ্যাম্যহং মুনে ইতি।। ১৫৭।। স্মরণধ্যানয়োং পূর্বং মাহাত্মাং
লিখিতঞ্চযুৎ। ক্রেয়ং তদ্ধিকং চাত্রান্তর্যাগাঞ্চত্যা তয়োঃ। এবং ম্থাসম্পুদারং

মস্ত্রেণ জলগন্ধাক্ষতপুল্পেরর্চয়ে দিত্যর্থঃ ॥ ১৫২ ॥ তত্ত্বর সব্যে বামস্তনার্ধ্ধে এবেত্যর্থঃ। ৫০। অমুং ভগবন্তং চন্দরেন আলিপা সম্যাপন্তালপা শ্রীমদক্ষেয়ু চন্দনেন ভক্তিচ্ছেদবিধিনা অমুলেপনং ক্রেত্যর্থঃ । প্রাথদিতি পূর্ব্যুক্তপুপ্রকরণে নিজাক্ষেয়ু দাদশতিলক নির্দ্মাণবিধির্যথা লিগিতঃ তথৈব শ্রীভগবতোভাবাদিয়ু মূর্ত্তিপঞ্জরন্যাসস্থানেয়ু মূর্ত্তিপঞ্জর মইন্তরনামিকয়া দীপশিখাকারাণি তিলকানি দ্বিষট্ দাদশ লিথেৎ বিরুচয়েদিত্যর্থঃ। বৈষ্ণর ইত্যস্যায়ং ভাবঃ ক্রমদাপিকোক্তামুগারেণ যানি জ্ঞানপরেঃ স্বাক্ষেরের চন্দনালেপনা-দীনি ক্রিয়েস্ত তানি শ্রীভগবদ্ধকিপরো ভগবতোর কুর্য্যাদিতি। এবং বৈষ্ণরইত্যপ্রেপায়ুর্বস্তু তথৈব বোদ্ধব্যমিতি দিক্।। ১৫৪।। যথোক্তমিতি মূলমন্ত্রেণ পাদদ্বয়ে স্থেতক্রকজললীভ্যানেকঃ স্ক্রাঞ্জলিঃ। তেনৈর স্বন্ধার্ধি তৈরের জলস্যাদিভিঃ ষট্ চন্তথঃ। তেনৈর মূর্দ্ধি ক্রেরক্রপদ্মাভাগিতঃ ঘট্ চন্তথঃ। তেনের স্বত্রনী সর্বেরের হৈও পঞ্চমইন্ডোবং পঞ্চভিঃ। তত্ত্র চ শ্বেতানি দক্ষিণভাগে অন্যানি চ বামইতি ক্রেয়ং। তং ভগবন্ত পঞ্চমইন্ডোবং পঞ্চভিঃ। তত্ত্র চ শ্বেতানি দক্ষিণভাগে অন্যানি চ বামইতি ক্রেয়ং। তং ভগবন্তং। পূর্পাদিকঞ্জ যথোক্তমেবার্পরেং। তন্তৎপ্রকারোতাের ব্যক্তোভাবী। আদিশক্ষের তায়ুলাদি।। ১৫৫। অনন্তরং গীতবাদ্যন্তত্যেক ক্র্যাং স্বন্ধেত্র বার্থা বহিঃ পুজায়ামশক্তক্ষেপ্রান্ধিনাতকৈ ক্রন্ধায় অধিলং কর্ম্যান্ধানং চাগ্রে লেখ্যপ্রকারেণ সমর্পরেং। তেভাজপনাচরেৎ। শক্তন্ত প্রত্যাহ বহিঃ পুজানন্ত্রমের কর্ম্যাদি সমর্পণঃ ক্রন্ধা জপং ক্র্যাদিত্যর্থঃ॥ ১৫৬।।

ধ্যানযোগস্য অন্তঃপূজালক্ষণস্য। ধ্যানযোগস্যেতি বা পাঠঃ । ভাবাভাবকরঃ ভোগমোক্ষ-প্রাদ ইত্যর্থঃ। যদা ভাবাঃ বিবিধ্বিদ্যাস্থাদাম ভাবকরঃ॥ ১৫৭॥ তৎ মাহাত্মাং ততোধিকং চাত্রা-স্তর্যাগে স্তেয়ং বুধৈঃ। তত্র হেস্তঃ তয়েঃ স্মরণধ্যানয়োরত্ত্যিস্যাঙ্গত্ত্বেন । অত্র শ্রীমূর্ত্তেশিস্তিন- শক্তা যাবনানঃ সুখন। অন্তঃ পূজান বিধায়াদাবারভেত বহিন্ততঃ ॥ ১৫৮ ॥ তথা চোক্তং নারদেন। ধ্যাত্বা যোড়শসন্থ্যাতৈরুপচারৈশ্চ মানসৈঃ । সম্যারাধনন কৃত্বা বাহ্যপূজাং সমাচরে ।।

তথ বহিঃ পূজা। অনুজ্ঞাৎ দেহি ভগবন্ বহির্যাগে মম প্রভো। এর্ফনিত্যনু-জ্ঞাপ্য বহিঃপূজাৎ সমাচরেৎ ।। ১৫৯ ।। তত্রন্তনকশঃ সন্তি পূজাস্থানানি তত্র চ। শ্রীমূর্ত্তয়োবহুবিধাঃ শালগ্রামশিলাস্তথা ।। ১৬০ ।।

অথ পূজাস্থানানি সংমোহনতন্তে। শালগ্রামেমনৌ যত্তে স্থিলে প্রতিমানিষ্ । হরেঃ পূজা ভু কর্ত্ব্যা কেবলে ভূতলে, ন তু ।। ১৬১ ।। একাদশক্ষে শ্রীভব-দ্রবসম্বাদে । সূর্য্যোগ্রিকান্ধানাগাবোবৈক্ষবঃ খং মরুজ্জলং । ভূরাত্মা সর্বাভূতানি ভত্র পূজাপদানি মে।। ১৬২ ।। সূর্য্যে তু বিদ্যমা ত্র্যা হবিষাগ্রৌ যজেত মাং । আতিথ্যন ত বিশ্রাপ্রে গোষ্প যবসাদিনা ।। ১৬১ ।৷ বৈশ্বে বকুসংরুত্যা হাদি খে ধ্যাননিষ্ঠয়া । বায়ৌ মুখ্যধিয়া ভোয়ে দ্বৈ জোয়পুরক্তিঃ । স্থিলে মন্ত্রহৃদয়ৈ ভোগোরান্মাত্মনি । ক্ষেত্রহুং সর্বভূতেমু সমত্বেন যজেত মাং ।। ১৬৪ ।৷ ধিক্যোল্ডার্ মদ্রপং শস্ত্রহুলং শান্তং ধ্যায়য়র্চেই সমাক্তিঃ । মৃক্তং চত্তর্ভূজং শান্তং ধ্যায়য়র্চেই সমাক্তিঃ ।। ১৬৫ ।৷

অথ শ্রীমৃর্ত্রয়ঃ । তত্ত্বে । শৈলা দারুময়া লোহা লেপ্যা লেখ্যা চ সৈকতা।

মপ্যস্থি পূজাদিকমপ্যস্থীত্যাধিক্যান্মাহাত্ম্যমপি ততোধিকমেব যুক্তমিতি ভাবং ॥ ১৫৮॥ ধ্যাহা আভগবন্তং সঞ্জিন্তা॥ ১৫৯॥

তত্র বহিঃ পূজাচরণে তু পূজায়াঃ স্থানানি অধিষ্ঠানানি অনেকশঃ বস্তপ্রকারাণি সন্থি। তত্র তেযু পূজাস্থানেযু এীমূর্ত্তরঃ ঐভিগবৎপ্রকৃত্য়ঃ বস্থবিধাঃ দন্তি। তথা বস্থবিধাঃ শাল্জ্রন শিলাশ্চ সন্তি॥১৬০॥

স্থানি মন্ত্রাদিসংস্কৃতস্থলং তিমান্।। ১৬১॥ মে মম ভদ্রাণি উন্তমানি প্রজায়াঃ পদানি অধিষ্ঠানানি। ভদ্রেতি যন্ত্রাদ্যপেক্ষয়া। যদ্রা হে ভদ্র হেকল্যাণ্রপোদ্ধবৈতি পৃথক পদং।। ১৬২॥ তবৈবাধিষ্ঠানভেদেন পূজাসাধনভেদানাই স্থেটা স্থিতি ত্রিভিঃ। ত্রয়া বিদ্যয়া স্থাজ্ঞানানিনাচ। অঙ্গ হেউদ্ধব॥ ১৬০॥ বিদ্যুমণ ব্রুসংক্রতা বন্ধুসন্মানেন। মুখ্যধিয়া প্রাণদৃষ্ট্যা। তোয়াদিভিত্র-বিষ্তৃপণাদিনা তোয়ে। স্থাজিলে ভুবি মন্ত্রহ্লাইয়ঃ রহস্যমন্ত্রন্যাকৈঃ। যদ্যপি তন্ত্রহুপ্রায়য়ঃ গলালিক্ষপেক্ষতে তথাপি তত্র তত্র ত্রয়াবিদ্যাদীনাং প্রাধান্যাভিপ্রায়েণ তান্যেবোক্তানি॥ ১৬৪॥ স্বাধিষ্ঠানেষু ধ্যয়মাই ধিষ্টোম্বিতি। ইতি অনেনোক্তপ্রকারেণ এষু ধিষ্ট্যেরু অধিষ্ঠানেষু মন্ত্রপমের ধ্যায়য়র্চ্চয়ের ॥ ১৬৫॥

লৌহী লোহং স্থবৰ্ণাদি তমায়ী। লেপ্যা মৃচন্দনাদিময়ী। হৃদি পূজায়াং মনোময়ী। যদ্ধি স্কাসামেৰ মনোময়ীত্বং ঘটতে তথাপি মনসি শ্ৰীভগৰৎপরিস্ফূর্ত্তি বিশেষাপেক্ষয়া পূথ ওকা মনোময়ী মণিময়ী প্রতিমাইটবিধা মতা । চলাচলেতি দ্বিধা প্রতিষ্ঠান্ত্রীব মন্দিরং ।। ১৬৬ ।। উদ্বাসাবাহনে ন স্তঃ স্থিরায়ামুদ্ধবার্চনে । অস্থিরায়াং বিকংশঃ স্যাৎ স্থান্তি লে তু ভবেৎ দ্বয়ং । সুপনং ত্ববিলেপ্যায়ামন্ত্র পরিমার্ক্তনং । গোপাল-মন্ত্রোদিইত্বাৎতান্তুন্তুরিপেকিতা । তথাপি বৈষ্ণবল্লীত্যৈ লেখ্যাঃ শ্রীমূর্কয়োহ্বিলাঃ ।। ১৬৭ ।।

জীবয়তি চেতয়তীতি জীবোভগবানের তদ্য মন্দিরমণিঠানং। প্রতিষ্ঠা প্রকর্ষণ তিষ্ঠতাস্যামিতি প্রতিমৈন। যদ্বা প্রতিষ্ঠায় কলান্যাদাদিনা ভগবলন্দিরং ভবতি ॥ ১৬৬২। শ্রীমূর্ত্তেভেঁদে বিশেষ আহ উদ্বাদেতি সার্চ্চেন। উদ্বাদে বিদক্ষ নং। স্থিরায়ামর্চ্চনে। অস্থিরায়াং শ্রীশালগ্রামশিলাদৌ বিকপেঃ শ্রীশালগ্রামশিলায়াং ন কুর্য্যাং দৈকত্যাং কুর্য্যাৎ অন্যত্র কুর্য্যাদা নবেতি। অবিলেপ্যায়াং মৃণুয়লেখ্যব্যতিরিক্তায়াং অন্যত্র বিলেপ্যায়াং লেখ্যায়াঞ্চ পরিমার্জ্জ নমেন ॥ ১৬৭॥

অক্তর পৃথক্ প্রক্তিয়ামান।। ১৬৮।। দক্ষিণে দক্ষিণীধঃকরে। তথোপরি দক্ষিণোর্দ্ধ করে। বামোপরি বামোর্দ্ধরে। অধঃ বামাধঃকরে। দদ্যাদিতি শ্রমৃত্তিপ্রাছর্ভাবনবিধাবুক্তেঃ। এবমনাদগ্রেপ্রাঞ্জঃ। ১৬৯॥ অধরোত্তরভাবেন কেশবস্য যদধঃকরন্থিতঃ নারায়ণস্য তদূর্দ্ধকর- স্থামত্যেব্যিত্যর্থঃ।। ১৭০॥ শ্রীবাস্থদেবসম্ম্বার্থেদং মূর্ত্তিবট্কমুক্ত্বা শ্রীপ্রছামুদ্য ভেদং মূর্ত্তিবাং বট্লোক্যা নির্দ্দেশন্ত তাদৌ ত্রিবিক্রমমূর্ত্তিমাহ দক্ষিণোর্দ্ধনিতি সার্দ্ধেন। দক্ষিণোর্দ্ধং করং ব্যাপ্য দক্ষিণোর্দ্ধই তি সপ্তমান্তপাঠোরা। এবমগ্রেপি। শ্রামিত্যাদি নপুংসকত্বমার্বং। এবমগ্রেপ্যন্য দুছং॥ ১৭১ ॥ শ্রীবামনমূর্ত্তিমাই। বলীতি দ্বাভ্যাং। অধন্থিতং ভূতলে অব-

বিতং ।। ১৭২ ।। বানোর্দ্ধে কৌনোদী যাস্য পুগুরীকমধঃস্থিতং। দক্ষিণার্দ্ধিং সহস্যারং পাঞ্চলন্যমধঃ স্থিতং। সপ্তভালপ্রমাণেন বামনংকারয়েৎসদা। উর্দ্ধ্য দক্ষিণতক্ষক মধঃপঞ্চরবিস্থিতং। পঞ্চা পলকরা বামে পার্দ্ধে যাস্য ব্যব্য স্থিতা। সিন্তাবালাস্থান্ । প্রদুন্দ্রম্য হি ভেদো-হয়ং প্রীধরেতি প্রকার্ত্য । ১৭৩ ।। দক্ষিণাের্দ্ধিং নহাচক্রং কৌনোদাি ভদধঃ-স্থিতা । বামাের্দ্ধে নলিনং যাস্য অধঃ শশ্বং বিরাক্তে। হ্যবীকেশেতি বিভেয়ঃ স্থাপিতঃ সর্বকামদঃ । দক্ষিণাের্দ্ধে পুগুরীকং পাঞ্চলন্যমধন্তথা । বামার্দ্ধে সংস্থিতং চক্রংকৌনোদা ভদধঃ স্থিতা । পল্লনাভেতি সাম্র্তিঃস্থাপিতা মাক্ষদায়িনা ।। ১৭৪।। দক্ষিণাের্দ্ধে পাঞ্চলন্যমধন্তান্ত কুশেলায়ং। সব্যার্দ্ধে কৌনোদাি চৈব হেতিরাক্ষ মধঃস্থিতং। অনিক্রন্ধস্য ভেদােয়ং দামােদরইতি স্মৃতঃ । এতেযান্ত ক্রিয়াে কার্যে পল্পবীণাধরে শুভে । ইতি ক্রমেণ মার্গা দিমাসাধিপাঃ কেশবাদ্য়োল্ডাা্য বাদেশা। ১৭৫।।

অথ সিদ্ধার্থসংহিতায়াৎচতুর্বিৎশতিমূর্তয়ঃ ! বাসুদেবোগদাশপ্রচক্রপন্ধরোন্
মতঃ। পালং শব্ধং তথা চক্রৎ গদাং বহতি কেশবঃ । শব্ধং পালং গদাঞ্চক্রৎ বত্তে
নারায়লঃ সদা। গদাংচক্রং তথা শব্ধং পালং বহতি মাধবঃ । চক্রং পালং তথাশব্ধং
গদাঞ্চ প্রধান্তরঃ । পালংকোমোদনাং শব্ধং চক্রৎ ধত্তেপ্রধান্তরঃ ॥ গলংকামোদনাং শব্ধং চক্রৎ ধত্তেপ্রধান্তরঃ ॥ পালংকামাদনাং পালাংলার কার্যালং পালং তথা শব্ধং চক্রৎ বিষ্ণুর্বিভিত্তি য়ঃ । চক্রং শব্ধং তথা পালং
গদাঞ্চ মধুস্দনঃ। গদাং সরোজং চক্রঞ্চ শব্ধং পত্তেহচুক্তঃ সদা। শব্ধং কোমোদনাং
চক্রম্পেন্দঃ পাল্যমুহত্বে । চক্রশব্ধগদাপার্মরঃ প্রদুর্মুউচ্যতে । পালং কোমোদনাং
চক্রং শব্ধং বত্তে ত্রিক্রিমঃ । শব্ধং চক্রং গদাং পালং বামোনোবহতে সদা। পালং
চক্রং গদাং শব্ধং প্রথিরোবহতে ভুক্তঃ । চক্রং পালং গদাং শব্ধং নর সিংহোবিভত্রিহঃ । পালং স্দর্শনং শব্ধং গদাং ধত্তে জনার্দ্দনঃ । অনিরক্ষশ্চক্রগদাশব্ধপাল
লস্তুক্রঃ । হ্রাকেশোগদাং চক্রংপল্যং শব্ধং ধত্তে দামোদরঃ সদা। শব্ধং চক্রং
পালং চক্রং গদাং বহতি যো হরিঃ । শব্ধং কোমোদনীং পালং চক্রং বিষ্ণুর্বিভিত্তি

স্থিতমিত্যাদিকং ত্রিবিক্রমান্বিশেষঃ॥ ১৭২॥ কৌমোদী কৌমোদকী গদা ॥ ১৭৩॥ অনিরুদ্ধস্য ভেদং শ্রীক্রবাকেশাদিত্রমাহ। দক্ষিণোর্দ্ধমিতিত্রিভিঃ॥ ১৭৪॥ কুশেশয়ং পদ্মং। হেতিবাকং-চক্রং॥ ১৭৫॥

পুরুষোপ্তমোধক্তে॥ ১৭৬॥ ধরতে ধরতি । আত্মনেপদমার্বং । যোবিভর্তি স বিষ্ণু: এবং

যঃ । ১৭৭ ।। এতাশ্চ মূর্ত্তরোজেয়াদক্ষিণাধ্যকরক্রমাৎ । । ১৭৮ ।। মৎস্যপুরাণে চ ।
এতদুদ্দেশতঃ প্রোক্তং প্রতিমালকণ্ডথা। বিস্তরেণ ন শক্রোতি বৃহস্পতির পি দিজা
ইতি। সেবানিষ্ঠা হরেঃ শ্রীমদ্বৈষ্ণবাং পাঞ্চরাত্রিকাং । প্রাকট্যাদ্থিলাক্সানাং শ্রীমূর্ত্তিং
বহু মন্যতে। সেব্যা নিজনিজৈরের মদ্রৈঃ স্বস্বেষ্টমূর্ত্ত্রঃ । শালগ্রামাত্মকে রূপে
নিয়্রমোনের বিদ্যতে ।। দিভুজা জলদশ্যামা ত্রিভক্ষী মধুরাক্রতিঃ । সেব্যা
ধ্যানানুরপৈশ্চ মূর্ত্তিঃ ক্ষুস্য দৈবতৈঃ ১৭৯ ।। অন্যাশ্চ বিবিধাশ্রীমদ্বতারাদি
মর্ত্রয়ং । প্রাদৃত্রবিধাবগ্রে লেখ্যাস্তত্তিদ্বেষ্তঃ ।। ১৮০ ।। নিভ্যকর্মপ্রসংক্ষহত্র

মত্রেপি॥ ১৭৭॥ দক্ষিণে যোহধঃস্থিতকরস্তৎক্রমাদিত্যেক্যাদৌ অধস্তনোদক্ষিণকরঃ পশ্চাদুর্দ্ধ দক্ষিণকরঃ ততোৰামোর্দ্ধকরঃ ততোবামাধস্তনকরঃ ইতিক্রমঃ। এবং শ্রীবাস্থদেবস্যাধোদক্ষিণ করে গদা । উর্দ্ধদিকিণকরে শঙ্খঃ। উর্দ্ধবামকরে চক্রং। অধোবামকরে প্রথমিতি জেরং। তথা-চোক্তং শ্রীক্লফদেবাচার্যাপাদৈঃ। কেমস সংদাব প্রবিমানিপুর্বধোজনাঃ। গোতি জ্রিক্সস্সিং হাচ্যতবানাপোপেহ্রক্রমাদিতি॥ অস্যার্থঃ। কেশব মধ্রুদন সক্ষণ দামোদ্র বাস্থানের প্রস্থা বিষণু মাধব অনিরুদ্ধ পুরুষোত্তমাধোক্ষক জনার্দন গোবিন্দ তিবিক্রম শ্রীধর হাবীকেশ নৃ সিংহা চ্যুত বামন নারায়ণ পদ্মনাভোপেক্র হরি কৃঞাখ্যা শত্তবিংশতি শ্রীমূর্ত্তরঃ ক্রমাৎ জেরা ইতি। এষাং দক্ষিণোর্শ্বকরমারভ্য ক্রমেণ শস্থচক্রগদাপত্মানি জ্যোনি। তথা চ তৎপিতৃঞীরামা চার্য্যপাটেদরুক্তং । কেশবাদিকরুক্ষান্তমূর্ত্তিষট্কচন্তক্ষয়ে । স্ব্যাপস্ট্রার্গণয়েৎ প্রনঃ কোণাৎ তথৈবচ। স্ব্যম্ব্যে পুনঃ কোণাদ্সব্যস্ত কোণ্তইতি। অয়মর্থঃ । স্ব্যেন শহ্মাদৌ গণ্যমানে কেশবঃ। অপসবে।ন মধূস্দনঃ।কোণগত্যা কোণাচ্চ তত্মাং সব্যেন সন্ধর্ণঃ। অপসবে।ন দামোদরঃ। স্ব্যুম্গিত্য কোণাদ্যগ্রুমানে বাস্ত্র্দেবঃ। অপস্বামাগত্য কেণ্ডঃ প্রহ্নামুঃ । এবং বামোর্করমারভা বিফাঃ মাধবঃ অনিরুদ্ধঃ পুরুষোত্তমঃ অধোক্ষতঃ জনার্দ্ধনইতি ষট্। বানাধঃ করমারভ্য গোবিন্দস্ত্রিবিক্রমঃ জ্রিধরোক্ষ্বীকেশঃ হৃসিংহ অচ্যুতঃ ইতি ষট্। দক্ষিণাধঃকরমার ভ্য বামনোনারায়ণঃ পদ্মনাভঃ উপেক্রঃ হরিঃ কৃষ্ণ ইতি ষট্গণয়েদিতি । ইত্থং তত্তবির্দ্ধারঃ কার্য্যঃ।। ১৭৮॥ নমু এভাবত্যএব শ্রীমূর্স্তরোহন্যা বা সন্থিতত্র লিখন্তি এতদিতি। বিস্তরেণ বক্তুং ন শক্রোতি । হে দ্বিজ্ঞাঃ শৌনকাদয়ঃ ॥ ১৭৯॥ নমু শঙ্খাদিধারিচন্তভুজি শীমূর্ত্তয়ো-লিখিতঃ নত্ত শ্রীন্সনিংহরঘুনাথাদিবিশেষমূর্ত্তয়ঃ তত্তভুক্তিঃ কীদৃশী তত্তমূর্ত্তিরুপাস্যা বিশে-ষতশ্চাত শ্রীগোপালদেৰস্য পূজাবিধিলিখনে ত্সা প্রকৃতির্বশাং বিজ্ঞাপ্তমপেক্ষ্যতে ত্র লিখতি। অন্যাশ্চেতি । আদিশবেন চন্তব্য হপার্বদাদয়ঃ '। অত্যে লেখ্য শ্রীমূর্ত্তিপ্রাত্তাববিধৌ বোখ্যাঃ৷ যুদ্যপি শ্রীমন্টোপোলদেবস্যাফীদশাক্ষরমন্ত্রতঃ লিখ্যতেইচ্চাবিধিরিভ্যনেনএভদ্বিলাদা-রয়েশীমকোপালদেবলৈয়ৰ পূজাবিধিলিখনং প্রতিজ্ঞাতং তদেবাত্রোপাদেয়ঞ্চ অতস্তদৈয়ৰ 🗐 মূর্ত্তিরপি লিখিত্তমুপযুক্ষ্যতে। তথাপি গ্রন্থারন্তে শ্রীবৈঞ্বানাং সর্কোধামের সামান্যতোহব-শাক্তাকর্দানিখনং প্রতিজ্ঞাতমন্তীত্যশেষশ্রীমূর্ত্ত্যপেক্ষয়া তত্তবিশেষবিজ্ঞানার্থং তথা ইতস্ততো বর্ত্তমানবিবিধত্তীমূর্ত্তিপরিচার্য্যার্থঞ প্রদক্ষাদ্দ্র্যা অপি ত্রীমূর্ত্র্যোহত্র লিখিতাঃ যথা হুদিংহপরি-চর্য্যাদিএত্তে জীক্কদেবাচার্য্যাদিভিঃ সর্বাত্তব তাইতি। এবমন্যদপুছেং।। ১৮০॥ নমু প্রতিষ্ঠ্যা ভগবন্ধন্দিরং ভবতীত্যুক্তেঃ প্রতিষ্ঠাবিধিতথা জীমুখাদ্যবয়বপরিমাণাদিনা জীমুর্তিপ্রাছ্তাব- মৃতিজন্মপ্রতিষ্ঠরোঃ। বিধিন লিখিতুং যোগ্যঃসত্ত লেখিষ্যতেইগ্রতঃ ॥ ১৮১॥

অথশালগ্রামশিলাঃ। গৌতমীয়তন্তে। গগুক্যাশৈচব দেশে চ শালগুমস্থলং
মহং। পাষাণ্ তত্ত্বংযত্তংশালগ্রাম মিতি শৃত্। স্কন্দপুরাণে। সুস্ধা ক্ষা পাওর।
বা পীতা নালা তথৈব চ । বক্রা ক্রনা চরক্তা চ নহাস্থলা স্বলাস্থিতা। কপিলা
দল্রা ভগ্না বহুচক্রৈকচক্রিকা।। বৃহ্মুখী বৃহ্চক্রা লগ্নচক্রাথবা পুনঃ। বদ্ধচক্রাথবা
কাচিদ্রগ্রক্রাস্থান্থী।।

অথ তাসাং বর্ণাদিভেদেন গুণদোষো । তত্রৈব । সুধা সিদ্ধিকরী নদ্রে রক্ষা নি তিং দদাতি চ । পাণ্ডরা পাপদহনী পাতা পুত্রকলপ্রদা । নালা সন্দিশতে লক্ষ্মীংরক্তা রে,গপ্রদায়িক। । রুক্ষা চোদ্বেগদা নিত্যং বক্রা দারিক, দায়িকা । সুলা নিহন্তি চৈবায়ুর্নিক্ষলা তু অলাঞ্চিতা । কপিলা কর্ম্বরা ভ্রা বহুচক্রেক-চক্রিকা। বৃহ্মুখী বৃহদ্ধকা লগ্ধচক্রংথবা পুনং ॥ ১৮২ ॥ বদ্ধচক্রথবা যা স্যান্তর্ম চক্রা ত্রধামুখী । পূল্বেদ্বং প্রমাদেন দুংখনেব লভেত সং ॥ ১৮৩ ॥ অগ্রি পুরাণে চ । তথা ব্যালমুখী ভগ্না বিষমা বদ্ধচক্রিকা । বিকারাবর্ত্রনাভিশ্ব নার্রিক্রা তথৈব চ । কপিলা বিভ্রমাবর্ত্তা রেখাবর্তা চ যা শিলা । দুংখদা সাত্র বিজ্ঞো সুখদা ন কদাচন ॥ ১৮৪ ॥ সিন্ধা শ্যামা তথা মুক্তাহমায়া বা সম্চক্রিকা। ঘানিমূর্ত্তিরনন্তাখ্যা গন্তীরা সম্পুটা তথা। সূক্ষমূর্ত্তিরমূর্তিশ্ব সংমুখা সিদ্ধিদায়িকা। ধার্ত্রা কলপ্রমাণা যা করেণোভয়সম্পুটা । পূজনায়া প্রয়ত্রেন শিলা তৈতাদ্শী শুলা ॥ ১৮৫ ॥ ইফা তু যস্য যা নূর্ত্তিং স্বর্তার পূজ্যেই। পূজ্যতে কলমাপ্যোতি ইহলোকে পরত্র চেতি ॥ ১৮৬ ॥ দোবাশ্বতে সকামার্থন বিষয়াঃ । যত উক্তং শ্রীভগবতা ব্রাক্ষে । খণ্ডিতং ক্র্টিতং ভ্রাং পাশ্ব ভিন্নং বিভে

প্রকারশ্চাত্রাপেক্ষ্যতে তত্ত্ব লিগতি নিত্যেতি। অত অস্মিরিত্যকর্মার্থিনপ্রকরণে সর্ভে প্রতিক্রতেঃ জন্ম প্রান্নভাবঃ প্রতিষ্ঠা চ তন্ত্রেংকিধি লিখিত্তমযোগ্যোহতোহত্ত্রে কাদাচিৎকক্রত্য লিখনে ॥ ১৮১॥

দর্রা দ্হরোভেকস্তদাকারেত্যর্থঃ কর্ববুরেতি পাঠে মিশ্রবর্ণা ॥

 দিতে । শালপ্রাম সমুজুত শৈলং দোষাবহং নহি ।। ১৮৭ ।। জীরাতেণ চ ফাল্দে । থাওিতং জাটিতং ভরাং শালপ্রামে ন দোষভাক্ । ইটা জু যস্য যা মূর্তিঃ স ভাৎ হতেন পূজ্যে ।। ১৮৮ ।। তথা ।। চক্রৎ বা কেবলং তত্র পল্মেন সহ সংমৃত । কেবলা বনমালা বা হরিলক্ষ্যা সহ স্থিতঃ ।ইতি ।। ১৮৯ ।। মুখ্যাঃ স্থিটা যেতামুখ্যা রক্তাদয়ো মতাঃ । মুখ্যাভাবে জুমুখ্যাহি পূজ্যাইত্যুচ্যতে পরৈঃ ।। ১৯০ ।।

অথ ভাসামের লক্ষণবিশেষেণ সংজ্ঞাবিশেষঃ । ব্রাক্ষ্যে শ্রীভগবদুব্দসম্বাদে। নিব্সামি সদা ব্ৰহ্মন্ শালগ্ৰামাখ্যবেশানি । ভত্তিব রথচকাঞ্ছ ভেদ্নামানি মে শূণু।। ১৯১।। দ্বারদেশে সমেচক্রে দৃশ্যতে নান্তরীয়কে। বাসুদেবঃ স বিজেঃঃ শুক্লাভশ্চাতিশোভন: 11 ১৯২ 11 দ্বে চক্রে এক লয়ে ডু পূর্বভাগন্ত পুক্লঃ 1 সক্ষ-ণাখ্যোবিজেয়ো বক্রাভশ্চাতিশোভনঃ। প্রদুগ্নঃ সূক্ষ্চক্রন্ত পীতদীপ্তিস্থবৈ চা শুষিরং ছিদ্রবহুলং দীর্ঘাকারন্ত তদ্ভবেং। অনিরুদ্ধন্ত নীলাভোবর্তুলশ্চাতিশোভনঃ। রেখাত্রয়ন্ত ভদ্দারি পৃষ্ঠৎ পদ্মেন লাঞ্ছিতং। সৌভাগ্যং কেশবোদদ্যাৎ চতুকোণে:-ভবেতু যঃ ৷ শ্যামং নারায়ণং বিদ্যায়াভিচক্রং তথোয়ত্ম ৷ দীর্ঘরেখাসমোপেতং দক্ষিণে শুষিরং পূথু । উর্দ্ধুংমুখৎ বিজানীয়াৎ দ্বারে চ হরিকপিণং। কামদং মোক্ষদ-ঞ্চৈব অর্থদঞ্চ বিশেষতঃ। পরমেষ্ঠী লোহিতাভঃ প্রমচক্রসমন্বিতঃ। বিলাকতিন্তথা পৃষ্ঠে শুষিরং চাতিপুদ্ধলং। রুঞ্চবর্তথা বিষ্ণুঃ ভূলে চক্রে স্শোভনঃ। ব্রহ্মচর্যোণ পূজ্যেই সাবন যো বিশ্বদোভবেৎ। কৃচিচ্চ। কপিলোনর সিৎ হোইথ পৃথুচক্তে চ শোভনে। ব্রহ্মচার্য্যধিকারী স্যামান,থা পূজনংভবেৎ। নরসিৎহস্তিবিন্দুঃস্যাৎক পিলঃ পঞ্চবিন্দুকঃ। ব্রহ্মচর্যোণ পূজ্যঃ স্যাদন্যথা সর্কবিষ্ণ । স্তুলং চক্রম্বরং মধ্যে গুড় লাক্ষ্যাসবর্তকং। দ্বারোপরি তথা রেখা পূজাকারা নুশোভনা । স্ফুটিতং বিষমংচক্রংনারসিংহন্তকাপিল। সংপূজ্য মুক্তিমাগোতি সংগ্রামে বিজয়ী ভবেং।। পালে। কার্ত্তিকমাহাত্ম্যে চ। যস্য দীর্ঘং মুখং পূর্দ্দকথিতৈর্লক্ষিণ্যুভিং। রেখাশ্চ কেশবাকারা নরসিংহোমতে।হি সং।। ব্রাক্ষে। বার;হংশক্তিলিঞ্চে চচক্রে চ বিষ্মে ন্তে। ইন্নীলনিভং সূবং ত্রিরেখালাঞ্ডিং শুডং। পাঘে চ তত্তিব। বরাহারতি

পুচঃ॥ ১৮৭॥ খণ্ডিতমিত্যাদিভাবেক্তপ্রতায়ান্তং॥ ১৮৮॥ তথাপি লক্ষ্যা সহ ভগবান্
তত্ত্ব তিইতীত্যর্থঃ॥ ১৮৯॥ পুজ্যাপুজ্যন্ত্রেয়াঃ কেষাঞ্জিন্নতং লিখতি মুখ্যাইতি। মুখ্যানাং
নিকাদীনামভাবে সতি অমুখ্যা রক্তাদয়ঃ এব পুজ্যাঃ। যদিচ মুখ্যা লভ্যন্তে তদানাপুজনে
তত্তদোল এবেত্যর্থঃ॥ ১৯০॥

রথস্যের চক্রং রগচক্রাকারং বং স্থাদনিচক্রংতস্য অঙ্কে চিক্রবিবয়ে যোভেদস্তস্মিন্ সতি যানি নামানি নামভেদাভবস্তি তানি মে মৃত্তঃ শৃণিবত্যর্থঃ॥১৯১ঃ। নারীয়কে অবাস্তরে। যদা। অন্তরং মধ্যং অন্তরা বিচ্ছেনোরা ভদিহীনে। অনতিমধ্যদেশস্তে সংলগ্নে বেভার্থঃ॥১৯২॥ শুবিরং মুখ্ছিদ্রং ঘৎ ভদীর্ঘাকারং ভবেৎ ছিদ্রবিছ্লগ্ন অবান্তরবৃত্তিক্রেযুক্তমিতার্থঃ। নাভি

রাভ্রশ্তক্রেথাস্থলকৃতঃ। বারাইইতি স প্রেক্তো ভুক্তি মুক্তিফলএদ:। ব্রাক্ষত্র। मीर्च काक्षनवर्गा या विन्यू व्यविভृषिणा। मरमाथा मा निना उच्या जुलि मूलि-ফলপ্রদা। কৃচিচ্চ। মৎস্যৰপন্ত দেবেশৎ দীঘাঁকারন্ত হড়বেং। বিন্দুত্রসমাহুত্তৎ কাংস্যবর্ণ বিশোভনং। ক্রাক্ষএষ। কূর্মন্তথোয়তঃ পৃষ্ঠে ব উুলাবর্ভ পূরিতঃ। হরিতঃ বর্ণ মাধত্তে কৌস্তভেন চ চিত্নিতঃ। পাঘে চ তত্তৈব । কূম্যকারা চ চক্রাকা শিলা কূম্যঃ প্রকান্তিতঃ। ব্রাহ্ম এব। হরপ্রীবোহক শাকারোরেখা চক্রসমীপগা। বহুচক্রসমা-युक्तः পृष्ठेश्नोत्रमनोनकः । कृष्ठिकः । इत्रश्चीवाङ्ग्नाकादत द्रिथाः भक्ष ७विछ हि। दन् বিস্বসনাকীর্ণে দৃশ্যন্তে নীলৰপকাঃ। পাছে। চ তত্তিব। হয়প্রীবা যথা লয়া রেখাফা যা শিলা ভবেৎ। তথা ২সৌ স্যাদ্ধয়গ্রীবঃ পূজিভোক্তানদোভবেৎ। কিঞ্চ। অশাক্ষতি মুখং যস্য সাক্ষমালাশিরস্থা। পদাক্তিভবিদ্বাপি হয়শীর্ষস্পৌ ২তঃ। ত্রাক্ষ-এব। বৈকুণ্ঠৎ মণিবর্ণাভং চক্রমেকৎ তথা ধৃজং। দ্বারোপরি তথা রেখা পূজাকার। সুশোভনা। এথরস্ত তথা দেবশিচহ্লিতোবনমালয়া। কদয় কুসুমাকারোরেখাপঞ্জ-ভূষিতঃ ৷ ৰৰ্ভুলশ্চাতিহুস্বশ্চ বামনঃ পরিকীর্ভিতঃ ৷ অতসীকুসুমপ্রথেঞাৰিন্দুনা পরিশোভিতঃ। অন্যত্র চ। বামনাথ্যোভবেদেবোল্ স্থোয়ং স্যান্মহাদ্ তিঃ। উদ্ধৃ-চক্রত্বশচক্রঃ সোহভাষ্টার্থপ্রদোহর্চিতঃ। ব্রাহ্মএব। সুদর্শনক্ষধা দেবঃ শ্যামবর্ণো-মহাদুঃতিঃ। বামপাখে গদাচক্রে রেথে চৈব তু দক্ষিণে। পাছে ভত্তৈব। চক্রা-কারেন পঙ্ক্তিঃ সা হত্র রেথাময়ী ভবেৎ। স সুদর্শনইতে বেং খ্যাতঃ প্রাফলপ্রদঃ। मायामत्रस्था मृत्मामधाठकः প্রতিষ্ঠিত। मृत्री छ द्वाति मङ्गीर् भी छ। तिथा তথৈবচ।পালে চ তত্ত্বে। উপৰ্য্যধশ্চ চক্ৰে দ্বে নাতিদীৰ্ঘং মুখে বিলং । মধ্যে চ রেখা লয়ৈকা স চ দামোদরঃ মৃতঃ। অন্যত্ত চ। স্লোদামোদরোজেয়ঃ সূক্ষরক্ষো-ভবেতু যঃ। চক্রে চ মধ্যদেশতে পূজিতঃ সুখদঃ সদ। । নানাবর্ণোহ্যনভাখ্যোনাগ-ভোগেন চিক্লিতঃ ়া অনেকমূর্তিসংভিন্নঃ সর্বকামফলপ্রদঃ ৷ পালে চতত্তিব ৷ অনন্তচক্রোবহুভিন্চিই রপুপেল ক্ষিতঃ। অনন্তঃ সত্ত বিজেয়ঃ সর্বপূজাফলপ্রদঃ। দৃশ্যতে শিথরে লিঙ্গং শালগ্রামসমুদ্ধবং । তস্য যোগেশ্বনোনাম ব্ৰহ্মহত্যাং ব্যপোহতি। আরক্তং পদ্মনাভাখ্যং পক্ষজচ্চত্রসংযুতং । তলস্যা পূজ্যেনিত্যং দরিত্রস্থীশ্বরোভবেং। চন্দুার্ক্তিৎ হিরণ্যাখ্যংরশােজালং বিনিদ্দিশেং। সুবর্ণরেখা বহুলৎ ক্ষটিকদু,ভিশোভিতং। কিঞ্চাত্র। অন্ধচন্দুারুভিদেবোহ্যীকেশউদাহতঃ। .ভমজ্য লভতে ৰগং বিষয়াংশ্চ স্মীহিতান্। বামপাংশ্ব সমে চক্তে রুক্বর্ণঃ मिविन्तृकः । विश्वीन् मि९ हाविश्वादिवा जिल्लिम् कियविश्व विश्विक मेरिका स्थादिक শ্যামবর্ণোমহাদ্যুতিঃ । বামপাশ্বে তথা চক্রে রেখা চৈব তু দক্ষিণে। প্রদক্ষিণা-বৰ্তক্তবনমালাবিভূবিতা ৷ যা শিলা ক্ফলংজ্ঞা সা ধনধান্যসুখপ্ৰদা ৷ গোতমীয়ে व्हि जिल्ली किः भूरेन्। यं दिक्षिनिना भना कर छ । शाष्ट्रा कि हिन कन् रखन म्याभारक !

চত্রোয়ত্র দৃশ্যন্তে রেখাঃ পাখে সমীপগাঃ ! দে চক্তে মধ্যদেশে ভ সা শিলা ভু চত্তমু খেতি।। কিঞ্চ। পালে তত্তিব। বজুকীটোডোবা রেখাঃ পঙ্কীভূতাশ্চ হত বৈ। শালগ্রামশিলা যা সা বিষ্পঞ্জর সংজ্ঞিতা ।৷ ১৯৩ ৷৷ নাগবংকুগুলীভূতরেখা-পংক্তিঃ সশেষকঃ । পদাকারে চ পঙ্কীদ্বে মধ্যে লয়া চ রেথিকা। গরুড়ঃ স তু বিজেয় শ্চত্ত শ্চক্রে। চত শ্চক্রঃ সূক্ষ্মধারো বনমালাক্ষিতোদরঃ। লক্ষ্মী নারায়ণঃ শ্রীমান্ ভুক্তিমৃক্তিফলপ্রবং ।। ১৯৪ ।। এতলক্ষণযুক্তান্ত শালগ্রামশিলাঃ শুভাঃ। যাশ্চ তাম্বপি সূক্ষাঃ সুয়োঃ প্রশন্তকরাঃমাতাঃ। তথাচ জীভগবদুক্ষ-সম্বাদে। তত্ত্বে । যথা হথা শিলা সূক্ষা মহৎ পুণ্যৎতথা তথা। ভক্ষাতাৎ পূজ্যেমিত্য ধ্যাকানাথ দিদ্ধয়ে ৷ ত্তাপ্যামলকীভল্যা সূজ্যা চাতীৰ যা ভবেৎ। তস্যানেৰ সদা ব্ৰহ্মন্ প্ৰিয়াসহ ৰসাম্যহমিতি।। ১৯৫।। অথ শ্রীশালগ্রামশিলামাছারাও। শালগ্রামশিলাস্পর্শাৎ কোটিজনাদ্য নাশনং। কিপুন র্মজনং ভত্র হরিসানিধ্যকারকং। পাছে মাঘমাহাত্ম্যে তত্ত্বৈ। যং পূজ্যে-দ্ধবিং চক্রে শালগ্রামশিলোদ্ধবে । রাজসূরসহসূত্রে তেনেইও প্রতিবাসরও। যদা মনন্তি বেদান্তাক্র কা নিগুণমচুতে । তংগ্রসাদোভবেন্ণাৎ শালগুমশিলা-র্চনাৎ। মহাকাঠস্থিতোবব্লিম্থ্যমানঃ প্রকাশতে। যথা তথা হরিব্যাপী শাল-গ্রামে প্রকাশতে। অপি পাপসমাচারাঃ কর্মাণ্যনধিকারিণঃ। শালগুমার্চ্চকা रेवना रेनव शाखि रमानश् । न उथा तमरू लच्चा । न उथा निक्रमित । नाल-গুমিশিলাচক্রে যথা স রুমতে সদা। জগ্নিহোত্রৎ হুতং তেন দ্তা পৃথী সসাগরা। যেনার্চিতোহরি শংক্রে শালগুমিশিলোদ্ভবে । কামেঃ ক্রেপিঃ প্রলোভৈশ্চ ব্যাপ্তোযোহত নরাধ্যঃ সোপি যাতি হরেক্লেকিৎ শালগামশিলার্চনাৎ। যঃপূজ্য়ভিগোবিন্দ। শালগ্রামে নদা নরঃ। আভূতসংগ্রৎ যাবৎ ন স প্রচ্যবতে-

আচূতঃ কালগত্যা জীবকর্মাভিবন আকারিতইব যঃ সংপ্রবঃ প্রবায়ঃ। যদ্ধা যজ্জভাগার্থং মক্ত্রৈরাভূতা যে দেবাদয়স্তেযাং সংপ্রবোনাম নাশঃ তং পর্যান্তং। যদ্ধা। ভকারস্থানে হকারঃ ছান্দ্রাঃ। সর্ব্রভূতসংপ্রবপর্যান্তমিতার্থঃ। দিবঃ উর্দ্ধানে হৈ বৈকুঠগক্ষণাৎ। ক্রমগত্যপে

চক্রং চক্রস্য নাভিমধ্যভাগ ইত্যর্থং। তারং প্রণবন্ধপং উর্দ্ধমুখস্থাৎ মাহাম্যাদ্বা। যদ্বা ভারয়ভীতি তথা তং। উপর্যাধশ্চ চক্রে দ্বে ইত্যেবং তত্তিব পূর্ব্ব কথিতৈ দামোদরলক্ষণেযুক্তং। বারাহং বিজ্ঞানীয়াদিতি পূর্ব্বক্রিয়ইয়ব সয়লঃ। এবমগ্রেপি কৃচিৎ। না বজুকীটোদ্ভবা রেখাময়ী
পছ্কিশ্চকাকারেণ বিনিষ্টা যত্র ভবেৎ। তং দুর্ববাভং দ্বারি সঙ্কীণং চ বিজ্ঞানীয়াৎ। শাল
গ্রামসমূদ্ভবং লিঙ্গং চিহ্লং চক্রমিত্যর্থঃ শিখরে যস্যোপরি দৃশ্যতে। হিরগ্যাধ্যং হিরণ্যগর্ভাধ্যং
বিনির্দ্দিশেং। পাঠান্তরং হুগমং। যত্র যস্যাং সা শালগ্রামশিলা।। ১৯৩॥ এবং নামভেদেন বাস্ত্র
দেবাদ্যা লক্ষ্মীনারয়ণান্তাঃ পঞ্চত্রিং শক্তেদাঃ। তত্রাপি কেষাঞ্চিল্লক্ষণভেদেন প্রত্যেকং বহুধা
ভেদোজেয়ঃ।। ১৯৪॥ শুভাঃপ্রশস্তাঃ স্থাঃ॥ ১৯৫॥

पितः 11 5% ७ 11 विना कोहेर्य किना महिन किना गरेक किना मणिए । सुकि पाछि मरता रेवामा भागाताम निकार्माताच ॥ ३३१॥ मत्रकः वर्षनामक विवासिक क्रिया यानिजार । न वाकि देवणा भारताशि भारतभारतरहू कार्ककः ॥ 53 mil कीका-বিধানমন্তক্ত তেওঁ লোবলিমাহরে । ন বাজি বৈশ্বং ধান নতাং নতাং ময়ো-विच । देनरवरेमार्किविरेशः भूडेणार्ष्ट्रभारिभिक्तिमारेनः । भीखवानिकरकाजारेमः শালগাম শিলাক नर १ तुकुरेक मामरबायक करनी किनाइ मनः। कल्मरकारित्र ह-मुनि तमा मित्री हातः । शिक्ष काणि छ किर्य कार मुक्तिक देः। मानशायमिनाग्राह अरकमाशीइ उरक्तर । भानशायमिनाक्षणी यज िर्वेड কেশবং ৷ তত্র দেবাসুরাযকাভুবনানি চন্তদ ল। শালগ্রাদলিলায়ান্ত যং আছে ৷ কুরুতে নরঃ। পিতরত্ত্ব্য ভিঠতি ভূপ্তাঃ কণ্পন্দতং দিবি।। ১৯৯।। শালপ্রানশিলা হত্র **७ डोर्थः यासमळ ग्रः ६ ७ ज मानः सरमारशयः मर्सः रक्षां** विस्तृ । ज्ञानश्चाम नमीर्शिष्ठ ज्ञानमाबर ममञ्जः। कीक्टब्रांशि मृत्वायावि रैवक्थेकूवमर मदः॥२००॥ শালগ্রামশিলাচকং যোদদ্যাদানমূভদং। ভূচকাতেন দভৎস্যাৎসলৈবন कानन । कात्य कार्डिक गहारचा अनिवक्क प्रशास । मानशामनिनाय सु किलाका १ महताहत । यशा मह सहारमननीम १ डिकेडि मर्समा ११ २०५ ॥ प्रकी প্রণমিতা যেন সাপিতা পূজিতা তথা। হজকোটিসমৎ পুণ্যৎ গৰাৎ কোটিকলং ভবৈং। কামাসক্তোপি যোনিত্যং ভক্তিভাববিৰক্তিতিঃ। শালগ্ৰামশিলাং বিপ্ৰ সংপুজ্যৈবাচ্ তোভবেৎ।। ২০২ ।। শালগ্রামশিলাবিষ্বৎ হুত্যাকোটিবিনাশনৎ। শৃতং সভীর্ত্তনং ধ্যাতং পৃত্তিতঞ নমস্তং। শালগ্রামশিলাৎ দৃষ্ট্য যাতি পাপান,নেকশঃ। निংহৎ দৃষ্ট্রা যথা যান্তি বনে মৃগগণা ভয়াৎ। নমস্করেণতি মন্তঃ শালগ্রামশিলার্জনে । পাপানি বিলয়ৎ যান্তি তমঃ সর্যোদয়ে হথ। ॥२००॥ कामामाखारथया जूका मामशामामामानः । खळा वा यि वार-ভক্তা ক্ষা মুক্তিমবাপ্ল্যাৎ ৷ বৈবস্বতং ভরৎনান্দি তথা মরণজ্ঞালোঃ ৷ यः कथाः कूक्रां विरक्षाः नानगुमिनागुनः । भीरेजवारिमः स्था स्वारेजः नान-ग्रामिनार्कनः । क्रूंब्रास्त मानवायस करनो छक्तिश्वायमः । कण्यकारिमञ्जानि

ক্রা বর্গাদের বা।। ১৯৬ । মতিং জ্ঞানং ॥ ১৯৭ ॥ হে বৈশ্য জাত্যা কর্মণ। চ সর্কাং পাপেছেপি ॥ ১৯৮ ॥ বলিং পুজাং উপহারর। ধাম গৃহং শ্রীবৈক্ঠলোক্মিত্রগাঁ । ১৯৯ নর হে বৈশ্য । মরইতি প্রথমান্তপাঠো বা । কীকটোপীতি কীকটদেশোত্তবঃ অগাদ পীত্যর্থায়। ২০০ ॥ মহাসেন হে কার্ত্তিকের ॥ ২০১ ॥ ভক্তির্বিশাদলকণা ভাবঃ প্রেমা তাত্য বিবজ্জিতাপি। অচ্যুতইব ভবেৎ সান্ধপাঞ্জাগ্যা ॥ ২০২ ॥ বান্তি অপ্যান্তি ॥ ২০০ ৷ মবা

त्रमञ्ज विक्षुमधनि ॥ २०८ ॥ जानगुरममञ्जादम् । उत्तर कृष्ट । उत्तर टेनद कतियां हि महाद्वा दश्र मता जूरि । महाकिक्नामिकामध्यपूर म नवहि ए। বাসুদেবৎ ন তে জেয়া সম্ভক্তাঃ পাপনোহি তে া শালপ্রামশিশায়ান্ত নদা পুত্র वनागाइर । मुद्ध (मध्वन इस्टिन घष्टान गम उक्ति छ। । शवाकां किन्दरेन्छ श्रीकर छ ময়ি যৎক্লং া ভ্ৰেফলং কোটিগুণিতং শালগুমেশিলার্চনে । পুজিতোহং ন रेडमेर्डिंग बिद्धार्थ म रेडमेर्डिंग ान इंडर मर्ड लाइन रेया भानग्राम निर्माण कि नर । শালগুমিলিলাগু ও যং কয়েতি নমার্চনং। তেমান্তিতোহং সভতং মুগানামেক-म खब्रिः । किमिक्रिकिक्निर्णिक्षिक् चित्रिक्षिक्षिक्षिः । जीवार्ग्यानीवारिष्यः । ना क्रिकि शिव भूवक । अन्दर्भम देन दिना १ श्रावर भू व्यार सन्दर्भ माना भू व শিলালগ্रং সর্বাহ পবিত্রতাং । যোহি মাহেশবোভূদ্বা বৈক্ষণ লিজমুভ্তমং। व्यक्ति रेक्यों कि नवक याविष्णु कि छ प्रमा। महत्त्र भारति विद्य भारती मिला-इत । मुक्तिः अयोष्टि मनुष्मा नृनः मारश्याम विक्विषाः । मिलिकाः काणि जिन् विष যং ফ্লং পূ জিতৈঃ স্ত তৈঃ। শালগু।মশিলায়াত একেনাপি হি তত্তৰেং। তথাত্তি গ **ठ मह्यदेखः श्रीकार्य मम भूजक**ा कर्डमा निष्ठ । एका नामश्रीमिनाक नः। শালগু। শূলাৰপা যত ভিষ্ঠতি কেশবং । তত্ত দেবাংসুৱাযক। ছুবনানি চত্-र्मन ।। २०৫ ।। भानशुप्रभिनाशु जु महर्शिएन छर्शिछ। छवेछि शिछत স্থান সংখ্যা তত্র বিদ্যতে ।। ১০৬ ।। প্রমাণমন্তি সর্বাদ্য স্কৃতস্য হি পুত্রক। क्लः अमानश्चित्र भानगुमिनिकार्कान । याममाजि निना विस्थाः भानगुमम् ह्मता । विश्वाप विक्षं छकाप कार्मे वह जिस्रिश । मान्या मुझं जा लाक শালগুলিমান্ত্র শিলা। প্রাপ্ততে ন বিনা পূল্যে কলিকালে বিশেষতঃ। म १न, श्रुक्रासाला (क मक्न : उमा को विष्ः। भानशामिना स्का भृष्ट यमा চ পृक्षित्र। मश्नियरमा जिल्लाकाम भाजशामिलार्कन । यः कूर्यामानरवा ভক্ত। পুष्ण भूष्ण भ्यामधाक् । काल वा यिनवारकाल मान्यामिनार्फन । ভক্ত । वा यमिवा २ छक्त यः करता कि म भूग छाक् । खरमगि । स्वार्कन मर अन क्षरहेन वा। भानशास्त्राकुवः प्रवेश मृख्या भाभाः अमूहारह। अक्षरिका मुता-চারং মত্যশৌচবিবজ্জিতঃ। শালগ্রামশিলাৎ স্পৃষ্ট্য সদ্প্রব শুটিভবিৎ। তিল-প্রস্থাত ভক্তা যোদদাতি দিনে দিনে। তৎফলৎ সম্বাপ্রোতি শালগ্রামশিলা-চ্চনে। পত্রং পুত্পং ফলং মূলংতোয়ং দুর্বাক্ষতং সুত। জায়তে মেরুণা তল। শালগ্রামশিলাপিতং ॥ ২০৭ ।। বিধিহীনোপি যং কুর্য্যাৎ ক্রিয়ামন্তবিবঞ্জিতঃ ।

জনানোঃ তাভ্যামপি ভরং নান্তি॥ ২:৪॥ অভাবেন ভাবরাহিত্যেনাপি। মন্তুজাইতি পাঠে নরা সহ ক্ষভেদাপরাধতোভরং নৈব করিষ্যন্তীভার্থঃ। যদ্ধা মৎ মন্তঃ সংহারকাদপি ভক্তাঃ ক্ষভক্তাঃ॥ ২০৫॥ যেন সক্ষদি তপিতাঃ তস্য পিত্রোযাবৎকালং তপিতাভবন্তি তস্য সংখ্যা নাজীত্যর্থঃ। বসন্থীতি পাঠে স্বর্গাদাবিতি শেষঃ॥ ২০৬॥ প্রমাণং ইয়ন্তাং॥ ২০৭॥

हजार्भुवां बचार्भाष्ठि " नमाक् "भाष्ट्राविष्ठ " यग्र ॥ २०४ ॥ व्रहेतवि" हानाज । ক্ষলে কলা তু বোষ্ণালৰ বহুতে <del>লৈলনায়</del>কও। তেনোচন্ত ভবে**ৎ দৰ্ম**ই তৈলোক ং नहत्राहत् । जन्म छारिकः भाभः यशकिष्ट कूक्टछ भन्नः। छरमर्सः मिर्मः रुशांख भागशांमभिनार्कनः। न भूकनः न महांक न करणान हारना। न सकि-র্নোপচারল শালগ্রামশিলার্জনে । শালগ্রামশিলা বত্র ভতীর্থ ব্যেক্ষতরং। তত্ত্ব मानक हामक नर्सर कोडिलने कर्दर । भागगुमिनिनामी व व बाक कुकर छ नद्रश्न शिक्य सम् जिके कि क्थाः कल्लमकः मिति। मामसुग्रममीरणक् क्वाममाजः नमस्यः। कीकटप्रेशिम्दशायां कि देशकुर्वज्ञान नवः। शास्त्र । भागशुप्रभिना-ठळेर त्यानम्भोक्तानमुख्यर । जुठकर एवन मखरमार मरेमनवनकाननर ॥ २००॥ গর্ডপুরাবে। তিঠিন্তি নিত্যং পিতরোমনুষ্যান্তীর্থানি গলাদিকপুকরানি। হজাক भि श्वादेशका कार्डिक विश्व कार्डिक विश्व कार्डिक गशिरवारी वियमधून्दकनमञ्चारत।। भानभूतिभिनात्राख रेयन देवः भूकि छ। इतिः। निक्षा र ज्यार भीनामि युक्त य वृक्तिला ज्या । कार्किक मधुवायां स्व मार्किन पिमारक इति । भामगुमिमायार देव भिकृत्मिमा शृक्षिकः । इत्यः ममुकादक्षमा পিতৃনেভান स्लाक्छा । वृश्वात मीरत ह यळ धुरका भाषानास्त । जानग्री मिला-ৰশী যত্ৰ ভিষ্ঠতি কেশবঃ। ন বাধন্তেহসুৱাশ্ত ভূতবেভালকাদয়ঃ। শালগুমিশিলা ষর্ত তত্তীর্থন ভত্তপোৰনং । যতঃ সন্নিহিতত্ত্ত ভগব অধুসূদনঃ ইতি ।। ২০১ ।। শালগু।মশিলান্তাশ্চ বদি দ্বাদশ পূজিভাঃ। শতং বা পূজিভং ভক্ত্যা তদা স্যাদধিকং कन्तरी। अथ वाङ्राज जानारकनविरम्यः। शाल्य याच्या शाल्य (प्रवृज्विक अन-সন্থানে। শিলা দ্বাদশ ভো বৈশ্য শালগুমসমৃদ্ধবাঃ । বিধিবংপুজিতা যেন তস্য পুণ : বদামি তে। কোটিয়াদশলিকৈন্ত পূজিতেঃ ন্ত্ৰিকাইজঃ । যৎস্যাদ্যদশ-কল্পৈল্ল দিনেনৈকেন ভদ্তবেৎ। যঃপুনঃ পুজ্য়েদ্ভক্ত্যা শালগুমিশিলাশত । উষিত্বাস হরের্লোকে চক্রবর্তী হি জায়তে।। ২১২।। ফ্রান্দে কার্ত্তিকমাহাত্ম্যে জীলিবক্ষদসম্বাদে। দ্বাদলৈব লিলা যোবৈ শানগুৰ্বসমুদ্ধবাঃ । অৰ্চয়েদৈকবো-নিভাৎ ভসা পুণাং বদামিতে । কোটিলিজসহসৈত্ত পুঞ্চিতৈ জান্ধবিতটো কাশী-

চক্রং শ্রীশালপ্রামশিলারপং তসা পূজাং য় কুর্যাৎ ॥২০৮॥ অধানংব্যাপ্য পথীত্যর্থং। শৈলনায়কং শ্রীশালপ্রামশিলামিত্যর্থং॥২০৯॥ যক্র যিনিন্দ্রেছ চক্রান্ধিতাঃ শ্রীশালপ্রামশিলা
বসন্তি তক্র পিক্রাদ্রোনিত্যং ভিষ্ঠিত্ত। তক্র যজ্ঞাং বিবিধপূজাঃ মেধাং হিংসালক্ষণা অশ্বমেধাদয়ং । যজ্ঞাশ্বেতি পাঠে অশ্বমেধযজ্ঞাইত্যর্থঃ যদা যজ্ঞেহশ্বানাং মেধাহিংলা অর্থস্তি
স্কর্ব। ২১০॥ তক্র কার্তিকমানে তক্রাপি শ্রীমধুরায়াং বিশেষমাই কার্তিকেতি॥২১১॥ স্বর্ণপক্ষকৈঃ কৃত্ব। পুজিতেঃ সন্তিঃ পুজিতেছিত্যর্থঃ যুৎকলংল্যাৎ। ইহলোকে চক্রবর্ত্তী সন্ জায়তে
জ্বজনবন্তবিভ্রারণার্থমাহান্ব্যাক্ষা বিশেষেণ্ডি জেরং॥ ২১২॥ স্বান্ধ্রী তটে কোটিলিস্থ-

वारम यूगानाको मितिस्ट कन उद्धार्व ।। २७०॥ किश्मून संश्रायण मृद्धारप्रयम-

অথ তৎক্রমবিক্রমনিষেধঃ। তত্তিব। শালগুমিশিলায়াং যোমুল্যমুদ্ঘাটয়েমরঃ। বিক্রেডাচানুমন্তা চ যঃ পরীক্ষামুদীরয়েৎ। সর্ক্রেতে নরকৎ যান্তি যাবদাভূতসংপুরেছ। অভঃ সংব্রক্ত য়েদ্বিপ্র চক্রসঃ ক্রেমবিক্রয়ৎ।

অথ প্রতিষ্ঠানিবেধঃ। তত্তিব। শালগুমিশিলায়ান্ত প্রতিষ্ঠা নৈব বিদ্যতে।
মহাপূজান্ত ক্লডাদৌ পূজ্বয়েন্তাৎ ততোবুধইতি ।।২১৫।। অভোহধিষ্ঠানবর্গের্
সূর্য্যাদিবিব মূর্ত্তিষু। শালগুমিশিলৈব স্যাদধিষ্ঠানোত্তমং হয়েঃ।

অবস্থাধিতান্তৈতি । পাত্মে তত্তিব। ছদি সূর্য্যেকলে বাথ প্রতিমান্থতিলে বুচা সমভ্যক্ত । হরিৎ যান্তি নরান্তে বৈক্ষবং পদৎ ।। ২১৬ ।। অথবা সর্বাদা পূজ্যে বাসুদেবো মুমুকুভিঃ। শালগামশিলাচক্রে বজুকটিবিনির্মিতে। অধিতানং হি ৩২ বিক্ষোঃ সর্বপাপপ্রণাশনং । সর্বাপাপ্রেদং । স্কা চ বিহিতা তস্য প্রতিমায়াং তত্তিব কার্তিকমাহাল্যেয়মধু মুকেশসম্বাদে । পূজা চ বিহিতা তস্য প্রতিমায়াং নৃপাত্মক্ষা হালাহা লোহা লোহা লোহা চ শৈক্তা । মনোময়া মনিময়া জীমুত্তিরক্তথা শৃতা । শালগামশিলায়ান্ত সাক্ষাং জীক্ষমেবনং । নিত্যং সমিহিত্তত বাসুদেবো জগলাক্ষা । ২১৮ ।। ক্ষান্দে কার্তিকমাহাত্মে জীশিবক্ষদ সম্বাদে। সুবর্ণালা ন রত্বালা ন শিলার্চা সুরোত্তম । শালগামশিলায়ান্ত সর্বাদ বসতে হরিং ।। ২১৯ ।। অতত্রবোক্তৎ । হত্যাং হন্তি যদন্ত্বিক্ষাধানমতিঃ বিত্তমদ্যপানদ্বিতং গুর্বাকান ক্ষান্ত । জীশাধানমতিঃ বিত্তি হরিজনৈঃ স্বংসক্ষাং কিল্বিৎ শালগামশিলা ন্সিংহ্মহিমা কোপ্যেষ লোকো-

সহদৈঃ পুজিতৈর্ঘণ্টলং। যুগান্যফৌ ব্যাপ্য কাশীবাসে চ যৎকলং তৎ।। ২১৩॥ বছবং বহনীঃ স্থবছরিতি কৃচিৎ পাঠঃ। পুণ্যতঃ পুণ্যে বিষয়ে সংখ্যাং ন কুর্বন্ধি কর্ত্তুং ন শকু বন্ধীতার্থঃ। যদা পুণ্যতাহেতোঃ সংখ্যাং ন কুর্বন্ধি। অসংখ্যায়দ্য সংখ্যাকরণাপরাধেন পুণ্যক্ষাপত্তেরি-ভার্যঃ। ২১৪॥

যশ্চ অস্থ্যসূত্র সূল্য বশ্বতিকর্ত। । যশ্চ তাং পরীক্ষ্য গুণলোঘাদিকং বিচায্য তমুল্য সমু-মোনষ্ট্রেং॥ পাঠান্তরে মূল্যার্থং পরীক্ষা ক্রিয়তামি হ্যুচ্চার্থেদিপি যং। যদ্বা বিচারেণ গুণদোঘা দিকমপি যোবদেদিত্যর্থং॥ ২২৫॥ মূর্ন্তিবু প্রতিক্রতিদ্বিসি ।। ২২৬॥

অথবেতি পূর্বাপরিতোষে। স্বাদাপু জারে ছেন্টু অধিষ্ঠানং হীতি॥২১৭॥ ওশকঃ পূর্বতো বৈশিষ্ট্যে। তদেবাহ। সাক্ষাদিতি॥২১৮॥ স্থবর্ণা অর্চা প্রতিমা তদাদিয়ু হরিঃ সর্বাদা ন বসতী-তার্থঃ। যথা ন হরেঃ প্রিয়েতি শেষঃ॥২১৯॥ পাদতোরং শ্রীচরণোদকং এশঃ শালগ্রামশিলাকপ এব ভগবান্ তদধীনমতিঃ তৎসার্থমিতার্থঃ। হরিশ্চ শালগ্রামশিলাক্সকএব তদা জানৈঃ দেবকৈঃ ত্তরঃ ॥ ২২০।। শালগুমিশিলারপভগবনহিমাযুগেঃ। উন্নির্ন গণরিত্ত৭ শক্যঃ জ্ঞীতি চন্যাথিতো হপি কঃ॥ ২২১॥

তথ শালগ্রামশিলাপূজানিত তা পাছে। শালগ্রামশিলাপূজাং বিনা যোহশুতি কিঞ্বন । ন চাণ্ডালাদিবিভারামাকপথ জায়তে ক্ষিঃ। ক্ষান্দে চ । গৌরবাচলশৃক্টপুর্তিন তে তস্য বৈ তনুং। ন মতির্জায়তে যস্য শালগ্রামশিলার্জন
টিত ।। ১২২ ।। এবং জাভগবান্ সবৈরুং শালগ্রামশিলাত্মকঃ। দ্বিজাঃ ক্রাভিশ্চ
শূলিশ্চ পূজ্যোভগবতঃ পরৈঃ ।।২২৩ ।। তথা ক্ষান্দে জীব্রহ্মনার্দ্দহাদে চাত্ন
ঘান্ত তে শালগ্রামশিলার্ভাপ্রিমসে । তাল্মকাত্রাবিশাং নজ্যাল্মথাপি ব ।
বালগ্রামেই নিকারোইছি নিচান্যেম কদানে। তত্রিবানাত্র । স্ত্রিয়োবা যদিবা
শ্রাম্বাজ্বাঃ ক্রিয়াদ্যঃ। পূজ্যিয়া শিলাচ্ত্রং লভন্তে শাস্তং পদ্মিতি। তত্বে
নিবেষকং যালগ্রাই জারতে ক্রাইং । অবৈক্ষবগরং তত্ত্বিজ্ঞেং ভন্তুদ্র্লিভিঃ ।
যথা । ক্রাহ্রাইনার পূজা হিং ওচেরপাশ্রেরপি । ক্রিশুদ্রকরসংস্পর্জেবিজ্ঞাদ্রিণ

লহ স্থিতি। । ২২০ । উনিরিতি সল্জতরক্ষণণং মাহাল্য পরা ইতার্থা শ্রীপুক্ত চৈতন্যং স্থাক্ত-্বাদিবাং তেনাশ্রিতোপি । স্বমতে জিটেতন্যদেনমাগ্রিতঃ প্রমশ্রিকস্তাং প্রাপৌন্ধি । যথোম্য কেনাপি ন গ্রমিড' শকান্তেতত্বং অনন্তম্বালিতি ভাবং॥ ২২১ ।

ৌ্রবং গরিমা ভাষাজ্ঞস্যাচলস্য যথা গৌরবেশ অচশং খিরং যক্তমং অর্থাৎ পরেত এব লস্য বৈথঃ। পাঠান্তরং ক্রমং। ভিদাতে বিদার্থাতে যদ্ধা শৃঙ্গাত্রেভ্যোনিপাতা চুীক্রিছ ইতার্থ ।। ১২২।। এবং লিগিতপ্রকারেণ শাল্**রামশিলাত্মকঃ তৎস্বরূপঃ জ্রিভগ্না**মেরেতি তুদ্ধ জনে মার্থিকাম্বিকারোইভিপ্রেতঃ। তদেবাভিব্যঞ্রতি স্কৈদিজিজাদিভিজ নিঃ সম্যক্ পুরুত ইতি। তার দিটেরারতি ত্রিবর্টেণব্রিপ্রকাত্রিয়বৈশ্যেরিত্যর্থঃ। নসু ত্রাহ্মণবৈদ্যব পুজ্যোহং শুচেরগা শ্বনের পি । জ্রীপুরক্রসং স্পর্যোকজ্বাত্যমে মমেতি । শালগ্রামশিলাপ্রমঙ্গে জ্রীভব্রচনে ন স্ত্রীশুদ্রাণাং তৎপুজা নিবিধাতে। তত্র লিখতি ভগবতং পরেরিতি। হথাদিধি দীক্ষাং গুটাছ: তগৰৎপূজাপারঃ সন্ভিরিতার্থঃ॥২২৩॥ তদেৰ শ্রীনাবদোক্ত্যা প্রমাণয়তি ব্রাহ্মণেতি। সতঃ বৈশ্বানাং শুদ্রাণাং শাল্পামে শ্রীশাল্পামশিলার্চতে । অন্যেষামসতাং শূদ্রাণাং । অতএব শূদ্রমহিক্তোক্তিং বার্প্রাণে। অবাচকঃ প্রদাতা স্যাৎ ক্ষিংবৃত্তার্থমাচরেও। পুরাণং শুলু য়ানিতাং শাল্রামঞ্ পূজ্যেদিত্ব । এবং মহাপুরাণানাং বচলেঃ সহ ব্রাহ্মণলৈয়ব পুছেল ই-মিতি বচনস্য বিরোধান্তাৎসর্য্যপরে: স্মার্কিঃ কৈন্দিৎ কন্পিতমিতি সন্তব্যং । যদিচ যুক্ত। সিদ্ধং সমূলং স্যাত্তর্হি চাবৈষ্ট্রে: শূদ্রেন্তাদৃশীভিক্ষ স্ত্রীভিন্তৎপূজা ন কর্ত্তবা ফথাবিধি গৃহীত বিষ্ণুদীক্ষাকৈশ্চ তৈঃ কর্ত্তব্যতি ব্যবস্থাপনীয়ং। যতঃ শুদ্রেমন্ত্যম্পেম্পি যে বৈষ্ণবাস্তে শূদ্রা-भरता न किल्लागुरुष । एथान नात्रनीत्त । श्वलरुष्टि महीलाल विरक्षार्च :काविकाधिकः ইভि । ইতিহাসসমুচ্চয়ে। শূদ্রখা ভগবস্তক্তং নিষাদং শ্বপচংতথা । বীক্ষতে জাতিসামান্যাৎ স্ব:তি নারকং ধ্রুবমিতি। পাত্মে চ। নাশুদ্রাভগন্তকাত্তে তু ভাগবতানরাঃ। মর্ব্বর্ণেষু তে শুদ্রা যে ন **ভক্তা**জনাৰ্দ্দনেইতি । এতদাদিকং চাগ্ৰে বৈষ্ণবমাহাজ্যে বিস্তরেণ ব্যক্তং ভাবি। কিঞ্চ ভণাই সুদু:সহঃ। প্রণকেরণাকৈব শালগ্রার্যশিলার্কনাৎ। ব্রাহ্মণীগ্রনাচিত্র শুদ্রকান ভালতানিয়াৎ। ২২৪। সন্ধার্য্যা বৈক্ষবৈর্যত্মভালগ্রামশিলাসুবং । সা চার্চ্যা ভারকান্তান্ধিভোপেতির সর্বদা ।

অথশালপ্রামশিলাশীদ্বারকাচক্রাক্ষশিলাসংযোগমাহাত্ম্য ব্রাক্ষে ভাতের। শালপ্রামোদ্ধবাদেবোদ্ধবারবভীভবঃ ৷ উভয়োঃসঙ্গমোয়ত মুক্তিতত ম

দ্দীক্ষাপ্রভাবেণ শূড়াদীনামপি বিপ্রসাম্যৎ দিন্ধমের। তথাচ তত্র যথাকাঞ্চনতাং যাতীত্যাদি। এতচ্চ প্রাগ্দীক্ষামাহাত্ম্যে লিখিতমেব । অতএব ভৃতীয়ঙ্গক্ষে দেবহূতিবাক্যং । যদামধ্যেশ্রব-ণানুকীর্ত্তনাদ্যৎপ্রস্থাদাপ কৃচিৎ। খাদোপি দদ্যঃ সবনায় কপেতে কৃতঃ পুনস্তে ভগবন্নদর্শনাৎ। ইতি। সবনায় যজনায় কম্পতে যোগোভবতীত্যর্থঃ। অতএব বিত্রৈঃসহ বৈঞ্-বানামেকত্রৈর গণনা। তথাচ হরিভক্তিস্থধোদয়ে জ্রভগবদ্ধ ক্ষমঘাদে। তীর্থান্যশ্বপতরবোগাবো বিপ্রান্তথা স্বয়ং। মন্তক্তাশ্চেতি বিজ্ঞো: পর্কিতে তনবোমমেতি। চত্তর্বস্কলে এপৃথুমহারাজ বৰ্ণনে । সৰ্ব্বতাশ্বলিতাদেশঃ সপ্তদ্বীপৈকদগুধ্ক্। অন্যত্ৰ ব্ৰাহ্মণকুলাদন্যতাচ্যুতগোৰত ইতি। অচ্যুতো গোত্রং প্রবর্ত্তকত্বাং যেষাং বৈষ্ণবানাং তেভোছনাত্র চেতার্থঃ। তথা তমহা-রাজস্যোক্তো। মাজান্ত তেজঃ প্রভবেম্বর্ছিভিন্তিতিক্ষয়া তপদা বিদ্যয়া চ। দেদীপামানে২জিত-দেৰতানাং কুলে স্বয়ং রাজকুলান্দিজানামিতি। অত্ত স্বামিপাদ।নাংটীকা। মহত্যশ্চ তা ঋদ্ধয়শ্চ তাভিৰ্যন্তাজকুলস্য তেজস্তৎ তস্মাৎ সকাশান্দিজানাগুৰিপ্ৰাণাং কুলে অজিতোদেবতাপুজ্যোযেষাং বৈক্ষবানাং তেষাঞ্চ কুলে মাজাও প্রভবেৎ কদাচিদপি প্রভবংন করোও। কথ্যুতে সমৃদ্ধি-ভিব্বিনাপি স্থয়মেব তিতিকাদিভিদেদীপ্যমানইতি পুরঞ্জনোক্তৌ চ। তদ্মিন দধে দমমহং তব বীরপত্নি যোহন্যত্র ভূম্বরকুলাৎ কৃত্কিলিষত্তে। পশ্যে ন বীতভয়মুমুদিতং ত্রিলোক্যামন্যত্র বৈ মুররিপোরিতরত্ত দাসাদিতি। তত্তাপি সৈব টীকা। হে বীরপত্নি ইত্তে ক্রভাপরাধঃ ভস্মিল্ল 🕫 ত্রাক্ষণকুলাদন্যত্র অন্যান্মন্ মুররিপুদাসাদিতরত্র চ দমং দধে দণ্ডং করোমীত্যাদি। ঈদৃশানিচ ৰচনানি জ্ঞীভাগৰভালে বহুনােৰ সন্তি। ইত্থং বৈক্ষবানাং ব্ৰাক্ষণৈঃ সহ সাম্যমেৰ সিদ্ধাতি। কিঞ্চ বিপ্রান্থিক গুণ্মুতাদিত্যাদিব চলৈর বৈষ্ণবত্তা লাল্ডিলা ভালানাপি বৈষ্ণবানাং বৈশ্রন্থ নির্দ্দিশ্যতেতরাং। অতথবোক্তং জীভগবতা জীহয়গ্রীবেণ হয়শীর্ষপঞ্চরাত্রে পুরুষোত্তম-প্রতিষ্ঠান্তে। মূর্ছিপানান্ত দাতব্যা দেশিকার্দ্ধেন দক্ষিণা । তদর্ধং বৈফ্রানান্ত তদর্ধং তদ্ধিজ-অনামিতি। অতোযুক্তমেব লিখিতং সবৈধর্তগবৎপরেঃ সংপূজা ইতি। তথাচ ত্রন্ধবৈবর্ত্তে পিয়ত্রতোপথ্যানে ধর্মব্যাধস্যাপি শ্রীশালগ্রামশিলাপুক্ষনমুক্তং। ততঃ সবিক্ষিতঃ শ্রুত্বা ধর্ম-कार्यमा जन्नहः । उट्हो मह ममानीत्र मर्भग्नामाम जातूर्यो । निर्निक्यमानो वृक्तायामनास्थे निष्को গুৰু। শালগ্ৰামশিলাঞ্চৈব তৎসমীপে স্থপুজিতামিতি। অত্যাচারক সতাং মধ্যদেশেখস্মিন্বিশে-যতোদক্ষিণদেশেচ মহন্তমানাং ঐতিৰফবানাংপ্ৰমাণমিতি দিক্। এবং ঐভাগবভপাঠাদাবপাধি-কারোবৈষ্ণবানাং দ্রুষ্টব্যঃ। যতোবিধিনিষেধা ভগবদ্ধক্তানাংনভবন্তীতি দেবর্ষিভূতাপ্তনুণাংপিতৃণা মিত্যাদিবচনৈঃ। তথা কর্মপরিত্যাগাদিনাপি ন কন্চিদোষোঘটতইতি ভাবৎকর্মাণি কুর্বীভেডি यमा यगाञ्ज्राक जगवानिज्ञामिवहरेमक वांकः ताथिष्ठत्मवान्ति । अव मर्वमाध औरवस्त्र-बाहारका विखरतम वाङ्गः जावि॥ ३२४॥ अञ्चर्धानवश्यकारमः भार्या। वर्षा श्रवाहित्या।।

সংখ্যা । জালেজীব্র জ্ঞার দসম্বাদে । চক্রাকিতা শিলা যক্র শলগুনিশিলাগুতঃ। তিঠতে মুনিশাদুল বর্দ্ধতে তক্র সম্পদঃ । ডকৈবান্যক্র । প্রত্যক্রদাদশ শিলাঃ শালগুন্মস্য যোক্তয়েৎ। দ্বারবত্যাঃ শিলাযুক্তাঃ স বৈকুঠে মহীয়তে ।। ২২৫ ।।

অথশীদারকাচক্রাক্ষলকণানি। শীপ্রজ্ঞাদসংহিতায়াং। একঃ সুদর্শনোদাভ্যাংলক্ষ্মীনারায়ণঃ শৃতঃ। ত্রিভিক্রিবিক্রমোনাম চন্তর্ভিশ্চ জনার্দ্দনঃ। পঞ্চির্বাসুদেবস্ত বড্ভিঃ প্রদুর্মুউচ্যতে। সপ্রভির্বাসদেবস্ত অইভিঃপুরুষোভ্রমঃ।। ২২৬।।
নবভিশ্চনবব্যহোদশভির্নশন্তিকঃ। একাদশৈশানিরার্দ্ধা দাশান্তরঃ।
অন্যেষু বহুচক্রেষু অনন্তঃ পরিকীর্তিতঃ।। ২২৭।।

অথ দ্বাদশটক্রাক্ষমাহান্ত্যং । বারাহে । যে কেচিচ্চৈর পাষাণা বিষ্ণুচক্রেণ
মুদ্রিতাঃ ৷ তেষাং স্পর্শনমাত্রেণ মুচ্যুক্ত সর্ব্ধপাতকৈঃ ৷ গারুড়ে ৷ সুদর্শনাদ্যান্ত
শিলাঃ পূজিতাঃ সর্ব্ধকামদাং ৷ ক্রান্দে চ ৷ ভক্ত্যা বা যদিবাছভক্ত্যা চক্রাক্ষং পূজ্বেরমরঃ ৷ অপি চেৎ সুদুরাচারোমুচ্যুক্ত নাত্র সংশয়ঃ ৷ দ্বারকামাহান্ত্যে চ দ্বারকাগতানাং শ্রীক্রন্ধানীনামুক্তৌ ৷ এতদৈ চক্রতীর্থস্ক যচ্ছিলা চক্রচিক্লিতা ৷ মুক্তিদা
পাপিনাৎ লোকে ম্লেড্দেশেইপি পূজিতা ৷

অথ তেখেব চক্রভেদেন ফলভেদঃ । কপিলপঞ্চরাত্রে । একচক্রস্থ পাষালো দ্বারবত্যাঃ সুশোভনঃ । সুদর্শনাভিধোযোসো মোক্ষৈকফলদায়কঃ। লক্ষ্মীনারা-য়ণোদ্বাভ্যাং ভ্রিন্ধু ক্রিফলপ্রদঃ । এভিশ্চাচু ্তকপোহসৌ ফলমৈন্তুং প্রথচ্ছতি । চতুর্জ্বন্দত্তশক্তক্র্রেক্তিমলপ্রদঃ । পঞ্চির্বাসুদেবশ্চ জন্মনৃত্যুভয়াপহঃ । ষড্ভিঃ প্রদুন্ধু ব্রবাসৌ লক্ষ্মীং কান্তিং দদাতি সঃ । সপ্তাভির্বলভদ্যোসৌ গোত্রকীর্তিবিব-দ্বনঃ । দদাতি বাঞ্চিতৎ সর্বাম্টভিঃ পুরুষোত্তমঃ । নবচক্রোন্দেংইস্ত ফলং মচ্ছ-ভানুত্তমং । রাজ্যপ্রদোদশভিস্ত দশাবভারকঃ মৃতঃ । একাদশভিরেশ্চর্যাম্নিরুদ্ধঃ প্রবচ্ছতি । নির্বাণং দ্বাদশাত্মাসৌ সৌখ্যদশ্চ সুপূক্ষিতঃ ।

অথ বর্ণাদিভেদেন দোবগুণাং পূজ্যত্বাপূজ্যত্ব চ ! তত্ত্বৈব । রুক্ষোমৃত্যু

• প্রদোনিতাং পূমুদৈচব ভয়াবহঃ । অস্বাস্থ্যং কর্ম্বাদদ্যায়ীলস্ত ধনহানিদঃ ।।
ছিদ্রে:দারিত্যদুঃখানি দদ্যাৎ সংপূজিভোক্রবং । পাগুরস্ত মহদুঃখং ভয়োভার্যাবিয়োগদঃ । প্রপৌত্রধনেশ্ব্যসুখনতান্তম্ত্রমং । দ্যাতি শুক্রবর্ণত ত্থাদেনং

২২৫॥ একএকচক্রোয়াস স্থান ইতার্থঃ। দ্বাজ্যাংচক্রাজ্যামেবমগ্রেস্যুত্থ ॥ ২২৬॥ নববূর্ছঃ হিসিংহবরাইছয়গ্রীকনারায়ণব্রহ্মাণঃ পঞ্চ জীবাস্থাদেবাদ্যাশ্চত্মারঃ এবং নববূর্ছরপঃ মহস্যকৃর্মাদিদশাবভারাস্থাকঃ। একাদশৈরিত্যার্থং। একাদশভিঃ। পাঠাস্করে একাদশভক্রাণি যদি স্থান্তহি অনির্জ্বইতার্থঃ এবমগ্রেপি দ্বাদশাস্থাকঃ দ্বাদশাদিত্যরপঃ।কেশবনারায়ণাদিদ্বাদশ-ক্রপোব।॥২২৭॥

সমর্চরেথ।। ২২৮।। প্রীপ্রকাদসংহিতায়াং। ক্ষা মৃত্যুপ্রদা নিত্যং কপিলা চ ভ্যারহা।রোগার্ডিং কর্মরা দদ্যাৎপীভাবিত্তবিনাশিনা। পূমাভা বিত্তনাশায় ভ্রা ভার্যাবিনাশিকা। সচ্ছিদ্রা চ ত্রিকোণা চ তথা বিষমচক্রিকা। অর্দ্ধচন্দুরেতির্যা চ পূল্যান্তান ভবন্তি হি ।। ২২৯।। গার্গালবয়োঃ। স্থদা সমচক্রা তু দ্বাদশা চোত্তমা শুভা। বর্জুলা চত্তরস্যা চ নরাণাঞ্চ স্থপ্রদা।। ত্রিকোণ্য বিষমাচৈব ছিদ্রা ভ্রা তথৈব চ। অর্দ্ধচন্দুরেতির্যা তু পূজার্হা ন ভবেতু সা। ফলং নোৎপদ্যতে ভ্র পূজিভায়াৎ কদাচন ।। ২৩০।। ইতিশ্রীগোপালভট্টবিলিখিতেভক্তিবিলাসে আধিষ্ঠানিকোনাম পঞ্চমোবিলাসঃ

ছিদ্রং সচ্ছিদ্রইত্যর্থং শুক্রং বর্চাঃ বর্ণোযস্য সং॥২২৮॥ তাঃ সচ্ছিদ্রাদ্যাঃ রুঞ্চানয়োবা॥২২৯॥ হাদশী দ্বাদশাস্বশংক্ষিকা দ্বাদশকোণা বা॥২৩০॥ ইতিপঞ্চমঃ——

## वं विवानः।

শ্রীটেতন্যপ্রসাদেন তারাপং গোকুলোৎসবং। মনোজংঘটুকামন্য মূর্ভ্যন্তি।
বিধিরটাতে ।। ১।। স্বয়ং ব্যক্তাঃ স্থাপনাশ্চ মূর্ভ্রোদ্বিধামতাঃ। স্বয়ং ব্যক্তাঃ স্বয়ংক্ষঃ স্থাপনাস্থ প্রতিষ্ঠয়া ।। ২ ।। তথাচ পালোত্তরখণ্ডে । শূণু দেবি প্রব ক্যানি তদর্ভাবস্থাং হরেঃ। স্থাপনঞ্ধ স্বয়ং ব্যক্তং দ্বিবিধং তৎপ্রকার্তিতং । ০। শিলান্দ্রলাহালৈয়ঃ ক্রমা প্রতিক্রতিং হরেঃ। শ্রৌক্রমার্ভ্রাসমপ্রোক্তবিধিনা স্থাপনং হি যথ । তৎ স্থাপনমিতি প্রোক্তং স্বয়ং ব্যক্তং হিমে শূণু । যন্মিন্ সন্নিহিতাবিষ্কৃত্র স্বয়নেব গ্নাং ভূবি । পাষাণদার্কোরাক্রেশঃ স্বয়ং ব্যক্তং হি তৎ স্কৃতনিতি। দুর্লভ্রাং স্বয়ং ব্যক্তার্থ ।

যথ স্বয়ং ব্যক্তমূর্তেঃ শ্রীবৈক্ষবোত্রমঃ । যথাবিধি প্রতিষ্ঠাপ্য স্থাপিতাং শূর্তি মর্চট্যেৎ।

অথ এীমূর্ত্তি পূজামাহাত্মাং । হরিভক্তিসুখোদরে । নৈকং হ্রবংশন্ত নরস্তারম-ত্যাধিলং জগৎ । অর্চারামীপিসতং নৃণাৎ ফলং যাগাদিদুর্লভং । প্রতিমামাশ্রি-তোহভাউপ্রদাৎ কম্পলতাং যথা ।। ৪ ।।

অথ এীমূর্ত্তেঃ প্রসাদন । **আঝাদিশুদ্ধর** দ । ৪ ।। এীমূর্ত্তিং কালনার্ছান্ত শন্তগন্ধজলাদিনা। প্রকালয়েতদন্যান্ত মূলমন্ত্রেণ মার্ক্তারে ।। ৫ ।। এমূর্তিক্দরং

শ্রিরে। মহালক্ষ্যাঃ টৈতনাং কীবননপোভগবান্ জির্কঃ। স্ব্যতে তুনি জভক্তৌ নর্বেষামের চেতরিল্যেন শ্রীটেতলাইতি বিখ্যাতঃ শ্রীশচীনন্দনন্তন্য প্রদাদেন মূর্ত্তেঃ শ্রীভগবৎপ্রতির্ভ্তঃ অর্চায়াঃ প্রজায়া বিধিরুচ্যতে লিখ্যতে। নমু সর্বাধিঠানতঃ শ্রীশালগ্রামনিলায়া মাহাল্মমধিকং লিখিতমিতি তৎপুলাবিধিরের লিখিতং যুক্ষাতে তত্ত্ব লিখতি। গোকুলোৎনবং। তদ্য টৈতনাদ্য নপং তৎ অনির্বাচনীয়ং বা নপং যয় কামান্য পূজয়িতমিক্ততো জনস্য। কৃতঃ মনোজ্ঞং চিত্তাকর্বকং। শ্রীমূর্তিমন্তরেণ মনঃসন্তোবো ন স্যাদিতি ভদ্তজানাং তৎপূলৈবোপবৃক্তেতি ভাবঃ। অতথ্ব তত্তদীপং সুরভিন্তবংসিক্তকপুরের্ত্তা দীপ্তং দৃষ্টায়াতিবিশদ্ধীঃ পাদপ্র্যাত্তমূলৈরিত্যাদি বচনৈঃ ক্রমদীপিকাদে দৃষ্ট্যাদিনিক্ষেন শ্রীমূর্তিপুক্রবাভিপ্রেতেতি দিক্।। ১ ॥ স্বয়ং ব্যক্তাঃ শ্রীরক্ষায়্রিপ্রভ্তরঃ। স্বয়ং সাকাদের কৃষ্ণঃ। প্রতিষ্ঠায় কৃষ্ণা কৃষ্ণং স্যাহ । ২ ॥ অর্চায়াঃ প্রজামাঃ ক্রাব্দথং স্থানিক্রিজ্ব। ৩ ॥

অৰ্চায়াং প্ৰীমৃত্তে । হণামীণ্লিতং কলং হোগাদিহুল্ভমপি সা দদাতি ॥ ৪।। প্ৰাক্ষালনাহাংশৈলীলৌহীপ্ৰতিকৃতিং এ ভদম্যাং লেপ্সাদ্যাং ॥ ৫।। প্ৰক্ৰমা বারাফকং। প্ৰাপ্ত স্পৃত্য ব্যাহ্ব চাউথা হপে । এবং প্রসাদনং মুর্তেরাজনন্তংপ্রসাদনাং। শুলি-কো বিভায় তু স্যাদব্যপ্রভয়াপি চা। ৬।। হানশুনিত্ত্বা অব্যশুনিক লিখিতা পুরা । ইতিপ্রকারভেদেন ভবেচ্ছুনিত্ত্বয়ং । উক্তঞ্চ জীনারদেন । পুলোলামু গৃহীয়া তু প্রোক্ষয়েং সর্বাস্থানং । মলসানং ততঃ কুর্য্যাৎ পাত্রে দেবং বিধায় চা। আন্যেনাপি। পুলোকতাদিত্রব্যাণাং কুর্য্যামন্ত্রাদি লোখনং । ক্ষালনেনামুলে-পাদেমু র্ডিশুনিং সমাচরেং। অব্যগ্রহ্মোত্মশুনিং ক্লিভিশুনিং ভতশ্চরেদিতি। মন্তশুনিং পরাং চিত্তশুনিং চেচ্ছি কেচন। এবং বট্ শুনায়ঃ পুণ্যাঃ সংপ্রদায়ানু-সারতঃ।। ৭।।

অব পঠিপূজা । ভাদ্যাদিপীঠে জীথগুাদ্যালিগুেইউদলৎ লিখেৎ । সকনিকংত্রিবৃত্তাত্যং পদ্ধং বোড়শকেশরং । সদলাগ্রং চন্ডজোনং চতুর্বারবিভূবিতৎ । পূজাবত্রং সমুদ্ধৃত্য পঠিচিচিং তত্র সাধয়েৎ ।। ৮।। পীঠে ভগবতোবামে

শুদ্ধিং অব্যগ্রত্বাদিনা। যদ্যপি পূজারস্তাদের সা সদাপেক্ষ্যতে তথাপি বহিঃ এমুর্ত্তিপূজায়া-মবশ্যাপেক্ষ্যত্বাৎ শুদ্ধিপ্ৰসঙ্গাধাত লিখিতা।। ৬॥ ননুক্চিৎ শুদ্ধিচওক্ষং কৃচিচ্চ শুদ্ধি বটকং আরতে। পতা তু মূর্ত্তিশুদ্ধরাত্মশুদ্ধিশেতি শুদ্ধিষয়মাত্রং লিখিতং তৎকুতঃ ইভাতঃ লিখতি স্থানেতি। পুরা পূর্বাং দেবালয়মাজ্জ নাদিপ্রকরণে স্থানশুদ্ধঃ শক্তপ্রতিষ্ঠাশেষেচ শক্ষাদকাদিন। দ্রব্যশুদ্ধিলিথিতা ইতি অনেন প্রকারেণ ভেদোইতায়ং জেয়ঃ প্রকালনাদিনা এমুর্ত্তিশুদ্ধিং শোধন প্রোক্ষণাদিনা দ্রবাশুদ্ধিরবাঞ্জেন চাক্ষশুদ্ধিরভিবাঞ্জিতৈব। তত্তচ আত্মতন্ত্রীয় নমঃ বিদ্যা-ত্ত্বায় নমঃ এভগৰতত্ত্বায়নমঃ ইত্যুক্ত্বা প্রোক্ষণীপাত্রনিহিতেন কিঞ্চিদভিমন্ত্রিতশহাদ্দলেন खननीमनशृ शैराजन श्रमृक्षना जिरमकः कूर्या मिराजा बमाया शक्तिः किमानारख। श्रानशक्तिक मः मान জ্জ নলেপনাদিনা বেদিকামগুলনির্মাণাদিনা চ। তথাচোত্তং শ্রীরামার্চনচক্রিকায়াং। বিলিপ্য বেদিকাং সমাঙ্মগুলং তত্র কারয়েৎ। রক্তৈন্ত গুলচূর্টেণ্ড নীলপীতসিতাদিতৈ:। লিখেদফদলং পত্মং চন্তরসুং সমাবৃতং। ষট্কোণং কর্ণিকামধ্যে কোণাগ্রে বৃত্তসংবৃতং। সাধ্যমেৰং ততঃ শোভারেখাভিক্লপশোভিতং । সংপূজা মগুলক্ষৈব তত্ত্ব সিংহাসনং ন্যানেং। চক্রাতপপতাকৈশ্চ তোর নৈরপি সর্বতঃ । চিত্রিতং তত্র তত্রাপি ভিত্তিস্তম্ভস্বলাদিখিতি । এতচ কেষাংচিশ্বতে শ্রিব্নাথপূজাবিষয়ং। ক্রমাদীপিকাকারাদিমতে চ দীক্ষাবিধিবিষয়মেবেতি। মক্রশুদ্ধিক অস্ত্রমন্ত্রেণ মন্ত্রশুদ্ধিং পরিকপিয়ামীভ্যেবং । চিত্তশুদ্ধিক চিন্তান্তরপরিত্যাগাদিনেভ্যেবং বট্ শুদ্ধয়ঃ। তাক্ষ সর্ব্বাএব পরিপাল্যা বৈষ্ণবৈঃ কিন্তু নিক্ষসংপ্রদায়ামুসারেণেত্যর্থঃ॥ १॥

ভাসাদিরচিতপীঠে প্রথথং চন্দনং তদাদিনা আলিপ্তে অইদলং বাড়শকেশরং সকর্ণিকং বৃত্তরেরযুক্তং দলাগ্রসহিতঞ্চ পদ্মং লিখেৎ। এবংপুদাযন্ত্রং সমাক্ উদ্বৃত্য অক্ষরিত্বা তর তন্মিন্ বস্ত্রে পীঠনা অর্চাং পূজাং নাধরেৎ নিস্পাদরেৎ। তর চার্যাঞ্জলেনাভ্যুক্ষা কুর্যাদিতি সদাচার-তোজেরং॥৮॥ ভগবতোবামইতি বায়ুকোণাদীশানকোণপর্যান্তদেশে ইত্যর্বং। প্রথকন্ নিজগুরু পরমগুরু পরাপর গুরু মহাগুরু পরমেন্টিগুরুন্ বজেৎ। কুচিচ্চ প্রথক্ত পরমগুরু পরমেন্টিগুরু পরাধর গুরুনিতি। প্রয়োগঃ। প্রশাসনা ইত্যাদি। কেচিদ্রাদ্যাক্ষরবিন্দুনহিতং

श्री खन्न छङ्ग भाष्ट्र । नाय मानेन भूकि निकान यर जमना । का विकान कि श्री । विकान कि श्री भूमा । विकान कि श्री । विकान कि श्री भूमा । विकान कि श्री । विकान कि श्री भूमा । विकान कि श्री । विकान कि श्री भूमा । विकान कि श्री । विकान कि श्री भूमा । विकान कि श्री । वि

অথাবাহনাদীনি ! ততোদেবার্জনে প্রৌচুপাদভায়ানিষেধনাৎ । ভূমৌ নিহিছ পাদং সন্ কুর্য্যাদাবাহনাদিকং । হজাবাহ্যমধিষ্ঠানং তত্রাবাহননাচরেৎ। শাল-গ্রামন্থাপনে চ নাবাহনবিসম্ভলন । তথাচোক্তং । উদ্বাসাবাহনে ন তঃ স্থাবরে বৈ যথা তথা। শালগ্রামার্কনৈ নৈব হ্যাবাহনবিসম্ভলন । শালগ্রামে তু ভগবানাবিভূনি

वीक द्विनामी अयुक्ष ए शुक्र खा नमरे छि। एथा शुक्र भाइकाम अनावमामी मे भूका निकान অন্যাংশাধুনিকান্ বৈক্ষান্ ভাগবতান্ যজেৎ।প্রয়োগঃ। ও এই পাছকাভ্যোনমইত্যাদি।।১॥ ভগৰতোদকিণে চ ভাগে ছুর্গাদীনর্চয়েৎ । তত্তৎপরিচ্ছদাদিসমেতানিতি জ্বোং। ততন্তদন-खदः आक् पृद्धः भीवेनाएक निथिएना नामना भीवेनामनाायनदः । एक यस प्रमा प्रका स्व ক্রমেণ লিখিতান্তি ভবৈধব পুষ্পাদিনা তাং কুর্য্যাদিতার্ধঃ ॥ ১০॥ তদেব বিশেষ্য দর্শরন্তি মধ্যে-ইতি দ্বাভ্যাং। পীঠমধ্যে আধারশব্দ্যাদীন্ পুক্রেং। আদিশব্দেন প্রকৃতি কূর্মানন্ত পৃথিবী ক্ষারসমুদ্র শেতদ্বীপ রত্ত্বমণ্ডপ কম্পর্কাঃ। অত চপ্রবেদের ক্ষীরসমুদ্রাদি স্থানে তন্তৎ পরি-বর্ত্তেন জীমধুরাদ্যা একান্ডিভিঃ পূজ্যা ইতি বোদ্ধব্যং। প্রয়োগঃ। ওঁ আধারশক্তয়ে নমইত্যাদি। এবমগ্রেপি। অধানন্তরং বিদিকু কোনের ধর্মাদীন্ পূজয়েৎ। আদিশকেন জ্ঞানবৈরাইগ্যশ্র্যাণি। ठखिक्तिक श्रुतानिविक्ठखळेता व्यथकामीन् श्रुकतार। व्याविश्यका कानारे देवतागादेवचर्यानि । পুনক পীঠ মধ্যএব অনস্তাদীন্ পূজ্যেরে। আদিশক্ষের পত্মস্থ্যমণ্ডলবোমমণ্ডলবহ্নিয়ণ্ড-লানি স্ত্রকত্মাংসি আত্মান্তরারপর্মাত্মজানাত্মানক । অউল্পতের পূর্বাদিদলক্ষেণ্ কেশরমধ্যে বিমলাদ্যা অফশক্তীঃ কর্ণিকারাং চাত্রগ্রহাং শক্তিং পূজয়েদিতার্থঃ। শক্তর্ক। বিমলোৎকার্যণী জ্ঞানাক্রিয়াযোগাঞ্জনীসভোশানা ইতাউ ববমী চাত্তাহেতি। যথোদিতমিতি स्यापिमधनः उखदीकाकात्र मह मदापीन् उखपामाकातः मह कानावानक जूरानवती-বীজেন সহ পূর্ববং পূজারেদিতার্থঃ। তত্ত প্রায়োগঃ। ওঁ অং স্থামগুলায় নমঃ। ওঁ উংসোমমগু-लात् नमः। ७ व्यत्वस्मिश्रकात् नमः। ७ मश्मवात् नमः इत्यानि। ७ श्री कामाप्रान नमः ইতিচ॥ ১১॥ ত্রশ্বিন্ প্রতিতে পীঠে॥ ১২॥ নিজেইদেবস্য মূর্জেশ্চ পীঠস্থাপিভভগবং-প্রতিক্ষতে:। পরমং অত্যন্তং ঐক্যং অভিনত্তং দঞ্চিত্তরেৎ॥১৩॥

প্রৌঢ়পাদতালক্ষণমাদৌ লিখিতমেবান্তি। আদিশব্দেন সংস্থাপনাদি। তচ্চাগ্রে ব্যক্তং ভাবি। আবাহং আবাহনযোগ্যং অন্থিরাদি। তত্র ডামিন্ অধিষ্ঠানে আবাহনং বিসক্তানঞ্চ নাচরেৎ। বদ্যপি মুর্ডার্চাবিধি রুচাতে ইতি পুর্বনিখনাজীমূর্ডিপুলৈব প্রস্তৃতাহন্তি তথাপ্যাবাহনাদি दं वायथ। इतिः। म ज्थानाज मूर्यारो रिक्ट्रिंगि व मर्वाः।। ५८।।

অথাবাছনাদিবিধিঃ। আবাহনাদিবুদ্রাশ্চ সংদশ্যিবাহনং বুধঃ। তথা সংস্থাপনং সমিধাপনং সমিরোধনং। সকলীকরণং চাবগুঠনঞ্চ যথাবিধি। অমৃতীকরণং
কুর্য্যাৎ পরমীকরণং তথা।। ১৫।। তথাবাহনাদ্যর্থঃ। আগমে। আবাহনঞ্চাদরেণ
সংমুখীকরণং প্রভোঃ। ভক্ত্যা নিবেশনং তস্য সংস্থাপনমুদাহতং। তবাস্মীতি
দ্বনীয়ন্ত্রদর্শনং সমিধাপনং। ক্রিয়াসমাপ্তি পর্যান্তংখাপনং সমিরোধনং। সকলীকরণং চোক্তং তৎসর্কাঙ্গপ্রকাশনং। আনন্দ্যনতাত্যন্তপ্রকাশোহ্যবন্তঠনং।। অমৃতীকরণং সর্কৈরেবাক্তেরবক্ত্রমৃত্যা। পরমীকরণংনামাভীইসম্পাদনং পরং।। ১৬।।

অধাবাংনমাহান্ত্য নারসিংহে। আগচ্ছ নরসিংহেতি অবাহ্যাক্ষতপুক্ত কৈঃ। এতাবতাপি রাজেন্দু সর্বপাপেঃ প্রমুচ্যতে ইতি। ন্যাসেন্দ্রথাসম্পুদায়ৎ দেবেহঙ্গাদীনি পূর্ববং। শশুচক্রাদিকাশ্চাথ মুদ্রা বিদ্বান্ প্রদর্শয়েং। তথাচ তত্ত্বসারে। আবাহনাদিমুদ্রাশ্চ দর্শয়িত্বা ততঃ পুনঃ। অঙ্গন্যসঞ্চ দেবস্য রত্বা মুদ্রাঃ প্রদর্শয়েং।

অথ মুক্রাঃ। আগমে। আবাহনীং স্থাপনীঞ্চ তথান্যাৎসন্ধিধাপনীং। সংনিরোধকরীং চান্যাৎ সকলীকরনীৎ পরাং। তথাবগুঠনীং পশ্চাদমূতীকরনীৎতথা। পরমীকরনীং চান্যাংপ্রাগম্ভৌ দশ্বেদিমাঃ। শব্ধংচক্রং গল্পং পলং মুষ্কং শান্ত মেবচ। থড্গং পাশাক্ষুণৌ তথ্বিদ্ধেতেয়ন্তথৈবচ। জীবৎসকৌস্তভৌ বেণু মভীতি বরদৌ তথা। বনমালাং তথা মন্ত্রী দশ্বেং রক্ষপুজনে। মুদ্রাচাপি প্রয়োক্তব্যা নিত্যৎ বিল্ফলাক্তিঃ। ইত্যেতাশ্চ পুনঃ সপ্তদশ মুদ্রাং প্রদর্শয়েং। গল্পদিয়ে

আবাহনাদিকরণপ্রকারমেব লিখতি। আবাহনাদীতি দ্বাভ্যাং। স্বাবাহনাদিমুদ্রা আদৌ
সমাক্ দর্শবিদ্বা পশ্চাদাবাহনং তথা সংস্থাপনাদিকঞ্চ বুধোষথাবিধি কুর্যাদিতি দ্ববোরস্বরঃ।
বিধিন্দারং। শ্রীকৃষ্ণ ইহাবহু ইহাবহু ইহ্পমাক্ তিঠং ইহ্পনিধেহিং ইহু পনিরুদ্ধার্থ ইহু
সক্ষীকুরুং ইহাবশুঠস্বং ইহ্পরমীকুরুং ইতিক্রমান্ত্র্যাদিতি। আবাহনাদ্যইমুদ্রাশ্চাপ্রেলেখ্যাঃ।
কেচিচান্তঃ ক্রমেণ মুদ্রাঃ প্রদর্শরন্ তত্র তত্র ক্রমেণ তপ্তদুরাদিতি॥ ১৫॥ তস্য প্রভাঃ
সর্বাঙ্গস্য প্রকাশনমভিব্যঞ্জনং সকলীকরণ। কেচিচ্চ অক্রেরোঙ্গবিন্যাসং সকলীকরণং বিদ্রুদ্বিত্রনাপেক্রয়া শ্রীমদক্ষের্ মন্ত্রাঙ্গবিন্যাসং সকলীকরণং মন্ত্রে।
বিত্রতিব্যাপেক্রয়া শ্রীমদক্ষের্ মন্ত্রাঙ্গবিধার তত্তাহ্বপ্রঠনাদিকং কুর্যাদিতি॥ ১৬॥

দেবে প্রভিগবস্ত্তি মন্ত্রসাঙ্গাদীনি নাসেও। আদিশব্দেনাকরাদি। পূর্ববদিতি যত যস্য ন্যাসোলিখিতোইন্তি তথৈব কুর্যাদিত্যর্থঃ। এতচ্চ পূর্বং স্থানন্ পঞ্চাঙ্গাদিন্যাসপ্রসঙ্গে তথা-ধ্যানানন্তরমন্তর্গাদে পীঠপুঞ্জামম স্বহৃদি চিন্তিভঞ্জীভগবস্ত্তি ন্যাসপ্রসঙ্গে চ লিখিতমন্ত্যেব। দেবাক্ষের সন্ত্রাঙ্গাদিন্যাসোনাম দেবেন সহ মন্ত্রসৈক্যাপাদনায়েতি পূর্বং লিখিতমেব্যা

প্রসঙ্গের শালগ্রাম।বাহননিষেধাদিকং লিখিতমতি দিক্।। ১৪।।

করৌ কৃত্বা মুদ্রাঃ স্কাত্র যোজ্যে । যোহন গো কুরুতে মূঢ়োন সিদ্ধঃ ফলভাগ্ ভবেং ॥ ১৭॥

অথ মুদ্রামাহান্ত্রং। অগস্ত্রসংহিতায়াং। এতাভিঃ সপ্তদশভিমুদ্রাভিন্ত বিচক্ষণঃ। যোবৈ মামর্জয়েরিত্যং মোহয়েৎ স স্রেশরং। দ্রাবয়েদিপ বিপ্রেন্দু ততঃ প্রার্থিতমাপুরাৎ।। ১৮।। ক্রমদীপিকায়াঞ্চ। বিলুমুদ্রামধিরতঃ। মনো-বাণীদেহৈর্ঘদিহ বপুষাবাপি বিহিত্মমত্যা মত্যা বা তদখিলমনৌ দুক্তচয়ং।

2911

স্থানেশ্বং ইন্দ্রং ক্রাবয়েৎ স্বর্গাচালয়েদপি । এবং ততন্তাভ্যোমুক্রাভ্যেনিজ্ঞা-ভীষ্টং প্রাপ্নাথ। যদ্বা স্থারেশ্বং ভগবন্তং শ্রীরামমেব ততক্ষ ক্রাবয়েদিতি বৈকুঠানিজপার্খং দ্রুতং প্রাপ্যেং। ক্রুতক্রদয়ং কুর্য্যাদিতি বা । ততন্তদনন্তরং তত্মাদ্বা স্থ্রেশ্বঃদিতি ॥১৮॥

व्यत्मो नतः हैमाः विन्ताशाः मूजाः कानन् এउः इष्क उनिहतः भाभमगृहः विशेषः निः स्वर ক্ষপয়তি বিনাশয়তি। কং যং মনোবাক্কায়ে: ইছ অন্মিন্ জন্মনি পুরা পূর্বজন্মি চ অমত্যা অজ্ঞানেন মত্যা বা জ্ঞানেন বিহিতং । দিবারাত্রিবিহিতমিতি পাঠে দিনে রাত্রৌ চ রুতং। যত্তদোনপুংসকত্বং মহাকবিস্বাভন্ত্যাদবায়ত্বাদ্বা । যদ্বা ষৎ যস্মাৎ ক্ষপয়তি তত্তসাল্লমন্ত্রীতাময়ঃ। মুদ্রালকণানিচ গুছাত্বাল লিখিতানি। তথাচোক্তং। গুরুং প্রকাশয়েদিদ্বালম্বং নৈব প্রকাশয়েৎ। व्यक्तमालाक्ष्यमाक्ष श्वरतात्रि न मर्नासिष्ठि। व्यवह। उदिकानार्यमूक्तिगारः । उथाहासरा । সমাক্ সংপ্টিতৈঃ পুল্পৈঃ করাভ্যাং কম্পিতোইঞ্জি:। আবাহনী সমাধ্যাতা মুদ্রা দেশিক-সত্তমৈঃ॥১॥ অধোমুখীকুতৈঃ সক্ষৈঃ স্থাপনীতি নিগদ্যতে ॥২॥ আশ্লিকমুটিযুগলা প্রোলতাঙ্গু ইযুগাকা। সলিধানে সমুদ্দিটা মুদ্রেরং তল্পবেদিভিঃ॥৩॥ অঙ্গু ইগর্ভিণী দৈব সলি রোধে শমীরিতা॥ ৪॥ অকৈরেবাঞ্চবিন্যাশঃ সকলীকরণী মতা॥ ৫॥ সব্যহস্তক্তামুটিদীর্ঘাধো-মুখতজ্ঞ নী। অবশুঠনমুদ্রেয়মভিতোভামিতা যদি॥ ৬॥ অন্যোন্যাভিমুখাঃ সর্বাঃ কনিষ্ঠা-নামিকা পুনঃ। তথা তজ্জ নিমধ্যাক্ত ধেনুমুদ্রা প্রকীর্ত্তিতা।: ৭॥ অন্যোন্যগ্রথিতাঙ্গুঠা প্রসারিত-করাজুলি:। মহামুদেভা প্রমীকরণে বুদৈঃ।। ৮ ॥ বামাজুঠং বিধৃতি চাবং মুফিনা দক্ষিণেন তু। তস্মুষ্টেঃ পৃষ্ঠতোদেশে যোজ রেচ্চতুরক্ষু লীঃ। কথিতা শস্তামুদ্দের বৈষ্ণবার্চনকর্মণি।। ৯। অন্যো-न्যাভিমুখাঙ্গুঠক্নিওযুগলোঘদি।বিভৃতাশ্তেরাঙ্গুল্যন্তদাহদৌ দর্শনী মতা॥১০॥ অন্যোন্ত্রবি-তাঙ্গুল্যো উন্নতৌ মধ্যমৌ বদি। সংলগ্নো চ তদা মুদ্রা গদেরং পরিকীর্ত্তিতা॥১১॥ প্রমাকারাভি मूरथान भागी मरभारक रही भाशितिक निकादर। श्रवादश्वाद रेनव नः लग्नमधा न्य हो क है। विल् नংজ্ঞিতা মুদ্রা॥১২॥ অত্রেভুবামমুক্টেশ্চ ইতরা ভুযদা মতা। তবেরং কৃতিভিমুদ্রা জেরা মুধল-সংজ্ঞিতা॥১৩॥ বামস্বতক্ষনীপ্রান্তং মধামান্তে নিয়োজমেৎ।প্রসার্যাতু করং বামং দক্ষিণং কর্মেব চ। निर्याका प्रकिशकत्व वानत्थ्रत्नकड्डः। एक नाम् छकानाक कूर्यात्मया श्रकीर्डिटा । माम म्राप्ति म्नि किर्मारत् कृष्ण्यान ॥ ১৪॥ अनिकान। मिरक व जूनका कृष्ठे निश्री फिरक। भारव প্রসারিতে রুহা থড়গমুদ্রা প্রকীর্ত্তিয়া ১৫॥ পাশাকারং নিয়েটেক্সব বামাঞ্চাঙ্গত জ্ঞানীঃ।দকিলে ञ्चिमानात्र उर्व्ह्यनीक अनात्रत्र । उट्टेम्ब मरम्म् स्मिन्नी वामाक्रू हेना म्नदर। भागमू एउ

मुक्तिको क्लावाक नकर्मान ॥ ১७॥ ७ छ नीमीयशाक्षण लाखगानि निनी प्रायः । अनुगर नन-॰ মেন্তর্বক হীত্রা দক্ষমুটিনা।। ১৭।। অনোন্যপৃষ্ঠে সংযোজ্য কনিষ্ঠে চ পরস্পরং । তর্জনাঞ্ সমং কুছা ক্রিষ্ঠাঞা তথৈবচ। ঈষদাল্যিতং কুত্রা ইতরৌ পক্ষবততঃ। প্রসার্য্য গারুড়ী মুক্তা কুঞ্জাবিধৌ স্মৃতা ।। ১৮॥ অন্যোন্য সংমুখে তত্ত্ৰ কনিষ্ঠাতজ্ঞ নীযুগে । মধ্যমানা-মিকে তছদঙ্গু ষ্ঠেন নিপীড়য়েৎ।দর্শয়েদ্দয়ে মুদ্রাং যত্নাচ্ছীবৎসসংজ্ঞিতাং।। ১৯॥ অন্যোন্যা-ভিমুখে তদ্বৎ কনিষ্ঠে সংনিয়োজয়েৎ। তজ্জন্যনামিকে তদ্বৎ করে ব্রন্যোনাপ্র্রগো । উৎ-নিক্তান্যোন্য দংলগ্নৌ বক্ষঃস্থিতকরাঙ্গুলীঃ। বিধায় মধ্যদেশে তু বামমধামতর্জনীঃ। সংযোজ্য স্থিতিক তুদ্দিশে থোক্ষরেওতঃ। বামাক্ষ্টে তু মুদ্রেরং প্রদিদ্ধা কৌস্তভাহররা। কুচিচ্চ। অনামাপৃষ্ঠদংলগ্না দক্ষিণস্য কনিষ্ঠিকা। কনিষ্ঠয়ান্যয়া বন্ধা তৰ্জান্যা দক্ষয়া তথা । বামানামাঞ্ বধুরাকক। জুইস্য মূলকে। অজুইমধ্যমে বামে সংযোজ্য সরলাগপরাঃ। চতপুরিন্যান্যশং লগ্না মুদ্রা কৌস্তভদংজ্ঞিতা।। ২০॥ ওঞ্চে বামকরাঙ্গু, ঠোলগ্নস্তা কনিষ্ঠকা। দক্ষিণাঙ্গু ঠশং-যুক্তা তৎকনিষ্ঠা প্রশারিতা । ভর্জুনীমধ্যমানামাঃ কিঞ্ছিৎ সংকুচ্চ চালিতাঃ । বেণ্যুদ্রেয়নু-ক্টা স্প্রা প্রেরণী হরেঃ॥ ২১॥ অঙ্গপ্রসারিতং কৃত্বা স্পূষ্ট শাখং বরাননে। প্রাঙ্মুখন্ ততঃ ক্লত্বা অভয়ঃ পরিকীর্ত্তিতঃ ॥২২।। দক্ষং ভুজং প্রসারিত্বা জান্পরি নিবেশয়েছ । প্রসূত্র দশয়েদেবি বরঃ সর্বার্থকং।।২৩।। উত্তানভর্জনীভাস্ত উদ্বাধঃপ্রক্রমেণ ত্। মাল:বং ক্রমবিস্তারা বনমালা প্রকীর্ত্তিতা॥ ২৪॥ ক্রমদীপিকায়াং। অঙ্কুষ্ঠং বামমুদ্দভিত্মিতরকরা-স্তকেনাথ বন্ধা তস্যাগ্রং পীড়য়িত্বাঙ্গুলিভিরপি ততো বামহস্তাঙ্গুলীভিঃ । বদ্ধা গাঢ়ং ক্লি স্থাপয়ত্ত বিমলধীব্যাহরঝারবীজং বিল্থাে মুদ্রিকৈষা ক্টমিহ কথিতা স্থাপনীয়া বিধিতৈতঃ। অগস্তাসংহিতারাঞ্চ। আবাহনাংস্থাপনীঞ্ সলিধীকরণীং তথা। স্থশংনিরোধনাং মুদ্রাং সন্মুখী কর্ণী তথা। সক্লীকর্ণীকৃষ্ণ মহামুদ্রাস্তবৈধ্ব চ । শস্তাক্রণাপাদ্রবেষ্ট্রেস্ড ভগারুড়াই। শ্রীবংসংবনমালাঞ্চযোনিমুদ্রাঞ্চ দর্শয়েং। মূলাধারাজাদশান্তমানীতঃ কু স্থমাঞ্জলিং। তিস্তান গততেকোভিবিনীতঃ প্রতিমাদিষু। আবাহনীয়া মুদ্রা স্যাপের।র্চনবিধৌমুনে।। ১॥ এবৈবা-ধোমুখী মুদ্রা স্থাপনে শস্তে পুনঃ ॥২॥ উন্নতাঙ্গুষ্ঠযোগেন মুফীক্তকরদ্বয়ং। সমিধীকরণং नाम मूना दिवार्कत विदर्श। ৩॥ অঙ্গুষ্ঠগতিনী সৈব মুদ্য স্যাৎ সংনিরোধনী ॥ ৪॥ উন্তানমুষ্টি যুগলা সংমুখী করণী মতা॥ ৫॥ অলৈরেবাঙ্গবিন্যাসঃ সকলীকরণী তথা ॥ ৬ ॥ অন্যোন্যাঙ্গু ঠমং লগ্ন বিস্তারিতকরদ্বরী। মহামুদ্রেয়মাখ্যাতা নূমাধিকসমাপনী॥ ৭॥ কনিষ্ঠানামিকামধ্যায়ঃস্থা-স্কৃতিন্তরেইএতঃ । গোপিত সিলুলিমূলেন সমন্তামুকুলীকতা।করদ্বয়েন মুদ্রা স্যাৎ শভাখোয়ং স্রার্চনে।। ৮।। অন্যোন্যাভিমুথস্পশ্ব্যভায়েন তু বেষ্টয়েং। অঙ্গুলীভিঃ প্রয়ন্তেন মণ্ডলী-করণং মুনে। চক্রমুদেয়মাখ্যাতা ১ গদামুদ্র ততঃ পরং। অন্যোন্যাতি মুখালিটাঙ্গুলিঃ প্রেলতমধ্যমা ১০। অথাক্সুষ্ঠদ্বংমধ্যে দত্ত্বাপি পরিতঃ করে। মগুলীকরণং সম্যাগক্ষলীনাং তপোধন । পদমুদাভবেদেষা ১১ ধেমুমুদ্রা ততঃপরং । অনামিকাক,নিষ্ঠাভ্যাং তৰ্জ্জনী-ভ্যাঞ্চ মধ্যমে। অন্যোন্যাভিমুখাপ্লিফে ভতঃ কৌস্তভসংজ্ঞিতা।। ১২॥ কনিষ্ঠেংন্যোন্যসং লগ্নেহপি মুখেহভিপরস্পরং। বামস্য তর্জনীমধ্যে মধ্যানামিকয়োরপি। বামানামিক-সংস্পৃষ্টা ভজ্জ নীমধ্যশোভিতা। পৰ্যায়েণ নতাঙ্গুষ্ঠদ্বন্ধী কৌস্তভলক্ষণা॥ ১৩॥ কনিষ্ঠান্যো-ন্য সংলগা বিপরীতং বিযোজিতা। অধন্তাৎ স্থাপিতাঙ্গু ঠা মুদ্রা গরুড় সংক্ষিতা।। ১৪।। ওর্জন্য-

ইমাৎ মৃদ্রাৎ জানম্ ক্রপয়তি নরন্তৎ সুরগণা নমন্তাস্থীনা ভং**তি সত্তৎ সর্ব** জনতা । ১৯।।

অথাসনান্দ্যপ্র । তভোনিক্ষিপ্য দেবস্যোপরি পুল্পাঞ্জনিত্রং। দক্রাসনার্থ পুল্পাঞ্জাগত বিধিনাচরে ।। ২০।। আসনাদ্যুপচারেষু মুদ্রাঃ বাড়েশ দর্শরেও। প্রসিদ্ধাঃ পাল্লস্বস্ত্যাদ্যা বিদ্ধান্ বোড়শস্ ক্রমাও।। ২০।। শ্রীক্ষারার্পরেদর্গই পাদ্যমাচমনীয়ক । মধুপর্ক পুনশ্চাচমনীয়ং বিধিবভতঃ। তথাচ স্কৃত্যর্থসারে।
আবাহনাসনং পাদ্যমর্থ সাচমনীয়ক । সান্মাচমন বক্রাচমনং চোপবীতকং।
আচমন হক্ষপুত্প ধূপদীপং প্রক্পেয়েও। নৈবেদ্য পুনরাচামং নদ্ধা ভূড়া
বিস্ক্রিং। অন্যতে । আদৌ পুল্পাঞ্জলি দক্তা পাদার্চনমতঃ পর । পাদ্য
মর্থ গুল্চমনংমধুপর্কং যথোদিতং। অভ্যান্থেনে কৃত্যা মহাস্থানং স্মাচরেও।

জুঠমধ্যস্থা মধ্যমানামিকদ্বয়ী। কনিচানামিকামধ্যা তর্জ্জন্যথে করদ্বয়ী। মুনে শীবৎসমুদ্রেরং ১৫ বনমালা ভবেত্ততঃ। কনিষ্ঠানামিকামধ্যামুফ্টিরুন্নীততর্জ্জনী। পরিভ্রান্তা শিরস্থ্যটেচ-স্কর্জনীভাগে দিবৌকসং মুদ্রা যোনিংসমাখ্যাতা সঙ্কোচিতকর্ব্বয়ী॥১৬॥ তর্জ্জনাঙ্গুষ্ঠমধ্যা শুস্থিতানামিক্যগ্রকা। মধ্যমূলস্থিতাঙ্গুষ্ঠা জ্বেয়া শস্তার্চনে মুনে।ইতি॥১৯॥

বিধিনেতি। এক্ষণয়াসনং নিবেদয়ামীতি এক্ষণ ইদমাসনমত্রণস্তাং স্থপমিত্যেবমাসনং সমর্প্য। এক্রিফ সহ পরিবারেণ স্থাগতং করে। ধীতি স্থাগতমুক্তয়। স্থাগতং কুর্য্যাদিত্যেবং বিধি-দ্র কিব্যঃ। মূলমক্রেটেণ্ব সর্কেষামুপচারাণাং সমর্পণঞ্চ।। ২০।। সর্কেম্প্রপ্রচারেষু ভক্তরাদ্রা দশরিতব্যা ইতি প্রদক্ষাদেকত্ত্র তা বিজ্ঞাপয়তি আদনেতি। বিদ্বান্ তপ্তসালাপ্রকারাভিজ্ঞ:। ষেড়িশস্থ অংসনস্বাগতার্ঘ্যান্তাপচারেষু প্রমাদ্যাঃ ধ্যেড়েশ মুদ্রাঃ ক্রমেণ দর্শয়েৎ। তাশ্চ প্রসিদ্ধা ইতিতত্তলক্ষণলিখনেনালমিতি ভাবঃ ৷ তাশ্চোক্তাঃ । আসনে পদামুদ্রৈৰ কথিতা মুনিভিস্তথা ঈষল্ল-মাঙ্গুলিদ কঃ সন্থাজ্যাঙ্গু ইকং করঃ। স্বাগৃতে স্বস্তিমুদ্রাত মধ্যামূলগতাঞ্চলিঃ॥ ২॥ স্বস্তিমুদ্রা-দিহন্তা চেলুফাত্রর্ঘাস্য কীর্স্তিতা॥৩॥ ভৌ চ প্রসারিতৌ হস্তৌ পাদ্যমুদ্রা প্রকীর্স্তিতা॥৪॥ দেশিনী মূলগাঙ্গুটা দক্ষিণাধঃ কনীয়সী। আচামমুদ্রা বিখ্যাতা দেবতা চমনে বিধৌ। ৫।। সংযুক্তানামিকাঙ্গু, ঠা তিলোন্যাঃ সংপ্রদারিতাঃ। মধুপর্কে চ সা মুদ্রা ৬ সন্থ্যক্ষা চ কনীয়সীং। ক্ষা মুটিং তথা স্নানে মধ্যমাঙ্গুষ্ঠকৌ যুতৌ ॥।।। অন্যাঃ প্রশারিতান্তিপ্রেমুদ্রাবন্ত্রস্য চোদিতা॥।।।। মাধুপর্কী সমুক্তানা মুদ্রালস্কারিকী স্মৃতা।। ৯॥ কনিছালু ইকৌ লগ্নে তিলোমধাঃপ্রসারিতাঃ। যজ্ঞোপবীতমুদ্রেয়ং বিদ্বন্তিঃ পরিকীর্ত্তিতাঃ॥ ১০॥ মুক্তনির্মালিকা মুটিগন্ধমুদ্রেতি শা স্মৃতা॥১১। উলিভাধোমুখীমধ্যা সাঞ্জাশেভরেভরা:। পুষ্পমুদ্রা তদাখ্যাতা সর্ববিদ্ধিপ্রদংয়িনী॥ ১২।। অঙ্গু ষ্ঠংত র্জনীলগ্নং তিসুঃ সঙ্কু চিতাঃ পরাঃ। মুদ্রা ধূপপ্রদানে স্যাদ্দেবানাং ত্তিকারিণী॥ ১৩॥ উত্তনা ধৌপকী মুদা দীপমুদেতি কীর্ত্তিতা।। ১৪।। পঞ্চাঙ্গুলাগ্রসংলগ্ন। প্রোপিতার্কমুখী যদি। षिधानिवक्षा मूत्म्यः देनद्वमामा क्षकी र्क्किण।। ১৫।। नार्किक्मिन नगर्षे व कत्रमण्यू वेदसार्थकः। नम-ক্ষারে স্বিয়ং মুদ্রা দেৰতানাং প্রসাদনীতি॥ ১৬॥ ॥২১॥ विধির্যধাতথেত্যর্থঃ। यদ। বদভাৰ न्हान्त्रनः विधिवान्यथानाति । अक्रकायाचाः निर्वानयामि चाहाहे छार्चाः। **उरे**थव अक्रकाय चरा

অভিষেকাঙ্গবন্ত্রঞ্চ দন্ত্রা নীরাজ্বয়েদ্ধরিমিতি।। ২২।। প্রীমূর্ত্তো ত শিরস্যর্ঘাৎ দদ্যাৎ পাদ্যঞ্চপাদয়োঃ। মুখেচাচমনীয়ন্ত্রিম্পূর্কঞ্চ তত্র হি । সর্বেষ্প্যপচারেষ্ পাদ্যা-দিষু পৃথক্পৃধক্। আদৌ পুষ্পাঞ্জালিৎ কেচিদিচ্ছন্তি ভগবৎপরাঃ।। ২৩।।

অধাদনাদ্যপ্রমাহাত্যং । নরসিৎহপুরাণে । দল্পাদনমথার্থ পাদ্যমাচ-মনীয়কং । দেবদেবদ্য বিধিনা সর্বপাপৈঃ প্রমুচ্যতে । বিষ্ণুধর্মোতরে । আদ-নানাৎ প্রদানেন স্থানং সর্বত্ত বিক্ষৃতি । গোদানফলমাগোতি তথা পাদ্যপ্রদোনর: । তত্ত্ব্র্গদানেন সর্বপাপৈঃ প্রমুচ্যতে । তথৈবাচমনীয়দ্য দাতা-ব্রাহ্মণসভ্মাঃ । তীর্থতায়ং তথা দল্ভা দেবস্যাচমনৎ পুনঃ । স্বর্গলোকমবাগোতি সর্ব্ধপাপবিজ্ঞিতঃ । নরল্ভাচমনীয়দ্য দাতা ভবতি নির্মালঃ ।। ২৪।। মধুপর্কা দানেন পরৎ পদ্মিহাশ তে । বিষ্ণুপুরাণেচ। মধুপর্কবিধিং কৃত্ব। মধুপর্কং প্রাফ্তি। ব্রহ্মক্ দ্যাতি পরমৎ স্থানমেত্র সংশ্রঃ ।। ২৫।।

অথ সানং । বিজ্ঞাপা দেবৎ সানার্থ পাদুকে পুরত্যে পরেছ। নহাবিদ্যাদিনা তঞ্চ সানস্থানং ততোনয়েছ। ২৬ ।। প্রাগৃততাসন্থ পারেছ
তত্তিবাচমনীয়ক্ষ । নিবেদ্য দর্শয়েল তামস্তীকরনীং বুধং ।। ২৭ ।। শাল
গ্রামশিলাকপং ততোদেবং নিবেশয়েছ । সানপাতে নিজাভীকাং চলাং
জীমুর্জিমেব বা ।। ২৮ ।।

অথ সানপাতং। ক্ষনপুরাণে । কৃত্ব। তামুময়ে পাতে যোহর্চয়ে সগুসুদনং।

ইত্যাচমনীয়ং। তথৈৰ মধুপৰ্কং চেত্যেবং তপ্তমুদুৱা সমৰ্গমেদিতাত বিধিজ্ঞে ।। ২২ ।।

শীনুপ্তী জিভি । জীশালগ্রামনিলায়াং সাক্ষাৎ সর্বাবরবাবিভাবদ্বী। তন্ত্বদ্বরবভাবনরা
সংমুখে তন্ত্রমিবেদরেদিতিস্চিতং। ত্রিঃ বারত্রয়মাচমনীয়ং দদ্যাৎ। তত্র তন্মিন্ মুখ এব।। ২৩ ।।
জার্চাং আর্ঘাং পাদ্যপ্ত তন্ধানেন। হেত্রহ্মণসম্বনাঃ । তীর্থতায়মাচমনং। আচমনীয়স্য
জাত্যাদিদ্রব্যাধিতিস্যেতি ভেলঃ ॥ ২৪ ॥ মধুপর্কস্য বিধিংকৃত্বা তন্তদ্ধ্রাং সম্পাদ্য লিখতদ্ব্যপ্রকারেণেত্যর্থঃ ॥ ২৫ ॥ বিজ্ঞাপ্য ভগবন্ স্বানভূমিমলক্ষুর্ব্বিতি নিবেদনং কৃত্বা তত্রশ্চ
পীঠাছখিত্রম্য ভগবতঃ পাছকে নিবেদয়ামি নম ইতি ভগবদগ্রে পাছকাদ্বয়ং সমর্পয়েও।
এবং প্রেলিখিতাকুদারেণাগ্রে সর্বার বিধিদ্ উন্যঃ। তং দেবং। আদিশন্দেন গীতন্ত্যক্ত্রচামরাদি । স্বানস্থানং স্থানার্থমৈশানকোণে নির্মিত্রানমণ্ডপং। তদভাবে ভাবনীয়েবেভাবং
সর্ববৈর বোদ্ধনাং ॥ ২৬ ॥ তত্র স্বানস্থানে। ভগবন্ স্বানীয়ং নিবেদয়ামি স্বাহেভাবং
নিবেদ্য । ঘদ্যাপি স্বানম্দ্য পৃথক্ লিখিতান্তি। সাচাগ্রে দর্শ্যা। তথাপি শিক্ষাচারাদম্তী
করণী ধেনুনুদ্বিত প্রস্কার্থিদ্যামপি দর্শয়েও। অতএব লিখিতং বুধইতি।। ২৭ ॥ শালগ্রামশিলাক্রপমিত্যেবং কৃচিং কৃচিন্নির্দেশ স্ত্র্যাহান্ত্রাভ্রাপেক্ষয়া কেবাঞ্জিং সতাং জীমুর্জ্যা সহৈব
ভংগুজয়া ভংপ্রকারবোধনায়েতি দিক্। স্বানপাত্রে নিবেশয়েদিতি জীচরণাম্ত পেক্ষয়া কল
বিশেষাপেক্ষয়া বা।। ২৮ ॥

অর্ক্সেদিত্যনেন যদ্যপি প্রস্থায়াং করিবের ওতংপাত্রমপেক্যতে।তথাপ্যপ্রারেষুস্থানক্য

कनगामि शृक्षायाः श्राहर भउदार्थिकः । यार्क्रसम्य उत्पाद श्राहणा श्राह

অথাভ্যক্সদ্রব্যাণি তমাহাত্মণে। কান্দে। মালতী জুতিমাদায় সুগন্ধানার বা পুনং ॥ ৩১ ॥ তথান পুলাজালীনাং গৃহীত্মা ভক্তিতোনরাং। যে সুপেয়ন্তি দেনেশ মুৎসবে বৈ হরে দিনে । মেদনীদানতল্যং হি কল্মুক্তং স্বয়ন্ত্র । যঃ পুনঃ পূলা তৈলেন দিবৌষধিষ্তেন হি। মভাসং কুরুতে বিক্ষোর্মধ্য কিপ্তা তুকুক্মং। রোমাঞ্চিত্তনু জুত্র। প্রিয়য়া সহ মাধবং । প্রীত্যা বিভর্তি স্বোংসঙ্গে মন্তর শতং হরিং। বিষ্পুধ্যোত্রে চ। গন্ধতৈলানি দিব, নি সুগন্ধীনি শুচীনি চ।কেশ্ব-বায় নরোদত্ব গন্ধবিজ্ঞ সহ সোদতে ॥ ৩ই ॥

তথ পঞ্চামূতনুপনং। ততঃ শব্দভ্তেনৈর ক্ষারেণ সাপায়েৎ ক্রমাং। দধ্য ঘৃতেন নধুনা খণ্ডেন্চ পৃথক শৃথক। পঞ্চামূতাদ্যৈ নুপনংসদা নেচ্ছ তংশ্রিয়াঃ। কিন্তু তৈঃ কালদেশাদিবিশেষে কারয়ন্তি তং ॥ ৩৩॥ অথ তৎপরিমাণং ॥ র ক্ষপুরাণে। দেবানাং প্রতিমা যত্র ঘৃতাভ্যক্ত হতোভবেৎ। পলানি ভস্য দেয়ানি প্রদায়া পঞ্জবিংশতিঃ। অটোভরপলশতৎ সানে দেয়া সর্বাদা। দ্বে সহস্থে পলানার মহাসুনে চ সংখ্যা। দাতবেঃ যেন স্কাসুনিক্ছ নির্মাতি তদ্যুত্মিতি॥ ৩৪॥

মুখ্যত্বেনাত্র লিখিতঃ। পদাগুত্নমুদ্ধনং দশনহস্কমলদনে ছং। যদা পদাং সংখ্যাবিশেষঃ তদ্যাপ্যযুত্থ তাবদ্ধপুদ্ধাসমুদ্ধনং পুণামেকদিনেনৈ প্রাপ্তেতিয়গ্যাহ ।। অন্তরান্তরা আনকলি মধ্যে মধ্যে ধুপ্রন্ স্বরভিধূপমর্থয়ন্। তথাচ জীরামার্চনচল্রিকায়াং। আনোপচারমধ্যে। সক্ষণগুরুপুপেন ধূপরন্ধান্তরেতি। অতএবানা মাহান্মামগ্রে লেখাং লানকালে তুক্ষামা অগুরুং দহতে দ্ব যং ইত্যাদি॥ ৩০॥ এবং সামান্যেন স্থানপ্রাক্তরং লিখিত্বা ইদানীং বিশেষ্টালিখিতি তত্র বিভ্যাদিনা স্থাপয়েৎ পুনরিভান্তেন।।

॥৩১। বৈ ইতি বিশেষে। নিতাংবে সাপয়ন্তি বিশেষত শৈচকাদশাছোৎসবদিনেইতার্থঃ॥৩২॥
পথক্ পৃথক্ ইতি তেষাই চন্তঃধন্ত্বীপচারে যুক্তন্য প্রত্যেকমুপচারন্য নিজার্থং পৃথক্তেন তত্ত্বংকলোক্তেঃ॥ ৩৩॥ প্রমেতি পাঠে পরিমাণমিতার্থঃ। তন্য ঘৃতন্য পঞ্বিংশতিঃ
পলানি অবশাং দেয়ানি। শক্তোচ নত্যামফৌত্তরপলশতংদেয়মিতার্থঃ। যদা তৈনাদিতিরিব
মৃতেন বোহভাক্তত্ত্বপঞ্বিংশতিঃপলানি। সানেচাফৌত্তরশতপলানি দদ্যাদিতার্থঃ। ১৯ "

দুঝাদাবিশি সংখ্যেরমেবং জেয়া মনীবিভিঃ। পলসংখ্যা চ বিজেয়া হাজবেল্ক্যাদি বাক্যভঃ।৷ ৩৫ ।৷ তথাহি। পঞ্জফলকোমাবতে সুবর্গন্ত বাড়েশ। সুবর্গনাঞ্চ
চতারঃ পলনিত্যভিধীয়ত ইড়ি।৷ ৩৬ ।৷ কিঞ্চ। সুনোর্থে সুবভাক্ষীরং মহিব্যাদ্যান্ত কুৎসিতাঃ।৷

व्यथं को व्राप्तिभागमाराकार। विक्षुध्यां खटन। महीवपूर्धमानर मरमापूर्ध विनाचनर । कोरतम मुशनर विस्थाः कीता छाधियम ७था ॥ ७१। धारी-পুরাবে। গৰাৎ শতসঃ বিথেভাঃ সমগ্রন্তস্য যথফলং। মৃত প্রেল তারিফোন क्टि प्रानाम मरभागः। हेन्द्रम्। यान मर्थाक्षा मक्षतीमा वमुक्षता। घृरकामरकन সংযুক্তা প্রতিমা সুপিতা কিল। প্রতিমাসংসিত। ইম্যাৎ যুতেন জগভাং পতিং। সাপীয়ত্বা সমভাচ্চা সর্বাপাপেঃ প্রমুচ্যতে ।। ৩৮।। জানতোইজনৈতোবাপি যৎ পাপং কুরুতে নরঃ। তৎ কালয়তি সন্ধ্যায়াং ঘৃতসুপনতোবিতঃ। যেযু ক্ষীর বহানদের। নদাঃ পায়সকর্দ্রাঃ। তারেঁ।কান্ পুরুষা যান্তি ক্ষীরসাপনকা হরেঃ।৩৯। বিষ্ণুধয়ো। জীপুলন্ত্যপ্রহ্লাদসম্বাদে । ছাদশ্যাং পঞ্চদশ্যাঞ্চ গব্যেন হরিষাহরেঃ। সুপন্ৎ দৈত্যশাদূল মহাপাতকনাশন্ৎ দ্ব্যাদীনাৎ বিকারাগাৎ করিতঃ সম্ভবো-যথা। তথৈবাশেষকামানাং ক্ষীরসানং ততোহরেঃ। নারসিংহে। পায়সা যন্ত ६मरवना आश्राकाक प्रकार । नर्सना निष्काचा विकृतनारक मही ग्रस्ट ।। १० ।। आशा मध्य मक्षियु । निर्माण श्रियमर्गन । विष्णांकश्वाद्यांकि (भवाभानः স্রোত্তিমঃ । দুঃস্বরশমনৎ তেয়ম মঙ্গল্যবিনাশনং । মঙ্গল্যবৃদ্ধিদং দথা সুপনং नविश्वक्रव ।। 85 ।। यः करबाजि स्रविक्षांश्यभून। माशिजाश्मतः । अधिरतारिक म মোদিতা পুনবিষ্পুরে বসেৎ। মধ্না সুপনং রত্তা দৌভাগ্যমধিগচ্ছতি।লোক-মিত্রাণ্যবার্গোভি ভবৈধবেক্ষুরসেন চ । জীলারকামাহাত্ম্যে চ। জীমার্কণ্ডেং ন্দুদ্যুন্ अश्वादम । की त्रमान १ ६ कूर्विति य नता विक् मुर्किन । एका मारमध्यः पूर्वाः विक्तून। বিক্না ফুত্থ ৷ ক্রিদেশগুল্ম দ্বা ঘৃত্থ ত্যাদশোভর্থ ৷ ঘৃতাদশগুণ্ কৌত্রং খণ্ডং তলাদ্দশোতর ।। ৪২ ।। পুস্পোদকঞ্চ গর্জোদং বর্দ্ধতে চ

ইয়ং দৃতবিবয়িকা যা সংখ্যা সৈব॥৩৫॥ পঞ্চ ক্ষলকানি গুঞ্জা ফলানি যানিন্দা। তে মাখাঃ
ব্যাদ্শ স্বৰ্ণঃ॥৩৬॥ কুৎ বিভাই তি তাসাং ক্ষীরমপি নিত্যং স্থানার্থং ন প্রাছমিত্যর্থঃ॥
৩৭॥ প্রস্থানিকংখ্যা চ গোপথত্রান্ধা। ছাত্রিংশংপলিকং প্রস্থান্ধার স্থানথকা। আঢ়কন্ধ তত্তপ্রেইশ্চন্ত ভির্দেশ আঢ় কৈরিতি॥৩৮॥ সন্ধ্যায়াং যদ্যুত ক্রপনং তেন তে। বিভোগ গ্রাহাং পতিঃ॥৩৯॥ ছাদশ্যামিতি প্রায়ো বৈফ্রানাং ছাদশ্যামুপকাসাপত্তের ভদিনইতার্থঃ। লানং ন হর্যে দদ্যান্দালাং বৈফ্রানিং ত্যাদিলেখ্যব্দনাৎ। যদা ছাদশ্যামিতি ছাদশীরাক্রাবিভার্তি। দিবৈব তক্র হ্রিমপননিষেধাৎ। এবমন্যক্রাপ্রস্থং। ছাদশ্যামিত্যাদিকং তক্র তক্র ফলবিশে যার্থং। তত্ত্বস্ত সর্বাস্থিপি ভিরিম্বিতি জ্বেয়ং অন্যপ্রা ব্চনান্তরৈ বিরোধাপত্তেঃ। এবমপ্রেপি॥৪০॥ স্থাপা স্থাপরিস্থা।। ৪১॥ স্থাপরন্সন্ অর্চাং প্রজাং অপনাত্রক প্রদামিত্যর্থঃ॥ ৪২॥ প্রস্থান্দ্র স্থাপান্ধার বির্বাধাপত্তিঃ।। ৪২॥ স্বেপান্দান্ধার স্থানিত্যর্থঃ॥ ৪২॥ স্বেপান্দান্ধার স্থানিত্র বির্বাধাপত্তিঃ।। ৪২॥ স্বেপান্দান্ধার স্থানিত্র বির্বাধাপত্তিঃ।।

দশোভরং। গজোদকঞ্চ দভোঁদং তথৈষ নৃশসন্তম। আকারসং চ্তরসং শতবাজিন সংখঃ সমং। তথৈব তার্থনীরক্ষ ফলং ইচ্ছতি ভূমিপ ।। ৪৩ ।। সুপনং রক্ষ দেবস্য যা করোতি ফশক্তিভঃ। ফলমাপ্রোতি তৎ প্রোক্তং দিছামোমুক্তিমাপুরাং। বিষ্ণুধর্মোভরে। তার্থোদকানি পুণ্যানি স্বর্থানীর মানবঃ। তৈরস্য সুপন্থ দন্ত্রা সর্ব্বপাপেঃ প্রসূচ্যতে ।। ৪৪ ।।

चर्य मुशरन धृशनमाश्चार । क्वांत्म । चानकारंग खक्षमा चरकर प्रहा ख यह । श्राविक्षानाभिकात्रक्षुर शाशर ज्याप्तर परहिष्ठि ।। १८ ।। উप्तर्धनश्च रेडनारमत्र शभावनकात्र ११ । स्वमा कात्र सम्मुरेवाक्र अपूर्टक्केन छत्र ।। १७ ॥

ত্বিষ্ঠাৰ ক্ৰিয়াল ক্ৰিয়াল বিষ্ণুধর্মোন্তরে। উধীর কূচকাৰ দত্ত্বা সক্ষাপাল প্রমান্ত । দত্ত্বা চামরকং কূচিৎ প্রমান্ত । দত্ত্বা চামরকং কূচিৎ প্রিয়াশোক্ত নৃত্তমাং ।। ৪৯।।

অথ শুদ্ধলন্দ্রপান । ততঃ কোঞ্চেন সংস্থাপ্য সংস্থানে সুগদ্ধিনা।
শীতলেনাসুনা শশ্ভত্তেন ব্যাপয়েৎ পুনঃ। তদুক্তমেকাদশক্ষকে। চন্দনোধীর

দকাদীনাং মাহ।ত্মাবিশেষোক্তেতৈরপি শাপয়েদিত্যুয়ং।তথাচোক্তং শ্রীরামার্চনিচক্রিকায়াং। নারিকেলোদকেনাপি কপুরাদিস্থান্ধিনা। কদলীপনসামাদিজলেনাপি স্থান্ধিনা। শতং সহসু-মযুতং শক্তাা বাপ্যভিষেচয়েদিতি॥ ৪১॥ তং অখ্যেধজাদিকং প্রাগ্নোতি সকামঃ॥ ৪৪॥

ধূপয়য়য়রায়য়েত্রিত যথ য়ানকালে ধুপনং লিখিতং তয়াহায়াং লিখতি য়ানইতি। যং অগুরুং
দহতে দহতি জনঃ দএব প্রবিষ্টঃ সন্। ঘইতি পাঠে তদ্য পাপমগুরুরের দহেও। প্রবিষ্টোলাসিকাং গলাইতি পাঠেছিপি ভবৈষার্থঃ শ্রেপ্রিষ্টাইতি সপ্তমান্ত পাঠে তদ্যালোইতি শেষঃ। ততাক
দ এবজনামুভকুতং পাপং দহেও। যদা পাপং ছঃখন্তপং লাসাযুতং জন্মুমুতেপি ছঃখংনাপুয়াদিত্যর্থঃ॥ ৪৫॥ উপযুক্তৈঃ উদ্বর্ভনযোগৈর্যবচূর্ণদিভিঃ॥ ৪৬॥

ব্যপোহতি নির্ন্যতি। ৪৯॥

কোফেন ঈष ९ উ क्लिना बुना नमाक् आश्री द्वा । अनावा श्रका मृ छानि तिशान श्रमा । श्रम

কপুরকুষুনাগুরুবাসিতৈ:। সলিলৈ: স্নাপ্রেমন্ত্রী নিত্যদা বিভবে সভি।। ৫০। তথ জলপরিমাণ । ভবিষ্যে। স্নানে পলশতং দেয়নভাঙ্গে পঞ্চবিংশতি:। পলানাং বে সহস্তে মহাস্নানং প্রকীর্ত্তিং।। ৫১।।

অথ জলগ্রহণকালঃ । তত্র যাজ্ঞবনক্যঃ । ম নজে । দকপুজ্পাদ্যৈ রার্চনং স্থানমন্তি । বিষ্ণুঃ । ন নজং গৃহীভোদকেন দৈবক্ম কুর্য্যাং । হারীভঃ । রাজাবেভাজাপো-বরুণং প্রাবিশস্ত তমান্ন রাত্রো গৃহীয়াং ।।

অথ লগন মাহাজাং । নারসিংহে । নিগালামপনীয়াখ তেত্রিন ল'পা কেলবং। নরসিংহারুভিং রাজন্ সর্বপাপেঃ প্রমুচ্যতে।গোদানজং ফলৎ প্রাপ্তি হালে-নাম্বশোভিনা। নরসিংছপুরং প্রাপ্য মোদতে কালমক্ষরং। কিঞা রাপ্য ভোয়েন ভক্তা তু নরসিংহং নরাধিপ ৷ সর্বপাপ বিনিমুক্তোবিফুলোকে মহীয়তে ৷ নরসিৎহন্ত সংস্থাপ। কপুরিভিরুবারিণা। চন্দুলোকে স মোদিত্বা পশ্চাদ্বিষ্ণুপুর बरम् ।। ७२ ।। किथा कूम्भू प्लाम्त्कनाणि विष्ट्रां नक्मवान या । बर्ज्जा मत्कन माबिज्य की:नब्य रूपवांतिना। विस्थिरमाञ्चतः। রজোদকপ্রদানেন প্রিয়মাপো-छान् इगा । वीत्सामक श्रमात्म किया भाषका भाभ ग्रा । भूका छात्र श्रमात्म জীমান্ভৰতি মানবং। ফলতোয়প্ৰদানেন সফলাং বিন্দ:ত ক্রিয়াং। হয়শীর্মপ্র-রাত্রে। সুগল্পিনা যভোমেন স্বাপয়েজ্জলশায়িনৎ। ব্রহ্মলোকমবাপ্লোভি যাবদি-मुम्क छम्म । शांक एए। उन्हों मिखर छोरयन जाश ये छन। मूर्न १। शृंक ये छि ভাবেন ধন্যান্তে ভুবিমানবাঃ ।। ৫৩ ।। অগ্নিপুরাণে । মহাসানেন গোবিদং সম্যক্ সংবাপ্য মানবঃ। যং ষংপ্রার্থরতে কামং তং তং প্রাপ্রেত্যসংশয়ঃ।। ৫৪।। পালে জ্ঞাপ্লস্ত্যভগারথস্থাদে। স্থানমভ্যক্তিৎ হস্ত কুরুতে কেশবে সদা। তস্য পুণ্যস্য হা সংখ্যা নান্তি মা জানগোচরেতি ।। ৫৫ ।। বিষাধমোভিরে। লানার্থং দেবদেবস্য যন্ত্র শালাং প্রথচ্তি। ভবতি বশগান্তস্য নার্যাঃ সর্বতে সর্বাদা। প্রসা-मानाज्या लाटक ভवछीर कनानिष्टः । मञ्जो गृगमम्बान नर्सान् कामीन-वाभू मार्ट ॥ एक ॥ मर्स्वीयिधिकात्मन वाकित्यथकतः नाउद । पञ्च काठीकतः मुथारे मकलार विक्रिक कियार ॥ ७१॥ ज्य मर्व्यायिथि । मूबा मारमी वहां कुछेर

পশ্চাৎ শীতলেনামুনা স্নাপয়েং। কথ মুতেন সর্কৌষধ্যাদিভিঃ শংকুতেন হংগল্পিনা চ।। ৫০।

দেকন। বদা। কুশান্ত প্রাপান প্রক্রার্থিত মিত্রর্থিং। মহাস্নানে প্রক্রীর্ত্তিক ইতি বা পাঠঃ।।

ক্রাপ্য স্থাপরিস্থা ॥ ৫২ ॥ জলবিশেষণা কলং লিখতি কুশেতি কুশপুপ্যযুক্তা
দকেন। বদা। কুশান্ত পুপ্রাণি চ তদ্যুক্তোদকেন এবসগ্রেপি । শক্তো সভ্যাং রক্ষোদকাদিনাপি স্নাপনং বোজবাং ॥ ৫৩ ॥ সম্যক্ বর্থাবিধীত্রর্থং ॥ ৫৪॥ কেশবে কেশবসা স্থানবিধীত্র্যং ॥ ৫৪॥ ক্রিয়াং বর্কোদ্যমানি স্থানবিধীত্রর্থং ॥ ৫৭॥

শৈলেরং রজনীদয়ং। শঠী চম্পকমুন্তঞ্চ সর্ব্বেষধিগণঃ ক্ষৃতঃ ।। ৫৮।। গন্ধশ্চাগমে । গন্ধশ্চন্দন কপূরিকালাগুরুভিরীরিতঃ ।। ৫৯ ।।

অথ শস্থমাহান্ত্রাং । ক্ষাধ্যে। শীব্র ক্ষনারদসম্বাদে। শস্ত্রতিন ভোয়েন यः স্নাপয়তি কেশবং। কপিলাশতদানস্য ফলং প্রাস্থেতি মানবঃ। শস্থে তীর্থে:-দকং কৃত্বাযঃ স্থাপয়তি মাধবং । দাদশ্যাং বিন্দুমাত্রেণ কুলানাং তারয়েচ্ছত । কপিলাক্ষীরমাদায় শভো কৃত্বা জনার্দনং ৷ যা স্লাপয়তি ধর্মাত্মা যজাযুতকলং লভেং। অন্যাসম্ভবংক্ষীরং শক্ষে ক্ত্র। তুনারদ । যঃ স্লাপয়তি দেবেশং রাজসূহফলৎলভেৎ। শশ্বে রুত্বা চ পানীয়ং সাক্ষতং কুসুমান্বিতং। স্নাপয়েছেব-দেবেশং হন্যাৎ পাপৎ চিরার্জিভং। সাক্ষতৎ কুসুমোপেভৎ শঞ্জে ভোয়ং স-हन्मन १। यः क्ञा माभरत्राम्व भ्यम लाकि वरम् क्रित । किश्वा भरका मकः भाष्य ্যঃ সাপয়তি কেশবং । দমোনারায়ণায়েতি যুচ্যতে যোনিসঙ্গটাং । নাদ্যৎ ভড়া-গাজং বারি বাপীকূপজ্মাদিজং। গাঙ্গেরঞ্চ ভবেৎ সর্বাং ক্লভং শঙ্খে কলিপ্রিয়। ত্রৈলোকে, যানি তীর্থানি বাসুদেবস্য চাজয়া । শভ্যে তিপ্ততি বিপ্রেন্দু তন্মাৎ শস্বং সদার্চ্চরেং।। ৬০।। শক্ষে কৃত্ব। তুপানীরং সপুস্পৎ সতিলাক্ষতং। অহাং দদাতি দেবস্য সসাগরধরাকলং ।। ৬১ ।। অর্ঘ্যং দত্ত্বা তু শব্খেন যঃ করোতি প্রদ-ক্ষিণং । প্রদক্ষিণীকৃতা তেন সপ্তদ্বীপা বসুহার। । দর্শনেনাপি শব্দস্য কিংপুনঃ স্পর্শনে ক্লতে। বিলয়ং যান্তি পাপানি হিমং সূর্য্যোদয়ে যথা। নিত্য নৈমিভিকে কান্যে স্নার্চনবিলেপনে শস্থানুষ্ঠতে যন্ত খেতদীপে বদেচিরে । নত্বাশস্থ করে পূদা মল্লেণানেন বৈষ্ণবঃ। যঃ শ্লাপয়তি গোবিন্দং ত্রু পুন্মনন্তক । মন্ত্র । দ্বং পুরা সাগরোৎপলোবিফুনা বিধৃতঃ করে। মানিতঃ সর্বাদেবৈশ্চ পাঞ্জন। নমে-স্তাত । তব নাদেন জীমূতা বিত্রস্তি সুরাসুরাঃ । শশাক্ষাযুত্দী ওচ্ছ পাশুজন্য নমোস্ত তে। গর্ভা দেবারিনারীণাৎ বিলীয়ন্তে সহসুধা। তব নাদেন পাতালে পাঞ জনঃ নমোস্ত তে। বারাহে চ। দক্ষিণাবর্ত্তশঞ্জেন তিলমিশ্রোদকেনচ। উদকে নাভি মাত্রে ত্ যঃ কুর্যাদিভিষেচনং। প্রাক্ স্মোভিমি চ নদ্যাং বৈ নরস্ক্রেকাগ্রমানসং। যাব জ্ঞীবরুতং পাপ্তত্ক্ষণাদের নশ্যতি। দক্ষিণাবর্ত্তশঞ্জেন পাত্রে ওডুম্বরে স্থিতং। উদকৎ যং প্রতীচ্ছেত শির্মা রুঞ্মানসং। তন্য জন্মতং পাপং তৎক্ষণাদেব

মুরা ভোটেতি প্রশিক্ষা। মাংশী জটামাংশী। শৈলেরং শৈলক ইতি প্রশিক্ষং। রজনী-দ্বাং হরিদ্রা দারুহরিদ্রা চ।। ৫৮ ॥ চন্দনাদিভিভাগবিশেষেণ সাধিতোদ্রব বিশেষো গরা ইভীরিতঃ ইত্যর্থঃ।। ৫৯॥

ততঃ শশ্বে নাভিষেকংকুর্য্যাদিত্যাদিনা প্রস্তুতন্য শশ্বন্য মাহান্মং লিখতি শশ্বেত্যাদিন। তথ ন্দ্রনাগরধরাদানস্য কলং তদ্য ভবতীতি শেষঃ ॥ ৩১॥ প্রসঙ্গাদিকিণাবর্ত্তশন্ধমাহান্ম্যমণি

নশ্যতি । আগমে । বৃহত্ত্বং স্থিতা ইচ্ছত্বং শহ্মস্যেতি গুণ্ডয়ং । আবর্ত্ত্বং দাবন্ত হেন্যোগান জায়তে। নালিকায়াং স্থভাবেন যদি ছিদ্রং ভ্রেন্থাতি। ৬২। ঘটাবাদ্যক্ষ নিতরাং সানকালে প্রশাস্তে। যভোভগবভোবিক্ষান্তং সদা পরসং প্রিয়ং ॥ ৬৩॥ নারদপঞ্চরাত্রে। আবাহনার্ছ্যে ধূপে চ পুষ্প নৈবেদ্যযোজনে। নিত্যমেতাং প্রযুজীত তন্মন্ত্রণাভিমন্তিতাং। তন্মন্তঃ । জয়ধুনি তভোমস্ক্রমাতঃ স্থাহেত্যুদীর্য্য চ। অভ্যচ্য বাদ্য়ন্ ঘণ্টাংধূপংনীচৈঃ প্রদাপয়েং। পূজাকালং বিনান্ত হিতংনাস্যাঃ প্রচালনং। ন তয়া চ বিনা কুর্যাৎ পূজ্বং সিক্ষিলালসঃ।

অথ ঘণ্টামাহাত্মাং । উক্তঞ্চ কান্দে । শীব্ৰহ্মনারদসম্বাদে । সুখনচর্চনক্রিয়া-কালে ঘটানাদ্ করোতি যঃ। পুরতোবাসুদেৰস্য তস্য পুণ্যফলৎ শৃণু। বর্ষকোটি সহসুতি বর্ষকোটিশতানি চ। বসতে দেবলোকেতু অপ্সরোগণ্সেবিতঃ। সর্ববাদ্য-ময়ী ঘণ্টা কেশ্বস্য সদা প্রিয়া। বাদনালভতে পুণ্যং যজকোটিসমুদ্ধবং। বাদিত্র-निक्टेम व्यूर्व । श्री मार्थिक शाविकः कोवम् क्लांकरिक महा वानिकानाम जाद छ शृक्षाकात्न वि नर्यमा । यन्गेनरका नरेतः कार्याः नर्यवानामशी যতঃ। সর্বাদ্যময়ী ঘটা দেবদেব স্য বল্পভা। তক্ষাৎ সর্বপ্রথত্নেন ঘণ্টানাদং ভু কারয়েং। মন্তর্সহস্থানি মন্তরশতানি চ । খণ্টানাদেন দেবেশঃ প্রীতোভবতি কেশবঃ। বিষ্পুধর্মোত্তরে জীভগবৎপ্রহলাদসম্বাদে। শ্ণু দৈত্যেন্দু বক্ষ্যামি ঘন্টা-মাহার্যসূত্রমং। প্রহলাদ স্বংসমোনান্তি মদ্ভক্তোভুবনত্রয়ে। মম নামান্ধিতা ঘণ্টা পুরভোমম তিষ্ঠতি। অচিতা বৈক্বগৃহে তত্র মাং বিদ্ধি দৈতঃজ। বৈনতেয়া-ক্ষিতাং ঘণ্টাং সুদুষ্মনযুতাৎ যদি। মমাগ্রে স্থাপরেদ্বস্ত দেহে তস্য বসাম্যহৎ ।৬৪। यस वामग्रत्य घन्टा ९ रेक्न एव एवन विङ्किका १। भूष्य नी द्राज्ञत मान शृकाकारम বিলেপনে। মমাত্রে প্রত্যহং বংস প্রতে কং লভতে ফলং। মথাযুতং গোমৃতঞ চন্দুায়ণশভোদ্ভবং । বিধিবাহ্যকৃত। পূজা সফলা জায়তে নৃণাৎ । ঘণ্টান্দিন ত্টোহৎ প্রযক্ষামি স্বকং পদং। নাগারিচিক্লিতা ঘণ্টা রথাঙ্গেন সমন্তি।। বাদ-নাৎ কুরুতে নাশং জন্মসূত্যভয়স্য চ ।। ৬৫।। গরুড়েনাঞ্চিতাং ঘটাৎ দুট্টাহং প্রত্যহং সদা। প্রীতিং করোতি দৈত্যন্দু লক্ষ্মীং প্রাপ্য যথাহধনঃ ।। ৬৬ ।। মৃতং যথা দেবাঃ প্রতিৎকুর্মন্ত্রহর্নিশৎ । সুপর্ণে চ. তথা প্রতিৎ ঘণ্টাশিখর

সামান্যেন লিখতি দক্ষিণেতি সার্দ্ধত্রেণ। অভিষেচনং ভগবতঃ স্বদ্যাপি বা। ৬২।। তং ঘণ্টাবাদ্যং॥ ৬৩।।

তস্য দেহে বসামি প্রকটন্তিষ্ঠামীত্যর্থঃ। অতোমদধিষ্ঠানবং সোপি পুজাইতি ভাবঃ॥ ৬১॥ গোহযুতং গবাযুতং গবামযুত্স্য দানজং ফলমি্ডার্থঃ॥ ৬৫॥ অধনী দরিদ্রঃ যথা লক্ষ্মীং ধন সম্পত্তিংপ্রাপ্য প্রীতিংকরোতি ভদ্বং॥৬৬॥ ঘণ্টায়াঃ শিখরমগ্রংতত্ত্ব সম্যক্ স্থিতে সতি। প্রীতিং

সংস্থিতে ।। ৬१ ।। স্বকরেণ প্রকৃষ্ণ স্থি ঘণ্টানাদং স্থভক্তিতঃ । মদীয়ার্চ্চনিকালে তু
ফলং কোট্টান্দবং কলো ।। ৬৮ ।। স্বন্যত্ত । ঘণ্টা দণ্ডস্য শিখরে সচক্রৎ স্থাপয়েরু য়ং । গরুড়ং বৈ প্রিয়ং বিষ্ণোঃ স্থাপিতৎ ভুবনত্রয়ং । সচক্রঘণ্টানাদন্ত নৃত্যুকালে শ্ণোতি যঃ । পাপকোট্যুভস্যাপি নশ্যন্তি যমকিক্ষরাঃ । সর্বে দোষাঃ প্রলীয়ন্তে ঘণ্টানাদে ক্রতে হরো । দেবতানাং মুনান্দাণং পিতৃণানুৎসবোভবেৎ ।
স্বভাবে বৈনত্যুস্য চক্রস্যাপি ন সংশয়ঃ । ঘণ্টানাদেন ভক্তানাং প্রসাদং কুরুতে
হরিঃ । গৃহে ঘন্মিন্ ভবেনিত্যং ঘণ্টা নাগারিসংযুতা। ন সর্পাণাৎ তত্র ভয়ৎ নারিবিদ্যুৎ সন্ত্রং । যস্য ঘণ্টা গৃহে নান্তি শুলুন্চ পুরতোহরেঃ । কথং ভাগবতং
নাম গীয়তে তস্য দেহিনঃ । ইতি । অতোভগবতঃ প্রতিয় ঘণ্টা প্রাক্রড়ান্থিতা। সং
গ্রাহ্যা বৈঞ্চবৈর্যান্নচক্রেণাপরি মণ্ডিতা। সানে শন্ধাদিবাদ্যন্ত নামসন্ধার্ত্তনং হরেঃ ।
গাতং নৃত্যং পুরাণাদিপঠনঞ্চ প্রশাস্তে ।। ৬৯ ।।

অথ সানে বাদ্যাদিমাহান্তাং । ক্রন্পুরাণে। স্নানকালে তু ক্ঞ্ন্য শঞ্চাদীনান্ত বাদনং। কুরুতে ব্রহ্মলোকে তু বসতে ব্রহ্মবাসরং । সানকালে তু সংপ্রাপ্তে ক্ষ্ণ্যাগ্রে তু নর্ত্রনং। গীতকৈব পুনাত্যত্র শ্বচোক্রং বদনেন হি ।। ২০ ।। তবৈব শ্রীব্রহ্মনাবদসন্থাদে। মূদস্বাদ্যেন যুত্থ পণবেন সমন্থিতং। অর্চনং বাস্দেবস্য সন্তঃং মোক্ষদং নৃণাং। গীতং বাদ্যঞ্জ নৃত্যঞ্জ তথাপুস্তকবাচনং। পূজাকালে তু ক্ঞ্ন্য সর্বাদ কেলবপ্রিয়ং। নৃত্যবাদ্যাদ্যভাবে তু ক্র্য্যাৎ পুত্তক বাচনং। পূজাকালে দ্বিদং পুত্র সর্বাদা প্রতিদায়কং। পুত্তকস্যাপ্যভাবেত্ত বিষ্ণুনামসহসূকং। স্তবরাজ্য মুনিশ্রেষ্ঠ গজেন্দুস্য চ মোক্ষণং। পূজাকালে তু দেবস্য গীতান্তোত্রমনুম্মৃতিঃ। পঞ্জন্তবা মহাভাগ মহাপ্রতিকরা হরেঃ। বিহায় গীতবাদ্যানি পূজাকালে সদা হরেঃ। পঠনীয়ং মহাভক্ত্যাবিফোর্নামসহসূকং।। ৭১।। দ্বারকামাহান্ত্যে। স্থানকালে তু ক্ঞ্ম্যজন্ত্রমাধন্য করেতি যং।করতাড়নসংযুক্ত্য গীতং নৃত্যং প্রকৃত্রতে। উন্মন্তচেন্তাং কুর্বাণে হসন জন্পন যথেচ্ছয়ায় নোভানশায়ী ভবতি মান্তরক্ষের্য়া । ২২ ।।

করোমীতি শেষঃ। প্রীয়েইতিবা পাঠঃ। স্থপর্টেনমীতি পাঠে এমি প্রাপ্রেমি। পুনঃ দক্ষিরার্ষঃ॥৬৭॥ ঐন্দবং চান্দ্রায়ণং তৎ কোটিসমুদ্ধবং কলমিত্যর্থঃ। দীনারকোটিজমিতি পাঠে দীনারং স্থবন-মুদ্রাবিশেযঃ তৎকোটিদানজং॥ ৬৮॥ নশান্তি অদৃশ্যা ভবন্তি পলায়ন্তইত্যর্থঃ॥ ৬৯॥

পুনাতি নর্ত্তনাদিকর্ত্ব্ । ঋচোক্তং বদনেন হীতি ঋগ্রেদেন স্বমুখেন সাক্ষাদ্য়মর্থং সাধিত ইত্যর্থঃ। যদা। অত পাবনে যৎকলং তদ্চৈবোক্তং নান্যস্য বদনে প্রভবতীতার্থঃ॥ ৭০॥ অর্চননিতানেন প্রজাকালে বিত্যাদিনা চ যদ্যপি প্রজায়াং সর্ব্বোপচারেয়ু সর্ব্বদৈব বাদ্যাদিকং বিহিতং। তথাপ্যত্র মুখ্যোপচারে স্নানে স্নানকালে বিত্যাদিবচনসঙ্গত্যা প্রাপ্তলিবিতং। এব মগ্রেপি॥ ৭১॥ মাত্তরক্ষে উত্তানশায়ী ন ভবতি মুক্তোভবতীত্যর্থঃ॥ ৭২॥

অথ সহসুনামমাহাত্মাং। তত্তিব। সানকালে তু দেবস্য পঠেনামসহসুকং। প্রত্যক্ষরং লভেৎ পুণ্যং কপিলাগোশতো টুবং। বিষ্ণুধর্মোভরে। রুত্বানামসহ-পুেণ স্তৃতিৎ ওস্য মহাত্মনঃ। বিয়োগমাধোতি নরঃ সর্বানথৈ নিসংশয়ঃ। স্কান্ধে-শ্ৰীব্ৰহ্মনারদসম্বাদে। বিষ্ণোর্নামসহসূত্র পূজাকালে পঠন্তি যে ৷ বেদানাকৈব পুণানাৎ ফলমাপোতি মানবং। প্লোকেনৈকেন দেবর্ঘে সহস্নামকস্য যং। পঠিতেন ফলং প্রোক্তং ন তৎ ক্রন্তশতৈরপি । মন্ত্রহীনং ক্রিয়াহীনং যং-রুত্ৎ পূজনৎ হরেঃ। পরিপূর্ণ ভবেৎ সর্বাৎ সহসুনামকীর্তনাৎ। কিঞা। জ্ঞানাজ্ঞান-রুতং পাপং পঠিতা বিষ্ণান্ধী। নামাং সহসুং বিষ্ণোন্ত প্রজহাতি মহারুজং। ব্ৰহ্মহত্যাদিপাপানি কামচারক্তান্যপি । বিলয়ৎ যান্তি বৈ নূনমন্যপাপে তু কা কথা। সিদ্ধান্তি সর্বকার্য্যাণি মনসা চিত্তিতানি চ। যং পঠেৎ প্রাতরুখায় বিষ্ণোর্নামসহসূকং। তত্ত্বৈ শীরুষণার্জ্জুনসমাদে। অধীতান্তেন বৈ বেদাঃ স্রাঃ সর্বে সমর্চিতাঃ। নামাং সহসুং যোধী২তে মুক্তিস্তস্য করে স্থিত। । কুকান্পাপসহসুণি लूक्षाताणि यञ्च । পঠেয়ামসহসুদ্ধ দুর্গন্ধং ন সপশাতি। মুজ্বানামসহসুদ্ধনানে এ ধর্মোন্তিকশ্চন।কলৌপ্রাপ্তে গুড়াকেশ সত্যমেতন্ময়েরিতং। হত্তৈর্দানৈস্তপোভিশ্চ ন্তবৈঃ প্রতিনমে২জ্জ্ন। সন্ত্রিক্ত নচান্যেন বিনা নামসহসূত্র । তবং নামসসাুগ্র যেন জানন্তিবৈকলে। ভ্রমন্তি তে নরালোকে সর্বাধর্মব হিচ্চ্ তাঃ। স্তবং নামসহস্যুখ্যং লিখিতং যস্য বেশানি। পূজাতে মন সানিধ্যে পূজাং গ্রামি তস্য বৈ। যামানামসলসুং মে গৃহে তিইতি সক্ষদা। লিখিতং পাণ্ডৰশ্ৰেই তত্ৰ নোবিশতে কলিঃ। তৃষা জ মপি কৌত্তের মদ্রক্তোমন্তব। পঠন্নামসহসুংমে সর্কান্ কামানবাপ্স্যাসি। ছহ-মারাধিতঃ পূর্বাং ব্রক্ষণা লোককর্তৃণা ৷ ততোনামসহসুং মে প্রাপ্তং লোকছিতং পরং। নারদেন ততঃ পূর্বং প্রাপ্তঞ্চ পরমে ভিনঃ। নারদেন ততঃ প্রোক্তম্যীণা-মূর্দ্ধরেভসাং ঋষিভিন্ত মহাবাহে৷ দেবলোকে প্রকাশিতং কে মনুষ্যাণাং ব্যাদেন পরিভাষিতং।। ৭৩।। তপসোগ্রেণ মইতা শঙ্করেণ মহা-जाना। मध्यमानानन् वा खः छशानाम् इत्मा छ मः । मछः छवारेन। ऋ एक नामाः মে হি সহসূকং। বিশ্রুতং ত্রিযু লোকেযু ময়া তে পরিকীর্ত্তিতং। অশেষার্তিহরং পার্থ মম নামসহসুকং। সদ্যঃ প্রতিকরং পুণাং সুরাণামম্তং যথা। অফীদশপুরা-ণানাং সারমেতদ্ধনপ্তা মহাধুতা সমাখ্যাতং তব নামসহসূকং। সহস্নাম-মাহাত্মাং দৈবোজানাতি শক্ষরঃ। সহসুনামমাহাত্মাং পঠেৎ শৃণুয়াদিপ। অপ-द्राथमहरेमुख न म लिप्পा॰ कमां हन ॥ १८ ॥

মানবং প্রাপেতি অন্তে মানবাং প্রাপ্র বৃত্তীত্যর্থং। স্তবং লিখিতমিতি নপুংসকর মার্ষং॥৭৩॥
লঘুসহস্নামমাহাত্মরুজ্বা বৃহৎসহস্নামমাহাত্মং বক্ষারাদে তৎপ্রবৃত্তিক মমাহ তপসেতি
ছাভ্যাং॥ ৭৪॥

অথ শীভগৰদ্যীতামাহাত্ম্য া ক্ষান্দে অবন্তীখণ্ডে শীব্যাসোলী ৷ গীতা শুপীতা কর্ত্তরা কিমন্যে শাস্ত্রবিস্তরৈঃ। যা স্বয়ৎ পদ্মনাভদ্য মুখপদ্মাদিনিঃসূতা। সর্বাশাল্রময়ী গীতা সর্বদেবময়ী যতঃ । সর্বাধ্যমিয়ী যক্ষান্তকা দেভাং সমভ্যসেৎ। শালগ্রামশিলাগ্রে তুর্গাতাধ্যায়ং পঠেতু যং। মন্তরসহসুণিবসতে ক্রন্ধানঃ পূরে। इञ्चा इञ्चा क्रग्रथ्य मुविञ्चा नहत्राहतः । পালৈর্ন লিপ্যতে চৈব গীতাধীয়ী কথঞ্ন। তেনেন্টং ক্রন্তভিঃ সর্কৈর্দত্তং তেন গ্রাযুতং ।। ৭৫ ।। গীতামভ্যস্যতা নিত্য তেনাশুং পদমব রং ॥ १७॥ গীতাধ্যারং পঠেদ্যস্ত শ্লোকং শ্লোকার্ছ-নেব বঃ। ভবপাপবিনিমু ক্রোযাতি বিষ্ফোঃ পরং পদং।। ৭৭ ।। যোনিত্যং বিশ্ব-ন্ধপাথ মধ্যায়ং পঠতি দ্বিজঃ । বিভূতিৎ দেবদেবস্য তস্য পুণ্যৎ বদাম তেং । १৮। বেদৈরধী তর্মপুনাং সেভিছাসৈঃ পুরাতনৈঃ শ্রোকেনৈকেন তৎপ্রাং লভতে নাত্র সংশয়ঃ! আব্ৰহ্মসন্ত্ৰপৰ্য্যতং জগতৃত্তিং করোতি সঃ। বিশ্বৰূপং সদাধ্যায়ং বিভূ-তিঞ্চ পঠেতু যং ॥ ৭৯॥ অহন্যহ্নি যোমর্জ্ঞোগীতাধ্যায়ং পঠেতু বৈ । দ্বাতিংশদ পরাধাংস্থ ক্ষমতে তস্য কেশবঃ 11 ৮০11 লিখিত্বা বৈঞ্চবানাঞ্গীতাশাস্ত্র প্রয-চ্চতি। দিনে দিনে চ যজতে হরিং চাত্র ন সংশয়ঃ। চতুর্ণামের বেদানাং সারমুদ্ভঃ বিষ্ণনা ত্রৈলাক্যস্যোপকারায় গীতশাত্রং প্রকাশিতং ॥ ৮১॥ ভারতামৃত-সর্ব্বস্বং বিকোর্ব্বক্রাদ্বিনিঃসূতং। গীতাপঙ্গোদকং পীত্বা পুনৰ্ক্তবান বিদ্যাতে। ধর্মাৎ চার্থা কামঞ্জ নৌক্ষপাপী চ্ছতা সদা। আতব্যা পঠনীয়া চগীতা কৃষ্ণু থালাত। যোনরঃ পঠ:ভ নিভাং গীভাশাস্ত্রং দিনে দিনে । বিমুক্তঃ সর্বাপাপেভায়ভি विष्याः अतः अमः ॥ ৮२ ॥

অথ প্রাণপাঠাদিমাহাত্মং। পাত্মে দেবদূতবিকুগুলসম্বাদে। বিচারয়ন্তি যে শাস্ত্রং বেরাভ্যাসরতাশ্চ যে । পুরাণসংহিতাং যে চ আবয়ন্তি পাচন্তি চ। ব্যাকুর্মন্তি মৃতিং যে চ যে ধর্মপ্রতিবোধকাঃ । বেরাতেযু নিবয়। যে তৈরিয়৬

স্থাতা কর্ত্রাংশোভনাকারেণ গেয়েভ্যর্থঃ॥৭৫॥ নিত্যমভাগ্রতা যেন স্থিতিমিতি শেষঃ।

যদ্বা তেন হননাদিকর্ত্রাপি গীতামভাগ্রতা ইফং দস্তং পরমং পদপ্ত প্রাপ্তিয়িতার্থঃ॥৭৬॥ ভবঃ
সংসার এব পাপং তেন বিনিমুক্তিঃ সন্॥৭৭॥ বিভৃতিং চাধ্যায়ং॥ ৭৮॥ পুরাতনৈশঃ
পুরাবৈঃ॥৭৯॥ দ্বাত্রিংশদপরাধান্ বারাহোক্তান্ অত্যে নেখ্যান্॥৮০॥ বৈষ্ণবানাং বৈষ্ণবেভাঃ॥৮১॥ গীতৈব গক্ষোদকং পাপাদিহারিত্রাৎ ভুক্তিমুক্তিপ্রদ্যান্ত ভংগীত্রা স্থিত্সঃ
প্রসিদ্ধান্তেগদকাদিশেষমাহ। ভারতমেবামৃতং বহিরন্তঃশোধনং বেদাণবসারত্বাৎ ত্র্যাপি স্ব্রন্ত্রান্ত্রত্বিত্রার্থঃ। যদ্বা স্ব্রার্থ ক্রাণকং যদ্তারতাথ্যং শাস্ত্রং ত্রায়্র্রসভাগস্ত্র।
স্ব্রেরং। তক্তু নেদৃশং বাহ্যতীর্থমাত্রত্বাং। কিঞ্চ। বিষ্ণোমুপ্থাৎ বিশেষেণ প্রীত্যাদিময়েম
নিঃস্তং ভক্তু পাদাঙ্গুর্গণীচাদেবেতি দিক্॥৮২॥

ব্যাক্ষতি ব্যাখ্যানং কুকান্তি। নিষয়া নিষ্ণাতাঃ গতিঃ তত্ত্বং ত্যা দশনং বিজ্ঞানং সমাই

জগতী গৃতা । তদ্বৰভাগনাহাব্যৈঃ সর্বে তে হতকিল্বাঃ । গচ্ছি ব্রহ্মণো, লোকং যত্র মোহো ন বিদ্যতে । তত্রৈব শ্রীশিবোনাসয়াদে । অন্তং গতোপি বেদানাং সর্বশাস্ত্রার্থবেদ্যপি । পুৎসোহশ্রুতপুরাণস্য ন সম্যক্ গতিদশনং । বেদার্থাদিধিকং মনে পুরাণার্থক ভামিনি । পুরাণমন্যথাক্ত্রা তির্য্যগ্যানিমবাপুরাং ॥৮৩ ॥ বৃহনারদীয়ে চ । পুরাণেষ্থবাদত্বং যে বদন্তি নরাধমাঃ । তৈরজ্জিতানি পুণানি তদ্বদেব ভবন্তি বৈ ॥৮৪॥ পুরাণেষু দ্বিজ্ঞান্তাঃ সর্ব্বশিক্ত্রা । প্রবদন্তার্থবাদত্বং যে তে নরকভাজনাঃ ॥৮৫॥ আনায়াসেন যং পুরানীচ্ছতীই দ্বিজ্বান্তমাঃ । আব্যাণি ভক্তা তেনের পুরাণানি ন সংশয়ঃ । পুরাজ্জিলানি পাপানি নাশমায়ান্তি তদ্য বৈ । পুরাণশ্রবণে বুদ্ধিন্তদ্যের ভবতি ক্রেং ॥৮৬॥ কিঞ্চ। পুরাণে বর্জমানেশি পাপগাশেন যক্তিঃ। অনাদ্ত্যান্যগাধাদ সক্তর্দ্ধিঃ প্রবর্ততে ॥৮৭॥

অথ বস্ত্রাপণিং। সানমুদ্রাং প্রদর্শ্যাথ শুদ্ধসূত্রাস্থবাসসা। শনিং সংমার্দ্র্যার গাত্রাণি দিবের বস্ত্রে সমর্গরেৎ।। ৮৮।। মধ্যদেশীয়নেপথ্যাদানুসারেণ ভক্তিতঃ। কেপ্যত্র কঞ্চাফাষাদ্যমরাণ্যপরিস্তি চ।তথা চ মাংস্যে। তত্তদেশীয়ভ্রাচ্যাৎ তত্তম বিশ্ব কারয়েং।। ৮৯।। একাদশহ্ব প্রেভিগবদক্তা। অলক্ষ্রিতি সপ্রেম মদ্বক্তামাৎ যথোচিতং।।৯০।। ভবিষ্যেচ। বাসোভিঃ পূক্রেরিক্তৃৎ যান্যেরাক্সপ্রিয়াণি তু । তথানৈ ক্রম শুভিদিব্যির্দ্রহিষ্টে দুকুলকৈঃ। বাসাংসি চ বিচিত্রাণি সারবন্তি শুচানি চ। স্পত্যানি হরে দ্ব্যাৎ বিকেশানি নবানি চ।।৯১।। ভূষয়েছভিব্রৈরিচিত্রৈঃ কথাকাদিভিঃ। ভোগানশুরমেবেতি বহুনাৎ সম্যতৎ সভাৎ।।৯২।।

তথ্ঞীমদঙ্গাৰ্জনমাহাত্মং হোবকামাহাত্মো। কৃষ্ণং দানাত গাত্তত ববেণ পরিমার্জতি । তস্য লক্ষার্জিতস্যাপি ভবেৎ পাপস্য মার্জনং।

নভবতি ॥ ৮৩॥ তদ্বদেব অর্থনাদৰপাণি বিকলান্যেব ভবস্তীত্যর্থঃ॥ ৮৪॥ হে দ্বিদ্ধ-শ্রেষ্ঠাঃ॥ ৮৫॥ (হে দিজোন্তমাঃ॥ ৮৬॥ পাপপাশেন যন্ত্রিতঃ বশীক্তভাজনঃ পুরাণমনা-দৃত্য অন্যগাথাস্থ প্রাক্তগীতবদজ্জনশ্রবণমাত্রপ্রিয়াস্থ অপৌরাণিকীষ্ অসংক্থাস্থ আসক্ত-বুদ্ধিঃ সন্তাম্বেব প্রবর্ত্তেইত্যর্থঃ॥ ৮৭॥

শুদ্ধেন স্বস্থা ত অকবাসদা প্রীমদক্ষসংমার্জনেযোগ্যবস্ত্রেণ। বত্রে পরিধানোজারীয়বা-সদী॥৮৮॥ অত্র স্থপনানন্তরবস্ত্রাপ্ণকালে। অপ্যর্থে চকারঃ কঞ্চুকাদ্যমরাণ্যপি॥৮৯॥ যথোচিতং যদেশে যাদৃক্ বেশভূষণং তত্র তেনৈবেতার্থঃ॥৯০॥ সারবন্তি চিরস্থায়ীনি। পর-মোজমানি বা কৌশেয়াদীনি বিকেশানি কেশরহিতানি॥৯১॥ পরমতং লিখিত্বা নিজমতং লিখতি ভূষয়েদিতি। বহুনাং সতামিতি ভোজনসময়ে বস্তুদ্যুদ্যের স্মৃতিশাস্ত্রেণ বিহিত্ত্বাৎ ভাচাত্রে ব্যক্তং ভাবি॥৯২॥

অথবন্ত্রাপ্নমাহাত্মাং। নানসিংহে। বল্লাভ্যামচুতেং ভক্ত্যা পরিধাপ্য বিচি-ত্রিত। সোমলোকে বসিদ্ধা তু বিষ্ণুলোকে মহীয়তে। ক্বান্দে জীশিবোমা সম্বাদে। বজাণি সুপবিতাণি সারবন্তি মৃদূনি চ ৷ ৰূপবন্তি হরের্ছত্বা সদ্শানি ন্বানি চ ৷ যাবদল্পতা তভুনাং পরিমাণং ভবত্যথ। তাবদ্বসহসুপি বিষণুলোকে মহীয়তে। বিষ্প্রমোত রৈ। রাক্ষবস্য প্রদানেন স্কান্কামানবাপুরা । কার্পাসিকং বস্ত্র- যুগৎ যঃ প্রদান কার্মান কামানবাপুরা । কার্মানিকং বস্তুন হতমাত্রমিতানি তু। তাবদ্বধ্সহস্থানি বিষণুলোকে মহীয়তে। মহার্ঘতা যথা তস্য সাধূদেশোদ্ভবোয়থা। সূক্ষতা চ যথাবিপ্রান্তথা প্রোক্তং ফলং মহৎ ।। ১৪ ।। কিঞ্চ ৷ তবৈবান্যত্ত ৷ শুক্ল-বস্ত্রপ্রদানেন প্রিয়মাপোত্যনুত্রমাং। মহারজনরজেন ইসভাগ্যং মহদশুুতে। তথা কুমূমরজেন স্ত্রীণাং বল্পভতাং ব্রঞ্জেৎ। নীলীরক্তৎ বিনা রক্তৎ শেষর হৈ দ্বিষো-ন্তুমাঃ । দত্ত্বা ভবতি ধর্মাত্মা সর্কব্যাধিবিবজ্জিতঃ।। ৯৫।। কৌশেয়ানি চ বস্ত্রাণি সুন্দূনি লঘূনি চ । যং প্রযক্তি দেবায় সোহখনেধকলৎ লভেৎ। রাজবামূগ-লোম্যাশ্চ কদল্যাশ্চ তথা শুভাঃ ৷ যোদদ্যাদ্দেবদেবায় সোহ্খমেধ্ফলৎ লভেং। নানাভক্তিবিচিত্রাণি চীরজানি নবানি চ। দত্ত্বাবাশংসি শুভ্রাণি রাজ-সূত্रकार वार्डर । प्रातकामारास्य ह । नानारमममुख्रुरेष्ठः मुदरेखन्त मुरका-मरेलः। शृशिक्षेत्रा मू छङ्गा ह व्यथाश्राष्ठि माधवः। ममुख्रानि वमर् छ छुन् १ था। हरत्रशृह्य ।। ५७ ॥

অথ বস্ত্রার্পণে নিষিদ্ধ বিষ্পুধর্মোন্তরে । নালীরক্তং তথা জীর্ণ বস্ত্রমন্য-ধৃতং তথা। দেবদেবায় যোদদ্যাৎ সতু পাপৈতি যুজ্যতে। অত্রাপবাদঃ। তত্তিব । আবিকে পাউবস্ত্রে চ নালীরাগোন দুষ্যতি ।। ১৭।।

অথযজ্ঞাপবীত। বস্ত্রস্যাপ্নমুদ্রাঞ্চ প্রদর্শ্য পরিধাপ্য তথা উপবীতৎ সমর্প্যাথ তত্মুদ্রাঞ্চ প্রদর্শয়েৎ।।৯৮ ।। অথোপবীতার্পন্মাহাত্মং। ত্রিবৃৎ শুক্লঞ্চ পীতঞ্চ পউসূত্রাদিনিমিতি। যজ্ঞাপবীতং গোবিন্দে দত্ত্বাবেদান্তগোত-

সদশানি দশসহিতানি ।। রাস্কবং মৃগরোমজং বস্ত্রং তস্য ॥৯৩॥ তন্তুনীতি নপুংসকত্ব মার্বং। বাবদ্বস্ত্রমিতান্তন্তবিভাবন্তীতার্বং॥৯৪॥ মহারাজনং কুম্প্রপ্রপুষ্পং তেন রক্তেন রঞ্জিতেন বাসদা দক্তেনেতি শেষং । নীল্যারক্তং বস্ত্রং বিনা শেবৈং নিলীব্যতিরিকৈরক্তৈ রক্তং বস্ত্রং দত্ত্ব। নীলীরক্তঞ্চ পট্টবস্ত্রাতিরিক্তং জ্বেয়ং। নীলীপট্টে ন ছ্ব্যতীত্যাদিবচনাৎ ॥৯৫॥ কৌশেয়ানি কোশকারক্ষমিক্ততপ্তময়ানি ॥ নানাভক্তিবিচিত্রাণি ভাগশোবিচিত্রস্ত্যাদি শিশেনির্বিভানি। চীরজানি বক্কলোদ্ভবানি চ ॥৯৬॥৯৭॥

তদ্বস্তং পরিধাপ্য তম্মিন্ উপবীতার্পণে যা মুদ্রা তাং॥৯৮॥ তির্থ নবগুণমিত্যর্থং। বার্থে চকারো। আদিশব্দেন কার্পাসাদি। তথাচ ছন্দোগপরিশিটে। কার্পাসকৌমগোবালত্থ- বেং। নন্দিপুরাণে। যজেপেরীভদানেন সুরেভ্যোত্রাহ্মণার বা। ভবেদ্বিদাংশ্চত্ত-র্বেদী শুদ্ধবিনাত্র সংশয়ঃ।। ১১।।

অথপাদ্যতিলকাচমনানি। অথ পাদ্য নিবেদ্যাদাবূর্দ্ধপুণ্ড মনোহরং। নিম্মায় ভালে ক্লফ্স্য দদ্যাদাচমনং তভঃ।। ১০০।।

আথ ভূষণং। ততোদেবায় দিব্যানি ভূষাণানি নিবেদ্য চ । পরিধাপ্য যথা যুক্তং তন্মু তাঞ্চ প্রদর্শয়েৎ।। ১০১।।

অথ ভূষণার্পন সাহান্ত্যং। ক্ষান্দে শিবোমা সম্বাদে । মণিমৌজিকসংযুক্তং দক্তা ভরণমূত্তমং। স্বশক্ত্যা ভূষণ্য দক্তা অগ্নিষ্টোমফলং লভেৎ।। ১০২ ।। কিঞা গুঞ্জামাত্রং সূবর্ণস্য যোদদ্যাধিষ্ণু মূর্দ্ধ নি । ইন্দুস্যভবনে তিঠেকাবদাহ্তসপুরং। তক্ষাদাভরণ্য দেবি দাতব্যং বিষ্ণবে সদা। নারায়ণোভবেৎ প্রীতোভক্ত্যা পরময়া শুভে ॥১০৩॥ নন্দিপুরাণে। অলক্ষারন্ত যোদদ্যাধিপ্রায়াথ সুরায় বা। স গচ্ছেদারণ্য লোক্য নানাভরণভূষিতঃ। জাতঃ পৃথিব গ্রাং কালেন ভবেদ্দ্বীপপতিন্পঃ। বিষ্ণুধ্যে বিব্বে । কর্ণাভবণদানেন ভবেচ্ছিধরোনরঃ। অশ্বমেধমবাপ্রোতি সৌভাগ্য-ঞ্চাপি বিন্দতি। কর্ণপূরপ্রদানেন শ্রুতিং সর্বত্র বিন্দতি॥ ১০৪॥ মূর্দ্ধঃভরণদানেন মূর্দ্ধন্যোভূতলে ভবেৎ। চত্তঃসমুত্রবলয়াং প্রশান্তি চ বসুক্ররাং। তত্তিব তৃতীয়ক্ষান্তে। বিভূষণপ্রদানেন মূর্দ্ধনেগ্রভূতলে ভবেৎ। রম্যাণি রত্নিত্রাণি সৌবর্ণানি দিজোত্তমাঃ। দক্তাভরণজাতানি রাজসূত্রকলং লভেৎ। পাদাঙ্গু লীয়দানেন গুহ্যকাধি-

বল্কভূণাদিকং। সদা সম্ভূবতোধার্যামুপধীতং দ্বিজ্ঞাতিভিরিতি। বেদান্তগঃ বেদপারঙ্গতো বেদা-স্তার্থাভিজ্ঞোবা।। ৯৯॥

অথ যজ্ঞোপবীতাপর্গানস্তরং । অত্র পাদ্যনিবেদনং স্নানানস্তরমবশ্যং পাদপ্রকালনদ্য তিলকাচমনয়োরপ্যপেক্ষ্যত্ত্বাৎ। অত্স্রয়মিদমতৈকতৈব লিখিতং। মনোহ্রমিতি শ্যামস্থন্দরে শ্রীললাটে সংঘৃষ্টদকুস্কুমচন্দনেন মধ্যক্ষিত্রতয়া বিরচনাৎ॥ ১০০॥

যথা যুক্ত মিতি যশ্মিল্লকে যথা | যং পরিধাপয়িতুমুপযুক্তাতে । তত্র তথা তৎ পরিধাপ্যো-তার্ধঃ। ১০১।।

সশক্তা নিজ্ঞসামর্থ্যেন ভূষণমন্যদিপি দত্ত্ব। । যদ্ধা নিজশক্ত্যমুসারেণ মণ্যাদ্যাভরণবাতি-রিজমপি ভূষণং দত্ত্ব।। ১:২।। আভরণদানাত্মিকয়া পরমভক্তাা প্রীতোভবেদিতি মুখ্যং ফলং। অন্যান্ত্র সর্বাং সকামস্য নান্তরীয়কং জ্রেয়ং। এবমন্যত্তাপূহাং। অনস্তোভগবান বিষণ্ডস্য কাম-বিবজ্জিতিঃ। যদেব দীয়তে কৈঞ্জিদ্ধদেব ক্ষয় মুঁচ্যত ইত্যাদি,বচনাৎ ভচ্চাত্রে লেখ্যমেব ।। ১-৩॥ কণাভরণকর্ণপূরয়োরবান্তরভেদঃ। শ্রুতিং সর্বাহ বিন্দৃতি দূরতোপি সর্বাং শূণোতীতার্থঃ॥ ১০৪॥

र्डरकः । भोषां अप्रेनेषात्वमः चामर नर्काखं विकाछि ।। ५०६ ॥ स्यानी मूज-প্রকাবেশ মহীং সাগরবেশলাং । প্রশান্তি নিহতামিত্রো নাত্র কার্য্যা বিচারিশ। मिडागार महमार पाकि किकिनीर क्षेत्रकारतः। इन्हां कृ लीव्रमात्मन शतर मोडागा মাপু,্যাৰ ৷ ভবৈৰাজন লানেল জালা ভবতি ভূতলো কেবুরদানান্তবতি শক্ত राककात् कतः । देखर्वत्रकाणि बद्धा ह अर्थाणाजार्थिदेखरंब । नोर्या क वन शास्त्र ह च्वा विक्रभूषवाः ॥ ५०७॥ म्या शक्तिवान् मूर्याम पूरेणक विक्र रच ॥ ५०१॥ किया प्रतिव । क्रिक्रिक धाराजनार प्रोधनास्त्र विकार । श्रीटन १ क्रिक्ट मजा किथे पूर्वे। व्यक्तारक ।। २०৮ ।। भाषा । मच ठक गमामीन भाषामावग्रस्य ह। मोरवीखद्रव• क्षा विक्टूलाक महीग्रास्त ॥ ১०৯ ॥ नादनिश्ह । मूरवीख्टरेव र्जित क्रिका हुत कुछ देनः । मुक्रिके किर्कितिमाण श्वा विष्यु भूवारामा । मर्क भाभविनिम् अः नैक वृष्ण वृषिकः। हे मुलाक क्रमक्षीमाम् वाविषम्। के क में भाग ।। ।।। शक्रपुतात । यमार्का किकेट विस्मार्टमण्यनस्विषा । बरेजुमुकाविस्मायन অন্ন্ৰ্ন বাসৰ । কৰ্পকোটি ৰহসুপি ভস্য বৈ ভূবনে হয়েঃ। বাসো ভবতি (मर्तिम्, कथिष: अञ्चल। अस । यः পन) जि नदः इसः रूपः रूपस्य स्विष्टः । महाज्ञ का करनी भक्त भूबाबान खमः कूनिवि ॥ ১১১ ॥ विद्वार पृत्र १ ভোগাৎ পদ্যাদেবানুকোপনং। পুষ্পং চেচ্ছন্তি সম্ভোনুকোপনার্চানুভূহণং। সংপ্রার্থ্যাথ প্রভূং প্রাগৃৎ নিবেদ্য শুচিপাদুকে। বাদ্যগীতাতপ্রাদ্য পুঞা-न्यानः भूनन (ग्रर्था । १८२ ।। श्रानुक द्वामन। मानि गन्नः चनु ज्ञार्भाष्य । मान्य নিধায় তুলসীদলেনৈবাথ চন্দনং ।। ১১৩।। অথগন্ধঃ। আগমে। চন্দনাগুরু পূর

প দাতরণং নৃপুরং॥১০৫॥ শ্রোণীস্ত্রং কাঞ্চী॥১০৬॥ প্রতিস্বান্ ইন্তস্ক্রানি॥১০৬
কৃত্রিমং স্বর্ণদ্রসাপস্কৃতং। তামাদিনির্দ্রিতং তদেব প্রতিদ্রুপকৃতং॥১০৮॥ পাদাদ্যর্বেষ্
সৌর্ণাভরণঞ্জ কৃত্রা দল্পেত্যর্থং। দল্পেজার বা পাঠং॥১০৯॥ কটকং বলয়ং॥১১০॥ বিকো
রক্তা প্রতিমা বসা গৃহে ভিঠতি॥১১১॥ এবমধুনা, খিলভুষণার্পদেব লিখিতং তত্র শিক্তা
চারাপেক্ষয়া লিখতি বছলমিতি । ভগণতোতোজনানতর্মের ভূষণং বছলং সন্ত ইচ্ছন্তি সমপ্রিত্তং মন্যন্তে। অতোহধুনা সম্প্রেম্বার্পামিতি ভাবং। তথা অন্তলেপনং পুষ্পাঞ্চ তদানীমের
বছলমিছ্ট্রীতি প্রস্কাদত্র নিখিতং অতএবং জ্রেয়ং শ্রভগরতঃ স্নানানতরং ভৌজনাং প্রথমমসক্ষোচেন স্থাতোজনার্থমবাদাপেক্ষং মকরক্ষালমৌজিকহারাক্ষাক্র নিয়্রাদিভ্যণং
কিঞ্জিৎ তথা শ্রীবন্ধোর্থিলিভিলক্য ত্রোপ্রাণি কিঞ্চিদ্র্বেপনং তথা বন্ধালার তংসমাত্রং কিঞ্জিৎ পুষ্পাঞ্চ নিক্ষার্যার্থাং ভৌজনান্তে চ যথাশোত্তং ততং সর্বন্ধেবেতি। কিঞ্চ। তত্র
চাম্বলিপনাদম্ব পশ্চাবের ভূবণমিছ্নি। ভূবণরহিতের নহন্ত শ্রমদেক্র স্বর্কানের স্মান্তলেপানিক্রেং। ১১২।। অথাক্রেরং ক্রম্বার্থ ক্রম্বানির । তক্ত শব্ধে নিধারের জলদীদলেনের চ।
বিলেপর্যন্ত দেবেশং শব্ধে কৃত্রা ভূক্তক্রমিতি । তলসীদলন্তনের চন্দ্রন্তের নপ্রংবিক্রমেন

পালং গল্পমিছোচাডো। ১১৪।। গালড়ে। কজুরিকায়া জৌ জাগোঁ চ্ছারশ্লন্তর তুন কুলুম্বার্টি কালি। নালড়ে। কজুরিকায়া জৌ জাগোঁ চ্ছারশ্লন্তর তুন কুলুম্বার্টি প্রান্তর শালনং নালড়ে। কপুর্বল্পভং ।। ১৯৫ । নারাহেন কপুরং কুলুম্বার্টির বল্পনার করা বল্পনার করা বল্পনার করা বল্পনার করা বল্পনার করা বল্পনার করা বল্পনার ক্রিকালা।। বিক্রপর্মোভরাঘিপুরাগরোঃ। লুগলালাক মুরা মাংগালিগুরাগ্রন্টালাক কুলুরা দ্বল্পনার বল্পনার ক্রিলালার । কুলিজ মংছিত্রারা ক্রিলালার । কুলালালার বলালার বলালার হা মুরা দালজমাল ক্রিলালার । কুলালার ক্রিলালার ক্রিলালার নার ক্রিলালার । ক্রিলালার ক্রিলালার ক্রিলালার ক্রিলালার ক্রিলালার বলালার ক্রিলালার ক্রিলালার বলালার ক্রিলালার বলালার ক্রিলালার বলালার ক্রিলালার বলালার ক্রিলালার ক্রিলালালার ক্রিলালালালার ক্রিল

অথ মুলেপ্রমাহান্ত্র । ক্লান্সে ব্রহ্মনার্চ্সয়াদে । শন্ত্রাহান্ত্র । বিলেপ্রতি দেবেশং শন্তে করা তু চন্দনং । পর মান্ত্রা পরাং প্রতিং করোতি শত্রা কিনাং । ১৯৬ । গারুড় । তুলসীদললয়েন চন্দনেন ক্ষনাদ্রিং । বিলেপয়তি মোনিত্যং লভতে বাস্ক্রিতং ফলং । নারসিংহে । কুলুমাগুরুত্রীগণুক দিবুচুতা রুজিং । বিলিপয় ভক্তা রাজেন্দু কম্পাকাটিং বরেদিবি । বিষণ্ণ মোনিত্র লাল্রারিপ্রালিয়ে । চন্দনাগুরুক পূর্ব কুলুমোনারপদ্রিকঃ । অলুলিপ্রোহরিভক্তা বরানভোগান প্রচিত্র । চন্দনেনানলিপ্রানং ভবতি দ্রানি প্রদালি পুরুষোভ্রমে ।। ১৯০ ।। বিষণ্ণ মোভিরে । চন্দনেনানলিপ্রানং চন্দুলোক মবাপুয়াং । শারীরৈর্মানসৈদ্ধিত্র থিব চ বিমুচ্যতে । কুলুমোনানুলিপিরনং সূর্যালোকে মহায়তে । সৌভাগ্যমুভ্রমং লোকে তথা প্রাপ্রেটি মানবঃ । কপুরেলামুলিপিরনং বারুলং লোকমাপুয়াং । শারীরৈর্মানসৈদ্ধিত্ব কিন্ত্রাকাকল্যাক্র ক্রিকান্ত্র মান্ত্রমান্ত্র ক্রিকান্ত্রম

<sup>॥</sup> ১১৪॥ শশিনঃ কপুর গৈতকাভাগঃ দর্পোমৃগমদঃ॥ ১১৫॥ শুভং স্থাকরং চারু স্থানারং।। পাঠাস্করং স্পান্তং॥

<sup>॥</sup> ১৬॥ চিন্তিতং বাঞ্জিতং অকারপ্রশ্লেবেণ চিন্তিতাতীতমপীতি বা ॥ ১১৭॥ কালেমুক্ত কালাগুরু:। ভরুদ্ধ শিক্ষাকং ॥ ১১৮ ॥ পুরুষোশ্বমে দশ্বাদি সৃষ্ঠি স্বণাং পুণ্কপাণি ভবন্তি॥ ১১৯॥ এনং জীরুশং॥ ১২০॥

खक्रिकार्यम रुमार्गन मुश्किमा। नगालिका क्रमायं भूखनीक्ष्म महस्य । १२०। वक्रिका जुन्म क्रिका क्रमायं क

ক্ষাৰ ক্ষিত্ৰদানি চিদ্দন মাহান্তঃ। মান্ত । শ্বীনারদ্ধুনু মারদ্ধনু বাদে। যোদাতি হরের্নিত্যং ভুলসীকাই চন্দনং। যুগানি বসতে হরের্নিত্যং ভুলসীকাই চন্দনং। যুগানি বসতে হরের্নিত্যং ভুলসীকাই দেন। মহাবিক্ষে কলোঁ ভক্তা। দত্ত্ব। ত্তা সম্ভাত চন্দনং আছিলে হরেঃ। নির্দ্দেহং পাতকং সর্বং প্র জন্ম নির্দ্দেহে পাতকং সর্বং প্র জন্ম নাই ভাল হরেং। মৃত্যুকালে তু সংপ্রাপ্তে ভলসীভক্ত চন্দনং। ভক্ত বস্য দেহে তুইর ভূঁরা হরিং ব্রাজাং। ১২৬ ।। তাবলার কং বিক্ষোর্ভাতি ক্ষান্ত্রন্দ্রিকারে দিং কপুস্য সুগন্ধিত। যাবর দ্বাতে পুন্তং ব্রালার ইচন্দনং। তাবং কভূরিকারোদং কপুস্য সুগন্ধিত। যাবর দ্বাতে বিক্ষোন্তলসীকাই চন্দনং। তাবং কভূরিকারোদং কপুস্য সুগন্ধিত। যাবর দ্বারতে বিক্ষোন্তলসীকাই চন্দনং। ১২৭।। কলো বছন্তি বে বিক্ষোন্তলসাকাই ভাগবিক্তাভুন্ত। কলো বুল সিচন্দনং । নার্পর্তি সদা বিক্ষোন্তল ভাগবেতান্ত্রঃ। ১২৯।। প্রজ্ঞান্তল ক্ষান্ত তুল সিচন্দনং। তুলসী দারজাতেন চন্দনেন কলোঁ ভূবি। যাং প্রযান্তি ক্ষান্ত তুল স্বানাই চন্দনং। তুলসী দারজাতেন চন্দনেন কলোঁ ভূবি। যাং প্রযান্ত ক্রজান্ত তুলসীকাই চন্দনং। তুলসী দারজাতেন চন্দনেন কলোঁ ভূবি। যাং প্রযান্তি ক্ষান্তলি ক্ষান্তল তুলনাকাই চন্দনং। তুলসী দারজাতেন চন্দনেন কলোঁ ভূবি। যাং প্রযান্তি ক্ষান্তলি ক্ষান্তল চন্দনেন কলোঁ

পু ওরীকং যজ্ঞবিশেষ্ট্রী ১২১ ॥ তত্তাকুলেপনে বু পার্থিবাশ্চন্দনাদিসম্বন্ধিনঃ আদ্যশন্দেন জলাদি সম্বন্ধিনশ্চ নপুংসকস্থমার্ষং। লোকেষু চওর্দশভূবনেযু ॥ ১২২ ॥ গল্পযুক্তীকৃতানি স্থপন্ধিতার যোগেন শোধিতানি ॥ ১২৩॥

ভ্রন্দিনদানং ভ্রন্দীকার্চনদানং। হ্র ব্রুমার্যং। স্তনপঃ সংসারীতার্যং॥ ১২৪॥ বছতোজনগা পাতকং কর্মান্ত হৈ চন্দনমের কর্জ্নান্ত ইত্যাহ্য মৃত্যুকালে স্থিতি ভবতে ভবতি ভিঠতীতার্যং। হরিছু স্থা নারপাঞ্চাই ইরিরব ভুত্বা ইত্যর্থং॥ ১২৬॥ অর হেন্তত্বেন তক্ষা প্রভিন্নবংপ্রিম্বতান্দাহাত্বাক্ষার্থাই ইরিরব ভুত্বা ইত্যর্থং॥ ১২৬॥ অর হেন্তত্বেন তক্ষা প্রভিন্নবংপ্রিম্বতান্দাহাত্বাক্ষারি বাভাগং ভাতি শোভতে রোচতে বা॥ ১২৭॥ বিশেষতঃ কলিকালৈ তদর্পবন্দাহাত্বাক্ষারাহ্য মৃত্যাত্বন্তি কিয়া প্রীবৈকুঠলোকএব বসন্তীতার্থং। প্রক্রি মালতীসহিত্যা কলমুক্তই অধুমা কেবলস্থৈবিত ভেনং॥ ১২৮॥ আভোবৈক্টবং কলাব্রিকালে তদর্পিকালি তার্বিক্টবং কলাব্রিকালি তার্বিক্টিলাই বোহাত্বিক্টবং কলাব্রিকালি তার্বিক্টিলাই বোহাত্বিক্টবং কলাব্রিকালি তার্বিক্টিলাই বোহাত্বিক্টবং কলাব্রিকালি তার্বিক্টিলাই বোহাত্বিক্টিলাই বিশ্বিকালি

मतः। विनिशृष्ठ उप्तार्थियु त्र त्राप्त मिर्धि हतः। २००। सम्भी को के के एएन हम् स्मिति विद्या विद्या

" अक्षान्ताल भिष्ठानि। विक्थां अद्धा । प्रक्षितः श्री अव्या कूर्य । प्रकार क्रिका । अधा श्री अव्या क्रिका क्रिका

ইতার্থ: । यहा ভূবি পৃথিব্যাং চন্তর্দ্দশসংখ্যলোকেইপি নান্তীত্যর্থ: ॥ ১৩ ॥ বিক্ষান্তোবার্থং তস্য স্বস্যাপি বা বিলেপনং যং কুর্যাৎ কপিসাগোশতদানং লভতে ॥ ১৩১ ॥ বিশেষেণ মৃত্য-কালে যং সেবতে বিশেষেণতি তদানীং পাপান্তরাসন্তবাদিনা সদ্যোমুক্তিনিদ্ধিঃ । यদা মৃত্য-কালেপি সেবতে বিশেষেণেক্তান্য পরেণাব্য়ঃ ॥ ১৩২ ॥ কিথা যইতি আছে বোদদাভি ॥ ১৩৩।। কৃদম্বতং চন্দানং ॥ ১৩৪ ॥

অন্যে দেবদার্বাদয়ঃ উপ্রগন্ধয়ঃ বিহিতেভাগ্রেপরে বা॥১৩৫॥ পূর্বাং চদ্দমাগুরু-কপ্রক্রমাশীরপদ্দকৈরিতাশীরপদ্দকার্পণ বিহিতঃ। অধুনা দারিদ্রাংপদ্দকং কুর্যাদিতি নিবিদ্ধানতাবং বিরোধে লিখাতি পলকেতি পদ্দকাদি ন দাতবাদিতি বং এবার্থো হি শভঃ তদৈছিবং স্থানিচ্চতৈর ন দাতবাদিতার্থঃ ভগবংপরৈন্ত দাতবাদের কিন্তু স্থানাং চন্দনাদী-নামলাতে সতি । যথা প্রশাগাধিকভোজেং পাজে । বিহিতপ্রতিবিশ্বিদ্ধ বিহিতালাভাতাহর্তিরেদিতি তর্কালে ব্যক্তং তারি এবস্থিকারি ভেদাদিনা দ বিরোধইতি ভাবঃ গাতওা। বিরানিতি উদ্ধান্ধর কুর্যাৎ শীতকালে চ নৈবেছি ভাবঃ । ভক্তাপ্রে লেখ্য-লেখা ১৩৭। বল্লেণ বন্ধান্ধনং তেন বন্ধনিজিব্যজনেনতার্থঃ । বন্ধা অর্থপদ্দাবিদ্ধান্ধ ক্রমানা তালস্ক্রাদিনা বল্লেণ বা ব্যক্তবন্ধ বা বাজনকপ্রেণর ব্যাদ্ধিকার বাহনেন তালস্ক্রাদিনা বল্লেণ বা বাজনকপ্রেণর ব্যাদ্ধিকার বাহনেন তালস্ক্রাদিনা বল্লেণ বা ব্যক্তবন্ধ বা বাজনকপ্রেণর ব্যাদ্ধিকার বাহনেন তালস্ক্রাদিনা বল্লেণ বা বাজনকপ্রেণর ব্যাদ্ধানিক বাহনেন তালস্ক্রাদিনা বল্লেণা

তু শমতে নারকোদবং । বায়ুলোকান্দ্রীপাল ন চু,তির্বিদ্যতে পুনং । চলচামরবাতেন কৃষ্ণং সন্তোষয়েন্নরং ।। ১৩৮ ।। তদ্যোত্তমাঙ্কং দেবেশ স্তবতে স্বমুধেন বৈ । উষ্ণকালে জিদংজ্যেং যৎ সন্তঃ পৌষমাঘ্যোঃ। শীতলন্ধান্মলম্পি নৈবাপাতি হি । তথাচোক্তিং। ন শীতে শীতলং দেয়মিতি ।। ১৩৯ ।। ইতিশ্রীগোপালভট্টবিলিখিতে,ভগবদ্ধক্তিবিলাদে সাুপনিকোন,ম ষ্ঠো বিলাসঃ ।। ৬ ।।——

বারণং যা কুর্য্যাৎ । তাপস্ত প্রায়ে**শ্রকালেংমুলেপনস্য বিশেষতাংপণাৎ । ততক্ষ প্রস্থে** লোদ্যবাস্তম্বারণং যুক্তমের। যমলোকে যোনারকানরকসমন্ধ্রী দবোভয়ং শমতে শাম্যতি॥১৩৮ উত্তমং বীজনোনাৎক্রফতাং প্রাপ্তং অঙ্গং হস্তং দেহং বা ভৌতি। ইদং অমুলেপনানন্তরবীজনং হও যুস্থাৎ॥১৩৯॥ ইতিষ্ঠঃ

## স্প্ৰম বিলাসঃ।

কুমনাঃ দুমনজু হি যাতি যাগ পদ জ্বায়ে। 1 সুমনোহপণমাত্তেণ তং চৈতন্য প্রজ্য ভজে।। ১। জীমদক্ষনি তৈভক্তা সমালিপ্যানুলেপনৈঃ। নিবেদ্যাত্ম-পুলাণি তন্মাঞ্চ প্রদর্শয়ে।

স্থ প্লাণি !! নারসিংহে । পুলোরবা সভ্তিন্তথা নগরসম্ভবৈঃ । অপ্যারি তিনিন্দ্রির পোকি তৈজ্ঞ বৃজি তৈঃ। আজারামোন্তবৈধাপি পূতিঃ সংপ্লারে করিং ।। ২ ।। বামনপুরাণে প্রীপ্রজাদবলিসম্বাদে । তানোর সুপ্রশন্তানি কুসুনানি সহাসর । যানি স্কর্বাণি রসগন্ধানুতানি চ । জাতীশতাঙ্গা সুমনাঃ কুলাং চারুপুটং তথা । বাণঞ্চ চম্পাকাশেকং করবীরঞ্চ যুথিকা । পারিভদ্রং পাটলাচ বকুলাং গিরিপালিনা । তিলকং জাসুবনজং পীতকং তগরভ্ঞা । এতানি সুপ্রশাল কুসুনান চ্যুতার্চনে । স্রভীণি তথান্যানি বর্জ্জিম্বা তৃ কেতকীং ।। ৩ ।। বিষ্ণুধর্মোন্তরে । কুসুমস্য চ পুলানি বন্ধুজীবস্য চাপ্যথ । চম্পাকস্য চ দেয়ানি তথা ভচম্পাকস্য চ । পাত্যুথিকজানোর যানি বৈ নীপজানাপি । মঞ্জর্যাঃ সহকারস্য তথা দেয়া জনার্দনে । মন্ধিকাকুজকুসুম নতিমুক্তকমেব চ । সর্বাশ্চ যুথিকাজাত্যো মন্ধিকাজাত্য এব চ । যাশ্চ কুজকজাজাত্যঃ কদমকুস্নানি চ । কেতকী পাটলাপ্লাং কাণুপুলাং তথৈব চ । এবমাদীনি দেয়ানি গন্ধবন্ধি শুভানি চ । কেতিল্পিভানেৰ কেতিলারগুণাদ্য ।। অনুক্রান্যির রম্যানি তথা দেয়ানি কানিচিং । দেশে দেশে তথা কালে যানি পুল্পাণ্যনেকশং । গন্ধবর্ণোপালানি

বিচিত্রপুষ্পপ্রধানপ্রকরণ লিখনসৌষ্ঠবায় নিজেইদেবরপং পরমগুরুবরং শরণং যাতি কুমনাইতি। স্থমনসাং পুষ্পাণামর্পণমাত্রেণ স্থমনস্থমিতি শ্লেষেণ পাদাক্তয়োঃ পুষ্পবং সংসক্ত-তয়া প্রিয়তমন্ত্রমভিপ্রেতং।। ১।৷ তৈলিখিতৈঃ ভক্তাা প্রীত্যা অভক্তিছেদেন বা। তস্য পুষ্প নিবেদনস্য মুদ্রাং॥

অপয়ুষিতৈর্নিছিদৈশ অবিদীর্ণদলৈঃ আজ্মনঃ আরামঃ উপবনং তছন্তবৈঃ॥২॥ শতাঙ্গা শতপ্রিকা চারুপুটং ক্রিকারং বাণং ঝিন্টীভেদঃ। পারিভদ্রং প্লছদেতি প্রসিদ্ধং। গিরি-শালিনী শ্বেত্কুটজং জাস্থ্যনজং জ্বাকুস্থমং পীতকং পিয়লীতি প্রসিদ্ধং। কেত্কীমিতি বনকে-ভকীং॥৩॥ নীপঃ ক্দয়ভেদঃ। অতিমুক্তকং মাধ্বী লতা। কাণুপুষ্পং ক্ণতু্ছ্লীতি প্রসিদ্ধং তাদি দেয়াদি দিত, শাং 11 কিঞ্চ ।। তত্ত্বব ক্ষীবজুনার্কভের দানাজং কেশবপ্রিরং। বর্ণোযদ্য দ্যাৎ শক্ষদ্য কুদুম্দ্য চ । শুভশ্ক্র বিজ্ঞেরং মনোজং কেশবপ্রিরং। ক্ষাদ্দে । বাদন্তী মল্লিকাপুত্পৎ তথা বৈ বার্ষিকী তু যা । কুসুজং যুথিকে ছে চ তথা চৈবাতিমুক্তকং।।৪।। কেতকং চম্পাকলৈৰ মাষবৃন্তকমেৰ চ। পুরস্ক্রিমঞ্জরী পুত্পং চূতপুত্পং তথৈৰ চ।। বল্পুজনকপুত্পঞ্চ কুদুম্ম কুদুম্দ্য চ। জাতীপুত্পাণি সর্বাণি কুদপুত্পতথিৰ চ ।। পাটলায়ত্তথা পুত্পং নীলমিদ্যাবর্ত্তথা। কুমুদে খেতরক্তে চ খেতরক্তে তথাযুক্তে। এবমাদানি পুত্পাণি দাতব্যানি দদাহরেং।।ও।। তত্তিবান্যক্র ।। মালতী ভলসী পলং কেতকী মণিপুত্পকং। কদয়কুদুমং লক্ষ্মীঃ কৌস্তুভং কেশবিপ্রিরং ।। কিঞ্চ । কণ্টকীন্যপি দেয়াদি শুক্রানি দুরভীণি চ । তথা রক্তানি দেয়ানি জলজানি দিজোত্তম ।। ৬ ।। নারদীয়ে দপ্তশাহদ্যে ক্রিভাবন্নার্দস্যাদে। মালতী বকুলা শোক শেকালী নবমালিকা। আমুঞ্চ তগরাংখ্যুক্ত মল্লিকা মধুপিভিকা। যুথিকাইত্বাদ্দ কুদ্দ কদম্য শিথিপিজকং। পাটলা চম্পাকং হাদ্যং লবসমতিমুক্তকং। কেতকং কুক্রবকং বিল্ও কল্পার্থ বাদক্র দিলা প্রাণি কল্পার্থ তারাণি নি । মদীয়া বনমালা চ পুজৈবিল্যায়া পুরা। প্রথিভা চ তথা তত্ত্বং পঞ্চবিংশতিভিং ক্রমাৎ। হারীতন্ম্তৌ চ! ভলসো পঙ্কলে লাত্যে। কেতকে) করবীরকৌ। শন্তানি দশপুন্সাণি তথারক্তোৎ পলানি চ!! গ!!

অথ সামান্যভোহথিল পুল্পমাহান্তাং ।। বিষ্পমেণিতরে । দানং সুমনসাং শেষ্ঠং তথৈব পরিকীর্ত্তিও । তলক্ষ্যাঃ শমনৎ মুখ্যং পরং লক্ষ্মীবিবর্দ্ধনং । ধন্যৎ যশস্যামানুষ্যং মাঙ্গল্যং বৃদ্ধিবর্দ্ধনং ।। স্বর্গদ্ধ তথাপ্রাক্তং বৃদ্ধিতৌমফলপ্রদং। ন মত্বেন সুবর্ণেন নচ বিত্তেন ভূরিণা । তথা প্রসাদমায়াতি দেবশ্চক্রগদাধরঃ ।। তথৈবান্যত্ত । ধর্মান্তিভিত্তধনক্রীতে হাং কুর্য্যাৎ কেশবার্চ্চনং । উদ্ধরিষ্যত্যসন্দেহৎ সপ্তপুর্বাংস্থাপরান্ ।। তারামস্তৈপ্ত কুসুমৈ হাং কুর্য্যাৎ কেশবার্চনং । এতদেব সমাপ্রোতি নাত্র কার্য্যা বিচারণা ।। যথা কথঞ্চিদান্ত্য কুসুমেঃ পূজ্যন হরিং । নাকপৃষ্ঠমবাশ্যেতি ন মেহতান্তি বিচারণা ।। তথা রাষ্ট্রান্ততিঃ পুল্পে হাং কুর্য্যাৎ কেশবার্চনং । পঞ্চবিংশত্যতীতাংশ্চ পঞ্চবিংশত্যনাগতান্ ।। উদ্ধরেদান্তনো-

বাসন্তী বসন্তোদ্ভবা বার্ষিকী চ যা মল্লিকা তস্যাঃ পুহপমিত্যর্থঃ ॥ ৪ ॥ পুরক্ষিঃ পুঙ্গবীতি প্রসিদ্ধা তস্যা মঞ্জরী পুষ্পাঞ্চ ॥ ৫ ॥ যথা লক্ষ্মীঃ কৌস্তভ্রন্থেতি দৃষ্টান্তত্বেনাদান্ততং।কণ্টকী নি কণ্টকযুক্তানি ॥ ৬ ॥ শেকালী সেহলীতি প্রসিদ্ধা।মধু মধূকপুষ্পাং।পিগুকা নন্দ্যাবর্ত্তঃ। অইপদং নাগকেশরং। শিখী চুত্তিয়েতি প্রসিদ্ধা।পিঙ্গকং হরিদ্রাকুষ্কমং ॥ ৭ ॥ ধর্শেণ, ন্যায়েন অর্জিতং যদ্ধনং তেন ক্রীতেঃ কুষ্ক মৈঃ এতেন ন্যায়োপাত্তবিত্তেন পুষ্পাকরণ

বংশ্যান্ নাত্র কার্য্যা বিচারণা । নগরেইপি বসন্ যস্ত ভৈক্ষ্যাশী শংসিতত্রতঃ। অরণ্যাদাছতেঃ পুল্পাঃ পত্রমূলফলাফুরেঃ ।। যথেঃপাপলেঃ সভতমভার্চরিতি किनवः । नर्ककानश्चरमा प्रवस्त्रो न्यायपुत्रमाः ॥ शूरमस्त्राभाकारमा श्रदः ভানং প্রকীন্তিতং। যত্র গত্বা ন শোচন্তি তদ্বিষ্টো পরমৎ পদৎ ।। তত্ত্বৈব শ্রীবজুমার্কণ্ডেরসম্বাদে । অক্ষমৈস্থাবাসানাৎ ধনহানৈতথা নরৈ:। অরণ্যা-मार्काटः शूरेणाः मरशृका मधुनृमनः । शूर्तकमिन मरश्राखर वाकार मृनू नदा-বিপা। ৮।। নূগো যথাতি নছিয়ে বিশ্বগন্ধঃ করন্ধ মঃ। দিলীপো যুবনাশ্বন্ধ শত-প্রবি। ভগারথঃ। ভীমশ্চ সহদেবশ্চ মহাশীলো মহামনুঃ। দেবলঃ কালকাক্ষশ্চ রুতবীর্য্যোগুণাকরঃ। দেবরাতঃ কুসুস্তুশ্চ বিনীতোবিক্রমোরঘুঃ। সংহাৎসাহো-বীতভরো জলমিত্রঃ প্রভাকরঃ। কপোতরোমা পর্য্যন্য শচন্দুদেনঃ পরন্তপঃ। ভীমসেনো দৃঢ়রথঃ কুশনাভঃ প্রতর্দনং! এতে চান্যেচ বহুবঃ পূর্বজননি কেশবং। পূজ্য়িত্বা ক্ষিতাবস্যাং প্রাপুরাজ্যমকণ্টকং। যক্ষত্বমথ গান্ধর্বং দেবত্বঞ্চ তথৈ-বচ। বিদ্যাধরত্বৎ নাগত্বং যে গতা মনুদোত্তমাঃ । বছড়াচ্চ ন তে শক্যা ময়া বজু । তবানঘ। তমাদৰতুঃ সদা কার্য্যঃ পুরুষেঃ কুসুমার্ছনে।। অরণ্যজাতিঃ কুসুমৈঃ সদৈব সংপূঞ্জিত্বা স্থয়সাহৃতিন্ত । সর্বেশ্বরং যৎ ফলমাপু ুবন্তি রাজেন্দু তদ্বন-য়িত্তং ন শক্যং ।। ষয়মাছত্য পুষ্পাণি ভিক্ষাশী কেশবাৰ্চনং। যঃ করোতি স दारकन्त्र वरभाना मुझरदर भाउर। विक्थिरामं। शुक्शानि चू मूनस्रोनि मरनाकानि चू यः পুমান্। প্রহাজতি অ্যাকেশে স ভাগবতমানবঃ। নারসিংছে। তপাং শীল গুণোলৈতে পাত্রে বেদ্দ্র পারগে । দশ দক্তা সুবর্ণানি হৎ ফলং সমবাপুরাং। তং ফলং লভতে নর্স্ত্রোহরেঃ কুসুম দানতঃ।। তত্তিবাগ্রে। মদ্লিকা মালতী জাতী क्विकारभाक्षणो किः । भूमागनागयकूरिनः भरेषास्थानकाविष्टिः । धरेषैत्रोना मह কুসুমৈঃ প্রশাস্তরচ্যুতং নরঃ। অর্চন্ দশ সুবর্ণস্য প্রত্যেকংফলমাপুরাহ। এবং হি রাজন্নরসিংহমূর্তেঃ প্রিয়াণি পুল্পাণি তবেরিতানি। এতৈক্টনিত্যং হরিমর্চ্চ্য ভক্তা নরোবিশুদ্ধোহনিমেব যাতি। ক্বান্দে। স্বয়মাহত। যোদদাদরণাকুসুমানি চ। সরাজ্যং ক্ষাতমাপ্নোতি লোকে নিহতকণ্টক ।।।১।। তত্ত্বৈ ঐশিবোমা-मञ्चारम ।। रेशः देक निक्रिम् श्रीष्मान्त जनरेकः उनरेक दिन । मःशृकः किश्रेष्ठ-र्ज्जा विकृत्नात्क महीय्राक । विकृत्वहरा। श्रीमार्क्छ राजुनु मुम्मार । अजू-काला क्रियेः शूटेल्यार्था ३ व्हें एक कि निर्माण कि । मर्कान् कामान्यार्था छ यान् वियान यारम मानुयान्।। ১०।।

মপি শন্তং ব্ৰাহ্মণাদেরিতি বোধিতং ॥ ৮ ॥ অলমিত্রইত্যাদাবকারালোপাদিকমার্বং ॥ ১॥ ক্রিটেক্সিহিতৈরিত্যর্থঃ পূর্ব্বোটেক্সরা ॥ ১০-॥

ष्य विस्मिष भूष्णभाशाखाः । ७ था । नात्र निर्देश । भूष्णका जिविस्मियन ভবেং পুল্যং বিশেষতঃ ।। কিঞ্চ । এবং পুষ্পাবিশেষেণ ফলং ভদধিকং ন্প। তেয়ং পুজ্পান্তরেণাপি যথা ন্যাত্র নিবোধ মে ।। তত্র ত্রোণপুষ্পানা লাল্যং । নারসিৎহেএব। দ্রোণপুষ্পে তথৈকস্মিন্ মাধবার নিবেদিতে। দল্পাদশ সুবর্গনি হৎ কলং তদবাগুরাও।। ১১।। জাত্যাঃ নারসিৎহে । দ্রেণপুষ্পানহট্যেভ্যঃ খাদিবং বৈ বিশিষ্যতে। শনীপুষ্পানহসেণ্ডেয় বিলুপুষ্পাং বিশিষ্যতে । বিলুপুষ্পা महरम् ভে । বকপুষ্পাং বিশিষ্যতে । বকপুষ্পাদহসুদ্ধি নন্দ্যাবর্তং বিশিষ্যতে । নন্দ । বর্ত্তসহসুদ্ধি করবীরং বিশিষ্যতে । করবীরস্য কুনুষ্যাৎ খেতপুষ্পামনুভয়ং । কর-বীরশ্বেতকুসুমাৎ পালাশং পুস্পমুত্তমং। পালাশপ্সামাহনাৎ কুশপুস্থ বিভি:-যাতে। কুশপুঞ্পসহসুদ্ধি বনমালা বিশিষ্যতে। বনমালাসহসুদ্ধি চম্প্ৰিক্ত বিশি-যাতে। চম্পকাৎ পুষ্পাশভকাদশোকপুদ্যানুত্তমং। অশোকপুষ্পাসাহসাৎ সেবতী প্তারু রুমং। কুজ্ঞপুতানহ্দুগাৎ মালতীপুতানু রুমং। মালতীপুতানাহ্দুগং তিমন্ত্রা পুপেণুত্রমং। ত্রিসন্ধান রক্তসাহস্থাৎ ত্রিসন্ধ্যাশ্বেতকং বরং। ত্রিসন্ধ্যাশেতসাহস্থাৎ কুন্দপুত্ৰং বিশিয্যতে। কুদ্দপুত্ৰসহস্যাদ্ধি শতপত্ৰং বিশিষ্যতে। শতপত্ৰসহস্যুদ্ধি মল্লিকাপুষ্পামৃত্মৎ। মলিকাপুষ্পানাঃ সাুজ্লাতীপুষ্পাং বিশিষ্যতে । সর্বাসাৎ পুষ্পা-জাতীনাং জাতীপুপ্সমিহোত্তমং। জাতীপুপ্সমহসূত্ৰ মজ্লালাং সুশোভনাং। বিফাবে বিধিবৎ ভক্ত্যা ভসঃ পুৰাফলং শূণ্।। কম্পকোটিসহস্যুণি কম্পকোটি শতানি চ। বসেদিফু পুরে জীমান্ বিষ্ণুভল পেরাক্রমঃ। শেষাণাং পুষ্পা জাতীনাৎ যৎফলং বিধিদনিতিং। তৎফলস্যানুসারেণ বিফ্লোকে সহীয়তে। বিষ্পর্ফোভবে । স্কাসাং পুজ্জাতীনাং জাতঃ শ্রেষ্ঠত্যা মতাঃ। জাতীনামপি সর্বাসাং শুক্রা জাতিঃ প্রশাসতে। ক্ষান্দেপি ব্রহ্মনারদসম্বাদে। মল্লিকেড্যাদিশ্লোক ত্রয়মান্তে। কিঞ্চ তত্রিবান্ত্র। জাতীপুষ্পাথদানেন গন্ধকৈ সহ মোদতে । জাতী-পুস্পাফকং দত্ত্বা বহ্নিষ্টোমফলং লভেৎ ৷৷ ১২ ৷৷ জাতীপুষ্পাসহসূেণ যথেষ্টাৎ গতিমাপুরাং। শ্বেতদ্বীপমবাপুেণতি লক্ষপূজাবিধায়কঃ।। ১৩।। জাতীপুল্প क्रां माना कर्भृत शहेवां भिष्य । निर्वा दिन्दा प्रवाह यह कन था भू यो बतः।

এবমিতি দ্রোণপুলোক্তপ্রকারেণেতি জেন্তং তৎপুরাণে দ্রোণপুলে তথৈকমিনিতানন্তর-মদ্য পাঠাং। অতঃ পুলান্তরেণেতি দ্রোণপুলাদিতরেণাপীত্যর্থঃ। পুলান্তরজ্ঞেনেতি পাঠে অন্তরং তেদন্তজ্জেন ॥১১॥ নন্যাবর্ত্তং পিণ্ডীতরগং করনীরং রক্তং অত্যে খেতমিত্যুক্তেঃ। বনমালা পুলবিশেষঃ মালতীজাতীভেদঃ ॥ ১২॥ লংকং জাতীপুলাণামের তেন পুলায়াঃ বিধায়কঃ॥১৩॥ কপুরিষ্য পটঃ চূর্ণগক্ষান্তেন বাদিতাং। মালবত্যাইতি, পাঠেইপি মাল-

न उदर्ग शिख भका मि वर्ष में ठिव शि ।। मामठाः काला औ उचानां व प्रभाग । বর্ণানান্ত যথা বিপ্রস্তীর্থানাং জাহ্নবী যথা । সুরাণান্ত যথা বিষ্ণুঃ পুত্র্পাণাং মালতী তথা। মালত্যা হি তথা দেবং যোহর্চয়েকারুড়পুঙ্গং। জন্মপুঃধন্ধরারোগৈমুক্তো>সৌ মৃক্তিমাপুরাং।। ১৪।। তত্রৈবান্যত্র। যোহর্চয়েমালতীপুল্পৈঃ রুক্ষং ত্রিভুবনে-শ्वतः। रहेना खः नान्छ मत्मरुखः शपः पूर्वाङः रतः। माने होक निकामाना मीय-দ্বিকসিতাৎ ছরে:। দত্তা শির্সি বিপ্রেন্দু বাজিমেধফলৎ লভেৎ। গারুড়ে। পক্ষীন্দুন শ্রুতৎ দৃষ্টং ভূতয়ান ভবিষ্যতি। মালত্যা ন সমৎ পুষ্পং ধাদশ্যান সমা তিখিঃ। পুল্পেলৈকেন মালতাঃ প্রতিষ্যা কেশবস্য হি । ন সা ক্রতু সহসেণ ভৰতে নারদোহত্র বীৎ। যত্র যত্র খগশ্রেষ্ঠ ভৰতে মালতীবনং ৷ পত্রে পত্রে তথা-जूरकावमरा छा तम्मवः। मृक्षे। ज् मानजी भूच्यः देवकरवन करत पृठः। श्रीरा ভবতি দৈত্যারিঃ সুতং দৃষ্ট্য যথা খগ ৷ পুষ্পে প্রেপ খগশ্রেষ্ঠ মালত্যাঃ সু-মনোহরে ৷ অক্ষয়ং প্রাপ্ততে স্থানং দাহপ্রলয়বন্ধিতং ৷ বল্লভং মালতীপুস্পাই মাধ্বস্য সদৈব हि। (इलग्र। দাপয়েৎ স্থানং স্বকীয়ং গরুড়ধুকঃ ।। ১৫ ।। দত্তমাত্রৎ ছরেঃ পুষ্পাং নির্মাল এ ভবতি ক্ষণাং । অহোরাত্রং প্রভুক্তং হি মালতীকুসুমৎ নহি। বিষ্ণোরঙ্গাৎপরিভ্রমীং মালতাকুসুমং থগ । যোধারয়েচ শির্দি সর্বাধ্যম ফলংলভেং। আদন্ত্ব। কেশবে যন্তু সমূর্দ্ধা মালতীং বছেং। স নরঃ থগশাদূল সর্ব ধর্মচু,তোভবেং।। কার্ত্তিকে চ তসঃ মাহাক্ম।বিশেষঃ । ভথাচ গারুড়ে । সুবর্ণানৎ গোদান ভূমিদানং খণেশ্বর । বিছায় কার্ত্তিকে মাসি মালতীং যচ্ছ কৈশবে। नर्समारमयू शक्कोन्तु मानजो किमविशा । প্রবোধনাং বিশেষেণ অশ্বনেধাদি দায়িনী।। ১৬।। স্কান্দে ব্ৰহ্মনাৱদসম্বাদে। মালতীমালয়া বিষ্ণুঃ পূজিভো যেন কার্ডিকে। পাপাক্ষরক্তাৎ মালাং হঠাৎ সৌরিঃ প্রমার্জ্জতি ।। ১৭ ।। পাছে উত্তরথণে। কার্তিকমাহাত্মের । মালতীকাতিকাপুল্পিঃ স্বর্ণজাত্যা চ চম্পকৈঃ। পূজিতোমাধবোদদ্যাৎ কার্ডিকে বৈক্ষবৎ পদং ॥ কমলস্য চ স্কান্দে। ব্ৰহ্মনাৰদ-नशाम । खडा खडे वर्ग गिरेकः कूनूरिमः शक्क का स्रुटिनः । जार्थाककः नमण्डाकी न-রোযাতি হরেঃ পদং। তত্রৈবান্যত্র। অহোনফাবিনফাতে পতিতাঃ কলিকন্দরে। বৈর্নার্চিতে। হরির্ভক্ত্যা কমলৈরসিতৈঃ সিতেঃ। পদেনেকন দেবেশৎ যোষ্চিয়েৎ कमनाश्चियः । वर्षायू छमरमुनः भाभनः कू ऋष्ठ ऋषः । भरेषः भषानया छर्ष

ত্যের মালবতী। মুক্তিং পরমাননককণাং ॥ ১৪॥ ন সমমিত্যতা নকারস্য অধুনাপি নাস্তী-ত্যর্থ: । ভবতে ভবতি ইত্যাদিকমার্থস্থায়ং ॥ ১৫ ।। নির্মাল্যমিতি উপভুক্তত্বেনো-ভারণবোগ্যমিত্যর্থ: । নহি নির্মাল্যং ভবতি । পাঠান্তরং সুগমং। অদস্তা অসমর্প্য ॥ ১৬॥ সালাং পঙ্জিং । সৌরির্মান ।। ১৭॥ অপ্রণয়েনাপ্যর্কিতঃ সন্। পদহন্তভ্দিতি যদ্যপি

পূজিতঃ পদাহওভ্ৎ। দদাতি বৈফবান্ পুত্রান্ ভক্তিমব্যভিচারিণী ।। ১৮।। তবৈব এ শিবোমা সম্বাদে । পদ্মপুঞ্গাণি যোদদ্যান্তশাচ্ভতণ ভবেৎ ।। ১৯ ।। ভত্রবর্ণবিশেষে। মাহাত্ম্যবিশেষঃ । ভথাচ ক্ষান্দে । রক্তপামপ্রদানেন রুক্মমান-কদো ভবেং। শতং দন্তা চ ধর্মাত্মা বহিন্টোমকলং লভেং। সহসুঞ্চ তথা দন্ত্ৰ। সূর্য্যলোকে মহীয়তে । বিষ্ণুলোকমবাপ্নোতি লক্ষপূজাবিধায়কঃ । স্বয়মেব তথা লক্ষাভঁজতে নাত্র সংশয়ঃ । বক্তপদ্মপ্রদানাদ্ধি খেতস্য দ্বিগুণ্ ক্লং।। তত্রাপি कोर्ভिक् विरम्परः । भाष्यां द्वर्थस्थ । कोर्ভिक् माहारखा । कमरेनः क्यमाकासः পূজিতঃ কার্ত্তিকে তু থৈ। কমলা অনুগা তেষাং জন্মান্তরশতেষ্পি। কান্দে চ প্রিক্সনারদসম্বাদে। কার্তিকে নার্চিতোথৈত্ত কমলৈঃ কমলেকণঃ । জন্মকোটিযু বিপ্রেন্দুন তেবাৎ কমলাগৃহে ।। নীলোৎপলস্য ।। বিষ্ণুধর্মোত্তরে । দত্তা নীলোৎ পলং মুণ্যং কুসুমং কুহ্নুমস্চ। ওল্যং ফলমবাপ্রোতি বন্ধু জীবস্চ দিজাঃ। সুবর্ণদশদানস্ফলৎ প্রাপ্নেতি মানবং। দল্বা নীলোৎপলৎ বিফোর্নাত্র কার্য্যা বিচারণা। নীলোৎপলশত ১ দত্ত্বা বহ্নিটোম ফলৎ লভেৎ। নীলোৎপলসহস্ত্ৰে পুঙরীকমবাগুরাৎ। লক্ষপূজাং নরঃ রুত্বা রাজসূয়ফলং লভেৎ।। কুমুদস্য বিষ্ণু-थर्मा खरत । क्रमायकनानमा कनः कूम्म जाखर । कूम्माना भावः मञ्चा हम्म-লোকে মহীয়তে। সহসুঞ্চ তথা দত্ত্ব। যথেষ্টাং গতিমাপুরাৎ । অশ্বমেধমবাপ্রোতি नक भृकाविधायकः । द्राङ्का ९ भ नथाम विकासका माफ्रिका कनः ॥ २०॥ कमयुग्र। काल्न जन्नात्रमयात्। काञ्क्रभनिकिर्विष् कमयुक्तूरम् (त। त्यः र्क्स खि ह शाविन १ न उवा १ मोतिष्य ७ स । कन यकु मूरे महारेष १ के प्र खि कन १-र्मनः। তেষाः यमानात्या निव न मायात्व क्यानियु ॥२५॥ किथा न जना কেতকীপুলৈমালতীকুসুমৈন হি।তোষমায়াতি দেবেশঃ কদম্বকুসুমৈর্যথা। দৃষ্ট্র:-कम्युश्राणि श्रीजाजविक माथवः। किम्भूनः शृक्षिठरेष्ठम् मर्सकामश्राप्तिः। यथा भषामशाः थाभा धोर्णाভविष माथवः । कमत्रकूमूमः मद्भा छथा थीनाष्ठि लाककृ । मक् र कम अभूरम्भ । र्मश्रा रहित क्रिंटः । म खक्यानि (मर्वम सम्बन्ध) রদূরতঃ। কদমপুষ্পাগন্ধেন কেশবোবা সুবাসিতঃ। জন্মাযুতা জিলত তেন নিহতঃ পাপসঞ্চয়ঃ।। ২২।। আষাতে বিশেষজত্তৈব। ঘনাগমে ঘনশ্যাম: কদয়কুসুমার্চিতঃ।

হত্তেন পদাং বিভর্জীতার্থ: ॥ ১৮ ॥ তন্মাদিতি প্রাথং তত্ত্ব পুর্ব্বোক্তাৎ সৌবর্ণপুশ দশককলপ্রদানাৎ করবীরপুশার্পনকলাদিতি জ্ঞেরং ॥ ১৯ ॥ রুক্মান্যকদইতি স্থবর্ণনাষ্দানকলং প্রাথ্ন দিতার্থ:। শতং রক্তপদ্মানাং এবমগ্রেপি। স্বর্থনেব লক্ষীভক্ত ইতি সাক্ষাৎ সর্ব্বসম্পত্তিস্তা ভবেদিতার্থ:। এবং কমলা অমুগেতাপি॥ ২০॥ জাতরূপং স্থবর্ণং তমিতৈস্তং-সদৃশবর্ণবিব্রিতার্থ:। নচ তে কুষোনিষু জায়ন্তে ॥ ২১॥ লোককুদপি হেলয়াপি। বাশন্ধা ধদিবেতার্থে। ক্ষম্পুশ্স্য গল্পনাত্ত্বগাপি ধদিব। স্থবাসিতত্ত্বগাপীতার্থ:॥ ২২॥ সম্পদশ্ভবিভূতী-

দ্দাতি বাঞ্জিবান্ কামান্ শতজমনি সম্পদঃ। কদম্কুসুমৈর্দেবং ঘনবর্ণ ঘনাগমে। যেৎচরিতি মুনিশ্রেষ্ঠ তৈরাপ্তং জন্মনঃ ফলং । করবীরস্য । স্কান্দে শ্রীশিবোমা-मम्राप्त । कन्नवीदेत्र म्हाप्ति यः शृक्षश्चि कम्बर । ममाभोव ने देकः श्रूरेष्ण र्यट्यत्यः जनवान सार । कत्वीदेवः नुबर्किक धाविषु नक्षक्रिय । गवामयुजनानमा कनः প্রাপ্রেডি মানবঃ । তত্ত্রিব ক্রন্ধারদসম্বাদে। যেংচরিন্তি সুরাধ্রকং করবীরেঃ শিতাসিতৈঃ । চন্তরুগানি বিপ্রেন্দু প্রতোভবতি কেশবঃ । নিতরকৈয় হাপুল্যৈঃ कुमूरिमः कत्रवीतरेषः । याश्वृत्त्वः भूषरमञ्ज्ञा म याजि गरूप्युष्यः ।। २०।। পুর্জিপুল্পস্য। পুরক্ষি পুহৈপ র্যাত্পূজাং মধুরিপোর্নরঃ। তস্য প্রসাদমায়াতি দেবশ্চক্রগদাধরঃ । রম্যাঃ পুরক্সিঞ্জর্ঘের্যাদয়িতান্তম্য নিত্যশঃ । পুরিদ্ধিপুর্পেং যোদদ্যাদেকমপ্যস্য মণ্ডলে। তিলপ্রস্থেদানস্য ফলৎ প্রাপ্যোত্যসংশয়ং। পুরু জু-মঞ্জরীপুথৈপঃ সহস্তেণার্ভয়েয়রিং । অগ্রিফৌনমবাপ্রোতি কুলমুদ্ধরতে তথা । কপূরপটবাদেন পুরক্ষিমধিবাসিতাং। মহারজনরক্তেচ তথাসূত্রে নিরেশিতাং। মালাং পুংপাসহসূেণ যা প্রয়ছ্তি ভক্তিতঃ । অশ্বমেধফলৎ তস্ত নাত্র কার্য্যা বিচা-রণা । শতেন বাজপোয়স্য ফলমাপোৣভাসংশয়ৎ। লফপূজাং তথা রুভা সর্কজান-মবাপুরাং।। ২৪।। অগন্তাপুষ্পাস্য কালে ব্রহ্মনারদসয়াদে। অগন্যকুসুমৈ-র্দেবং যেৎচর্যন্তি জনার্দ্দন । দর্শনান্তস্য দেবর্ষে নরকারিঃ প্রশান্ত্যতি। ন তৎ করোতি বিপ্রেন্দু তপসাতোষিতোহরিঃ। যৎ করোতি হুয়ীকেশোমুনিপুহৈপরল্বনৃতঃ। মুনিপুল্পক্তা। মালাৎ যে যজ্ঞি জনাদ নে। দেবেন্দু।পি মুনিশ্রেষ্ঠ কম্পতে তम्। मक्या। किथ उदेवतानाव। मूनि पूर्णक्षाः नृणाः मृष्या कर्ण विलिशिकाः । প্রতিভবতি দৈত্যারিদশজ্মনি নারদ । অগন্তাবৃক্ষসমূলৈ কুসুমৈরিদিতৈঃ সিতৈঃ। যেইচ্চিরিষ্যন্তি দেবেশং সংপ্রাপ্তৎ পরমং পদং ॥ ২৫॥ বিষ্ণুরহস্যে। व्यवस्त्रामस्रोतः भूरेष्ट्राः किर्स्टरेकः मूम्याप्टरेवः । मगलाक्ष्य अयोकमार् अवाप्टर्या-দ্বিমুচাতে। তত্ত্ৰচ কাৰ্জিকে বিশেষঃ। কান্দে তত্ত্বে। বিহায় সৰ্ব্যপাণি মুনি পুষ্পাণ কেশবং । কার্ডিকে যোহচ্চ রেড্ক্ত্যা বাজিমেধফলৎ লভেৎ ।। ২৬।। মুনিপুষ্পাচিত তোবিষ্ণু: কার্তিকে পুরুষোত্তনঃ। দদত্যভিমতান্ কামান্ শশী-

দ্দাতি ঘনশ্যামইতি ঘনবর্ণমিতি চ কদমপুলভূষণেন শোভাতিশয়োহভিপ্রেতঃ ॥ ২৩॥ তথেতি সমুক্তরে প্রকান্তরে বা। মহারাজনরক্তে স্ত্রে পুলসহস্ণে নিবেশিতাং প্রবিতাং মালাঞ্চ যঃ প্রযক্তি। শৃতেন পুরক্ষিপ্রশাণাং। এবং লক্ষণ্ণ তেন পূজাং॥ ২৪॥ হে দেবর্ষে তস্য দর্শনাৎ তেষাং দর্শনাদিত্যর্থঃ। কঠে আত্মনোভক্তস্য বা ॥ ২৫॥ কিংশুকৈঃ পলাশপুলেঃ। কিংশুকপুলাকারৈরিত্যর্থঃ॥ ২৬॥ যথা স্থ্যিস্থিতঃ শনীতি অমাবাস্যায়াং যথাকল-বিশেষা ভবতীত্যর্থঃ।শনীতি জমপোঠেনকপদ্যে যোগবিশেষঃ। অর্থস্ত সত্র । যথা। শুক্ল-বিশেষ্যা পুরিপঃ পুরিভঃ সন্ শশিস্থ্যিয়াঃ স্থিতইব তাত্যামপ্যধিকঃ পুরুষোভামা ভবতি

সুর্যান্তিতোম্বা। ২৭।। গ্রাম্যুত্দানেন মংফলং প্রাংগতে মুনে। মুনিপুরেপণ চৈকেন কার্ত্তিকে তৎফলং স্মৃতং। পালে কার্তিকমাহাত্ম্যে চ। মুনিপুলৈ ইদি হরিঃ পূজিতঃ কার্তিকে নরৈঃ ৷ মুনীনামেব গতিদো জানিনামূর্জ্রেভসাং !৷ কেন্ত্রকীপুষ্পাস্য । ক্ষান্দে ভবৈর । কেন্তকীপুষ্পাকেণের পৃজিভোগরুড্গুজঃ । मभाः मञ्जू मूळी जाका शर्क मथू मृत्र । अर्छ शिष्ठा श्यो किमार कुनूरे मः क्लिका क्रिके । श्रृनाः एक्टवनरे या कि क्लिका त्रमानाः ।। २५।। কিঞ্চ ।। সুবর্ণকেতকাপুষ্পং যোদদাতি জনার্দ্দনে । সুবর্ণদানজং পুণ্ড লততে স মহামুনে । বিশেষতশ্চাষায়ে তত্তিব । কেশবং কেতকাপুলৈ মিথুনস্তে দিবাকরে। ঘেনাচিতিঃ সরুদ্ধক্তা। সমুক্তোনরকার্ণবাং । কেতকীপুত্তা দায় নিপুনক্ষে দিবাকরে। যেনাচিচ তোহরিভ ক্তা প্রতোমন্তরং নুনে।। প্রবিদে। কর্করাশিগতে সূর্য্যে কেতকীপত্রকোমলৈঃ। যেং চর্গিয়য়ন্তি গোবিন্দং সংপ্রাপ্তে দক্ষিণায়নে। রুত্রা পাপসহস্থান মহাপাপশতানি চ। তেপি যাসঃভি বিপ্রেন্দ্র যত্র বিষ্ণুঃ প্রিয়া সহ ।। ২৯ ।। কার্ডিকেইপি ছত্রৈব। কার্ডিকে কেতকীপুরপর मनुः (यम करलो ब्राइः । मीश्रमानक्ष मित्रायं छातिष्ठ श्रकूलायुष्ठः ।। ৩० !। কুদদ্য। ক্ষান্দে তত্ত্বৈর । অভার্জ্য কুদকুসুমেঃ কেশবং কল্যাপহং । প্রযাতি ভবনং বিশোর্কান্দতং মুনিচারণৈঃ। দশমক্ষে চ। সাক্ষাং জীভগব দশ বর্ণন ৷ অপে:গপত্রাপগতঃ প্রিয়য়েছ গাত্তিভন্ন দৃশাৎ সুগুলি সুনিবূ তিম-চুত্তাবঃ। কা রা**ঞ্সঙ্গ**কুচকুকুসুসরঞ্জিতারাঃ **কুদ**সুজঃ কুলপতেরিছ বাতিগরঃ। ৩১। তথা ৷ কুদ্দৰামক্তকৌতুকৰেশো গোপগোধনবৃতো যমুনারাৎ ৷ নন্দসূক্রনয়ে তব

অতা শোভাতিশাং প্রাপ্তোহশো শ্যামন্ত দরঃ সন্তুটিঃ সন্অভিমতান্ কামান্ দদাতীত্যর্থঃ ॥২৭। পত্রকৈকেনেতি পাঠে একেনাপি পত্রেণে চ্যর্থঃ। পত্র শব্দে হত্ত প্রজ্পপত্রপরঃ। যদ্বা। কেতকী-শব্দে তংপুলাং তলৈকপত্রেণা। কৃচিচ্চ পত্রৈকেনৈবেতি পাঠঃ।। ২৮॥ স্থবর্গবং যথ কেতকীপুল্পাং এতেন শুক্লাভং বন্যকেতকং হাবচ্ছিন্ন।। ২৯॥ দীপদানপ্রেতি দুক্তান্তত্বেন। তদ্যকার্ত্তিকে পরমপ্রসিদ্ধমাহান্ত্যাথ ॥ ৩০॥ রাসক্রীড়ায়াং অস্তর্হিত্যা প্রভিগবতাহ্ত্বেন। বিরহাক্লাণাং প্রাবল্পবিদ্ধানাং বচনং। অপীতি নির্দ্ধারণে প্রশ্নে বা। ভোএণপত্নি হে স্থি বােযুমাকং দুশাং গাইত্রঃ প্রীলোচনাদ্যবয়বৈঃ স্থানির্কৃতিং পরমানন্দং তত্বন্ সন্প্রিয়য় প্রাথয়া সহাচ্যতঃ ইই উপগতঃনিকটং প্রাপ্তঃ। তদ্য লিক্ষমান্তং কান্তেতি। কুলপতেঃ প্রক্রক্ষমা। এবং রামক্রীড়ায়াং প্রিলগতা দাক্ষান্ত্যক্রক্ষমালায়া গৃহীতত্বাৎ তথ্যবিচ্ছ ভগবত্বপ্রমবিজ্ঞানান্তং প্রেয়বিদ্ধান মাহাত্মবিশ্বাহ সঙ্গতঃ। ৩১॥ তথা দিবসান্তরে তাসামের প্রীয়ণোদাং প্রতি বচনং কুন্দেতি। কুন্দস্য দানু। মালয়া কুতঃ কৌতকেন প্রমোৎসাহেন যদা কৌতকমুৎসক্ত্রজপোবেশ্যেনে কুন্দস্য দানু। মালয়া কুতঃ কৌতকেন প্রমোৎসাহেন যদা কৌতকমুৎসক্তর্জপোবেশ্যেনে

বংলে: নর্মানঃ প্রণরিনাং বিজহার ।। ৩২ ।। পাবস্ত কুসুন্স্য। বিষ্ণুপ্রাণে। ভর্ম হিছা क्यांकम् भावती कूपूरिवर्वतः। क्षेपूष्टिशनाकीर्वः कार्यः लाक्यांभू सार । ७ ३। ক্রিকারস্য তাত্তিব। ক্রিকারমানেঃ পূর্ণাল কাত্তিঃ ক্রকস্প্রতিঃ। অচ্চ য়িছাল্যতং লোকে তন্য লোকে মহায়তে । দশমক্ষকে চ তথৈব । বহাপীড়ং নটবয়বপুঃ কর্নোঃ কর্ণিকারং বিজ্ঞাসঃ কনকক্পিশৎ বৈজয়ন্ত্তি মালা। রক্ষান্বেণার-ধत्रमुभग्ना शृत्यन् (नाभव्देन्नव् न्नाद्रभार अभाव मान श्राविमाको छि ।। ७८ ॥ রক্তশতপত্রিকায়াঃ। ক্ষান্দে তত্রেব। কুলু মারুণবর্ণা ভাগং গদ্ধাচ্যাং শতপত্রিকাং। যোদদাতি জ্গন্নাথে শেতদ্বীপাৎ পতেন্নহি।। সেবভী পলাশপু স্পায়োস্ত তৈব। সেবন্তী কুদুমৈঃ পূণ্, কিৎশুকৈঃ সুমনোহরৈঃ । সমভার্চা হাষীকেশং জন্মদু:খাদ্বিমু-চ্যতে ৷৷ কুজিদ্যা তবৈৰ। গল্গালৈ কিমলৈ কিনে কুশুম্যেঃ কুজকো দ্ববৈঃ৷ ভক্ত্যাভাচ্ট্য क्षीकिषः (श्वचित्रीत्भ वरमञ्जतः ॥ हम्भकमः। क्षांस्म । चरेजव । नीलां ६ भनमाः मानः ठम्भकमा जनार्ष्ट्रत । ততेव्रव बक्तनात्रममशाम । वर्षाकाल जू (मरवना९ कूमूरेमम्हन्श-কোন্তুবিঃ। যেৎর্জরস্তিনর। ভক্তনা সৎসারে নপুনর্গতিঃ।। অশোকবক্লয়োস্তবৈ। বিষ্ণু রহস্যে। তশোব কুসুমৈরলৈ জন্মোকভয়াপাংগ। গূজ্যিছা হারং দেবং হাতি विष्यू मनामग्नः । অন্যাক । ক্ষাল্দে ভতিত্রব । বকুলাশোককুসুমৈর্ঘেইচর্য়ন্তি জগৎ-পতিং।ভেবদন্তি হরের্লোকে যাবচ্চন্দু দিবাকরে। পাটলস্য।। ততৈব। যোৎচ্চয়েৎ পাটলাপুলৈগালামরপাপহরং করিও । সপুণাতা পরংস্থানং বৈক্ষবও ব্রজতে अवर । यः भूनः भा देला भूरेष्मस्य भरत भक्क एषु जर । वर्ष सिर भवसा चल्या मूर्ति वाशी ভবেদ্ধি সং ।। তিলকস্য বিষ্ণু এহস্যে। তিলকসে । ডেল্বলৈঃ পুলৈঃ সংপূজা মধুসূদনং । পৃতপাপা। নিরাতক্ষঃ ক্ষস। নুচরোভবেৎ।। ৩৫।। । এবায়াঃ। বিজ্বহসে।। সমুজ্জুলৈর্জ্বাপুল্পেরভার্চ্চা জলশায়িন । সুপুণাং গতিমাপুতে বীতভারীত-মংসরঃ। জবাপুলৈ প্যান্ ভক্তা সংপূজ্য প্রয়েছমং। উত্মাঞ্তিলাপুতি এসল্লে গরুড়ধুজে।। অটল্যকস্য । স্কান্দে তত্ত্বৈ । অটল্যকপুল্পের্যঃ পূজ্ঞাং জ্গভাং পতিং। স পুণাৰামরোযাতি বিফোত্তৎপরমাণগতিং।। ৩৬।। কুসু-उत्रा । ठरेवत । कृ मुखकून्रेन क्रिंग धर्म हर्ष छ जनार्मन । ए या मनाना वानः প্রসাদাকত্রপাণিনঃ।। ৩৭ ।। মলিকারাঃ। ফালে । তত্তিব। মলিকাপুপাকাতীনাং

এবং মাহান্যবিশেষ দিন্ধএব।। ৩২।। পাবন্তীকুন্দভেদ ক্ষণপুষ্ঠের নুক্তি কুথপুর্টন গগৈঃ পার্য দৈরাকীর্ণ ব্যাপ্তং কাঞ্চ কুষ্ণদান্ধিন। ক্ষতিপুটইত, সমস্তপাঠে নরসা বিশেবেরং। পাঠা-স্করং স্পমং॥ ৩৩॥ কর্নিরারং কর্ণ গোকিন্দিভি সাক্ষাং শীভগবদ্ধে তথ্য বর্ণনেন ম হান্য ভরঃ দিন্ধএব।। ৩৪॥ জনার্দিনে দানং সমর্পরিং নিরাতক্ষঃ সংসারাদিভয়র হিতঃ।। ৩৫॥ সমুজ্জ্বলৈঃ শুক্তৈঃ তৎপূক্ষরের প্রসন্মে নতি। দ্বিতীয়ান্তোবাপাঠাং। পুরুষোন্তমবিশেষণং ॥৩৬॥ সম ব্রহ্মাঃ ।। ৩৭॥ ফলস্যপূর্বব্রহ্মা নীলোৎপ্লার্পনক্ষ্মা তক্ত তথ্য ক্ষমপাঠাং

यृथिकांशा स्टेथवह । उथाकू अक का जीना ५ कल महार्का थकी हिंदर । उद्यव শীব্র কানারদসমাদে । সুগাল্ধর্ম লিকাপুল্পেরচ্যিত্বাইচ্যুতং নরঃ । সর্বাপাপ বিনিন্জোবিষ্ণুলোকে মহীয়তে॥ ৩৮॥ মলিকাকুসুমৈদেবিং বসতে গরুড়ংবজং। যোহতারেৎ পরয়; ভক্তা; দহেৎ পাপং ব্রিধার্ট্রিতং ॥ ৩৯ ॥ পুষ্পার। ক্ষান্দে তত্ত্বের। কুন্তাপুষ্পন্ত দেবর্ষেই প্রথছেজনার্দ্ধনে। সুবর্পাল-মাত্রর পুষ্পে পুষ্পে ভবেন্মনে ।। গোকর্ণাদীনাং বিশুরহস্যে । গোকর্ণনাগর প্ভাং তথা বিল্লাতকেন চ। অর্চমিন্থাচু তেংদেব। দেবানামধিপোভবেং। অঞ্জলীবে!-তকীপুলৈগঃ কুয়াওতিমিরোড়বৈঃ। জলংক্ত্ব। নরঃ রক্ষং রভার্থোহরিলোকভাক্। म्र्लामिश्रशानाः । कात्म ठरेवर । शृष्टम्सां छरेवः शूरेरश्रख्या कामकूरमाम्रहेवः । ভূধ तः भगले क् छ। वियु लात उ जिल्ला । विष्तु तहरमा ह नत मृकी मरे । पूरिश खणा-কাশ কু:শাদ্রবৈঃ । ভুবনেশনলঙ্গৃতঃ বিষ্ণুলোকে ব্রঞ্জের ইতি ৷ বর্ণভেদেন পুষ্পাণাং ফলতেদশ্চ দশিতিঃ। তথা ভেষাঞ্চ সর্কেষাং মালায়ামহিমাধিকঃ ৷ ভথাচ कात्म निम्थर्मार्खद ह। त्यरेषः भूरेष्णः नमण्डाम् नद्यासम्बन्धार । কামানব গ্রালোকে পাতৈদেবৎ সমর্জয়ন্। শত্রণামভিচারেষু তথা ক্রাইঙ্গ প্রপ্রয়েং। বিষ্ণুরহস্যে চ । স্বর্ণাকাধিকৎ পুস্পং মালা কোটিওণাধিকা। দ্ভা ভবতি রুক্ষার নরৈভক্তিদমন্বিতৈরিতি । মরিকান্ত দিবারাত্রেগর্মক্তৎ সম্পাক-যূথিকে। নন্দাব র্ভং চার্দ্ধরাত্রে মালত ং প্রাতরেব হি । ইতরাণি চ পুস্পাণি দিবা ভগবতেহপ্রেং। এবং কেচিক মদ্যন্তে পূজাবিধিবিশারদাঃ। কিঞা প্রহরং তিষ্ঠতে জ,তা করবারমহর্মিশং । জলজং সপ্তরাতাণি ষণ্মাসন্ত বকং তথা ইতি ৷ ভবচায়ে-ত্তরে কালে ত্রেয়মেতদিচক্ষণৈঃ।। ৪০।।

অথ পুল্সভপাদি। পুশাণাং মণ্ডপৎ ছত্রং বিতানং বৈফবোত্রনঃ। দোলাদিকঞ্চ নির্মায় শ্রীক্ষণায় সমপ্রেছ।। অথ পুল্সগুপ্সাহাল্যাং। বিষ্ণুধ্যোত্রে।
ক্ষেবেশানি যাং কুর্যাং সুক্রপং পুল্সগুপ্থ । সপুল্সকবিনানৈত্ত কোটিভিঃ ক্রীড়তে
দিবি। তত্ত্বে ক্ষান্দে চ। কুত্রা পুল্পগৃহৎ বিষ্ণোঃ পুল্পকা তিন্নিতানকং। কলেন
যোগসায়াতি রাজসূয়াশ্রমেধয়োঃ। তত্ত্বে শ্রীশেরোমা সম্বাদে। কেশবোপরি হঃ
কুর্যাচ্ছত্রৎ বা পুল্সগুপ্থ। পুল্পস্ত মঞ্চকং বাপি তস্য পুণাং বদামাহং।
প্রাক্তির্থর্যামহাভোগিঃ ক্রীড়ারতি সমন্থিতেঃ। নিতান্ত মোদতে স্বর্গে স নরোনাত্র সংশয়ঃ। বিশেষতঃ কার্ত্তিকে। ক্ষান্দে। শ্রিক্সনারদসম্বাদে। মাল্ডামাল্যা
যেন কার্ত্তিকে পুল্সগুপ্থ। কেশবস্য গৃহে চক্রেন ময়া বিদ্তৎ ফল্ছ ।। ৪১ ।।

॥৩৮॥ত্রিধেতি মহাপাতক।দিভেদেন কায়িকানিভেদেন বা ॥৩৯॥ নাগকর্ণঃ হস্তিকর্ণেতি প্রনিদ্ধ। অঞ্জলী শ্যামপুষ্পাং বোতকীবোতকীবোইতি প্রনিদ্ধা। তিমিয়া ত্রিত্রৈতিপ্রদিদ্ধা ॥ ৪০॥ অথ সুবর্ণাদিপুত্পানি। স্বর্ণর জাদিপুত্তপশ্চ ভগবন্তং সমর্চয়েও। নচ নির্মাল্য-তাংযান্তি তানি তন্ম ভ্রপ্য়েও। তথাচোক্তং দেব্যা। ন নির্মাল্যং হেমপুত্থ-মর্পয়েদর্পিতং সদা। ৪২।। বিষ্ণুধ্যোত্তরে। স্থান্দে চ। ক্রিমাণ্যনুলেপানি গল্পেনাতিসুগন্ধিনা। ধূপেন পাটবাদেন চন্দ্নাদ্যনুলেপনৈঃ।। ৪৩।।

গলেনাতিসুগলিনা। ধূপেন পটবানেন চন্দনাদ্যনুলেপনৈং ।। ৪৩ ।।
অথমান পুষ্পাদিনাহাত্মং । স্কান্দে । মুর্ণপুষ্পাদিতি তামস্য গৃহে তিই তি
কেশবং ৷ তদ্যৈব পাদরজসা শুদ্ধাতি কিতিমগুলং ৷৷ ৪৪ ৷৷ সুবর্ণপুষ্পারভাদ্য রাজস্যফলং লভেং ৷ রাজ্বদেবমথাভাদ্য রাজা ভবতি ভূতলে ৷ তাত্রেব শিবোমা-সম্বাদে ৷ পুষ্পজাতিষ্ সর্বাসু সৌবর্ণং পুষ্পমুক্তমমিতি ৷৷ ৪৫ ৷৷ এবমুক্তৈরনুক্ত শেভাটোর্বা সুগিলিভিঃ ৷ সংপ্রেলাভগবান্প্তিপ্রানিষিদ্ধিন্ত দুংখদৈঃ ৷৷ ৪৬ ৷৷

অথ নিষিদ্ধানি পুষ্পাণি। তত্ত্র সামান্ত বিষ্ণুধ্যোত্তির। শাশান্তি ক্রেদ্রম্প্রথাপি নিপাতিতং। কলিকাচ ন দাত্রা, দেবদেবস্য চিত্রিণঃ । ক্রান্যবর্ণ কুসুনং ন দেরঞ্চ তথা ভবেং। সুগালি শুলং দেরং স্যাক্তাতং কণ্টকিনে ক্রমাং। দল্প কণ্টকিসমূত্যন কুলং পরিভূষতে। অনুক্ররক্তকুসুমাদসৌভাগ্যমবালুয়াং। উপ্রগলি তথা দল্প নিত্যমুদ্ধেগমাণুয়াং। অগলি দল্প বাংগতি হাস্ততং পরমং নরং। তত্ত্বিব ত্তীয়কাণ্ডে। উপ্রগলীন গল্পানি কুসুলানি ন দাপয়েং। অন্যায়তনজাতানি কণ্টকানি তথৈবচা। ৪৭।। রক্তানি যানি ধর্মা ক্রান্টেত্যবৃদ্ধোলুরানি চা যানি শামানজাতানি তথাচাকালজানি চা দানং বিবক্তা হৈদ্যত্যাং পুল্পাণামপ্যগল্পিনাং। নারদীয়ে। রাক্ষ্যামপথে। পারক্যারামজাতিস্থ কুসুমৈরক্তিয়েং সুরান্। তেন পাপেন লিপ্যেয়ং যদ্যেতদন্তংবদে। জ্ঞানমালায়াং। কলিকাভিত্তথা নেজাংবিনা চম্পাকজৈণ্ডিত । শুক্রেন পুলুয়েদ্বিষ্ণুংপত্রিং পৃথৈপ ক্রেরপীতি।। ৪৮।। জাতিমূত্যোত্তথা মলী নব্যালিকয়োরপি। কলিকাভিত্রে ভাক্তা সৌরভ্যাৎ কৈশিদিয়তে। বিষ্ণুর্হস্যে। ন শুক্রৈঃ পূজ্যেদ্বিষ্ণুং কুসুমৈর্ন

তং তক্ষাৎ।। ৪২।। স্বর্ণাদিপুষ্পাণামর্পণপ্রকারংলিখতি ক্রত্রিমাণীতি ক্রত্রিমাণি স্কর্বর্ণপুষ্পা-দীনি ধূপেন পটবাসেনচ স্থগিক্ষাক্রব্যপূর্ণেন বিশিষ্টানি।। ৪৩।;

স্বৰ্পুপৈরচিতঃ অভিধিক্তঃএবংপুষ্পপ্রাচুর্য্যসুক্তং। পাঠান্তরংস্থগমং। তদ্যৈবেত্যতারংভাবঃ। বস্যপদেরজোমাত্রেণ জগৎপবিত্রংস্যান্তস্থানিকলান্তরংকিয়্মাত্রং শীঞ্জিভগবং পার্বদ-বর্ত্রবাসাবিভি॥ ১৪॥ রতন্ত্রঃ রত্ময়পুটপ্রাঃ ॥ ৪৫॥ অমুক্তিঃ শাস্ত্রোক্তব্যতিরিটক্তঃ । যদি চ তানি শোভাবন্তি স্থান্ধীনিবা ভবন্তি তদা তৈক্ষ সংপ্রক্ষাইত্যর্থঃ । শাস্ত্রেণ নিবিটক্তির নসংপ্রক্ষাঃ যতোছঃখদেঃ ॥ ৪৬॥

চৈত্যক্রমোনামবদ্ধবেদিকতলঃ পূজোবৃক্ষঃ অম্বক্তং পূর্ব্ধোক্তাদিতরং ॥ ৪৭ ॥ ধর্মজ্ঞাইতি পাঠে হেধর্মজ্ঞা ইতি তত্রত্যানাং, সমোধনণ ॥ ৪৮ ॥ আশুবিকাশিতৈঃ

নহাগিক। নাবিদান দলৈ কিট্র বিচনান কিটান কিটান কালি কিটান কালিক কিটান কালিক কিটান কালিক কিটান কালিক। কালিক কালিক। কালিক।

কথ বিশেষতোনিধিনানি। বিশ্বধ্যোভিবে ভূটীয়কাথে। ক্ৰকরস্ট পুশালি তথা প্ৰ্বকস্ট। ক্ষণ কুটজং চাৰ্কং দৈব দেবং জনাদ নে। ৫৫ ।। কিটানিত । নাৰ্কং নোমানকং আিলিং তথেৰ নিবিকনিকাং । নাকটকারিকাপ্রাণি ক্ষমান্তান নিবেদয়েও। ফুটমার্থ আল্বালিপুশার্থ লিরীমার্ক জনার্মনে । নিবেদ্ধিত ভ্রম্যোগ্রাথ নিবেদ্ধেও। ফুটমার্থ আল্বালিপুশার্থ লিরীমার্ক জনার্মনে । নিবেদ্ধিত ভ্রম্যোগ্রাথ নিবেদ্ধেও। ফ্রালেক উত্তব । যেক্রাভি ত্রিকোনিকার্থ লিক্রাভিকেনি যে মূলঃ জনাদ্ধিন । তেত্যা ক্রানোভ্যথ দুর্থাই ক্রোধংবিক্রাভিনতি । উন্ভিকেনি যে মূলঃ প্রমানি ক্রিক্রমান্ত্র ক্রিমান দার্থিত পুর্থবত্তাৎ তেবাংবিক্র প্রস্তৃতি। গিরিকান্কয়া

वणाबिक निटिंगः ॥ ८० ॥ किनाः दिनावक्षायाद्यंन स्मिति वृष्णानि स्मानि प्रमानि स्मानि स्

বিষ্ণু যেই জ র স্থানর। । তেষাং কুলুক্ষরং ছোরং কুরুত্তে মধুসুদনঃ।। ইতি।। ৫৬ ।।

অথ পুলাগ্রহণকালাদি। মধ্যাক্লে স্থানমাচর্য্য কুসুমৈন্ত সমাহতিং। নৈব লং পূর্জয়ে বিষ্ণুই অনিবিদ্ধানি তান্য লি ।। ৫৭ ।। তথাচ কালে । তইবে । সানং কৃত্যা তুম কি কিছিৎ পূলাং গৃহুতি বৈ নরাং। দেবতান্তম গৃহুতি পিতরং থলু বৈ দিলা। অধ্যাক্ষে গৃহুতি ভ্রমীভবতি কাঠবং ইতি ।। ৫৮ ।। কুসুমানামলাভে তু চৌর্যালামণ নি দুর্যাতি। দেবতার্যন্ত কুসুমমন্তেরং মনুরব্রবীং ।। ৫৯ ।। তথা কৌমে জীলাসগীতায়াং। পুলো শাকোদকে কাঠে তথা দূলে ফলে তৃণে। অদভাদান-মাত্রং মনুঃ প্রাহ্ প্রজাপতিং ।। ৬০ ।। গ্রহীতব্যানি পূল্পাণি দেবার্জনবিধৌ দিলাঃ। নৈকলাগদেব নিয়তমননু জ্ঞাপ্য কবলমিতি ।। ৬১ ।। বিহিত্যে নিবিদ্ধানাং বিহিতালাভতো মতং। কুসুমানামুপাদানং নিমিদ্ধানাং ন কহিচিং ।। ৬২ ।। বিহিতপ্রতিবিদ্ধান্ত বিভিতালাভতোইক রং ।। ৬০ ।। নিমিদ্ধপুলাসংগ্রহশ্যোকা। কিইতপ্রতিবিদ্ধান্ত বিভিতালাভতোইক রং ।। ৬০ ।। নিমিদ্ধপুলাসংগ্রহশ্যোকা। কিইতং হুলোগানিকং ভূমপতিতং ভিত্রক কীটা হিতং যথকেশোপহতঞ্জ গল্ধ-রুতিং হুলোগানিকং ভূমপতিতং ভিত্রক কীটা হিতং যথকেশোপহতঞ্জ গল্ধ-রুতিং হুলোগানিকং কিত্রহং চোহ জল্পাত্রকানিধৌ পুলাগ্ধ তম্বজ্জরেং।। ভত্ত্ব যদিটিপাদিকং কিত্রহং চোহ পাল্য হুলাহতং হুলালুকা। সমাজ্ঞ ও ক্রম্পালাং পুলাং ভ্রত্যাসুরং। চৌর্যালিকা হুলাহ্বং হিনাৰা সমাজ্ঞ ক্রম্বানাং পুলাং ভ্রত্যাসুরং। চৌর্যালিকা হুলাহ্বং হিনাৰা স্থান্ত হুলাহান্ত হিনাৰ পুলাং ভ্রত্যাসুরং। চৌর্যালিকা

অপিশক্ষঃ পূর্বানিষিদ্ধাপেক্য়া সমুক্তরেতানি মধ্যাহ্লানানন্তরমাহতানি কৃষ্ণানি দংগা পলিতি সমুচ্চরে পিতর চ ন গৃহন্তি ভক্ষীভবতি বিফলং স্যাদিতার্থঃ।। ৫৮॥ ধর্মার্জিতধনকীতৈরি-ত্যাদিবচনৈর্ন্যায়োপ।ক্ষিত।মি কুসুমানি দেবপূজায়াং বিহিতানি তত্র ধনাদ্যভাবে কিং কর্ত্তব্যং তত্র লিখতি কুসুমানামিতি।টোর্যেণ অদানং গ্রহণং অন্তেয়মিতি চৌর্যোণানীওমপি চোরিতংনভ বতি। অতএবোক্তংবিফু ধর্মোওরে। যথাকথঞ্চিদাহৃত্য কুস্থ মৈরর্চয়েদ্ধরিমিতি॥৫৯॥ অদ্ভশ্যা-প্যাদানং।। ৬০।। কিঞ্চ ভবৈত্ৰৰ বিশেষমাহ। গ্ৰহীতব্যানীতি।এবং ভগৰদৰ্গমেৰ শাকাদীনামা-मानमक्के गिंखि (अहत्र: श्वार्थिखू (मीयव्ये । एनः कार्यः कनः भूनाः अकार्यः देव इत्तकू पः। धर्मार्थः কেবলং বিশ্রো হান্যধাপতিভৌভবেৎ। ইতি। অতএব তত্তৈব। তৃণং বা যদিবা শাকং মূলয়া কল-মেব বা । পরস্যাপহরন্ জন্ত্রর্নরকং প্রতিপদ্যতইতি ॥ ৬১ ॥ নত্র বিষ্ণুধর্মোন্তরে ভৃতীয়কাণ্ডে অনাায়তনজাতানি পুলাণি নিষিদ্ধানি। স্থান্দাদৌ চ কণ্টক্যাদীনিবিহিতানি সন্তি। তথা বামন-পুরাণাদৌ বক্ষুকজবাপুশামোনিষেধঃ আয়তে তে চাত বিষ্পুধর্মোন্তরাদৌ বিহিতে এব ইত্যেব-মাদিবিরোধে কথং ব্যবহর্ষব্যং তত্ত্র লিখভি বিহিতেঘিতি । শাক্ত্রেবিহিতেযু কুল্পমেৰু মধ্যে নিবিদ্ধানাং কুন্তুমানাসুপাদানং গ্রহণং বিহিতানামলাভতে। হেতোঃ অলাভে বা সতি মতং বুধৈঃ। বিহিতানাং লাভে সভি চ তানি নিষিদ্ধানি ন প্রাহ্যাণ্যের। যানিচ কেবলং সর্বতে নিষি-কান্যের ভৈষাং কদাচিদপ্যপাদাদং ন মতমিত্যর্থ॥ ৬২। বিহিতেরু মধ্যে প্রতি**নিদৈনিবিদি**ঃ পুলেঃ বিহিতানামলাভতঃ অলাতে সভীভার্কঃ। অর্চয়েদেবং।। ৬০॥

इम्प्रेमन् किम्मेमश्रिक्षिण्येश यम्थाकि ३१ यक युष्टमाश्राह्म विभिष्टिः की एक एव छ । किस् कि जूनमोश्राह्म नर्को देव कि विभिष्ट की जूनमोश्राह्म नर्को देव कि सम्बद्धाः ।

व्यथ भवानि । विक्थरमाङ्द्र । भूष्णाङ्गादम स्वाममाम्ब मूर्वाम्ब्रामि । माशि श्वामवात्मां श्रिकानामा देव विवार। श्रुष्णाकां द दि एसानि शेखानाशि कनार्फान । भवाভाद् भेरेशारम्ब । एन भूग मनाभ प्रार ॥ निरम एक। मधुमून-नीम स्मान्हमः वाभाग मध्यम्न । मृद्यास्त्र का मनिनः वित्ममुनः धारमाछ भूष्णमं ह विकाः । अध्यम्बोकभूतानाः भवानि विनिद्यम्दार । এতে यामि है हिक्त्रा श्वमान महाकल । श्वाि नमूनकीनि श्वनाि मृमृति ह । उन श्रमः भवारभाष्ठि भूक्षानामम् भूष्ठवर ॥ ७७॥ नात्रिनरह । भवागि मू भूगानि इति-প্রতিকরাণিচ। প্রবক্ষামি নৃপশ্রেষ্ঠ শৃণুষু গদতোমম। অপামাগরি প্রথমং ভ্স-রাজৎ ততঃপরৎ ৷৷ ৬৬ ৷৷ ১তত্তমালপত্রঞ্চ ততশ্চ শমিপত্রকং ৷ দূর্বাপত্রং ততঃ শ্রেষ্ঠং ততোপি কুশপত্রকং। তথাদামলকং শ্রেষ্ঠং ততোবিলুস্য পত্রকং। বিশ্ব-পতাদিপি হরে স্থলগীপত্রন্ত্রং। এতেষাঞ্চ যথা লক্ষেঃ পত্রৈর্যন্চার্চ্ছের রিং। সর্ব-পাপবিনিমুক্তি। বিষুলোকে নহীয়তে।। বামনে। বিল্পতং শমীপতং পত্তং ভূস-व्रक्रमा ह। एमानामनकी भवः भवः कभव भूकान। स्थाः न मछि भून्यानि अभवः। नार्कत्व विरक्षाः। श्रवताना शि रव्याः नूतः भक्ताना क्रीतियो इतः। आस्त्रतः। त्रक्रिकी পুস্পত্রঞ্গ ভূমরাজন্য পত্রকং। তুলনীকালতুলনীনদ্যস্থাইকরং হরেঃ। বিলুপত্রং শমীপত্রং পত্রং ছুঙ্গরজন্য চ। তমালপত্রঞ্চ হরেঃ সদ্যস্তুষ্টিকরং ভবেং। স্কান্দে ব্রহ্মনারদসম্বাদে। শমীপত্রৈশ্চ যোদেবং পূজ্য়ত সুর্দ্ধিষং। যমমার্গে মহাঘোরে:-मिकार्गस्थन नातम । कुछीभाजन प्रवर्ष (यर्कप्रसि क्नाफ्नः । काणिकपा किंउः পাপং দহতে গৰুড়পুজঃ। দক্ষভাৰ্চ্য গোৰিন্দংবিলুপত্তেল মানবঃ। হরিদদ্যাৎ ফলং उरैम नर्सयरेकः नुमूब छ । विम्नश्वान याप्तवः कार्षिक कनिनक्ता भूमग्रस्ट महाख्ङा मुक्तित्ववार मरमामिछ।। मासकर क्रकी शतः छथ। मममकर मूर्व। , मखगाज्य राजः श्रीजिः करतान्ति भेजवार्षिकीय ॥ ७१॥ ममरेनरकन स्मरेन नः शास्त्र मध्याधरवी शामक्षुना जु मूर्त मः भूका नकरक कनः । मृतीकृदः

দ্রমণ্য ছদং পত্রং প্রস্থান প্রশান ১৪॥ তেবাং মধ্যে একণ্য কণ্য চিৎ পল্লবানি চ নিবে-দয়েদিতি পূর্বেশাস্থায়ঃ॥ ৬৫॥ পরং শ্রেষ্ঠং॥ ও৬॥ কেতব্যাঃ প্রশাস্থ পত্রং। ভূজরাজ ভ্রু রঙ্গারেশার্বান্তরভেদো জ্রেয়ঃ॥ ৬৭॥ দেবেশং অর্চন্নমিতি শেবঃ। পাঠান্তরং স্থামং॥ ৬৮॥

हरतर्गंड पूकाकारम अम्राकृष्टि । भूकाकृत् भूकृष्ठभू, ममानारभूषि मानवः । मक्षतीर महकात्रमा किनाद गिर्म नांतर । य शेष्ट्रिय सहाजातार्थ क्रिक्षण्डातिकः । किथा मञ्जा पृक्षास्त्र प्रेष्ठः पृक्षिः पृक्षिक्षास्त्रम्मः। प्रमाठि हि कनः नृत्र श्र्यः । मानाहिष्टुक क्रिक्षेट्रेजेर श्रीनियामानवारम् । विनुपरिवर्श्यः निरुप्त नेहरम्बर श्राप्त देश । मञ्जूला न निर्मे देखा मामाला कि ने छिछ छ । विक् महामा छ । नेक्मकामा त्याविक १ विक मिने देव माने वेश । मुक्किकाशी निवाककः क्षेत्रान इर्दर्श जरद । विक भरण है शिक्क की प्रमन रेन्डिय नेपिडिकिरदा हैरियः । किथा। दमरान् किम् थारिनाव शक नुष्णकनाति हि। ख्या कानमानाशः। ' भूलाः वा रिनं वा भवः केनर तिकेमरथा-मुबर । मूर्वनर उद मगांशांकर श्रंकां द नमर यथा निष्या ७৮ ॥ अथ श्रीज्यानानन मिछाडा । भाषा । जूनमी न श्वार इदिभू क्रमार्थर म्रभारी के माध्य भूग बांमरत । विश्राविमं कोवनं मर्था महकिर क्वांश्यू अरे महंह मूमारेज भारते।। ७३।। **এ ভগবদুভো। ভলসীং** প্রাপ্য থোঁনিতাং ন করোতি মমার্চনং । তস্যাহং প্রতি मुस्ति में भूकार भज्वारिकीर। वृष्यां बेमीरंस है यळ्यूक्रांथ) नाएँछ। येक्यू व नारिस खनमी माम्यामिनार्कत्ना मामानमम्बेश विम्राखिण्डः, राज्य विद्रश जान कर्या छ । जूनजी र दिना यां जिन्में जेन भूका नामर म जन्म दूलनी दिना कुछर । जुकर न छम्यह-अनीर दिना केंडर भी जरमजाम बूनमीर दिना केंडरी वागू भूतात है। जूनमी विकार र्णुकार न शृहाकि नमा रिका काकेर वा नमार्था खां के कि कि मारिक में एक विकास कि मामाश्च त्यार्ना १ त्मतः व्यश्चारप्रद । जन्मि महि लाच् म मे वित शक् क जनाः । कार्क (वश्कर शाक्रर है रैनटवमा खेमेदका डनमीनेनांगरिनं सर्विष्ट्रे हरेत्र परिम्हे छ ७ मर्द्रा है। १०॥ खगरफं न जोम्राक े जूनेगा। महिमार्डी दः'। निर्माणिय विथ्रोज्य मशक्ताराह नियार्छ।।१५॥

्रवर्थ व्यक्तिमाद्याचारं। उत्र क्षांश्वादमार्डमेको कार्यः। गर्कोषध द्रार्शनय भूता क्ष्म्यक्ष्यन । भूकेन प्राप्त भावाद्य विक्षा क्ष्मणी क्ष्म । व्यक्तव क्ष्या । विश्व म-कृतः भावार म मार्गरे मुक्किनवर । वह शक्ष्मणार किथि न भवाद् द्रांगी त्रार । व्यक्तव ह विक्षेत्रमा । व्यक्तिभवाद इतिकाद क्षित्रक्षि भरयूकार् । की द्राप्त विभक्ष

প্রিক্তি কলনীতা দিনা আর্যস্থাছনে ভিন্তঃ গৈতিবাং। এব মগ্রেপি। মাধবং বৈশ্বিমাস: জীরুকো বা তলা পুণ্যবাসরঃ অক্রভুতীয়াদি একার্শানি বা তলিয়প। পরে চ পরলোকে অধং নির্তিনিদ্শাতে শাস্ত্রবিদ্ধিঃ কৈশিষা বদা কেনামিতি তৈঃ॥৬৯॥ প্রাপ্য আনীয় ইভার্বঃ॥ ৭০॥ শৃত্র ভারিকিন্তিঃ ক্রিকেরেণ বিশ্বিক্ষমশৃকাইতি ভারং॥ ৭১॥ ন বিশ্বমদ্শমিতা দি

তুলসী দাপরেদ্ধরেঃ ।। ৭২ ।। জীভগবদুর্ভতা নারদীয়ে । তাবদার্জন্তি পুষ্পাণি মালতাদীনি ভূসুর ৷ যাবন প্রাপ্তে পুণা তলসা রুক্বলভা ৷ বিশ্বর্হসের ৷ क्षावा भाषवा रेक्षा जूनभी क्ष्यवज्ञाचा। निज्ञा वाभाष्यवाक्षणः वामणी बज्जा र दिः। তাবদাৰ্জ নি রত্নানি কৌস্তভাদীন্যহর্নিশৎ । যাবন্ন প্রাপ্ততে রুক্ষা জুলসীপত্র-মঞ্জরী। অগস্ত্রসংছিতায়াং। পূর্বসূগ্রতপঃ কৃত্বা বরংৰত্তে মনস্থিনী। তুলদী দর্ব-পুস্পেভ্যঃ পত্তেভ্যোবল্লভা ততঃ। পাত্মে বৈশাথমাহাত্ম্যে শ্রীযমন্ত্রাক্ষণসম্বাদে। नर्वाभाः भद्रज्ञाजीनाः जूनभी किन्नविशा । किन्न ।। नर्वशः नर्वकालम् जूनभी-বিষ্ণুবল্লভা ।। ৭৩।। ততৈবোত্তরখণ্ডে। কার্ডিকমাহাত্ম্যে শ্রীনারদাক্তৌ । তুলসাদলপূজারা মরা বস্তুৎ ন শক্যতে। অত্যন্তবল্লভা সা হি খালপ্রামাভিধে-হরে ৷৷ ৭৪ ৷৷ পাতিক্রতে নে বৃদ্দাসৌ হরিমারাধ্য কর্মণা ৷ পূর্বজন্মন্যসৌ লেভে রুষ্ণসংযোগমূত্রমং। তত্ত্রৈব জীব্ন্দোপাথ্যানান্তে। সত্ত্বং প্রতিকরং বাক্যং কোপ-खनाञ्च जामनः। ভারদ্যং হরৌ জাত । यন্তদ্র্দ্যং इ। जामा श्री जूलमी বিকোঃ প্রিয়া গৌরী বিশেষতঃ। দ্বারকামাহাক্সেচে। জীলার্কণ্ডেয়েন্দু দুমু সম্বাদে। যথা লক্ষ্মীঃ প্রিয়া বিক্ষোন্তলসী চততোধিকা। ক্রান্দে। যোগিনাৎ বিরতৌ খাঞ্ছ। কামিনাঞ্চ যথা রতৌ । পুল্পেষ্পি চ সর্কেষু তুলস্যাঞ্চ তথা হরেঃ। নিরস্য মালতীপুষ্পাৎ মুক্তাপুষ্পাৎ সরোরহং। গৃহ্লাতি তুলসীং শুদামপি প্যুর্গিতাং হরিঃ। অতএব চতুর্থস্কান্ধে শ্রীধ্রবং প্রতি শ্রীনারদোপদেশে। मिलितिः श्रिकिमीलि। मृत्यका विकि । मुखाक्षु वा विकिष्ठा के अंकु निमा প্রিয়য় প্রভুং ।। १৫ ।। রাসক্রীড়ায়াঞ্চ । দশমক্ষকে শ্রীগোপীনাৎ ভগবদরেষণে । ক্ষিত্রলসি কল্যাণি গোবিন্দ্চরণপ্রিয়ে । সহ ত্বাহলিকুলৈবিত্রৎ দৃষ্টস্তেইভিপ্রিয়ে – ३६ जि: 11 १७ 11 अञ्चव कात्म । यदक्लः मस्तर्राष्ट्रीय मस्तराख्य नातम । তুলসীদলনাত্রেণপ্রাতে কেশ্বার্চনে ।। ৭৭।। পাছে বৈশাখনাহাত্ম্যে তত্রৈব। ত্যক্তা তু মালতীপুত্পৎ মুক্তা চৈব সরোক্ষহং। গৃহীত্বা তুলসীপত্রং ভক্ত্যা মাধৰ-মর্চায়েও। তস্য পুণাফলং বক্তুমলং শেংধাপি নোভবেও।। ৭৮।। তত্তিব শ্রীমাঘমা-হাত্ম্যে দেবদূত্বিকুওলসম্বাদে। মণি কাঞ্চন পুষ্পাণি তথা মুক্তাময়ানি চ । তুল্পী

ত্রাং দৃষ্টান্তত্বে শাধ্যসন্ধিধী দিন্ধনির্দেশোদৃষ্টান্তইতি ন্যায়াৎ এবমগ্রেপ্যহং ॥৭২॥ গর্জ্জন্তি গর্বাং বহন্তীত্যর্গঃ অক্ষা ক্ষেত্রা হরিদ্ধনেত্যর্থঃ। ক্ষেতি তস্যাং প্রীতিবিশেষাৎ পর মন্ধিন্ধত্বেন শ্যামতাপ্রাপ্তের্বা॥ ৭৩॥ শালগ্রামাভিধে শ্রীশালগ্রামশিলাসংজ্ঞকে। শ্রীকৃন্ধাভক্ত্যেব তদ্ধনে পেণাবর্তীর্ণস্থাং। তদাখ্যায়িকা তত্ত্বৈব বিস্তীর্ণান্তি॥ ৭৪॥ কন্যৈঃ শইস্তরক্ষুরাদিভিরন্মেরক্রলাদিভিঃ প্রিয়য়েতি প্রভারের্চনে তস্যা আবশ্যকত্বং কিয়া সর্কানরপ্রেক্ষ্যণ তথ্যেব তৎসন্তোব্যক্তিং। ৭৫॥ অলকুলৈঃ সহ ত্যা ত্বাং বিভ্রুৎ দধ্যনঃ।। ৭৬॥ তৎ প্রাপ্যতে॥ ৭৭॥ অলক্ষান্ত সমর্পানি ত্বাসীপত্রস্য শ্রীকৃষ্ণায় কন্মৈচিদ্বা

প্রদানস্য কলাং নার্ছন্তি যোড়শীং 11 ৭৯ 11 তগল্ডাসংহিতায়াৎ 1 নীলোৎপল-নহসেণ ত্রিসন্ধ্যং যোহর্চয়েদ্ধরিং। ফলং বর্ষশতেনাপি তদীয়ং নৈব লভ্যতে। विष्य मर्द्यम् भूः व्याम् भक्षकः । खर्श्वे मुठाउ । उर्भू व्याम् विषयः कार्षि कां छि छन् छत्द । विस्काः भित्रति विनास्यस्यकः बीजुननीपनः । अनस्यक्नमः विश्वन् मत्क्राक्तावनभूर्वकः ।। किथा। वर्गाव्यामण्डानाथः भूषायारेन्व माधनः । অপেক্ষিতার্থদং নান্যৎ জগত্যন্তি তপোধন ।। ৮০।। অতএব নারদীয়ে। वर्जाः পযু ্ষিত । পুত্পং বর্জাৎ পর্যুষিত । জলং । ন বর্জাং তুলসীপত্রং ন বর্জাং জাহ্বীজলং ।। ৮১ ।। তথ জীভগবদর্গনে পাপহারিদ্বং। পাছে। জীমভুলস্যা-র্চ্চরতে সক্ষরিং পাত্রৈঃ সুগল্ধৈর্বিমলৈরখণ্ডিতৈঃ। যন্তস্য পাপৎ পটসংস্থিতং প্রভুর্নিরীক্ষরিতা মৃত্ততে স্বয়ং যমঃ ।। ৮২ ।। কান্দে। তুলসীদললকেণ যোৎচর্মে प्यातका शिवः । क्रमायुक्तमञ्जानाः भाभमा कूक्**ष्ठ क्र**वः । विष्याक्रमा দৃষ্ট্র প্রতিমাৎ কেশবস্য চ। তুলসীপত্রনিকরৈমুচ্যতে ব্রহ্মহত্যয়া ॥৮৩ ॥ নিত্যমভার্চয়েদেশাবৈ ত্লস্যা হরিমীশবং। মহাপাপানি নশ্যন্তি কিংপুনশ্চোপ পাতকং। অন্যত্ত চ। গৃহ্যানি যানি পাপানি অনাখ্যেয়ানি মানবৈঃ। নানয়েন্তানি তলসা দত্ত মাধবমূৰ্দ্ধনি। হবে গৃহিং যদা যপ্ত ভলসাদলবিপুথৈঃ । তিসকাং প্রোক্রয়েক্ত্রণ মহাপাপেঃ পুনুচ্যতে ॥ ৮৪॥ অতএব হ্বান্দে। অবর্ত্তাথণ্ডে। কিং করিব্যতি সংরুটোযমে।পি সহ কিন্ধরৈঃ। তুলদীদলেন দেবেশঃ পূজিতো যেন দুঃগহাঃ অগন্তঃসংহিতায়াঞ্চ ন তস্য নরক ক্রেশোযোহচ্চ য়েতুলগাদলৈঃ। পাপিঠোৰাপ্যপাপিষ্ঠঃ সত্যং সত্যং ন সংশয়ঃ । তথা বৈরিনাশকত্বং । প্রা ক্রোঞ্চবধার্থায় কোমলৈস্থলগাদলৈঃ ৷ অর্চায়ত্বা ক্ষীকেশং স্থামিনা নিহতে। রিপুঃ ।। ৮৫ ।। সর্বসম্পৎপ্রদত্তং অগস্তাসংহিতায়াং । নাল্যানি তনুতে লক্ষ্মীং কু দুমান্তরিতান পে । ভলস্যাঃ স্বয়মানীয় নির্মিতানি তপোধন।। পরমপুন জনকত্বং। कार्त्म । कृष्णमूर्किनि विनाख। खननीপजमञ्जदी। नूवर्गकारिभूगानाः कनः यक्छा-

নাদের যদানংত্রস্থাবিন। তেনাপি বর্ষশতেনাপি তদীরং স্তলসীসয়ির তৎপ্রকরণাৎ ফলং নৈব লভ্যতে॥৮০॥ পর্যুষিতমপি স্তলসীপত্রং ন বর্জ্যং।এতেন শুর্কং পর্যুষিতং যদীতি স্কান্দোজ্যা শ্রীক্তলসীপত্রচূর্ণমপি সমর্পিতং। এবং বৈশ্বানাং তচ্চূর্ণসংগ্রহং সমূলএব জ্বেরং॥৮১॥ এবং সাভাবিকং শ্রীতুলস্যা মাহাত্মাং লিখিত্বাধুন। শ্রীমচ্চরণাজ্ঞবিষয়কসমর্পণমাহাত্মাং লিখন্ তত্রা-দাবখিলপাপাপহারিত্বং লিখতি শ্রীমদিত্যাদিনা। প্রভুং পাপানাং নিয়ন্ত্যাপি নিরীক্ষ্য মার্জ্যর-তীতি মার্জ্জনস্য সম্যক্ত্রায় নিরীক্ষণং কিয়া গুহুত্বাদিতন্ততাহবলোকনমিতি জ্বেরং॥৮২॥ তুলসীপত্রনিকরৈরভার্চিতাং॥৮৩॥ তুলসীদলস্য বিপবৈর্জলবিন্দুভিং॥৮৪॥ কৃচিচ্চ তুলসীদল কোমলৈরিতি পাঠঃ অর্থস্তবৈধ স্থামনা কার্ত্তিকেয়েন॥৮৫॥ কৃষ্টমেরস্তরিতানি মধ্যে মধ্যে হন্যপ্রতিধানীত্যর্থঃ। তুলস্যা মাল্যানি স্মর্পিতানি সন্তি লক্ষ্মীং সম্পদং তন্তে

তোহধিকং ।। ৮৬।। তীর্থযাত্রাদিভিরহো কালক্ষেপেণ কিং জনাঃ।যেইর্জয়ন্তি হরে র্বিমং তলসীদলকোমলৈঃ।। ৮৭।। অগন্তঃসংহিতায়াং। পুষ্পান্তরৈরন্তরিতং নিমিতিং তুলসীদলৈঃ। মাল্যং মলয়জালিগুং দদ্যাৎ শীরামমূর্দ্ধনি। কিন্তুস্য বহুভিষ্ঠিজঃ সম্পূর্ণব্রদক্ষিণৈঃ। কিন্তীর্থসেবয়া দানৈক্ত্রেণ তপসাহপি বা । বাচং নিয়ম্য চাত্মানৎ মনোবিষ্ণে নিধায় চ । যোৎচ্চ য়েত্বুল্সীমালৈ ্যক্তকোটিফলং লভেৎ।।৮৮॥ ভবান্ধকৃপমগ্রানামেতদুদ্ধারকারণং।। ৮৯।। গারুড়ে। যসগ্রামো-फुरेवः भरेज्युनमीमस्रदेवर्शितः । शृकार् थगमामृन जिममः शृगमाश्रुसार ।। ১०।। অন্যত্র চ। তুলসীদলমাল্যেন বিষ্ণুপূজাৎ করোতি যগা পত্রে পত্রেহখনমধানাং দশানাৎ লভতে ফলৎ। ভতএৰ বিষ্ণু হস্যে স্কান্দে চ। গৃহীত্বা তুলসীপত্ৰং ভক্ত্যা বিন্তুৎ সমষ্ঠ য়েং। জর্চিতিংতেন সকলং সদেবাসুরমানুষং।। ৯১।। কিঞা। কাশাগণে। শালগ্রামশিলা যেন পূজিতা তুলদীদলৈঃ। স পারিজাতমালাভিঃ পূজাতে সুরসঅনি।। সর্বার্থসাধকত্বং স্কান্দে। সমঞ্জরীদলৈযুক্তিং তুলসীসম্ভবৈঃ ক্লিভৌ। কর্মন্তি পূজনৎ বিষ্ণোত্তে কুতার্থাঃ কলৌ নরাঃ। অগস্তঃসংহিতায়াং। পত্রৎ পুত্রুৎ ফলক্ষৈব শ্রীতুলস্যাঃ সমর্পিতং ৷ রামায় মুক্তিমার্গস্য দেয়তকৎ সর্ব্ব-মক্তিপ্রদত্বং পাছে। দেবভূতবিকুগুলসম্বাদে 🔏 তুলসীমঞ্জরী-मिक्तिपर ।। ১२ ।। ভির্মনাদরিহরাজনিং। ন স গত্তপূহং যাতি মুক্তিভাগী ভবেলর: ।৷ ২৩ ৷৷ গারুছে। তাবছুম তি সংসারে বিমূদঃ কলিবর্জানি। যাবন্নারাধয়েদেবং তুলসীভিঃ প্রযন্তঃ। তত্তিব জীভগ্রদুক্তো। তুলসীপত্রমাদায় যঃ করোতি মমার্চনং। নপুন র্ঘোনিমাযাতি মুক্তিভাগী ভবেন্নরঃ।। ১৪।। তগন্তঃসংহিতায়ং । তুলসীপত্র-নাদায় যোহচ য়ে দ্রামনরহং। স যাতি শাশতং ব্রহ্ম পুনর বৃত্তি দুল্ল ভং। পূজা-যোগ্যৈঃ ফলৈঃ পাত্রঃ পুল্পৈর্বা যোগ্জয়েদ্ধরিং। স নাত্তর্গর্ভবাস।দি দুঃখং নৈব লভেৎ কুচিৎ ।। ১৫।। শীবৈকুণ্ঠলোকপ্রাপকত্বং । পালে তত্ত্বৈব। আরোপ্য ভলসীৎ বৈশ্য সংপূজ্য তদলৈ হবিং। বসন্ধি মোদমানান্তে যত্র দেব শত্ভুজঃ। ভত্তিবান্ত্র। ভলসীরুষ্ণগৌরাভা ভয়াভাচ্চ্য জনাদ নং। নরোযাতি ভনুং ভাজ্য

বিস্তার রতীতি জ্রেয়ং। পত্রং পুস্পাং কলকৈব শ্রীতুলস্যাসমর্পিতমিতি তৎসংহিতায়াং নিরন্তরপূর্বন শ্রোকৈঃ সমর্পণস্য প্রকৃতত্বাৎ। যদ্ধা ভগবদর্থং নির্মিতান্যপি লক্ষ্মীং তনুতে অস্ত তাবৎ সমর্পনাদি। ৮৬।। বিষং শ্রীসূর্ত্তিং॥৮৭॥ আয়ানং চ দেহং নিযম্য॥৮৮॥ এতৎ ত্বলসীমাল্যৈ-বিষ্ণুর্চনং॥৮৯॥ তিদশং পুণামিতি স আরামকর্ত্তা ত্রেছেশং পুণাভাগং প্রাপ্ত্রমাপুরুত্ব জগদিতি শেষং। যদ্ধা সকলং বিশ্বং॥৯১॥ স্বৈসিদ্ধিদং স্বার্থিকিদায়কং॥৯২॥ গভ্রপং গৃহং॥৯৩॥ কলিব্র্যু যস্য তন্মিন্ প্রায়ঃ পাপময়ত্বাৎ সংসারস্য॥৯৪॥ পুনরার্ত্তিভ্রভিমিতি অপুনরার্ত্তিকমিত্যর্থং॥৯৫॥ গ্রেং গম্যং

বৈষ্ণবীং শাশ্বতীং গতিং।। ৯৬ ।। বিষ্ণুরহস্যে। রুষণ রুষ্ণভলস্যা হি যোভন্তসং পূজ্যেরর:। স হাতি ভুবন শুলে হত বিষ্ণু: প্রিয়া সহ।। ১৭।। বৃহরারদীয়ে। প্রীযম ভগীরথসম্বাদে। ঘোহর্চয়েরপাদীজ্ঞৎ তলসীকোমলচ্ছদৈঃ । ন তস্য পুনরাবৃত্তিক্র ক্ষালোকাৎ কদাচন ।। ৯৮ । গারুড়ে । রুষ্ণার্থনার্থং ভিক্ষূণাৎ যচ্ছন্তি ভলসীদলং। অন্যেধামপি ভক্তানাং যান্তি তৎপরমং পদং। অতএব হার-ভক্তি সুধোদয়ে। বৈষ্ণবং বিপ্রণ প্রতি যমদূতানামুক্তো। সুরুতা দুষ্কৃতা বাপি ভল-স্যা যো १ कर्रायक्षति । जम्यास्य विषयः (नमा विष्युमृदेजः म मोग्ररज । अज्यादाङः कात्म । यारु ভारता ९ পর মাজানং তাক্ত সর্বেষণো মুনিঃ । তল দ্যাযোই চিয়েবিষ্ণুং জগতঃ সংমতাবুভো ।। ৯৯ ।। জীভগবৎপ্রাণনত্বক । ত্রাক্ষে । ভলসাদলগদ্ধেন মালতীকুশুমেন চ। কপিলাক্ষীরদানেন সদ্যন্ত্যাতি কেশবং। পালে কার্তিক-মাহাজ্যে। বৃন্দোপাথ্যানান্তে। ইত্যেবং বল্লভা বিক্ষোংপূর্বজন্মন্যাধুনা। প্রীয়তে পূজিতোহ্যস্য। দলৈদৈত্যবলান্তকঃ। স্কান্দে চ। সুবর্ণমণিপুল্পৈসু প্রতিভবতি নাচ্যুতঃ। তুলসীদলভাগেন যথা প্রায়েত কেশবঃ। অতএব তত্তব। ব্রহ্মনারদসম্বাদে। পত্রং পুষ্পৎ ফলং তোয়ং ভলসীগন্ধবাসিতং । ফলং লক্ষণ্ডণৎ প্রোক্তং কেশবায় নিবেদিত । তলসীগন্ধমিশন্ত যৎ কিঞ্চিৎ কুরুতে হরেঃ। কম্পেকোটিসভ্সুতি প্রতিভবভি কেশবং। কিঞ্চ দারকামাহাত্ম্যে নার্কণ্ডেয়েন্দুদ্যমুসম্ব দে। যং পুন खूनमीপত্রৈঃ কোমলৈরঞ্জরীযুতেঃ।পূজ্যেৎ সূত্রবদ্ধেস্ত্রক্ষং দেবকিনন্দনৎ। যা গতি যোগযুক্তানাং य গতির্যজ্ঞালিনাং । या গতির্দানশীলানাং যা গতিস্তার্থ-দেবিনাং। যা গতিমাত্ভক্তানাং দ্বাদশীবেধবজ্জিনাং। কুর্বতাং জাগরং বিফো-ন্তি তাং গায়তাৎ ফলং। বৈষ্ণবানান্ত ভক্তানাং যৎফলং বেদবাদিনাং । পঠতাং বৈষ্ণবংশাস্ত্ৰং বৈষ্ণবেভ্যশ্চ যচ্ছ্ভাং। ফলমেতন্মহীপাল লভতে নাত্ৰসংশ্যং।। কার্ত্তিকাদৌ ফলবিশেষঃ । তত্র কান্তিকে । গারুতে । গবামযুতদানেন যৎফলৎ লভতে খগ। তুলসীপত্রকৈকেন তৎফলৎ কার্তিকে স্ত্। স্কান্দে শীব্রহ্মনারদ-সম্বাদে । তুলসীদললকেণ কার্ত্তিকে যোহর্চয়েদ্ধরিং । পত্রে পত্রে মুনিশ্রেষ্ঠ মৌক্তিকং লভতে ফলং ।। ১০০ ।। তত্রৈবাগ্রে । তল্সীদলানি পুণ্যানি যে যচ্ছন্তি জনার্দ্রে। কার্ত্তিকং সকলং বৎস পাপৎ জ্বাযুতং দহেৎ। ইফু ক্ত্রভাতেঃ পুণ্রেদ্ত্রা त्रज्ञानात्मरकभाः । जूनगीम्रान्य ७९ भूगाप कोर्डिक कम्यार्क्रनार ।। किश्वा यः

স্থানমিত্যর্থঃ।। ৯৬॥ শুল্রংনির্মানং।। ৯৭॥ ব্রহ্ম সন্তিদানন্দং তৎস্বরপলোকাৎ বৈকুঠাৎ।
তথাচ দ্বিতীয়স্কম্মে ব্রহ্মলোকঃ সনাতনইতি।। ৯৮॥ ত্যক্তাঃ সর্ব্বা ত্র্যণাঃ পুল্রাদিস্পূ হাত্রয়ং
যেন সংএবণান্তিসুক্ষ ক্রত্যোক্তাঃ পুত্রেষণাক্ষ বিত্তিষণাক্ষ লোকেষণাক্ষেতি।। ৯৯॥ মৌক্তিকংকলংমোকংমুক্তেঃফলংভক্তিংবা।। ১০০।। তেষাং পাপং দহেৎ নশ্যতি। যোযক্ষ্তীতি বা পাঠঃ।

पून्यनि शिषाः को खिकः मकलः मृत्त । अक्षर्राक्ति प्रति । यो शिष्ट । शिष्ट । शिष्ट । शिष्ट । शिष्ट । स्व । स्

অথ তুলগাগ্রহণবিধিঃ। বায়ুপুরাণে। তয়ায়া তলগাং ছিল্লা হঃ পূজাং কুরুতে নরং। সোপরাধী চবেৎ সত্যং তথ সর্বাং নিজ্ফলং ভবেও। তত্রাদো মহঃ!। ক্রান্দে! তুলাস, মৃতজন্মাসি সদা ছঃ কেশবপ্রিয়া। কেশবার্থে চিনামি ছাং বরদা ভব শোভনে।। ১০৪।। স্বদ্ধসন্তবিঃ পরিরু পূজয়ামি যথা হরিং। তথ কুরু পরিত্রাক্ষ কলো মলবিনাশিনি। গায়ুড়ে চা নোক্ষেকছেতে। ধরণাপ্রশতে বিফোঃ সলস্বা ওরোঃ প্রিয়েতি। আরাধনার্থি বরমঞ্জরাকং লুনামি পত্রিং তুলি ফলমা। ইত্যুজ্ তুলসাং নত্রা চিন্না দ্বিনপাণিনা। পত্রাণ্ডেককশো নস্বেশ প্রামে মঞ্জরারপি।। ১০৫।। তথাকার্যক্ষ কালে। মন্ত্রণানেন যঃ কুর্যান্ত্রা জলসাদলং। পূজনং ব সুদেবসা নাক্ষান্দিলার্ডার্থং প্রত্যাহ ধন্যাত্রে করপালবা ইতি।। ১০৬।। সংক্রান্ড্যাদেন নিষ্দ্রোপি তলস্বচয়ঃ মাতৌ। পর্ব প্রিষ্ণু ভলৈন্ত দ্বাদশ্যামেব নেয়তে।। ১০৭।।

ভাষ ভলগ্যবচয়নিষেধকালঃ বিদ্পুধর্মোত্তরে । ন জিন্দ্রাৎ ভলসীং বিপ্রভ

ততক সএবালানাংন্যস্যাপি পাপং দহেৎ পুলোর উমৈরশ্বমেনাদিতিরিতার্থঃ। যৎ প্রাপ্যতেতংগুণ্যং স্যাধ। ১০১॥ জনস্যাভজিমালাদির চনা তয় ১০২॥ নারারণইব ভবেৎ তথ্-সারপ্যপ্রাপ্তা পুনর্ভবো জন্মগ্রফণঃ সংসারোনাস্তি নিত্যবৈকুঠবাশাং॥১০৩॥

চিনামীত্যার্যং বিশ্বনোমি ॥ ১০৪॥ একৈকশোদক্ষিণহন্তেন ছিত্রা তই বে নংপাত্রে উত্তমভাপনে অপ্রেমিদখ্যা । ১০৫॥ কিতাবিতি পৃথিব্যামেব শীউলস্যাঃ সন্ত্রাং অতঃ কিতি-রপি ধন্যেতি ভাবঃ॥ ১০৬॥ সংক্রান্তে পক্ষোরতে দ্বাদশ্যাং রবিবাসরে । তুলসীং যে বিচি স্থিত্যাদি বচনৈঃ স্মৃতিশাস্ত্রে নিষিদ্ধোপি পরং কেব । গ্রাদশ্যামেব তুলস্যা, অব্চয়ো নেষ্তে॥ ১০৭॥

জীবিতস্যাবিনাশায়েতি অন্যথা আয়ুঃক্ষয়ঃ স্যাদিত্যর্থঃ। এবং ছাদশ্যামেব নিষেধাদমাব-

দাদশাং বৈষ্ণবঃ কৃতিং । গারুড়ে। ভানুবারং বিনা দুর্বাং তলসীং দাদশীং বিনা। জীবিত্যাবিনাশায় নবিচিয়াত ধ্যাবিং। পালে চ। শীরুষ্ণণত্যাসয়াদীয় কাণ্ডিকমাহান্মো। দাদশ্যাং ভলসাপত্রং ধাত্রীপত্রঞ্চ কার্ডিকে। লুনাতি স নরো-গচ্ছেররয়ানতিগহিতান্। অতএবোক্তং । দেবার্থে ভলসীচ্ছেদে। হোমার্থে সমিধার্থা। ইন্দুক্রয়ে নদুষ্যেত গবার্থে তু ত্ণস্য চ।। ১০৮।। এবং রূজা মহা-পূজামঙ্গোপাঞ্গদিকং প্রভেও। ক্রাদ্য্যাসম্পূদায়ং তত্ত্বানেষ্ পূর্ব্যেং। ১০৯।

অথাক্ষোপাঙ্গপূজা। মন্ত্রন্পদান্যাদৌ তত্তন্ত্যাসপদেষু চ। বেণুঞ্চ মালং জীবংসং কেন্ত্রভঞ্চ যথাস্পদং ।। ১১০।। তত্ত্বচ মূলমান্ত্রণ ক্ষিপ্তা। পুস্পাঞ্জলিত্রাং । প্র, গ্রেক্তাং ভগবতো চর্চরেদাবৃতিদেবতাঃ ।। ১১১।। তাশ্চ প্রত্যেক্ষাবাহ্য পুনে, দি পরিক্প্যে চ। পূজ্রেকাজপুস্পাভ্যাং যথান্তানং যথাত্রনং ।। ১১২।।

অধাবরণপূজা। কণিকায়াম চত্দিক্ত্ দ্যাতমানান্ প্রভোগ স্থান্। বসুদামথ স্দামথ দামঞ্চকিক্ষিণীং যাজং। ইতি প্রধাবরণং ১১০। ভল্লিক্টায়ি কোণাদে কেশ রেবৃত্পদেবতাঃ। হৃদ্যাদিবৃতাঃ পূজ্যাঃ স্বস্বাদিশোভিতাঃ। ইতি দ্বতীয়মাস১৪।। ততোবহিশ্চ পূর্কাদি দিগ্দলেষ্টসু প্রভোগ। মহিষী ক্রিক্রী স্তাভাষানারজিতী

স্যাদাৰপি তদৰ্চয়ে বিভিত্ইতি জেয়ং। তদেব ভিব্যঞ্জতি দেবাৰ্পে ইতি সম্প্ৰান্তঃ প্ৰবিক্টেনাপি ছেদেন সহাত্যেপ, হয়ঃ ।। ১০৮॥ অঙ্গানি শ্ৰীনুড্ৰৌ মন্ত্ৰৰ্গ দিন্য সন্থানানি উপ জেবনি চেত্ৰান্তি চতুক্ষং। আদিশক্ষেন শ্ৰীক্তিন্যস্তমন্ত্ৰপদাক্ষর (বিচা তেখাং তেখাং বেগনীনাং স্থানে যুক্ত ক্ৰিমণ গল্ধা দিভিঃ পূজ্যেং।। ১০৯॥

তদেব বিবিচা দশরতি মন্ত্রতি তথা তবা ম্যাসন্থানে যু যথাপালং বৰ্ণাস্থানং । অরম্পত্তি । প্রবিধি আনু স্থানি তাদক ক্রেণ পুজরে দিতি । প্রবিধার প্রেম্বর ওঁ স্থানি নাই ললাটেওঁ ক্লাংন মইত্যাদি । জ্রিকার কেচিদ্পি পুজাল কুর্বর ও ব্র্থানি মইত্যাদি । ভার সর্বর নি জসং প্রদায়বাব লাবে এবা লুক্তিটিঃ অত এব নিবি লং ব্যাসম্পূদ্য মিতি। বেণুগদীলক ভিন্ত গ্রেমিটি । প্রবিশ্ব পূজরে । প্রেয়োগঃ । জ্রীমুখবেণবে নমঃ ইত্যাদি ॥ ১১০ ॥ আনুতিঃ আবর্ণাত্তিক ব্যাস্থানি । ১১০ ॥ আনুতিঃ আবর্ণাত্তিক ব্যাস্থানি । ১১০ ॥ আনুতিঃ আবর্ণাত্তিক ব্যাস্থানি । ১১১ ॥ তালাবরণদেবতাঃ তালামের স্থানাদিকং পরিকাপ্য সম্পাদ্য তাঃ শ্রেমিটি । ১১২ ॥

তদেব িনিচ্য দশ্যতি কৰিকায়ামিত্যাদিনা উর্ক্ষোরিত্যন্তেম। চতুর্নিফু শ্রীভগবতঃ পূর্বাদি দিক্চতুনীয়ে। প্রয়োগঃ। ওঁ বসুদামায় নমইত্যাদি॥১১৩॥ অগ্নিকোণাদ নিতি কোণচতুনীয়ে প্রথমাঙ্গদেবতাগতুনীয়ে অন্যাশ্চ চতুর্দিক্ষেত্রেতি জ্ঞেয়ং। ক্রদায়াদিমক্রৈঃ ক্ষদ্যায় নমঃ শির্দে আছা ইত্যাদিভিত্বজাঃ। প্রয়োগঃ। ক্র্লিক্ষায় নমোনমঃ শির্দে আছা নম ইত্যাদি ভর্বাদিকক্ষোত্যং। ক্রমদীপিকায়াং। মুক্তেন্দ্বাস্থকুবলয়ংরিনীলন্থতাশনপ্রভাঃ প্রমাদাঃ। অভ্যাবরক্ত্রিতকরাঃ প্রধানতনবোহজদেবতাঃ আর্গাঃ ইতি। অস্যার্পিঃ। শুক্রনীলরক্তরণাঃ প্রামাণ মহিধীণাং ধ্যানং

লিংতি ভত্তদিতি তেম তেন কমলাদিন ক্রেণে আদিশকাদ্রপভ্যণদিনা চ ভূষিতাং । ভক্ষেক্ত ভবৈষৰ । তপ্নীয়মরকভাভাচ অধিত্তিতিত্তির রিশতে,ভাচ । পৃথ্<mark>কৃত ভরাল-</mark> সালেন বিবিধ্য শিপ্তানু বিলাসিতা হল লেন্ড । দিকিওকর গ্তক্মনা জের ভিস্তুপাত্রমুদ্রিত নিক্রা-ইতি প্রস্থারিত। দ্রিশ্র স্থাশঃ ফ্রেম্ম ক'ঞ্সম্মর্ভবত্তবত্ত্বতি <mark>র্জুপুরিত্রশংপাত্রাফিত্ব'ামক্রা-</mark> ই ডি ৷ ১১৫ ৷ ১,ব্ৰুণ ক্ষেতিক, ভিতং, তদ দিয়ু অফস্ত দলাগ্ৰেষু বস্তুদেবাদীনট মঙ্গেৎ প্ৰজয়ে-দিতি ২'ভ্যামর্য্য । জমালিভায়ে দিখিতিয়াই সন্ধ্রৈর সম্বন্ধীয়ং। তত্ত্র গোপা গোপীনাং বজ্ ত্যেপিগণস্থাভিপ্রেটেশ হিন্তু জ্যেন্ত । নত্ন ভাৰতঃ প্রিণ্ডমানাং জ্রীগোলীনণ্ড চত্তগানরবে। পুজনং। নোপনুজ্যতে ভগবদতাভাতিকএৰ তাদামৰভিত্যুৎপতেঃ তত্ৰ লিখতি তদ্ধৰেতি । তেন অনিকাচনীয়েন প্রমধ্যেপোন বা ভাত্বন প্রেম্বিশ্বেণ হা জ্যা ভ্যান্তঃস্থিতাঃ। অন্যেদ্সিক্ষেণ নিজভাব্যা প্রবাশে নতি সভামণ্ডে কুলবতীন্ত ভিত্ত প্রমলজ্জোৎপত্য জীয়শোদাদিসক্ষাপেক্ষয়। চ তত্ত্তিক নং বৃক্ত মেতেতি ভাবে। এডলাই সংখ্যপুজাবিষয়ক্ষে-বেত্যাদিক্মত্রে ব্যক্ত ই ভাবি। ইতি ইমান্ বস্তদেশদীন্ প্রমান্ ব্রিকত্যেকশেষত্বং। ক্রণাদিক্ঞ তেষ্যং পানোর্থং তবৈবেশক্তং। তল্পান্সভাভয়ক্তরী পিতলৌ প্রতিগাপ্তরী। দিব্যমালাম্বর্ধ লেপভূষণৌ মাতরৌ পুনঃ। ধার্য়ক্যেক ব্রদং প্রসাহ্ব্পতিবর। অরুণশ্যামলে ছাংমণি-कुखनमिखिए । वनः भएखन्षवरमा भृषनः शोकनः परदः शामानीतानीनवाना रङ्गावारनक কুওলঃ। কলারশ্যামলা ভটা স্বভদ্রা ভদ্রভ্ষণা। বলাভ্যযুতা পীত্রম্মাক্ট্যৌবনা। বেণুবীণা বেত্রম্ফি শৃত্যকৃক্ষাদিপাণ্যঃ । গোপা গোপ্যশচ বিবিধপ্রাভ্তাত্করালুকাঃ। ইভি। এযান্থঃ। পিতরৌ জীবস্থদেবনন্দৌ। মাতংরৌ জীনেবকীখশোদে। হালা ম খ্রী হেনা লীনা প্রাভ্তমুপায়ন মিতি॥ ১১৬॥ কর্ণিকারাং দেবস্য ভগবতঃ পূঠে মন্দারঞ্চ চশব্যং দিব্যর্ক্ষমভী্উদ্মাদৌ সম্পূজ্য পশ্চাত্তেভো বাছদেবাদিভো বহিশ্চত্তরসুখ্যান্তরে প্রবাদিদিক্ট ইন্ট্রে সন্তানাদীন্ ক্রমণার্কয়েৎ। এবং লিখিত প্রকারেণ অভীষ্টদায়কান্ দিব্যব্দান্ পঞ্চিছেৎ॥ ১১৭॥ দিক্-পালান্ ইক্রাদীনই। স্বস্থদিক্র্ ইক্রাদীনাং নিজনিজাল্ল চত্তরসূত্য প্রাদ্যইদিক্। তদ্য তদ্য ইন্দাদেঃ বীক্ষানি বীজাক্ষরাণি আধিপত্যানি দেবাধিপতিস্থাদীন অস্তাণি বজাদীন্যায়ুধানি ধাহনানি ঐর:বতাদীনি স্বজনাঃ সার্থ্যাদিপরিবারাইস্তর্ন্বিতান্ ॥ ১১৮॥ খ্যানার্গং তেঘাং

নিশ্ব ভাষুপ্রোম থে। ব্রহ্মাণং চেন্দুক্ত হারাঃ। ইতিষঠং।। ১১৯। ততাবহিশ্চাফ দিক্ষু মৌলস্থানা অলক্ষণান্। ভগবংপার্য দিংস্তত্র বর্ণার্থবিভ্রণান। বজুং
শক্তিঞ্চ দণ্ডক গড়গপাশাক্ষ শান্ কমাং। যজেদাদাং তিশুলক চক্রাজে দ্বধ
উর্দ্রোঃ।। ১২০।। তলাহাত্মাঞ্চ বিষ্ণুধর্মোতরে। শক্তাং চক্রং গদাং প্রহ
তোমরং মুবলং হলং। অন্যদাপি হবেঃ শস্ত্রং শৃত্বা পাপাং প্রমৃচ্যতে। ইতি
সপ্তমং।। ১২১।। সর্বানন্দপ্রদং হ্যেতং সপ্তাবরণপূজ্নং। অশক্তোংক্লেন্ত্রাদ্য
মাব্তি ব্রমার্চরেং।। ১২২।। উদ্ক্চিকালিভিজের মং তত্তংকামবতাং মতং।।
অন্যথা গে কুলে ক্কেদেবে তভ্দসম্ববাং।। ১২১।। একাভিভিস্ত রাধাদ্যা যথা

বর্ণাদিকং লিখতি তত্তদিতি পাদেনৈকেন। সঃ প্রসিদ্ধঃ কপিশাদিবর্ণো যেষাং তান্। দিব্যঃ বিচিত্রমণিগণকিরণপ্রক্রণাদিময়ো বেশঃ ভূষণং থেষাং তান্। অধুন। অধুকা অধ্ভিদ্দিরপালয়োঃ পুজাসন্নিবেশং লিখতি অনস্তমিতি। তথা তেনৈব প্রকারেণেতি বীজাদিনা বর্ণাদিনাচানিত-মিতার্থ:। অনতং নিশ্ব তেঃ অষুপদ্য বরুণদাচ মধ্যে অর্করেং। ব্রহ্মাণঞ্চ ইন্দরুদ্রে গাঁখে তবৈবার্চয়েং। তত্র বীকাকর।বি। লাং বাং মাং ক্ষাং রাং যাং সাং হাং জাঁ আং ইতি। বর্ণাদিকঞ্চোক্তং ভবৈত্র । কপিশকপিলনীলশ্যামশ্বেভধূ মামলসিভশুচিরক্তা বর্ণভোবাস-বাদ্যাঃ করকমলবিরাজৎস্বাযুধা দিহাবেশা বিবিধ মণিগণাসুপ্রস্কুরন্ত্যুধণাঢাাঃ।ইতি। আধি-পতাৰি চ দেবতেজ: প্ৰেত বক্ষোজন প্ৰাণ নক্ষত ভূত নাগ প্ৰজানাং ক্মশঃ প্ৰয়োগঃ ওঁলাং ইন্দ্রায় দেবাধিপতয়ে শায়ুধ্য সবাহমায় সপরিবারায় কপিশর্বায় বিবিধমণ্গণকিরণপ্রস্তুর-স্তুৰণায় নমঃ ইত্যাদি । কুচিচ্চ বৰ্ভ্ৰণপ্ৰয়োগো ন তিহঁতে ॥ ১১৯॥ মৌলিস্থানি আজনঃ আজিনো, লক্ষণানি আয়ু ধচিহ্নানি যেষাং বজুণদীনাং তান্ যজেদিতি দ্বাভ্যামনুয়ঃ। তেষাং তাদৃশহুর্ত্তিমত্ত্বাদে। হেতঃ ভগবৎপাষদানিতি । তানেব বিবিচ্য লিখতি বজুমিতি। অ্ট-निक विकासीनकेठकः शक्षाक्षि एवं अधिर्क ठ कमार शक्षा वर्गानिकः टेठमाः उटेज-বোকং। অৰ্চ্যানহিনিজস্কু ফিতমৌলিমুক্তাঃ স্বস্থু ধাভয়সমুদ্যতপাণিপন্ধাঃ। রজততোয়দাভচম্পারণ হিমনীলজবাপ্রবালভাদঃ ক্রমতঃ ইতি রুচাত বজুপূর্বা রুচিরবিলে প্ৰবস্ত্ৰমাল্যভূষা ইতি।। ১২০।। অন্যং বজাদিকং সমূত্বাপি কিং পুনঃ পূক্ষিত্ৰাইত্যৰ্থ: ॥১২১॥ অশক্তঃ সপ্তাবরণপূজনে অসমর্থ শেহৎ অক্ষেক্তবজু যুক্ত মাবরণতা মং পুজারেৎ । 'এতদপি পূর্ববেৎ সকামজপাতি প্রায়েশের ॥ ১২২ ॥ নমু শ্রীভাগবভাত্যক্তামুসারেণ তথাত্তৈর পূর্বালিখিভধ্যানা-মুসারেণ চ এীর্ন্দাবনে গোপগোপ্যাদিপরির্তস্য জীগোপালদেবস্যাবরণপুঞ্চায়াং কথং জ্ঞিককি, বিশ্বাদ্যাদ্য শ্রী বস্থাদের শ্চ বঙ্গাছেরন্ একা স্তিমতেন পরমবিরোধাপত্তেঃ। সত্যং। অয়-ঞ্চাবরণপূজাবিধিঃ কামপরাণাং শত্রুজয়াদিকামসিদ্ধাভিপ্রায়েণৈবেতি লিখতি ঈদৃক্চেতি। এত লিখিত প্রকারকমাবরণপুজনং। তত্তৎকামবতাং জয়দং প্রধনেহভয়দং বিপিনে ইত্যাগ-সোক্তবিবিধকামপরাণামের মতং সমাতমিতি একান্তিভিজেরং অন্যথা ভত্তৎকামব্যভিরেকেণ 🕮 ভগৰতি 🖲 ক্ষেণ ভত্ৰাপি গোকুলে তে তে রুক্মিশ্যাদয়ো ন সম্ভবস্তীত্যর্থঃ।। ১২৩॥ ত্রহিএকান্তিভিঃ কথমাবরণপূজা কার্য্যা তত্র লিখতিএকান্ডিভিরিতি চতুর্ভিঃ। যথাধ্যানং পূর্বন্ ধ্যানং প্রভাঃ প্রিয়াঃ । প্রথমাবরণে পূজ্যাঃ কালে ক্ষান্তিকৎ গভাঃ ।। ১২৪ ।। ততোগোপকুমারান্চ তদ্বয়স্যান্ততোবহিঃ । নন্দো যন্দোদা রোহিণ্যো গোপা গোপ্যন্চ তংসমাঃ । ততন্ত বৎসা গাবন্চ ব্যারণ্যম্গাদয়ঃ । ততোব্রহ্মাদয়ো-দেবঃ প্রাপ্তানীরাজনোৎসবে ।।১২৫।। রামং কদাচিৎ ক্ষ্মুস্য কদাচিনাত্রন্তিকে । জীনারদন্চ পরিভোজনন্ হর্ষভ্রাকুলঃ ।। ১২৬ ।। এবং যদ্যানপূজাদাবেকান্তিভঃ প্ররোচতে । ক্ষায় রোচতে ২ত্যন্তং তদেব চ সভাং মতং ।। ১২৭ ।। তথাচ তৃত্যিক্ষক্রে প্রীকর্দমন্ততো । তানে ব তেইভির্মাণি রূপাণি ভগবংস্কর । যানি যানি চ রোচতে স্ক্রানাম্রুপিনঃ ।। যদ্যদ্বিয়া ত উর্গায় বিভাবয়তি তত্ত্বপূঃ প্রায়বে সদন্ত্রহার্থ্য ৷: ১২৮ ।।

**লি**থিতধ্যানাম্বসারেণ ক্রমদীপিকায়াং ভগবদ্ধ্যানানস্তর্মের গোপীনাং ধ্যানে'ক্রেঃ গোপীগোজ পশূনাং বহিঃ স্মরেদিভাবদিনা। যচ তত্র গোভিনু গায়ুজবিলীনবিলোচনাভিরিভাদি শ্লোক্ষট্ কেন গ্রাদিভ্যো গোপেভ্যো গোপবালকেভাশ্চ পশ্চাদ্রগ্রস্থানে গোপ্যোনির্দিন্টাইতি ভঙ্ক বাহ্যক্রমেণোহাং। অন্যথা পূর্ববাপরবিরোধাপত্তেরিতি দিক্।কালইতি দদা লজ্জ্যা প্রায়োদুরতে বর্ত্তমানা অপি পূজোৎদবসময়ং প্রাপ্য কুঞ্দ্যান্তিকং প্রাপ্তাঃ অতএব প্রথমাবরণে পূজ্যাঃ এবং কামপরাণাং তত্তৎপূজাবিধিরপ্যমূমতইপুাহাং। পূজা। ইতি দর্মবানুবর্ত্ততএব বিভক্ত্যাদি বাত্যযেন যথাস মুবং সম্বন্ধনীয়ং॥ ১২৪॥ তস্য কুঞ্চন্য বয়স্যা গোপকুমারা তৎসমাঃ - এনন্দ্রশোদ ভাং সহ সমানবয়কাইতার্থঃ। তত্র নন্দসমা গোপা যশোদাসমা গোপাইতি ॥ ১২৫ 🔧 কদাচিৎ কুঞ-স্যান্তিকে পূজ্যাঃ মাতুঃ রৌহিণ্যাঃ॥ ১২৬॥ ননেবং তক্তাক্তাতিক্রমেণ স্বচ্ছক্র দিরিয়ং। শাস্ত্রপরাণাং সতাং সম্মতঃ কথং দ্যাৎ তত্র লিখতি এবমিতি। ধ্যানপূজাদৌ নিষয়ে যদেকান্দিভাঃ প্রকর্ষেণ রোচতে তদেব কুঞায় ভগবতে ২ত্য ডং রোচতে। অতঃস্তাং তদেব সশ্মত্মি ত্যর্থঃ ॥ ১২৭॥ তদেব প্রমাণয়তি তান্যেবেতি । একপিলদেবং প্রতি একদ্দমন্য বচনমিদং হেভগবন্তৰ ৰূপাণি অবভারাঃ চত্ভ্জহ্বিভ্জহাদ্যাকারা বা শুক্রফাদিন্না বা সৌন্দ ৰ্যাণি বা স্বজনানামেকামত্তানাং তেভ্যোবানি বানি রোচন্তে তান্যেব তে তব অভি-ৰূপাণিযোগ্যানীভার্থঃ। পর্মভক্তবাৎসলাভরাৎ। যদা সম্মতানীভার্থঃ। যদা তান্যের ৰূপাণ্ তে তুভ্যং রোচশ্যে যতঃ অভিৰূপাণি তান্যের প্রম্মনোহরাণি । অন্যৎ সমানং। অৰূপি 🗟 তি আদ্যে পক্ষে ন বিদ্যতে ৰূপী অবভাৱী যক্ষান্ত্ৰণ্য প্রমাবতারিণ ইত্যর্থঃ। দ্বিভীয়তৃভীয়পক্ষত্ত্র অকারোবিক্সক্রদ্র গিণঃ অভশ্চম্ভর্জস্বশ্যামবর্ত্তাদিমতইত্যর্ধঃ। চন্তর্থে ন বিদ্যতে ৰূপী সৌনদ-র্যাবান্ অন্যোঘসাথ। তদ্য সহজ্পরমদৌনদ্য্যবতইতার্থঃ তথাভূতস্যাপি তব অতঃশুক্লাদিবর্ন বিশিষ্টস্যাস্য একপিলাবতারস্য মহুং রোচনাদেবং স্বয়াবতীর্ণমিতি এক দ্বমাভিপ্রায়ঃ। यहा ৰূপ্যতে দৃশ্যতে সাক্ষাৎ ক্ৰিয়তে ভগবান বৈস্তানি ৰূপাণি অবণাদীনি নবভক্ত্যাঙ্গানি যানি যা-দৃশানি। অৰূপিণঃ ৰূপনিৰূপণং তদ্বান্ৰূপী তদ্বাভিরিক্তস্য অনিৰ্ক্চনীয়মাহাত্মস্য ইত্যৰ্থঃ। পরং পূর্ববদেব ভাতোমম গৃহত্যাগাদিনা অত্যে শ্রবণাদিভ ক্তোকনিষ্ঠত্বৰুভূষা ভভাং রোচতে এবেতি তদভিপ্রাজ্ঞায়: । এবমেকাস্থিভ্যো যদ্রোচতে তদেব ভগবতে রোচতে ইতি निक्दः॥ ১२৮॥

অথশীনমানাইকপূজা। ততােইইনামতিং রুফং পুস্পাঞ্চলিভিরর্চয়ে ।
কুর্য্যাত্তিরের বা পূজামশক্তােইথিলদিং প্রভাঃ ।। ১২৯।। শীরক্ষবাসুদেবশ্চ
তথা নারায়ণং স্মৃতঃ। দেবকানন্দনশ্চের যদু শ্রেষ্ঠস্তথের চ। বার্ফেরশ্চাসুরাক্রান্ত
ভারহারী তথাপরং। ধর্মসংস্থাপকশ্চেতি চন্তর্থা তৈর্নমাযুক্তঃ। ইতিশীগোপালভক্তবিশিথিতে ভগবডুক্তিবিলাসে পৌশিসকোনামসপ্রমোবিলাসঃ——

ভতস্তদাবরণপূকানন্তরং। অইভিনামনদ্রৈঃ কৃষ্ণং পুশাঞ্জলিভিঃ পূক্ষেরে। একিষ্ণায় প্রপাা-ঞ্জিং দদ্যাদিত্যর্থঃ। তথাচ ক্রমদীপিকায়ামাবরণপূজানন্তরং। ইত্যর্চায়ত্বা জলগন্ধপুলেঃ রুফা-ইতকেনাপ্যথ পুৰুপুজাং কুর্য্যাদুধইতি। অস্যার্থঃ। ইতিপূর্কোক্তপ্রকারেণাবরণানি জলাদিভিঃ পুজয়িত্বা অথানত্তরং পুলপুজাং পুলৈঃ কৃষ্পপুজাং কুর্য্যাদিত্যর্থঃ। কৃষ্পপুজামিতিকৃচিৎপাঠঃ। তথাপিসএবার্থঃ। জনগন্ধ পুলৈরিভাস্য পূর্ব্বেণৈবসম্বন্ধাৎ অতোভিন্নোপক্রমায়াথশব্দপ্রয়োগ-ইতি। অত্রচ কেচিম্মন্যন্তে প্রত্যেকং নামৈকঃ পুশাঞ্জলিরিত্যেবমন্টনামভিরন্টপুশাঞ্জলীন্দদ্যা-দিতি। কেচিচ্চ শর্কান্তে ত্রীন্ পুশাঞ্জলীনিতি । তত্তচ যথাসম্পূদায়ং ব্যবহার:। অধুনা পূর্ক-লিখিততত্ত্তেগবৎপূজাবিধাবতান্তাসমর্গং প্রতিপক্ষান্তরং লিখতি কুর্য্যাদিতি। অশক্তদেওচি প্রভাঃ ঞ্রিক্ষস্য পূজাংকুর্য্যাৎ। কৈঃ তৈঃ মামাষ্টকদেয়পুস্গাঞ্জলিভিবের । যদ্বা তৈর্ফনামভিঃ তৎকীর্ত্তনৈরেবেত্যর্থঃ। তাবন্মাত্রেটেণ্যাশেষপূজাফলং সংসিদ্ধ্যেদেবেতি লিখতি অথিলদৈরিতি। তথাচ ক্রমদীপিকায়াং। এভিরেবাথবা পূজা কর্ত্তব্যা কংসবৈরিণঃ। সংসারসাগরোম্ভীর্ণ সর্ব্ব-কামাপ্তয়ে বুদৈরিতি। কেচিচ মন্যন্তে। অত্যন্তাসমর্গোহ্যাবরণপূজাং বিহায়াবরণপূজাপরিবর্ত্তেন তৈরেব পূজ্বয়েৎ আবর্ণপূজাপ্রসক্ষোক্তত্তাদিতি। তদ্যুক্তং । যতোনামনির্দ্দেশাননুরমেব তত্বক্তেঃ তথা কংশবৈরিণঃ পূজা কর্ত্তব্যেত্যুক্তত্বাদেভিরেবেভি নির্দ্ধারাচ্চ পরমাশক্তপ্য তৈরেব দর্বা পূজা সম্পদ্যেতেত্যবগম্যতে ইতি দিক্॥ ১২৯॥ তানি নামান্যের নিখতি জীকুঞ্ইতি দ্বাভ্যাং। নমইতি শব্দেন যুকৈঃ তৈনামভিঃ পূজাং কুর্য্যাং ইতি পূর্বেইণবাদ্বয়ঃ এবং জীক্লফাব-ভারসম্বিনামুমতো লেখ্যেন মাহাত্মবিশেষেণাশেষাপ্তা স্বতঃ সম্পদ্যতএবেতি ভবেঃ। প্রয়োগঃ শ্রীক্লফায় নম ইত্যানি॥ ইতি সপ্তমঃ।।

## অষ্টম বিলাসঃ।

শীচৈতন্যপ্রভূং বন্দে যৎপাদাশ্রয়বীর্য্যতঃ। সংগ্রাত্যাকরব্রাতাদক্ষার জ্বা-বলীময়ং ॥ ১॥

ভাগ ধূপনং ।। তত্ত্ব ধূপমুৎস্কা নীচৈত্তন্ত দ্রাপ্রেছ । ক্ষণ সকীর্ত্তরন্ত হাটাং বামহন্তেন বাদরন্ ।। ২ ।। তথাচ বহুচ পরিশিষ্টে । ধূপদ্য বীজনে চৈব ধূপেনাঞ্চবিধূপনে । নীরাজনেষু সর্বেষু বিফোর্নামানি কীর্ত্তরেছ । জয়ঘোষং একুর্বেটি কারুল্যং চাভিকীর্ত্তরেছ । তথামঞ্জলঘোষঞ্চ জগদ্বীজন্য চ স্তৃতিং।। ৩ ।। অন্যত্র চ । তত্ত্ব সমর্পরেদ্ধুপং ঘণ্টাবাদ্যজয়স্বনিঃ । ধূপস্থান সমভার্চ্য ভক্তন্যা বাময়া হরেঃ তেত্র মন্ত্রঃ । বনস্পতিরসোৎপন্নোগজ্ঞাচ্যো গল্প উত্তমঃ । আঘ্রেয়ঃ সর্বদেবানাং ধূপোয়ং প্রতিগৃহ্যতাং ।। ৪ ।। অথধূপাঃ বামনপুরাণে । রুহিকাখ্যংকণে দারু সক্রক্ষাগুরুঃ সিতা । শন্ধোজাতীফল এলে ধূপানি স্যুঃ প্রিয়ানি বৈ । মূলাগমে । সঞ্গগ্রুল্পনার সিতাজ্যমপুচন্দনৈঃ । সারাক্ষারবিনিঃক্ষিপ্তিং কণ্পয়েদ্রুল্য ধ্যা ক্রিনিং ক্রিপ্তার চ । তথৈব শুভগজ্জা যে ধূপান্তে জগতঃ পত্তেঃ । বাসুদ্দেবন্য ধ্যা ক্রেনিবিদ্যা দানবেশ্বর । অথধুপেষু নিষিদ্ধং । তত্ত্ববা ন ধূপার্থে জীবজ্ঞাতং । তত্ত্ববাপবাদঃ । বিনা মূগ্যদৎ ধূপে জীবজ্ঞাতং বিবছর্ত্রেছ । কালিকাপুরাণে। ন যক্ষপূপং বিতরেনাধ্বায় কদাচন ।। ৫ ।। অগ্রিপুরাণে। ন শল্পকীজ্ঞ

এবং শীভগবতো হন্ গ্রহপ্রভাবেণ বহুলগ্রন্থেভ্যঃ প্রমোক্তমশ্লোকান্ সংগৃষ্থ লিখন্ ভক্তা তং প্রথমতি শীটেতন্যতি। যস্য পাদ্যোরাশ্রয়ঃ শরণাপত্তিস্তস্য তেন বা যদ্বীর্যঃপ্রভাবঃ ভক্ষাদ্ধেতোঃ তেন বা। আক্রঃ সমুদ্রাদিস্থানীয়ং শাস্ত্রং তস্য ব্রাতাৎ সমূহাৎ। রক্ষোহপ্যয়ং জনঃ। এবং শ্রদ্ধাপ্রতাদিবিশেষঃ স্টিতঃ॥১॥

উৎসূজ্য এয় পূপোনমঃ ইতিমূলমস্ত্রেণেৎসর্গং ক্রয়া। নীচৈরিতি ভূমিতোদেবস্য শ্রীনাভিপর্যন্তং পূপপাত্রংসমুত্থাপ্যেতি সদাচারতোজ্যেং। তথা ঘন্টাঞ্চ স্বাহা অস্ত্রায় ফড়িতি গন্ধাক্ষত কুন্থমৈঃ পূজিতামিতি গোদ্ধন্যং ॥২॥ ধুপদ্য সর্বতঃ প্রসারণার্থং ব্যক্তনাদিনা যদ্বীক্ষনং তিন্মিন্। কারুণ্যং পূতনাদি সদ্যতিদাতৃত্বাদিকং। জগদীজস্য ভগবতঃ স্তুতিং ব্রক্ষাদিক্ষতাং॥ ৩॥ ধুপদ্য স্থানং পাত্রং হরেঃ সমর্পয়েং ॥৪॥ রুহিকা জ্বামাংসী। কণোগুগ্তলুবিশেষঃ সিতা শর্করা শঞ্জোনখী। ন জীবজাতং। প্রাণ্যক্ষমন্তবং নথী পুলকং মৃগমদাদিকং। ন দদ্যাদিতি শেষঃ। যচ্চ শশ্বাদিকং পূর্বাং ধৃপেরু বিহিতং। তত্র চ বিহিতপ্রতিষিদ্ধেস্ত বিহিতালাভতো-হর্চমেদিতি পুশ্পপ্রকরণন্যায়োহবভারয়িত্বাঃ। এবমগ্রেপ্যান্যত্রোহং। ৫॥ শল্লকী শালেয়ীতি প্রশিদ্ধা তৃণং উদীরপ্রভৃতি। শলকঃ শেহরেতি প্রসিদ্ধা। তদ্য রসো মক্ষা। প্রত্যক্ষিম্প্রভং

न তৃণৎ न भन्क तममञ्जू । ধূপং প্রত্যঙ্গনিমুক্তিং দদ্যাৎ রুফায় বুদ্ধিমান্ ।।৬।।

অথ ধূপনমাহাত্ম্য । নারসিংহে জীমার্কণ্ডেয়শতানীক সহাদে। মহিষাখ্য अश्गुनुक्षकाकायुक्तः मनक्ति । शृभः मनि ति तिकमु नविभः स्मा छक्तिमान्। म ধূপিতঃ সর্মদিক্ষু সর্মপাপবিবজ্ঞিতঃ। অপ্সরোগণযুক্তেন বিমানেন বিরাজতা। वायू (লাক : সমাসাদ্য বিষ্ণুলোকে মহীয়তে !! ক : দে । যে রফাগুরুণা রুদং थूभग्नस्थि करनी नताः। मकपूरत्व तारकन्तु कृष्ण्वनाः जविष्ठ रा। १।। नारकान देव গুগ্গুলুনা সুধূপেন জনাদ্নং। ধূপয়িত্বা নরোযাতি পদং তস্যসদা শিবং। অ ৪-ক্লু সকপুরং দিবতেন্দনসৌরভং। দত্ত্বা নিভ্যুৎ হরের্জ্কেরা কুলানাৎ ভারয়েচ্ছতং। विष्परामा ভিরত্তীয়কাণ্ডে। ধূপানামুভমং তদ্বৎ সর্বকামফলপ্রদৎ। ধূপত্রক্কক-নদত্ত্ব। বহিষ্টোমফলং লভেং। দত্ত্ব। ত ক্তিমং মুখ্যং সর্ক্রামানবাগ্যাং। গন্ধযুক্ত ক্তং দত্ত্ব। যক্তগোসৰমাগু য়াৎ। দত্ত্ব কপূ রিনির্যাসং বাজিমেধফলৎ লভেৎ। বসংস্থ গুপ্গুল্থ দত্ত্বা বিছ্লিটোমমবাপু য়াং। গ্রীশ্বে চন্দনসারেণ রাজসূয়ফলং লভেং। তুরুদ্ধস্য প্রদানেন প্রাবৃষ্যন্ততাৎলভে । কপূরিদানাৎ শরদি রাজসূয়মবাপুয়াৎ ।। ৮।। তেমন্তে মৃগদর্পেণ বাজিলেধফলৎলভেৎ। শিলিরে ওরুসারেণ সর্বনেধ कतः लाउ ।। ।। भारमू जनमार्था वि धूभाः भू किम मू राज । धुभाल था गरेथ-বোদ্ধ নিতামেব প্রদর্গতি। তথৈবোদ্ধ্যতোনিতাৎ ধূপদানাদ্ধবেয়রঃ ॥ ১॰ ॥ প্রজ্ঞাদসংহিতায়াঞ্চ। যোদদাতি হবেপূপং তলসীকাষ্ঠবহ্নিনা। শতক্রসমং পুণ্যৎ গোষ্মুতৎ লভতে ফলমিতি ৷৷ ১১ ৷৷ ধূপয়েচ্চ তথা সম্যক্ শ্রীমন্তুগবদা-লয়ং । ধূপশেষং ততোভক্তা স্বয়ৎ দেবেত বৈষ্ণবং।। তথাচ পালে অম্বরীষং প্রতি গৌতমপ্রশ্নে । ধূপশেষম্ভ কৃষ্ণ্য ভক্তা ভক্ষি ভূপতে। কৃষা চারা-जिकः विस्थाः समृक्षां वन्नतम न्म ।। >> ।।

অঙ্গং অঙ্গং প্রতি নিমুক্তিং সমুতং শয়ড়াকাগুদি তচ্চ ন দদ্যাদিত্যর্ধঃ। নিধিদ্ধ প্রকরণত্বাং। যদ্বা। প্রথমং নিধিদ্ধমুক্ত্বা পশাদ্পদানপ্রকারমাহ। প্রত্যক্ষং শ্রীভগবতঃ সর্কাঙ্গেষ্ নিমুক্তং প্রসূতং সংলগ্ধং যথাস্যাদিতি॥ ৬॥

कृष्ण हो छ छ । भा अप्रान्त ।। भा अप्रानितः निष्ठा प्रक्रनः ॥ ৮॥ মৃগদর্পে । क्ष्युर्गा । সর্ক্রেশি ইছরপি স্থান । উত্তমং পদং জীবৈকু ঠাখাং। ইছ লোকে চ পুরিং পরিপূর্ণতাং লভতে। যদা। পোষণং তদস্গ্রহইতি দ্বিতীয়ক্ষক্ষোক্তলকাণাং পুর্টিং সর্ক্রাস্থানতীত্যর্থঃ॥ ১০॥ গোহবুতং গ্রামযুত্দান ক্ষণ্ণেত্যর্থঃ॥ ১১॥ তথেতি সমুচ্চয়ে। তেনৈর
প্রকারেণেতি বা সম্যক্ ধূপয়েৎ॥ ১২॥

ত্রথ শ্রীভগবদালর ধূপনসাঁহাত্মাৎ। ক্ষাগুরু সমুখেন ধূপেন শ্রীধরালর । ধূপায়ে কিবার কার্যার সমুজো নরকার্যার । ধূপাশেষ সেবন নাহাত্মার । পাছে শ্রীগোতমারর বিদয়াদে। তীর্থকোটিশতৈ ধৌতো যথা ভবতি নিল্লালঃ। করোতি নির্লালং দেহৎ পূপাশেষস্তথা হরেঃ। ন ভরং বিদ্যুতে তন্য ভৌনং দিব্যং রসাভলং। ক্ষেপুপাবশেষে বস্যাঙ্গং পারিবাসিতং।। ১০ ।। নাপাদোবিপদস্তস্য ভবন্তি থলা দেহিনঃ। হরের্দ্তাবশেষের পূপারে দ্বস্তুর সদা।। ১৪ ।। নাসৌখ্যাৎ ন ভরং দুঃ খং নাধিকং নৈব রোগজং। যঃ সেবয়েদ্ধপাশেষং বিষ্ণোর দ্বুতকল্পাঞ্চ । ক্রুরসত্ম ভরং নাধিকং নৈব রোগজং। যঃ সেবয়েদ্ধপাশেষং বিষ্ণোর দ্বুতকল্পাঞ্চ । ক্রুরসত্ম ভরং নৈব নত চৌরভরৎ কৃচিৎ। সেবয়িত্বা হরেপূপিং নির্লাল্য পাদয়োর্দ্ধলং।। ১৫ ।। হরিভক্তিসুধাদেরে চ। আল্রান্থ বদ্ধান্তিং পূপোচিছ্টিস্য সর্বতঃ। ভদ্রব্যাদ্দাটানাং ভবেৎ কর্ম বিষাপহনিতি ।। ১৮ ।। দর্শনাদিপি ধূপায়া ধূপানানিজং ক্লং। সর্বানে, শি বিদ্বিত তচ্চাপ্রে ব্যক্তিমের্যতি ।। ১৭ ।।

অথ দীপনং । তথৈব দীপমুৎসূজ্য প্রাগৃৎঘটাঞ্চ বাদয়ন্ । পাদাজ্ঞাদীদৃগক্তর মুদ্রাকৈ প্রদীপয়েৎ ।। তত্রমন্ত গৌতমারে । সুপ্রকাশো মহাদীপঃ সর্কতিতি মিরাপেঃ।সবাহ্যভাগতরজ্যোতিদাপোহ্য়ৎ প্রতিগৃহ্যতাৎ ।। ১৮ ।।

অগদীপঃ ।। দীপং প্রজালয়েৎ শক্তৌ কপূরেণ ঘৃতেন বা। গব্যেন ভত্র-সামর্থ্যে তৈলেনাপি সুগ্রিনা।। তথাচ নারদীয়কণ্পে। মঘূতৎ অগ্ঞলং ধূপং দীপং গোঘৃতদাপিতং। সমস্তপরিবারায় হরয়ে শ্রদ্যার্চয়েৎ।। ভবিযোত্রে।

দিনা কেনঃ কল্পাঃ॥ ১৪॥ অসেনিঃ প্রালভবমিত্যর্থঃ॥ ১৩॥ আপরিপদাঃ কার্যকার বেনি দিনা ভেদঃ কল্পাঃ॥ ১৪॥ অসেনিঃ পুণাভাবমাতং। সেবরেদিতি স্থার্থেইন্ । যদা। অন্যানি যং দেবরেছ। এবং দেবরিরেতাপি॥ ১৫॥ সর্বতঃ প্রসর্পতঃ ভবঃ সংসার এব ব্যালা মহাসপঃ তেন দফানাং জনানাং বিষং সংসারত্বঃখং অপহন্তীতি তথা তং॥ ১৬॥ অন্যার্পাদার দাত্ব্যতিরিক্তা জনা অপি ধূপন্য দর্শনাদিপি। আদিশবেন ধূপশেষামাণাক জায়ত ইতি তথা তং সর্বাকলং লভতে। তক্ত কলপ্রাপ্তাদিকং অথ্যে মহানীরাজনপ্রকরণে প্রমাণবাক্য নিদর্শনাদিনা ব্যক্তং ভাষীত্যর্থঃ। তথাত তত্তিব লেখাং। ধূপঞ্চারাত্রিকং প্রাভা তংপ্রবাদ্যক ব্যালি। অতক্ষারাত্রিকর্ম প্রালিকর ক্রাভা তংপ্রবাদ্যক ইতাদি। অতক্ষারাত্রিকর্ম প্রাণাপিবনদনং কেচিল্যনাত্তে॥ ১৭ ।

তথা ধূপনলিথিতপ্রকারেণৈর। প্রাথদিতি গন্ধাদিগুলিতাং ঘণীয়াসহস্তেন বাদয়লিত্যথি। পাদাক্তাৎ শ্রীমুর্ত্ত্রেপালক্তমারভা আ দূগক্তং নেত্রাক্তপয়ন্তং অতএবে। কৈঃ ধূপাপেকরোচ্চ ত্রা তবা দীপস্য মুক্ষা প্রকর্ষেণ দীপয়েৎ॥১৮॥

শক্তৌ সত্যাং গব্যেন ঘৃতেন্ব।। তত্র কপূরিঘৃতাভ্যাং দীপ্রস্থালনে বিষয়ে অসামর্থে।

ঘৃতেন দীপোদাতব্যারাজন তৈলেন বা পুনঃ 1155/1 মহাভারতেচ। হবিষা প্রথমঃ কংশোদিতীরশ্রেমির সৈঃ। অথ দীপে নিহিদ্ধং। ভবিব্যাভরে। বদামজ্জাদিতি-দাপো নক্ত দেয়ঃ করাচন ।। মহাভারতে। বদামজ্জান্তিনির্যাধ্যের ক্রিড্রাফ্রিমিন্ত্র। বিষ্ণুধর্মোত্রক্তীরকাষ্টে। নীলরক্তদশং দীপং প্রযত্নে বিবর্জ্জেই।। কালিকাপুরাণে। দীপবৃক্ষাশ্চ কর্ত্ব্যাধ্যৈজ্বাদ্যেশ্চ ভৈরব। বৃক্তেষু দীপোদাত ব্যোনক্ত ভূমৌ কদাচন।। ২০।।

ख्य मोलनमानाजार ।। कार्ल बक्कनातमन्नाता। श्रक्काना त्वरत्वमा कर्न्तिन मेलिकः । क्ष्यं प्रम्यभवाद्या क क्र्लेश्व ममूक्षतः । क्षर्ववानाक ।। त्याममानि मन्निल मन्निल क्ष्यगात्य कु मोलकः । लाककः ममूक्षतः । क्षर्ववानाक । त्याममानि मन्निल मन्निल मन्निल मन्निल क्ष्यगात्य कु मोलकः । लाककः ममूक्षतः । व्यक्तिलः । व

অশক্তোতি স্থগন্ধিনা তিলাদিজাতেন তৈনেনাপি দীপং প্রজানয়েৎ ॥ ১৯॥ ওবধ্যঃ তিলশ-র্ষপকুস্বস্তাদয়ঃ তদ্রদৈঃ॥ ২•॥

জ্যোতিঃপ্রকাশঃ স্বপ্রকাশঃ ব্রহ্ম বা তদ্ধপং পদং বৈকুঠলোকং।। ২১।। ব্যবস্থিতঃ স্থিতিওঃ অত্র অন্মিন্ লোকে সপ্তজন্মনি প্রাপ্য যদস্বত্বং ভাষ্যমন্তি ভন্নভবেং । যথা। অত্র অস্যাং মন্তক্তৌ অক্সত্বং জ্ঞানহীনতা ন শ্যাং। তত্র চ সপ্তজন্মাত্র তাৎপর্যাং কদাপি জ্ঞানহানিকারণে জ্ঞাতেপি জ্ঞানপ্রকং যাবং । যথা সপ্তেতি বাছল্যমাত্রে তাৎপর্যাং কদাপি জ্ঞানহানিনিসাদিত্যক্ষঃ। স্বয়ংপ্রভেষু স্বপ্রকাশেষু ব্রহ্মলোকাদিষু স্বেতদ্বীপাদিষু বা ॥ ২২॥ সং উত্তমং জ্যোতিঃ জ্ঞানং।। ২৩॥ জ্ঞলশীপাবকেন জ্ঞলশীকাছাগ্রনা॥ ২৪॥ ধূপস্যোবেতি যথাধূপস্যোক্ষণা দশনাং বৃপদানাদিফলমন্যেইপি লভন্তে। তথা তম্য দীপস্যাপীক্ষণা দ্দীপদানাদিফলং দ্পিদাতুরিতরেপি জনাঃ প্রাপ্রুত্তির্যা। ২৫।। নীরাজনং ভ্রামণেন নির্মান্তনং তথা ইহ্বপানস্তর্নীপার্পন্থিকী ভূন্তি সন্যন্ত ইত্যর্থঃ।। ২৬॥ বিষমাভিঃ অনুগ্যাভির্বহৃত্বিপ্তিভিঃ সম্বপানস্তর্নিপার্পন্থিকী ভিন্তি সন্যন্ত ইত্যর্থঃ।। ২৬॥ বিষমাভিঃ অনুগ্যাভির্বহৃত্বিপ্তিভিঃ সম্বপানস্তর্নীপার্পন্থিকী ভিন্তি সন্যন্ত ইত্যর্থঃ।। ২৬॥ বিষমাভিঃ অনুগ্যাভির্বহৃত্বিপ্তিভিঃ সম্ব

দীপপ্রসঙ্গে। আরাত্রিকন্ত বিষম বৃত্ববিধ্বমন্থিতং। অভ্যক্তারামচন্দুর বামমধ্য মথার্পয়েৎ।। নমোদীপেশ্বরায়েতি দদ্যাৎ পুস্পাঞ্জলিং ততঃ। অবধূপ্যাভ্যক্ত্য বাদ্যৈদৃদ্ধি নীরাজ্যেৎ প্রভূমিতি ।। ২৭।। অতএবেষ্যতে তস্য করাভ্যাৎ বন্দনঞ্চ তৈঃ।। নামচারাত্রিকেত্যাদি বর্ত্ত্যোহপি বৃত্ত্তাসমাঃ।। ২৮।। প্রসঙ্গালিখ্যতেই বৈব শ্রীমন্ত্রগবদালয়ে। দীপদানস্য নাহান্ত্যাং কার্ত্তিকীয়ক্ষ তদ্বিনা।। ২৯।।

অথ শীতগবদালয়ে দীপপ্রদানমাহান্তাং ।। বিষণুধর্মোতরে প্রথমকাশু ।
দীপদানাং পরং দানংন ভূতং ন ভবিষ্যতি ।কেশবায়তনে কন্তা দীপবৃক্ষননোহরং ।
কর্তাব ভ্রাজতে লক্ষ্যা দিবমাসাদ্য সর্বতং ।। দীপমালাং প্রযক্তি নরাঃ শার্কিগোগ্ছে । ভবতি তে চন্দুসমাঃ স্বর্গনাসাদ্য নানবাঃ ।। দীপাগারং নরঃরুত্বা কূটাগার
নিভং শুভং । কেশবালয়মাসাদ্য লোকে ভাতি স শক্রবং ।। যথোক্ত্বলোভবেদ্দীপঃ
সম্পুদাতাপি যাদব । তথা নিত্যোক্ত্বলোলাকে নারপ্তে বিরাহতে ।। সদীপে
চ যথা দেশে চক্তুংযি ফলবতি চ । তথা দীপায় 'দাতারো ভবতি সফলেক্ষণাঃ ।।
একাদশ্যাঞ্চ দ্যাদশ্যাং প্রতিপক্ষন্ত যোনরঃ । দীপং দদাতি ক্ষায় তস্য পুণ্যফলং শ্লু ।। সুবর্ণ নিন্মুক্তাত্যং মনোজ্ঞমতিসুন্দরং । দীপমালাকুলং দিব্যং বিনান
মধিরোহতি ।। ৩০ ।। পালসূত্রোদ্ভবাং বর্তিং গন্ধতৈলেন দীপকান্ । বিরোগঃ
সূত্রাশ্বির দন্তা ভবতিমানবঃ । দীপদানং মহাপুণ্যমন্যদেবেষ্পি ধ্রবং ।
কিং পুনর্বাসুদ্বস্যানন্তস্য তু মহান্তনঃ ।। ৩১ ।। তত্রৈব তৃতীয় কাণ্ডে । দীপং চক্ষ্যু
প্রদং দদ্যাং তথৈবার্দ্ধগতিপ্রদং । উর্জুং যথা দীপশিখা দাতাচোর্দ্ধৃগতিন্তথা । যাবদলি নিমেযাণি দীপো দেবালয়ে জ্লেছে । তাব্রন্থ সহস্যুণি নাকপৃত্র

থিতং আরাত্রিকং নীরাজনদীপং অভ্যর্চ্চা পুষ্পাদিনা পূজবিদ্বা। অর্পণ প্রকার:মবাহ নমইতি। অবর্ধুপ্য ভ্রামথিয়। বাদ্যৈ প্রভুমেবাভ্যর্চ্চা॥২৭॥ অত্যেমহানীরাজনবদ্যবহারখদেব তস্য ধূপানন্তরদেয়দীপস্য বন্দনমপি তৈঃ শ্রীরামার্চনাদিপরৈরিষ্যতে আরাত্রিকেতি বিভক্ত্যভাবে! নাম স্বরূপমাত্রনির্দ্দেশাদদেশ্বঃ। আরাত্রিকমিতি আদিশব্দেন নীরাজনমিতি নাম চেষ্যতে। তথা বহুলাশ্চ অসমাশ্চাযুগ্মাবস্ত্রোপীয়াস্তে। এবং মতভেদোমস্ত্রদেবতাভেদেন ফলভেদাদিনা বোহঃ। ১৮॥ অত্র ধূপানন্তরদীপদান প্রসক্ষ এব। শ্রীমতো ভগবত আলয়ে যদ্দীপদানং তস্য কার্ত্তিকীরং কার্ত্তিকমাসস্থার যদ্দীপদানমাহাত্মাং ত্রিনা। তস্যাত্রে প্রতিমাসপ্রজাপ্রশক্ষে লেখ্যত্বাৎ॥২৯॥

কেশবাল মাসাদ্য দীপাগারং কুত্বেতি সম্বন্ধঃ। কূটাগারং মঞ্জগৃহং তৎসদৃশং।
এবং নিত্যদীপদান গাহাত্মামুক্তং কালবিলেষেপি কলবিলেষমাহ একাদশ্যামিতি দ্বাভ্যাং
।। ৩০।। অধুনা সর্বেষের দীপেষু বর্ত্ত্যাদিমাহাত্মমাহ প্র্যোতি। এবং তত্তৎকামিনাং হুর্থ
প্রবৃত্ত্যে তত্তৎকলমুক্ত্যা মুখ্যং কলমাহ দীপদানমিতি। অন্ত্রেগতি তদ্দীপদান স্যাপি কলমনন্ত্রেষের তার্থঃ শ্রীবৈকুঠলোক প্রাপ্রাৎ ॥ ৩১॥ নাক্স্য স্বর্গস্য পূঠে উপরি বৈকুঠলোক-

মহীয়তে ।। ৩২ ।। কৃছয়ারদীয়ে । বীতি হোত্রং প্রতি যতঃধুজ্ম। পূর্বজনাবৃত্তকথনে । প্রদিশংসাপিতস্থত সুরতার্থং দিজোত্ম । তেনাপি মম দুজ্ম নিংশেষৎ ক্ষয়মান্ত্রং বিশ্বং মার্চারিলীয়ন্তে স্বহন্তে তু স্বতন্ত্রে সতি দীপকং । মহাফলো বিষ্ণুগৃহে ন দতে; নরকার সং ।৩৩।নারদীয়ে মোহিনীৎ প্রতি শ্রীয়ক্রাঙ্গদোক্তৌ ।। তিইন্তর বহু বিত্রানি দানার্থং বরবর্ণিনি । হাদয়ায়াসকত্ ণি দীপদানাদিবং ব্রজেৎ ।। তস্যাপ্যভাবে সুভগে পরদীপ প্রবোধনং । কর্ত্রাং ভক্তিভাবেন সর্বাদানাধিকঞ্চ মদিতি ।। ৩৪ ।। সদাকালবিশেষেপি ভক্ত্যা ভগবদালরে । নহাদীপ প্রদানস্যু

অথ মহাদীপমাহাত্তাৎ। বিষ্ণুধ্যোত্তির প্রথমকাণ্ডে। মহাবর্তিঃ সদা দেয়া ভূমিপাল মহাকলা। কৃষ্ণপক্ষ বিশেষেণ তত্তাপি চ বিশেষতঃ।। অমাবস্যা চ নির্দিন্তা দাদশী চ মহাকলা। আশ্বযুজ্যমতাতায়াৎ কৃষ্ণপক্ষ থোভবেৎ।। অমাবস্যাতদা পুণ্যা দ্বাদশী চ বিশেষতঃ। দেবস্য দক্ষিণে পার্শ্বে দেয়া তৈলতুলা নূপ। পলাইকযুতা রাজন্ বর্তিৎ তত্র তু দাপয়েৎ।। বাস্যা তু সমগ্রেণ সোধ-বাসোজিতে নির্মঃ।। ৩৫।। মহাবর্তিষ্মমিদং সক্ষত্তা মহামতে। স্বর্লোকং সুচিরৎ ভুজ্বা জায়তে ভূতলে যদ।।। তদা ভবতি লক্ষাবান্ দ্যুতবিণসংযুতঃ। রাজ্বে চ জায়তে স্থলিন দেশে চ নগরে তথা। কুলে চ রাজশাদ্বা তত্র স্যাৎ দীপবং প্রভ্বা প্রত্তি ভ্বতি যুদ্ধের কলহেযু চ। থ্যাতিং হাতি তথা লোকে সদ্ গুণানাঞ্চ সদ্প্রেণ । একমপ্যথ যোদিলা দ্বাইতময়োর্গ্রেণঃ। মানুষ্যে সর্বামান

ইত্র্যঃ। দিতীয়ক্ষে ত্রেলাকপক্ষকথনে স্বর্গ্য ব্রন্ধলোকপর্যান্তর্যক্ষে ॥ ৬২॥ এবং ক্রিভগবদালয়ে ভগবদ্দেশেন দীপদানকলং লিথিতং অধুনা পাপকর্মাদ্দেশেনাপি তংশান্মাত্রে দীপপ্রজ্ঞালনকলং লিথিত প্রদীপইতি। তর বিফু মন্দিরে। শূন্যং প্রজাদিভির্ক্ষেমন্দিরং প্রাপ্তবান্নিশীতি তর তস্য প্রস্তুত্রাই। অত্রেমাখ্যারিকা। যজ্পজোনাম রাজা প্রবজ্মনি হর্জায়া চণ্ডালো মহাপাপ। বলীনিরতঃ কদাচিং প্রদারোপত্রোগার্থং পূজাদিরহিতং ভগবদালয়ং গতন্তংশানং সংমার্জ্য দীপং প্রজাল্য পাপকর্মাণা রাত্রিং গময়ন্ সদ্যোর্কিভিঃ প্রাপ্য হতে। বৈকুঠলোকং প্রপ্তিস্তর ব্রদ্ধাদিলোকের চ বিবিধস্থপভোগাম্পভুজাত্তে স্বেজ্যা প্থিব্যাং ভগবদ্ভাবপরে। রাজা বভুবেতি॥ ৩০॥ দিবং স্বর্গমাত কামিন্যান্ত্রমা মোহিন্যা স্তর্জান্রবিশেষাং। যদ্বা উর্জ্বলোক্মিত্যর্কঃ। বৈকুঠমিত্যন্তিস্ত ত্র্যাং তংগ্রকাশনাবোগাদিতি দিক্। যৎ যন্মাৎ পরদীপস্য প্রবোধনমপি স্ক্রদানেভ্যাহ্বিকং॥ ৩৪॥ সদা স্ক্রিমিরপি নিনে। কালবিশেষে অমাবস্যাদাবিপি॥

আশ্বনুজ্যাং আশ্বিনপৌর্ণমাস্যাং। প্রাষ্টকেন যুতা তৈলস্য জ্ঞা প্লশতং অফোজ্রশত-প্লতৈলানীতার্থঃ। দাপয়েং দদ্যাৎ। অত্যে দত্ত্বেগ্রুক্তঃ। এবমগ্রেপি। সমগ্রেণঅথওেন।।৩৫॥ থোদাপয়েং সঞ্জায়তইত্যুক্তরেণাঝায়ঃ দীপবং প্রভা তমোনাশিনীগ্রুতির্যস্য সং। সম্পুনানাং প্রেতি যদুক্ত তে মরাহন্য। স্বলং তথা স্ব্যাপেতি ভোগকালে তু যাদ্ব। সামান্য তু দীপসঃ রাজন্দান মহাফল । কিম্পুন্ম হতোদীপস্যাতে য়তা ন বিদ্যতে । ১৬।।

ख्य स्मानंगनिनामि वञ्चवर्छ। मोभमाम निर्वधः। स्मानः वामत्रकः वञ्चः कोन् मं न त्या है। खेन्छुकः म वा ममार वर्षिकार्थः कमाहराछ। ख्रामानाम वा महः मोभः म खीइद्रब्धः । निर्वाभराम हिः ना छ छ मिष्ट्र कमाहरा कमाहन।। ७१।।

অথ দাপনির্বাপণাদিদেশকঃ। বিষ্ণুধ্মে ত্রিরে প্রথমকাণ্ডে। দত্র দাপোন হর্ভব্যন্তেন কর্ম বিজানতা। নির্বাপণঞ্চ দাপস্য হিংসনঞ্চ বিগর্ছিতং । হং কুর্ম দিংসন্থ তেন কর্মন। পুল্পতেক্ষনঃ । দাপহর্জা ভবেদক্ষঃ কানো নির্বাণ্ডমেন
বেং ।। ৩৮ ।। বিষ্ণুধ্যে চনারকান্ প্রতি শীধ্যরাক্ষৈতো । যুগাভিষোরনানাদমুদিতেরবিবেকিছিঃ । দ্যুতোদ্যোতায়গোবিন্দ গেহাদাপঃ পুরা হৃতঃ ।
তেনাদ্য নরকে ঘোরে গুভৃষ্পপরিপীড়িতঃ। ভবত্তি পতিভান্তারে শীহরত বিদারিভাঃ। তত্তিব শীপুলস্যোক্তো চ। ভ্যাদায়তনে বিফোর্দদ্যাদাপথ দিজোভুমা তাংশ্চ দত্ত্বা ন হিংসেত নচ তৈলীবিহোজিতান্ ।। ৩৯ ।। কুর্বাতি দীপহন্তঃ চ মুকোহ্যোজারতে মৃতঃ। অন্ধে ভ্যাসি দুস্পারে নরকে পচ্যতে কিল ।। ৪০ ।।
ভূমো দীপদাননিয়েগঃ ।। কালিকাপুরাণে ।। দীপ্র্ফাশ্চ কর্ডব্যা ভৈজ্যাদৈঃশ্চ
ভিরব। বৃক্ষের্ম দাপো দাতব্যে নতু ভূমো ক্লাচন ।।

অথ নৈৰেদ্যং। দত্ত পুস্পাঞ্জলিং পঠিৎ পাদ্যমাচনন্দ তথা। রুত্বা পাত্রেদু রুফায়ার্পয়েড্রেজ্যেং যথা বিধি।। ৪১॥

জনানাং মধ্যে তথাত্বং লক্ষীবস্ত্রাদিক । ইয়ন্তা ফলে পরিমিতিঃ ॥ ৩৯॥ শুভবিচ্চ্ন্জন ক্লাপি ন হরেছ। নান্যত নয়েছ ন নির্দ্বাপয়েছ নহিংশ্যাচ্চ তৈলাদিনা ন বিযোজয়েছ। ৬৭।

তেন হরণে যথ কর্মা মহাপাতকলকণং তদ্বিশানতা শনেন। পুশং চফ্রোগিনিশ্যস্তাতমীক্ষণং নেত্রং যস্য সভবেথ । তথ পুশিতেক্ষণস্থাদিকর দীপহিংসনকর্ত্রকভোগানস্বর্ দেহাস্তরে জ্বেং । অগ্রেলেখ্যবরনামুদারাথ ।। ৩৮ ॥ ভাতব্য উদ্যোত র প্রকাশনায় । ন হিংসেত ন নির্বাপয়েথ ॥ ৩৯ ॥ মৃতঃ সন্ ফুলোহক্ষণত শায়তে ইহ লোকে অক্ষে তমদি অস্তামিশ্রসংজ্ঞকে ॥ ৪০ ॥

ভোজাং পায়দাদিনৈবেদ্যং পাত্রেষু ক্র্যা নিবায়ার্পয়েই । যথাবিধীতানেন ছত্রচামরগীত বাদ্যাছাৎসবপূর্বকং তদা নেত্রামিত্যাদিকং জ্রেয়ং । অম্তোপতরগমদি স্বাহেতি জলগ ভূতঞ্ ক্রেমিত্যাদিকং লৌকিকবাবহারাজ্যারেণ জ্রেয়ং।" অনাচ্চাত্রে বিশেষতোবাজ্ঞং ভাবি॥ ৪১॥ অথ নৈবেদ্যাপ্নিধিঃ । অত্রং মুপ্তায়ুনা প্রোক্ষ্য নিবেদ্যঞ্জুনুত্রা।
সংরক্ষ্য প্রোক্ষরেরায়ুবীজন্মপ্তজলেন চ। তন সংশোষ্য ভাদ্যায় বিবিদ্ধ দিনিংগ।
প্রাস্থ্য করন্তলেহন্ত্রংপৃষ্ঠে সংযোজ্য দর্শয়েই । তদুগুবহ্নিনা তস্য শুক্ষদোষই
ক্ষা দহেই । তন্তঃ করন্তলে সব্যেহ্ন তুলীজুই বিভিন্তরেই ।। ৪ই ।। তইপৃষ্ঠেদক্ষিণই
পানিন্তলং সংযোজ্য দর্শয়েই । তদুগুরা নিবেদ্যুই তই সিঞ্চেদ্মুত্রারয়া ।। ৪৩ ।।
ভালেন মূলজপ্তেন প্রোক্ষ্য তচ্চাম্তাত্মকই । সর্কাই বিভিন্তঃ সংস্পৃত্যা মূলই বারাইকিই জপেই ।। ৪৪ ।। তম্তাক্ত্য তদ্মেনু মুদ্রা সনিলাদিভিঃ । তন্ত কৃষ্ণা
সংপূজ্য গৃহীত্মা কুসুমাঞ্চলিই । শ্রিক্ষই প্রার্থ্য তইক্তাভেজাধ্যাত্মা বিনির্গতিই ।
সংযোজ্য চ নিবেদ্যতই পাত্রই বানেন সংস্পৃত্যন । দক্ষেণ পানিনাদায় হ জ্বপুত্যাবিভিন্ত ক্ষাই মূলমূচ্যাত্য ভক্তলই বিস্কেন্তু বি ।। ৪৫ ।। তইপানিভাগই
সনুখাপার নিবেদ ই তুল্পীযুতই । পাত্রাচ্যই তস্য মন্ত্রেণ ভক্তা ভগ্যতইপ্রেই ।

নিবেদ্যং তদেব অস্ত্রমন্ত্রে। জপ্তাভিঃ অদ্ভিঃ জলেন প্রোক্ষ্যা তৎনিবেদ্যঞ্জক্ষুদ্রয়া তদ্ভাম-ণেন সংরক্ষ্য। ৰায়ুবীক্ষংযমিতি তেন জপ্তংৰাদশ্বার।নভিমন্ত্রিতংতজ্ঞলংতেনচ প্রোক্ষয়েং।তেন প্রোক্তবন তথ্য নিবেদ্যায় দোষং সংশোষ্য সমাক্ শুদ্ধং ক্রা দক্ষিণে ক্রতলে অগ্নিবীকং রমিভি ধ্যার। সঞ্জিস্তা। অনাং বামকরতলং তস্য দক্ষিণকরতলস্য পৃষ্ঠে সংযোগা লগ্নং ক্রা দৰ্শনাহ। তত্মাৎ প্ৰদৰ্শনাছণ্ডেন জাতেন বহ্হিনা তথ্য নিবেদ্যগ্য শুক্তং পূৰ্বামেৰ শুষ্কভাগ প্রাপ্তা দেখিং দহেছ। ভতঃকরতলে সব্যহন্তে ছাদেতি মনসা ধ্যানেনৈব কার্যামিতার্থঃ। এবনাগ্র পুট্ছাং। অমৃত্রীজংচমিতি॥ ৪২॥ তদ্য দ্ব্যকর্তল্স্য পূঠে ত্সাক্ষ্নাছ্পর্য অমৃত্ধার্র। তত-ন্তঃপ্রতারদিপ্যক্ষনাভ্যাং শংরক্ষ্য কণচেনাবগুণ্ঠয়েদিতি বিধিঃ সংসম্পুদায়াছিক্ষেয়ঃ যথাৰিধীতি প্রাল্লিখনাথ। এবমন্যত্রাপি বেক্নুন্ধব্যং॥৪০॥ তলিবেদ্যপ্র মূলমন্ত্রজপ্তেন জলেন প্রোক্ষ্য সর্বাং ভচ্চ অমৃত্যতাকং অধামরং বিচিন্ত্যসংস্পৃশ্য তদেব দকিশহন্তেন।ভিস্পৃশ্য ॥ ৪৪ ॥ তং নিবেদাং ধেলমুদ্র। অমৃতীক্ষত্য পরিপূর্ণং বিচিত্য। তৎনিবেদাঞ্চ সলিলাদিভিঃ জলগন্ধ-প্রতিপাং সংপ্রা। ক্লক্ষ ক্লায়নমঃ ইতি তৈরেব সংপ্রা কুল্লাঞ্লিং গৃছীত্বেতাদ্য পরে-গ্রায়ঃ। এরুকং প্রার্থ্য ভগৎরৈবেদ্যগ্রহণায় এমুখতন্তে মহঃ প্রসরিত্বতা ভার্চ্য । তস্য এরুক্ষস্য বজুং তেজে।মহঃ বিনিগতিং ধ্যাল।নিবেদ্য তদেব সংযোগ্য তেন সহ সংযুক্তং ধ্যান্ত্ৰত্যৰ্থঃ তमा निर्विषामा পতिং वास्मन পाणिया मः स्पृ भन् पिक्तिन शालिना शक्कांपिमिहिङः , जलमापाय । সাহান্তমিতি সাহাত্তেইপি মল্কেইসান্ পুনরতে স্থাহেতি প্রয়োজ্যেতার্থঃ। তুৎ দক্ষিণপাণি-প্তীতং গল্ধ। দ্যাঘিতং জলং জীক্ষায় ইনং নৈবেদ্যং ক'পেয়ামীতি দেবতীর্থেন ভূমৌ বিসজে-দিতি ত্রিভিরম্বয়ঃ।। ৪৫।। তলদীদলসংমিশ্রং হরের্যচ্ছেচ সর্বদেত্যাদি বচনভস্কলসীসাহিত্যস্যা-ৰশ্যকত্বেন ডলিবেদ্যং পাত্ৰসহিতং জলসীমুতঞ্চ পাণিজ্যাং হস্তদ্বেন ধূত্বা সমুখাপ্য ভূমিতঃ সমুজ্তা। বারত্রয়ং সমুত্থাপয়লিতি কেচিৎ। তস্য নিবেদ্যাপ্ণস্য মস্ত্রেণ। ওত্তেজ্ঞসে ইতি- নিবেদনমন্ত্রশারং। নিবেদয়ায়ি ভবতে জুয়ালেছৎ হবির্তরে ইন্তি !! ৪৬ !! অমৃ-তাপন্তরণমি স্বাহেত্র্যারয়ন্ হরেও। দল্বাথ বিধিবদারি গণ্ড্রং বামপাণিনা। দর্শয়েদ্যাসমুদ্রান্ত প্রজ্বাংশল সনিভাং।। ৪৭ ৷৷ প্রাণাদিমুদ্রাহক্তেন দক্ষিণেন তু দর্শয়েছ। মাজেদত্রথীয়ায়াল্ডেলারালৈরভ্রমান্তর লালিয়েঃ ৷৷ ৪৮ ৷৷ ততঃ স্পৃশংস্ট করয়োরজ্ব ঠাভ্যামনামিকে। প্রদেশয়েরিবেদ্যস্য মুদ্রাং ভস্য মনুং জপন্।। ৪৯ ৷৷ মন্ত্রমারজ্ব ঠাভ্যামনামিকে। প্রদেশয়্বন্তিঃ পার্রা মরুলাবাল্বনেনিচ। মন্ত্রনিবেদ্য মাল্লভ্রমাং নালাল্বর্যা নালাল্বর্যা নালাল্বর লালাল্বর লাল্বর লাল্বর লাল্বর লালাল্বর লাল্বর লালাল্বর লাল্বর লালাল্বর লাল্বর লালাল্বর লাল্বর লাল্বর লাল্বর ল

পাঠে তক্ষৈ জীভগবন্মুখনির্গতায় মহদে। তথাপি সএবার্গঃ ॥ ৪৬॥ অথানন্তরং বিধিবদ্যধা সাং এতচাত্রেপি সর্ব্বেশ্বর্ত্তাং। ততশ্চ অমৃতোপস্তরণমদীতি দেবহন্তে জ্লগণ্ডুবং দত্ত্বেতি (ऋत् ।। ८१ ॥ मिक्किन इरखन जू आनानिमूखाः शक्ष मरेखः शक्ष छिः करमन मर्भरतः । चानिभरकिन আপোনব্যানেশ্লানসম্পনাঃ। মন্ত্রানেব লিখতি । তথ্য তথ্য প্রাণাদের।হ্বীয়েন্মিডিঃ কর্বভূতৈঃ চত্ত্রীবিভক্তিঃ স্বাহা চ তে অন্তে যেষাং তৈঃ স্থারঃ প্রণবঃ অ:দেন যেষাং তৈশ্চ। প্রাণ, দিনুক্র:-শ্রেক্তার। ক্রমদীপিকায় ং। স্পূর্ণেং ক্রমিষ্ঠেপেক্রিষ্ঠিকে দে স্বাস্থ্যসূচী, প্রথমেই মুদ্রা। তথা-পরা তর্জনি মধ্যমে স্যাদনামিকামধ্যমিকে চ মধ্যা। অন।মিকা তর্জনি মধ্যমা স্যাত্ত্বটেত্থী-সক্নিষ্ঠিকান্তাঃ। স্যাৎ পঞ্চমী ভদ্বদিতি প্রতিষ্ঠা প্রণাদিমুদ্রেতি । এতদর্থঃ।কনিষ্ঠ নামিকে অঙ্গুল্গৌ স্বাঙ্গুর্জনা চেৎ ক্ষ্যুশেং ভদ। আদ্যা মুদ্রা স্যুং । ভর্জনীমধ্যমে চেদঙ্গুষ্ঠমূর্জ্বা স্পূৰ্ণেং তদা দ্বিতীয়া। এবং অন।মিকামধ্যমে চেংস্পূৰ্ণেৎ তদা তৃতীয়া। অনামিকাতজ্জনীমধ্যমাঃ শ্চেং স্পৃদােং তদা চত্তথী। তা অনামিকাতৰ্জনীমধামাঃ কনিষ্ঠাসহিতাশেং স্পৃদােকদা পঞ্ মীতি। প্রয়োগঃ ওঁপ্রাণায় স্বাহা । ইতঃকুষ্ঠকনিটিকানামিকাভিরিত্যেবমূহং ॥ ৪৮॥ পঞ্চা-জ্লাগ্রশংলগ্না প্রে থিতে। র্কুন্নী যদীত্যাদিনা পুরুষ্পচারগণমুদ্রামধ্যে লিখিত। নিবেদামুদ্রা यक्षा क अक्ष समाम्मू छेवर स्वागा गिका क्ष सम्भरितन मिरवमा सूखा । তा॰ अमम्दिर । किः कूर्यन्। ভদ্য নিবেদ্যস্য মন্ত্র অপন্॥ ৪৯॥ নন্দঃ ঠকারঃ অশ্বন্ধ উকারঃ ক্যাচিকাতে বকারঃ। তেন বিন্দুনা চাহস্বাবেণ যুক্তঃ নতির্নয় শব্দঃ। পার্য্থ পকারঃ। রা ইতি স্বর্পনি র্দশঃ। মরুদ্ধ-কারা। আবাদ্যানেইতি প্ররাপনির্দেশ:। তথা নিচ রুদ্ধেতি চ। তট্ট পদং ভেযুক্তং রুদ্ধায়ে-ভ্যর্থঃ নিবেদ্য মিতি স্বৰূপনিৰ্দ্দেশঃ।আগস্তুভ্গ ককারঃ। মাংসং নকারঃ ভত্যক্তঃ।প:র্শ্বং পকারঃ। অনি লো যকারঃ অমীতি স্বৰূপনিষ্টেশঃ। ঠৌনমঃ পরাশ্ন প্রমাত্মনে ইনিরুদ্ধায় নিবেদ্যুং কম্প্রা মীতি।ieo॥ নিতং শুদ্ধং ঘারিকা ঘীরবেতি প্রসিদ্ধা। তদাদ্যং শোভনখাদ্যং। আজ্যংঘতং। প্রাজ্য ব্রুতপ্রচুরপকৃং। দমিত্যং প্রমোওমমিত্যর্থ:। শ্লোকোরং জবনিকান্তর্ধানানভরং বহিরেব कतः विकिरिक्नामनीत सामीतः भाकिताकीशितिकन्नमण्डाकातकायः कृष्य ॥ ७० । किथा। शक्रकृश्वारम। देनः वमार श्वता उक्षा प्रकारिमार्ड्यान्यिमा मीनाकरेनम्ह कत्रात ममाम्बीशामनः वृक्षः ॥ ७२ ॥

অধ নৈব্দ্যপাত্রানি। ক্ষান্দে। জীব্রজ্ঞনারদসমাদে। নৈবেদ,পাতং বক্ষ্যামি কেশবস্য মহাজ্মনা। হৈরণাং রাজতৎ,তামুং কাৎস্যৎ মৃণ্যুমেনব চ। পাজাশাৎ পদ্ম-পত্রঞ্চ পাত্রং বিক্ষােরতিপ্রিয়ং। বিষ্ণুধর্মোভরে। পাত্রাণান্ত প্রদানেন নরকঞ্জ ন গচ্ছতি। পাত্রপরিমাণং চোক্তৎ। দেবীপুরাণে। ঘটত্রিংশদজুলৎ পাত্রমুভ্রমং পরিকীর্ভিতং। মধ্যমঞ্জিভাগোনং কন্যং দ্বাদশান্ত্রন্থ। বয়ঙ্গুল বিহানিন্তু ন পাত্রং কারায়ৎ কুচিৎ। ৫৩ ।।

পাঠাইতি জ্ঞেয়ং । ক্রমদীপিকোক্তান্ত্রপারেণাদৌ তন্মুখ্যমন্ত্রস্য লিখিভরাং। ৫১॥ অন্যঞ্ নৈবেদ্যাপ্ণবিধিং লিখতি নৈবেদামিতি। দীপঞ্চান্যমেকংভোজনকানপর্যান্তস্থায়িনং আসনধ্য দদ্যাথ। বুধঃ সদাচারবিশেষবিদ্যানিতার্থঃ॥ ৫২॥

কন্যসং কনিষ্ঠং। বহু ভিরক্ত ভিরক্ত ভিরিক্ত নিং অফ। স্কুলপরিমাণতোন্নেমি হার্থঃ। কুচিদিতি স্থানাদৌ চ সক্ত ন কারয়ে দিতার্থঃ। ৫৩॥

গুড়শকেন সর্কে ইক্ষুবিকারা গৃছতে। তেষাং গুড়াত্মকত্বাং। শদ্ধুলাঃ তৈলপক্বিশেষাঃ। আপূলাঃ মণ্ডকাদীনাং সমূহাঃ সূলাব্যঞ্জনানি।সতি বিভবইতি শেষঃ। যদা গুড়পায়সাদিনৈবেদ্যালিত ॥ ৫৪॥ বচাত্মনোহতান্ত প্রিয়মিতি লোকে ইনিউমিপি অবিহিতমিপ স্বদ্য প্রিয়ঞ্জেই দ্যাদিত্যুক্ষঃ। অত্রচ বিহিতমেব নত্ত নিষিক্ষমিতি কেচিদাতঃ অত্যন্তনিয়িক্ষেচ বৈক্ষানাং স্বত্রবাপ্রবৃত্তেল্প দেয়মেবেতি কিং তদভিব্যঞ্জনেন।। ৫৫॥ অধিগুণাৎ অধিকগুণ্যুক্তং যতঃ পুরুষ্প্য ভগ্বতঃ তুকিছে। যদ্ধা পুরুষাহারস্থাতং দদ্যান্তভোন্যনমিত্যুর্কঃ। ৫৬॥ কেবলং একমেব পায়সং দদ্যাদিত্যুক্ষঃ। তচ্চ ঘৃত্যুক্তমেব। অঘৃতঞ্চান্থরং বিছ্রিতি স্মৃত্যঃ। ৫৭॥ হবিষা গ্র্যুত্বন। ব্রীহ্য়ঃ ষ্বাদিভ্যাহন্যে চণকাদ্যঃ। ৫৮॥ শ্রীবেইং দল্পুণীতি প্রেসিকং।

টিকাঃ। ফলানি চৈব পকু।নি নাগরঙ্গাদিকানি চ। অন্যানি বিধিনা দল্ভা ভক্ষ্য।নি বিবিধানিচ। এবমাদীনি চান্যানি দাপয়েড্যক্তিভোন্প।। ৫৯।। বারাহে। यञ्च ভাগবংতাদেবি ভন্নাদে। ভু প্রীণয়েৎ। প্রীণিততিষ্ঠতেইসৌ বৈ বহুজনানি মাধবি। সর্বত্রীহিময়ং গৃহা শুভং সর্বরেসান্তিত্ব। মত্ত্রেণ মে প্রদীয়েত ন কিঞ্চপি সংস্পৃশেৎ।। ৬০।। ইঙ্গুদীফলবিলানি বদরামলকানি চ। থজুরিংশ্চাসনাৎশৈব মানবাৎশ্চ প্রষ্কান্। শালোজুমুরিকাংশ্চৈব তথা পুক্ষকলানি চ। পৈপ্পলং কণ্টকীয়ঞ্চ ত্তয়ুরুঞ্চ প্রিয়ঙ্গুকং। মরীচং শিংশপাকঞ্চ ভল্লাতকরমর্দকে। দ্রাক্ষণ দাড়িমঞ্চৈব পিগুথজুরিমেব চ। দৌবীরং কেলিকঞ্চৈব তথা শুভফ্লানি চ। পিগু। तक कल ९ टेवर भूताशकलामव छ। समीरिक्षव कवीत्रक शक्तृ तकमङ्कल । कुगूप्ता ফলক্ষৈৰ বহেড্কফলতথা। অজ্ কৰ্কেটিকঞ্চৈৰ তথা তাল ফলানি চ। কদয়-কৌমুদধ্যেব দ্বিবিধং স্থলকঞ্জয়োঃ। পিগুকন্দেতিবিখ্যাতং বংশনীপং ততঃ পরং। মধুকন্দেতি বিখ্যাতং মা উষ্ংকন্দমেৰ চ। করমদ্ধিকন্দঞ্গ তথা নীলোৎপালস চে। মৃণালং পৌষ্ণর গৈব শ'লুকস্য ফলত্থা। এতে চান্যেচ বছবং কদ্মূলফলানি চ। এতানি চোপযোজননি যে ময়া পরিকম্পিতাঃ। মূলকস্য ভতঃ শাকং চিঞাশাকং তথৈব চ। শাক্ষিব কলায়সঃ স্ম্পিস্য তথৈব চ। বংশক্ষ্য জ্পাকঞ্চাক্ষেব কল স্বিং। আপ্রকিস্য চ শাকং বৈ পালকং শাক্ষেব চ। অস্বিলোড়কশাক্ষ শাকং কৌমারকন্তথা। শুক্মগুলপত্রঞ্জাবেব তরুবানকৌ । চরস্য চৈব শাক্ষ মপুক্ষাভুষরশুখা। এতে চানে,চ বছবঃ শতশোশ সহসুশঃ। কর্মণ্যাশৈচব দক্ষে বৈ যে সয়। পরিকার্ভিতাঃ । ত্রীহীণাঞ্চ প্রবক্ষ্যামি উপযোগাৎশ্চ মাধ্বি । এক-िष्ठ नमाशाय ज्यास्त्र मृत् मून्ति । सम्बाधिर्मिकतळ्थ मूगस्य बळ्णानिकः । দীর্ঘশূকৎ মহাশালিং বরকুজুমপত্রকং। গ্রামশালিং সমদ্রাশাং সঞ্জীশাং কুশশা লিকাং। যবাশ্চ দ্বিধা জেয়াঃ কর্মণ্যা মম সুন্দরি । কর্মণ্যাশ্চৈব মুল্যাশ্চ ভিলঃ রুষ্ণঃ কুল্যকাঃ । গোপূমকং মহামুদ্দানুদ্দান্তিক্সবাটজিৎ। কর্মণ্ডেলনি চোল্ডানি

কাসারঃ পৈবাকিকাদিঘৃতপকান্তর্নিকেপ্যোমধুরপক্ষকাবিশেষঃ কসেরুরিতি প্রসিদ্ধঃ। অ্রেন্ড্রিকা সেবালড্ডুইতি প্রসিদ্ধা। এক দুর্দ্ধা পিইময়ো রচিতঃ স্প্রিকা মতঃ। উল্লাসিকা লপ্র্নিতি প্রসিদ্ধা। ইপ্রবেইঃ তিলবেইঃ অহুসাই তি প্রসিদ্ধা। ইপ্রবেইঃ তিলবেইঃ অহুসাই তি প্রসিদ্ধা। কিলাটিকা ক্ষ্মিরারঃ প্রতিবিষ্ঠেতি প্রসিদ্ধা। অন্যানি চ কলানি দত্ত্ব। পশ্চাদ্ধানি দাপয়েং ইতাত্র দদ্যানিতি বা পাঠঃ। ৫৯॥ অন্নাদ্যে অন্যাদিভক্যপের্ফরেরাণ। গৃহ গৃহীয়া॥ ৬০॥ আসনান্ চারবীকানি। ম নবান্ নারিকেলফলানি। প্র্যকান্ প্র্যাইতি প্রসিদ্ধান্। এবু পুংস্কুমারং। অথ্য অন্যতাপি এবং ক্ষেয়ং। এবং দেশভেদেন তত্ত্বামপ্রসিদ্ধান

ব্যঞ্গানি প্রিয়ান্থিতান্। প্রতিগ্রাম্য হং হে,তান্ দ্র্রান্ ভাগবভাৎ প্রিয়ান্।।
কিল ।। যে মরেবোপযোজ্যানি গব্যং দ্বি পয়োঘৃতং। ক্ষান্দে চ। ব্রহ্মনরেদ্
সয়াদে। হবিং শাল্যোদনং দিব্যমাজ্যযুক্তং সশার্করং । নৈবেদ্যং দেবদেবার
যাবকং পারসন্তথা । নৈবেদ্যানামভাবে তু ফলানি বিনিবেদয়েও । ফলানামপ্যভাবে তু তৃণগুলান্ধধীরপি। ওয়ধীনামলাভে তু তোয়ঞ্চ বিনিবেদয়েও ।
ভদলাভে তু স্ক্রি মানসং প্রবরং ফাতং ।। ক্ষান্দে মহেন্দুং প্রতি শ্রীনারদবচনং।
হচ্ছান্তি তুলগাশাকং শৃতং যে মাধ্রাগ্রহঃ। কপোতং বিফুলোকে তু বসন্তি পিতৃভিঃ সহ।। ৬১।।

অথ নৈবেদ্যে নিষিদ্ধানি হারীতক্তৌ। নাভক্তং নৈবেদ্যার্থে ভক্ষ্যেযুপা,জামহিয়াকারং পঞ্চনখান্তনা দ্বারকানাহাত্যে। নালাকেত্রং
বাপয়তি মূলকং ভক্ষয়তি যে। নিবাজি নরকোত্তারং কপ্পকোটিশতৈরপি
বারাহে। নাহিষ্ঞাবিকং চাজস্যজিয়মুদাহতং । কিঞ্চ । মাহিষ্
বহুরিমহাং ক্রীরং দিধি বৃতং যদি । ৬২ ।। বিষ্ণুধর্মোত্তরে ভ্তীয়কাণ্ডে।
ভাভক্ষ্যঞ্গাপা,হৃদ্যঞ্জ নৈবেদ্যং ন নিবেদ্যেৎ । কেশ্বনিটাবপ্রঞ্জ ভ্থাচাবিভিত্ত যথ। মূষিকালাঙ্গলোপেত্যবপূত্যবক্ষুত্থ। উদ্যুর্থ ক্পিথ্য় তথা
দত্তশ্রক্ষ হথ। এবমাদীন দেবায় ন দেয়ানি কদাহন । ৬৩ ।।

অথাভক্ষ্য নির্মান বৃদ্ধাকৎ জালিকাশাকং কুসুম্ভাশান্তকং তথা। পলাপ্ত্র লশুনং শুল্লং নির্মান কর্বজ্ঞানে । গৃঞ্জনং কিংশুক্তিক কুকুগুক তথৈব চ। উদ্বার মলাবুক জধ্যা পত্তি বৈ দিজঃ ।৬৪। বৈক্ষরে। জুঞ্জীতোক্ত্সারানিন কর্বালির ক্রান্তাক্র হান্দে। যোভক্ষরতি বৃত্তাকৎ তস্য দূরতরো হরিঃ ।। কিঞ্চান্ত্র ।। বার্তাকুং বৃহতীকৈব দক্ষমনং মসূরকৎ। যস্যোদরে প্রবর্তে তস্য দূরতরোহরিঃ। কিঞ্চায় অলাবুং ভক্ষরেদান্ত্র দক্ষমনং কল্মিকাং। স নির্লম্ভঃ কথং বুতে পূজ্যামি জনাদ্দিং। অতএবোক্তৎ যামলে । যত্র মদ্যং তথা মাংসং তথা বৃত্তাকমূলকে। নিবেদয়েনের তত্র হরেরৈকাহিকীরভিঃ।। ৬৫।।

রপি ভেদাৎ তত্তদ্ধাষয়া লিখিতানামপি তত্তদ্বাণাং সর্বদেশীয়ানাং ছজ্ঞেরত্বাৎ তলিখনপ্র-য়াসেনালং। তত্তদেশবাসিভাএনাপেক্ষিততত্ত্বিশেষো জ্বেয়ঃ। তথাপাত্রাপ্রসিদ্ধং কিঞ্চিৎ শ্রীমথু রাদেশ ভাষয়া অভিব্যক্ষ্যত ইতি॥ ৬১॥

মাহিষাদিকং দধ্যাদি।। ৬২॥ লাঙ্গুলে। লস্তেবিশেষঃ। অবপূতং অবজ্ঞা ত্যক্তং। অবক্তং যস্যোপরি ক্তং কৃতং তৎ। দন্তশঠং জন্ধীরকলং॥ ৬৩॥

নাভক্ষ্যং নৈবেদ্যার্থে ইতি হারীতক্ষ্তে অভক্ষ্যঞাপ্যক্ষদ্যঞ্ ইতি বিষণুধর্মোন্তরে চাভক্ষ্যার্পণং নিবিদ্ধমিত্যভক্ষ্যাণি লিখতি বস্তাকমিত্যাদিনা কুম্নন্ত্রশাকং অক্ষন্তক্ষ্ণ শাক্ষ্যাক্ষ্য ভিত্তং কাঞ্জিকং। কুকুণ্ডং কলবিশেষ্থ॥ ৬৪॥ উদ্ধৃতসারাণি পিণ্যাকাদীনি। ৬৫॥

অথ নৈবেদ্যাপ্ৰমাছা আং। ক্ষান্দে। নৈবেদ্যানি মনোজ্ঞানি রুঞ্স্যাপ্তে নিবেদয়ৎ। কপোন্তং তৎ পিজুণান্ত তৃপ্তিভ্ৰতি শাখতী। ফলানি যচ্ছতে যোবৈ সুহাদ্যানি নরেশর। কপোত্তৎ জান্ততে তস্য সফলশ্চ মনোরথঃ। নারসিৎছে। হবিঃ শাল্যোদনং দিব্যমাজ্যযুক্তং সশর্করং। নিবেদ্য নরসিংহায় হাবকং পায়সভ্থা। সমাস্তপুলসংখ্যায়া হাবত তিত্তবতান্প। বিষ্ণুলোকে মহাভোগান্ ভুঞ্জানাতে সবৈ ফবাঃ। বিষ্ণুধ্যোতিরে। অন্নদন্ত প্রমাগোতি স্বর্গলোকণ গচ্ছতি। দত্তা চ সন্থি ভাগায় তথৈবান্নমতন্ত্রিতঃ। ত্রৈলে:কে) তর্পিতে পুণ্যং তৎক্ষণাৎ সমবাপুয়াৎ।।৬৬। অক্ষর)মন্নপানঞ্পিত্ভ)শেচাপতিউতে। ওদনংব্যঞ্নোপেতৎ দল্। স্বর্গ ম্বাপুরাং । পরমান্নং তথা দত্ত্ব। তৃপ্তিমাপে তি শাশতীং । বিষ্ণুলোকমবাপোতি কুলমুদ্ধরতে তথা। ঘৃতৌদন প্রদানেন দীর্ঘমায়ুববাপ য়াৎ। দধ্যোদন প্রদানেন প্রিয়মাগোত্যনু-ख्याः। कीः तोननश्रमात्मन मीर्चली वच्याश्रमः । इक्काक श्रमात्म श्रदः मोडागा মুতে। রত্ননাঞ্চৈব ভাগী স্বাং স্বর্গলোক্ত গড়তি। ফাণিতস্য প্রদানেন অর্বাধানফলং লভেং। তথা গুড়প্রদানেন কামিতাভীটনাপুরাৎ ।। ৬१।1 নিবেদ্যেক্রসং ভক্ত্যা পরং সৌভাগ্যমাপুষাং। সর্বান্কামানবাল্পৈতি ক্ষেত্রং যশ্চ প্রযক্ষতি। তদেব ত্রিনোপেতৎ রাজ্যুরমবাপ য়াৎ । বহ্নিকৌমনবাগোতি যাবকস্য নিবেদকঃ। অতিরংত্রমবা প্র'তি তথা পূপনিংবদকঃ ।। ৬৮ ।। নাঞ্ভক্ষ্যাণাৎ দানাৎ কামানকাপু্য়াৎ । দীৰ্ঘজীবিভ্যাপ্ৰোভি ঘৃতপূর্নিবে-एकः। त्यापकानार अनातन कानात्भाष्ठाञीभ्भिष्ठान् ।। ७৯ ।। नानादिश्वार ভক্ষাণাং দানাংম্বর্ষাধ। ভোজনীয় প্রদানেন তৃপ্তিমাপোতানুভ্মাং।१।।। তথা লেষ্য প্রদানেন সৌভাগ্যমধিগচ্ছতি। বলবর্ণমবা<sup>থো</sup>তি চ্যাণাঞ্চ নিবে-मत्त ।। १८ ।। कून्। रियोली निकामां ठा बङ्गा (४३९ कन ९ न ७० । ज्या इयद-मान्न व क्रुक्तिज्ञजवाश्रुषां ।।१२।। धानानाः क्लिज्युक्तानाः वाकानाः निवहकः। মুখ্য নাঞ্চিব শাসূনাং বহিন্টোমমবাপু য়াহ।। ৭৩ ।। বানপ্রসাশ্রিভং পুণ্ড লভে-

সম্যক্ বিভাগোদেবানাং যজ্ঞভাগো যত্মাৎ স সংবিভাগোবিদ্ধু স্থামে॥ ৬৬॥ অভীপ্সিতান কামান্ বাঞ্ছিতানি প্রাপ্রোতী তার্থঃ। পাঠান্তরে কামিতং অভীইফ বাঞ্ছাতীতং॥ ৬।॥ পূর্বং
ইক্ষুণামিতিইক্ষু দণ্ডানাং অধুনা ইক্ষুণাং রসমিতি ভেদঃ॥ ৬৮॥ বৈদলানাং মুদাচণকাদিসূপানাং॥ ৬৯॥ দলৈরবর গ্রাবেখণ্ডা যানি ভক্ষান্তে হপুপাদীনি তানি ভক্ষা বি! ভোজনীয়ং
ভোজ্যং॥ ৭০॥ যথ কেবসং কিহ্বয়া বিলোডা নিগীষ্যতে পায়সাদি মচ্চ কিহ্বায়াং নিক্ষিপ্য
রসাস্বাদেন নিগীষ্যতে দ্বীভূতং গুড়াদি তল্লেহং। যানি দংকুণভি নিজ্পীডা সারাংশং নিগীব্যাব্যাক্ত ভাষ্যতে মথেক্ষুদণ্ডাদীনি তানি চূ্যাবি॥ ৭১॥ কুল্ম্বাঃ কিঞ্চিৎ স্বিন্নমাষাঃ
উল্লাদিকা লপসীতি প্রাসদ্ধা॥ ৭২॥ ধান্যানাং ভূইযবানাং॥ ৭৩॥ হরিতকং হরিত্বকং

চ্ছাকনিবেদকঃ। দত্ত্ব। ছবিতকং চৈব তদেব ফলমাধুয়াৎ।। १৪।। দত্ব। শাকানি ব্যানি বিশোকস্থতিজায়তে। দত্ত্ব। চ ব্যঞ্জনার্থায় তথোপকরণনৈ চ। সুকুলে লভতে জন্ম কন্দমূলনিবেদকঃ। নীলোৎপলবিদারীণাৎ তরুটস্য তথা দ্বিজাঃ। কন্দ্রনাদবাঞ্জিতি বানপ্রস্থকাং শুভং। ত্রপুষের্বারুকং দত্ত্ব। পুগুরীকফলং লভেং। কর্কস্বদরে দত্ত্ব। তথা পারৈবতং ফলং। পর্যাকস্থাযুক্ষ পনস্থ নারিকেলকং। ভবাং মোচন্তথা চোচং থজু ব্যথ দাভ্যিং। আয়াতকস্বায়োট ফলমানপিয়ালকং। জয়ু বিল্বামলক্ষৈব জাত্যং বীণাতকন্ত্রথা। নারঙ্গবীজপুরে চ বাজফন্ত ফলান্যপি। পথ। ত্রমাদীনি দিব্যানি যঃ ফলানি প্রযুক্তি । তথা কন্দানি মুখ্যানি দেবদেবায় ভক্তিওঃ। ক্রিয়া সাফল্যমাগোভি স্বর্গলোকন্ত্রথিব চ। প্রাপ্রোতি ফলমারোগ্যং মুদ্বীকানাং নিবেদকঃ। বসান্ মুখ্যানবার্গেভি দৌভাগ্যমপি চোভ্রমং। আয়ুক্তিভাগি দেবেশ্যমন্থ্রমন্থ্যকাভ্যুবস্থা চ। যজপক্ষপি প্রাহ্যং কদলীফল মুন্ত্রাং। হরিভক্তিসুধোদয়ে চ। যথকিজিদপ্তং নৈবেদ্যুৎ ভক্তভক্তিরসপ্লুঙ্গ। প্রভিভিত্তিকী পানকানু ভ্রমানি চ। সুগন্ধি শাতলং স্বন্ধং দ্বত্ব। বিহাতি গাণু দিচিত্রাণি পানকানু ভ্রমানি চ। সুগন্ধি শাতলং স্বন্ধং দ্বত্ব। স্বাপ্রথির ভতঃ । প্রাণ্টি দিচিত্রাণি পানকানু ভ্রমানি চ। সুগন্ধি শাতলং স্বন্ধং দ্বত্ব। স্বাপ্রথির ভতঃ । প্রাণ্টি দিচিত্রাণি পানকানু ভ্রমানি চ। সুগন্ধি শাতলং স্বন্ধং দ্বত্ব। স্বাপ্রথির ভতঃ । প্রাণ্টি চিত্রাণি পানকানু ভ্রমানি চ। সুগন্ধি শাতলং স্বন্ধং দ্বত্ব। স্বাপ্রথির ভতঃ । প্রাণ্টি বিহিত্রাণি পানকানু ভ্রমানি চ। সুগন্ধি শাতলং স্বন্ধং দ্বত্ব। স্বাপ্রথির ভতঃ । প্রথানি চান্তিকানি পানকানু ভ্রমানি চ। সুগন্ধি শাতলং স্বন্ধ্যা স্বাপ্রথির ভতঃ । প্রথানি চান্তিকানি পানকানু ভ্রমানি চ। সুগন্ধি শাতলং স্বন্ধং দ্বত্ব। স্বাপ্রথির ভতঃ । প্রথানি চান্তিকানি পানকানু ভ্রমানি চ। সুগন্ধি শাতলং স্বন্ধ্য দ্বন্ধানি স্বাপ্রথির ভারত । প্রথানি স্বান্ধানি স

অথ পানকানি ভুৱাহাত্মঞ্চ। বিষ্ণুধ্মে ভিরে। পানকানি সুগন্ধীনি শীত-লানি বিশেষভঃ। নিবেদ্য দেবদেবায় বাজিমেধমনাধুয়াই । ত্বগেলানাগকুসুম কপূরিসিভসংমুতৈঃ। সিভাক্ষেতিগুড়োপেতৈগিন্ধবিভগেতিঃ। বীজপূরক নারস্ব সহকার সমন্বিতিঃ।রাজসূয়মবাঝোতি পালকৈবিনিবেদিতৈঃ।। ৭৮ ।। নিবেদ্য নারিকেলায়ু বহ্নিকৌমফলংলভেই। স্ক্রকামহানদ্যে নিভ্যং যত্র সনো-র্মাঃ। তত্রপানপ্রদাযান্তি যত্র রামা জ্গান্তি। ইতি ।। ১৯ ৷৷ ইথং সম্প্রিকিবেদ্যং দত্য জ্বনিকান্ততঃ। বহিভূর যথাশক্তি জপং স্থানমাচরেই।। ৮০ ৷৷

সিতং দধিবীজপূবকাদিফলরসনিশ্মিতমিভার্থঃ॥ ৭৮॥ নিতামিতাদেন শ্রীবৈকুঠয়োকমভি প্রৈতি ॥ ৭৯॥ জবনিকাণ্ডিরস্করণীং ॥ ৮০॥

শাকং শাকবিশেষয়া ॥ ৭৪ ॥ তরুটং পদ্মবীজং তদ্য কন্দোবিদং। তাপুষং স্থানং ইবোককং কর্ক টীফলং। বদরং ক্ষুদ্রবদরং। পারৈবতং তিন্দুকারুতি ফলং পকুং সন্ধারলণোকতং মধ্রামঞ্চ কামরূপদেশে প্রসিদ্ধং। ভব্যং কর্ম্মরুফকলং। মোচং কদলীফলং। চোচং কাশীরদেশাদ্ধরং গুড়স্বচফলং নারিকেলফলবিশেষয়া। শুবা কাঠাল ইতি প্রসিদ্ধা। অম্যেটঃ সাজলীতি প্রসিদ্ধা। ফলমানং বীজপুরভেদং। জাত্যংজাতীফলং। বাগাতকং খওওজং ইতি দেবা গুণটাকঃয়াও লিখিতং। বাজকলং ক্ষীরিকা ফল্কুফলানি গোঠো ভুষরিকা ফলানি ॥ ৭৫ ॥ মৃদ্ধীকা দ্বালা। কুল্লীফলং কারভতীতি প্রসিদ্ধং। প্রাচীনামলকং পাণিপাবেতি প্রসিদ্ধং॥ ৭৬॥ তন্তঃ নৈবেদ্যাপ্রানম্বরং। প্রাথদিতি নৈবেদ্যাপ্রবং ইত্যর্থং। বিচিত্রাণি বিবিধানি॥ ৭৭॥

প্যানগোজং। ব্রক্ষেশাদৈঃ পরি ভশ্ব ষিভিঃ সূপবিষ্টিঃ সমেতোলক্ষ্যা শিপ্তাদ্বর কর্যা সাদরং বীজ্যমানঃ। নম্ম ক্রীড় প্রহসিতম্থোছাসয়ন্ পংক্তিভোজুন্ ভুত্তে পাত্রে কনক্বটিতে ষ্ডুসং শ্রীরমেশঃ ইতি । একারিভিশ্চাত্মকৃতং সব্যস্প্র গোকুলে । যশোদালাল্যমানস্য ধ্যেয়ৎ কৃষ্ণস্য ভোজনং।

অথহে:মং।। নিত্যংচাবশ্যকৎ হোমং ক্র্যাৎ শক্তানুসারতঃ। হোমাশক্তোত কুর্ববিত অপত্যা চতুর্ত্ত গং ।। ৮১ ।। কেপ্যেবং মন্ত্রতেইবশ্যৎ নিত্যহোমং সদাচরেও। পুরশ্চরণহোমস্যাশক্তো হি স বিধির্মতঃ। পূর্দাং দীক্ষাবিধে লোম-বিধিশ্চ লিখিতঃ কিয়ান্ । তদিস্তারশ্চ বিজ্ঞেয়স্তভুচ্ছাস্ত্রান্তদি প্রিভিঃ ।। ৮২ ।। সমাপ্তিং ভোজনে ধ্যাত্বা দন্ত্বাগাণ্ড্রিকং জলং। অ্যতাপিধান্যমি স্থাহেত্যুক্তা-রয়েও স্থাঃ। বিস্জেদেববক্তে তত্তেজঃ সংহারমুদ্রা। নৈকাতা তেজসঃ কুণ্যানি-ক্রিরিব সৎ ক্রমং।। ৮০ ।।

অথ বলিদানং । ততোজবনিকাং বিদ্যানপসার্য্য যথাবিধি । বিষ্ক্দেনার ভগবদৈশেলাংশ নিবেদয়ে । তথাচ পঞ্জরাত্র শ্রীলারদবচন । বিষ্ক্দেনার দাতবাৎ নৈবেদ্যং ভড়তাৎশকং । পাদোদকং প্রনাদক্ষ লিজে চণ্ডেশ্বরার চাটের। তরিধিশেচাক্তঃ । নুখাদীশানতঃ পাত্রালৈবেদ্যংশং সমুদ্ধরেং । সর্বাদেবস্থার পরায় পরায় পরায় জিনে । শ্রীকৃষ্ণসেবাযুক্তার বিষ্কৃত্সনার তে নমঃ। ইত্যুক্তা শীহরেব্রানে তীর্থক্লিনং সমর্পয়েং । শতাংশং বা সহস্যুংশ মনাথা নিজ্ফলং ভবেং । ৮৫।। পশ্চান্ত বলিরিত্যাদিশ্রোকাবুচার্য্য বৈষ্ক্রঃ। সর্বোভ্যা বৈষ্ক্রেণ্ডা বিলিবেদয়েং । তৌচ শ্রোকৌ । বলিবিভাষণোভীয়ঃ কিশলোনারদোইজুনঃ । প্রজ্ঞাদেশাস্থানিক বসুব্যায়সুতঃ শিবঃ । বিশ্বন্ত্রাং সনকাদ্যাং শুকাদয়ঃ । শ্রীকৃষ্ণস্য প্রসাদোরং সর্বে গৃহস্ত

শক্ত্যামুসারতইতিশক্তৌঅফোজ্বংসহসুমশক্তৌ চ শতমিতিজ্ঞেয়ং।তস্য হোমগ্য । ৮১। কিং মন্যন্তেতলিখিতিঅবশ্যমিত্যাদিনা পুরশ্চরণে কর্মণি ঘোষোমস্তশ্মিলশক্তাবিব।স জপচত্তও গ্রোম্ম করণ ৰূপোবিধিঃ।। ৮২।। তুম্তাপিধানমসীতি জলগগুদং দত্ত্বেত জ্ঞেয়ং।। ৮৩।।

তৎ নৈবেদ্যগ্রহণায় বিনিগতিং যথ। শতংশকমিতি নৈবেদ্যস্য শতংশানামেকমংশ মিতার্থঃ। এবং সহসাং শমপি। লিঙ্গে চেৎ শ্রীশিবপূজা ক্রিয়েত তদা চণ্ডেশ্বরায় তদ্ধংগ্রাদ্কার তলৈবেদ্যাদিকং দাতব্যমিত,র্থঃ। এতচ্চ দৃষ্টান্তত্বেনাদাহরণং জ্রেং। ৮৪। ঈশানত ইতি ঈশানকোণে মণ্ডলিকাং কৃত্বা স্থাপিতত্বাং। তীর্ঘং শ্রীচরণোদকং তেন ক্রিমং আর্দ্ধং। ৮৫।। কিঞ্চ পশ্চাচেতি তদ্য নৈবেদ্যম্য শতংশং শতাংশানামেকাংশং সর্বেভ্যোবৈষ্ণবেদ্যোদ্দিন্ত্যবং বিকশ্প্ত

বৈষ্ণবাঃ 11 ৮৬ 11 ইদং যাদ্যপি যুজ্যেত দর্পণার্পতঃ পরং। তথাপি ভত্ত-বাংনল্যাং ক্লফস্যাত্রাপি সম্ভবেং 11 ৮१ 11

অথ বলিদানমাহাত্মাং । নারসিংহে । ততন্ত দরশেষেণ পার্দদভাঃ সম-ততঃ । পুজ্পাক্ষতৈর্বিমিশ্রেণ ধলিৎ যন্ত প্রয়েচ্তি । বলিনা বৈষ্ণবেনাথ তৃপ্তাঃ সন্তো দিবৌকসঃ। শান্তিং তস্য প্রয়াচ্ন্তি শ্রিয়মারোগ্যমেব চ । । ৮৮ ।।

অথ জলগণ্ডুবাদ্যপ্নং। উপলিপ্য ততোভূমিং পুনর্গাণ্ড্রিকং জলং। দদ্যাৎ
ক্রিয়েরে ক্ষান্য ততোহনৈ দন্তশে ধনং। প্নরাচমনং দল্প প্রীপাণ্যাঃ প্রীমুখন চ।
নার্জ্রনায়াংশুকং দল্পা সর্কাণ্যজানি নার্জ্রেরেং। পরিবাপ্যাপরে বস্ত্রে পুনর্দ্ত্বাসনান্তরং। পাদ্যমাচমনীয়ক পূর্ববং প্নরপ্রেং। চন্দনাগুরুচূর্ণাদি প্রদদ্যাৎ
করমার্জ্রনং। কপ্রাদ্যাস্যবাসক তায়ুলংতুলসীমপি।। অথ মুখবাসাদিমাহাত্মাং।
বিক্পম্যোত্তরত্তীয়কাণ্ডে। পূগজাতীফ'ল দল্প জাতীপত্রতথেব চ। লবক্ষকা
ককোলমেলাক টক্লন্তথা। তাল্লী নাং কিশল্যং স্বর্গং লোকমবাপুরাং। সৌভাগ্য
মন্ত্রণং লোক তথা লপ্যনুত্রমং। ক্রান্দে। তাল্লুল্ফ সকপূর্ণ সপূর্ণং নরনায়ক।
ক্ষার্থচ্তি প্রাত্যা তন্য প্রটোহরিঃ সদা।। ৮৯।।

অথ পুনর্গস্থার্পনং । দিবাং গন্ধং পুনর্দত্ত্ব: যথেকীমনুলেপনৈঃ । দিবৈ ক্রিচিট্রেঃ এক্ষণং ভক্তিচ্ছেদেন লেপয়েৎ। রম্যাণি চোর্ছ্বপুণুণি সন্বর্ণন যথাস্পদৎ । সুগন্ধি-

কেচিদিক্তন্তি তচ্চাযুক্তমিব অবশ্যং বিষক্ষোনায় দেয়ত্বাৎ ॥ ৮৬॥ ইদং বৈষ্ণবেভ্যোবিলিদানং। দর্পণিস্য অর্থাণ অগ্রেলেখ্যং ভগবতে নিবেদনং তত্মাৎ প্রমনন্তর্মেব যুক্ষ্যেত।
ক্ষরতাচ্যনশ্যোক্তিউহন্তস্য শ্রীভগবতোনিবিউত্তাৎ অত্র অধ্যিন্ সময়েপি ভক্তবাংসলা।২
সম্ভবেৎ অন্যুণা তত্তিকিস্যাত্যস্তপরিভাগগেন তসৈ্বাসন্তোধোৎপত্তেরিতি দিক্ ॥ ৮৭ ॥

বৈকংৰেন বিক্ষার জ্বানা। ততুচ্ছিকীমহাপ্রাদালেন দওত্বাং দিবৌকসঃ পার্যদাএর যদ্ধা ২ন্যাপিদেবাঃ ॥ ৮৮ ॥

ভূমিদুপলিপ্যেত তদ্বদ পি সদাচারাল্যশারে। শ্রীহস্তাদিমার্জনানস্বমেবোপযুজাতে তথাপি ক্রমদীপিকোক্তাপেক্ষয়াত্র লিখিতং। গাণ্ডুবিকং গ্রুষার্থং জলং ক্রস্যাত্রে প্রতঃ ভগবন্নাচামেতিক্রবন্ বারত্রাং দদ্যাং। তদনস্বরং অস্মৈ ক্র্যায় দন্তশোধনং সূক্ষাভূণবিশেষা- থাদিকং দদ্যাং। আচমনমিতি আচমনার্থং বারিধারাত্রাং প্রদক্ত্রেতি জ্রেং। কর্স্য মার্জনং শোধনং গঙ্গাপন্যনকর্মিত্যর্থঃ। আস্যবাসং মুখবাসং কপ্রলবঙ্গাদি। তুলসীমপি দদ্যাদিতি ভোজনানন্তরং বিফোরপিতং তুলসীদল্মিত্যগ্রতোলেখ্য ত্রাহাত্মপ্রতিপাদকপঞ্রাত্র বচ নাং॥৮৯॥

যথেউং ভগবতঃ স্বস্য বা রুচাস্প্রসারেণ ভক্তিচ্চেদঃ পত্রভক্সাদিনিশ্বাণপ্রকারবিশেষ-স্থেন পূর্বং ভ্ষণানন্তরং গল্পাপণং লিখিতং ভোজনাৎ প্রাগস্বালপন্য্যাপেলাতঃ ইদানীপ্র সর্বাঙ্গলেপনার বাহুল্যাপেক্ষয়া ভূষণপরিধানাৎ প্রথমমের যুক্তমিতি দিক্। সন্ধর্ণ- নানুলেপেন রুফস্য রচয়েন্তরাং । তথাচাগমে ধ্যানপ্রান্তে । ললাটে হৃদয়ে কুফো কতে বাজোশ্চ পার্ময়োঃ । বিরাজভোর্দ্পপুণ্ডুণ সৌবর্ণেন বিভূষিভিনিতি ।। ৯০ ।। দিব্যানি কগ্লুকোফীয়কাঞ্চাদীনি পরাণ্যপি । বস্ত্রাণি সুবিচিত্রাণি জ্রিফং পরি-ধাপয়েং । ততোদিব্যকিরীটাদি ভূষগানি যথাক্রচি । বিচিত্রদিব্যমাল্যানি পরি-ধাপ্য বিভূষয়েং ।। ৯১ ।।

অথ মহারাজোপচারাপনং । ততক চামরচ্ছ্ত্রপাদুকাদীন্ পরানপি।
মহারাজোপচারাং ক দল্পাদ্ধং প্রদর্শহে ।। ৯২ ।। বিষয়ুধর্মান্তরে । যথাদেশং
যথাকালং রাজলিঙ্গং সুরালয়ে । দল্পা তবতি রাজৈব নাত্র কার্য্যা বিচারণা ।। তত্র
চামরমাহাল্যাং । তথা চামরদানেন শ্রীমান্ তবতি ভূতলে । মুচ্যতে চতথা পাপেঃ
যর্গলোকঞ্চ গচ্ছে ।। ছপ্রস্য তত্রৈব । ছত্রং বহুশলাকঞ্চ ঝল্পরীবন্ত্রসংযুতং ।
বিব্যবস্ত্রেশ্ব সংযুক্তং হেমদপ্রসমন্তিং । যং প্রয়ন্ততি হুক্ষণ্য ছত্রকক্ষুইতর্ক্তং ।
প্রার্থ্যতে সোহমারেং সন্ধিং ক্রীড়তে পিতৃতিং সহ ।। তত্রৈরান্ত্র ।। রাজা তবতি
লোকেইন্মিন্ ছত্রং দল্পা বিল্লোভ্রমাং । নাপ্রোতি রিপুজং দুংখং সংগ্রামে রিপুজিদ্ববেং ।। ৯৩ ।। উপান্ধ সংপ্রদানেন বিমানম্বিরোহতি । যথেন্তং তেন লোকে যু
বিচরত্যনর প্রভঃ । ১৯ ।। উপান্ধ সংপ্রদানেন বিমানম্বিরোহতি । যথেন্তং পোত্শতাকাভিনির্বেণ্য গরুড়পুলং । কেশ্যার বিজ্লপ্রায়ং সর্লোকে মহায়তইতি । হৎ প্রসাদে
পুজারোপসাহাল্ল্যং লিখিতং পুরা । তদ্বাপ্রধিলং জ্রেয়ং ত্ত্রত্যমিদন্ত্রা।
কিন্ধ ।। ভবিষ্যে বিল্লোপুজি তু নৌর্বহ্ল ক্র্য্যান্তিচক্ষণ্য । পাতকাচাপি পাতা
স্যাহ গরুড্স্য সমাপ্রা।। ব্যলন্সা। বিষ্ণুধ্মৌন্তরে । তালব্রপ্রদানেন নির্ভিং

নৈতি শ্রীশ্যামস্থন্দরোপযুক্তপীতাগ্রন্তমবঁণেনেত্যর্থঃ। যথাস্পদমিতি ললাটাদিস্থানেস্থিতার্থঃ। এতচাগ্রেএব ব্যক্তণ । রচয়েন্তরাং পরমেংক্রেউপ্রকারেশ বিরচ্যেদিতার্থঃ। সর্বাঙ্গান্তলেপনেহপি শোভাবিশেষার্থং ক্রদয়াদিস্থানে উদ্ধপু এবিরচনমিতি জ্বেয়ং ॥ ৯০॥ সৌবণেন শোভন-বর্ণবতেতার্থঃ। যদ্যপ্রেতং পুনর্গস্থাদ্যপণেন পুজনং গীতবাদ্যানস্তরমেব তাস্ত্রিকাগাং দশ্মতং। তথাচ ক্রমদীপিকায়াৎ । তামুলমপ্যভিশমর্প্য স্থবাদ্যগাতিং স্তৃপ্তমভিপুজয়ভাও পুরৈব। গঙ্গাদিভঃ সপরিবার মিতি । তথাপি গাতত্ত্যাদার্থং দিব্যাস্থলেপ বস্ত্রালঙ্করণা দিনা মহারাজবিভূতিভিত বিশিষ্টিশ্যেব সভায়ামাগমন লোকিকব্যবহান্থগারেণ সমুপযুক্তং শক্ত্রোচ সত্যাং পুনরপি গক্ষাদিনা পূজ্যেদিভিচাথে লেখ্যনেধ্তি দিক্। ৯১॥

চামরাদীন্ উপচারান্ পরাননাান্ ধ্রূপতাকাদীন্। আদশং দর্পণং ॥ ৯২ ॥ কলরীংস্ত্রং দূচিকর্মাদিবিনির্মিতবিলয়মানাক্ষবিশেষস্তদ্মুক্তং ॥ ৯৩ ॥ পাছকায়ামাহাত্মাঞ্চ পূর্বং শ্রীমুখপ্রকালনানস্থং তৎসমর্গণে লিখিতমেবান্তি ॥ ৯৪ ॥ ধ্রুভূতঃ সর্বশ্রেষ্ঠইত্যর্থঃ। গরুড়ধ্রুং
গরুড়াকারধ্রুং । কৃতিম্গরুড়যুক্তংবা ধ্রুং। ত্যাহাত্মাং। তত্র ধ্রাপ্ণেইপি সর্বং জ্রেয়ং।

প্রাপুরাং প্রাং। বিভানস্য। তত্তিব। বিভানকপ্রদানেন সর্বপাসেঃ প্রমুচ্যতে। পরাং নিব্তিমাপ্রোতি যত্র যত্রাভিজায়তে।। ৯৫।। খড্গদীনাং। দজা নিস্তিংশ-কান্ মুখ্যান্ শত্ৰ ভিনাভিভূরতে। দত্বা তদ্ধনং মুখ্যমর াধেয়ফলং লভেৎ ।।৯৬।। किथा। भजना हर जथा पद्या रहज समुज्जि नाया । भाषभी देश पातन सान सक्त বিন্দতি। দৰ্পন্স্য প্ৰদানেন ৰূপবান্ দৰ্পবান্ ভবেং। মাজ্জ য়িত্বা তথা তঞ্সুভগ-স্থৃভিজায়তে। ৯৭। যৎকিঞ্চিদ্দেবদেবায় দদ্যাডুক্তিসমস্থিতঃ। তদেবাক্ষয়মাপ্নেতি ষর্গলোকং স গচ্ছতি।। কিঞ্চ ।। বামনপুরাণে শ্রীবলিৎপ্রতি শ্রীপ্রজাদোক্তৌ। व्यक्षारेनर्जिक्षरेत्रयां मूं क्रिमा क्रमार्कन । विलितानानि मोग्रस्ट क्रक्रशानि विषू-বুধাল 11 ৯৮ 11 অতাপি কেচিদিছন্তি দত্য পুস্পাঞ্জলিত্য় । পূর্বোক্তা দশ শংখাদ্যা মুদ্রাঃ সংদর্শয়েদিতি ৷৷ ১১ ৷৷ অথ গতিবাদ্যন্ত্যানি ৷ ততাবিচিক্তৈ र्लिलिए कार्तिष्टका स्वर्क्षणः । गीरिङ्गिष्ण नृरिङ्ग श्रीकृष्णः निर्दिष्णिय-য়েং।। ১০০।। অথ তত্ৰ নিষিদ্ধং। নৃত্যাদি কুৰ্বতো ক্ত লোপবিটো ইবলোক-য়েং। নচ ভিষ্যগ্র জেভত তৈঃ সহান্তরয়ন্ প্রভুং।। ১০১।। তথাচোক্তং। নৃত্যভং देवक्षवः हर्यामानी **নোযন্ত পশ্যতি। খঞ্জো**ভবতি রাজেন্দু সোহয়ৎ জনানি জন্মনি ।১০২১ কিঞ্চা নৃত্যতাৎ গায়তাৎ মধ্যে ভজ্জানাং কেশবস্য চ। তান্তে যভিরোঘাতি তির্যাগ্যোনং স গচ্ছতি ॥১.৩॥ অথগীতাদিমাছাত্মাদৌ সামান্তঃ নারসিংহে। গীতবাদ্যাদিকং নাট্যং শস্থাতূর্য্যাদিনিস্থনং। যঃ কারয়তি বিষ্ণেপ্ত সন্ধ্যায়াং মন্দিরে নরঃ। সর্বকালে বিশেষণ কামগঃ কামৰপবান্।। ১০৪।। সুসংগীতবিদথৈক সেব।মানো>প্দরোগণৈঃ। মহার্হেণ বিমানেন বিচেত্রেণ বিরাজভা। স্বর্গাৎস্বর্গমনু প্রাপ্য বিষ্ণুলোকে মহীয়তে।। ১০৫।। কান্দে বিষ্ণুনারদসয়াদে। গীতং বাদ্যঞ্জ নৃত্যঞ

তথা অত্তাং ধুজার্পণসম্বাদ্ধি ইদং লিখিতঞ্চ মাহান্তাং তত্ত মুজারোপণে জ্রেং। দ্বাং সামান্দিতার্থঃ। ৯৫॥ মুখ্যান্ শ্রেণান্ । তেবাং বস্তানং কোনং ।। ৯৬।। তং দর্পণং মার্জ্জারিরা নির্মাণীক্রতা।। ৯৭॥ এবং বিবিধং সকামস্যাবান্তরকলং লিখিত্বা মুখ্যকলং লিখিত শ্রদ্ধানৈরিত। দানানি দেয়ানি অক্ষয়াণি অক্ষয়াক শানি শ্রীবৈকুঠলোকপ্রাপকার্ণীত্যর্থঃ॥৯৮। অত্ত অস্মিন্ সময়েইপি ॥ ৯৯॥ লালিতৈর্মনাহবৈঃ কারিতৈর্নজ্বক্য দিদ্বারা। স্থামের কৃত্তির্বা।। ১০০॥ উপবিষ্ণঃ সন্নাবলোক্ষেৎ তক্ত স্বত্যাদৌ তেবাং ভগবতক মধ্যে তিয়াধু জনেনাজ্যাদনাক্তঃ সহ প্রভুং ভগবতং অন্তর্মন্ বিজেদয়ন্ ন তির্যাধু কেটেতার্থঃ ॥ ১০১॥ হর্ষাৎ প্রেমানন্দেন স্বত্যন্তং। থঞ্জঃ শতংকাণে চ বঞ্জেটেতি ন্যায়েনাসংখ্যদোষভূটো ভবতীত্যর্থঃ ॥ ১০২॥ তান্ স্বত্যাদারিদ্ধান্ কতে বিনা ভেষাং স্বত্যাদিপরত্য়। তদ্দোবানাপজ্যেঃ ॥ ১০৩॥ কারয়তীতি স্বার্থে ইন্। অন্যানিপি কারয়তীতি বা॥ ১০৪॥ স্বর্গাৎ স্বর্গাহি বিলম্বর্গাহ ভৌমন্বর্গং ভতামহলোকাদিকং ব্রজন্ ক্রমেণ তত্র তত্ত্র স্বেজ্যা অ্থভাগান্ ভজ্বত্যর্থঃ। ১০৫। নাট্যসভিনম্নানি। যন্তা দেশীয়মার্গ্ভিদেন নাট্যস্ত্যায়াভ্রদান । এবমগ্রেপি

নাটাং বিষণুক্থাং মুনে। যা করোতি স পুণ্যাত্মা তৈলোক্যোপরিসৎস্থিতঃ।১০৬। বৃহমারদীয়ে শ্রীযমভগীরথসন্থাদে। দেবতায়তনে যন্ত ভক্তিযুক্তঃ প্রনৃত্যতি। গাতানি গায়ত থ বা তং ফল । শূণু ভূপতে । গন্ধরাজতাং গানৈনৃতিপক্তে দ্রাত্তি শতাং। প্রাণোত্যইকুলৈযু ক্তন্ত ভঃ স্যানোকভাগ্নরঃ।। ১০৭।। লৈঙ্গে শ্রীমার্ক-প্রেয়ায়রীষসমাদে। বিষ্ণুক্ষেত্রে তু যোবিদ্বান্ কারয়েড্রক্তিসংযুতঃ । গানন্ত্যাদিক-ক্ষৈব বিষ্ণাখ্যাঞ্চ কথান্তথা। জাতিং সমৃতিঞ্চ মেধাঞ্চতবৈৰ প্রমাং হিতিং। প্রাধ্বেতি বিষ্ণু গলোক্য প্রত্যমতম্বাধিপ । অন্যত্রচ জীভগবদুক্তৌ ৷ বিস্ভ্য লক্ষাং যোহধীতে গায়তে নৃত্যতেহিপি চ । কুলকোটিসমাযুক্তে। লভতে মামকং পদ্।। ১০৮।। ভতএবোক্তং। ভারতে নৃত্যগীতে তুকুর্য্যাৎ স্বাভাবিকেপি ব। স্বাভাবিকেন ভগবান্ প্রীণাতীত্যাহ শৌনকঃ ॥ ১০৯॥ অতএব নারদায়ে। বিক্ষোগতিঞ্নৃত্যঞ্নটনঞ্বিশেষতঃ। ব্ৰহ্মন্ ব্ৰাহ্মণজাতীনাং কর্ত্ব্যং নিত্য-কর্মবং।।১১০।। কিন্তু ফাভৌ ।। গীতন্ত্যানি কুকতি দ্বিদ্দেবাদিভ্উয়ে। ন জীবনায় যুঞ্জীত বিপ্রঃ প পভিয়া কৃতি ৷ ইতি ৷৷ এবং কৃষ্ণপ্রাণনতা দাতি দেনি-তাতা भरतो। मर्शनिकेत्वित्यायन एक्सा मा इतिवागरत ॥ ১১১ ॥ **७था**रहाङ्यः। কেশবাগ্রেন্ত্রগাতং ন করোভি হরের্দিনে 1 বহ্নিনা কিং ন দক্ষোহসৌ গতঃ কিং ন রুদাতলং ।। ১১১২ ।। তথ বিশেষতো গীতস্য দারকামাহাত্মো। জীমার্কণ্ডে (यन्तुमुन्युमभारतः। क्रकः भरतायरयन्त्र मुनोटेक्स्यूत्रस्रोनः । नदार्वन्यनः ७२७ জায়তে নাত্র সংশারঃ ।। ১১৩ ।। স্কান্দে জীমহাদেবোক্তো । শ্রুতিকোটিনমং

ক্রৈলোক্যং ব্রন্ধলোকপর্যন্তং ততুপরি বৈকুণ্ঠলোকে সম্যক্ স্থিতে। ভবতি ॥ ১০৬॥ নাকঃ সংসারত্বংখালু ক্রিঃ। মোকঃ গতি শীভগবান্বা তং ভজতি প্রাপ্নোতীতি তথা সং। ১০৭। বিষ্ণাখ্যাং বৈষ্ণবীমিত্যর্থঃ। যদা বিষ্ণুনা সহ তৎকথয়া অভেদাতিপ্রায়েও বিষ্ণুখ্যানিত্যক্তং। যদা বিষ্ণোরাখ্যা নামমাত্রমপি যস্যাং তামপি। পর্মামিত্যন্য সর্কৈরেবাস্থয়ঃ। পর্মাণ জাতিং জন্মান্তরে ইবৈর বা সাধূনাং পূজান্ত্বেন স্থিতিং নিষ্ঠাং ভগবন্ত শ্বাদি ॥ ১০৮॥ ভারতে ভরতমুনিপ্রণীতে নিজস্বভাবনিক্ষেহপিরা সন্ধিরার্যঃ। স্বাভাবিকেনাপি স্ত্যাণীতেন ॥ ১৯৯॥ বিষ্ণোঃ কিষ্ণুর্থমিত্যর্থঃ। নটনং অভিনয়নং। যদা নাটমতি নর্ত্তরভাতি নটনং বাদ্যং॥ ১১০॥ ক্রিও কদাচিদপি জীবনায় নিজবৃত্ত্যর্থং ন যুঞ্জীত ন কুর্যাৎ। তত্র হেন্তঃ পাপান্তিয়া তথা সতি পাপং স্যাদিত্যর্থঃ॥ অধুনা গীতহত্যাদিনিত্যন্তং লিখতিএবমিতি। পরা পর্মা মহোৎস্বদিনেম্ব চাত্যন্তিনিত্যমের তদিতি লিখত্য বিশেষেণেতি॥ ১১১॥ হরেদিনে একাদশ্যাদারপি॥ ১১২॥ বেদানাং সামবেদোহস্মীতি ভগবদিভূতিন্তেন তস্য জৈছ্যাৎ স্বর্গানময়ন্ত্বেন ভগবন্তোমণাদ্বা

জাপ্যং জপকোটিসমৎ হবিঃ। হবিঃ কোটিসমৎ গেয়ং গেয়ং গেয়সমৎ বিদুঃ।১১৪। কাশীপণ্ডে বিষ্ণুদ্ভশিবশর্মসমাদে। যদি গীতং কৃচিদ্যীতং শ্রীমন্ধরিইরাক্ষিতং। মোকর তংকলং প্রান্থঃ সামিধানথবা তয়োঃ।। ১১৫।। বিষ্ণুধর্মে শ্রীভগবদুজৌ। রাগেণাক্ষয়তে চেতো গান্ধার্মাভিমুখং যদি । ময়ি বৃদ্ধিৎ সমাস্থায় গায়েশা মম নংকথাঃ।। ১১৬।। হরিভজিলুপোদয়ে। যোগায়তাশম্দিশং ভূবি ভজ উল্কেস্ দ্রাক্ সমস্তজনপাপভিদেহলমেকঃ । দীপেম্বংহ্মপি ননু প্রতিগেহমন্তর্ধান্তং কিমত্র বিলস্তামলে দুানাথে।। ১১৭।। যদানদকলং গায়ন্ ভক্তঃ পুণাশ্রু বর্ষতি। তংসর্বতিথিসলিল্যানং স্বমলাদোধনং।। ১১৮।। বারাহে। ব্রাহ্মাণাবাসুদেরার্থং গায়মানোহনিশং পারং। সমাক্ তালপ্রয়োগেণ সমিপাতেন বা পুনঃ। নববর্ষ-সম্পাণি নববর্ষশতানি চ। কুবেরভবনং গত্রা মোদতে বৈ মদ্চ্ছয়া। কুবেরভবনাভ্রুইং স্বচ্ছমগমনালয়ঃ। ফলমাপ্রেতি সুশ্রোণি মম কর্মপায়য়ণঃ।। ১১৯।। নারায়ণানাং বিধিনাগানং শ্রেষ্ঠতমং ক্ষুডং। গামেনারাধিতোবিষ্ণুঃ স্বকীর্দ্ধিজান বর্চান। দদাতি ভক্তঃ হানৎ স্বং যথাকো কৌশিকায় বৈ।। ১২০।। কিঞ্চা। এঘবোমুনিশাদ্র্লাঃ প্রোক্তো গীতক্রমোসুনেঃ। ব্রাহ্মণোবাসুদেরাখ্যং গায়-

প্রমিত্যর্থঃ।। ১১৪॥ মোক্ষ্যা ওচ্ছত্ত্বের পক্ষাস্তরমাহ সালিধ্যমিতি । তয়োঃ ঐহিরিহরয়োঃ া। ১১৫।। রাগেণ মল্লারাদিন।। যদা বিষয়প্রীত্যা যদ্যাক্রদাতে । ততক্ষ গান্ধর্বে।ভিমুখং গীতোং-স্থকং যদি স্যাৎ। যদ্বা গান্ধব্বাভিমুখং যদা স্যাৎ তদা ময়ি বুদ্ধিং সমাস্থায় মনোনিবেশ্য। यদা ইমাঃ কুঞ্স্য গাথা ইত্যেতাবন্ধাত্তং মনসি কুত্বা। সতীঃ উত্তমাঃ রাসক্রীড়াদ্যাশ্রয়াঃ কথাঃ। যদ্বা সময়ে সন্তঃ তেষাং কথা গায়েথাঃ । তেনৈবাথিলান্যরাগোইপ্যাস্তীতি ভাবঃ । যদা। প্রম ভাগ্যোদিতেন তেনৈৰ দৰ্বং সেৎস্যতীতি॥ ১১৬॥ দ্ৰাক্ সদ্যুত্ৰ সমস্তম্পনানাং সৰ্ব্বজীবানাং পাপস্য ভিদে নাশনায় একএব অলংসমর্থঃ। তদেবার্থ। ন্তরোপন্যামেন দ্রুটার দীপেদিতি।১১৭। আনন্দেন কলঃ মধুরাক্ষু টধনির্যথাস্যান্তথা গায়ন্ সন্ বৎপুণাৰূপং অঞ্জ প্রেমাঞ বর্ষতি।স্বানা-মপি মলশোধনং ॥ ১১৮॥ সামপাতেন বিবিধরাগাদিশমুচ্চায়েন । নতু কথং ভদ্য ভতো-হপিত্ৰংশঃ সন্তবেৎ। সতাং। স্বেচ্ছ হৈৰ পরিত্যজ্ঞান্যত গচ্ছতীত্যাহ। স্বচ্ছন্দেন গমনমালয়শ নিবাসস্থানং ঘ্স্য সঃ। নমু তহি কা গতিস্তাস্ স্যাপ্ততাই। মম কর্মপরায়ণঃ মদ্ভক্তিপরঃ সন্ ফলং তদমুৰূপং । যদ্বা প্রমফলত্বেন বিখ্যাতং এটবকুঠং । যদ্বা মংসেবাপরত্বং কলং প্রাপ্তে॥ ১১৯ ॥ সারায়ণানাং নারায়ণারাধনকর্মণাং। মদা নারং জীবসমূহঃ তদাশ্রয়-जुडानार कर्मानाश्मर्या हेडार्यः। क्यानमा वर्षः अजारायमारखन। यहा स्रमा कीर्छिकाना वर्षा-ভিঃ সহিতং ছলৈয়ক্যং। কৌশিকায়েত্যতা ভতৈবাখ্যায়িকেয়ং। কৌশিকনামা বিপ্লোভগব-দ্গীতপ্ৰভাবেণ সশিষ্য: সংসৰকোগীতশ্ৰোতৃভিঃ সহিতো **টে**ৰকুণ্ঠলোকং গভোভগৰতাৰছ সংমানিতইতি ॥ ১২০॥ এব ইত্যাদিসভোক্তি মুনেঃ ইনারদস্য গীতশিক্ষাক্রমঃ 🖫 তদাখ্যারি-কা চ তত্ত্বৈৰ প্ৰশিক্ষা যথা দাৱকায়াং ক্লক্মেণী শত্যভামাদেশাসীভ্যোহসে যত্নাদানবিদ্যামশি-

गोलोइनिमः প्रतः ॥ ১২५॥ इत्तः नालाकामाल्यां क्रान्यां नाधिकां छत्व । কর্মণা মনসা বাচা বাসুদেবপরায়ণঃ। গায়মৃত্যুংস্তমাক্ষোতি ভদ্মাদোয়ং পারৎ বিদুঃ ।। ১২২ ।। প্রথমস্কলে শ্রীনারদোক্তো । প্রগায়তঃ স্বর্নিই্যাণি তীর্থপাদঃ প্রিয়শ্রবাং। আভূতইব ম শাঘুৎ দর্শনং থাতি চেতসি।। ১২৩ ।। ছাদশক্ষে শ্রীশুকোকো। মৃষাগিদ্নস্থান্সতীব্ সংকথান কথ্যতে যদ্ভগনানধোক্তলঃ। তদেব भछा छमूरे व सकता छामव भूगा छगव दकाथा प्राप्त । छामव तसार क्रितर नव र নবং তদেব শাধন্মনসোমহোৎসবং। তদেব শোকার্ণবশোষণং নৃণাং যদুত্তসংশ্লাক यत्मान् गीय़ एछ। १२८।। विक्यू थर्मा खिता । पद्मा ह भी छ॰ भर्म छ। भक्क रिर्मः मह মোদতে। স্বয়ং গীতেন সংপূষ্য তিসৈরোনুচরোভবেং। পালে একিক সভ্যভামা-मम्मामीय कार्डिकमाञारका श्रीनात्रम्भृथ्ममारम् श्रीजगतमूरको । नाइर वनामि বৈকুঠেন যোগিহৃদয়ে রবৌ। মড়ক্তা যত্র গায়ন্তি তত্র ভিষ্ঠামি নারদ। তেষাং পূজাদিকং গন্ধপাদ্যাদ্যৈ ক্রিয়তে নরৈঃ। তেন প্রতিং পরাং যামিন তথা সং-প্রপূজনাং ।১২৫। অতএবোক্তং। কম্প্রেপিয়িকত্বেন ব্রাক্সণোন্ট্রতি স্তঃ।কারি-কার্যামতঃ প্রোক্তৎ বিপ্রোগীতৈরমেদিতিঃ।।১২৬।। অথ নৃত্যম্য দ্বারকামাখাত্মে; তত্রৈব।যোন্ত্যতি প্রস্থাত্মা ভাবৈর্দ্ধ সুভক্তিতঃ। স নির্দৃহতি পাপানি জনান্তর শতেষুপি 13২৭। হরিভক্তিসুধোদয়ে। বহুখোৎসার্য্যতে হর্ষাৎ বিষণুভক্তস্য নৃত্যতঃ। পদ্ধ্যাং ভূমের্দিশোহক্ষিভাং দোর্ভ্যাৎ বা মঞ্চলং দিবঃ 13২৮। বারাছে। মশ্চন্ত্যতি

ক্ষতেতি॥ ২২১॥ রুজাদিপ গানেন অধিকো বিশিষ্টো ভবেদিতি॥ ১২২॥ স্বস্য ভগবতোবীর্যাণি অন্ত ভবিতানি প্তনামোক্ষাদীনি। তীর্থং গঞ্চাদি পাদাৎ চরণাজ্ঞানিচাদকাং যস্য সঃ
ক্রিরুঞ্ঃ। কিঞ্চ প্রিয়ং শ্রবংকীর্ত্তির্যস্য সঃ। অত আহুতইব আদরেণ নিমন্ত্রিতইব। যদা বলাদারুষ্যানীত ইব। এবং পূর্বং চিন্তাদন্তর্হিতে ধ্যানাদিপ্রয়ত্ত্বন যোময়। পুনহ্ছ দি দ্রুট্ণং ন শক্তঃ সোমং
গানাৎ স্বয়মেব সদ্যঃ সাক্ষাদিব চিন্তে দৃশ্যতে ইতি ধ্যানাদিপি তদীর্যাগানস্য মাহাম্যং
ক্ষিতং। ১২৩॥ অসতীঃ অসত্যঃ ভুষ্টা ইত্যর্কঃ। মতঃ অসতামেব কথান্তাঃ। বং যাস্থ। কিং
তর্হি সত্যমুক্তমাদিকঞ্চ তদাহ উত্তমশ্লোকস্য প্রীরুক্ষন্য যশোস্থানীরত ইতি যং তদেব সত্যঃ।
উত হর্ষে প্রসিদ্ধা বা। ভগবদপ্রধানামৈশ্বর্যাদীনামুদ্যঃ গায়কে শ্রেত্পপ্রতিষ্ চ প্রকাশোযস্মাৎ তং। রম্যংক্ষগৎ সম্বোঘদং। ফ্রচিরং শ্রবণক্রচিকরং যতোনবং নবং প্রতিক্ষণনূতনমিত্যর্থঃ।
মহামুৎসবো যম্মাৎ তং।। ১২৪॥ তেষাং মন্তক্তানাং। আদিশদাদন্থামনাদি। আদ্যশদাৎ
পুশান্তত্তবনাদীনি॥ ১২৫॥ কর্মানি ভগবদারাধনলক্ষণে। উপরিক্ষেত্রন তদ্বোগ্যন্থাঃ।
অন্যঃ দানইতি স্মৃতঃ শান্ত্রঃ স্মৃতিরুন্তির্যা। কারিকায়াং উপনিষ্ট্রাগবিশ্বে শ্লোকনিবন্ধশ্রুত্যাদিপ্রন্থে বা॥ ১২৩॥ ভাবৈঃ শূক্রান্তর্যা। কারিকায়াং উপনিষ্ট্রাগবিশ্বে শ্লোকনিবন্ধশ্রুত্যাদিপ্রস্থে বা॥ ১২৩॥ ভাবেঃ শ্রুক্রান্তর্বা। বারিধ্যেই।ভির্বা। বন্ধ যথা স্যাৎ
ক্রমান্তর্ব্রাত্বর্ম কৃত্রেনি করিষ্যাণ্যন্যপি পাপানি॥ ১২৭॥ স্ব্রাণোক্তং ভর-

সুশ্রোণি পুরাণোক্তং সমাসতঃ। তিৎশবর্ষসহস্থানি তিংশবর্ষশভানি চ। পুকরদ্বীপমাসাদ্য মোদতে বৈ যদ্চ্ছরা। পুকরাচ্চ পরিভ্রষ্টঃ স্বচ্ছনদ গ্রনা-ল রঃ। ফলমাপোতি সুশোণি মম ক্যাপরায়ণঃ। বিষ্পুধ্যে ক্রির। নৃত্যৎ দত্ত্ব। তথা প্রাতি রুদ্রলোকমসংশয়ং । স্বয়ং নৃত্ত্যেন সংপূজঃ তলৈ বানুচ্রো ভবেং।। ১২৯।। अनाव भीनां तारां को । नृज्यकार भीना करें वा निकारां परिन ভূশিৎ। উড্ডীয়ন্তে শরীরস্থাঃ সর্বে পাতকপক্ষিণঃ।। ১৩ ।। তথ বাদ্যস্যা সঙ্গীত শাস্ত্রে। বীণাবাদনত বুজঃ অফতি জাতিবিশারদঃ ৷ ভালক্ত শ্চাপ্রয়াসেন মোক্ষমার্গৎ নিয়চ্ছতি।। ১১১। বিষ্পুধমোত্তিরে। বাদ্যং দত্ত্ব। তথা বিপ্রঃ শক্রলোকমবা-পুরাং। স্বয়ং বাদ্যেন সংপূজ্য ভসৈঃবানুচরোভবেং। বাদ্যানামপি দেবস্য তন্ত্রী বাদ্যং সদা প্রিয়ং। তেন সংপূজা বরদং গাণপতামবাপুয়াৎ।। অথ শক্তৌ পুনঃ পূজা। শক্তস্তেৎ সপরীবারৎ রুঞ্ং গন্ধাদিভিঃ পুনঃ। পঞ্চোপচারৈ মূলেন ন্ৎ পূজ্যর্থ সমপ্রেৎ।। ১৩২।। অথ নীরাজনং। তত্মচ মূলমস্ত্রেণ দত্ত। পূজ্যা-ঞ্লিত্রং। মহানীরাজনং কুর্য্যান্মহাবাদ্যজয়য়নৈঃ। প্রজ্বালয়েভ দর্থ কপূরিণ ঘূতেন বা। আরাত্রিকং শুভে পাত্রে বিষমানেকবর্তিকং ।। ১৩৩ ।। অথ নীরা-क्षनमाञ्चा १। क्षांतम बक्षनावम्मशाम । वस्वितमागू छ १ कृल छ १ कमावा-পরি। কুর্য্যাদারাত্রিকং যস্ত কম্পকোটিং বসেদিবি। কপূরেণ তু यः কুর্য্যাৎ ভক্তা কেশাসুর্কনি । আরাত্রিকং সুনিশ্রেষ্ঠ প্রবিশেদ্বিফ্রুমব্যয়ং ॥ ১৩৮॥ তত্রৈবান্যত্র। দীপ্তিনন্তং সকপূরিৎ করোভ্যারাত্রিকং নৃপ । রুঞ্স্য বসতে লোকে

ভাদিপুরাভনমুন্যক্তং যথাস্যাৎ ভচ্চাক্রানুসারেণেভ্যর্থঃ। সমাসভঃ সংফেপেণাপি যোলভাতি।
যরা সমাসভঃ পুরাণোক্তং ভস্য কলমিনমিতি শেষঃ। ত্রেবাহ ত্রিংশনিতাাদিনা। অন্যালিথিভার্থমেব।। ১২৯॥ শরীরস্থাঃ স্বস্য সর্বেবামপি বা।। ১৩০॥ ক্রুত্বঃ বট্তিংশচ্নেদঃ। জাতরঃ
সপ্তস্বাঃ মেঘনাদব বভাদিরাগালাপভেদাবা তপ্তচ্চিক্তঃ। মোকোমার্গো উপারভুতো যক্মিন্
ভাগতি বৈকুঠলোকে বা তং নিয়ছ্ছতি বনীকরোতি। অন্যোভ্যাপি নিতরাং যছ্তি দিদাতীতি
বা॥১৩১॥ সপরীবারং পূর্বালিবিভাবরণসহিতং । সপরিবারার ক্রুণায় নমঃ ইত্যুচ্চার্য্য মূলমল্রেণ গল্পাদিভিঃ পঞ্চতিক্রপচারেঃ পুনঃ সম্যক্ পূক্ষার্যা সপরিবারার ক্রুণায় নমঃ ইত্যুচ্চার্য্য মূলমল্রেণ গল্পাদিভিঃ পঞ্চতিক্রপচারেঃ পুনঃ সম্যক্ পূক্ষার্যা সপরিবারার ক্রুণায় ইলমঘার্থ
স্থাহেতি অঘ্যং নিবেদয়েদিত্যর্থঃ॥১৩২॥ তদর্থং মহানীরাজননিনিছেং। আরাত্রিকং দীপং।
শুভে উন্তমে স্বর্ণাদিনির্দ্ধিতে বিস্তীর্ণে পাত্রে বিষমা অনুগ্রা অনেকান্ট বন্ধার্তিকা বর্ত্তোযক্রিন্ত উন্তমে স্বর্ণাদিনির্দ্ধিতে বিস্তীর্ণে ক্রেণাত্র বিষমা অনুগ্রা অনেকান্ট বন্ধার্তি।
শুবিশেদির অত্যন্তসন্নিক্রেটাভূত্বা তিঠেদিত্যর্থঃ। নব্যয়োভাবোভক্তানাং যন্মাদিতি মোক্রেন
নিরস্ক্রেব। ১৩৪॥ সপ্তকল্পানীতি অসংখ্যত্বে ভাৎপর্যাং। অথবা শেভদ্ধীপানো বৈকুগ্রোতে
ভাবৎ কালং স্থিয়া পশ্যাৎ পরমোৎসাহেন্ তাত্পভিপ্রারণায় স্বেক্ত্রা অবতরণাভিপ্রায়ে

সপ্ত কণ্ণানি মানবং 11 ১৩৫ 11 তত্তিব শ্রীশিবোমাসয়াদে। মন্ত্রহানং বিছ্যাহানং বংকতংপূজনংহরেঃ । সর্বাধ সম্পূর্ণতামেতি ক্তে নীরাজনে শিবে 11১৩৬ 11 হরিভক্তিসুধোদয়ে । কৃত্রা নীরাজনং বিক্ষোদা পাবল্যা সুদৃশ্যা । তমোবিকারং জয়তি জিতে তিমিংশ্চ কোভবং 11 ১৩৭ 11 অন্যত্র চা কোটয়োত্রক্ষহত্যানাম গন্যাগমকোটয়ঃ । দহত্যালোকমাত্রেণ বিক্ষোঃ সারাত্রিকং মুখনিতি 11 ১৩৮ 11 বচ্চ দীপস্য মাহাত্ম্যং পূর্বাং লিখত মস্তি তৎ । এইবাং সর্বমত্রামপি প্রায়েণাভেদতোইনয়োঃ 11১৩৯ 11 অতঃ সারদমুখায় মহানীরাজনং ছিদং। এইবাং দীপবং সর্বৈর্বাদ্যমারাত্রিকঞ্চ মহা 1১৪০ 11 তদুক্তং শ্রীপুলন্ত্যেন বিক্র্থর্মে। গুপাং চার্ডিকং পশ্যেৎ করাভ্যাঞ্চ প্রকদতে । কৃত্যকোটিং সমুদ্ধৃত্য মাতি বিক্ষোঃ পারং পদং । মূলাগমেচ । নীরাজনঞ্চ মঃ পশ্যেৎ দেবদেবস্য চক্রিণঃ। সপ্তজ্যানি বিপ্রাঃ স্যাদন্তে চ পরমং পদং 11

অথ শেখাদিবাদনমাহাত্তাং । বৃহন্নারদীয়ে প্রীয়মভগীরথসম্বাদে । কেশ-বায়তনে রাজন কুর্নন্ শাধারবং নরঃ । সর্বাপাপবিনিমু জ্যো ব্রহ্মণা সহ মোদতে । করশবং প্রকৃষিত্তি কেলাবায়তনেষু যে । তে সর্বে পাপনি-মুজি। বিমানেশা মুগদরং ॥ ১৪১॥ তালাদিকাংস্যানিনদং কুর্বন্ বিদ্যু গৃহে নরঃ। যৎ ফলং লভতে রাজন্ শৃণুষু গদতোমম। সর্বাপাপবিনিমু জ্যো বিমান শতসংকুলঃ। গীয়মানশ্চ গল্পাকৈর্বিজ্বন্ সহ মোদতে । ভেরীমূদস্পেটইনিশান্দি দিন্দ্র ডিভিনৈঃ । সন্তর্গা দেবদেবেশাং যথ ফলং লভতে শৃণু। দেবল্পাত-সংযুক্তঃ সর্বান্সমন্থিতঃ। মুর্লাকমনুপ্রাপ্য মোদতে কম্পেণ্ডক্মিতি ।১৪২।

অথ সজলশন্তানীরাজনং। ততশ্চ সজলং শশ্বং তগবন্দ্রোপরি। তিভানি রিয়া কুর্বাতি পুননীরাজনং প্রভাগ। ১৪৩। তনাছাত্রাঞ্জারকামান্তান্তা তইরে। শক্ষে কৃত্রা তু পানীয়ং ভ্রামিতং কেশবোপরি। সন্নিধৌবদতে বিফোং কংগানুং ক্রীরসাগরে। ইতি।। ১৪৪।! নীরাজনদ্বং চৈতৎ তামূলসাপ্রাং পরিং। কেচি-

বিমানানামীশাঃ স্থামিনো ভবস্থি॥ ১৪১॥ নিশানোবাদিত্রবিশেষঃ॥ ১৪২॥ জলপূর্ণশক্ষেন পুননীরাজনং লিখতি ততশেতি॥১৪৩॥ যেন ভালিতং ফু বসতে বলতি ॥১৪॥

পোক্তং ॥ ১৩৫॥ শিবে হে পাবেতি ॥ ১৩৬॥ তমঃ তমোগুণঃ অজ্ঞানং বা সত্বাবরকত্বং । তস্য বিকারং কামক্রোধাদিকং দ্বিতীয়পক্ষে দেহাভিমানাদিকং। ত্স্মিন্ তমোবিকারে তবঃ সংসারঃ কঃ স্যাৎ অপি তু ন কশ্চিদপি। স্বতএব জিতোভবভীত্যর্থঃ। ১৩৭॥ কোটয়ঃ কোটাঃ যাঃ কোটয়ন্তাইতি বা। সারাত্রিকং দীপসহিতং দীপালোকেনাধিকং শোভমানমিত্যর্থঃ। ১৬৮॥ অত্র নারাজনেহপি তৎসর্বাং মাহাত্মাং দ্রুইতাংমন্তব্যং জেয়ং। তত্র হেন্তঃ। অনয়োঃ ধূপানন্তর-দীপস্য এতয়ীরাজন দীপস্য চেতি হয়েশরভেদাং। প্রায়েণেতি স্বমতে বর্ত্তাদিভেনাং॥ ১৩৯॥ অতঃ অস্মান্যাহাত্ম বিশেষাং॥ ১৪০॥

অথ ছতিবিধিঃ । মহাভারতে । গারিরধিয়িষুঃ ক্ষাং বাচৎ জিপদিবামি যাৎ। তয় ব্যাসসমাসিন্য প্রায়ভাৎ মপুস্দনঃ। ইতি । ১৪৮॥ আর্ডেচ স্ততেরেভৎ জ্যেকৎ ডভিপরঃ পডেও । সভাত কালান্য ও চ জ্যেকং সংকী-র্তিরদিনা । ইতি বিদ্যাতপোযোনিরবোনি নিমুদ্ধীড়িতঃ । বাগ্যাতেনার্তিতঃ দেবং প্রীয়ভাং মে জ্যার্লিঃ। ১৪৯ !!

ভাষ ভারাতি।। পূর্নতাগনার্ক্রতিষু । ও নগোবিশ্বপায় বিশ্বতি সংহতি তবে : বিশ্বের রার বিশার গোবিজায় নগোনগা। নগোবিজানকাপার পারমানদ কাপিণে । ক্রফায় গোপীনাথার গোবিজায় নগোনসা। নসা কমলনভায় নমারকালালার নমারকালালার কমলনভায় কললাভায় কললাভায় নমা। বর্তাপীড়াভির।মায়রাময়া-কুল্ঠমেধসে। রমামানস ২ সায় গোবিলায় নমানমান কংস বংশ বিনাশায় কেলি-

আরাত্রিকং নীরাজনপাত্রং নিংস্লেডং ঘৃতাদিরহিতং। নিংস্লেডাং দয়ারহিতাং। সংল্মারিস্নি সংশ্নিষ্ মধ্য নির্ব্যাপেতার্থতা **যশ্চ পূর্বাং** দীপনির্বাণদোবউজ্ঞঃ সদীগ্রিব্যরক্তর তাজ নীর্জিন্তিশন রবেন জ্ঞোঃ ॥ ১৪৫॥ প্রণতিং বন্দনং। ততঃ গ্রণতেঃ পশ্চাৎ প্রদ্যাজিক্তি । এব-সঞ্জোপি ॥ ১৪৬॥ নমু প্রস্পারং ময়াদাভাবেনানির্দ্যারদোবঃ স্যাত্ত্রে লিগতি ভক্তোতি ৪১৪৭॥

ক্লবং আরিরাধরিষুঃ আরাধরিস্তমিছন্ জিগলিয়ানি গলিস্তমিছানি । ব্যাসেরিস্তারঃ সমাসঃ সংক্ষেপঃ তথ্যজ্যা তথা বাচা !! ১১৮॥ এতং আরিরাধ্য়িষুরিস্তাদিকং । তথা স্ততেঃ সমাপ্তে সত্যং । ইমং ইতি বিদ্যোত্যদিকং ॥ ১৪৯॥

লোলাভা।ং কুওলাভা ং বল্গবে ফল্বায়। বল্ববীনাং নর্নান্যেবাজালানি তেষাং মালা-

চানুর্যাতিনে।বৃ্যভধুজবন্দ্রারপার্থসারথয়ে নমঃ।বেণুবাদনশীলার গোপালায়াহিন্
মন্দিনি। কালিনীকুললোলায় লোলকুগুলবল্গবে। বল্লবিন্ধনালোলমালিনে
নৃত্যশালিনে। নমঃ প্রণতপালায় জিরকার নমোনমঃ। মঃ পাপারণাশায়
গোরন্ধন্দরায় চ। পৃতনাজীবিভাভায় ভূণাবভীসুহারিলে। ১৫০। নিক্ষায়
বিমোহায় শ্রোয়াশুদ্বিদৈরিলে। ছদ্বিভায়ায় মহতে জিরুদ্ধের নমোনমঃ। প্রদীদ
পর্মানন্দ প্রায়াশুদ্বিদৈরিলে। ছদ্বিভায়ায় মহতে জিরুদ্ধের নমোনমঃ। প্রদীদ
পর্মানন্দ প্রায়াশুদ্বিদ্বিরেলে। ছদ্বিভায়ায় মহতে জিরুদ্ধের নমোনমঃ। প্রদীদ
পর্মানন্দ প্রায়াশুদ্ধিনির্বিলে। আথিবাধিভুজ্জেন দ্বীং মানুদ্ধর প্রভায় ভিল্লেন্
মিলিকান্ড গোপালন্দ্রনাহর। আথিবাধিভুজ্জেন দ্বীং মানুদ্ধর প্রাল্পরা। ক্রেন্
মিলিকান্ড গোপালন্দ্রনাহর। মংসারসাগরে ময়ং মানুদ্ধর প্রাপ্রা। ক্রেন্
মিলিকান্ড গোপালন্দ্রনাহর। গোবিন্দ পর্মানন্দ মাংসন্ধ্রের মাধব। ১৫১।
মিলিকান্ত লোকিনি। একাদশক্ষ্যে। প্রমানন্দ মাংসন্ধ্রের মাধব। ১৫১।
মিলিকান্ত কিবারিলি, নুভং শ্রেণ্ড। ভূলা বিভা প্রত্যালভ্রান্ধিগাতং বল্লে
মিলিক্য তে চরণারবিন্দ্র। এক। তাল্লা সুদ্ধ্যভ্রপুরেশ্সিভরাজ্যলক্ষ্যাং

ন হৈ প্ৰে। লাভঃ সদা গ্রম্মা ব্রাম আমানালেক্ষ্ন। ১৫০। নিজ্লার প্রিপূর্ণায ি এলাগমতি লা । অভ্যাবৈত্তিৰ প্ৰমূলাবনাল্য নাৰ্য ১৫১॥ বিশেষতঃ একাদশস্ক-👉 গোল্যমেন কলিকালে সূম্পিতি লিটাচালালিবতি ধ্যেমমিতি। **হে প্র**ণতপাল হে মহা-্রান্তিভাত তার চরণার্রিন্দং বংনদী। এপঞ্জং দেয়রং ধ্যাত্র**ং যোগ্যং । সদেতি সর্ব্রেসয়ধ্যতে ।** ্র ৪০০ ্ছেপ্রক । ইন্দ্রিরকুট্যাদিভিনঃ পরিভর্তিরক্ষারঃ তং হস্তীতি তথা তৎ। কিঞ্চ। ার ীতালাধং মনে:রথভরকং । কিঞ্ । তীর্থাস্পদং গঙ্গাদ্যাশ্রম্যরত্বন প্রম্পাবনং । কিঞ্ । শিব বিবিদ্যিতালৈ লাভে গুতং। নল তৌ কুতার্থানেবৰ কিমর্থা ভাজ্যাং নুতং। তত্রাই শ্রণ্যং আশ্রয়ণ-বোল্যাণ কল্পনিক্ষিতি ভাবঃ। যদ্ধা প্রমেশ্বত্তেনাবশ্যসেব্যত্ত্বাং তল্মাহাল্যাবিশেষে-কেন-প্রি। না একানি প্রত্যাং কথং প্রাক্তিশা গোচরঃ স্যাও । ন । ভবার্তি ৮০ বসা ক্স্যাপি ভ্তা মানতাতিইং আইং চন কেবলমাগন্তকম্ভিমতেং হন্তি কিন্তু ভবান্ধিপোতং সংস্কৃত্য বহুৰেক্ষ ষ্কা শিৰবিবিহি ছেড চিভি প্রটেম্ব্রায়জুঁ। শ্রণানিভি চ শ্রণাগতবাৎস্লায়জুল ভাড় চি । সদা-সঞ্জিদ্যাং। ভাত্যানা মার্ডিং বিরুষ্ট্রপ্র গ্রেকাৎকারাদিনা হতাতি। কিঞ্জণতান্ স্প্রজ্গন্ বরদানাদিন। ালয়ন্ত্রীতি প্রণতপালা। ইন্দানয়ো দেবাস্থেনাম্বি ভবানিঃপাতং। অধ্বা প্রি-ভবশ্য ঐন্টাদে। হমিতি বিশেষণা ক্র্যাং ক্রামিন্যাং সর্ব্বেহংখনাশকরং ক্রামপরিপুরকর্ণ চোড্রাং। ভার্থাস্পেদমিতি মুমুক্ষূণাং মুক্তিপ্রদায়ং।শিববিরিজিত্তমিতি মুক্তানামপি।স্ততাহেন স্বাধিশে বিষ্মাত্রকারং পরমাক্র্যকন্ত্রপ্ত । শার্ণাং পরমাজ্যুমিতি দাসানাং সর্বাস্ক্রনার্থ্যয়ত্বং। কিয়া শার্ণং বৈকৃওধাম ভগৰানেৰ বা তৎপ্ৰদমিতাৰ্থঃ। ইতি প্রমপদপ্রদত্ত। ত্তানাং রুলিব্রীপ্রভ্তীনাং িবির্লার্ডিখনিতিপ্রমপ্রেমবিন্যুত্বং । প্রওতান্ বৈলেগান্গালয়ডিখলা দিলানেন পুফ্ষিদুষ্টজনাদিভোগে বক্ষদীতিপ্রণতপালাঃ। যদ্ধা প্রণতা বৈক্রনাএর পালাঃ পালকা যেয়াং জনানাংতেষাং বৈষ্ণবদেবকানাং ভবাহিপোতংভক্তিপ্রদানেনগনায়ান্য মা বৈক্তলোভপ্রাপণাৎ সংসার তথা প্রস্পর্যপ্রারকমিতি নিজদাসাক্ষণাসাসাম্পি সংর্তংখ্যম্প্রাদিকং ॥১৫২॥ ইদানীং স্বয়মাপ্তকামত্বলৈরপেন্দাং ভক্তার্থ সাপেক্তাং দর্শন্ এরাগচন্তং স্তেতি তাত্ত্বত। হে

ধনি আর্যাবচসা , মদগাদবণ্য । নায়ামূগণ দয়িতয়েপ্সিতমন্বধাবদ্দে মহা
পুক্ষ তে চরণারবিন্দং ।। ১৫৩ ।। বৈদিকানীদৃশংন্যেব ক্লফে পৌরাণিকান্যপি ।
তাত্তিকাণি চ শক্তানি স্তোত্তাণ্যপি নবানাপি । বিষ্পুধর্মেন্তরে হংসগীতায়াও ।
আন্তর্ভাক্ষাণৈ কৃত্যা দ্বাং বিরচিতাক্ষারৈঃ । স্তবাক্ষাণশাদ্লিক্ষাৎকামানবাপুরাং ।। ১৫৪ ।।

স্তুতিমাছাত্রাং ।। বিষ্পুধ্যে । সর্বদেবেষু যথ পুণাং সর্ববেদেষু যথ ফলং। নরস্থ ফলমাগোতি সুত্বা দেবং জনাদিনং। বিষ্ণুপ মান্তিরে। ন বিত্তদাননিচরৈর্বাহুভিম্পুসূদনঃ। তথা ভোষমবাপ্নেতি হথা ভোতেরির্বিজোভনাঃ। নারিসিংছে। স্তোত্রৈর্বিপিশ্চ দেবাগ্রে যং ভৌতি মধুসূদনং। সর্বপাপবিনিমু জ্যো বিষ্ণুলোকমবাপু য়াৎ। ছবিভক্তিসুধোদয়ে। স্তবন্নমেয়মাছাত্রাং ভক্তিপ্রথিতরম্যাক্ । ভবেদুক্লানিদুর্লভাং এভ্কারণ্যভাজনং।। ১৫৫।। হথা নরস্য স্কুবতো বালক্ষার ত্র্যাতি । মুক্ষবাক্রে ন ছি তথা বিবুধানাং জ্বাৎপিতা ।। ১৫৬।।

ধর্মিষ্ঠ সদাচারপ্রবর্ত্তক। হে মহাপুরুষ পুরুষোত্তম। অবৈন্যর্ছ স্ত্রাজা যা স্থরে প্রিভারাজ্য লক্ষী-রয়োধ্যাসামাজাবিভৃতি ন্তাং স্তাজ্য। ,যতে চরণারবিন্দং অরণ্যং দণ্ডকবনাদিকমগাৎ। কিং রাজ্যবৈকল্যদর্শনেন আর্যাস্য গুরোদশরথস্য বছসা কেক্ষীং প্রতি তদীয়বছনসত্যতাপ্রতিপাল-নায়েত্যর্থঃ। এবং ধর্মিষ্ঠত্বমুক্ত্যু মহাপুরুষত্বং দশ্রন্ ভক্তজনবশ্যতানাহ। দরিত্য়া শ্রীণীত্য়। के श्निज्य मात्रामृत्रश्मात्रत्रा व्यर्गमत्राकात इति । यन्त्रयात अवतन्त्र । यन्ना । क्रान्त्रत्य विषा क्रक्षिणि তত্তিব প্রাপ্তক্তে: কলো শ্রিক্ষণা প্রমপ্তাত্তাৎ তদীয়লীলাবণ্নেন ত্মেব স্তৌতি।রাজ্য লক্ষীং শ্রীমথুরাসম্পত্তিং অবিবক্ষিতত্বাৎ অসন্ধিঃ । ধর্মিষ্ঠস্য পূর্বাজন্মন একাগ্রত্যা রুতভগবদা-রাধনলক্ষণধর্মস্য আর্য্যস্য প্রীবস্থদেবস্য যদা ধন্মিষ্ঠয়েরার্যায়েঃ প্রীবস্থদেবদেবক্যোব্রচসা। তত্ত অয়ন্তুসত্যইত্যাদিনা বস্থদেবস্য জন্ম তে ম্যাসংবিত্যাদিন। দেবক্যাঃ। অরণ্যং বৃহত্বনাদিকং। যদা। ধর্মিষ্ঠে ভক্তিলক্ষণধর্মনিষ্ঠে জীননদগোপরাকে বদরণাং ব্রজ্জুমিলক্ষণং তৎ। এবং সত্যপি মহাপুরুষত্বেনৈর সদাচারপ্রবর্ত্তকত্বং ভক্তজনাধীনত্বঞ্চ জ্বেং । পরমত্বভতামাহ। মায়য়া লক্ষ্যা অপি মৃগ্যত ইতি মৃগং। यञ्चा। ভক্তজনাধীনত্বমেবাহ। মায়য়া লক্ষ্যা মৃগং ক্রীড়া মূগবৎ পরাধীননিত্যর্থঃ। অরণ্যগমনে নিগুটহেত্বস্তরং। দয়িতয়া জীরাধায়া ঈপ্সিতং পূর্বামিনি ছাপি জন্মনি বিবিধারাধনেন প্রাপ্তমিউং। অতএব অন্তধাবচ্চারণ্যমেব। গোপালনাদি ক্রীড়য়া স্ব্বতোধাবনিব পরিবভামেতার্থঃ।।১৫৩।। ঈদৃশানিএত।দৃশশীগোকুললীলামৃতময়ানি বৈদিকানি কুফক্টোক্রানি শস্তানি ভবস্তি । যদা। কুফে শস্তানি তৎস্বথকরাণীত্যর্থঃ । অভিনবানি ष्पाधनिककविनिवक्षानि ॥ ১৫৪॥

ভক্ত্যাপ্রেমা গ্রথিতাঃ ক্রমেণ নিবদ্ধাঃ অতএব রম্যা বাক্ষস্য সং। ব্রহ্মাদি ছর্লভ্যং যৎ প্রভোর্তগবতঃ কারুণ্যং তম্য ভাজনং বিষয়ঃ॥ ১৫৫॥ বিরুধানাংদেবানাং বিভ্যামপি বা ॥১৫৬॥ অবলৎ প্রভূমিশ্নিভারতিং রত্যত্থ শ্বয়শা স্তবে ঘূনী। শ্বয়মুদ্ধঃ তি স্থনাথিনিং পদল্পরং জননাব বালকং ।। ক্ষান্দে অমৃতদারোদ্ধারে । প্রীক্ষান্তবর জৌঘাহায়াৎ ছিলা প্রলং রুতা। নমস্যা মুনিসিদ্ধানাং বন্দনীয়া দিবৌকসাং। তাত্রব কার্ভিকমাহাত্ম্যো বিশ্বিক্ষানাং বন্দনীয়া দিবৌকসাং। তাত্রব কার্ভিকমাহাত্ম্যো বিশ্বিক্ষানারদ্যয়াদে। স্যোত্রাণাং পরমং স্যোত্রং বিফোর্নান্মসহসূকং। হিছা স্থোত্রন্দ্রমূলি পঠনায়ং মহামুনে। তেনৈকেন মুনিশ্রেষ্ঠ পঠিতেন সদা হরিঃ। প্রীতিমান্যাভি দেবন্দে, যুগকোটিশতানি শ্বেতি ।। ১৫৭ ।। স্থানে যৎ স্থোত্রমাহাত্মং লিখিতং লেখ্যমগ্রতঃ। যাত কার্ভনমাহাত্মং স্কাং তেয় মিহাপি তথা। ১৫৮ ।। তারতাতা চোক্তা বিশ্বদর্মে । নূনং তথক শাল্ক মথবা প্রতি জিলিকা। রোগোন্বানে সাজিলা যা, ন স্থোতি হরে প্রনিন্যা ।১৫১ ।।

অথ বন্দন্ধ। প্রণমেদথ সাফীঙ্গ্রেমুদ্রপ্রেদর্শরেশ । পঠেৎ প্রতিপ্রণামঞ্চ প্রসীদ ভগবন্নিতি। তদুজ্ঞমেকাদশে শীভগবতা । স্টব্রুজাবটিঃ স্থোট্রঃ পৌরাদৈঃ প্রাক্টারপি । স্তন্ধা প্রসাদ ভগব নিতি বান্দ্র দণ্ডবং ॥ ১৬০ ॥

অম প্রনামবিধি । তেত্রের । শিরে মংপাদরোঃ রুল্ন বাহু ত্যাঞ্পরস্পরৎ। প্রপান পাছি মানাশ ভাতং মৃত্ গ্রহার্বাং । ১৬১।। কিঞাগনে। দেভাগং পদ্ধাঞ্জানু ভাগ্রম। শিরমা দৃশ্য মনসা বচসাচেতি প্রনামেইটাক্স ইরিডে । ১৬২।। জানু ভাগ্রের বাহু ভালে শিরম। বচনা ধিরা। পঞ্জাকঃ প্রনাম্য স্থাৎ পূজাসু প্ররাবিমাবিতি । ১৬০। গরুড়ং দক্ষিণে রুল্লা কুর্যান্ত্রপৃষ্ঠ ভোবুধঃ। অবশ্যং চ প্রনামাবিতি । ১৬০। গরুড়ং দক্ষিণে রুল্লা কুর্যান্ত্রপৃষ্ঠ ভোবুধঃ। অবশ্যং চ প্রনামাবিতি । ১৬০। গরুড়ং দক্ষিণে রুল্লা কুর্যান্ত্রশ্বরার । সন্ধিৎ বীক্ষা

জবলং অশক্ত ॥ ১৫৭॥ যদ্যপি লপনে শহস্নামমাহাত্মংলিধিতমন্তি তথাপি স্তোতেষু মধ্যে সহস্যামস্থোত্রন্য পর্মত্রৈষ্ঠ্যাপেকরা পুনরত্রোল্লিখিতং। যচ কীর্ত্তনমাহাত্ম্য মগ্রতো লেখাং তং দক্ষং ইছ্ স্তুতিমাহাত্মেনি জ্ঞেয়ং দক্ষেধামেনৈবশং কীর্ত্তনকপত্মাং ॥১৫৮॥ কণ্ঠশাল্কং গলরোগ বিশেষং॥ ১৫৯॥ প্রাকৃতিঃ একাটোনৈঃ লোকভাষানিবলৈরিতি বা॥ ১৬০॥

বাছভাগে দক্তিণান্তরাভাগে পরস্পারং মম দক্ষিণোভরপাদে গৃহীয়া। যদা পরস্পারং নিবদাভাগে ক্তাপরাধইব প্রপান পাহীতাদি বিজ্ঞাপা প্রণমেদিতার্থঃ।। ১৬১॥ প্রণমেহনীক্ষানি
দর্শান্ত পদ্মানিতি পাদাদিভিঃ, প্রণামঃ ক্রামণ ত ব্দক্তৈ মাবইস্তাদিধানেন। বচলা চ ভাগে
দুশাপ্রণামঃ চক্ষুরীধন্নিমীলনাও। মনসা শিরোমংপাদরোঃ ক্রয়া ইত্যাদিধানেন। বচলা চ ভাগে
বন্ প্রাণিকতাদি কপেণোহঃ।। ১৬২॥ ইগো অন্তাঙ্গ প্রভাগে প্রতাদিধানেন। বচলা চ ভাগে
দভিনুবে বর্ত্ত্যানং দক্ষিণে ক্রেতি ভগবভঃ প্রোভাগে প্রতাদেশ বামেহতান্তনিকটে চ প্রণাম
দিবেধাও। তথাচাত্রে লেখ্যং অত্রে পুরে বামভাগইত্যাদি। ত্রীন্ প্রণামানবন্যং কুর্যাও। যক্ষ্
নমস্কারেণ চৈকেনেত্যাদিকমন্ত্রে লেখাং ভক্ষ মাহাল্মাপরতরৈও নক্ত বিধেরত্বেন। যথা একপ্রদক্ষিণায়া নিষিক্রেপি প্রদক্ষিণেন চৈকেনেত্যাদিকং মাহাল্মপরমের সঞ্জতে অন্যথাতি বিরোধাও। শক্তক্তেবিত তহি ততোহবিকান্ বড়াদীন্ অন্টচ্যারিংশদন্তান্। ভতোহপ্যধিকান্ ম্নেটান্তর্শভাদীন্ কুর্যাও।। ১৬৪॥ সন্ধিং ভোক্ষনশ্যনাদ্যব্সরং। বীক্ষ্য আলোচ্য।

ত্রিং চাদ্যৎ প্রকা স্বপ্তরুমের চ ! দ্বিচন্ত বিংশদথবা চন্ত্রবিংশন্তদর্ককং। নমেন্তদক্ষমথবা তদর্কংসব্বথা নমেৎ । বিষ্ণুধর্মোন্তরে । দেবার্চাদশনাদেবপ্রণ ম অধ্সূদনং ৷ স্থানাপেকা ন কর্ত্তব্যা দৃট্বার্কাং দ্বিদ্দত্যাঃ ৷ দেবার্চাদ্যি পৃতং হি
শুতি সর্বাৎ প্রকার্তিতং ৷৷ ১৬৫ ৷৷

অথ নমস্কারসাহাত্য ং । নারসিংহে । নসস্কারঃ স্তোযজ্ঞ সর্বহজ্ঞেষু চোড়মঃ। नमकात्रिग रिव्यक्तन नवः পূতোহরিং ব্রঞ্জে ।। ১৬৬।। স্কান্দে। দশু প্রণামং কুরুতে বিষ্ণবে ভক্তিভাবিতঃ। রেণুসৎখ্যাৎ বসেৎ স্বর্গে মস্বস্তরশতং নরঃ।। ১৬৭।। তত্ত্বৈব ব্রহ্মনারদসম্বাদে। প্রণন্য দশুবৎ ভূমে। নমক্ষারেণ ঘোইচ্চয়েৎ। স্থাৎগতিম্বা-খোতি ন তাৎ ক্রতুশতৈরপি 1 নমস্কারেণ চৈকেন নরঃপূতোহরিং ব্রজেৎ। তত্তিব ঞীশিবোষা সংবাদে। ভূমিমাপীত।জানুভ্যাং শির আরোপ্য বৈ ভুবি। প্রণমে-দ্যোহি দেবেশং সোহখমেধফলং লভেৎ। ভত্তৈবান্যত্ত । ভার্যকোটিনহসু নি ভার্য-কোটিশতানিচ। শারায়ণপ্রণামস। কলাং নার্ছন্তি যোড়শীং। শাঠে।নাপি নমস্কারৎ ফুর্কতঃ শাঙ্গ ধন্বনে। শঙজন্মাহ্রিতৎ পাপং তংক্ষণাদেব নশা ভি ।। ১৬৮ ॥ বেণু-মণ্ডিতগাত্রস্য কণা দেছে ভৰম্ভি যে ৷ ভাবদ্বর্ষসহসাপি বিষ্ণুলোকে মহীয়তে ৷১৬৯ বিফুধমোত্তিরে। অভিবাদ। জ্লামাথং কুতার্থশ্চ তথা ভবেৎ। নমস্কার্ক্রিয়া ভদ্য नर्वभाभाधनाभिनी । स्नानुडारिक्षव भानिङा । भारता ह विहक्षनः । इत्रा थागमः (प्रवेश नक्षान् कामान्य सार । विक्शुश्रवाल । अनामिनिधनः (प्रवेश रेम्छा-দানবদারণ । যে নমন্তি নরা নিত্যং নহি পশ্যতি তে যমং ।যে জনা জগভাং নাথং নিভ্যং নারায়ণং দ্বিজাঃ। নমস্তি নহি তে বিকোঃ স্থানাদন্যত্র গামিনঃ। নারদীয়ে। একোলি রক্ষন্য রুভঃ প্রণামো দশাখ্যধাবভূথৈন তুলাঃ। দশাখ্যধীপুনরেতি জন্ম ক্লম্প্রণানী ন পুনর্ভবায়। হরিভক্তিসুধোদয়ে। বিক্ষোর্দণ্ডপ্রণামার্থং ভক্তেন পততা ভুৰি। পাতিতং পাভকং রংসুৎ নোভিউতি পুনংসহ ।। ১৭-।। পালে দেবছত-

তদাতিরিক্তকালে ইতার্থ:।লোকে সদাচারাত্মসারত:। আদৃং হরিং ঐক্তমং। গুরবশ্চা জা: কৌর্মে। যোভাবয়তি যা সূতে যেন বিদ্যোপদিশ্যতে। ক্যোষ্ঠা ভাঙা চ ভর্জা চ পর্বৈত গুরবঃ স্মৃতাঃ।ইতি তান্। দ্বিচতুর্বিংশদিতি অউচত্বারিংশদিত্যর্থঃ॥১৬৫॥

সংবাদ যভেষু মধ্যে নমস্কারঃ উত্তমেষজ্ঞঃ দেবতারাধনং স্মৃতঃ স্মৃতিকৃতিঃ।। ১৬৬।। রেণসংখ্যামিতিদগুপ্রণামাররণে যাবস্তোরেশবে। গাত্তিঃ সংস্পৃশান্তে তাবং সংখ্যং তেষাঙ্গ প্রতোকং ময়ন্তরশতং ব্যাদিতার্থঃ। এবমসংখ্যত্ম তাৎপর্যাং। স্বর্গে উর্দ্ধলোকে বর্গাদিতি বৈকৃতি প্রাপ্তে) কস্যচিৎক্রমগত্যপেকয়।।১৬৭। নমস্কারমাত্তেণ ঘোহর্চয়েং। প্রণামরপমর্চনং মং কর্যাদিত্যর্থঃ। ১৬৮। কলা রেণুপরমাণবঃ। যদিত্যব্যরং যাবস্ত ইত্যর্থঃ। কলা বেইতি পাঠেপি স্বর্ধার্থঃ।১৬৯।। সহ তেন পুনর্লোক্তিষ্ঠিত ক্রাচিদপি পশ্যন্তিন্য পাতকং ন স্যাদিত্যর্থঃ।১৭০। নেস্কর্মে

বিকুণ্ড শন্ত্বাদে। তপন্তপুনারো ঘোরমরনের নিয়তে নিয়া হিছি । মংলাং সমস্বাংপাতি ভরম্বা গরুড়ধুজং। রুজাপি বহুলং পাপং নরো মোহসমন্বিতঃ। ন যাতি নরকং নজা সর্বাপাপহরং হরিং। ততৈব বেদনিধিস্ততৌ। অপি পাপং দুরাচারং মরং ভং প্রণতং হরেং। নেক্ষন্তে কিন্তরা যান্যা উলুকান্তপনং যথা।। ১৭১।। বিশ্বুণুরাণে। প্রীয়মন্য নিজভটানু শাসনে। হরিমমর্গণার্চিতাং ঘূপল্লং প্রণমন্তি যং পর যার্বাভাহি মর্ত্যা। ভমপ্যতসমন্তপাপবন্ধং ব্রুজ পরিহাত্য যথারিমাল্যসি ক্রং।। ১৭২।। ব্রুজবৈবর্তে। শরণাগতরক্ষণোদ্যতং হরিমালং প্রণমন্তি যে নরাং। ন পতিন্তি ভ্রায়ুখে ক্ষুট্রং পতিতানু দর্বতি আভানসো।। ১৭৩।। অইমক্ষন্ত । বিল্বাক্যে ছাল্য প্রণাধার রুজঃ সমুদ্যমং প্রপমন্তর্তার্থবিধী সমাহিতঃ। যল্লোক পালৈন্তদন্ত্রাহাহার্যার রুজরপূর্ব্বোহপদদেহ সুরেহপিতিঃ।। ১৭৪।। অভত্রব নারা-রুশবৃত্তিত্ব । আহোভাগ্যমহোভাগ্যমহোভাগ্যং নৃণামিদং। যেয়াং হরিপদাল্লাত্রে শিরোন্যন্তং যথা তথা।। ১৭৫।। কিঞ্চ নার্যাংহে। শ্রীযমোক্তৌ। তস্য বৈ নার সিংহস্য বিজ্ঞার্যিততে জ্লা। প্রণামং যে প্রকৃষ্ঠিত তেরামপি নমোন্নয়ং।। ভবিষ্যোন্তরে চ। জলধেনু প্রসম্ভে । বিজ্ঞান্তর্জনার্জনার্দন্ত । বিজ্ঞান্য বে প্রকৃষ্ঠিত তেরামপি নমোন্মইতি।। ১৭৬।।

অথ প্রণামনিত্যতা। বৃহনারদীয়ে। লুক্সকোপাথ্যানার ডে। সরুদ্ধা ন নমেদ্যস্থ বিক্ষবে শম্কারিলে। শবোপনং বিজ্ঞানীয়াৎ কদাচিদিপি নালপেৎ।। ১৭৭।। কিঞ্চ প্রাদ্ধে। বৈশাথ্যাহাদ্ধ্যে। য্যান্ত্রাহ্মণসম্বাদে। পশ্যস্তোভগবদ্ধারৎ নাম শত্র পরি-চ্ছবেৎ। অকুদ্ধা তৎপ্রণামাদি যান্তি তে নরকৌকসঃ।। ১৭৮।।

ঈশ্বিত্তমপি ন শকু বন্তীত্যর্থঃ ।। ১৭১ ॥ প্রমার্থতঃ তত্ত্বঃমত্ত্ববাস্থাপ নক্ষং॥১৭২ ॥ প্রবং পশ্চাদা কথিঞ্ছবাস্থা পতিতানপি সতঃ তান্ প্রণামকর্ত্ত্ব্বাস্থা পতিতানপি সতঃ তান্ প্রণামকর্ত্ত্ব্বাস্থা হিরিক্ষরতি সাউদ্ধার । যদা । সাহেতৌ পতিতান্ ভ্রন্তানপি তান্নরানসাবৃদ্ধরতি মতঃ তৎ কিং বক্তব্যং তৎ প্রণামকারিশো নপতন্তীত্যর্থঃ॥১৭৩॥ অহে। ভগবন্ ত্বংপ্রণামকার মার্মিমা। যদর্থং কৃতঃ সমুদ্যমত্ত্ব প্রপন্নানাং ত্বদেকনিষ্ঠভক্তানাং যোহর্থক্তম্য বিধৌ অভ্যক্তিপ মরি ত্বা দল্পাদনে সমাহ্তিঃ অপ্রমন্তঃ হিতঃ কৃতঃ যৎ যোলাদ্যমেন লোকপালৈরমরেঃ সত্ত্বপ্রান্ত প্রধানেরপালক্ষপ্রস্থাত্ত । অপ্রদে নীচে রাজসেম্যাপিতঃ। অয়ং ভাবঃ। পর্মেশ্রার প্রভামহং বরাক্তিলে কাং দন্তবানিত্যেত্দান্তাং প্রণামাহিপি ন সম্যক্ কৃতঃ কিন্তু তদর্থ মুদ্যমার কৃতঃ তেন চ কর্মতপোদানাদিকোটিভিরপালভাস্তদক্ত্রাঃ সম্পাদিতঃ অহে। ভৎপ্রণাম প্রভাবাশ্চর্যাত্রমিতি ॥১৭৪॥ যথা তথা ধেন কেনপি প্রহারেণেত্যর্থঃ ॥১৭৫॥ তেবাং তেবাং

অপ্যর্থে বাশক:। নালপেৎ তং ন সম্ভাবেত। মান্তিকত্বাপণ্ডে:।। ১৭৭ ।। নাম শ্রীকৃষ্ণাদি শক্তং কৃষ্ণনাদি তাত্যাং শোভিতমিত্যর্থ:। ইতি ভগবদালয়লক্ষণমূক্তং । তথা ভগবত: প্রণাবং অবিদান্তেন দর্শনাদি সকুত্ব। যে যান্তি ॥ ১৭৮ ।। অথ নমকারে নিবিদ্ধানি। বিষ্ণুক্ষাতৌ। জন্মপ্রভৃতি যথ কিঞিথ পুমান্ বৈ দর্ম চরেথ। সর্বাহে বিদ্ধানি যাতি এক হস্তাভিবাদনাথ। ব'রাহে বিদ্ধপ্রাকৃতদেহস্তাবনেরঃ প্রণমেত মাথ। শ্বিত্রী সজায়ত মূর্খ্য সপ্তজন্মানি ভামিনি। কিঞ্চন্ত্র। বিশ্বে পৃষ্ঠে বামভাগে সমীপে গর্ভমন্তির। জপহোমনমন্ধ্রারহকুর্য্যাথকেশবা লয়ে।। ১৭১।। অপি চ। সক্তানো নিপতিতান শক্তঃ প্রণমেন্মুহুঃ। উত্থায়োখায় কর্ত্ব ং দণ্ডবং প্রণিতন্মিতি।। ১৮০।।

অথ প্রদক্ষিণ। ততঃ প্রদক্ষিণাৎ কুর্যাৎ ভক্ত্যা ভগবতো হরে:। নামানি কর্তিয়ন্ শক্তো তাঞ্চাফাকনদনাং। প্রদক্ষিণাসংখ্যা চোক্তা। নার-নিংহে । একাং চণ্ড্যাৎ রবেঃ সপ্ত তিস্যোদদগারিনায়কে । চতদুঃ কেশবে দদ্যাৎ শিবেত্বর্জপ্রদক্ষিণার । ১৮১।। প্রদক্ষিণ মাহাত্ম্য বারাহে। প্রদক্ষিণার যে কুর্বান্ত ভক্তিযুক্তেন চেত্সা। নতে যমপুরৎ যান্তি যান্তি পুণাক্তাং গতিং।। २৮२।। याँ अमिकनः कूर्याः माधीक्रक अनामकः । ममाम्यस्मर ফলং প্রাপ্ত নামার । ক্রানের । প্রিক্সনারদস্যাদে। বিক্লেকিসানং যঃ কুর্য্যাৎ সক্ষম্ভক্ত প্রাপ্তদক্ষিণং । অশ্বনেধ্সহ্দদ্য ফল্ত যাপেতি মানবং । ১৮৩ ।। তত্ত্বৈ চাতুর্মাস্যমাহাত্মের। চতুর্দার ১ জ্রমাভিস্ত জগৎ সর্বাৎ চরাচর ১। ক্রান্তং ভৰতি বিশ্ৰাপ্তা তত্তীৰ্থগমনাধিকমিতি ৷৷ ১৮৪ ৷৷ তত্ত্বোন্ত্ৰ ৷ প্ৰদক্ষিণন্ত হং कूर्गा १ इति । ज्ञा ममन्त्रिः । इरमयू क्विमात्म विष्णुलाकर म शष्ट्रि। নারসিংছে। প্রদক্ষিণেন চৈকেন দেবদেবস্য মন্দিরে।কৃতেন যৎ ফলং নুণাৎ ভচ্চু পুষ ন্পাত্মজ। পৃথী প্রদক্ষিণফলৎ যতৎ প্রাপ্য হরিং ক্রজেং। অন্যত্র চাত্রবৎ ক্র, তুক্ষদ্য यः কুর্যাদ্যিঃ প্রদক্ষিণং। সপ্তদ্বীপবতী পুণাংলততে তুপদে পাদ। পা সয় মি ग হ সুন্ত নামানে । বাগ কেবল ১ । হরিভ ক্তি সুধাদরে । বিষণুং প্রদক্ষিণী কুর্মন্ যন্ত্রা বর্ত্তে পুনঃ। তদে বাবর্ত্তনং তমঃপ নাবর্ত্ততে ভবে।। ১৮৫ ।। বৃহয়ারদীয়ে হনভগীরথসম্বাদে ৷৷ প্রদক্ষিণত্রয়২ কুর্য্যাৎ ঘোরিফোর্মনুজেশ্ব ৷ সর্বপাপবিনি-मूं (क्ला प्रायन् पुरः ममभू र । ठरेवव श्रमिक्शमाञालाः । मूध्यां भाषाना तस्त ।

অগ্রাদিকং ভগবতঃ এব জ্ঞেয়ং। তত্ত্ব ন কুর্য্যাৎ। কেশবালয়ইতি আলয়বাতিরিক্তস্থানে ভু কুর্য্যাদিত্যর্থঃ॥ ১৭৯॥ শক্তশেশুহি ভূমৌ সক্ত্রিপতিতঃ সন্শিরশ্চা বনাদিমাত্ত্রণ মুছর্ন প্রণ-মেৎ। নমু তর্হি কথং প্রণমেন্তদাচ। উত্থায়েতি॥ ১৮০॥

শক্তৌ দতাাঞ্চ তাং প্রদক্ষিণাং অফাঙ্গেন বন্দনেন প্রণামেন সহিতাং কুর্য্যাৎ ।১৮১। পুণ্যমত্র ভক্তিলক্ষণং তং কুতাং ভক্তানামিত্যর্থঃ।১৮২। বিমানমিব বিমানং প্রাদাদং রথংবা ।১৮৩। ক্রান্তং পরি ক্রান্তং ভূমীপ্রদক্ষিণা । তীর্থগমনাদ্ধিকং ॥১৮৪॥ সপ্তদ্বীপরত্যাঃ প্রিয়াঃপুণাং দানেন প্রদক্ষিণী করণেন বা যৎকলং তদিত্যর্থঃ। অথেতি অথবা । আবর্ত্ততে পরিভ্রমতি ॥১৮৫॥ অপি নিক্ষয়ে।

ভক্তা কুর্ননি যে বিষ্ণেঃ প্রদক্ষিণচতু উয়ং। এতপি খাছি পরং স্থানং সর্বালোকোত নোত্মনিতি।। ১৮৬।। তৎ খ্যাতং যৎ সুধর্মায় পূর্বস্মিন্ গৃধু জননি। কৃষ্ণপ্রদক্ষিণা ভাসাবালাসিদিরভূদিতি॥ ১৮৭।।

प्यथ अमिन । विष्यु । विष्यु । विष्यु । विष्यु । विषया । विषया । विष्या । किष्या । विषया ।

অথ কর্মাদার্পনং। ততঃ শ্রীকৃষণাদাক্তে দানোটনর সমর্পরেং। ত্রিভিম্থিতঃ স্বকর্মানি সর্বাণাস্থানমপাথ।। ১৯০।। মন্ত্রাশ্রেন্ড। ইতঃ পূর্বং প্রাণনু ক্রিনেহ-শ্রাধিকারবভা জাগ্রহমপুনুষুপ্তাবস্থানু মনসা বাচঃ কর্মাণা হস্তাভাগং পড়ে শ্র্মান্তাং শিক্ষা বং মাতং হদুক্তং বংকতং তৎসর্বাৎ শ্রীক্রকার্পন্ৎ ভবত স্থাহা।। মাং মনীয়াঞ্চ সকলং হরার সমর্পরামীতি। ওঁতংসদিতি।। ১৯১।।

অথ তত্র কর্মার্পনিং। বৃহনারদীয়ে ।। বিরাগী চেৎ কর্মফলে ন কিঞ্চিপি কারবেং। অর্পনির হক্ষণ কর্ম প্রীয়ভামিতি নে ছরিং। ১৯২।। অতএব ক্র্মাপুরানে। গ্রীণান্ত ভগবানীশং কর্মাণানেন শাখতঃ। করোভি সততং বৃদ্ধান ব্রহ্মার্পনিদং পরং। যন্ত্রা ক্লানাং সংন্যাসং প্রক্র্যাৎ পরমেশ্বরে। কর্মণা ক্রেচ্প্যান্ত্র স্মার্পনিমন্ত্রমং। ১৯৩।।

অথ কম পিণবি ছি:। দক্ষেণ পাণিনার্ঘ সংগৃহীত্বা চুলুকোদকং। নিধার রুক্ষ্ণ পাদাজসমীপে তার্থনেদিদং। পাদত্তয়ক্রমাত্রান্ত তৈলোক্যেশ্বর কেশব। ত্বং প্রাদাদিদং তোরং পাল ১ তেন্ত জনার্দন। অথ কর্মার্পনমাহান্বাং। বৃহয়ারদীয়ে। পরলোক্যলপ্রপূস্ কুর্বনাং ক্মাণ্যতান্তিতঃ। হরেনিবৈদয়েতানি তৎসক্ষৎ

পুর্বোজসমূচ্যার বা। প্রযাতীতি বা পাঠঃ॥ ১৮৬॥ তৎ খ্যাতং বৃহনারদীয়তঃ প্রসিদ্ধমেন । অতস্থিশেবলিখনৈনালমিতিভাবঃ । কিন্তুদিতি পিখতি যথ স্থাধ্যমিদ্যতি । তদাখ্যারিক হৈ তবৈ প্রশিক্ষা॥ ১৮৭॥

অকালে ভোজনাদিসময়ে ॥ ১৮৮॥ ভ্রমরিকা আ ওঁবভুমণং তজপাং প্রদক্ষিণাং বৈব কুর্য্যাৎ। তত্ত্ব হেন্তঃ প্রভৌভগবভি বৈনুখ্যং পৃষ্ঠদানং তদ্য আপাদনাং কারিণীং ১১৮৯॥

দাসোনৈৰ ব্ৰহ্মাৰ্পণাদিৰপেশ। অধানস্তরং আত্মানমপি তথৈব সমপ্রেছ। ১৯০। মনবা যথ সমূতং বাচা যতুত্বং ছ্তাদিভিঃ কর্মণা যথ কুতমিতি সমক্ষা। তত্র শিশ্মাশিংশ্বান ৪১৯১।। ইরির্মে প্রীয়ভামিত্যেদং সমপ্রেছ। ১৯২॥ প্রাণাত্মিতি বুদ্ধা করে।তি যথ। পরং শ্রেভঃ নাতঃ কর্ত্তা স্বর্ধমেত্র ব্রক্তৈ ত্রা হত্র তত্ত্বাপ্রিং প্রোক্তমিতা।দিনা ত্রৈবোক্ত প্রকার -দর্শনারী। সংন্যাসং সম্পূর্ণ ক্রিণাদা সংন্যাসং।। ১৯৩॥

স্বক্ষর ভবেং। অতএব নারায়ণবূহস্তবে ক্ষণাপিতিফ্লাঃ ক্ষণ স্বধ্যমণি যজন্তি যে। বিশৃভক্তর্থিনো ধন্যা স্তেভ্যোপীহ নমোনমঃ।। ১৯৪।।

অথয়াপ্ণবিধিঃ ।। অহং ভগবাজাইংশোইনি সদা দাসে: ইমি সর্বাণা তংকপাপেককোনিতামিতাাল্লানং সমর্পায়ে ।। ১৯৫ ।। তথাচোক্তং জীশকরাচার্যপিদৈঃ । সভাপি ভেদাপগমে নাথ তবাহং ন মামকীনস্থা। সামুদ্রোই তরক্ষঃ কুচন সমুদ্রোন তারক্ষঃ ।। ১৯৬ ।। অথাল্লাপ্নমালাল্লাং । সপ্তমক্ষকো । প্রাথিকামই তি ঘোইভিহিত্সিবর্গ ঈক্ষা এয়ী নয়দমো বিবিধা চ বার্জা। মন্যে তদেতদ্থিলং নিগমস্য সভাৎ স্বাল্লাপণ্ণ স্বস্কুদঃ পরমস্য প্রাথা ১৯৭ ।। একাদশো জীভগবদ্ধাবস্থাদে। মর্ত্রোষদা তাক্তসমন্তক্মা নিবেদিতাল্লাং বিচিকীর্ষিতোমে । তদাসূত্রং প্রতিপদ্যোনা ময়াল্লভ্যায় চ কপ্পতে বৈ ।। ১৯৮ ।।

দকেণ দকিণেন। অর্চান্তং অর্ঘাপাত্রবন্তি চুলুক্মাতোদকং ॥ ১৯৪॥

অংশোস্মি ইত্যনেন নিত্যমুক্তশুদ্ধস্বভাবত্বাদিকং । অতঃ সদা দাসোহস্মীতি নিত্যদাসাং চ্ছতিপ্রেভং। এবং দর্ম্ম প্রকারেণ। যদ্ধা তথাপি দর্মেধা যা তথ্য ভগ্যত কুপা তথ্য অপেককঃ তদেকপ্রার্থক ইতি প্রেমপরতা হৃচিতা। ইতি এবমেবাল্লানং সম্যুগর্গয়েং নিবেদয়েং। নট্নৈক্যে-নেত্রর্থঃ॥১৯৫॥ তচ্চ মারাবাদ্যাহার্য্যোক্ত্যাপি সম্বাদরতি সত্যপীতি ভেদ্যা মারাক্ত্রবংসা-রিত্বাদেরপগমে বৃত্তেপি । আত্মতত্ত্বজ্ঞানে সতাপীতার্থঃ । তবা চং দাগেরীতার্থঃ নত্ত মানকী-নস্তঃ। অংশেনাং নিনোব্যাপকর্পেন্তবাং। তথা সতি সাম্যাপত্তেঃ। এবং ভেদাভেদসিদ্ধা-ন্থোক্তমভেদেপি ভেদং দৃষ্টাবেন সাধয়তি। সামুদ্রইতি। তরঙ্গ্য কলময়ত্বাদিনা শমুদ্রাদভিন্ন-ত্বেপি অংশতয়া পরিভিন্নত্বাদিনা ততোভিন্নএফেতি দিক্। এতচ্চ শ্রীভাগবতামৃত্টীকায়াই বিস্তরেণ বিবৃত্নে হাস্তি॥১৯৬॥ ধর্মোইর্জ: কামশেটি যন্ত্রিবর্জ:। তদর্থক যে ঈক্ষাদ্যা অভি-হিতা:। ঈক্ষা আত্মবিদ্যা ত্রয়ী ধর্মবিদ্যা নমুস্তর্কঃ দমোদগুনীতিঃ বিবিধাচ বার্দ্তা জীবিকা ভদেতৎ সর্বাং নিগম্প্য বেদ্স্যার্থজাতং স্বস্থ্যক্ত স্বান্তর্যামিগোনি জ্ঞান্তম্প্য বা প্রম্প্য পুরুষোত্তমদ্য জ্রীকৃষ্ণদ্য স্থাত্মপিং স্থাম্মনি অর্থং সংযোজনং। যদ্ধ স্থাম্মনঃ স্থাকীয়দেহদা মন-শোবা বিয়াজীবাত্মনস্তশ্মিন্নপর্যতেইনেনেতার্পণং তৎসাধনপ্রেভিহি সত্যং মন্যে সত্যপরত্বাৎ। অন্যথা তুতং দক্ষনসভানেৰ । অথবা তদেতদখিলং নিগমান্য তৈ গুণাৰিষ্য়ন্য প্ৰতিপাদ্যং মন্যে। সত্যং পুননি ত্রৈগুণালক্ষণং পরমৃষ্য পুংসঃ স্বাক্ষার্পণমেবেত্যর্থঃ। তথাচ এভগবদগী-তাস্থ। তৈওণাবিষয়া বেদা নিজৈপুণ্যোভবাজুনৈতি ॥ ১৯৭ । যদা ত্যক্তসমস্তক্ষা সন্ নিবেদিত:লা ভৰতি তদাংসৌ মে বিচিকীৰ্ষিত: প্রেমভক্ত্যাদি প্রদানেন বিশিষ্ট: কর্তু, মিষ্টো ভবতি। তদা চ অমৃতত্ত্বং সংসারধংসেন মরণাতীতত্ত্বং প্রমানন্দরসয়।। যদ্বা মমাধ্রামৃতং রোপ্যত্মেন স্পটং তদস্ক্তিঃ। অবিরতপানেন তত্ত্ব সংলগ্নত্তাৎ অভেদবিবক্ষায়াং ত্বপ্রতারঃ। প্রতিপদ্যমানঃ প্রাল্বন্ময়া সহ আত্মত্রায় অভ্যন্তবংযোগায় কপেতে যোগাঃ সমর্থোবা **खब्छि। देव अवश् ॥ २**२४ ॥

অথ জপঃ।। জপস্য প্রভঃ রুদ্ধা প্রাণায়ামন্ত্রয়ংবুধঃ। মন্ত্রাথা তিপূর্মঞ্জ জপেদক্টোন্তরংশভং। মূলৎ লেগান বিধিনা সদৈব জপমালয়া।। ১৯৯।। শক্তোন্তাবিকসাহসুৎজপেতৃৎ চার্পরন্ অপং। প্রাণায়ামাৎশ্চ রুদ্ধা ত্রীন্ দদ্যাৎ রুক্ষকরে
জলং।। তত্রচারৎ মন্ত্রঃ। গুহ্যাভিত্তহ্য গোপ্তা ত্রং গৃহাগাল্যৎকৃতং জপৎ। সিদ্ধিভবিত্ত
মে দেব ত্রং প্রসাদাৎ ত্রয়ি হিতে ইতি।। ২০০।। জপপ্রকারোঘোহপেক্ষ্যোমালাদিনিয়মাত্মকঃ। পুরশ্চর্যাপ্রসঙ্গে তুস বিলিথিয়তে হগ্রভঃ।।২০১। অর্পিতৎ
তঞ্চ সঞ্জিত্য স্থাক্ষতং প্রভুনাথিলং।পুনঃ স্তত্বা যথাশক্তি প্রণম্য প্রার্থরেদিদং।২০২।

অথ প্রার্থন । তাগমে । মন্ত্রহীনং ক্রিয়াহীনং ভক্তিহীনং ক্রন্দর্ম। যৎপূজিভং ময়া দেব পরিপূর্ণ তদন্ত মে । কিঞ্চা যদন্তং ভক্তিমাত্রেণ পর্তং পুজণং
কলং কলং। আবে দিতং নিবেদ দ্ব তদ্যাণানুকম্পরা । বিধিহীনং মন্ত্র্যীনং মং
কিঞ্চিদুপ শাদিতং। ক্রিয়ামন্ত্রবিহান্যা তংসকাং ক্রন্ত্রহান । কিঞ্চা অজ্ঞানাদথবা
জ্ঞানাদশুভং যন্ময়া ক্রতং । ক্রন্তর্যান তংসকাং দাস্যেনৈর গৃহাণ মাং ।।২০৩ ।।
স্থিতিঃ দেবা গতির্যাল্রা ম্বাতিশিচ্ছা স্থৃতির্বাচঃ। ভূয়াংসর্ব্যাল্বনা বিফো মদীয়ং ছরি
চেটিতং ।। ২০৪ ।। অপিচ । ক্রন্ত রাম মুকুদ্দ বামন বাসুদেব জ্বন্দুরো। মংস্যাক্তিশ নার সিংভ বরাহ রাঘন পাহি মাং। দেবদানবনারদ দিবন্দ্য দয়ানিধে দেবকী
সূত দেহি মে তব পাদভক্তিসচলাং। জ্ঞাবিষ্ণুপুরাণে। নাথ যোনিসহস্ত্রেষু যেষু হেষু
ব্রজাম্যহং। তেষু তেষ্ট্রতা ভক্তিরচ্যতান্ত সদ। স্বর্য় ।২০৫। যা প্রীতিরবিবেকানাং

মন্ত্রনার্গঃ অভিধেরং তসা আতিরসুসন্ধানং তংপুর্বারং মূলং নিজমন্ত্রং লেখ্যেন অগ্রে পুরশ্চরণ প্রকরণে লিথিযামাণেন বিধিনা। অর্থশ্চ পূর্বাতাপন্যান্থাক্তানুসারেণ ভত্তচ সর্বানা জপমালনীয়েব অটোন্তরশতবারনে জপেং। অর্থশ্চ পূর্বাতাপনীয়াদ্যুক্তানুসারেণ জ্যেঃ। তথাচ ক্রমদীপিকারাং। আহেতি স্বান্ধানক্রময়ামীতি স্বতৈজনে তথ্যৈ ইতি তথা। অথবা ব্রজ্যবতীনাং দরিত য় জুহোমি মাং মদীয়মপীতি। এবং শ্রভগবজরগারবিন্দে আত্মসমর্থকাপ এবার্থ ইতি দিক্ মচন্ত্রমা শক্তশ্চেদটাধিক সক্রবারান্ সংজপেং। তঞ্চ জপং সমপয়ন্ শ্রভগবতি হিতে সাক্ষাম্বর্তানে শতিষ্বা অর্থিয়িত ব্রিক্তিয়ে জনস্থান্য গিদ্ধিং সা মে ভবত্ত মহল্লা আদিশকাং অঙ্গুল্য দিবাগাদিচ। গোহতো লেখিয়তে। তত্ত এব জ্যের ইতিভাবং ॥ ২০১॥ ভগবত্যপিতং তঞ্জপম-থিলং প্রভ্না ভগবতা স্বীকৃত্মিতি সঞ্জিয়া। ২০২॥

আবেদিতং সমর্পিতং ॥২০৩॥ যত্র কুত্রাপি কথঞ্জিন্ম স্থিতির দ্বাবস্থানং তব সেবারপা ভবত্বিতার্থং। এবমন্য দপ্তাহাং। ইপাং সর্ব্বাহ্মনা মদীয়ং চেণ্টিতং ব্রয়ি ভূয়াং ব্রন্থ জিনপং ভব-বিত্তার্থং॥২০৪॥ অচ্যতা অব্যক্তিচারিনী॥২০৫॥ যা যাদুশী প্রীতিরবিবেকানাং বিষয়াসক্রানাং বিষয়ের অনপায়িনী অব্যবচ্ছিন্না ভবতি। সা তাদুশী প্রীতিং ব্রামরুম্মরতং সভ্তোমক্রম্যাৎ নাপসর্পন্ত নাপ্যান্ত সদা ব্রুম্মরেশে সংপদ্যতামিত্যর্থ। যদা হে মাপ হে শক্ষীপতে

বিষয়েষ্যপারিনী। ত্রামনুষারতঃ সামে হাদয়ায়াপসপতি। পাগুবগীতায়াং। কীটেষু প্রিত্ব ম্গেষু সরীস্পেবু রক্ষঃপিশাচমনুজেষ্পি হত্র তত্র। জাতস্য মে ভবজু কেশব তে প্রসাদাৎ ত্বেয়ের ভক্তিরভলাহ্ব্যভিচারিনী চ। পাল্ম। যুবভীনাং হয়, যুনি যুনাঞ্চ যুবভৌষ্থা। মনোভির্মতে তদ্বমনোমে র্মতাং ভ্রি।২০৬।

অথাপরাধাঃ। আগমে। হানৈর্বাঃ পার্লুকরাপি গমনং ভগনক্ছে। দেবেংং সবাদ্যসৈবা চ অপ্রামন্তন্ত্রা উচ্ছিটো ব ক্যবাহনেতি ভগনদর্শনাদিকং। এক-ছেন্তপ্রনামন্ত ভৎপুরন্তাৎ প্রদক্ষিণং। পাদপ্রসাহণং চাংগ্র তথা পর্যক্ষরকানং। শরন্থ ভক্ষণং বাপি মিথাভাষণমের চা উচ্ছেন্তায়। মিথোজপোরোদনানি চ বিগ্রহা। নিগ্রহানু গ্রহৌ চৈর নূরু চ ক্রুরভাষণং। ক্যলাবরণং চৈর পরনিন্দা পরভ্তিঃ। অশ্লীল ভাষণং চৈর অধাবায়ুবিমোক্ষণং। শাক্তৌ গৌণোপচারক্চ অনিবেদভঙ্কানা ভাষণং চৈর অধাবায়ুবিমোক্ষণং। শাক্তৌ গৌণোপচারক্চ অনিবেদভঙ্কানা । ততৎকালোডুবানাক্ষ ফ্লাদীনামনর্পাণং। বিনিযুক্তাবিশিন্তম্য প্রদানং ব্যক্তমাদিকে। পৃত্যক্রভাসনং চৈর পরেবামভিবাদনং। গুরেনিনিং নিজন্তোত্রং দেবতানিক্ষনং তথা। অপরাধান্তথাবিফোদ্বিতিংশং পরিকীন্তিভাঃ। ২০৮া। বারাছে। দ্বাত্রিশাদপরাধা হে কীর্ত্যন্তে বসুধে ময়া। বৈক্ষবেন সদাতে ভ্রক্তিনীয়া প্রযন্ত্রভা যে বৈ ন বক্তর্যন্ত্রেভান্ অপরাধান্ ময়োদিভান্। সর্ব্রেগ্রা পারিভ্রটাঃ পার্লিঙ নরকে চিরং। ব্রাক্ষান্তক্ষণগৈক্ষাপদঃপি ভয়াবহং। পৃত্যগ্রেভিন্তাঃ পার্লিঙ সরকে চিরং। ব্রাক্ষান্তক্ষণগৈক্ষাপদঃপি ভয়াবহং। পৃত্যগারে হরেঃ স্পর্দাং পরং সুক্রতনান্দনং। ২০১। তবৈব বিনিযুল্লন্তা সহসা স্পর্মন্ত্রা হরেঃ ব্রাদ্যান্তাবিনা বাদ্যং ক্রোভ্রমাংশ নিবেদনং। ২০০। পাদুকাভ্যাং

মেব প্রাণান্ ত্যক্যানীতি ভাবং ॥ ২০৭ ॥

সা বিষয়া প্রীতিস্থামসুম্মরতো মে হৃদয়াৎ সর্পত্ত নির্গান্ত । তংগ্রীতৌ সত্যাণ রদলুম্মরণাসিদ্ধে রিত্যর্থঃ। যদা হৃৎঅরতে স্থভাবতঃ প্রাপ্রভীতি হৃদয়া বিষয়া গৃহপুত্রাদয়োবা তান্ কদাচিৎ কালাতরে স্মরতোপি মে সা প্রীতিস্থামসুলক্ষীরত্য অনপায়িনী সতী সর্পত্ত প্র সরত। অবি-বেরানামপি কদাচিৎ বিষয়েষু প্রীতেরপায়ং বুঞ্চাং চাশস্যোকং অনপায়িনীতি।। ১০৬॥ নমু ত্রাপরাধাঃ কান্যা ন ভবতীতি চেক্তত্র বিশ্বতি প্রতিজ্ঞেতি। অন্যথাই পরাধাচরণানস্তর-

অগ্র ইতাত্বর্ত্ত এব বায়ুবিযোক্ষণনিতান্ত:। তথা পৃথীক্ত তাদনমিতাত পরেবামভিবাদন মিতাত্রাপি জ্বেয়ং। গুরৌ মৌনং স্তৃত্যাদ্যকরণং।। ২০৮॥ একমপরাধং বিজ্ঞানীয়াদিতি শেষঃ একং কেবলমিতি বা ॥২০৯॥ বিধিমুল্লয়্য আচমনাদিকসক্ষেত্রর্থঃ ॥২১০॥ কলনং

তথা বিষ্ণে ম নিরায়োপসর্পাণ । কুরুরোচিছ্টকলনং মৌনভঙ্গোইচুতার্চানে। তথা পূজনকালে চ বিজ্ৎসর্গায় সর্পন্থ। আদ্ধাদিক মক্ত্রাচ নবায়স্য চ ভক্ষণং। অদ্ত্রা গল্পান্যাদি ধূপনং মধুঘাতিনঃ । অক্সন্প্রসূনেন পূজনঞ্চ হরেস্তথা। व्यक्षा परका छेश क्ष क्ष नियुत्त प्रथा। व्या क्ष्म काश मीशः छ्या गृष्का सत ह। तकः नीनमाथी उक्ष भातकाः मनिमः भष्ट। भतिथात मृष्टः मृख्या विमूहााभान মারুতং। ক্রোধং ক্রত্বা শালানঞ্চ গত্বা ভূত্বাপ্যকার্ণভূক্ । ভক্ষত্রত্বা ক্রোড্মাংসং পিণ্যাকং জালপাদকং। তথা কুসুভ শাক্ষ তৈলাভ্যত্তং বিধায় চ। হরেঃস্পর্টো-হরেঃ কম্মকরণং পাতকাবহং।।২১১।। কিঞ্চতত্ত্রেব।মম শাস্ত্রংবহিষ্ত্য ভাগাকং যঃ প্রপদ্যতে। মুক্তা চ মম শাস্তাণি শাস্ত্রমন্থ প্রভাষতে।। ২১২।। মদ্যপন্ত সমাসাদ্য প্রবিশেদ্ভবনং মম।। ২১৩।। যোমে কুসুভশাকেন প্রাপণং কুরুতে নরঃ। অপিচ। মম দৃষ্টের ভিমুখৎ ভাষুলৎ চর্বয়েভু যঃ। ক্রবকপলাশভৈঃ পুলেজঃ কুর্ঘ্যান্মশার্জনং। মমার্জামাসুরে কালেষঃ করে।তি বিমূচ্ধীঃ। পীঠাসনোপ বিষ্টোহঃ পূজ্যেলা নিরাসন । বামহস্তেন মাং ধূজা লাপয়েলা বিমূচধীঃ। পূজাপযুঁচিষতৈঃ পুटेणाः श्रीवनः गर्यकल्भनः ।। २.४ ।। ভির্যাক্পুণ্ডুধরোভূত্বা यः করে।তি মসার্চনং । বাচিতৈঃ পত্রপুস্পাদৈ। ফার্কাভি মমার্কন । অপ্রকালিভপাদোষঃ প্রবিশেমম गिनिदः। चरिक्षवमः भिक्वां श्वामहाः विनिद्यम्द्यः । चर्विक्षद्यं भिनाः दम् सम পূজাৎ করোতি যা। অগুজ্যিতা বিঘেশং সম্ভাষ্য কপালিনং ॥ ২১৫॥ নরঃ পূজান্ত যাকুর্যনাৎ স্লপনঞ্চ নথান্তসা। অমৌনী মর্মালিপ্তাঙ্গো মম পূজাৎ করোতি য়ঃ।। ২১৬।। ভেয়াংপরেপি বহবোহপরাধাঃ সদসংমতৈঃ ভোচারেঃ শাস্ত্রবিহিত নিষিদ্ধাতি ক্রমাদিভিঃ। তত্রাপিসর্ব্বথা কৃষ্ণনির্মাল্যন্ত ন লম্বয়েৎ। তথাচ নারসিংহে শান্তনুং প্রতি নারদবাক্যং। অতঃ পারন্ত নিমালিয়ং ন লার্য মহীপতে। নরসিং-হস দেবস্য তথানে যোগ দিবৌকসা। রক্ষস্য পরিতোহে প্সুর্ন ভচ্ছপথমাচরে । नान। দেবসা নির্মাল। মুপযুঞ্জীত চ কৃচিং। তথা বিষ্ণুধার্ম তরে। আপদাপি চ কন্টায়াৎ দেবেশালপথং নবঃ। ন করোতি হি যো ব্রহ্মৎস্তম্য ভুষ্যভি কেশবঃ।

স্পাদনং ।।২১১॥ মণ শাস্ত্রং মহুক্তং পঞ্চরাত্রাদি যদা ভক্তিপ্রধানং বহিদ্ধৃত্য অনাদৃত্য। অন্মাকং অস্মান্ ।।২১২॥ ভবনং সমাসাদ্য প্রাপ্য বিশেষ। যদা সমাসাদ্যতি ভূত্বা ইতার্কঃ। মদ্যপনিতি দিতীয়ান্দপাঠোক।। ভতক্ষ সমাসাদ্য সমাগ্রম্য স্প্রেইতার্কঃ।২১৩॥ প্রাপ্তরং ইবরেদাং। চীবনং গঠাকস্পনঞ্চেতি দয়ং ভগবদালয়ে জ্যোং॥২১৪॥ যাতিইতঃ যাতিত্বাগৃহীতেঃ শক্তো সভ্যামিতি শেষঃ॥২১৫॥ নথান্ত্রদা নথস্প্রক্রেনে।।২১৩॥ ন কেবলমেতারন্তএর অন্যেপি সন্তীতি লিখতি জ্যোইতি সভাং বৈক্ষানাস্থ্যতৈরাচরেঃ গ্রা হেড্ডিকা ভামের লিখতি

ন ধারয়তি নিমালিঃমন্যাদেবধৃতস্ত যং ৷ ভুংক্তে ন চান্যানিয়েদ্ ৷ তস্য ভ্রাপ্তি
কেশব ইতি ৷ অথাপরাধশমনং ৷ সমুৎসরস্য মধ্যে চ তীর্থেশেকিবকে মম ৷
কতোপবাসং স্নানেন গলায়াং শুদ্ধিনাগুয়াং ৷ মথুরায়াং ৷ভথাপ্যেং সাগরাধঃ
শুচিভবিং ৷ অনয়োন্তার্থয়ায়েকে যং সেবেং সুক্তা নরং ৷ সহসুজন জনিতানপরাধান জহাতি সং ৷ কার্নেদ ৷ অহন্যহনি যোমর্জ্বো গীভাধ্যায়স্ত সংপঠেং ৷
ভাত্রিংশদপরাধৈত অহন্যহনি মুচ্যতে ৷ অত্র কার্ত্তিকমাহাজ্যেঃ ৷ ভলস্যা কুরুতে
যক্ত শালগ্রামশিলার্চনং ৷ দাত্রিংশদপরাধাংশ্চ ক্রমতে তস্য কেশবং ৷ তত্রবা
ন্যত্র ৷ দাদশ্যাং জাগরে বিফোর্যং পঠেতলসীন্তবং ৷ দাত্রিংশদপরাধানি ক্রমতে
তস্য কেশবং ৷ যাং করোতি হরেঃপূলাং ক্রমশন্তাক্ষিতোনবং ৷ অপরাধ সহসুনি
নিত্যং হরতিকেশব ইতি ৷৷ ২০৭ ৷৷ তথাশেষপ্রহণং ৷ ততোভগবতে দতং মন্যানা দ্যালুনা ৷ মহাপ্রসাদ ইত্যক্তা শেষং শিরসি ধারয়েও ৷৷ ২০৮ ৷৷

অথ নির্মাল্যধারণনিত্যতা। পালে প্রীগোতমায়্রীষ্দয়াদ। অয়্রীষ্ হরেলয়ং নীরং প্রতাথ বিলেপনং। ভক্ত্যান ধতে শির্ষা শপচাদধিকোহিকাঃ। অথ প্রীভগনিয়্যাল্যমাহাল্যং। কান্দে ব্রহ্মনারদময়াদে। কুন্দোতীর্ণস্ক নির্মাল্যং যস্যাক্ষ্ণ স্থাতে মুনে। সর্বরোগৈত্তথা পাপেনু কো হবতি নারদ। বিফোর্নির্মাল্যংশাদে যোগাত্রং পরিমার্ক্তরেং। দুরিতানি বিন্দান্তি ব্যাধয়োঘান্তি থপ্তশঃ। মুন্দেরিরি দেহে তুরিস্কৃতীর্ণান্ত যোরহেং। ভলসীং মুন্দাদ্রিল ন তস্য স্পৃশতে কলিঃ।।২১৯।। কিল্প। বিস্কৃত্যুতিস্থিতং পুণ্যং শির্সা যোবহেয়রঃ। অপর্যুক্তি পাপস্থ হাবন্দ্রগুত্তকীয়ে। কিং করিষ্যতি সুমাতো গঙ্গায়াং ভূসুরোত্রন। যোবহেং শিরসা নিত্যং ভলসীং বিষ্ণুসেবিতাং। বিষ্ণুপাদান্তসংলগ্রামহোরাত্রো বিতাং শুভাং। ভলসীং ধারয়েন্দ্রোবৈ তস্য পুণ্যমনন্তকং।২২০। অহোরাত্রং শিরে হসঃভলসী বিষ্ণুসেবিতা। ন স লিপ্যতি পাপেন পদ্যাত্রমিবান্তমা।২২১।। কিঞ্চ। বিফোঃ শিরঃপরিম্রন্তাং ভক্ত্যা যস্তলসীং বহেং । কিল্পতি সর্বার্মাণ ক্রিয়াহিত্বলিচ। অপি চ।প্রমান্ত্র্যাতি যোদেহং প্রলস্যা বৈষ্ণাবানরঃ। সর্বতীর্থসয়ং দেহং, তংক্ষণাৎ দ্বিক্ত জায়তো। ২২২।। গারুড়ো। হ্রেম্ ব্রির শ্বন্ধ ভলসীকান্তি-চন্দনং। নির্মাল্যেশ্বর বেল্বন্ত কোটিতীর্থকলংলভেং। নারদপঞ্চরাতে। ভোজনা-চন্দনং। নির্মাল্যেশ্ব ব্রেদ্বস্থ কোটিতীর্থকলংলভেং। নারদপঞ্চরাতে। ভোজনা-

শাত্রেভি।শাত্রেণ বিহিতং নিষিদ্ধঞ্চ যথ তদত্তিক্রমাদিভিঃ। ক্লাদিশব্দেন নিজসম্পুদায়াচারাভি ক্রমাদয়ঃ॥২১৭॥ শেষং নির্মাল্যং॥২১৮॥

নির্মাল্যং অমুলেপনাদি পুণ্যং <u>শীক্তলস্যাদি ॥ ২১৯ ॥ অপুর্যুষিতপাপং সদ্যং সংক্ষীণ</u> প্রাপঃ ॥ ২২০॥ শিরে শির্সি। ন লিপ্যতি ন লিপ্যতে ॥ ২২১॥ বৈক্ষর ইত্যনেন শীভগ্রম্বি-র্মাল্যক্তলস্যোতি বোধাং॥ ২২২॥ প্রাপাম্বিশোকং নিংশেষেণ মুক্তিশান্তারণশতাদপ্যধিকঃ নন্তরং বিক্ষার পিত। জলসীদল। । তৎক্ষণাথ পাপনির্ফাকশ্যারণশতাধিকঃ
।। ২২৩ । কিঞ্চান্ত্র। কৌত্তকং শৃণু মে দেবি বিক্ষোনির্ফাল্যবিছ্ননা। তাপিতং
নাশ্যায়াতি ব্রহ্মহত্যাদিপাতকং। একাদশক্ষে । প্রীভগবন্তং প্রত্যুদ্ধবাক্তো।
ত্বয়োপযুক্তসুগ্গন্ধবাসোহলক্ষারচর্চিতাঃ। উচ্ছিটভোজিনোদাসান্তব মায়াপ্তয়েমহি। অতএব ক্ষাদেদ প্রীযমস্য দূতানুশাসনে। পাদোদকরতা যে চহরেনির্ফাল্যধারকাঃ। বিষ্ণুভক্তিরতা যে কৈতেতু ত্যাজাঃ সৃদ্রতঃ ইতি।। বিসম্ভানন্ত চেথ
কার্যাৎ বিস্কাবরণানি তথা দেবে তন্মুদ্রয়া প্রার্থ্য দেবং ক্ষাদি বিসম্ভারেথ। তথাচোক্রং। পূজিতোসি ময়া ভক্ত্যা ভগবন কমলাপতে। সলক্ষ্যকো মম স্বান্তং বিশ্ববিশান্তিহেতবে। প্রার্থিবং পাদুকে দক্ত্য সাক্ষমুদ্বাসয়েন্ধরিৎ। প্রাণারামং ষড়ক্ষ
ক্ষা মুদ্রাৎ বিস্ক্রনিৎ।। ২২৪।।

অগ পজা বিধিবিবেকঃ। অয়ং পূজাবিধিমন্ত্রিনিদ্বার্থনা জপন্য হি। তক্তৎভক্তেন্ত ভন্নিটেন্যানাদীনন্তরেহ্যতে য় ২২৫॥ তত্র দেবালয়ে পূজা নিত্যত্বেন মহাপ্রভাঃ।

ইতি স্বাসনাশেষপাপসঞ্যুক্ষপণাৎ ॥২২৩॥ নির্দ্ধাল্যং প্রসাদন্তলস্যাদি তদেব বহিংস্তেন তাসিতং দক্ষং সং॥২২৪॥

এবং ক্রমদীপিকাছাজ্ঞানুসারেণ প্রায়ঃ কামপরাণাং পূজাবিধিং লিখিত্বা ইদানীং জীভগব-खु जिन्ना ना श्रमाविधिः उदेव विज्ञा मन्त्रि असमिति भक्षमामिविमामह खर्षे रसन निधि-ভোয়ং পূজাবিধিঃ জীভগবদর্চনপ্রকারঃ জপস্য অঙ্গং ক্রমদীপিকাদ্যভিপ্রেতস্য ভত্তংকানেন জপটেদ্যব তত্ৰ প্ৰাধান্যাৎ । কৰ্জুত্দ্য মন্ত্ৰদ্য দিদ্ধিঃ দাধনং টেদৰ অৰ্থঃ প্ৰয়োজনং যদ্য তস্য। অতস্ত তৎফলার্থণ জ্ঞাপন মন্ত্রসাধন সৈয়ব বিধেয়ত্বাৎ মন্ত্রাদীনাং জ্ঞানতা সহাভেদা-পাদনার্থং তপ্তর্যাদাদিকমিতি ভাব:। ভক্তে নববিধায়ান্ত অঞ্চং যঃ পুজাবিধিঃ স চ ন্যাসাদীন্ প্রকারান অন্তরা বিনৈত্র ভত্তি নিঠেরিষ্যতে। আদিশব্দেন আবাহনাদিকতিপয়মুদ্রাদি চ। ভক্তি পরেঃ শাক্ষান্তগবদ্ব ছ্যা খ্রীমূর্ত্ত্যাদিপুজ্বন ন্যাসাদ্যযোগাদিত্যেষা দিক্ ॥২২৫॥ ভক্ত্যক্র-পূজাবিধৌ চ দেবালয়নি জগৃহভেদেন কথঞ্চিদ্তেদমপি পরং দর্শয়তি। তত্ত্রতি। তত্মিন্ ভক্তাঞ্চ शृकाविषो या मिवालाय निकाश्चार शृथक्त्यन किवल जगवनर अधिकरी निर्माट मनित शूर्व-সিদ্ধে বা দেবকু শদৌ মহাপ্রভো: শ্রীভগবত: শ্রীকৃষ্ণস্য পূজা। সা তছপাসকানাং নিত্যত্ত্বেন কা-ম্যত্বেনাপি মতা ভক্তিনিষ্ঠিঃ। একাদশীব্রতাদিবদিত্যত্র দৃষ্টান্তোদ্রউব্যঃ। মহাপ্রভোরিতি নিত্য-ত্বেকাম্যত্বে চ হেল্কক্ষেয়ঃ। তলৈয়বাগুজনে মহাদোষশ্ৰবণাৎ পূজনেচাশেষ ৰাঞ্জিতবাঞ্জিতি-ফলসিন্দেশ্য। তৎস্কামত্রে তৎপ্রকরণে ব্যক্তং ভাবি। গেহে নিজগৃহে চ যা পূজা দা প্রামেশনিত্য-ত্বেনৈর মতা। এবং দেবালয়ে পূজায়ানিভাতয়াবশাকর্ত্বাত্বাদকরণে প্রভাবায়ঃ।সম্পাদনগৃ ভস্যাঃ কেৰলং কৰ্ত্তব্যত্মেন শ্ৰীভগৰৎপ্ৰত্যুদ্দেশেন বা। কামাতয়া চ তত্তৎফলাপেক্ষয়া যথাবিধি শ্রেষ্ঠপ্রেষ্ঠদ্রব্যুদ্মপ্রাদি কালানতিক্রমণমপ্রাধ্বর্জ্জনাদিকঞ্জেয়ং। গৃহে চুনিত্যত্ত্বেন কেবল-মকরণে প্রত্যবায় পরিহারাৎ ফলাস্থ্যস্থানাভাবাচ নিজনিয়ম পরিপালনাস্থারেণ স্থগ্ছদিজ-क्रियार्भिगाषिकरम्यवि । यमाभि विश्विद्धावारमे मिछाकर्मनाभि मामानारका जन्मत्नाकार्मिकाथिः

কাম্যত্ব্যাপি গেহে জু প্রায়োনিত্যতয়: মতা ।।২২৬। সেবাদিনিয়মোদেবালয়ে দেবস্য চেষ্যতে । প্রায়ঃ স্বগেহে স্বচ্ছন্দমেবা স্বত্ত তরক্ষয়।।। ২২৭।।

ফলং যথা জায়তেতথাত্রাপি প্রমপদপ্রাপ্তিঃ ফলমস্তোব তথাপি সেবকৈস্তত্রাকুস্দোরং । কেবলং কর্ত্তব্যত্ত্বেলৈবকার্যামিত্যুক্তং। প্রায়ইতানেন দেবালয়বদ্গৃহেপি ক্স্যচিৎ ক্দাচিৎ ক্রেচিৎ কামে-নাপি পু**জা সন্ম**তেতি ॥২২৬॥ তদেবাভিবাঞ্জয়ন্ তত্ত্ত ভেদফলং লিখতি সেবাদীতি। দেৰস্য ভগৰতঃ সেবায়াঃ ভক্তি বিশেষেণ পূজায়া নিয়মঃ যশ্মিন্ কালে যেন ক্ৰোণ যথা যেন কৰ্ত্ৰ কাৰ্য্যত্যাদিৰপঃ। তথা যদ্যৎ প্ৰিয়তমং লোকে যচ্চাতিপ্ৰিয়ম অনঃ। ইত্যাদি বচনাত্মারেণ তত্তদুব্যাপণৰূপশ্চ। তথা কেবলং শ্ৰীভগৰতদেশেনৈৰ যথাকালং নিত্যনিয়মিতভোগাৰ্পণাদি-ৰূপশ্চ আদিশব্দাৎ অগ্ৰে পৃষ্ঠে ব'মভাগে ইত্যাদিবচন।মুসারেণ যশ্মিন্ স্থানে যথা নমস্কার্য্যমিতি প্রণামনিয়মঃ। তথা যত্র ভোজনাদিকমুপযুক্তাতে তত্তিব তৎ কর্ত্তব্যমিত্যাদিপ্রকারকো বারাহা-ভ্যক্তদেবালয় বিষয়কাপরাধপরিহারাদি নিয়মশ্চেষ্যতে ভক্তিনিটেঃ। অন্যথা সম্যক্কলাসিক্ষেঃ। অতোত্ৰতদিনেপ্যন্যদিনবদ্ধোগসমর্পণং সন্মতং স্যাৎ।এবং কেচিদ্ধ্যদশ্যাৎ দিবাপি ভগবতং স্থাপন মিচ্ছন্তি নিজগৃতে তুস্বচ্ছনেদন নিজেচ্ছয়া বেষ্যতে। যদা ঘত যেন জবোণ যথা দেবা কর্তু শকাতে ভদা ভত্ত ভেন ভথা কাৰ্য্য। নম্ভ কালদেশ দ্ৰব্যাদিনিয়গেনেভাৰ্থঃ। গৃহস্থানামৰশা রুতা কুটুয়ভরণাদিব্যপোরপরতয়া নিজ্ঞভূত্যাতিখ্যাদ্যপেক্ষয়া চ তত্তলিয়মাদিক্ষেঃঅভোনিজপরিবার-বৈষ্ণবাভাগেত দ্যাপেক্ষয়া ভগবদর্প্য ভোগস্য কদাচিদ্বছলত। ২পেতা চ স্যাৎ। তত্র চ স্বশ্য আञ्चात्री यम जः निव्नमः देवस्वताञ्चन निजाः वृष्टाक्रममुत्रानिवर्ज्जनः नभागात्मी कावानिवर्ज्जनः চান্তর্মান্যানে শাকাদিকলিঞ্চাদি বর্জ্জনঞ্ তথ্। দ্বাদশ্যনতিক্রমণাদিকঞ্ তস্য রক্ষয়। তৎপরি-পালনাসুসারেণেত্যর্থঃ। অত্তেত্তেভদিনে কেচিদন্নঞ্জন সমর্পয়ন্তি। এবং বদা যাবেষ্বায়োপভোগ ধোগ্যানি তদা তান্যের ভগরতে সমর্প্যাণীতি ভাবং। যদি বা ভক্তিবিশেষতঃ কদাচি গ্রানি সমর্প্রেন্ ভদা নিজ্রতাপেক্য়া স্বয়ং নোপ্যোক্তবানি কল্মৈচিছৈফ্বায় দেয়ানি জলে ৰাহপ্যাণি। একান্তিভিশ্চ ভাৰবিশেষেণ চেন্ত নি স্বয়নুপ্যুক্ষোৱন্। তত্ত তেষাং ব্ৰচাদাবনধি কারাত্র কোপি দোষো ঘটেতেভাগ্রে লেখ্যমের। প্রায় ইত্যানের চ দেবালয় ইব ভক্তিবিশেষেণ ক্সাচিৎ ক্লাচিৎ কৃশ্চিৎ সেবানিয়মোইভিপ্সেতঃ। এতচ্চ লৌকিকেন সেবাশব্দেনাপি লৌকিক-বন্ধুবং শ্রীভগবতি স্চিতেন ভাববিশেষেণাকুমতমের। যদাপি স্বব্রতরক্ষয়েত্যতাপি প্রায়ঃ শব্দ সমুদ্ধৈ ক্লতে কদাচিৎ কন্যচিদ্ধক্তিবিশেষেণ নিজব্রতানাদরশ্চাপদ্যতে। তথাপি ক্রফণ্ডদ্য পরাং-মুখইত্যাদিবচনাং কার্দ্তিকাদিব্রভাকরণেমহাদোষ শ্রবণাৎ। বৈফবৈঃ স্বব্রতং পরিপালামেবেতি তথা ন বাংগ্যায়ং। কিঞা। যদ্যপি গৃহেপি পৃত্বাপরাধবর্ক্সনাদিকমপেকতে। তথাপি উটৈচ-ভাষামিথোজপেইত্যাদ্যপ্রাধানাং প্রায়োগৃহে বর্জনস্যাবশ্যকত্বাৎ তত্তন্নিয়মো ন সম্ভবেদিতি জ্ঞেরং। ইত্যং চৈককালং দ্বিকালং বেত্যাদিবচনাৎ এককালমপি পূজা। তথা নিজগৃহপ্রদেশে সমাবেশেন যত্তকুত্রাপি ভগবতে নমস্কারঃ জীভগবৎপুরতো ভোজনঞ্চোপপদ্যতে। এব-মন্যদপুষ্থে। এবমের সর্বামবিকৃদ্ধমনবদ্যঞ্জ সাং । অন্যথা দ্বাজিংশদপরাধের ভগবদপ্রতো-ন্তলসীবিমিশ্রিতমিত্যাদৌ মুরারে: পুরতোভোজনে **ट्या क नित्यध**मा । टेनटव का ट्याय **স হাগুণতরা বিধান**শ্য চেত্যাদে<del>বাছ</del>লবিরোধাপত্তেরিত্যেবা দিক্ ॥ ২২৭

কিঞ্চ। বিষযুধ্যোত্তরে । ঘৃতেন সুপিতৎ দেবৎ চন্দনেনানুলেপয়েৎ। সিভজাত গশ্চ কুসুনৈঃ পূজ্বে তদনত্তরং। খেতেন বস্তুম্গোন তথা মুক্তাফলৈঃ শুভিঃ। মুখ্যকপূর খুপেন পয়সা পায়সেন চ। পঅসূত্রস্য বর্ত্তাচ ঘৃতধুপেন চাপাথ। পূজ্বে প্রথা যত্তাৎ সর্বকামপ্রনাজনাৎ। ক্লেমাং মুচ্যতেরোগা বোগাৎ শাঘুমসংশ্বং। দৃঃথার্ত্তে মুচ্যতে দুঃখাৎ বদ্ধামুচ্যতে বন্ধনাৎ। রাজপ্রস্তশ্চ মুচ্যেত তথা রাজ্য ভ্যামরঃ।ক্ষেমেন্গত্তেদধানৎ সর্বানর্থবিবক্সিতঃ। ইতি জীগোপালভাটবিলিখিতে জীভগবড় জিবিলাসে প্রাত্রকাসমাপনোনামান্টমোবিলাসঃ।। ২২৮।।

<sup>॥</sup> ২২৮॥ ইতি শ্রীহরিভক্তিবিলাসটীকায়াং দিগ্দর্শিন্যাং অইনোবিলাসঃ॥

## नवम् विवामः।

স প্রসীদন্ত চৈতন্যদেবোষণ্য প্রসাদতঃ। মহাপ্রসাদজাতার্চঃ সদ্যঃ স্যাদধ্য মোপ্যায়ং ।। > ।। অথশাখাদকং তক্ত ধ্রুফদ্টিসুধোজিতং। বৈষ্ণবেভ্যঃ প্রদান্যাভিবন্দ্য মূর্দ্ধনি ধারয়েং ।। ২।। শাখাদকমাহাজ্মং । ক্ষান্দে ব্রহ্মনারদসমাদে । শাখাদকং হরের্ভজিনির্মাল্যং পাদয়োজ্জলং। চন্দনং ধূপশোষত্র ব্রহ্মহত্যাপহাকং । তাব্রেব শাখামাহাজ্মো। শাখা স্থিতন্ত যভোয়ং ভামিতং কেশবোপরি। বন্দতে শিরসা নিত্যং গঙ্গাস্থানেন তস্য কিং ।। ৪।। ন দাছো ন ক্রমো নার্ভিন্রকারিভয়ং নহি। যস্য শাখাদকং মূর্দ্ধি কৃষ্ণ্ট্যাবলোকিতং। ন গ্রহানচ কুমাণ্ডাঃ

অধুনা মহাপ্রসাদপ্রকরণং লিপ্রন্পরমগুরুঞ্জীভগবৎপ্রসাদং প্রার্থিয়তে স ইতি । মহাপ্রসাদে। নাম ভগবছ্চিফীদি তস্য জাতং সমুচ্চরঃ তৎযোগ্যঃ স্যাৎ । এবমেতল্লিখনে প্রমাযোগ্যস্যা প্যাত্মনাভগৰৎপ্রসাদেনৈৰ যোগ্যতা সম্ভাবিতেতি পূর্ব্ববদূষ্ণ। এবমগ্রেপি বোদ্ধব্যং॥১॥ তচ্চেত্তি যৎ পূর্ব্বং পূজে পকরণাদ্যভ্যুক্ষণানস্তরং পুনভূতিজনে শ্রীভগবদগ্রতোন্যন্তে শব্যে স্থিতং পশ্চাচ্চ তেন শস্থেন ত্রিভ্রামণতোভগবন্ধীরাজন মনুষ্ঠিতং তদা তংখ্ঞলস্যাপি নীরাজনেন সৌভাগ্যং জাতমন্তি তদিতাৰ্থঃ। অতএব পূৰ্ব্বং ভগবদগ্ৰতোন্যন্তত্বাৎ। কুঞ্চা দৃষ্টিৰূপয়া স্থয়া উক্ষিতং শিক্তং চেতি মহাসৌভাগ্যন্ধাতং দশিতং । যদি চ শস্থান্তরেণ সদ্যোজলভূতেন ভগবনীরাজনসেবদ্রষ্টব্যং তদাপি তচ্ছপ্রজলস্য নীরাজনেন ভগবদ্ষ্টিগোচরতাবাপ্ত্যা কিয়া নীরাজনানন্তরং স্তবনবন্দ্রাদ্যর্থমবশ্যং ভগবদগ্রতোধার্যান্ত্রেন তদ্ধীস্থরোক্ষিতত্ত্বং সম্পান দ্যত এব । এবঞ্চ পুর্বাস্থাপিতেনৈৰ শস্থেন কীরাদিলপনং বোদ্ধবাং অন্যথা শস্থাবাছল্যা-পত্তেঃ। তত্ত স্নাপনানন্তরং ত্যা রিক্তত্তাৎ তথা নীরাজন শস্থাস্য জলগ্রহণাচ্চ পুনরগ্রে লেখ্যং ভগবদগ্রতঃ শত্মহাপনং যুক্তমেব । নচ বক্তব্যমিদং পূর্ববং শত্মংস্থাপিতো চন্ত্যেব ক্ষীরস্থপনাদিকং নীরাজ্বনঞ্চ শস্থাস্তরেণৈবেতি পুনঃ শস্থস্থাপনেনালমিতি যতঃ শিষ্টাচারা-अमारतन विकृ ভक्তिहत्सामग्रामो अस्य बिन्निनश्चात्रगामि जिः आमानिकदरेतं निविज्ः। श्रृकाम মাপ্তে। পুলাদিনাপুদ্ধকংশশ্বা বিশেষতঃ স্থাপনমপেক্ষত এব । পূর্বস্তু পুজোপকরণা-দ্যভ্যুক্ষণোপক্ষীণজ্ঞলঃ শৃথ্যঃপূজারন্তে মক্লপর্থং কেবলং জ্ঞালেনাপূর্য্য !স্থাপিতআসীদিতি বিশেষঃ॥ ২॥ ভক্তিঃ অবণকীর্ত্তনাদিনববিধা॥ ৩॥ যোবন্দতে ত্রা॥ ৪॥ যদ্য মূর্দ্ধি

পিশাচোরগরাক্ষসাঃ। দৃষ্ট্য শংখাদকং মূর্দ্ধিবিদ্রবন্ধি দিশোদশা। ৫ ।। রুষ্ণমূর্দ্ধি ভ্রামিতয় জলং তচ্ছখসংস্থিতং। রুদ্ধামূর্দ্ধন্যবাথোতি মুক্তিং বিষ্ণোঃ ৫ সাদতঃ।
ভাময়িত্বা হরেমূর্দ্ধি মন্দিরং শন্থবারিলা । প্রোক্ষয়েদিকং হরেঃ। তিঠতে মুনিশাদূল বর্দ্ধন্তে তত্র সম্পদঃ। তত্রিবাগ্রে। নীরাজনজলং বিষ্ণো র্যাগ গালোনি সংস্পদেশ । যজাবভ্যলকালাং স্নানজং লভতে ফলং। তত্রিব শ্রীশিবোক্তে।। পাদোদকেন দেবস্য হত্যামূতসমন্বিতঃ। শুদ্ধাতে নাত্র সন্দেহন্তথা শন্থোদকেন হি। বৃহদ্বিষ্ণুপুরাণে চ। তার্থাধিকং যজ্ঞলাতাচ্চ পাবনং জলং সদাকেশবদ্ষ্টি-সংস্থিতং। ছিনত্রি পাপং তুলসীবিমিশ্রতং বিশেষতক্ত্রশিলাবিনিম্পিতং।। গা

অথ তীর্থধারণং ।। রুষণাদাজতীর্থক বৈষ্ণবেভ্যঃ প্রদায় হি । স্বয়ং ভক্ত্যাভিবন্দ্যাদৌ পীত্রা শির্সি ধার্য়েৎ ॥ তস্য মন্ত্রবিধিক্ত প্রাক্ত প্রাঞ্জন পানে বিশেষোলিখ্যতে কিয়ান্ ॥ ৮ ॥ সচোক্তঃ । ওঁ চরংং
পবিত্রং বিততং পুরাঞ্চ যেন পূতন্তরতি দুক্তানি । তেন পবিত্রেণ শুদ্ধেন পূত্রঅপি পাপ্যানমরাভিং তরেম । লোকস্য দার্মার্ত্য়ৎ পবিত্রং জ্যোতিয়ৎ বিভাজমানং মহস্তদম্তস্য ধারা বহুধা দোহ্মানং চরণং লোকে সুধিতাং দধাত্বিতি ॥ ৯ ॥
ইমং মন্ত্রণ সমুক্তার্য্য সর্বাদুক্ত গ্রহাপহং । প্রাশ্লীয়াৎ প্রোক্ষায়েদহং পুত্রমিত্রপবিগ্রহং ॥ কিঞ্চ ॥ বিক্ষোঃ পাদোদকং পীতং কোটিইত্যাঘনাশনং । তদেবাকত্রণং
পাপং ভূমৌ বিন্দুনিপাতনাং ॥ ১০ ॥

অথ শীচর নাদকপানমাহাত্ম । পাত্ম গৌতমায়রীয় সয়াদে। হরেঃ য়ানাবিশেষ জলং যসােদরে ভিত্ । অয়রীয় প্রনামানিছঃ পাদপাংশুঃ প্রগৃহ্যতাং। তত্রৈব দেবদূতবিকু গুলসমাদে। যে পিবন্তি নরা নিত্যং শালগ্রামশিলাজলং। পঞ্চ গব্যমহসৈত্ম সেবিতেঃ কিং প্রয়ােজনং। কোটিতীর্থসহসৈত্ম সেবিতেঃ কিং প্রয়ােজনং। কোটিতীর্থসহসৈত্ম সেবিতেঃ কিং প্রয়ােজনং। নিত্যং যদি পিবেং পুণ্যং শালগ্রামশিলাজলং। শালগ্রামশিলাতায়ং য়য়িবিদ্দিনা সমং। মাতু সম্যং পুনরের সাংপ্রেক্তিভাত্নরঃ।। কিঞা । দহন্তি নরকান্ সর্বান্গর্ভবাস্ক দাকণং। পীতং যৈন্ত সদানিত্যং শালগ্রামশিলাজলং। তত্রের শীম্মপূর্কেত্সমাদে। শালগ্রামশিলাতায়ং বিন্দুমাত্রং তু যাং পিবেং।

বর্ত্তে গ্রহাদরঃ মূর্দ্ধি স্থিতংশস্থোদকং দৃষ্ট্। নকিঞ্ছিং কর্তু শক্ষুবন্ধি প্রত্যুত বিদ্রবন্ধি পলা-য়ন্ত ইত্যর্থঃ॥ ৫॥ ৬॥ চক্রশিলাবিনির্মিতং ভগবচ্চরণামৃত্যিতঃর্থঃ॥ ৭॥

বিধির্ধারণ প্রকারশ্চ। কিয়ান্ সংক্ষিপ্তোবিধিবিশেষো লিখ্যতে ॥ ৮ ॥ চরণং চরণারবিন্দং ততদক্মিতার্থঃ অরাতিং সংসারলক্ষণং স্থিতাং স্থাবনাদরণীয়তামিতার্থঃ॥ ৯॥ তত্তস্মাৎ প্রানোক্তপুণ্যাদ্যভণ্মিতার্থঃ॥ ১ ॥

मैं अंशिश अमू (ठाक मूकिमार्श करिंगामः। चरेति भूनसा जगीतथ मःवापि। পানে। দক্ষা মাহাত্মাং ভগারথ বদানি তে । পাবনৎ সর্বতীর্থেভ্যে হত্যা-কোটিবিনাশনং । ধৃতে শিরসি পীতে চ সর্বাস্তব্যত্তি দেবতাঃ । প্রায়শ্চিত্তস্তু পাপানাং কলৌ পাদোদকৎ হরেঃ ৷৷ কিঞ্চ ৷৷ ত্রিভিঃ সারম্বতৎ তোয়ং সপ্তা-हिन जू नार्श्वापर । त्रमाः भूनां जि गां स्थार पर्मनां एवं यामूनर । भूनखा जानि তোয়ানি স্নানদর্শনকীউনৈঃ। পুনাতি স্বরণাদেব কলৌ পাদোদকং হরেঃ। অর্জিতিঃ কোটিভি লি সৈ নিভাং যৎ ক্রিয়তে ফলং। তৎফলং শতসাহসুং পীতে পাদোদকে हरतः। অশুচিবা मूतावारतं महाशाजकमः गुण्डः। म्शृक्ते शामानक विकार मना শুদ্ধাতি মানবং। পাপকোটিযুতোযস্ত মৃত্যুকালে শিরোমূথে। দেহে পাদোদকৎ **७मा न अश् ि यमान** स्था ५५ ॥ ५ मान देन इति द्वार श्रीक्षा म पूरा हिन्द । ভেপি পাদোদকং পীত্বা প্রযান্তি পরমাং গতিং 1> 1কার্ডিকে কার্ডিকীযোগে কিঙ্ক-রিষ্যতি পুষ্করে। নিভাৎ চ পুষ্করং ভদ্য হস্য পাদোদকং হরে:। বিশাখা ঋক সংঘুক্তা বৈশাখী কিং করিষ, তি। পিগুরকে মহাতার্থে উচ্ছয়িন্যাৎ ভগীরথ। মান্দমানে প্রয়াগে তু স্থানং বৈ কিং করিষ্যতি । প্রয়াগঃ সতত্ৎ তস্য যস্য পাদো-দকং হরে। প্রবোধবাদরে প্রাপ্তে মথুরায়াঞ্চল্য কিং। নিভাঞ্যামূনং স্থানং যসঃ পালোদকং হরেঃ। কাশ্যামুত্রবাহিন্যাং গঙ্গায়ান্ত মৃতস্য কিং। যস্ত পাদেং-मक विस्थामू (थ देववाव विश्व ।। किश्व ।। विश्व भाषामकः विस्थार्या वनः वीर्याः নি গচ্ছতি। অনর্ঘ্যং রত্নমুৎসূজ্য লোটুং বাঞ্চতি দুর্মতিঃ। কুরুক্ষেত্রসমোদেশো विन्तुः भारमाम्बर मठः ॥ २०॥ भारतम्बाकः प्रश्ने भिका । खर्जि छ मृद्र। গয়াপিশুসমং পুণ্যৎ পুত্রাণামপি জায়তে ৷ পাদোদকেন দেবস্য যে কুর্তঃ পিতৃ-তর্পণং । নাসুরাণাং ভয়ন্তম্য প্রেতজন্য ন রাক্ষসং! ন রোগস্য ভয়ঞ্চৈব নাস্তি বিষক্তাং ভরৎ। ন দুউ। নৈব ঘোরাকাঃ শ্বাপদোখভরং নহি। গ্রহাঃ পীড়াৎ ন कुर्खां छ होता नगा छ माक्रगाः। किन्नग छोर्थनमान एक्यो गाक्ष मर्गान । यगा भारमा-দকং মৃদ্ধি শালগ্রামশিলোডুবং । প্রীতোভবতি মার্ভঃ প্রীতোভবতি কেশবঃ। ব্ৰহ্মা ভ্ৰতি সুপ্ৰীতঃ প্ৰাভোভনতি শক্ষরঃ। পাদোদকস্য মাহাদ্যুৎ যঃ পঠেৎ-কেশবাপ্রতঃ। স্থাতি পরমং স্থানং যত্র দেবোজনার্দনঃ। ক্রন্ধান্তপুরাণে। জীবন্ধ নারদশ্যাদে। প্রায়শ্চিতং যদি প্রাপ্তৎ রুচ্ছুমাত্বমর্ত্ং। সোপি পাদেদকং পীত্রা শুদিং প্রাপ্নোতি তৎক্ষণাৎ। অশৌচং নৈব বিদ্যেত সূতকে সূতকে পি চ। যেষাং

ত্তন্য শিরণি মুথে চ পাদোদকং চেত্তর্হি ন অথাতীত্যর্থ:॥১১॥ হবিঃ শব্দেন হোমাছ্যুপল-ক্ষাতে॥১২॥ যন্য পাদোদকং নেবাং ন্যাদিতি শেষঃ। ন দেশো মতঃসন্তিং। বিন্দুং বিন্দুমাত্রং।১৩।

পাদোদকং মূর্দ্ধি প্রাশনং যেচ কুর্বাভে। অন্তকালেপি যস্যেহ দীয়তে পাদয়োক্তলং! সোপি সকাতিমাপ্নোতি সদাচারৈ রহিছ্তঃ।। ১৪ ।। অপেয়ং পিবতে যন্ত ভুঞ্জে যশ্চাপ্য ভাজনং। অগম্যাগমনার্ঘে বৈ পাপাচারাশ্চ যে নরাঃ। তেইপি পূজ্যাভব-च्यान्ध मन्त्रः भानाग्रुरम्बनार ॥ किथा। जभविवः यन्त्रः मानीग्रकाभि পাপিনাং । ভুকু। পীত্বা বিশুদ্ধঃ স্যাৎ পীত্বা পাদোদকং হরে:।। ১৫।। ভপ্ত-রুজ্বে পঞ্চাব্যামহারুজ্বাধিশিষ্যতে। চান্দুমণাৎ পাররুজ্বাৎ পরাকাদপ্রি সুব্রত। কারশ দ্বিভবত গশ্ভ পাত্ব। পাদোদকং হরেঃ ।। ১৬। অগুরুং কলুমঞাপি কপূর क्षान् ज्ञानः । निष्णानाम् मः नश्च छोत्र भावनभावनः । मृष्टिशृष्ठः जू यखायः विष्युन। श्राचिष्युना। उदेव भागवतः भूव किः भूनः शामरता के मः। এएमर्थ मदः পুত্র শিরসাবিষ্ঠ তৎপর: ৷ ধার্য়ামি পিবাম্যদ্য মাহাজ্মং বিদিতং মম ৷৷ ১৭ :৷ প্রিরসুম গ্রন্ধ পত্রস্তৰ্থ হৈ গদিতং ময়া। রহ্ম্যং মেত্রনর্হ্ম্য ন বক্তব্যং কদাচন ।১৮। ধারয়য় সদা মূর্দ্ধি প্রাশনং কুরু নিতঃশঃ।জগ্রসূত্রজরাদুঃথৈর্মোকং যাস্যসি পুত্রক।। বিষ্ণুধ সাভিরে। সদ্যঃ ফলপ্রদৎ পুণাং সর্ব্বপাপবিনাশনং। সর্ব্বমঙ্গলমঙ্গলাং স্ব-मुल्य निनामनः । मुल्यभामनः भूगेः विक्यभामानकः स्थलः । मर्व्याभाववञ्चातः সর্বাধি বিনাশনং ।। ১৯।। সর্বোৎপাতপ্রশাসনং সর্বভাপ নিবারণং। সর্বাক-ল্যাণসুগদং সর্বকাম ফুলপ্রদং। সর্বসিদ্ধি প্রদং ধন্যং সর্বধর্মবিবর্দ্ধনং । সর্বশাত্রু প্রশাসনং সর্বভোগপ্রদায়কং। সর্বভীর্থায় ফলদং মূর্দ্ধি পাদামুধারণং। প্রয়াগস প্রভাসস্য পুজরস্য চ সেবনে। পৃথ্দক্ষ্য তীর্থস্য আচান্তো লভতে ফলং।। ২০।। চক্রতীর্থে ফ্র্থ যাদ্ক্তাদ্ক পাদানুধারণাথ। সরস্বত্যাৎ গ্রায়াঞ্জ গ্রাহৎ প্রাপুষাৎ ফলং । তৎ ফলং লভতে শ্রেষ্ঠং সূর্দ্ধি পাদাযুধারণাৎ । काला। পা-দোদকসঃ মাহাত্মাং দেবোজানাতি শক্ষরঃ । বিষ্পুপাদটুতো গঞা শির্মা যেন ধারিতা। স্থানং নৈবান্তি পাপন্য দেহিনাং দেহ মধ্যতঃ।। ২১।। স্বাহ্যাভ্য-छत्र 'यमः वा खर भारमामरकम'रेव। भारमामः विस्तृतेरवमः मूमरब यमा जिथे जि। নাশ্রং লভতে পাপং স্রমেব বিনশ্যতি। মহাপাগ গ্রহপ্রতো ব্যাপ্তো রোগ-मोरेडर्याम् । १८३३ शाप्तामकः शोषा मूहाए नोज मरमा । मित्रना विष्ठेट

সদাচারৈক্রহিন্ত্ভোহপি চেছ॥ ১৪॥ অভোজনং অভক্ষাং॥ ১৫॥ তপ্তক্রজুমহাক্রজু।দিকং নাম ব্রভবিশেষং॥ ১৬॥ বিষ্ণুনা কর্ত্তু। দৃষ্টা। ক্রত্বা পূতং পারিতমিত্যর্থঃ। ষদ্ধা বিষ্ণুনা বিষ্ণো-বিভাগেঃ॥ ১৭॥ অনর্হ্না অযোগন্যা অবৈষ্ণবন্যেতার্থঃ তং প্রতি ন বক্তবাং॥ ১৮॥ হন্তার মিত্যার্থঃহন্তু॥ ১৯॥ সেবনে বছ করং তছ। আচান্তঃ ক্রতপাদোদকাচমনঃ॥ ২০॥ দেহিনাং মধ্যে তবৈয়ক্ষা দেহমধ্যে পাপ্যা স্থানং নৈবান্তি দেহিনঃ ইতিবা পাঠঃ॥ ২১॥ বাহুং মন্তকাদি তেন শহিত্যাভ্যন্তরং জঠরান্তর্নাভ্যাদি ত্রবাহুং মন্তকাদে ধারণেন । অভ্যন্তর্গপানেন নামপ্ত নিত্যর্থঃ। ২২॥ হরেঃ প্রতিমাক্রগদোত্যর্থঃ। কিং পুনরিতি প্রতিমাতঃ শ্রীশাল্প্রামশিলায়ানঃ

যেয়াং নিত্যং পাদোদকৎ হরেঃ। কিংকরিয়ান্তি তে লোকে ভীর্থকোটিমনো-রুরৈ। ত্রুমের পরোধর্ম ইদমের পরভুপঃ। ইদমের পরং ভীর্যং বিষ্ণু ।-দায়ু যথ পিবেৎ ॥ তত্ত্বৈ শ্রীশিবোমাসন্দি। বিলয়ং যাতি পাণানি পাতে পাদে, দকে হরেঃ। কিৎ পুনবির কুপাদোদং শালগ্রামশিলাচ্যুতং। বিশেষেণ হবেং পাপং उन्नाञ्जामिकः थिया । भीटि भाषामिक विस्थार्थि थारेष-কিনুচাতে। হত্বা যমভটান্ সর্লান্ বৈক্ষবং লোকমাগুলাৎ। তত্ত্রেব জীশিব কার্ত্তিকেয়সম্বাদে। জ্রীশালগ্রামশিলামাহাত্যে। তিল্লব্রেন মহাসেন গর্ভবাসং সুদা-রুণঃ। পীতং যেন সদা বিষ্ণোঃ শালগ্রাসশিলাজলং। যে পিবতি নরা নিত্যং শ লগ্রামশিলাজনং । পঞ্চার সেইটেনুস্ত প্রাশিতিঃ কিং প্রয়োজনং।প্রায়শ্চিত্তে সমূৎপাল কিন্দানৈঃ কিমুগোষ্টি । চান্দুগ্রনৈশ্চ ভীর্থেশ্চ পীতা পানোদকং শ্চি। বহরবেদীয়ে লুক্তকোপাখ্যানারত্ত্ত । হরিপাদোদকৎ যস্ত ক্ষণনাত্রগুধার ্যং। স ভাতঃ সর্বাহিথেনু বিজ্ঞাঃ প্রিহত হত থা। অকালমৃত্যুশননৎ সর্বাবাধি-বিনাশন । সর্বদুঃখোপশ্যনং হরিপাদোদকৎ শুভং। তাত্রের তদুপাগানায়ে। ভরিপাদোদকস্পর্শানুস্থাকোবীতকল্বিঃ । দিবাং বিমানশারুষ্য মুনিমেনমথ। ত্রবীং। হরিপাদোদকং যশানায়ি সং ক্ষিপ্রবানুনে। প্রাণিতোনি সয়া তথাত্ত-দ্বিষ্ণাঃ পরমৎ পদং। হরিভক্তি সুধোদয়ে। পাদংপ্রাং কিল স্পৃষ্টা গয়াভূৎ मार्गाकता । वित्काः मन् इ ठ२मञ्ज भानाम् कर्गनीकारः । जाभद्रागतना যোহসৌ ন শানে হ সকলা ক্লিভিঃ। ফ্রতং শাম্যতি সোহপেন শ্রীমৃদ্বিয়ু পদা-सुना । २० ॥ सूक्ष्णाराज्य विकास जवादि एस निष्य । स्वीरिकः सर्वया धार्मा ५ क्षात्र अिं कि भारते मुझा अमृङ ज्ञादङ्ग नि छ। वियु शामासू यः शिख । म शिव छ। মূতং নিত্ঃ মালে মাণে তু দেবতাঃ ৷ মাহাল্যামিয়দিতাস্য বভা হোপি স নিভারা । ন্র্নর্মণেমূল্যং কংপায়ন্র্যাশু তে । অন্যত্রাপি। স বেক্ষারী, সব্রতী আশ্রমী চ मना छि । विकुशास्तानकः यगः गृत्यं निवर्शः विश्राद्य । জ্যপ্রভৃতি পাপানাং প্রায়শ্চিত্তং ম্র্নাচ্ছতি। শাল্প্রামশ্লাবারি পাপহারি নিষেব্যতাং ॥ ২৪ । । অতএব তেজোড়বিণপঞ্চাত্রো ॥ জীবন্ধণোক্তং । পীঠ প্রণানাদ্দকৎ পৃথগাদায় পুত্রক। সিঞ্চয়েয় ক্লি ভক্তানাৎ সর্বভার্যনয়ং হি তি ছি ।।২৫।। পাদোদকস্য মাহাজ্যৎ বিখ্যাতং সর্বাশস্ত্রতঃ। লিখিতং শলুরাহ

মাছাত্মাবিশেষাভিপ্রায়েণ। অতএবাস বিশেষেণেতি সমূলং সর্ব্বমেবেত্যর্থঃ। যিদ্বা হরেঃ পাদো-দকে গঙ্গাজলব্ধপে। অন্যৎ সমানং॥ ২৩,॥ সর্ব্বাক্তৈরিতি নাভেকর্দ্ধাক্তৈরিতি জ্ঞেয়ং॥ ২৪॥ প্রীঠং জ্রীভগবদাসনং। তুস্য প্রধানাং॥ ২৫॥ প্রাথদিতি তন্মস্ত্রোচ্চারণাদিবিধিনেত্যর্থঃ

कार्कि निज्ञानि गन्यमि ।। वित्यवज्य शामापर जूननीमलमध्युज्य । नास्थ কুত্বা বৈষ্ণবেভ্যাদত্ত্ব। প্রাগৃৎ পিনেৎ ছায়ং 1, ভাগ শুজাকুতপাদোদকমাহাত্ত্ব। ৭ 1 कारिन विद्यान । क्रांचा भारतामक । अला भारतामक भारता देव करावा । ্থে। দদ্যাৎ তুলসামিশ্রং চান্দুয়েণশতং লভেৎ। গৃহীত্বা ক্রুপাদায়ু শংখ কৃত্বা তু বৈষ্ণবঃ । যোবহেৎ শির্ষা নিতাং স মুনিভাপসোভ্নঃ । পাছে দেবদূত-বিকৃগুল্ময়াদে ৷ শালগ্ৰামশিলাতোয়ং যদি শন্তভূত্ৎ পিবেৎ ৷ হত্যাকোটি বিনাশক্ত কুরুতে নাত্র সংশয়ঃ। অগস্তাসংহিতায়াৎ। শালগ্রামশিলাতোয়ং ত্লসীদলবাসিতং । যে পিবন্তি পুনস্তেষাৎ স্বন্যপানং ন বিদ্যুতে ইতি জীবিফোর্টরঞ্বানাঞ্চ পাবন্দ চরণোদক্ষ । সর্পতীর্থানয়ৎ পাছা कुर्व्याम हमन । निकार निकार १ । विकार भारता कर्षे की की পশ্চাদশ্ডিশাক্ষয়া৷ আটি'লতি চ হোলোহাৰুআহ৷ স নিগদ্যতে : এইভিন্চ ৷ ভগবান্ প্রিত্রং ভগ্রহপাদৌ প্রিত্রং ভগ্রহপাদোদকং প্রিত্রং ন ভংগানভাচ্যনীরং ৷ যথাতি সে'ম ইতি। সৌপর্ণে ৮। বিফ্ পাদোদকং পীত্র, ভক্তপাদোদকং তথা। য জাচান ত সংযোগাদু ক্ষ্ স নিগদাতে।ইতি। ততঃ শুদ্ধৎ পায়ঃ পূর্ণ গল্প।-ক্ষতা যিতং !'অধারোপরি সংন্যান্ডেশ্বং ভগব্দগ্রতঃ ৷২ লাজ্য জীভগব্দগ্রতঃ শত্ম-शायनगरिकाः । कात्म बक्तनातमगरातः । मध्यगरिएका । पूर्वाचित्राप्तमः मপুক্তাং সজলাক্ষতং। শশ্ব মভাতি তং পশো্২ তস্য লক্ষ্মীন দুর্লভা। সপুস্পং বারিজং যাস্য দুর্বাক্ষতসম বিতং। পুরতো বাশুদেবী ত্রা আঃ সর্বতে। মুখা ইতি।। ২১॥ গত্বাথ ভক্তিমান্ আমতুলসাঃ কাননে প্রভুং ৷ সংপূজ্যাতার্চয়েভ প্র জির্ফচরণ श्चिषाः ॥ ७० ॥

তথ জীতুলসীননপূজা। প্রাণ্দস্থার্থ, ততোহত চের্চ্চ গমপুশাক্ষতাদিন। স্তমা ভগবতীৎ তাফ প্রণদেৎ প্রার্থ্য দশুবং । তত্রার্থ্য সন্তঃ । শ্রিয়ঃ শ্রিয়ে শ্রিয়াবাসে নিত্যৎ শ্রীধরসংক্ষতে। তত্যা দতংশয়, দেবি অর্থ্যৎ প্রুল নশোস্তু তে ।। ৩১ ।। পূলালস্থা নির্মিতা সং পুরা দেবৈ রচ্চিতা অংসুরাস্ট্রেঃ। তুলসা হর দে পাশং পূজাং গৃহ নশোস্ত তে।। স্ততিশ্চ। মহাপ্রসাদজননী স্বাস্থান্ত।গ্রেক্ষিনী। গারিব্যাধি হরী নিতাং তুলসা তং নমোস্ততে।। প্রার্থনা। শ্রিয়ং দেহি যশোদেহি কীর্তিমামু-

<sup>।</sup>২ ৬।আচমনং নহি নৈব কুর্যাদিতি অস্পূশ্যস্থানাদিনা ক্থঞিং প্রাপ্তমাচমনং চরণোদকপনে নন্তরং পুনস্তজ্জুদ্ধে ন কুর্যাং । যদ্ধা স্থাস্থা ভুজ্বা পয়ং পীত্রেত্যদিনা জলপানান দুরং স্মৃতি বিহিতং যদাচমনং ভর্জুচিরণোদকপানানস্তং ন কাব্যমিত্যকি। এবঞ্জ পিপানরা চরণোদক্ষ্য পানং বিজ্যেং নচ প্রাশনকপমাচমনমাত্রমিতি॥২৭। অস্তচিশস্ত্রা অস্ত্রেজ্যাশঙ্কয়েত্যকি। ২৮॥ বারিজং শঙ্খঃ। পুরস্তিষ্ঠিতীতি শেষঃ॥ ২৯॥ তাং স্তলসীঞ্চ॥ ২০॥

গৃক্ গৃহ্ব।। ৩১॥ তলশীতি দীর্ঘান্তপাঠে সংখাধনেপি ছন্দোভক্তিয় দৈর্ঘান্যবাহা বছা

ন্তথা সুখং । বলং পুন্টিং তথা ধর্মংত্লদী ত্বং প্রদীদ মে ।। ৩২ ।। প্রণাম বাক্রথাবতীখণ্ডে। যা দৃষ্টা নিথিলাবসংক্রমনী স্পৃষ্টা বপুংপাবনী রোগাণামভি-বন্দিতা নিরস্নী সিক্তান্তকত্রাদিনী। প্রত্যাসতিবিধায়িনী ভগবতঃ রুক্ষস্য সংবোদিতা নান্তা ভচরণে বিমুক্তিকলদা ভবৈষ্ বলস্যে নমঃ ।। ৩৩ ।। ভগবতান্তলস্যান্ত মাহাজ্যামূতসাগরে । লোভাৎ কুর্দিত্রিচ্ছামি ক্ষুত্রতং ক্ষম্তাৎ ত্বয়া ।। ৩৪ ।।

অথ তলগাবনপূজামাহাত্মং ।। ক্কান্দে।। অবণহাদশীযোগে শালপ্রামশিলার্চনে । যথ ফলং সঙ্গমে প্রোক্তং তলসীপূজনেন তথা গারুড়ে । ধাত্রীফলেন যথপুনাং জারস্তাং সমুপোষণে। খগেন্দু ভবতে নুনাং ভলগিং পূজনেন
তথা ৩৫ ।। প্রায়ার্নমাননিরতৌ কাশ্যাং প্রানিয়েক্ষণে। যথফলং বিহিতং দেবৈ
জ্বলসীপূজনেন তথা অগস্তাসংহিতায়াং। চতুর্ণামপি বর্ণানামাশ্রমানাং বিশেষতং।
জ্বীনাঞ্চ পূর্বাণাঞ্চ পূজিতেক্টং দদাতি হি । তুলসীরোপিতা সিক্তা দ্লী স্পৃত্বী চ
পাবয়েং। আরাধিতা প্রয়ত্ত্বন সর্বকামফলপ্রদা। কিন্ধা। প্রদারদীয়ে। যজ্বমক্ক্রি নিত্তাশং। ন হেষাং দ্বিতং কিঞ্চিদক্ষীন্যবশিষ্যতে । বৃহনারদীয়ে। যজ্বশ্রমাপাথ্যানালে । পূজ্যানা চ তুলসী যস্য বেশানি ভিষ্ঠিত। তস্য সর্বানি প্রেয়াংসি বর্জভেহরহর্ষিজাঃ। অতএব পাল্মে। দেবদূতবিকুগুলসমাদে। পাক্ষ পক্ষে তু
সংপ্রাপ্তে দ্বাদশ্যাং বৈশাস্ত্রম। ব্রহ্মাদ্রোপি কুর্বন্তি তুলসীবনপূজনং। অতএব
শ্রিতুলদীস্ততিসহিশা। অনন্যমন্সা নিষ্ঠাৎ তুলসীং স্তৌতি যোনরঃ। পিতৃদেবমনুস্ব্যাণ্ড প্রিয়োভবতি সর্বদা।।

অথ তুলসীবনসাহাত্যং । ক্ষান্দে । রতিং বধ্যুতি নান্যত্র তুলদীকাননং বিনা।
দেবদেবে। জ্বগৎস্থামী কলিকালে বিশেষতঃ । হিন্তা তার্থসহসাধি সর্বানিগি শিলোচন্নান্। তুলদীকাননে নিত্যং কলো ভিষ্ঠতিকেশবং । নিরীফিতা নরৈর্থিস্ত তুলদীবনবাটিকা। রোপিতা থৈশ্চ বিধিনা সংপ্রাপ্তং পরমংপদং । ন ধাত্রী সফলা যত্র ন বিষ্ণু
স্কুলসীবনং । তৎ স্মান্নসনং স্থানং সন্তি যত্র ন বৈষ্ণবাং । কেশব্যর্থে কলো যে তু
রোপয়ন্তীহ ভূতলে । কিংকরিষ্যতাসন্ত্রেটায্নোপি সহ কিস্করিং । তুলস্যারোপনং

ত্বমিত্যস্য বিশেষণং ॥ ৩২ ॥ প্রত্যাসন্তিঃ সম্বাবিশেষঃ বিমৃত্যিঃ বিশিষ্টা মুক্তিঃ শ্রীবৈকুণ্ঠ-লোকপ্রাপ্তিলক্ষণা তদেব ফলং। যদা। বিমৃত্যেশিকস্য ফলং প্রেম ভক্তিঃ তৎ দদাতীতি তথা সা॥ ৩৩॥ শ্রীব্রবাদ্যনির্ব্ধান্যসপি ভগবৎপাদপ্রপ্রিয়ত্বায়ঃ শ্রীব্রসাদ্য মাহাম্মাং গ্রুমোন প্রাদেয়ত্বেন লোভতোলিখনানৌ নিজ্ঞাপন্যাপরাধং ক্ষ্মাপ্রতি। ভগবত্যাইতি। কূদিবং উৎপ্রত্য নিপ্তিত্তং॥ ৩৪॥

ধাত্রীকলেনেতি তদ্ধকণাদিনেতার্থঃ। জয়ন্ত্যাং জন্মান্টম্যাং মহাদাদশীতেদে,বঃ। উপবাসেঃ
চ ষ্থ পুণাং । বদা জন্মত্যপেষিণে ধাত্রীকলস্থানাদিনা যথ পুণাং ভবতে ভবতি ॥ ৩৫॥



कार्याः व्यवस्थाः विश्ववर्षः । क्राश्वाध्यक्ष्यां क्रियाः भूमहास्थाः स्थाः । स्थानाः स्था पुनारकः अनु ज्ञानहा । वाभरमञ्ज्ञानी पुनार कछीर्नः ठज्ञभानिनः। वरेष्ठेर्यस्पै किन्छ निक्षिष्ठः जूनगोत्रनः । जन्मधाबान्धिकित्वाम् श्रीनिष्ठः पूर्वनवशः ॥ ७६ ॥ , ७देवर জীব্ৰ ক্ষাৰান্যকাৰে। ভুলুস্থিক্ষমানায় হত্ত গছতি মার্কতঃ। দিলোদশ চ পুতাঃ বুছেতিগ্ৰানশ্ৰন্ধ কিন্দু। তথা। জুলুদীকানদোড়েত। ছায়া যত্ৰ ভবেৎ দ্বিত্ন। তত্ৰ আদং অদাতবাং পি স্বাং তৃঞ্জিতবে। তুলগীবীজনিকরঃ পততে যত্র নারদ।পিও मानः इत्वर छतं शिकृताः महभक्तत्रः। उद्योग्धा मृष्टे। ल्यूषे। उथा ४ अके। कीर्किक। নৰিতা আহতা। রোপিতা সেবিতা নিত্যং পূজিতা তুলদী শুভা। ১৮॥ নবধা जूलनी निकार त्य सकसि मितन मितन । यून्यकारियहन्ति एक अमसि इरतम् ६६। রোপিতা ওলদী যাবং কুরতে মূলবিভর । তাৰংকোটিসহসূত্র ত'নাভি সূক্তং কলো। যাৰচছাখা প্রশাখাভিক্ষাজপুলে। ফলৈমুনে। রোপিতা তুলনী পৃত্তিক ক্তে বসুধাতলে। কুলে তেয়ান্ত যে জাতা যে ভবিষ্যতি যে মৃতাঃ। আকম্পং যুগ माङ्गुः उसार वारमाहरद्रश्रंह ॥ ७৯॥ छत्विय ठावसीथरखे। जूनमी५ विकि वृधि थन। छ १ कत्र भन्नवाः । दक्ष्मवार्थ कत्नो यह द्वाशम्बोर पूजले । मान তথা ধ্যানে প্রাশনে কেশবার্চনে ৷ তুলসী দহতে পাপং রোপনে কীর্ছনে কুলৌ ৷৪০৷ কাশীথণ্ডে। স্বদূতান্পতি প্রীয়মানুশাসনে । তলস্তাংকতা বে যে তুলসীনামজা পকাং। তুলদীবনপালা যে তে ত্যাক্সা দ্বাতো ভটাং। তুলম প্রকরিতে। তুলদী মস্য ভবনে প্রত্যহং পরিপুদ্ধাতে। তুল্পুং নোপ্রপতি কৃদাচিৎ যমকিংকরাং। পাছে। प्रवृত्विकुछनम् भारते। न भगान्ति यय५ देवना जूनमीवनदार्भिषाः । नव-পাপাহরং সর্বকামদৎ তুলদীবনং। জুল্মীকামনং বৈশ্য গুছে যন্থিত তিইছি। छम्मूहर छोर्थक्ट हितायासि यसकिस्ताः । **डायस्त्रेत्र म्यानि यावसीम**ननानि छ। বসন্তি দেবলোকে তু তুলনীৎ রোগরন্তি বৈ। তুলনীগদ্ধানুষ পিতরস্থ সানসাঃ। थ्यासि शक्र श्वासिक्ष अपनि । । । । वर्षा नर्मा वर्षा । अपनि वर्षा । । বিশায়র। তুলসীমলনৎস্পর্শঃ সমমেত এয় মাতং। রোপণাথ পালনাৎ সেকাৎ দর্শনাথ স্পর্শনার্ণাং। তলসী দহতে পাপং বাজ্যনঃ কায়সঞ্জিতং। আমুবুক্সন্থ-সেণ পিপ্পকানাৎ শতেন চ। যৎফলং হি তদেকেন তলসাবিটপেন ত। বিশুপুজন गरेमुङ्ख्यानीः यष्ठ द्वार्णायः । यूनाय्कत्रान्तः न द्वार्णायमात्रः विवि । एटेजव

रेनमाथनाहाद्या। भूकामीनिकोर्यानि, गमामाध नक्तिकस्थान वामुक्तमाहरसारम्या-वनिष्ठ उननीम्दन । मानिकाम् थरतागार्षि भाशानि नुष्मुना भ । समानी क्षेत्रिक शि বোগানিৰ হুৱীতকী। তত্তিৰ কাৰ্ডিকমাহাজে। যক্ষ্য ভল্টী ক্ষা কি কাৰ্য জ্বাল (महरेनः। जम्ह- रामपूर्वाम् पृत्रावायक्षंशिष्ठ विश्विश्वादनम्। उर्मनः मिन्न किना मानवाः । क्र्विष्ट द्विषा । भिवत्र वृक्षावर्षा युव् करेनः । भिति हर्राक्ष (य जना। तक्षाः वाणकुक्तरेम्। स्थाविरठाइतिरेख्य नाज कार्य)। किठातन। ॥ ८०॥ - नाबका व्याज् कार्या गार्किकारानामीविकिः। यथारि वागू एत्वमा देवकूर्ण कार्यक्ष्या । मान-গ্রামশিলাৰপং স্বারর, ভুবি দৃশ্যতে। তথা লক্ষ্যেক্যমাপনা ত্ল্যীভোগবিগ্রহা। অপবং স্থাৰরং ৰূপং জুবি লোকহিতায় বৈ ৷ স্পৃষ্টি, দৃষ্টি, রক্ষিতা চ মহাপাতক नामिनी। अञ्चान-विद्यारिय विद्याद्यि नाकामाथमा ताममा अनकाम्रका । व्यज्ञा उत्थव ज्ञनी मर्वालादेककशावनी । १८८ । छलमी वांष्ठिक रख पूर्णाखन्न छात्छ। শোভতে রাঘব হত্ত সীতয়া সহিতঃ স্বয়ং । তলসাবিপিনস্যাপি ,সমস্তাৎ পাবনৎ স্থাব । ক্রোশনাত্রং ভরতে ব কাঙ্গেট গ্রাধ পাথদঃ । ভলসীস্মিধৌ প্রাণান্থে ভ, চন্তি মুন্দ্রর । ন তেষাৎ নরকক্রেশঃ প্রযাতি পরমং পদং ।। কিঞ্চা। অনন্য-দর্শনাঃ প্রাক্তরেশালান্তি ভপোধন। করেরাত্র ক্তং পাপৎ তৎক্ষণাৎ প্রহর্তি তে। গারুড়ে। রুত্র বেদ মহাভাগ ভলসীবনরোপণ । যুক্তিভেন ভবেদতা প্রাণিনাং বিনতাসুত ।। ৪৫,।। ; ভলনী ঝাপিছা ধ্যন পুণারামে বনে গৃহে। পক্ষীন্দু তেন সভ্যোক্তঃ লোকাঃ সপ্ত প্রতিষ্ঠিতাং ।। ৪৬ ।। তলসীকাননে যন্ত মুহূর্তমপি বিশ্র-মেত। ভারকোটিইভাত পাপামুচ্যতে নাত্র সংশয়ঃ। প্রদক্ষিণাৎ মা কুরুতে পঠনাম-সহসূক । जुल्मीकानर्ग निठा रे युकाय छ कन १ लाउ ।। श्री छ कि मूर्या पर ।। निका महिर्देश विश्वाः मन्म महिनानिता विशि स्म करमदेवकः किकाता-र्श्यक्ति । वृद्धीद्रमीय शकाश्चनत्त्र ॥ नश्नात्र भागविष्कृति शक्नानाम क्षकी র্ভিতং। তথা অনুস্টাইউজিক্ষ ইরিকীর্ভিপ্রবক্তরি।। ৪৭ ।। তলসীকানন্থ যত্ত্র হত্ত পদাবনানি চ। পুরাণপঠনং যত্ত তত্ত সমিহিতোহরিঃ। তত্তৈব শ্রীষ্মভগীরথসহাদে। खननी दार्थिश रमें के क्रिक्ट मम् दिन्द्र । किसार शून्यक्त वरका व्रम् करूर निमा-महा मलाकारिकृतिन्यू कियाग्रहा निर्देश्यथा । वेतन व नामाक मांधार माताइन সমীপগঃ। তৃণানি তুর্নসীমূলাৎ যাবস্ত্রপত্তিনোতি বৈ । তাবতীক্র কাইডাহি বঁচন-एक् व न गरमतः ।। 80 ।। कुनगाः निक्षित्रेष्यञ्च पून्तानकमार्वकर । कीरवानमा-

क्नेका इत्राविण्डिः ॥ १२॥ व्यावानः व्याववानः वृद्धस्तियी तका उस् श्रिष्ठभी र व कूर्य है जि ल्या ॥ १०॥ वृद्धः विवास स्वावानः क्रिक्ष्णः विद्या वर्षा उस्कृति । अस्ति । अस्ति वृद्धः विवास हित्र विवास हित्र व्याप्त विवास स्वावानः । १६॥ व्याप्त स्वावान् । १६॥ व्याप्त व्याप्त विवास । १६॥ व्याप्त व्याप्त विवास । १६॥ वि



विना गार्कि महानाएक कार्या र क्षेत्रकार के महाना कार्या है। जननार मूर् आरक्ष्य क्रमान्त्रामा स्मान्य गानिक मा चार्यायमानि महिर्देश क्रिका-नक्षर क्षाचा। कुनावस्था कर्षामा किर्देश के गरमा स्थार हो। श्रीका रेकण्य का यह प्रमाणा मेनू रक्षेत्र । क्षेत्रदेश में हिट ठाविरकों। भौके भेगकि उद्याद । क कंपर करें विके बुरकाभाशामिति । कूर्जा पूर्वनी स्मता पूर्वि निक्षि नैकार । पूर्वि विक्रि मेर्शायामक्लास्थित्र प्रवानास्त्रम् छ। र एकम एकप्रसिर्कः मेमा स्वक्रमिरेनः। डर्फेनर क्वारिखनिकर द्वांन शिक्षा राष्ट्रः थियार । जूननीर ये श्रीके हि पूरानामक नाग्न देव । देवाभग्री खरही देवरण देवार लात्काश्या मृद्या । तन । देवी निकार जूनगोर मृष्पा नः तम खूबि जूमिना । विवर्गवमत्नाज्या छलिनिर नार्ज्याम्बनः । खूनगे-তি চ যোত্র শ্লাই তিকালং বদনে যদি । নিভাং স গোসইসুস্য ফলমাপুে ভুসুর। खन मेर्डर हिंचे क्थार कठः आकर गया भिता। उभरेखर यंत्र अक कुन में दिन ह রোপিতা। ভাতাভিল্যিক। দৃষ্টা রোপিতা পিঞ্চিত। নৃতা। ভল্সী দহতে পাপং যুগা তা श्रिति वेथिन । কেশবারতনে যন্ত কারয়েজুলগীবনং। লভতে চাক্ষয়ং স্থানং পিতৃতিঃ সহ বৈক্ষবঃ। অন্যত্রাপি। ভলসীকাননে আদেৎ শিত গং কুরুতে উষঃ। गग्नाजाक कुडरे एक जाविकः विष्मुना श्रुवा। उनेनीगरवर मून्। विण्टलायां कि शांककार। नर्सवा मूनिमार्म् व उन्नांकी भूगांकाग्करवर। किस स्वास्म । विनार्थमा-कार्णयातम । एक शत्क यम जाजन ज्लीमा दुनने यूचा ा संबद्धन महालाम जूननी हािल्यामा। देखि । अन्वार 'बिडमनािर म्म कार्रना होयूना । यहि।पाः निथं एक क्रांक व्यक्तिमा मनमा है।

्यथं शिष्ट्यानीमृद्धिकाकाशेषिमाश्चार । कार्यम् शिद्धकानाश्चमस्याम । जुनिहें विकास विकास निर्धा हुए । कोर्यका विकास विकास निर्धा हुए । यात्रान् शहर विकास के जुनमा सुना दिका । मर्यान् कि के कि विकास के मर्यान् विकास विकास विकास के मर्यान् विकास वि

भावति । १९% । देश विकास कार्या कि के कि देश है। वहां । प्राप्त कार्या के । प्राप्त कार्या कि । प्राप्त कार्या के । प्राप्त कार्या के । प्राप्त कार्या कार्य

मनः।। ७०।। 'तृषम्भिष्यः सम्मानगरेषे । जनसम्मानम् । इतिकानरम्। शिक्षा व मेर्डिंग भ्रिका विकिश्वार मा कार में महिल्ल के कार्य के न्तरं सहस्राध्यक्ते । जवरच स्थि भागर प्राप्त महत्त्वस्थ स्थान । विद्यासम्बद्धाः नामका स्थान स्य वर् क्षत्रीमञ्जूर मूनर भावनर मृहिकामालि । दशमर कुर्वेडि स्व विश्वास्त्रमी-कार्यका । मान करन अरने भूगमितः कामभाजाननः । क्रियम अभावतः वन क्षित्रक्षित्रं र स्वक्रवेलार उपवर उपवर तमनात्र हि । महोहर नक्षार क्षिमात जूननीका केविद्धना । न তেवार भूनजावृ विकिस्ताकार अर्थकन । श्रीराहीयपि महामारिम्द्रभवज्ञागम्युहिरेकः। मुख्य सकाजि मार्गन यूनभोकाकेवद्भिना। छीर्थर यान न नश्काखर में जिला को जन शदा । जूनजीका छेमधीना म्चतान मृबर्ध १६। मामाकः जुनसीनाकः, मत्या कार्केष्ठवना वि। पारकात्न ज्ञाना कार्यन जिल्ला भागिता कत्र है। वर्वादकारिनक्रम् एकामित्करियर्जनाजनः। मन्तर एक वर्वादिनाक क्रिमी-काके महिना। अगराभर विवासार। यह कुर्वा बुन मोकारे के सम्मानार मुकलिनार। क्षेमानीक यस्त्रम रूड१ उने तका १५८६१।।

ें हैं विश्व अने अने विश्व विश्व विश्व के बाद के नार्य के विश्व के नार्य के विश्व के नार्य के विश्व के क्षिंवर शंबर मूर्व सितिन कर् सार्। खबीनखंदैर निर्देश कीरेब्छन। मरेबन्ह किर। क्रिकारीमार्था । निव्युत्तक मुक्काक जिल्हार राजामान । क्षा कर्षा वर्षा वर्षा विश्वा डलमीमक्र ॥, देवक्री यः विनिदेवकर्तारकारक विष्णाद्यांकानामा । भूपाठि नक्ताकांकाक लिक्स क्तनीर कर्म। वृह्ताइमीर अध्यक्ति । कर्बन शाहरतमानु विकास महरू । नदा । स्वरूपांकर वाणि शाहलम् क्या नासू में भारकर । इतिकासिकारपार के नेकार केवित हो । स्वरूपांना मूर्तको । समाप्तिक वे सामी स्वरू क्षी के भिन्द वर जुनतीक्ष । उक्त तारानु राष्ट्र के 11 के 19 श्री कार्ना बर उ क्षेत्र विकासी नेवार निवस विक्रा करावित करवा विकास करें 5**十种的图 09 H**系统

भार्वित्रवर्षः । वर्षा विक्रिकेवित्रवर्षः । रहिष्किमिकि या शिकः ॥ ६० । मृद्रवित्रवे दिन्नी एता त्तरा भूग्र पिउएमा बा ग्रेसिंग

क्ष्मान्त्री नाराकात्वर । जनवन्त्रीर्गकार करन वर्ष्ट्र-क्रिकार विशेष्ट्रांतरे कि सहसारक्ष्म देवेलक्ष्य श्री विकास स्थापन क्ष्मित्र करने क्षित्र करने क्षित्र कार्या क्षाप्त क्षाप्त क्षाप्त क्षाप्त क्षाप्त क्षाप्त क्षाप्त

के आसारका रेकाराजीकार । के । .\*

व्यथं खननीमनज्यनभाशं बार । शक्ष् भूतात । भूर्य जू खननी भेजर मृष्ट्री শিরসি কর্ণয়েঃ। কুরুতে ভাস্করিস্তস্য দুক্তস্য ও মার্জন । ত্রিকালং বিনতাপুত্র প্রাশয়েজুলসীৎ যদি। বিশিষ্যতে কায়শুদ্ধিশ্চান্দ্রায়ণশতং বিনা। স্কাল্ফে শ্রীবশিষ্ঠ मास्राज्मशारि। हान्मुाश्रभाद्धश्रम्षु उन्नाकृष्ठी क्रूमानका । विभिन्नारक कांग्र শুদ্ধিসুলসীপত্র ভক্ষণাৎ ।। ৫৮।। তথা চ তলসীপত্র ভক্ষণাৎ ভাববজ্জিভিঃ। পাপোপি সক্ষতিং প্রাপ্তঃ ইত্যেতদপিবিশ্রুতং। তথাচ ক্ষানের শীব্রহ্মণা নারদং প্রতি কথিতে অমৃতসারোদ্ধারে লুক্তকোপাখ্যানাত্তে প্রীবিষ্ণুদ্ভানাৎ হমদূভান্ প্রতি বচনং। ক্ষীরাক্ষৌ মথ।মানে হি ভলসীকামরূপিণী। উৎপাদিত। মহাভাগা লোকোদ্ধারণহেত্বে । যস্যাঃ স্মরণমাত্রেণ দর্শনাৎ কীর্ত্তনাদপি । বিলয়ং যান্তি পাপানি কিৎ পুনর্কিষ্পুত্রনাৎ। জাতরপময়ৎ পুত্রণং পত্মরাগময়ৎ শুভং। হিত্তা जू तजुका जानि गृङ्गा जि जूनभीमनः । जिक्क ज नुक्तांकनाणि भवः जूनिमस्य । শশ্চাদিন্টান্তমাপল্লোভন্মাভূতং কলেবরৎ ।। ৫৯।। সিতাসিতং যথা নীরং সর্ধ-পাপক্ষাবহং ৷ তথা চ তুলদীপত্ৰং প্ৰাশিতং সৰ্বকামদং ৷ যথা জাতবলোবাছ্ল-ৰ্দ্হতে কাননাদিকৎ। প্ৰাশিতৎ তুলসীপত্ৰং তথা দহতি পাতকং। যথা ভক্তিরতে। নিভ্যং নরোদহতি পাভকং। তুলসীভক্ষণাভদ্ধং ছহতে পাপসঞ্চয়ং। চান্দুায়ণ-সহসুস্য পারাকাণাৎ শতস্য চ। ন ভল্যৎ জায়তে পুণ্যৎ তুলসীপত্রভক্ষণাৎ ! রুত্বা পাপসহস্থানি পূর্বে বয়সি মানবং। জুলসীভক্ষণাগুচ্চে এতেমেতৎ পুরা হরেং ১৬০। ত,বত্তিগুল্ডি পাপানি দেহিনাং যমকিজ্বাই। যাবন্ন তুলসীপত্রং মুখে শির্বাস তিগুতি। অমৃতাদুখিতা ধাত্রী তুলসী বিষ্ণুবল্লভা । স্মৃতা সংকীর্জিতা ধ্যাতা প্রাশিতা সর্ব-কামদা। ভাত্রেব জীয়মৎ প্রতি জীভগবদ্বাক্যং। ধাত্রীফলঞ্চ তুলসী মৃত্যুকালে ভবে-দ্বদি। মুখে যস্য শিরে দেহে দুর্গতির্নান্তি তস্য বৈ। ৬১ ॥ যুক্তোযদি মহাপাপেঃ সুক্তং নাজ্জিতং কৃচিৎ। তথাপি গায়তে মোকস্থলনা ভক্ষিতা যদি। লুক্ককেনাস্থ দেহেন ভক্ষিতং ভলসীদলং । সংপ্রাপ্তোমংপদং নূনৎ কৃত্বা প্রাণস্য সংক্ষয়ং । পুরাণাত্তরে চ। উপোষ্য দ্বাদশীং শুদ্ধাং পারণে জ্ল্দীদলং। প্রাশয়েদ্বদি বিপ্রেন্দু অশ্বমেধাইটকং লভেং ইতি ৷৷ ৬২ ৷৷ তথৈব তুলসীস্পর্শাৎ ক্ষচক্রেণ রক্ষিতঃ ৷ ব্রহ্মবন্ধুরিতিখ্যাতে। হরিভক্তিসুধোদয়ে। অতএবোক্তৎ। কিঞ্চিত্রমস্যাঃ পতিতং জুলসাঃ দলং জলং বা পতিতং পুনীতে।লগ্নাধিভালস্থলমালবালম্ৎসাপি কংসা-ঘবিনাশনায়েতি ।। ৬৩ ।। জীমজুলস্যাঃ পত্ৰস্য মাছাক্সং ঘদ্যপীদৃশং । তথাপি

বিশিষ্যতে বিশিষ্টোভর্তি॥ ৫৮॥ দিফান্তং মৃত্যুং॥৫৯॥ হরেঃ ভগবতঃ সকাশাং॥৬০॥ শিরে শির্দি॥৬১॥ ॥৬২॥ এতক মাহাত্মা বিশেষএব॥ ৬৩॥ তর্হি কিং, বৈষ্টবরপানি-

বৈক্ষবৈত্তম গ্রাহ্যং রক্ষাপ্রিং বিনা ।। ৬৪।। ক্ষপ্রিয়ন্ত্রাৎ সর্বতে প্রত্নস্যাঃ প্রস্কৃতঃ। সন্ধতিন্ত্রানং ধাত্র্যাশ্চ মাহাত্ম্যৎ লিখ্যতে ২ধুনা।।

অথ ধাত্রীমাহাত্মঃ। ক্ষান্দে ব্রহ্মনারদসম্বাদে। ধাত্রীচ্ছায়াং সমাশ্রিত্য যোহ র্চয়েচক্রপানিবং। পূজ্পে পূজ্পে২শ্বমেধস্য ফলং প্রাপ্নোতি মানবং। তত্তিবাগ্রে। ধাত্রীক্ষায়ান্ত সংস্পৃশ্য কুর্য্যাৎ পিশুৎ ভুযোমুনে। মুক্তিং প্রযান্তি পিতরঃ প্রসাদা-আধবস্য চ। মূর্দ্ধি ঘাণে মুখে চৈব দেহে চ মুনিসন্তম। ধতে ধাতীফলং যম্ভ স মহাত্মা সুদুর্ল ভং ।। ৬৫ ।। ধাতীফলবিলিপ্তাঙ্গো ধাতীফলবিভূষিতঃ । ধাতীফলক্তাহারো নরোনারায়ণোভবেৎ। यः কশ্চিছ্মিন্থবোলোকে ধত্তে ধাত্রীফলং মুনে। প্রিয়ো-ভৰতি দেবানাৎ মনুষ্যাণান্ত কা কথা । यः কশ্চিদৈক্ষবোলোকে মিথ্যাচারোপি मूक्षेशीः। शूनां जि मकला एवँ। भाजी कलपला श्विष्टः। भाजी कलानि यानि छ। বছতে করসম্পুটে। তস্য নারায়ণোদেবোবরমেকংপ্রয়াছতি। ধাত্রীফলঞ্চভাক্তব্যং কদাচিৎ করসম্পূটাৎ। হশঃ শ্রিয়মবাপ্নোতি প্রসাদাচক্রপাণিনঃ। ধাতীকলঞ্চ তুলসী মৃত্তিকা দারকোড়বা। সফলৎ জীবিতং তস্য ত্রিতয়ং যস্য বেশানি ।। ৬৬ ।। পাত্রীফলৈস্ত সংমিশ্রং তুলসীদলবাসিতং ৷ পিবতে বহতে যন্ত ভীর্থকোটিয়লং लाउ । यंग्यिन् गृष्ट् उत्वर्खायः जूनमीमन्तरामिठः। थाजीकरेन क विद्यन्पु गास्त्ररेयः किर श्रास्त्रकनः। जूननी प्रसादितरार था जा यन। कनः गृष्ट्। कवनः रेवस्वरः जमा সর্ব্বপাপবিনাশনং ! ব্রহ্মপুরাণে চ । ধাত্রীফলানি ভুক্সী হাতকালে ভবেদ্যদি! মুখে চৈব শির্দ্যক্ষে পাতকং নান্তি তদ্য বৈ।।৬१।। রুদ্বা তু ভগবৎপূজাং ন ভীথে সানমাচরেং। নচ দেবালয়োপেতাইস্পৃশ্যসংস্পর্শনিদিনা।। ৬৮।।

অথ স্থাননিষেধকালঃ ।। শৃত্যর্থসারে । ন সুয়াদুৎসবে তার্থে মাঙ্গল্যং বিনিবর্তা চ। অনুব্রজা সুহাদ্বসূন্থ করিছেই দেবতাং ।। ৬৯ ।। বিষ্ণুন্তো চ। বিষ্ণুল্যসমীপ্রান্ বিষ্ণুদেবার্থমাগতান্ । চাণ্ডালান্ পতিতান্ বাপি স্পৃন্ন স্নানমাচরেং। দেবযাত্রাবিবাহেষু যজ্ঞাপকরণেষু চ। উৎসবেষু চ সর্বেষু স্প্টা-

বেদিতং ভদ্যাহৃৎ নেতি লিখতি শ্রীমদিতি। কৃষ্ণার্পণং বিনা তৎপত্রং ন গ্রাস্থং ॥ ৬৪॥

দেহে চ অন্যন্দিন্ করাদ্যক্ষেপি॥ ৬৫॥ করদম্পুটাদিতি পূর্বং মঙ্গলার্থং যত্ত করদম্পুটে ধৃতং তত্মাদিপি॥ ৬৬॥ বহতইতি পাঠে নিরন্তরক্ষোকবক্ষ্যমাণতোয়্মেব সম্বন্ধনীয়ং॥ ৬৭॥ এবং পূজাবিধিং লিখিত্বা তদনস্তরক্ষতাং লিখনাদৌ তীর্থপ্রাপ্তাদিনা বিহিত্স্যাপি স্নান্দ্য নিষেধং লিখতি কৃত্বেতি। দেবালয়মুপেতা যেইম্পূশ্যা নীচজাতয়ঃ তেষাং স্পর্শনেনচ ন স্থান্যাচরেৎ। আদিশন্দেন যত্ত কুতাপি ভগবৎপূজাভাৎসবে সম্পাপ্তানাং স্পর্শনাদিকং॥ ৬৮॥

তীর্থে ন সায়াও।। ৬৯॥ বিষ্ফ্রালয়স্য সমীপে তিষ্ঠন্তি নিবসন্তীতি তথা তান্। ততক কালে বিকোঃ সেবা দর্শনাদি তদর্থং বিষ্ণালয়ান্তরাগতানিত্যর্থঃ। যদা বিষ্ণালয়সমীপবর্ত্তিনঃ। কুতঃ স্থিন বিদ্যতে ।। १० ।। এবং প্রাতঃসমত্যর্জ্য প্রীক্ষণ, তদনন্তরং । শাস্ত্রাভ্যাসং বিপ্রাল কুর্যা বিপ্রোবিশেষতঃ ।। १১ ।। যতউক্তং । তা তিমা তা উতে নেত্রে বিপ্রালাং পরিকীর্ভিতে । একেন বিকলঃ কালোরাভ্যামন্ধঃ প্রকীর্ভিতঃ ।। কিঞ্চ কৌম্মে ব্যাসগীতায়াৎ ।। যোন্যত্র কুরুতে যতুমনধীত্য শুভিং দিলাং । স সংমূঢ়োন্মংভাষ্যো বেদবাহ্যোদিজাতিভিঃ । ন বেদপাঠমাত্রেণ সন্তব্যেদেষ বৈ দিলাং । যথোক্তাচারহীনন্ত পক্ষে গৌরির সীদ্ভি । যোহধীত্য বিধিবদেশং বেদার্থৎ ন বিচারয়ে । সচান্ধঃ শুভকণ্পত্ত পদার্থৎ ন প্রপদ্যতইতি ।। ৭২ ।। অভোহধীত্যান্থহং বিদ্যানখাধ্যাপ্য চ বৈক্ষবঃ । সমর্প্য তচ্চ কুষ্ণায় যতেত নিজবৃত্তয়ে ।। ৭৩ ।। বৃত্ত্রে সভ্যাঞ্চ শৃত্যাৎ সাধূন্ সঙ্গত্য সৎকর্থাং ।। ৭৪ ।।

অথ বৃত্তিসম্পাদনং। সপ্তমন্ধন্ধে। ঋতামৃতাভ্যাং জীবেত মৃতেন প্রমৃত্তেন বা। সত্যানৃতাভ্যামপিবা ন শব্জ্যা কদাচন। ঋতমুঞ্জিলিং প্রোক্ত মমৃতং স্যাদ্যাচিতং। মৃত্ত্ত্ত নিত্যং যাচ্ঞা স্যাৎ প্রমৃতং কর্ষণং শ্বৃত্ত নিত্যান্ত্র বাণিজ্যং শবৃত্তিন চিদেবনং।। আত্মনোনীচলোকানাং সেবনং বৃত্তিসিদ্ধয়ে। নিতরাং নিক্যতে স্ত্তিবিঞ্চবস্য বিশেষতং। তদুক্তং। দেবা শবৃত্তিবৈঞ্চবস্য নিতরাং নিক্যতে স্তিবিঞ্চবস্য বিশেষতং। তদুক্তং। দেবা শবৃত্তিবৈঞ্চবস্য ন সম্যক্ তৈরুদাহতং। শ্বুজ্বাধ্যাং। তেষাং পুরাত্মনাময়ংভুক্তা চন্দুায়ণঞ্জেরিতি । শুক্ল বৃত্তেরসিদ্ধে চ ভোজ্যামান্ শূত্রবর্গতং। তথৈব গ্রাহ্যাগ্রাহ্যাণি জানীয়াচ্ছাক্রতোবৃধ্য। শুক্লবৃত্তিশ্চ । প্রীবিষ্ণুদ্র্যাত্তরত্তীয়কাণ্ডে। প্রতিগ্রহণ যলপ্রং যাজ্যতং শিষ্যতন্ত্রণ। তথাবিত্তেগাবিপ্রস্য শক্তং তথ ত্রিবিধং শ্ব্তং। মুদ্ধাপকারাল্লবঞ্চ দণ্ডাচ্চ ব্যবহারতং। ক্রত্রিয়া ধনং শুক্রং তিরিধং পরিক্রিতং। ক্রিবাণিজ্যগোরক্ষাং ক্রত্বা শুক্রং তথা বিশাং। দ্বিজশুক্রময়া লব্ধং শুক্রং শূত্রস্য ক্রতিতং। ক্রমাগতং প্রতিদানং প্রাপ্তঞ্চ সহ ভার্যয়া। ত্রিশেষেণ সর্বেরাং ধনং শুক্রং প্রকীত্তিতং।

অথ গ্রাহাগ্রাহ্যাণি।কৌমে তত্ত্বের।নাদ্যাচ্চূদ্রন্য বিপ্রেরং মোহাদ্যাযদি কামতঃ।সশুদ্রোনিং ব্রজতি যস্ত ভূত্তে হানাপদি। দুক্তং হি মনুষ্যস্য সর্কাননে প্রতিষ্ঠিতং। যোষস্যানং স্মশ্বাতি স তস্যাশ্বাতি কিলিয়ং। আদ্ধিকঃ কুলমিত্রশ্চ

বিষণু সেবার্থং যতঃ কুতোপ্যাগতান্ যদা বিষণু সেবার্থ মাগতাংশ্চ ॥ १०॥ দ্বিজঃ তৈবর্ণিকঃ ॥ १১॥ বিপ্রস্তু বিশেষতঃ শাস্ত্রাভ্যাসং কুর্য্যাদিত্যতা হেতং লিখতি প্রভাতি । একেন প্রতিক্রপেণ স্মৃতি ক্রপেণ বা নেত্রেণ বিকলঃ বিহীনঃ । দ্বাভ্যাং বিকলঃ অদ্ধাঃ ॥ ৭২॥ বিদ্যান্ শাস্ত্রজ্ঞানে অধাপ্য শাস্ত্রং শিষ্যান্ পাঠয়িত্বা । বৈষ্ণবশ্চেৎ তৎ অধ্যয়নমধ্যাপনঞ্চ কৃষণায়সমর্প্য ॥ ৭৩॥ সতী মৃত্বমাং প্রবিষ্ণু বৈষ্ণবাভায়াং কথাং ॥ ৭৪॥

ব্বগোপালক নাপিতঃ। এতেশূদেষুভোজ্যায়াদত্ত্বা বশ্পপণং বুধৈঃ। পায়সংসেহপকৃং যদোরেসং চৈব শক্তবঃ। পিণ্যাকঞৈব তৈলঞ্চ শূদ্রান্তান্ত্র তথৈবচ। অঞ্চিরাঃ। গোরসকৈব শক্তু শচ তৈলপিণাকমেবচ। অপূপান্ ভক্ষেত্র ছাৎ যৎকিঞ্পিৎপয়সা कृ उर । अजिया र को । अमू काया मह र्या जू ए एक म जू ए एक भृथियो मनर । न द त मु ज्वर त-ভুক্তা বিষ্ঠায়াং জায়তে ক্ষিঃ।१৫। অন্যত্র চ। দাস নাপিত গোপাল কুল মিত্রার্দ্ধ-সারিণঃ। ভোজাানাঃ শূতবর্গেইমা তথাঅবিনিবেদকঃ।।१৬।। মধুদকং ফলৎ মূলমে ধাৎস্যভয়দক্ষিণা। অভ্যুদ্যতানি ত্বেতানি গ্রাহ্যাণ্যপি নিরুষ্টভঃ। খলক্ষেত্রগতং ধান্যংকূপবাপীযু্যজ্জলং। অগ্রাহ্যাদুপি তদ্গ্রাহ্যং যচ গোঠগতংপয়ঃ। পানীয়ং পায়সং ভক্ষ্যং घृष्ठ । नवनस्मत ह। इसम्बर न गृङ्गीया । মনুক্ষ্তো। সামুদ্রং দৈরবং চৈব লবণে পরমাদ্ধৃতে । প্রতঃক্ষে অপি তে গ্রাহ্যে নিষেধস্ত্রন্গোচর:। আয়সেনের পাত্রেণ হদয়মুপনীয়তে। ভোক্তা তদিট্সমং ভুংক্তে দাতা চ নরকং ব্রজেৎ। গোরক্ষকান্ বাণিজকান্ তথা কারুকশীলিনঃ। প্রেষ্যান বাৰ্দ্বিকাং শৈচব বিপ্রান্ শূমবদাচরে ।। ११।। কৌর্মেচ তত্তিব। তৃণং কাষ্ঠৎ ফলং পূত্যৎপ্রকাশৎ বৈ হরেছুধঃ। ধর্মার্থং কেবলং বিপ্র হ্যন্যথা পতিতো ভবেৎ। তিলমুকাষবাদীনাৎ মুষ্টিগ্রাহ্যা পথি স্থিতিঃ। সুধার্ত্তির্নান্যথা বিপ্রা ধর্ম-বিদ্ধিরিতি স্থিতিঃ। বৈষ্ণবানাং ছি ভোক্তব্যং প্রার্থ্যান্নং বৈষ্ণবৈঃ সদ।। অবৈষ্ণবা-নামন্নন্ত পরিবর্জানমেধ্যবং । १৮॥ তথাচ পালে দেবদূত বিকুণ্ডলসমাদে। প্রার্থ-রেদ্রৈফবাদরং প্রযত্নে বিচক্ষণঃ। সর্বাপাপবিশুদ্ধার্থং তদভাবে জ্বলং পিবেৎ। নারদীয়ে। মহাপাতকসংযুক্তোত্রজেদ্বৈষ্ণব্যন্দিরং। যাচয়েদলমমূত ওদভাবে জলৎ পিবেৎ ৷ বিষুদ্দ ভৌ ৷ শ্রোতিয়াল্ন বৈক্যবালং ভ্ত**েশ**ষঞ্**যদ্ধি: ৷ আ**দনখাৎ শোধরেৎপাপং ত্রাগ্লিঃ কনকং যথা।। ৭৯।। কান্দে মাক ত্রেয়ভগীরথসম্বাদে। শুদ্ধৎ ভাগবতস্যান্ত্রং শুদ্ধৎ ভাগারথা জলং। প্রেদ্ধং বিষ্ণুপর্থ চিত্তং শুদ্ধমেকাদশী-

আত্মনঃ সকাশাৎ যে নীচা লোকান্তেষাং বৈষ্ণবদ্য তু নীচলোকসেবনং বিশেষতোহিধিকং নিন্দ্যতে নীচসেবনেন নীচানামবৈষ্ণবছুউজনানামধীনত্মহাদোষাপ্মন্তে: ॥ ৭৫॥

দানাঃ কৈবর্ত্তাঃ কুলমিত্রানি পারম্পর্য্যে নিজবংশহিতকারিনঃ। অর্দ্ধান্থ বিস্তাদিবিভাগিনঃ॥ ৭৬॥ বিপ্রেভ্যোহিপি সর্ব্বেভ্যঃ শুক্ল মৃত্তিনিদিদ্ধাতীত্যভিপ্রেত্য লিখতি গোরককানিতি। কারকেশীলিনঃ কটাদিকারিনঃ॥ ৭৭॥ এবং ব্রাহ্মনস্য শুক্ল বৃদ্ধোনাং সর্বেধামেবাল্লবর্জনে প্রাপ্তে অপবাদং দর্শয়ন্ বৈফ্লানাঞ্গ শুক্ল মৃত্তিমভিব্যঞ্জয়ন্ অবৈষ্ণবত্ত্বেপি বিপ্রানামপ্রলং বৈষ্ণবৈব্বর্জ্জনীয়মিত্যভিপ্রেত্য লিখতি বৈষ্ণবাদাং। হি নির্দ্ধারে প্রাণ্ডি।
অমেধ্যং পুরীধাদি তদ্বং॥ ৭৮॥ শ্রোক্রিয়াল্লমিতি ছতুশেষং হবিরিভিচ দৃষ্টান্তত্ত্রাত্র জ্যোহ
॥ ৭৯॥ শুদ্ধমিতি হতুকাদৌ নিষিদ্ধানি শুদ্ধমেবেত্যর্থঃ। তথাচ বিষণু ক্র্তৌ। শিববিষণু র্চনে

বুতং। অবৈষ্ণবগৃহে ভুজ্বা পীত্বা বাজ্ঞানতোপিবা। শুদ্ধিশ্চান্দুয়েনে প্রোক্তাইফীপূর্তং বৃধা সদা। প্রীপুজ্লাদবাক্যে চ।কেশবার্চা গৃহে যস্য ন তিন্ঠতি মহীপতে।
তদ্যামং নৈব ভোক্তব্যমভক্ষ্যেণ সমং স্মৃতং।।৮০।। কেচিষ্ভ্যনপেক্ষস্য জপশ্রদ্ধার
বতঃ পুভৌ। বিশ্বস্তম্যাদিশন্ত্যন্মিন্ কালেপি কৃতিনোজপং।। ৮১।।
অথ মাধ্যাক্লিক্রত্যানি। মধ্যাক্লে শ্বন্ধং পুজ্পাদ্যাহ্ত্য বা শ্বর্ম। ভূত্যাদিনা বা সম্পাদ্য কুর্য্যান্মাধ্যাহ্নিকীঃ ক্রিয়াঃ। স্থানাশক্তো চ মধ্যাক্লে স্থানমাচর্য্য
মাজ্রিকং। যথোক্তাৎ ভগবৎপূঞ্জাৎ শক্তম্বেৎ প্রাগৃদাচরেৎ।।৮২।।

অথ বৈশ্ববিশ্বদেবাদিবিধিঃ। ততঃ ক্ষার্পিতেনৈব শুদ্ধেনায়েন বৈশ্ববঃ। বৈশ্বদেবাদিকং দৈবং কর্মা পৈত্রগু সাধয়েৎ। তদুক্তং। ষঠেদিনবিভাগে তু কুর্য্যাৎ পঞ্চমহামখান্। দৈবোহোমেন যক্তঃস্যাৎ ভৌতক্ত বলিদানতঃ। পৈত্রোবিপ্রামদানেন পৈত্রেণ বলিনাথ বা । কিঞ্চিদমপ্রদানাদ্বা তর্পনাদ্বা চত্তর্বিধঃ। নৃষ্ক্রোহ ভিথিসংকারাৎ হন্তকারেণ চায়ুনা। ক্রন্মযক্তোবেদজপাৎ পুরাণপঠনেন বা।। তয়ি ত্যতা চকৌর্মো। অক্তবা চ দিজঃ পঞ্চ মহাযজান্ দিজোত্তমাঃ। ভূঞ্জীত চেৎ সুমূন্টা আ তির্য্যানিং স গচ্ছতি।। ৮৩।।

অথ বৈষ্ণবশ্বাদ্ধবিধিঃ। প্রাপ্তে শ্রাদ্ধিনিহপি প্রাণান্ধ ভগবতের্পরেং। তচ্ছে-যেনৈব কৃষ্ণতি শ্রাদ্ধৎভাগবতোনরঃ।৮৪।যক্ত স্তৌ। গৃহারিশিশুদেবানাং যতীনাং ব্রহ্মচারিণাং। পিতৃপাকোন দাতব্যোঘাবৎপিগুান্ন নির্দ্ধপেদিতি।।৮৫।। উদূক্ সামান্যবচনং বিশেষবচনব্রজৈঃ। শ্রুতিস্মৃতিপুরাণাদিবর্তিভিক্ষাধ্যতে দ্রুবং।।৮৬।।

দীক্ষা যদ্য চাগ্নিপরিগ্রহঃ। ব্রক্ষচারিয়তীনাঞ্চ শরীরে নাস্তি স্তক্ষিতি। অত্র চ্চীনাঃ। অশুচি সংস্থাদিনাপি যথা গঙ্গাজলং শুদ্ধমেবেত্যাদয়ঃ। তছুক্তং। অপি চাণ্ডাল ভাণ্ডস্থং তজ্জনং পাবনং মহদিত্যাদি।।৮০।। বৃদ্ধৌ বৃদ্ধিদম্পাদনে অনপেক্ষদ্য আদক্তিরহিতদ্য যতঃ প্রভৌ ভগ্নতি বিশ্বস্তদ্য ভগবান্ জগতাং বৃদ্ধিদঃ কিন্তুৎ প্রয়াদেনেতি বিশ্বাসং গত্স্য যতঃ কৃতিনঃ অভিজ্ঞদ্য। অতাজ্ঞপে শ্রদ্ধা প্রীতিস্তদ্ধতঃ অক্মিন্ অধ্যয়নাধ্যাপনবৃদ্ধিদ্যাদনসম্বাদিনি কালেপি জপমেবাদিশন্তি কেচিৎ কৃতিনইতি বা।। ৮১॥

প্রাপ্ত যথা প্রাতঃ কৃত্যং তথেতার্থঃ।। ৮২।।

ভৌতোভূতদয়িয়বজঃ লৈবল যজ্জদন্তবিধিঃ। চন্তবিধিত্বমবাই বিপ্রেতি। অত্রচ বিশেষঃ কৌর্দের দেবযজ্ঞঃ ভূতমজ্ঞঃ পিতৃযজ্ঞঃ তথৈবচ। মানুষ্যঃ ব্রহ্মবজ্ঞঞ্চ পঞ্চফ্জান্ প্রচক্ষতে। যদি স্যাৎতর্পণাদবাক্ ব্রহ্মযজ্ঞঃ ক্তোনহি। কৃত্বা মানুষ্যযজ্ঞঃ বৈ ততঃ স্বাধ্যায়মাচরে । কুশপুঞ্জে সমাদীনঃ কুশপাণিঃ সমাহিতঃ। শালাগৌ লৌকিকে বাথ জলে ভূম্যামথাপি বা। বৈশ্বদেবশ্চ ক্রিব্যোদেবযজ্ঞঃ সবৈশ্যুতঃ ইত্যাদি।। ৮৩॥

তচ্ছেষেণ ভগবন্ধিবেদিতেনৈব। যতোভাগবতঃ ভগবদ্ধক্তঃ।। ৮৪।। তত্ৰ নিষেধবাকামূলিখন্ বহুতর্বচনৈস্তদ্বাধয়িত্বা ভগবদর্গিতালাদিনৈব আদ্ধবিধানং সাধয়তি গৃহাগ্রীত্যাদিনা অপ্রকম্পিতা ইত্যন্তেন।।৮৫।। ঈদৃক্গৃহাগ্রীতি শ্লোকসদৃশং॥৮৬।। বিশেষ বচনান্যেব দর্শয়তি বিশো-

ভগাচ পাছে বিক্লোনিবৈদিতায়েন যাইবাং দেবতাত্তঃ ! পিভ্ভাণচাপি
তদেরং তদানতার কপতে ॥৮৭॥ মোক্লখনে নারদাকো ! সাত্তঃ
বিধিনাস্থায় প্রাক্ সূর্যনুধনিঃসূতং ! পূজ্য়ানাস দেবেশং তচ্ছেবেণ পিতামগান্ !
॥৮৮॥ ব্রক্ষাগ্রপ্রাণে ৷ ষং শ্রন্ধাকালে হরিভুক্তশেষং দদাতি ভক্তা পিতৃদেবতানাং ৷ তেনৈব পিণ্ডাংজ্লসীবিমিশ্রানাকপেকোটিং পিতরং সূতৃপ্তাঃ ॥৮৯॥
কান্দে শ্রীনিবোক্তো ৷ দেবান্ পিতৃন্সমুদ্দিশ্য যদিকোর্কিনিবেদিতং ৷ তানুদ্দিশ্য
ততঃ কুর্যাং প্রদানং তস্য চৈবছি ॥ ৯০॥ প্রয়ন্তি ভৃপ্তিমন্তলাং সোদকেন তু
তেন বৈ ৷ মুকুন্দগাত্রলগ্রেন ব্রাক্ষণানাং বিলেপনং ৷ চন্দনেন তু পিগুলাং কর্ত্ব্রথ
পিতৃতপ্রয়ে ৷ দেবানাঞ্চ পিভ্গাঞ্চ জায়তে তৃপ্তিরক্ষয়া ৷ এবং ক্তে মহীপাল মা ভবেৎ সংশয়ংকৃচিৎ ৷ ১১ ৷৷ তবৈৰ শ্রিপুরুষোন্তমথণ্ডে ৷ অনাদ্যং শ্রাদ্ধকালে তু
পাতিতাদ্যৈনির্যাক্ষিতং ৷ ত্রলসীদলমিশ্রেণ সলিলেনাভিষিঞ্চয়েৎ ৷ তদমংশুদ্ধতা-

রিতি।। ৮৭।। সাত্রতনিতি সাত্রতা বৈঞ্বাস্তৎসম্বন্ধিনমিত্যর্থঃ। দেবেশং শ্রীভগবন্তং তচ্চেযেণ ভগবন্নিবেদিতেনেত্যর্থ:। নচাত্র বক্তব্যং যদন্নাদিকং ভোজনপাত্রেযু নিধারান্নসংস্কারাদ্যপ্ন বিধিনা ভগৰতেইপিতং তদ্য যদবশিক্ট॰ বন্ধন পাত্রাদাবন্তি তেনেতি । বিষ্ণোনিবেদিতালেনেতি পোলোক্তে:। নচ তদপাৰশিকীমেবেতি শক্ষনীয়ৎ যতঃ সংস্কারাদিবিধিনাভগৰতো তথে যৎ সমপ্ততে তদেব নিবেদি চমিত্যুপপদ্যতে ইতি অতস্ত সৈয়ে ভগবদ্ধ কোচ্ছিট্ট স্য ভক্তাশেষ ইত্যা-ত্যক্তিঃ। অন্যথা গৃহভাণ্ডাদে স্থিত্স্য যৃত্থগুদিদ্রব্যস্য কিঞ্চিদর্পণান্তত্রাপি সর্বত্র শেবস্ব্রাপ্তা নিবেদিতত্বপ্রসঙ্গং দ্যাৎ। তচ্চাযুক্তং। তত্র তত্র স্থিতদ্য দ্রবাদ্য সর্বাদ্যের উচ্চিটত্বেন প্রনর্জন বতেহর্পণাযোগাদিতি দিক্। এবঞ্চ ভগবছ্চ্চিউস্য পর্মভক্ত্যা মহাপ্রদাদতয়। গ্রহণে শিউরুতো যজ্ঞাবশিফীদ্রব্যকরণকহোমইব দ্রাপহার দেশ্যপ্রসঙ্গদ ন স্যাৎ অন্যথা ঐচির্ণামৃতপানেইয়্ লেপত্তলস্যাদি নির্মাল্যগ্রহণে হপি সর্ববৈত্রব দত্তাপহারদোষব্যাপ্তিঃ স্যাৎ নচ সং যুক্তা ষতঃ তত্তলাহণে মহাফল প্রতিপাদকানি তত্র তত্র বচনানি শতশঃ সন্থি তেষুচ কানিচিৎ শ্রীচরণা-মৃতপামাদিপ্রসঙ্গে পূর্বেলিখিতানি । অত্রচ লিখিতং বিষ্ণোর্নিবেদিতারেনেতি । লেখ্যান্যপি দেবান্ পিতৃন্ সমুদ্দিশাতি মুকুদ্দগাত্রলগ্নেনতি সর্বপ্রেয়েনেত্যাদীনি। ত্রুতিশ্ব। একএব লারা-য়ণইত্যাদিঃ। এতচ্চাত্রে লেইখ্যঃ পত্রং পুষ্পাং ফলং তোয়মিত্যাদিভিরনর্পিতোপভোগনিষেধ বচনৈঃ। তথা অম্বরীষ নবং বস্ত্রমিত্যাদিভিস্তত্পভোগবিধিবচনৈরপি নিতরাং দ্রুচয়িতব্যং। বিশেষতশ্চাত্র মহতাং বহুনাং শিফানামাচারঃ এব পরমং প্রমাণমিতি। ভগবন্মায়াহতানাং ভগ-বংপ্রসাদবঞ্চিতানাং ছুট্টবুদ্ধীনাং সর্বধোপেটক্ষবোপযুক্তেতি সর্বেষাং সাধূনাং মতং।৮৮।অধুনা পিতৃত্যোপি ভগবছ্ছিউমহাপ্রদাদদানে বছলবচনানি প্রমাণয়ন্ আদৌ তত্র নিত্যপ্রাদ্দি-বিষয়মেৰ তং নচ পাৰ্ক্রণাদিপরমিতি কেষাঞ্চিদজ্ঞানাং মতং নিরস্যতি যঃ আদ্বেতি। হরেভুক্তঞ্ তৎ অতএব শেষ্ঞ।। ৮৯।। তৃষ্য বিষ্ নিধেদিত সৈয়ে প্রদানং তান্দেবাদীন্ উদ্দিশ্য কুর্য্যাৎ ॥ ৯০॥ বুচিদিতি ভগৰছচ্ছিউদানেন গৌণ্যাপঝা পিতাদিতৃপ্তিঃ সাামবৈতি দ্তাপহারদোষঃ न्याम्बदकारिनो कुळानि नः नहः मकानि मा अदिमिठार्षः॥ ३)॥ अकिविकृत्यः अचित्रकृत्यः নেতি বিষ্ণোটর্নবেদ্যমিভিতেং। বিষ্ণোটর্নবেদ্যশেষন্ত তক্ষাদেয়ং দ্বিজ্ञদাশং । পিণ্ডে চৈব বিশেষেণ পিতৃণাং তৃপ্তিমিচ্ছতা।। ১২।। তত্ত্বৈ শীব্ৰহ্মনারদসম্বাদে। পিতৃ-নুদ্দিশ্য হৈঃ পূজা কেশবস্য কতা নরৈঃ । ত্যক্ত্বা তে নারকীং পীড়াং মুক্তিং যাতি মহামুনে। ধন্যান্তে মানবা লোকে কলিকালে বিশেষতঃ। যে কুৰ্বন্তি ইরেনি তাং পিত্রর্থং পূজনং মুনে । ক্ৎ দত্তৈর্বছভিঃ পিত্তৈর্গাশ্রানাদিভিমুনে । যৈরচ্চিতো-হরিভ্জ্যা পিত্রর্থ দিনে দিনে। যমুদ্দিশ্য হরেঃ পূজা ক্রিয়তে মুনিপুষ্পব। উদ্ভ্য नतकावाजां छ । नरत्र भत्र भर भर । यो मनि इरते सानः भिज्ने किना नात्र । কৰ্জব্যং হি পিতুণাং যত্তং কৃতং তেন ভোদ্ধিল। আনতো চ। একএৰ নারায়ণফাসীং न उन्ना नित्य महावान्थिति । निर्द्ध प्रवाः निर्द्धिनि जाः निर्द्ध मनुष्ठाः विकृता जिन-তমশুন্তি বিষ্ণুনাঘাতং জিযুদ্ধি বিষ্ণুনা পীতং পিবত্তি তন্মাদিদাংসোবিষ্ণুপছতং ভক্ষয়েয়ুরিতি।। ১৩।। অতএবোক্তং। এভগবতা বিষ্ণুধর্মে। প্রাণেভ্যোজুহুয়া-দন্নং মন্নিবেদিতমুক্তমং। তৃপাঞ্জি সর্বাদা প্রাণা মন্নিবেদিতভক্ষণাৎ। ভক্ষাৎ সর্বাং প্রয়ত্ত্বে প্রদেয়ং মিরবেদিতং। মমাপি হৃদয়স্থ্যা পিতৃণাঞ্চ বিশেষতঃ।। ১৪।। কিঞ্চ তত্রৈবান্যত্র। ভক্ষ্য ভোজ্যঞ্চ যৎকিঞ্চিদনিবেদ্যাগ্রভোক্তরি। ন দেয়ৎ পিতৃ-দেবেভঃ প্রায় শ্চিত্তী যভোভবেৎ।। ৯৫।। সর্গাদৌ কথিভোদেবৈর গ্রভুগ্ভগবান্ হরিঃ। যজভাগভুজোদেবাস্তভস্তেন প্রকশ্পিতাঃ ।। ১৬ ।।

অথ প্রাদ্ধে বৈক্ষবভোজনমাহাত্মাং। স্কান্দে শ্রীমার্কণ্ডেয়ভগীরথসম্বাদে। যস্ত বিদ্যাবিনিমুক্তিৎ মূর্থং মত্বা তু বৈক্ষবং। বেদবিদ্যোহদদাদ্বিপ্রং প্রাদ্ধং তত্রাক্ষসং ভবেৎ। সিক্থমাত্রন্ত যদ্ভুক্তে জলংগণ্ডুবমাত্রকং। তদলং মেরুণা ভল্যংতজ্জলং

বার্থে ইন॥ ৯২॥ নচ বক্তব্যমিদং অন্যোদ্দেশেন ভগবতেহয়াদিসমর্পণং গৌণ্যাপস্ত্যা ভগবৎ প্রীতিবিশেষণাগধনাৎ কলবিশেষজনকং ন স্যাদিতি যতোনিজপিত্রাদিহিতার্থং ক্বতং পূজনং ভগবজ্ঞং পরমপ্রীণনমেবেতি পরমফলসম্পাদকমেব স্যাদিতি লিখতি পিতৃত্বদেশ্যেত্যাদিনা। এবঞ্চ পিত্রাদ্যুর্থং ভগবৎ পূঁজায়াং কৃতায়াং পশ্চাং ভগবির্বিদেতেনৈর স্বভঃ প্রাজাদিনম্পত্তা ক্রমহাগুণসিস্ক্রের্প্রভাদি মহাফল্মুপপদাতএবেতি ভাবং। যদা প্রাজাগ্রহপরিত্যাগেন পিত্রর্থই ভক্তিবিশেষণ ভগবৎপূজ্যা স্বতএব ফলবিবিশেষং সিজ্যেৎ। এবমেব যথা তরোফুলনিষেচনেন ত্পান্তি তৎক্ষর ভুজোপশাখাইভ্যাদিন্যায়াৎ পিত্রাদীনাঞ্চ পরমত্তিঃ সিদ্ধাতি। নক্ত হেকলনিজ্পান্তি তৎক্ষর ভুজোপশাখাইভ্যাদিন্যায়াৎ পিত্রাদীনাঞ্চ পরমত্তিঃ সিদ্ধাতি। নক্ত হেকলনিজ্পান্তি ভগবছাক্তিই মহাপ্রদাদাপেক্ষরেতি দিক্। ৯৩॥ মমেত্যাদি ষ্ঠীচতুর্থ্যর্থে। স্থান্ত্রন্থা পরমাত্মরাজ্বপ্রসাত্ত্রিং। এবং ভগবতে নিবেইদ্যব পিত্রাদিভ্যোদেয়মিত্যুপপাদিতং। ৯৪। অধুনা কদাচিদপ্যনিবেদিতং ন দাতব্যমিতি লিখতি ভক্ষ্যমিতি। ভক্ষ্যভোক্সান্তর্যাত্রন ভেদং। যৎকিঞ্চদপি। অগ্রভাক্তরি পরমেশ্বরে। যতঃ অনিবেদিতদানাৎ প্রায়ন্তিরীপাত্রকী ভবেং। ৯৫॥ তদেবোপপাদয়তি। সর্গাদাবিতি। অগ্রভুক্তে ভগবতেহদক্তেহভুক্তে। বিত্রির্যাণের দেবাদীনামপি পাপং স্যাদিতি ভাবং॥ ৯৬।।

দাগরোপমং । বৃদ্ধপুরাণে। প্রাক্রকচনং। শন্ধান্ধিততনুর্বিপ্রোভুড্জে যস্য চ বেশ্মনি। তদরং স্বর্মশাতি পিতৃভিঃ সহকেশবঃ।। ৯৭।। স্মৃতিশ্চ। সুরাভা-গুরুপীয়ুষ্ং যথা নশ্যতি তৎক্ষণাৎ। চক্রান্ধরহিতং প্রান্ধং তথা শাতাতপো-২ব্রবীৎ। কিঞ্চ প্রীবিষ্ণুরহস্যে। নিষেশয়েনরোমোহাদন্পেজ্কৌ হরেঃ প্রিরং। সপতেরিরয়ে যোরে পঞ্জিভেদী নরাধনঃ।। ৯৮।।

অথ প্রীভগবদর্পণে নিষিদ্ধং। নিবেদিতং যদন্য হৈছ তি ইছ কথাতে।
অভঃ কথঞ্জিদ্পি তর প্রীভগবতেংপ্রেছ । তথা চৈকাদশক্ষের । প্রীভগবদুক্তে।
অপি দীপাবলাকং মে নোপযুঞ্জানিবেদিতং।। ৯৯ ।। নারদীয়ে। পিতৃশেষস্ত যোদদ্যাদ্ধরয়ে পরমান্তানে। রেতোদাঃ পিতরস্তান্ত ভবস্তে ক্রেশভাগিনঃ।। ১০০।।
প্রীবিষ্ণুধর্মে। হরিশেষং হবির্দ্দাছ পিতৃণামক্ষয়ং ভবেছ । ন পুনঃ পিতৃশেষস্ত হরের কাদি সদ্পুরোঃ। অন্যত্র চ। দক্ষাদয়ক্ষ পিতরোভ্তাইন্দুদ্দয়ঃ সুরাঃ। অতস্তি ক্রে শেষস্ত বিফোরের নিবেদয়েদিতি।। ১০১।। এবমাবশ্যকংক্তরা বৈষ্ণবেভ্যোবিভন্ত চ। প্রীমন্মহাপ্রদাদাম ছাল্লীত সহ বন্ধু ভিঃ।। ১০২ ।। তথাচ প্রস্তাদপক্ষরোত্র । ষভাবস্থৈঃ কর্ম জড়ান্ বঞ্চয়ন ক্রিবাদি ভিঃ। হরের বিষেদ্যসম্ভারান্ বৈষ্ণবেভ্যঃ সমর্পয়েছ।। ১০৩।। অভএব বৈষ্ণবিভন্ত। হরের বিদেশ কিলিয় দদ্যাছ কর্ছিচিদ্ব পঃ। অভক্তেভ্যঃ সন্ধল্যভ্যো যদদ্ নিরয়ে ব্রজ্ঞে।। বিষ্ণুধর্মোভরে চ। অবৈষ্ণবে দেবপুতং নির্মাল্যং ন প্রয়ন্ছতি। বিবেদ্য বা মহাভাগ তদ্য তুষ্যতি কেশব ইতি।। ১০৪।। কথ্যিদিশি নাশুরাদক্ত্রা ক্র্যপূজনং। নচাদমর্প্য গোবিক্ষে ক্রিক্স জ্লীত বৈষ্ণবং।।

অথ পূজাব্যতিরিক্ত ভোজনদোষা:। ঐ ক্রমপুরাণে। অনচ য়িত্বা গোবিনদং
বৈত্ ক্তিং ধর্মবিজ্ঞিতিঃ। খানবিষ্ঠাসমং চানং নীরঞ্চ সুরয়া সমং।। ১০৫।।
কিঞ্চা যোমোহাদথ বা লস্যাদক্তবা দেবতার্চনং। ভুঙ্কে স্যাতি নরকং শূকরে-

শৌবানেতি বক্তব্যে শ্বানেত্যার্বং। কুচিচ্চ শুনইতি পাঠঃ॥ ১০৫॥ অপুজ্য

শস্থাক্ষিততমুং বৈষ্ণৱ ইত্যৰ্থ: ॥৯৭॥ চক্ৰেণ অঙ্গল্চিহ্ন্থ যিমন্ বৈষ্ণৱে 'তেন রহিত্ব।
এবং আদ্ধে অবশ্যং বৈষ্ণৱভাজনাৎ বৈষ্ণৱণ্য চ ভগবনিবেদিতভোজননিৰ্দ্ধারাৎ ভগবনিবেদিতেনৈব আদ্ধাদিকমিতি স্থাপদ্ধং । অন্যেষামবৈষ্ণবানাং প্রভ্জৌ॥৯৮॥

অন্যশৈ নিবেদিতং মহং নোপযুঞ্জাৎ ন সমপ্রেৎ।৯৯।রেতোদাংরেতএব উদং উদকং পেরং বেষাংতথা ভূতাং সন্তঃ বিদর্গলোপেপি পুনং সন্ধিরার্যঃ॥১০০॥ হবিঃ পরমান্নং পিভূণাং পিতৃ ভোদদ্যাৎ। যতস্তৎ অক্ষরং অক্ষর্যকলং ভবেদিতার্থঃ। হরেঃ হরয়ে ন দদ্যাৎ তত্র হেতঃ ব্রেক্ষতি॥ ১০১॥ শ্রীমতোভগবতঃ। যদ্বা শ্রীমৎভগবন্নিবেদিতত্বেন পরমশোভাযুক্তং তছ্চিত্রু ব্রেন চ মহাপ্রসাদন্তপননং॥১০২॥ স্বভাবক্তিঃ স্বতএব বর্ত্তমানেঃ অনিবেদিতৈরিতার্থঃ।।১০৩॥ স্পল্যভ্যোবিদ্ধোপবাসিতাঃ কর্মান্তভ্য ইত্যর্থঃ॥১০৪।।

বিষ্ কারতে। বিষ্ণুধর্মোত্তরে । এককাল ছিকালয়। ত্রিকালং পূজ্যেক্ষরিৎ। অপূজ্য ভোজনং কুর্মন্নরকাণি ক্রেলরঃ।।১০৬।। নারদীয়েচ।। প্রতিমধ্যিদিনং नाशः विक्शृका मृठा वृक्षः। जमल्ला विश्वतिशव थाणः मण्शृकः कमनः। मधारङ्ग टेठव मायुक्षे भूज्याञ्चलिमान किरमे । मध्याद्व वा विखदान मरोक्करमाथवा इति । সংভোজ্য ভৌজনং কুর্য্যাদন্যথা নরকংব্রজেৎ। অথানর্পিতভোগনিষেধঃ। হয়শীর্য পঞ্চরাত্রে।নত্বোপূজ্যভুঞ্জীত ভাবত্তৎ জনার্দ্দনং।ন তৎ স্বয়ংসমশ্রীয়াৎ যদিকেই ন निবেদয়ে । ব্রহ্মাগুপুরাণে । পত্রং পৃষ্পাং ফলং তোরমন্নপানাদ্যমৌষধং। অনিবেদঃ । ন ভুঞ্জীত মদাহারায় কম্পিতং ।। ১০৭।। অনিবেদ্যতভুঞ্জানঃ প্রায়শ্চিন্ত্রী ভবেয়রঃ। ख्यां श्मिक् निर्दिष्णे विक्षा चुं क्षी छ मध्य । ११० । शिष्य गिष्य गिष्य भिष्य भिष्य । অন্ত্রীষ গৃহে পাকৃৎ যদভাষ্টংসদাত্মনঃ। অনিবেদ্য হরেভুঞ্জিন্স প্রকণ্পানি নারকী। ভত্তৈবোভরখণ্ডে শিবোমাসম্বাদে ৷৷ অবৈষ্ণবানামন্নঞ্চ পতিতানান্তথৈবচ ৷ অন-র্পিতংতথাবিষ্ণৌশ্বমাংসসদৃশংভবেৎ। বিষ্ণুন্নতো। অনিবেদ্যত্ত যোভূণ্ক্তে হরয়ে \ পরমাজনে ৷ মজ্জন্তি পিতরস্তম্য নরকে শাখতীং সমাং ৷ অতএব গৌতমায়ুরীষ্দ্রাদ্ এব। অম্বরীয় নবং বস্ত্রং ফলমন্নং রসাদিকং। রুত্বা বিষ্ণূপভুক্তন্ত সদা সেব্যং হি रेवक्टरेवः । विक्यूभर्माधियुवानरग्नाः। शकान्नवत्रज्ञान्यः मुंकःवामार्ति जूवनरः দত্ত্ব। ত্ত দেবদেবায় তচ্ছেষাণু পেজুঞ্জতে ॥১০৯॥ গারুড়ে। পাদোদকং পিবেরিত)ং देनবেদ্যংভক্ষয়েদ্ধরেঃ। শৌষাশ্চ মন্তকে থার্য্যাইতি বেদানুশাসনং ॥ ১১০ ॥ যঠ-ক্ষন্ধে পৃংসবনব্র তপ্রসঙ্গে। উদ্বাস্যদেবৎ স্বেধান্নি তন্নিবেদিতমগ্রতঃ। অদ্যাদাত্মবি-শুদ্ব্যর্থন সর্বকামার্থসিদ্ধয়ে ॥ ১১১॥ অইমস্কান্ধেচ পরোব্রভপ্রসঙ্গে নিবে-দিতৎ তত্ত্বস্থাৰ দদ্যাৎ ভূঞ্জীত বা স্বয়ং ।। ১১২ । গৌতমীয়তন্ত্ৰে। শুক্লোপচার-সম্ভারেনিত্যশোহরিমর্চয়েৎ। নিবেদ্য রুঞ্চায় বিধিবদরং ভুঞ্জীত তৎ স্বয়ং। অথবা

অপুজ্যির। ॥ ১০৬॥ আহারায় নিজাপভোগায়॥ ১০৭॥ বিফোরুপভোগাং ক্ররা যথাবিধাপণাদিন। তং ভোজয়িরেতার্থং॥ ১০৮॥ গল্ধান্ অলানি ব্রভক্ষাংশ্ব মোদকাদীন্ উপভুপ্পন্তে সাধবইতি সদাচারোদশিতঃ॥ ১০৯॥ শাষাশ্ব গুলসাদয়ঃ॥ ১১০॥ দেবং ভগবন্তং স্বে ধানু স্বহ্নরে অগ্রতঃ প্রাক্ উদাস্য বিস্কর্য॥ ১১১॥ তদ্ভ ক্রায় বৈফ্রায়॥ ১১২॥ এবমনপিতোপভোগাং বিলিখ্যাধুনা তদেব দ্রুল্ম ভগবদপিতাগ গ্রহণেপি দল্তাপহারদোষে। ন প্রসজ্যেতেতি ভগবংবাংশল্যভয়তোন্যায়ায়রেণ সাধয়তি। ভক্তেতি। ভক্তস্য ক্ষণঃ অবসরএব উৎসবএব বা ক্ষণোষস্য। স্ববেশানি স্থিতেন যা স্মৃতিঃ দৈব দেবা। স্ভোল্যস্য নিজভক্যদৈয়বার্পণং যন্তদেব তিম্ম দানং। এবং স্থলেব্যন্থ ভক্তবাৎসল্যঞ্জেশ্বং। তৎকলঞ্চ ইন্দাদিল্লভং স্যাৎ শ্রীবৈকুগলোকপ্রাঞ্জেং এবঞ্চার্পনদান রোভেদিপ্যভিহিতঃ যতোক্রপাদিল্যঃ স্থলাদিভিরিব ভগবতোভ্রৈতাদ্ব্যাণামর্পনমেব ক্রিয়তে তদনম্ব দানং তীন্যুব স্ক্রির্যাণি স্বামিরেন তেবাং তত্র স্বর্ভাবাং। অত্যভগবতে যদ্দীয়তে তদনম্ব দানং তাল্যবিদ্যাদিস্থানিরেন তেবাং তত্র স্বর্ভাবাং। অত্যভগবতে যদ্দীয়তে তদ

সাত্ততে দদ্যা দঃদি লভ্যেত ভক্তিতঃ। শরৎপ্রদীপে চ। ভক্তক্র ক্রণাদেবঃ স্মৃতিঃ সেবা স্ববেশ্মনি। স্বভোক্যস্যাপ্ণং দানং ফলমিন্দুাদিদুল্ল ভং ॥ ১১৩ ॥

অথ বৈবেদ্যভক্ষণ বিধিঃ। দৃষ্ট্য মহাপ্রসাদায়ৎ তৎপ্রাগ্রছাভিমন্ত্রেছে। স্বেট নামা তভোমূলমনুনা বারসপ্তকং ৷৷ ১১৪ ৷৷ ধর্মবাজাদিভাগঞাপাস্য জীচরণ:-ग्उ९। खनगोक्षां विश्विभा भाकान्भरकोर्ड सिमान् ॥ ১১৫॥ याना छिन्छ ५ হি বাঞ্জি ক্রজাদ্যাঞ্চ্যরাহ্মলাঃ। সিদ্ধাদ্যাশ্চ হরেন্তস্য বয় মুচ্ছিষ্টভোজিনঃ। কিঞ্চ যেস্য নামু। বিনশ্যন্তি মহাপাতকরাশয়ঃ। তস্য ঞীক্ষদেবস্য বয়মুচ্ছিউ-ভে'किनः। উচ্ছিফভু किनस्म, वय्यम् उक्मनः। यावान। नीनमा जारसान् भृजनानीन পাতয়ং! একাদশক্ষলে। ত্রোপভুক্ত শুগ্গন্ধানোলক্ষারচর্চিতাঃ। উচ্ছি ফভি। জি-নোদাসান্তবমায়াং জয়েমহি।। ১১৬।। ততোইমৃতোপন্তরণ মসীত্যুজ্বা যথাবিধি। পঞ্চ প্রাণাত্তীঃ রুদ্ধা ভুঞ্জীত পুর হঃ প্রভাগ ।।১১৭।। তত্রচ বিশেষঃ । প্রীবিষ্ণুপুরাণে

প্ন নিত্তাত ভত্ত দানমিতি। অতএব পাদ্যাত্মপচারং কম্পরামীত্যেব সংসংপ্রদারপ্রয়োগঃ এবঞ্চ দদ্যাৎ পুরুষত্তটিদমিত্যাদৌ দানশব্দস্যার্পণমেবার্থোইবগন্তব্যঃ নচ শঙ্কনীয়ং স্বত্তা-ভাবে পিত্রাদিভাঃ কথং ভদ্দানং ঘটতামিতি । মহাপ্রশাদতয়া স্বীক্তেষু তেষু স্বত্বোৎপত্তেঃ আদ্ধাদিবিধিবলেন তৎকণ্পনাদ্ধ। নচ বক্তব্যং। উচ্ছিফট্যব্যদানেন আদ্ধাদৌ গৌণ্যাপত্তি-রিতি ভগবদগণের দ্রব্যসংস্কারবিশেষসম্পত্ত্যা কলবিশেষজ্বনকত্ত্বেন প্রমনুখ্যতাপত্তে:। এতট পূর্বাং স্থাতিতমেব তৎফলঞ্চ লিখিতং। ইপ্রঞ্চ তস্মাৎ সর্বাং নিবেল্যেব বিঞ্চোর্ভুঞ্জীত সর্বা-দেত্যাদৌ ওদনঃ পজ্যা ভুজাত ইত্যাদিবৎ এককর্মত্বেন যদিবেদ্যতে তদেব ভৃঞ্জীতেতার্থো নিতরাং নিজঃ নহানাং নিবেদাখনা ভুঞ্জীতেতি পৃথক্ কর্মান্তরক পেনদোষাপত্তে:। অনিবেদা ন ভুঞ্জীত যদাহারায় কম্পিতমিত্যাদিনা বিরোধান্ত। অতএব তত্ত্বিদঃসাধবঃপকু। নাদিকমশেষ-মেব ভগবদগ্রে নীত্র। পরিবেশ্য বিধিবদর্শয়ন্তি। যচ্চ বাহুল্যেন পরিবেশনাদ্যশক্ত্যা রক্ষনপাত্রাদৌ তিষ্ঠেং তদপি শক্ষোদকন্তলদীদলনিক্ষেপণাদিনা বিনিবেদিতমাপাদয়তীতি দিক্।। ১১৩॥

প্রাক্ প্রথমং নত্ত্বা অভিবন্দ্য তদরংগায়ত্র্যা অভিমন্ত্রহে।ততস্তদনন্তরং মূলমন্ত্রেণ দপ্তবারান্ অভিমন্ত্ররেং।। ১১৪।। আদিশব্দেন পিত্রাদয়ঃ। অপাদ্য তদলাদপনীয়। এচরণামৃতং ভগবং-পাদোদকং! অত্র মন্ত্রে॥ ১১৫॥ তাংস্তান্ অনির্বাচ্যবলপরাক্রমাদিযুক্তান্। যেন লীলা-বরাহেণ হিরণ্যাক্ষোনিপাতিতইত্যেতৎ পদ্যার্দ্ধং পঠস্তি। তচ্চ নিজেইদেবলীলামুদারেণেতি জ্ঞেয়ং।। ১১৬।। প্রভোর্ভগবতঃ পুরতোহত্যে ভুঞ্জীত যোহশ্বাতি নিত্যং পুরতোমুরারেরিতিক্ষা-ন্দোক্তে:। যচ্চ বারাহে শরনং ভোজনঞ্গগ্রইত্যাদ্যপরাধেষ্ক্তং তদপি বহির্দেবালয়ে এীমর্স্তিপু জাবিষয়ং মতু স্বগৃহে শালগ্রামশিলাপুজাবিষয়মিতি বিবেচনীয়ং। এতচ পূর্বাং নিথিত-গৃহীতি পূৰ্বাং সৰ্বাত্ৰ গৃহস্থক্ষতালিখনাদ্ৰাপি যুক্তমেৰ তৎ জ্বাসমৰ্পণাদিযোগ্য **च्चिमशूकाविरधो उटेगाव आधानाग्र छ गवनर्थ ठाउन श**ित्र छ न वित्र छ न । यथाना ७१ छ गवसः शूक য়তে নতাদুশোবিধিনিষেধাৰকাশঃ কল্পাতইতি জীভাগৰতাদিশাক্তপ্ৰদিদ্ধমেৰ কিঞ্চিৎ প্ৰাক্

ওর্মসগরসম্বাদে। প্রশন্তরত্বপাণিছ ভূঞ্জীত প্রযতোগৃহী ।। ১১৮ ।। পুণ্যগন্ধধরঃ শন্ত-মাল্যধারী নরেশ্বর । নৈকবস্ত্রধরো হথা দ্রপানিপাদোনরাধিপ। বিশুদ্ধবদনঃ প্রীতো-ভুঞ্জীত ন বিদিন্ত্যুখঃ। প্রাক্তিশাদভ্ম্থোবাপি নচৈবান্যুখোনরঃ ॥ ১১৯॥ দন্তা ख ভक्तः भिष्य छ। क्षेप्रिक्ष अथा गृही । अभिष्ठ स्क्षा विषु चूक्षो ठाकू भिर्णा-न्थ ।। ১२०।। नामनोमः व्हिष्ठभात्व नाम्या । नाकात नाजि-সংকার্নে দ্প্রাগ্রঞ্চ নরোহরয়ে। নাশেষৎ পুরুষোশ্রীয়াদন্যত্র জগতাপতে।। ১২১।। মধ্যুদধিদপিতাঃ শক্তুভাশ্চ বিবেকবান্। অশ্বীয়াৎ তশ্বয়োভূষা পূৰ্বন্ত মধুরং त्र मः ।। ১২২ ।। व्यवगारम् ७थ। मास । क है जिल्ला निकार खन्न । श्रान्य र शूक्र वा-২শুীয়াৎ মধ্যে চ কঠিনাশনং। অন্তে পুনর্দ্র বাশী ত বলারোগোণ মুঞ্জি। পঞ্চ-গ্রাসৎ মহামৌলং প্রাণাদ্যাপ্যায়নায় তৎ। ভুক্তা সম্যগথাচম্য প্রান্ত্যু প্রান্ত্যু পি বা। যথাবৎ পুনরাচামেৎ পাণী প্রকাল্য মূলতঃ । স্বস্থ প্রশান্তচিত্তক কতা-সনপরিগ্রহঃ। অভীষ্টদেবতানাঞ্জুবতি মারণং নরঃ। অগন্তিরগ্রিকাড়বানলশ্চ ভুক্তং ময়ান্নং জরয়ন্ত্যশেষং। সুধঞ্চ মে তৎপরিণামসম্ভবং যচ্ছন্তুরোগৎ মম চাস্ত দেহে। বিষণু সমস্তে শিরু যদেহদেহিপ্রধান ভূতো ভগবান্ যথৈকঃ। সতে। স তেনাম-মশেষনেতদারোগ্যদং মে পরিণামমেত্ত। ইত্যুচ্চার্য্য বহুতেন পরিমূল্য তথোদরং। অনায়াসপ্রদায়ীনি কুর্য্যাৎ কম্মণিত ক্সতিঃ। কৌমে ব্যাসগীতায়াং। প্রাভ্নুখো-য়ানিভুঞ্জীত সূর্ব্যাভিমুখনেব বা। আসীনঃ স্বাসনে সিদ্ধে ভূম্যাং পাদৌ নিধায় চ! আয়ুষ্যং প্রাদ্মুখোভুড্তে যশস্যং দকিণামুখঃ। শ্রিয়ং প্রত্যদ্মুখোভুড্তে ৠতং ভুজ্কে উদঙ্মুখঃ। পঞ্চাদ্রেভিছন শ কুর্য্যাৎ ভূমৌ পাত্রং নিধায় চ। উপবাসেন ভতুল্যংমনুরাহ প্রজাপতিঃ। উপলিপ্তে শুচৌ দেশে পাদৌ প্রকাল্য বৈ করে।। আচম্যাদ্রনিনোংকোধঃ পঞ্চাদ্রেণভোজন চরে । মহাব্যাছভিভিক্লং পরিবা-য়োদকেন তু। অমৃতাপস্ত রণমদীত্যপোশান ক্রিয়াং চরেৎ। স্বাহাপ্রণবসংযুক্তং প্রাণা-য়েত্যান্থতিং ততঃ । অপানায় ততোভ্সাব্যানায় তদনন্তরৎ । উদানায় ততঃ কুৰ্য্যাৎ সমানায়েতি পঞ্নীং। বিজ্ঞায় তত্ত্বমেতেষাং জুন্ত্রাদাত্মনি দ্বিজাঃ।শেষমনং যথাকামং ভুঞ্জীত ব্যঞ্জনৈযুতিং। ধ্যাস্তা তন্মনসা দেবমাস্থানং বৈ প্রজাপতিং। অমৃতাপিধানমসীত্যুপরিষ্টাদপঃ পিবেং। কিঞ্চ তত্ত্বৈব । হন্তু ছক্তে বেষ্টিত শিরা যান্ত ভূত্ত্তে বিদিঙ্মুখঃ। সোপনাৎকশ্চ হজুংক্তে নর্বাং বিদ্যান্তদাসুরং। নার্ছরাত্রে

লিখিতমথ্যে চ লেখ্যমিতি ॥ ১১৮। প্রাঙ্মুখউদস্মৃথো বা ভুঞ্জীত ॥ ১১৯॥ প্রশস্তং ভগবরিবে-দনাৎ॥ ১২০॥ আসনদীদারুময়তিপাদী। অদেশে অবোগ্যস্থানে। অকালে সম্ব্যাদিসময়ে আকাশ-ইতি পাঠে অনাবৃতে । অগ্রমনং দত্ত্বা পরিশিউস্যান্নস্য কিঞ্চিদ্রৌ কিঞ্জা।। ১২১।। তন্ময়ো-ভূত্বাইনে দত্তিতিঃ সন্।। ১২২।। প্রভ্যঙ্মুখঃ সন্ চেন্তুঙ্কে তদা প্রিয়মেব ভূঙ্কে সর্বসম্পদং ন মধ্যাক্লে নাজীর্নে নাজ বস্তুষ্ক্। নচ ভিন্নাসনগতো ন যানে সংস্থিতোপি বা । ন ভিন্নভাজনে চৈব ন ভূন্যাং নচ পাণিষু। অনারোগ্যমনায়ুষ্যমন্ত্র্যাং চাতিভোজনং। অপুণ্যং লোকবিদ্বিউং তল্পান্তং পরিবর্জয়ে । কিঞ্চা ন বামহন্তে নোজ্ত্য পিবেছক্ত্রে বা জলং। বিক্ষুল্তৌ । পিবতঃ পভতে তোয়ং ভাজনে মুখনির্গতং ।
অভোজ্যং ভদ্তবেদনং ভ্লু । চান্দায়ণং চরেৎ। মার্কপ্তেয়ো ভূঞ্জীতানঞ্চ ভচিত্তোহ্যতভর্জানু সদা নরঃ । উপ্যাতাদ্তে দোষান্নান্নসোদারয়েদ্ধঃ ।। ১২৩ ।। অন্যত্রচ ।
হস্তাদ্তেহমুনান্যেনানাশ্র পাত্রাদ্তে পিবেৎ । দক্ষিণন্ত পরিত্যজ্য বামে নীরং
নিধাপয়েং। অভোজ্যৎ ভদ্তবেদনং পানীয়ঞ্চ স্রাসমং ।১২৪।ভৃপ্তোদদ্যাদন্নং শেষং
দুর্গত্তপ্তয়ে ।। ১২৫ । সম্যুগাচম শ্লুক্লাযের ক্লু তে বারি নিংক্ষিপেৎ। ভতঃ সংস্মৃত্য
সন্তন্তং পুটিনামিউদেবতাং। সনিক্টেইব্ তঃ শিকৈজপেদনপভের্মনুন । অনপতেহন্নস্ব নোদেহীত্যাদি ।। ১২৬ ।। ভক্ষয়েদথ তামুলং প্রসাদং বর্রবিপ্রভাঃ । শিকিট
রিইর্জপিদিব্যৎ ভগবন্নামমঙ্গলৎ ।। ১২৭ ।।

া অথ নৈবেদ্যমাহান্ত্যং । বারাছে। যোমমৈবার্চনং কৃষ্ণা তত্র প্রাপণসূত্যং। শেষময়ৎ সমশুপতি ততঃ সৌথাতরং নুকিৎ । ১২৮। ক্ষান্দে । তবোপহারং ভুজ্বা
যঃ সেবতে যজ্ঞপূরুষং। সেবিতৎ তেন নিয়তং পুরোডাশোলহাধিয়া । ,১৯। কিঞ্
তত্ত্বৈ । শস্থোদকং তীর্থবরাদ্বরিষ্ঠং পাদোদকৎ তীর্থগণাদ্ধা রিষ্ঠং । নৈবেদ্যশেষং
ক্রন্তকোটিপুণ্যং নির্মাল্যশেষং ব্রতদানতুল্যং। নৈবেদ্যশেষং ভুলসীবিমিশ্রিতৎ
বিশেষতঃ পাদজলেন সিক্তং। যোহশুপতি নিত্যং পুরতোমুরারেঃ প্রাপ্যোতি যজ্ঞাযুতকোটিপুণ্যং । ১০০।। যড্ভির্মানোপবানৈত্ত যং ফলং পরিকীর্তিতং। বিফোবৈবিদ্যশেষে ফলং তড়্প্রতাৎ কলো । ১৩০।। কিঞ্চ তত্র শ্রীশালগ্রামশিলামাহান্ত্যো। ভক্ত্যা ভুনক্তি নৈবেদ্যং শালগ্রামশিলাপিতৎ। কোটিং মথস্য লভতে-

লভতইত্যুৰ্ণ খাতংসত্যং সৰ্বাঞ্জিতং প্ৰাপ্নোতীত্যুণ । আমুন্ জুছ্মাৎ আছানা , সই হ্যাই সক্যং ভাবয়েদিত্যুৰ্থঃ। তত্ত ভোজনান দুৱমিত্যুৰ্থঃ। ॥ ১২৩॥ অমুন্ ভূঞ্জানং সন্ হস্তাদ্তে পাণিং বিনা কেবল মুখেন জলং ন পিবেৎ। তথা পাতংগিনা করাদিনা নপিবেদিত্যুৰ্থঃ। অন্যথাআভোজ্যাদিকং স্যাদিত্যুৰ্থঃ ॥ ১২৪॥ তৃপ্তঃ সমাপ্তভোজনং সন্॥ ১২৫॥ অঙ্গুট্বারি নি ক্ষিপেৎ মন্ত্রঃ অঙ্গুট্তি॥ ১২৬॥ বল্লবীপ্রভাঃ ভগবতঃ শ্রীকৃষ্ণস্য প্রসাদমিতি তমিবেদিতমিত্যুৰ্থঃ॥ ১২৭॥

প্রাপণসুপহারং তদেবাহ শেবমন্ননিতি॥ ১২৮ ॥ পুরোডাশং যজ্ঞশেষদ্রব্যং॥ ১২৯॥ বিষ্ণোনৈবেদ্যশেষং পাদজলেন বিমিপ্রিতং সহেতি বা। ক্চিদ্বিষ্ণোরিত্যতাসক্তামিতি বা পাঠঃ॥১৩০॥
ভূঞ্জাং বিষ্ণুনৈবেদ্যশেষেণাপি তৎ ফলং॥ ১৩১॥ ভুনজি ভূঙ্কে মথস্য কেটিং লভতে
স যজ্ঞকোটিং কৃতবানিত্যর্থঃ এস্য চ কিংকলমিত্যপেক্ষরামাহ ফলমিতি। শতসহসুশং অনন্ত-

कनर भवनहम्भा ।। ১७२ ।। जन्महादिश्हरेष्ट्र शनवारेष्ट्रक जिन्द्र हिं। एक जिन्दार विस्थित्वमार काळ काळा। विहासना । कुक्तामारस्योगस्य मार विक्रमहास्थानस्य । जुक् । क्लारेमरनमार शकरमाहियमर मरच्या प्रदेशन की जनाइमग्राहमार जिल्ला क्षिमगररेमु इ वाक्षा भारति विकार विकार विकार विकार विकार विकार विकार कि गार । छप्ति वाभः मूर्थ माम देनदिम। मून्दत्र रुद्धः । भारमामकथः निर्माना । बर्खिक यगा (मारुह्याङः ॥ २७०॥ किस । भावमः विक्टेमरकाः भ मूत्र निकर्षिकः का छ । व्यम्प्रतम् रेमरवम्प्रः कुळ्या होन्मुं जन्मेरवरः । रकार्ति वरिक्ष सर् पून्तः मारमारियायन कांगि किः। ७०कनः आभारं भूखिकित्यानि विमालकर्गा । जूनमान्छ इत्वा-कु छै॰ निद्यम्। मा । कि भी ने अधि भुक १ एव भरा भारति । वृत्र विष्-भूताल । रेनरवणाः अन्नाममा अज्ञाभागामिककः यः । एका। एका विवाद का नि ভদ্তকণে ছিজাঃ। ব্রহ্মবমির্কিকারং হি যথাবিষ্ণুক্তথৈব তৎ। বিকারং যে প্রকৃষ্ণিতি ভক্ষণে তদ্বিজাতয়ः। কুষ্ঠব্যাধিসমাযুক্তাঃ পুত্রদারবিবজ্জিতাঃ। নিরমং যান্তিতে विश्रा यनात्रावर्ष्ठ पूनः। विष्युधार्माखात्रा नवमत्रः कनः भूष्णः निरमः मधुमूमान। পশ্চাত্র গুক্তে শ্বয়ং যশ্চ তসঃ ত্ব্যতি কেশবঃ। ব্রহ্মাণ্ডপুরাণে। মুকুন্দাশন শেষস্ত शाहि जू ६८क मित्न मित्न । निक्थ निक्थ ज्ञाहि ज्ञाहि होन्मु इनम् । कनावां शि। এकामभी महरे मुख मारमारभाषन को हि छिः। छ १ कन था भार पूर्व -किंक्शित (वमा कक्षणां कि ।। > ७८ ।। ज्ञानां वार्षां क्षणां का वार्षां का विकार । মহাপ্রসাদং দাস্যেন গৃহ্লীয়াৎ প্রয়তঃ স্বয়ং ।। ১৩৫।। তথাচ নবসক্ষে শ্রীমদয়-

নিতার্থ:। যদা শতসহস্পোযাযজ্ঞকোটিস্তজ্ঞপং কলং লভতে ।। ১৩২॥ অচ্যুতঃ অচ্যুতগুলাইত্যর্থঃ সাক্ষপ্যাদিপ্রাপ্ত্যা। যদা ভক্তিমার্গান্তিজেন্টাদ্বাচ্যুডোনভবতীত্যর্থ: ॥১৩৩॥ একাদশীসহসৈতিত্য নেন তদ্ব তগণাদপি ভগলৈবেদাভক্ষণম্য মাহাত্ম্যমধিকমুক্তং । যক্ষাত্মে ভাগবতলক্ষণে লেখাং কান্দ্র বচনং । প্রাণাভ্যয়েন চামুদ্ধি দিনং প্রাণা হরেনরাঃ ইতি । তক্ত ভগবত্মহাপ্রসাদব্যতিরিজ্ঞপরমিতি জ্যেরং। নচ বক্তবাং বৈক্ষবানামনিবেদিতভক্ষণং নদা নিবিদ্ধমেবেতি । যতন্ত ভাগবতাইতি সামান্যোক্তেঃ। বদা ভগন্তক্তিবেব ভদ্ব তমিতি বৃদ্ধা ভগবৎপ্রীত্যপেক্ষয়া তত্ম মহাপ্রসাদামভক্ষণেনাপি ন দোবঃকোপিপ্রসজ্ঞেতি কেবাঞ্জিৎ সভাং মতং। ভত্তক্তিঘ্রনং নৈবেদ্যমাহাত্মপরমেব নস্ত ভদ্ব তনিবেধকমিতি মন্তব্যং। বৃদ্ধা নিজবিশাস্বিশেবেণ ভগবদধ্রামৃত্মহাপ্রসাদ বৃদ্ধা তদ্মান্ত্রপ্রজ্ঞান্তিকিক্ষপাদপ্যেকাদশীব্রতাদেকান্তিনাং প্রমক্ষপত্বনোপাদেরইতি যুক্তমেবোক্তং একাদশীস্বিতি ॥ ১৩৪।। মহাপ্রসাদকপং তায়ুলাদি। আদিশ্বেন সুক্তক্ষনাদি। আচন্য প্রবৃত্ত সন্দ্রানিতি । ১৩৪।। মহাপ্রসাদকপং তায়ুলাদি। কামং সুক্তক্ষনাদিভোগংচকারেতি

## विविद्याला विकास ।



রীষচরিতে। কামন্ত দাসে। মতু কামকাম্যয়া যথোত্তমশ্লোকজনাশ্রয়া রতিঃ।
নিবেদ্য ভক্ষণে বন্ধ নির্মাণ্য গ্রহণে চ যথ। মাহাত্ম্যমাদৌলিখিতথ জের্থ সর্কামিহাপি তথ।। ১৩৬।। ইতিশ্রীগোপালভাউবিলিখিতে ভগবন্ধজিবিলানে মহাপ্রসাদোনাম নবমোবিলানঃ।। ১।।

পূর্বসোক্ষেত্র। দান্যে নিমিক্তে নন্ত ভোগেছর।। তত্রাপুত্রমশ্লোকজনা বৈক্ষবান্তবিষয়। বিজ্ঞান্তর জীতির্যবাস্থান্তবা চকারেতি ভগবভক্তবিষয়কভক্তেঃ পরমোপাদেয়ত্বমগ্রে লেখ্যং প্রমোপাদেয়ত্বমগ্রে লেখ্যং প্রমোপাদেয়ত্বমগ্রে লেখ্যং

## मणभ विचार

শীর্ফচরনাডোজনিধুপেভোনমোনন:। কথাফিদাশ্রাদেঘ্যাং খাপি ভলাদ্ধ ভাগ্ভবেং ।। ১।। অথ শীর্ফভক্তানাৎ সভাং সবিনয়ং শুভাং । গচ্ছেদ্ধিক্ব চিছ্লাচ্য পাত্তৎ র্ফকথাসুধাৎ।। ২।। তথাচ স্বৃতিঃ। ইতিহাসপুরাণাভ্যাৎ ষঠ-সপ্তথকো নয়েং ।। ৩।।

ভাষ শ্রীভগবড়ুক্তানাৎ লক্ষণানি । সামান্যতঃ লৈঙ্গে। বিফুরের হি হসৈয়ে দেবতা বৈষ্ণবংস্কৃতঃ । যা । অত্র বিশেষঃ। ব্রতকর্মগুণজ্ঞান ভোগন্ধ্যাদি মৎস্থপি ।

শ্রীটেতন্য পদান্তোজরদিকেভ্যোনমোস্ত মে! বছধা যততে ২জ্ঞোয়ং যেষাং প্রীতি চিকী-র্ষ্যা। অথ এতিগবন্মহাপ্রদাদদেবনানন্তরং সৎসঙ্গদেবাং লিখন্ তৎস্পিদ্ধায়ে সতঃ প্রণমতি এক্ষেতি। এক্ষণা চরণাম্ভোজয়োর্মধু ভক্তিরদং পিবস্থীতি তথা তেন্তাঃ এভগবদ্ধক্তেক ইতার্থঃ। নমোনমইতি বীণ্দা ভক্তিবিশেষেণ। অপীতাদা পূর্বকাপি দয়দ্ধঃ। যেষাং ঞ্জিক্ষ্চরণাস্তোজমধুপানাং কেনচিদপি প্রকারেণ য আগ্রয়ঃ শরণাগতিঃ তম্মাদপি শ্বা তন্তুল্যঃ পরমনীচজনোপীতার্থ:। তস্য এক্ঞচরণান্তোজমধ্ন:। তেখায়া এক্লফচরণান্তোজমধুপানাংগরুং ভঙ্গতি প্রাপ্নোতীতি তাদুশোভবেৎ। শ্বাপীত্যনেন চ যথাক্মলমধুপানমন্ত্রস্য ভ্রমতো ভ্রমরস্য কথঞ্চিৎ সম্বন্ধাৎ তমুখনির্গলমাধুনক্ষেন কুরুরোপ্যামোদিতোভবেদিতাত দৃষ্টান্ত উহাঃ। অতন্তল-क्रगामिलिश्वनक्षभाक्का बाध्यश्राष्ट्र नर्भकाश्राकि विलाममा लिश्वन्य यागामिश यकः स्रथः भ्याक् ঘটেতেতি ভাবঃ।। ১॥ অথ মহাপ্রদাদাদিগ্রহণানন্তরং । শুভাং নির্দ্দোষাং সর্বস্দাণাচ্যাং চেত্যর্থঃ। সবিসয়ংযথাস্যাপ্তথাগচ্ছেৎ কিমর্থং। কুঞ্চস্য কথৈব স্থধা তাং পাত্তং। যদ্যপি ন রোধয়তি মাং যোগইত্যানিনা ইত্রভোলেখােন বর্চনজাতেন সতাং সঙ্গতিমাত্রসাপি পরমোপাদেয়ত্ব যুক্ত হ তথাপি ভগবৎকথাম্তরদপানমেব প্রমোপাদেয় মতি কিয়া তন্মিমছমাুখরিতামধুভিচ্ছরিত্র পীযুষশেষ সরিতঃ প্রিতঃ সুৰস্তীত্যাদিন্যায়েন সংসঙ্গতোভগবৎকথাস্থধাপানং স্বতএব সম্প-দ্যতইতি তৎস্বভাবাস্কভাবমাত্রমত্র লিখিতমিতি দিক্। কথভূতঃ বৈঞ্বানাং চিইছঃ হরিমন্দির-তিলকমালামুদ্রাদিভিরাতাঃ যুক্তঃ সন্। অন্যথা বৈষ্ণবাজ্ঞানেন প্রভাগানাদ্যকরণাৎ সভাগদাং তেষামপরাধাপভ্যাতশ্যাপ্যপরাধাপত্তঃ ॥ ২॥ ভগবৎপূজানন্তরং মধ্যাহে কেষাঞ্জিতং নির্সান্ ভোজনানন্তর্মের সংস্কৃইতি স্বমতং এত্য়ন্ স্তিবচনং প্রমাণ্য়ভি। है जिहारमिज । है जिहारमा जात जानि । पर्श्वमश्वरमी अधिधा विख्यु मिन जारमी नरम् । अक्षमजारभ গৃহস্ব্য ভোজনবিধানাৎ।। ৩॥

ি বিষণু ভক্তমেব লক্ষ্তি। বিষণুরেৰেতি। দেবতা ইউশেবত্বেন পূজাইত্যর্থঃ। এষ বৈষ্ণরঃ বিষণু ভক্তঃ সমূতঃ॥ ৪॥ এবং বিষণু দেবতাক্ত্মগত্তেণ দামান্যতোভগবদ্ধকানাং লক্ষণং লিখিতা শৈবেষ্পি চক্ষণ্য ভক্তাঃ শন্তি তথা তথা । ৫।। তত্র বৃতিষু মধ্যে ভগবদ্ধক্তি হেরব্রতপ্রতা ভগবদ্ধক্তা ভগবদ্ধক্তা হেরব্রাজ্য । নাপাদতে মহীপাল তে বৈ ভাগবতানরাঃ।।৬।। শোগাত্র নেচাশুন্তি দিনং প্রাপ্য হরের্রাঃ। কুর্বন্তি জাগরং রাত্রৌ সদা ভাগবতা-ছিতে ।। ৭।। উপোষ্য দ্বাদশীং শুদ্ধাং বাত্রৌ জাগরণান্থিতাং। অপ্পান্ত সাধ্যেদ্রের স বৈ ভাগবতানরঃ। ভক্তিন বিচ্যুতা যেষাং ন চ্যুতানি ব্রভানি চ। সুপ্রিয়ঃ শ্রীপতির্যেষাং তে সূর্ভাগবতা নরাঃ।। ৮।। ক্মিযু জগবদর্শণাদিনা ভদাত্রাবৃদ্ধ্যাবা ভক্তিহেতঃ সদাচারপ্রতা।। ১।। ধ্যার্থং জীবিতং ষেষাং সন্থানার্থক মৈ পুন্।। পচনং বিপ্রস্থার্থণ জেয়ান্তে বৈক্ষবানরাঃ।। ১০।। তথুগন্তু পথি প্রান্থং

ইদানীং ব্রতাদিবিশেষেণ বিশেষতোলক্ষণানি লিখন্তি ব্রতেতি। ব্রতমুপবাসাদি। কর্মা সদাচারঃ গুনঃ করুণাদিঃ। জ্ঞানমাত্মানাত্মবিবেকাদি। ভোগঃ বিষয়সেবা। জন্ম সংকুলোৎপত্ত্যাদি। আদি শব্দাৎ বিদ্যাবিস্তাদিঃ। তত্তদ্মুকেষু যদ্যপি ব্রতাদীনামহেত্তত্বাৎ তেরু বিফুভক্তা ন সম্তবন্তি তথাপি তেয়ু জনেমু মধ্যে তথা শৈবেষপি মধ্যে চকার উক্তসমূচ্চয়ে। তথা তথা তেন ব্রতাদি বিশেষেশৈব প্রকারেণ কৃষ্ণসা ভক্তাঃ সন্তি বর্ত্তন্তে। ব্রতাদিনিষ্ঠতত্তদসাম্প্রদায়িকমধ্যে ভগবদ্ধঞ্চি হেতৃভগবদ্বতাদি পরতয়া ভক্তমিশেষতোভগবদ্ধকাজ্যোইতার্থঃ।। ৫॥ তদেব ক্রমেণ বিবিচ্য লিখতি ওত্তেত্যাদিনা হরেঃ প্রিয়ইত্যন্তেন। ভগবদ্ব তঃনিএকাদশ্যপ্রবাসাদীনি তৎপরতা ভগব-দ্যক্তানাং লক্ষণং। তত্রহেত্তঃ। ভগবদ্ধক্তেহেতুরিতি। একাদশীব্রতাদিভিরেব প্রবণাদিমুখ্যভক্তি প্রবৃত্তেঃ। যদ। ভক্তিহে তুর্স্যাংসা। ভগবদ্ধকিং বিনা ভগবদ্ধ তেম্প্রবৃত্তি দিক্। এবমগ্রে-প্যুছং। বৈষ্ণবৰলভং দিনমেকাদশী॥,৬॥ প্রাণাত্যয়ে মরণসঙ্গটেপি প্রাপ্তে সতি॥ ৭॥ ভগব-ন্দুক্তিনবিচ্যুতেত্যেত্সক্ষণং নির্দ্দিশতি ব্রতানি একাদশীকার্দ্ধিকাদিনিএমাঃ ন চ্যুতানি নাপ্যা-তানি যেষাং ব্রতানাং সম্বক্ষেন এপিতিঃ স্থাপ্রিয়ঃ স্যাৎ ॥ ৮॥ ভগবতি অপ্নং কর্ম্মণস্তৎ ফলস্য বা নিবেদনং। আদিশব্দাক ভগবতান্তর্যামিণা প্রেরিতোইহং করোমীতি দাসভাববিশে-যাদিতেন। নবেবমপি কর্মণোহত্যন্তবহিরঙ্গত্বেন তথা তুর্ঘামিদ্ট্যা সমর্পণাজ্জানবিশেষম্পর্শেন চ সাক্ষান্তক্তিহেতুত্বাভাবাৎ তৎপরত্বেন ভগবন্তক্তলক্ষণং ন ঘটতইত্যাশস্ক্য পক্ষান্তরং লিখতি ত্যা ভগৰতঃ আজ্ঞা শ্ৰুতিশা তী মটেমবাজ্যে ইতি বচনাদরেণ তপ্তবিহিত্ত কর্মাচবণং ভগৰদা-জ্ঞাপ্রতিপালনমেবেতি সিক্ষাতি । এবং ভগবদর্শণাদিনা কতঃ সদাচারঃ সংকর্ম ভগব-দ্ধক্তিহেন্তর্ভরতি। অতন্তৎপরতা কর্মিযু মধ্যে ভগবদ্যক্তলক্ষণমিত্যর্থঃ। এবমগ্রেপি জেয়ং। ৯। धर्मार्थ मिलाएनो यमाणि नाकान्छ गयमर्थनामिकः न कारार्छ एथानि ए देवस्वाः एक्स हैला-হ্যক্তা তত্ত্ত ভগৰদর্শনিকমূহ্মের। অন্যধা কেবলতত্ত্তৎকর্শনিষ্ঠ্যা ভগবৎসম্বাদ্যা-ভাৰাতৈক্ষবত্বাত্বপপতে:। অথবা ধর্মার্জমের জীবিতং নতু বিষয় ভোগার্থং সম্ভানার্গমের বৈশ্বনং মতু স্থার্থং পচনং অল্লাদিপাকক্রিয়া বিপ্রস্থার্গমের নতু স্বার্গং। তে বৈক্ষবাঃ বৈক্ষবত্ব ব্যতিরেকেণ তাদৃশ শুদ্ধচিত্তত্ব ভিবিতন্তথা প্রবৃত্তাসন্তবাদিতি দিক্॥ ১০।। ভক্তা ভগবং

কালেহত্ত গৃহদাগত । যোহতিথিং পূল্বেন্তুক্তা বৈশ্বং প ন সংশার্থা ১০। সধাচাররভাঃ শিকাঃ সর্বভ্তানুকল্পকাঃ । শুরুষত ক্রেরাগাবে সদা ভাগরভাহি তে

। ১২ ।। পালে বৈশাধনাহাজ্যে । শীনারদায়রীষসম্বাদে । জীবিতং বস্য ধর্মার্থে
ধর্মের্হর্যপ্রমেব চ । শহোরাত্রানি পূলার্থে তং মন্যে বৈশ্বং জনং । ১৩ ।।
লৈকে চ । বিশুভক্তিসনাযুক্তান্ শ্রোভন্মার্ত্রার্থককান্ । প্রভাভবতি বোদ্দ্রী
বৈশ্বাসৌ প্রকার্ভিতঃ ।। ১৪ ৷৷ গুনবংসু ভক্তিহেতঃ কৃপালুম্বাদিসদ্বালীলতা ।
ক্রান্দে তত্রিব ৷ পরদুংখেনাল্লসুংখং মন্যান্ত যে নৃপোজম । ভগবদ্ধর্মনিরভান্তে
নরা বৈশ্বনা নৃপ ।। ১৫ ৷৷ তৃতীয়ক্ষে শ্রীকশিল দেবভূভিসম্বাদে । ভিতিক্ষবং
কার্কনিকাঃ সুক্রং সর্বদেহিনাং । অজাতশত্রং শাদ্যাঃ সাধবঃ সাধুভূষণাঃ
।। ১৬ ৷৷ পঞ্চমক্ষে । ঋষভদেবস্য পুত্রানুশাসনে । মহৎসেবাং ম্বারমাহর্দ্ধিমুক্তেন্তর্নোলারং যোবিতাং সঙ্কিসক্ষ। মহান্তত্তে সমচিন্তাঃ প্রশান্তা বিদন্যবঃ
সূত্রহং সাধবো যে। ১৭ ৷৷ একাদশক্ষেকা ৷ ভগবংপ্রদ্রেরপ্রপ্রশান্তরে ।। ১৮ ৷৷
কপালুর্ক্তন্তোভন্তিভিক্তঃ সর্বদেহিনাং । সভ্যসাবোহন্তর্ক্ শান্তঃ হিরেনিক্
কারক ৷ কামাক্ষ্ভিতধীদ্বান্তা মৃদ্ধ শুচিরকিঞ্চনঃ আনাহোমিতভুক্ শান্তঃ হিরেনিক্
চিক্রনোমুনিঃ ৷ অপ্রমন্তোগভীরান্ধা গৃতিমান্ জিত্বভ্রণঃ ৷ জমানী মাদদং কাল্যা

প্রীত্যা।। ১১।। শিষ্টাঃ শাস্ত্রপরাঃ। ত্যক্তোবাগঃ কর্মফলাদৌ বৈত্তে। এবঞ্চ ভগবদর্পন মণয়াত মেব॥ ১২॥ এবং যদ্য পুণ্যার্থে হংহারাত্রাণি ভবস্থি তং ॥ ১৩॥ শ্ৰোভানীং সাৰ্জানাঞ কর্মণাং প্রবর্ত্তকান্॥ ১৪।। অভস্তএব নবা ভগবদ্ধনিরতা বৈফবাঃ। যদ্বা। বৈফবাইভাত ছেডঃ ভগবভোধর্মঃ স্বভাবঃ প্রত্থাদহিষ্ণুতাদিন্তত নিতরাং রতাইতি॥ ১৫॥ যে তিতিকবঃ ক্ষা भीताः सक्तः निक्रभाशाभकातिनः भाष्ठाः काथापितिहलाः विनयापियत्वावा माधूसभीनः মেব ভূষণং ঘেষাং তে। তুলসীমালাদিসজু ব্যয়া তে সাধবঃ ভগবদ্ভতা ইতার্থঃ। অহং ভক্তপ-রাধীনইভ্যুপক্রমা শাধবোহ্দদয়ং মহমিত্যাছাপ্সংগরে বদতা শ্রীভগবতা শাধবএব ভক্তাইতাভি-ব্যঞ্জনাৎ। এবং মৃহজ্জেনাপি মুখাত্য়া ভগবস্তক্ত এবাভিধীয়তে এপ্রহ্লাদোকে হরাব-ভক্তদ্য কুতোমহদ্যুণা ইত্যাদিবচনার্ধবিচারাৎ। তথা সচ্ছদেনাপি ভগবস্তক্তএব। যৎপাদপক্ষ পলাশবিলাসভক্ত্যা কর্মাশরং গ্রথিতমুকাধয়ন্তি সন্ত ইত্যাদিবচনার্ধাত্মবারাদিক্যেষা দিক্ ৪১৬॥ विभूक्तिः विभिक्तोम्रा मूट्टिः औरेदकुर्शलाकश्राश्चिलक्तनशाः ভসসः সংসারস্য নরকস্য বা দ্বারং। সাধবঃ শাস্ত্রান্ত্রন্তিনঃ ॥ ১৭ ॥ জ্রিভগবতা প্রকর্ষেণ দত্তে উদ্ধবক্তপ্রশ্নস্য সা্ধুস্তবোদ্তম লোকমতঃ কীতৃক্ৰিখঃ প্ৰভো ইভাগা উত্তরে প্ৰতিৰচনে॥১৮॥ রূপালুঃ প্রছংখাদহিষ্টুঃ নর্বাহেছিনাং কেষাফিদপার্কতলোহ:। যত্তা দর্বদেহিনাং উদ্ধনমধ্যমনীচানাং তিতিক্: অপরাধ-निक्षितः मातः वितर वनः यमा मः। व्यवपात्रा वास्यामित्रिकः अधहः धरशः गमः। वथा শক্তি मुर्क्षयामू পকারকঃ কামেরক্ষতিভটিতঃ দান্তঃ সংযতবাছে দ্রিং। মৃদুঃ অকচিনটিতঃ শুটিং সদাচার: অকিঞ্ন: অপরিঞ্ছ: অনীছ: ছ্উক্রিয়াপুন্য- মিতজুক্ লঘ্যকার:: শান্ত: নিয়তান্ত:করণঃ

মৈত্রঃ কারুণিকঃ কবিঃ। বিষ্ণুপুরাণে যমতদ্বটিসমাদে। ন চলতি নিজবর্ণধর্মতোয়ঃ
সমমতিরাজাসুহুদ্ধিপক্ষ পক্ষে। ন হরতি ন চলতি কিঞ্চিলুচিঃ স্থিরমনসন্তমবৈহি
বিষ্ণুভক্তথা ১৯ । জানিষু ভক্তিহেওজানবতা। একাদশে। সর্বভূতেষু যা পশ্যেদ্বোবজাবমাজানঃ। ভূতানি ভগবত্যাজানে যে ভাগবতোভালঃ।। ২০ । ন যস্য স্থপরইতি বিভেষ্ণজানি বা ভিদা। সর্বভূতসমঃ শান্তঃ সবৈ ভাগবভোভমঃ।। ২১ ।।
ভাস্বাজ্ঞাজাথ যে বৈ মাং যাবান্ যশ্চান্মি যাদৃশাঃ। ভজভাননাভাবেন তে মে ভক্ত-

হির: অধর্মনিয়মান্দৌ। মচ্ছরণ: মদেকাশ্রয়ঃ। মুনির্মননশীলঃ রুণা বার্ত্তাত্যাগী বা। অপ্রমন্তঃস:ব-ধনঃ। গভীরাত্মা নির্বিকারঃ ধৃতিমান্ বিপদ্যপি অরুপণঃ ঞিত্বত্গুণঃ কুংপিপাদে শোক-মোনে করামৃত্যু ষডুর্বায়ঃ এতে জিতা যেন সং। আমানী মানাকাজকার হিতঃ অন্যেত্যোমানদঃ কল্যঃ প্রবেখনে দক্ষঃ মৈত্রঃ অবঞ্জঃ কারুণিকঃ করুণদ্বৈ সর্বত্ত প্রবর্ত্ত মানঃ নতু দুউলোভেন क्विः "नगा भ्छानी ज्याव व्यन्निमीत्वा वा । यमात्रात्व श्वकः था महिष्णु जाम साधिनाः किकिन मत्नाष्ट्रि मंख्रदायुः उथानि यमाणि जिल्लाका किथना मर्देशना देवलव ममामर खनाहेजानि ना रश्चन मः विवादमवार छन्। नार जगवछदक्षप्य नमाक्ष्रङः। किया जगवछकानार छन्नमाञ्चिक-ভয়া তেখেন নিষ্ঠাৰ্যাপ্তা। তৈওঁ নৈভঁগৰস্কৃতি স্বং নোধাতইতি দিক্। এইমগ্রেপ্যহং ॥ ১৯॥ শিহরিযোগেশ্রসা উন্তরে অথ ভাগবতং বুত বদ্ধর্মো যাত্রশান্পং। যাচরতি ষদ্ধুতে বৈলি কৈ র্ভগবৎপ্রিয়ং। ইতি শ্রীনিমিশ্রশ্বস্য প্রতিবচনে। তত্ত্ব ধন্ধর্গো যথিন্ ধর্গো পরিনিউতইত্যংস্যাতরং সক্ষভুতেদিতি। আতত্ত্বাচ মাত্ত্বাদালা হি পরমোহিরিতি তল্পোক্তে লালনো হরে: সর্বাভূতে বু মশকাদিছপি নিয়ন্তকেন বর্জনানস্য ভগবদ্ধাবং নিরতিশব্রেশব্যমের যঃ পশ্যেৎ নক্ত তা-রতমাং। অয়কাজ্জানপর্ইতি জেয়ং প্রকরণবলাও। এবমগ্রে বিশ্বইত্যাদি পদাদয়েইপি। অতএৰ পশোদিতি সম্ভাৰনায়াং সপ্তমী। আয়জ্ঞানপংস্য তাদুশভগৰজ্জানাস্ম্ভব:-স্তথা আত্মনি হরাবের ভূতানি চ যঃ পশ্যেৎ। কণ্ডুতে ভগবতি অপ্রত্যুতৈশ্বলাদিরপে ন পুনৰ্জ্মলিনভূতাশ্রেষ্কেন জাডাাদিপ্রসক্তা এম্বর্যাদিপ্রচাতিং পশে। ব সর্বাহ পরিপূর্বং ভগৰত্তত্ত্বং পশান্ ভাগৰতোভমইতার্থঃ ৷৷২৯৷ বিভেযু স্বীয়ং পরকীয়ং বেতি আমনি চু স্বপরো-दिक ভिमा यमा माखि घडः नक्ष हत्वम मनः ভগবদ हो। ভগব खबु हे। वा वाव शामिना ভুলাঃ অতএব শাস্তঃ ভগবন্নিষ্ঠবুদ্ধিঃ সমোমনিষ্ঠতাবুদ্ধেরিতি ভগবৃহক্ষেঃ। বৈ প্রবিদ্ধো। অশ্য চ সদা ভগবনিষ্ঠত্বেন সৰ্ব্যক্ত সম্ভাবহার দৈনা পূৰ্বোক্তাদ্পি শৈতী মূহুং। অতথ্য ভস্মান্ত রবেং। লেশ্যএবমত্রোপি।। ২১'॥ বাবান্ দেশকালাপরিচ্ছিনঃ । যক্ষ দর্বারা তই কাইউটারী পুনঃ প্রন জ্ঞাত্ত্ব। একান্ত ভাবেন যে ভক্ষি । যদি চৈবং ব্যাখ্যোরং যাবান্ নিভাইকলোরাদি ক্রণঃ। যক अतिविकीनमध्यामा वर्गामकामि कर्षः वाष्ट्रमः महत्रभवग्रामेनम्या अन्त्रीनावम्या অন্ত সমানং ৷ ভাবঃ প্রেমুএর পূর্বাবস্থা তরাপীখনদ্ট্যা ভন্নগৌরবাদিনা বিশুদ্ধরাভাবাৎ ৰিশুৰাপরমপ্রেম্বার্থ বাপত্রোম্যান্ট্রানঃ অত এব জীস্বামিপাটেনত তল্পাধ্যাতং সম্মেলক প্রাধানিক জি यहा अथमर छाषा अथान मृत्र छाषा ७ कि शति शाकिना च महा ए। एवा अशार्थ अथ भिनः छाञ्चा छाञानि दक्वन स्मकाखिद्यम या उक्षि नितिष्ठत्रकात एमा दिश्मन्यत्वामी निर्माटम्य- তনা মতা। । ২২ ।। দিখরে তদধীনের স্বাজিনের দ্বিংস্চ। প্রেম মৈত্রী রুশো-পেকা বং করে তি স মধ্যম: ।। ২৩ ।। অর্চার্যানের হরুরে পূলাং হা লাক্ষরেত্র। পলা বং করে তি স মধ্যম: ।। ২৩ ।। অর্চার্যানের হরুরে পূলাং হা লাক্ষরেত্র। পলা বং তালিক কর্মানা সক্ষতা হরিযোগেলরোত্রে ।। প্রীক্ষাণীন্দ্রির্পান্ যোন দেউি স কাজ্জাতা। বিফোর্মারাসিক পলান্ সবৈ ভাগবভোভ মং ।। ২৫ ।। সভ্যোহদ গাদিন পুভত্তি-কেন্দ্রিভিগানিতা । ভবৈর । ন হস্য জন্মকর্মাহার ন বর্ণাল্যকাভিভিঃ । সভ্যাত্র ভাবো দেহে বৈ স হরের প্রিয়ণ । ২৬ ।। ভাবার কর্মান্ত্রির

क छिनार ॥ २२ ॥ अभारत अभविष्ठ ध्यम एक धीरनम् एक एक पूरेमधी मथार वानि एम स् अध्यक्ष क्रुपार विषय्य (ठारभकार यः करताि म मधामजाभवज देखार्थः छाम्माजनमर्गनीर । यथा সর্বভূতে প্রত্যস্যায়মর্শে দেউ বাঃ। আত্মনোমঃ ভগবান্ ইউদ্দেশঃ এ কুঞ্জুস্য ভাবং প্রেক্ত সর্বন **ज्रुटियू यः পশোर । उथा यानि ज्ञानि गर्ताणि एक्याक जादर जगदि यः भर्नार । एक्यार** ङ्खार्थ रहेकः आज्ञान काञ्चन <del>वाद्यारकाकारः ध्यामाणाता । यदा हिङ्क्षि</del>ज्ञ छ्रुट्यान्थ्रनात्म-নৈব তদ্ভাব ইত্যর্থঃ। কিয়া আত্মলোপি চেতিয়িতৃত্ত্বেন তথ্য পরমাত্মতরাত্মনোইপি সকাশাৎ পরমপ্রেম স্পদত্তং যুক্তমেবেতি। এবঞ্চ স্বরং পরমধ্মেনরসপ্পত্তর। স্বাস্থ্যানেনাভাগি তথা-দৃষ্ট্যামে ভাগবভোত্তমএর ইতার্থঃ ইতি। তদপেকয়া চাদ্য মধামত্বমুচিতমের। তাদৃশ্রেম-রাহিত্যেন সর্বাত্ত ডাদুশদৃষ্টাভাবাৎ ইত্থং ব্যাখায় চ পদ্যমিদং প্রেমপরতাদৌ দ্রউব্যং॥২৩॥ আর্চায়াং প্রতিমায়ামের পূজামীহতে করোতি। ন ভক্তক্তেমু অন্যেষু চ সুতরাং ন করোতি প্রাক্তঃ প্রকৃতিঃ প্রারম্ভঃ অধুনৈর প্রারম্ভক্তিঃ শনৈর্জ্তমোভবিষ্যতী গুর্থঃ। অর্চায়। মিল্যুনেন চ তুলা ভ্তাক্র বুদ্ধাপগম হচনাই । পূজে বিশেষ শিলাধী রিভ্যাদৌ বচন প্রমাণেন দোদ বিশেষাপত্তে তথা বৈক্ষবাসন্মাননাচ্চ কনিটত্তং দর্শিতং। यदा অর্চায়া মিতি নিমিত্ত সপ্তমী। পূकार्यमित हरतः भूकाः खाक्षसा करता जि छथा आसायू ह मिरछः सरत्र छकः न ह छछ। छ यू বৈষ্বেষ্ ভক্তঃ। দ প্রাক্তঃ কনিষ্ঠোভাগবতইভার্যঃ। সোচপি ভগবৎপূজাপ্রস্ত্যা কালেনােছ-মোভবতীতি জ্ঞেখণ । অসাচ দেবোভসাদি জ্ঞানেনৈৰ কিয়া চরেঃ পুজনেনৈৰ লোকেৰু নিজপুলা माानिङासन उर्श्व शक्षाः ध्रव्यक्ष्मानिष्ठः भगग्रिङ॥२८॥ द्विक्षाः क्रिकिः । भग्निः ইয়র্থান্ বিষয়ান্ গৃহীত্বাপীতাপি শ্বদার্থঃ ন ছেটি তেবাং দে যথাজুইপি সভি ন নিন্দাদিবং (अानामक्य : १ ट्रेकिक (इन्हुः । हेमप्रवीषिकः मर्कम् निकामाद्वाः मारप्रकि नेनामिकि॥२०॥ स्य जिल्ला । क्रम उल प्यान । बर्रादिश्वदानि । प्रान्य मः जुक्त का पित्र का दिए कि विकास है वा-मान्द्रनामञ्जू है उत्रवास्त्रिन् जिल्लावृत्युकारि । म्टर् क्षेत्रहर्वाहरू महरक्रीटकाक्षित्। माजि-मानुः। न गज्जका नरदाः विश्वः जनकु लिख्या विश्वाप्ता व्यवस्थित है छ। यः ॥२७॥ मद्यवः निर्वित्सव जनद क् जनक्षास्त्रवायातः। उदक्षः कत्र कत्र का वदकार्यात्याहराति निर्देशाह । कवार जाना देति। कथिक कमाणि किशिर अतिष्या जायात्रना शकात्रन या जिल्लाहित मञ् कर्मानिना याखाः প্রকলিধিত। জ্ঞানদেরোজ্যভাব। বৃদি। তত্ত জ্ঞানং সর্বভূতেখিত্যাদিয় অনাস্তিশ্চ ভোগানী-

জানানাসক্তামানিতা।। তিজিনিঠাপনা কাতান্ততোল্ভান্তমভোদিতা।। ২৭।।
লৈবেৰু শ্বীন্দিবকুকাভেদনাঃ। বৃহন্তান্তমীয়ে।। শিবেচ প্রমোশনে বিক্ষোচ পরমা
নাম সমৰ্কাট প্রবর্ত্ত তে বৈ ভাগবতোক্তমা ইতি ।। ২৮ ।। জন্যক তেবাং
ভগৰজান্ত্রার্থপারভাদিকং । সাক্ষান্তক্তালকং মুখাং লকণং লিখাতেবধুলা
।। ২৯ ।। জীভাগবতশাত্রপারতা ক্ষান্দে । বেষাং ভাগবতং শাক্তাং লগা তিঠিতি
সন্ধিনো। পূলবৃত্তি চ যে নিতাং তে স্যুর্ভাগবতা নরাঃ ।। ৩০ ।। থেবাং ভাগবতং
লাল্ডং জীবিভাদবিকং ভবেং । মহাভাগবতাং শ্রেষ্ঠা বিষ্ণুনা কথিতা নরাঃ ।। ৩০ ।।
বৈক্ষব সন্মাননিঠা ।। ২০ ৷। লৈকে ৷৷ বিষ্ণু ভক্তমথায়াতং ঘোদ্ট্রা সুন্থপ্রিয়ঃ ।
প্রামাদি করোত্যের বাসুদেবে যথা তথা । সবৈ ভক্ত ইতি জ্বেরং স পুনাতি লগশ্রম্থ । ক্লকাল্ডবালিকঃ শুনুন্ কথা ভাগবতেরিভাং । প্রণামপূর্বং কাল্বা যোবদে
হৈ বৈক্ষবোহিকঃ ৷৷ ৩২ ৷৷ ভোলনাচ্ছাদনং সর্বাং যথাশক্তা। করোতি বং ৷ বিষ্ণু
ভিক্তমা সভতং সবৈ ভাগবতঃ ন্মুভঃ ৷ গাকুড়ে ৷ যেন সর্বান্ধনা বিষ্ণুভক্তা। ভাবে।
নিবেশিকঃ ৷ বৈক্ষবেষু কৃতান্ধন্তান্তাগবডোহি হঃ ॥ ৩৩ ৷৷ জীতুননী নেবা
নিঠা ৷ বৃহন্তারদীক্ষে ৷৷ শ্রীভগবনাবিধেক্তান্তাগবডোহি হঃ ॥ ৩৩ ৷৷ জীতুননী নেবা

সক্তবং গৃহীত্বাপীক্রিটেয়রিতাত অমানিতা চ নিরভিমানত্বং ন ধ্যা জম্মেন্ডাত্র দর্শিতং। কর্মনুতা ख्या निकाभकाः भविभाकशात्रकाः । यानम ठ ज्याकां का श्री खासर ख्याकां निकाम निवृत्तर । ভक्तिकाङ्गराख्यकनवाश्वकामानि পরিকরৈর্ভক্তের্ভক্তিনিষ্ঠাফলত্বাং। হিশক্তোহ্বধা-রবে। ভতত্তেভ্যন্তদ্ভিপ্রাংয়বৈব বা উত্তৰতা তেবাং উদিতা উদ্ধাতা তত্ত্ব দল্লোজ্পবা। অন্যধা জ্ঞানাদিমাত্রপরত্বেন ভাগবভোগুমস্থান্যস্থাপতে:। এতচ্চ শ্রীভাপবভামভোগুবৰণে সকারণং विवृद्धस्यविष्ठ। व्यवहात्राष्ट्रभक्कानामानव्यक्तिभागामानाकक्रमावसकार एवं निविष्ठाः। उदानि ভাগৰভোত্তমইত্যাদিকই পূৰ্ব্ববিধিত ভগৰদুতপরাদ্যপেকরে।ছ মিভোষা দিক্।।২৭॥ বৰা कामामिनम्भूमारत्रम् ज्ञनवक्छामामिशवज्ञा जनवक्छमक्रनः निविज्ञः। उवा टेमवनम्भूमारत्र-विभ खीनित्वन नव खीक्कनार्कनका खन्ध्यमभंतः जन्धक्कनक्षनिकार्यः ॥२৮॥ यगानि পূর্ববং শাস্ত্রপরেষু ভর্মবার্ত্ত্রপরিষ্ঠ পরতা ভরবৃদ্ধ কলকণ নিজে স্তৎকশ্পনমাহলমিতি জীভাগৰত-শান্ত্ৰ প্ৰতাদাৰতাপি ব্যাৰ্থা ঘটতে। ওথাপি শ্ৰীভগৰতশাস্ত্ৰপন্নভাগৌ শক্ষাদেৰ ভগৰমুক্ত-कक्षिमित्रक्षिक क्षेत्रक । अञ्चव विश्व विश्व क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क প্সকং ভক্তিশ্বৰূপং। অভন্তৰ প্ৰৰ্থাং সৰ্বাত্ৰ ভক্তিংইছব্লিভি ঘটিতং ॥ ১৯॥ ক্লোগবড়ং ক্ষাৰ্থপুরং व्यमहाগৰত।थात्रा ।। ७॰ ।। मृह्युंनि देवकवनःभावत्यावद्यव उक्तिरस्थरद्य पूर्ववर उत्रवस्त्रकः लेकपर गाउबानि क्यां किर्मानी गाडिबाकिन। छर्ष्ठे छ अवस् छ श्रद्ध छ श्रद्ध छ । कारवन जनवाह उत्तर्वान अन्यान विकास कारवाता । अवसद्वाता । ७३ ॥ । अर्थ किन्न विन नमूक्तरत । व्यक्तिर्यक्र नीता देकि वा छागवरङम दैवस्थरक मेतिछ। উख्नः विकः वाकामि मृत्विति । काका का नितः (बाज् । वरमर मखारवर ॥ ७२ ॥ वर्ष। मङ्गा यथामङि । यथा । यथा । यथा वर्षावर नेख्या चनक्किः नारमाखर्यः ॥ ७०॥ खमाखनमा मूलमा मूर मृखिका दिलका विकास पानारमो

নরাঃ । তথকাঠালিতকর্ণা যে তে বৈ ভাগবতোত্তমাঃ । তলসীগন্ধমাঘুায় সন্তোষণ কুর্বতে তথে । তন্ত্বসূদ্ধা থৈশ্চ তে বৈ ভাগবতোত্তমাঃ ।। ৩৪ ।। প্রীভগবতঃ কথা পরতা। বৃহয়ারদীয়ে । প্রীভগবতার্কপ্রেরসম্বাদে । মৎকথাশ্রবণে থেষাং বর্ততে সাজ্বিকা মতিঃ । তদক্তরি সুভক্তিশ্চ তে বৈ ভাগবতোত্তমাঃ । ক্ষান্দে প্রীভগবদর্ক্ত্বন সম্বাদে । মৎকথাং কুরুতে যস্ত মৎকথাঞ্চ শূণোতি যঃ । হ্বস্তুত মৎকথায়াঞ্চ সবৈ ভাগবতোত্তমঃ। ৩৫ ।। তৃতীয়ক্ষেরে তত্তবৈ । মদাশ্রমাঃ কথাম্টাঃ শূণুত্তি কথ্যবিত । তপত্তি বিবিধান্তাপা নৈতাল্লাতচেতসঃ ।। ৩৬ ।। নামপরতা । বৃহয়্বরদীয়ে তত্তবি । মনানসাশ্র মদ্ধক্তা মদ্ধক্তা মদ্ধক্তিললাল্পাঃ । ময়ামশ্রবণাসক্তাতে বৈ ভাগবতোত্তমাঃ।। ৩৭ ৷৷ থেইতিনলাতি নামানি হরেঃ শূণুত্তি হর্ষিতাঃ ৷ রোমাঞ্চিত শরীরাশ্র তে বৈ ভাগবতোত্তমাঃ ৷৷ ৩৫ ৷৷ তত্তিবান্যত্র ৷ অন্যেষামুদ্রৎ দৃষ্ট্বঃ যেইতিনলতি মানবাঃ ৷ হরিনামপরা যে চ তে বৈ ভাগবতোত্তমাঃ ৷৷ ৩৮ ৷৷ লারণ পরতা ৷ তত্ত্ব স্বধ্যনিষ্ঠয়া রাগদ্বেষাদিনিবৃত্ত্যা স্বরণং ৷ প্রীবিষ্ণুপুরাণে হম্বর্ণা

বৈধৃ তা ॥ ৩৪॥। এবং ভক্তিবাহাক্ষবতাং ভগবদ্ধক্রানাংলক্ষণানি লিখিত্বেদানীং ভক্তান্তরহন ৰতাং লক্ষণানি লিখতি মংক্থেত্যাদিনা থাবদেতল্লক্ষণসমাপ্তি। শাস্থিকী কামাদিরছিত। স্থিরা বং। ভসাঃ মংকথায়া বক্তরি কগকে।। ৩৫।। এতান্ মৎকথায়াঃ শ্রোভূন্বক্তুংশ্চ তাপা আধ্যালিকা-দয়ঃ ন তপতি ন হ্যথয়তি কুতঃ কথায়ৈৰ মদগতং চেতোবেযাই তান্। যদা বে তাপৈনাতি-ভূয়তে তে সাধবইত্যত্রার্থোদ্রইব্যঃ সাধ্লক্ষণান্তরুক্তত্বাৎ।ততক্ষ প্রবণাদিত্রয়ং তাপানভিভূতত্বণ টৈচকমিত্যেবং লক্ষণচন্ত্রইয়মুক্তং। যদ্ধী। মদাভচেতসইতি মংস্মরণপ্রাংশ্চ ন তপন্তীতার্থন। এবং ক্রমেণ শ্রবণকীর্ত্তনস্মরণপরাণাং মাছাত্মাং জ্রেয়ং। তে সাধ্বইতি সাধূলক্ষণান্তঃ পাতিরাখ স্বতএবায়াতি ॥ ৩৬ ।। মদ্দ্র**ভাইতি ম**ৎদেবাদিপরাইভার্যঃ। যদ্যপ্রের লক্ষণচতুইয়মুক্ত<sup>্</sup> তথাপ্যন্যত্র স্মরণাদিত্রয়বৃত্তেরতা নামপ্রতাপ্রকরণে নামশ্রবণাস্কুজ্মের একং লক্ষণং। তংগ্রয়ঞ তত্ত দৃষ্টান্তত্ত্বন জ্জেয়ং। এবমন্যত্তাপি॥৩৭॥ নামপরাইতি নামশ্রণকীর্ত্তনাদিকারি। ইত্যর্পন্তীতদা। এবংক্রপাপ্রতয়া নামপ্রত্তীয়া চতগ্রস্কুক্তানাং শ্রবণকীর্ত্তনপর স্বংলক্ষণং নিধিত্ব। ইদানীং ন চলতীত্যাদিনা অক্তাপইত্যন্তেন স্মরণপর্ত্ং লক্ষণং লিখন্ তত্র বিশেষং লিখতি ততেতি স্বধর্মনিষ্ঠয়া রাপতে।দ্বেষাচ আদিশব্দেন কলিকলুযলোভাদেশ স্কাশালিব্ভিরুপরতিঃ তয়া যথ স্মরণং তৎত্রতু স্মরণপরং শ্রীমন্তগবদ্ধক্তং সসাধনং নিদিশতি ন চলভীতি।উটেচঃ শ্রীবিক্ বিষয়কত্মাদতিশয়েন শিতং স্বচ্ছং রাগাদিএহিতং মনোযস্য। যদ্বা প্রস্তাবাদর্থাপত্ত্যা বিক্ষাবের কিষা উচ্চৈঃপরমোচ্চতরে হত্যন্তত্বর্লভে শ্রীভগবচ্চরণারবিন্দে দিতংবদ্ধং মনোবেন তং বিষ্ণুভক্তং विकि मिल्यमञ्ज्ञाविष्क्रमञ्चारकाशकिक्रामाक । न हल्लील। विकारियमाष्क्रणावः हि ক্রিরমাণঃ স্বধর্মোবিষ্ণুং প্রীণয়ন্ সত্বশুদ্ধিদ্বারা তদ্তক্তিহেতুত্বেনাত্র স্মরণস্য সাধনং ৷ শুদ্ধসত্বস্য রাগাদ্যভাবাদাত্মনঃ সুহৃৎপক্ষে বিপক্ষপক্ষে চ সমমতিত্বং পরস্বহরণাদিনিবৃত্তিশ্চ স্বতএব ভব-ভীতি তদপি তস্য সাধনমূপপদ্যত এব। ততকৈবং ব্যাখ্যেয়ং। যো নচলতি স উটেচঃ পিতমনঃ শান্তঞ বিষ্ণুভক্তং বিদ্ধীতি ৷ তত্ৰ চ স্বধৰ্মনিষ্ঠাদীনাংস্থাতস্ত্ৰোণ নৰ্বেষামপি সাধনতং কিয়া

তাদ্রটিসম্বাদে। ন চলতি উলৈঃ শীভগবৎপদারবিদে সিত্রনান্তমবৈহি বিষ্ণুভত্তং । ৩১।। কলিকলুষমলেন যস্য নাআ বিমলমতের্মলিনীরুভন্তমেনং। মন্দিক্ত জনাদ্দনং মনুষ্যং সত্তমবেহি হরেরতীব ভক্তং ।। ৪০।। কনকমিপি রঙ্গাবেল্য বুদ্ধাত্তিপার যং স্মবৈতি পরস্থং। ভবতি চ ভগবত্যনন্যচেতাঃ পুরুষবরং তমবৈহি বিষ্ণুভক্তং ।। ৪১ ।। ক্টিকগিরি শিলামলঃ কু বিষ্ণুর্মনিসি নৃগাং কুচ মংসরাদিদ্যোষঃ । ন হি ত্তহিনমযুখর শিপুঞ্জে ভবতি ছতাশনদী প্রিজঃ প্রভাপঃ ।। ৪২ ।। বিমলমতির সংসরঃ প্রশাতঃ শুচিচরিতোই খিলসজ্মিত্রভূতঃ । প্রিয়হিতবচনোহত্তমান্যায়ো বসতি সদা ছদি তস্য বাসুদেবঃ ।। ৪৩ ।। বসতি ছদি সনাতনে চ তিমান্ ভবতি পুমান্ জগতোইস্য সৌম্যারণঃ । ক্ষিতিরসমতিরম্যাত্মনাইন্তঃ

বধাসম্ভবং হেতুহেতুমন্ত্রং দ্রফব্যং এবমগ্রে প্যাহং॥ ৩৯॥ অলৈয়ব প্রপঞ্চ কলিকলুষইত্যাদিনা। যদা নহরতি ন চলতীত্যাদিনা পরস্বহরণপরদ্যোহনিবৃত্তিলক্ষণমাত্রপাপনিবৃত্তির জা ইদানীং কলিকালীনবিবিধপাপবর্গনিবৃত্তিরেব বিষণুভক্তস্য সাধনং স্বভাবং বা লিখতি কলীতি। আত্ম বুদ্ধিঃ । মনোবা । মনদাপি পাপং যোনাচরতি কিং পুনর্বাচা কায়েন বেত্যর্থঃ । অতঃ মনসি সভতং ক্তোজনার্জনোযেন তং। অভীবেতি পরমদুস্তরকলিকালীন পাপপরম্পরয়া প্রমা-দাদিনা কথঞ্চিদপ্যস্পর্শাৎ ৷৷ ৪০ ৷৷ অধুনা পাপমূললোভরাহিত্যঞ্চ বিষ্ণুভক্তস্য প্রবিৎ সাধনং স্বভাবোবেত্যাহ কনকমপীতি। পরস্থ কনকমিত্যনুষ্ণ। অবেক্ষ্য দৃষ্ণাবুদ্ধা তৃণমিব সমবৈতি অত্যন্ততুদ্ধ্যা নাদন্তইত্যর্থঃ।। ৪১॥ অধুনা নিঃশেষদোষরাহিত্যং বিষণুভক্তদ্য সাধনাতিশরং স্বভাবং বেতি বদন্ তদেব দ্রুতার বেশ্ববতান্ত শ্রীভগবান্নস্কু দূরতরইত্যাহ ক্ষাটকেতি। ক্ষটিকগিরে: শিলেবামলঃ অতোমৎস্রাদিদোঘবতাং মনসি বিষ্কুর্নসম্ভবত্যেবেতি দৃষ্টান্তেন বোধয়তি নহীতি ! তুহিনমমূথশ্চল্রস্তারশ্মীনাং পুঞ্জে দতি বিষয়েবা।এবং দৃষ্টান্তেন কৃষ্ট্যাক্তমন্যোন্যবিরোধিরং লাধিতং।। ৪২ ॥ অশেষসূল্যবতামেব চিত্তে ভগবান্ সদা পরিক্রতীত্যতঃ সন্মুণবত্তিব ভদ্য সাধনং স্বভাবোবেতি লিখতি বিমলেতি।তত্র প্রথমপদত্রয়েনান্তঃকরণে সল্টুণোদর্শিতঃ। বিমল-মতেরেব বিবরণং অমৎসরঃ প্রশান্তশ্চ রাগদ্বেষাদিরহিতঃ ইতি। যদ্যপি বিমলমতিত্বেনৈব কাগা-দ্যবিষড়ুর্গ করোহিপি বৃত্তঃ তথাপি পরমগুর্জায়ন্য মৎসবদোষন্য কয়ে সত্যেব বিলমতিতা ল্যাৎ ইত্যভিপ্রায়েণামৎসরইতি পৃথগুক্তিং যদা বিমলমতিত্বে হেন্তঃ অমৎসরইতি। তত্রাপি হেন্তঃ প্রশান্তইতি। এবমপি তথৈবার্থঃ। কর্মণি সদ্মৃণং দর্শরতি। শুচি শুদ্ধং চরিতং যদ্য। কিঞ্চ অখিলানাং সত্মানাং প্রাণিনাং মিত্রভূতঃ স্বভাবতোহিতকারী। বচসি সম্পুণং দর্শয়তি। প্রিয়ং সর্বেষাং প্রবণমনঃ স্থাবছং ছিতঞ্চ পরিণামেপি শুভকরং বচনং যস্য<sup>°</sup>তচ্চ নদান্তি-করেন কিন্তু বিশুদ্ধভাবেনৈব। কিঞ্চ তথাপি ন গর্বস্পর্শইতি নির্দন্তনিরহঙ্কারতালক্ষণগুণ-বিশেষমাহ। অন্তে নিরস্তেমানমায়ে গর্বাদন্ত্রৌ যেন সং। যদা মান এব ভগবন্মায়৷ অবিদ্যামূল कार्थिनम्बिनामश्कात्र भाषानार। व्यश्कात्र मृत्याकारिनमात्रिक भाषाना । व्यनार भूविवरमव। এবঞ্চ সভি সর্বাবদাণুণমূলনিরহঙ্কারতৈব দর্শিতা ॥৪৩॥ রুচিরপ্রসন্নরপতা চ প্রকটমেব তস্য লকণং স্বভাবএব বৈতি লিখতি বদতীতি। মুখপ্রসাদাদিচিহ্নং তদস্তঃস্থং পরমানন্দঘনং শ্রীবিষ্কুং স্থুচয়তীত্যতান্যার্পনিদর্শনমাহ ক্ষিতীতি। চারুতয়া কোমলতয়া শালপোতঃ ॥বালবৃক্ষ: मर्क्कग्र

কথয়তি চাক তথ্যৰ শালপোতঃ ৷! ৪৪ ৷৷ অন্যবিজয়ে বৈরাগ্যাদিনাচ মারণং জীহরিবোগেশরোন্তরে ৷ দেহেন্দ্রিপ্রাণ্মনোধিয়াং যোজনাপ্যয়ং স্কুদ্রয়তর্মক চিছুঃ! সংসারধ্যারিবিমুহ্যমানঃ মাত্যা হরের্ভাগবত প্রধানঃ ৷৷ ৪৫ ৷৷ ত্রিভুবনবিভব হেতবেপ্যকৃত্য তিরজিতা অসুরাদিভির্কিন্গ্যাৎ ৷ ন চলতি ভগবৎপদারবিদ্দাল্লবনিম্যার্জমপি স বৈক্ষবাগ্রাঃ ৷৷ ৪৬ ৷৷ ভগবতউক্রিক্রমান্ত্রিশাখানখমণিচন্দ্রি

শিশুর্বা আত্মনোহন্তঃস্থিতং পরমোন্তমং কিতিরসং কথয়তি স্বচয়তীত্যর্থঃ। এবংচেটিচঃ সিত-মনসমিতি মনসিক্ষতজনাৰ্দ্দনমিতি ভগবদনন্যচেতাইতি বৃষ্ঠি সদা হৃদি তদ্যেত্যাদিনা ভগব-চ্ছরণপরতৈবোক্তা। স্বধর্মনিষ্ঠাদীনি চ তস্য স্বাভাবিকানি সাধনানি বা বিবিচ্য দ্রফব্যানীতি পুরা লিখিতমেব। তত্রচ সৌমারপতা প্রায়োলক্ষণেম্বোস্তর্ভবতি। অবিভ্রন রুচিরং রূপং যথা-হরি নিষেবয়েত্যাত্মক্তেরিত্যেষা দিক্।। ৪৪।। অন্যবিক্সয়েন অন্যবৈরাগ্যেণ চ আদিশব্দাৎ শ্রহ্মাদিনা চ যৎ স্মরণং তৎ। তত্রান্যবিজয়েন স্মরণং দেহিন্দ্রিয়েতি। হরে: স্মৃত্যা হেন্তুনা দেহা-দীনাং সংসারধর্মে জ্মাপায়াদিভি: কৃত্রা যোহবিমুছ্মানঃ ন বাধিতো ভবতি তথা সর্ব্বেক্রিয় বৃত্ত্যাদি জ্বয়েনান্যবিস্মরণাৎ স ভাগবতপ্রধানঃতিত্র দেহস্য জন্মাপ্যয়ৌ প্রাণস্য ক্ষুৎ মনসোভয়ং। বুদ্ধেন্তর্যন্ত কা । ই ক্রিয়াণাং কুছুং শ্রমঃ। यहा দেহাদীনাং জন্মাদিভির্বনাশ্চ সংসারধদ্মৈঃ স্থ-ছঃখাদিভির্বিমুছ্মানঃ সন্যঃ সমূত্যাবিশিকৌভবতি । এবং বছবিল্ল ছয়েন স্মরণপরোভাগ-বতক্রেষ্ঠঃ ইত্যর্থঃ ॥ ৪৫॥ অন্যবৈরাগ্যাদিনা স্মরণং ত্রিভুবনেতি তৈলোকারাজ্যার্থমপি। यहा। ত্রীনি ভুবনানি যস্মাদিধান্তন্তস্য বিভবঃ পারমেষ্ঠাং পদং তদর্শমপি। यদ্বা ত্রিভুবনস্যাপি কিমুতা-অনোযোবিত্তবঃ ভবাভাবোমোক্ষঃ তদর্থমপি লবার্দ্ধমপি নিমিষার্দ্ধমপি ভগবৎপদার্বিন্দ্-ভঙ্গনাৎ যোনচলতি স বৈষ্ণবাগ্রাঃ। নতু লবার্দ্ধনিমিষার্দ্ধভঙ্গনোপরমে চেস্তাবানু লাভো-ভবেৎ তৎ কুতোন চলেৎ। ততাহ। অকুঠম্মৃতি: ভগবৎ পদারবিন্দতোইন্যৎ শারং নাস্তীত্যেবং ৰূপাঅকুঠাঅনপণতা স্মৃতির্যদ্য সঃ। ভগৰৎ পদারবিন্দাদন্যৎ দারং নাস্তীতি কুতঃ অতআহ অক্সিতে ইরারেব আত্মা যেঘাং তথা ভূটতঃ স্থরাদিভি রপি ছল্লভাৎ। কিন্তু কেবলং বিমৃগ্যাৎ। তদপেক্ষয়া সর্বাসা জচ্ত্রং স্মরন্ যোনচলতীতার্থঃ । যদা, ভগবংপদার বিন্দাং ক্দিগৃহী-তাৎ ন চণতি নম্মরণাধিরমতীত্যর্থ:। তিভুবনবিভবার্থং লবনিমিষার্দ্ধমপি ততোহচলনে হেন্তঃ অকুঠাঅনবচ্ছিন্নাম,তির্যস্য । সদৈব ভগবৎস্ত্যাঅন্যস্য মনসি প্রবেশাভাবাদিতি-স্মরণস্কৈব পরমপ্রক্ষার্থতামাই। অজিতং অপরিচ্ছেদাদিনা মবশীরতং একা তদাত্মানস্তৎ স্বৰূপা মুক্তাইত্যর্থঃ তাদৃশা যে স্থরাত্রন্ধাদয়ঃ আদিশব্দাৎ মুন্যাদয়ক্ষ তৈরপি বিমূগ্যাৎ বিশেষতো প্রার্থ্যাদিতি । অন্যৎ সমানং ॥ ৪৬ ॥ কিঞ্চ বিষয়াভিসক্ষিনা কামেনাতিতাপে সতি ভবেৎ তক্তু ভগবৎসেবানিব্তৌ ন সম্ভবতীত্যাহ। ভগবতইতি। উরুবিক্রমৌ চ তাবখ্রী চ তয়োঃ শাখা অঞ্লয়ঃ তাম্ব নথানি তান্যেব মণয়ঃ তেষাং চক্রিকা শীতলা দীপ্তিঃ তয়া নিরস্তঃ কামাদিতাপোযিস্মিন্ তিস্মিন্ উপদীদতাং ভক্তাং ক্লি কথং পুনঃ দ তাপঃ প্রভবতি। চক্রে উদিতে সতি অর্কস্য তাপইব। যদ্বা অহো ইতঃ পূর্বং চিরং বঞ্চিত্রাদং অহেশবত কিঞ্জিবাবন্তুগদন্তর্জানং ভবিতা হা হন্ত কদা সাক্ষাদিমং দ্রুক্যামি ইত্যাদিতাপোপি তস্য সদা তৎ ক্ষরণানন্দতোন স্যাৎ। কুভোইন্যকামছঃখমিত্যাহ ভগৰত ইতি

করা নিরস্তাপে। ছদি কথমুপদীদতাং পুনঃ প প্রভবতি চলুইবোদিতে ইর্কতাপঃ
।। ৪৭।। পূজাপরতা । স্কালে ভতৈর । যেইজ্য়ন্তি সদা বিষণুং যজেশং বরদং
হরিং। দেহিনঃ পুণাকর্মাণঃ সদ্ধ ভাগবতাছি তে। লৈঙ্গে। বিষণুক্ষতে শুভানাব
করোতি সেইসংযুক্তঃ। প্রতিমাঞ্চ হরেনিতিয়ং পূজ্বেং প্রযাজাবনে। বিষণুভক্তঃ
স বিজ্ঞেয়ঃ ক্মাণা ম্নসা গিরা। নারায়ণপরোনিত্যং ভূপ ভাগবতোহি সঃ।।৪৮।।
বৈষ্ণবধ্মানিষ্ঠতাদি। পানোত্তরখণ্ডে। তাপাদিপঞ্চসংস্থারী নবেজ্যাকর্মকারকঃ।

উরবোমহান্তোবিক্রমাঃ শক্টপরিবর্ত্তন কালীয়মর্জনাদ্যা যস্য তবৈসক্স্যাপ্যেট্রঃ শাখাশব্দেন কল্পদ্রমত্বং ৰূপ্যতে । শ্রীচরণকণ্পদ্রমস্য শাখা স্বণ্পাংশবৎ কনিষ্ঠাঙ্গুলিঃ তন্নধমণিচন্দ্রি ক্রৈট্রকয়া তৎ সক্লংসারণমাত্রাননদ বিশেষেট্রবেতার্থঃ । নিরস্তঃ তাপঃ ইতঃ পূর্বাং চিরং বঞ্চিতোক্ষীত্যাদিৰূপোপি যন্মাৎ তন্মিন্ হৃদি দ তাপঃ কথ্মুপদীদতাং দ্মীপমায়াব্ত। তত্ৰ দুটীস্তেনার্থ।তারমুপন্যস্যতি চক্রে উদিতে ইব উদ্যাতপ্রায়েপি সতি অর্কতাপঃ প্রভবতি কিং কাকা অপিত্রসন্ধায়ামপি ন কিঞ্ছিৎ কর্জুং শক্ষোতীতার্থঃ। এবং সারণানন্দনিষ্ঠরা যঃ কেনাপি তাপেন নাভিভূতঃ স চ বৈঞ্বাত্রাইতি ভাগবতলক্ষণান্তরুক্তত্তাৎ পূর্ববিদদমপি লক্ষণ্যেকমূহ্য ।। ৪৭ ॥ এবং প্রাবণ কীর্স্তনন্মরণপরতার্বাপং ভগবদ্ধক্তলক্ষণং ক্রমেণ লিখিত্ব। ইদানীমর্চনাদিপরতা লক্ষণং লিখতি যে২র্চয়ন্তীতিত্রিভিঃ। যদ্যপি শ্রবণং কীর্ত্তনং বিষ্ণোঃ সারণং পাদদেবনং। অর্চ্চনং বন্দনমিত্যাদি ভক্তিলক্ষণাভিধায়িপ্রসিদ্ধবচনেমত্রে লেখ্যেরু স্মরণানন্তরমেবপাদসেবোক্তেঃ স্মর্ণপরতামন্তরং পাদসেবাপরতৈব লিখিত্তং তথাপি প্রায়ঃ পাদদেবার্চনয়োরেকরপত্বেনৈক্যাভিপ্রায়াদর্চনপরতৈব লিখিতেতি জেয়ং 1 অর্চনে হেত্তত্বেনযোগ্যত্বেন বা যজেশমিত্যাদিবিশেষণত্র য়ংএবার্থেহিশব্দঃ। তএর পুণ্যকর্মাণঃ। তএবচ ভাগবতাঃ শুভানি মত্রোৎসবাদীনি। স্নেহোভক্তিঃ অফুক্তং সংস্থাতি। এবং কর্মনা-পরিচর্যাদিন। মনসাম্মরণাদিন। গিরাচ স্তত্যাদিনা যোনারায়ণপরঃ সচ ভাগবতএবেতি। এবং পরিচর্য্যাবন্দনাদীনাং পূজাঙ্গত্বাৎ তত্তৎপরতাপি ভগবদ্ধক্তলক্ষণ মেবোহং। তচ্চ স্থামেবাত্রেলেখাং লক্ষণানি চ যান্যগ্রহতি।। ৪৮।। এবংএকৈকলক্ষণেন একৈক্স্য ভাগ-বতস্য লক্ষণং লিথিত্বা অধুনা সুক্রাধারণাদিনা সমুটিতশ্রবণাদিনা জ্ঞানবিশেষেণ চ লক্ষণং লিখতি তাপাদীতি। তাপঃ তথ্মুদ্রাধারণং তদাদিপঞ্সংস্কার্যুক্তঃ। পঞ্সংস্কারাশ্চ তত্তৈ-ব্যেক্তাঃ।তাপঃপু গুন্তধানামমন্ত্রোঘাগস্তুপঞ্চমঃ ইতি। অস্যার্থঃ। নাম এক্রিফলাসেত্যাদি। মস্ত্রঃ শ্রী গুরোঃ সকাশাৎ মন্ত্রগ্রহণং। যাগঃ হোমপূর্ব্বক্যথাবিধিদীক্ষাগ্রহণমিত্যর্থঃ। নব ইজ্যাকর্মানি প্জাসয়জিকুত্যানি অবণাদীনি পাছোক্তাৰ্চনাদীনি বা সর্বেষাং তেযাং প্রাঞ্জাই। তানি চ তবৈবোক্তানি। অর্চনং মন্ত্রপঠনং যাগ্রেগেগৌ মহাত্মনঃ। নামসংকীর্ত্তনং দেবা ভক্তিহৈরক্ষনং তথা। তদীয়ারাধনং চর্য্যা নবধা ভিদ্যতে শুভে ইতি। অস্যার্থঃ। চে শুভে পার্বতি। অর্চনং বথাবিধ্যুপচারপেণং। যাগোনিত্যহোমঃ। যোগোমনসিভগবতঃ সংযোজনং ধ্যানাদীত্যর্থঃ। শেবা প্রণামঃ। তদ্য মহাত্মনোভগবতনিট্রুশ্চক্রাদিভিরক্তনং গোপীচন্দ্রাদিনা স্থাক্ষেয়ুলিখনং। চর্য্যা পরিচর্য্যা। অর্থপঞ্চকং চত্ত্বারোধর্মাদয়ঃ পুরুষার্থাঃ পঞ্চমপুরুষার্থশ্চ ভক্তিরিত্যেতান্ পঞ্চা-র্থান্। যদ্ধা পঞ্চতত্ত্বানি অনাক্সাত্মপর্মাত্মপর্মেশ্বত ছক্তান।মিত্যেবং পঞ্চানাং যাথার্থ্যানি বে- की वि उदा मः। वार्मपरे वक्षवधर्मान मुक्तिक दाः वाना श्वतं वः देशकाः। उत्रव विकार क्षा वा विवार स्याः। जनाय महाजानक हेडार्यः, हता। अवः न्यक् गृथक् कनवर्षकाना नकनः सिथिया हेमानीः रेकः मर्दित्रिश्ममृतिरेक्षण्यदम्सनिष्ठाक्षणस्यकाः शनिद्यमनिद्यमाश्रकः शक्कविरम्भः शिक्षाक नक रमिखानभण्डिः। ভवटकाविडाशाः मामानाककषः बाख्रावदः वस्रक्षवनक्षाः क्रिक्किवरेय-কোমিলমঃ আশ্রেমনোতি ডলিসমেৰ দর্শযতি কামাশ্রাভিলাবা বিষয়ভোগা বা কর্মাণি তৎকার-वामि छ शिक्षार्थ छ से विकासिक वामन' इस लानि एक वाश यहा एक एक मान के प्रमान पिछि । मर्काथो जनवरमकमिकंशा उननावाशास्त्रदेशकै। पिविश्टिश्वे शिक्षा माह म्यार्केस्य-পেক্ষাণ তদেকনিকতাৰপাএকান্তিত। চতুৰ্বা চতুৰিঃ প্রকাবেঃ। একোধৰ্মানাদরঃ জন্যক কর্ম-জ্ঞানাদ্যশ্বেদনিরপেক্ষতা অপরোবিদ্বাকুলত্বেপি রভিপরতা পর্শ্চ প্রেটনকপরতেতি। তত্র ধর্ম:-नामः इतिकाविकाः विश्विक भाकारे स्वितिक । यहा विमक्तिश्वामिकान् वर्षमान् मखाका ममाक्-हाका धामा ज्या । ब्रास्टकातः मजू मख्यः श्रासा क्यापुठः खार्थ हेणार्नः। विमक्तानारमान्ति-का। वा नार्का हत्रत वव में पृत्राम् कुत्राम्यानिम्नान् मयुक्तानिका। निकान् विभाव लाषाश्य वाक्राम नमाक् छ। द। शि मछदे छ। व नर्सर छविता छी छ ए विकारियन नर्स धर्मान् मिर्क्डा विटक्त शक्छ श-मञ्जाकालार्थः॥१८॥ मक्याम् निकादेनमिखिकानि कपानकशाम् পরিভাষা मक्क्षा छाला मायकः भावन ज्ञान मरस्कितिरके। करवाक्षर । स्वा महानान ज्ञान नातान भारतक माळा विमूरिकका विद्यान। नम विक्रिक्तकत्वन भागःनार कवाह । मर्व्याकाविदिनाकत्रवाकाः क्षेत्रिविविकाहत्व (बाजीम्ह इथामरमात्रकृत्थकात्रच कर्यकारभाषाः खबामनामिकाभाषाः शि भारभाषाः विवास মীতি। অতঃ মাশুতঃ পাপভয়েন জীপ্তয়েগাদিব্ধেন বা শোকংমাকুর । এবঞ্চানালোক্লিক नारीक्ष ममविक्र दिशासार मञ्चर अबि स्थान मना देना नतावडात्यन नत्रमन का निमा ह यह वर अप्रजातरङ्कार । दर । धर्मकाशक कर्मभग्रमाकरकारभकाकारम्यिक महार कर जन या जो बंध अर्थन क्षेत्र संस्था कार्य कार्य है जा मार्थ के कार्य कार्य के पर में कि पर मार्थ कार्य एक एक विश्व कार्य कार् वाषामि धनमि जाविटिंगशिक्षं नम् । यहा म जना वामकाविकः समिकं नम् जनवेडिं जन् नम् या त्नाक्दावकात्त त्वत्व व कर्माबादर्भ भविषिष्ठिकाः श्रृक्षक्रमाज्यादनम भन्नमिकाः आशा

খেদে চ পরিনিউতাং ।। ৫০।। ' অন নের্বনিরপের্কান্ত। প্রিক্রান্তর্বাধান এ-লোপাথানে। নজোনপেকানচিত্তাং প্রশাসাংগনিক। নির্ক্তারানির্বাদ্ধানিক। নির্বাহিন । তার তে লাধবং নার্বিদ্ধানিক। নির্বাহিন । তার তে লাধবং নার্বিদ্ধানিক। নার্বিদ্ধানিক। কালে তার । কালে তার । যার্বিদ্ধানিক। তি ।। ৫৫।। বিশ্বাকুলাছেশি মনোরতিপরতা। কালে তার । যার্বিদ্ধানিক। খালেল তার । যার্বিদ্ধানিক। খালেল বিদ্ধানিক। বিদ্ধানিক। বিশ্বাকিনিরিনী। নান্যার রমতে চিত্তং ল বৈ ভাগবতোনরং।। ৫৬।। প্রেনিক-পরতা। প্রিক্রাদ্ধানিক। প্রতাচ। প্রিক্রেক্সা পুরানুশাননে। যে বা মরীশে রতগোহাদার্থাজনে মৃ

মপি মতিং জহাতি। অতএব ঐভগবদ্যীতাম্ব। তৈগুণাবিষয়াবেদা নিষ্ত্ৰৈগুণ্যোভবাৰ্জ্জানেতি ॥ ৫৩॥ ध्वर धर्मानामदारे गका श्रिजानकाश निथिय। हेमानी । जनवा जिति के हिका भूषिकामा শেষনৈরপেক্ষাণ যা একান্তিতা ভলকণং লিখভি সম্বইতি। সম্ভএবাস্য ছিল্পন্তি মনোব্য সঞ্চ মুক্তিভিক্তিপ্রস্থাপেকিভং নতাং লক্ষণং মুখামাহ সম্ভইতি। ক্ষমপেক্ষাঃ মন্বাতিরিক্তে কুত্রচি-मक्ष्रिका दि एक मन्द्र। उत द्रब्दुः मरगाव विखः ययाः ए । श्रमास्त्रहेषामि विस्मयन यहे ক্ষা ধ্রা সম্ভবং হেতুহেন্তমন্তাহা। তত্র প্রশাস্তা রাগবেষ।দিরহিতাঃ। সমদর্শিনঃ মিজে শকৌ তৈ কৰ্তিয়ং নির্মাণ মমত্বে। হতীনাং। নিরহকারাং অতিমান প্রাাং। নির্মাণ শীতোফাদিনা-अकाकुक्याः निकातिश्रहाः অকিঞ্চনা: ॥ ৫৪॥ সর্বেণ বাহ্যেন আন্তরেণ চ সঙ্গেন অন্যাসন্ত্যাচ विश्वचरकाविक्ति । इहिडाः। এडफ धकाविनकः मनिडः। जथ जाउः उद्या मक्ष्युमा क्षार्थाः। স্তঃ প্রমপুরুষার্থত্বেন প্রমন্তর্জভত্বামনসাপি বাঞ্জনীয়ঃ কিমৃত বক্তবাং সাক্ষাৎ কার্যাইতার্থঃ। यदा नक् अर्थ देख: मह सम म्ह्याजवणा किश्र जार। उजा है कि: मझः उटाएव द्वा कार्याः। actica व्यवस्था (उयार क्षिप्रेय अवका। जरमकः आत्पाज नवनार्थकार्थः। नकु मक्रकः कथ-ক্ষিত্রাগছেষা অপি সম্ভবেয়ঃ তত্তাই সঙ্গে যে দোষাস্তান্ ইরস্তীতি তথা তে। যথা সর্কাক্রিবর্ক্তি ভানাং তেবাং শক্ষোগৃহাদিসক্বতাময়। কথং প্রাপান্ততাহ সঙ্গেতি। গৃহাদিসক্লোশং দশন মাত্রেটেণৰ তে হরিষ্যস্তীতার্থঃ । यहा সঞ্চএব দোষৰপোষেধাং তে নিঃসঞ্চা যত ইতার্থঃ। তানপি হর হি স্বস্তবৈরাক্ষ তীতি তথা তে। অতত্তেবাং মাহাখ্যে নৈবাক্ষী। সতী ব্যমেব সর্কাং ভাজ্য यात्राजीखार्बः. जनप्रक्रिकिस्त्रं ।। १९॥ तिक्वां वः त्रव जागरम स्मानु अधिमादका जावहेक লিধীয়তে ইতি তৎপরত্যা মনোরমতইতি রতিরুক্তা। ভক্তিঃ প্রবণাধি লক্ষণা। ভাগবভোডমা ইতি বা পাঠঃ। এবমধ্যে পি। ভক্তিরত্ত রতিঃ। অন্যত্ত কেশবব্যতিরিক্তে চিতাং ম রমতে তত্ত ८क्षमाक्रचेदार ॥ ८७ ॥ व्यूमा व्योगकशक्ष्यमा देवकाविछ। उल्लेकशः निश्चि देव दर्शि क्रिकिः। श्रुक्तः महास्टि नमित्र क्षेत्रा सार्वे हिन्द्र । क्षेत्र प्रक्रिया क्षेत्र नामाना क्षेत्र हिनामीर मूर्या-साक्ष्ममारु। मित्र क्षेत्र स्थानकि हुन्दर मोस्नर त्यादेमन व्यवः श्रुक्षमात्वीतिक मानिक्षमानीनिज्ञ-(अकटेनाकामा लक्ष्युर मुन्द्रिः। छवार्श्वतिश्रमाइ। त्मरः विख्वीकि त्मरका वियववार्कावव न श्रामिविषयानि त्यम्। यदा द्व्यात् व वार्षः वीविष्यानि । वार्षिविष्यानि । वार्षिक्षेत्रः विषयानि । वार्षिक्षेत्रः वार्षेत्रः वार বিশা কিথা প্রেমিক পরতা প্রেম্বরাতিমংকু ন প্রতিকৃত্তা থাবদর্থা শ লোকে

। ৫৭।। কিথা প্রেমিক পরতা প্রেম্বরাত্তার কাল্ডির কাল্ডির নির্মানিক বিতালিত ভেদতং। ভতারিক। মথা। একাদশে বরিমানেকরোভরে। নর্মভূতের বং
পশ্যেক্তাবসালাকঃ। ভূতানি ভগবজালানের ভাগবভোল্ডমং। যেটাদেবস্য ভাবং মং সর্মভূতের পশ্যতি। ভাবরত্তি চ তান্যামিরিতার্থা সম্ভাহ সভাং। প্রিকলিল-দেবভূতিসমাদে। মহাননােন ভাবেন ভক্তিং কুর্মির যে দুটাং। মংক্তে ভাতকর্মাণ্ডাক্ত স্বাদ্বর লাজবাং।। ৫৮।। প্রির্মোগেশরোভরে চ। বিস্কৃতি ভদয়ং ন যস্য সাক্ষামিরিবরশাভিহিতোপ্যেঘানাকঃ। প্রগ্রসনায়া প্রাধি পদ্ধান ভবতি ভাগবভারার উক্তঃ।। ৫৯।। মধ্যামাই হরিযোগেশরোভাবের। কমরে ভবতি ভাগবভারার বিশ্বং সুচ। প্রেমিকারির পোপেকা যা করে।তি স মধ্যমা। কনি তা ভাবের। জলারানের হরয়ে পূজাং যা প্রমাতি স মধ্যমা। কনি তা ভাবের। জলায়ানের হরয়ে পূজাং যা প্রমাতে। ন ভত্তেকের চানে মুস ভক্তঃ

वार्थारम्याः म्याभमत्वाभी ममामः। महनिकाशिकण्णृ हान्नाहेण्यः। यदा नम् श्रीणुखावा-क्तिहानीमायूरशकाशका (नक्तिकाहः कथमञ्ज ठळाह। लाक यावामर्थान्ति मेववारियार লোকাঃ প্রারন্ধরশেম স্থান্মব স্বধনাদিনা তদেহপোষণাদিকং কুর্তর্বৈতি ভাবঃ। প্রমাশক্তি-রহিততোক্তা। অনাদক্তৌ চ কথঞিৎ কদাচিৎ কুত্রাপি প্রতিরপি ঘটেত। কিন্তু আদক্তাতা वानिमूला विनभुता ह। अवह मर्क्या मर्क्यम मर्क्क श्रीिकाहिलारमद्वां अर अरलाहमा सम्मनमा भूक्दां इति देशके संचे ग्रार । अवसर शिला । एवं।। स विमार्ड ३मार किस्निर केला समक्रानी मिकः যশ্মিন্ তেন বিশুদ্ধেন ভাবেনেতার্থঃ। ভাবেন প্রেমা। অতএব দূঢাং পরমনিষ্ঠাং প্রাপ্তাং ভক্তিং ভাবণাদিৰপাং বিবিধাং কেবলনামসংকীৰ্তনাত্মিকাং বা যে কুৰ্ব্বন্তি তে সাধৰ ইত্যুত্তরস্লোকে-নাম্বরঃ। অতএব মংক্তে মম কর্মনি নিমিত্তে। দহা মংপ্রাপ্তার্থং। যহা মংপ্রীত্তার্থং। তাজানি কৰ্মানি নিভাটনমিজিকাদীনি সৰ্বাণ্যেব থৈঃ। তথা ভাক্তাঃ শ্বন্ধনা জ্ঞাতয়ো বাহ্মবাশ্চ সম্বন্ধি-নোবৈতে। এতক প্রেমনিষ্ঠতায়াবাস্থলকণং জ্ঞোং। পূর্ব্বমাসজ্জিতাগতাৰ ততক প্রীতাভাব-এবোক্তঃ। অত্ৰ সৰ্ব্যা সমূলত্যাগ্ৰব দশিতঃ। এবং গৃৰ্বসূৰ্বতোহনা ত্ৰৈষ্ঠামায়াতং। ইপং এত-প্রতামারভা প্রেমপরতাপ্রান্তমুত্তরোপ্তরংতথা তওদবাস্তরেচ ত্রৈষ্ঠামূছং। অতএব সর্বতঃ শ্রেষ্ঠ চ-मुद्धान्य यः श्रद्भाषिका मिना वक्षा जानवज्ञा नक्षम्युक् देनानीमुक्तनमञ्ज्ञ क्षेत्रातमाह बिगुकडीडि। इदित्तन माकार सबर यमा अमग्र न विमुक्कि न मूक्छ । कर्वसुक्ट । व्यवस्थानाना-कि विकास (कारित कार्योगः शामनमूहर मश्नातात शर्या नामने विषय यह केर कि मिकि में विम् कि । यह अनुत्रतमन्त्रा (अनुनुष्ठात्रा थुक्त समात्र विषय कि श्रवण यह निवास का गर्या के विम् প্রধান উত্তোভনতি তর্বিভিনিতি। প্রধানশব্দঃ কোশে অবিয়ামিতাক্তঃ। যদা বৈক্ষবাগ্রা-इंडि श्रुक्षिय महस्रा अक्र प्रतामधाकार्यास्म वा। जीवद्यक्तिका जीवद्यासामाख्या व्यक्षामः यमा म देखि बाञ्चनकन् छत्माछ।। ६३।। मन् मस्य प्रविष्ट यः भरमामिजाति वरू-विस्थानि जगवद्धकः धर्म जानवरणाज्य देजामिन। श्रेजानवर्ण मार्गादेनव म्याजिकः उथाणाणि

প্রাক্তঃ না তঃ। আন্ধা পূলনং প্রেনবোধকং ভক্ত ইত্যপি। লক্ষণানি ভাষানাত্রে ভক্তেলেখানি তানপ্রি। বন্দনাধীন বিদ্যন্তে যেষু ভাগবতা ছি তে। একানি লক্ষণানি নিখং গেণ্যুখ্যাধিভেদতঃ। উহ্যানি লক্ষণানে বং বিবেচ্যানি পরাণ্যপি।। ৬০ ।। উদ্যুদ্ধিভা বহবে। জনাঃ। দিব্যাহি মণ্যোবাক্তং ন বর্তের মিতস্ততঃ। ৬১।। অতএবোক্তং মোকধর্মে নার্ম্বীয়ে। জায়মানং হি প্রুষ্থ যংপশ্যেগধ্ সূদ্ধঃ। সাজিকঃ স ত বিজেয়ো ভবেমোকার্থ নিশ্চয় ইতি।। ৬১ ।। এবং সংক্ষিপ্য লিখিভালৈকবানান্ত লক্ষণাৎ। মাহাত্ম্যপি বিজেয়ং লিখ্যতেইনাচ তৎ ক্রিমুখ্যা ৬৩ ।।

অথ ভগবদ্ধ জানাং সাহান্তাং। সৌপর্ণে প্রিশক্রোক্তো। কলো ভাগবভং নাম যস্য পুৎসং প্রজায়তে। জননা পুত্রিনা তেন পিত্নান্ত পুরস্করং।। ৬৪।। কলো ভাগবভং নাম দুর্লভং নৈব লভ্যতে। ব্রহ্মক্রপদে। এর ইং গুরুণা কথিতং মস।। ৬৫।। যস্য ভাগবভং চিহ্নং দৃশ্যতে ত হরিমুনে। গীয়তে চ কলো দেবং ছেয়াতে নাস্তি

লিপিতঃ কিন্তু ভগ্ৰন্থ তকৰ্মাদি প্রতায়া জ্ঞানাদিপরতায়াশ্চ তথা কথাদিপরতায়া এক ভ্রতি-রাশ্চ পৃথক লিখনাই ভারতমাঞ্জীতে ভেঁদোভাসত এব সচ ব্যক্তং ন লিখিতঃ বিবেচনীয়ং ইত্যপেক্ষায়াং লিখতি এতানীতি। ইশ্বং অনেন লিখিতপ্রকারেণ। লিখিডানি এতানি ত্ৰতপরাদীনি মহাভাগৰতপক্ষণান্তানি ভগৰম্ভক্ষক্ষণানি গৌণমুখ্যাদিভেদেন কানি চ গৌণানি ক্রিষ্ঠানি কানি চ মুখ্যানি আদিশন্তাৎ ভত্তৈব কানিচিদ্ধহিরস্থাণ কানিচিচ্চান্তরকাণীভ্যাদি-ভেদেন উহানি বিবিচ্য বোদ্ধব্যানি। তত্র ব্রতকর্মাদিপরতা গৌণলক্ষণং। জ্ঞানাদিপরতা তত্তদ-পেক্ষয়া মুখ্যলকণমপি ভক্তের্বাহিরঙ্গমের। অতএর সাতিগ্য সাক্ষান্তগরন্ত ক্রলকণাসম্পত্তেমত তত্র ভক্তিছেতরিতি নিথিতে । অবণাদীনি চ মুখ্যলক্ষণানান্তরক্ষাণ্যের। একান্থিতা চ পর্মমুখ্যা অত্যস্তান্তরক চিন্ত তত্তিবাররগৌণমুখ্যাদীন্যপ্যহানি। এবং গৌণ মুখ্যাদিভেদেন অপ-রাণি অত লিখিতানি বন্দনাদীনাপি বিবেচ্যানি বিবিচা জেয়ানি তথা তত্তলকণানাং ভারতমা-দিনা ভগবন্তক্তানামপি ভারভমাং বিবেচনীয়মিতি দিক্॥ ৬০॥ নমু কর্মজ্ঞানাদিপরাং সর্বক্ত বছৰো দৃশ্যন্তে লিখিতলকণাশ্চ মহাভাগৰতা এঃভিনো ন দৃশ্যন্তে সত্যং তে নিগ্ঢাএবেতি লিখতি ঈদৃগিতি। তথাচ ছরিভক্তিমধোদয়ে। য়ঢ়লভা ভাগবতা হি লোকে ইতি। দিব্যা অমূল্যান্চিন্তামণ্যাদর:। ইতন্তত:সর্বতেত্যর্থ:। বাজমিতি সন্তোব । অনাধা লোকরকামুপ্-পড়েঃ। किন্তু অলক্ষিত্ত কৃতি কৃতিত বর্ত্ত ইতি ভাবঃ।। ৬১॥ সুএব মোক্ষার্থে মোক্ষ্যা অর্ধঃ কলং ভক্তিস্তশিল্পিতঃ কুতনিশ্বরো ভবতি এবং পরমূর্লভত্তমেব সিদ্ধাং ॥ ৬২ ॥ ছঞ্জিয়ঃ প্রিপতিযোগিত্যাদিরপাৎ তথা স্দাচাররত৷ ইত্যাদিরপাৎ তিতিক্ষবঃ ইত্যাদিরপার্চ মহৎ-मिवार बातमा किन्द्र क तिका किना मिना न कर्मार विकास मादम । उरमार बार কিয়ৰ সংক্ষিপ্তংলিখাতে॥ ৬৩%।

ভাগবতং नाम देवस्वहें सिम । यहां ब्रिक्षणात्मणानि महस्राणि । उंशालि नीकरेश्व कार्मनारमाह्मका ভগवराज्य मिक्षरमव। यथा नाममार्जन जाम्मेमाहाचार किश्यनवाणश्चा-पित्नण्यां। विस्मानशृष्ट्यः ॥ ४८॥ शक्ता ब्रिक्ट्याजिना॥ ५८॥ विद्वर कश्चमूजानितकन्यः। সংশয়ঃ।। ৬৬।। শ্রীমাকণ্ডেয়োক্তৌ। সমীপে ভিষ্ঠতে যস্য হান্তকালেপি বৈহুব:। গচ্ছতে পরমং স্থানং যদ্যপি ব্রহ্মহা ভবেং ॥ ৬१॥ - নারদীয়ে জীবামদেবরুক্রীক্ষদ मद्यारमः। अन्नरहाश्नि महोनान विस्कार्जस्काधिकः । विकृष्ठिविहीरनारश যতিক শ্বপটাধিকঃ ।।৬৮।। কান্দে রেবাখণ্ডে শ্রীব্রক্ষোন্তেটা ইন্দ্রে মহেশ্বরো ব্রহ্মা भवर जन्म छत्त्वि । अभागि छवर छ, व यह। छ स्थारिम किनाव । अभागि भ কউজ্ব ব্রক্ষোনাদয়ঃ স্রাঃ। তদৈবাচ্যুত যাত্ত্যের যদৈব ত্বং পরাশ্ব্রাঃ। ৬৯। স কর্ত্ত: সক্ষধর্যাণাৎ ভক্তোয়ন্তব কেশব । স কর্ত্তা সক্ষপাপানাং যোন ভক্তন্তবা ধর্মোভৰতাধর্মোপি ক্লভোভকৈ স্তৰাচ্যত । পাপং ভৰ্ভি हुं ज ॥ १० ॥ প্রমোপি ভবাভক্তিঃ কৃতোহরে ॥ ৭১॥ নিঃশেষ্ধম্কভী বাপ্যভক্তো নরকে হরে।সদ। ভিষ্ঠতি ভক্তন্তে ব্রহ্ম হাপি বিশুদ্ধাতি ।। ৭২ ।। নিশ্চনা ছয়ি ভক্তির্যা গৈৰ মুক্তিৰ্জনাৰ্দ্দন। মৃক্তা এৰ হি ভক্তান্তে তব বিক্ষো যতোহরে ॥ ৭৩ ॥ তাত্ৰৰ मुकारमानावममञ्जादम । नेन-५ ভাগবভা লোকে লোকরকাবিশার্দাঃ। ব্রজন্তি বিফু নাদিটা হৃদিকেন মহাম্নে। ভগবানের স্ক্ত ভূতানাং কৃপয়া হরিঃ । রক্ষণায় চরবলোঁকোন্ ভক্তকপেশ নারদ । 1 ৭৪ ।৷ ওতৈব জীত্রক্ষনারদসম্বাদে ৷ যন্ত বিফ্পারোনিত'ং দৃত্ভ জিজিতেন্দুরঃ। মগ্ছে ২পি বসন্ যাতি তদিফোঃ পরম। পদং। অশ্ববেদসহসূত্রং সহসুং মঃ করেতি বৈ। নাসে তৎকলমাপুরতি ভছুইজ-র্ঘনবাপাতে। তত্রবাম্তদারোদ্ধারে। শ্রীষ্মতভুটসম্বাদে। স্কাত্র বৈশ্বাং পূজাঃ

ছবিং বিশ্বতি চ নৈঃ তে কলোঁ দেবাজেরাঃ। কলাবিত্যম্য পূর্বেণবাহ্যঃ। প্রজাব গাড়তে গাড়তি। ১৭। দিকাই নিপ্রাদপ্যধিক উত্তয়ঃ। শ্বপচাদপ্যধিক পরমনিক্র ইতার্যঃ। অসম ইত্যের বা প্রাঠঃ। ৬৮।। বদা উন্টোইদি তদৈর শ্বপচোপি ইন্দ্রাদিভরতি। তর পরব্রেদ্ধতি যুক্তপুন্ধহোলেরর্থঃ।। ৬৯॥ ন চ্যুতঃ কর্বঞ্জিরপি নৃত্রফো ভরতি ভরক্তায়ম্মাদিতি তইন্দ্রোধনং হে জ্যুতি তিতি। তথাচোক্তং।ন চার্বেইপি বছক্তা মহত্যাং প্রল্যাপদি, অতেইচ্যুতে।ইবিদ্যোকে স্থান ইত্যাদি এতচাপ্রে লেখামের।।ব০।। তর ভরক্তা ক্রতঃ এর্ম্মার্কার ক্রাচিত্রীর্বালাববিক প্রতিপ্রহাদিনা পাপমপি বর্মান ভরতি ভক্তা স্বর্দ্ধমের ক্রত্ত্বাই। তরাভিত্তিঃ ক্রতঃ ধর্ম্মোযোগাদিরপি পাল্নের ভরতি স্বন্ধান্যই তি ।।ব১।। নরকে সদা তিষ্ঠতি অভক্তা ভর্মনান্তরে নান্তিক্রাপজ্যে। তথাচোক্তমেকাদশক্ষকো। য ত্র্যাং পুক্রবংশাক্ষাদাল্পপ্রত্রমীশ্বরং। ন ভক্ত্যবজানান্ত স্বালাক্ত্রি প্রত্যাধঃ ইতি॥ব২।। দেহান্তে বিমুচাত ইতি কিষ্ক্রব্যং স্থায় ভক্তিনিক্রা তথাকের দেহে মুক্তএবানাবিত্যাশ্বরেন্ত্র নিশ্বনেতি। জনার্ক্র হেজম্বালম্প বংশানাক। বিক্রো ক্রেপরিজ্বির। হরে হেসংসার ছঃখহরেতি সম্বোধনত্রেণ তরভক্তেভিতানাঞ্চ তাদ্পত্বং যুক্তমেনাক্র তাদ্পত্রং

স্বর্গে মত্তো রসাতলে। দেবতানাৎ মনুষ্যাণাং তথৈবোরগরক্ষসাং। যেষাং স্বর্গ माद्भा भागलक भाजानि है। प्रश्रुख नांक मस्म्हा देवस्वीमा महाज्ञमा ।। १६॥ বেবাং পাদরজেনৈব প্রাপাতে জাহ্নবীজলং । নামাদং যামুনং চৈব কিৎ পুনঃ भारतमञ्ज्ञा । १७ ।। त्यवार वाकाकत्वीत्वन विना शकाकत्वन भि । विना छीर्थ-সহস্েন সাতোভবভি মানবং ।। তত্তৈবচাতুমান্যমাহাত্মের । তাবদ্ধুমন্তি সৎসারে পিতরঃ পিওতৎপরাঃ। যাবৎ কুলেভক্তিযুক্তঃ সূতোনৈব প্রজায়তে। সএব জানবা-লোঁকে যোগিনাং প্রথমোহি সং। মহাক্রতুদামাহর্তা হরিভক্তিযুতোহি যং।। १৭।। কাশীখণ্ডে ধ্রুবচরিতে। ন চাবন্তে হি যদ্ধক্তা মহত্যাং প্রলয়াপদি। অভোচ্যুতো->थिल लाक मध्य धर्माशवास्यासान ज्यां कुशवक्क वार उच्च है। किर विषय क्षेत्र किर विषय क्षेत्र किर विषय क्षेत्र किर নিয়ত্তৎ বিষ্ণুভক্তাযে ন তে স্যুঃ পরিতাপিনঃ। তত্রৈবাগ্রে। ব্রাহ্মণঃ ক্ষত্রিয়োবৈশ্যঃ শুদো বা যদিবেতরঃ।বিষ্ণুভক্তিসমাযুক্তো জেয়ঃ সকোত্মোত্মঃ ।৭৮। শশ্ চক্রা-क्षिक्कनुः भित्रमा मुक्षत्रीयतः । शाशीवन्यनिखास्त्रा मृक्टिम्छक्षमः कूकः॥ १०॥ মহাভারতে রাজধর্মে। ঈশ্বরং সর্বভূতানাৎ জগতঃ প্রভবাপায়ৎ। ভক্তা নারামণ্ দেবং দুর্গাণ্যভিতরন্তি তে ।৷ ৮০ ৷৷ বিষ্ণুধর্মোত্তরে ৷ শরনাদুথিভোষস্ত কীর্ত্তয়ে-নাধুসূদনং। কীর্ত্তনাত্তস্য পাপানি নাশমায়ান্ত্যশেষতঃ । ভত্তিব। যস্যাপ্যনতে ক্লগতামধীশে ভক্তিঃ পরা যাদবদেবদেবে। ভদ্মাৎ পর্থ নাপরমন্তি কিঞ্চিৎ পাত্রণ ব্রিলোকে পুরুষপ্রবার।। দারকামাহ স্থ্যে। প্রহলাদ্বলিসম্বাদে। নিত্যৎ যে প্রাত-ৰুখায় বৈষ্ণবানাম্ভ কীৰ্ননং।কুৰ্বস্থিতে ভাগৰতাঃ ক্ষৈতুল্যাঃ কলো বলে। হবিভজি-সুধোদয়ে । স্বদর্শনস্পর্শনপূজনৈঃ কতী তমাৎসি বিষ্ণুপ্রতিমেব বৈষ্কঃ । ধুন্নন্ বসত্যত্র জনস্য যন্ন তৎ স্বার্থং পরং লোকহিতার দীপবং ।। ৮১ !৷ ইতিহাস-সমুক্তয়ে। শ্রীলোমশবাক্যে। যে ভজন্তি জগদেবানিং বাসুদেবং সনাতমং। ন তেভ্যে বিদ্যতে তীর্থমধিকং রাজসভ্তম ৷৷ ৮২ ৷৷ যত্র ভাগবতাঃ সাুনৎ কুর্বন্তি বিমলা-

তেওঃ দৃতা নিশ্চলা উক্তির্যসৈতি অতএব কিতেন্দ্রিয়াযোষাং বৈষ্ণবানাং অতএব মহাত্মনাং স্মরণমাত্রেণ। ৭৫।। পাদস্য রক্তেন রক্তেসব। নার্মদং যামুনঞ্চ কলং প্রাপ্যতে। কিং পুনস্তেষাং
পাদয়োর্জ্জলং তম্মহিমা কিং পুনর্বক্তব্যইত্যর্থঃ। অস্য পানসম্ভবেন রক্তসংসকাশাম্মাহাত্ম্যপেক্ষরা
কিংপুনরিতি দ্যায়োক্তিঃ ॥ ৭৬ ॥ বাক্যমুপদেশবাপং ভগবংকথাকীর্ডনাদিরপেয়া তদেব
জালীয়াঃ প্রঃপুরঃ তেনের ॥ ৭৭ ॥ প্রালয়াপদি অপি ॥ ৭৮ ॥ উলসীমঞ্জরীধরঃ শিরসেতার
উলসীতি বা পাঠঃ। তত্তদা ॥ ৭৯ ॥ যে ভক্তা অভক্তন্। ছর্গাণি ছন্তর বিবিধহঃখানি ॥ ৮০ ॥
বিষ্ণুপ্রতিমেব স্বদর্শনাদিভির্জনিস্য সর্বলোকস্য তমাংশি পাপানি অজ্ঞানানি বা ধুসুন্ নাশ্রন্
আর লোকৈ বৈষ্ণবোষ্দ্রসভি তহু স্থার্থং ম কিন্তু পরং কেবলং লোকছিতার্যের । অরু দৃষ্টান্তঃ
মধা দীপইতি ॥৮১॥ তত্তাহ্ধিকং প্রেষ্ঠং ॥ ৮২॥ অধিকং সর্বতঃ প্রেষ্ঠং বিদ্ধি। কুডঃ

শয়াঃ । তত্তীর্থনিধিকং বিদ্ধি সর্বাপাধিবৈশাধনং ॥ ৮৩ ॥ "যত্র রাগাদিরহিতা ৰাসুদেবপরায়ণাঃ। ততা সমিহিতোবিশৃষ্পতে নাতা সংশয়ঃ। ন গলৈন তথা ভোৱেন পুলৈ শ্চ মনোহরৈঃ। সালিধ্যং কুরুতে দেবোমত্র সন্তি ন বৈক্ষরাঃ। বলি-ভিশ্চোপবাগৈশ্চ নৃত্যগীতাদিভিন্তথা। নিতঃমারাধ্যমানোপি তত্র বিষ্কৃর তৃপ্যতি ।। ७३।। ভन्गात्मर् गराजाना रेबम्बा बीजकमायाः । পুमछि मकनासाँकान् ত हो यं गरिकः उठः ।। ৮৫ ।। गृष्ठः वा ह भव फुक्कः नियामः यं भेठः उथा। वीकार জাতিসামান্যাৎ স যাতি নরকং ধ্রুবং ॥ ৮৬॥ তলাদ্বিষ্ণুপ্রসাদায় বৈক্রান্ श्विरिकायरम् । अनामनुमूर्थाविष्युरख्रेनव नाम नर्भायः ॥ ৮१ ॥ करेळव श्रीनायम-পুঞরীকাক্ষসম্বাদে।যে নৃসংশাদুরাত্মানঃ পাপাচাররতাঃসদ:। তেপি হান্তি পর্ৎ ধাম নারায়ণপরাশ্রয়াঃ।। ৮৮।। লিপ্যক্তে ন চ পাপেন বৈফবা বিষ্ণুতৎপরাঃ। भूनछि नकना (जाँ कोन् नक्नु १ व्हर्जित्वा निष्ठः। ख्याख्य नहरमुषु यम। माष्ट्र क्षितीमृभी। मारमाहर वामुरम्यमा मर्कारझाँकान् ममुक्करत्र । म यां विक्मारमाकाः भूकरवानां व मरभग्रः। किर्भून उक्षा देशां भू अयोः भर्य दिन्द्राः । किछ। मृद्धः में अधिरहा-ৰাপি পূজিতোৰা দিজোভমাঃ। পুনাতি ভগবায়ক্তশ্চঞালোপি যদ্দ্যা।। ৮১।। শ্রীব্যাসবাক্যে। জন্মান্তরসহস্থে বিষ্ণুভক্তোন লিপাতে। যসতসন্দর্শনাদের ভষ্মী-ভরতি পাতকং।। ৯০।। শ্রীভগবদ্বাকে। ন মে প্রিয়শ্চতুর্বেদী মদ্যক্তঃ শ্বপচঃ প্রিয়া তলৈ দেয়া ততোগ্রাহ্যা সচ পূজ্যো যথাহ্যহা ।। ১১ ।। ইতিহাসসমূ-চ্চয়ে ব্ৰহ্মবাক্যে। সভৰ্ছ্কা বা বিখৰা বিষ্ণৃভক্তিৎ করে।তি যা । সমুদ্ধরতি চাত্মানং কুলমেকোত্তর৭ শতং ।। দ্বারকামাছাত্ম্যে। প্রহলাদবলিসম্বাদে । সংকীর্ণযোনয়ঃ পূতা य जङ्गा मधू मृहत्ना (मुक्ट् इन)ाः कूनोना ए य न जङ्गा जनार्मत ॥ जानि-পুরাণে। औक्रकाञ्चू नभग्नामः। বৈশ্বান্ভজ কোন্তেয় মা ভল্বান্তেলবভাঃ। পুনত্তি বৈ ফৰাঃ সংক্ষা সকলেৰ মিদৎ জগং। মড়জোদুল ভোষদ্য সএৰ মম দুৰ্লভঃ।। ১২।।

সর্বেষামের পাপানাং বিশেষেণ বাসনোমূলনেন শে।ধনং।।৮৩॥ বলিভি: উপহারৈ:। যত্রী বৈক্ষরা ন সন্থিতির ন ভ্রমাতি । ৮৪॥ ভক্মাদেতএর লোকান্ পুনস্তি । ভতন্তমা- ক্ষেতোঃ। তদিত্যবায়ন্তইতার্থঃ । যদ্বা তীর্ধবিশেষণত্মানপুংসকত্বং । বৈক্ষরাএব পরমং তীর্ধ- মিত্যর্থঃ।।৮৫॥ কাতিসামান্যাৎ নীচকাতিরয়মিতি। যদ্বা যথান্যঃ শুদ্রপ্তথাহয়মপীত্যাদি- প্রকারেণ সমানজাতিওয়া যোকীক্ষতে ॥৮৬॥ তেন বৈক্ষরপরিভোষণেশৈর ॥৮৭॥ নারায়ণএর পরং পরম আশ্রায়ায়যাং তে। যদ্ধা নায়ায়ণ পরা বৈক্ষরা ন্তদাশ্রমাজিপ সন্তঃ ॥৮৮॥ যদ্ক্রা ম্থাকথিকিপীতার্থঃ। অস্যুক্তঃ ইত্যাদিনাস্বয়ঃ ॥৮৯॥ ম লিপ্যতে প্রমাদাদিনা কথিকিং কৃত্রৈপি পালেঃ। অম্যোমাসি পাতকং সর্বাং ভন্মীভবিত সমূলং বিনশাতি।। ৯০॥ চত্রর্বোদী বেদচত্তক্ষরাভ্যাস্যুক্তোহপি বিপ্রোন মন্ত্রুক্তক্তেই ন মে প্রিয়ঃ। শ্বপচোহপি মন্ত- ভার্মেম্ব প্রিয়ইত্যর্থঃ। তিমে তাদুশশ্রপচারয়র্ব॥ ৯১॥ কুলং কুলানি চ। দুর্লভোরলভঃ ॥৯২॥

ভংপরোদ্রভানাত্তি সভাং সভাং ধনপ্রয় 📝 জয়তাং গুরুবোভজা ভক্তানাং গুরবোবয়ং। সর্বত্রে গুরবো ভক্তা বয়ঞ্চ গুরবোয়থা। অস্মাকং বান্ধবা ভক্তা ভক্তানাং वास्त्वावस्त । अस्ति अत्रावाणका अञ्चानाः अत्रावावसः । मञ्जूषा सत् शक्रि তর গচ্চামি পার্থিব। ভক্তানাননুগচ্ছ ভি মুক্তর: এটিভিঃসহ। যে মেইভক্ত জনাঃ পার্থ ন মে ভক্তাশ্চতে জনাঃ। মন্ত্রকানাঞ্চ বে ভক্তাত্তে মে ভক্ত-ত্যাস্তাঃ। যে কেচিং প্রাণিনোভক্তা নদর্থে তাক্তবান্ধবাঃ। তেখাসহৎপরিক্রীতো-নান ক্রীতো ধনঞ্জা। ৯৩।। এষাং ভক্ষ্যং সুনিণী তং আরতাৎ নিশ্চিতৎ মম। উচ্ছিটমবশিউঞ্চ ভক্তানাং ভোজনদ্বয়ং ॥ ৯৪॥ নাম যুক্তজনাঃ কেচিজ্ঞাভাতর-नमञ्जाः। कूर्विष्ठि त्म यथा श्रीजि९ न ज्या (तम्भात्रभाः।। व्हमात्रभीत्र। मार्क खन् १-প্ৰতি এভগৰদুকো। विक् इंडकू पृष्ठी विषय विव्धाः महा। তদেব পালशियानि मञ्चरनानान् उ९ वरत्र ।। ७६ ।। सम वन कूरन यम। ७२कून शाकनामि वे। मन्नि ভটে শুনিখেঠ কিমশাধ্যৎ বদষ্যে 11 ৯৬ 11 মায়ি ভক্তিপরোয়ন্ত মালাজী নং-कथाशतः। मक्तानी सक्तर गर्वर नत्रका हु छवशकार। मन्थर धर्मार कुकारण मर প্রধানপরোনরঃ। নমনাঃ স্বকুলৎ সর্বাং নয়ভাচ্যুভরাপভাং ॥ ৯१॥ विজ্ञ নিত্যং প্রক্রবিপ্রহঃ। ভগবস্তুক্তরপেণ লোকান্রকামি স্কাদা ॥ ১৮॥ ভবৈবাদিভিমাহাত্মে। শ্ৰীসূভোজৌ। বিপ্ৰাঃশূণুখং মাহাত্মাৎ হরিভক্তিরভাত্মমাং। হরিখ্যানপরাণান্ত কঃ সমর্থ প্রবাধিত্বং।। ১১।। হরিভক্তিপরোঘত তত্ত বুদ্ধাহরিঃ শ্বিরঃ। তত্ত্র দেবাশ্চ সিদ্ধাদ্যা নিভাং ভিষ্ঠতি সভ্যাঃ।। ১০০।। নিমিষ্ণ নিমিষ্কিংবা যত্ৰ ভিষ্ঠতি সন্তনাঃ। ভত্তৈৰ সৰ্বশ্ৰেয়াংসি তৎ ভাৰ্থৎ ভৎ ভপোৰনং। ভত্তৈৰ সৰ্বন শ্রেরাংসি তন্তাথং ডত্তপোধনং।। তত্রৈবাদিতিং প্রতি ভগরদুক্তরে। রাগদেষবিহীন। যে নৎভক্তা নৎপরায়ণাঃ। বদন্তি সততং তে নাং গতাসূয়া অদান্তিকাঃ। পরাপকার-বিমুখা মন্ত্রন্তার্জনতৎপরাঃ। মংকথাপ্রবণাসক্তাবহন্তি সভতং হি মাং।।১০১।। তত্ত্বৈ-

তেষামহংপরিক্রীতকৈঃ পরিক্রীতঃ ॥ ৯০॥ স্থানিণিতং নিশ্চিতমিতি। বাকাভেদাদপৌনক্রন্তাং। অবশিষ্টং প্রস্তাদানীতং পাকপাত্রাদে হিতং॥ ৯৪॥ ভক্তএব কুটুমং তদানিতি। বদা
ভক্তৈঃ কৃত্রা কুটুমীতি তদেব পালারিয়ানীতি যথা স্বকুটুমফ্রতোনাপি পরিপালাতে তথা নিদ্ধ
ভক্তোময়া পরিপালা ইতার্থঃ ॥ ৯৫॥ যদ্য কুলে মক্তাম তদা কুলং। যদ্যেতাত্র যামিনিতি বা
পাঠঃ॥ ৯৬॥ অচ্যুত্তরপক্তাং মংসারপ্যমিতার্থঃ । যদা নচ্যুতং বর্থাইং কদাচিদাপি র নিদ্ধ
স্থাবাস্তি ইং রূপং যেবাং কৈকুঠুবাদিনাং তদ্ভারমিতার্থঃ॥ ৯৭॥ তলবদ্ভকা মন্তকাঃ । মদা
ভর্মকা ঐশ্ব্যাদিগুন্তুকাঃ । যদা পরমগৌরবেন ভগ্রাক্তর্পারাগঃ। ভগ্রক্তোবে মন্তকার্জাত্ত জ্বের্থা ৯৮॥ প্রাধিতংক্রাক্তিংপাপাদে সাভেপি কাঞ্চিদপিবাধাং বিস্থাবাক্ত্র্যুং॥ ৯৯॥
দেবাঃ ইন্সাদ্যাঃ হেসভ্যাঃ যদা দিল্লায়ঃ সৃত্রুমাঃ পরমদাধবঃ যদা স্ত্রুমাঃ প্রনাম্বাদ্যাক্ত ভব্রেব্নিতাং তিন্তবি ॥ ১০০॥ শত্রুমা হ্রিত্তা যত্র ॥ ১০১॥ প্রপিশক্ষা স্ক্রাহ্মাদ্যাক্ত थुकारतारागणाशास्त्र अविकृष्णाखा । यछीनाः विकृष्णकानाः गतिवर्षा भदा-योः । क्रेकिन व्यक्ति शाष्ट्रि भाभिताश्री भवार गण्डिशा ५०२।। एटेंद्रव ঞীভগবত্যেষ**প্রকারপ্রশো**ন্তরে। রি**পবস্ত ২ ন হিৎসন্তি ন বাধ**ন্তে গ্রহান্দত তং ৷ রাক্ষ-नान्छ न शामित्र नत्र विष्णु भतायणः। छिल्पू ए। छ्राम्यमा एमन्पात कर्नाम्बन। শ্রেরাংসি তগ্য সিদ্ধ্যন্তি ভক্তিমন্তোইধিকান্তভঃ। তত্তিবাজ্ঞে। অদ্যাপি চ মুনি-শ্রেঠ। বুক্ষালা। অপি দেবভাং। প্রভাবং ন বিজ্ञানন্তি বিষ্কৃত্ ক্তির তাত্মনাং।। ১০৩।। किल। वर्गार्थकामस्माकाथाः भूक्षार्था दिखांडमाः। इति छक्तिभागित मन्भागः ত্তে ন সংশারঃ।। ১০৪।। ভতৈব লুব্ধকোপাখ্যানস্যাদৌ। যে বিফুনিরভাঃ শান্তা লোকা-নু গ্রহত ংপরাঃ। সর্বভূত দরাযুক্তা বিষ্ণু ৰূপাঃ প্রকীতি ভাঃ।। ১০৫।। বিষ্ণু ভক্তি-বিহীনা যে চাণ্ডালাঃ পরিকীর্ন্তিতাঃ। চাণ্ডালাঅপি বৈ শ্রেষ্ঠা হরিভক্তিপরায়ণাঃ।। তরৈৰ যক্তপুজোপাখ্যানস্যাদৌ ॥ জীসূতবাক্যং। হরিভক্তিরসাম্বাদমুদিতা যে নরোত্তমাং। নমক্ষরোম্যহং তেষাৎ তৎসঙ্গী মুক্তিভাগ্যতঃ । <u>হরিভক্তিপরা যে</u> চ इतिनामभातायभार । मूर्ड वा मूर्डा वा एवंदर निकार नद्यानसः ॥ २०७॥ । অটোভাগ্যমহোভাগ্যং বিফুভক্তিরভাত্মনাং। যসালুক্তিঃ করতৈব যোগিনামপি বাস্দেবপর। মর্ত্যাঃ কৃতাথাঃ নাত্র সংশারঃ । অত্যন্তদুর্ল ভা প্রোক্তা হরিভক্তিঃ কলৌ যুগে । হরিভক্তিরতানাং বৈ পাপবন্ধোন জায়তে ।। ১০৮ !। বেদবাদরতাঃ मर्स्व छथा छीर्थनियविनः । इतिভक्তित्रेष्टः मार्कः कलाः नाईहि याष्ट्रीः।। অভএবোক্তং দেবৈস্তত্তিব ভারতবর্ষপ্রসঙ্গে । ছরিকীর্ত্রশীলোবা ভড়ক্তানাং প্রিয়ে হপিব।। শুশুষুর্বাপি মহতাৎ সবলেনামাভিরত্তনঃ ॥ ১০৯॥ পাছে-

যতীনামপি বিষ্ণুভক্তানাং পরিচর্য্যাপরায়নৈরপিঃ ॥১০২। ন হিংসন্তি হিংসাংকর্ত্তুং নশকু বহীত্যর্থঃ। যদা কুলক্রমাগতবৈরবন্তাহিপি নদ্বিয়ন্তি পরমপ্রতি বিষয়ত্বাং। এবমগ্রেগ্ছাং।। ১০৩।।
হে দিজোক্তমাঃ ॥১০৪॥ বিষ্ণুনিরতা ইত্যাসা লক্ষণানি শাস্তা ইত্যাদিবিশেষণানি ত্রীণি।
তত্রাস্প্রহশন্দেনাপকারঃ দয়াশন্দেন তৎকারণং স্নেহোজ্জেয়ঃ। যদা লোকাম্প্রহং লোক
কর্ত্তক স্ববিষয়কোইমুগ্রহস্তৎ পরাস্তদেকাপেক্ষকাইতার্থঃ। সর্বভ্তেয় দয়ামুক্তাশ্চ। বিষ্ণু রূপা
বিষ্ণু জ্বল্যা ইত্যর্থঃ।।১০৫॥ তেষাং তেজ্যোন্মন্ধরোমি যতঃ তেষাং শঙ্গাপি মুক্তিভাক জ্বীবস্তুক
এবেত্যর্থঃ। অতন্তেষাং বাছাচারো ন কদাপি বিচার্যঃ সর্ব্ধা সংমানএব কার্যঃ ইত্যাদয়েন
নাহ ত্র্ব্তাবেতি।।১০৬॥ যত্মাদন্যস্যাপি তেষাং প্রসাদান্ত্র করন্থা স্বাধীনৈর। যেষামিতি
পাঠেইপি তথিবার্থঃ। যদা স্বালিতেভ্যো মুমুক্ত্রো দান্তং করনিহিতেত্যর্থঃ।।১০৭।। পাগ্রপোন্বর্থাঃ বহা পাপেন কর্পঞ্জিৎ ক্রেনাপি বন্ধঃ॥১০৮॥ যতঃ স্বব্রান্তমঃ সর্বতঃ শ্রেষ্ঠঃ।।১০৯।

জ্রীভগবদুক্ষসমাদে । দর্শনধানসৎস্পর্শৈর্মৎস্ক্র্মবিহঙ্গনাঃ । পুক্তি স্থান্ত পভানি ভথাহমপি পদ্মজা। ১১০।৷ মৃহূর্তেনাপি সংহর্ত্ব শক্তোমদ্যপি দান-বান্। মছক্তানাৎ বিনোদার্থং করোমি বিবিধাং ক্রিয়াং।। ১১১।। ভাত্রেৰ মাহ-মাহালো। দেবভৃতবিকুওলসমাদে। ন যমং যমলোকং ন ন দূতান্ যোরদর্শনান্। পশান্তি বৈক্ষৰা নূনং সত্যং সভ্যং ময়োদিতং ৷ শ্বপাকমিব নেক্ষেত লোকে বিপ্ৰম-বৈক্ষৰং! বৈক্ষবোৰ্শবাহ্যাপি পুনাতি জুবনত্রয়ং। ন শূদা ভগবদ্ধক্রান্তে ও ভাগ-वकः भजाः। मर्खवर्शिष् राज्ञ भृषा यो न जल्लो बनार्माता। विष्णु जल्मः या नामा विषः-বারাজুকশ্চ যে। তেইপি ক্রন্তভুজাং বৈশ্য গতিং যান্তি নিরাকুলাং। তত্ত্রৈব বৈশাখ নাহান্ত্রো পঞ্চপুরুষাণামুক্তো। ভব্যানি ভূতানি জনার্দ্রনস্য পরোপকারায় চরন্তি বিশ্বং ।। তথা । সন্তঃ প্রতিষ্ঠা দীনানাৎ দৈবাদুদ্ভূতপাপ্যনাং । আর্তানামার্ভি ত্রারোদর্শনাদেব সাধ্বঃ ॥১১২॥ তত্তৈবোত্রথণ্ডে শিবপার্বভীসংবাদে। নকর্মবন্ধন জনা বৈষ্ণবানাঞ্চ বিদ্যতে । বিষ্ণোরন্চরত্ব হি মোক্ষমাত্র্মনী-यिक्ष 11 550 11 न मोगुर देव পরেশস্য বন্ধনং পরিকীর্ত্তিতং । সর্ববন্ধন-নিমুক্তা হরিদান: নিরাময়াঃ ॥ ১১৪॥ ব্রহ্মাগুপুরাণে জ্যাফিমীব্রতমাহাত্মে। জীচিত্রগুপ্তোক্তো। দর্শনম্পর্শনালাপসহবাসাদিভিঃ ক্ষণাং। ভক্তাঃ পুনন্তি রুফ্সঃ সাক্ষাৰণি চ পুরুষ্ণ । ভাক্ত সর্বাকুলাচারে। মহাপাতকবানপি। বিষ্ণোর্ভক্তং সমাঞ্জিতা নবোনাইতি যাত্রাৎ 11 বাশিষ্ঠে। যদ্মিন্দেশে মরৌ ভজ্জো নাস্তি সজ্জনপাদপঃ। সফলঃ শীতলচ্ছায়োন তত্ৰ দিবসং বসে২ ৷৷ ১১৫ ৷৷ সদা সন্তো-२ कि गस्त वा वा वा वि स्वित कथा एउ वा मूला क्या कि एवं। ५५७॥ গারুতে । সত্রযাজিদহসুভাঃ দর্ববেদান্তপারগঃ । দর্দবেদান্তবিং কোট্যা বিষ্ণু-ভক্তো বিশিষ্যতে। বৈশ্বানাং সহস্ত্যে একান্ত্যেকে বিশিষ্যতে। একান্তিনস্ত পুরুষা গচ্ছন্তি পরমং পদং ।। ১১৭ ।। ত্রীভগ্রদ্যাতাসু। অপিচেৎ সুদুর চারে।

প্রক্ত হ্রেক্ষন্। যথা মংশ্যাদয়োদর্শনাদিভিঃ ক্রমেণ স্থান্যপত্যানি প্রুতি তথা হমপি দর্শনাদিভিঃ সমুচ্চিতৈরের সর্বৈঃ স্বভ্জান্ পুরুষমীতার্ধঃ ॥ ১১০ ॥ ইথং মম সর্বাং ক্রপলীলাদি বৈভবং ভক্জোৎসবার্ধমেবেত্যাই মুহূর্জেনাপীতি ॥ ১১১ ॥ দৈবাৎ পূর্বাক্তম্পাবশাৎ অকস্মাদ্বা উদ্ভূতং যৎ পাপং তদ্বতাং। পাঠান্তরেপি শএবার্থঃ । অতএব দীনানাং জনানাং সম্ভূএব
প্রতিষ্ঠা আশ্রয়ঃ। যদ্বা সাক্ষাৎ প্রতিষ্ঠা ক্রপা এব। যথা প্রতিমাদীনাং প্রতিষ্ঠিরের শোধনং পুর্জাস্থাদিকঞ্চ সম্পদ্যতে তথা সন্ভূএব তেখাং তদিতার্থঃ॥ ১১২ ॥ কর্মণা বধ্যতে সম্ব্যুতেইতি
কর্মবন্ধানং । অম্বর্ত্বং দাস্যং। হি যতঃ ॥ ১১৩॥ বন্ধানং সংসারবন্ধাপাদকং। নিরামরা
নির্দ্বোবাঃ॥ ১১৪॥ তং ভগবন্তং জানাতীতি তজ্জঃ। দিবসমেকদিনমপি॥ ১১৫॥ তেখাং যাঃ
স্থৈরকথাঃ জন্যোন্যং স্বচ্ছন্দবার্ভান্তা অপি তে তব। তএব বা উপদেশবিশেষণত্বেন পুংস্কৃং উপদেশা ভবিষ্যন্তি॥১১৬॥১১৭॥ মন্তক্তেরবিত্র্ক্যঃ প্রভাবইতি দর্শয়নাই অপীতি। অত্যন্তং ছ্রাচারো-

২পি নরে।যদি পৃথকত্বেন দেবত। তারভিজিমকুর্বান্ মামের পরমেশ্বরং **এটেদেবকী নন্দনং ভঙ্গতি** মন্ত জনে মতিং ক্ষ্যাদিত্যর্থঃ। তহি দাপুং শ্রেষ্ঠএর মন্তব্য:। যতোহসৌ সম্যক্ ব্যবসিতঃ শোভন-মধ্যবসায়ং ক্তবান্ । ১৯৮ । নল ক্থং সমীচীনাধ্যবসায়সাতেণ সাধুম্ভবাঃ ভতাহ কিঞ্ মিতি। ওরাচারোইপি মাং ভজন্ শীঘুং ধর্মচিন্তোধর্ম স্বরূপোবা প্রাপ্রোতি ভবতি। যদা। ভগবদ্জিলক্ষণস্য ধর্মাঝাঝা প্রবর্তকো ভবতি।ততক্ষ শশ্বচ্ছান্তিং শাশ্বতী মুপরমশান্তিং পরমেশ্বর-নিষ্ঠাং নিতরাং গচ্ছতি প্রাপ্তোতি । কুতর্ক কর্কশ্বাদিনোটনবং মন্যেরনিতি শোকব্যাকুলমর্জ্জ নং প্রোংসাহয়তি ৷ হে কৌন্তেয় পটহকোল।হলাদিমহাঘোষপূর্ব্বং বিবদমানানাং সভাঙ্গত্বা বাছ-মুংকিপ্য নিঃশক্ষং প্রতিজানীহি প্রতিজ্ঞাং কুরু কথং মে প্রমেশ্বরুষ যদা মে প্রমেশ্বরভক্ত-স্যাপি ভক্তঃ স্বছুরাচারোহপি ন প্রণশ্যতি অপিস্ত ক্রতার্থণৰ ভবতীতি। ততশ্চতে প্রৌট্রাদ বিজ্যুবিধংশিতকুতকাঃ সভো নিঃসংশয়ং স্বামেব গুরুস্বেনাশ্রয়েরন্ ।। ১১৯॥ আচারভ্রষ্টং মন্তক্তিঃ প্ৰিত্ৰীকরো হীতি কিমত্র চিত্রং। যতোমন্তক্তিয়ঁথাকথঞ্জিৎ মদাশ্রমাপি বা দ্বন্ধলান-পানধিকারিণােইপি সংসারালােচয়তি।তােহ। মাংহীতি। যেপি পাপ্যানয়ঃ স্থাঃ নিকুক্ত জন্মানাে-হত্যজাদয়োভবেষুঃ যেপি বৈশ্যাঃ কেবলং ক্ষ্যাদিনিরতাঃ স্ত্রিয়ঃ পুদাদয়শ্চাধ্যয়নাদিরহিতাঃ তেংপি মাং ব্যপাঞ্জিত্য সংসেব্য। যদ্বা বিধিত্যাগাদিনা বিৰূপত্য়া অপকর্ষেণাপি যথাকথঞ্চিদা প্রায়মাত্রং কৃত্বাপি পরাং গতিং বৈকুঠপ্রাপ্তিলকণাং যান্তি লভতে । হি নিশ্চিতং যদৈবং তদা সজ্জাতর: শংকুলা: শদাচারাশ্চ মন্ত্রকা: পরাং গতিং যান্তাতি কিংবক্তবামিত্যাই কিমিতি। পুণ্যাঃ স্কৃতিনো আক্ষাণাঃ । তথা রাজানকৈতে ঝ্যুর্শ্চ এবছুতাঃ ভক্তাঃ সন্তঃ প্রাং গতিং যান্তীতি কিংপুনৰ্কাক্তৰামিত্যৰ্থঃ ॥ ১২০॥ যুক্ততমঃ সৰ্কাযোগিশ্ৰেষ্ঠইত্যৰ্থঃ ॥ ১২১॥ যেষাং ভবাদৃশাং সংস্মরণাদপি সংশব্দস্তব্যৈর স্বতঃ সম্যকত্বাভিপ্রায়েণ ঈষদর্থে বা। পুংসামিতি অবি-শেষেণাবিলজনানামেবেতার্থঃ। আদিশকেন সম্ভাষণাদীনি। স্থচিরং প্রমোযস্মিন্ তদ্য পুংসাং প্রতিষ্যা শাস্ত্রাভাগেষ্য অয়মের অর্থ: ফলং। নকু নিশ্চিতং অঞ্গুদা স্থেন ঈডিত: স্তুত স্থমেরাহ **मूकुम्मभागात्रविन्म**ः ্যেষাং হৃদয়েম্বন্তি তেষাং গুনাস্কারণমিতি । অঞ্চেত্যস্যাত্রৈবা-অয়:।। ১২২।। হে শান্তৰূপে। কণাচিদ্দি ন নংক্ষ্যন্তি ভোগহীনা ন ভবস্তি।তত্ৰ হেন্ডঃ। জনি-

सिलि हिन्दि । स्विमिक्ट खिन्न बाका मूल्क मथा छन्नः मूक्रमितिक निके १८०। हिन्द्रि । यो अनुना । यो निर्विखन ज्ञा । एवं भिन्न प्राप्त । यो निर्विखन ज्ञा । यथ यो निर्वे । यो या माल्य किम खन्न । यथ यो निर्वे । यो या माल्य किम खन्न । यथ यो निर्वे । यो या माल्य किम खन्म । यथ यो निर्वे । यथ विक्र प्राप्त विकि ज्ञा । यथ विक्र प्राप्त विकि ज्ञा । यो विक्र प्राप्त विकि ज्ञा । यो विक्र प्राप्त विकि ज्ञा । यो विक्र प्राप्त विक्र प्राप्त । यो विक्र प्राप्त विक्र विक्र । यो विक्र प्राप्त विक्र विक्र विक्र । यो विक्र प्राप्त विक्र विक्र विक्र । यो विक्र विक्र

সিংধামেহেতিঃ মদীয়ং কালচক্রং ন লেঢ়িন তান্ এসতি । যদা জিহ্বাগ্রেণাপি ন স্পৃশতি। তত্ত্রব হেপ্তর্যেষামিতি। স্থত্ত্ব স্নেহ্বিষয়ঃ সথেব বিশ্বাসাস্পদং। গ্রুরবেরাপদেটা। স্ক্রি ব হিতকারী। ই**ন্টং দৈবমিব পূজ্যং।** এবং স্কভাবেন যে মাং ভজ্তি তান্মনীয়ং কালচকং নগ্ৰপতীত্যৰ্থঃ। যদা ন নংক্ষান্তি বিচিত্ৰবিষয়।দিভোগেপি নিক্ষাৰ্গাল ভ্ৰশান্তীত্যৰ্থঃ। যদা মমা-দৃশ্যা ন ভৰন্তি। অতঃ কালচক্ৰং কিহ্বরা লেচ্বুং কঞ্চিং স্পুন্ট্যং ন শক্ষেতীত্যর্থঃ।চকারে:ত্র বিকশ্পে তেষামেকভরত্বেটনৰ সর্বাসিদ্ধেঃ। যদ। যেবাং সাক্ষাং প্রিয়াদিরূপোইপাইং ভবামি। তত্র প্রিয়ঃ উপকারাদিন। প্রীতিবিষয়ঃ। আত্মা স্বভাবতএব প্রিয়ঃ। স্থ্রহৃদঃ সর্ব্বক্তাত্মঃ সম্বন্ধি-নশ্চ। ইফাং দৈবং আত্মপ্রদোনাথঃ। এযাং দুর্ঘ টত্তং যথোক্তরমূহ্যং। যথা প্রিয়োভর্তা দণ্ডকারণ্য বাসিমুনীনাং গোপীজনানাঞ্ আত্মা স্বয়মেবাহং। এবমত্র ভক্তমাহাত্ম্যবর্ণনরসেন ক্রমোনংপে-ক্ষিতঃ ॥ ১২৩॥ তত্মভূতামবিশেষেণ সর্বেষামের জীবানাং। অপ্যর্থে বাশকঃ ভরজ্ঞানানাং कथाशाः व्यवरानाति । यदा विकल्प्यव । उड्म पानप्रव्यासन मह देवस्व कथा व्यवन्त्रा সাম্যতোমাহাত্মাবিশেষউক্তো ভবত। স্বমহিমনি নিজানন্দ্ৰূপে। যদ্ধা স্থঃ অসাধারণঃ অন্যানন্দান্যপেক্ষয়া বিশিক্টোমহিম। যদ্য তিমন্নিপি মাভূং ন ভবেদিতার্থঃ । অন্তক্ষ্য অসিনা কালেন লুলিতাৎ খণ্ডিতাৎ বিমানাৎ প্রত্যাং সা নান্তীতি কিমু বক্তব্যং।। ২৪।। অধর্মনিষ্ঠঃ পুমান্ বহুভির্জাভিবিরিঞ্তাং প্রাথেতি। ততোহপি পুণাতিশয়েন মামেতি। ভাগৰতস্ত্র অথ দেহাত্তে ভাগৰতত্বানন্তরং বা অব্যাক্তবং প্রপঞ্চাতীতং বৈক্ষবং পদমেতি। যথা রুদ্রেভ্রা অধিকারিকবদ্ধমানাঃ বিবুধাশ্চ দেবা আধিকারিকাঃ। কলাভ্যয়ে অধিকারাস্তে লিঙ্গভঙ্গে সভ্যেষ্যন্তি। যদ্ধা কলাভায়ে প্রকৃত্যভিক্রমে॥ ১২৫।। হে বহুগণ এতৎ শ্রীবাস্থ্যদেব-ৰূপং যস্ত তপদা পুরুষো ন যাতি। ইজায়া বৈদিককর্মণা। নির্বপণাৎ অস্নাদিসংবিভাগেন। গৃহাদ্য তলিমিত্তপরোপকারেণ। ছন্দদা বেদাভ্যাদেন জ্লান্যাদিভিক্পাদিকৈরপি। অভিষেক-শব্দেন মহংপাদরক্সন: স্বতীর্থময়ত্বং স্চাতে॥ ১২৬॥ পার্থিবৈরক্ষোভিঃ প্রমাণুভিঃ সমাঃ সংখ্যাতা অনন্তাইত্যৰ্গঃ জ্বস্তুবোজীবাঃ তেষাং মধ্যে যেকেচন কতিপয়ে শ্ৰেয়োধৰ্মমীহন্তে কুর্বস্তি॥ ১২৭॥ মুচ্যেত গৃহাদি সঙ্গান্ম চ্যুতে। শিদ্ধাতি তত্ত্বং জ্ঞানাতি। যদ্ধা মুচ্যেত শংসার। স্কুক্তোভবেৎ। তশিন্দি কশ্চিদেৰ দিক্ষ্যতি স্বস্থৰপান ভবৰপ্ৰ।নন্দাংশং প্ৰাপ্যোতি।এবং মুক্তে: কেচনৈব দিজোতা। মৃমুক্লাৎ সহসেষ কলিকাচেত সিদ্ধাতি।। ১২৮।। মুক্তানান্দিপি বিদ্ধানাং নারায়ণপরায়ণঃ। সৃদ্র্লভঃ প্রশান্তাত্মা কোটিমুপি মহামুনে।।১২৯।। শিবস্য। নারায়ণপরাঃ সর্বেন কুতল্চন বিভ্যাত। স্বর্গাপবর্গনরকেষ্পি ভল্যার্থ-দিশিনঃ।১৩০। সপ্তমে প্রপ্রক্রাদ্দ্য। নৈষাৎ মতিস্তাবদুরুক্তমান্তিং স্প্শত্যনর্থাপন্তমান্ত্রন্থাপন্তান্ত্রাক্রিয়া মহায়সাং পাদরক্রোভিষেকং নিদ্ধিকানাং ন বৃণীত যাবং।১৩১।কিঞা বিপ্রাদ্বিত্তণযুতাদরবিদ্দনাভ পাদারবিদ্বিত্বাৎ শপচম্বিতং । মন্যেতদ্

দকাশাৎ নিদ্ধেবিশেষঃ নিদ্ধঃ। যদা মুচ্যেত জীবন্মুক্তোভবেৎ। নিদ্ধ্যতি ভগৰতি প্রমানন্দ-সমুদ্রে লীয়তে। এবং **জীবস্মুক্তত্বে স্বৰূপাস্থভবৰূপানন্দাংশমাত্রাস্থভবা**ৎ সিদ্ধত্বেচানন্দবিশে-যার ভবেন পূর্বতোহ্দ্য শ্রৈষ্ঠাং দির্মেব। ভগবল্লয়ত্ত্বেহ্পি পৃথক্সিতাভিপ্রায়েণান্তর শ্লোকে সিদ্ধানামিতি বছৰ্থাএতচ ঞ্ৰিভাগৰতামৃতোত্তর্ধণ্ডে সম্যক্ নিৰ্পিতমেৰান্তি৷১২৮৷ মুক্তানামপি শিক্ষানামপি কোটিম্বপি মধ্যে সুদুর্লু ভিঃ পরমত্তপুণপ্যঃ। এবং পরমদৌর্লভ্যেনাস্যাত্যন্ত শ্রেষ্ঠত-মত্তমুক্তং। প্রশান্তাত্মেতি স্বরূপমাত্রনির্দেশগতিস্যেব মুখ্যতমত্ত্বং সংপূর্ণপ্রশান্তত্ত্বাং। হে মহামুনে ইতি এতচ্চ স্বমেৰ সম্যগ্ৰানাসি নান্যঃ। যদ্ব। স্বমেৰৈকঃ এতাদৃশঃ নান্যইতি ভাৰঃ॥ ১২৯ ।। কুতশ্চন কন্মাচ্চিদপি দেবাদেঃ শাপাদেব্বা দকাশান্ন ভয়ং প্রাপ্রুবস্থি। যতঃ স্বর্গাদিষপি ভল্যো-হর্যঃ প্রয়োজনমিতি দ্রুকীং শীলং ঘেষাং তে তথা নচান্যৎ কিমপি বাঞ্জ্যপীতি ভাবঃ॥ ১৩०॥ নি কিঞ্চনানাং নিরস্তবিষয়াভিমানানাং ভগবৎপ্রীত্যা ত্যক্তাশেষপরিগ্রহাণাং বা অতএব মহন্ত-মানাং পাদরজোভিষেকং যাবন্নবৃণীতপ্রীত্যা ন ভবেৎ তাবৎ শ্রুতিবাক্যাদিনা জ্ঞাতমপিএষাং তুরাশরানাং মতিঃ উরুক্রমশ্য ভগবতঃ শ্রীকৃঞ্স্যাংঘুং ন স্পৃশতি ন প্রাপ্নোত। অসম্ভাবনা-দিভিক্সিহন্যতইতার্থঃ। অনর্থদা সংসারস্যাপগমো্যদ্যা অদ্ভিস্পর্শিন্যা মতের্থঃ প্রয়োজনং মছদসুগ্রহাভাবাল তত্ত্বনিশ্রয় নাপি মোক্ষন্তেধামিত্যর্থঃ। যদা অনর্থণ্য অর্থ হয়া ভাসমান্স্য বিচারেণানর্থ রূপস্য। যদ্বা বেদান্তাদৌ ন বিদ্যতে ২র্থে। যক্ষা মোক্ষ স্যাপগমোষ্ম্য পাদ-র্জোভিষেকস্যার্থঃ। ভগবদ্ধক্রক্রপাবিশেষমন্তরেণন মোক্ষেচ্ছানিবৃত্তিঃ নচ তাং বিনা মতের্ভগব-চ্চবণারবিন্দস্পর্শনমপীতি॥১৩১॥ মন্যে ধনাভিজনৰপতপঃ শ্রুতৌঙ্গস্তেজঃ প্রভাববলপৌরুষ-বুজিযোগাঃ। ইতি পুর্বোক্তা যে ধনাদয়ঃ দ্বিট্ দাদশ গুণাত্তৈ যু ক্তাদিপ্রাদপি স্থপচং বরিষ্ঠং মন্যে। যদ্ধা উদ্যমপর্কাণি সনংস্কৃত্তাক্তা দ্বাদশ ধর্মাদয়্যে। গুণাঃ দ্রক্তব্যাঃ। তথাছি। ধর্মশ্চ সভাঞ্জ দমন্তপশ্চ অমাৎ দ্যাং ভীস্তিতিকাইন হয়।। যজ্ঞ দানঞ্চ ধৃতিঃ প্রতঞ্জ ব্রতানি বৈ দাদশ ব্রাহ্মণদ্যেতি । কথমূতাই বিপ্রাৎ অরবিন্দনাভদ্য পাদারবিন্দতো বিমুখাং। কথমূত श्वनिष्ठः उन्त्रिन् अत्विक्तनाज्ञेनात्रितिक अनिष्ठा मन शान्त्यायम एः । क्रेहिणः कर्मा। विविष्ठेत्व ছেন্তঃ সংএবজুতঃ খপদঃ সর্বাং কুলং পুনাতি । ভুরির্মানোগর্বোযাস্য সত্ত বিপ্র আত্মানমপি ন পুনাতি কুতঃ কুলং। যতোভজিহীনদৈয়তে গুণা গৰ্বাব্যেব ভবন্তি অতোহীনইভিভাবঃ। यहा তাদৃশাৎ বিপ্রাৎ শ্বপচমেবাইং মন্যে আদিয়ে৷ভগবদ্বিমুখত্বেন বিপ্রাস্থপচতোপ্যধনত্বং৷ শ্বপ-চস্য চ জাত্যাদিস্থভাবেন ভগবজ্জানাদ্যসম্ভবাৎ কেবলং ভগবত্যাভিমুধ্যাভাবোনত বৈমুখ্যং অতস্ত্রস্মাদপ্যয়মের সাধঃ। অতথৰ তং মন্যেইতি। তদ্ধিতমনোৰ্চনেহিতার্থপ্রাণং সন্তং

পিতিননাবচনেহিভার্থপ্রাণং পুনাতি স্বকুলং নতু ভূরিসানঃ।। ১০২ ।। অন্তরে জীগজেন্দুরা। একান্তিনো যস্য ন কিঞ্চনার্থং বাঞ্জি যে বৈ ভগবৎপ্রপন্নাঃ। অত্য জুকং যদ্ধরিতং সুমঙ্গলং গায়ন্ত আনন্দসমুদ্রমনাঃ।। ১০০ ।। নবমে শীভগবভঃ। অহং ভক্তপরাধীনোহাস্থতন্ত ইব দিল । সাধুভিপ্র স্কল্যো ভক্তৈভ্রুল-প্রিয়ঃ ।। ১০৪ ।। নাহ্মান্থানমাশাসে মড়ুক্তিঃ সাধুভি র্মিনা । শ্রিয়ং চাত্যান্তিনীং রেক্ষন্ যেষাং গভিরহং পরা ।। ১০৫ ।। যে দারাগারপুশ্রাপ্তান্ প্রণান্বিন্তিনিং পরং। হিন্তা নাং শরণং যাতাঃ কথং তাংস্থান্তুমুখ্সহে ।। ১০৬ ।। মন্ত্রিয়ং পরং। হিন্তা নাং শরণং যাতাঃ কথং তাংস্থান্তুমুখ্সহে ।। ১০৬ ।। মনি নির্কেক্ষদরাঃ সাধবং সমদনিনঃ। বশে কুর্কান্তি সাং ভক্ত্যা সংক্রিয়ঃ সংস্পৃতিং যথা ।। ১০৭ ।। সাধবোক্ষমং মহ্যং সাধুনাং ক্রমং ত্রহং । মদন্যক্র নজানন্তি নাহং ভেভ্যো মনাগ্রি।। ১০৮ ।। শ্রিদুর্কাসাঃ। দুকরঃ কোনু সাধূন্যং দুকুরেরোবা মহান্থানাং । যৈঃ সংগৃহীতো ভগবানু সান্থতাম্যভোহরিঃ।। ১০৯ ।। যামানান্তিনাতে পুমানু ভবতি নির্মালঃ। ত্র্যা তথিপদঃ কিয়া দাসানামবিন্যাতে ।। ১৪০ ।। দশমে দেবস্থতো। তথান তে মাধব তাবকাঃ কৃচিড্রাল্যি সার্গান্তি সার্গান্তি।

বরিচং সর্বোৎকুটং মন্যে। তত্র হেন্ডঃ পুনাতীতি । যদ।। আদিতোবিপ্রদ্য সন্ধ্যোপাসনাদৌ স্ত্এব নিভাং ভগবদাভিৰুখ্যমস্তোব। পশ্চাচাধ্যয়নাদিন। তাদৃশদাদশগুণাঃ সম্পনাঃ। অভো-হপুনা ভিমুখ্যবিশেষস্তাবদূরেইস্ত অথচ অহমের সতাং পরং একা নারায়ণঃ মস্তোহ্নাচ্চ চ্উত্রাত স্বাং মন্মায়াকণ্পিতং ম্যাধ্যস্তমেবেত্যাদিমিথ্যাতিমানেন ভগবৎপদার্বিন্দাৎ বৈমুখ্যং গতা দিতি অন্যং সমানং।।১৩২।। ভগৰৎপ্রপন্না যে একান্তিনঃ। ভগৰদ্ধকেনু মধ্যে যে একান্তভক্তা-ইত্যর্পঃ । যদ্বা ভগবদ্ধিত্র **দা**দিভিমু কৈর্বাপ্রপদা আশ্রিতা অতএব তে তস্য ভগবতশ্চরিত° গায়নুঃ সম্ভত্তএব আনন্দরস্মুদ্রমগ্লাঃ সন্তঃ যস্য অর্থ্ং ঐশ্বর্যাদিকং। যদ্বা যস্যেতি যক্ষাং কর্র্য-নার্থং মোকাদিকং প্রীবৈকুওলোকমপি ন বাঞ্ছি। কুতঃ অ্মঙ্গলং পরমন্ত্রথাত্মকং অত্যদ্ভ ওণ অনিকাচনীয়মাহাল্যমিতি। এবমেকান্তিনাং মাহাল্যং লক্ষণঞ্চোক্তং ॥ ১৩৩॥ সাধুভিঃ ভক্তৈঃ নত্ত কর্মাদিপরেঃ এবমগ্রেপ্যহং॥ ১৩৪॥ নাশাদে ন স্পৃহ্য়ামি নাপেকা বা। আত্যন্তিকীং মদেকনিষ্ঠাং ॥ ১৩৫॥ দারাদীন্বিত্তঞ্ ধনংনৃণামিতি ভগবছক্তেঃ। ইমং পরঞ্জ লোকং ছিত্রা উপেক্ষা ॥১৩৬॥ ময়ি নির্বেক্ষ্র বাদের সমদর্শিনঃ। স্বর্গনরকাদি বু জল্যদৃষ্ট্যঃ। তত্ত্রুমের ঞ্রিক্ডেণ । স্বর্গাপবর্গনরকেম্বপি জল্যার্থদর্শিনইতি ॥১৩৭॥ মম হৃদয়ং অত্যরঞ্জং সারবস্তু বা । অহঞ্চ তেভাঃইন্যং মনাগপি ন জামে। এবংতৈমমশ্লেয়া-ক্রমণাৎ তেষামধীনএবাহং ন স্বতন্ত্রইতিভাবঃ ॥১৩৮॥ সাত্রতাং সাত্বতামাং ঋষভঃ জ্ঞীদৈৰকীনন্দনঃ ভগৰান্ প্ৰমন্বতন্ত্ৰোহপি হবি ৰ্যথাক্ৰপ্থিৎ স্মৃতোহপি সংসাৱছঃখাপহাৰকঃ বৈঃ সংগৃহীতঃ ভক্ত্যা বশীক্কতেষোং সাধুনাং অতএব মহাত্মনাং কোহর্থোত্তক্তরঃ ছস্তাজোবা। অতোত্রক্ষাদিছক্ষরমৎপ্রাণরক্ষাদিকং মন্মহাপরাধক্ষমাদিকঞ যুক্তমেবেতি ভাবঃ ॥ ১৩৯॥ নিশ্মলঃ অবিদ্যাসম্বন্ধমলরহিতঃ মুক্তইত্যর্থঃ। দাদানাং দেবাপরাণাং সর্বথা ভক্তিপরাণায়। ১৪০। মাধব হেঞ্জীমধুবংশসমুদ্রচক্ত। ত্বর্থে তথা শব্দঃ। যেহন্যেইরবিন্দাক্ষ বিমুক্তমালিনঃ। ইত্যাদিনো জ্বি বন্ধনৌজ্দাগান্বয়াভিগুপ্ত। বিচরন্তি নির্জ্যাবিনারকানীকপ মূর্দ্ধনু প্রভো 1785। জ্বীবাদরারণে । নায়ং সুথাপোভগবান্ দেহিনাং গোপিকাস্তঃ। জানিনাং চাল্ধ-ভূতানাং যথা ভক্তিমতামিহ । 188 ।। জ্বীভগবহঃ । সাধূনাং সম্মিতানাং সূত্রাং মংক্রতাল্মনাং । দর্শনারোভবেদ্বল্ধঃ পুংসোহস্ফোঃ সবিভর্ষণা ।। ১৪০ ।। কিল । নহাল্যানি তীর্থানি ন দেবাম্চিল্লাময়াঃ। তে পুনস্কুক্রকালেন দর্শনাদেব সংধবঃ ।। ১৪১ ।। জিপচ। নাগ্রিন্সূর্যোন্চ চন্দুতারকাঃ ন ভূর্জ্বং থাং শ্বসনোথ

জেভ্যোহ ভজেভ্যো ভিন্নক্রমাপেক্ষয়া ভাবকান্ত্রদীয়াস্থ কৃচিৎ কদাচিদপি মার্গাৎ সাধনাদিপি ন ভশান্তিন স্থান্তি কিনুত প্রাপ্তপরনপদাৎ । यদা। মৃগাতে ইতি মার্গ জীমচরণারবিনদ ণুগলং তথা।দপি ন ভ্রশান্তি কিমুত ভক্তিমার্গাং। কুতঃ বুরি বদ্ধং দৃঢ়তয়া যোজিতং সৌজদং প্রেম থৈন্তে। অত্র বদ্ধশব্দেনেদং স্কাতে । যথাদুচ্রত্মা মহাৰুক্ষে দুচ্হ বদ্ধা নৌর্মদীবেগাদিনা স্বস্থা-নাট্যাবিয়িত্তং ন শক্যেত তথা প্রেমবিশেষেণে ভগবচ্চরণাক্তনিবদ্ধাত্মনামাপ্রস্থপি কথঞিৎ নিজ্পাধ্যসাধ্যতঃ পালনং ন স্যাদিতি । তথেতাস্য বদ্ধসৌহ্লদা ইত্যনেন বা সম্বন্ধঃ। তেনানি-ৰ্ম্বচনীয়প্ৰকারেণেতার্থঃ। অতএব বিনায়কা বিশ্বহেতবস্তেষামনীকানি স্তোমাঃ সৈন্যানি বা তানি পান্তি যে তুমুখ্যাস্থেদাং মূর্দ্ধান্থ বিচরন্তি বিল্লান্ জয়ন্তীতার্থঃ। যতঃ স্বয়া অভিতোগুপ্তা। রুকিতাঃ গ্রতথব নির্ভরাঃ কুতশ্চিদ্বপি শক্ষারহিতাঃ সন্তঃ। অত্রচ মূর্জ্বস্থ বিচরন্তীতানেনৈবং স্চাতে। অত্যজ্পদারোহণার্থং যথা নিঃশ্রেণিকাপেক্যতে তথা ভাগবতানাং ভগবৎপদারোহণার্থং বিল্লাএন নিঃশ্রেণিকাভবেরু:। বিশ্বেষ্ জাতেষ্ ভগবৎসারণাদভিনিবেশবিশেঘাৎপত্তে:। বিল্ল-জ্ঞাবে চ ভগবদ্বাংশলাবিশেয়ামুসস্থানাদিনা ভক্তিবিশেষসম্পত্তেশ্চেতি দিক্। তাৰকা মাগাল-ভ্রশ্যন্তি ত্বয়িবদ্ধসে;হৃদাস্ত ত্বয়াভিগুগু। মূর্দ্ধহ্ব বিচরস্থীতি বাক্যদ্বং । অস্মাক্যুপরি বিচ-রন্তি 🕒 বিনায়ক।নীপ গরুড়ভোমপতে । অন্যং সমানং ॥ ১৪১॥ - গে।পিকাস্তভোইয়ং ভগবান্ জীলামোদরঃ 'দেহিনাং দেহাভিমানিনাং জ্ঞানিনাঞ্নিবৃত্তাভিমানিনাং অতএব আয়ভূতানাং স্কুপং প্রাঞ্চানামালার মাণামিত্যুর্গঃ অভএব ন স্থাপঃ ন স্থাভঃ। যদ। ভক্তিমতাং বিশে-ষণং আত্মভূতানামিতি। আত্মস্বৰূপাণাং ভগৰতঃ প্রম্প্রিয়তমানামিতার্থঃ।অতএৰ সং্যাপঃ।১৪২। সাধূনাং স্বধর্ঘবর্ত্তিনাং সমচিস্তানাং আত্মবিদাং স্কৃত্তরাং মহকুতালনাং । এযাং কুপাতিরেকাৎ স্থতরামিত্যুক্তং। যদ্বা সাধূনামের বিশেষণদ্বয়ং সম্চিক্তানামিতি। মংক্কত অনামিতি চ । দশনা দিপি প্রংসঃ সর্বস্থাব পুংমাত্রস্য সংসার ক্ষাঃ স্বত্রাং ন ভবেৎ স্থামের সমূলং বিনশাতীত্যগৃঃ তত্ত प्रकाशक भावस्क भावामरक्तार्यथा उत्भावरकान स्वतिम्हि ॥ ১४० ॥ स्वीर्थर स्त्राप्तर त्राप्तर स्व ২পি সাধবএৰ শ্ৰেষ্ঠ। ইত্যাহ নহীতি**। অন্ম**রানি তীর্থানি মৃণাুয়াঃ শিলাময়াশ্চ দেবা নভবন্থীতি ন অপিত্ত ভবস্থোৰ। তথ:পি সাধূনাং ভেষাং চ মহদন্তর্মিত্যাছ তে পুনস্তাতি। অতঃ সাধ্বএব মহাতীর্গানি প্রমদেবতাক্ষ। অতএব নিতাং সেব্যাইতি ভাবঃ। তহুক্তং তত্তৈব। ভবদ্বিধা নহা-ভাগাঃ সংনিষেশ্যা অহত্তমাঃ। শ্রেয়ক্ষামৈ হু তিনিত্যং দেবাঃ স্বার্থা ন সাধবং ইতি ॥ ১৪৪॥ বাশ্বানসয়োরপ্রসাসনাবিষয়স্থং ৷ যোবাচং ত্রন্ধেত্যুপান্তে যোমনোত্রন্ধেত্যুপান্তে ইতি ভ্রুতে:। অঘং পাণং তমুলমজ্ঞানয়া ন হরস্তি। কুতঃ ভেদকুতঃ ভেদকর্তারঃ । যদা ভগবতা সহ বিচ্ছেদ-ফারকা:। পৃথকু পূথক্ তত্ত্পাসনেন ভগবৎপরতাহান্যাপাদনাং। বিপশ্চিত: ভগবছক্তান্ত

বাজ্মনঃ । উপাদিতাতেদকতোহরন্তাঘৎ বিপশ্চিতোম্বস্ভি মুহূর্তসেবয়া ।। ১৪৫ ।।
যদ্যাতাবুদ্ধিঃ কুণপে ত্রিধান্ত:ক স্বধীঃ কলতাদিষু ভৌমইজ্যধীঃ। যন্তীর্থ বুদ্ধিঃ সলিলে ন কর্তিচিজ্জনেম্বৃভিজ্জেষু সত্রব গোখরঃ ।। ১৪৬ ।। শুন্তিস্তভৌ । তব পরি যে
চরন্ত্যখিলসত্বনিকেভতয়া ভউত পদাক্রমন্তাবিগণ্যাশিরোনিশ্ব ভেঃ। পরিবয়সে
পশূনিব গিরা বিবুধানপি তাং স্কৃষি কৃতসৌহৃদ্র খলু পুনন্তি ন যে বিমুখাঃ ।১৪৭।

তদেকপরতাপাদকাঃ। যদা বিপশ্চিতঃ অদৈতদ্শিনাপি ভেদক্তঃ সত্যপি ভেদাপগমে নীধ তবাহং ন মামকীনস্ত্রমিত্যাদ্মক্তভেদাভেদন্যায়েন জীবতত্ত্বং ভগবপ্তত্ত্বদ্য ভেদকর্তারঃ বৈশ্ব-নিদ্ধান্তভত্ত্বাভিজ্ঞাঃ পরমভাগবতা যে ইত্যর্থঃ। তে স্মূর্ত্তমাত্রশেবইয়েশবং মন্ত্রীতি॥১৪৫॥ অতঃ দাধৰ এৰাত্মাদিৰপাঃ । তাংস্ত বিহায়ানাত্ৰাত্মাদিবুদ্ধাা সজ্জন্নতিমন্দএৰেত্যাহ যদ্যেতি। ত্রোধাতবোবাতপিওলোমাণঃ প্রকৃতয়োযস্য ত্মিন্কুণপে মৃতভাল্য শ্রীরে আলুব্দিঃ অহ-মিতি বুদ্ধিঃ কলতাদিষু স্বধীঃ স্বীয়াইতি বুদ্ধিঃ ভৌনে ভূবিকারে মৃণায়প্রতিমাদৌ ইজ্যধীঃ দেবতাবুদ্ধিঃ দলিলএব যথ যদ্যতীর্থবুদ্ধিঃ। অভিজ্ঞেষু তত্ত্ববিৎস্থ কদাচিদপি আক্মাদিবৃদ্ধয়ো যস্য ন সন্তি সূত্র গোল্পি খরঃ। দারুণঃ অত্যবিবেকীত্যর্থঃ। যদ্ধা গ্রাং ভূণাদিভারবাহকঃ খারো গর্দ্ধভঃ। এবং সাধ্বএবাত্মাদিরূপাঃ ইতি তেষাং সাহাত্ম্যোক্তিঃ।। ১৪৬।। তবেতি কর্মাণি যন্ত্রী স্থাং যে পরিচরস্থি। ছন্দসি ব্যবহিতাশেচতি যক্ষ্যুদ্দন ব্যবধানমদোষঃ। কেন রূপেণ অগিল সত্ত্বিকেতত্ত্বা অথিলানি সত্ত্বানি নিকেতোয়সা স্বত্থা ত্যা ভাবস্থা ত্যা স্কাড়ত'বাস্থ্যে ভার্থঃ। ততএব অবিগণয় ভিরস্কৃতা তএবনিখ তেম্তোঃ শিরঃ মূর্দ্ধানং পদা পদেনাক্রাসন্তি। মৃত্যোমূর্কি, পদং দধতি তং তরন্তি মুচ্যস্থ ইতার্থঃ। যে পুনর্বিমুখা অভক্তাস্তান্ গিরা বেদলক-ণয়া বাচা পশূনিব বিবুধান্ বিছ্যোপি পরিবয়দে বধানি । কুতঃ ভ্রয়ি রু দ্রৌহ্নদাঃ। রু চণ দৌহৃদং প্রেম থৈতে খলু নিশ্চিতং পুনন্তি পবিত্রয়ন্তি আত্মানমন্যানপীতি শেষঃ। নেতরে। তথাচ প্রতিঃ তস্য বাক্ তন্ত্রিনামানি দামানি তদদ্যেদং বাচা তন্ত্র্যা নামভিদ্যমভিঃ সর্ব্বং দিত-মিতি।যদ্বা। যে২খিলসত্মনিকেততয়া পরিচরন্তি তে মৃত্যোঃ শিরঃ পদাক্রামন্তি। অবিবেকিনস্ত বধুন্তি বদ্ধসৌক্ষণাস্ত জগদেব মোচয়ন্তীতার্থঃ। অন্যৎসমানং! যদ্বা অবিগণষ্য স্বধর্মাদিকমন্য-দ্তা উত অপি।অধিলদত্ব নিকেতভয়। কিমুত প্রেমাথে পরিচরতি ভল্পতে যদা অধিলদত্বেষু অন্ত র্যামিভগবদ্ ট্যা তয়া পরিচর্যামাত্র মপি কুর্বস্থি কিংপুনঃ দাক্ষান্ত,তভগবভীব জ্লীয় এই প্রেমা যে দক্ষণা ভদ্ধতি তেপি সংসারাম চাত্তে নচ কেবলমেতাবদেব ত্বৎপরমপ্রসাদপাত্র-তামপি যান্তীত্যাছ:। বিবুধান্ সর্বজ্ঞানপি তান্ পরিচারকান্ গিরা অহং পরাধীনইত্যাদিবচ-নেন পশূন্ বিবেকছীনানিব পরিবয়দে বশীকরে। যি। স্তুক্তিমাহাত্মশ্রবণেন ভদ্রদেন কিমপ্য-নমুসন্ধানান্ সহসা প্রেমাকৌ পাতয়সীতার্ধঃ। তথাচোক্তং শ্রীভগবদ্গীতাদিভিঃ। মধুরয়া গিরা বল্কুবাক্যয়।ইত্যাদি। এবং স্থায়ি ক্ল হসৌহ্ল দাস্ত থালি, তি সমুক্তয়ে। যে স্থায় ন বিমুখাঃ তত্ত্বজ্ঞানে জাতেপি ভক্তাত্যাগিনস্থেইপি পুনতি জগদপি সংশারাভ্যোচয়ন্ত্রীতার্থঃ। যদ্ধা হায়ি যে বিমুধাঃ শুষ্কজাননিষ্ঠয়া ভক্তিভাগেন বৈমুখাং গভাস্তাংস্ক ন পুন্তি ভগবদৈমুখামহাপাপফলভোগেন তেষামন্যোঞ্চ শিক্ষণার্থং ভক্তিমহিল্লাপ্রদর্শনার্থক। यहा যে বিমুখান্তাল পুনতি কিং কাক্। অপিত পুনত্যের অগ্নাদের্ফতাদিরভেষাং প্রকৃত্যাপারনত্তাদিতি অন্যৎক্ষানং ॥ ৪৭ ॥

একাদশে জীবসুদ্বস্য । ভূতানাং দেবচনিত্ব দুংখায় চ সুখায় চ। সুখায়ৈব হি সাধুনাং ডাদৃশামচুতোজানাং ।। ১৪৮ ।। ভজন্তি যে যথা দেবান্দ্বা অপি তথৈবতান্। চায়েব কর্মসচিবাঃ সাধবোদীনবৎসলাঃ ।। ১৪৯ ।। জীভগবতঃ । ন ময্যেকান্তভক্তানাং গুণদোষোদ্ধবাশুলাঃ । সাধূনাৰ সমচিন্তানাৰ বুদ্ধেঃ পর্মুপেযুবাৰ ।। ১৫০।। কিঞ্চ। যথোপজান্ধমাণস্য ভগবন্তং বিভাবসুং । শীতৰ ভয়ং তমোপোতি সাধূন্ সংসেবতন্তথা ।। ১৫১ ।। নিৰজ্জোমজ্জতাৰ ঘোৱে ভবাজৌ পরমাযুগং। সন্তোক্তম্বিদঃ শান্তা নৌদ্দ্বেশ্সু মজ্জতাং ।। ১৫২ ।। অন্নৰ্ধ হি প্রাণিনাং

দেবৈরপি মহতামুপমানমমূচিতমিত্যাহ ভূতানামিতি।দেবানাং চরিতমপি বৃষ্টাাদিনা ভূতানাং ছঃপায়াপি ভবতি। ত্বয়া দদৃশানামপি। অতঃ অচ্যুতে আত্মা মনোমাত্রং নত্ত সর্বেন্দ্রিয়বৃত্তিযেঁষাং তেযামপি ।। ১৪৮॥ কিঞ্চ । স্থাং কুর্ব্বস্থোইপি দেবা ভঙ্গনানুগারেণৈব কুর্ব্বন্তি ন তথা সাধবঃ ইত্যাহ ভক্ষন্তীতি। ছায়েৰ যথা পুৰুষো যাবৎ করোভি ভাৰদেব তদ্য ছায়াপি তথা কর্মসচিবাঃ কর্মসহায়াঃ দীনাঃ দৎকর্মাদিরাহিত্যেন সদ।র্ভান্তেষু বৎসলাঃ ॥ ১৪৯॥ ভব্তিনিষ্ঠানান্ত ন গুণ দোষা ইত্যাহ মগ্রীতি। মরি যে একান্তভক্তা: কর্মজ্ঞানাদ্যশেষনৈরপেক্ষ্যেণ ভক্তিনিষ্ঠাং প্র.প্তা-স্বেশাং গুণদোটেযব্বিহিতপ্রতিষিটৈদ্ধ রুদ্ধবোষেষাং তে গুণাঃ পুণা পাপাদয়ঃ। সাধূনাং নিরস্ত-রাগাদীনাং অতঃ সমচিত্তানাং। অতএব বুদ্ধেঃ প্রমীশ্বরং মাং প্রাপ্তানাং। যদা গুণীঃ সংকর্মা:-চরণাদয়স্তছভবাবে গুণাঃ সত্ম শুক্ষাদয়ঃ দোষাঃ সৎকর্মভ্যাগাদয় স্তছ্ভবাশ্চ যে গুণা জ্ঞাননিষ্ঠা-দ্যঃ জ্ঞান নিষ্ঠার্থং ঞ্জিতগ্রহপাদাদিভিজ্ঞানকর্ম সমুষ্ঠয়দোষ দর্শনেন কর্মত্যাগোপপাদনাং তেন দলি কিং কাকৃ। অপিত দত্যেরে একান্ত ভক্তত্বেন পূর্বেমের স্বতঃ সর্বাগুণদিছেঃ। তছ্তকং খশ্যান্তি ভক্তিভগ্ৰত্যকিঞ্নাইত্যাদি। তদেবাভিব্যঞ্যুন্বিশিন্টি শাধূনামিত্যাদি। যদা গুণ-দোবোদ্ধনা যেহর্পাঃ সত্ত্ব শুদ্ধাদয়ঃ জ্ঞাননিষ্ঠাদর\*চ। তে তেখাং গুণা উপকারকা মহিমানোবা ন ভবস্তি কিং দোষাএবে গ্র্ক:। একান্ত ভক্তারাঃ সাধনত্বেন পূর্বে:মব তুলগুণানাং সিদ্ধেরধুন। পুনং শাধন প্রের্থা ভক্তিনিষ্ঠাহান্যাপক্তেঃ। যদা গুণা বহুলোপচার সমর্পণাদয়স্তত্ত্ব।যে গুণাঃ সাধন বিশেষ :: 1 দোষা চ পুকাবিধ্যতিক্রমাদয়স্ত হুন্তবগুণা ছাত্রিংশদাদয়ঃ তে ময়ি ন ভবস্তি ভেষামারাধন বিশেষাশ্চ ময়া নাপেক্ষ্যন্তে নচাপরাধা গৃহস্তইত্যর্থন অন্যং করতে সমানং। অল-মতি বিস্তরেশ। ১৫০।। অস্তু তাব্ৎ সাধূনাং মাহালাং তদাঞ্জিতানামপি মাহালা মনিস্ক্রিনীয়-মিতি লিখতি যথেতি। বিভাবস্থমগ্নিং উপশ্রমাণসা সমীপে গলা সেবমানসা। অপ্যতি নশাতি তথা কর্মাদিজাভ্যং আগামি সংসার ভয়ং ত্যুল্মজ্ঞান্ঞ নশ্তীত্যথি। সাধূন্ সংসেবতঃ শ্রন্ধা কিঞ্চিদু ব্যপ্রদানাদিনা দূরতো হপি সেবমানস্য ॥১৫১॥ নিমজ্জোন্মজ্ঞতাং উচ্চাবচ বে নীর্গছিতাং। যদা ভবান্ধে নিমজ্জা পশ্চাৎ উন্মজ্জতাং দন্তবিষ্ট্রাং। প্রমায়নং প্রম্ শ্রন্থ ব্রজ্জ বিদ ইতি আত্মতত্ত্বমাত্রোপদেশেন ভবাবিতারণনিদ্ধে:। যথা বেদার্থবেদিনঃ শালে পরে চ নিক্ষাতং ব্রহ্মণাপ্রশাশাশ্রমিতি গুণলক্ষণোক্তেঃ ॥ ১৫২ ॥। কিঞা । যথার্থমেব প্রাণা জীবনা। **प्यक्रिय यथा मत्रार । धर्मा এव यथा (क्षेट्रा भत्रतगरक विवर । छथा एउवक पार्क क्** 

প্রাণা আর্তানাং শরণং ত্বং । ধর্মোবিতং নৃণাং প্রেত্য সন্তোহর্মাক্ বিভ্যতোভরণ । ১৫৩ ।। সন্তোদশন্তি চকুংযি বহিরক্ষ সমুথিতা । দেবতা বাদ্ধনাঃ সতঃ সত্ত আত্মাহ্মের চা। ১৫৪ ।। কিঞ্চান কিঞ্জিৎ সাধবোধীরা ভক্তা ছোকালিনা মন। বাস্কৃত্যপি মরা দত্তং কৈবল্যমপুনর্ভবং ।। ১৫৫ ।। দ্বাদশে চ প্রীপরিক্তিই । নহ্যস্তুত্মিদং মনেঃ মহতামচ্যুত্যতামাং । অক্রেমু তাপতপ্রেমু ভূতে মু যদনু গ্রহুই ।। ১৫৬ ।। প্রিক্ত্যালালালি মহালাভকিনোইপি বং । শুদ্ধোরম্ভ্যালালাপি কিমু সন্তামণাদিভিই ।। ১৫৭ ।। প্রত্রেব প্রিম্পরাজ্যা স্বৃত্তানুশাসনে ষঠস্কলো । তে দেবসিদ্ধপরিগতিপবিত্রগাথা যে সাধবং সন্দ্শো, ভগবংপ্রথাই ৷ তালোগ্যীদত হরের্গদরাভি গুপ্তান্ নিমাৎ বয়ং নহ বয়ংপ্রভবান দণ্ডে ।৷ ১৫৮ ৷৷ তথা শ্রীবিন্ধুপুরাবে ৷ যমনিয়মবিধূতকলামাণা

সর্ক্রান্তে সংদারপতনাদ্বিভাতঃ পুংদঃ অরণং শরণ । যদ্বা যতঃ কুত শিচ্দ্বিভাতো জনস্য অর্কাক্ न्डनः कीर्वज्ञामित्नाषशीनः भवतः ॥ ১৫৩॥ किथ्रः । ठक्कःचि नगुनिर्गुनकानानि । अकः প্রন: নম্যাপু পিতোপি বহি: তদপ্যেকমেৰ চফুরিভার্থঃ। জতঃ সতাং দেবরৈর কু হার্থতা ना १ ইত্যাই দেবতা ইতি । ১৫৪॥ ধীরা ধীমন্তঃ। যতঃ মম একান্তিনঃ মধ্যেব প্রীতিযুক্তাঃ । যত্ত। ভক্তোকনিঠাযুক্তাঃ। অতো মত্তা দত্তমপি ন গ্রুতি কিং পুনর্বক্তব্যং ন বাঞ্দ্রীতার্ধঃ। যবা ন বাঞ্চন্তাপি কিংপুনর্বক্তিবাং ন গ্রুন্তাভি কৈবলামাত্যন্তিকমপি অপুনর্ভবং মোকং ১৫৫। অক্তেষ্ ভগবন্ত জনাদিমহিমানভিজেবু। অতএব তাপৈস্তপ্তেষু ভূতেষু প্রাণিমাত্রেঘু অন্থাহ-हे जिये हे प्रमास्त्र विकास के माना । येषः विकास विकास विकास की नाना सिक मत्री-স্বাদিৰপো যেষাামতি।। ১৫৬।। অস্ত তাবৎ মহতাং সঙ্গুসেবাদিকং নামশ্রবগদিনাপি মহা-দুটাঅপি মুক্তা ভবস্তীতি শ্রীমার্কণ্ডেয় বিষয়ক শ্রীশববচনং লিখতি শ্রবণাদিতি।বংভগৰ-স্কুজানাং যুক্ষাকং।মহাপাত্রিন: মহাপাপকর্মরতা: । অন্তাজাশ্চ মহাপাপজাতয়ঃ তিজারন্ ভত্তৎপাপতঃ সংসারমহামলাদ্বা বিমুক্তা ভবত্তি আদিশব্দেন প্রণামাদিঃ ।। ১৫৭।। এবং সর্বা শাস্ত্রশারাখিলবেদ ফলরপ শ্রীভাগরতে প্রতিক্ষম্মের ভগরস্কজানাং মাহাম্মাং বিভাতীতি ক্ষমক্রমেণ লিখিত্বা ইদানীং পূর্ব্ববং সাক্ষাৎ মাহাত্মাভাবেপি কেষাঞ্চিত্বচনানাং ভাৎপর্যোণ বিশেষতোমাহাত্ম্যএব পর্য্যবদরাৎ ভানি পৃথগ্লিথতি তে দেবেত্যাদিনা নমোনমইত্যন্তেন। ষে ভগবস্তুং প্রপন্না যথা কথঞিদপ্যাঞ্জিতাঃ । অতএব সাধবঃ স্থশীলাঃ সমদৃশশ্চ। তেদেবৈঃ নিজৈশ্য শ্রীসনকাদিভিঃ পরিগীতপবিত্রগাধাঃ। অমুবর্ণিত পবিত্রকথাঃ। অভন্তান্নোপদীদত তৎ সমীপমপি নোপগছত তৎপ্রতিবেশিনোহপি পরিতাজতেতার্য:। কিঞ্চ গদয়া কৌমোদক্যা ২ভিতোগুপ্তান্। ততন্ত্ৰসমীপগতাঃ সম্ভন্তরা হনিষ্যাধে ইতি ভাবঃ।তেষাং কৰঞ্ছিৎ পাপে জাতে-২পি ন কোপি কিঞ্চিৎ ক**ৰ্ছ**ুং শকু ুয়াৎ ভগৰৎপ্ৰপন্নতে নৈব সৰ্ব্বপাপক্ষয়াপতে রিভ্যাহ নৈবা মিতি। বয়মিতি নিজভূত্যাদ্যপেক্ষয়া বছত্বং। বয়ং কালোপি সর্বনিয়স্তা ন প্রভবতি ॥ ১৫৮॥ **অচ্যতসক্তমানসানাং ভগবৎস্মরণপরাণাং। যদা অচ্যতসক্তা ভগবদফ্রক্তান্তে**যু মানসফ্রি বেষান্তেযাসপি। যমনিরম বিধূতকলাুবাণামিতি অপগতসদমানমৎসরণামিতি চ বিশেষণ দ্য় % মনুদিনগদু, ত্যক্তমানসানাং। অপগতনদমানমংসরাগাং ব্রহ্ধ ভট দূর্ভরেণ মানবানাং।। ১৫৯।। সকলমিদমহঞ্চ বাস্দেবঃ পরমপুমান্ পরসেশ্বরঃ স একঃ।
ইতিমতিরমলা ভবতানতে হৃদয়গতে ব্রহ্ধ তান্ বিহায় দূরংং।। ৬০।। কমলনয়ন বাসুদেব বিষ্ণো ধরণিধরালু ত শহাচক্রপাণে। ভব শরণমিতীরয়তি যে বৈ তাজ ভট দূরভরেণ তানপাপান্।। ১৬১।। বসতি মনসি হল্য সোহবায়ায়াপুরুষবরসান তস্য দৃষ্টিপাতে। তব গতিরথবা মনাতিচক্রপ্রভিহতবীর্বলস্য সোনালোক্যঃ।৷ ১৬২।৷ নারসিংহে বিষ্পুরাণে চ। অহ্মমরগণাচিতিন ধাত্রা মমইতি লোকহিতাহিতে নিযুক্তঃ। হরি ৪রুবিমুখান্ প্রশাস্মি মর্ত্যান্ হরিচরণ প্রণভালমকরোমি।৷ ১৬১।৷ সুগতিমভিলম্যমি বাসুদেবাদহসপি ভাগবতহিতান্তরায়ায়্ মধুবরবশগোস্মি ন স্বতন্ত্রঃপ্রভব ত সংঘদনে মমাপি ক্ষঃ।৷ ১৬৪।৷ নহি শশকলুবাদ্বিং কদাচিতিমিরপরাভব ভামুপতি চন্দুঃ। ভগবতিচ হরাবননাচেতা ভ্রমনিলাহপি বিরাজতে মনুসাঃ।৷ ১৬৫।৷ পাল্ল দেবহুতবিকুগুলসম্বাদে। প্রাহাল্যন্ হমুনালাতা সাদরং হি পুনঃ পুনঃ । ভবজ্ঞিক্ষেবান্ত্যাজ্যা ন তে

অচ্যুতাশক্তমানসানাং স্থভাবঃ সাধনয়া পূর্ব্ববংক্তেয়ং। দূরতবেণব্রজেতি ভল্লিকটবর্ত্তিনামপি নিকটং ন গচ্ছেতি পূৰ্স্বদৰ্খঃ এবমগ্ৰেপি।। ১৫৯॥ তথৈৰ জ্ঞানভক্তানামপি ভন্নিকটবর্ত্তিনা-মপি নিকটং ন গচ্ছেত্যাহ সকলমিতি। ইদং জগৎসকলং বাস্তদেবএব বাস্কদেবান্তিনং ন ভবতি অহঞ্চ বাস্তদেবাৎ ভিন্নোন ভবামি তদংশত্বাক্তীবানাং সচান্মত্তোনভিন্নঃ সর্কনিয়ন্ত্ত্বাদিনেতি ভেদাভেদন্যায়েনাই। সঃ বাস্থাদবঃ এবৈকঃ প্রমেশ্বঃ। যতঃ প্রমঃ পুমান্ প্রকৃত্যধিষ্ঠাতঃ পুরুষাদপি পরমঃ পরব্রক্ষাত্মকত্বাৎ। অতোবয়ং সেবকাঃ মচ পরমদেব্যইতি ভাবঃ। শুদ্ধভক্তি-মক্টোজ্ঞানভক্তানাং নূনে স্থাদত্র দূরাদিত্যক্তং। তত্রচ দূরতরেণেতি।। ১৬০।। পাপকারিণামপি ভগবংকীর্ত্তনক্তান্তথেত্যাহ কমলনয়নেতি। ঈরয়ন্তি উচ্চারয়ন্তি অপাপানিতি কথঞিৎ পাপে ক্ষাতেপ্যপাপানেবেত্যর্থ: ॥ ১৬১ ॥ দুঁরতরেণ ব্রক্ষেত্যাদি যদুক্তং তত্র হেন্তমাহ বসতীতি। ভস্য দৃষ্টিপাত॰ যাবদ্বিষ্ণোশকেং পরিভূমতি অতত্তক্তকাৎ প্রতিহতং বীর্যাং বলগু যুস্য তথা ভূতস্য তব বামন বা ভাষতি দেশে পাপিষ্ঠং জনমানেত্তমপি গতিনান্তি। সপুনরন্যলোক্যঃ বৈকৃতিলোকার্হঃ । নত্ত্বস্বল্লোকার্হইতি ॥ ১৬২ ॥ যময়তি নিয়মগ্রীতি যমোনিয়ত্ততি লোকানাং হিতে নিনিত্তে পুণাফলস্থগ দিদানার্থং অহিতে চ নিমিত্তে পাপফলনরকাদিদানার্থং নিযুক্তোপি সন্। হরিবেব গুরুস্তি মুখান্ অভক্তানের প্রশাস্মি প্রকর্ষেণ দণ্ডং করে।মি ॥১৬৩॥ স্থাতিং মুক্তিং শ্রীবৈকৃঠলোকপ্রাপ্তিং বা । ভাগবতেষ্ ভগবন্তক্ষেষু স্থিতঃ স্থিরতাং প্রাপ্তা: অন্তরাত্মা-মনোষস্য তথা ভূতঃ বন্। তেষু কল।চিৎ পাপেইপি জাতে মীমশ্বর্থি নাস্তীভ্যাই মধবরেতি। জ্ঞীক্কফাধীন এবাহং ন স্বতক্ত্ৰোইশ্মি ॥ ১৬৪॥ তেখাং কথঞ্ছিৎ জ্ঞাতেইপি পাপে ন কোপি দোষ: স্যাৎ প্রত্যুত ভগবিষিশাস বিশেষেণ শোভৈব স্যাদিত্যাহ নহীতি শশরপঃ কলুবঃ কলঙ্কঃ ভিন্য ছবিশ্ছায়া বা যন্মিন্ গোপি যথ। তয়া তন্য শোভাবিশেষএব ন্যাৎ তথেত্যর্থ: ॥ ১৬৫॥ মন

मू। र्म म लाहता है। १ १७७॥ पूर्वाहारता पूछ्य लाशि महा शाश्वर छ । उनि বৈষ্ঠিক বন্ত্যাব্দের। বিষ্ণুক্তে ছবতে নরঃ।। ১৬१।। বৈষ্ণবোষ দৃহে ভূছেকে হেষাং रिक्षतमक्तिः। ८७ मि वः भि तिरार्धाः मुख्यमक्रव्छि निवाः।। २७ छ।। कात्म অমৃতসারোদ্ধারে । একাদশ্যামজুঞ্জানা যুক্তাঃ পাপশতৈরপি। ভবড়িঃ পরি-হর্তব্য হিতা মে যদি সর্বদ। ।। ১৬৯। যে শ্রন্তি জগলাথৎ মৃত্যুকালে জনা-ৰ্দ্নং। পাপকোটিশতৈযুক্তান তে গ্ৰাহণ মনাজ্ঞয়া ।। ১৭০ ।। ন ক্ৰহ্মান শিবা-बीन्त्रा नाहर नात्न । मिल्लीक मः । मेला न निश्च र कर्जुर देवक्षवीनार महाज्ञनार । অতোহং সর্বকালক বৈষ্ণবানাং বিভেমি বৈ । ভবট্টিঃ পরিহর্তব্য বৈষ্ণবা যে সদৈব হি ।। ১৭১ ।। বৈষ্ণবা বিষ্ণুবৎ পূজ্য। মম মান্যা বিশেষতঃ । তেষাং ক্তেইপ-মানেপি বিনাশোঞ্চায়তে ধ্রুবৎ ।। ১৭২ ।। কিঞ্চ । যেষাৎ স্মর্ণমাত্রেণ পাপ-লকশতানি চ। দহান্তে নাত্র সন্দেহো বৈক্ষবানাং মহাত্মনাং ।। ৭৩ ।। যেষাৎ পাদ রজেনৈৰ প্রাপ্ততে জাত্মবীজলং। নার্মদং যাসুনধ্ধৈব কিপুনঃ পাদয়োজ্জলং।। ১৭৪।। বেবাৎ বাক্ত লাখেন বিনা গল্পাললৈরপি । বিনাভীর্থ সহসূত্র সুত্র ভিত মানবং ৷৷ ১৭৫ ৷৷ কিঞ্চা ব্ৰহ্মালাকে ন মে বাসে: ন মে বাসোহরালয়ে ৷ নালয়ে লোকপালানাং বৈক্ষবানাং পরাভবে 1>१७। ন দেবা নচ গন্ধবা ন হক্ষোরগরাক্ষসাঃ। जांखः ममर्था अवरमा रेक्कवानाः भन्ना छत्य ।। कर्ताम कर्माना वाहः मनमानि न বিপ্রিয়ং । বৈষ্ণবানাং সভাভাগাঃ সুদর্শনভয়াদপি।। একভোধাবতে চক্র মেকতো-হরিবাহনং। একভোবিফুদূভাশ্চ বৈঞ্বে চার্দিভে ময়া৷ বৃহয়ারদীয়ে চৈকাদশী মাহাত্মো।। যে ভক্তিনিরতাঃ প্রয়তাঃক্রত্জা একাদশীব্রতপরা বিজিতে ন্দ্রাশ্চ। নারায়ণাচুতে হরে শরণং ভবেতি শাস্তা বদন্তি সভতং তরদা ত্যজ্পুং । নারায়ণা-

গোচরাঃ মদ্ধিকারবিষয়াঃ ॥ ১৬৬॥ ১৬৭॥ তেপি ছ্বাচ্ র দ্যোহপি স্থ্যস্থাপি তে প্রিহার্যাঃ দূরতন্ত্যাক্সা ইতার্থা। যতন্তেবাং বৈঞ্বানাং দক্ষেন হতং কিল্বিং ধেষাং তে ॥ ১৬৮॥১৬৯॥ মমাজাবেতি অনুধা মদাজাভক্ষে মইয়ব ভবস্থোন গুরিতব্যা ইতার্থঃ। যবা মনাজ্ঞাপি কদাচিৎ প্রন্মাদেন ময় জ্ঞায়াং দন্তায়ামপীত্যর্থঃ ॥ ১৭০॥ বৈঞ্চবানাং বৈশ্বভোগ বিভেমি ভেম্বপরাধেন ভগবংকোধিনিশেবাহেপত্তেঃ । অতঃ সদৈব পরিহর্তব্যাঃ ॥ ১৭১॥ সর্বেষামেব প্রভাঃ। বিশেষতক্ষ মম ভগবন্ধর্মাজিজ্ঞা মান্যাঃ ॥ ১৭২॥ নেদাং বৈশ্ববানাৎ অত্থব মহাম্মনাং স্মর্বন মাতেব ॥ ১৭০॥ পাদ্যা রক্ষেন রক্ষরি নাাগ্রাং। বেদাং বৈশ্ববানাৎ অত্থব মহাম্মনাং স্মর্বন মাতেব ॥ ১৭০॥ পাদ্যা রক্ষেন রক্ষরি কার্যাকার ক্ষেন্ত কর্মাকার ক্ষেন্ত কর্মাকার ক্ষেন্ত ক্ষেন্ত কর্মাকার ক্ষেন্ত ক্ষাক্ষাকার ক্ষিত্র ক্ষাব্যা বিশ্বত্র হিলাবিকার ক্ষাব্যা বিশ্বতার ক্ষাব্যা ক্ষাব্যা কর্মাকার ক্ষাব্যা বিশ্বতান প্রক্রিকার বিশ্বতান প্রক্রিকার্যাকার ক্ষাব্যা বিশ্বতান প্রক্রিকার্যা বিশ্বতান ক্ষাব্যা ক্ষাব্যা ক্ষাব্যা ক্ষাব্যা বিশ্বতান ক্ষাব্যা ক্ষাব্যা বিশ্বতান ক্ষাব্যা বিশ্য

পিতিধিয়ে। ইরিভক্তভক্তান্ ষাচারমার্গ নিরতান্ গুরু সেবকাংশচ। সংপাত্রদান-নিরতান্ হরিকার্ডিভক্তান্ দূতান্তঃজধুমনিশং হরিনামসক্তান্ ।। ১৭৭।। পাষ্ড্রমঙ্গ রহিতান্ হরিভক্তির্ক্তান্ সংসঙ্গলোলুপতরাংশ্চ তথাতিপুণ্যান্ । শন্তোর্হরেশ্চ সমবুদ্ধিমতন্ত থৈব দূতান্তঃজধুমুপাকারপরান নরাণাং ।। ১৭৮ ।) যে বাক্ষিতা হরি কথামূতসেবকৈশ্চ নারায়ণ্য্র্তিপরারণমানসৈশ্চ। বিপ্রেন্দুপাদজলসেবন সংপ্রকৃষ্টি স্থান্পাপিনোইপি চ ভটঃ সভতং ত্যজধুং ।। ১৭৯ ।। ভাতএবোক্তং জীনারদেন চত্যক্তিরশেষে । প্রিয়মনুত্র স্তাং তদর্থিনশ্চ দিপদপতীন্ ধিবুধাংশ্চ যঃ স্বপূর্ণঃ । ন ভর্গতি নিজভ্তাবর্গতক্তঃ কথ্যমুধ্বিদ্জেৎ পুমান্ কৃত্তঃ ।। ১৮০ :। ভাতএব প্রার্থিন্ধ নারায়ণ্তৃইস্তবে । নাহং ব্রহ্মাপি ভূরাসং স্বভক্তিরহিতোহরে । ত্রিভক্তপ্ত কাটোহপি ভূয়াসং জন্মজন্ম ।। ১৮১ ।। জীব্র ক্ষম্ততৌচ দশমক্ষ্টে । তদপ্ত মে নাথ স ভূরিভাগো ভবেহত্র বান্যত্তির বা ভিরশ্চাং। যেনাহ্মেকোপি ভবজ্জনানাং ভূর, নিষেবে তব পাদপারব্ধ ।৷ ১৮২ ।। ভাতএবোক্তং জীনারায়ণ্তৃইস্তবে । যে তাজলোকধ্যার্থি, বিষ্ণুভক্তবশং গভাং । ভজন্তি পরমান্থান্থ ভেভ্যেনিত্ত ন্যোন্যঃ । ১৮৩ । এবং শীভগবদ্ধক্তমাহান্ত্যাস্ভ্রারিধেঃ । বিচিত্রভঙ্গলেগার্হে

মেহপি ক্তে সতীত্যর্থঃ॥ বিফুভক্তি নিরতানেবাছ প্রণতাইত্যাদিনা ।। স্বাচারে। বৈফ্বধর্মস্ত মা গানিবভান্। সংপাতাণি বৈক্ষাস্তেভ্যোযকানং তক্ষিন্নিরতান্॥ ২৭৭॥ পাষ্ডা বিকু বিমুখাঃ অতি পুণ্যান্ প্রম্মঙ্গলৰূপ বৈষ্ণ্বচিত্নখারিণ ইত্যর্থঃ। উপকারঃ ভগবন্ত জ্যুপদেশাদি ৰূপস্তংপৰান্ ॥ ১৭৮- ।। বিপ্লেক্তা বৈষণ্ডাক্ষণাঃ ॥ ১৭৯ ॥ অসুসরন্তীং অনুবর্ত্ত-মান মিপি আিয়ং তদর্থিকঃ সকামান্দ্রিপদপতীন্ নরেক্রান্বিরুধান্দেখানপি যোনাত্রভ:ত। যতঃ স্থৈনিজিভটজেরের পূর্ণঃ অতঃ স্বভৃত্যুর্গ রিমুক্তএর কেবলং । যদা ন ভজভীত্যত্র হেলুদ্ধঃং স্পূৰ্ণঃ স্বেন আত্মনৈব পূৰ্ণইতি নিজভূত্যবগ্যস্তঃ ইতি চ। যদ্বা স্পূৰ্ণোইপি নিজভূত্য বগা-ধীনঃ সন্ন ভজতি এংস্তমমুং হরিং উৎ ঈ্যদ্পি কথং বিস্জেৎ ! কুতজ্ঞঃ তৃদ্য কুতং উপ-কারং কর্ম্ম বা জানাতি অনুসন্দধাতি যইত্যর্থঃ । এলমন্তে ভগবদ্ধশীকরণ রূপো ভগবস্তুক্তানাং মাহাত্মাবিশেযোদশিতঃ।। ১৮•।। জন্মজন্মান্তি মুক্তিবিষয়কে নৈরপেক্ষাং দশিতং তত্র ভক্তি রসাভাগাৎ॥১৮১॥ তক্তমাত্ত্বস্তানামেব প্রমোৎকর্ষাদ্ধেতোঃ। গত ভবে ত্রক্ষমানি তিরশ্চা মপি মধ্যে যক্ষ্য তিমান্ব। ভূরিভাগোমহন্তাগাং মে সোহস্ত । যেন ভাগোন ভবদীয়ানাং জনানাং একোপি যঃ কন্চিদ্পি ভূত্বা ত্বৎ পাদপল্লবং নিষেবে অত্যর্থং দেবেয় ।। ১৮২।। মাহাগ্যপ্রকরণমুপদংহরন্ভগবদ্জান্প্রণমতি ঘইতি। ত্যক্তাঃ লোকাঃ কলত্রপুত্রাদয়ো ধর্মা বর্ণাশ্রমাচারাদয়ঃ অর্থান্ট ধনানি মোকাদয়ে: বা বৈত্তথাভূতাঃ সন্তো যে পরমাত্মানং শ্রীকৃষ্ণং ভক্ত যি। তহি কিমর্থমিতাতাক বিষ্কৃতকে কাশং গতাঃ তত্ত্বসাক্ষীচিত্ত দ্বাদিতার্থঃ। তত্ত্ত মেব কুর্বস্তাহৈত্তকীং ভক্তিমিপাং ভূতগুণোহরিরিতি । এবং চান্তে প্রম্মাহাক্যবিশেষোদশিতইতি দিক্।।১৮৩॥ অসংখ্যেরস্য ভগবদ্ভক্তানাং মাহাত্মাস্য লিখনদারা সংখ্যায়াইবাপাদনেন নিজ

লোভলোলং বিশান্তি কং ।। ১৮৪।। ততঃ শ্রীভগবন্তুক্তকনানাৎ সঞ্চিঃ সদা। কার্য্যা সর্বৈঃ প্রয়ন্ত্রেন দ্বৌলোকৌ বিদিগীযুভিঃ ।। ১৮৫ ।।

অথ ঐতিগংদুক্তসঙ্গাহাত্মং। তগবদ্ধক্রপাদাজপাদুকাত্যে মনোস্থা । বংসদ্ধনং সাধনক্ষ সাধান চাথিলন্ত্মং । ১৮৬।। তত্র সর্বপাতকমোচকতা। বৃহনারদীয়ে যজ্ঞমানুপোধ্যানান্তে । হরিভক্তিপরাণান্ত সন্ধিনাং সম্মাত্রতঃ। নুচাতে সর্বপাপেভ্যোমহাপাতকবান ি ।। ১৮৭ ।। সামান্যতোহনর্থনিবর্ত কতাহর্থপ্রাপকতা চ । পালে বৈশাধনাহাত্ম্যে শ্রীমুনিশর্মাণং প্রতি প্রেতানান্ত্রী । বিনাশারত্যপ্রশোবুরিং বিশাদরত্যপি । প্রতিষ্ঠাপর্যতি প্রায়োন্ণাং বৈশবদর্শনং ।। ১৮৮ ।। তত্র শ্রীমমব্যক্ষণস্থাদে মহীরখন্পোক্তৌ । যথা প্রপদ্যমানস্য ভগবত্তং বিভাবসুং। শীতংভয়ং তমোপ্যেতি সাধূন্ সং সেবতঃ সদা ।। ১৮৯ ৷। তব্রৈব প্রতোপাধ্যানে প্রতোজ্যা অপাকরোতি দুরিতং শ্রয়ঃ সংযোজরত্যপি । যশোবিস্তারয়ত্যান্ত নৃণ্ণ বৈশ্ববদ্ধন্য ।। ১৯০ ৷৷ সর্বতার্থনিকতা তব্রেব । গঙ্গাদিপুণ্যতার্থেরু যোনরঃ স্বান্ত্রিচ্ছতি । যঃ করোতি সভাং বিকতা তব্রেব । গঙ্গাদিপুণ্যতার্থেরু যোনরঃ স্বান্ত্রিচ্ছতি । যঃ করোতি সভাং

চাপলামুদ্যব্য তথ পরিহরতি এবমিতি। শ্রীভগবদ্ধক্রমাহায়্মামেবামৃতবারিবিস্তদ্য বিচিত্রাণাং ভঙ্গানামুদ্যবিগ পরন্পরাগাং লেখন্য লিখনদ্য অহোযোগ্যঃ। লোভেন তদ্রদত্করা লোলং চঞ্চলং জনং বিনা কোন্যোহত্রান্তি। কেবলং চাঞ্চল্যেনৈর তৎযোগ্যঃ দ্যালচান্যথা কথঞ্জিং। তচ্চ ত্রাধুরীবিশেষেণাকর্যাদেবেত্যর্থঃ॥ ১৮৪॥ অতঃ লিখিতাদন্মাৎ মাহায়্যাক্রেতাঃ। দৌলোকো বিজিগীযুভিঃ লোকদ্বরং বিশেষতাজ্ঞেন্তমিস্কৃদ্ভিঃ ঐহিকামুগ্যিক্যাধন্যাধ্যবর্গং বদী কর্ত্তুং সর্কৈরের সদা কার্যোত্যর্থঃ॥ ১৮৫॥

ইদানীং তেষাং সঙ্গমাহান্তাং লিখন্ ভৎস্থিকিয়ে প্রথমং তান্ প্রণমতি ভগবদিতি।
বদ্যপি ভগবদ্ধকানাং মাহান্তালিখনেন তৎসঙ্গতিমাহান্তাং তথা তৎসঙ্গতিমাহান্তালিখনেন তেষাঞ্চ মাহান্তাং লিখিতং স্যাৎ তথাপি সঙ্গং বিনাপি দূরতঃ কথঞিৎ সেবয়াপি কৃতার্থতা স্যাদিত্যভিপ্রায়েণ পৃথক্ পৃথক্ লিখিতং। উত্তমং সর্বতঃ শ্রেষ্ঠমখিলং সাধনং সাধ্যঞ্চ ফলং। এবং সজ্জেপেণ মাহান্তামখিলমেবোলিখিতং॥ ১৮৬॥ তদেব বিবেচয়ন্ যথোত্তরং শ্রৈষ্ঠ্যক্রমেণ লিখতি হরিভক্তীত্যাদিনা সাধুসমাগমইতান্তেন ৷ সঙ্গিনাং গৃহাদ্যাস্তিমতামপি। বদা হরিভক্তিপরাণাং যে সঞ্জিনতেয়ামপি॥১৮৭॥ প্রতিষ্ঠাপয়তি প্রতিষ্ঠাং করোতি। তত্র প্রায়ইতি কস্যান্তিং প্রতিষ্ঠায়া বৈষ্টবৈরুপেক্ষ্যন্তাহ ৷ বৈষ্টবানাং দর্শনমাত্রমপি অস্ত তাবং সঞ্জঃ। ১৮৮॥ পূর্বাং যথোপজ্যয়মাণস্যেতাত্র দূরতোপি সেবামাত্রনপেক্ষিতং নম্ভ বন্ধঃ আত্রচ প্রপদ্যমানস্যেতানেন সঞ্চএবেতি ভেদঃ। এবং সংশব্দেনাত্র সঙ্গোহভিপ্রেতঃ। তএচ শ্রন্ধারেত্যেরা দিক্ ॥ ১৮৯॥ গ্রন্তং পাপং শ্রেয়ঃ মঞ্চলং বৃক্তান্ত্রাদিমাহাদ্যাং। বদ্বা ছরিতং সংসারং শ্রেয়্রন্তর্বর্গং যশঃ মুক্তেভ্যোক্রাহ্বাদিকং ॥ ১৯০॥ স্বান্ত্রমিছ্তি শ্রন্ধার স্বাতীত্যর্থঃ। তরোঃ আত্রসঙ্গর্জার্মধ্যে

সঙ্গং তরেঃ সংগঙ্গাবরঃ। ১৯১ । সর্বসংকর্মাধিকতা। তত্তিব ভণীরখন্পোক্রো! যা সাভিঃ শান্তি সিত্যা সাধুসঞ্জিজয়া। কিন্তু সানৈঃ কিন্তী থাঁঃ কিন্তুপোভিঃ কিন্তু বৈঃ।। সর্বেন্তি সাধকতা ভত্তিব। যানি যানি দুরাপানি বাঞ্জিতানি
মন্তিলে। প্রাপ্যেত্ত তানি তান্যের সাধুনামের সঙ্গনাং।। ১৯২ ।। অনর্থস্যাপ্যর্থাপাদকতা । বালিঠে । শূন্যাপূর্ণতামেতি মৃতিরপ্যমূতায়তে।
আপংসংপদিবাভাতি বিশ্বজ্ঞানস্বাগমে।। ১৯০ ।। তৃতীয়ক্ষকে প্রাদেবভূতোক্রৌ। সঙ্গোষঃ সংস্তের্ভেরসংস্ বিহিতোই বিয়া। সএব সাধুযু কতে নিঃমঙ্গ
দ্বায় কপ্পতে ।। ১৯৪ ।। জীক পিলদেবোক্তৌ ।। প্রসন্মন্তরং পাশমাত্মনঃ
ক্রিয়ে কিন্তু গা সঞ্র সাধুযু কতো মোক্ষারমপাবৃতং।। ৯৫ ।। যতঃ। অরিমিত্রিং বিষং প্র্যাস্থর্মোধর্মতাং ব্রজেং প্রসার কপেতে । মানাদ্ত্য ধর্মোপি পাপং স্যাহ মংপ্রভাবতঃ ।৷ ১৯৬ ।। দেহি
দৈহিকাদিবিন্যারকতা । চতুর্গক্ষে প্রিব্রেন্তেটা । তেন মার্ন্তাতিরাং প্রিয়াশ মর্ত্রং যে চানুদঃ সুত্যুক্ল্ছবিত্রদারাঃ । যে স্বজ্ঞনাভ ভ্রদীয়পদার্থিক
সৌগন্ধালুক্রক্রদ্যেয়ু কৃত প্রসঞ্চাঃ ।৷ ১৯৭ ।। জগদানক কতা । পাত্মে তত্তিব

বরঃ শ্রেষ্ঠঃ॥ ১৯১॥ সংপুদক্ষতিরেব গকা তয়া স্লাতঃ। বথম্ভূতয়া শাস্ত্যা সিতয়া পরমোজ্জ্বলয়া। গকাপি শুক্লবর্ণা ভবতি। এবং সাধুদক্ষতেঃ শাস্ত্যাত্মকত্মাৎ গকায়াত শুক্লবর্ণ মাত্রাত্মকত্মৎ সাধুদক্ষতেঃ শাস্ত্যাত্মকত্মৎ গকায়াত্মধাত্মত সাধুদক্ষতেঃ শাস্ত্যাত্মকত্মং কর্ষেণাবিত্রকর্ণঃ। যদা শাস্ত্রিরেব শিতা শর্করা যস্যামিতি গক্ষায়ান্তথাত্মতা লাইছি । অমৃতায়তে ভগবৎপদপ্রাপণাং । সম্পাং বর্ষু বিয়োগাদিনা রিক্ততাং প্রাপ্তমপি গৃহাদি । অমৃতায়তে ভগবৎপদপ্রাপণাং । সম্পাং ধনেশ্ব্যাদিঃ । ইবেতি লোকোক্তো। বিদাংসঃ প্রীত্তগগবন্তক্তিমাহায়্যাভিজ্ঞাঃ॥১৯৩॥ অধিয়া বিবেকহীনেন জনেন অসৎস্থ বিহিতোম্বঃ সংসারস্যা হেতঃ সক্ষাবিষয়ভোগাদিরূপঃ অপ্যর্থেত্ম শক্ষঃ। সোপি সাধুযু কৃতদেন্তহি নিঃসক্ষত্মায় সংসারনাশায় কম্পতে সমর্থোভবতি॥ ১৯৪॥ প্রসক্ষরতান্তাসক্রিং। অপার্তং নিরাবরণং॥ ১৯৫॥ নম্ তাদৃশ্বাদায় মহানর্থস্য কথমীদৃশত্মং প্রীত্রগবংকায়ণামহিট্রেবেতি লিথতি অরিরিতি দ্বাভাং। ধর্মো ভবত্যধর্মোহপীতি প্রকং লিখিতার্থনের ॥ মংপ্রভাবতইত্যসোভ্যত্রাপি সম্বন্ধঃ। অতোহত্মের ক্রেম্পি মর্ত্যং দেহং ন স্মরন্ধি। নাস্থ সংলধতে। অভিতরামিত্যস্যাত্রৈবাল্লয়ং সম্যধিস্মরন্তীত্যর্থঃ। বেচ স্থভাদয়ং অদঃমর্ত্যমন্থসমন্থান্তানিপি ন স্মরন্ধি।তে কেন স্মরন্ধি যে কৃতপ্রপক্ষা কের্মু ভবদীয়ং ভবদীয়ান্যমিপি যাবং পদারবিন্দসৌগক্ষাং ভিন্মিন্ লুক্মিপি ক্রমং যেষাং তেমু। জনক্ষোনোরাং কেন্বল্যোগাদিনিষ্ঠানাং দেহাভিমানামির্ভিং তল ভলাভিমানবিশেষং বা দর্শমন্তি॥ ১৯৭॥

প্রেভেক্তো। রসারনময়ী শীতা পরমাননদায়িনী । নানন্দয়তি কং নাম বৈশ্ব শির্মন চিল্লুকা।।১৯৮। মোক্ষপ্রদতা দশমক্ষরে। শ্রীমুচুকুন্দস্ততৌ। ভবাপবর্গোদ্রমতো মদা ভবেজ্বনস্য ভর্চ চুটুত সৎসমাগমঃ। সৎসঙ্গমোযর্হি তদৈব সদাতৌ পরাবরেশে স্বয়ি জায়তে মতিঃ ।। ১৯৯।। অভএবোক্তং শ্রীপ্রচেতোভিশ্চন্তর্থক্ষকে। যত্রে-ডান্তে কথামুফী স্ফায়াঃ প্রশমোযতঃ। নির্কৈরং যত্র ভূতেয়ু নোদ্বেগোযত্র কশ্বন। যত্র নারায়ণঃ সাক্ষায়াগিনাং পরমা গতিঃ। প্রত্যাতে সৎকথাসু মুক্তসঙ্কৈঃ পুনঃ পুনঃ ।।২০০।। তেষাং বিচরতাং পদ্ধাং ভীর্থানাং পাবনেচ্ছয়া। ভীতস্য কিং ন রোচেত তাবকানাং সমাগমঃ।।২০১।। সর্কায়তা। বৃহলারদীয়ে শ্রীনারদসন্থ কুমারসয়াদে। অসারভূতে সংসারে সারমেতদ্যান্তা। ভগবড়ক্ত শঙ্কাহি হরি-ভক্তিং সমিচ্ছতাং।।২০২।। পাদ্ম ভবৈর মহারথন্পোক্তৌ। অসাগরোগ্রং

রসায়নং রোগহর্ত্তা পুষ্ট্যাদিকর্ত্ত। স্বাছকৌবধবিশেষঃ তন্ময়ী। শীতা শীতলা তাগহরেত্যর্থঃ। চন্দ্র-রশ্যিরপি অমৃত্রময়ত্বাদ্রনায়নময়ী সদ্যুএব পিত্তোপশ্যনাদি স্বভাবকত্বাৎ ৷ অন্যংসমমের ১১৯৮। ভো অচ্যুত ভুমতঃ সংসরতোজনস্য যদা ত্বদত্তহেণ ভবস। বন্ধস্য অপবর্গঃ সভে।ভবেৎ कानः श्राप्तः मा९ उना मजाः मक्रामाज्यः । यनोत मश्मक्रामाज्यः उना मक्राम् নিস্ত্ত্যা কাষ্যকারণনিয়ন্তরি ত্বয়ি ভক্তিভ্রতি ততোমুচ্যতইত্যর্গঃ । যদিবার্নর্গঃ ভ্রস্য গৃহাদ্যাসজিলক্ষণম্য সংমারস্যাপবর্গঃ পরিত্যাগোষ্দা ভবেৎ তদৈব অচ্যুতঃ স্থিরঃ সংম্যা-গমোভবেৎ পূর্ববদ্ধা বিষয়মহিম বতঃ প্রমপুরুষার্থতাবোধনার্থং বিশেষণদ্বয়ং ৷ সভাপমুক্তা-নামপি ভক্তানামের বা গতৌ প্রাপ্যে। পরাবরয়োঃ চিচ্ছক্তিমায়াশক্ত্যোঃ লক্ষীভূম্যোক্ষা প্রান্ পাং শ্রীলোপীনাং অবরাণাঞ্চ শ্রীরুকিনুণ্যাদীনামীশে স্বামিনীতি তদাচ ভগবংপ্রেমপ্রদত্ত্বেংয়ং স্লোকেণদ্রষ্টব্যঃ। ১৯৯॥ যত্র যেশু। যতোবাভাঃ। কথাভাঃ নিকৈরং বৈবাভাবঃ। যত্র যাস্ত কথাসু মুক্ত সক্তৈর কোরায়ণঃ সাক্ষাৎ প্রস্তুয়তে। যদ্বা ন্যাসিনামপি গতিরাশুয়োনার য়ণো ভগবান্যত্র নোক্ষানস্তীতি। মুক্তসকৈঃ শ্রীসনকাদিভিঃ সংক্থাস্থ মধ্যে প্রসূরতে। ধন্ধা মুক্তসকৈরাঝার:মৈরপি যত্র নারায়ণএব সাকাৎ প্রিসূয়তে নতু জ্ঞানাদি । এতাঢ়শং যেবাং মাহাত্মমিতার্থঃ ॥ ২০০ ॥ পদ্যাং পাবনেছয়। । যদা পদ্যাং বিচরতামিতিসৌলভ্য-মুক্তং।সংসারাদ্ভীতস্যাপি কিং ন রোচেত অপিকুরোচতএব । ভীতানামনন্যগতিত্বাং। তহুক্তং ভগৰতৈব সন্তোহ্বাক্ বিভ্যতোহরণমিতি ।। ২০১ ।। সংসারে প্রপক্ষে। কিন্তনাহ ভগ্র-দ্ধক্তসঙ্গইতি: হরিভক্তিং সম্যাগিচ্ছতাং জনানামিতি হরিভক্তিবাঞ্গবিশেষং বিনা ভগবদ্ধক্তসঙ্গ মাহাল্যানত্ত্বাথ যদ্ধা তেষাং শ্রেষ্ঠদাধনমেতদেবেতি ব্যাখ্যয়াইয়ং শ্লোকোভক্তি দম্পাদক-তায়াং দ্রুষ্টব্যঃ।। ২০২ !। সভাং সমাগমঃ পীযূষং ভবত্যেব। কিন্তু অসাগরোখং। অতঃ সাগ-রোজ্তুস্য দেবভোগ্যপীয়ূষস্য মথনাদিপরিশুমেণৈব সাধনাৎ বারুণ্যাদিসয়ন্ধাচ্চ ভতোইপাস্য শৈষ্ঠং ফ্চিতং। তথাই দ্রবামিতি, দ্রবাময়ৌষধে পাককিয়াপ্রয়াসে। ইথ ভক্ষণাদিযত্নশাপে-ক্যাতে অত্রত্তভদভাবাদস্য শৈষ্ঠং। তথা সুখদ্যান্তে ভবেদ্যুংথমিতি ন্যায়েনান্যোহর্ষঃ শোকা বসানএবস্যাৎ অয়ং হ্ৰয়ভীতি হ্ৰঃ হ্ৰ্ৰপোৰা শোকাছোন ভৰ্তিকিন্ত সদা হ্ৰএব। পীয়্ষ্ম স্বাধি বাজনীষ্ধ । হর্ষ্টালোকপর্যান্তঃ স্ভাং কিল সমাগ্যঃ!! ২০৩ ৷৷
ভগবৎ কথা মৃত পানৈকহেন্ততা ৷ পালে বৈশাখমাহাজ্যে ৷ প্রানার দান্তে ৷ প্রস্কার্যান ক্ষান্য ক্ষান্য কোনার লাভে ৷ প্রস্কার্যান ক্ষান্য কোনার ৷ ৷
২০৪ ৷৷ তৃতীয়ন্ধন্যে প্রীক্ষানাল লিকেবাক্তো ৷ সতাং প্রস্কার্যাম বার্যাসমিদোভবন্তি
হংকর্ণ সায়নাল কথা ৷ তিছোম বাদাশ পর্যাব্যানি শ্রেমার তির্ভাজ্যির কুমমান্তি ৷ হত আমানাদাশ পর্যাক্তি কিল্লান্র তির্ভাজ্যির প্রান্তির প্রান্তির প্রান্তির প্রান্তির কালার লোকে ৷ যত ভাগবতং রাজন্ সাধবোকিশদাশয়া ৷৷ ভগবদ্পুণান্কথনশ্রক ব্যান্তির সায়ন্ত ভাবিত্য ৷ ৷ হত ৷৷ তিমিন্ মহর্মাধরিতা মধুভিচরেত্র পায়ন্ত শেষসারতঃ পরিতঃ সুবন্ধি ৷ তা যে পিরন্তাবিত্যো নূপ গাঢ়কনৈত্যার স্পৃশন্ত ৷
শানত্ত্তর শোকনোহাঃ ৷৷ ২০৭ ৷৷ পঞ্চনে প্রীরাহ্মানবহুগণসমাদে ৷ যত্তোভ্রমশ্রোক ভণানুবাদঃ প্রস্কার তিং
সতাং যচ্ছতি বাস্দেবে ৷৷ ২০৮ ৷৷ প্রকাদশে ভগবদুদ্ধবসমাদে প্রীপ্রলোপাখ্যান্ন শেষ ৷ তেমু নিত্যং মহাভাগ মহাভাগেষ্য মহকথাঃ ৷ সন্তবন্তি হি তা নূণাং
জ্বতাং প্রপুনস্থাহ ৷৷ ২০৯ ৷৷ তা যে শূণ্নি গায়ন্তি হানুমাদন্তি চাদ্তাঃ ৷
মহপারঃ শ্রুদ্বানাশ্য ভক্তিং বিন্দন্তি তে ময়ি ৷৷ ভক্তিসম্পাদকতা ৷ বৃহ্যারদ্বীয়ে

অতোটস্য নিভাপবমানক্মযম্মিত্যর্থ: । এবঞ্চ সর্বসাবতৈব সিদ্ধা ॥ ২০৩॥ আমুনাং সর্বে-ষামের জীবান' মনশঃ ত্রত্ত্যাল রসায়নাঃ স্থপ্রাপকাঃ যতঃ কোমলা মধুবাঃ ॥২০৪॥ বীন্যস্য সমাপ্রদান বাস্ত তা বীর্যাসভিদঃ। অভএব হৃৎক্রন্ত্রসাঘনাঃ স্থপাঃ। তাসাং জোষণাৎ শেবনাং অপ্রপোহবিদ্য নির্ত্তিমে কেশ্বা ব্যুবিমান্ তন্মিন্ হরৌ প্রথমং শুদ্ধা ততোবতি-স্তাভিক্তিঃ অনুক্ষিষ্তি ক্ৰমেণ্ৰে ভৰিষ্যতি ইত্যৰ্থঃ। রতিশ্চ রত্যাখ্যোভাবঃ । ভক্তিশ্চ প্রেম-লফণা। এতদ্বি-রণঞ্জীমহানুভাবৈবেৰ ৰসাৰ্ণৰে ক্তমন্ত্যেৰ ॥২০০।। ননু সাধুসঞ্চং বিনা স্বৰ্মেৰ ছবিকথা চিন্দুনাদিনা ভক্তিভবেদেভোগাক্ষাই যত্ত্তে দ্বাভাগং। যশ্মিন্ স্থানে। ভাগ-বতো গুণালকথনে শ্রবণে চ ব্যগ্রং শত্তরমভাগেক্তং বা চেতোযেষাং তে ॥ ২০৬॥ যিনন্ স্থানে মহ ভুমু থরিতাঃ কীর্ত্তিঃ। যুদ্ধা মহান্তঃ মৌনাদিশীলা অপি মুখরিতাঃ যাতিঃ তা মধু ভদশরেওমের পীবূষং তদেব শিষ্তইতি শেষোযাল তাঃ। অসারাংশরহিত শুদ্ধামৃতবাহি ন্য হত্যর্থঃ। অবিভূষঃ অলংবুদ্ধিশূন্যাঃ সম্ভঃ গাটেঃ সাবধানেঃ কলেঃ যে তাঃ সরিতঃ পিবস্থি শেবস্তে। অশনশব্দেন ক্ষুল্লভাতে অশনাদয়স্তাম স্পৃশস্তি ভক্তিরসিকার বাধস্তইতার্থঃ। হুপ হে॰ প্রাচীনবহিঃ । সংসক্ষমন্তবেণ স্বয়মের কথাচিন্তনাদাবালস্যাদিনা রসাবেশাভাবতঃ ক্ষুৎপিপাসা দ্যভিভূতন্য ভক্তাস্থ্রবাদবশ্যং সংসঙ্গোবিধেয়ঃ ততক ভগবংক্থাম্তর্সপানাদিৰপ। ভক্তিঃ স্বতঃ সম্পাদ্যতএবেতি ভাবঃ ॥ ২ • ৭ ॥ যত্র যেরু মহৎস্থ । গ্রাম্যকথানাং বিঘাতোয়ক্ষাৎ মুমু-কোবিপি। সতীং মতিং প্রেমভক্তিমিভার্থ: ।। ২০৮।। সম্ভবন্তি সমাক্ জায়ন্তে। তাঃ কথাএব অঘং পাপং প্রকর্ষেণ পুনন্তি স্বাদনমুমূলয়ন্তি সংসারহংখং নাশয়ন্তীতি বা।। ২০৯॥ প্রবিণা-দিভিরেব মৎপরাঃ অদ্ধানাশ্চ অবণাদিম্বেব প্রীতিমন্তঃ সন্তঃ।প্রেমলক্ষণাং বিদন্তি। ভগব-

তকৈব। ভক্তিস্থ ভগবড়ক্তসঙ্গেন পরিজায়তে । সৎসঙ্গঃ প্রাণিটতে পুডিঃ সুরুতিঃ
পূর্বস্থিতিঃ।। ২১০।। প্রীভগবদ্দীকারিতা । একাদশে প্রীভগবদুদ্দবসম্বাদে ।
ভাথেতৎ পরমং গুছাৎ শৃণুভোষদুনন্দন । সুগোপ্যমপি বক্ষ্যামি ছং মে ভূতাঃ
স্ত্রংস্থা। ন রোধ্য়তি মাং যোগোন সাংখ্যং ধর্মএব বা। ন স্বাধ্যায়ন্তপন্ত্যাগো
নেন্টাপূর্ত্তং ন দক্ষিণা। ব্রতানি যজ্জজ্লাংসি তীর্থানি নিয়মা যমাঃ। যথাই বরুদ্ধে
সংসঙ্গং সর্বাস্থাবিছাহি মাং ।। ২১১ ।। অতএবোক্তং বিদুরেণ তৃতীয়ক্ষকো । যৎসেবয়া ভাগবতঃ কূটস্থস্য মধুদ্বিষ্যারতিবাসোভবে তীব্রঃ পাদয়োক্ষ্যাসনাদ্দিঃ ।২১২।
স্বতঃ পরমপুরুষার্থতা। প্রথমক্ষক্ষে প্রীশৌনকাদীনাং। চন্তর্থে চ প্রীপ্রচেত সামুক্তৌ।
ভলয়াম লবেনাপি ন স্বর্গং নাপুনর্ভবং । ভগবংস্ক্রিসঙ্গানাং কিমুতাশিষঃ
।। ২১৩ ।। চন্তর্থে প্রিপ্রচেত্নঃ প্রতি প্রীশিবোপদেশে। ক্ষণার্দ্ধনাপি ভলয়ে ন

सुक्तमञ्जना को सिक्क जिमाह महनक्रहेि ॥२३०॥ मारथारयाना निम्नाधना सुत्रमहाराभकानि नवा जिन চার: নি চ সংসক্ষন্ত স্বতন্ত্রএব সমর্থঃ ফলাব্যভিচারী চেতি বর্ণয়িত্তমাছ অপ্যেতি ত্রিভিঃ। এত-দ্বক্যমাণং প্রমং গুহুং শূণু। যতস্ত্রং মম ভৃত্যা হৃহ্য জ্ঞাতিঃ দ্বাচ অতঃ হুগোণ্যমপি বক্যামি। ন রোধয়তি ন বশীকরোতি। যোগোইটাঙ্গঃ। সাংখ্যং তত্ত্বানাং বিবেকঃ। ধর্মঃ সামান্যতোই-ভিংসাদিঃ বর্ণাশ্রমচারোবা। স্বাধ্যায়োবেদজপঃ। তপঃ কুচ্জাদি। ত্যাগঃ সংন্যাসঃ। ইফাপুর্ত্তংইফ্টং পূর্ত্তক্ত তত্ত্র ইফমায় হোতাদি পূর্ত্তং কূপারামাদিনির্মাণ্ড। দক্ষিণাশকেন সামান্যতোদানং লক্ষ্যতে। ব্রতানি একাদশু।পবাসাদীনি। যজোদেবপূজা। ছন্দাংসি রহস্য মন্ত্রাঃ নিয়মা বাহ্যে-ক্রিয় নিতাহাদয়: । যমা অন্তঃকরণসংযমাদয়: । যবা অহিংসাসতামত্তেয়মসক্ষোহীরসঞ্য়:। আ'खिकाः ব্রহ্মচর্যাঞ্চ মৌনং স্থৈর্যাং ক্ষমা ভয়ং। শৌচং জপস্তপোছোমঃ শ্রন্ধানিখ্যং মদর্চনং। তীর্থ।টনং পরার্থেহা স্তক্টিরাচার্য্য দেবনমিতি ভগবছক্তলক্ষণ। গ্রাহাঃ। তত্র অস্তেয়ং মনসাপি প্রস্থাগ্রহণং। আন্তিক্যং ধর্মে বিশ্বাসঃ। ভরং পাপাদিভ্যঃ। শৌচং বাহ্যমান্তরঞেতি দ্রুণ। অভোদাদশনিরমাঃ। অদ্ধাধর্মাদর ইতি। অবরুলো বশীকরোতি । সর্বসঙ্গাপহঃ বাচ্যান্তরা-শেষাসজিনিরসনঃ ॥২১১॥ বেষাং ভগবস্তক্ত।নাং সেব্য়া সক্ষরপয়া। কূটস্থস্য নির্বিকারস্যাপি যদ্বা **জিগোবর্কনশৃক্ষোপরি বর্ত্ত**মানস্য মধুদ্বিষে। ভগবতঃ প্রীকৃষ্ণস্য পাদয়োঃ চরণারবিন্দয়োরতি-বাস: প্রেমেণ্ডসবঃ তীত্রঃ স্বাভাবিকোভবেৎ। বাসনং সংসারছঃখমর্দ্যতি নাশয়তি তথা সঃ। বদা মধুদ্বিট্ সম্বন্ধীয় রত্যা প্রেমা রতিগুক্তোবা রাসঃ রাসক্রীড়া তীত্রঃ অত্যুৎকটঃ দেবাদী-। নামপি নোইনত্বাৎ বছকালব্যাপিত্বাক্ত। পাদয়োক্সাগনাদি ছঃখান্যদিয়তীতি তথা সঃ। সর্ক্ষে ক্সিমাসক্ষ্যাপি রাশ্য প্রায়েছতাবিশেষত্বন গতিবিশেষসম্পত্তে:। যদ্ব। মধুদ্বিষঃ পাদয়ো-রিভোৰাছর:। তত্তক তক্তরশারবিশ্ব ছয়েন সহেতার্থঃ পূর্ববদেব অতোহস্য ফলবিশেষত্বেনান্তে লেখ্যং ॥ ২১২॥ ভগবৎসঙ্গিনোভগবদ্যক্তাং তেযাং সঙ্গস্য যোলবং অত্যণ্পঃ কালঃ তেনাপি স্থৰ্গং কা অলয়াম সমং ন পশ্যাম নচাপুনভবং মোক্ষং। মন্ত্যানাং জচ্ছা আশিষো রাজ্যাদ্যা ন खनशासि किम्ज वक्तवार । अवश्कनवनार वर्तार अनवर्गामनाधिकावन नरनक्ता नवम क्ल्युर जिक्कः ॥२३७॥ जगद्दनिक्रमकना क्रगार्कनालि चर्तर न खलास नमर न लगामि

ন্ধাৰ্থ নাপুনভবিং। ভগবৎ সঞ্চিসঙ্গন্য মন্ত্রানাথ কিমুতালিকঃ ।। ২১৪। ছাদশে প্রীসার্কণ্ডেরোপাখ্যানে প্রীশিবন্য। তথাপি সংবদিয়ামো ভবানেয়তেন সাধুনা। অয়ং হি পরমোলাভোন্গাং সাধুন্যাগমঃ ।। ২১৫ ।। অভএব প্রপ্রেজাদং প্রতি প্রিরণ্যেন্তং । হরিভক্তিসুধোদয়ে । অক্ষোঃ ফলং ছাদ্শদর্শন হৈ ভরাঃ ফলং তাদ্শগাত্রসঙ্গঃ । জিলাফলং ত্রাদৃশনীর্জন হি স্দূর্লভা ভাগবভাহি লোকে ।২১৯। অভএব বিদ্রেণ ভৃতীয়ক্তক্ষে । দ্রাপা হঃশপতপদঃ দেবা বৈকুন্তবন্ধ সু। যত্রোপ্যাবিতে নিত্যং দেবদেবোজনাদ্দনঃ ।। ২১৭ ।। প্রীবিদেহেনাপ্যেকাদশক্ষে । দ্র্লভোমানুষো দহোদেহিনাং ক্ষণভঙ্গুরঃ । ভত্রাপি দুর্লন্থ মন্যে বৈকুন্তপ্রিয় দর্শনং ।। ২১৮ ।। অভএব হি প্রাথিতিং শ্রিপ্রেণে চতর্থক্ষক্ষে। ভক্তিৎ মুভ্রুং প্রবিভাগ স্থাবন প্রসাভ্যাদনন্ত্য হতামলাশ্যানাৎ । যেনাঞ্জনোল্ণমুক্ষব্যাদন ভবভাহিং বিষয়ে ভবল্পুণকথামূতপানমন্তঃ ।। ২১৯ ।। প্রচেত্সঃ প্রভ্যুপ্রেশ ভবিত্ব বিশ্বনাধ্যানাৎ । আগ্রানাধ্যানাধ্য লক্ষেণালুণমুক্ষব্যাদন ভবাকিং নেষেয়া ভবল্পুণকথামূতপানমন্তঃ ।। ২১৯ ।। প্রচেত্সঃ প্রভ্যুপ্রেণ শ্রীশিবেন চ। অথানঘাগ্রেন্তব কার্ডিভীর্গ্রোরন্তর্কাহিং স্থানবিধুতপাপানাধ্য ভ্রেণ্ডাশ সুসন্ত্রশালিনাং স্যাৎ সঞ্জমোন্গ্রহ এয় নঃ ন্তবং ।।২২০। প্রিপ্রচেতাং

নবাচ পুনভবং ।। ২১৪। । যদ্যপি নৈবেচ্ছত্যাশিষঃ কুণপি ব্রহ্মর্বিমোক্ষমপ্রাত । ভক্তিং প্ৰাং ভগ্ৰতিলিক্কবান পুৰুষেহব্যয়ে। তথাপি। অনেন মাৰ্কণ্ডেয়েন সহ সম্বিদ্যামঃ সম্ভাষাং কবিষ্যামঃ। যতঃ সাধুভিঃ সনাগমঃ সংযোগঃ অয়মের প্রমোলাভঃ ফলং॥ ২১৫॥ ত্রাদশানাং ল্পপ্তিৎ ল্লুদ্করণবতামপি দুশ্নমেবাক্ষোঃ ফলং এবমনাদ্পি ॥২১৬॥ বৈকুণ্ঠবর্ম্ শীভগৰতঃ তল্লোকস্য বা মাগ্জিতেযু মহৎস্থ সেনা সঞ্চাদিৰূপা অপ্পতপদঃ ভাগ্যবিশেষ-ছীনস্য জনস্য দ্বৰাপা যত্ৰ বৈধিত। গৃহাৰ ধেষু বিষয়েম্বন্যৈ পি সর্কৈগীয়তে অতন্তেষাং শানিধ্য-মাত্রেটেণৰ ক্লভাৰ্যতা নচোপদেশাপেকাপীতি ভাবঃ। যদ্ধা যেষু নিমিত্তেষু যৎপ্রাপ্তার্থমিতার্থঃ। এবঞ্চ সংসঙ্গদ্য স্বতঃ পুরুষ:র্থতা সিক্তৈর ॥ ২১৭॥ বহুবোদেহাভবন্তি যেষাস্তে দেহিনোছীবা স্তেষাং ক্ষণভঙ্গুরোহপি মান্ধ্যোদেহোদুর্লভঃ প্রমপুরুষার্থসাধনত্বাং। বৈকৃতং প্রিয়োষেষাং বৈকুঠিলা বা প্রিয়াস্তেষাং দর্শনমপি কিমুত সঙ্গাদিকং ॥ ২১৮॥ ভক্তিং ত্বয়ি প্রবহতাং লাত-ভ্যেন কুর্বভাগে অভএবামলাশয়ানাং **প্রেসক্লোমে** ময়া সহ ভূয়াৎ । নতু মোক্ষং কিং ন যাচসে অত আহ যেন মহৎপ্ৰদঙ্গেন অঞ্দা অযত্ত্তএব। উৰণি ব্যসনানি যশ্মিন্ তং। নেধ্যে পাংং গমিব্যামি। ভগৰদশেকথৈৰামৃতং ভস্যপানেন মন্তঃ সন্। অত্ৰমন্ত শব্দেনৈবং স্চাতে যথা মদিরামন্তোন জানাতি কথং রাত্রির্গতা দিনমায়াতং নেতি। তথা সংসক্ষণতকথাম্তপান-মক্তোহপি ন জানাতি কথং সংসারোপগতোমেংকোবা জাতইতি। এবমমূতপানস্য ব্থাদেহ-গেহাদ্যনতুসন্ধানং ন ফল্ংকিন্তু প্রমমধুররসাস্থাদনাদিকমেব তথা সৎসঙ্গা ভগবৎকথাম্ত পানমেব ফলং মোকস্বাসুসঞ্চিক: স্বর্মেবোপস্থাস্যতি কিন্তান্তানেতি ভাব: !! ২১৯ !! অথ অতোহেতে ঃ। অনহাে অঘহরাবধুী যস্য তস্য তব কীর্ত্তির্নঃ তীর্থং গঙ্গা তয়ােঃ ক্রমেণান্ত-র্ব্বহিঃস্নানাভ্যাং বিধূতঃ বিনাশিতঃপাপ্যা যেবাং অন্যেষামপি ধৈরিতি বা। অতএব ভূতেষু অন্-ক্রোশ: ক্নপা স্থপত্ত রাগাদির হিতং চিত্রং শীলং চার্জ্রবাদি তদ্তাং সঙ্গোহ আস্ত। এয-এব নোহস্মান্ প্রতি ত্বদক্ষত্র ॥ ২২০॥ স্পৃষ্টা ব্যাপ্তাঃ সম্ভোবয়ং কর্মভির্যাবদিহ প্রপঞ্চমধ্যে

## শীক্ষিত কৈ বিলাসঃ i



ভিশ্চ । যাবতে সায়রা স্পৃটা জনান ইই কর্মভিং। তাবদ্বৰপ্রস্থানাং সঙ্গঃ
স্যান্ধো ভবেইভবে ।। ২২১।। প্রীপ্রস্থাদেনাপি সপ্তমন্ধন্ধোতনাদমূতনু ভূতানহমাশিব্যক্ত আয়ুং প্রিরং বিভবনৈ দুর্মাবিরিঞ্চাৎ। নেচ্ছানি তে বিলুলিতা নুক্বিক্রমেণ
কালাজনোপন্য মাৎ নিজভূত্যপার্থ মিতি ।। ১২২ ।। অস্তিঃ সহ সঙ্গন্ত ন কর্ব্যঃ
কলাজনা যক্ষাৎ সর্বার্থহনিঃ স্যাদধঃ পাতশ্চ জায়তে ।। ২২৩ ।।

অথানৎসক্ষদোষাঃ। প্রীকাত্যায়নবাকে। বর্ণ ত্তবংজ্যালাপঞ্জরান্তর্ব্যবত্তিরে। ন শৌরিচিন্তাবিমুখজনসম্বাদবিশসং ।।২২৪।। পালে উত্রথণ্ডে।
ক্রীউমামত্মরসম্বাদে। অবৈশ্বনিন্ত যে বিপ্রাশ্চাণ্ডালাদধমাঃ মাৃতাঃ। তেষাৎ সম্ভা
বন্ধ স্পর্শাদে। মতাং সােমপানাদি বর্জ্জরেও ।।২২৫।। তৃতীয়ক্ষকে। প্রীক্ষিণলদেবস্তিসম্বাদে। সতাং শৌচং দয়া মৌনৎ বুদ্ধিত্ব প্রীর্মাণঃ ক্ষমা। শামোদমোভগশেচতি
বহুসঙ্গাং ঘাতি সংক্ষয়ৎ। তেমুশান্তেমু মূঢ়েমু ঘোষিৎক্রীড়ামূগেমু চ।সঙ্গং নকুর্য্যাক্রোচেরেমু থণ্ডিতান্ত্রাম্ব সাধুমু ।।২২৬।। ন তথাস্য ভবেদ্ধোনোহশ্চান্য
প্রসঞ্জতঃ। ঘোষিৎ সঙ্গাদ্মধা পুংসো যথা তৎসঞ্জি সঞ্কতঃ।। ২২৭।। একাদশে চ

ভুমামস্তাবন্তবিত প্রকৃতিঃ দক্ষোষেষ্ণ তেষাং দক্ষোহস্মাকং জন্মনি জন্মনিশাং । যাবৎ জ্যানস্তাব দিতি প্রীবৈকুঠলোক প্রাপ্তৌ স্বতবৰ ভগবন্তক্ষানাং দক্ষণিছেঃ । যদা যাবৎ কর্মতিভূমানঃ মানুরা অস্প্টামুক্তা বা ভবামঃ । এবং ভবে সংগারে অভবে চ মোক্ষে দক্ষঃ দ্যাৎ অন্যংক্ষানাং নানুরা অস্প্টামুক্তা বা ভবামঃ । এবং ভবে সংগারে অভবে চ মোক্ষে দক্ষঃ দ্যাৎ অন্যংক্ষানাং নানুরা দ্যোবিভবা মৎপিতৃক্তোধভুক্তেপেইগব বিন্নইাস্ত্রশ্মৎ আশিষঃ ভোগান্ । ঐক্রিং ইন্দ্রিইরভোগ্যং । ব্রেজাণেভোগ্যমভিব্যাপ্য কিমপি নেজামি । যতোজ্ঞত্তপরিপাকং বিদ্বান্ নশ্বরত্বাদিত্যর্থঃ । তে কালাল্বনা কালকপস্বরূপেণ উরুবিক্রমেণ বিলুলিভান্ অণিমাদীনপি । যদা কালাল্বনা অবিলুলিভান্ অস্পৃষ্টান্ অর্থান্ সালোক্যসান্ধ্যানাস্থাল স্বানাদীনপি । বদা কালাল্বনা অবিলুলিভান্ অস্পৃষ্টান্ অর্থান্ সালোক্যসান্ধ্যানাস্থাল ক্রাপি ভূয়াৎ ভক্র মম স্থানাদ্যাগ্রহোনাস্ত্রীতি ভাবঃ ॥২২২॥ এবং সৎ সঙ্গদেবন মুপপাদ্য ভগৈয়ৰ দার্ঢ্যায়া সংগঙ্গবর্জনং লিখতি অসন্থিরিতি।সর্কেষণ্টমহি কানামামুগ্রিকাণাঞ্চ অর্থানাং সাধনানাং সাধ্যানাঞ্চ হানিঃ ক্ষয়ঃ স্যাৎ। নচ ভাবদেব কিন্তু অধঃ পাতঃ নরকাদিভোগ্রাক্ষ জায়তে ॥২২৩॥

বিশেষেণ অবস্থিতির্নিবাসঃ। শৌরিঃ জীরুষ্ণস্ত্রসা িতারাঅপি বিমুখোযোজনস্তেন সংবাসঃ সহ্বাসএব বৈশসং পীড়া ও নৈব সোঢ়বামিতার্থঃ। লোকদ্বরে স্কুলস্যাপ্যনর্থাবহুত্বাৎ॥২২৪॥ কথঞ্জিৎ সন্তাধি স্পর্কার বৈজ্ঞাবদে স্ক্রাপি স্পর্কার বর্জারেং। কথঞ্জিৎ স্পর্কার সালার বর্জারে । বর্জারেং। কথঞ্জিৎ স্পর্কার সালার বিজ্ঞার বিশ্বাস্থার বিজ্ঞার লালার কর্মানির লালার কর্মানির লালার কর্মানির লালার কর্মানির লালার কর্মানির লালার কর্মানির লালার স্বাস্থার বিশ্বাস্থা নিম্বের লালার বিশ্বাস্থার বিশ্বাস্থাস্থার বিশ্বাস্থার বিশ্বাস্থার বিশ্বাস্থার বিশ্বাস্থার বিশ্বাস্থার বিশ্বাস্থার বিশ্বা

## প্রীপ্রিক্ত কি বিলাগঃ

প্রীভগবদুদ্ধবসম্বাদে। সঙ্গং ন কুর্য্যাদসভাৎ নিজোদরভূপাৎ কৃচিৎ। তস্যানুগন্তম-স্যান্ধে পতত্যকানুগোন্ধবং।। ২২৮।। ভগবন্তজিহীনা যে মুখ্যাৎ সম্ভত্তবহি। তেয়াৎ নিষ্ঠাশুভা কৃপি ন স্যাৎ সচ্চরিতৈরপি।। ২২১।।

অথাসতাৎ নিষ্ঠা।। বৃহন্নারদীয়ে । প্রায়শ্ভিপ্রকরণান্তে ।। কিয়েদেঃ কিমুবা শাল্তিঃ কিমু তীর্থনিষেবলৈঃ । বিষ্ণু ভক্তিবিহীনানাং কিন্তপোভিঃ কিমধুরৈঃ
।। ২০০ ।। জীগারুড়ে ।। অন্তং গভোহপি বেদানাৎ সর্ক্রশান্ত্রাপ্রকিয়াপি । যোন
সর্ক্রেয়ের ভক্তত্তৎ বিদ্যাৎ পুরুষাধমং ।। ২০১ ।। তৃতীয়ক্কন্ত্রে জীব্রন্ধান্ততা ।।
অন্ত্যাপৃতার্জকরণা নিশা নিঃশ্রানা নানামনোরপ্রধিয়া ক্ষণভগ্রনিদ্রাঃ । দৈবাহতার্গ
রচনা ঝ্রয়োপি দেবা যুত্মংপ্রস্কবিমুগাই সংসরম্ভি ।। ২০২ ।। অভএবোক্তং
ঘঠে ।। প্রায়শ্ভিরানি চীর্ণানি নারায়ণপরাত্ম খং । ন নিস্পুনন্তি রাজেন্দু সুরাকুম্ভমিবাপগাঃ ।। ২০০ ।। বিষ্ণুবর্মোক্তরে ।। কুতঃ পাপক্ষয়ন্তেয়াং কুতন্তেমাঞ্জ
মঙ্গলং । যেষাৎ নৈব ক্রদিস্থাহ্মর মঙ্গলায়তনোহরিঃ।। ২০৪ ।। অভএব বৃহন্নারদীয়ে । লুক্রকোপাখ্যানারন্তে ।। হরিপূজাবিহীনাশ্চ বেদবিদ্বেষণ্ডিখা । দিকগোরে বন্দ্রাপি রাক্ষ্যাঃ পরিকীর্ভিতাঃ ।। ২০৫ ।। অভএব নিজ্পূতান্ প্রতি ধর্মরাজস্যানুশাসনৎ যঠককো ।। তানানয়ধুসসভোবিমুখান্ মুকুন্দ পাদারবিন্দমকরন্দ

কনাচিদপি। আন্তাং ভাবন্তাদৃশানাং বহুনাং সঙ্গঃ। তদ্যৈবক্দ্যাপ্যক্রঃ অমুবর্ত্তী। অন্ধানুন গছতি যোহন্তান্তমন্ত বাহিদ্যালয় কর্মনি কিন্টাং তথাপ্যভাকাএবাদং মুমুখ্যাঃ ভগবদ্ধক্তাভাবেন সর্বাদে যাশ্রম্মাং অভন্তেষাং কথঞিং কুত্রাপি শুলং ন ন্যাদিতি সংসঙ্গতিদাত্যাধ্যৈব লিখতি ভগবদ্ধকীতি। মুখ্যাল্য তে অসম্ভল্চ। প্রমান্দ্যিবং ইত্যর্থঃ। নিষ্ঠা গতিঃ প্রাপ্যমিত্যর্থঃ। ২২৯॥

বেদ। দিভিঃ কিং অপিতু ন কিমপি ফলমিতার্থঃ। সর্বেষাং সৎকর্মণাং ভগবদ্ধক্রিশাধনত্বাং তদভাবে চ বৈয়র্থ্যাপত্তেঃ। তদ্পতং ধর্মঃ স্বন্ধিতঃ পুংসামিত্যাদি॥২৩০॥ ২৩ মা বিবেকিনোপ্য ভক্তা শেচৎ সদা সংসারতঃখাদ্য নভবন্ত্যেবেত্যাহ। অহ্লীত। দিবসে আপৃত্যানি চ ভানি আর্গ্রানি চ ক্লিটানি করণানি ইন্দ্রিরাণি ঘেষাং রাত্রাবিপি স্থখনবোনান্তি ঘতোনিঃশয়ানাঃ স্বন্ধশনেন চ কণে কণে ভগ্পনিতাঃ দৈবেন আহতাঃ সর্বতঃ প্রতিহতাঃ অর্থরচনাঃ অর্থার্থোদ্যমা যেষাং ২০২। চীর্গানি ক্রতান্যপি ন নিজ্বনত্তি ন শোধ্যতি। মহতামপ্যশোধকত্বে দৃষ্টাত্তঃ স্বরাকুত্ত মাপগাইবেতি॥২৩৩॥ মঙ্গনং ঐহিকামু স্বিক্তেরঃ। হুদিস্থোপি ন স্যং। মনসাপি ন চিন্ত্যত্তিত্তিঃ। ২৩৪॥ হরিপুলাবিহীনভাদেব বেদাদিবিদ্বেষিণো রগক্ষসান্ত পরিকীর্ত্তিতাঃ।। ২৩৫॥ অসতেঃ ছন্টান্ তানেবাহ মুকুন্দপদার্বিন্দ্রোর্মকরন্ত্রপোরসঃ ভক্তির্জ্বাহিমুখান্।কথ্জিনান্ কান্তেঃ ভক্তিস্থাভিত্তিঃ রগবিবেকিভির্বাপ্রমহংশক্তান অত্ঞব নিষ্কিপ্রনিঃ অভিন্যান্বর্গেক্রান্তি রুমুক্তা। তাদশে মহারণে স্ক্তক্রণনপি যেহজিমুখা ন্তুত্বিভি তানিত্যর্থঃ। অসতাং ভক্তাপ্রমাহ নির্বব্য নি

রসাদজসুং। নি ক্ষিপ্তনৈঃ পরমহংসকুলৈরসজৈজু ফাঁ দিছে নিরয়বজুনি বদ্ধত্যান্।
১০৬। জিলান ৰক্তি ভগবদীগুনামধেয়ং চেতশ্চ ন মারতি তচ্চরণার বিদ্দং। কৃষ্ণার
নোনমতি যচিত্র একদাশি তানানয়ধুমসতোহকৃত বিষ্ণুক্ত্যান্।। ২৩৭।।

ভাগবতংলোকসুপহাসং নৃপোত্তম । করেতি ভস্য নশান্তি অর্থপর্মান । যেতি ভাগবতংলোকসুপহাসং নৃপোত্তম । করেতি ভস্য নশান্তি অর্থপর্মানশং সুতাং ।। ২০৮ ।। নিলাৎকুর্বন্তি যে সূচা বৈষ্ণবানাং মহাস্থানাং । পতন্তি পিতৃতিং সার্দ্ধং নহারেরবসংজ্ঞিতে ।। হত্তি নিল্ভি বৈ দ্বেটি বৈষ্ণবানাভিনল্ভি ৷ কুথা ত যাতি নোহর্ম দর্শনে পতনানি ষট্ ।।২০১ ।। তত্তিবাস্তসারোদ্ধারে ।। প্রীয় নোক্রো ।। জ্মপ্রভৃতি যথকিঞ্জিং সুকৃত্যং সমুপাজ্জিত্য । নাল্যায়াতি তৎ সর্বংং পাড়য়েল্যদি বৈক্ষব ন্ ।। দ্বারকামান্তো । প্রজ্ঞাদ বলি সম্বাদে ।। করপতৈশ্চ কালান্তে সুতীবৈর্যসশাসনাং । নিল্বাং কুর্বন্তি যে পাপা বৈষ্ণবানাং মহাস্থানাং । পজিতো ভগবান্ বিষ্ণুক্ত্রাত্রশতৈরপি । প্রসীদ্ভি ন বিশ্বান্তা বৈষ্ণবে চাপ্যানিতে । দশ্মক্ষান্ত্র চা নিল্বাং ভগবতং শৃণুংস্তৎপরস্য জনস্য বা । ততানাপৈতি যং সোপি যাত্যধংসুক্তান্তঃ ।২৪০। অতএবেক্তং শ্রিক্ত্র্থান্তরে । জীবিতং

শ্বধর্ম শূন্যে গৃহত অনিবেদিত ভোগাদৌ বা বন্ধান্ত কাথৈন্ত।ন্দ প্রার্থ মিহানায়ন্তং। এবং তেষাণ লকণং নিষ্ঠাচোক্তা।২৩৬। কিঞা যথ যেয়াং ক্সিক্তে দ্যুদ্মঃ। ন ক্লতং বিষ্ণুক্লতাং ভগবদ তুণ একাদশুপবাদ কার্ত্তিকনিয়মাদি বৈস্তাংশ্চ একদাপীত্যস্য পূর্ববাক্যন্তয়ে মুম্বন্ধঃ। অপিশব্দশাপি সর্ব্বভান্তসঙ্গং ততশ্চায়নর্থঃ ক্সিন্তবাপি গুণক তনামধেয়ং দীননংসলইত্যাদিকমপি ন বক্তীতি যথা কথিন্তিদেব নামোচ্চারণং। ভক্চ নিজার্ত্যাদি তেতনাপি নত্ত্বাম্বন্ধানপূর্বকং শ্রহ্ময়া শ্রিক্ষান্ত নাম সম্য গুচ্চাবণং করোতীত্যর্থঃ। এবং চেতোহপি তক্তরণারবিন্দ মপীতি যথাকথিন্তিমনোমাতেবিনাক্স্যাস্পর্শনং। নাম্ভ সর্ব্বাক্ষশ্য শ্রীমক্তরণারবিন্দয়োব্যা, সম্যক্ ধ্যানং। তথা শিরোপি ক্রফায়াপীতি। শিরোভিনমনমাত্রেণ বন্দমং ভক্ত ক্রফোদেশেন যং ক্ষিদপ্যালক্ষ্যেতি নন্ত সর্ব্বাক্তঃ সাক্ষাংও শ্রিক্তাদিকং বেতি। এবং কথিন্তিদপি শ্রীক্ষান্ত ক্রিস্ক্লিক্সিনা যে তানেবানয়ধ্যিতি। আত্রব ক্রিক্রাদিশক্ষপ্রয়োগঃ। অন্যথাক্সিক্রাদীনামের বচনাদিব্যাপারাৎ পুনস্তব্বক্রক্সক্রপ্রয়োগগরের্থ্যাপত্তেরিতি দিক্।।২৩৭।।

অসতাং নিষ্ঠামের বিশেষতোদর্শয়ন্ তেয়ু চাসৎয়ু মধ্যে বৈষ্ণবিষয়কাপরাধিনোৎসত্ত্বসমুখ্যাইতাভিপ্রেতা তেয়াঞ্চ নিষ্ঠাদিকং পূর্ব্বতোবিশেষেণ পৃথক্ লিখতি যোহীত্যাদিনা হচ্যুত্ত্বতাকেন ।২৩৮।ভাগবতং প্রতি হন্তি প্রহরতি দর্শনে সতাপি হর্ষণ্ড ন যাতি নাথে।তি৷ এতানি ষট্ পতনানি পাতিত্যাপাদকানি নরকাবহাণীত্যর্থঃ । ২৩৯ ॥ অস্তু তাবৎ বৈষ্ণবনিক্দাকারিণাং পরমানর্থঃ বৈষ্ণবনিক্দান্তোত্বামপি মহানরকং স্যাদিতি লিখতি নিক্দামিতি ॥ তত্ত্বসাৎ নিক্দান্তবিগাৎ তৎস্থানাতা । স্ক্রতাৎ পূর্বপ্রকৃতাদিপ পুণ্যান্ত্রতঃ সন্ অধোষাতি নিক্দাক্তা চ স্কৃতাক্ষ্যুতো অধোষাতীতি ক্ষিষ্ট্রতাদিপ পুণ্যান্ত্রতঃ সন্ অধোষাতি বিক্লাক্তা চ স্কৃতাক্ষ্যুতো অধোষাতীতি ক্ষিষ্ট্রতামিতাপি শক্ষার্থঃ ॥ ২৪০ ॥ অতোভগবদ্ধ

বিষ্ণু ভক্ত সঃ বরং পঞ্চিনানি চ। নন্ত কম্পসহসুতি ভক্তিহীনসঃ কেশবে ।। ২৪১।। অত এবাক্ত প্রভাগবভেএলোপাখ্যানান্তে ।। ততােদুঃ সঙ্গমুৎসৃজঃ সংসু সজ্যেত বুদ্ধিমান্। সন্তএবাসঃ ছিন্দন্তি মনোব্যাসঙ্গমুক্তিভিঃ ।। ২৪২ ।। অথ প্রভিগবভ্ততান্ সলক্ষণবিভূষিতান্। গত্বা তান্দূরতােদৃষ্টা দণ্ডবং প্রণমেলুদা ।। ২৪৩ ।।

তথ শ্রীবৈক্ষরসমাগমবিধিঃ ।। তেজাত্রবিণপঞ্চরাত্রে ।। বৈক্ষবোবৈক্ষবং দুট্যা দণ্ডবং প্রণমেন্তুরি ।। উভয়োরস্তরা বিষ্ণুঃ শশ্বচক্রগদাধরঃ ।। ২৪৪ ।। তত্রচ বিশেষোবৃহয়ারদীয়ে । সভায়াং যক্তশালায়াং দেবভায়তনেদ্বি । প্রত্যেক্স নমস্কারোহন্তি পুণ্যং পুরাক্ষতং ।। পুণ্যক্ষেত্রে পুণ্যতীর্থে স্বাধ্যায়সময়ে তথা। প্রেত্যকন্ত নমস্কারো হন্তিপুণ্যং পুরাক্ষতং ।।২৪৫ ।। বৈক্ষবঞ্চাগতং বীক্ষ্যাভিগম্যা লিছা বৈক্ষবং । বৈদেশিকং প্রীণয়ের্দ্র্রমন্ত স্বাহ্রা স্বিক্ষবান্ ।। তথাচোক্তং শ্রিক্রাণা তেলোত্রবিণ পঞ্চরাত্রে ।। নারায়ণাশ্রম ভক্তং দেশান্তরসমাগতং । প্রাণয়েরদর্শয়ংস্তাগ্র ভক্তা নারায়ণাশ্রমানিতি।।ততক্ষ বৈক্ষবং প্রাপ্তঃ সন্তর্প্য বচনান্তঃ । সদ্বন্ধ রিবসংসানেরহন্ত্রা দোষোমহান্ স্মৃতঃ ।। ২৪৬ ।।

অথ বৈক্ষবসন্মানন নিভাতা। স্কান্দে শ্রীনার্কণ্ডেয় ভগীরথসম্বাদে। দৃষ্টা ভাগবতং দ্রাং সংগ্রেঘন যাতি হি। ন গৃহ্লাতি হরিন্তন্য পূ কাৎদাদশবাধিকীং।যোন গৃহ্লা তি ভূপাল বৈক্ষবং গৃহমাগতং।তালৃহৎ পিতৃভিস্তাত্তৎ শাশানমিব ভ ষণং! অথবাভ্যাগতং দূরাং যোন চর্চাতি বৈক্ষবং। স্বশক্তা নৃপশাদ্ধ ল নানাঃ পাপরতম্ভঃ ৷১৪৭৷ শ্রান্তং ভাগবতং দৃষ্টা কঠিনং যস্য মানসং ৷ প্রসীদ্তি ন দৃষ্টা স্থাগতাদধিকোহি সঃ ! বিপ্রথ ভাগবতং দৃষ্টা দীনমাত্রনানসং ৷ ন করোতি পরিক্রাণং কেশবেংন প্রসীদ্তি। দৃষ্টা ভাগবতং বিপ্রথ নমস্কারেণ নার্জ্যেৎ। দেহিনস্ত স্য পাপস্য নচ

ক্তন্য সদ্যএব মরণং শ্রেয়ঃ চিরজীবনং চ.মহানর্থাধ্য়েবেত্যাশয়েন লিখতি জীবিতমিতি॥ ২৪১॥ সন্যোভগবদ্ধকাএব নন্ত কর্মজ্ঞানাদিপরাঃ । মনসোধ্যাসঙ্গং গৃহাদ্যাসক্তিং ক'মাদিসম্বস্ধয়া। উক্তিভিঃ হিতোপদেশৈঃ॥ ২৪২॥ সন্তিরুত্তবৈষ্ঠিপুসুদ্রাধারণাদিভিল্ল ক্ষণৈবিব্ভিষিতান্। ২৪৩।

বৈক্ষবে। বৈক্ষবং দৃষ্ট্য প্রণমেদিতি ছয়োরন্যোন্যমের প্রণামোভিপ্রেতঃ। অত এব তয়েরজ্ত-রোর্মধ্যবিষ্ণু ভ্রবিতি তিইতীত্যর্থঃ। যটে কোর্ম্মে ব্যাস্থালি লয়াং ন কুর্যাদেষাভিবাদস্য দ্বিজঃ প্রত্যাভিবাদনং। নাভিবাদ্যঃ ন বিছ্যা যথা শুদ্রস্তবৈর সং ইতি প্রত্যভিবাদনমাত্রমুক্তং। তট স্মার্ভ-ক্রপরমিতি ভ্রেয়ং। যদা অভিযাদনপ্রত্যভিবাদনাভ্যাং প্রণামপ্রতিপ্রণামবাচিত্যামন্যোন্য নমকার এবঃভিপ্রেতইতি॥ ২৪৯॥ তত্রচ সর্বান্ নভান্থিতান্ একব্রৈর প্রণমেন্তর প্রত্যেকমিতি লিথতি সভায়ামিতি॥ ২৪৫॥ এবং যাত্রিকস্য কৃত্যং লিথিত্বা সভ্যানামপি কৃত্যং লিগতি বৈষ্ণ-বঞ্চত্যাদিনা পূজাভ্যধিকেত্যন্থেন। বৈদেশিকং দূরদেশাদাগতঞ্বেং। স্বনীয়ান্ বৈষ্ণবান্দর্শস্তঃ তরন্নামকথনাদিনা পরিচয়ং কারয়ন্তঃ সন্তঃ। ২৪৬ ।।

मुतार मृतरम्भाष्टा । বিষয় কিটনং মেহার্ড ন স্যাৎ। নচ প্রসীদতি। অভ: স্থব

दि कमा उ हिंदे। अशृिक उपामा शाक दिक्य वा गृहरम थिनः । भेठकमा कि उ पृश् श्वामा शाक वि ।। २८৮ ।। अने जा कि शिल् म् एम्बाम् जू क्षा के हिंदा मादा । उ था भार के जून विक्याना मिल्कि मा ।। २८० ।। श्वामा के स्वामा के विकास के स्वामा के स्वा

ছুষ্টাত্মা শ্বপচাদপ্যধিক: প্রমাধমইত্যর্থ: । নমস্কারেণাপি নার্চ্চরেৎ ॥ ২০৮ ॥ হরিবাদরে চ যে ভুঞ্জতে তেবাং যৎ পাপং তং । অভিক্রমে অপুজনাদিনাপরাধে সভি ॥ ১৯৯॥ নরকাতিথিঃ বহুলনরকছংখং চিরং ভুঙ্জইতার্থ: ॥ ২৫০॥ ব্যালানামালয়াক্রমাএব । অরিক্রাঃ পূণাঃ অধিলাঃ সম্পদোষেষু তাদৃশা অপি । যক্ষ্যা বে গৃহাঃ ভীর্থপাদীয় বৈক্ষবাস্তেশং পাদভীর্থেন পাদেশকেন বা বিবর্জ্জিতাঃ॥২৫১॥

বচনাম্তৈঃ সন্তর্গোতি লিখিতং তান্যেব লিখতি ধন্যোহমিত্যাদীনি সপ্ত । অত চ কিন্যাহমিত্যাদি বচনপাঠেন তদর্থনির্বাচনেন বা স্তৃতিঃ কায্যেতি জ্ঞেয়ং ॥ ২৫২ ॥ যথ শক্ষাৎ যেভাঃ পুণুপুঞ্জেভা ইতি বা ॥ ২৫৩ ॥ মহতাং স্বাত্রমাদন্য বিচলনং গমনং ন স্বার্থং কিন্তু গৃহিণাং মঙ্গলায় । নত্ন তহি তএব মহদ্দর্শনার্থং কিমিতি নাগজন্তি তত্রাহ দীন চেত্রসাং ক্রপণানাং) ক্রণমপি গৃহং তাজ মুদশকু বহামিতার্থঃ । যদ্বা । গৃহিণাং নিঃশ্রোমায় মহতাং বিচলনং ভগবৎপুঞ্জাপরতাদিস্বর্শাত্যাগোহপি বর্পতে যোগাংভবতি । কুতঃ দীন-চেত্রসাং সদা পরমার্জানামিত্যর্থঃ স্বর্থনেপেক্ষণাথ নচ কুচিং কদাচিদপি শ্রন্যথা পুঞ্জাহলাভাদিতার্থঃ ॥ ২৫৪ ॥ মঞ্চলময়নং ঘেষাং হেমঞ্জায়নাঃ । ময়া কিং মঞ্চলমাচরিতং যগ্য মে । ঘোগিভিরপি ছর্দ্দর্শালাং ॥ ২৫৫ ॥ যেবাং সাধুনাং গৃহাংঅহাণাং পূজ্যানং বর্য্যাবরণীয়াঃ স্বীকরোহাঃ চর্যোতি পাঠে আচরণযোগ্যঃ । অস্বাদ্যোয়েষু ভাদুশাঃ অসুচ ভূণঞ ভূনিশ্চ স্ব্রাগ্রহ স্বামী চ অবরাশ্চ ভ্রাদ্যঃ ॥ ২৫৬ ॥ হেনাথাঃ । ক্রিটিদিতি প্রশ্নে ।

কুশলং নাথাঃ ইন্দুিয়ার্থার্থ বেদিনাং। ব্যসনাবাপ এতিসান্ পতিতানাং স্বক্ষতিঃ। ২৫৭। ভবংসু কুশলং প্রশ্ন তাজারামেষু নেব্যতে। কুশলাকুশলা হত্র ন স্বি স্তিব্রয়ঃ।। ২৫৮।।

ত্রথ বৈজ্বাভিগ্নন্যাহাত্ম ং । স্কান্দে জ্রীমার্কজ্যেভগীরথ সম্বাদে । সংসুখংব্রজ্ব মানস্য বৈক্ষবানাং নরাধিপ । পদে পদে যক্তফলং প্রাভ্রং পৌরাণিক। দিকাং।।২৫৯।।

তথ বৈষ্ণবস্থ তিনাছাত্র । তেত্রের । প্রভাক্ষণ বা পরোক্ষণ বা যা প্রশান সতি বৈষ্ণবং । ব্রহ্মছা নদ্যপাং স্থেয়ী ওরুগানী সদা নৃথাং । সুচ্যতে পাতকাৎ নদে)বিষ্ণুরাত নৃপোত্রম । ১৬০।। কিঞ্চা প্রভাক্ষণ বা পরোক্ষণ বা যে প্রশংসতি বৈষ্ণবং । প্রসাদাদ্বাসুদ্বস্য তে তর্তি ভববিবং । ১৬১ ।।

অথ শ্রীবৈষ্ণবস্থানন মাহাঝাং ।। তত্তিবাস্তসারোদ্ধারে ।। শ্রেরা দত্তমঞ্চ বৈষ্ণবানিষু জীর্যাতি । তদনং মেরুণা তল্যং ভবতে চ দিনে দিনে ।। দেবে গৈতে চ বোদদ্যাথ বারিমাত্র বৈষ্ণবে । সপ্তোদ্ধিসমৎ জুলা পিলুণামুপতি ছতি ।। বিষ্ণুপথাে । কিং দানৈং কিং তপোভিবা যক্তৈশ্চ বিবিধঃ রুতিঃ । হরুৎ সম্পাদ্যাত পুংসং বিষ্ণুভক্তাভিপূজনাং । পূজ্যেংবৈষ্ণবানেতান্ প্রয়েন বিচক্ষরং । মুণাক্যাং বৈষ্ণবেভাাযদ্দর্থ সাদক্ষয়ং ভবেং । বৃহন্নার্দ্যায় হজ্মানু পাশ্চান্থা । হরিভ ক্তিরতান্ যন্ত হরিবুদ্যা প্রপূজ্যেং। তস্য ভব তি বিপ্রেল্ ক্রম্বিষ্ণু শিনাদ্বাং। ছবি পূলারতানাক্ষ হরিনামরতালানাং। শুশ্রমাভি রতা যাতি পাশিনাদ্বাং। ছবি পূলারতানাক্ষ হরিনামরতালানাং। শুশ্রমাভি রতা যাতি পাশিনাদ্বাং। ছবি পূলারতানাক্ষ হরিনামরতালানাং। শুশ্রমাভি রতা যাতি পাশিনাদি পারাংগতিং। তবৈর যজ্পুলোপাধ্যানস্থারয়ে । সংসার সাগ্রং তবং য ইচ্ছেনু নিপুষ্ণবাং । স ভলেন্ধরিভক্তান ৭ ভক্তাংয়ে পাপাহারিওঃ ।। ২৬৩ ।। তাল্ডের বিশ্বজ্জান্ নিদ্ধামান্ ভোজায় থ শ্রদ্ধান্তিভঃ । তিসপ্তক্লসংস্ক্রঃ স্বাতি হরিমন্দিরং । বিষ্ণুভক্তায় যোদদ্যানিষ্কামায় মহাজ্বনে। পানীয়ন্বা ফলং

সর্বাদোষনির্হারকত্বাদৈক্ষবাএবাগ্নয়ন্তেষু জীব্যতে। স্থং তৈভূজ্তিতেইত্যর্থ:। হে বিপ্রে-জ্রাঃ।।২৬২।। তে হরিভক্তাঃ।পাপং সংসারত্বংতদপ্রারিণঃ।।২৬৩॥

ই দ্রিয়ার্থং বিষয়মের অর্থং পুরুষার্থং যে বিদন্তি তেবাং নঃ ॥ বাসনানি উপাত্তে যদ্মিন্ সংসারে ॥ ২৫৭ ॥ নত্ন ভাগরত নামের কুশলং পৃচ্ছতে নত্নভালত ভাহ ভবংগ্রিত। কুশলা অকুশলাশচ মতের ব্যোহিপি বেলাং ন সন্থি॥ ২৫৮ ॥

এবং বৈষ্ণবানামভিগমনং সন্ধাননং স্তৃতিঞ্ লিথিয়া ইদ'নীং তত্তনাহাল্যং লিথতি সংম্থ-মিত্যাদিনা নরাইত্যন্তেন ॥ ২৫৯॥

গুরুগামী গুরুত পোগঃ ন্ণাং মধ্যে নরইতি পাঠোবা ॥২৬০॥ যদাপি ম্থালিখনক মং বৈক্ষবদ্যানন্মাহাজ্যানন্তরমের বৈক্ষবস্তুতিমাহাত্মাং লিখিস্তমুপ্যুজ্যতে তথাপি প্রথমং স্তৃতিস্ততঃ সংমানন্মিত্যপেক্ষয়া তথা সংমানন্মাহাজ্যস্য বাছল্যান্ট ত্স্য পশ্চালিখনং ॥২৬১॥

বালি সএব ভগবান্ হরিঃ। বিষ্ণুপূজা পরাণান্ত শুক্রবাং কুর্বতে হি যে। তে হান্তি বিষ্ণুভবনৎ ত্রিসপ্ত পুরুষান্তিভাঃ। দেবপূজাপরোষস্যা পূহে বসতি সর্বদাণ তত্ত্বর সমনেবাদ্য হরিদৈন্ব প্রিয়ান্তিভাই ৬৪। লৈকে। নারায়ণ পরোবিদ্যান্ ইস্যান্তং প্রতিভাগে হরিদৈন্ব প্রিয়ান্তিভাই ৬৪। লৈকে। নারায়ণ পরোবিদ্যান্ ইস্যান্তং প্রতিভাগে । আনানি বিশ্বারা প্রতিভাভবিতি মাধবঃ। দৃট্যু ভাগবতস্যান্তং সভুত্তে ভক্তবৎসলঃ। ই৬৫।। ত্রাক্ষে জ্রাজাবদান্তং । কৈবেদ্যং পুরতোন্যন্তং দৃষ্ট্যুব স্বীক্তং ময়া। ভক্তস্য ক্রমাঞ্জে রসমন্ত্রামি পল্ল ।। ই৬৬।। পালোভরখণ্ডে জ্রালিবােমা সম্বাদে। আরাধনানাৎ সর্ক্ষের বিষ্ণোরারাধনৎ পরি । তালাং পরভরং দেবি তদীয়ানাং সমর্জনং। ই৬৭। অর্জয়িত্বা ত গোবিন্দাৎ তদীমানার্ত্রেভু যঃ। ন স ভাগবতোত্রেঃ কেবেং দান্তিকঃ স্মৃত্য । ভল্লাং সর্ব্বেশ্বেন বৈক্ষবান্ পূক্রেং সদা। সর্বাৎ হরিভি দুর্ঘীমাণ্ড মহাদে। মন্তক্ত পূজাভ বিকা ।। ২০০ ।। কিন্তে স্কান্দে । জ্রিমার্কণ্ডের ভগীর্থ সম্বাদে। কর্মানা নলাং। হেহর্লি সদা হরিং । তেলাৎ বাক্রং নবৈরু কার্মাং তেলি বিক্রুমনা নলাং। ২০১।। ইত্যাদ্ভেন্দ্নেন্গুলুলাক্তি ভালাকি তর চ । জ্রিলাবত মহাপি স্মানা নলাং। ১০১।। ইত্যাদ্ভেন্দ্ন্নুল্লাক্তি স্বান্তানি তর চ । জ্রিলাবত মহাপি স্বানী ন্ত্যাঃ মুক্ত ।।২০২।।

ভাষা বৈশ্বশান্ত্রন হিছিল। হোল গীব্রন্ধ নারদুসন্থাদে । বৈশ্বনি চ শান্ত্রনি যে প্রতি গঠন্ডি চ। গণ্যান্তে আনবা লোকে ভেষাং ক্রমণ প্রসীদতি।।২৭৩।। বৈশ্বনি চ শান্ত্রনি বেইচ্টান্তি পূজননাং । স্বস্থাপ বিনিলুক্তি ভব্দি স্থা

ভক্তিশান্তাদীনাঞ্যৈ প্রত্যেকং মাহান্তাং লিখিয়ানাদৌ সামান্যতো বিষণুভক্তিসমন্তিন শান্তমাহান্তাং লিখতি। বৈষ্ণবানীত্যাদিনা সদেত্যত্তেন। পূর্বঞ্চ পূকাঙ্গত্বেন স্বপনে পুরাণ-পাঠদ্য মাহান্তাং লিখিতং অধুনা চ পূকানন্তরং সংসঙ্গে বৈষ্ণবশান্ত্রশ্রবণাদীনাং মাহান্তামিতি ভেদঃ। কিন্ত প্রান্থেরেক্যাৎ তত্র লিখিতং মাহান্ত্যমত্রলিখিতং তত্তচেতি॥২৭৩॥

দেশ শিল্পান্ত স্থান্ত পরিং ।। ২৬৪।। স ভক্তবৎসলো মাধলং জিক্লকং ।। ২৬৫।। প্রভং জিশাল্ডাম শিল্পানি দ্বিশ্ব পরি । বিভাগের সংলাদ্বিশ্ব পরি । বিভাগের কার্যানি সাল্ডার । বিভাগার কার্যানি লাল্ডার । বিভাগার কার্যানি লাল্ডার । বিলালির । বিভাগার বিভাগার কার্যানির লাল্ডার । বিভাগার কার্যানির লাল্ডার লাল্ডার । বিভাগার বিভাগার লাল্ডার শুলুরার । বিভাগার ভাগার শুলুরার । তার ভিজ্ঞার লাল্ডার ভাগার ভাগার বিভাগার ভাগার ভ

বিলিভাঃ । সর্বিশ্বেনাপি বিপ্রেল্পু কর্ত্ব্যঃ শাস্ত্রসংগ্রহঃ । বৈশ্ববৈদ্ধ মহাভক্ত্যা ভাইটার্যং চক্রপানিলঃ । ভিঠতে বৈশ্বং শাস্ত্রং লিখিতং যদ্য মলিরে । ভত্র নারা-রণোদেবঃ যারংবদভি নারদ । পৌরাগং বৈশ্বং শ্লোকং শ্লোকার্প্রয়াপি চ । শ্লোকপালং পঠেল্যন্ত গোসহন্ত্রং লভে । । ২৭৪ ।। দেইভানাস্বীগাঞ্চ যোগিনা মাপ দুর্লভিং । বিপ্রেল্পু বৈশ্বংশাস্ত্রং মনুষ্যাগাঞ্চ কাকথা ।। ভত্রৈব শ্রক্তর্গাল্ভু নি সমাদে । মম শাস্ত্রানি যে নিভাই পূজয়ন্তি পঠন্তি চ । ভে নরাঃ কৃরুশাদ্র্লি মমা-ভিথাই গভাই সদা ।। ২৭৫ ।। মন্শাস্ত্র প্রবন্ধারং মম শাস্ত্রানু চিন্তকং । চিন্তু-মানি ন সন্দেহে। নরং ভং চাল্বাহে সদা ।। ২৭৬ ।।

অথ প্রীমন্ত্রাগ্যতমাহার্যং । তত্তিব । জাবিতাদধিকৎ যেবাং শাস্তং ভাগবতৎ ক লা । ন তেবাং ভবতি কেশোলাম্যঃ কলাশতৈরপি। ধাররন্তি গৃহে নিত্যং শাস্তাং ভাগবতৎ লিয়ে। আক্ষোট্যন্তি বল্গন্তি তেবাং শান্তাঃ পিতামহাঃ । ২৭৭। যাবিজিলানি বিপ্রার্থ শাস্তাং ভাগবতং গৃহে । তাবং পিবন্তি পিতরঃ জারং মর্পিন র্যপুদকং। যেই গ্রিতি নদা, গোহে শাস্তাং ভাগবতং নরাঃ।র্প্র নিতাত্তিশ্চ বিবুধা যাবদা- ভূতমংপ্রং । ২৭৮ । যাজ্যি বৈশ্বে ভক্ত্যাং শাস্ত্রং ভাগবতং হি যে । কল্পেন্টেন্তস্থানি বিষ্ণালা ক বসনি তে। শ্লোকান্তং শ্লোকপাদং বা বরং ভাগবতং গ্রেচ । শতশোভ্য সহস্থৈতি কিমন্যাঃ শাস্ত্রসংগ্রহঃ ।। ২৭৯ ।।

পৌরাণং পুরাণসম্বিক্ষণ বিষয় প্রং । ২৭৪। আতিথ্যং অতিথিবং প্রমাদ্রণীয়তা-মিতার্থঃ । ১৭৫॥ চিত্য়ামি ক্লাচিনপি ন বিস্মর্থমীতার্থঃ । বদ্ধা তিন্য যোগক্ষেমসুসন্দধে ।২৭৬।

প্রীতাঃ ছাটাঃ সন্তঃ বল্গন্তি হত্যাদিকং কুষান্তি। ২৭৭।। আহুতেত্যত্র ভকারস্থানে হকার-শ্চান্দসঃ। ভূতসংপ্লবোনহাপ্রলয়ন্তৎপর্যান্তং ।।২৭৮॥ ভারতেং ইভাগবতীয়মিতার্থঃ।।২৭১॥

শ্রীভাগবতসং গ্রহ্মা নিতাতামাহ ন যুগোতি ঘাতাং ।।২৮।। বিশ্বং তৎপাঠাদাবন্তরায়ং।

বিদ্যাচরতে পুথান্ । নাভিনন্দতি দুন্ধীত্মা কুলানাং পাত্যেচ্ছতং ।। ২৮১ ।। পালে গৌতমায়রীষন্যাদে । অয়রীষ শুকপ্রোক্তং নিতাং ভাগবতং শূলু । পঠষ স্বাধুখনাপি স্দীচ্চ সি ভবক্ষয়ং । শ্লোকং ভাগবতং বাপি শ্লোকার্দ্ধং পদমেব বা । লিখিতং ভিউতে যসঃ গৃ.হ তস্য সদা হরিঃ । বসতে নাত্র সন্দেহোদেব-দেবোজনার্দ্দিরঃ ।। দ্বারকামাহাত্মে শ্রীনার্কপ্রেইন্দু দু মুস্যাদে । শ্রীসম্মাগবতং শাস্ত্রং পাঠতে কৃষ্ণস্থিপৌ । কুলকোটিশতৈ মুক্তঃ ক্রীড়তে যোগিভিঃ স্থা । ২৮২ ।। গারু ড় । আর্থায়ং ব্রক্ষারাণং ভারভার্থবিনির্বঃ । গারুবীভাষ্য কপোসৌ বেলার্থপরিকৃং হিতঃ প্রাণানাৎ সামক্ষণং সাক্ষাম্যুগবতা দিতঃ দাদশক্ষর যুক্তোহয়ং শতবিচ্ছেদসংযুক্তঃ । প্রস্থান্দিনাৎ সামক্ষাহসুঃ শ্রীমদ্বাগ্রভাগিত ভিগঃ । ২৮৩ । তিন্দিরেব ভাগবতে প্রযুক্ষক্ষে । ধর্মঃ প্রোজ্বিতকৈতবাহত পর্যোনির্যাহ্য সরাণাং স্বাং বিদ্যাহ্য বাস্ত্রাগবতে

নচ তদভিনক্তি যঃ॥২৮১॥ কুফস্মিধৌ ক্রীড়তি। বোগিভিঃ ভক্তিযোগপরৈঃ। যৃদ্ধ কুন্ সংযোগৰ ভিঃ সহ ক্ৰীড়তি ॥ ২৮২ ॥ একান্ত্ৰাণ'ং বেদান্তসূত্ৰণং পূৱাণ'নাং মধ্যে গামৰূপঃ শ্রেষ্ট ইত্যর্যঃ। সাবেতি বা পাঠঃ। বিজ্ঞেদঃ প্রানেণানি ॥ ২৮০॥ তথা স্বতঃ প্রনাণভূতানাং বেদানাং স্কাণেয়ৰ বচনানি প্ৰমাণভূতানি তথা স্কাবেদফলস্য শ্ৰীভাগৰত্য্য বচনান্যেৰ স্বৰ্থ প্রমপ্রমাণ ভূতানীতি তৈরেৰ ত্যাহাল্যঃ লিখতি। ধর্ম ইত্যাদিভিঃ । তত্র প্রথমং শ্রে ভূপ্রবর্তনার জীভাগৰতদ্য কাণ্ডত্রনিষ্নেভাঃ সর্কাশস্ত্রেভাঃ শৈষ্ঠাং দশর্ভি ধর্মাইতি । অত্র শীম্তি ম্সারে সংক্ষাৎ ভক্তিসম্পত্তিমতি বা ভাগৰতে প্রমোধর্মোনিরপ্যতে। সাক্ষাদেবাস্থীতিবা। এতং সেব-রৈর স স্বতঃ প্রাপ্তঃস্যাদিতি ভারঃ। পরমত্বে ছেত্তঃ। প্রকর্ষেণ উজ্ঝিতং ত্যক্তং কৈত্বং ফলাভি-স্ক্রিলফণং ক্রটং যুস্মিন সং । প্রণুক্তেন মোক্ষাভিস্ক্রিরপি নিরস্তঃ। কেবলমীখুরারাধনলক্ষ্ণো-ধর্মইত্যর্থঃ। অধিকাবিতোপি ধর্মদ্য পরমত্বমাহ নির্মংসরাণাং।পরে!একর্যাস্থলং মংস্র।তদ্রহি-ভানাং সভাংভূত।ভুকম্পিনাং। যদা প্রমন্ত্তেত্য়া প্রোজ্ঝিতকৈত্বস্থমের প্রতিপাদয়তি । মৎ-সরকারণে বর্ত্তনানেপি মৎসরহীনানাং সতাং ভগ : ভক্তানামিত্যর্থঃ। কর্মিণাং স্পর্দ্ধাদিছে ভু সদ্ধা-বেন মংশরস্বভাবত্ব ও জ্ঞানিনাঞ্চ কর্মাদিপরিত্যাপেন মংশরকারণাভাবাং। ভক্তানাম্ভ পূজাদি ভাবদ্ধর্মপরাণাং কর্মিণামির মংশর্মন্তবৈপি ভক্তিস্বভাবেন পরপার্মাস্ক্র্যা ভগবৎক্থাশ্রবণা-দিনান্যোনং প্রীতিসংপস্ত্যা মৎসরাদিদোষাত্তপতেঃ এব° কর্মকাণ্ডবিয়য়েভ্যঃ শাস্ত্রেভ্যঃ **ভ্যে**ট্য মুক্তং 1 জ্ঞানকাণ্ডবিষয়েভ্যোপি শ্রৈষ্ঠ্যমাহ বেদ্যমিতি 1 বাস্তবং প্রমার্থভূতং বস্তু বেদ্যং 1 নস্ত বৈশেষিকাণানিব দ্ৰৱাগুণাদিৰপং। यहा বাস্তবশক্তেন বস্তুনোইংশোজীবঃ বস্তুনঃ শক্তিমায়া চ বস্তুনঃ ক'ৰ্য্য: জগুক্ত। তৎপৰ্বাং বস্ত্বে ন'ৰ ততঃ পৃথ গিতি। বেদ্যং অয়ত্নেনৈৰ জ্ঞাতুং শক্যং। ততঃ কিমতলাহ। নিবদং প্রমসুখদং। অধ্যাত্ম কাদিত প্রয়োল্লনঞ্। যথা বস্তু সারভূতং ভগবদ্ধ জিলকণং ত্যাপি বস্তু প্রেম তং বেদ্যু প্রাপ্যং। বিদ লাভইত্যক্ষাং। এবং সাধন সাধক সাধ্যবারা ক্রেণ শৈষ্ঠ্যং দর্শিতং । কর্ত্যেপি শৈষ্ঠ্যমাহ মহামুনিঃ শ্রীনারারণস্তেন প্রথমতঃ

নহামুনিকতে কিংবাপরৈরীশ্বা নদ্যোহাদ্যবার্ধ্যতেইতা কৃতিভিঃ শুশ্রমুভিন্তৎক্ষণাৎ
। ২৮৪। ইদংভাগবতং নাম পুরাণং ব্রহ্মসন্মিতং। উত্তমশ্লোক চরিতং চকার ভগ্রনিক্ষিঃ। ২৮৫। নিঃ শ্রেরসায় লোকস্যধন্যং স্বত্যুনং মহৎ।তদিদং গ্রাহ্যামাস
সূত্যাত্মবতাং বরং। সর্ববেদেভিহাসানাং সারং সার্হ্ সমুদ্ধুহং।। ২৮৬।। কিংগু।

সংক্ষেপেণ ক্তে। দেবভাকাগুগতং শৈষ্ঠ্যমাহ। পটনঃ শাত্রৈস্তত্ত্বসাধনৈর্কা ঈশ্বরোক্দি কিং বা সদাএব অবরুধাতে স্থিরীক্রিয়তে । বাশকঃ কটাকে কিন্তু বিলয়েন কথ্ঞিদের। অত্র ত্ত স্থ্যায় ভিঃ শুে জমিচ্ছদ্ধিরপি তৎকণাদবরুধাতে । যদ্ধা। অপরেঃ প্রয়োজনৈর্বনিতিঃ কিং সদ্যঃ সম্পুতি স্থিতো য ঈশ্বরঃ এক্কুফঃ । তদবতার্টেগ্যব নিরন্তবর্ণনে জ্রীভাগ্যতপ্রবৃত্তেঃ। সহা अमान **म**भरमाव श्नावक्षार उ প্রকটসব্বাঙ্গলাবণ্য তত্তল্লীলাপরিকরপরিবারাদি স্তিতঃ সাক্ষাদিব সদাস্কুয়তইত্যুর্থঃ। যদ্ধা হৃদি স্থিতোযঃ সোহবরুধাতে সাক্ষালিজস্মীপং প্রাগাতে। কীদৃশঃ স নির্বান্ত্রমযোগ্যায়ঃ ক্ষণঃ মরণকালইত্যর্থঃ তমন্তি নাশয়তীতি তথা সঃ। মরণাদি সংসারদুঃগৃহস্তে তার্থঃ। যদ। সু অনির্বাচনীয়ঃ ক্ষণঃ উৎসবঃ মুক্তিলক্ষণস্তমন্তি নিজভক্তি মহিমা নিরস্যতি তথা সং । যদা তং প্রসিদ্ধং কংণং ইন্দ্রমহঃ অন্তি জীগোবর্দ্ধনপূজাপ্রবর্তনেন হর্তি সং। যকা তত্মিন্ গ্রীগোবর্জনমতোৎসবে তদখিল বলিভক্ষণেনে পিচার।ত্তমের অবি ভ করতীতি তথা সং। বলিমাদাৎ বৃহদ্বপুরিতি ভবৈবোক্তেঃ। যদ্বা ভাসাং জীগোপীনাং তন্যা বা ঞীবাপায়াঃ তল্পাপ্রহণ্ গৌরবাদিনা ক্ষণ্ গৃহাদ্যশেষােৎসবং ব'হ্যান্তরঞ প্রেমবিশেষ নিস্থারণেন প্রায়োবিরহতঃথপ্রদানেন বা নাশয়তীতি তথা সং। এতচ শীভাগবভামৃতে বিস্তরতো নিখিতমন্তি। এবং সর্বেধা এক্ষএবেত্যর্থঃ এভাগবতেহিমন্ এক্ষটেস্যব নায়কত্ত্বন প্রধান্যাহ তথাচ। যং কুতঃ কুঞ্সংপ্রশা ইত্যত্ত শীস্বামিপাদৈর্ব্যাখ্যাতং । যতঃ কুঞ্বিষয়ঃ প্রশাং কুতঃ দর্বাশাস্ত্রপারোদ্ধারপ্রশ্নস্যাপি শ্রীক্লফে পর্যাবদানাদিতি অতএব তত্তত্পাখ্যানালেঃ দর্বস্যাপি ব্ৰীরুঞ্তব তাংপর্যাৎ সাক্ষাদেব ভাতীতি দিক্। নতু তর্হি ইদমেব দর্বে কিমিতি ন শূণুদ্ধি তত্তাহ ক্লতিভিঃ। এতৎ প্রবণেচ্ছান্ত পুলৈুর্ক্কিনা নোৎপদ্যতইত্যর্থঃ।যদ্বা ক্লতিভিঃ পণ্ডিতৈঃ।সদস্বিচারা-ভাবেনাগ্য শুক্রাষ্যকুৎপত্তে:। এবং সর্ক্থা সর্ক্তঃ ভৈছিগাদিদমেব নিতামবশ্যং শোতবামিতি ভাবঃ।। ২৮৪।। ইদং পুরাণং ভাগবতং নাম এভাগেবতসংজ্ঞং। যদ্বা নামপুরাণং নামপ্রধানং পুরাণমিদমিতার্থঃ। দর্ববৈত্রব বিশেষতোভগবন্নামমাহাত্মপ্রতিপাদনাৎ। ত্রহ্মদন্মিতং দর্ববেদ-লুল্যং। যদ্ধা অন্টাদশসাহসূীসংহিতারপেণ সংমিতং পরিমিতমেব প্রাপ্তং পরত্র দৈব। ক্লে স্বধামোপগতে ইত্যাদিবক্ষ্যমাণস্বাং। উত্তমশ্লোকস্য চরিতং যশ্মিন্তং। যদা উত্তমাঃ সর্বতঃ শ্রেষ্ঠাঃ উত্তমসোবা তমো অজ্ঞানাদিছঃখং তলিবর্ত্তকাঃ স্লোকাঃ পদ্যানি চরিতানি চাথ্যানানি যশ্মিন্। ভগৰানেৰ ক্ষিঃ ব্যাসৰূপঃ সন্চকার নিৰবন্ধা।। ২৮৫॥ ধন্যং ধনাবহং । স্বস্তায়নং সর্ব্বমঞ্চপ্রাপকং। যদ্ধা প্রেমধনাবছমত এব সর্ব্বমঞ্চলাশ্রাং। কিঞ্চ । মহৎ সর্ব্বোৎক্রইং স্বতঃ প্রমফলৰাপমেৰেত্যর্থঃ। তপ্তস্মাদেৰ হেতোঃ স্থতং শ্রীশুকদেৰং। মহন্ত্মেৰাভিৰ্যঞ্জয়তি দর্বেতি সারমভিধেয়েষু শ্রেষ্ঠং বীপ্সয়া সর্বাৎ সারমিত্যর্ধঃ। সমুজ্ ভমিত্যনেন কীরোদমহাসাগরাদমত-মেবেতি স্থচিতং। অতএব আশ্ববতাং ধীরাণাং জীবয়া ক্রানাং বা বরং পরমন্তক্তত্বাৎ। অতএব তং আহ্য়ামান। অন্যথা তশ্যাত্র প্রবৃত্তাশন্তবাদিতি দিক্॥২৮৬॥ বুহি যোগেশ্বরে কৃষ্ণে ত্রন্ধণ্যে

রুষে স্বধানোপগতে ধর্মজ্ঞানাদিভিঃ সহা কলো নউদৃশামেষ পুরাণার্কোইধুনোদিভঃ
যা ২৮৭ ।। কিঞা অনর্থোপশামংসাকাদ্ধক্তি যোগমধোক্ষকে। লোকস্যা কানতোব্যাস্চক্রে সাত্মত্মংহিতাং ।।২৮৮॥ • যস্যাং বৈ ভারমাণারাং রুক্ষে পরম পূরুষে।
ভক্তিরুংপদ্যতে পুংসঃ শোকমোহ ভয়াপহা ।। ২৮৯ ।। দ্বিভীয়ে শুকোক্তো। পরিনিষ্ঠিতোহপি নৈগুণ্য উত্তম শ্লোক লীলয়া।গৃহীতচেতা রাজর্ষে আখ্যানং যদ্ধীতবান্ ।২৯০। ভদহৎ তেইভিধাস্যামি মহাপৌরুষিকোভবান্যস্প্রাদ্ধতামাশুস্যালুকুন্দেমভিঃ সতী ।২৯১। দাদশে চারাক্ষন্তে তাবদন্যানি পুরাণানি সতাংগণে। যাবদ্ধগবতং নৈব ভারতেইস্তসাগরঃ ।। ২৯২ ।। সর্ববেদান্তমারংহি শ্রীভাগবত মিষ্যতে ।
তদ্রসামৃত ত্পুস্য নান্ত্র স্যাদ্রতিঃ কৃচিৎ । নিমুগানাৎ যথা গঙ্গা দেবানামচুত্তোযথা । বৈষ্ণবানাৎ যথা শাসুঃ পুরাণানা মিদন্তথা। ২৯৩। শ্রীমন্তাগবতং পুরাণ্যমল্লং
যবৈষ্ণবানাং প্রিয়ং যান্মন্ পারমহৎস্যমেক সমলং জ্ঞানংপরং গীরতে। হত্ত জ্ঞান

দর্মাবর্মাণ । স্বাং কাষ্ঠামধুনোপেতে ধর্মঃ কং শরণং গতঃ । ইত্যস্য জ্রীশৌনকাদিপ্রশ্নস্য উত্তর-মাহ রুফেতি। স্বধাম বৈকুণ্ঠমুপগতে সতি। অধুনা কলে। নউচ্শাং সতাং লোকানাং এষ ভাগব-তাগ্যঃ পুরাণার্কঃ ধর্মাদিভিঃ সহ উদিতঃ যথাকোদেয়ে তমোনাশাঞ্চক রিক্তিয়প্রবৃত্ত্যা দৃশ্যং দৃশ্যেত। তথাদ্য প্রাকট্যেন সর্ব্বাজ্ঞাননিবৃত্তের্ভক্তিপ্রবৃত্ত্যা শ্রীকৃষ্ণঃ দাক্ষাদিব প্রাপ্যতইত্যর্থঃ ॥ ২৮৭॥ সাক্ষাদেব অনর্থং সংসারং। যদা ন অর্থোভক্তিলক্ষণো যশ্মিন্তং মোক্ষং উপশম-য়তীতি তথা তং ভক্তিযোগমজানতোলোকস্যার্থে সাত্রতসংহিতাং এভাগবতাখ্যং ॥২৮৮॥ অনর্থোপশনং দশ্য়তি যস্যামিতি। জায়মাণায়ামেব কিং পুনঃ ক্রতায়ামিত্যর্থ:। পরমপূরুষে পুরুষোন্তমে। ভব্তি ঃপুরুষোত্তম বিষয়ক ভাববিশেষঃ। পুংসঃ যদ্য কদ্যচিজ্ঞানদ্যেত্যর্থঃ। শেকিঃ সংসারিত্বাদিনাস্তাপঃ মোহস্তমূলমজ্ঞানং ভয়ং সংসারঃ তান্যপহন্তীতি তথা সা। যদ্বা শোকঃ ভগবদ্পাপ্ত্যাহনুতাপঃ মোহঃ গৃহাদ্যাশক্তিঃ ভয়ং লোকাদিভাঃ তান্যপহন্তীতি তথা সা। এত-চ্চানর্থ্যপ্রশমতারপমামুষক্ষিকফলং দর্শিতং । ২৮৯॥ ব্রহ্মানন্দপরিনিষ্ঠিতস্য প্রথাদরায়ণে রেতদধ্যয়নে প্রবৃত্ত্যাঃ পরমফলত্বং দশ্রন্ ভদ্বদেনৈব লিখতি পরিনিষ্ঠিত ইতি। গৃতীতচেতা আকৃষ্টিন্তি:। আখ্যানং জীভাগৰতৰূপং। । ২৯০। মহাপুরুষো ভগৰান্ জীকুষণন্তদীয়ঃ। এবং বৈষ্ণবেম্বের শ্রীভাগবভমভিধেয়মিত্যক্তং। যস্য যশ্মিন্ শ্রন্ধাং কুর্বেতামপি। সতী অহৈতুকী মতিঃ প্রেমেত্যর্থ:।। ২৯১ ।। অমৃতং ভগবন্তক্তিরসঃ তদ্য দাগরঃ।। ২৯২ ॥ তদ্রসঃ তদ্যাস্থাদনং তৎ-প্রীতিব্বা সএবামৃতং তেন তৃপ্তস্য অন্যত্র বেদাস্তাদৌ!! ২৯৩॥ বৈষ্ণবানাং প্রিয়ত্ত্বে ছেতূনাই। বিশিলিত্যাদিন। পরমহং**লৈঃ প্রা**প্যং যদ্বা পরমহংসানামপি হিতং পরং জ্ঞানং ভগবস্তক্তিমাহা-স্মাদি বিষয়ং। অতোহ্মলং দৰ্বমলনিবৰ্ত্তকং। অতএব শ্ৰীভাগৰতে ব্যাখ্যাতং আদে জ্ঞানং তত-় স্তত্ত্ব বেদনং ততোবিরাগঃবিষয়াদি বৈরাগ্যং ততোভক্তিশ্চ শ্রবণাদি লক্ষণা তৎ সহিতং নৈক্ষ্য্যং নিম্বর্দ্ধাণো ভগবন্তজ্ঞাতৈঃ প্রাপ্যং ভগবৎ প্রেম আবিষ্কৃতং সাক্ষাদিব দর্শিতং। এতৎ প্রবণাদি প্রস্থাপ্র স্বতত্তংশিক্ষে:।তং শ্রীমন্তাগবতং ভক্ত্যা সূণুন্ বিপঠন্ কীর্ত্তয়ন্ বিচারণ পরশ্চ তদর্থং বিরাগ ভক্তিসহিতং নৈক্ষ্য মাবিজ্তং ভচ্ছুণুন্ বিপঠন্ বিচারণ পরোভজ্যাবিশুচ্যেন্নঃ ।। ২৯৪ ।। অভএবোক্তং । নিগম কংপভরোগলিতং কলং
শুকারুগাদম্ভদ্রসংমৃতং । পিবত ভাগকিং রসমালয়ং মৃত্রহো রসিকাভুবি
ভাবুকাঃ ।। ২৯৫ ।। কিঞ্চ । যংস্থানু ভাবমথিল তাতিসারমেক মধ্যাত্মদীপ মতি তিতীষভাংভমোন্ধং । সংসারিণাং করুণয়াহ পুরাণ খহাং তংব্যাস সূনুমুপ্যামি গুরুং
মুনীনাং ।। ২৯৬ ।। ভগবজন্ম বক্তারং ভগবচ্ছান্ত বাচকং । বৈক্ষবং গুরু বড্তজ্যা
পূজ্যেজ্জানদায়কং ।। ২৯৭ ।।

বিচাররংশ্চ সন্ নরঃ সংক্রাজনঃ বিশেষেণ মুচ্যতে শ্রীবৈকুঠলোকং প্রাপ্রোভীত্যর্থঃ।। ২৯৪।। এবং প্রায়ঃ সাধনরপত্বমস্য দর্শিতং অধ্না স্বতঃ প্রমফলরপত্বং দর্শয়ন্ সর্বাদা প্রমাদরে-ণেদমেব দেব্যমিতি লিখতি নিগমেতি । নিগমোবেদঃ ন এব কণ্পতরুঃ নর্ব্বপুরুষার্থোপায়ত্বাৎ শেবকসাণ ভাষ্ট পূরকত্বাদা। তসা ফলমিদং জীভাগবতংনাম । তত্তু বৈকুঠগতং নারদেনানীয় ঞিব্যাসায় দত্তং তেনচ শ্ৰিশুকমুখে নিহিতং তচ্চ তন্মুখাৰ্ডুবি গলিতং শিষ্য প্ৰশিষ্যাদি ৰূপ পল্লৰ পরম্পারয়া শটেনর গওমেবাবভীর্ণং নভ্চনেপাতেন কুটিত মিত্যর্থঃ । অত এবাম্ভরপেণ দ্ৰবেণ সংখুতং। লোকে হি শুকমুখস্পৃষ্টিং ফলমমূতমিব স্বাদু ভবতীতি প্ৰসিদ্ধং । অত্তন্ত শংকোমুনিঃ। অমৃতং প্রমাননদঃ স্ত্র দ্রবোরসঃ। রুণো বৈ সং রুসং ছোব লব্ধুনন্দী ভবতীতি শ্রুতে । যদা দ্বয়তি জগচিত্তমাদ্রবয়তীতি দ্রুবঃ স্থ্র প্রম মধ্রত্বাদিনা অমৃত্রপঃ জিক্লফ চরণারবিন্দ বিষয়ক প্রেমেভার্যঃ। অতঃ হেরসিকাঃ। ভত্তাপি ভারুকাঃ রসবিশেষ ভারুবনা চন্তরাঃ। অংহা ভুবি গলিত মিত্যলভ্য লাভে।ক্তিঃ। ইদং ভাগবতং নাম ফলং মুহুঃ পিবত। নহু-ত্বগন্ধ্যাদিকং বিহায় কলদ্ৰাসঃ পীয়তে কথং ফলমেব পাতব্যং। তত্ৰাচ রসং রসৰপং। অভস্তু-গক্যাদেছেরাংশস্যাভাবাৎ ফলমেব কুৎস্নং পিবত । অত্রচ রসতাদাত্মবিবক্ষয়া রসবস্ত্রস্যা বিব-ক্ষিতত্ত্বাৎ অগুণ বচনেপি রম্বশব্দে মগুপঃ প্রাপ্ত্যভাবাৎ তেন বিনৈব রসংকলমিতি সামানাধিক-্ রণাং।অত্র ফলমিত্যুক্তে পানাসম্ভবো হেয়াংশ প্রসক্তিশ্চ ভবেদিতি তলিবৃত্তার্থং রসমিত্যুক্তং। রদমিত্যুক্তেহপি গলিত্স্য রুদ্য পান্তমশক্যত্তাৎ ফলমিত্যুক্তমিতি দ্রন্থবিং। নচ ভাগবতামূত-পানং মোকেঃপি ত্যাজ্য মিত্যাহ। আলরং লয়োমোকঃ অভিবিধাবাকারঃলয়মভিব্যাপ্য। নহীদং चर्नामि मुथवर मुरेक करशकाः किस्र मिदा मितवारी विकाश कि जाजातामान मूनसा निर्धा है। অপ্যুক্তকে ইত্যাদি॥২৯৫॥ এবং শ্রীভাগবত স্যা সাধারণ ম। হাত্মা মেব দর্শয়ন্ তচ্চোপসংহরন্ ভক্ত্যা তত্র প্রবক্তারং ঞীব্যাসনন্দন মাশ্রেয়তি ষ্ইতি। অন্ধং গাঢ়স্তমঃ সংসারাখ্যং মায়াখ্যয়া। অত্যন্তং সমাক্তরা তরিত্তমিচ্ছ্তাং সংসারিণাং জনানাং করুণয়া তদিষয় রূপয়া যঃ পুরাণেষু মধ্যে গুঞ্ গোপ্যমাহ। গোপ্যত্বে হেউত্ত্বেন চত্বারি বিশেষণানি । স্থোনি জঃ অসাধারণঃ অমুভাবঃ প্রভাব ঈশ্বরঃ সদ্যোহ্নদ্যবরুধ্যত ইত্যাদি রূপোয্স্য । অথিণ শ্রুতীনাং সারং । একং অদি-তীয় মমুপম মিত্যর্থঃ । আন্ধানং কার্য্য কারণ সম্বাধক্ত্য বর্তমানমাল্পভল্পমধ্যালং । যদ্বা আত্মানং ভগবন্তং হরিমধিকুত্য বর্ত্তমান মধ্যাত্মং তৎপ্রসাদৈকণভ্যং তৎপ্রেমত্যর্ধ:। তস্য-मीशः नाकार প্রকাশকং। উপযাসি শরণং ব্রক্ষামি॥२৯७॥ श्रुक्रमंख्याशासके। তদৎ জ্ঞানস্য ভগৰদ্ধन्यानिविषय्कमा नासकः ভগবৎ শাস্ত্র বাচনেন ভগবদ্ধন্ম প্রভিপাদনাৎ ॥ ২৯৭॥

অথ প্রভিগবছাত্র বক্ত্মাহাত্রাং। নারদ পঞ্চরাত্রে। খ্রান্ প্রতি প্রীশান্তিলাক্রে। বিষ্ণবজার বিজ্ঞারং যোবিদ্যাদ্বিশ্বদারে । পূজ্যেদ্বাত্রনং কার্যিঃ স্মান্ত্রন্থ দ্বাত্রন্থ বিষ্ণবলার থাকি পাদস্য কলাপি যং পূজ্যঃ স সদৈব হি। কিংপুনর্ভগবিষ্ণভাগ স্বাত্রন্থ স্বাত্রন্থ স্বাত্রন্থ প্রত্যান্ত্রন্থ পরিং ক্রন্ম তজ্জানেনাথ গম্যতে। জ্ঞানস্য সাধনং শাস্ত্রং শাস্ত্রক্ষ গুরুষকু গং। ক্রন্মপ্রতি বিভাগের্বিধীনা সদৈব হি। হেত্তনানেন বৈ বিপ্রাণ্ডরুক্তর্কু ক্রন্থ শৃত্যা ২৯৯। হক্ষাদ্বেলিগ্রাথং ক্র্যামর্ভ্যব্রী কর্মান্দ্রেরে লোকান্ কারুণাচ্চাত্র-পানিনা ।। ৩০০।। তক্ষান্তুক্তির্বেরী কার্য্যা সংসার্ভয়ভীরুণা । শাস্ত্রানেন যোহজানং তিনিরং বিনিপাত্রেখা শাস্ত্রং পাপহর্ম পুণ্যা পরিত্র ভোগমোক্ষদ্যা শান্তিদক্ষ মহার্থক্ষ বক্তি যঃ সজ্যক্ষ্মিয়া ৩০০ ।।

অথ জীক্ষলীলাকথাশ্রবণমাহাত্যাৎ ।। তত্র পাপাদিশোধকত্বং । কালে ব্রহ্মনারদস্যাদে। তেবাৎ ক্ষাণিং মছৎপাপং বর্ষকোটিশতোদ্ধ্রথ। বিপ্রেন্দু নাল্ডি সন্দেহো যে শৃণুন্তি হরেঃ কথাং। তত্রবান্যত্র । সর্বাশ্রমাভিগমনৎ সর্বভাগাব-গাহনং। ন তথা পাবনং নৃণাং নারায়ণকথা যথা।। ৩০২।। বৃহয়ারদীয়ে হত্ত-পুজোপাখানারন্তে। অভা হরিকথা লোকে পাপঘু পুণ্যদায়িনা। শৃণুতাং ক্রম্বতা ক্ষেব তদ্ধাবানাং বিশেষতঃ। ৩০৩। প্রথমক্ষক্ষে। শৃণুতাং স্বকথাঃ কৃষ্ণঃ পুণ্যশ্রমানাং কিলেষতঃ। ৩০৩। প্রথমক্ষক্ষে। শৃণুতাং স্বকথাঃ কৃষ্ণঃ পুণ্যশ্রমানাং কিলেষতঃ। ৩০৩। দ্রাশ্রানাং বিদ্যাশ্রতাধ্যয়নদানতপঃ ক্রিয়াভিঃ। স্থানি গাং নতু তথেডা দ্রাশ্রানাং বিদ্যাশ্রতাধ্যয়নদানতপঃ ক্রিয়াভিঃ।

স্থাৰপং তত্ত্বং তদ্ধেশিকাছাস্থাং ॥ ২৯৮॥ হে বিপ্ৰাঃ ॥ ২৯৯॥ শাস্ত্ৰমেব পাণিঃ উদ্ধার-হেতুত্বাৎ তেন ॥ ৩০০ ॥ মহানৰ্থঃ ভক্তিলক্ষণোযস্মান্তৎ ॥ ৩০১॥ -

সংক্ষিযামাশ্রমানাং ব্রহ্মচর্য্যাদীনাং অভিগমনং ক্রমেণ তত্ত্বর্ধান্ন ঠানং। কথেতি সামান্যতো
যদ্যপি কথায়াঃ শ্রবণং কীর্ত্তনাদিকং চোক্তং সাহে তথাপি শ্রণানন্তরমের কীর্ত্তনাদি সন্তবতীতি
ভাদে শ্রণাপেক্ষা। যদ্য শ্রবণ সতি স্থত্তব কীর্ত্তনাদি সিদ্ধাতীতি। কথায়াং শ্রবণসা প্রাধান্যাভিপ্রায়েণ পদ্যমেতদত্র সংগৃহীতং। কিঞ্চ শৃণুতাং ক্রবতামিত্যাদৌ চ যদ্যপি কীর্ত্তনাদেরপি
স্পান্টং মাহাত্মামূচ্যতে তথাপি শ্রবণ প্রকরণেই ব্রহ্মিনাই তত্ত্বর্ধান্ত কথাপি শ্রবণ প্রকরণেই ব্রহ্মিনাই ক্রমান কদাচিই বক্তা কদাচিই শ্রেছা
যুগপদ্য শ্রবণাদিকর্ত্তিরাই শ্রবণকীর্ত্তনাদিমিশ্রিতপ্রকরণং শ্রীবিষ্ণুপুরাণনিধিতামুসারেণ পৃথক্
কম্পান্তব্যং। তার চ প্রয়োজনবিশেষাভাবেন গ্রন্থবিস্তরভ্রেন চ ন নিথিতামিতি দিক্ এবমন্যদপ্রস্থং।। ৩০২।। তস্যাং ইরি কথায়াং ভাবোভক্তির্ফেবাং ভেষাং। ৩০৩। পুণ্যে শূরণকীর্ত্তনে
যাস্য সং৷ ক্রমি যানি অভন্তাণি কামাদিবাসনান্তানি। শ্রম্ভং ক্রদেয়ন্থং সন্ সতাং কথাশ্রবণাদিপরাশৃং স্কর্থ হিত্তকারী ॥ ৩০৪।। বে ঈভ্য হে শ্বম্ভ। অধ্যান্তরণং বিদ্যাভাবিং বিদ্যাদিভিত্তথা
ভিন্তির্কাভব্রি। শ্রের বিদ্যা উপাসনা। প্রভঙ্গ শান্তবং শান্তবং শ্রাহান (বেদাভাানঃ। তপঃ স্বর্ধ্যাচরণং

সন্ত্রাপ্তনামূবত তে যশনি প্রবৃদ্ধ সংশ্রদ্ধরা প্রবণ সংভূতরা যথা দ্যাৎ ।। ৩০৫ ।।
ক্রুড়া দিসর্বাদুংথ নিবর্ত্তরত্ব । দশনে জীবাদরায়ণিং প্রতি জীপরিক্ষিদুক্তে ।
নৈষাতিদুংসহা ক্র্নাং ত্যক্তোদমপি বাধতে । পিবন্তং প্রন্ধাপদ্রনাশনং । সর্বদুংথোপশন্তর ।। ৩০৬।। স্কান্দে চ তত্রবাজীপদং বিষ্ণুচরিতং সর্বোপদ্রনাশনং । সর্বদুংথোপশন্তর দুই গ্রহনিবারণং ।। প্রকর্ষণ সর্বনম্পন কারিত্বং তত্রব। প্রোতব্যং
সাধুচরিতং যশোধর্ম জয়ার্থিতিঃ । পাপক্রয়র্থং দেবর্ষে স্বর্গার্থং ধর্মাবৃদ্ধিতিঃ ।
আয়রু ব্যার্থাস্বর্ত্তর যশার্থা প্রার্থিকিঃ । চরিতং বৈক্ষরং নিত্যং শ্রোতব্যং সাধু
বুদ্ধিনা । কুটু মুকৃদ্ধিং বিজয়ং শত্রনাশং যশোবলং । করোতি বিষ্ণুচরিতং সর্বাদ্ধিক। করা কলপ্রদং ।। ৩০৭ ।। সর্বাসংক্রমা কলপ্রধ । প্রথমস্কল্কে । ধ্রমাঃ স্বনু ভিতঃ

ক্রিয়া নজ্ঞাদয়ঃ। সত্মাত্মনাং সভাং তে যশসি শ্রবণেন সম্ভ্রমা পরিপুট্যয়া অভিবৃদ্ধয়া সংশ্রদ্ধা উত্তমপ্রতিয়া পরমানরেণ বা যদ্ধ। সতামিব শ্রদ্ধরা আন্তিক্যমাত্রেণাপি যথাস্যাৎ যদ্ধ। শুদ্ধির্নস্যাদি ভাত কেন্তঃ ছরাশয়:নাং বিদ্যাদিভিরেব ছ্ফাভিমানবতাং সতামিতি শুদ্ধিঃ স্যাদিত্যত্র হেন্তঃ ৷ যশসি প্রবৃদ্ধ সংশ্রদ্ধরৈৰ সত্মাত্মনাং শুদ্ধচিত্রানাং সতামিতি । যদা। ছেসত্মাত্মনামূষভ সাত্ত-বর্গপ্রভো তুরাশ্যানামপি যশসি প্রবৃদ্ধ সংশ্রদ্ধরা যথা শুদ্ধিঃ স্যাৎ তথা বিদ্যাদিভিন্ স্যাৎ। যদ্ধা তথা সত্মাত্মনাং সাত্মিকানামপি বিদ্যাদিভির্নস্যাৎ ভগবৎকথাশ্রবণাভাবাৎ॥ ৩০৫॥ এষা স্ত অনশনব্রতোথা সর্বানর্থমূলভূতা সদ্যোমহার্ত্তিপ্রদত্ত্বেন সর্বৈরহুভূয়মানা বা অন্যেষামতি-ছঃসহাপি মাং ত্যক্তোদমপি ন বাধতে ন পীড়য়তি। যদা কায়িকব্যাপারাদিবাধমপি নাচরুতি কুতঃ সর্বাদ্রঃখং হরতীতি হরিস্তদ্য কথৈবামৃতং তৎপিবস্তং । ভক্ষ স্বন্ধান্তোজচ্যুতমিতি গুণ-বিশেষোদশিতঃ। হরিকথামূতপানাভাবে চ সদ্যুত্র জীবনং ন স্যাদিত্যর্থঃ।। ৩০৬ ॥ কিং বছ-নোক্তেন শক্ষেষামের কামানাং বাঞ্ছানাং কলং প্রকর্ষেণ দদাতীতি তথা তথা। ৩০৭॥ যোধর্ম-ইতি প্রসিদ্ধঃ স যদি বিঘক্তোনকথাস্থ রতিংনোৎপাদয়েং তহি স্বস্ঠিতোপি সন্ অয়ং প্রমো-জ্ঞেয়ঃ। কথাস্থিতি বছত্তং গৌরবেণ যাস্ক কান্ত চিদিত্যেতৎ বিবক্ষয়া বা। নমু মোক্ষাদ্যর্থস্য ধর্মাণ্য আমত্রমস্ত্রের অভআহ। কেবলং বিফলআমইতার্থঃ। ভগবংকথারতানুংপত্ত্যা মোকা-গিন্ধেঃ নিজ্ঞপাধ্যভগবৎকথারভ্যসুৎপাদনাদ্ধ। নহস্তি তত্রাপি স্বর্গাদিফলমিত্যাশক্ষ্য এব-কারেণ নিরাকরোতি। ক্ষয়িঞ্জান তৎফলমিতার্থঃ। নম্বক্ষয়াং ইবৈ চাপ্তর্মাসা্যাজিনঃ স্থক্তং ভবতীত্যাদি প্রতের তৎকল্যা ক্ষয়িষ্টুত্বমিত্যাশক্ষ্য চিশক্ষেন সাধয়তি তদ্বৎ যথেই কর্মজিতো লোকঃ ক্ষীয়তে এবমেৰামুত্ৰ পুণ্য জিতোলোকঃ ক্ষীয়তে ইতি তৰ্কামুগৃহীতয়া শ্ৰুত্যা ক্ষয়প্ৰতি পাদনাং। যদা নমু সত্ত জিলারা মোকঃ কলমস্ত ততাহ কেবলমিতি তথাপি বিকলপ্রমএবেতি ভাবঃ বৈষ্ণবৈৰ্মোক্ষণ্যাপ্যনাদৃতত্ত্বাৎ। যদ্ধা নমু ভক্তিবিশ্বৰূপবিবিধনংসারছঃথনিরসনার্থং তেষা-মপ্যুদাবপেক্ষ্যঃ স্যাৎ তত্ৰাছ এবেতি তথাপি ত্ৰ্যাতিউচ্ছত্বাৎ কেবলং আমএবেতি ভাবঃ। নমু মোক্ষঃ পরমপুরুষার্থোবেদাস্তাদৌ প্রসিদ্ধঃ তত্তাহ হীতি। অজ্ঞানসংজ্ঞৌ ভববন্ধমোকাবিত্যা-দিভিশ্বচনৈর্মোক্ষন্য মায়িকত্তলাতাপ্রতিপাদনাৎ। তচ্চ বিস্তরেণ শ্রীভাগবতামূতোত্তরথণ্ডে ব্যক্ত

## कि विकास कि विकास ।



পুংসাং বিষ্ফোনকথাসু ষঃ । নোৎপাদয়েদদে রতিং শ্রমঞ্জ কি কেবলং । ৩০৮ ।।
শোলেশ্বিসাফল্যকারিছং । তৃতীয়ে শ্রীবিদুর দৈতেরসম্বাদে । একান্তলাভং বচসোলুপংসাং সুশ্লোকমৌলেও বিবাদমাভঃ । শুনভেশ্চ বিদ্ধিরূপারভায়াং কথা সুধারামুপসংপ্রেরাগং ।। ৩০১ ।। তারুঃ সাফল্যকারিছাং দিওটিয় শৌনকোক্তো ।।
আয়ুর্ভরিতি বৈ পুংসামুদ্যরস্বাধ মন্দেনা । তস্যর্ভে হৎক্ষণোনীত উভ্নাল্লাকবার্ভরা ।। ৩২০ ।। পরনবৈরাগ্যোৎপাদকত্বং । তৃতীয়ে বিদুরোক্তো । সা
শ্রমধানস্য বিবর্জমানা বিরক্তিমন্ত্রক করোতি প্ংসঃ । হরেঃ পদানুস্তি নির্
তস্য সমন্তদুংখাপ্যয়মাশু ধত্বে ।। ৩১১ ।। চন্তর্থে শ্রিপ্রুচরিভান্তে শ্রীনেরেয়োক্তো । ছিল্লান্থারিধিগতাত্মগতিনিরীই তত্ত্যকে ছিল্দিদেং বহুনেন বেন ।
তাবেল যোগগতিতিরভিরপ্রমন্তো যাবদাদাপ্রজকথাসু রতিং ন কুর্মাণ্ড ।। ৩১২ ।।
একাদশে চ শ্রীভগবত্তং প্রভ্যানবেরাক্যে । তব বিত্রীভিতং ক্রুন্ত্রণং পরম মঞ্জনং ।
কর্ণপারুষমান্ত্রালয় তাক্রনাস্পৃহাং জনাঃ ।। ৩১৩ ।। সংসারভারকত্বং । চন্তর্থে
প্রচেতসঃ প্রতি শ্রীভগবদুভো । গৃহেব্যবিশ্বভালাপি পুংসাং কুশলকর্মণাং । মদ্যাতাবাত্যানানাং ন বল্লায় গৃহা মতাঃ ।। ৩১৪ ।। স্বার্থপ্রাপ্রত্বং । ফ্রান্দে ভব্রের

মেব স্তি। এবং জ্বিফকথারত্যুৎপাদনমেব সর্বাধর্ম্মকলমিতি তাৎপর্য্যং।। ৩০৮॥ একান্সতো লাভং ফলং মু নিশ্চিতমান্তঃ। ত্রুতঃ গ্রে:ত্রদ্য চ। উপাক্কভায়াং নিক্সপিতায়াং। উপদংপ্রয়োগং সর্বিধাবপুণং।। ৩০৯।। অসৌ সুর্য্যান উলাক্তন্ অন্তমদশনগু যন্ গজ্ন্ যৎ যেন ক্রে। নীতঃ তৃদ্যায় জীবনকালং ঋতে বর্জ্ঞায়িত্বা হরতি। এবং শ্রীভগবদ্ব:র্তারহিত্স্য বৃটেথবায়ুগাঁজ্তি। একদাপি এভগৰৎকথরা নর্বমেবায়ুঃ সফলং স্যাদিতি ভাবঃ॥৩১০॥ সা হরিকথা আদ-ধানদ্য প্রীতিং বিশ্বাসং বা কুর্বতঃ। তয়া বিনা তাদুশবিরক্তাদিক্ষেঃ প্রবৃত্যভাবাচ্চ। যদ্বা আস্তি-কামাত্রং কুর্বভোহপি প্রংমাত্রন্য। অন্যত্র গ্রামান্ত্রে হ্রিকথাব্যভিরিক্তে বা দর্বত। ততঃ কিন্ত আহ হরেরিতি। হরেঃ পাদয়োরত্ব অৃতিঃনিরন্তরশারণং তয়া নির্ভিস্য সতঃ।। ৩১১।। ছিলা विनकी अगर्थीः पराश्रद्धिर्फिराखरादियग्रकदृक्षिक्ष। छक्तिगाउतिककान। मिवियग्रकदृक्षिक्ष। ৰদা দঃ বতঃ অধিগতা অধিকং প্রাপ্ত। আত্মগতিঃ আত্মতত্ত্বং ত্রীক্লংফাবা ওন্তুক্তির্বা মেন সঃ। অত এব নিরীহঃ প্রাপ্তাস্থ সিদ্ধিদ্পি নিজ্যুহঃ। দেহাদ্যর্থচেষ্টারহিতো বা। কিঞ যেন ব্যুদেন कारनन हेनः शूर्विकिश मरमाप्रभार मानाविकानः वा हिटक्त । उर उद्याका मृथुः उर अय-জাদপাপররামেতার্বঃ। কলে বিজে বাধন গ্রনাক্পপত্তে। তস্যানিমাদিবিজের চতর্বিধ-त्यारकप्रि निष्ण् इत्र युक्करमत्वणाइ जावमाश्रमकः किस व्यमखाजवत्ज्य । यजिक्कानितिछी-পি। অতঃ পূথোঃ প্রকৃষ্ণকরারত্যা তত্ত তত্ত্ব ন লোভোজোত ইত্যর্থঃ।। ৩১২।। আনাদ্য প্রীত্যা निम्मा अनात्रान् विवस्तकात्रात्मी (मात्कक्षित्म हार ॥ ७५०॥ । आविमला आनका नित-नेकानि । कुनलश्मनिक्क कर्षा (प्रवार । महार्कत्री पाटणवामः कालः अकथार्त्रमारकावा स्ववार । बाबवात्र मणाः किस गरगात्रवस्ताव्वादेवदं केस्टाः तस्तिविज्ञार्थः॥ ७७८ ॥ वस्त दस्तात्रव । यदा

ধন থিকা নমোকানাং যদিউপ নৃণানিকা তৎস্ক্রং লাভতে বংশ করাই কালা ছারেঃ
সদা ।। ৩১৫ ।। স্বাদশেচ ঐশুকোন্তো। সংসার সিন্ধুই তিদু বৃহয় বৃতিতার নিন্ধার লগে লালা লালা লালাকথা রসনিষেবণ মন্তরেন পুৎসোত বেছি বিধদুংখদবাদি তিস্য ।। ৩১৬ ।। স্বারকা নাহান্তো। নিত্যং রক্ষকথা তস্য প্রাণাদিশি
পরীয়সী । ন তস্য দুর্লান্তং কি ফি দিছ লোকে পরত্র চ ।। ৩১৭ ।। স্বিভীয়ক্তার ।
ত্রানং যদা প্রতিনিন্ত্র গুণোমি চক্র সাক্ষপ্রদাদ উত্ত যত্র শুণেষ্ণকঃ। কৈবলা সমতেপ্রস্থা তল্তিযোগঃ কোনিব্ তোহরিকখা সুরতিং ন কুর্যাৎ।। ৩১৮ ।। নোক্রাধিকত্বং দশনক্ষের । প্রতিন্তর্তী। দুরবগনা স্বান্তর্বিন্ন নায় ত্রান্ত নোশ্চরিত মহান্তান্ত্রি পরিবর্ত্তির প্রশালাঃ । ন পরিলম্ভি কে চিদ্পবর্গ মণীশ্বর তে চরণ্ন রোজ
হংদকুলসঙ্গবিস্টগ্রাঃ ।। ৩১৯ ।। তৃতীয়ক্তরে ঐকি পিলদেবছ তিসম্বাদে ।। বৈকাল্ডাঙ্গে লেক্সান্তর্থি কে চিন্প্রাণ্ডাভাগ্রভাঃ

হরেন্দ্রিস সম্বাধিকথাং বহুসপালনলীলাবার্দ্তামিতার্থঃ ॥ ৩:৫॥ বিবিধং তঃধ্যের দাবানলঃ তেনার্দিত্র পীজ্তিস্য। অত উত্তিতীর্ষোঃ পুংসঃ ভাগতে। বা লীলাকথান্তাসাংবসন্তনিষেকণ মত্বেণ অন্যঃ প্লবঃ উত্থারণসাধনং ন ভবেং ॥ ১১৬॥ প্রাণাদপি কথা গরীয়নীতি নিজ্ঞীবনা-पनि कथाञ्चन । दिनो यमा मिक्किति छ। वै: ॥ ७५१ ॥ यथ नाय कथाय छ। ने ख । की मृन्ध । स्वा সর্বেতঃ প্রতিনিবৃত্তং উপরতং গুৰ্ণামীণাং রাগাদীনাং চক্রং সমূকোয়নাং । তদ্ধেওর।অংনামনসং প্রদাদক যত্র যায়।আত্মপ্রাদর্যেরঃ গুণেরু বিষয়েরু অসকোবৈরাগ্যক। উভরত্রেতি পাঠে ইহা-মুত্র চ গুণেদসঙ্গং। অথ ভত্তদনন্তরং কৈবল্যমিভ্যেব সম্মতঃ পত্তা ধোভজ্ঞিধোগঃ স্চ ভব্তি নিতৃতিঃ প্রবণ স্বধেন অন্যত্র নিত্তিইতি বা ।৷ ৩১৮ ॥ ভোঈশ্বর দুর্ব্বোধং বৎ আল্লনন্তব ভল্বুং ত্যা নিগমায় জ্ঞাপনায় ত্যাভতনোঃ আবিষ্ত্তভি: ৷ চরিতমেব মহামৃতারিঃ তন্মিন্ পরি-বর্জেবিগাছভেন পরিঅসণাঃ পরিক্তির্জনার্থঃ অমণং অমঃ গতঅমাইত্যর্থঃ। যরা তৎপরিঅসণ-মভ্যাসোদেশং তে। যদা চরিতমহামৃতাকোঃ পরিবর্তান্তরকাত্তের পরিশাশা কৃতপরিশীলনাঃ ত্ত্রমধুরকথার সসেবিনইতার্থঃ। অপবর্গমিপি ন পরিলগন্তি নেচ্ছন্তি কুতোইনাৎ। কেচিদিতি এব-ন্ত তা ভক্তিরসিকা বিরলাইতি দর্শয়তি। ন কেবল মন্যন্নেচ্ছন্তি কিন্তু ভেনৈৰ হুথেন পূর্ণাঃ দন্তঃ পুर्वानिक गृहा क्रिथ प्रभूर (१९००) एउ हे छा है। उन हत्र गर्वा एक इश्माहेन देव प्रमाण (य इक्सा खर्वा কুলং তেন সক্ষতেন বিস্ফা গৃছা বৈন্তে তথা। বদা চারতমহামূতা বিপরিবর্তপরিশান বিদ্ধান চরণসরোজ হংসকুল দক্ষ বিষয় ইংলাই তি । অর্থস্ত তথৈব । আতি চ মুজেরপ্যাধিকাং ভারে ব वि । यर नर्स्य दिना नमश्चि मूमूकर शांजकारा मिन एक जि । गांथा । व नर्स रेक जी गाहि है। । मूजा व्यशि तीलगा विवादः कृषा व्यवसः व्यवसः हेकि ॥ ७,०॥ त्याकापशि व्यक्तनिकंपत्यवाभ পাৰ্যতি নৈকাপতামিতি একপ্ৰতাং কামুজ্যমোকং। প্ৰাদসেবাভিয়তখনেবাছ। এদীৰা সদৰ্থ-त्मव अर् । व्यवनानिक्तिशानिकानाता (यसार। जात्नवाजिताकाति द्वारे कि। व्यवका व्यानिकर कृद्ा श्रीक्रवाणि वैयानि वज्यक्त्रहरू खदनकीर्जनामिया नश्यामग्रित । खन्दकाजारकम करनामा श्रीविद्यकः श्रीक्रवकाकनमा याकादिकात्रमविद्यादमिकः । अवस्य अतिकेषः विक्रविकि প্রস্কার সভাক্ষরতে ময় পৌরুষ। নি ।। ৩২০।। বৈকুপ্রালকপ্রাপকত্বং । দ্বিভারে প্রস্তুতাক্রে । পিবলি যে ভগবত আত্মনং সভাং কথা দৃতং প্রবন্ধ তিবু সংভূতং । পুনন্ধি তে বিষয় বিদুষিতা শয়ং প্রস্কৃতি ভল্তরণসরোক্ষ হাত্তিকং ।। ৩২১ ।। ভূতীয়ে কপিলদেবজ্ঞ তোঁ। পানেন তে দেব কথা সুধায়াং প্রবৃদ্ধ ভল্তর । বিষয় শাষা যে। বৈরগার-সারং প্রক্রিলভার বোধং যথাপ্রসাহীয় বকুপ্রিক্যং।। ৩২২ ।। ক্রাদ্দে অমৃত সারোক্ষারে । প্রিয়মস্য দৃতা নুশাসনে । যে শৃণুত্তি কথাং বিফোর্যে পাঠান্তি হয়েং কথাং । কুলামুতং নাবলোক্যাৎ গতান্তে প্রক্রালাখতং ।৩২০। মস্য বিষ্ণুক থালাগৈ নিভিত্যৎ প্রমৃদিত ২ মনং। তস্য ন চাবতে লক্ষান্তং শল্প করে হিতং ।৩২৪। প্রেমসম্পাদকত্ম দ্বাদালীক্র্যান হা বিজুক থালাগৈ নিভিত্যৎ শৃণুয়ান ভাক্রিক কারিত্বং নাক্রিক থালাকপ্রণানু বাদং সঙ্গীয়তেই ভাক্রিমমঙ্গলমুঃ । তনের নিভতং শৃণুয়ান ভাক্র্যাক প্রশাক্তি লাক্রিক মতা প্রমান ।। ৩২৫ ।। প্রভাবে কারিত্বং ।। হালেক ।। হাল যার যার মহাপাল বৈষ্ণবা বর্ত্তে কথা । তার তার হারিক গৌর্যাক্রিক সুব্রহণ কারিত্বং শিক্তর ক্রিক্রালি গৌর্যাক্রিক নিভতং মহকথা প্রস্কালিক হালিক হা

দিক্। ৩২০। সতাংজ্ঞানিনামাত্মনঃ আত্মত্ত্বন প্রকাশমানসা । যদ্বা সভাং ভক্রানামাত্মনঃ পরমপ্রিয়স্য অবণপুটেরু সম্ভূতং পিবস্তীতি অথমাদরেণ মুভ: শৃণুস্তীতার্থ: । বিষট্যুর্বিদ্বিতং মলিনীক্তমাশয়ং যদ্বাবিষ্টেম্বিভূষিতআশয়োষদ্য তমপি পুনস্তি কিমুতাভানং।। কিঞা। ভদ্য চরণ পদ্মান্তিকং ঐবৈকুঠলোকং ব্রজন্তি । ৩২১ ৷ বৈরাগ্যদারং বলং যদ্য তং ॥ यদ্বা॥ ৰৈরাগ্যস্য কলৰপংৰোধং ভগৰছক্তিমাহাত্মাদিজ্ঞানং যথাবৎপ্রতিলভ্য লক্ষা অঞ্চন। সুখেন অকুঠধিক্যং প্রীবৈকুঠলোকং অমীয়ু: প্রাপু: ॥ ৩২২॥ ত্রত্মস্বরূপং শাশ্বতং নিরপার্পদং প্রীবৈকুঠলোকমিত্যর্থঃ॥ ৩২৩॥ তস্য বিক্ষোঃ পদং স্থানং শ্রীবৈকুঠলোকঃ। করম্বিত্বং স্থলভ মিতার্ধ:।। ৩২৪॥ তমের নম্ভ তদ্বাভিরিক্তং শৃণুরাৎ। নিতাং প্রত্যহং তত্রাপাভীক্ষ্ণ। বদ্বা অভীক্ষ্ণ कृष्ण या व्यमना जिल्हः (क्षमन्कना जामजीश्नमानः । श्वनास्यामध्यवत्तित ना नन्नामाहः ভাৰ্যঃ।।৩২৫।। উদপান্য ঈষদপাক্ষা। সম্ভিদু ধরিতাং স্বতএব নিভাং প্রকটিভাং যদা সন্তঃ সংৰভ वाटारिश मुथितिका यहा छार छत्रीयाः छत्रतीयानाः वा छगवछकानामशि वार्खाः। च्यान धव বিজঃ তৎসমিধিমাত্রেণ সমু ব্রিভাল্বেন বা স্তএব আতিগতাং অবণং প্রাপ্তাং। তত্ত্বাধ্ননোভি-न्यकः मरक्रवातः य सीवति दक्षमार मजनार यमाशि क्रविति है। आप्रमिलिशाकामिरेनादिन-জোरिन दक्षित आश्वः वनीकृष्णां वानि। यथा। अन्छिग्रजार व्यवक्रितीर नमूर्वात्रणार कवनीववार्छार व्यात्रामानगरः उपूर्णामन नमनर कुर्वित्यारि भाषाहर्ष धवकातः। क्षात्रमहेकि कनाविश्मकाा-विका न नहरकाश्भी ठार्थः। सीवक्तिमाभि प्रधानाम् यायहस्य यवा वार्कामूभसीवस्थितः निक की किसार माध्यकि उथानि द किछ । जिल्लोकार नर्वरेखरवडार्थः । तर वार्डास्म किः क्षेत्र विकारि पर बिरणि प्रविद्धानि विश्यनक्षेत्रः गणाः चारन श्रवा प्रक्रवाधानगा- বাজানোভিষে প্রারশোহজিতজিভোপ্যসিতৈজিলোক্যাৎ ।। ৬২৬ ।। স্বভং পরমপুরবার্থতা ভূতীরে শীসনকাদিন্ততো । নাত্যন্তিকং বিগণুরন্ত্যপি তে প্রসাদং কিয়ান্যদিপিতভার ভূবউরীয়েন্তে । যেহঙ্গ স্বদন্তি শরণা ভবভঃ কথারাঃ কীর্ত্তন্য তার্থ যশসঃ কুললা রসজ্ঞা। ১২৭।। চন্তর্থে শীভগবন্তৎ প্রতি সিদ্ধানাৎ স্ততো। অয়ং তে কথাস্টপীয়ুবনদ্যাং মনোবারণঃ ক্লেশদাবারিদক্ষঃ। ত্যার্ভোহবগাঢ়ো ল সম্মার দাবং ল নিজ্যাতি ব্রক্রসম্পর্যরহ ।। ৩২৮ ।। ভাতএবোক্তং প্রথমক্ষে । শিশৌনকাদিভিঃ । বয়ন্ত্র ন বিত্প্যান উত্তমঃশ্লোকবিক্রমে । ঘচ্ছণুভাং রসজ্ঞানাং স্থাদু স্থাদ্ প্রের্থিক। ১২১।। কিঞ্চা কোনাম লোকে রসবিৎ কথারাং মহন্তবিদ্

নিপারৈরিতার্থগালন্ত তথাং সহ জিতত্বং।নতভবিচত্তপরিচর্য্যা**দিশক্ত্যা বাচা চ সতত ত্বনামাদি**ক্ত্রিয় সন্দা চ সতত জিকান্তরাবি ভাবেন। যথা তবৈব তথাদিভিঃ সহ জিতোহদি । তত্ত তথা সহ ্ষ্ঠিরং সত্ত খ্রীতের্ডি শ্রুর্জাদি। বাচা সহ জিত্র্থ তেনৈর তৎস্ত্তাাদিকং। মনসা সহ কিভানং ্ গ্রীণতাইনির্ভাগদি। দাচা সহ জিতজ্ঞ ভে**নৈব তৎস্তত্যাদিকং। মনসা সহ জিত**জ্ঞ टर्रोतिव जिला धार्मानिक मिल्। अबाद समानः। अवर खानानामरत्व छत्रवर कवा-শাণুপ্রভাগে দালগ্রা দলিতিং । ৩২৬।। আতান্তিকং মোক্ষাথামপি তে প্রদাদং গৈকুঠ পোলা তে ম বিগণাতি নাত্রিতে ৷ কিয়ত অন্যৎ আক্ষাদিপদং ৷ তে তব ভুবউন্নৈয়েজ্ঞী-টিপুরানিতং নিচিত্র ভারর যশ্মিন্। কে তে অ**স হেভগবান্ যে ভবতঃ কথায়াঃ রসজ্ঞাঃ যতঃ** কুলালা নিপুল বিভাগুদেট্রকাশ্রের। কথায়ত্র্যার্মণীয়ন্ত্রন পাবনত্ত্বন চ কীর্ত্তন্ত কীর্ত্তনার্থ ভীর্যঞ্চ मरमान उपान अवर कथाइमछानार देवकूकेरणाकानानात्वन कथाताः खठः शतमकनदः निक्रः ॥ ৩২৭॥ । তারং মনোগ্রন্ধর জ্বক**ৈণ্ড স্তিং গুলং প্রমম্বুরং বা পীচূবং তম্মী যা নদী তদ্যা**-খবগাঢ়ঃ প্রতিটি দাবানি বুলাং সংসারতাপং ন অর**তি আনচ ততোনি**গড়িতি। তবৈয়ব খবঃ প্রমণকামর্থ বাহ। প্রায়্যপার বহ তাইদ্যকাঞ্জাঞ্জাঞ্জাইক ॥ ৩২৮॥ তবং **লীলাকথাশ্রবণস্য** পাপারিশারিকার্মারতা হতঃ পরমধ্রেষার্থিতাত্তং মালামাং যথোভরজৈষ্ঠাক্রমেণ লিখিত্বঃ ইদানীং কেষ্টিৰ্চদে হু পূৰ্বাৰৎ সাক্ষালাকালা,ভিগায়কল্বাভাবেপি ভাৎপৰ্যোণ্ ভলৈৰ পৰ্যা-ব্যানাআছাল্যাক ত্যিবৈত তানি সংগ্রাতি বয়ন্তিলানি সেবাতামিভানেন । এবমঞ্জেপ্যমাত্র নোদ্ধব্যং। বেংলগালাদির ভূপ্তাঃম। উচ্চাভ্তিত্রনাধ্মাৎ স উত্তমাঃ তথা ভূতঃ হোকো ধনো। यमा जमा विज्ञास खु विष्वासिक न जूलामा जनविक्ति न मनामार । अब द्रावः विकास मृशुजाः। যদা অন্যে তৃপান্ত নাম বয়ত্ত নেতি জশক্ষাদ্রঃ। অয়মর্থঃ ত্রিধা ভলংবুক্তিভ্রতি উদ্বাদি ভরণেন বা রণাজ্ঞানেন বা স্থাদবিশেষ ভাষাছা ৷ অত শৃগুভামিতানেন প্রোত্ত কি স্থিতি ন ভরণমিত্যক্তং রসজানামিত্যনেম চ অজ্ঞানতঃ পশুবত্তিনিরাক্তা। ইস্টুড্কণইনিস্ভরা-ভ বেন ভৃঞ্জিং নিরাকরোতি পাদে পদে প্রতিফানং স্বাছতোহপি স্বাহিতি॥ ৩২৯॥ রসবিৎ রসজ্ঞঃ মহত্তমানাং এনারদানীনামে কাতং পর্মর্ননাশ্রয়োযত্তন্ কথারাং ৷ অত্যাক্তত্ত্ त्रिक्ता कत्यान्छनानामस्य त्य त्यत्त्रस्त्रात्स्यक्ति न स्वाहः अकावस्त्रहे न शतिभनतास्कृत

কান্তপরায়ণস্য। নান্তৎ গুণানামগুণস্য ক্র্যুর্যোগেশ্বরা যে ভবপাক্ষমুখ্যালা ২০০। তৃতীয়ে শ্রীবিদুরেণ। ক্রীড়ন্ বিধতে দিক্রগোসুরাণাৎ ক্রেমার কর্মাণ্যবভারভেক্ষালা মনোন তৃপ্যতাপি শৃণুতাং নঃ সুশ্লোকমোলেশ্চরিতামৃতানি ।। ২০১ ।। দশম-ক্রেম্ব ক্রিজ্যানিতা। ব্রহ্মন্ ক্রুক্রবাঃ পুণা মাধ্যালোকমলাপালাং। কোনুত্প্যত শুণুবান্ করুজ্যোনিতামূতনাং।। ২০২ ।। অভোহি শ্রীপৃথুরাজেন প্রাথিতং । ন কানরে নাথ তরপ্যহুং কৃতির যত্র যুম্মজরণাযুক্তাসবং। মহত্রমান্তর্জ দিয়োলা খাচুংতো বিধংষ কর্ণাযুতনের মে বরং ।। ২০২ ।। অভএব নিশ্চিত্যোক্তং পালো বৈশাখানাহাত্ম্যো। অম্বরীষং প্রতি নারদেন । নাতঃ পরং পরমভোববিশেষভোষং পাল্যামি পুণ্যমুচিতঞ্চ পরস্পরেণ। সন্তঃ প্রস্করে মাস্ত্রণাননন্তমেয়োবিধীনধিকভাবভুজাে ভঙ্গন্তি।। ২০৪ ।। প্রথমক্ষক্ষে শ্রীসূতেন । যাযাং কথা ভগবতঃ কর্থনায়েক ক্রাভিঃ ভঙ্গকর্মাশ্রাঃ পুডিঃ সংস্বেয়ার বুভূর্ভিঃ ।। ২০৫ ।। দশমক্ষরা শেবে চ। শ্রীবাদরায়নিনা । ইত্যাং পরস্য নিজধর্ম ররক্ষয়া তু লীলাতনোন্তদন্ত্রপবিড্রনানি । কর্মানি কর্মকরণানি যদ্ত্রস্যা শ্রীয়াদমুয্য পদয়োর নুবৃত্তিমিছন্ ন্ ইতি।। ২০৬ ।। অভঃ কৃষ্ণকর্থায়ান্ত সভ্যামন্যক্রথাক্রাতং। তদশ্রুতির বিষ্ণুর্যং ত্র্যাং তৃন্তিমপি ত্যজেহ।। ২০৭।।

ভবং শিবং পাছোত্রকা চ মুখ্যো যেয়ায়ে ॥ ৩৩০॥ মৎস্যান্যবভাবভেলৈঃ ক্রীভূন্ বিচি-তানি কর্মানি বিধতে 🗓 স্থালেমেলিঃ স্থাকাঃ পুণাকীর্ত্রতেষাং মৌলিরিবাধিক্যেনা-পরি বিরাজমানস্থ্য চরিতামূতানি শৃগুতামপি নোহস্মাকং মনোন তৃপ্যতি ॥৩৩১॥ পুণ্যা মহা-ফলাঃ মাধীঃ শ্ৰুতিজ্থাঃ লোকস্য মলাপহাশ শৃণুবান্ শৃণুরিতার্থঃ । ক্তজঃ ক্তসাববিং। নিত্য নূতনাঃ প্রতিক্ষণমাশ্চর্য্যবং প্রতীয়মানাঃ॥ ৩ ১২ ॥ মহত্তমানামন্ত্র্ছ দয়ে। লুথছারা নির্গতো-যুগাকং তব স্বদীয়ানাঞ্চ পদায়োজমকরন্দ যশঃ প্রবণস্থং যক্ত নাস্তি তৎকৈবল্যমপি কৃচিৎ কদাচিদপি ন কাময়ে । তহি কিং কাময়দে তদাহ যশঃশ্রবণায় কর্ণানামযুতং বিধৎস্থ। নর কোপেব্যং ন বৃত্তবানস্তি কিমন্যচ্চিন্তয়েত্যাহ মমত্ত এই এব বরঃ ইতি।৩৩৩। পরস্পরেণ আসজ্য অন্যোন্যং আসক্তিং কৃত্বা অনন্তন্য ভগবতোগুণান্। অধিকভাবভুক্তঃ ভক্তিবিশেষযুক্তাঃ সন্ত-ইভার্পঃ॥ ৩৩৪॥ কিং বন্থনা এতাবদেব কর্দ্তব্যমিতি দর্বশাস্ত্রদারই কর্থায়তি যা যাইতি। কথ-নীয়ানি উক্তি কর্মাণি যদ্য তদ্য। গুণকর্মাশ্রয়া গুণকর্মবিষয়াঃ। বুভূষুভিঃ দন্তাবমিচ্ছন্তি: ১৩৫। ইপমুক্তপ্রকারেণ নিজধর্মোভগবন্ধর্মঃ তদ্য রিরক্ষয়। স্বীক্তমৎদ্যকূর্মাদিনানামূর্ডেঃ পরমেশ্বরদ্য বিশেষতোযদৃত্তমস্য সতঃ তদস্ত্রপাত্তারীণি কর্মাক্ষণানি কর্মানিবন্ধ নির্মনানি জ্ঞান্ত শৃণুরাদিতার্থঃ। यहा ভবানু জায়াদিতি জীপরিক্ষিতং প্রতি যদ্বা সর্বোষ্পি জনঃ জায়া-দিতি শর্কালোকং প্রতি 🗃 বাদরায়ণেরাশীঃ। এবমপি তদেব তাৎপর্যাং। অমুবৃত্তিং তদেক-নিষ্ঠতাং॥ ৩৩৬॥ অতোহশালিধিতাদেতোঃ। সত্যাং বর্ত্তমানায়ান্ত অন্যকথায়াঃ শ্রুতিং ध्येवनং তথা তস্যাঃ কৃষ্ণকথায়া অঞ্জতিং অগ্রেষণং তথা তস্যাং কৃষ্ণকথায়াং বৈ মুখ্যং অগ্রহ্ময়া বলাওতঃ পরাং মুখন্তমিত্যর্থঃ। ভৃতিং কিঞ্চি শ্রেখনানন্তরং তল বিরক্ত্যা অলং বুদ্ধিমপি ত্যক্তেও व्यक्तरत्रद्र ॥ ७७१॥

অথ প্রভিগবৎকথাত্যাগাদিদোষং ।। তৃহীয়ক্ককে কপিলদেবহৃতিসমুদ্ধি ।

মূনং দৈবেন নিহতা যে চাচু তেকথাসুধাং । হিন্তা শূনুভাসদাখাঃ পুরীষ মব বিজ্
ভুজঃ ।। ৩০৮ ।। তাত্রব প্রীবৈক্তবর্গনে । যা ব্র জন্তাঘভিদোবচনানুবাদ ছেনুভা
যেহন বিষয়াঃ কুকথা মতিখাঃ যাস্ত প্রভাগে ইতভাগনি ভিরাভসারান্তাং তান্ কিপভা
শারণেষু তমঃসু হত্ত ।। ৩০৯ ।। কিঞ্চ কান্দে ব্রহ্মনার্রদসম্বাদে । বাচ্যমানস্ত যে

শাস্তং বৈষ্ণবং পুরুষাধ্যাঃ । ন শূন্তি মুনিশ্রেত ভেষাৎ ঘামী সদা যমঃ ।। ৩৪০ ।।

ন শ্নুতি ন ক্ষান্তি বৈষ্ণবাং প্রাপ্ত যেকথাং । ধনমায়ুর্যপোধ্যাঃ সন্তানদৈচব
নশ্যতি ।। ন শূনাতি হ্রের্যন্ত কথাং পাণপ্রনানিনাং । অচিরাদেব
নেবর্ষে সমূলন্ত বিনশ্যতি। দিতায়ক্ক ক্ষা প্রাণী কোকো । বিলেব তে বিক্রমবিক্রমান্
ন্যে ন শূন্তঃ কর্ণপুটে নরস্তা জিলা সতা দাদুরিকেব সূত্র নচোপগায়ত্যুরুগায়গাথাঃ ।। ৩৪১ ।। তৃতীয়ে প্রীক্রক্ষন্তা । দৈবেন তে হতধিয়োভবতঃ প্রস্কাহ
স্কাশ্রভাপশ্যনাদ্বিমুর্থ ক্যা যে । কুর্কাত্র কামসুখলেশলবায় দানা লোভাভিভূতমনসোহকুশলানি শ্রহ্ণ। ৩৪২ ।। তান্ শোচ্যদোচ্যানবিদোনুশোচে হরেঃ

এতদেব ক্রনেণ দর্শরতি নূনমিত্যাদিনা পশুল্লাদিত্যন্তেন। তত্রাদৌ। অন্যক্থাশ্রব্দোষ্ 'লিখতি নুনমিতি! দ্বাভ্যাং । যে গু অচ্যুতস্য কথাস্থবাং হিন্তা অসতাং গাধাং শৃণুষ্ঠি তে নূনং देनरवन নিহতাঃ।। ৩৩৮।। যং বৈকুণ্ঠং ন ব্ৰন্ধন্তি কে যে কুকথাঃ শৃণুন্তি। কান্তা। অঘং পাপং শংশার ছংখং বা ভিনত্তি নাশগুতীতি ঘদা অবাহ্রং ভিনতি মূর্দ্ধি, বিদারিতবান্ বঃ সোহ্য-ভিং ত্সা একুঞ্স্য রচনাস্ট্যাদিলীলা শাদ্ধলজে মন।দিক্রীড়া বা ত্স্য অলুবাদাং কথনাদন্য-বিষয়াঃ। অর্থকামানিবার্ত্তা যাগ্রেগাদ্যাশ্রয়া বা মতিভ্রংশিকাঃ । তেবামত্রঙ্গনে হেভঃ। অশ-রণেযু নিরাশ্রয়েষু। যদা ন কেবলং তেধাং ততাত্রজনমাত্রং তাভিশ্চ তেবাং পুণ্যক্ষয়োচ্তর-মরকপাত ভবতীত্যাহ যাস্ত হতভাবৈগারের মরেঃ প্রতাঃ সতাস্তাংস্তান্ শ্রোতৃন্ অশরণের্ নিবাশ্রয়েয়ু তমঃস্থ নরকেয়ু ফিপস্তি। হন্ত থেদে। কগন্ত**ুতাঃ আন্তিং সারং শ্রোত**ণাং পুণ্যং যা-ভিস্তা: ॥ ৩৩৯॥ অর্থাশ্বণদোষং লিখতি বাচ্যমানস্ত ইত্যাদি চন্তভি:। সদা যম: স্বামীতি সততং নরকে বাসইত্যর্থ:।। ৩৪০।। ন শৃণুতঃ অশৃণুতোনরস্য যে কর্ণপুটে তে বিলে রুণা রক্ষে ইত্যর্থঃ। নটেদুপগায়তি তম্য জিহ্বা অসতী দুটা দদুরো ভেকস্তদীয়জিহ্বেব॥ ৩৪১॥ বৈ-মুখ্যদোষং লিখতি দৈবেনেতি দ্বাভ্যাং। প্রদক্ষাৎ শুবণকীর্ত্তনাদিকপাৎ কথায়া বা সর্বাণি অন্ত-ভানি অমঞ্চলানি দুংখানি বা উপশ্ময়তীতি তথা ত'মাং! বিমুখানি অশুদ্ধয়া নিবৃত্তানি ই ক্রি-রাণি যেযাং তে। বিমুখেন্দ্রিয়ত্বং তৎফলং তদ্ধেত্তং যা অভিযাঞ্জয়তি কুর্বরভীতি। অকুশলানি অক্ষেমকরাণি কর্মাণি।। ৩৪২।। এবস্তায়াং কথায়াং যে ন রমস্তে শোচ্যান্ শোচ্যা যে তেষামপি শোচ্যান্। তত অবিদঃ ভারতাদিতাৎপর্যানভিজ্ঞান্ হরিকথানভিজ্ঞান্বা শোচ্যান্। যে জ্ঞাত্বাপি হরেঃ কথায়াং বিমুখান্তান্ তেষামপি শোচ্যানিতি যোজ্যং। অমিমিষঃ কালোবেষামায়ু: ক্ষপয়তি। অত হেন্তঃ। রুখৈব ভগবৎকথাবৈ মুখে।ন বিফলা বাদগতিসা্ত্রা

क्षीक्षी विमुधीन एवन विकाश कित्वा कि दिन विविध विविध विकाश विका विकाश विकाश विकाश विकाश विकाश विकाश वि য় ১৪৩ ।। জীমেত্রেয়েতে চ। কোনাম লোকে পুরুষার্থসারবিৎ পুরা কথানাং ভর্বৎকথাসুধাং ৷ আপীয় কর্ণাঞ্লিভিভবাপহামহো বিরজ্যেত বিনা নরে-ভরং।। ১৪৪।। চত্তথে এপৃথুস্ততো চ। যখাং শিবং সূত্রব আর্মাসকলে যদ্ভয়া চোপ্রশূলোভি তেহসকুং। কথ্ গুণজ্ঞাবিরমেদৃতে পশুং ঞীর্যংপ্রবত্তে গুণসংগ্রহে-চছরা।। ৩৪৫।। দশনারত্তে শ্রীপরীক্ষিতপ্রশো নিবৃত্ত ইর্ক্রপণীয়নানাজবৌষধাৎ क উভमः हो कि खगानुवामा १ भूमाम् विवरधा छ শ্রোত্রমনোভিরানাৎ।

সাগ্দেহ্মনোৰ্যাপারা যেষাং তেযাং ॥ ৩৪৩॥ তুপ্তিদোষং লিংতি কোনামেতি তিভিঃ। গুরা কথানাং পূর্বেরস্তানাং মধ্যে ভগবৎকথাস্থধাং কথঞ্চিদাপীয় কোবিরজ্যেত বিরুদেত বিরুদ্তা তৃপ্তিং যাতীতার্থঃ। নরে তরং পশুং বিনা। সারাসারজ্ঞানাভাবাং।। ৩৪৪।। নমু ভক্তিমু ক্তিফল। আতঃ ফলং বিহার লাধনে কোয়মাগ্রহঃ ইত্যাশলাহে যুশইতি।তে মুশ্বোমজলকীর্তে শিবং গ্রম সুখাত্মকং তে যশঃ সতাং সঙ্গমে যঃ সক্ষাপি বচ্চ্নাপি উপশ্যেত্ গাং মনীপে উপবিউমালোগনি শ্রণৈতি। গুণজ্ঞান্তং কথামাহাল্যাভিজ্ঞান্তং দ কথা বিরমেও । পান্তং বিনা পাশ্রের বিরম্ভি নান্যইতার্ধঃ। গুণাতিশয়ং স্তর্তি জীর্ঘহ যশএব প্রকর্ষেণ বৃত্বতী শুণানাং লার্পার্ল বানাং সংগ্রহঃ সলাহারস্তদিক্ষয়। অতোষশঃ সেবটয়ৰ প্র্যানন্দোহ্যান্তর্কগত্বেনাবিলার্থসিফির ীতি কিং মূনপরিত্যাগেন প্রমাত্রজ্যান্তার্থেনেতি দিক্। অথবা মংক্রান্ত্রণমাত্রণ কুতার্থএবাসি কিং পুনতংশ্রবণাগ্রহেণ। তত্রহে যশইতি। জন্যথা গুণজ্জনাভাবেন প্রভাবাতারিতি ভাবঃ। অন্যৎ সমানং ॥ ৩৪৫।। অত্ত লোকে ত্রিনিধা জনাঃ মুক্তা মুমুক্তবো বিবায়ণশ্চ । তেযাং মধ্যে কর্মাপি নাত্রালং প্রভারইতাাহ নির্ভতবৈড়িতি । গতত্কৈর্তিজরগীতার্থঃ । সুমুজ্গাময়মেবো-পার্ইত্যাহ। উনৌৰধাদিতি। বিষয়িণাং পরমোবিষয়োহরংমবেত্যাহ খ্রেজিয়নৌভিরামাদিতি। উত্তমংশ্রেকেশ গুণা ভক্তবাৎসল্যাদরং। यन। উত্তমশ্রোকা যুখি ছিরাদরে। ভগবছ জ্ঞাস্তেবামপি গুণা সহিমানঃ ৷ ভেৰামমুৰাদঃ কথনং ভলাহ । যদা। অমুৰাদরতীতি অলুৰাদঃ শ্ৰৰণং। লোত্ণাং আবংণ্টেমৰ বক্তু ৰ্যাচনপ্ৰাৰ্ত্তকাৰে। যত্ন। অনুবাদঃ কথা আখ্যায়িকেতাৰ্থঃ। তস্মাৰ কোৰিবজ্যেত मिक्तिम जार विद्रमिष्ठार्थः। এदः मुख्यानाः शतमकलद्वन मूमुक्याः नःभात्र इथिनामना-ত্মানকপ্রকাশনরোঃ প্রশ্বসাধনত্বেন বিধরিণাং চেত্রিরহুধগুদত্রেন সদা সেব্যারাল কেযাঞ্চি-দিপি তৃণ্ডিক্লচিতেতি ভাবেং িবদাপি মুক্তানাং গুমুক্ত্বামপি বস্তম্বভাৰতঃ প্ৰোত্তমনোভিরামত্বং मार्गित जगानि अकाश्विदमायमा न क्श्रनार्थर बाह्यन्य या देन जगन धनमाः। अलाह्युकः एक-विकः समझनः गास्य वामक समूजग्राः । हेलानि मारान अनातनामीमामिर किल्छ श्वती-কালেত্যানি সংকীপ্তনপর প্রিম্বত্দীপনিবাসিনামিব চ যুক্তানাং প্রারঃ কীর্ত্তনপর্জেন বহিরস্ত-महोतम्बत्रमाग्राह्य । एका क्रिक्न के नार दक्षतमः दमाकमाजादशक्षा विकः त्याजमानाज्ञान छोनटेलक्रगार । इजिप्रकट्टिकार्लक्रवानाः विविधानात्मव विवधानका। लक्कापिना ह वैकिमा-विद्यार मुवनमायकाता (मार्जमहर्माणितः मञ्जू मुख्यकः । यहा छ नगात्मम मुख्यानामिति खळ वेद (माज-असन् विद्यान जा निकार अत्र । मृत्य शिक्ष जर्दो महित्य मना उदकी जनक्ष महित्य के एउपि-लित विश्वासन् निकारात । विश्वितिक पूर्विकिष्का करना द्वार्यान विश्वासन् । পশুদাৰ ।। ৩৪৮ । ই তএবোক্তই দেবৈঃ পঞ্চাক্ত কা না যত্ৰ বৈকুণ্টকথা সুধা গগা না সাধবে। ভাগৰতা ওদাশ্ৰমান না যত্ৰ যজেশমথ। মহোৰ্শ্বনা ই সুৱেশলোকো হপি নাবৈ সামেব্যভাং ।।৩৪৭ ।) অভোনিষেব্যমাণাঞ্চ সৰ্ব্বথা ভগৰৎকথাং । সুভ্তন্ত মিন্কান্ প্ৰেত্যিবোনে দ্বিবৰ্দ্ধয়ে ।। ৩৪৮ ।।

অথ ভগৰংকথাসক্তিঃ । দশমক্ষে । সতাময়ং সারভূতাং নিসর্গো ঘদর্থ বাণী ।
ক্রম্ভিচেত্রসামপি । ত্রনুক্ষণং নব্যবদচুত্তস্য হং ক্রিয়া বিটাগামিব সংধ্বাত্রী
। ৩৫১ ।। অতথ্য তথ্যৈ ।। ভলা, ক্রতেপাংশীলা ভলা, ঘীয়ারি । ধ্বাং । আপি
চক্ত্রার্চন্দেকং শুক্ষধবোহপরে ইতি ।। ৩৫০ ।। তথা বৈক্রধ্যা শিচ ক্রিয়ন্ন

বিদ্যুগি বিষয়িশামপি কৰাচিৎজ্ঞানাদিনা বাগভিৱামত্মগণি ঘটেত তথাপি অপৱীক্ষিতা নিজ গা ২৭ পেক্ষরা শ্রিপুরুপৌরবেণ চ তথে।জং। এবং গুণান্তবাদ্দ্য সাধ্যন্তং সাধনত্বপু দ্শিতিং।তত্র দ্বতিক্রমোলগ্রেন সাগার। পশ্চাৎ সাধনত্তা জিঃ। প্রীপরীক্ষতে বিনয়ভারে বিষয়িত নিজ্যের পার্বিবক্ষা। অভঃ শইবো শর্কানেব্যান্তমাৎ কোবিরক্ষাত। কিঞা। প্রমাংশেচং। লা দশক্তঃ ক্লীবভিত্তশ্চ কথ কি স্বিরজ্যেতা পীত। ধংনা বংশ পুংশ এব সর্বাত প্রাধান্য ছে পুমানি-্যন্তের। তেন চ সক্ষোপিজনঃ উপলক্ষ্যতে। অপগতা শুক্ শোকো যক্ষাৎ তমাল্লনং হন্তী তি অ-ন্তিরস্থান । মটোপ্ট্রেক্রর ইতি গকারলেপেঃ। পশুবংতিদোব্যানাদিতি । বা । বিষয়িত্বসম্ভবেক ্লি লক্ষ্যান্তার নবস্তুরারগুরারভ্রমণ।দিনহাটেবেন ব্যক্তর্যক্রেরাপেক্টা বিষ্টিত্র্যাপ্টেনিছেন প্থান্তিৰঃ। অন্মিন্ স্থাকে আপীয়েত্যাদ্ভাবেইপি অংশানন্তঃং কেনিরভাতেত্যের জেন। ন্বসংক্ষাক্রণাত্রব্যান্তর্যের জ্ঞীপ্রাফিভ এট্রভড়ডেরিতি দিক্। অসমতিবিভাবের । ৩০৬ । যত্ৰ বৈকৃত্ৰথান্তনলো ন মন্তি মপ্ৰমধ্বা ভগৰংকথাঃ সততং ন বৰ্ত্তৰে নলা বৈক্তিল ক্ষাস্থা আপ্ৰাশ্চ শ্ৰীগলা মহানাদেনদাঃ । তৈকুওশক্তেন তৎক্ষাস্থাপ্ৰানামপ্যযুভিত্বং স্বাধা ক্চিতং। তদাঅখ্য কথাপথ। অনুষ্টি। মহান্টে ছত্যাহ্যখনবা বেষু তথাভূত। মড়েনান্য বিক্ষোমধাঃ পূজাঃ বিদা সংহাৎদবালত ভ্যাণ্টস্যাদিতি মধকাঃ মজেলশক্ষেত্ৰ লএৰ মধ্যোগ্যো নত্মাইত্যভিপ্রেডং । বরা গোর্জনপ্রর্জন্তংহজ্যভাক্তা জ্ঞাগোর্জন্বর: জ্রিক্ষোচ্ডিচিতং। হরেশ্য ব্রহ্মণাংশি লোকে।ন সেহাতাং শ্রহ্ময়া চিত্রং নোপাভূক্যতাং কিন্তু ক্রত্যের পরি-ত্যজ্যতামিতার্থঃ। বৈএণিজৌ ॥ ৩৪৭॥ - অতোহমাআহার্যারিশেষাদ্ধেতোঃ। অপ্যর্থে চকারঃ। সর্কাথা অবণ ক ভিন অরণাদ্য গিল প্রকারেণ নিতর । দেব্যমানামপি। মিথঃ প্রক্রোভূবজুণ-মন্যোন্যং প্রীতিবিবর্দ্ধরে ভগবংকগার্সিকান্ পূচ্ছেং ॥ ৩৪৮॥

সারভূতাং সারপ্রাহিশাং সভাময়মের নির্গঃ স্বভাবঃ । কোসে অচ্যুক্তস্য বার্ত্তা প্রতিক্ষণং সাধু যথাস্যার্ত্তা নব্যবস্তবভীতি যথ ৷ বিটানাং ক্রৈণানাং ক্রিয়াঃ কামিন্যা বার্ত্তের ৷ ক্রায়ুত্তানামপি সভাং ৷ অচ্যুত্তবার্তির অর্থোয়েষাং ভানি বাণীক্রভিচেতাংসি যেষাং ভর্মান্ত্রানাং মপি ॥ ৩৪৯॥ অভ্যান জ্বীশনকাদয়ঃ ভথা চক্রুবিতি লিখতি ভল্যেভি ৷ প্রভাগতিরবিশেষাঃ অবি মিজোদাসীনহীনত্বেন নিরূপমকরুণাঃ অভঃ নর্বে প্রবচনধান্যাত্রপি ভলবৎক্র নিরূপমকরুণাঃ অভঃ নর্বে প্রবচনধান্যাত্রপি ভলবৎক্র নিরূপমকরুণাঃ একং প্রবৃত্তি গ্রেষ্ট্রার্মনাঞ্চ প্রত্যারং কৃত্বা পরে শুক্রবৃত্তিপ্রভাগঃ॥ ৩৫০ ৷ ভথেতি পূর্বেরি বিত্রন্ত্র প্রা

নানপি স্বর্থ ! সংপ্তেছত্ত দিং সাধূনন্যোন্যপ্রীতিবৃদ্ধরে ।। ৩৫১ ।। শ্রদ্ধান্য বদ স্বন্ধান্ বৈশ্বায়ানুপ্তেতে । অবশ্যুৎ কথায়ে দিয়ানন্যথা দোষভাগ্ভবেং । তবুক্তং । নাথ্যাতি বৈশ্বং ধর্মং বিষ্ণুভক্তস্য প্তেভঃ । কলৌ ভাগবভোভূত্ব। পুন্যং যাতি শতাকিকং ।। ৩৫২ ।।

অথ প্রভিগবদ্ধপ্রতিপাননমাহাত্বাং। কান্দে ব্রহ্মনারদস্যাদে ।। বৈশ্ববে বৈশ্ববং ধর্মাং যোদদাতি দ্বিজোতমং। স্বাগরমহীদানে মংকলং লভতে ইধিকং ।। ১৫৩ ।। কিঞ্চ ভবৈত্ব। অজ্ঞানায় চ যোজ্ঞানং দদ্যাদ্ধর্মোপদেশনং। ফুংসাং-বা পৃথিবাং দদ্যান্তেন ভল্যং হি ভং স্বৃতং ।। ৩৫৪ ।। বিষ্ণুধর্মোভারে। ভং কথাং প্রাব্য়েদ্যন্ত তদ্ধক্তান্যানবোত্তমং। গোদানফলমাণ্যোতি সনরস্তেন কর্মাণ। পাল্মে দেবহুত্বিকুগুলস্থাদে। জ্ঞানমন্ত্রীয় যো দদ্যাদ্বদশান্ত্রসমুদ্ধবং। তাপি দেবাস্তমন্ত্রিভারবদ্ধবিদ্যাকং।। ৩৫৫ ।। বৃহ্মারদীয়ে। সংসঙ্গদেবার্চনসং কথাসুপরোপদেশেইভিরতোমনুষ্যাং। স্বাতি বিষ্ণোং পরমং পদং ভদেহাবসানেই চুত্তলাভ্রেণা । ৩৫৬ ৷৷ তে চ শ্রীভগবদ্ধর্মা ভগবদ্ধভ্রন্তান বাঞ্জিতাং কভিচিনুখ্যালিখ্যন্তেইত্র প্রেইপিতে ৷৷ ৩৫৭ ৷৷ তে ত মন্ত্রিপি বিষ্যাতাং শ্রীমদ্বান্তিনিক্যা ত্রাদিক্য সংগৃহ্যন্ত স্বাধনাং ৷৷ ৩৫৮ ৷৷

স্থাং ক্রিয়াণানপি বৈষ্ণবর্ধান্। তান্ বৈষ্ণবর্ধান্ যে বিদন্তি তার্সাথূন্ সম্যক্ পৃচ্ছেৎ। ১৫১। নিয় ভগবদ্ধাঃ পরম গোপ্যাঃ প্রমাত্রেণ কথং কথ্যাঃ তত্র লিখতি শ্রদ্ধারত। বিদ্বান্ বৈষ্ণবধ্যাভিজ্ঞানে আৰু আৰু আৰু কথ্যেদেব। কৃতঃ বৈষ্ণবার তত্রত শ্রদ্ধারার গারং গারং পূদ্তে । চত্ত্রী ঘিতীয়ার্থে স্থামত্বার। ৩৫২।।

যংকলং ততোপ্যবিকং লভতে ॥ ৩৫৩ ॥ বিশেষতশ্চ ভগবন্ধাং সম্যাগজানতে বৈক্ষবায় অবশং কথয়েদিত্যাই। অজ্ঞানায়েতি ৷ ভগবন্ধাগিদেশনন্ধণং জ্ঞানং ৷ যদা সামান্য ধর্মাপিদেশনন্ধণং জ্ঞানং ৷ যদা সামান্য ধর্মাপিদেশনন্ধপং জ্ঞানং ৷ যদা সামান্য ধর্মাপিদেশনন্ধপি লংসারমোচকং ॥ ৩৫৫ ॥ সংসঙ্গাদিমু পরোপদেশে চ যোভিরতঃ ৷ যদা ৷ সংসঙ্গাদিমু বিষয়েয়ু যং পরং প্রত্যুপদেশস্থান্দ্রে হিত্যবাং ৷ তং অনির্বাচনীয়ং ৷ যদা ভস্য উপদেশসম্প্রানোদেইস্যান্ত এব নাই জ্ঞান্ত রে ইত্যবাং ৷ ভগবজুল্যভেজাঃ সন্ সারপ্যাদিপ্রাপ্তেঃ ॥ ৩৫৬ ॥ কে তে বৈক্ষবর্ধা ইত্যপেশ্বায়েং লিখতি ৷ পূর্বালিখিতৈ ভগবস্কুজানাং লক্ষণের বিভ্রত্যুপ্রাঃ শ্রেষ্ঠাঃ কতিচিদ্যাঞ্জিতাঃ ব্যক্তীক্ষতাএব ৷ অপরেহপি তে শ্রীভগবন্ধাাঃ কতিচিদ্যালিখ্যান্তে ৷শ্রীভগবন্ধাা ভক্তেরঙ্গান্যেব ভানি চ মুখ্যানি গৌণানি চ কানিচিচ্চ তৎসাধনানি সর্বাণ্যের একত্রাত্র লেখ্যানীত্যবাং ॥ ৩৫৭ ॥ নাম শ্রীভগবন্ধাাঃ সর্বাশান্তেমু ব্যক্তমের বর্ত্তন্ত কিন্তলিখনজ্ঞানেণ সত্যং তথাপি নানা স্থানি ক্ষানি সমাজ্তা স্বিশেষমেকত্র সংগৃহস্তইতি লিখতি ৷ তেত্বিতি ৷ এবং ভক্তলক্ষণেযু পূর্বাং লিখিতানামপি কেষাঞ্চিৎ পুনরত্র সংগৃহীতবচনান্তবর্ত্তিকেন লিখনাদ্পিন দোষঃ। একবির স্থিলাভাৎ ৷ স্যাধনা ভগবন্ধান্য সাধনৈঃ মহিতাঃ ৷ তানি চাত্রে তত্ত ভবৈবাভিব্যঞ্জাত্র ব্যানি ॥ ৩৫৮ ॥

অথ ভগবদ্ধনা :। তে চোক্তাঃ কাশীখণ্ডে দ্বারকানাহাত্ম্যে চন্দুশন্ম না। অদ্য প্রভৃতি কর্ত্রত যন্ত্রাক্ত ভচ্চুণু। একাদশ্যাৎ ন ভোক্তব্যং কর্ত্ব্যোজাগরঃ সদ।। মহোৎসবঃ প্রকর্জব্যঃ প্রভারং পূজনন্তব।। পালার্জেনাপি বিদ্ধন্ত ভোক্তব্যৎ বাসরন্তব। ত্বৎপ্রতিয়া হক্টো ময়া কার্য্যা দাদশ্যোত্র তসংযুতাঃ। ভক্তির্ভাগবতী কার্য্যা প্রাণৈরপি ধনৈরপি। নিভাং নামসংসূত্র পঠনীয়ন্তব প্রিয়ৎ র পূজা ভ ভলদীপত্রৈ ম্রা কার্য্য সদৈব হি। ভলনীকাঠন ছেতা মালা ধার্য্য সদা ময়া। নৃত্যগীতং প্রক-र्द्धवार मध्यारश्च बांगरत उव । खनमोकां श्रेममृं हन्मानन विरन्यनः । कदियानि ভবাত্রে চ গুণানাং ভব কীর্ত্তনং । মপুরায়াং প্রকর্তব্যং প্রভাকং গমনং ময়া। ত্বংকথাশ্রবণং কার্যাৎ তথা পুস্তকবাচনৎ ৷৷ ৩৫৯ ৷৷ নিত্যৎ পাদোদকং মূর্দ্ধা ময়া ধার্যাং প্রযত্তঃ। নৈবেদ্যভক্ষণগাপি করিষ্যামি যতব্রতঃ। নির্মাল্যং শিবসা ধার্য্যং দ্বদীরং সাদরং মর। তব দক্তা যদিউন্ত ভক্ষণীয়ৎ মুদা ময়া ।। ৩৬০ ।। তথা তথা প্রকর্বাৎ তব ভটিঃ প্রভায়তে। সত্যমেতনায়া রুষ্ণ তবাগ্রে পরিকীর্ত্তিতং ।। ৩৬১।। সপ্তমস্কলে শ্রীপ্রস্তাদেন । গুরুশুশ্রময় ভক্ত্যা সর্বালা-ভাপলেন চ। শ্রদ্ধা তংকথায়াঞ্চ সাধুসঙ্গেন চৈবহি। তৎপাদবন্দনাদৈ। শুচ তলিক্ষেকার্ছনাদিভিঃ ।। ৩৬২ ।। হরিঃ সংক্ষেমুভূতেমুভগবানাতঈশ্বরঃ। ইতি ভূতানি সন্সা কানৈত্তিঃ সাধু মান্যেং ।। ৩৬৩ ।। একাদশে চ আঁকবিযোগে-শ্বরেণ ৷ যে বৈ ভগবতা প্রোক্তা উপায়া আত্মলব্ধয়ে ৷ অঞ্জঃ পুৎসামবিদুষাৎ বিলি ভাগবতান্ হি তান্ ।। ৩৬৪ ।। তত্তিৰ বৃদ্ধোগেশ্বেণ । সক্তো-

নাসরং একাদশী জন্মান্টন্যাদি। তক্তিঃ পরিচর্যাদক্ষণ। পুস্তবং শীভাগবতাদি। তথ্য হিন্তং প্রিয়ং বছস্ত তথ প্রভাং দক্তা সমবৈর্গ্য ময়া ভক্ষণীয়ণ। তওঁ ।। তথ্য সর্বং তব প্রীভাগনের বথাবিদি কার্যাং নত্ত্ব-মার্থিমিত্যাই তথেতি। বছালুক্তমন্যদিস সংগৃষ্ঠাতি তথা তথেতি। তত্তংপ্রকারোহন্যদেত্যুর্থঃ। ৩৬১ ।। ৩৬১ ।। ৩৬৯ রা ক্রান্ত্রন্যদের কর্ত্বা প্রেম্বাং লাভানাং লক্ষানামর্পনের চ। সাধবং সদাচারা যে ভক্তা বেক্ষরাস্ত্রেমাং সক্রেমাং লাভানাং লক্ষানামর্পনের চ। সাধবং সদাচারা যে ভক্তা বৈক্ষরাস্ত্রেমাং সক্রেমাং তলিক্ষানাং শীন্তি বিক্ষরাস্ত্রাদির্বাহ বন্দনাদীনাং তৈশ্ব । তওঁহ ।। কান্যিক তত্ত্ব দিট্দানৈঃ। এবং নির্জিত বড্রিকাঃ ক্রিয়্বত ভক্তিরিভানেন সর্ব্বোমেবামনুয়ঃ। অত্রচ ক্র্যারাখনা দীনি ভক্তাক্ষানি তথ্য সাধনানি চ প্রক্র শুক্রাদাদীনি ক্রেয়ানি ।। ৩৬৩ ।। সামান্যেন ভাগবত লক্ষরামার যে বৈ ইতি। মন্যাদি মুখেন বর্ণাশ্রমানিধর্মান্ত্র্যা হতিরহস্যত্রাৎ অমুথেনৈর ভগবতা অবিছ্যাম্বি প্রশাং অঞ্জা স্থেনিবাল্যালক্ষান্ত্রা হিনা সর্বক্ষ্যাপনি কর্পাঃ যে প্রক্রেমান্ত্রা বিদ্ধি এতেচ প্রায়ঃ সাধনানার । বছা অন্তর্গ্রন্তাভাবেন মুগ্যাঃ। যদ্ধা দাস্যান্তর্গতা বাহ্যাঃ। যদ্ধা মন্যান্তর্গতা মান্যান্ত্রী মাং নমস্ক্র্ ইত্যাদিনা স্মর্ণাদ্য অর্জ্বনং প্রতি থথা শ্রদ্ধান্ত কথায়াং মেইত্যাদিনা যে চোদ্ধবং প্রতি স্বয়ং শ্রভগবতা প্রোক্তান্য তল্চ সর্বের্থ প্রায়া। এবেতি ।। ৩৬৪ ।। তক্র ভাগবতান্ ধর্মান্ নিফেদিত্যক্তান্ তান্ দর্শন্ত্রি সর্বাদ্ধান্ত্র কথামান্ত্রান্ত্রান্ তান্ দর্শন্ত্র কর্মান্ত্রান্ত্

মনগে হনক্ষাদৌ সক্ষণ সাগুষ্। দয়াং মৈত্রীং প্রশ্ন জ্বেদ্রা বথোচিতং।
শৌলং তপান্তিভিক্ষাক মৌনং স্বাধায়মান্ত্রবং। ব্রহ্মচর্চ্চাইংসা চ সমজং
দ্বন্দ্রভাষাঃ। সর্বত্রভ্রেম্বরানীক্ষাং কৈবলামনিকেতনং। বিবিজ্ঞচীরনসনং
সন্তোবং বেন কেনচিং। প্রদাং ভাগবতে শাস্ত্রে অনিকান্যত্রচাপি হি। মনোবাক্
কায়দণ্ডক্ষ সত্যং শামদমাবাপি। প্রবণং কার্ত্রনং ধ্যানং হরেরজ্বত কর্মাণঃ।
জমকর্ম গুণানাঞ্চ তদর্থেহথিলচেন্টিভং। ইন্টং দত্তং তপোজপ্তং বৃত্তং হতালানঃ
প্রিয়ং। দারান্সুভান গৃহান প্রাণান্ যংপরস্থানিবেদনং।। ৩৬৫।। এবংক্কাত্রনা
থেষু মনুষ্যেষ্ট গৌল্বং। পরিচর্যাৎ চোভয়ত্র মহংসু ন্যু সাধুষ্।। ৩৬৬।।
পরস্পারানুক্থনং পাবনং ভগবদাশঃ। মিথোরতি নিথস্তাটি নিবৃতি নিথ
ভাত্মনঃ। ৩৬৭।। শীভগবতা চ। মলিক্ষমন্ত্রভক্ষন দশনিস্পর্নাহনিং। পরিচর্যা
ভতিঃপ্রহ্মে গুনক্মানিক্টিলং। মংক্যাপ্রনণে প্রস্তা মদনুধ্যানসূদ্ধর । স্বাহাত্র

ইতাইভিঃ। যথেচিত্মিতি হানেমুদয়াং সমেষু মৈত্রীং উত্তমেষু চ প্রপ্রাং শিংক দিভি সার ক প্র**ক্ষোকস্থেনারয়ঃ। শৌচং বাহুং মূজ্ঞলাদিভিঃ আভ্যন্তরক্ষাদন্তমানাদি।** তপ্র ব্রধ্যান্তরণং ীতিতিকাং ক্ষমাং। মৌনং হুগ্রিচামসুচ্চারণং। স্বাধ্যায়ং যুগ্রিক।রং বেদ্পাতাদি। আর্ফিবং স্বিজ্তাং। ব্ৰহ্মস্থাং যাস্থাটিতং কাওলু স্থাননিয়ন'নি। অহিংশা ভূতেস্কোহং। জালু-সংজ্ঞান শীতোক্ত ব্যঃ থানিক পরে: সমং হর্ষবিধাদরাহিত্যং । আত্মেশ্রা নুটিকাং সজি দ্বপে-ণ জ্বেকাং নিরভ্রপেণেশ্বরেকাঞ্ । কৈ লেনেকান্ত্রীললং । অনিকেতনং গৃহাদ্যভিমানর।-ভিত্যং। বিবিজ্ঞীরবসনং বিজনপতিত লাং শুকানাং বা বলকলাদীনাং পরিধানং। ভাগংতে ভগরৎপ্রতিপাদকে শ্রীভাগরতে বা। অন্যর শাস্ত্রাদৌ অনিদা। সনশঃ প্রাণায়ামেঃ বাড়ে!-মৌলেন কারশ্যানীহয়া দওং। সভাং ধর্মার্থভাষনং। শমদনৌ অন্তঃকরণবাহোন্দ্রিংনিএটো। ইমানি ও প্রায়ঃ লাধনাল্যক্তানি। ভক্তেমু খ্যাক্ষান্যাই অবণমিতি চতুর্ভিঃ। হরেজ্জামকর্মান্তণা-मः প্রবণাদি । অভুতকর্মণইতি জ্যাদানি স্মাণ্যেরাছুতানীতি স্বৈধ্যামপি জ্যাদানাম্ছু ভাষ্মিতার্থঃ। যহা অভুতানি জগদাশচ্চিত্রাণি কর্মাণি পুতনাবধাদীনি যদা তদা হরেঃ শ্রীকৃষ্ণদা তার্থে ছযু (লেলেন জ্বিক্ট প্রেনার্থ বা সর্বাং কর্মা বিলেন্ড হায়জনাদি ভদর্থে শিক্ষেৎ। ইন্টং দত্তবিভ্যা - য়োভাবে নিঠাঃ। বৃত্তং সদচোরঃ। আতানঃ প্রিয়ং গরাপুস্পাদি দার (দীনপ)ালক্ষ্য পর্তৈর প্রমেশ্রার নিবেদনং ভৎসেবকত্যা। সমর্পনং বহুং পিঞ্চেৎ ।। ৩৬৫ ।। ক্রফএবাছা নাগশ্চ বেষাং জ্রীকৃষ্ণআত্মনঃ স্থাস্য নাথোবেষানিতি বা। যত্ত্বা ক্রেগজীবনস্থামী যেষাং তেষু ! উভয়ত্র ভাবরে জঙ্গদে চ যা পরিচর্যা তাং। বিশেষতোন্যু তত্রাপি সাধুষু স্বধর্মনীলেয়ু তত্তো-. পি মহৎস্থ শ্ৰীভাগৰতৰৱেষু । **ষদ্ধা** বিশেষতঃ শাধুষু দরালুগু মহৎস্থ হাম্বভি ॥ ৩৬৬॥ **ইড**শ্চ সহ সক্ষম্য যৎপাবনং ভগৰদ্যশঃ তথ্য প্রম্পারানুক্থনং নিকেছ। যদ্মা যশঃ প্রতি । তত্ত্র সং-স্পর্কাদিপরিত্যাগেন মিথে৷ মা রতিঃ রমণং যা চ জটিঃ স্থাং যা চ নিবৃত্তিঃ সমস্তত্র্থনিবৃত্তিস্তাং শিক্ষেৎ।। ৩৬৭।। কুপালুরিত্যাদিভিঃ পঞ্জিঃ শোকৈঃ সাধুনফণ নুজু। ইদানীং ভজের্লফণ নাহ। মলিক্ইতাউভিঃ। বিজ্ঞানি প্রতিমাদীনি। মলিক্ মছকুজনানামের পরিচর্যাদি।তত্র প্রচের্

## विश्वित्रके स्वास्त्र

नमकातः। शर्कानि ज्याकिमानीनि उनन्द्रमाननः। वनिविधानः श्रूष्णाशशामि नमर्भनः। गर्क ্রিকপ্রাস্থিতি চাত্তর্মাটেশ্যকাদশ্যাদিখু বিশেষত ইত্যর্থনা উদ্যানাদিকরণে সামর্থ্যে সতি স্তিঃ অপতি চাটনাঃ সমুয়চোদামঃ। উদ্যানং পুত্পপ্রধানং বনং উপবনং কলপ্রধানং আক্রীড়ং ক্রীড়া-अ. म ्यरभाक्तिमः देखरगादे शाकत्वर छेश्रत्वशः श्वामरशामकामिकितात्वशत्मकः देखरत्व स्था-ফাণং ম ওলবভনং সর্কাতোভদ্রাদিকরণং॥৩৬৮॥ মহাং মম । কু হস্য ধর্মস্য অপরিকীউনং। স্বয়স্ত্র- ता वा निरविष्ठः न चीकुर्याः । এउक माधावप्रावतिषयः तामश्रीखिषयः । उद्योशः त्यता यक् जिन्नारमाभावादेम क में कलार भतिकी खिंकर । विस्कृतिनंदवमामित्कथन भूनार उद्धे अंजार कली। क्रानि कथर मूर्य नाम देन विमासूमत्त इतः। शामानकक निर्मालार मस्टरू यमा तमाकृत्यः केला मिवहत्त जाः। यहा । अनारेश्व नित्व मिठ स्मा तार्व मित्र मानि स्था नित्व महार नित्व महार नित्व महार नित्व महार বিফোর্নিবেদিতালেন যন্তব্যং দেবভান্তরং। পিতৃভাশ্চাপ্পি তন্দেরং তদানস্ত্যার কণ্পতে। পিত-শেষক যোদদ্যাৎ হরয়ে পরমাল্পনে। রেতোদাঃ পিতরস্তম্য ভবস্তি ক্লেশভাগিনঃ ইভ্যাদি-বচনেভ্যা। यদ্বা। পূর্বাং মে নিবেদিতং সন্তং পুনর্মে ন নিবেদয়েদিতার্থ:। এতচ স্থাবরাতিরিজ্ঞ-নির্মাল্যবিষয়কং ছেরং। ভূষণাদীনাং পুনরপণে দেখাভাবাৎ। সচ প্রেমের ভত্তংপ্রকরণে লিখিতোহন্তি ॥ ৩৬৯॥ আনস্থ্যায় জীবিঞ্লোকায় । মলিকেত্যাদিযু চাত্র ভক্তেরকান্যের প্রায়েশোক্তানি ভত্ত কানিচিযুখ্যানি কানিচিদমুখ্যানি চ। অমানিত্নিভ্যাদৌ চ সাধনানো-বেতি বিবেচনীয়ং।। ৩৭০।। পুনশ্চ কথয়িব্যামি মন্তক্তেঃ কারণমিতি প্রতিজ্ঞাতমেশাছ। আছে। তি চত্তভিঃ। আজা ভারণাদরঃ শশ্বদিতি সর্বভার্যজাতে। মদত্কীর্ডনং আবধানভরং মংক্ধা-वाश्वानिमडार्थः। अञ्चटको लोकिकी क्रिया । वहमा लोकिकमानि मल्यानामीवनः क्थनः। मन (र्थ मरुषनार्थः कविद्राधिदमार्थना श्रीतजानः। (जामना उर्गाधनमा कस्तमारमः स्थाना ह পুরোপকালনালে:। यत्रा । অর্থোধনং ভোগোবিষয়োপভোগঃ হথং মোকানকঃ ভেনাং পরি-ত্যাগঃ। ইফोमि दैविनिकः यद कर्ष जनित समर्थः हिन्दुरुः कात्रगिर्ण्यः। अञ्चादनी आत्राज्यकः

সদর্থং বদুরন্তপঃ ।। ৩৭১ ।। অপি চাপ্রে কুর্যাত্ সর্বাণি কর্মাণি মদর্থে শনকৈঃ শরন মহাপিত্যনশ্চিত্তা মন্ধর্মাত্মনারতিঃ। দেশান্ পুণ্যনাশ্রেত মড়াক্তঃ সাধৃতিঃ শ্রিতান্। দেবাসুর্মনুষ্যে মড়ক্তাচরিতানি চ। পৃথক্ সত্রেণ বা মহাং পর্বা যাত্রামহোৎ স্বান্। কারয়েন্ন্ত্যগীতাদৈ মহারাজ বিভূতিভিঃ। মামেব সর্বভূতে যুবহিরন্তরপাবৃত্থ। ইক্ষেতাত্মনি চাত্মানং যথা খন্মলাশনঃ ।। ৩৭২ ।।

অথ শীভগবদ্ধম মাহান্তঃ। উক্তঞ্চ সপ্তমক্ষকে শীপ্রজাদেন। এবং নিভিত্তিষত্বলৈ ক্রিয়তে ভক্তিরাশ্বরে। বাসু দবে ভগবতি যয়াসংলভ্যতের ভিঃ। ৩৭০।।
একাদশে শীনারদেন। শুনতোন্পচিতোধ্যতঃ আদৃতোবাহনুমোদিতঃ। সদ্য পুনাতি সদ্ধমোদেন বিশ্বফ্রহোপি হি।। ৩৭৪।। তত্রৈব শীকবিযোগেশ্বরেণ। যানাভায় নরোরাজন্ন প্রমাদ্যেত কর্ছিচিৎ। ধাবনিমীলা বা নেত্রেন স্থলেন্ন পতেদিত্ত। ৩৭৫।। প্রবৃদ্ধযোগেশ্বরেণ। ইতি ভাগবতান্ধর্মান্ শিক্ষন্ ভক্তা ভদুখ্যা।
নারায়ণপরোমায়া মঞ্জেরতি দুন্তরাং। ৩৭৬। শীভগবতাচ এবং ধ্রৈ মনুষ্যাণামুদ্ধ

মুখান্যকার্যকানি। সর্বাকামবিবর্জনাদীনি চ প্রায়ঃ সাধনান্যের ॥ ৩৭১॥ হন্ত তে কথিনি ব্যামি মম ধর্মান্ স্মঞ্জলানিতি প্রতিজ্ঞায় তানেবাহ কুর্যাদিতি চন্তর্জিঃ। মাং স্মরন্ শনকৈঃ। অসম্ভ মতঃ কুর্যাৎ। তদাহ ময়ীতি অপিতে মনশ্চিতে সকল্পবিকল্পান্মগলানীয়িকে যেন। অতএব মন্ধর্মেষেবাল্মনসোরতির্বস্য সঃ। পুণ্যদেশলক্ষণং মন্তক্তেরিতি। দেবাদিয়ু যে যে মন্তক্তা
তেষামাচরিতানি কর্মাণি চাপ্রায়েৎ। সত্রেণ সম্ভূর বা। সর্বাভূতেরু আল্মনিচাল্লানমীশরং হিতং
মামেবেক্ষেৎ। নমু কথ্যেকস্য সর্ব্যেন্তর্জিঃ তত্রাহ বহিরন্তক্ত অপার্তং পূর্ণিয়তার্থঃ। এসু চ
ক্রমেণ সাধনানি ভক্তাঙ্গানি চ মুখ্যান্যপি পূর্ববিধিতালুসারেণ বিবেচনীয়ানীতি দিক্। ৩২০।

এবমুক্ত শুক্র নাদিপ্রকারে। নির্ক্তিং যালং কামক্রোধলোতনো হ্মদমাৎ সর্যাণামিপ্রিলাং বা বর্গে বৈতে । ভক্তিং ঈশ্বরারাধনক পৈব। যায়া ভক্তা। রতিং প্রেমা।। ৩৭৩। আচতা-আন্তিক্যে গৃহীতং অনুমোদিতং পরিং ক্রিয়মাণং সংস্তৃতং সন্ধর্মাঃ ভগবন্ধর্মঃ। দেব হেবান্ধনেব। যদ্ব। দেবভোবিশ্ব শৈ চ ক্রহন্তি যে তানপি ।। ৩৭৪।। যান্ ভগবন্ধর্মান্ অন্তায় আশ্রিত্য যোগাদিন্বির ন প্রমাদ্যেত বিশ্বৈর্ম বিহুন্যেত। কিঞ্চ। নিমীস্য নেত্রে ধাবরণি ইছ এলু ভাগবত ধর্মের্ ন স্থানেও বিমান নামাজ্ঞানং। যথাহা শ্রুতিশ্বুতী উভে নেত্রে বিপ্রাণাং পরিকীর্তিতে। একেন বিকলং কাণোদ্বাভ্যামন্ধঃ প্রকীর্ত্তিতেইতি । অজ্ঞান্থাপীত্যর্যঃ। যথা পদন্যাসস্থানমতি ক্রেমা শীঘুং পরতঃ পদন্যাসেক গতির্ধাবনং তহদত্রাপি কিঞ্চিং কিঞ্চিদভিক্রমাতিশীঘুমন্থ জানং খাবনং। তথান্তির্চন্তিপ ন স্থালেও ন প্রতাবায়ী ন্যাও তথান পতেও কলাম ভূশ্যেও।। ৩৭৫॥ তত্বপায়া ভাগবতধর্মোওপরায়া ভক্তা। ভক্তিনিষ্ঠয়া নারায়ণপরঃ সন্ অতিক্সন্তর্যামপি মায়াং অঞ্জঃ স্বর্থন তরতি॥ ৩৭৬॥ এবমীদ্শৈরেতির্কা আন্সনিবেদিনাং সতাং ভক্তিঃ প্রেমলক্ষণা সম্যাগ্রায়তে। অস্য ভক্তস্য অনাঃ কোহর্শং সাধনবাপঃ সাধ্যবপোবাহ্বশিষ্যতে সর্কোহিণি স্কৃতির্বিভিত্ত করতীত্যর্থঃ। যদ্বা অস্য মম। ততক্ত সতাং মন্তক্তিসম্যগাবিত্তাবে সতি সমৈব কৃত্যর্থতা

AU SE

বাস্থানিবেদিনাং । ময়ি সংজ্ঞায়তে ভক্তিং জোইনোরারিগোস্যাবিশিষ্টত ।।১৭৭। কিফাগ্রে । নহাজোপক্রমে ধ্ংসোসদ্ধর্ম সোদ্ধরানুপি । ময়া বাবসিতং সমাগ্রিত আদন্দিনঃ ইতি ।।১৭৮। অলাভে সৎসভায়ান্ত শুক্রাবৃঞ্চ নিজালয়ে । দেবালয়ে বা
শাস্তিঃ কীর্ত্রেড্রাবং কথাং ।। ১৭৯ ।।

অথ এতগৰ্মীলাকথাকীর্জনমাহাত্মাং ।। উক্তঞ্চ ক্ষান্দে প্রীভগর্তা অন্তর্পং প্রতি। মৎকথাং কুরুতে যন্ত বৈশ্বনাং সদাগ্রতঃ। ইহ ভোগানবাপ্নেতি তথা মোকং ন সংশায়ং। প্রথমক্ষে প্রীনারদেন। ইদং হি পুংসন্তপসং শুভস্য বা দ্বিক্রা, সূত্রস্য চ বুদ্দভয়োঃ। অবিচ্বতোহর্থাং কবিভিনিক্রিপিতো যদুর্বশেশাকগুণানুবর্ণাং ।। ১৮০।। কিঞ্চ। এতহ্যাতর চিন্তানাং মাত্রাম্পর্শেচ্ছয়া মুহুঃ। ভবসিদ্ধু প্রোদ্ টোইরিচর্য্যানুবর্ণনং ।। ১৮০।। একাদশে প্রশুকেনাপি। ইখং হরেভ্গব-ভোরুচিরাবতারবীর্ঘ্যাণি বাল্যচরিতানি চ শত্রমানি। অন্যত্র চেই শ্রুতানি গৃণন্ মনুব্যাভক্তিং পরাং পরমহংসগতোলভেত ।। ১৮২।। তত্রব প্রীপ্রহ্লাদেন নৃসিংহ্ন স্তরাবৃক্ত্যা সোহ্ণ প্রিয়স্য সুক্তান্ধ পরদেবতায়া লীলাকথান্তব নৃসিংহ্বিরিঞ্জিগীতাঃ।

সাংক্রিপিটার । ৩৭৭ । অজ হে উদ্ধব অনাশিষোনিদ্ধানস্য যথা ন বিদ্যুতে আশীর্ষমাথ। নতাং পর মাশ্রিদিরপ্রেলিটার । উপক্রমে আরন্তে সতি অগুপি ঈষদ্পি বৈশুণাদিভির্নাশোনান্ত্যের ।তোমনৈব নিপ্রণিয়াদরং ধর্মঃ সম্যাধানতোনিশ্চিতঃ নস্ত মন্ত্রাদি মুখেন কথছিছে। যথা। বিশেষালোমাকস্যানিপ্রণিয়াৎ কলবিশেষাভাবাৎ সম্যক্তমাদিপি সমীচীনইত্যাং ব্যব্দিতঃ তি । তাল ভাল বিশ্বাহা করা আবং স্বাহাং প্রাহাং করা লাক্ষ্যাংশ্চ প্র্কেনিতি লিনিতং। যাত তাল্লী সভানোপ্তি তাল কিং কার্যামিতাপেক্ষায়াং লিখতি। অলাভে ইতি। শাল্পিভিনিত্রি আভিনিত্রং ভালবংক্রাং স্থামের কথ্যেছ। কুলিলায়ে দেবলেয়ে বা । ৩৭৯ । বিশ্বাহার বিশ্বাহানিক্রানিক্রাহানিক্রাহার ক্রেলিটার্নিক্রাহানিক্রাহানিক্রাহার স্থানিক্রাহার বিশ্বাহার স্থানিক্রাহার ক্রাহার স্থানিক্রাহার স্থানিক

ভগবলী নাকথাকী উনেনৈৰ তপ আদি সকাং সকলং সাথে। যদা ভগবলী লাকথাকী উনমেৰ তপআদিনাং কলগিতাহ ইনং হাতি। শ্ৰুতাদ যোভাবে নিঠাঃ ইনমেৰ তপঃ প্ৰবণাদেঃ অনিচ্যুতানিতা। হঠঃ কলং। কিন্তুং। উত্তমশ্লোকস্য গুণান্ত্ৰৰ্ণনং লীলাকবাকী উনমিতি যথা তিচ্চা মুন্তৰ্গানাণং বিষয়াণামুপভোগালাছয়া আতুরাণি বিকলানি চিজানি যেষাং তেয়ামপি হরেঃ চর্যায়া লীলায়া অন্তর্গনং যথা শ্ৰুত্বান্তর্বিজ্ঞানাং মাত্রাম্পশেজ্য়াপি যথহিন চর্যান্ত্র্বর্ণনং এতদেব হি নিশ্চিতং ভবিধিয়াঃ প্রকঃ পোতঃ স্থ্যোজারসাধনং। ন কেবলং প্রুতিপ্রামাণোন কিন্তু অন্যব্যতিরেকাভাগে দ্বতিব্যর্থঃ। ও৮১॥ ক্রিরাণামবতারাণাং মৎসাদীনাং বীর্যাণি পর্যান্ত্রত্বিজ্ঞানিচ প্রভাবেধানীনি লোকত্রয়েপি শন্ত্যানি মঙ্গলানি পরমন্ত্র্যানীলাং বীর্যাণি পর্যান্ত্রত্বিজ্ঞানিচ প্রভাবেধানীনি লোকত্রয়েপি শন্ত্যানি মঙ্গলানি পরমন্ত্রকাণ বিবা ।পরাম্ব্রুতিং প্রেমলকণামিত্যথঃ। পরমন্ত্রানাং গতে জীক্কেনা ও৮২॥ দোহং স্থলাসঃ ভোলাহিত বি লীলাকথা অন্তর্গান্ স্থানি মহাত্র্থানি অঞ্জ্ঞ্যা অনায়াদেন ভিতার্ম ভ্রামি ন গণারিত্বাস্থিঃ। তত্র হেন্ডঃ গুণৈরাগানিভির্মিশেষেণপ্রস্কুক্তঃ সন্। তৎকুতঃ তে পদ্বুগমেবালয়ো যেযাং ভাজানাং ত্রবহং সাজ্ঞানিনঃ সারানার বিবেকিনোবা হৈঃ সঞ্জোবস্য সনসঃ। কথা জুব্যা ক্রাঃ প্রমন্ত্রাদিকং

অঞ্জ ডিভর্মানু গুল্ম গুল্বি এমুক্তোদুর্গাণি তে পদ্য গালায়হংসসঙ্গঃ ।।৩৮৩।। গোপি-কাভিরপি গাঁতং। তব কথামূতং ত প্রজীবনং কবিভি রীড়িতং কলুষাপহং। শ্রবণ-মঙ্গলং ঞ্জিদাভতং ভূবি গৃণন্তি যে ভূরিদাজনা। । ।৩৮৪ ।। কীর্জদেশ্যত্র তজ্জেয়ং নালালাং অবনেইসঃ যথ । সিদ্ধাতি অবণৎ মূনং ক্তিনাথ স্বয়মেৰ ছি ।। ৩৮৫ ॥ শাস্ত্রাভ্যাসম্য চাতাবে পূর্দ্ধেষাং লোকবিঞ্চতাং। মতামাধুনিকানাঞ্চ কথাং বন্ধুযু কীউরে ।। ৩৮৬।। ইতিশ্রীগোপালভাষ্ট বিলিখিতে ভগবভাক্তি বিলাসে সৎসত্ত্বা নাম দশমোবিলাসঃ।-

তেন র সদাস্কীর্ত্তনমভিপ্রেডং। কুতোগীভাঃ বিরিঞ্চিনা গী চাঃ তৎসংপ্রদায়প্রবৃত্তাঃ। তথাচালে র্মনীক্রতিঃ। দেবা হবৈ প্রজাপতিমক্রেবল্লিতাাদি। এতেন কথায়াঃ পরমপুরুষার্থতা চ দশিতা-শনকানিপরমহংসাচার্যোপ্রাপি সেবিভন্তাই। চুর্গাবি ভিতন্মীতি আরুষঞ্চিকজলমাত্রমিতি দিক্ ্ব ৩৮৩॥ কট্ৰেৰামূতং অত হেল্প: তপ্ত দীৰনং প্ৰসিদ্ধামূতাপ্ৰকৰ্যমাজং। কৰিছিত্ৰ আদিছিব পীজিতং স্তত**্ দেবলোগ্যং দ্বুগুতং তৈন্তক্ষ**ীক্তং। কিঞ্চ। কলাুযাপ হং কামকলাুয় নির্পদ<sup>্</sup> তিন্তু মতং নৈবস্তুতং । কিঞ্চ । অবণমঙ্গলং অবণমাত্রেণ মঞ্জলপ্রদং । তত্ত্বতানাগেজং ! কিজ। ঞ্জিত অশান্তং তক্ত মাদকং। এবন্তুতং সুৎক্রাস্তং আতক্ত বর্ধা ভবতি তরা ভুনি যে গৃন্দ্র নিরপর্তিতে জনাঃ ভূরিদাঃ বহুদাতরঃ জীবিতং দদতীতার্থঃ । অধুনা চ তাল্শানা্মলাজেন বসং মৃত্যএবেতি ভবেঃ। মছা এবস্তুতং স্বৎকথা মৃতং মে গ্ৰন্থি তে ভূবিদাঃ। পূৰ্বাজ্যম বহু দ্ভা হক্তঃ প্রমযুক্কভিন ইত্যর্থঃ। অতোবয়ং তাদৃশাদৃষ্টাভাবেন স্বংক্ষণং কীর্দ্তান্ত্রমণক্তাঃ কথং জীবামেতি ভাবঃ। ক্ষরা। স্বস্থিরতে স্বংক্ষাক্ষ্ প্রিবিশেষেণ বয়ং মারিতাএবেত্যাজঃ। সুৎক্রিধ মৃতং মৃতিঃ লাক্ষান্মরণমেব। কুতঃ তপ্তং তাপাভিভূতং ভবতি শ্বীবনং যক্ষাৎ। প্রমদাহকস্বভ वन्तर व्याप्तरिक्तम् मत्मा अनक्षा । एथः शिक्षिकिः क्षिक्षा क्षित्रत्विष्ठः । यठः कन्नावाश्वः किथा। खायगरभाषा अन्तर अ्थकतः । किथा। खिशामरमा ययार अच्चामीनाः टेलताएतः नर्साटा বিস্তারিতং বস্তুতস্তু প্রবণয়োরেব মঙ্গলং । জীমদৈরেবাততমিতি দোষঃ স্চিতঃ। অতএবন্তুতং তৃৎকথামূতং যে ভুবি গৃণস্থিত এব জনা ভুরি বছ দান্তি অবখণ্ডয়ন্তি গলে কর্ত্যস্তি তথা তে। এবঞ্ ভত্ত্তঃ জ্রীকৃষ্ণকথায়। মহাফলবিশেষএব হৃচিতইতি দিক্।। ৩৮৪॥ নমু অবণস্য মাহাল্য ৰচনানি বহুনি লিখিতানি কৃথং কীর্ত্তনসাম্পতরাণি ততোপাস্য বিশেষাৎ তত্ত লিখতি কীর্ত্ত:নপীতি হি যতঃ নূনং নিশিষ্তং কীর্ত্তনাৎ স্বয়মেব আবণং সিদ্ধ্যতি। ভোত্তেণ স্বকীয়কীর্ত্ত-নস্য স্বতঃ শ্রবণাৎ অতঃ শ্রবণাদ্পি কীর্ত্তনস্য মাহাত্মাবিশেযোহপি জ্রেয়ঃ। তথাপ্যপেবচনানি ্প্রায়ঃ ক্রিনাহাজ্যোক্তা বজুর্মাহাজ্যাপপতের জ্ঞাদিনা তথা হজেঃ। শ্রেত্বাং শ্রুণাপেকরা বছনকীর্জনযোগ্যস্থাদিতি দিক্।। ৬৮৫।। শাস্ত্রজ্ঞঃ কীর্ন্থয়দিতি নিগ্রিডং কিন্তু শাস্ত্রজ্ঞস্থা-ুভাবেপি তথা তেন ভগবংকথাশুক্রায় বৈঞ্বদ্যাগ্রমবিশেষভোবেপি কদাচিদপি ভগবংকথা ন পরিত্যাল্যোত লিখতি শাস্ত্রেতি। পূর্বেলাং পুরাতনানাং আধুনিকানাঞ্ তৎকালীনানাং নতাং জিবৈক্ষানাং কথাং বন্ধু নিজ্জাতপুত্রকলজাদিয়ু কীর্ত্তাহে। নমু সাপি কথং জেয়া তত্র লিখ-জিলোকবিশ্রুতামিতি ॥ ৩৮৬॥ ইতি দশমঃ। ভিলোকবিশ্রুতামিতি ॥ ৩৮৬॥

## वकामम विलामः।

জীতিতন্য প্রপদ্যেত মহাশ্চর্প্রভাবকং। প্রশাদে যাস্দুকৌইপি ভগব-জিজিগান্ভবেং।। ১।। ততোদিনাত ভাগেণু বাহেঃ ধু সুরসলস্। যাত্রাৎ রহা বিজঃ সন্ধানুপানীত যথাবিধি।। ২।।

তথ সায়ত্বনর তানি। জীবিষ্ণুপ্রাণে। ওকাসগরসম্বাদে। দিনান্তসন্ধ্যাৎ সূর্যোগ পর্কাশ্বিক যুঁতাং বুলং। উপতিষ্ঠেল্যথান বিং সমাগাচম্য পার্থিব। সর্কাশবিদ্ধান্ত গুলং সল্যানাঃ পার্থিবেষ্যতো। তা। তনতে সৃতিকাশের বিজ্ঞান্তির ভাতিতঃ। উপতিঠিন্তি বৈ সন্থাং যেন পূর্বাং ন পশ্চিন । ব্রজন্তি তে দুরাল্লান্ত্রিস্থাং লার চন্দ্র নাগতিয়া হয়। ততাহথাজ্ঞমাচারং কল্প সায়ন্তনং রুক্তী।নির্দার্থ পূর্বের নাগি ভাতান তাবদর্গেশ যাহো। জীরকাভজ্ঞাসজ্ঞান্ত সংখ্যাপাস্যাদিকং যদি।

অথশীতগ্র দুন্তানাং কর্মপাতিত।পরিহারঃ। পাছে শীভগ্রচুক্রী। মংকর্ম কুর্মতাং পুশ্নং ক্রিয়ালোপে। ভবেদাদি। ভেরাং কর্মানি কুক্ষনি ভিসুঃ কোটে ; মহর্মঃ। আদিপুরানেচ। মাতি ময় নামানি যে ত্যক্তা কর্মচাথিলং। তেয়ং

শ্রীমটাতে নাদেশ তংবাদে সদা প্রভাবতঃ। অড়োইপি ভগবদ্জিং নিতাকুতাং সমাপ-মেং 1 নিতাকুতা শাস্তাশেষ ভগবদ্ধ জিপুকার লিখন প্রমন্তরে ভিগবতঃ প্রভাবে কৈ সম্পদতে ইত্যাশানেন তংশা এই যাতি জাতৈত নামিতি। মহা চ্যাঃ প্রমাদ্ভঃ প্রভাবঃ শ'জিম্পা তং । তামবাভিবাঞ্যতি যাসা প্রদাদে সভীতি॥ ১॥ বাজেন্বহিংস্তিয় দেবলে মেণ্ । ২৭

দিনান্তসন্ধানিত্যত্র আতিঃ। প্রাতঃ সন্ধাং সনক্ষত্রান্ত্রাসীত ঘ্রাবিধি। সালিত্যাংপশিচমান্
সন্ধাং প্রাস্থানিতভাসরই তি । ৩ ।। স্তকং প্রজনানি অনৌচং শাবং। বিভূনঃ উন্মানানিইবিচিত্রাণা আতুরং রোগাবস্থা ভীতিশ্চ ।।৪ । ততােইনাত্র য্যাশ্মাচারং ঘােষসাশ্মস্থানন্ ব আচারঃ
কর্মা তমনতিক্রমা। পূর্বাবং পূর্বেলিথিতা ক্রসারেণ শক্তশ্চেন্ততি লক্ষাায়ামপি ক্যাং ।।৫।। আন্যোল্
পামনানিকং নিপোটারের পশ্চান্ত্রাবন্তমর্চারেনিতি লিথিতাং অধুনা ভগবংপ্তাপারেণ কর্মাচিংসন্ধ্যোপাসনানি কর্মাণ্যপেক্ষিরানীতি লিথতি । জীক্ষেতি। জীক্ষভক্তী আস্কিস্থপরতা
তয়া। পাতিত্যবাপ নােষ শক্ষাপি ক্রপ্রিদ্ধি নাম্বি।। ৬ ।।

মুম কর্ম পূজাদি অগ্রতঃ ভক্তিশাহান্মে তাবৎকর্মাণীত্যাদিনং গেখাং ৷

কর্মানি কুর্বন্তি ঋষয়ো ভগবৎপরাঃ ইতি ।। মৃদুশ্বদ্ধস্য ভক্তস্য প্রেট্ডামন্-পেগুন্য।কিঞিৎ কর্মাধিকারিত্বাৎ কর্মাস্যৈতৎ প্রণঞ্চিতং ।। প্রেট্শ্রদ্ধস্য ভক্তস্য কর্ম্মন্ধিকারতঃ । পাতিত্যং ন ভবত্যেব লেখনীয়ং তদগ্রতঃ । কিঞ্জিদ্ধান নাদিভেদেন ত্রিসন্ধ্যঞ্জ পৃথক্ পৃথক্ ! প্রোক্তঃ পূজাবিধিঃ প্রাক্তিত্তৎকামান্ড্রিন্দ্রে।। ৭।।

অথ ত্রিকালার্জনবিধিবিশেষঃ। শ্রীগৌভনীয়তন্ত্রে। তারাধনবিধিং বঞ্চে। প্রাভঃ कारल विस्नाव छ। वदः वृन्नाव नः धाराय भूग्व का कि विख्ः। भू वारेश ने । शवृरेक क পনসৈ শৈচর কাঞ্চনিঃ। বকুলৈশৈচর বিলৈশ্চ বনৈ ঃ কুরবকৈর পি। সর্বর্ত্ত্বসুমে পেতিঃ পুস্পাবনতশাথিভিঃ। তন্মধ্যে পুলিনং ধ্যায়েদ্বন্তপুস্পাকচম্পাকং। ধূপদি পৈ দ্বিভানেন পুস্পানাবিভূষিভং। মুক্তাদামপতাকাভিবন্যপুস্পৈরক্ষৃতং। তন্মধ্যে কপেকৃক্ষস্য ছায়ায়াৎ পক্ষজাসনে। সুস্থিতং বেণুগীতাত্যৎ সর্ব্বাভরণভূষিতং। বন-নাল পরিবৃত্তং গোপিকাশতবেষ্টিতং। দেবাসুরৈ ৮০ সিদ্ধৈশ্চ গন্ধবৈরপ্সরোগতিং। মকৈবিন্যাধিবগণৈ বিভিগভ বি সংভিতিঃ। ত্রিকার্নিভিঃ ভ্রমানং রুঞ্জৈব ক্রি-गि डং। নানা বিধৈশ্চ গোপালৈন্ গপি কি বিভূষিতং। লেলিছ। মানং প্রণয়াৎ পশু नाः भाग्रकाणि ভिঃ। इन्होयत्र निष्ठः प्रतिकृतः प्रतिनातः प्रिनातः विकारः मन्द्रिननुत्रम्मर প্রপত্রনিভেক্ষণং ৷ পদাভপাণিপাদ্ধ প্রারাগ্রনাচিতিং ৷ শ্রণ্ড সর্কলোকানাং গোপীনাৎ প্রান্তরভং। এবং ধ্যাত্মার্চ্চয়েন্নিত্যৎ ষোডশেনোপাচারতঃ। দুর্গঞ্জ দ্বি-খণ্ডেন সভ্তিং সংনিবেদয়েত। সৌবর্ণাত্তে গোপানাং গ্রাসং কাংস্চৈ নিবে-দায়েৎ ৷ এবং সমর্গরেম্বক্তা জপরাস্ত্রং সমাহিতঃ ৷৷ মধ্যাক্লে সংপ্রবন্ধামি পূজাং नर्जार्थनिकिमा । मोवर्शक्षि मृत्न शाङ् । भगनः एउ। भूगावृक्त महाकीर्प পুন্সপলি নিনাদিতে। পঢ়োৎপলাদিসফীর্নে বাপীভিঃ সমলংক্লতে। তলিন্সং-পুলিনে রমেঃ ছায়ায়াং প্রজাসনে । সৌবণ্ন্গুপে সমঃগ্রিতানাদিবিভূ্ষিতে। মালাদিরচিতে রম্যে মণিভিঃ পুজাশোভিতৈঃ। সুবর্ণরত্নদোহৈর হর। তরশোভিতে। निःशामतम भनाभीनः विद्यासः करममूननः । मूक्तामरेगः मूक्तिरेतर्जारेतर्मानविचु-ষিতং। ধ্যাত্বা সম্যাগৃশুদ্ধাত্বা জাতীপুল্পৈঃ সমর্জ্যেৎ। মহারজভপাত্তে তু নৈবে-দ্যাল ২ নিবেদয়ে । দদ্যাশূষণ স্থানাঞ্জাপানাং বিজিতে নিষ্ধঃ। দেবকীপর্মা-নন্দ্রেবং ধ্যায়েৎ সুথাসনং ।। রংত্রিপূজাবিধিং বক্ষ্যে রুক্মিণীব এভস্য চ। অধন্তাৎ कण्यवृक्तमः मर्स्वपूष्णक्तमः रेव । बजूनख्यमधः स्वाभीजाञ्चतः इति । पिवा-চন্দনলিপ্তাঙ্গং দিব্যাভরণভূষিতং। অনেকদিব্যমালাভিম্প্তিতং পাক্ষঞ্জেশণং। রত্বপ্রথমধ্যতং সুন্দরং সুন্দরিমতং। শোভয়ত্তৎ স্ববপুষা সর্বলোকারিজ্ঞিয়া।

নোপৌদ্রানাৎ হার্য, বলাং প্রাক্তবর্তনং । সুগলিপুলোরারাধ্যৎ জিরুক্থ সর্বনারকং। রাজতে তুপয়ং শুদ্ধং পকৃং পাতে নিবেদয়েও। এবসভ্যর্ত্তর মনসা জপে অস্তং স্বাহ্বিভঃ। কালত্রয়ার্তনে টেব সহসুং সাইকিও জপেও। এয় নিভ্যক্রমঃ প্রেক্তং রুক্তবন্ত্রনার স্বিভিঃ।। তত্রৈবাদৌ সংক্ষিপ্ততিকালপুজাক্তান্তরং। মনসা বাসসভ্যতি ত্রিয়ু সন্ধ্যাসু সংয্যা। প্রভাহন্ত অপেন্ত্রনাইনহস্কং। ভসান্মর্বে; জপেন্ত্রং নিভ্যম্কিও তথেতি।।

অথ নক্তৎ কুত্যানি। ততোষথাসংপ্রদায়ং ছোসং নিজাদ্য বৈফবং। গীতন্ত্যাদিকং ভক্ত্যা বিধায় প্রার্থিয়ে প্রভুং। তথাচোক্তং। বলায়সা পদা স্বামিন্ পদবীমবধারয়। আগতে শয়নস্থানং প্রিয়াভিঃ নহ কেশবেভি ॥৮॥ এবং প্রার্থ্য-।
সমর্প্যাস্মৈ পাদুকে শয়নালয়ং। আলায় দেবং তত্রত্যানুপঢ়ারান্ প্রকংপয়েং। ।৯॥
বিশেষতোহপরেওত্র ঘনং দৃধ্যং সমার্করং। তায়ুলগু সকপুরং দিব্যমালানুলেপনং।
ইয়া ভক্ত্যা সমারাধ্য ভগবতঃ স্বাক্তিতঃ। তংগ্রাত্যৈ স্ক্রেক্যানি তৎফলং বার্পয়েৎ কৃতী।।

অথাহোরাত্রাখিলকর্মারির। একাদশক্ষারে। কারেন বাচা মনসেন্ট্রেররা বুদ্যারনা বানুস্ভয়ভাবাই। করোভি ইদ্যাই সকলং পরীক্ষা নারারণায়েতি সন্ধান্তই । ১০।। কিলাত্র। সাধু বাসাপু বা কর্মা ইদ্যাচরিতং ময়া। তইদর্বই ভগবন্ বিফোগ্রণারাধনং পরং॥ ১১॥ কিলা। অপাই দ্যালারাধনং পরং॥ ১১॥ কিলা। অপাই দ্যালারাধনং পরং॥ ১১॥ কিলাই স্কুভং কৃত্য ময়া জনাদনত্বন গুহে দিনা চ রাত্রে। চ যথাত গ্রহুভা। ইদন্তি কিলিই স্কুভং কৃত্য ময়া জনাদনত্বন কৃত্যের হ্যাত্র। অভএবোজিই ভূতার ফ্লোক ক্লোনং প্রতি প্রভিগবতা। পূর্তেন তপসা মজের্দানৈর্বোগৈঃ সমাধিনা। রাদ্ধনিংশ্রেরণং পৃৎসাৎ মইপ্রতিত্ত্রবিরত্নিতি

প্রিয়াভিঃ জীরাপিকাদিভিঃ ॥৮॥ তত্রতাঃন্ শয়নালয়ে কুতাান্॥৯॥

আল্লনা চিক্তেনাইস্কারেণ বা অনুস্থাতায়ঃ স্বভাবস্থাই। অনু র্যান কেবলং বিধিতঃ ক্তমেবিতি নিয়মঃ স্বভাবাল্যারিলৌকিকমপীতি। তথাচ ভগান্দাহিল । বহু নামেবি বদশাদি যজ্জুন হোষীত্যাদি। যদ্ধা । নতু কান্নাদীনামেব কর্মা নাল্লন ইত্যাশস্থাই অন্যাদেনাস্থতাই ব্রাক্ষণ স্থাদিসভাবাই বহু বহু কাল্লামেব কর্মা নাল্লন ইত্যাশস্থাই অন্যাদেনাস্থতাই ব্রাক্ষণ স্থাদিসভাবাই বহু বহু কাল্লামেবি কর্মাদিনা বাদ্যাই ভগবদারাধনকর্মোতার্যঃ। তই সকলং পর্তমা পর্মেশ্রায় নাল্লায়ণায় সমর্পন্তে। ইত্যানেন বচনেন কাল্লেনেত্যাদি নাল্লায়ণায়ত্যতাপদ্যাদিই প্রির্ভার্যঃ। যদ্ধা নাল্লায়ণপ্রীত্যর্থং ভবিত্তি সমর্পয়েই । ১০ ॥ কর্মা ভগবদারাধনলক্ষণং। সাধু সম্যক্তয়া আসাধু অসম্যক্তয়া বা ক্তমিতার্যঃ প্রভাবতি ভক্তেরসংকর্মাণামর্পনস্থাবোগ্যস্থাই। এবং আল্লাধনং পর্মারাধন-ত্মেন গৃহাণ স্বীকুরু॥ ১১ ॥ নচ মৎপ্রীতেরধিকং কিঞ্চিদন্তি ইত্যাই পুর্বেণেতি। পুর্তাদিভী-

।। ১২।। ইঅমারাধয়েনিত্যং ভগবতং যথাবিধি। ন্যায়ান্তিভিছোত্মবিভেন সম্প্র-ফলসিন্ধয়ে।। ১৩ ।।

অথপ্রাকলসম্পাপুরপায়ঃ একাদশক্ষরে । অয়ং স্বস্তরনং পদ্থা দিজাতেগৃহমে ধিনঃ যে ভুরুরা গুবিত্তেন শুক্লেনেজ্যেত পূরুষঃ 1581 অগস্তরসংহিতায়াঞ্চান্যায়াজির তৈঃ সাধনৈশ্চ দানহোমার্জনাদিক ৭ ৷ কুর্য্যায়চেদধোয়াতি ভক্তা৷ কুর্বায়িপ দিজেতি 15৫ ৷ যতাৎ সিদ্ধৈর্মিজঃ শুদ্ধৈত হৈর্থনে গৃহজ্যেৎ প্রভুং ৷ পূজাত্রব্যাণ্যশক্তশেদদ্যাদী ক্ষেত্র বার্জন ৭ ৷ ১৬ ৷৷

অথাশক্তন্য পূজাফলপ্রাপ্ত পায়ঃ। অগস্তাদংহিতায়াং। আরাধনাসমর্থনেচদদ্যাদর্জনসাধনং। যোদাত্তং নৈব শক্ত্রোভি কুর্য্যাদর্জনদর্শনং। নিস্তারায় তদেবালং
ভবাব্দের্মুনিসভ্রম। নৈকঞ্বস্য বিদ্যেত সোধোযাত্যের নান্যথা।। ১৭।। কিঞ্জ তত্তিব। যন্ত ভক্ত্যা প্রয়েজন স্বয়ংসম্পাদ্য চাপিলং। সাধনৎ চার্জ য়েহিদ্বান্ সমগ্রং লভতে ফলং। যোহর্জয়েবিধিবজ্বত্যা পর্নীতেশ্চ সাধ্বৈঃ। পূজ্যকলার্জমেব স্থান্ন সমগ্রং ফলং লভেং।। ১০।। কিঞ্চ। পালে শিল্পসভ্যাসমানায়কার্তিকমাহংছে।। ধর্মোপদেশেন যোত্রবাং পরং যাচয়তে নরঃ। তৎপুণ্যকর্মজং ভস্য ধনং দত্ত্যগ্রাহ ফলং।। ১১।।

তথ দর্শনমাহাত্মার । পাত্মে জ্ঞাপুলন্তা ভগীরথসয়াদে। পূজিতং পূজামান নগু যে পাশ্য নি জনাদর্শং । কপিলাশতদানস্য নিত্যং ভবতি তথফলং ।। ২০।। আগ্রো পূজিতং পূজামানয়া যং পশ্যেত্র ক্তিভাহরিৎ। শ্রন্থ না দতে যন্ত সোহিপি যোগফলং ল.ভং ।। সংপূজামানং বিধিনা যং পশ্যেৎ শ্রন্থাইরিং। সোপি যোগ

রাদ্ধং দিদ্ধংয়নিঃশ্রেয়সং ফলং। মৎপ্রীতিরেবেতিভত্ত্বিদাং মতং। ১২।। ইপাং লিখিতপ্রকারের যথাবিধি নিতামারাধয়েৎ। তচ্চ ন্যায়ার্জিতেন আত্মনএব বিস্তেন ধনেন। সমগ্রস্য সম্পূর্ণ্য ফলস্য দিদ্ধয়ে। অন্যথা শাস্ত্রোক্তপ্রাফলং সম্পূর্ণং ন সম্পদ্যতইত্যর্থঃ।। ১৩।।

ুস্ন্তায়নং স্থাস্থি কেমময়তেইনেনেতি তথা। শ্রন্ধায়। নিদ্ধামতয়া ভক্ত্যা বা। শুক্লেন শুদ্ধোন আপ্তেন ন্যায়াৰ্জিতেন বিজেন প্ৰকৃষ্য উজ্জাতেতি হং। আয়ং পদ্ধাঃ ॥ ১৪॥ নচেৎ আন্যায়ার্জিটিতর্যদি কুর্য্যান্তদেত্যর্থঃ। দ্বিজ চেন্ত্তকণ ॥ ১৫॥ যক্ত শুদ্ধাবিশেষণে যত্নতোবিশুদ্ধসাধনানি সম্পাদ্য প্রশামাচরেৎ সচ পর্ম ভাগ্যবানিতি লিখতি যত্নাদিতি। আশক্তক্ষেদি
তথার্চনেইসমর্থঃ। তথা প্রাদ্ধব্যাণি দদ্যাৎ। তত্রাশক্তো চ প্রাদর্শনম্পি কুর্য্যাদিত্যর্থঃ ॥১৬॥

এতদেবাগন্ত্যাত্যক্ত্যা প্রমাণয়ন্ আদৌ পূজাসাধনদাতাপি সমগ্রমেব ফলং প্রাপ্নুষাদিতি লিখতি আরাধনেতি। অপ্যর্থে এব শব্দঃ। তং অর্চনদর্শনমপি ভগান্ধেঃ সকাশানিস্তারায় অলং সমর্থং॥ ১৭॥ ফলভেদমাহ। যন্তি,তি দ্বাভ্যাং॥ ১৮॥ স্বয়ন্ত প্রজার্থং দ্রব্যমন্ত্রনং নৈব বাচেতেত্যের পাল্লবচনং লিখতি। ধর্মেতি। তস্য দুশ্যাচকস্য॥ ১৯॥

অধুনা স্বপর্দ্রব্যার্চনাৎ পূজাদর্শনে এভগবভোদর্শনং ন্যানিতি প্রস্কৃতিআহালাং লিখতি প্রতিবিত্যাদিন।।। ২০॥

ফল । ক্রমণ প্রাধনাত্ত সংশয়ঃ। দৃষ্ট্র সংপূজিতং দেবং নৃত, মানোহনুমোদ-।
য়ে । অসংশয়মতিঃ শুদ্ধঃ পরং ব্রহ্মাধিগচ্ছতি ।। ২১

অথ ঞ্জিতগবমূর্ত্তি দর্শননিত্যতা। বিষ্ণুধর্মোতরে। তাবজুমন্তি সংসারে মনুষ্যা মন্দবুদ্ধয়ঃ। যারজাপং ন পশ্যন্তি কেশবস্য মহাত্মনং ।। ২২ ।। পাত্মে চ তত্তিব। পূজ্যমানং হুয়াকেশং যে ন পশ্যন্তি বৈষ্ণবাং। তেয়াৎদত্তং হুতং হুপ্তং দৈতেয়ায়োপতিষ্ঠতি। কিঞ্চ তত্তিব। নারায়ণনারদসম্বাদে। পূজাবিধিকথনে। যত্র কুত্রাপি প্রতিমাৎ বেদধর্মসমন্তাং। ন পশ্যন্তি জনা গড়া তেদগুয়া হম-কিন্ধবৈঃ।। ২৩।।

অথ ভগবদর্থ দ্রবাদান নাছাল্লাং । ক্কান্দে। বিষ্ণু মু দিলা বং কিঞ্জি দ্বিষ্ণু ভক্তার দীরতে। দানং ভদিমলং প্রাক্তং কেবলং মোক্ষসাধনং। কৌমোঁ। যংকিঞ্চিদ্দের মীশানমুদ্দিশ্য ব্রাহ্মণার চ। প্রভবেদিক্ষরে চাথ ভদনন্তফলং শৃতং। বিষ্ণু ধর্মোভরে । অনু প্রাক্তন মহতাপ্রেতস্য পতিতস্য চ। নারায়ণবলিং কার্যান্তেনাস্যানু প্রহোভবেং। অনাদিনিধনোদেবং শশ্তকেগদাধরং। অক্ষয়ং পুণ্ডরীকাক্ষন্তত্ত দত্তং ন নশ্যতি। যথাকথঞ্জিদ্দেদ্রং দেবদেবে জনার্দ্দেন। অবিনাশিত্ত তিদ্ধি পাত্রমেকো জনার্দ্দেনং। তত্তির। তৃতীয়কাণ্ডে। সামান্যভক্ত্যা যদ্দত্তং তদ্ধি পদ্ধাং প্রতিক্তি । একায়ভাবোপগমৈ মূর্দ্ধা দিজবরোভ্রমাং। অনন্তোভগবান্ বিষ্ণু ত্রস্য কামবিব-ডিউতেং। যদেব দীয়তে কিঞ্চিত্দেবাক্ষয়মুচ্যতে।। ২৪।। পদ্ধাং প্রতীক্ততে দেবং সকামেন নিবেদিতং। মূর্দ্ধা প্রতীক্ততে দত্তমকামেন দিজোভ্রমাং।।২৫।। তথৈবোত্তং মোক্ষধর্মো শ্রীনারাদেন। ব্রহ্মা যম্ধরশৈতব স্বর্থ পশুপতিশ্ব হং।অন্যে চ বিবুধ-শ্রেণ্ড শততং বিধি যুক্তং প্রভুপ্পতে। রুংসুল্ল ভস্য দেবন্য চরণাবুপ্তিইতি। যাং-ক্রিয়াং সংপ্রযুক্তান্ত্রকান্তগত্ত্ব জিভিঃ। তাং নর্বাং শিরসা দেবং প্রতিগৃহ্বাতিবৈ স্বয়ং।। ২৬।।

भानतार वनुत्मानः क्यां ११।। २५॥

তথা স্থপ্রতিষ্ঠিতায়া ভক্তিঃ পূজ্যমানারাঃ শ্রীভগবন্মূর্ব্তেঃ সংদর্শনমবশ্যং কার্যামিতি লিখতি তাবদিত্যাদিনা। রূপং শ্রীমূর্ত্তিং।। ২২ ॥ যত্র কুত্রাপি ছর্গমে স্থানে স্থগমে বৈতি জ্ঞেয়ং। বেদ ধর্মসমন্থিতাং বেদোক্তধর্মেণ প্রতিষ্ঠাদি পূর্ব্বকং যথাবিধি পূজ্যমানামিত্যর্থঃ।। ২৩ ॥

পূজাদ্ব্যাণি বা দদ্যাদিতি সমস্তপূজাসাধনদানেনাপি সমগ্রং পূজাফলং লভতইতি লিখিতং তত্র শীভগবনর্থ কিঞ্চিদানেনাপি মহাফলং সিদ্ধোদিত্যাশয়েন সামান্যতোবিশেষত ভগবদর্ফান্তব্যদানসাহাত্মাং লিখনাদৌ তত্র সামান্যতোলিখতি বিষ্ণুমিত্যাদিনা স্থমিত্যন্তেন ॥ ২৪॥
প্রতীক্ততে স্বীকরোতি॥ ২৫॥ যৎ হবাং পিতৃভোদেয়ং। কব্যঞ্চ দেবেভোদেয়ং। চরণী প্রতি।
একস্মিনের ভগবতি মন্তং গতা নিঠাং প্রাপ্তা বুজির্যেষাং তৈঃ॥ ২৬॥

व्यथ मामविष्मयक्त्य । उक्करिवर्र्छ। धकांत्रशि नरतारधनुः तव एतार বিধিপূর্মক । দভ্যেদেশেন রুফ্স্পপ্রাপ্রোভেরাভিবাঞ্ছিত । নারসিংহৈ। ষে: গাংপায়য়িনাং বিষ্ণেঃ কুক্ষবর্গংশপ্রয়ত্তি । আশ্বনেধ্যা যুক্তস্য ফলং প্রাপ্য হরিৎব্রজেং। সর্ব্রপাপৈবিরিহিতঃ সর্বভূষণভূষিতঃ। গ্রাংসংসূদানস্য-ফলং প্রাপ্ত দিবংক্রজেং। বিষ্পুধমোত্তিরে। গবাং লোকমবাগ্নোতি ধেনুং मञ्च। পशंश्विनी । मधिकोत्रण्ठार्थायं वामुम्बमा **চालर्य। मञ्च।** गाः स्थू भक्षिय মহংকলমবাপু যাং। জলাশয়ৎ ভথা কত্ত্বী সর্কাপাপৈঃ প্রমুচ্যতে। সপুলোঃ भक्रेल्वृ रिक्षयू ७९ क्या अनः भयर । উদ্যানেঃ পणिनीयरेखता खरेमण मनाइरेतः। स्ववतीर्भमवारियुव्ति पूनर्नावर्द्धरा ७७३। (स्वाध्य का तराम्बष्ट तम्मामार्भनवीरिकाः । . রাজা ভবতি লোকেষু বিজিভারিমহাহশাঃ। নগরঞ্তথা রুত্বা সামুাজামধিগচ্ছতি। শিবিকাং যে প্রথচ্ছন্তি তে প্রয়ান্তামরাবতীং। অশ্বদাঃ স্বর্গলোকস্থা রাজন্তে দিবি সূর্য্যবং । করীন্দুদানাচ্ছক্রমঃ চিরালোকাচ্চু্যতোনরং । রাজা ভবতি ধর্মাসা:-পৃথিব্যাৎ পৃথিবীপতিঃ ।। ২৭ ।। বিষ্ণোরয়েতনে দত্যুতৎকথাপুস্তকং নরঃ । ক্রন্ধ-लाकमवारभावि वस्कानश्वितः विकाः ॥ १४ ॥ भुस्रकारम् उरेथवान।।न् यः প্রবদ্যার্মরস্তির সার্ম্বত্যবাপে: তি লোকং কালং তথা বহুং ।। ২৯ ।৷ স্বভৃতং বাচকং কৃত্ব। দেবাগারে নরঃ সদা । বিদ্যাদানফলং প্রাপ্ত ব্রহ্মলোকে মহীয়তে ।। ৩০।। বিষ্ণেঃ শখ্পদানেন বারুণং লোকমগ্রতে। ম,নুষ্যমাসাদ্য তথা খ্যাত শকশ্চ জায়তে। ঘাটাপ্রদানেন তথা মহদ্যশ উপশুতে। কূটাগারৎ তথা দত্তা নগ-রাধিপতির্ভ বং ।। ৩১ ।। দত্তা ও দেবকর্মার্থং নবাংবেদীৎ দূচাং শুভাং । পার্থিব-জ্ববাপ্রোতি দেবা হি পৃথিবী যতং। তোরণং কারয়েদ স্ত দেবদেবালয়ে নরং। লোকেষু ভস্য দ্বারাণি ভবন্তি বিবৃত্তানি বৈ ॥ ৩২ ॥ দেববেশ্মোপযোগ্যানি শিল্প ভাণানি যোনরঃ দদ্যাদ্ব। বাদ্যভাণানি গণেশত্বমবাপুরাং ॥৩৩॥ যঃ কুন্তৎ দেব-কর্মার্থং নরোদদ্যাল্লবং শুভং। বারুণং লোকমাণ্ট্রোতি সর্বাপাপেঃ প্রযুচ্যতে।।৩৪।। চত্তরঃ কলসান্দদ্যাদ স্ত দেবগৃহে নরঃ। চত্তঃসমুদ্রবলয়াৎ সহি ভুঙ্ক্ত বসুন্ধরাং। দহৈতৃকমপি বিপেন্দুঃ কলসং সুসমাহিতঃ ৷ রাজা ভবতি ধর্মাত্মা ভূতলৈ নাত্রসংশয়ঃ। वादिशानी उथा पत्ना वक्रम लोकमभू ए । कमछन् अमातन यक्रमी कनमाभू शारा ००

অধুনা দ্রবাবিশেষদানেন ফলবিশেষং লিখতিএকানিত্যাদিনা স্থাং ভবেদিত্যন্তেন। যদ্যপিগোদানাদিকমেতৎ কাদ।চিৎকত্মানিত্যকর্মমধ্যে ক লিখিন্তং নোপযুক্তাতে তথাপি তওদানেন্
নিত্যপুক্ষাসিদ্ধেঃ পূক্ষাদ্রবাদানলিখনাচ্চ তন্তৎফলবিশেষাপেক্ষয়া প্রসঙ্গতোইতৈর লিখিতমিতি
দিক্॥২৭॥ বিক্ষোঃ কথায়াঃ পুন্তকং শ্রীভাগবতাদি॥২৮॥ ইহ বিষ্ণায়তনে ॥২৯॥ স্বভূতং
বেতনাদিনা স্বায়ভীক্তং॥৩০॥ কূটাগারং মঞ্চগৃহং॥৩১॥বেদীং ভগবদগ্রতঃ পূক্ষোপকরণস্থাপ্নার্থ নিউকাদি নির্দ্ধিতং স্থানবিশেষং॥৩২॥ শেপভাগুনি শিশপনির্দ্ধাণেচিতদ্রব্যাণি
বাস্যাদীনি॥৩৩॥ শুভ্দুক্ষজব্যনির্দ্ধিতং স্থানর্মা।।৩৪॥ বারিধানীং লঘুষ্টং॥৩৫॥

মাত্রান্ত পরিচর্য্য, র্থং নিবেদ্য, হরয়ে তথা । পর্বাকানসমূদ্ধস্য বজ্ঞসং ফলমশুতে ।। ১৬।। তালবৃত্তপ্রদানেন নির্কিতিৎ প্রাপুরাৎ পরাং। নাল্যাধারং তথা দ্স্তা ধুপাধারতথৈবত। গল্লাধারৎ তথা পাত্রং কামানাং পাত্রতাং ব্রজেং। সমুদ্রজানি পাত্রাণিদত্ত্ব বৈ তৈজসানি বা। পাত্রং ভবতি কামানাং বিদ্যানাঞ্চ ধনস্চ । পার-नामनदालन शिक्टि विक्ठि भाष हो?। উद्यवष्ट्रपदानन मर्कान् कामानवाभूयाए। নরঃ সুবর্ণ দানেন সর্বান্ক।মানবাগুয়াৎ । ৰপ্যদোৰপমাপ্নোতি বিশেষাৎ ভবি पूर्व डः ॥ ७१॥ त्रवारानन लाकिषु अ गागा मू भगक्ति ॥ अनिष्व स्थानानन मना अनुक्तः लाउ ।। ७৮ ।। অकारियशिष्ट्रांगाः मानमश्वत्ना । मन् গুণিতং দানাৎপূর্বপ্রোক্তাং প্রকী হিতৎ ॥ ৩১॥ বারুণং লোকমাগোতি দন্তা বস্তং দিজোত্তনাঃ । অবিপ্রদানাচ্চ তথা তমেনং লোকমশুতে । উষ্টুং বা গদভিৎ বাপি থরং বা যঃ প্রয়ন্ত্তি। অলকাৎ স সমাসাদ্য পক্ষীলেটুঃ সহ মোদতে। আরণ্য ন্গজাতীনাং তথা দানাজ পক্ষিণং। অগ্নিটোমমবাপোতি সুভগশ্চ তথা ভবেৎ। দাসং দত্ত্ব সুথে লোকে নেউভটে। বিজায়তে। দাসীং দত্ত্বা তথা,বিপ্রা নাত্র-কার্য্যাবিচারণা । গণিকাং যে প্রয়ন্তন্তি নৃত্যগীতবিশারদং । সর্ব্বদুংখবিনির্মুক্তান্তে-প্রয়াভঃমর ৰতীং। নৃতঃ দেখা তথাগ্রে।তি রুদ্রলোকমসংশর্থ । ৪০ । প্রোক্ষণীয় প্রদানেন শক্রলোকে মহীয়তে। দুদু ভিং যে প্রযচ্চন্তি কীর্ত্তি মন্তোভবন্তি তে। দস্ক। ধান্যানি ৰীজানি শন্যানি বিবিধানি চা অপকাণি চত/নেয়ৰ প্ৰাপুয়াৎ সুৱপূজ্য ভাং। দত্ত্ব। শাকানি রম্যাণি বিশোকস্ভিজা য়তে। দত্ত্ব। জনার্থায় তথাপ করণানি চ ।। ৪১ ।। পত্পবৃক্ষণ তথা, দত্ত্বা দেশস্যাধিপ ভির্ত্ত বং । ফলং বৃক্ষণ তথা দত্ত্ব নগরাধিপতিভবেৎ । তথা। সুগন্ধ সাধ নানীর পাটবাসানি যোনরং। দদাতি দেবদেবস্য সোশ্বনেধ ফলংলভেৎ।কঙ্কতন্য প্রদানেন বিরোমস্থৃভিজায়তে। কূর্চ্চ প্রদাধনং কৃষ্ণা পর্থ মঙ্গলমশুতে ।। ৪২ ।৷ বিল্লাপনীয়ৎ যথ কিঞ্চিদ্রাভাতং সধং লভেং ।। ৪৩ ।। বস্ত্রালক্ষরণাদীনাৎ রুঞ্চার্প ফলঞ্চ য়ং ।। উপচারপ্রয়োগে প্রাক্তত্র তত্র ব্যলেখি তং । ৪৪ । উপচারাশ্চ বিবিধা শ্রীমন্তুগবদর্জনে শক্ত্য

ম 'ত্রাং দেবোপচারদামত্রীং তদাধারজব্যস্থা। ৩৬। কামানাসৈশ্বর্যভোগানাং পাত্রতামাশ্রয়ভাগ। ৩৭। রক্লানি মৌক্তিকহীরকগোমেদেন্দ্রনীলপুন্সরাগ বেদূর্য্যবিদ্রুমমরকতপদ্মরাগাদীনি । ৩৮। পূর্বস্রোক্তাই আন্তর্মান্তর্মান কাদানাই ॥ ৩৯ ॥ বস্তং ছাগং। অবির্মেষ্য ধরং গর্দভবিশেষং পশ্চিমদেশে গোধরেতি প্রসিদ্ধং ॥ ৪০ ॥ প্রক্রণীয়মিন্দ্রজালাদিন্দীতং দত্ত্ব। গায়ন দ্বারা গীতং গাপ্যিত্বা । বীজনপানি ধান্যানি বা। শাস্যানিভোজ্যানি যবাদীনি । নিপকানি অস্কুরিতানি ॥ ৪১ ॥ পুন্সবৃক্ষং পুষ্পপ্রধানকং কৃক্ষং। এবং কলস্ক্ষং॥ ৪২ ॥ বিশ্বাপনীয়ং আশ্চর্যাবহুং ॥ ৪৩ ॥ অত্যালিবিভোইনি বস্ত্রাদিদানকলভেদঃ পূর্ব্বই কুর্য্যাই শাক্ষোভগরদর্চনমিতি নাসি তবৈর জ্বেয়ং ইত্যাশয়েন লিখতি বস্ত্রেতি ॥ ৪৪ ॥ পুর্বেরই কুর্য্যাই শাক্ষোভগরদর্চনমিতি

শক্ত্যাদিভেদেন ভান্ত্ৰিকৈ বৈষ্ণিবৈষ্য ভাঃ 11 ৪৫ 11

অর্থ বিবিধোপচারঃ। আগমে। আসন স্থাগতে সার্ঘ্যে পাদ্যশাচমনীয়ক্। মধুপর্কাচম সুনে বসনাভরণানি চ। সুগন্ধসুমনোধূপদীপনৈবেদ্যচন্দনং। প্রযোক্ষয়ে-मर्छनायामू अठाता १ ख स्वाङ्म । । ३७ ।। जर्घाक शाम्। । वर्षा भ भ मान्। । वर्षा के शाम्। । वर्षा के स्वाना । वर्ष গন্ধাদয়োনিবেদ্যান্তা উপচারাদশ ক্রমাৎ।। ৪१ ।। গন্ধাদিভিনিবেদ্যাকৈঃ পূজা-পঞ্চোপচারিকী। সপর্য্যান্তিবিধঃ প্রোক্তা ন্তাসামেকাৎ সমাচরেৎ ।।৪৮। কৃচিছ ? আসনাবাহনধ্যৈব পাদ্যার্যাচমনীয়কং। সুনিং বাসোভূহণঞ গল্পঃ পুস্পকঃ। প্রদীপদৈচৰ নৈবেদ্যৎ পুস্পাঞ্লিরতঃ পর্। প্রদক্ষিণং নমস্কারোবিসর্গদৈচ বযো-ড়শ । ৪৯॥ কেচিচাছ শ্তভংযাষ্টিমুপচার লিমার্জনে । তে যুনেকপ্রকারেষু প্রকারৈকো-⇒ত লিখাতে ।। ৫০ ।। সুখসুগুসা ক্লংসা প্রাভরাদে প্রবোধনং । বেদঘোষণ-ৰীণাদিবালৈ ত্ৰিক্তবৈরপি।। জয়শকানমস্কার; মহলারাত্রিকং তভঃ। সনং দন্তকাপ্তঞ্চ পাদার্ঘাচমনান্তি ৷ তত্ত মধুপর্কাচ্যাচমনং পাদুকা-প্রথ । অঞ্মাজ্জন মভাজেদিউনে স্থপনৎ জালঃ। ক্লিরেণ দধা ছবিষ মধুনা নিতয়াতথা। মত্ত্রপূত্রঃ পুনর্বাভিরক্ষরানোছথ বাসনী। উপনীতং পুনশ্চাচমনীয়ৎ চানুলেপনং । ভূষ্ণং কুসুমং ধূপো দীপো দৃষ্ঠি পানার লং। ইনবেদাং মুখবাসস্তা। তমূলৎ শয়নোভ্রমং। কেশপ্রসাধনৎ দিব্য বস্ত্র: লি মুকুটং মহং। দিব্যগন্ধানলেপশ্চ কৌস্তভাদিবিভূষণং। বিচিত্রদিবাপুস্পাণি নঙ্গলারাত্রিকংতভঃ। প্রাদশঃ সুগ্যানেন

সায়ং পূজায়াং লিথিতং তত্র শক্ত্রো পূর্ববিধিতৈঃ সর্বৈরেবোপচারৈরছনে কার্যাং অশক্ত্রো সংক্ষেপেণ কতিভিশ্চিদের কর্ত্তরামিত্যাশয়েনোপচারাণাং বহুবিধত্বং লিথতি উপচারাশ্চেতি। শক্তেরশক্তেশ্চ ভেদেন আদিশকাৎকালদেশশুদ্ধাদিভেদেন চ বিবিধা মতাঃ॥ ৪৫॥

সংঘ্যে অঘাসহিতে। অঘাইঞ্জমিত্যর্থঃ এবং বোড়শ। ৪৬॥ অঘ্যাদীনি পঞ্চ গন্ধাদয়শ্ব পঞ্চ ইত্যেবং দশ ॥ ৪৭ ॥ তিবিধাউপচারাণাং বোড়শাদিনা ভেদত্রয়েণ ত্রিপ্রকারাঃ ॥ ৪৮ ॥ বোড়শস্বের মতান্তরং লিখতি আসনেতি। পুল্পার প্রভাৱে কৈকোন বোড়শা। ৪৯ ॥ অনেক প্রকারভেদা যেবাং তেষু উপচারেবু মধ্যে একঃ প্রকারেছিত্র প্রস্থে লিখাতে ॥ ৫০ ॥ প্রবোধনিতাদিভিঃ প্রথমান্তপদৈরুপদারঃ । তত্রিকবচনান্তেনৈকঃ দ্বন্দুসমাসে দ্বিবচনান্তেন দ্বৌ বছ্বনান্তেনচ বছবঃ । তৃতীয়ান্ত পদৈশ্ব প্রায় উপচারস্য সাধনং ক্রিচচ তদ্য ভেদোহপিজেরঃ। মধুপর্কোণ্ডাং দহিত্যাচমন্মিতি তয়োদ্ধিত্বপি মধুপর্কানন্ত্রমাচমন্যাবশ্যাপেক্ষত্রাদৈক্যাভি-, প্রোর্বিক এবোপচারঃ । অক্সমার্জনং পর্যুযিতাভুলেপন দির্বপ শ্রীগাত্রমলোন্তারণং । অভ্যক্ষ বৈজ্ঞাভাঞ্জনং । তৈলমন্দ্রনেতিবাপাঠঃ । অভ্যক্ষাবিশেষতঃ তৈলাদিনা শ্রীমন্তকাভাঞ্জনং । উদ্বর্ত্তন ক্ষে তেলাদ্যপদারণং । জলৈঃ স্থান্ত্রপূলাদকাদিভিঃ স্নপন্সাক্রিধত্বেইপি জলভেদেন ক্ষীরা-দিভেদেন চ সপ্তধা সপ্রোপ্রচারাইত্যেবং শিক্ষস্কল

মওপাগনশোৎ গবং। সিং হাননােগবেশশ্চ পাদ্যাদ্যৈঃ পুনরচর্চনং। পুনর্ধুপাদ্যপ্রিলেপ্রাণুরিবেদ্যমুভ্রমং। ততশ্চ দিব্যতাস্থূলমহানীরাজনং পুনং। চামরব্যঞ্জনচ্চপ্রং গাঁভং বাদ্যক্ষ নর্ভনং। ৫১। প্রদক্ষিণা নমস্কারঃ প্রীক্ষক্টরণাক্তরােঃ। তরােশ্চ স্থাপনং মূর্দ্ধি তার্থনির্মাল্যধারণং। উচ্ছেক্টভাজনং পাদ্যেবােদ্দেশাপবেশনং। নত্তং শ্র্যাবিনির্মাণং দিবৈ। র্কিবিধ্যাধিনাঃ। হতপ্রদানং শর্মস্থানাগমনহােহ্দেরঃ। শহ্যাপবেশনং প্রীমহপাদ্ফালনপূর্ককং। গল্প প্রসূন তায়ুলার্পন নীরাজনােহ্দবঃ। শহ্যাপবেশনং প্রীমহপাদ্যলাহ্নাদিকং। ক্রমেণেতে চত্তঃঘ্রিক্সিচারাঃ প্রকীতিতাঃ। কেই । সদাচারালুসাবেণ হদ্দাচর্যাতে স্বরং। নিত্যক্রমাদিকং তত্তৎ প্রক্রম্প্রাণিকং কর্বের । বিত্যা আতাহ্রালিখিতং হদ্দাদ্পচারাদিকং পরং। সর্কাং তত্তপ্রক্রমাণিকং করিবের । তা৷ আতাহ্রালিখিতং হদ্দাদ্পচারাদিকং পরং। সর্কাং তত্তপ্রক্রমাণিকারিতানুসারতঃ। বেই। উক্তানাধ্যোপচারাণামভাবে ভগ্নাল্ সদাঃ ভাক্তনাংর্জ্যা হ্যালাক্রৈতৈরত্বভাবিতৈরপি।। ৫৫।।

ম জনমর্থিং মন্ত্রণ। বাসধী পরিধানে ভিনীয়ে। দুক্তেং চুটলোকাবলোকস্য অপসারণে সম্প্র দিভিনিষ্ট্রেননোড়:রণং - শহনোভ্যং লিৱাশারা । মহারাজোপ্রারান্ লিখতি দিব্য বহুটাইভাত দিন, প্রদেশ হলেজেন । দিব্যানি বিভিত্তাণি কথাবেলাফী পাদিকপাণি বভূ ন বস্তা বি । মঙ্গে বহি 🗻 সাদে আগমনংখ্যোহসৰঃ বিশেষভোৎতোৎসবপ্রয়োগেণ গীচবাল্যাদিত্রীকতা স্থিত। ে ক্লোলালং পুৰক্ষেত্ৰ প্ৰভূমিপদৰ্পন্তিৰকোটনবৈক্ত্তবাপ্তাভি কৃ<mark>চিছ নিভাৰাই</mark>চন্টাভাচাভ এ শুগুপালয়নির্লেশ ইতি দিক্ ॥ ৫১॥ পাদেয়োঃ জীচরপাভারোঃ আ সেবা স্থাইনা স্তান ভ্ৰতিষ্ঠানগোলে হেৰুনামুপৰেশগাৰিবিলৈ ৷ স্বাহ্নিয়ুৰ্ণাদিছবাসিত কোমলৰস্ত্ৰান্ত পুস্পৰিৱচনা দাভি ৷ সংঘটনত হস্ত প্ৰদানত শ্বনতাৰে উভাগমন গ্ৰিছাওয়ে জলং। শ্ৰা<u>য়ে সুপ্ৰেশনং<sup>কৃ</sup>ট মহপাল লে</u>ছ ক্রালন্ত হৃত্যালটো যদ্য তাহৃশং গল্পালাপ্রেন নীরাজনরপোৎস্বর কাত্র তত্রার ক্রমপ্রাগাস্থা দিকা শিক্ত গারস্ট্যা নিখতি সদাচারেতি দ্বাভ্যাং।ক্ষনেরিত্যক**র্মা আ**দিশক্ষজালাদিক্ত্যঞ্চ। তথা ভত্র তার কালদেশ দিতেদেন যদ্যথা স্বয়ুং ক্রিয়তে তক্ষ সর্বাং ॥৫৩॥ অভোইস্ফাল্ডেঃ গ্রমনাগ্রচারাদিকং অত এতে যাল্লিগিডং নান্তি ডক্ত লানাৎ গুর্মং কেশপ্রদাধনং আন্তাইঞ নৌত্রপ্রিধাপনং ভোজনে চাদৌ পীচাদ্যপণং ভোজনাত্তে চ জলগও,শার্পণং স্থায়ি ভাচ্ন গিতেট্রমাদিকং নিতাকর্ম। ৩থা জ্মাদিনে তিল্লানাদি তথা ন্বামাদিকালে ন্বান্সাশন। िक्ट (एट ) विभावितः भागा कि कुछ । अपनी शास्त्र । एक त्वाकमा और इसी विभाव । । সারতঃ ৷ শীতকালে উফ্জবাং শাতনিবারণার্যং তদ্যোগ্যবস্ত্রং স্বলঙ্গারস্থাল্যাদিকমুঞ্চ্কালে চাশীতলং জব্যা হিমাদিকঞ্ সমর্পত্তে। ভোজনানতরং ক্ষণং ক্রথবিশ্রামার্থং শ্যাতিস্তারণাদি-বিবিক্ততাপাদনং তত্রাপিচ শীতকালে২পেকালং গ্রীয়েচ বছকাল: উত্থাপনানন্তর্ঞ প্রাদান্ত মনীয়াদিকং কিঞ্চিদ্র ফ্যপেরাদিকঞার্প্যমিত্যাদিশকীচারাছোদ্ধর্যমিতার্থঃ ॥ ৫৪ ॥ প্যপ্রচারেষু যদি কন্চিন্ন সিদ্ধ্যেত্তহি কিং কার্য্যমিত্যগেকায়াং লিখতি উক্তানামিতি श्रीमिङ्गानाश्टिङ्क्षभहाटेतः, यथा गटेकः दयन। नात्राभद्यः आश्रादेखः द्यंगानकाटेखतः छ गविदेङ मानाग কৈ য়িতাৰ্কঃ॥ ৫৫॥

অসালস্ক্রমাধানং। তত্তে। উপচারোক্তবন্তুনামুপসংগ্রন্থনি বিং । প্রবাণামপ্যভাবে তুপ্পাক্ষত্যবৈং ক্রিয়াং ।। ৫৬ ।। অর্চ্চেপ্রভারবন্তুনামভাবে সমুপস্থিতে । নির্মালনাদ্রেনৈর দ্রহাসম্পূর্ণতা ভবেং ।। ৫৭ ।। উপচারেষু দ্রবাষু মংকিঞ্জিলুকরং বুঘা। তং সামং মনসা বুদ্ধা পুলাক্ষেপেণ কল্পয়েং ।। ৫৮ ।।
এতেষু চোগচারেষু বিত্তশাস্তাবিবিজ্ঞিতিং । হদসম্প্রমেভেষাং মনসা তুপ্রকল্পবারু ।। ৫৯ ।। অগস্তাসংহিতায়াৎ ভুলসীমাহাজ্যে ।। মন্ত্রুন্থ তবভোর রামানর্ধনসাধনং। তুলসীদলমাত্রেণ যুক্তং তং প্রিপূর্য্তে ।। ৬০ ।। একাদশক্ষে চি
ভাগবনুদ্রসন্ধানে। দ্রবিয়ং প্রিম্মেন্থাগং প্রতিমাদিদ্রমারিনং। ভক্তস্য চ ম্বান্ধর্ক্রিক লি ভাবেন চৈবহি ।। ততাংলুজাৎ প্রভাগ প্রভাগ দ্রব্রুণ প্রবৃত্ত প্রান্ধ্রম্বন্ধ্র দ্রান্ধ্রম্বন্ধ্রম্বান্ধ্রম্বর্ষ্ট্রান্ধ্রম্বিক্র্যান্ধ্রম্ব

উপসংগ্রহণে সমাধানে বিধিররং। তমেবাহদ্রবাণ:মিতি। পুলানিভিরণি ফিরাঃ গুজাক র্মানি ভবন্তি। তত্তদুবাস্থানে পুলাদিনৈবার্চয়েদিত্যর্গ্রঃ॥৫৬॥ পুলাদাভাবে চ জলেনৈব নিজ্যান্তীয়াই উপচারেদিতি। মনশা যা বুদ্ধিভাবনা তরা যদ্বা বুদ্ধা। যথ পুলাং তদ্যা মননৈব প্রক্ষান্তীয়াই উপচারেদিতি। মনশা যা বুদ্ধিভাবনা তরা যদ্বা বুদ্ধা। যথ পুলাং তদ্যা মননৈব প্রক্ষেপণ কর্পয়েদিত্যর্গ্রঃ॥৫৮॥ কিন্তু তত্ত্ব বিস্তান্তাই ন কার্য্য মিত্যাই এতেদিতি। বিস্তান্তাইং বিদ্ধে সতি গৌণোপচারেই কিঞ্বন্তথ প্রবৃত্তিত্ব বিজ্ঞান্তাই বিজ্ঞানতাব প্রক্রির ক্রিত যথাসার্ত্তথা প্রকর্পয়েছ। বিবজ্ঞিত ইতি প্রথমান্তাবাপাঠাঃ॥৫৯॥ বুকুং সম্বদ্ধং সং॥৬০॥ প্রদিদ্ধা প্রকর্মেন ক্রির্ডার্থঃ বিদ্ধান প্রথ্যাতিরের গল্পচন্দন পুলা দিভিঃ। অভন্ত তি দিকান ক্রির্ডার্থঃ বিদ্ধানীয় ভক্তম্য চেতি সম্বদ্ধঃ। ব্যানিকঃ বিদ্ধানীয় জনস্যাতি তার বিশ্রশান্তাবশ্যং বিজ্ঞানিকঃ বিদ্ধানীয় ভক্তম্য তেতি সম্বদ্ধঃ। মাঠ্যইনিন্য জনস্যাতি তার বিশ্রশান্ত্রকাঃ বজ্জা মেদিত্যর্থঃ। ভক্তম্য তা যথালক্রিং মধ্যেপপনীয় মন্ত্র চন্দনাদি সর্ব্বেথান লভ্যতে তস্য ক্রাদি ভাবেন ভাবনয়া।। ৬১॥

বিরুপস্পাশেৎ বারদ্রমাচমনং কুর্যাৎ। অমৃত্যা স্থায়াঃ আসারঃ ধারামম্পাতঃ তদ্বদাচরস্তীং বিরং ফ্রিনিং পিবস্তংসংস্মৃত্য। শয়নং শয়াং॥ ৬২॥ ইহ গৃহালামেইপি সএব সন্ উস্তমঃ গৃহালামী চ গৃহী বিজেয়ঃ॥ ৬৩॥ তাম অগহিতাস্বপি যামিনীযু মধ্যে য়ৢগ্নাঃ ঋতুদুদ্নাৎ পরা কন্যকাং সন্তাং। ৬৪। তাজ্য চন্দুসন্থ দুউৎ নঘাং মূলাং বিহার চ। শুচিং সন্ধি-বিশেহ পার্বাং পুরাসকে বিশেষ ভঃ। শুটিঃ পুত্রং প্রসূত্রেত পুরুষার্থ প্রসাধকং। ৬৫। विष्णु । बारण । श्री सम्भवनामारण क्रिक्शामारिक्षी क्रिक्शामां वर्षे । शर्षे চ্ছাল্য ক্তিভাষেকদাক্ষয়ীং নূপ। নাবিশালাং ন বৈ ভগ্নং নাসমাং মলিনাৎ নত। নত জত্ত্রময়ীংল্যা ম্বিভিতেরনাস্ভাৎ।। ৬৬।। প্রাচ্যাৎ দিশি শিরঃ শস্তৎ য। ম। বাবামধ্যা নূপ। সদৈব অপতঃ পুংনোবিপরীতন্ত রোগদ্। ঋতাবুপগমঃ শস্তঃ অপজ্যালবনীপতে। পুলামর্ফে শুতে কালে জেতিধুগ্যাসু রাতিধু।। ৬৭॥ নাসা-তান্ত ব্রিয়ৎ গচেচ্নতির হৈ ন রজ্মলং । নানিফাং ন প্রকুপিতাং নাপ্রশস্থাৎ ন গুরিনীৎ ॥৬৮॥ নাবফিগাং নান্যকামাৎ নাকামাৎ নান্যযোষিতং। ক্লুৎকামামতি-জুকাং ব, স্বরটাচভিতি হৈ যুঁতং ১৬১। সুতিঃ সুগ্গরধৃক্ গ্রীতে নাধাতঃ কুধিতোপি ব। সকামঃ সানুবাগশত ব)বায়ং পুরুষোত্র জেং ।। ১০।। চতদ শা ইমীচৈব জনা নস্যাথ পূর্ণনা। পর্কাণ্যেতানি রাজে বুরবিসংক্রান্তিরের চ। তৈলস্ত্রীমাৎসনস্ভোগী প্রয়েভেগু বৈ পুনান্। বিস্তুভোজনং নাম প্রয়তি নরকং নূপ। নান্যয়েনা-(यारभी वा लालयुष्ण्योतनप्रया। प्रवित्रिष्ठकाशक वातायी नास्त्रमी ए दवः। देवका চত্তরভীর্থেন্নের গোটে চত্তলথে। নৈর শশানোপরনে সলিলেমু মহীপতে। গ্রোক্তপর্যানে ষ্যু নৈৰ ভূপাল সন্নায়ে। গছেছ,ৰায়ং মতিমান্ন মূতেছের-প ড়িতঃ।। १८।। পরদার নি নচ গফেত মনসাপি কদাচন। কিমুবাচ।স্থিজোপি নাস্তি তেযুকারারিনাখ। মৃতোমরকমভেততি হীয়তে চাত্র চাযুষঃ। পরদাররতিঃ পুং দামু ভয়ত্রাপি ভাতিদা । ইতিমহা হাদারে বু ঋতমৎসুবু ধারজে । যথোক্ত দে, ষঠানেষু সক, মেঘনু তাবপাতি ॥ ৭২ ॥ তেষাৎ ভক্তবাগাগাঙ্গ নস্যাদ্যন্ত পি

येथाना यामिनाः পুতাः পুতাংপুতি। পাদিনা ইতার্থং॥ ৬०॥ পুর্মের্লং নক্ষত্রদশকং। তত্বজং বার্থ স্পাত্যে। সপাচ্চত্তকং রৌদ্রঞ্ধ শামাং স্থান্ট ত্রিকং তথা। বৈশ্যেক্রবাসবং পৌনং ক্রীলিঙ্গাং সমুদাক্রতাঃ। দৌসা বারণ মুনানি নপুংসক দিনান্যপি। শেষাং পুনিক্রতাং প্রাপ্ত জারাঃ স্থর শতীপত ইতি। অতাহিশ্বিনী রুত্তিকা মোহিনী পুনঝর পুনা। হস্তান্তরাধা প্রবাগ প্রভালোতরভাতপদানীতি দশা। ৬৫॥ শ্বাং থট্রাং। অক্ট্রতাং অবিদীর্নাং। ৬৬॥ শ্বতদর্শনাং পরার্থ বর্তার্থা ত্রাপি জোঠান্থ উত্তরোত্তরশুভান্ত। অলাতাং চাণ্ডালাদিস্পর্শেষ্ঠপার ত্রানাং। রজস্বলাং চন্তর্থরাত্রি প্রভূতান্ত্পরতর্জনং। অনিকাংসদোনিবিকাং অপ্রশাস্থাং পরিবাদাদি মৃতাং।। ৬৮॥ অদ্দিনাং অনমুকূলাং ।। ৬৯॥ আধ্যাতঃ অতিভূপ্তঃ সকামঃ রিবাদাদি মৃতাং।। ৬৮॥ অদ্দিনাং অনমুকূলাং ।। ৬৯॥ আধ্যাতঃ অতিভূপ্তঃ সকামঃ রিবাং সুঃ। সামুরাগঃ ক্রিয়াং প্রীতিমান্। তাবায়ং স্বরতং ॥ ৭০॥ অন্যযোনী গ্রাম্বাদিযোনী দেবদ্বিজ্ঞকণামাশ্রমী তেষাং গৃহে ভিতঃ॥ ৭১॥ পরদারেষ্ ব্যবায়িনামন্থিবন্ধোন মান্তর্বির্যাধিনামিশ্বির্যাধি। মৃন্যাধা। বহা। সিদ্ধাঃ সর্বেশ্বর্থাঃ পুরুষার্থা। মৃন্যাধা। মৃন্যাধা। সিদ্যাধিনামন্থিবন্ধোনি মৃত্তির্যাধি। মৃত্তার্থাং।। বহা। সিদ্ধাঃ সর্বেশ্বর্থাঃ পুরুষার্থা। মৃন্য সং।

কম্মনিং । তথাপি কৃত্উল্লেখোগৃহিদ্বাবশ্যকং ততঃ। ইত্যৎ হি প্রাতরুখানাৎ প্রত্যহং শর্মাবধি। শ্রীকৃষ্ণং পূজ্যন্ সিদ্ধার্কার্থোস্য প্রিয়োভবেৎ 11 ৭৩ ॥

অথ জীভগবদর্জনমাহাত্ম । জীকুর্মপুরাণে। ন বিষ্ণারাধনাৎ পুলাং বিদ্য-তে কর্ম বৈদিক ৭ ৷ ভক্ষাদনাদিমধ্যান্ত ২ নিভামারাধ্য়েদ্ধরিং । 1981 ভত্তিব ভ্গাদীন্ প্রতি সাক্ষাৎ শ্রীভগবদুকো। যেইচায়িষ্যন্তি নাং ভক্ত্যা নিত্যৎ কলিষুগে ঘিদাং। বিধিনা বেদদুটেন তে গ নিষান্তি তথ পাদং । গও¦ বিষ্ণুরহ্মো। শ্রীবিষ্ণৌরচনং খেত প্রকুর্ম্বন্তি নবাজ্বি। তে যারি শাশ্বতং বিষ্ণোরানন্দৎ পরিমং পদমিতি। ভাতেব গ্রিভগ্রস্পক্তী। ন মে ধ্যানরভাই সম্যাগ্যে। ডিনাই পরিভাইয়ে । তথা ভ্রম্ভি দেবর্মে ক্রিরাখেগরতা হথা।। ৭৬।। ক্রিয়াখোগোলি নেঃভীটঃ পরায় গ্রহ মূটিতাং। ভ্নিটিমে বিংভবেং গুংভিভ্কিনিছিরমংসরৈঃ ॥११॥ বেস্ট্রিট নলা নিত্যং ক্রিয়া-যোগরভাঃ স্বয়ং । ধর্মরন্তি যে চ মাৎ নিভ্যুং ভেষ্যং শ্রেষ্ঠাঃ ক্রিয়ামতাং । ক্রিয়ার্ছানস্য দেবর্ধে তথা ধ্যানংন মুক্তিদং। ন তথা মাংবিদুর্কিপ্রা ধ্যনিন্দস্তাতাবিনা। ঞিয়া-যোগরত। সমাক লভতে মাৎ সমায়িন। ।।৭৮।। যথা হি কামদং নৃণাই মনভটিকাং পরং ৷ হক্তিয়োগং শ্বাপ্লাং ভূতি মৃতিগ্রহণশতং ৷ সহৎসরে হৎপুণাং লহতে পানিলোমার। পাপতে ভদিউফকাছাই জিয়াযোগপটের রৈছ। ভাদিপ্রাণে। ন ক্ম্নিদ্শং গ্লানং ন ক্লান্দ্শং হালং। ন ক্ম্নিদ্শস্থাতে। ন ক্ম্সিদ্শস্থান ন কল সিদৃশং পুন ং ন কল সিদৃশা গতিঃ ।।৭১ ।। নারবারে। ভক্তিপ্রাহ্যান্থবীকেশোন গলৈহাঁরবীসুর । ভক্ত্যা সংপুজিতোবিকঃ প্রদদাতি সমীতিতং । ৮০।। জলেনাপি জগনাথঃ পূভিতঃ ক্লেশহা চরিঃ। পরিতে ষং ব্রজ্ঞান্ত তৃষ্ঠ: সুজলৈর্থ।। হরি-ভক্তিস্পোদ্য়ে ৷ কুতাপি দ্ভহাস্যার্থে সেবা তারয়তেজনান্ ৷ বিফলা নান্যক্ষেবি

অস্য জীরুক্সা প্রিয়দ্ধ। ৭৩॥

বিক্টোরাধনাদন্ত নৈদিকং কর্ম প্রাং নাস্তি বিজ্বারাধনমের প্রণামিতার্থঃ। জনেন ভদারাধনপুর্ণায়াপাপরিজ্যিতাভিপ্রেতা। এতঃ পরিজ্যিষ্বর্গদিকলকবৈদিক বজাদিকগাতঃ লৈছিঃ বুজনেবিতি ভাবঃ।। ৭৪।। বেদদুটোন সদাচারাল্লসারেবেতার্গঃ। বদা। পেকারঃ এল্লেব ঃ জবেদদুটোন স্কুলেক্তেনাপীত্যর্থঃ। তৎ জনিব্রচনীয়ং ঐবৈক্তাঝাঃ।৭৫। মেন পরিভ্রুরে ন ভবন্তি। কিরা পুজা পরিচর্গাদিঃ ভদ্ধপোযোগে।ভজিযোগইতার্থঃ তত্রভাঃ। ৭৬॥ স্বভূতিতাৎ স্কুট্ বিহিতাদাপ পর্যোগাৎ। পরেভিজিযোগাদন্যযোগঃ ধ্যানধারণাদিকপত্তারং মেনভাকিঃ প্রিত্তাদাপ পর্যোগাৎ। পরেভিজিযোগাদন্যযোগঃ ধ্যানধারণাদিকপত্তারং মেনভাকিঃ প্রিত্তাদাপ পর্যোগাৎ। তত্রভঃ কিরাযুক্তযোগান্ বিনা ভদাশ্রেবের জানতীতার্থঃ। ক্রিয়াযোগস্ত স্বভন্ত এবেকাশেরেনাছ কিরেতি। সমাধিনা চিন্তবৈত্রের্গ ক্রোযোগন স্বরং চিত্তবৈত্রগং স্যাদতোমাং সম্যালভাকি ইত্যর্থঃ। তত্রভইতি পাঠে তত্ত্বজানং বিনাপি মাং সম্যালভাব্য জান্থ সমানং ॥ ৭৮॥ হথা ব্যাবং। শুভং স্বত্রব প্রম্কলকপঞ্চানীইতি শেষঃ।কর্ম ভপবৎপরিচ্ম্যাদি। ফলং স্বর্গাদিঃগতিরাশ্রয়ঃ,৭৯সমীহিতং বাঞ্জিভাচন

क्रभानुः (कानुष्ठः भवः।। । अक्रोवक्र्यः। म ममावाधिक्राद्याम् ङिक् স্যাৎ যথা তথা। অনিজ্য়াপি ছতভুক্ সংস্পৃষ্টোদহতি দ্বিজ। ধনবান্ পুত্ৰান্ ভোগী যশস্বী ভয়ৰজিভিতঃ মেধাৰী মতিমান্ প্ৰাজ্ঞা ভৰত্যারাধ্নান্ধরেঃ ৷৷ ৮২ ৷৷ कार्तनः जन एकुमातमार्क एक प्रमञ्जादम । विभिष्ठः मध्यभूषा कि धर्मा विकृष्टिन हुनाः । সর্বযক্ত তপোলোম তীর্থস্নানৈশ্চ যৎফলং। তৎ ফলৎ কোটিঞ্চিতং বিফাং সংপূজ্য-চাপু যাথা তক্ষাৎ সর্বপ্রযতেন নারায়ণমিহার্চয়েং। তত্তিব এশিবোনাসয়ানে যং প্রদদ্যাং দিকেনদায় সর্বাং ভূমিং সসাগরাং। আর্চায়েন্দ্রঃ সক্রিফুং তৎফলং লভ-(ठ नत्रः। मामार्क्तमि शाविष्युः रेनत्रखर्या शृक्षायः। शूक्रावालमः नविष्करमाविष्यु ভজোন সংশয়ঃ। মধ্যংদিনগভে সূর্যো যোবিষ্ণুং পরিপূজ্যেং। বসুপূর্নহী-माजुर्यरभूगार जनवान यार । প্রাতর यात्र स्विक्ये मठठ भतिभूकरार । जिति-क्षिममहमुमा नज्ज कनमूजम । याविष्युः अग्राजाज्ञा गाग्नः काल नगर्जायः। গবাৎ মেধস্য যজ্ঞসঃ ফলমাপ্নৈতি দুল্লভিং। এবৎ সর্ববাসু বেলাসু অবেলাসু চ কেশবং। সম্পূজ্যন্রোভক্তা স্বান্কামানবাপুয়াৎ।।৮৩।। কিং পুনর্যোহচয়েরিভঃ अस्टाहित नमक्रू ७५। धनाः म क्रव्ह्र ठा क विष्टु लोक मवीश्र स्था । 68 !! किथा দাক্ষামাত্রেণ রুঞ্স্য নরা মোকং লভন্তি বৈ । কিই পুনর্যে সদা ভক্ত্যা পূজয়ন্ত্যচু,তং নরাঃ। তত্তিব শীব্রহ্মনারদময়াদে। সৎসারেইন্মিন্ মহাঘোরে জন্মগৃত্যু ভয়াকুলে। পূজনৎ বাসুদেবস, তারকং বাদিভিঃ স্তৃৎ।।৮৫।। স নাম সুক্তী লোকে কুলন্তেন হ,লফুতে। আধারঃ স্বভূতানাং যেন বিষ্ণুঃ প্রসাদিতঃ ॥ ৮৬॥ যজানাৎ তপ-সাবৈশ্ব শুভানামপি কর্মণাং। ভিদ্বিক্ষিফলং নৃণাং সদৈবারাধনং হরেঃ ॥ ৮৭% কলৌ কলিনলকোন্তা ন জানতি হরিৎপরং।যে২চ্চয়াত তমাশানং ক্তক্ত্যান্তএবহি। নান্তি শ্রেয়াত্তমং নুগাং বিক্ষোরারাধনাৎ পর্ম ॥৮৮॥ যুগেইন্মিন্ ভামসে তক্ষাৎ সততং হরিমর্চয়েৎ! অর্চিতে দেবদেবেশে শব্দক্রগদাধরে। অর্চিতাঃ সর্বদেবাঃ সুয়েতঃ সর্বাগতোহরিঃ। অচিতি সর্বালোকেশে সুরাসুরনমকৃতে।কেশবে কেশি কং-সংঘুন যাতি নরকৎ নর:।।৮১॥ সক্রভার্চিতোঘেন হেলয়াপি নমস্কৃত:। म यां जि शतमा श्रानः यथ्नुदेवति शृक्षिष्टः । ममस्याक्ताकनाथमः एक्दएकमः भा কি নিঃ। সাক্ষাদ্রগৰভোনিত্যং পূলনং জন্মনঃ ফলং।তত্তিবাত্তে। অসারে খলু সং-

विकला देवश्वराभि न कलहीना॥ ৮>॥ श्रीशंत्रगाव ही स्था उदान्। मिठळांनः वाजानाजाः विविध्यकः उदान्। श्राळण वाजाउद्धानाञ्च उदान् छळ महोजा जिल्छाव।॥ ৮२॥ दिलास् स्थाकानिकालम् व्यवलास् उदनाकात्मधि ॥৮०॥ এवः स्थाङ्कालो यना कनाहि कु उछिन्। स्थाक्षानिकालम् विविध्यक्षि ॥৮०॥ अवः स्थाङ्कालो यना कनाहि कु उछिन्। कलमूक्षा निज्यक्षकाक्षमाह किमिछि। ৮४॥ वानि जिः स्वृतः गर्ववानिनास्य मण्डिमिछा छि। ४०॥ अवनः व्यवानिनाः विविधः कलः। ५०॥ इत्र्वनात्राधनः उत्तरं विविधः कलः। ५०॥ छेउनः व्यवः कलः मिछा छेउनः। १०॥ इत्र्वनात्राधनः उत्तरं विविधः कलः। ४०॥ उत्तरं विविधः। भागान्। भागान। भागान्। भाग

সারে সারমেতন্নির্গিতং। সমস্ত লোকনাথস্য প্রদ্যারাধনং হরে। কিঞা যত্র কিষুক্থা নিত্যৎ হল্ল ভিঠন্থি বৈষ্ণবাঃ।কলিবাহ্যানরান্তে বৈ যেইচর্ছে সদা হরিং। কাশাখণে । হরেরারাধনং পুংসাং কিং কিং ন ফুরুতে বত। পুত্রিতকলতার্থ রাজ্য স্বর্গাপবর্গদং। হরত্যঘং ধৃং সয়তি ব্যাধীনাধীয়িরস্যতি। ধর্মং বিবর্দ্ধয়েং ক্লিপ্রং প্রথছতি মনোরথং। অতএব ক্ষানের । এবং প্রতি শ্রীমার্কণ্ডেয়স্য বচনং। স্কুদ্ ভাঙ্গি ভোষেন দেবদেবো জনাদ নিং। স প্রাপ্রোভি পরং স্থানৎ সভামেতলয়োদি হং॥ তথাক্সিরসঃ ৷ যস্প্রিঃ সর্কনেষেদ্ধ যস্ত্রনায়োমগাত্মনঃ ৷ তমারাধয় গোবিন্দং স্থানস্থাৎ বনীক্ষ্সি। পুলত্স্য। পরং ক্রন্ধ পরং ধান যোগসৌ শাশ্বতপ্রধা তমা রাধ্য হরিৎ বাতি শুক্তিমপ্যতিদুর্লভাং ।। পুলহ্স্য। ঐলুনিন্দুঃ পরৎ স্তান্ৎ হম:-রাধ্য জগৎপতিং। প্রাপ হতপতিং বিষ্ণুং তনারাখন সুত্রত।। বশিষ্ঠস্য। প্রাপ্রে: ভারে। থিতে বিষ্ণে। মনসা ফলে দিছে তি । ত্রৈ লাক্যাতর্গতং তানং কিলু সর্বোন্তন। তুমং ।। ১০।। হান্যান্কাময়তে কানান্লারী বাপুরুষে। পি বা । তান্সমা-পোতি বিপুলান্ সমারোধঃ জনাফ নিং । অগতঃসংহিতায়াং । আরাধৈঃব নরো-विकु श्वनमा शक्य किक्क छि। कल ९ প্রাণে ত্যবিহৃত ও ভূরি স্থাপ নথা পি বা ।। ১১।। क्रेष्ट्रमः বিষ্ণুপুরাণেপি কিঞ্চধিকৎ চেনং । গ্রিমরীচেঃ। অনারাধিতগোবিদৈ-নবৈঃ স্থানং নৃপাত্মজ। নতি সংপ্র পাতে গ্রেঠং ভদ্যাদানাধরাচ্যুতং। কিঞ্চ তত্তিব। ভৌমান্ মনোর্থান্ অর্গং অর্থন্ডাং ভথাস্পাদং। প্রান্থোভ্যারা বিতে বিকৌ নির্বাণ ্মপি তোত্তম॰ ।। ১২ ।। তথা ত্রজ্বিনতেওঁ । বৎপাদোদকমাধার শিবঃ শির্নি ন্ত্যতি। হয় ভিনলিনাদাসীলুকা লোব পিতামতঃ । হদিছাশ ক্রিকোডাগুকা ভোদ্ভবদংক্ষয়ে। তথারাধ্য় গোলিদং স্থানন্ত্রে যদীক্ষি। নার্দিংছে মার্ক ভেয়সভ্যানীকসন্তাদে। যস্ত সংপূজ্যে গ্রিড)ং নর সিং হং নরেশ্বর। স লগ্নোক ভাগা,-স্যামত্র কার্য্যা বিচারণা। ভকাদৈকলনা ভ্রা যাবজ্ঞতিং প্রভিত্রে । চাদ্রনার সিৎহস্য সংপ্রাপ্নেত্রভিবাঞ্ভিং! ভত্তৈব জীব্যাসশুক্ষ্মানে : জিন ই.গুর্ম্মু -ঞ্যু স্থাদানস্তর্থনরকে পচ্চামানস্থ যমেন পরিভাষিতঃ। কিলুয়া নাচিডিছাদেনঃ কে শনঃ ক্লেশনাশনঃ ৷ উদকেনাপ্যলাভে ভ ত্রব্যাণাৎ পুজিভঃ প্রভুঃ ৷ বোদদাভি অকৎ লোকং স ত্যা কিং ন পূজিতঃ ১৯৩'নরসিংহোজ্যীকেশঃ প্গুরীকনিভেক্ষণঃ আরণ:-

দর্বোত্তমান্তমং স্থানং প্রীবৈত্ত লোকমপি প্রাপ্তোতি তৈলোক্যান্তর্গতং প্রাপ্তোতি কিমৃত বস্তব্যমিত্যর্থঃ॥৯০॥ স্বর্পাং ভূরি বা বাহ্মদিছতি তৎফলমারাবৈয়ব আরাধনমাত্রং ক্রান্তান্তব অবিহতং দর্বোপদ্রবরহিতং অনপ্রঞ্গ প্রাপ্তোতি ॥৯১॥ স্বর্গবদ্যমাস্পদং শীবৈকৃতি লোকং মৃদুকুশেহং নির্বাণমপি প্রাপ্তোতি ॥ যদ্বা স্বর্গবদ্যাং প্রপ্রবলোকং ব্রহ্মলোকদা। উত্তমং নির্বাণং মুক্তিবিশেষক্রপং শ্রীবৈকৃতিলোক্থ। বদা নির্বাণং মোক্ষং তস্মান্ত্রমঞ্চ প্রীবৈকৃতিলোক্থ। বদা নির্বাণং মোক্ষং তস্মান্ত্রমঞ্চ প্রীবৈকৃতি প্রাক্ষমিপ্ত ।।৯২॥ প্রাদ্যাদীনামশাতে সতি উদকেনাপি প্রক্রতঃ সন্ ।।৯২॥ স্মরণা

मा किरानिवार म प्राक्षिकः। वृद्यात्रमीय्यश्विष्टिमाद्याः श्रीमृत्वारको। হত্র পূজাপরোধিকোন্তত্র বিল্লোন বাধতে। রাজা চ ভক্ষরশ্চাপি ব্যাধয় শ্চন সন্তি হি ৷৷ ১৪ ৷৷ প্রেডাঃ পিশাচাঃ কুলাগু৷ গ্রহা বাল গ্রহাত্তথা ৷ ডাকিন্যোরাক্ষসালৈচ-ব ন বাধন্তে২চ্যুভান্ত কং। তত্ত্রৈন যনভগারথনম্বাদে। পত্তিঃ পুল্পৈঃ ফলৈবাচ্চ ত পূদাবভিতমচুতিং। সুযাতি বিষ্ণুসালোক্যং কুলদগুতিসংযুক্তঃ ।৷ ৯৫ ৷৷ তবৈৰ भूजार्ताभगमाहारचा वीतिक मृग्नाग्रको। उन्हारिकारन यन्नाम व्यन्नवरहाहिन रेव नकर। नज्ञ भदमः स्वानः किम् अधावत व जाना ॥ ५७॥ मूर्डः वा मूर्डः कर যিন্তিষ্ঠেন্ধরি মন্দিরে । স্যাতি পরমং স্থানং কিমু শুঞ্জাষণে রভাং।। তবৈৰ বিভাওক সুনিৎ প্রতি সুমতিন্পাসা।। অবশেনাপি যৎকর্ম রুভত্ত সুমহৎ ফলং। मनाचि न्वाः ताटकाम्, किः पूनः मगागर्काः। शात्र निष्ठ धकत्वारः । नम्प्रकीम्ब-দি বা নে, হাদ্দস্ত পূলয়তে হরিং। সর্বাপাপ বিনিদ্ ক্রিং স যাভিপরমং পদং।। সর্বা-ন্তরারা নশ্যতি ননঃ শুদ্ধিত জায়তে। পরৎ মোক্ষণ লতেতৈর পূজ্যমানে জনার্দ্ধনে। থমার্থ কামমোক্ষাখ্যাঃ প্রযার্থাঃ সরাতনঃ । হরিপূজাপরাণান্ত নিদ্ধান্তে নাত সংখ্যা ৷৷ ১৭ ৷৷ সর্দতীর্থানি মজাশ্চ সাজাবেদাশ্চ সত্রমঃ ৷ নারায়ণার্ছনিস্যৈতে কলাং নার্ভন্তি ব্যাড়শীং ।। ১৮ ।। জীবিন্যুতোব্রিধিপ্রান্ধাতরে । সভাং বিচ্যু ভিতং ৰচিন্নারৎ ৰচিনু পুনঃ পুনঃ অমারোদগ্রসংসারে নাবং যদ্বিস্পুদ্ধনং ।উপলেপন্সা-का जाति । जाका नोमिशिय विष्णाः अकृश शृजाः श्रक्षंत् । न उत्राः चववक्षत्र কলানিদ্সি জায়তে । যজ্ঞজোপাশ্যানান্তে। ভন্মাৎ পূণুভ বিজ্ঞেন্তু দেবোনার:-রণোহব্যয়ঃ । তর্গতভাগতরানভোবালি প্লকান্য বিনুভিদঃ। তে বন্দ্যাতে প্রপূ-ত্যাশ্চ নমস্কার্য্যা বিশেষভঃ। যেহর্জরন্তি মহাবিষ ুং প্রগল্পনি প্রশাসনং। যে হজন্তি স্গৃহাশূল্য। ছরিয়া হরমেব বা । তএন জুবনং াক্ষা প্রতি বিবুধর্মভাঃ ।। ৯৯॥ পাত্রে শ্রীনারারণনারদ স্বাদে। পূজাবিধিপ্রসজে । মন্তুক্তোযোমদর্জাঞ্চ করোতি ৰিপিদ্টিয়ে। ভন্যান্তরায়ঃ স্বপেহ্পি ন ভবত্য ভয়োহি নঃ। তত্রৈব বৈশাখ মাছাত্ম্যে नातमा स्वीयन सामा । भूजान् कलजान् जीर्या मृदाकाः अर्था भवर्षकः । म मम्याजी शिष्टः সর্ব্ধং ভক্তা সংপূজিভোইজিত। নরকেপি চিরৎ মগ্র 🇝 ব্রজা যে কুলরয়ে। তদৈব

দিপি মুক্তিদঃ। বাজা তংকতোপ্ডবইতার্থ: ॥৯৪॥ আর্চ্য সমগীবদার্চয়িত্বা। পূজারহিতং অরণ্যান্তগতত্ত্বাদিনা কেনাপাগুজানানং॥৯৫॥ উংক্রান্তিকালে মরণসময়ে। ৯৬॥ যুস্য কর্মা কিঞ্জিং পরিচর্য্যাদি প্রশং॥৯৭॥ হে সপ্তমাঃ বদা পরমোক্তমা ইতি মজ্ঞাদীনাং বিশেষণং।৯৮। ত্থিবুধর্মতাঃ । বদা তথা বিবুধর্মতাঃ বিদ্বরাঃ দেবোক্তমা বা॥৯৯॥

ষান্তিতে স্বৰ্গৎ ঘদান্ত তি সুভোছরিং।। ১০০। তত্ত্বৈর শ্রীষমন্তান্ধন সম্বাদে চ। অনারাধ্য হরিৎ ভক্তা কোলোকান প্রাপুরাষ্ট্রধা। আরাধিতে হরৌকামাণ সর্প্রে করতল বিভাগে। বিষ্ণুধর্মোন্তরে। শ্রীকৃষ্ণামৃতন্তোত্তে। সোপি ধন্যভ্নোলোকে যোহন্তরে দচুতেং সকৃং। কিংপুনং শ্রদ্ধয়া যুক্তং সুপুলৈও প্রতিবাসরং। বৈষ্ণুধান্দি যে নিত্যং প্রশান্তানি চালি বিষ্ণুপদ্ধ থান্তি কিংপুনর্বিষ্ণু সেবকাং। স যোগী স বিশুদ্ধান্থা স শান্তঃ স মহামতিঃ। স শুদ্ধংসচ সম্পূর্ণংকৃষ্ণং সেবেত যোনরং। জগন্ত স মংহিতারাং। অনন্যমনসং শ্রেকাণ্যয়ন্তাভ্যু সুখাং তিছন্তি কেচন।। ১০১ ।। পরিচর্য্যাপরাঃ কেচিৎ প্রাসাদেব্যুব পেরতে। মনুষ্যমির তৎ দ্রন্তুং ব্যবহৃত্তুণ বন্ধুবং। ১০২ ।। কিঞ্চ। যথা বিধি নিষেধ্যে তা মুক্তং নৈবোপসর্পতঃ। তথা ন স্প্রান্তারাম্যাসকং বিধিপূর্ব্বকং। শ্রীভগবন্দিতাসু। এবং সত্তযুক্তা যে ভক্তান্তাং পাযুগ্রাসতে। যে চাপ্যক্ষরস্ব্যক্তং তেষাং কে যোগবিত্তমাঃ। ১০০। ইত্যক্ত্বনেন পৃষ্টঃ শ্রীভগবান্বাচ। ময্যাবেশ্য মনো যে মাং নিভ্যুক্তা উপাসতে। শ্রদ্যা পরযোপভাতে মে যুক্ততম; মতাঃ। ইত্যাদি। ১০৪। চত্র্যক্ষিক্ষে শ্রীপৃথুক্তা। যৎপাদ সেবাভি ক্রিত্ত

বদা তেষাং স্থতঃ কুলোৎপল্লোছবিমর্চারতি॥১০০॥ অমূতীভূর জীবনাকে। ভূত্বা ॥১০১। তেভোঃ বি পুজাপরাণাং মাহাত্ম্যাত পরিচর্য্যেতি। প্রাসাদেছের শেরতইতি সদা ভাগবতসালিধ্যেন পরমনে শ্চিষ্টাদিনা**টেচহিক প**রমম্থানুক্তণতং শ্রীরামং মনুষ্যমিব লোকব্যবহারাদানুধারিণং দ্রষ্ট**ু** অতো-বস্কুবৎ তেন সহ ব্যবহর্ত্তুঞ্চ বিহর্ত্তুমিতি,প্রেম বিশেষসম্প্র্যা পারলৌকক পরমগ্রখং চোক্তং। এ ৪চ্চ এ ভাগবভামতো তারখা ও সমার নিরপিত্যন্তি। অনন্যত্যাদয়ঃ স্লোক। যদ্যপি ভগব-ন্তু ক্রিমাহাল্যে শিখিন্তঃ যুক্তান্তে তথাপি পরিচর্য্যাপরাইতি উপাদক্মিতি চেতৃাক্ত্যা পরিচর্যো\_ পাৰনরে: প্রাধানো পূজাপরভামাত্রভিধানাদত্র লিখিতা: এবমগ্রেপ্যভ্যং ॥ ১০২ ॥ পূর্বাং মংকর্মাকুৎ মৎপর্ম ইত্যেবং ডক্তিনিষ্ঠসা শ্রেষ্ঠত্ব মুক্তং। কৌন্তেয়: প্রতিক্লানীহি ন মে ভক্ত ইতাদিনা চ ভক্ৰ ভক্ৰ তলৈ বৈ ভুষাং বৰ্ণিতং। তথা তেষাং জ্ঞানী নিত্যযুক্তএকভক্তিৰ্বিশিষ্যতই-ঠাাদিন। সর্বং জ্ঞানপ্লবেইনকেউটাদিনা চ জ্ঞাননিষ্ঠস্য লৈষ্ঠাসুক্তং। এবসুক্ষোঃ শ্রৈষ্ঠোপি বিশে-যক্তিজাসয়া শ্রীভগবস্তমর্ক্রেনঃ পৃচ্ছতি এরমিতি । এবং সর্বকর্মার্পণাদিনা সততং যুক্তান্ত, নিষ্ঠাঃ শক্তোযে ভক্তান্ত্রাং পর্তুপাসতে সমারাধয়ন্তি যে চাপাক্ষরং ব্রহ্ম **অব্যক্তং নির্বিশে**ষমুপা-ৰতে তেষামুভ্যেষাং মধ্যে কে অতিশয়েন যোগবিদঃ শ্রেষ্ঠা ইত্যর্থ:।। ১০৩।। ততা প্রথমাঃ শ্রেষ্ঠা ইত্যুত্তরং প্রীভগবানাহ ময়ীতি। ময়ি প্রমেশ্বরে সর্বজ্ঞতাদি গুণবিশিক্টে শাক্ষান্তগ-ৰতি শ্ৰীকৃষ্ণে মন আবেশ্য একাগ্ৰং কৃত্বা নিত্যং যুক্তাঃ মদৰ্থকৰ্মামুষ্ঠানাদিনা মন্নিষ্ঠাঃ সন্তঃ শ্ৰে-ষ্ঠয়া শ্রহ্মা যুক্তা যে মামারাধয়তি তে যুক্ততমাঃ মেইভিমতাঃ॥ ১০৪॥ যস্য মম পাদয়োঃ সেবায়া মভিক্তিরপি তপশ্বিনাং দংগারতপ্তানাং। ্রদ্ধা তপঃ স্বধর্মাচরণং তিত্তৈকাঞ্জা বা তদ্মুক্তানা- পরিনা নশেষজনোপচিতং নল ১ ধিয়ঃ ৷ সদ্যঃ কিলোভাস্থমেধতী সতী যথা পদাস্পুতিবিনিঃস্তা সরিৎ ৷৷ ১০৫ ৷৷ বিঞ্চনারদোক্তৌ ৷ যথা তরোমূলনিষে-চনেন তৃপান্তি তৎক্ষরভুর্জোপশাথাঃ ৷ প্রাণোপহারাক্ত যথেনিদুয়ানাং তথৈব সর্বাহ্ণিয়াত ত্রেরা ৷৷ ১০৬ ৷৷ একাদশস্ক্ষে চ কবিযোগেশ্বরস্য বাক্যং ৷ মন্যে কুতশ্চিদ্ধেমচু (তজ্যা ৷৷ ১০৬ ৷৷ একাদশক্ষে চ কবিযোগেশ্বরস্য বাক্যং ৷ মন্যে কুতশ্চিদ্ধেমচু (তস্যা ৷৷ ১০৬ ৷৷ একাদশক্ষে চ কবিযোগেশ্বরস্য বাক্যং ৷ মন্যে কুতশ্চিদ্ধেমচু (তস্য পাদায় জোপাদনমত্র নিত্যং ৷ উদ্বিশ্ববুদ্ধেরস্দাভাতাবাদ্দিশালা ৷ যত্র নিবর্ত্ততে ভীঃ ৷৷ ১০৭ ৷৷ প্রভিগবতশ্চ ৷ এবং ক্রিয়াযোগপথিঃ পুমান্ বৈদিকতান্তিকৈঃ ৷ অর্চনুভ্রতঃ নিন্ধিং মন্তোবিন্দাভাতীপ্রিতাং ৷৷ ১০৮ ৷৷ কিঞ্চ ৷ আমের নৈরপেক্ষ্যেণ ভক্তিযোগেন বিন্দ্রি ৷ তক্তিযোগেং স্বভতে এবং যঃ প্রভাষেত মাং ৷৷ ১০৯ ৷৷ গৌতমীয়তন্তে শ্রীনারদ্যা ৷ ত্রসীদলনাত্রেণ জলস্য চুলুকেন চ ৷ বিক্রীণীতে স্বমান্থানং ভক্তেভ্যোভভ্যবংসলঃ ৷৷ ১১০ ৷৷

অথ পূজানিত্যতা ।। নহাভারতে। মাতৃবং পরিরক্তং সৃষ্টিসংহারকার-কং।যোনার্চরতি দেবেশং তং বিদ্যার ক্র্যাতকং। অতএবোক্তং বৃহন্তরনীয়ে। পানোদক্মাহান্ত্যাখ্যানারত্তে। হরিপূজাবিধানন্ত যস্য বেশানি নো দ্বিজাঃ। শাশান

মিপি অশেষ জন্মভিঃ সংবৃদ্ধং ধিয়োমলং সদ্যঃ ক্ষপয়তি । কথমূতা। অহন্যহনি বৰ্দ্ধমানা। সতী সাধিকী প্রমোক্তমা বা। এবং মলক্ষপ্রমাল্রফিকং মুখ্যঞ্ফলং নিত্যমেধ্যানোক্তম। তৎসেবা-ভিফ্চিরেবেত্যভিপ্রেডং । তৎপাদসম্প্রেণ্যবৈষ মহিমেতি দৃষ্টান্তেনাই যথেতি । পদাঙ্গুত-নিনিঃ স্ততেত্যমং ভাবঃ বামপাদস্যাঙ্গুঙাৎ বিনিঃস্তা নির্গত্য ভুবং গতা সাত এককলৈব নচ নিতাং বর্দ্ধমানা তথাপ্যনেক জন্ম। চিতং মলং সদ্যঃ ক্ষপয়তি। এবা চ পাদয়োঃ দেবাস্থ অভিকৃতিঃ। তত্র সংলগ্নোমনসোভাবঃ তং সদাঃ কিণোতীতি কিং চিত্রং কিন্তু নিত্যং বর্ত্ত্ব-মানা চোদ্দা সতী ফলরপতাং প্রাপ্রোতীত্যচিত্রমবেতি ॥ ১০৫॥ খ্রীভগবদর্চনেনৈর জগতঃ সংসামইতি সদুষ্টাস্কমাহ মণেতি। মূলাৎ প্রথমবিভাগাঃ স্কন্ধাঃ তদ্বিভাগাঃ ভুজাঃ তেষামপ্রাপ-শাখাঃ উপলক্ষণমেতৎ পত্ৰপুঞ্চাদয়োপি ভৃপান্তি নত মূলসেকং বিনা স্থানিষেচনেন! প্রাণস্যোপহারোভোজনং তক্মাদেবেক্রিয়াণাং তৃপ্তিঃ নম্ভ তম্ভদিক্রিয়েয় পৃথক্ পৃথগললে-প্রনাৎ। তথাচা হচুতারাধনমের সর্বাদেবতারাধনং ন পৃথগিত্যর্থঃ।। ১০৬।। আত্যন্তিকং ক্ষেমং কথয়তি মন্যইতি। ন কুতণ্টিদপি ভয়ং যক্ষাৎ তদকুতন্টিদ্রয়ং অত্র সংসারে। অসদাস্বভাবাৎ অসতি দেহাদাবাত্মভাবনাতঃ। নিতাং সর্বাদা উদ্বিগ্নবুদ্ধেজনস্য বিশ্বাত্মনা সর্বাধা নিঃশেষং যত্ত পাদায়ুজোপাদনে ভীন বর্ত্তে। যদা । যত্র যক্ষিন্ সতি অসদাত্মভাবাৎ রসংক্ষাবাত্মা চ হরিঃ ঞীকৃষ্ণ ইত্যর্থঃ। তিম্মিন্ ভাবঃ প্রেমা তক্মান্ধেতোনিত্যমুদ্বিয়বুদ্ধেরপি বিশ্বাত্মনা ভীনিবর্ততে অন্যৎ সমানং ॥ ১০৭॥ এবং পূর্বোক্তপ্রকারেঃ ক্রিয়াবোগরুলৈর্মার্কিয়া-যোগ প্রকারেঃ অর্চন্ অর্চয়ন্। উভয়ত্র ইহামুত্র চ ।। ১০৮।। বৈরপেক্ষাণ অইহস্তকেন প্রেম-লক্ষণেনেত্যর্ধঃ। নমু নৈরপেক্যো ভক্তিষোগঃ কর্বং ভবতি তত্রাহ ভক্তিষোগমিতি॥ ১০৯॥ बिकी गीरक वंगार करता छ।। २५॥

সদৃশং বিদ্যার কদাপি বিশেষ্ঠ তথ । ১১৯ । অতএবোক্তং বিষ্ণুধর্মেন্ত্রে । পুলার্মার বিদ্যার কদাপি বিশেষ্ঠ হা । রাইব্যং প্রারীকাক্ষন্তান্ত্রা কার্য্য শতানি চ । কিঞ্চ । নারদীয়ে । নিমিত্তেয় ক্র সর্কেষ্ঠ তত্তৎকাল বিশেষতঃ । পূল্য়ে-দেবদেবেশ বেশং করাং সম্পাদ্য যত্ত্বঃ । ১১২ ।। অতএবোক্তং ভগবতা হয়প্রীবেণ । হয়শার্ষপঞ্চরাত্রে । প্রতিষ্ঠিতার্চা ন ত্যাক্র্যা যাবজ্ঞবিং সমর্চয়েও । বরং প্রাণস্য বা ত্যাগঃ শিরসোবাপি কর্ত্তনমিতি ।। ১১৩ ।। পূজায়া নিত্যতাহলেথি প্রাকচ্নৈবেদ্যভক্ষণে । মাহাত্ম্যঞ্চ পরং শাল্যামচক্রপ্রসঙ্গতঃ । ১১৪ ।। পূজাঙ্গানাঞ্চ মাহাত্ম্যাই প্রায়া তংসর্বমিহ পূজায়াং পর্য্যবস্যতি হি ষ্বতঃ ।। ১১৫ ।। পূজামহিম্মত্তেভাঃ শাস্তারণ্যবিহারিকঃ । কাটেন কতি সংগ্রাহ্যাই প্রভাবং শীহরে-বির্না ।। ১১৬ ।।

অথ শ্রীভগন্নাম সদাদেবেত সর্বতঃ। তনাহাত্ম্যঞ্ বিখ্যাতং সংক্ষেপেণাত্র লিখ্যতে।। ১১৭।।

হরে:পুজাবিধানং পূজনং। হে দ্বিজাঃ॥ ১১১॥ নিমিত্তেমু জন্মাইম্যাদিয়ু ॥ ১১২ ॥ অর্চা প্রতিমা যা কাচিদপি । এবমর্চননিত্যতা স্বতএব দিন্ধা ॥১১৩॥ অতালিখিতমপ্যন্যৎ পুজায়ানিত্যস্ত্রস্য মাহাস্যাস্য চ বচনজাতং পূর্বলিথিতেনৈকীকুর্বন্ লিখতি পূজায়াইতি দ্বাভাগং। প্রাগলেথি। অনর্চয়িত্রা গোবিন্দং বৈভুক্তিং ধর্মবর্জ্জিতৈরিত্যাদিভিঃ। পরমনাচ্চ মাহায়াং শালগ্রামশিলারপদ্য চক্রিণচক্রযুক্তদ্য ভগবতঃ প্রদক্ষে। তথা চ শালগ্রামশিলা-মাহান্মো। যঃ পূজ্যেন্ধরিং চক্রে শালগ্রামশিলোদ্ভবে 1 রাজ হয় সহসেণ তেনেইছং প্রতিবাসর-মিত্যাদি॥ ১১৪॥ পুজাঙ্গানাং ভত্তত্পচারষমর্গণাদীনাং । স্বত্তব পর্য্যবস্তি পুজায়াএব মাহাস্মানিতি জেয়মিতার্থঃ । অঙ্গানাং মাহাল্যোনাঞ্চিন এব মাহাস্মাপত্তেঃ এবং দর্কটেগ্যব পূক্সাঞ্জাৎ তপ্তৰাহাত্মাং সর্বমের পূজায়ামাহাত্মামিতি ভাবঃ ॥ ১১৫॥ এবমনস্তান্যের পূজা-মাহাত্ম্যবচনানি জ্ঞানক্রিয়াশক্তিহীনেন ময়া কতি লিখিত্তং শক্তান্তে যচ্চ তত্র কিঞ্জিলিখিতং তৎ இভগবঅহি নৈবেতি নিকৌদ্ধতাং পরিহরন্ পূজায়ামাহাত্মবিশেষং দশ্যতি পূজেতি। পূজায়ামহিমান এব মত্তেভাঃ মন্তহন্তিনঃ ছ্র্তাহ্বাৎ । কথমুতাঃ শাস্ত্রাণ্যেকারণ্যানি অর্থতঃ শব্দতশ্চানস্ত্যেন প্রমন্থ্রসমন্ত্রাৎ তেযু বিহর্জুমিতস্ততঃ সর্ববিদ্ধীড়িতং শীলং যেবাং তে ৷ অত-এব কীটপ্তল্যেন পরমাসমর্থেন জনেন কতি সংগ্রাহ্যাঃ সংগ্রহীতুং শক্যাঃ। এছরে: প্রভাবং বিনে-তি তেনৈব সংগ্রাহ্যা ভবস্তি নান্যেনেতার্থঃ । অতচ যথা বনান্তর্বার্ত্তলো মন্তর্গলাঃ কীটেন সং-প্রাহ্যাঃ ন ভবন্তি কিন্তু ক্রিংহলৈয়ব শক্ত্যা ভবন্তীতি দুফীন্তঃ স্পন্ত এব।। ১১৬।।

এবং পূজামাহান্তাং লিখিত্বা মধুরেণ সমাপয়েদিতি ন্যায়েনান্তে নামমাহান্তাং লিখন্ ততাদৌ ব্রাক্তে মুহূর্দ্ধে উপানতো নক্তং শয়নপর্যন্তে নিজকর্মণি তথা প্রীভগবতঃ প্রবোধনতোনক্তং স্থাপনপর্যন্ত দেবাপ্রকারেচ সর্বাক্তিব বিশ্বনিবারকতয়া ন্যুনসংপূর্দ্ধিকারত্বেন পূজাঞ্চতয়া তথা স্বকর্মানাং গুণবিশেষাপাদকভয়া তথা স্বভঃ পরমকলবপতয়া চাদৌ মধ্যে অন্তে চ প্রভগবয়াম কীর্ত্তনং কুর্যাদিতি লিখতি অধেতি আনস্তর্য্যে মঙ্গলে বা। সর্বতঃ সর্বাত্ত সর্বাধ্ সর্বাধ্বিশেক্ত্যুর্থঃ । এবং কালবিশেক্ত্রুত্যভাদ্যভারাৎ সর্বাপরিভোবক্ত্যাচান্তে লিখন্মিতি ভাবঃ। ১২৭।

অথ এভগবরামবিশেষ্স্য চ সেবনং। ঋষিভিঃ ক্পারাদিষ্টং তন্ত্রৎ ক মহতা-অর্থ কামবিশেষেণ জীভগবন্নাম বিশেষসেবামাহাত্মাং। তত্ত্ श्रामार ॥ १८४ ॥ পাপক্ষার্থাৎ কৌর্মো। শ্রীশকপূর্বাং জয়শকপূর্বাং জয়দ্বাদ্ভরভত্তথা হি। তিঃ সপ্তক্ষানরসিংহনাম জপ্তং নিহ্ন্যাদিপি বিপ্রহত্যাং।। ১১৯ ।। মহাভয়নিবা-রণার্থ তত্ত্রব । এপুর্বোনরসিংহোদির্জয়াদুত্রতম্ভ সং । তিঃ সপ্তরুছোজপ্তস্ত महा छ । तिवाद ११ १२० १। काम विष्मार यु मन्न नार्थः । विकृषस्मार्छ द्व । श्रीमार्क-ए अवज्य मारि । शुक्रमः वामरिवक उथा नेकर्ष १ विष्ट् । अपूरम्म मिक्काक क्रमः मरक् मृ कीर्खर ११ ) २२)। वन छ ज उथा क्रकः के र्खर प्रमयन प्रया गाधवः शृखती-কাক্ষং তথা বৈ ভোগশায়িনং ৷৷ পদ্মনাভং ক্ষাকেশ্ব তথা দেবং তিবিক্রম্ব ৷ क्तरमन ताक्रमापृ न वमसामिषु कीर्दाय ।। ১২२ ।। विष्युक मधुरसात ७४। प्रवः ত্রিবিক্রমং ৷ বামনৎ জীধরক্ষৈব ছয়ীকেশং তথৈব চ৷ দামোদরং পদ্মনাভং কেশ-বঞ্ যদূত্তমং। নারায়ণং মাধবঞ্চ গৈ।বিন্দঞ্চ তথা ক্রমাৎ। চৈত্রাদিষু চ মানেষু দেবদেব মন্ম্মরেৎ ৷ প্রদ্যমুমনিরুদ্ধ পক্ষায়োঃ কৃষ্ণশুক্রয়োঃ ৷ সর্বঃ সর্বশিবঃ স্থাণুভূতি। দিনিধিরবায়ঃ । আদিত্যাদিযু বারেষ্ ক্রমাদেবমনুষ্রেৎ ॥ ১২৩॥ বিশ্বং বিষ্ণুৰ্বেষট্ কারে। ভূতভব্যভৰৎপ্ৰভুঃ। ভূতভূৎ ভূংক্তং ভাবোভূতাত্ম ভূত-ভাবনঃ। অব্যক্তঃ পুগুরীকাক্ষো বিশ্বকর্মা শুটিঃশ্রবাঃ । সন্তাবোভাবনোভর্জ। প্রভবং প্রভুরীশবং ৷ অপ্রমেয়োক্ষীকেশং প্রমাতাহ্যমরপ্রভুং ৷ অগ্রাহ্যং শাশতা

তত্রাদৌ নামবিশেষদ্য মাহায়্যং বিশেষতোলিখতি অথেতি। তেন তেনাগ্রে লেখ্যেন কা-মেন হত আত্মা চিত্তং ধেষাং তেষাং আদিউং তান্প্রতি জ্ঞাপিতং। নতু মহাকলং ভগবনাম-দেবনং দৰ্ব্বক্তৈক্স বিভিন্তত্ত্বৎ গুচ্ছফলার্থং কিমিত্যাদিষ্টং। তত্র লিখতি রূপয়েতি। তেনৈবশীঘং সমাক্ কৃততত্ত্ৰ পিন্ধেঃ। যদ্বা । তত্ত্ৰ কামেনাপি কথঞ্চিত্তেষাং তত্ৰ প্ৰবৃত্ত্যৰ্থমিতি দিক্॥ ১১৮ ।। জরশব্দয়োর্মধ্যং অশুর্বার্ত্তি জয় নরসিংহ, জয়েতি ৷ জয়াছত্তরতঃ জয়নরসিংহেতি ৷ নরসিংহন্য নাম নর্দিংহেতি নামবা।।১১৯।। স নর্দিংহং দ্বির্বার্ত্বয়ং জয় জয়েতি তস্মাতুত্তরতক্ষ জয় জয় নর্-শিংহেতি ৷ পাঠান্তরেপি সএবার্ধঃ ৷৷ ১২০ ৷৷ পুরুষাদীন্ পঞ্চ অন্দেযু সম্বন্ধদি ভেদেন পঞ্চ-ন্ত্র ক্রমাৎ কীর্ত্তয়েং। পঞাব্দাশেচাক্তাঃ ব্রহ্মবৈবর্তে। সমুৎসরস্ত প্রথমোদ্বিতীয়ঃ পরিবৎসরঃ।ইদা বৎসরস্ত তীয় শুভর্ষশাস্ত্র বৎসরঃ। উদ্বৎসরঃ পঞ্চমস্ত কালস্য যুগসংক্রিতঃ। ইতি। যদ্যপ্যত্রাগ্রে চ ফলং বিশেষতো ন জায়তে ওথাপান্তে বরদস্যেত্যুক্তা। তথা নর্বার্থনিদ্ধিমাপ্লোভীত্যাত্যু-क्ता ह नामानाङः कनः महक्खीं छ छात्रस्य।। ১२>।। माधवामीन् वरेख वन्छा निवर्क्ष ख्यू करमन की खंदार। १२२॥ विकामीम् खामम देवजामीम् खाममारमय् कमामक्ष्यद्वर । उक्त । यদুস্তমমিতি বিশেষণং জেরং। অন্যথা ত্রেরাদশ স্ত্যঃ। যর্দুস্তমেতি বা পাঠঃ ৷ ততশ্চ সম্বোধনং। যদা কদাচিৎ মলমাসে দতি তঁয়োদশ মাসা ভৰস্থি তদপেক্ষয়া यमृखिरमन मह जारा-দশেতি জ্যেং।। ২৩।। বিশ্বনিত্যাদীনি সপ্তবিশতি নামানি কৃত্তিকাদিযু সপ্তবিংশতিনক-

थाज। कृश्टेम्हजानानुमादार । प्रवास्तिमा नामानि क्रिकिंगिम् योगत ।। ১२৪।। ব্রহ্মাণং প্রীপতিং বিষ্ণুৎ কপিলৎ জীধরং প্রভুৎ । দামোদরৎ হুয়াকেশং গোবিন্দং মধুসূদনৎ। ভ্রবং গদিনং দেবং শঞ্জানৎ প্রিন্তথা। চ্তিণ্ধ মছারাজ প্রথমান किये जेश्मादत थे।। ২৫ ।। বৰ্ষণ বা সক্ষা নাম দেবদেব স্যাদ্ৰ । কালানি ন্ৰাণ্ জনাক্রিস্য কালশ্চ সর্কাঃ পুরুত্রপ্রবীর । ওলাৎ সদা লবগভস্য নাম প্রাহ্যৎ হথেটাং বরদস্য রাজন্ ।। ১২৬ ।। বিবিধকাদনিদ্ধে ও পুলস্তোভৌ । কামঃ কামপ্রদঃ কান্তঃ কাম পালন্তথ। হরিঃ। আনদেনামাধব শৈচর কামসংসিদ্ধারে জেপেও।। ১২৫।। রাসঃ পরশুরামশ্চন্সিংলোবিফুরেব চ । বিজনটেড্রযাড়ীবি ল্প্যান্রিভিগী-যুতিঃ ।। বিন্যামভাষ্যতা নিত্তে জগুরাঃ গুরুঘেরেয়ে । দামেগ্রং বত গভোনিভাষের জপেররঃ। কেশবৎ পুত্রীকাকীনালক হি ভগা জগেছ। এত বাধাসু সর্বাসু অধীকেশং ভয়েযু চ । ১২৮ ।। অচ্যুত্থাসূত্যক্ষর জপেনের কর্মণি। সংগ্রামাভিমুখোগজন্ সংখ্রেদগরাজিতং। চক্রিং গলিনাফর শানি নিং খল্গিনং তথা। কেমাথী প্রবর্ণনত্যং দিফু প্রাচ্যাবিষু অরেখন ১২৯।। জ তঞ্চালিপালৈর সর্বাধ সংক্ষেত্রতথা। সংক্ষরেও পুরু ঘোড । বাব লারেষ্ সংক্ষা। 11 ১৩০ 11 নারারণৎ সর্ককালং কুৎপ্রস্থালনাদিবু । গছনক্ষত্র প্রীড়ালু দেব বাধাসু সর্বভঃ ।। ১৩১ ।। দসুবৈরিনিবেধেশু ব্যাঘুকিংসানিসভটে । ভজকার ভলপীত্রে नत्निः ज्ञान्यदत् । जितिनारः मगूर्भात् मः गार्तकः कामातिनः । शतः पृथ्कान्यातः শ্বিষবীর্যাৎ ব্যপোহতি । সানে দেবার্চনে ছোমে প্রনিপাতে প্রদক্ষিণে। কীর্তারেডুগ-বলাম বাস্দেবেতি তৎপরঃ। স্থাপনে বিভ্রগ্যানাদের প্রগানে চ দুণ্টজে। কুর্বতি ভন্মনা ভূদ্ধা অনহাচুত্তে কীর্ত্তন । ১৩২ । নারারণৎ শার্জ্পরং ীধরং পুরুষো-ত্ম । বামন থ অত্থিন জৈব দুক্ত স্বাসে সদা সারে । মহান্বাদৌ পর্যাঞ্জ শারিনঞ্ নরঃ ফারেং। বলভদ্র সমৃদ্ধ্রিং সর্বাক্মণি সংখারেং। জগৎপতিমপত্যার্থ रखन् ज्ला न मोम् जि। बीमः मर्याज्यम् विकाशमः अर्वाद्ययः । जित्रियेषु

ত্রেযু ক্রমাদেবারুম্বরেৎ ॥ ১২৪॥ প্রথমা তিথিঃ প্রতিপত্তলাদির পঞ্চদশতিথিয় ব্রহ্মাদীন্
পঞ্চদশ ক্রমেনেব সংম্মরেৎ ॥ ১২৫॥ নমু চিন্তামণেরির মর্ক্রম্যাপি ভগবলামুঃ সমানফলং
ক্রয়েতে তৎকিং বিশেষনির্দ্দেশতোমাহান্ন্যাশংকোচাপাদনেন সত্যং অত্যন্তকামান্ত্রাপহত চিন্তানাং
শ্রেলাসম্পত্তয়ে তথোক্তং । বস্তুতস্ত সর্কাদা সর্ক্রমেব নাম দেব্যমিত্যাহ সর্কামিতি । সংম্মরেদিতি
পূর্ক্রিয়া আগ্রমিতি পরেয়া বা সম্বলঃ । তদেব সহেস্তক্রমাহ । নামানীতি ॥ ১২৬॥ কামইত্যাদিনামানি জপেৎ ॥ ১২৭॥ নেত্রবাধাস্থ চক্ষুপীড়াস্থ ৷ ১২৮। প্রবসন্ বিদেশং গচ্ছন্ চক্র্যাদীন্ চন্তরঃ প্রাচ্যাদিচন্তর্দ্দিক্ষু ক্রমাৎ স্মরেহে ॥ ১২৯॥ ব্যবহারেযু বাণিক্র্যাদিয়ু ॥ ১৩০॥
দেববাধাস্থ অতিবৃদ্যাদিয়ু ॥ ১৩১॥ হুইকেইপধ্যানে ছুইজন্চিন্তিতানিক্টে ॥ ১৩২॥ মর্ক্রিক্রেলাদেশস্থানিন্ প্রপাতঃ অক্রমাৎ গমনং । মরুদিতি পাঠে বাত্যা তদাদিয়ু সৃত্যুমু মরণহেত্মু !

ত্যশেষে বুবি শিকিঞ সদা জপেং। মকংপ্রপাতারি জলবন্ধনাদিযু মৃত্যু । স্বতন্ত্র পরত্ত্তেশু ব সুদেবৎ জপেদ্বুধং ৷৷ ১০০ ৷৷ সর্বার্থশক্তিযুক্তস্য দেবদেবস্য চক্তিণং ! খণ। ভিরোচতে নাম তৎ স্কার্থেষ্ কভিয়েৎ। স্কার্থনিদ্ধিনালে।তি নামুামেকা-পতি। যতং। মর্বাণে।তানি নামানি পরস্য ব্রহ্মণোহরেং।। ১৩৪।। এবং বিফু-প্রান্তরে চ নার্কণ্ডেয়বজুসমাদে। কিঞ্চ । কুর্মাং বরা ২ং সংস্থান জলপ্রভারণে चारतः । ज्ञाकाम् स्विक्तात करभागं वर्षा ७०५ । १३०७।। शक्त प्रमुखानुसार भागाया মুছ।তে নরং। জুরজ্ট শিরোরোরোগবিষবীর্যাঞ্শাম্যতি। বলভভ্ত মুফার্থী রুর্যাং-तरा क्यातुस्य । উভারণ বণিজ্যার্থা রাখনপু, দয়ে गृथा। बाभग, ध मक्षन दिक्ष মঙ্গলে যুট ক্তিয়েছ। উতিষ্ঠন্ ক্তিয়েদিয়ুছ এলগন্মাধৰৰ নঃ। তেজেনে है। अस्ति अन्य अञ्चल अञ्चल्लामा । उद्याना छ। अस्य विच्छा विक्षु । চজন েন্ম । শার্নে পদ্ধাভিক্ত মৈগুল চ প্রজাণতিম । সংপ্রাচন চক্রিং প্রায় স্থানভাগে ত্রিবিভালত। নারারণত বৃষ্ধোহনর্গে জীবরং প্রিরমঙ্গনে। জন-भरत। छ यात्राकः शादरक कलमाधिनः ॥ २०५॥ किन्दन नद्गिष्टकः शक्तरण दशू भगत्यः ! मृत्यः १ भाव छ। विकार विश्व कि पशुमृत्यः । मात्र (एवः मनः एकः मन्त्रः । হোল মাধ্ৰং ।। ১৯১। কিঞাকভিয়েল খুলিবঞ্জনুতে দুপি মাদৰ । কার্যাত বংঘ তথা, র'চন্ হলেউ লাম কীউরে হ। সর্কাণি নাম, নি হি তস্য রাজন্ স্কার্থ-गिरिका व जनकि भूरमः। ध्याल्यायकि यन् इत्यमाम गरक्षम् कार्याम् अर्भक पण्या

কণ্ড হৈ ব্যাস প্রতি ক্রের স্থানি পরানী নেষ্ স্বতঃ প্রাপ্তেষ্ পরিবল্ধা প্রাপিতেষ্ ॥ ১০০॥ হ্লাচ যনামি প্রতিঃ তেন তদেব সেবাং তেনৈব তথ্য সর্বার্থ সিদ্ধিরিত্য হ স্বার্থ হৈ দ্বাভাগত গল গলিকার তথ্য স্বার্থ সিদ্ধিরিত্য হ স্বার্থ হৈ দ্বাভাগত গলিকার ভাগত হল বিশুদ্ধে প্রতি শিক্ষা হল । ১০৫॥ স্বার্থীনাং বীষ্যং প্রভাবশ্চ শামাতি ॥ ১০৬॥ বিশুদ্ধে শুক্তি শিক্ষা বিশ্বস্থা ১০৭॥

স্নির্মালাঃ অত্যন্তমলহীনাঃ হিষ্মাৎ হরিকীর্ত্তনে রাগঃ শ্রন্ধা হণাং ভ্রমঃ পাপমলং কুংস্নং অনিব্রুর অনিব্রম্য নোদেতি অপিতু বিধূরৈবোদেতি। যথা স্থোম্মাকারং সর্বাং বিধূরৈবোদেতি তদ্ধং ॥ ১৩৮ ॥ গোবিনদ্ব্যা নামেব মেথৌঘাইস্তথে নীর্বিন্দ্রইস্তেইউভিনশ্যতে নশ্যতি ॥ ১৯॥ অবশ্যনিপি যদুক্ষ্যাপি যদা নামি কীর্ত্তিতে সতি থথা সক্ষাদাগতং সিংহং দুক্ষী ত্রস্তা ম্রিগ্র

ত্তি তৃতি হিনা ১৪০। হলা মকী জনং ভক্তা নিলাপন মনুভ্নং। সৈতে লাশেষপা পানাং ছাত লালিব পাৰকং ।। ১৪১।। যদিনা তেনতিন হাতি নরকং অর্নাহিশি থালিবনে বিশ্বের নিবেশিতা জ্বন সাক্রা আপি লোকোহণপকং। নুজিং চেত্র সংগ হিতোভনন বিরাধ পুশ্নাং দদাত লেয়ে কিঞ্জিত মদদং প্রমাতি বিলয়ং তত্তা চুটে কিলিতা । ১৪২ ।। বিশ্বের্যা তিরো সায়ং প্রাভস্ত্র্যা ক্রা দেবদেবসা কীর্ত্রাং। সন্ধ পাপরিন্যুক্তঃ স্বর্গলাকে মহায়তে। বামনে। নারায়ণোনাম নরোনরাগং প্রদিদ্ধ চৌরুক ক্ষিতঃ পৃথিব নাং। অনেকজ্যা ছির্ত্রতাপাপসঞ্চয়ং হরত শেষং প্রক্রাত্র বিলয় তিরা কার্যা বিল্লেতি তথা প্রাক্ত বিল্লামা মাং কশ্চিনাত্র বব ।। ১৪০ ৷৷ ক্রান্যোলির বিল্লেতি তথা প্রাক্তির সহস্থা। কাশ্বির্যা হা কশ্চিনারো ভবতি ভূতলে। করিবানের তল্যাপি পাপং যাতি সহস্থা। কাশ্বিরে । প্রমাদাদিপ সংস্পৃতীয়ে হালকণাদহেং ৷ তথা চপুটনংস্পৃতীয় হরিনাম দহেদ্বং ৷ বৃহ্যার দীয়ে ৷ লুস্ককোপাথানাত্তে ৷ নরাণাং বিষয়ানানাং মনতাকুলচেত সাং। একমের হ্রেন্য স্ক্রপাপবিনাশনং। অত্রব তত্তির যমেনোক্তং৷ হির হরি সক্ষুক্তরিতং দ্যাচ্ছলেন যৈর্নু যৈঃ। জ্বানি জাইর্যার্গিপ্তা

মবরুক্তোর্কাতং বিজ্ঞা পলায়তে ভদ্বং। यদা মুগ্রার্থং বনং প্রবিটিঃ কণ্ডিং পুমান্ সুকৈবা-বুতোহকস্মাদাগতং সিংহং দুখু। এত্তৈ তৈৰ্যনাগো বিশ্বস্তাতে তথ্বদিতি ॥১৪০॥ ভক্তা তংকীশুন-ফলমাহ যন্নামেতি। দাদশাক।দিপারশিষ্টেরঃ পাপমের বিসশাতি তৎসংকারভুবশিষাতে ই पर युर्भियागार मरकातागार शालानार विनालकर विनासकर नहातान निः स्विभागपातः महामिতि मृक्षीरञ्जार यथा थाञ्जाः अवन्तिनामुक्छन अकालनामि वा द्वारत नः रथा गक्र मल न নাশয়তি কিন্তু পাৰকএক অতঃ সর্ব্বোত্তমমিদনেবেত্যর্থঃ।। ১৪১।। সর্বাপাপক্ষয়োভবভীতি যছক্তং তং কৈমুতিকন্যায়েশাপপাদয়তি যশ্মিনিতি । ন্যস্তা নিকিপ্রা মতির্থেন অচাতেকচিতাইতি যাবং। স প্রমাদাদিকুতৈর্ট্যেন্রকং ন যাতি তল্মির্ঘণংশ্লেষা-সম্ভবাৎ। যস্য চিম্বনে ধ্যানে ক্রিয়মাণে স্বর্গপ্রাপ্তিরপি বিল্প রা। যদ্মিনিবেশিত আলা মনশ্চ সমাধিনা যেন তদ্য ব্ৰহ্মলোকোপ্যতিব্ৰচ্ছঃ। তন্মাদ্যথা কথঞ্জিদ্পি যশ্চেত্ৰশি স্থিতঃ অভএব নিৰ্দ্ম লধিয়াং। यদ্বা। অকারপ্রশ্লেষং বিনা মলিনমতীনামপি মুক্তিমপি দদ।তি। যদৈবং স্থৈক্তিত-কারিণাং স্তিমাত্রেণাইচ্যুতনিষ্ঠানামীদৃশং ফলগৌরবং তদা তলামকীর্ত্তনেন পরেষামপ্যঘং ক্ষপয়তাং স্বৰ্ণীয়াঘনাশঃ কিঞ্চিত্ৰমিতাৰ্থঃ। অঘইতি প্ৰথমান্তপাঠে পাপোপি জনঃ বিলয়ং মোকং। অন্যৎ সমানং। এবঞ্চ সন্তি মুক্তিপ্রদত্তেইয়ং শ্লোকোদ্র বিঃ!। ১৪২ ॥ নারায়ণইতি নরশ্চেতি নাম। यहा। (হ নরঃ ভোজনাঃ নাম স্বরূপোনারায়ণঃ। যর।। নারায়ণনাম। নর ইতার্থঃ ॥ ১৪০॥ তথাত্বমেব ৰাঞ্জয়তি ভক্তা। বা প্রোক্তং ভক্তিৰজ্জিতৈজঁনৈবাহভক্তা। প্রোক্ত মিতি ।। ১৪৪ ।। হৃতং হৃতমিতাস্য মধ্যদেশে লৌকিকী ভাষা ইরি হরীতি । জনন্য জঠরস্য মার্গোইপি লুপ্তোযেষাং তে মুক্তাইতার্থঃ। মদ পটলিপিং ন বিশন্তি মদধিকারং ন গচ্ছতী-

ন মন পটিলিপিৎ বিশ্বি নের্ন্ত : 1158৫।। পালে বৈশাখনাছাজ্যে দেবশ্রেপি।
খ্যানান্তে। জ্ঞীনারদান্তে। হত্যামুতং পানসহসুমূগ্রৎ গুরুজনাকোটিনিষেবণধা।
স্বেয়ান্যনেকানি করিপ্রিয়েণ গোবিন্দনামু নিজ্জানি সদ্যা।১৪৬।। জনিচ্ছ্য়াপি দহতি স্প্টোইড্জবহাযথা। তথা দছতি গোবিন্দনাম ব্যালাদপীরিতং ১৪৪। তবৈব জ্ঞীয়নব্রাক্ষণসন্থাদে। কীন্তনান্তের ক্ষণা বিষ্ণোরমিততেজকঃ। দুরিভানি বিলীয়ক্ষে জনাংশীর দিনোদ্যে। নান্যৎ পশ্যানি জন্তুনাং বিলান ছরিক্তিনং । সর্ক্ষপাপপ্রশান্তাং পার্যদিন্তিং বিলোভনা১৪৮।। ষঠক্ষে অযা মিলোপাখ্যানে। অরং হি ক্তনির্বোশ্যলাকটোইছানিশি । যালাছার বিবশোনাম স্ব্যালনং হরেঃ ।। ১৪১।। স্বেন্দ্রাম্পানিক্রপ্রালাল গুরুজকার বিবশোনাম স্ব্যালনং হরেঃ ।। ১৪১।। সেনঃ সুরাপোনিক্রপ্রালহা গুরুতপেগঃ। জ্রীরাজপিতৃগোহতা যে চ পাতিকিনোহ-পারে। সংক্রেন্সপ্রাদ্বিত্র ক্ষাদিভিত্তথা বিশ্বগাহতাবরানু ব্রতাদিভিঃ। যথা হরেলামপদিক্রপান্ত্রি হনুভনশ্যেকগণেপালন্তকং ।। ১৫১।। সাক্ষেত্র প্রিন্ধান্ত্রি বিদ্বান্য বিত্র বিদ্বান্য ব

ए। ४३।। १३८।। वाकानि विश्वयुर्व होयां। भीनि ।। १८७। वाका श्रवाञ्चानानिष्ट्नां म প্যক্ত॰।।১৪৭।। স্ক্রপাপপ্রশ্মন্ত্রপং প্রায়েশ্চিত্রমন্য ন পশ্যামি । অন্যায় স্বাসন্পাপক্ত-প্রধানকে: ॥ ১৪৮ । অয়ম্বামিলঃ ক্রুটোনির্বেশঃ প্রায়ন্চিত্তং যেন । যৎ যক্ষাদ্বিশোংপি হরেনাম ব্যাজহার উচ্চরিত্যান্। ন কেবলং প্রায়শ্তিক্তমাত্রং হরেনাম অপিত স্বস্তায়**নং** মোক্ষণাৰনমপি যদ্ধ প্রমন্সলায়তন্মপি ॥১৪৯॥ নতু কাম্কুতানাং বহুনাং মহাপাতকানাং সহস্প আবর্দ্তিতানাং দ্বাদশাকাদিকোটিভিরপ্যনির্কন্ত্যানাং কণ্যদিকেমের প্রায়শ্চিত্তং স্যা-ন্তব্যহঃ শ্রীবিষ্ণুপার্যদাঃ স্থেন ইতিদ্বাভাাুং।ইনিস্তু শ্রেষ্ঠং প্র:রশ্চিত্তমিদমের তত্র হেতঃ।যতোনা মব্যাহরণাৎ নামোচ্চাবকপুরুববিষয়া মদীয়োঙ্য়ং এয়া দর্বতোরক্ষণীয়ে নিতরামন্ত্রাহা ইতি বিক্ষোর্যতিভ্রতি॥১৫০॥ শ্রেষ্ঠত্বমেবোপপাদয়ন্তি নেতি ব্রহ্মবাদিভিরুদ্রাক্তিরুদ্রৈ ব্রতাদিভির্নি ষ্ক্তিস্থা ন শুদ্ধাতি উদাহ্বতৈ রুচ্চারিতৈর্যথা নামপ্রেনঃ। অত্তচ নমামীত্যাদি ক্রিয়াযোগোপি নাপেফিতইতি দশিতং। কিঞ্চ ভরামপদোজারণং উত্তমশ্রোকপ্তণানাং উপলম্ভকং জ্ঞাপকং ভবতি নই কুচ্চান্দ্রায়ণাদিবৎ পাপনিবৃত্তিমাত্রেশেপকীণমিত্যর্থঃ ॥ ১৫১ ॥ সম্বয়ং পুত্রনামাত্র-হীৎ নত্ত ভগবলাম ততাভঃ শাংকভাং পুতাদৌ সঙ্কেতিতং। পরিহাদ্যং পরিহাদেন কুতং। স্থোভং গীতালাপপুরণাদ্যর্থে ক্তং। হেলনং কিংবিষ্ণুনেতি সাবজ্ঞমপি বা বৈকুণ্ঠনামোচ্চারণং ।। ১৫২।। নর নারং সঙ্কপেপূর্বকং বৈকুঠনামাগ্রহীৎ কিন্তু পুত্রশ্বেহপরবশঃ সন্ভত্রান্তঃ পতিত ইতি। অবশেনাপি যোহরিরিত্যাহ স্থাতনা নাইতি। পুমানিত্যনেন নাত্র বর্ণাশ্রমাদিনিয়ম-ইত্যক্তং। অবশত্বমেৰাছঃ। পতিতঃ প্ৰাসাদাদিভাঃ স্থালিতোমার্গে ভগ্নোভগ্নগাতঃ সংদক্ষঃ সর্পা-দিভি:। তপ্তোজ্রাদিনা আহতোদগু।দিনা।। ১৫৩॥ নহু তথাপি পাপপ্রায়শ্চিত্রিদমিতি

দেখোন্থানলঃ ।। ১৫৪।। তত্তিব ঋষীণামুক্তী। ব্ৰহ্মা পিতৃহা নোগোনাতৃল।
চার্ম্যবান্। শাদঃপ্রশকোবাপি শুক্ষেরেন্য্য কীর্ত্নাং ।। ১৫৫ ।। লগু
ভাগবতে ।। বর্তনানন্ত হংপাপে অছ্ ১২ হড়বিষ্যতি । তং সক্ষাই নিদ্ধি হত্যাশ্র লোবিদ্যানলকীর্ত্নাং ।। ১৫৬ ।। সদা দোহপরোয়ন্ত সজনানাং মহীতলে। জান্যতে পাবনোধন্যোহরেন্মান্কীর্ত্নাং ।। ১৫৭ ।। কৌ আঁ! বসন্ধিয়ানি কোটিস্থ পাবনানি মহীতলে। ন তানি তত্তলাং যান্তি রক্ষনামানুকীর্ত্না। ১৫৮।। বৃহদ্বিশ্বন্ধ্রাণে নাম্মান্ত্র হাবতী শক্তিং পাপনির্ত্রণে হরেঃ। ভাবংকর্তৃং ন শক্ষেত্র পাতকং পাতকা জনঃ।। ১৫৯ ।। ইতিহাসোন্তমে। শ্বাদোপি নহি শক্ষোতি কর্তুং পাপানি যান্তঃ। ভাবন্তি যাবতী শক্তি বিকোন্যান্ত্রভক্ষে ।। ১৮০ ।। বিশেষ্টা কলো। ফাল্যে । ভাবনি কর্মান্তং লোকে বাগ্লং মানস্যোগ্রান কলে লাভাবি কর্মান্তং লোকে বাগ্লং মানস্যোগ্রান ভাবনি কর্মান্তং সাপোন্তরে । শ্বামানি ভাবন বার্ত্রে সাপোন্তার নং ।। ১৮০ ।। বিফ্ পর্যোন্তরে । শ্বামানিং ভাবন বার্ত্র সাসো্যান্ত ভাবনি বার্ত্র কলের ঘ্রাম্য নাম স্ক্রিন্ধ হয়েও।। ১৮০ । নাম্বাহ্নান্ত ভাবনি বার্ত্রান্য শাতিঃ কলের ঘ্রাহ্না সামান্ত্রিনং হয়েও।। ১৮০ ।। বিশ্বন্ধান্তির নাম্বাহান্ত্র নামানির ভাবনি বার্ত্র সাসো্যান্ত ভাবনি বার্ত্রান্য শাতিঃ কলের ঘ্রাহান্য নাম স্ক্রিনিং হয়েও।। ১৮০ । নাম্বাহান্ত

জ্বারানোচ।রিভমিতিচেরতাভঃ যবা ক্রেমানানেদমপারং ন জানাতি কথা তবা স্থাণা থ্যায ন্তর'কঃ অজ্ঞান:দিতি অসা জ্রীবিক্ষাক্তানাদকানাকা। বালকেনাজ্ঞানাদিপি প্রাক্ষিত্র।ইহিব্রা কাহরাশি দইতি ভদ্ধ।। ১৫৬।। অলগান্ মন্যোগি য়ঃ পাপকর্মায়ক্তঃ যক্ত ছেতো পাপে পাদঃ পক্ৰেণা গাপি॥ ২৫৫॥। গোৰিকস্য অন্তৰ্থ বই কীন্তনং ॥ ১৫৬॥। অধুনা নিজানেভিডে:-ভগ্রদক্ষেয়াভেটেগকনাশোমহানপ্রবেগপি নাম্মাহাল্যতে(২প্রতি) হাহ সংদ্তি। নাচ্যুচ ২ জুনিরন্তরং কীর্ন্তনাথ। ১ন্যঃ পাবনঃ প্রমশুদ্ধইত্যর্গঃ। যদ্ধান কেবলং স্বয়নেক ততঃ প্রিদেং-ভবেদিতি কিন্তু পরাম্পি পাবয়তি। প্রেমলফণভগবদ্ধক্তিযোগ্যক ভবতি ইতি। ব্লাপ ন মেপের্ধেত্তেতিটো শতাং নিকা নামুঃ প্রমম্প্রাধং বিতল্ভ ইত্যাদিনা নিকাপি নামাপ্রাধ উজঃ কিয়ুত সদ;ছে।ছ্পরতেতি। অতঃ প্রমহাপ্রধোদক্ষ্মহান্রক্পাত্এৰ না:মাহলি স্ক্র্ড-কলে হৃপরাধাৎপততাধ ইত্যাদিভি ভিতিত্য তথা পি তটিব নামাপরাধ্যুক্তানাং নামানোৰ হর-ন্তায় মিতাভাতে নমিপ্রাণাং ন ফোপি দোধো ঘটতে প্রত্যুত ভতিতিবিশেষএবোদেতীতি অতঃ সম্পেরে।জং জারতে পর্মোধনাইতি ॥ ১৫৭॥ অত এর পরমপাবনত্বং কৌর্মবচনেন লিখতি ক্ষরটোত ।৷ ২৫৮ ।৷ এতদেবোপপাদয়তি নামোহদ্যতি ছ।ভাং। পাতকী সক্ষদা পাতক্ষুজে ২পি।। ১৫৯ 🖫 স্থাদঃ নিতাকুক্কুরভকণশীলঃ। পরমপাপ জাতিরপি। অস্তুভদ্য অমঞ্লদ্য তলুল-मा চ পাপদা কয়ে॥১৬০॥ এবং দামান্তঃ দক্ষকালে অশেষপাপোলুলনং লিখিন। ইনানীং বিশেষতঃ কলিকালে ছ্লরবিবিধপাপবগ্রসাক্লানাসগতীনাং লোকানাং প্রভাব বিশেষপ্রকটন এমনামলীর্ভনেটনবাণেব্যাপোমূলনং ভবতীতি লিখতি তলাস্থীত্যাদিলা ৮১৬ 🕦 ম্থা বছ্লেঃ শ্মায় জল্ফের অলং সম্পূত্র ভ্রমশত শ্নায় ভারেরে দিয় এবালং। তথা কলেষ্দ্রে। ঘঃ ত्या मारिया नाममधी उनरमवानः। करणी नाममछाईनरेगाद आवानगर। मान्द्रित् आर्थ मास्रि ৰূপমেৰ ॥ ১৬২ ॥ ৰিভাগ মহাগোপরতোপি ছবিভৌঘালুও ১ ন্ মতাও নিশ্চিতং ঘোনরঃ স্ং-

হরেঃ কীর্ত্তনতঃ প্রয়াতি সংসারপারং দুরিভৌছমুক্তঃ । নরঃ স সভ্যৎ কলিদোবজন্ম পাপৎ নিহন্ত্যাশু কিমত্র চিত্রৎ । ১৬৩ ।। ক্রন্ধাণ্ড পুরাণে । পরাকচন্দুায়ণভ গু-क्रिष्ड्न (पश्चिक्षिर्विवीह वामृक्। कर्ला मक्त्राधवकीर्छानन लाविन्ननामा खवर्णाह যাদৃক্।। ১৬৪ ।। কীর্ত্তনকর্জুকুলসংজ্ঞাদিপাবনত্বং।। ভত্তৈব । মহাপাতকশুক্তোপি কীর্ত্রয়নিশৎ হরিৎ। শুদ্ধান্তঃকরণোড়্ত্রা জায়তে পান্জিপাবনঃ ।। ১৬৫ ।। লযু-ভাগবতে। গোবিন্দেতি মুদা যুক্তঃ কীর্ত্যেদ্বস্তনন্ত্রীঃ। পাবনেন চ ধন্যেন তে-নেয়ৎ পৃথিবী ধৃতা।। ১৬৬ ।। ইরিভক্তিসুধোদয়ে। নচৈবমেকৎ বক্তারং জিলা রক্ষতি বৈক্ষ্মী। আন্তাৰ্যভগৰংখ্যাতিই জগৎ ক্রংমাই পুনাতি হি।। ১৬৭।। দশ্যক্ষার । যাম গৃত্বনু নিখিল'ন্ শ্রোতুনাতানমের চা সন্তঃ পুনাতি কিং ভূয় সস্য স্পৃতিঃ প্রাহিতে। অত্যবেজিং প্রহ্লাদেন নার্দিংছে। তেসভঃ স্ক-জু গানাও নিজেগাধিকবান্ধবঃ। যে নৃসিৎহ ভংলাম গায়কুটেচমুদি,হিতাঃ 11 সর্ব-व्याधिना निष्यः । वृष्याप्रमीस्य छम रछाय । एतु । यहू छानन्त्रशासिक मास्माकाहन ভিলেত ঃ নশাভি সকলা জোলাঃ সভাৎ সভাৎ বদাম হং ৷ প্রশাসনুসংখিতারাং মালং প্রতি ব্যালোটার নাম্বাধিজং দুঃধং ক্রেং নানেটার্থৈরপি। হরিনা-काराविक श्रीहा नाविक अरिकार मार्गाइका। उष्टेम् । क्वान्ति। व्यावकारावावरवादगर ভারধান মত্যতলাখ। ভানিব বিলয়ৎ যাতি ভল্লন্তং ন্মাম্যহং। বল্লিপুটালে । মত ব্যালিস্থাত লাল জবাধেপেপ্নীড়িভঃ। নারায়ণেতি সংকীর্ভ্য নির ভিত্তোভবেল इत्या महित्या प्राण्यान स्था म् द्वितृशूतार्थ। म् ताकारशाममस्**नः म** लेलाक्यमा-भार १२।। ७५८ मका द्रिकानाः स्टानी मीनू की छनः। जन्म देववर्षः । मार्गाणकान-भार अञ्चार प्रवासमय । नरापुश्यक्ष इंदर दक्षिनायानुदी छन् । राष्ट्रस्य । भवार्त्यार त्वा - प्रवानमण्ड अञ्चल्तुं जादराबागमर हि शूरवारे । अविमा विखर विश्व-

সা । পারা প্রাতি । করিলে ব্যাত্রল যথ্য তৎপাপংস রাশুনি ছনীত্যন্ত কিং চিত্রমাশ্চর্যাং অসন্তানি বিবাহ ন স্যালিত্যন্ত । ১৯০॥ দেছিলাং পাষ্ত্র গুলিং । দেছেতি পাঠে স্কুল্থে হ বন্দা কিন্তিবং তেন। তাড় গোণিকেতি নামেলু কিলো বিবিধন্ন গুলিং বিশিক্ষাম্যালিতি তি লাড় । ১৯৪॥ কবং বিবিধন্ন গুলিং কিলাম্যালিতি কিলামেলু । ১৯৪॥ কবং স্ব্রোপোল্ল নকপং নাছাল্যাং লিখিল্ল ইদানীং নাম কিন্তিনসম্বন্ধিনাম্পি স্কুলোযোলুলনে গ্রালিগে কিন্তু লিখিল্ল ইদানীং নাম কিন্তিনসম্বন্ধিনাম্পি স্কুলোযোলুলনে গ্রালিগে কিন্তু লিখিল । ১৯৫॥ অন্যাধীং তদেকমনাং বিশ্বস্থঃ সনিত্যালা । ১৯৫॥ অন্যাধীং তদেকমনাং বিশ্বস্থঃ সনিত্যালা । ১৯৫॥ তাবি বা ॥ ১৯৭॥ হেরং ভ্যাত্রাল ভাবা ॥ ১৯৮॥ হেরং ভ্যাত্রাল কিন্তু নামালিকাং নামৈর বা ॥ ১৯৭॥ হেরং ভ্যাত্রাল ভাবানি তাবি । ১৯৮॥ সংকীর্জানান কিন্তু লাকাণিকালবাৰ তাবি । পুংসাং চিক্তং প্রবিদ্যান্তি আন্তাহ তাবি গ্রেণা হিলা ক্রিলানানি প্রভাবোষ্যাত্র । পুংসাং চিক্তং প্রবিদ্যানিত্ব হিলা ক্রিলা তাবি বিশ্বস্থান বিশ্বতি । হীতি স্বানল্ভবং প্রমাণ্যতি। অর্কোগিরি পুরাদিশ্বান্তং ন নিবর্ত্রয়তীত্য

নোতঃশেবং যথা হলোহর্কোজনিবাভিবাভঃ ॥ ১৬১ ॥ বিবাধমেণিভরে । আর্ত্তা विषक्षः भिधिनाम् छोछ। धारतपूर वर्शिय वर्षमानाः । महोछी मात्रायनमञ्जाकः / বিনুক্ত দুংখাঃ সুখিনোভবন্তি।।১৭০। কীর্জনাদেবদেবস্য বিষ্ণোর মিততেজগঃ। হক্ষ-রাক্ষনবেতালভূতপ্রেতবিনায়কাঃ। ডাকিনে গাবিদ্রবস্তি কা যে তথালে চে কিংসকায়। সক্ষানর্থইবং ত্রা নামসন্ধতিবং আনৃতং। কিঞা নামসন্ধতিবং ক্রতা সুভূট্পতালি-ভাদিষু। বিয়োগং শীযুনাপ্রেভি সর্বানথৈনি সংশায়ঃ ।। ১৭১ ।। পাছে। দেবজু-ভিন্ততী। মোহানবোলসজ্বালাজ্ললোকে মুসর্বনা। মলানাত্যেধরজ্বারাং এনি-च्छोटेनव महाटङ ॥ ১१२ ॥ किलविधाशशांतिष्ठः । क्रांत्म । किलिवालक्रमभीग তীক্ষৎ শুস্য মা ভয়ং। গোবিন্দনামদাবেন দক্ষোখাস্তি ভদ্মভাং। বৃৎলাই দায়ে। কলিখমপ্রসঙ্গে। হরিমানপরা যে চ ঘোরে কলিমুগ নরাং। ভএব ক্লভক্তরাশ্চ ন কলিব্বাধতে হি ভান্। হরে কেশব গে।বিদ্দ বীসুদেব জগলায় । ইতীরয়দ্ধি যে নিভাং ন হি ভান্ বাধতে কলিঃ। বিষয়ুধর্মেভিরে। যেইছনিশং জগদাত-ব্যাসুদেবস্য কীর্ত্তনং। কুকভি ভান্নরবাগুন কলিক্রাধতে নরান্। ১৭৩।। নার কু:দ্ধারকত্বং নারসিৎহে। যথা যথা হরেনমি কার্ত্রয়ভি মা নারকা: । তথা তथा रातो डिक्टमूबर दानिवर रयुः !। ১९८ ।। इंटिइन नाइ स्मा नत्रक शहानी. নানাং নরাণাৎ পাপকর্মণাৎ। মুক্তিঃ সংজায়তে তফারামসগৌর্তনাদ্ধরেঃ।। ১৭৫।। প্রারস্কবিনাশিরং। ষষ্ঠক্ষারে। নাভঃ পরং কর্মনিবন্ধ ক্রন্তন্থ মুনুক্ষভাৎ তীর্মপদা-

প্রিভোষাৎ দৃষ্টান্তান্তরমাহ অভিবাতোইভ্রনিবেভি ॥ ১৬৯ ॥ । আন্তা বিষভক্ষণাদিনা ব্যাকুলাং । বিষয়া দারিক্রাদিনা ছঃথিতাঃ। শিথিলা ভগ্নাঞ্চাঃ। ভীতাঃ শত্রুপদিভাঃ। ২৭০॥ সার্কেরনট্প-বিবিয়োগং শীঘুমাপোতি॥ ১৭১।। সর্বদা মোহোইজ্ঞানাং গৃহাদিবিষয়কঃ মমতা বা সঞ্বানলঃ जमा উल्लमग्रा निजाः वर्षमानया जानया जनव्य त्नात्कव मत्या गमा जनवत्वानत्मा चाल्यान খরঃ বর্ষায়েখাঃ তস্তারাং প্রবিষ্টঃ সন্ নৈব দহতে। তেন মোহানলেন ন দক্ষোভবতি মোহ-ক্ষতং ছঃধং কিমপি নাস্ত্তবভীতার্থঃ পাঠান্তরে ন। নরঃ অর্ধঃ সূত্র ॥১৭২॥ পূর্বাং কলৌ বিশে-যতঃ পাপেশা লনং লিখিতং ইদানীং কলেঃ পাপকার্য্কারণাদ্যখিলপরিকরসা বিনাশিত্বং লিখতি কলিকালেত্যাদিনা। মাভয়ং ভয়ং নাস্তি। ছে নরাং। ছাইনিশং নিতাং তেন অহর্জানি-শাষেতার্থঃ । ১৭৩।। এবং পাপাদ্রক্ষকত্ত্বং লিখিত্বা ইদানীং পাপফলভোগ।দ্পি বর্ত্তমানাক্রকাং লিখতি যথেতি দ্বান্ত্যাং। মারকাঃ নরকবর্ত্তিনোজনাঃ। দিবং শ্রীবিফুলোকমিতার্থঃ। এতদাখ্যা-য়িকা চ ততৈৰ প্ৰশিক্ষা বথাহি ধৰ্মরাজতোনামমাহাত্ম মাকর্ণ্য শ্রীনারদেন গভ্যোপদিউং ভগবলামকীর্ত্তনং কুর্বাস্থোনরকভোগ।র্তাঃ সদ্যঃ অথিনোভূত্ব। দর্বে শ্রীবৈকুঠলোকং যযুরিতি। ॥ ১৭৪॥ তস্মান্তরকান্সুক্তিং ॥ ১৭৫।। এবং ছম্পুরেক্সনিবারকস্বমের দর্মিতং তদেবাভিবাজ্য লিখতি নাতঃ পরমিত্যাদিনা ভাগতে নর ইত্যক্তেন । কর্মনিবন্ধনগ্য পাপমূলগ্য ক্লন্তুনং ছেদক-মতঃপরং নান্তি। কমাৎ পরং ভীর্ধপদস্য ভগবতো হত্মকীর্ত্তনাৎ। তত্র হেন্তঃ। যথ যতো হত্মকীর্ত্ত-নাৰ । অন্যথা প্ৰায়শ্চিতাত হৈর অভ্যোভ্যাং কলিলং মলিনমের তিওতি যৎ তল্পনঃ। বৃদ্যপি কর্ম

লুকীর্ত্রাই। স মহ পুনঃ কর্মানু সক্ততে সনোর গন্ত হোছা, ব কলিলং ভভোমাথা। ১৭৬।। দাদশেট। মন্নামধেরং মির্মাণ ভাতরঃ প্তন্ খলন্ বা বিবশোগৃত্ন পুমান্। বিশুক্ত কর্মার্গিউন্ড নাজভিং প্রাথোতি মক্ষ্যান্ত কংলোজনাঃ। উক্ত্যা কর্মার্গিবেজি চ । অবশ্যভোগ্যভাপতেঃ প্রার্থের পর্যাপ্রার্থিত লাগিত। ১৭৭।। অভ এব বৃহ্নার সিংছো গোবিশেতি জপন্ জন্তঃ প্রভাতঃ নিয়তে শিরু । সর্ব্যাপবিনিমুক্তিঃ সুরবদ্ধানতে নরঃ। ১৭৮।। সর্বাপরাধ্তঞ্জনত্বং।

নিবন্ধক্ষয়ননিত্যশেষপ্রারক্ষকর্মজ্জেননমেবে ক্তিং।তথাপ্যথিলপ্রারক্ষয়ে দেহপাত্রপঞ্জা ভগর ভ্জনাসন্তবাদ্যুপারৰাক্ষয় এবাভিপ্রেতঃ। অতএব নামশ্রুভিভাষ্যেলি থিতং। প্রারন্ধপাপনিবর্ত্তন ক্র্ম কদাচিত্রপানকেচ্ছাবশাদিতি জন্যথাত্র প্রস্তৃতাযামিলাদিতি,র্বেরোধাপস্তেঃ। অথবা বে'গ'দিবিলাপনাদিনা নারকুলিরপর্যান্তে । ছম্পারক্রনিবারকত্বং লিখিত্বা ইদানীং সর্ব্বপ্রারক্ ক্ষপাং লিখতি নাডইভ্যাদিনা। অর্থঃ পূর্ববেৎ। ডতশ্চাশেষপ্রার্কক্ষয়েশ দেহপাতাপত্তৌ সভ্যা-गिल नाममकी खन्छ जातरका निवाध नशांतिन।। यन कानी स्मत कत्रवस्थ नार्थः काल्यान। सन् খবোৎপভা কিয়া প্ৰদেহনেৰ দলোজাতভাৰভ্ৰেনাচিতগুণবিশেষৰভাষা নৰীনমিৰাদৌ-ন্ত্রাপেভূছেং। যথা জ্রীপ্রবেণ পরমপদারোহণ সময়ে নিজপূর্ব্বদেহামর পার্যদোচিত দেহগুণ্যুক্ত-ভরা ভিন্নমিয় প্রাপ্তঃ। ভক্ত বিভ্রান্নপং হিরণুয়মিত্যাদির । জীস্বামিপাদৈর্ব্যক্তং ব্যাখ্যাতমেব ! এবমেৰ স্থারৰৎ ভাষতে নরইত্যাদিবচন স্থানংগছেত। যাচ বহিঃ স্থাদুংখদলকেপ্রারক্ষে কী-ণেপি পশ্চান্তম্য কলাচিং ক্যাচিং কিঞ্ছিং দেহাদৌ বাহ্যস্থাং ছঃখঞ্চ দৃশ্যতে ভক্ত লোকে ভক্তিমাছাল্লা সক্ষোপনার্থং জ্রীভগবতা ভক্তেন বা ভেনৈবাল্লাচ্ছাদনার্থং শক্ত্যা প্রদর্শ্যতইতি জেরং। এবং সর্বামনবদ্যং।। ১৭৬॥ তত্রচ্ যৎকরেশল ুবং কর্মাতদেব প্রারশ্বনুচাতে। তচ্চ বিবিধং অর্ত্ত্রমানদেহে।পতভাগ্যমেকং। অন্যচ্চ শরীরান্তরোপ:ভাগ্যং। যথা ভরত্ত্য মূগশরীবকারণং ভক্ত প্রীভাগবতে শ্রীবাদরায়ণেনৈর সিদ্ধান্তিত মন্তি মূগদারকাভাগেন স্বারকার্কণাণা যোগারস্ত্রণতো বিজ্ঞংপিত ইত্যাদিভিঃ। তত্র নাতঃ প্রমিতি পূর্বাংশাকেন বর্ত্তমানশরীরভোগ্য প্রারক্ষনাশনং লিখিত্বা ইদানীং শরীরান্তরেহবশ্যং ভৌগ্যস্যাপি প্রশ্রক্ষ্য ক্ষপণং লিখতি। যদ্বা দ্বাভ্যানেব লোকাভ্যানশেষপ্রারকবিনাশিস্মের দর্শয়তি যয়মেতি । বিবশেহিপি গৃণন্ উচ্চারয়ন্ সন্। বিমুক্তাঃ কর্মারপা অর্গলাঃ অবশাভোগ্যন্ত্রেন হর্বারা অপি প্রতিবন্ধা যদ্য দঃ। উত্তমাং এটবকুঠ প্রাপ্তিলক্ষণাং গতিং ফলং। তংম যক্ষ্যন্তি নামসঙ্গীর্ত্তনাদিনা ন সেবিধাস্ত ইতি কলিদোষউক্তঃ ॥ ১৭৭॥ জন্তঃ সৎকর্মাদ্যভাবেন কীটাদি স্চুশোহতিনীচোহপীতার্থঃ। অন্ত্রহং নিয়তে ক্রিয়ং সন্ সর্বাপেভ্যোইশেষদৃশারক্তে।বিশেষেণনিমুক্তিশ সন্নরোপি স্রবস্থাসতে। ত্মিনেব দেহে ইন্দাদিবং। यदा छ শোভনং পদং রাতি দদাতি ইতি অরোজগবৎপার্যদন্তবন্ধিরাজতে। অত্র পাপশব্দেন স্বর্গাদিকলকং পুণামপি সংগৃহাতে ক্ষয়িফুকলম্বাদিনা ভস্যাপি পাপেধেব প্ৰ্যবেশানাৎ। অথবাত্ৰ স্লোকে ছুশুারক্ষাত্ৰবিনাশিস্বমেবোক্তং। ভক্ত ছব্ৰদ্দেববদিভাব। ॥ ১৭৮ ।। এবং বিহিতাকরণনিবিদ্ধাচরণজাতঃখিলপাপোন্সুলনরপমাহাদ্যাং লিখিডং তচ্চ পাপং কৰ্জিভগৰণাভায়ণাদপি বিনশ্যভ্যেব। ষ্চ ঐভগব্ডি তন্ত্ৰামু চাপরাধ্ৰপং প্রমমহা-

विकृषां भारत । श्रीकशव पूर्वि । सम नामानि लाकिश्मिन् अक्षशे यस कीर्द्धाः । ভদ্যাপরাধকোটীত ক্ষমাম্যের ন সংশ্রঃ॥১৭১॥ কর্মাংপূর্তিকারিত্বং। অউম-ক্ষে শীভগৰন্তং প্রতি শীশুকোকো । মন্ত্রন্তন্ত্র হশ্চিদ্র দেশকালাইবস্ততঃ। भक्ष । करतां कि निष्कृतः नाममकोर्जनस्य ।। ১৮०।। कार्ल् । यमा मृजा ह নামোক্ত্যা তপোষ্ত্রক্রিয়াদিষু। নূনং সম্পূর্তামেতি সদ্যোবদে ভল্চ্যভং। সর্বা-বেদাধিকত্বং। বিষ্ণুধন্মে শ্রীপ্রহলাদোক্তৌ। করেদোহি যজুর্বেদঃ সামবেদোহপাথ-ব্বনঃ। অধীতাত্তেন বৈনোক্তং হাররিত্যক্ষরধ্য়ৎ।। ১৮১।। ক্ষান্দে শ্রীপার্কিচ্যুক্তৌ। মাঋ্চোমাহজু স্থাত মাসাম পঠ কিঞ্চন। গোবিন্দেতি হরেন্ম গেরং গায়স্থ নি-ত্যশঃ ॥ ১৮২।। পালেচ শ্রীরামান্টোত্তর শতনামন্তোত্তে। বিষ্ণেরেকৈকনা-মাপি দক্রেদাধিকং মতং। তাঢ়ুক্লানসহসেণ রামনামসমং লাভং ।। ১৮৩॥ শব্দতীর্থাধিকত্বং। ক্ষান্দে। কুরুজেতেণ কিন্তুস্য কিং ক.শ্যা, পুকরেণ ব'। আজা-গ্রেবনতে যস্য হরিরিভাক্রম্বরং । বামনে। তীর্থকোটিন্চী, ভি তিবিকাটি-শতানি চ। তানি সকাণ্যবাপ্যেতি বিফোর্নামানুকীর্ত্তনাং । বিশ্বা মত্রসংহতারাং। विक्कार्गात वर्षानि वर्षानि । कार्षे १८० नाणि खनानि नामर्ग्छन-তোহরেঃ ।। ১৮৪ ।। লঘুভাগবতে । কিন্তাত বেদাগমশাত্রবিভারের টির্বরনেকৈ রশি কিং প্রয়োজনং। यन्। আনোবাঞ্চি মুক্তিক রেণং গে।বিন্দ গোবিন্দ ইতি স্ফুটং রটা। ১৮৫॥ সর্বসংকর্মাবিকরং। নেটিকাটিকানং গ্রহণে খগস্য প্রচালগ্রহণ **एक दः अवागः । रङ्यायुर्ट रा**तः पूर्वमानः शाविक्यकी एर्डन भणः भणः १००। । ১৮७।। বৌধায়নসংখিতায়াং । ইউ।পূরানি কমনি সুবভূনি ক্তান্যাপ। ভনতে ভূনি তা-

পাতকং তদিপ নাম কীর্ত্তনাং ক্রিডেইতি মাহাল্যাবিশেন্ত লিখতি নমেতি। অবশ্যভোগ্যায়াপি নামাপরাধ্যা ক্রমানাং প্রেলিখিত এব সিদ্ধান্দ্যেউবাং । ২৭৯ ।। ইথাং স্বলোঘাত্মননকণং মাহাল্যং লিখিল্লা ইনানাং অথিলগুনাধান্তক্যাদিকপং নিখতি মল্লাইইত্যাদিনা যাবং সমাপ্তি। মল্লভঃ ব্রাদিল্রংশেন । তল্লভঃ ব্যুৎক্রমানিনা দেশতঃ কালভণ্ট। অর্ছভঃ পাত্রভঃ অশোচাদিনা । বস্তুভণ্ট দক্ষিণাদিনা বাজ্জিং নানং তং সর্বাং তব নাম দক্ষীর্ত্তনমেব নিশ্ছিদ্রং করোতি রিক্তং পূর্ম্বতি অধিকক্ষপ্ত জনম্বাতার্থানা ১৮০॥ হরিরত্যক্ষরভারেটিজ্যাব সর্বাবদাধান্তন স্বিদ্ধান্তন সিদ্ধান্তন সিদ্ধান্তন সিদ্ধান্তন স্বাধান্ত আধিকত্য আধিকতং জলম্ব। ১৮২॥ গ্রেমং গানঘোগ্যং আনে ঝাগাদিপাঠনিবেধেন চ সর্বাবেদাধিকত্বং সিদ্ধান্তন । ১৮২॥ একৈক্ষণি নাম সর্বাবেদভ্যোহধিকং ॥১৮০॥ বছধানাত্যার্থাং বছবিধানি জলস্থ্যাদিভেদেন নদীনদ্যান্ত কূপাদিভেদেন চ ৷ যথ্যা-স্ক্রাত্রার্থান নাম কীর্ত্তন্যান্ত কোটাংশানামেকেনাপ্যংশেন জন্যানি ভবন্তীভার্থাং ॥৮৪॥ গোবিদ্দইতীভাত্রাবিধক্ষিতত্তাদ্বন্তিঃ ৷ যদা হে গোবিদ্দিত গোবিন্দইভিচ ॥ ১৮৫॥ প্রক্রাস্থা গ্রহণে মেক্তল্য স্বর্বপদানক্ষ । গোবিন্দস্য কীর্ত্তিঃ কীর্ত্তনং তন্যাঃ শতাংশানান্ত কলা ক্রপ্তেন্ন স্বাদিভ্যর্থাং । এবং কুত্তিৎ পদ্যে কলবিশেষপ্রদত্ত্বন কুত্রচিচ্চ কল ক্রপত্তান স্বর্কিক্র ডেউবাং। এবং কুত্তিৎ পদ্যে কলবিশেষপ্রদত্ত্বন কুত্রচিচ্চ কল ক্রপত্তান স্বর্গিল্যাহ্বিক্রণ ডেউবাং॥ ১৮৬॥ সাংখ্যেন আত্মানান্ত বিবেকেন। খোগ্যেরউন্নেপ্যের স্বর্গির্যাং দিউবাং॥ ১৮৬॥ সাংখ্যেন আত্মানান্ত বিবেকেন। খোগ্যেরউন্ন

নাব হরের্নানত ু মুক্তিদং। গারুড়ে। শ্রীশৌনকায়রীষসম্বাদে। বাজপেরসহস্থাৎ
নিতাং ফলমভীপ্সিনা প্রাতর্কথায় ভূপাল কুরু গোবিন্দ কীর্ত্রনং। কিং করিব্যতি সাখ্যান কিং যোগৈর্নরনায়ক। মুক্তিমিচ্চাস রাজেন্দু কুরু গোবিন্দ কীর্ত্রনং। ১৮৭।।
কৃতীয়ক্ককে শ্রীকপিলদেবং প্রতি দেবস্ত্রুক্তো। অহো বত শ্বপটোংতো গরীয়ান্
ইন্ডিলাগ্রে বর্ত্রত নাম ভভাং। তেপুস্তপত্তে জুহুবুং সমুরার্য্যাক্রলানুচুর্নাম গৃত্তবি
যেতে। ১৮৮॥ সর্বার্থপ্রদত্তং কান্দে ব্রহ্মনারদসম্বাদে। চাহ্মাস্মাহান্ত্রে।
ক্রতংক্র্রাহরণ রিপুনিগ্রহণ পরং। অধ্যাত্মসূলমেতির বিষ্ণের্মানুকীর্ত্রনং
না ১৮৯॥ বিষ্ণুর্মানিভরে। হাদি রুত্বা তথা কামমভীক্তং দিরপুর্বাং। একং নাম
ক্রপেল্বস্থ শতং কামানবাগ্রাহ। তত্ত্বব শ্রীক্রমানৃত্রোত্রে। সর্বমঙ্গলমঞ্জামান্
রুষ্যং ব্যাধিনাশনং। ভুক্তিমুক্তিপ্রদং দিবাং বাসুদেবস্য কহিনং ॥ ১৯০॥
নির্বায়ন্ত্রে। পরিহাপোপ্রানাটি, র্বিষ্ণোগৃত্রিতি নাম যে। ক্রতার্থাশেচ
কিরের স্কৃতং কৃত্রং। তৈরাপ্তং জননং প্রাপ্যাৎ যে কালে কীর্যুন্তি মাৎ।। ১৯২॥
বিশেষভঃকলো। সক্ষুদ্রারয়ন্ত্যেতদ্বর্গ ভং চারতাত্মনাং। কলৌ যুগে হরের্নাম তে
কত্যের্গ, ন সংশ্রাং।। ১৯৩।। প্রকাদশক্ষেরে চ। কলিং স্তাম্রন্থায়াত্রভাত

চ্চাদিভিঃ তেঘানপি কর্মান্তর্গতন্ত্বাদত্রাস্য পদাস্য লিখনং । এবমগ্রেস্থান্তাঃ। ১৮৭॥ অহো বতেন্ত্যান্তর্গা যাস্য জিহ্বাগ্রে গুডাঃ তব ভদর্শপি বা নাম বর্ত্তে শ্রদ্ধাদিরাহিত্যেনাপি যথা কথিছিদপি অসম্যক্তর্গাপি নামাভাসমিপি য উচ্চারয়ভীত্যর্থঃ। সংশ্বপচাহিপি জাত্যা কর্মণা চ শ্বমাংসভক্ষণাদনিব্যক্তক্তর্থা পাপোপি। অতঃ অস্মাদেব হেতোর্গরীয়ান্। যথ যস্মাথ বর্ত্ততে অতইতি বা কুতইত্যতথাত্ব। তএব তপন্তেপঃ সম্যক্ কৃতবন্তঃ জ্তুরঃ হোমংকৃতবন্তঃ সন্ত্রু তীর্থের স্নাতাঃ। আর্যাঃ তএব সদাচারাঃ। ত্রন্ধ বেদমন্ট্রু সাঙ্গং সক্ষাব্যারধীতবন্তঃ। স্থমাম তপ আদিবং সর্বাং সংকর্মান্তভূতিং অতস্ত্রে পুণাতমাইত্যর্থঃ। যথা জ্বান্তরের তৈত্তপোহোমাদিকং সর্বাং কৃতমন্ত্রীতি সন্নামকীর্ত্তন মহাভাগাদিবগম্যত ইত্যর্থঃ। তপআদীনাং সর্বেষ্ণাং নামকীর্ত্তন মহাভাগাদিবগম্যত ইত্যর্থঃ। তপআদীনাং সর্বেষ্ণাং নামকিংল আত্মানমধিকৃত্য বর্ত্তমানমান্তভূমধ্যাত্মং তস্য মূলং তথপ্রাপ্তিকারণমিত্যর্থঃ॥ ১৮৯॥ দিবাং লোকাতীতং বৈকুওলোকপ্রাপণাথ সচিদানন্দ্রপত্মায় ॥ ১৯০॥ পরিশ্বাসান্ত্র উপ-হাসন্তিরক্ষারং আদ্যাশক্ষাও সক্ষেত্রভাদি॥ ১৯১॥ কালে ক্ষানাদিসময়ে। যথা অক্ষারপ্রশ্রেশবাদ্ধ অকারে প্রেষ্ণাত্মান্তর্থাঃ॥১৯০॥ সভাজরন্তি থে তে কৃত্যর্থাঃ সিক্ষার্থাগিইত্যর্থাঃ।১৯৩॥ সভাজরন্তি প্রেষ্ঠং মনান্ত্রে গুণজ্ঞাং কলেক্ত্রণং জানন্ত্রি যে তে কৃত্যর্থাঃ সিক্ষার্ব্যার্থা ইত্যর্থাঃ।১৯৩॥ সভাজরন্ত্রি প্রেষ্ঠাই সাম্বর্ধার্থাই ত্যর্থাং স্বর্ধান্ত্রি প্রত্তর্গাহ সাম্বর্জানিরং গ্রন্থাহিনঃ।কেছিংসা শ্রন্থসমাহ যতেতি। তহুক্ত

নারভাগিনঃ যাত্র সংক্রতিনেনৈর সক্ষেত্রাপোপি লভ্যতে । ১৯৪ ।। ক্ষান্দে ওতৈর ভ্যাতিরেভিনং লোকে তপঃ জ্রাইরির্নার্ভনং। কলো মুগে বিশেষেণ বিষ্ণু নিটিন্ত গলাচরেই ।। ১৯৫ ।। মর্ক্রমান্তিরমন্ত্রই । কালে। দান্ত্রভতপন্তার্থনাত্রাদানাথ ইনি হিতাই। মাক্তরোদেরমহতাং সক্ষণাপত্রাই শুভাই। রাজসূযাশ্বনেধানাং জ্ঞান-স্যাধ্যাশ্বরস্থাই হিনা মর্ক্রাই শুপিতাই হেঘু নামসু ।। ১৯৬ ।। বাজো-প্যক্রেরনাম উপ্রাণামপি দুইনইই। সক্ষেত্রই পাপরাদানাং ইথের তমসাং রিইটা ১৯৭! অভএর ব্রহ্মান্তে । সক্ষাইদিভিয়ুক্তরা দেরদেরম্য চিন্তিনই হিনাভাই। আত্রের ব্রহার্থির যোজাহেই ।। ১৯৮ ।। জগদানক্ষরই । জ্ঞাতাই দ্র্যাত্রিই লাম তই সক্ষাহেই যাজাহেই ।। ১৯৮ ।। জগদানক্ষরই । জ্ঞাতাই দ্র্যাত্রিই হামিত ইনি ক্ষান্দ্রীয় লাম্যান্ত চিন্তাই ক্ষান্দি হামিতাই। ক্ষান্দির নারায়ণজগন্ধার বাশ্দের জনাদ্রিন। ইতীর্যন্তি যে নিতাই তেই বন্ধার বিদ্যান্ত । জ্ঞান্ত্রনাত্র হামিতাই নিতাই ক্রের্নায় তেলোনিতাই নদোনমহাল হল। জ্ঞান্ত্রেই তিলার যেইনু হল্পরে তিলা প্রান্তর ক্ষান্দের ক্রিইনি তিলা তেলোপীই নদোনমহাল প্রান্তির হামের প্রান্তর বিহু সহস্থা তেলোপীই নদোনমহাল আগতেরক্যতিত্র । পালে বৃহৎসহস্থা

মের ধ্যারন্ ক্তে বছন্ মজৈরিভ্যাদিন।॥১৯৪।। উত্তমং তপং স্বধর্মাচর ৭ং চিট্ভকাঞ্ছ। বং lipacii দেবানাং মহতাঞ সাধুনাও। শুভাশ্চ মজলাবহাঃ রাজভুয়াদীনাঞ্যাঃ শক্তয়ঃ তাঃ কর্মার ॥ ১৯৬ ॥ এবমশেষদোবভংখহরণে সকলগুণভোৱং প্রাপণে চ প্রমস্মর্থনা ভগবার।মুখ মহপোত্রসঞ্যক্ষপণমপাতান্তস্করমেবেতাহি বতিইতি । অতঃ অসাভ্জান্ধেতোঃ । নাম্মে-লাতেঃইপি বথাকথঞ্জিদীষৎসম্বন্ধোপি। উগ্রাণাং ভয়ানকানাং সর্বেষাং স্বাসনানাং পাপরাশী-নামপি ভঃসহঃ দূর্বদেবাত্যন্তক্ষয়ক্ষতিয়হাঃ। রবির্থা তর্মসাং ডঃসহস্তদ্বং। এতচ্চামুযক্ষিকং ফল-যুক্ত ।। স্বার্থশক্তিযুক্তস্যেত্যনেন নাম নামিনোরভেদালাম্মে। পি সর্বার্থশক্তি ্কত। স্চিতৈৰ : অভিফুচিতং নিজাভীষ্টং যন্নাম। এতচ্চ ভক্তিবিশেষেণাচিরাৎ সম্যক্ সর্বার্থ সিক্ষাপেক্ষর্যেক্তং॥ ১৯৮॥ স্থানে ইতাব্যরং যুক্তমিতার্থে। হে ক্ষীকেশ যতএবমন্তুত প্রভাবে। ভত্রংসলশ্চত্রং অতন্তর প্রকীর্ত্ত্যা মাহাত্ম্যাদি সংকীর্ত্তনেন বা ন কেবলমহমের প্রহৃষ্যানি কিন্তু জগৎ সৰ্ব্বমপি প্ৰকৰ্ষেণ ক্ষ্যতি হৰ্ষং প্ৰাপ্নোতি এতৎস্থানে যুক্তনিত্যৰ্থঃ। তথা জগৎ অকু রক্ষাতে চ অনুরাগং চো**লৈভ**িতি যথা তথা রক্ষাং**দি ভীতানি সন্তি দিশঃ প্রতি দ্র**াস্তি বেগেন পলারস্তইতিবং ৷ তথা সর্বে যোগতপোমন্ত্রাদিশিদ্ধানাং সত্না নমদ্যন্তি প্রণমন্ত্রীতি বং এডজ-স্থানে যুক্তমেৰ ন চিত্ৰমিত্যৰ্থঃ।। ১৯৯।। বদন্ অন্যবাৰ্ত্যং কুৰ্বন্। বদন্তীত্যাদি বহুত্বমাৰ্থং। কিয়া স্বপাদিকিয়াণাং বছরেন বছরাস্তাবাৎ। নমোনমইত্যন্তেন বন্দ্যতা দিদ্ধৈব ॥২০০॥ ন বিদ্যুতে অন্যা নামব্যভিরিক্তা কাপি গভিরাত্রয়োহতান্তপাপ জাত্যাদিনা কর্মাদাবনধি-কারাৎ নেয়াভেইপি অপিশক্ষ্য নক্তিৰ স্থক্ষ ৷ ভোগিনঃ বিষয়ভোগরভাঃ প্রমন্ঞ্রনং

নাদকখারত্তে। অনন্যগতরাম্ত্যা ভোগিনে পি পরস্তুশাঃ। জানবৈরাগ্যরহিতা প্রশ্নতি জিন্তাঃ। সর্প্রথমি জ্বিতা বিফোর্নামনাত্রিক ভংপকঃ। সুখেন আং গভিং যান্তি ন ভাং সর্প্রেইপি ধান্মিকাঃ। ১০১৪ সদা সর্বসেব্জং। বিষ্ণুধর্মে ক্রেবস্পাশানে । ন দেশনির নন্ত্রিনান্ন ন কালনির মন্ত্র্যা। নোড্নিটাদৌ নিষ্দেশে উত্তি জান্ত্রিনাল্লি লুক্ক । ২০২ ।। ক্লান্দে বৈশাখনালাজ্যে। বিষ্ণুপর্মোভরে চ । চল্লাল্লু স্বানানি সদা সর্বান কার্ত্রির নাশাচং কর্ত্তিনে ভস্য স্পবিত্র-ক্রেব্রুর্নালি সদা সর্বান কর্তিরেও। নাশাচং কর্তিনে ভস্য স্পবিত্র-ক্রেব্রুর্নালি ক্রান্তিনালি সাম স্বান্তিনালি লাল্লু স্বান্ত্রে। নালাবিত্রানালি ক্রান্তিনালি লাল্লু হালে। ন দেশকালাবন্তালি ভারে । বিশ্বনির্বির প্রতি নারদ্বাক্রং। ন দেশনির নারাক্রান্ত্র হিলে। কিলে হালে নির্বাহ্রির বিদ্যান নালি ক্রির্বাহিনি। ক্রির্বাহিনি প্রান্তির স্ক্রির্বানালি ক্রির্বাহিনি। ক্রির্বাহিনি ন কালালি লাল্লুরির স্থানি ক্রির্বাহিনি প্রান্তিনালি নির্বাহিনি কালোলি লাল্লির স্বান্তির প্রতিবিদ্যানালামিত্রতানক্রেলি লাল্লির প্রিরিনাল ন্পনিলিতিং হালেনালুকরির ন । ২০৭৪ সুক্রির্বানালির হালের । নারারণাচ্যুতানন্ত বাসুদেবালি হালির । নারারণাচ্যুতানন্ত বাসুদেবালির হালির । নাত্রারণ । নির্বাহিন বালির । নারারণাচ্যুতানন্ত বাসুদেবালির হালির । নাত্রারণ হালির বাসুদেবালির । নাত্রারণ হালির বাতির হালির । নারারণাচ্যুতানন্ত বাসুদেবালির । নাত্রারণ নার্বাহিনির । কিং করিন

ভ্ৰাণ্যতীতি প্ৰভুপাং। নামনাত্ৰমেৰৈকং জ্পেতি যথাকথ জিল্ছজায়াপি বালাতে গোচাৰয় বি ওলা তে। ২০১॥ দেলুদ্ধক। তশান্ উভাগ্রভাবে অনির্বাচনীয়মাছাল্ল্যে বা নামি ॥২০২॥ ত্যা চজানুধসা কীর্ত্তনে অশৌচং নাস্তি শুটিতেব কীর্ত্তনং কার্যাং বৈধাশুচিনেতি ব্যৱস্থা ন বিদ্যতে ইতার্থঃ। তদোতি নামনামিনোরতেদাভিপ্রায়েণ। যতঃ স্থামাত্মকঃ চক্রায়ুধ্বৰ প্রিত্র করে। ইয়াতাতি তথা। যথাচমনাদিবাতিরেকেণাশুক্ষসা এইয়নাদিকলাচমনাদিনৈক পারিঃ যথাত ততাভাষেন কথা শ্রীমনুনালিজলং স্প্টিবামিতি শক্ষা ন সন্তবেৎ অননাগতি র ১ তথাত্রাপতিত্যথা । এদা থতা স্<mark>দামকীর্ত্ত</mark>কগড়ধ এব স্মামপি পবিত্রং করোতি কিয়ক্তব্যং জন্যাশোচ্মিতার্থ্য ॥ ২০০॥ দেশাদীনাং শ্রন্তাদিকং নমে কর্ত্ত্রপেক্ষতে তত্ত্ব অবস্থাঃ বাল্যালরে: জাগরাদর: প্রমাদোখাদাদয়োবা । আদিশকেন স্বধর্মাচরণাদি । এতস্য ভগবতোনাম। যহা প্রকরণবশান্তগধত এব নাম। এতৎ স্থপ্রসিদ্ধানিকাচনীয়মাহাত্মা-দিত, থঃ। কাষিতং বাঞ্জিং কামং পুরু বার্থবিলেবং। যদ্ধ। কাষ্যতইতি ক.মং কলং। যদ্ধা কামি ত্রশ্য কামযুক্তন্য কামমভীষ্টং দদাতীতি তথা ॥২০৪॥ পরং কেবলং রাম রামেতি কীর্ত্তনা-দের ॥ ২০৫॥ পৃথিবীতলে সর্বতেতার্থঃ ॥ ২০৬॥ এবং দদা সেবাজং লিখিত্বা সর্বাদেবাত্তং িংগ্তি এতদিতি। ইচ্ছতাং কামিনা<sup>্</sup> ভত্তৎফলদাধনমেতদেব । নিবিদ্যমানানাং মুমুক্ষূণাং মোক্ষ্যাধনমেত্রদেব। ভত্র তত্র চান কাচিদ্পি বিশ্বাদি শক্ষেত্যাই নাকুতশ্চিদ্পি ভয়ং যক্ষিন্ তং। যোগিনাও জ্ঞানিনাং বা কলক্ষৈতদেব। নিৰ্ণীতং নাত্ৰ প্ৰমাণং বক্তব্যমিত্যৰ্থঃ। এবং সাধ-কানাং নিদ্ধানাঞ্চ দেবাড়ং দশিতং ॥ ২ ৭ ॥ হেভূমি মল্লয়তাং সাযুক্তা মুক্তিং। সাংখ্যেন

ষাতি সাৎখ্যান কিং যোগৈর্মবারক। মুক্তিমিচ্ছান রাজেন্দু কুরু গোবিন্দকীতনং । ২০৮। ক্রান্দে । সরুদুচ্চারিতং যেন হরিবিত্যক্ষরদ্বরং। বদ্ধঃ পরিকরন্তেন মোক্ষায় গমনং প্রতি। বেক্সায় গ্রান্থ ক্রিবিছাল লভিচেদিপতির্যথা । ২০০। পাছে দেবতুতি স্তুতে। । সরুদুচ্চারয়েন্দ্রন্থ নারায়ণমতন্তিতঃ । শুদ্ধান্তংকরণোভূত্বা নির্বাণমধিণ গরাপরতিরারকঃ। সংক্রোন্দ্রিত । বেক্সায়ান্য কির্বাণমধিণ গরাপরতিরারকঃ। সংক্রোন্দ্রিত হরেন্দ্রান্ত্রকাথ । মুচ্যতে নাত্র সক্রোন্দ্রায়নসংহিতায়াং। সক্রধন্মবিছিত্তঃ সর্বপাপরত্তরথা । মুচ্যতে নাত্র সক্রেচাবিফোর্নামানুকীর্ত্রনাথ । বৃত্ত নাত্র সক্রেচাবিফার্নামানুকীর্ত্রনাথ । বৃত্ত নাত্র সক্রেচাবিফার্নামানুকীর্ত্রনাথ । মুচ্যতে নাত্র সক্রেচাবিফার্নামানুকীর্ত্রনাথ । ক্রেচাবিভাগে। প্রাণ্প্রাণ্থ ক্রিকাণ্ড করি রিভাক্ষর্ত্রহ । ১৯৪। নারদীয়ে। ব্যাক্ষর্ত্র । মুখ্রেমানকপরিত্রাণ্থ হরি রিভাক্ষর্ত্রহ । ১৯৪। নারদীয়ে। নার্যং নার্যং নার্যং নার্যং মুরারের্যন্থচৈতকোয়পীযুবপুর্তং । যেগায়ন্তি তাত্তলভ্জান্য সহর্যং জীবন্মুক্তা সংশ্রোনান্তি তত্র । ২১৫।। প্রথমক্রেমে আপন্নঃ সংস্তিং ঘোরাং যন্নাম বিবশোগ্ণন্ । ততঃ সদ্যোবিমুচ্যত ব্রিভেতিস্বয়ং ভরং । ২১৬।। ভ্রতিয়ে ক্রক্সন্তেত। যস্যাব্রারগ্রগক্ষ গ্রন্থনানি নামানি হেৎস্বিগমে বিবশা, গৃণ্ড

জাত্মানাত্মবিবেকেন। যোগৈ রউক্টাঙ্গাদিভিঃ ॥ ২০৮॥ মোক্ষায় গমনং প্রতি আশুমোক প্রাপ্তরে, পরিকরোবদ্ধঃ সাধনং সমাগছ্ঠিতিনিত্যর্থঃ ॥২০৯॥ দোষাঃ কামক্রোধাদয়স্তেনা ক্ষাৎ। চেদিপতিঃ শিশুপালঃ ॥২১০॥ অতস্তিঃ নামোচ্যারণাদ্বেনলসঃ সন্। ততক শুদ্ধান্তঃ করণোভূত্বা॥ ২১১॥ শুদ্ধঃ পরদাররতত্বাদিপাপাৎ পবিতঃ সন্॥ ২১২॥ বিশেযেণ শুদ্ধাঃ স্বাসনস্ক্রপাপতঃ প্রবিতাঃ। শুদ্ধা নিজ্পাপাস্ত মোক্ষং প্রাঞ্বন্তি। পাপিনাং বিলয়েন মোক: স্কৃতিনাঞ্দদ্রবৈতি জেয়ং। यहा বিশুদ্ধাঃ দন্তঃ কিং প্রাপুরস্থীত্যপেকায়।মাহ শুদ্ধাইতি অফুবাদমাত্রং॥২১৩॥ প্রাণস্য প্ররাণে প্রথেয়ং পথিজক্ষ্যসং প্রলোকে সহায় মিত্যর্থঃ। সংসাররূপদ্য ব্যাধেতেহজং নাশকং মোক্ষপ্রদ্মিত্যর্থঃ। ইহ লোকে চ ভুঃখশোকা-ভा। পরিতাণ यन्माखर । यहा তয়োঃ পরিতাণ ৰূপদেব। यहा ভগবদপ্রাপ্ত্যা যৌ ছংখাশোকৌ তাভাগে পরিত্রাণং যক্ষাদিতি ঐতৈকুঠলোকপ্রাপকত্বং। যদা কির্মন্থলেকেন ঐহিভামুগ্রিকা-শেষত্বংখশোকপরিত্রাণমেবেত্যুপসংহার। বিষ্ণুধর্মে চ। প্রাণকান্তারপাথেয়মিতি প্রীপ্রস্থাদে নোক্তং । অর্থঃ সূত্রর।। ২১৪॥ কিম্বক্তব্যং দেহাতে মুক্তিং দদাতীতি দেহে স্ত্যপি সদ্যোদদা-তীতি লিখজি নব্যমিত্যাদিনা ৷ নব্যং নব্যং প্রতিক্ষণনূতনমিত্যর্থ: অনেন মাধুরীবিশেষো-দর্শিতঃ। তমেবার বোয়ানাং গানয়োগ্যানার গাথাদীনাং যদ্বা গেরং পরমল্লাঘ্যং বহ পীযুষং মধুররসবিশেষস্তেন পুক্তং। এব স্তৃতং মুরারের্যৎ নামধেয়ং এতদের গায়স্তি তে জীবমা ক্রা-এব। যদ্যপীতি পাঠে যদ্যপি গেনপীযূষপুট্টং পরমমাদকমিত্যর্থঃ ইতি জীবন্মুক্ততা বিবোধি চিত্তকোভহেত্তভোক্তা তথাপি জীবনা ক্রা এব তেনৈব স্বতঃ সংসারবিন্মরণাৎ।।২১৫॥ সংস্তিৎ জাপন্নঃ প্রাপ্তঃ বিবশোপি ততঃ সংস্তে। গৃণনের সদ্যোবিমুচ্যতইতি জীবমুক্ততোক্তা । অত্র হেজঃবং বাতো নামঃ ভরমপি বয়ং বিভেতি॥২১৬। অবতারদীনাং বিভ্রনমনুকরণমবলয়নং বাজি তি। তেহনেক জন্ম শানলং সহকৈব হিন্তা সংখা ন্তাপাব হুন্ত হ তালাং প্রপাদে ।। হৈন্ত শান্ত বিহাৰ তাই লম্বনির্ভি কার প্রমাধ সমক্তি কিং ভগৰতো গুনক কানামাং। বিজ্ঞা পুর্যণান্ হদ্যানিত লিগে নারারণেতি নিগুনাণ ইরার মুক্তিম ।। ২১৮ ।। জিবৈক্ত নানির প্রমানিক প্রমানিক কানামানিক লিক কিন্তা আছিল । তেতি ক্তিনাক প্রাপ্ত কানামানিক প্রক্তিম । তেতি লিবেন । ত্রজং নিউ ক্রমানিক প্রমানিক প্রমানিক কানামানিক লিবছন । ক্রমানিক প্রমানিক কানামানিক লিবছন । ক্রমানিক প্রমানিক আজি জ্বানিক বিশ্বানিক। করা লিবছন হাতি ভ্রমানিক বিশ্বানিক। করা লিবছন হাতি ক্রমানিক। আজি ক্রমানিক। করা লিগে নারারণিক। করা লিগে নারারণিক লিগি নারারণিক। করা লিগি নারারণিক লিগি নারারণিক। করা লিগি নারারণিক বিশ্বানিক। করা লিগি নারারণিক বিশ্বানিক। করা লিগে নারারণিক। তার নার্বিক লিগি নারারণিক। তার নারারণিক বিশ্বানিক। করা লিগে নারারণিক। তার নার্বিক ক্রমানিক। করা লিগি বিশ্বানিক। করা নারারণিক। বিশ্বানিক। তার নার্বিক বিশ্বানিক। করা নারারণিক। বিশ্বানিক। তার নার্বিক বিশ্বানিক। করা নারারণিক। বিশ্বানিক। করা নারারণিক। বিশ্বানিক। তার নার্বিক বিশ্বানিক। করা নারারণিক বিশ্বানিক। নারারণিক বিশ্বানিক বিশ্বানিক বিশ্বানিক। নারারণিক বিশ্বানিক বিশ্বানিক। নারারণিক বিশ্বানিক বিশ্বানিক। নারারণিক বিশ্বানিক বিশ্বানিক বিশ্বানিক। নারারণিক বিশ্বানিক বিশ্বানিক বিশ্বানিক। নারারণিক বিশ্বানিক বিশ্বানিক বিশ্বানিক। নারারণিক বিশ্বানিক বিশ্বা

ে ত্রজারতারবিজ্যনানি দৈবকী নক্তন ইত্যাদীনি পুরবিজ্যনানি সর্বজো ভক্তবৎসলইতাং 📲 🖟 কণ্টবিজ্যনানি গোবর্জনোজরণঃ কংসনিস্দ্রন ইত্যাদীনি । অহাবগমেহপিবিবশা অপি বর্মার ইচ্চাব্যান্তি কেবলং শমলং পাপং অপাবৃতং নিরস্তাবরবং ঋতং ত্রদ্ধ সহলা সন্মত্রর প্রাপু-ব্দি কীৰ সুক্তা ভৰতীতাৰ্বঃ ॥ ২২৭ ॥ ভগৰতোগুণ:নাং কৰ্মণাং নামাঞ্ছ বদ্ধা গুণক্ষা 🕖 জনাং িতিত্রাণাং নামাং বহুনাং সমাক্ কীর্ত্তনং গ্রংসাং অঘনিইরণায় পাপক্ষসাত্রায় ভব-ভাতি যথ এতাৰতা উত্তেন অলং প্রয়োজনং নান্তি কুতঃ অ্যানিলো মহাপাত্কাপি নারা-মাণাতাৰ বিজ্বপা নাম্বতারসম্বন্ধিগুণকর্মমাধুরীবিশিটং নামবিশেষং সমাক্কীর্ভন্তিয়া। তত্রচ েনা বিক্রুশা নত হরিং। অঘকান্ অগুচিরপি । অক্ত প্রায়শ্চিত্তোপীতি বা। শুয়মাণঃ অত্তত্ত হিজেপি। মুক্তিমবাপ নত্ত্বনির্থমাত্র তদানীম্বামিল্যা দেহ্দ্য বর্ত্ত্মানত্ত্বন জীবন্মুক্ত-ৈত্র দিল্লা। অভোনামাভাদেনাপি ম্থাক্থঞিজ্ঞাতেন মুক্তিরপি স্টাৎ কিমুত পাপক্ষয়ইতিভাবঃ াঃ ১৮৷হেলয়াপি কৃত্ব। স্বৰূপতাং এধাত্বং প্ৰাঞ্চোত মুক্তোভৰতীত্যৰ্থন। ভক্তিযুক্তস্ত সন্ নাম সঙ্কী-তিনং রাত্রা পর্কং পরমেশ্বরং শ্রীবৈকুঠনাথং যথা উংক্রম্টপদং শ্রীবৈকুঠনোকং ব্রজেৎ॥ ২১৯॥ মরণেহিশি ভবব স্থৈঃ হুষ্পারিছর সংসারছ: থৈঃ বিশেখেণ মুক্তঃ সন্॥ ২২০॥ পুনরা হৃত্তি ছল ভং ভাশুনরাত্ত্তিকমিতার্থঃ।। ২২১।। সোবিন্দরে। ইবকুঠলোকে গমনার্থং পত্রং বাছনং সহায় িত্যের্থ:। স্থক্তশ্য একং পত্রং স্থানং॥২২২॥ এবমুক্তপ্রকারেণেতি তত্তাপি জীভাগবতবদ্যা-ানলোপাগ্যানশ্যোপদংহারে প্রোক্তত্বাৎ। সংগ্রহণী কামক্ষোভেণ সংগৃহীতা বেশ্যা তস্যাং যো নারারণশংজ্ঞঃ পুত্রঃ ত্স্যাভিধানং আহ্বানং তদ্যাজেন অন্তকালেইপি তৎ জ্নির্বাচনীয়ং॥২২৩॥ দুলার্য্য কলুবাশ্রয়ঃ। অ্যামিলোপ্যগাদাম কিছুত শ্রম্মা পৃণ্নু ।।২২৪।। শঠক্ষেল্য মিরমাণেইরর্মাম পৃণ্নু পুরোপচারিতং। অ্যামিলোপ্যগাদাম কিম্পুনঃ
শ্রমা গৃণনু ।। ২২৫।। বামনে। যে কার্ড্যন্তি ব্রদং ব্রপ্যানাতং শঙ্মাক্ষ্যক্রশর্চাপগদাসিহত্তং । পালাল্যাবদনপক্ষর্যট্পদাক্ষং নূনং প্র্যান্তি সদনং নপুযাতিনত্তে।। আঙ্কিরসপুরাণে । বাসুদেবেতি মনুজ উল্লার্য ভবভীতিতঃ । তগুক্তঃ
পাদ্মাপোতি বিশ্বোরের ন সংশয়ঃ ।। ২২৬॥ নিন্দপুরাণে। সর্বত্ত সর্কালেখু
যেইপি কুর্বন্তি পাতকং। নামস্থার্ডনং কন্ত্রা যান্তি বিশ্বোং পরং পদং ।। ২২৭॥
বিশেবতঃ কলো। ঘাদশক্ষ্যে। কলেদোরনিধে রাজন্তি হোকোমলন্ গুণঃ।
কার্ত্নাদের ক্ষণ্য মুক্তবন্ধা পর্ম ব্রজেং। গারুড়ে। অন্তর্মীয়ং প্রতি শুক্তকেন ।
হানীক্রিপ পরং জানম জানাদ্যং পরমং পদং। তদাদ্রেগ রাজেন্তু কুরু গোবিন্দ
কার্ত্রনং ।। ২২৮ ।। জীভগ্রংপ্রান্তিং বারাতে। বাসুদ্বেস্য সংকর্ত্যি সূরাপোর্যাধিতোপিবা । মুক্তোজারেত নিয়তং মহাবিষ্ণুং প্রসাদিতি ।। ২২৯।।
বৃহনার্বিয়ে। নামসন্ধার্তনং বিশ্বোগ্রয়ে। নামসম্কর্তিনং বিশ্বোং ক্রুট্প্র্যালিভাদিষু। করোতি সত্তং বিপ্রান্তরা প্রান্তিনং বিশ্বোগ্রয়ে। নামসম্কর্তিনং বিশ্বোং ক্রুট্প্রয়ালিভাদিষু। হার করোতি মহাভাগ তস্য ন্তর্যতি কেশবং।। ২০০।।

অথ প্রীভগবদ্দীকারিত্বং। মহাভারতে তগবদ্ধাক্যং। ঋণ্মেতৎ প্রবৃদ্ধং মে ক্ষমালাপাসগতি। মন্দোবিন্দেভি চুকোশ রুঞা সাং দুরস্বাসিনং। আদিপুরাণে। প্রীক্ষাক্র্নসন্থাদে। গাঁড়া ও সম নাসানি নর্ডয়েগ্রম সরিধৌ। ইদং ক্রবামি তে সভ্যং ক্রীভোহং ভেন চার্ক্রন। গাঁড়া চ সম নামানি ক্রদন্তি যম সরিধৌ। তেমা-লহং পরিক্রীতোনান্যক্রীতোজনাদ্দির।।২৩১।। এবং শ্রুভাচ সম নামানীতাাদি।।

কলুবাণাং সর্ব্বাপাশনামাশ্রেরাপি।। ২২০।। ধাম হরেঃ।। ২২৫।। তৎ নাম ধামবিশেষণং বা ।২২৬।
সর্বাদা সর্বাবস্থারাং। সর্বত্তেতি বা পাঠঃ।পরং বৈকুঠলোকং।২২৭। পরং উৎকৃষ্টং ভগবন্ত ক্রিমাহাআন্নিবিষয়কং জ্ঞানং ।। ২২৮ ।। ব্যাধিতোরোগী।। ২২৯॥ ক্ষুক্ ড়াদিঘপি যঃ করে তি। যদ্যপি
ক্ষুক্ ড়াদিভিবৈকলো সতি নামসকীর্জনমভ্যস্তাভ্যাসবলাদেব জায়তে অভস্তত্ত তপ্য প্রাশন্তাং
সদা নামপরত্বং চোক্তং স্যাৎ তথাপি বিশেশ্বমাত্রবিক্ষরা ক্ষুক্ ড়াদিঘিত্যক্ত ইতি জ্যোং।
এবমন্ত্রাপ্যস্থং।। ২৩০।।

দূরবাসিনং দূরে বসন্তমপি। অতঃ সাক্ষাদিব সংখাধনং ন হাটতে। তথাপি হে গোবিদেতি 
দূকোশ আহ্বয়ামাস যথ এতং মন ঋণং প্রসিদ্ধং তস্যাঃ প্রমবশ্যোসীতার্থঃ প্রমার্জ।
কীর্ত্তনাথ। অতঃ ক্ল্যান্নাপদর্পতি সদা তদেব বিচার্য়ামীতার্থঃ। তেবাং তৈর্জনার্দ্নোইং
ক্রিকীবিঃ সর্ব্ধঃ সেবিতঃ অর্দ্ধাতে যাচাতে মন্ত প্রাপ্তে ভাদুশোহপাইং প্রিক্রীতঃ স্ব্ব
ভোছাবেন বৃশীক্তঃ॥২৬১॥ তেন জিতং ভগবান্ বশীক্তইতার্থঃ। মৃত্রুক্তির্ভক্তি

বিশুধর্মে প্রক্লাদেন। জিতন্তেন জিতন্তেন জিতন্তেনেতি নিশ্চিতং। জিলাগ্রে বর্ত্তি যদ্য পরিবিত্যক্ষরদ্বয়ং।।২৩২।। দ্বতঃ পরনপুরুষার্থত্বং। ক্ষাদেদ কাশী পণ্ডে পালে চ বৈশাধ্যাহাজ্যে। ইদমেব হি মাক্ষল্যমেতদেব ধনার্ক্তনং। জীবি তদ্য ফলগৈতদ্বদালাদের কীর্ত্তনং।।২৩৩।। প্রভাসখণ্ডে। নধুরমপুরুষেছলাক্ষলং মঙ্গানাং। সকলনিগমবল্লীলংফলং চিৎক্ষ্তরপং। সকদিপ পরিগীতং হেলয়া প্রদানাং। সকলনিগমবল্লীলংফলং চিৎক্ষ্তরপং। সকদিপ পরিগীতং হেলয়া প্রদানা লাভ্তবর নর্মাত্রং তারয়েৎ কঞ্চনাম।।২৩৪।। বিফুর্কস্যে বিফুর্কস্যে বিফুর্কস্যে বিফুর্কস্যে বিফুর্কস্যে বিফুর্কস্যে বিফুর্কস্যে কিন্তার্বাহ্যাদেবদ্য কির্বাহা এতদেব পরং তল্পং বাদুদেবদ্য কির্বাহা এতদেব পরং তল্পং বাদুদেবদ্য কির্বাহা বিক্রেণ্ড বিক্ষোর্ব্জায়াদেন সাধ্যতে। ওঠস্পদ্যমাত্রেণ কীর্ত্তনন্ত্রতা যেন জন্মশতৈঃ পূর্বং বাদুদেবঃ সন্চর্ত্তঃ। তন্মুথে হরি নামানি সদা তিঠিন্তি ভারত।।২৩৭।। বিশেষতঃ কলো। বিফুর্কস্যে। যদ্যভার্ত্য

বিশেষোদয়'থি। ২৩২।। সাজল্যং মঙ্গলসমূহঃ স্ক্ৰিমজ্লকৰ্মাকলয়া। ধনস্য পুৰুষাৰ্থত্তন ধনা র্জনিদ্যাপি প্রক্ষার্থতয়া তংস্করণদা নামকীর্ত্তনদ্যাপি স্বতঃ প্রমণুরুষার্থত্বং দিদ্ধমের। যদ্বা প্রেমলকাণং ধনমত্র জেয়ং।। ২৩৩।। এতং কুফ্নাম কুফ্ভেতি নাম কুফ্স্য নামেতি বা। মধ্রা দপি মধুরং। চিং চৈত্তন্যং ব্রহ্ম ত**ংস্থর**পং ইতি পর্মফলরপতোক্তা। অত্যেথাক্রথঞিৎ গ্রেং তৎকীর্ত্রনাদপ্যাস্থলিকস্থেন স্বাস্থাপি মোক্ষোভবেদেবেতাাহ স্কুদ্পীতি ৷ পরীত্যক্ষে অব্যক্তমসম্পূর্ণমুক্তারিতমপীত। হেলয়াপি বা । হে ভৃগুবর ॥ ২৩৪॥ তপশ্চিত্তকাগ্রং ধমাবিরিত্যর্থঃ । তত্ত্বং বস্তু । এবং সাধ্যানাং পরমজ্ঞানাদীনাং ভাদাত্ম্যে,ক্ত্য: নামক্রির্ভনশ্য পরমফলতা गিটেদ্ধব।। ২৩৫।। ইপাং নামকীর্ত্তনিসা পরমসাধনত্বং সাধাত্মক লিখিত্ব। ইদানীং স্বতঃ প্রমপুরুষার্থক্রপাণাং আবেণকীর্ত্তন স্মরণাদিভক্তিপ্রকারাণ্মপি মধ্যে জীমনামকীর্ত্তনস্য আৈঠাং লিখন্ তত্রাদৌ তেপের পরমশ্রেষ্ঠত্বেন এীসুক্তাফলাদিগ্রস্থকারাণাং সন্মতাং স্মরণাদিগ্র শ্রৈষ্ঠাং লিখতি অঘেতি। বিফোঃ স্মরণং অঘং সংসারদ্রংখং তন্মূলং পাপং বা ছিনন্তীতি অঘচ্ছি-ছবেতোৰ। কিন্তু বছলায়াদেননৈৰ তৎ শাধ্যতে মনশোছনিপ্ৰহত্বেন সাৰণশা ভুজাৰত্বত । কীৰ্ত্তনত্ত ওষ্ঠস্পদনমাত্রেণাঘদ্ভিৎ অতশুতন্তমাৎ স্মরণাৎ কর্ত্তিনং বরং শ্রেষ্ঠং। যদা। ততঃ স্মর-ণাৎ কীর্ত্তনং বরং সর্ব্বধা শ্রেষ্ঠমের মনঃ প্রবণবাগিক্রিয়াদিব্যাপ্যস্থবিশেষস্যাপাদনাৎ। ভক্ত জ্ञভাগবতামৃতোত্তরথতে বিবৃত্সন্তি ॥২৩৬॥ অধুনা শারণাদীনামপি পুজাঞ্জবাৎ পূ-জায়া: শৈষ্ঠ্যমভিপ্ৰেত্য তৃস্যা অপি সকাশাস্ত্ৰামদক্ষীৰ্ত্তন্ম্য শৈষ্ঠ্যং লিখতি যেনেতি । সম্চিতঃ সমাক্ পুজিতঃ।। ২৩৭ !। ক্লতে সভাযুগেইতি তদানীং বিশুদ্ধাশেষদ্ৰব্যাদিসামগ্ৰীসংসিদ্ধেঃ। তত্ত চ ক্রেন্ডলৈ বৈত্যর্থঃ। ততাপি ভক্তা। অভার্চ্চা অভিতঃ পূক্ষিত্বা। যথা অভার্চেতি পূজারা ध्य कलश्क्षारक्षां की कार्यः। **व्यवसारा ७ उन्। ध्यवन्यत् १ व क्रिश्र**कारत्व ह यथ। य**ञ्चल दे** उत्ति यथ। তালোবিন্দেতি কীর্জনাৎ অবিকলং সম্পূর্ণং সকলং প্রাঞ্চোতীতার্থঃ। তত্ত্বচ কলাবিতাত্রেদং মিগুঢ়ং তত্ত্বং স্থানেশ্বিতি এমপুরাদিস্থানবহ কালেবুচ মধ্যে মথা একার্ডিকাদয়স্ত্রহোমালা: যথাচ ডিখিরু একাদশ্যাদয়ঃ।তথা যুগেযু মধ্যে কলিযুগং জীভগবতঃ প্রিয়ং। তত্ত্রচ ষ্থা কার্ত্তিকাদিমাণের

हित् एका क्रा क्रा क्रा क्रा क्रा के कि निर्मा के कि निर्माण कि निर्माण कर्म क्रि कि निर्माण कर्म क्रि कि निर्माण क्रि क्रि क्रि कि निर्माण क्रि क्रि क्रि कि निर्माण क्रि कि निर्माण क्रि क्रि कि निर्माण क्र क्रि कि निर्माण क्रि कि निर्माण क्रि कि निर्माण क्रि कि निर्मा

এনে দশ্যতিৰু চস্বপেমপি কুতং কৰ্ম বহুলকলং ভবতি তথা ক'লা'বপি ! এবমন্যুগ'পে নান জনা **শ্রেজ্যারেন ভত্ত কর্মণাং বিশেষভো**লগাবস্তুলনদা হৈছে গ লক্তমটোতি আনেটোর ভি প্রায়োগোক্তং শ্রীবিশ্বপুরাপে শ্রীব্যাস্দেরেন । কলির্ধনাইতি। দাদশক্ষা চা শিব্যাহন-সংক ন গুণজাইল্যাদি। প্রথমক্ষেরে শ্রীভ্তেন । কুশলান্যাপ্র নিজ্যন্তি নেতরাণি রতানি ঘলিতি। একাদশক্ষেত শীকরভাজনেন। কুতাদিযু প্রকারাজন্ কলাবিচ্ন্তি সম্ভবং। কলৌ ধলু ভবি-ষাস্থি নারারণপ্রায়ণা ইত্যাদি। অতএবাশ্মিন্ নুগ্ছোঠে নিজৈস্ব্যিবিশেষ প্রকটনাম্বরপোভগ-ৰতোমুখ্যাৰতারঃ অভোহন্য কলৌ মাছাল্যবিশেষোবৃক্ত এব। বেচ তত্র পাপোপদ্যানিতা বিবিধ ধর্মাদি বিল্লাঃ জারত্তে যোভ্যোবহিদুট্টা কলেনিনাদিকং কথাতে তেও ভীমপুরাদি-পুরপালকাঃ **জ্রাক্রগণাদয়োটদত্যরাক্ষসা অপি** হথা জ্ঞারত্তে তথৈন জ্ঞোন। ইপ্রেম্ব মাছারার বিশেষোপি স্থ**সিজ্যেৎ সর্বাঞ্চানিরুদ্ধং স্যাদিতি দি**ক্ ॥২৩৮॥ কুত্রপুর্গে পর্যাশুফ্ডিভিড্রা ধ্যানন্য ত্রেতায়াঞ্চ সর্ববেদপ্রবৃত্তা যজ্ঞানাং দাপরে চ ীসুর্তিপূজাবিশেরপ্রবৃত্যাহর্তনম্য ইঞ্জ মপেক্ষা তত্ত্বৎ পৃথক্ পৃথগুক্তং এবমগ্রেপি ভেন্নং। তত্ত নর্বাং সন্তিতং কর্মো জীকেশবনাম কীর্নান্ত ভূতিমেবেতি ইংখমাঝোতীতার্থঃ। সঙ্কীর্ত্তা সমাক্ উট্টের্ক্সর্থোতি সদ্যঃ অপরানন্দ বিশেষার্থমুক্তং। তেনচ মাহান্মাবিশেষএব সম্পদ্যতে ॥ ২০৯॥ বিষ্ণুং ধ্যারভইতি বিফুদ্যান ক'ৰ্বৃজনিশ্য যংকলং স্যাদিতি কাল্ডয়শংবল্ব্যশেষসংকৰ্মাফলমভিপেতং । এবমগ্ৰেপি । এতেন জীবিষ্ণুপুরাণব্চনাদৃদ্য বিশেষোদ্রতীব্যঃ পুরাণগুছ্ত্বাৎ। পরিচর্য্যারাং পূজায়াং বর্তমান্দ্য জনস্য। হরের্জগবতঃ হরীত্যক্ষরঘয়স্য বা কীর্ত্তনমাত্রেণ তৎসর্কাণ কলো ভবতীতি ॥ ২৪০॥ ত্বিবা কান্যা অক্লক্ষং ইন্দুনীলমণিবভজ্জ্বলমিতি রুক্ষতাং হাবর্ত্তরতি। যদা ত্বিধা বিশিষ্টং রুক্সমিতি শ্রুকুঞ্বিতারস্য তত্র প্রাধান্যং দর্শরতি। অঙ্গানি হৃদয়াদীনি উপাঞ্জানি কৌস্তভাদীনি অস্ত্রাণি স্ত্ৰশ্নাদীনি পাৰ্যদাঃ স্থাদয়ঃ তৎ মহিতং। একান্তিপকে উপাঞ্চানি বেণুাদীনি অস্ত্ৰাণি यक्तामीन পার্যদাঃ জ্রাদানরঃ। ইতি গ্রেবং বিজ্ঞোং। यहेकः অর্চ্চ বিঃ। সঙ্গীর্তনং নামোদা-রণং গীতং স্তুতিন্দ নামমনী তৎপ্রধানেঃ স্থামধদঃ বিবেফিনঃ। এবমপি কলোঁ পূলাতঃ শ্রীমন্না-মনংকীত্ত নিদ্য মাহাত্মানের নিক্ষং ক্রব্যশুদ্ধ্যাদের সম্ভবাং লিখি চন্যায়েন মাহাত্ম বিশেষাচেতি দ্কি।।২৪১।। উপসংহরন্ কলিতং লিখতি সক্ষিতি ত্রিভিঃ।সহস্যদনঃ শেষঃ বিধিশ্চ জন্ম। যক। সহস্বদনঃ সম্পি বিবিঃ।। ২৪১॥ রামনামে বিশক্তর। আশক্তর। নিত্যং মম মনসং প্রীতিরান-

## निर्मातककि रिमानः।



খানে । রামানে ভিরশতনামন্তাতে । জীলিবেন । রকারাদীনি নামানি শৃণুতাদেবি জায়তে । প্রতিত্য নিদ্যানিত্য বামনামবিশক্ষয়া । ২৪৩ ।। বৈক্ষর চিন্তামণী চ । ইন্দের সর্বজগতাং নালু । বিক্ষোহ্ জাপকঃ । সত্যং সত্যং বদান্যের হরের্নাম-গতির্নাং । ২৪৪ ।। আদিপুরাণে চ । জ্রিক্ষার্জ্রুনস্থাদে । অদ্ধয়া হেলয়া নাম রটিন্ত মন জন্তবঃ । তেষাং নাম সদৃশং প্রতিত্ত ক্রমের মন । ন নামসদৃশং জানং ন নামসদৃশং ব্রতং । ন নামসদৃশং ধ্যানং ন নামসদৃশং কলং । ন নামসদৃশং প্রতং । ন নামসদৃশং প্রতং । ন নামসদৃশং প্রতং । নামের পরেমা গতিঃ । নামের পরেমা লাভির্নামের পরেমা ভিত্তিং । নামের কারংং জন্তে:নামের প্রত্রের চ । নামের পরেমারাধ্যোনামের পরেমান্তর্কা । ২৪৫ ।। কিঞ্চা নামযুক্তান্ জনান্ দৃষ্ট্য সিধ্বোভবতি যোনরং । স যাতি পরমং খানং বিক্যুলা সহ মোদতে। তলারামানি কৌভের ভক্তর দ্যমানসং। নামনুক্তঃ প্রিয়োহলাকং নামনুক্তোভবার্জ্বনেতি ।। ২৪৬ ।। অথ জ্বিভাবরামজপস্য লারণ্যাত । শ্রবণন্যাপি মাহাল্ব্যামান্তে । লিলিখ্যতে ।। ২৪৭ ।।

অথ শ্রীমনামজগনাতাত্তাং । বিষ্ণুরহন্যে। শ্রীভগবদুক্তৌ। সতাং ব্রবীমি ননুদ্ধঃ স্বর্দ্ধ বাহুর্যোমাং মুকুল নরসিংহ জনার্দ্ধনৈতি। জীবন্ জপতানুদিনং মরণে স্থাবি পাধাণকাঠ সদৃশায় দদামাভীষ্টং।। ২৪৮ ।। কাশীখণ্ডে অগ্নিবিন্দুস্থতৌ।

নেলাজারতে। সম্পূর্ণনামক রিন্ধা তুমাহাল্যং কিছক্তব্যমিতি ভাবং ॥২৪০॥ গতিং শরণং কালা ম্যাপি সেব্যলাং ॥২৪৪॥ গতিরাশ্রাং। কলং স্বর্গাদি। স্থিতিনিন্ধা। পর্মারাধ্যাজনো নামের ॥২৪৫॥ বিষ্ণুনা মরের ॥২৪৬॥ এবং নামাং কীর্ত্তনমাহাল্যং নিধিত্বা জপাদি-মাহাল্যালিখন মপি প্রতিজ্ঞানীতে অথেতি ঈ্যদ্রেদাং কীর্ত্তনেন সহ জপাদের প্রত্তালিখন মপি প্রতিজ্ঞানীতে অথিতি ঈ্যদ্রেদাং কীর্ত্তনেন বির্বিধ্যা জপ্যা মধ্যে ক্রিন্দের বিশ্বাত। ততাত্রে নেখাস্যু বাচিকেগিং শুলানিকিতেদেন ত্রিবিধ্যা জপ্যা মধ্যে ক্রিন্দের দিনের শনৈর ক্রিন্ত্রারণ ক্রেরণ ব্যক্তর ভাবি।। ২৪৭॥

খণীবেতি হা হস্ত অমুক্স। খণং ধার্রামি নহি শোধিতবান দাতি যথা নিতাম্ণদান্তর্মাম জীবনসনরে মরণে চ জপতি তথা জীবন সন্মরণে মির্মাণশ্চ সন্ যোজপতি তথৈ পাষাণ কার্জসদৃশ র পরমনীরসহৃদরায়াপি জ্ঞানাদিরাহিত্যেনাচেতনত্তল্যায়াপি বা অভীষ্টং তস্য ম্ম বা পরমপ্রিয়ং বস্তু দদামি। যদ্ধা মরণে দেহান্তে সতি দদামি ঋণী তস্য বশ্যতাং প্রাপ্তঃ সন্।ইবেতি লোকোক্তরীত্যা যিদ্ধা। সক্তমানৈককীর্ত্নেনাপি পাষাণাদিসদৃশায়াভীষ্টং দদামি যোহহং সোহং নিত্যং জীবনে মরণে চ বছবিধনাম জপেন ঋণীব ভবামি জ্বন্ত্রমান্থ। ২৪৮। নারায়ণেত্যাদি-

নারায়ণেতি নরকাণ বতারণেতি দামোদরেতি মধুছেতি চত্ততু লেতি। বিশ্বরেতি বির্জেতি অনার্দনেতি কাজীই জন্ম জপতাং কু কুতারভাতিং।। ২৪৯।। পালে বৈশাধনাহাত্মে। বন্ধান্দেরে কাজীই জন্ম জপতাং কু কুতারভাতিং।। ২৪৯।। পালে বিশাধনাহাত্মে। বন্ধান্দেরে । বাসুদেবজপাসক্তানিপ গাপক্তোজনান্। নোপদর্শন্তি বৈ বিদ্যা মন্তাল্ট দাকণাঃ।।২৫০।। বৃহত্তিমুক্ত্রবালে। কু নাক পৃষ্ঠ গমনং পুনরাবৃত্তিজকাণং। কু জপোবাসুদেবেতি মুক্তিবীজমনু ভ্রমং ।।২৫১।। জ্ঞামান্দ আরণাহাত্ম্যং। ইতিহাসোভমে। হলেপি নামন্দ্রিরাদিপুংসং ক্ষয়ং করোভাগাহিত পাপেরাশেং। প্রয়ন্ত্রভাবনি কুলারাদিপুংসং প্রকাতিতে নামি জনাদ্রনির যে আরম্ভি হরেনাম কলো মুগো। সাল্লে দেবত্তিভ্রতে।। প্রয়াণে চাপ্রয়াণে চ যন্নাম আরণান্দ্রান্দ্রানান্দ্রানান্দ্রানান্দ্রানান্দ্রানান্দ্রান্দ্রান্দ্রান্দ্রানান্দ্রা

অথ জীভগবন্নামনাহান্তাং। বৃহনারদীয়ে। জীনারদোক্তৌ। যনাম শ্রবণেনাপি মহাপাতকিনোপি যে। পাবনত্বং প্রপদ্যন্তে কথং ভোষ্যামি কুন্নধীঃ। ইতি-হাসোত্তমে। শ্রুতং সন্ধীর্ত্তিং বাপি হরেরাশ্চর্য্যকর্মণঃ। দহত্যেনাৎসি সর্বাণি প্রসঙ্গাং কিনু ভক্তিতঃ।। ২৫৫।। ষঠক্ষরে চিত্রকেত্তৌ। নহি ভগবন্নঘটিতমিদং

অপতাং জনানাং জন্ম কৃষ্টি অপিন্তন কৃত্রাপি মুক্তোভবতীত্যর্থঃ অতএবক্নতান্তাং যমাং কালাই বা ভীতিঃ কৃ অপিন্ত ন কৃত্রাপান্তীত্যর্থঃ । তত্র বিগতং রজোযশাদিতি তং সম্বোধনং হেবিরজঃ । সন্ধিরার্যঃ । রজণন্দোবাইদন্তঃ ॥২৪৯॥ বিদ্বাঃ কামাদরঃ ত্রিতাপা বা ॥২৫০॥ কৃষ্মা বিরোর ধােজতরা তগবনামজপা স্বর্গপ্রিতিজ্জ্বাং কলং ন স্যাদিত্যজ্ঞিতং । তর্হি কিন্তুস্ কলং তদাহ । মুক্তেবজিং কারণং অন্তর্জং পরমোৎক্র্টমিতি । যোগাজ্যাসাদেরপি ভক্ষান্তির কৃত্রত্বং স্টিতং ॥২৫১॥ আহিতস্য সঞ্চিত্রস্য পাপরাশোং ক্রয়ং করেগতি । প্রয়াণে মরণে সক্ষীর্তিতে সতি পাপরাশোং ক্রয়ং স্যাদিতি কিন্পুনর্বক্রব্যমিত্যর্থঃ ॥২৫২॥ প্রয়াণে মরণে অপ্রয়াণে জীবনে চ ॥২৫৩॥ বস্য নাম্মেইস্থানং চিন্তনমেব দাবামিন্তেন কৃত্রা দন্ধানি কর্মা বোর তৃণানি শীঘুসমূলস্থাক্রম্বাই যেন সং । ভন্নাম অস্য সাক্ষান্তিরক্তর ছংখমস্ভবত্তো ভবাং বুমৌ পতিত্ব্য জীবন্য হস্তাবলম্বনদানার সমুদ্ধারণায় ভবতীতি দ্বাজ্যামন্তরঃ । ব্যক্তাব্যক্ত্রত্বং একলৈর সপ্তানির্ভিত্রিল । আন্তঃ হরেরন্যঃ প্রবীণং শ্রেটোনান্তি নএব স্ক্রম্ভেইত্যর্থঃ ॥ ২৫০॥ ক্রের্নান্ত গেবোবা ॥২৫০॥ সাক্ষাহ্র ক্রিক্ত্রেনান্তি নএব স্ক্রম্ভেইত্যর্থঃ ॥ ২৫০॥

ত্বদৰ্শান্গাসবিলাখকর:। বন্ধান সক্ত ভাবগাৎ প্রশোহণি বিশুচ্যতে সাক্ষাৎ ইতি ।। ২৫৬ ।। এমিনামাঞ্চ সর্কেবাং মাহাত্মেগ্রু সমেষ্পি। কৃষ্টস্যবাৰতারে বু বিশেষ: কোপি কস্যটিৎ ।। ২৫৭ ।।

অথ বিশেষতঃ জীক্ষাবতারমাহাত্মাং । ব্লাণ্ডপুরাণে জ্বিক্ষান্টোন্তরপত্ত নামমাহাত্ম্য। সহস্নামাং পুণ্যানাং তিরাবৃত্ত্যান্ত বং কলং। একাবৃত্ত্যা জুক্ষস্য নামৈকং তথ প্রয়ন্ত্তি ।। ২৫৮ ।। ইনংকিরাটা সংক্ষা লাফ্র পান্ত পতাব্রভাক্ । ক্ষাস্য প্রাণভূতঃ সন্কৃষণ সারশ্বিমান্তবান্ ।। কিমিদং বহুনা শংসন্মানুষানন্দনির্ভরঃ । ব্রহ্মানন্দমবাপ্যান্তে কৃষ্ণসাযুক্ত্যােশ রাহােহে চ জ্রীমথুরামাহাত্ম্যে। তত্র গুলানি মামানি ভবিষ্যান্ত মন্ত্রে পুণ্যানি চ পবিত্রাণি সংসারচ্ছেদনানি চ ।। ২৬০ ।। তত্ত্বৈ বিশেষতঃ জিক্ষেতি নামমাহাত্মাং। ছারকামাহাত্ম্যে। প্রক্রাদ্বলিসয়াদে। অভাতাঃ পুক্ষাঃ সপ্ত ভবিষ্যান্ত চন্তর্দা। নরন্তারয়তে সর্বান্কলো ক্ষেতি কর্মিনাং। ক্ষান্ত্রনার স্ত্রে স্বান্কণিতি কলো নিত্যং কৃষ্ণরপী ভবেদ্ধি সঃ। ব্লান্বিবর্ত্তে। হনন্ ব্রাহ্মণ মত্যন্তং কামতোবা সুরাং পিবন্। কৃষ্ণ কৃষ্ণভঙ্কারে । ব্লাহ্মণ মত্যাহার । হন্দার্যাহে । হন্দার বাচি

শ্বংমব বিমুক্তোভবতি ইত্যান্যসাধনতোক্তা। যদা সাক্ষানিতি বর্ত্তমানতচ্ছরীরএবেত্যর্থং। এতচ্চ প্রারন্ধবিনাশিত্বে পূর্বাং লিখিতার্থমেব ।। ২৫৬ ॥ এবং সামান্যতোনামুঃ সর্বেবামপি মহোজ্যুঃ লিখিতার্থমেব ।। ২৫৬ ॥ এবং সামান্যতোনামুঃ সর্বেবামপি মহোজ্যুঃ লিখিতার ইদানীঃ বিশেষভোলিখন তত্ত্ব মাহাজ্যুস্য সাম্যেইপি কিঞ্চান্তশেষং দৃক্তান্তেন সাধ্যতি। জ্রমানিতি। জ্রমতোভগবতঃ জ্রমতাং বা অশেষশোভাসম্পত্যতিশ্বযুক্তানাং মামুাং ক্সাচিনামুঃ কোপি মাহাজ্যাবিশেবাহেতি । নমু চিন্তামণেরিব ভগবনামুাং মহিমা সর্বোপি সমত্র উচিত ইত্যাশিক্ষা দৃক্তান্তেন সাম্যেপি কঞ্চিবিশেষং দর্শয়তি কৃষ্ণলৈতি। যথা জ্রম্পিংই রবুনাথাদীনাং মহাবভারাণাং সর্বেবাং ভগবন্তরা সাম্যেপি কৃষ্ণন্ত ভগবান্ স্থামিত্যুক্ত্যা কৃষ্ণন্তার্বেপি সাক্ষন্তগবন্ত্রেন কলিছিলেবোদর্শিতঃ তছদিত্যর্থঃ। এতচ্চ জ্রীধরস্থামিপাশৈক্যান্ধ্যান্তং জ্ঞাগবন্তান্ত্র্ব্বত্ত বিশেষভোনিক্পিত্যক্ত্যেব। পূর্বাং বছবিধকানোপইতিভান্ত্রতি ভঙ্গুলামবিশেষমাহাদ্যাং লিখিতং জ্ঞাচ সর্বকলিছয়ে নামবিশেষ-মাহাল্যামিতি ভেদোন্ত্রব্যঃ। ২৫৭।।

क्षमा कृष्णविज्ञातमञ्ज्ञ मारेमकमि। ७९ कनः ॥२०৮॥ देवः श्रीकृष्णविज्ञतमञ्ज्ञ माम। वहना किः देवः श्रीकृष्णविज्ञात नाम । कृष्णम मार्णाः निजानः योगः ॥२००॥ श्रम्भिकि मार्गाः विद्यानि निजानः । व्यान् विक्रक्षणविज्ञात नाम । कृष्णम मार्गाः निजानः योगः । अविज्ञानि अव्यान् । भूगानि मक्षणविद्यानि । अविज्ञानि अव्यान् । भूगाः निष्यानि अविज्ञानि । विज्ञानि अविज्ञानि । भूगः विज्ञानि विज्ञानि । भूगः विज्ञानि विज्ञानि । । । । विज्ञानि विज्ञानि । । । । । । विज्ञानि विज्ञानि । । । । । । विज्ञानि । विज्



প্রবর্তে। ভদ্মীভবন্তি রাজেন্দু মহাপাতককোটয়ঃ ॥২৬২ ॥ নারসিংহে প্রভিগবদ্ধী। কৃষ্ণকৃষ্ণেতি কৃষ্ণেতি যোমাৎ নারতি নিতাশঃ । জলং ভিত্রা যথা পদ্ধং নরকাদুদ্ধরান্যহৎ । গারুড়ে পালে চ । সৎসারসপ্সৎদটং নইচেইকৈভেষজং। কৃষ্ণেতি বৈশ্ববং মন্ত্রং প্রাল্য মুক্তোভবেররঃ ॥২৬৩ ॥ প্রভাগপুরালে। নারদ কৃষ্ণপ্রদানে। প্রভিগবদুক্তো। নামুং মুখ্যতরং নাম কৃষ্ণাখ্যৎ মে পরন্তপ। প্রায় শিচন্ত মশোলাং পাপানাৎ মোচকং পরং ॥২৬৪ ॥ পালে। যত্র যত্র ছিতোবাপি কৃষ্ণকৃষণেতি কর্তিরেং। সর্বাপাপ্রভিদ্ধাল্যা স গচ্ছেৎ পরমাং গতিং ॥২৬৫ ॥ বিশ্বধর্মোত্তরে। প্রকৃষ্ণসহস্নামন্তোত্রে। বল্পবিলন্ত কিন্তৈকৈপায়ৈং কৃষ্ণ নাম ক্রাফিলের। প্রকৃষ্ণসহস্নামন্তোত্রে। বল্পবিলন্ত কিন্তৈকৈপায়েং কৃষ্ণ নাম ক্রাফিলের। লাগিরিক্র জ্বাত্রিরুক্তে হি মহাভ্রং ॥২৬৬॥ তত্রৈবান্ত্র। সত্যং ব্রীমিতে শন্তো গোপনীয়মিদং মম। মৃত্যুসঞ্জাবনীং নাম কৃষ্ণাখ্যমবধারয়॥২৬৭॥ ভারতবিভাগে ॥ কৃষ্ণঃ কৃষ্ণই কৃষ্ণইত্যন্তরালে জ্বপন্ জন্ত্রা বিতৎ যোজহাতি। আদাঃ শব্দঃ কম্পতে ভস্য মুক্ত্যৈ ব্রীড়ানম্বে ভিষ্ঠতোন্যাবৃণস্তো ॥২৬৮॥ অন্ত্রাপি । নামচিন্তামণিংকৃষ্ণশৈচনন্যরসবিপ্রহং । পূর্ণঃ শুনোনিত্যমণিংকৃষ্ণশৈচনন্যরসবিপ্রহং । পূর্ণঃ শুনোনিত্যমুক্তো-হ্তিরন্তারামনামিনোঃ ॥২৬৯॥ অত্রবোক্তং। তেভোগনমোহত্ব ভববারিধি

মন্তরেণ সাক্ষেত্যাদিনা কথঞ্চিদপি জিহ্বারাং স্বর্মেবোদেতীত্যর্থঃ৷ তস্য সদে৷ ভস্মীবন্তি ন কেব লমেতাবদেব কিন্তু প্রমশুভাবহং প্রমন্ত্রখাত্মকং চেত্যাহ মঙ্গলমিতি।২৬২॥ কুঞ্চেতি নামেকং বা সক্তং প্রত্যতং স্বরতি জলমেকার্ণবোদকং ভিত্তা পদ্মং ভূপদ্মং পৃথিবীম গুলং যথা উদ্ধর্গামি। যদ্ধা জলং ভিত্তা যথা পদামুদ্ধৰতি তথা নরকনিমগ্রমপ্রাদ্ধরামি । তত্র যথা প্রাস্থা জলসম্প কে: নস্যাদেবং তথ্য পুনর্বক্ষয়স্থোবৈবেতি মোক্ষহতিপ্রেতঃ প্রাব্রক্ষ্মনাশ্রু দর্শিতঃ। সংগার-এব সূপ্তেন সমাক্ দুইস্য অভএব নইচেইস্য একমদ্বিতীয়ং ভেষজং তল্লিবৰ্ত্তকমিত্যৰ্থঃ৷ বৈষ্ণব মিতি গারুড়াদিমন্ত্রতোবিশিফতে।জা॥ ২৬৩॥ পরং মোচকং প্রমমুক্তিকরমিত্যর্থঃ॥২৬৪।। প্রমাং গতিং বৈকুণ্ঠলোক্ষমিতার্থঃ ॥ ২৬৫॥ তৈইন্তঃ কর্মজ্ঞানাদিভিঃ শ্রবণাদিভক্তিপ্রকাইর-শ্চ কিং। স্বাপ্রথ সদা প্রকাশমানং ক্রিহ্বাত্রগমপি সৎ মহাভয়ং সংসারং নিরুয়ে ব্যাবর্ত্তরতি। ৰদ্বা মাছৎ অভয়ং মোক্ষমস্ত্রাপি নিরুদ্ধে ততোংপি প্রমানন্দ্রস্থিশেষময়ত্বাৎ ॥ ২৬৬॥ মৃত্যু সংজীবনীং মৃত্যুতোহপি সম্যক্ জীবয়তি বা বিদ্যা ওষধিকা তাং। মৃতসঞ্জীবনীতি পাঠো-বা॥ ২৬৭॥ অন্তকালে মরণসময়ে গপি। আদ্যঃ প্রাপ্তক্তঃ শব্দঃ কুঞ্চনাম। অন্যৌ ছৌ শব্দৌ ঋণস্থে ঝণিনৌ নস্তে তিষ্ঠতঃ। তদ্বশ্যতয়। রুক্তরুক্তেতি সদা ত্রমুখাদিষু প্রাছর্ভবতীতি ভাবঃ। নামনামিনোরভেদেন নামুঝণস্থরাৎ নামিনোপি ঋণস্তয়া ভগবদিশীকারিত্বং জ্ঞেয়ং ॥ ২৬৮॥ কুঞ্জেভিনাম চিন্তামণিরিব চিন্তাম ণঃ সেবকদ্য চিন্তিতার্থপ্রদ্বাৎ। কুঞ্নামুঃ স্বৰূপমাহ চৈভন্যে छामि विस्मयन छ उद्यान । यमानि नामविस्मयन एक टिएका तम्विधानिन मानाः नशूः मक्कुमून चुकारक एथानि नामनामित्नाव एक विवक्ता कृष्ण्डे जाना विलय गर्द न शूर्ण्युः। यथा नाता-য়বোনাম নরোনরগোং প্রশিক্ষচেরিঃ কথিতঃ পৃথিব্যামিত্যাদি॥২৬৯॥ এবং কৃঞ্নামমাছাত্রা - बिश्नियः निथिया अधुना एकुर गानिम्छान् अगमन् তমেर পরিপোষয়ন্ বিখতি তেভাইতি। ভব- জার্গিকসংসগ্নমোজন বিচক্ষণ পাদুকেভ্যঃ । কৃষ্ণেতি বর্গলভাবণেন যেষামাননদ্যু ত্বিতি নর্ভিতরোমবৃদ্দঃ ।। ২৭০ ।। কিঞ্চ তৃতীয়ক্ষকো । তদশাসারং হৃদয়ং বতেদং হাল্ডঃনাগৈর্লনামধেরৈঃ । ন বিক্রিয়েভাথ হদা বিকারোনেত্রে জলং গাত্রক্ষেষ্ হর্ষঃ ।। ২৭০ । ইতিহাসোত্রমে চ। নামু সংক ভিতে বিক্ষোর্য্য পুংল্পোন জ্যাতে । সারোমপুলকং গাত্রং সভবেৎ কুলিশোপমঃ ।।

অথ প্রীমন্নামনীর্ত্রনিত্যতা। কাত্যায়নসংহিতায়াং। নামসংকার্ত্রনাজ্ঞাতং
পূণ্যং নোপচয়ন্তি যে। নানাব্যাধিসমাযুক্তাঃ শতজন্ম তেনরাঃ। সা হানিস্তন্মহ
ক্রিড্রাং স মোকঃ সচ বিভ্রমঃ। যন্মুহর্ত্তৎ ক্ষণং বাপি বাসুদেবৎ ন কীর্ত্ত য়ং ।২৭২।
পাছ্মে বৈশাখমাতাজ্যো। যম ব্রাক্ষণসমাদে। অবমত্যচ যে যান্তি ভগবংকীর্ত্তনং
নরাঃ। তে যানি নরকং ঘোরং তেন পাপেন কর্মাণা।।২৭৩।। শ্রুত্যুদ্চ। ওঁ আস্য জানস্থোনাম চিদ্বিক্তিন মহান্তে বিক্ষো সুমতিৎ ভ্রদামতে।।২৭৪।। ওঁতৎসং ওঁ পদং দেবস্য নম্সা ব্যক্তঃ শ্রব্যাবশ্রের আপন্তমক্তং নামানি চিদ্ধিরে যজিয়ানি

ব বিধে জীবে প্রবিত্তন পক্ষে সংময়রা মোক্ষণে বিচক্ষণা অভিজ্ঞা পাছকাপি যেষাং তেডাঃ

৪ ১৭০ । উপং প্রমমাহাল্য বিশেষবতোভগবন্ধামঃ শ্রবণাদিনাপ্যানন্দরহিতান্ প্রসঙ্গানিন্দতি

ভদ্পতি স্বাভ্যাং । অশাব্ধ সারং স্থিরাংশঃ কাঠিনাং যস্ত্ধ । বিক্রিয়ালক্ষণং অথেতি।

সাহরুছেহু লোমস্থ হুর্যঃ উদ্যামঃ ॥১৭১॥

তেষ তেযু অসংখ্যেষু জন্মন্ত নানাবিধব্যাধিযুক্তা ভবন্তি। মুহূর্ত্তং ক্ষণংবাপি বাহ্নদেবং ন কী বিয়েদিতি যথ সৈব হানিঃ পুরুষার্থকায়ঃ। তদেব মহৎ ছিদ্রং। কর্মসাক্ষতায়া অন্তর।রো-বা। সূত্র সোহোভজানং : সূত্র চাবিভ্রমঃ ভাশ্তিশেষঃ । সংসারভ্রমণং মরণংবা ॥ ২৭২॥ এবং ন'মকীর্জনিষ্য নিভাভাং লিখিত্বা নামকীর্তুনশুব্ধানুমোদনাদিনিত্যতামপি লিখজি অবমত্যেতি। যে ভগৰৎকীৰ্দ্তনমনাদৃত্যানাতোযান্তি॥২৭৩॥ চৈতন্যদেবং তং বনেদ যদ্য নাম সমাশ্যাং। প্রাপ্রিকারিত্বং সর্বতানধিকার্যাপি। সমৃত্যুক্তমেবার্থং প্রাতিভিঃ প্রমাণয়ন্ লিগতি শুচ্তুসংশ্চতি। আসা এতদিতার্থঃ। হে বিফো এতন্নাম জ্ঞানস্থঃ। যদ্ধা আ অস্যেতি পদ-দ্যং। অসা প্রকটানন্যান্তুত মাহাত্মাস্য তব নাম আ সম্যক্ জানন্ত বিচাবয়ন্তঃ নামেব বিবিক্তন কেবাণা নামৈব ভজামহে। ভজ্ঞ কভমৎ চিৎ কিঞ্জিৎ ন তত্ৰ নিয়মইতাৰ্থঃ। অনেন সৰ্কাইণ্যৰ নামুঃ সাম্যমভিপ্ৰেতং । যদ্বা কীদৃশং চিং জ্ঞানস্বৰূপং মহঃ সৰ্ব্বপ্ৰকাশকং ততএৰ সৰ্ব্বৰেদাদ্যা-বিভ:বাং। তথাচোক্তং শীব্রহ্মণা নামময়াষ্টাদশাক্ষরমন্ত্রপ্রদঙ্গে। তাপনীয়শ্রুতৌ 🛭 তেমক-রেরু ভবিষ্যজ্ঞগদ্রূপং প্রকাশয়মিতি। যদ্বা মৃহঃ পরমানন্দং এবং ব্রহ্মস্বরূপমিত্যর্থঃ। পুনশ্চ কী-দৃশংস্থ মতিং স্থ ন্টুমনাতইতি তথা তৎ স্থজ্ঞেয়ং ন চাত্মস্বৰূপাদিবৎ ছজে য় মিতাৰ্থঃ। যন্ত্ৰা মতিৰ্বিদ্যা শোভনবিশ্যারপং এবং সাধ্যত্তং সাধ্যত্তং চাক্তং। অতন্তদেব ভলনীরং ভজামহইতি। ১৭৪॥ কিঞ। দেবস্য মায়য়া ক্ৰীড়িতো ৰিপি যদ্ধা পরম পূজাস্য তব প্ৰাতে জ্ঞায়তইতি পদং স্বৰূপং প্রধারবিন্দং বা প্রতি নম্সা নত্যা ব্যন্তঃ তত্থানাঃ নমস্কারং বছ্ধা বছলং কুর্বাণাইত্যর্থঃ। রণয়ন্তঃ ভ্রায়ান্তে রণয়তঃ সংদ্টৌ ।। ২৭৫, ।। ওঁ তমু ক্তোভারঃ পূর্বাৎ মথাবিদ ঋতস্য গর্ভং জনুষা পিপর্ভন আন্য জানতো নাম বিবিক্তন মহতে বিশ্বো সুমতিং ভজা-মহে ইত্যাদ্যাইতি ।। ২৭৬ ।। উদ্শে নামমাহাত্ম্যে শ্রুতিকা তিবিনিশ্চিতে। কুপ্রেম্ব্যুর্থবাদ্ধ যে তে যান্তি ঘোর্যাতনাং ।। ২৭৭ ।।

আথ শ্রীভগবন্ধানার্থবাদকণপনাদূষণং। কাত্যায়ন সংহিতায়াং। তার্থবাদং হরে-র্নাম্মি সম্ভাবয়তি যোনরং। স পাপিটোমনুষ্যাণাং নিরয়ে পত্তি ফ্রুট্ । ।২ ৭৮।। ক্রেন্সসংহিতায়াং। বৌধায়নং প্রতি শ্রীভগবদুকৌ। ম্যামকীর্ত্রনফলং বিবিধং

ভিনিষ্কিচনে বিবাদং কুৰ্বাণাঃ। यहा পদমেব নমস্কারছার। ব্যশুঃ সন্তব্দত্বঃ প্রকটয়স্ত ইতার্থঃ তদেব রশরস্তঃ। অনোন্যং কীর্ত্তরস্তুন্দ সংসূষ্টো সম্যগ্রধারণে সতি অস্ত্রে পশ্চাৎ যদা তলিভারাঞ্জ সত্যাং ভিজায় আত্মনঃ শ্রেয়সে যদা ভজায়েভালৈয়ব বিবরণং সন্দৃষ্টাবিতি সম্যক্ দশনে নিমিণ্ডে। জ্বং সাক্ষাৎক্রই,মিতার্থঃ। তব নামানোব চিৎতৈতন্যরূপাণি দ্ধিরে ধৃতবস্তঃ নিশ্চয়েনাশ্রিত-বন্তুইভার্থঃ। কীদূদীং পদং অবশ্রবে সমস্তাৎ জ্ঞায়মাণে এবদি কীর্ত্তে বিষয়ে আপনানাং ভক্তা-লাং যশোগায়ভামিত।থঁঃ । মৃক মৃজা পরিশোধনং তাং তনোতি ইতি আপল্মৃতং । যদা মাটি শুকাতীতি মৃক্ তদ্য ভাবে। মৃক্তা। আপনানাং মৃক্তা যক্ষা ৫। প্রনঃ কীদৃশং। তং সং পর ব্রহ্ম ত্মৰপ্ৰতিহাৰ্য:। যদ্ধা আৰু সাৰ্থ ইতি নামানোৰ দ্ধিরইতাত্র চেক্ত নামামেৰ মাহাল্লাবিশেৰে জারুমাণে সভীত্যর্থঃ।।২৭৫। কিঞ্ । উ বিকারে নির্দাবে বা। তংগ্রেসিজং ভগবস্থং জীরুষ্ণং সেঃ-তারঃ স্তধ্মিতার্গঃ। কথং যথাবিদ যথাজানীথ তথৈব ন ভত্র স্থোত্রাদিনিয়মইতার্গঃ। কথং ভূতং পুর্বং পুরাত্নং নসুধুনাবভীগদ্বেন মূতনমিত্যর্থঃ! এব্যব্তারিস্মুক্তং। কিঞ্চ। ঋত্যা বেদ্যা গ্রন্থ তাৎপর্যা**রোমতার্থঃ।** যদ। ঋত্সা ব্রহ্মণঃ গর্ভং সারভূতং স্কিলানন্দ্রন্মিতার্থঃ। ভত্ত জন্বা পিপর্ত্তন পূর্ণাভবত জন্মানি সমাপয়তেত্যুগ ৷ যদা তং দেবং জনুষা পিপ্তন স্বচ্ছ দ ছেরিতেন বছ্বিধেন জন্মন। পূর্য়ত মৎস্যাস্থ্যৰতাবৈরস্থিতং প্রিপূর্ণং বর্ণয়ভেত্যধঃ। কিঞ্। অণ্য দেবস্মাম চ আ বিবিক্তন সমাক্কীর্ত্যতে। হে জানসঃ ভোবিদ্বাংসঃ। যদা আজানস্থ সংক্ষাংক্ষততমাহ্বধারমুদ্ধঃ সন্তঃ। হে বিশেষ বয়স্ত স্থোস্তঃ জ্ঞাত্তং চাসমর্থাঃ কেবলং তব লানৈৰ ভজামতে। অন্যৎ পূৰ্ববং । যদ্বা হেৰিফো যথাবিদন্তীতি যথাবিদঃ সন্তঃ যথাবিদ্যস্থে-ভাগ্ঃ। তং নামৰূপং ড়াং স্তোভারঃ স্তবস্তঃ। অতএব জস্ব। পিপর্ত্তনঃ জন্মনঃ পূর্ত্তিং কুর্বোণাঃ। আছে।নতঃ বিচারয়ন্তঃ বিবিক্তনঃ কীত্তয়ন্ত্রণ তব নাম ভজামতে। তমিত্যক তদিভি বাং ঠিঃ। छङ्क छन्नारेमरेवकः स्थाजात्रेखाणीनाः कर्म। छरेनाव विस्थवनः धूर्मामछाणि। यहा स्टट्डो শতৃঃ: তং দ্বাং স্বোক্তমাজ্ঞাত্তং কীৰ্ত্তিয়িত্তঞ্ তব নামৈন ভজামহে প্ৰনামদেবনেনৈৰ ত্ৰ শুতিঃ সমাক্জানং কীর্ত্তনঞ্চ সম্পদাতইতার্থঃ। অন্যৎ সমানং অলমতি বিস্তরেণ ॥২৭৬॥ এবং বছলসা,তিশ্রতিবঢ়নৈঃ শ্রীমন্নাসমাহাত্মাং নিধার্য্য তত্ত কথঞ্জিপপার্থবাদেনে কম্পরিতব্য-ইতি ভ্তীমীংমাংসকান্ শিক্ষালিৰ লিখতি ঈদৃশইতি। অৰ্থবাদকণপ্ৰাচাত स ঘটভইতি অযা-মিলোপাখ্যানে এই রস্বামিপালৈতথা ভগবন্নামকৌমুদীকার প্রালক্ষীধরস্বামিপাদাদিভিশ্চ म्नायः वाथाष्ट्रभरकारविक किमक निधनकारात्न।। २११॥ যঃ সম্ভাবয়ত্যপি কিং পূনঃ কুণ্পয়েদিতি ॥২৭৮॥ যদিতি য়ঃ ইত্যেব বা পাঠঃ। ন অদ্ধাতি নিশ্যান শ্রদ্ধাতি মনুতে যদুতার্থবাদং। যোমানুষন্তমিই দুংখনের কিপানি সংস্পার্থার বিবিধার্তিনিপীড়িতাঙ্গং ।। ২৭৯ ।। তৈ মিনিসং তি নামলাই জ্বারানিষু । যেইর্থবাদই তি নুযুর্ন তেয়াং নিরয়ক্ষয়ং ।। ২৮০ ।। তি স্থাণেরু নামলাই জ্বারানিষু । যেইর্থবাদই তি নুযুর্ন তেয়াং নিরয়ক্ষয়ং ।। ২৮০ ।। তি স্থাংশন্ত ভগবরামি জগদেকোপকারি ।। বিশেষকসেব্যে মতি মানপরাধান্ বিব্দর্থে । ২৮১ ।। যত উক্তং পাল্মে শ্রীমানদং প্রতি শ্রীসনংকুমারে । সর্বাপর্বাধান্যাং কুর্যাণ দিপদপাংশনং । নামলাশ্রাং ক্লানিং স্বাং তরতোর স্নামতঃ । নাম্বাইপি সর্বস্থানে গ্রাধাণ পত্ত গ্রাং। ২৮২ ।।

অথ নামাপরাধাং।। তং প্রতি তেনৈবোক্তাঃ। সতাং নিদ্যা নামুঃ পরমনপারাধং বিতনুতে যতঃ খ্যাতিং যাতং কথমু সহতে তদ্বিগরিহাং।শিবস্য শ্রীবিষ্ণোর্যাইহ গুণনামাদি সকলং বিয়া ভিন্নৎ পশ্যেৎস খলু হরিনামাহিতকরঃ।। ২৮৩।।
গুরোরবজ্ঞা শ্রুতিশাস্ত্রনিন্দনং তথার্থবাদোহরিনামি কংপনং। নামোবলাদ্বস্য হি
পাপবুদ্ধিনবিদ্যতে তম্য যমৈহি শুদিঃ।।২৮৪।। ধর্মব্রতত্যাগহুতাদিস্কশুভক্তি

ন বিশ্বসিতি প্রত্যুত যোহর্থবাদং মন্তে। সংসারে বিবিধা যা আর্দ্রিঃ তাভিনিপীড়ি হাঙ্গং যথাগাত্তথা কিপামি । ২৭৯ ॥ নির্মাণাং ক্ষরোনাশোন তবতি বিস্তু সদা নির্মেষু দর্তীত,র্থঃ।
। ১৮০ ॥ এবং শীতগবন্ধে মাহশেষদোষহরণাখিলগুণময়ন্ধ দিমহোত্মাবিশেষং বিলিখ্য তেনচাবিনীতান মুৎশৃষ্থলত্য়া শীবৈক্ষবাদিপপরাধমাশক্ষ্য তিনিবারণায় নামাপরাধান্ লিথিয়ন্
আদৌ বিভীষিকার্থমপরাধকলমগ্রে দর্শয়ন্ তাণস্ত্যাক্ষয়তি তিনিংশুতি। অপরাধবিবর্জনে
হেন্তঃ জগদেকোপকারিণীতি বিশ্বৈক্ষের্যইতি চ ॥ ২৮১ ॥ সর্বান্ অপরাধান্ পাপানি করোভীতি তথা সোহপি হরিসংশ্রেয়া ভগবন্তঃ প্রপন্নঃ সন্মুচাতে ততোমুক্তোভবতি। হরেরপরাগান্ পূর্বালিথিতান্ শীবারাহোক্তান্ দ্যুতিংশ্ব । নিপদেষু নরেষু পাংশনঃ অধমঃ। স্থাদি
কদাচিল্লামাশ্রেয়া নামকীর্ভনিক্ষর স্যাব তদানামপ্রভাগতঃ তরতি হরিবিষয়কাপরাধেভ্যোইপি
মুচাত এব। সর্ব্যক্ষণঃ ক্ষপত্পকারপরস্যাপি নাম্যোইপরাধার হি নিশ্বিতং অধঃ পত্তি নরকং
গাজ্বতি॥ ২৮২ !!

যতঃ সন্তঃ খ্যাতিং প্রাক্তিং প্রাকটাং বা প্রাপ্তং নাম । উ থেদে। তেবাং বিগর্ছাং কথং সহতে অপিত সোতুং ন শক্ষ্মাদেব অভায়েমেকোহপরাধঃ। অস্য চ মুখ্যত্বাদাদে নির্দেশঃ। আদিশব্দেন ৰূপলীলাদি । ধিয়াপি। হরিনামি অহিতমপরাধং করোতীতি তথা সঃ॥ ২৮৩॥ শুতীনাং ধর্মাশাস্ত্রাণাপ্ত নিন্দনং । তথেতাুক্তসমুচ্চয়ে। অর্থবাদেয়েস্ত্র্যা কণ্পনং। যদ্বা হরিনামার্থবাদঃ কণ্পনমেব নত্ত তত্ত্বভোঘটতইত্যর্থঃ। কণ্প্যতইতিবা পাঠঃ। যদ্বা হরিনামি কণ্পন্থ তত্মাহাত্মার্পরিত্যাগেন তর্ব্বক্ষা ব্থার্থান্তরকণ্পন। চৈকোহপরাধইত্যর্থঃ । নাম্মোবলাৎ নামগ্রহণেন পাপক্ষয়োভবেদিতি নামাণ প্রভাবজ্ঞানেন পাপে বৃদ্ধিরপি কিং পুনঃ প্রবৃদ্ধিঃ। বদ্বা অকারপ্রশ্লেষেণ নাম্মোবলমজ্ঞাত্বা যস্য পাপেবৃদ্ধিরিত্যর্থঃ তস্য যমৈঃ বহুলব্রতাদিভিরহিং-শাদিভিদ্বাদশভির্বা। যদ্বা বহুভিধ্বারাইজঃ চিরকালং তথ্ কৃত্যাত্নাভোগেনাপীত্যর্থঃ। ২৮৪।

রা সাম্যমপি প্রসাদঃ। অপ্রদ্ধানে বিমুখেছপ্যশৃণুতি যশ্চোপদেশঃ শিবনামাপ-রাধঃ।। ২৮৫।। প্রতিপি নামমাহাত্ম্যে প্রতিরহিতোনরঃ। অহৎমমাদিপ-রমোনাগ্লি সোপ্যপ্রাধক্ষ।। ২৮৫।। জাতে নামাপরাধেছপি প্রমাদেন কথঞ্ন। সদা সঞ্চীতির্মাম তদেক শ্রণোভবেষ।। ২৮৭।।

অপরাধভঞ্জনং ।। উক্তঞ্চ তেনৈব তত্র । নামাপরাধ্যুক্তানাং নামানে ব হর-ন্তাবং । অবিশ্রভ্রেমুক্তানি তান্যেবার্থকরালি চ ।। ২৮৮ ।। নামৈকং যস্য বাচি স্মরণপথগতং শ্রোত্রমূলং গতং বা শুদ্ধং বা শুদ্ধবর্ণ ব্যবহিতরহিতং তারয়ত্যেব

ধর্মানীনাং সর্বাসাং শুভক্রিয়াণাং সাম্যং নামা তলাত্মপি প্রমাদঃ অপরাধইত্যগাবদা ধর্মাদি শুভক্রিয়াসাম্মেকোইপরাধঃ। প্রমাদঃ নাম্মানবধানভাগ্যেকঃ। এবমত্রাপরাধ্যযাত্রশু তলাত্বালাম্মেকোইপরাধঃ। প্রমাদঃ নাম্মানবধানভাগ্যেকঃ। এবমত্রাপরাধ্যযাত্রশু তলাত্বালাদে ইরিনাম্মিকপেনমিতাতৈর এবাপরাধ্যেক্তরঃকিঞ্চ অপ্রাধানাদে জনে য উপদেশঃ স্থাবিরমাম্মি অপরাধঃ এভাগবিতঃ সন্ যঃ অহং মমাদিপরমং অহত্যাম্যতা চ আদিশকেন বিষয় ভোগাদিকং চৈব পরমং প্রধানং নক্ত নাম গ্রহণ যস্যা তথ্য ভূতঃ স্যাৎ সোইপাল্যাকুঃ যস্যা। ধর্মপ্রতেত্যাদর্সালোকেনক এবাপরাধঃ। অহং মমাদিত্যকিল্লোকে চাম্মিন্ একঃ। এবং অপরাধাদশা। যে জ্যাদ্বাপিন বর্জ্যান্দি নহমা নাম্মেরপরাধীতার্থা। মহা যোহধমং প্রীতিরহিতা সোই মর্যাই মর্যাই বিষয়ে যোহহু মম্যাদিপরমং প্রতিরহিতা সোই পরায়ক দিত্যক্তরেণাল্যরং। কিঞ্চ। নাম্মের বিষয়ে যোহহুং মম্যাদিপরমং অহং বত্তর্বনামকীর্ভিকঃ ইতন্ত্রেনামকীর্ত্তনপ্র মং প্রবিভিক্তরের ময়া সম্যোনামকীর্ত্তনপ্রের্যাল ক্যা তথা ভূতো যা স্যোনামকীর্ত্তনিক্যের পরমং প্রবানং নামকীর্ত্তনপ্র ক্যাদিকমের পরমং প্রধানং নামকীর্ত্তনপ্র ক্যাদিকমের পরমং প্রধানং নামকীর্ত্তনপ্র ক্রাহিন তরে বৈপি ভিতিক্র গাংল্যমানিনা মানদেন ক্রীর্ত্তনীয়ঃ সদা হরিরিতি।। ২৮৬। কথ্যপ্র প্রমাদেন ভ্রমণ ফ্রাহ্য হতি হতা নামের একং শ্রণমাশ্রেয়ায় তথা ভূতোভ্রের স্বর্থ নাম্যব্রোত্রে বিভিগ্নাহ্য। ২৮৭।।

যত্মাৎ অবিশ্রান্তং সভতং প্রযুক্তানি কীর্তিতানি সন্তি তানি নামানোবার্থকরাণি সর্ব্ধ-প্রয়োজনসম্পাদকানি ॥ ২৮৮॥ এতদের পরিপ্রেয়রন্ নামনীর্জনে লাভপুজাগ্যাতার্থতাং পরিত্যাজয়তি নামৈকমিত্যালি । বাচি গতং প্রসঙ্গালাথ্যয়ে প্রসুদ্ধপি স্মরণপথগতং কথপ্রিলানং স্প্রাক্তমিপ । শ্রোক্রন্তং গতং কিঞ্জিৎ শ্রুডমিপ শুদ্ধবর্ণ বা অশুদ্ধবর্ণ বা। ব্যবহিতং শক্ষান্তরেণ যদ্ধারথানং বক্ষামাণ নারায়ণশক্ষ্য কিঞ্চলচার্ণানন্তরং প্রসঙ্গালাপতিতং শক্ষান্তরং তেন রহিতং পৎ। যদ্ম যদ্যপি হলং রিজ্ঞাত্যান্ত্যান্ত্রা হক্রীতি নামান্ত্রের তথা রাজমহিষীতাত্র রামনানাপি এবমন্যদপূহ্ণ তথাপি তত্তরামমধ্যে ব্যবধারক্ষমক্তর্ভ্রমন্ত্রীত্যেভাল্শব্যবধানকহিত্মিতার্থং। যদ্ম ব্যবহিত্প তত্তহিত্পাপি বা তত্র ব্যবহিতং নামুঃ কিঞ্চিত্চোরণানন্ত্রং কথিক্ষাপতিতং শক্ষান্তরং সমাধায় পশ্চান্নামাবশিন্তাক্ষরগ্রহণমিত্যেবং কপ্র মধ্যে শক্ষান্তরেণান্তরিভ্রমত্যর্থং। রহিতং পশ্চান্বশিন্তাক্ষরগ্রহণ্-বিজ্ঞিক কেন্চিদংশেন হীন্মিত্যর্থঃ। তথাপি ভার্যত্যের সর্ব্যেং গ্রাপ্রভাং সন্ধান্ত্রাং সন্ধান্ত্রং। তথাপি ভার্যত্যের স্ব্যাং যৎকলং তর সন্ধাঃ সম্পদ্যতে।

সতাং। তাজেদেহদ্রবিণজনতা লোভপাষগুনধ্যে নিজিপ্তং, স্যায় ফলজনকৎ শীঘু-মেবাত্র বিপ্র । ৷ ২৮৯ ।। অতএবোক্তং শ্রীনারদেন বৃহন্নারদীয়ে। মহিমামপি যনামুঃ পারং গন্তুমনীশ্বরাং। মনবোহপি মুনীদ্যুশ্চ কথ্য তথ্যুন্নধীর্ভজে ইতি ।। ২৯০ ।।

ইথং প্রীরুষপাদাক্তে ভক্তিং কার্য্য। সদাবুধিং । সাচ তস্য প্রমাদেন মহাপুণ্যং প্রজায়তে ।। ২১১ ।। তথ প্রীমন্তকেদুর্র ভবং । ক্ষাদেন প্রীপরাশরোক্তৌ ।
নহ্যপুণ্যবতাং লোকে মূঢ়ানাং কুটিলাবানাং । ভক্তির্ভবিত গোবিদে মারণং কীক্রাং তথা ।। ২১২ ।। তত্রৈব প্রীব্রক্ষোক্তৌ । নিনিষং নিমিষার্ক্ষয়া মর্ত্যানানিহ
নারদ । নাদপ্রাশেবপাপানাং ভক্তির্ভবিত কেশবে ।। ২১৩ ।। যোগবাদিতে ।
ক্রাম্বরসহস্বে তপোজ্ঞানসমাধিতিং । নরাণাং ক্ষীপোপানাং রুক্তে ভক্তিং প্রজান্তা।১৯৪।। আদিবারাহে । ক্রাক্রসহস্বে সমারাধ্য স্বধ্রণ (বৈক্ষবত্বং লভেদ্যান্ সর্বপাপক্ষয়ে স্তি ।। বৃহ্নারদীয়ে যক্তপুজন্পোপাখ্যানাছে । ক্রাকোটি

তথা দেহতর গণি দুর্থ যিপি নামসেবনেন মুখ্য কলমাশুন সিক্কাতীতাগছ তক্ষেদিতি। তলাম চেছ যদি দেহাদিমধ্যে নিকিপ্তাং দেহতরণাদার্থমেব বিনাস্তাং তদাপি কলজনকং ন ভবতি কিং অপিত্র ভবতোব কিন্তু অত্র ইহলোকে শীঘুং ন ভবতি কিন্তু বিলয়েনৈব ভবতী ভার্যাঃ ৮১৮৯ । এবনুপ্সংহরন্ জীমলামমাহাল্যসাগনভামেব জাগুরন্ লিথতি মহিমুখনিতি। পারেং গভুমপি কিং গুনস্তু মুম্ভবিক্তমিতি ॥২৯০॥

টেচতন্টন্তং তং বন্দে বর্ষন্ ভক্তিরসং নিজং। আয়তে র্বনাতং ঘোহকরোৎ ভক্তিঃ তং জগৎ। এবং ভক্তাঙ্গানি লিখিত্ব। ইদানীং সমগ্রাং ভক্তিং লিখন্ আদৌ তস্য মাহাল্যাবিশেষার্ণ পরম দৌর্লভাং লিখতি ইপামিতি। মহাপুণাৎ যস্ত্রস্য এক্রিমণ্ডপাদাক্রস্য প্রসাদস্থেনৈর প্রক-বেণ জায়তে। এতচ্চ পুণ্যবিশেষার্থ প্রয়ত্মায় লিখিতং। যদা। তদ্য প্রসাদেন যমহাপুণ্যং তক্ষা-দেব প্রজায়তে ইতি মথাক্রমমেবামুয়ঃ। যদ্যপি তদ্য প্রদাদ্রব ভক্তিপ্রান্তর্ভাবে স্বতস্ত্রোনির-লেকোচেন্তঃ তথাপি তৎকর্ত্কপুণ বিশেষাজ্জাতায়াঃ সত্যাস্তস্যাঃ সমূলতা শোভাবিশেষক সম্পদ্যতে ইতি তথা লিখিতং। যথা মুখুকুভক্ত সিন্ধন্তে ভক্তাা জ্ঞানদারা মোকোজনাতইতি অতএব প্রশক্ষা এবঞ্চ জন্মকোটিশহসেষু ইয়ং পুণাং সমুপার্জিতমিত্যাদিবচনানাপ্রপপদান্ত ইতি দিক্। ১১১।। অপুণ্যবতামেব লক্ষণং মূঢ়ানামিতি কুটিলাক্মনামিতি চ। ভক্তিঃ পূজা পরি চর্য্যাদিলক্ষণা অথসাধ্যং স্মরণং কীর্ত্তনঞ্চ ন ভবতি ন নিদ্ধ্যতি। যদ্বা ভক্তিঃ সমগ্রা ন ভবতীতি কিং বক্তব্যং তদঙ্গমপি সারণং কীর্ত্তনঞ্চন ভবতীতার্থঃ। यहा সংক্ষেত্র স্থারণকীর্ত্তনগ্রেব প্রমমুগ্যয়াৎ ভজেন্তৎপ্রধানতা বিবক্ষয়া লক্ষণমেবোদ্দিউং স্মর্ণং কীর্ত্তনঞ্চিত্র যদা সমূ-চ্চায়ে তথা শব্দঃ। তথা তেন বিশুদ্ধত্বাদিপ্রকারেণ মকামত্বাদিপ্রকারেণাপীতি বা ॥ ২৯১ ॥ নিমিৰমপি নিমিষাৰ্জমপি ভক্তিৰ্ন ভৰতি॥ ২৯৩॥ এবং পুণাহীনানাং পাপিনাঞ্চ কদ।চিনপি ন জায়তইতি দৌলভাং লিথিতং ৷ অধুনা সমূলাখিলপাপক্ষয়েণৈৰ জায়তইতি লিখতি জনা-স্তব্রেতি। ক্ষীণ,নি স্বাসনং ক্ষয়ং গভানি পাপানি যেষাং তেঘামের ॥ ২৯৪॥ অধুনা মহাপুণ্য

সঙ্গের পুণাং থৈঃ সমুপান্তিভিং। তেবাৎ জন্তিভিবেচ্ছু না দেবদেরে জনার্দ্ধনাই ৯৫।

নুজ্ভং জান্ত্রবিস্থান্থ তথাচাতি থিপুজনং। সুলভা সর্ব্যজ্ঞান্চ বিষ্ণু ভিভঃ সুদুর্লভা

। ২৯৬ । ইতিহাসসমুজ্রে। শিলোঞ্জবৃত্তিবাক্যো গঙ্গারাৎ মরণকৈর দৃঢ়া ভ
ক্রিন্দ্র কেশবে। বুল্লাবিদ্যাপ্রবেধিন্দ্র নাম্পাস্য তপসং ফলং।। ২৯৭।। তগ্রাজ্ঞান ক্রিরিটার নাম ক্রিরিটার নাম ক্রিরিটার নাম ক্রিক্তির কেশবে।। ২৯৮।। বিষ্ণু ধর্মান্তরে। দিবসং দিবসার্দ্ধং বা মুন্তু ক্রিক মেব বা। নামাচ্চাশেষপাপস্য ভক্তিভিবিত কেশবে। আনেক জন্মসাহত্রিনানায়ের ত্রে বিভালে কল্বহীনস্য ভ ক্রভবিত কেশবে। দশমক জ্বো গোপীঃ প্রতিভিব্যক্তি বিদ্যালি ক্রিরিটার ক্রিনাস্থল কল্বহীনস্য ভ ক্রভবিত কেশবে। দশমক জ্বো গোপীঃ প্রতিভিদ্যালি ক্রেন্তি হা লাক্রভতপোহে নজপ্রাধ্যায়সংহনৈ । শ্রেয়োভির্নিবিটার ক্রিনাই ক্রেন্ড ভক্তি সাধ্যতে।।২৯৯। শ্রীভাগবকীতাসু চ। যেয়াং ভ্তং গতং পাপং জনানাং পুণ্যকর্মণাথা । তে দ্বন্দ্রেমাহনির্মুক্তা ভল্লয়ে মাং দৃদ্রভাঃ ।। ৩০০ ।। প্রমন্দ্রে পার্নিকিতং প্রতি বাদরায়ানিনা। রাজন্ পতিপ্রক্রবাং ভবতাং যদ্ধাং বিদ্বাধ্যা ক্রিনাই ক্রেপাতিঃ কৃচ কিন্ধরোবং। অন্ত্রেনাম্ব ভল্লভাং ভগবান্ নুকুন্দে। মুন্তিৎ দেশ ত কর্লিচিং সান ভক্তিযোগং।।৩০১।। পালে শ্রীপ্রহানেন্ত তোঁ। লক্ষের শৃণুতে ক্রিন্ত কোটিব্রুক্ত বুধু,তে। ভক্তিত হাং পরিভ্রেয় কন্দিদের স্বাচ্বের ।। ৩০০ ।।

প্রয়েটেনৰ জায়তইতি প্রমণ নৌলভাংলিখতি জল্পেভাদিনা সাধ্যতইভাষেন। শ্বনা জানকণ্ডা দাসংমিশ্রিত। ॥ ২৯৫॥ স্থ্লতেতি গলামানাদিজনিতপুণ্ডোডাইপি বিশিইতরপুণ্ডেটনব কায়তইতি স্থচিত্র। তক্ষ লিখিতমেব সচে তসা প্রাধানেন মহাপুনাং প্রজায়তইতি ৮২৯৬ । প্রক্রবিদ্যাপ্রবোধে। ভব্তিতেপ্বজানং ॥২৯৭॥ যেয়াং পুরাব্রতানি যঠকালভোগনাদি নির্মত ङ ज्यात्रशामीनि व। উপवामा धकामगामिय व्यवकानामि वक्तनाः नियमाः हाउद्यांगामियात्रानि শৌচাদল্লো বা দ্বাদশ তৈঃ। অপিশক্ষ এবশকার্থে ॥২৯৮॥ স্মোয়োভিঃ শ্রেয়াঃ সাধটনঃ সর্বাপুরু বার্টের্যরো ॥ ২৯৯॥ বেবান্ত পুণ্যাতরণশীলানাং সর্বশ্রের প্রতিবন্ধকং পাপমন্তং গতং বিন্টাং তে ছন্দ্রিমিত্তেন মোহেন। মধা ছটেন্দুঃ স্থগড়ংখাদিভিঃ তংকারণাজ্ঞানেন চ নিমুক্তিঃ। মধা পাকার প্রশ্লেষেণ অল্পনত্মোহাশ্য তে নিমুজ্<mark>যাশ্য নিংশেষেণ মুক্তাঃ সস্থঃ। দুচ্ত্রতা একান্</mark>দিনঃ প্রান্ত মাণ ভল্পন্তে।। তথুনা শ্রীভগবতোপ্যদেয়ত্বেন দৌল ভাবিশেষং লিখতি রাজনিতি। অফ হেরাজন্ ভবতাং পাওবানাং যদুনাঞ্চ পতিং পালকং গুরু রুপদেন্টা দৈবমুপাস্যং কুলপ্তি নিষয়া। কিষ্ত্না কুচ কলাচিৎ বঃ পাওবানাং কিন্ধরোপি আজ্ঞাহবর্ত্তী। অন্ত নামৈবং। ভবা-প্যান্যেৰাং নিভাং ভন্ধতামপি মুক্তিং দদাভি। নত্ত কৃদাচিদপি স প্রেমভক্তিযোগং। যন্তা ভজভাং বজ্ঞাদিনা সেবমানানাং । যদ্বা স্বধর্মাচরণাদিনা ভগ্রদাজাপ্রতিপালনরপাং ভক্তিং কুর্বাচা-মপি শ্রবণাদিভক্তিবোগং ন দদাতি। এবং ভগবৎপ্রবাদৈকলভ:ত৷ অনাথা চ প্রমদৌলভিানি তি দৰ্শিতং এবঞ্জবণাদিকমপি যোন দদাতি স বোবশাইতি পাণ্ডবানাং মাহাত্মাঞ্ শিক্ষমিতি দিক্ ॥ ৩০১॥ ভক্তেন্তভুং পরমানন্দ্রনত্বং মাহাত্মাং বা লফের্ লোকেষু মধ্যে কন্চিদেব শূৰণাতি। বুধ্যতে অবধাররতি সমাচরেৎ ভক্তিং করে।তি ॥ ৩০২ ॥ যা ভক্তিং পুজয়া শকাম-

পূদ্যা হসতে ভক্তির্জপতন্ত্রস।তি স্ফুটং। সনাধিযোগাঞ্চ বহিং সা ভক্তিং কেন গৃহাতে ।। ৩০৩।। ষঠক্কেরে নৃত্রোপাখ্যানাতে । দেবানাং শুক্ষসত্থানান্থীণাঞ্চানসাত্মনাং। ভক্তিনু কুলচরণে ন প্রায়েণাপজায়ত ইতি ।। ৩০৪ ।।
শ্রীনজুক্তিন নমন্তন্য যস্যানাহাত্মনন্ত্রং। যৎপ্রভাবেণ লোলোরং কীটোপুদ্ধর্ত্ব
নিত্তি।। ৩০৫।।

কথ জিভগবড় জিনাহাত্মং। তত্রাদৌ ভিন্তিনতঃ কথঞিদাপতিতেই পি পাপে প্রায় পিতাত্তর নির্মনত্তং। পালে বৈশাখনাহাত্মে। নারদাহরীয়নহাদে। হথারিঃ পুনমিয়ার্কিঃ করোত্ত্যেশংসি ভন্মনাৎ। পাপানি তগবড় জিন্তথা দহতি তৎক্ষণাৎ। ১০৬। যথে অ্যানিলোপাখ্যানার স্তো কেচিৎকেবলয়া ভক্ত্যা বংসুদেবপরারণাং। জন্ম পুন্তি কংব্যুনি নীহারমিব ভাক্ষরং। ১০৭। একাদশে জিভগবদুদ্ধবসম্বাদে।

জ্ঞানিক ক্ষাবিধিনা হসতি ভাষুপ্তসভীত্যতা । ভাষা প্রায়ন্ত কলাবান্তেঃ জপতোমজ্ঞ পাছ বস্থা ভি বিভেতি দুর মপসরভীতার্থা। প্রায়ে মজ্ঞাপে বিধিকামানামের কৃতিলুক্তেরের চ নিজ্যক্তেঃ সমাধি লক্ষণ্য বোগাচ্চ বৃতিঃ তেনাপ্যপ্রাপ্রভাৱ । ভাষা শূন্যমন্ত্রেন ভত্ত প্রবাদিভাকের প্রক্রেণ কেন প্রতে আল্লাই জিন্তে অপিন্ত ভাবংপ্রশান বিনা ন কেনাপ্যাল্লাই কর্ত্ত্ব শাক্ত ইত্যর্থা। ৩০৩। শুক্ষর্যান নামপি দেবানাই অমলাজ্বাহ নির্মাল্ভিলানামপি আর্থানাই। প্রায়েণ্ডি কদাচিং ক্যাচ্চের জার্ডইত্যর্থা। ৩০৪॥ এবং প্রমদৌল্ভিলান ভক্তেনিভাল্লাই। প্রমণি ক্রমণি কিন্তালালালাবিশেয়ই লিখন আন্তেনিভাল ভক্তেনিভাল্লাই। ক্রমণিতি ক্রমণি ক্রমণি কিন্তালালালাবিশেয়ই লিখন আন্তেনিভাল ভক্তি ক্রমণিতি মাহাল্লাকের মন্দ্রেনিভাল মহাপ্রতে প্রমনিভিল্লাই জ্বলানাতং ক্রিভালাই প্রস্তুত্ব সাহাল্লাকের মন্দ্রিভালাই ক্রমণিতি মাহাল্লাকের মন্দ্রিভালাই প্রস্তুত্ব সাহাল্লাকের ক্রমণিত ক্রমণি প্রস্তিভালাই প্রভাবের লোলই সন্তিল্লাই মিছতি। অত্যাহালাই ক্রিভালাইপি ক্রমণি প্রস্তিভাল জিল্লের্যানির ন মে স্বতঃ ইতি ভল্লাইন্যে ভ্রমাহাল্লাই ক্রিভিল্লের্যানিতি ভাবঃ। ৩০৫।।

পাকালার্থনপি প্রক্র্যালিতাংগ্রিথন কাঠানি জন্মীকরোতি তথা জগবদ্র্যমপান্ত্রীরমানা জক্তির সর্বাণ্যের পাপানি তংক্ষণাথ পাপোৎপত্তিসমকাল্য নহিত্য। ৩০৬॥ তপ্যা ব্রক্চর্যেণ শমেন চদমনে চা ত্যাগেন সত্যশৌচাভ্যাং ব্যন্ন নির্মেন চা দেইবাল্পুনিধলং ধীরা ধর্মজ্ঞাং শ্রন্ধানিতাং। কিপেন্তাম্থ মহদপি বেণুগুলমমিবানলঃ ইত্যুক্তরা প্রার্শিজ্সাতি জ্বর স্থামুর্থমেবানাথ প্রার্শিজ্সাহ কেচিদিতি। কেটিদিতানেন এবসূত্তার্জপ্রধানাবিরলাইতি দর্শরতি। কেবলয়া তপ্রাদিনিরপেক্ষয়া । বাহ্মদেবগরায়ণাইতি নাধিকারিবিশেষণ্যমতথা কিন্তু অন্যেধামশ্রন্ধা ত্রাপ্রবৃত্তিরর্থান্তেমের প্যাবসানাদক্রাদমান্তং। কাৎস্কেন মূলতোহক্ষ বর্গতক্ষেত্রর্থং। ত্রাম্বর্বান্তর্বান্তর্বানীহারং তৎক্তত্বমইব। এবমত্রসমূল সাক্ষাশেষ পাপনাশোহভিপ্রেতঃ পূর্বক্ষ অনলোবেণুগুলুমিবেতি অনল্যা ভূমান্তর্গতদহনাশক্ত্যা ভন্মাদেরপি বিদ্যান্তর্মা সমূলাশেষপাপানির্জিক্তা। এবমপি পূর্বতোহস্য বিশেষাহ্বগন্তব্য তেও। আয়াং তাবহুস্তমভক্তেঃ কথা বথা কথিকে জক্যাপি স্বত্রব সমূলাশেষ পাপক্ষঃ স্যাদিত্যাহ। বথেতি। পাকাদ্যর্থমপি প্রক্ষালিতাইমির্যথা কথিকি জক্যানি ভন্মীকরোতি তথারাগাদিনাপি কথিকি

যথানি: সুসনিদ্ধার্কি: করোত্যেধাংনি ভন্দানাং । তথা মদিষয়া ভক্তিক্লাইনাংনি কংসুনাঃ তিওঁ । অতএবাক্তং তত্রৈব প্রীকরভাজনেন । স্বণাদমূলং ভজ্কতঃ প্রিয়স্য ত্যক্তান্যভাবন্য হরিঃ পরেশঃ । বিকর্ম থক্চোংপতিত্য কথিক নুনোতি সর্বাহ হাদি সংনিবিষ্টঃ তিওঁ চারকামাহাত্মে চন্দুশর্মাণং প্রতি প্রীভগবতা । মদ্যক্তিম বহতাং পুংসানিহলোকে পরেইপি বালনাশুভং বিদ্যুতে কিঞ্চিং কুলকোটিং নয়েদিবং তেওঁ বিষয়ভোগেইপি তদ্দোষনিরাকরত্বং । একাদশন্ধকে তত্রৈব । বাধ্যমানোপি মদ্ধাবিষয়েরজিতেন্দুয়ঃ । প্রায়ঃপ্রগল্ভয়া ভক্ত্যা বিষয়ের্নাভিভূয়তে ।। ৩১১ ।। কর্মাধিকারনিরসনত্বং তত্রৈব ৷ তাবং কর্মাণি কুর্মাত ন নির্বিদ্যেত যাবতঃ । মংকথাশ্রবণাদৌ বা শ্রদ্ধা যাবন্ধ জায়তে ।। ৩১২ ।। অতএবোক্তং প্রথমন্ধকে । তাক্তা স্বধর্মণ চরণাসুজ্ব হরের্ভ্রন্ধপক্ষেপক্রেহ্থ পতেত্ততোম্বি ৷ যত্র ক্রাংহভ্রমভূদ্

মদিষরা সতী ভক্তিঃ সমস্তপাপানীতি ভগবানপি স্বভক্তমাশ্চর্য্যেণ সম্বোধয়তি অহো উদ্ধব বিস্ময়ং শৃণিুতি।। ৩০৮ ।। দেবর্ষি ভূতাপ্তহুণামিতি নিরন্তরপূর্বলোকেন বিহিতকর্ম নিত্তি-মুজু। নিষেধনিমিন্তপ্রায়শিন্তনিবৃত্তিমাই স্বপাদেতি। ত্যক্তং অন্যাস্মিন্ দেহাদৌ দেব। নুরে ভাবো যেন। অতএব তস্য বিকর্মণি প্রবৃত্তিন সম্ভবতি। যচ্চ কথঞিৎ প্রমাদাদিনা উৎপতিতং অকস্মাৎ প্রাপ্তং ভবেৎ তদপি হরিধুনোতি। নতু যমস্তন্ন মন্যেৎ তত্রাহ পরেশঃ পরমেশ্বরঃ। নত্ন ওচতি-স্মৃতী মনৈবাজ্ঞে ইতি ভগদ্দনাৎ স্বাজ্ঞাভঙ্গং কথং সহেত।তত্রাহ প্রিয়স্য। ননু নায়ং পাপক্ষার্থণ ভদ্বতে। তত্রাহ হৃদি সন্নিবিষ্টঃ নহি বস্তু শক্তির্থিতামপেক্ষতইত্যর্থঃ ॥ ৩০৯ ॥ অশুভং পাপং অমঙ্গলং বা পাপমূলকং। তেষাং কুলকোটিং ভক্তিরেব দিবং শ্রীবৈকৃষ্ঠলোকং প্রাপয়তি।৩১০। বিষ্ট্রেব্রাধ্যমান আক্ষ্যমাণোহপি। অতঃ প্রায়েহিজিতেন্দ্রিঃ প্রগল্ভয়া সমর্থয়া প্রমপদ প্রদানশক্তরা অপি ভক্তের্বিষয়াভিভবতোরক্ষণং কতরংপ্রয়োজনমিতি ভাবং । ৬১১॥ ভক্তিমতঃ কর্মানধিকারাৎ কর্মত্যাগেপি ন দোষঃ স্যাদিতি ভক্তেমাহাত্মাং লিখতি তাবদিতি ৷ কর্মাণি নিত্যনৈমিন্তিকাদীনি। যাবতা যাবৎ ননির্বিদ্যতে কর্মফলেষু ঐহিকামুগ্মিকবিষয়ভো-গেযু বা বিরক্তোনস্যাৎ। শ্রদ্ধা বিশ্বাসঃ প্রীতির্বা আদিশব্দেন কীর্ত্তনাদিভক্তিপ্রকারাঃ নির্বেদে জাতে মৎকথাশ্রবণাদি আজায়াখা জাতায়াং ন কুর্যাদিত্যর্থঃ। কর্মণাং সাবধিত্বেন সাধ্যদিজে-সাধনপরিত্যাগোপপত্তে: । বাশব্দেন পূর্বতোহস্য পক্ষস্যাধিক্যং স্থচিতং যে বা ময়ীশইতি বং। বৈরাগ্যে জাতেপি কর্মত্যাগোযুক্তঃ কিং পুনবৈরগায়স্য ফলশ্রবণাদৌ জাতে সতীতি ভাবঃ ॥ ৩১২।। বৈশ্বশমপ্যচ্যুতভাববৰ্জিত্যিত্যাদিনা কাম্যকর্মাদের নর্থহেতৃত্বান্তদ্বিহায় হরেলীলাদিবর্ণনারপা ভক্তিঃ কার্য্যেত্যুক্তা ইদানীং নিতানৈমিভিকাদি স্বধর্মনিষ্ঠানমপ্যনা-দৃত্য কেবলং হরিভক্তিরেব কার্যাত্যাহ তাক্তে তি। স্বধর্মণ নিজনিক্সবর্ণাশ্রমধর্মণ তাক্ত্য। ননু স্বধর্মত্যাগেন ভঙ্গন্ ভক্তিপরিপাকেন যদি ক্তার্থে।ভবেন্তর্হিন কাচিচিন্তা। যদি পুনরপক্ এব মিয়তে তভোজ্ঞশ্যত বা তদাচ অধর্মত্যাগনিমির্ভোইনর্থঃ দ্যাৎ ইত্যাহ ভভোতজনীৎ পতিৎ ক্রথঞ্ছিৎ ভ্রশ্যেৎ মুয়েত্র। যদি তদাপি ভক্তির্সিক্স্য কর্মানধিকা কামানর্থশঙ্গা। অঙ্গীরুত্যাপ্যাহ মুধ্য কিং কোবার্থনাপ্তে। ভজতাং স্থয়তঃ ॥ ৩১৩ ॥ একান্তিলকণে মচ লিখিতং শরণাগতৌ। লেখ্যঞ্চ তত্তত্ত্বিরেতং নুদ্চতানিয়াং ॥ ৩১৪ ॥ মনঃ প্রাাদকত্বং প্রথমক্ষাক্ষা । ল বৈ পুংলাং পরোধার্মাইটোভজিরধাক্ষাজ্ঞে । অইহত্তক্যপ্রতিহতা ইয়াজা সুপ্রসাদিতি ॥ ৩১৫ ॥ অতএবোজনেকাদশে । ধর্মাং সভাদ্যোগেতোবিদ্যা বা তপ্যান্থিতা । মন্তজ্ঞাপেতনাজানং ন সম্যক্ প্রপুনাতি হি॥ ৩১৬ ॥ পরমপাবনত্বং ভত্তৈব। ভক্তিঃ পুনাতি মন্নিষ্ঠা শ্বপচানগি সন্ত্রাহ ॥ ৩১৭ ॥ পরমপ্রত্ব ঘটে । এতাবানে লোকেহলিন পুংলং ধর্মাঃ পরঃ স্বৃত্তঃ ভক্তিযোগাভগ্রতি ত্রামগ্রহণাদিভিঃ ॥ ৩১৮ ॥ তত্ত্ব-বোজং পার্মে । কিন্তুস্য বহুভির্মকৈঃ শাক্ষাে কিং বহুবিস্তবিঃ ! বাজপেয়সহস্ত্রেং ভক্তির্যায় জনার্দ্ধনে ॥ ৩১৯ ॥ সর্বান্তগাদিসেব্যতাকারিল্রং । পঞ্চনজন্ধে শ্রিক্সান্তিলা হেলাল্ভৌ। যস্যান্তি ভক্তিভ্রেক্তাক্ষাক্ষান স্থৈতি বিজ্ঞান নামতে মুহাঃ । হরাব্যক্তিস্য কুতোমহন্দুলা ননোর্থেনাস্তি ধাবতোবহিঃ ॥ ৩২০ ॥ অহন্ধারো-

বা শক্তঃ কটাকে যত্র কুবা নীচযোনাবপি অমুষা ভক্তিরনিক্ষা অভত্রমভূং কিং নাভুদেবে-তার্থ:। ভক্তিশাসনাসম্ভাবনাদিতি ভাবঃ। অভদ্বদ্ধিস্ত কেবলং স্বর্ধ্মতঃ কোবার্থঃ প্রাপ্তঃ। অভ-জতানিতি যতা সময়মাত্রবিবক্ষরা। অতএব জ্রিজাবক্ষীতাস্থ । স্বাহত সর্বোপদেশশারঃ স্ব্রি--ধর্মান্ পরিত,জ্যেতি। এক:দশস্কলেচ। তত্মাৎ স্বমুদ্ধবোৎস্ক্রোত্যাদি। ভট্ট সর্ক্ষয়গ্রেশরণা-পত্তৌ লেখানের ॥ ৬১৩॥ একান্তিপ্রকরণে আজ্ঞারৈবমিত্যাদিনা যল্লিখিতং তচ্চাগ্রে শরণা-গতিপ্রকরণে সর্বাধর্মানি হ্যাদিনা লেখাং। এতৎ কর্মাধিকার্মিরসনং তাৎপর্যাদ্বারা স্থুদুড়ং ভর-ভীতার্গঃ।। ৩১৪ !। বৈ প্রবিদ্ধৌ নির্দ্ধারের। পর উৎক্রটোধর্মঃ সূত্র । যাতোধর্মাং । অইংক্রটী হেরঃ ফলান্মস্থানং তদ্রহিতা অপ্রতিহতা বিস্থৈরনভিভূতা । য্যা ভক্তা। আত্মা চিত্তং স্থামের স্থ প্রদীদ গ্রীত আত্র্যাঞ্কফলমুক্তং ॥ ৩১৫॥ অপেতং রহিতং।৩১৬। সম্ভবাৎ জ্ঞাতিনোযাদিপি পুন্তি।। ৩১৭।। তথ্য ভগৰতে।ন।মঞ্হণাদিভিরিতি তক্তেন।মগ্রহণপ্রধানতাভিপ্রেত। ।৩১৮। মট্রের: সাধিটতঃ কিং।। ৩১৯ 🕩 অকিঞ্চনা নিজিঞ্চনা শুদ্ধা বা।সর্বেদেবাঃ সুক্রৈর্টণর্ব্যক্রানা-দিভিঃ সহতত্র সমাগাসতে নিতাং বসন্তি মহতাং গুণাঃ জ্ঞানবৈরাগ্যাদয়ঃ শ্লেমবিকারাবা কুতোভৰন্তি। তত্ৰ হেন্তঃ অসতি বিষয়স্থাধে ভাজ্যোক্ষন্তাধ বা মনোর্ধেন বহিভাক্ত দুরি ধাবতঃ !। ৩২০ ।। আত্মানমন্ত্রিছ বিমুক্তমাত্মচুগিতি পূর্বামুক্তং তদন্তেষণকলমাই ত্রমিতি। তদা-নেল্পকাল এবা প্রভাগালনি প্রমাল্লনি সর্বান্তর্যামিনীত্যর্কালনন্তে প্রিচ্ছিলে আনন্দ্রাত্তে ভ্র মূর্ত্তে ভগবতি ইক্লে। প্রমাণ নিদ্ধামাণ বিশুদ্ধায়া। শনকৈর্বিবায়েতি প্রমভক্তেছু দ্ধুরুত্যা ক্রমেটেণ্র তৎসিক্ষেঃ। যদ্বা শনকৈঃ চিরং ক্রমেণ যোবিদ্য,রূপোগ্রন্থিঃ তমিতি ছুর্ভেদ্য:তাক্তা। নমু তাদশস্য তদৈৰ কথং বিভেদোঘটতে ভতাহ উপপন্নঃ সম্পান্য সমস্তাঃ শক্তয়ো যশ্মিন্। • যদ্ধা উপসানাং প্রপন্নানাং সমস্তাঃ শক্তরোধস্মাত্তশ্মিরিতি। এবং প্রতাগালাদিভগবলাহাত্মা-ভ্যানেন গুর্বং নিক্ষামভক্তাকরণাদহক্ষারাদ্যনপগমেন বৈরেণ কুবেরাক্ষ্টরাস্থ্যা ঘাতিত৷ ইতি

মানুননত্বং চত্তথে প্রীপ্রবংপ্রতি মন্জো। ত্বং প্রত্যাত্মনি তদা ভগ্রত্নতে আনন্দ্রনাত্রউপপর্যমন্ত্রনাত্রো। ভক্তিং বিধায় পর্মাং শনকৈরবিদ্যাগ্রন্থিং বি-তেংসাদি মমাহমিতি প্রকাং । ৩২১ ।। প্রীপৃথুং প্রতি প্রীমনকাদিভিঃ। ঘৎপাদ প্রজ্ঞানবিলাসভক্তা কর্মানয়ং প্রথিতম্পূর্থান্ত সভঃ। তদ্ধরি ভানত্রো ঘত্রানিরুদ্ধন্যোতোগণান্তমরণ ভক্ত বাসুদেবং ।।৩২২।। সর্বামার্গিধিকত্বং তৃত্যিয় প্রীকাপিলেয়ে। ন যুক্ত্যানয়া ভক্ত্যা ভগ্রত্যথিলাত্মনি। সদ্শোহন্তি শিবং পত্যা যোগিনাং ব্রক্সিক্রে ।। ৩২৩ ।। ষ্ঠে চ। স্থীচীনোহ্য়েং লোকে পত্য জেনোইক্তাভয়ঃ। সুশীলাঃ সাধবোহত্র নারায়ণপরায়ণঃ ।। ৩২৪ ।। ভত্রবোক্ত্য দ্বিত্রির প্রীবাদ্রায়নিনা। নহ্তোহন্য শিবং পত্য বিশ্বং সংল্ভাবিছ। বাসুন্দের ভগ্রতি ভক্তিযোগোহ্তোভবেং ।। ৩২৫ ।। ভগ্রান্ ব্রক্ষ কংগ্রান তিরিং

জ্ঞাধ্রুবং প্রতি মনোব্রাক্যাভিপ্রায়ঃ সচ কেবলং জ্ঞীশিবস্থাভুগরক্ষাণ্ডমের বিভীবিক্যা স্যায়া ভাষত ইত্যুহং বধাকথঞ্জিত্তভা। মুক্তেরপি অনিছো:। ১২১।। এবং তাদুশত্যানেন পরম জক্তাহেস্কারে: যুলনং লিখিত্ব। ইদানীং কথঞ্জিদিসি ভজনেন তৎ স্যাদিতি দর্শইতি। যথ পালেত যদ্য পাদপক্ষজয়োঃ পলাশানি অঙ্গুল্যঃ তেষাং বিলাসঃ কান্তিঃ তস্যু ভক্ত্য। আ্তাঃ যদ্ধা এতঃ-গীডালিবিলাসৰপ্যাপি ভক্তা। কর্মণ্যেশেরতে যামিনিতি কর্মাশয়োহহস্করেঃ ভদ্রপণ ফদর্যানিং কশাভিরেব এথিতং দূড়ং বদ্ধং সভো বৈক্ষ। উদ্যুখন্তি মোচয়তি ৷ রিক্তা নির্কিশেষা শ্রেদুর্জন্যা মতির্ঘেষাং। নিরুদ্ধঃ প্রত্যাহতঃ সোতোগণই ক্রিয়বর্রেট্রিঃ। অরণণ শর্বং ক্রোভোগণশক্তেনেদণ স্টাতে যথা গঙ্গাদিপ্রবাহন্য কর্থ ঞদিপি বত্নাত্মিরারঃ সম্ভবেদের্বামন্তিয়স্য।পি। ভবস্তবা ক্যাচি-निक्किश्चमा मर्व्यका जुन ज्वतत्वात विनिधा कमाहिए कमाहिष्ट्रवरकः मर्व्यविद्यार्थाज्यक नाम পাহ্রারে যুলনং সমাল সাদেৰেতি। অতঃ শ্লেষেণ রিক্তমতরঃ নির্ব্রের্জয় এবে বুজিং। যথা নাডে! ভজ্যোক্সুধরতি মত যশ্চ তদ্বলিতি সদ্ভাঃ পৃথকত্ত্বন নির্দেশাদ্বক্তিবিমুখানাং মতীনাং উদিতর র মপুক্তেং। এবং তেষাং ভক্তানাদরেণ নিন্দেতি দিক্।। ৩২২॥ ব্যোগিনামপি ত্রহ্মবিদ্ধয়ে আত্ম ভদ্বপরিক্র্রেয়ে মুক্তরে ইতার্থ:। ভক্তা। সদৃশঃ শিবঃ নির্ক্রিয়ং মঞ্লকপোৰা পদ্ধা নাত্তি। ৩১ ৩। অয়ং পন্তা ভক্তিমার্গঃ স্থাচীনঃ সমাচীনঃ যতঃ কেমঃ কল্যাণং। কেমন্ত্রে চেন্তঃ ন কুত শিচ্ছিলা-দেউয়ং যশ্মিন্। यदा কেম: মঞ্লৰপোহকুতশ্চন্ত্রশ্চ । তদেবাহ যত্যশ্মিন্মার্পে অশীলাঃ ক্লপালবঃ মাধবোনিস্কামাঃ । অভোন জ্ঞানমার্গবদসভায়তানিমিত্তং ভয়ং মার্গবং মংস্রাদিযুক্তেত্যোভয়ং তেষাং সক্ষত্যাচ স্বর্ণা ক্ষেম্মেরেতি ভাবং ॥ ৩২৪ ॥ অধুনা সর্বমার্গকলত্বেন ভক্তে: সর্বমার্গাধিকত্বমের ছড়ঃতি নহীতি ছাভ্যাং। সন্তি চ সংসরতঃ পুংদেশবহবেশমোক্ষমার্গাঃ কিন্তু যতঃ পথোহমুটিতাৎ ভক্তিযোগোভাবেৎ । - অতোহন্যঃ শিবঃ স্থারপোনির্বিল্লপ্র নান্ত্যেবতার্থঃ।। ৩২৫ ।। অতস্তদাহ । ভগ-বান্ বেকা কৃটস্থ: নির্কিবর: একাগ্রচিন্তঃ করিতার্থ: জি: জীন্ বারান্কাৎমের্ন সাকলোন ব্ৰহ্ম বেদং অধীক্ষ্য বিচাৰ্য্য যতঃ আশ্বনি হরৌ রতির্ভবেৎ তদেব মনীবয়া অধ্যবস্থ সন্মার্গ द्वन नव्खाप्तन वा निक्ठिवान्। अदः तिक्ट्डिप्यन खिलायागरेनाव् नवार्गदः मर्निङः। यदा

ক্ষাহ্যকারণয়োরভেদবিবক্ষরা রতিরেব ভাজিবোগইভাভিপ্রেডং। যদা যতোভাজিবোগাৎ তদিতি তে॰ ইতি ভক্তিযোগমাধাল্লামুক্তং। ১২৬॥ সমস্তানাং সিল্লীনাং অর্থানাং জীবনং ভক্তিরে নেতি তাং বিনান হারিতার্থঃ।। ৩২৭।। জীবন্তি সিদ্ধাতি।। ৩২৮।। ঈশ্নিতানভীটাং পর-মান্ত্রকীং গতিং ফলং।। ৩২৯॥ হারামনে হরঃ মুক্তাবল্যোবা 1 তৈশ্চ সর্বাণি ভূষণাণি উপ-লক্ষান্ত। স্থানি রাজ্যাদিসম্পঞ্জরঃ । ২রিভাক্তভোদুরে ন ভবন্তি কিন্তু তদাশ্রিতানি ততএব লভান্তইতার্ধঃ॥ ৩৩০॥ অতৈইকং শুঃভক্ষান্ধোচরং ঔপ:ন্যদ্মিতার্থঃ। যদ্বাং নিদ্ধান্ত্রন প্রাণ্যপদং যথ মোক্ষাথ্যং বা তচ্চ । যদা কলাভিদক্ষিরহিতং প্রেম চ জনরতীতার্থনা ৩৩১॥ ইত্রৈঃ ভীর্যযাত্রাত্রাদিভিরপি শ্রেরঃ সাধনৈর্ঘ্যবিঃ সত্ত্যাদি । তৎ স্ক্রমনায়াসেনের লভতে। তথা স্থামপ্ৰৰ্গং মদ্ধাম চ বৈকুণ্ঠং লভত এব। এদি বাঞ্জতীতি বাঞ্জা ত নাস্তীভু ক্তং । তত্ত কথঞ্চিতি স্বৰ্গাপবগয়ে স্তুচ্ছতাম সুভবিত্তং। কিন্তা স্বৰ্গে দেবতাঃ জীনিফুং দুষ্টুং স্বৰ্গং ভক্তিবিশ্বনাংশাধিক ছুংখতরণার্থঞাপব গং বৈকুঠ লে।কে সাকাং মংদেবার্থং চেত্যেবং প্রকারেণ বাঞ্জি চেশি হার্থঃ । বৈকুও বাঞ্চি ভত্রতাবিভূতি প্রবণাৎ ভক্তির মধুতত্বেনা-নন্যাপেক্যাত্বাদ্বা ।। ৩৩২।। অকামঃ একাস্তভক্তঃ । সককামঃ ব্ৰহ্মবৰ্চস কামস্থিত্যাদাক-লোকোক্তরন্মবর্চনাদিকাম:। উক্তাহকাখিলকামোবা উদারধী: মহাবুদ্ধিশেটে । তদা পরং পুরুষং শ্রীরুষ্ণং ভক্তেও। তীত্রেণ দৃদ্দেন। যদ্ধা অকামোটেখরাগ্যকামঃ। উদারধীঃ ভগ-बेरिक প্রাপ্তিকামোবা । অনাৎ সমানং ॥ ৩৩৩॥ অনিমিত্তা নিছামা শিছে মুক্তেরপি গরীয়দী । মুক্তিশানুষঞ্চিকী ভবভোবেতাাই যা ভক্তিঃ কোশং **লিঞ্গ**রীরং জরয়তি का शरू । अपन्नः विदेनव निष्की मृष्टीखः । निगीर्नः जुक्तमाः कार्ठता श्रीर्येश करमः छीछ। (प्रवानाः श्वानकानामिन्यापिकाकाका नमःगृहीयः। उत्र छक्किनकाराकः गतीय-

জরয়ত্যাশু সা কোষং নিগার্ণমনলোষথা।। ৩৩৪ ।। পঞ্চমে শ্রীয়ষভদেবচরিতান্তে।

যস্যামের করমজাজানমবিরতং বিবিধন্ত জিনসংসারগরিতাপোপতপ্যমানমন্
নুস্বনং স্নাপয়ন্তন্ত্রৈর পরয়া নির্ভিটা হাপবর্গমাতান্তিকং পরমপুরুষাথমপি স্বয়মাসাদিতং নএবাজিয়ন্তে ভগবদীয়জেনৈর পরিসমাপ্তস্করার্থাঃ

।। ৩৩৫ ।। দ্বাদশে চ শ্রীমার্কপ্রেম্বাদিশ্য শ্রীশোবাক্তেনি । নৈবেচ্ছত্যাশিষঃ কাপি ব্রহ্মর্থমান্ধপুতে। ভক্তিং পরাং ভগবতি লক্ষান্পুরুষেইবারে

।। ৩৩৬ ।। অভএবোক্তং পঞ্চমে শ্রীভগবতমুদ্দিশ্য বাদরায়নিনা । যোদ্যাজেকিতিসুভস্বজনার্থনিরান্ প্রার্থটিং শ্রিমং নুরববৈরং সদয়াবলোকাং । নৈচ্ছামুগক্রদ্দিশ্য

ভগবতা। ন পরমেষ্ঠাং ন মহেন্দ্রিক্ষাং ন সার্বিভৌমং ন রসাবিপত্যাং । ন যোগদিন্ধীরপুনর্ভবং বাময়্যাপিতা জাক্ত্তি মদ্বিনান্ত। ৩৬৮ ।। ভাত্রবাস্তাং মঠে।

শ্রীক্রপুনর্ভবং বাময়্যাপিতা জাক্ত্তি মদ্বিনান্ত। ৩৬৮ ।। ভাত্রবাস্তাং মঠে।

শ্রীক্রপুনর্ভবং বাময়্যাপিতা জাক্ত্তি মদ্বিনান্ত। ৩৬৮ ।। ভাত্রবাস্তাং মঠে।

শ্রীক্রপুনর্ভবং বাময়্যাপিতা জাক্ত্তি মদ্বিনান্ত। ৩৬৮ ।। ভাত্রবাস্তাং মঠে।

শ্রীক্রদ্রেণ। বাসুদেবে ভগবতি ভক্তিমুদ্বহতাং ন্লাং। জানবৈরাগ্যার্থিয়ারং নেহ
কশ্চিদ্বাপাশ্রয়ঃ।। ৩৬৯ ।। বিষ্ণুপুরাণে চঞ্জীপ্রহুলাদেন । ধর্মার্থকানিরঃ কিন্তন্ত্র

স্ত্র্প ভক্তেম্বরৈবোক্তং নৈকাত্মতাং মে স্পৃহয়ন্তি কেতিদিত্যাদিল্লোকপঞ্চনে । ভদত্রানু 🕾 যোগান সংগৃহীতং। এবমন্যদপুহাং॥ ৩৬৪॥ ভগব্তি তল্মিন্ বাফ্দেরে একাফ্টোভ জিবন রোরপি সমনুবর্ত্তইতি পূর্বাগদ্যান্তজিরনুবর্ত্তএব । অভোষস্যাং ভক্তানের নত্ত নোগাদিয় অনুস্বন মবিরতং চাসানেং সাপেরভুইতি পরিমানকরেদময়ত্ব স্থতিতং। আত্যান্তিকং পরমপুদ্ধার মপি । যন্তা । আত্যত্তিকং শাযুজাকাপমণি । অতঃপরমপুকুকার্যমপ্যপ্রকং মোকং । মন্ত্রা নিল-বর্গং আতান্তিকপরমপ্রবার্থং ঐটবকুঠলোকমলি। এবং সতীদং গদ্যমত্রে স্বতঃ পরমপ্রবার্থ-তায়াং দ্রন্থ য়ং এবমন্যদপি জ্ঞেয়ং। স্বর্ম ব নিতং আত্মনৈর প্রাপ্তং যদ্ধা ভগবতা স্বয়:মব দীয়-মানম্পি। অনাদরে হেওঃ। ভগ দীরত্বেনৈর পরিতঃ স্নাপ্তাঃ স্মাক্প্রান্তাঃ স্কের পুরুষা-র্থা থৈঃ।। ৩৩৫।। আনিধিঃ অভাুদর্লক্ষণঃ উত্ত সিতৌ তত্র হেতঃ ভ্কুনিতি অব্যয়ে পন্পূর্ণে পুরুষে শ্রীক্লফে।। ৩৩৬।। য তার খুতে হেসৌ নৃপঃ দ কিত্যাদীন্ নৈচ্ছদিতি যৎ তত্তিতং। স দরাবলোকাং ভরত্ত্য দরা যথাভবতি এবমকলৈকোষ্ণ্য ভামিতি পরিক্ষনাবলোকঃ শ্রিরামুপ-চর্যাতে। যদা সাক্ষাৎ ভূতাং ভরতং রূপরাবলোক্মন্ত্রীমপি সর্বাসম্পদ্ধিষ্ঠাত্রীং লক্ষ্মীমের। যতঃ মধুদ্ধিষঃ দেবায়াং ভক্তে কণ্যাংচিদ্ধা পরিচ্ন্যায়ামপি অনুরক্তং মনোপি নত প্রস্তুং শর্কেন্দ্রিং যেষাং ভেষাং মহতাং অভবঃ মোকোপি কলুঃ ভচ্ছ এব।। তথা। রুষাধিপত্যং পাতা লাদিস্থাম্যং। অপুনর্ভবং মোক্ষমপি। পারমেট্যাদ্যপুন ভবাত্তেষেষু ক্রমেণ প্রভাবভাক্তেন্যন-ভয়া তেবাং নানতাভিপ্রায়েটেণবং ব্যাথেয়ারং। পারমেভামিগি নেচ্ছতি কিম্পুনর্মহেল্রবিফ্সি-ত্যাদি। মদ্বিনা মাং হিত্বা অন্যায়জ্ঞতি অহমেন ত্সা শ্রেঠইতার্থঃ। যদ্বা মদ্বিনা মন্ত্রজিং বিনা অন্যৎ ঐবৈকুঠবাসাদিকম্বি নেচ্ছীভার্থঃ॥৩৩৮॥ তদেব সর্ক্রেনরপেক্ষ্যেণ দ্রচয়তি ৰাস্থদেবইতি ৰাভ্যাং। জ্ঞানবৈরাগ্যয়োৰ্বীৰ্য্যং ৰলং বেষাং তয়োরপি বীৰ্ষ্যং যেভাইতি বা। ব্যপা প্রায়ঃ বিশিষ্টবুক্ষ্যা আশ্রয়নীরে। হর্ষেনাস্তি ॥ তওল।। করে স্থিত। অধীনা ভূদিতার্থঃ। অতস্তদ্যা- মুক্তিন্তা করে থিতা। সমন্তজ্গতাৎ মূলে যান্য ভক্তিং ন্থিত। বৃথি । ১০৪০। অভএবোক্তৎ নার্নিংছে। পত্রেষু পুজ্পেষু ফ্লেষু তারেষুক্রীতলভাষু সদৈব সংসু।
ভক্তাঃ সুলভ্যে পুরাণে মুক্তৈঃ কিন্মর্থৎ ক্রিয়তে প্রয়ন্থা ৩৪১।। অভএবাক্তৎ প্রথমন্থকো। আত্মারামাশ্চ মূনরোনিপ্রস্থাতপু,রক্রেলা । কুর্বন্তঃহৈত্তকীং
ভক্তিনিখামূতন্তণে হরিং ।। ৩৪২ ।। শ্রীবৈকুন্ঠলোকপ্রাপকত্বৎ । বামনে। যেযাক্রেগদাপাণে ভক্তিরব্যভিচারিণী। তে যান্তি নিয়ত্তং স্থানং যত্র যোগেশ্বরোহরিং
।। ৩৪০।। স্কান্দে । মুনির্জাপ্যপরোনিত্যং দৃতভক্তির্জিতেশিরুং । স্বগ্তেহিপা
বসন্ যাতি ভরিফেং পরমং পদ্ধ।। ৩৪৪ ।। ততীরক্তকে শ্রীবৈকুন্ঠবর্ণনে । ইটা
ব্রজন্তানিম্বাস্বভানুব্ল্যা দূরে যমান্ত্যপরি নং স্পৃহনীয়শীলাং । ভর্ত্মিথিং সুযুদ্দেশ
কথনানুরাগবৈক্তব্যবাপ্যকলয়া পুলক্রিতাস্কাং ।! ৩৪৫ ।। দশ্যে চ শ্রীবন্ধান্ত। ।

ম দ্রোনাম্বীতি ভাবঃ। যদা স্বাশ্রিতেভ্যোমুমুক্ষুভ্যোদার করে গৃহীতেভার্যঃ। অভস্তসাং স্থ প্রাব্যবৈরপেক্ষমের সিদ্ধং। সমস্তজ্গতাং সাধকানাং সিদ্ধানাঞ্চ সর্বেষাং মূলে আশ্রয়ে। অতোরলাপেক্ষয়া পত্রাদি স্থানীয়াম্যুপেক্ষ্যাণ্যেবৈতি ভাবঃ॥ ৩৪০॥ অক্রীতেম্ব চ তেমু তথা-পি লাভ্যেষ্ সংস্কৃ। যদ্ধা। ভাবে ক্তঃ ক্রন্তুং বিনাপি লভ্যেদ্বিত্যর্থ। <mark>এবং ভক্তিসাধনানাং স্থ</mark>ানভতা দ শতা। তক্তা। চ হলতে পুরাপি নবং পুরাণঃ জ্রুঞ্ইত্র্থং তিমান্ইতি ভক্ষনীয়দ্য হৃস্ধ্তা দর্শিতা। মুক্তৈর প্রণত্নঃ কিমর্থং ক্রিয়তে। আনুষঙ্গিকত্বেন তস্যাঃ স্বত্তবসিছেঃ ৷ কিহা সংখ্যে সিল্লে সাধনপ্রয়াসানুপ্রোগাং । প্রমবস্তুনি স্থলতে ওচ্ছ বস্তুর্থং প্রয়াসোহনুচিতইতি ॥ ৩৪: । আত্মারামা ব্রাহ্মনিষ্ঠাহ্মপি l হাতএব নির্ম্মন্ত্রাগ্রন্থিভ্যোনির্ম্যতাঃ। তছক্রং গীতঃস্থ ।যদা তে মে:হ কলিলং বৃদ্ধির্বাতিতরিষ্যতি। তদা গন্তাদি নির্বেদং শ্রোতব্যস্য প্রত্তম্য চেতি। যদ্বা যদ্বা এছি-রের প্রতঃ নিবৃত্তক্ষরপ্রত্যুইত্যর্থ: ৷ নকু মুক্তগনাং কিং ভক্তেত্যাদি সর্কাক্ষেপ পরিহারার্থমাত্ ইপংভূতগুণটতি। অতানিকাচনীয় পর্মাকর্ষকভক্তিগুণস্বাদিতার্থ:। তচ্চ শ্রীভাগবতামূতোস্তর খণ্ডে ব্যুৎপাদিতমেবান্তি ॥ ৩৪২ ॥ যোগেশ্বরোভিন্তিযোগপ্রায় ॥ ৩৪৩ ॥ জ্বাপ্যং ভগব-ভোনস্ত্র: নাম বা তৎপরঃ অতোদৃঢ়ভক্তিঃ । অতএব জিতেন্দ্রিয়া বিপরীভোবা হেন্ডভেন্ত মদ্রংবঃ । ৩৪৪। যাচ নোহস্মাকং সর্বদেবানামুপরি স্থিতং ব্রন্ধন্তি। কে অনিমিধাং দেবানাম্যভঃ শ্রেফোহরিস্তস্যাত্রব্রা ভক্তা দূরে যমোযেষাং তে । যদ্ধা। দূরীক্ত্রমনিয়মাঃ । দূরে ২ হমিতি-পार्टि जुरीकु जाङकाताइ छ। प्रभा ह नीग्नः कक्षणीप जनक क्षापि वा भी मः खजारवारयशः। যদা। অস্মৎপ্রার্থ্যং শীলং যেষাং। কিঞ্চ ভর্ত্তুইরেয়ং স্থযশুন্তস্য মিথঃ কথনেন যঃ প্রেমাবিভাব-ন্তেন বৈক্ল য়ং বৈবশ্যং ভেন যা বাশকলা ভয়া সহ পুলকীক্লতমঞ্চং যেষাং ভে। ইভাসুবৃত্তিগক্ষণ-মুক্তং। যদ্বা। তথা ভূতাং সম্ভোৱ জম্ভীতি গমনপ্রকারং । যদ্বা ন উপরীতি ব্রক্তাং বিশেষণং। নিরহঙ্কারত্বাদপ্যশক্তোপি ষেহধিকান্তেইত্যর্থ: ॥ ৩৪৫॥ ভবৈত্যব বৈকুঠপ্রাপ্তির্নান্যথেত্যক স্দাচারং প্রমাণয়তি। ভূমন্ ছেমপরিচ্ছিয়মাহাত্ম ইহ লোকে পুৰং যোগিনোহপি সতঃ যোগৈ জ্ঞানমপ্রাপ্র্য পশ্চাত্ত্বপ্রিত্বাঃ স্থায়ি অপিতা লৌকিক্যপি ঈহা চেন্টা বৈত্তে। নিজকর্মলক্য়া

भूरवश् जूगन् वश्वाणि राणिनजुन निर्वण निक्क प्राण्य वा । वितृष्ण जरेखा व राणिन श्राण्य अराणित इर्ष्णाः कृष्ण क लिए श्राः । १०८० ।। व्याण निर्वाण विश्वाण कर्षण । अराण मान्य प्रकृष्ण मान्य वा राणा कर्षण कर्या कर्षण कर्षण कर्षण कर्या कर्या कर्षण कर्या कर्षण कर्षण कर्या कर्या कर्या कर्या कर्या कर्

জুনপিটেভনিটিজঃ কর্মাভির্মালফটোল্সিয়া। অপিতি। ঈহা ত নিজকর্মাণি ত তৈতারটোলেগ্য পদং। কথোপনীতয়া কথয়া ত্বংসমীলং প্রাপিত্যা । বদা কথরা উপস্থাপিত্যা কথাপ্রধানতা ভার্বঃ। যদা কথাপ্রবর্ত্তিরেভার্বঃ। ভারতার বিসুবা ভারং হোরা অঞ্চল মথেনৈর তে প্রাং প্রমাং গম্যতইতিগতিং গম্যপদং প্রাপ্তাঃ॥ ৩৪৬॥ হে অত্রাজ্যাঃ দেবস্থাদিক মুকুন্দ্স্য ✍ । পুনায় নালং ন সমর্থং। বৃত্তং সদাচারঃ। অমল্য। নিজাম্যা বিত্তক্ষ্যা বা। বিভ্যনং নটন্যতিং মত্ত তাত্মিকমিত্যর্থঃ।। ৩৪৭।। অভিজনঃ সংকুলে জন্ম । রূপং দৌন্দর্য্যং। তপঃ স্বধর্মাচরণং জ্ঞাতঃ পাণ্ডিত্যং। ও**জঃ ইন্দ্রিরসু**গ্যং। তেজঃ কাণ্ডিঃ। প্রভাবঃ প্রভাপঃ। বলং শারীরশক্তিঃ। পৌর্ষেষ্ং উদ্যুমঃ। বুদ্ধিঃ প্রান্তর্থা থোগোহকাঞ্জঃ। এতে ধন্যদয়োছাদশাপি শুণাঃ পর্ব্য প্রাংসঃ ঞীকুঞ্স্য ত্রারাধনা**য় সাধনায় ভঙ্গনোপক্র**ণায়াপি ন ভ্রতি কিয়ুত স্তুট্ট্য। চি যতঃ কেবলয়া ভবৈজ্যব গজেন্ত্রার **ত্তিটা ২ভবৎ**॥ ৩৪৮॥ ব্যাধন্যাচরণং কিং ধ্রুবন্য চ বয়ঃ কিং বিগুরুন্য বংশঃকঃ অপিত্তন কোপি দাস্যাং জাতত্বাং। যাদবপতে ক্রাসেন্স্য। অতঃ কর্মাব্যাবিদ্যা-দিভিগ্নু গৈৰ্ন ন্তন্যতি কিন্তু কেবলং ভবৈত্যব। যতঃ ভক্তিরেব থিয়া প্রীতিকরী যদ্য সঃ।। ১৪৯।। ভক্তা। প্রতিয়া উপছতং স্বীরুতং ধধা সাপ্তেগাংকামি। প্রাতাত্মনোনিছামস্যা ১৫০।। ন তস্য ভোষ্টেতঃ সংকুলজনাদি কিন্তু ভক্তিরেবেত্যাই। ন জন্মতি। মহতঃ পুরুষাজ্জনা যাত্র। মহতঃ-বৈক্ষবস্যাপি ন ভোষহেন্তঃ কুভোজগবভইতার্থঃ। সৌভগং সৌন্দর্যাং আক্রতির্জাতিঃ। যদ্বস্মাৎ তৈজ্ঞাদিভিবিতিফীন্ ভাজানপি নো বনচরান্বত অহো লক্ষণাগ্রজোৎপি দখিত্বে ক্ত-বান্।। ৩৫ ।। তর্হি কেনোপায়েন ত্বং প্রাপ্তঃ শক্যঃ তত্রাহ ভক্তেরতি । অনন্যরা মদেকনি ইয়া জান্তং অন্ত্র্ণ তল্বেন প্রবেষ্ট্রণ পরস্তুপ 11 ৩৫২।। একাদশক্ষান্ধ চ। প্রীভগবদুর্বসন্ধানে। যথাবিনা স্নেনলং জহাতি ধ্যাতং পুনং স্বং ভজতে চ ৰূপং। আত্মা চ
কর্মানুশরৎ বিপুর মন্তুল্তিযোগেন ভঙ্গভাগো মাৎ 11৩৫৩।। কিঞা ভল্তানাদ্ধানপারিন্যা সর্বলোকমহেশ্বনং। নর্বোৎপত্তাপারৎ ক্রন্সা কারণং নোপয়াতি
সং 11 ৩৫৪।। প্রীভগবদ্ধনীকারিত্বং। পাত্মে কার্ত্তিকমাহাত্ম্যো প্রীনারদ শৌনকসম্বাদে। ভল্তিৎ মুন্তিং হরির্দদ্যাদ্র্জিতোন্যত্র সেবিনাং। ভল্তিঞ্চন দ্যাত্যের
যতেবিশ্যকরী হরেং।। ৩৫৫।। ভত্তৈর বৈশাধ্যমাহাত্ম্যো প্রীনারদায়রীবসম্বাদে।
মায়াজানিরমায়ে। হসো ভল্তাা রাজন্মনার্য়া। নাধ্যতে সাধুপুরুষণ স্বয়ং জানাতি
ভন্তবাদ্যা ৩৫৬।। একাদশক্ষ্যে চ তত্রেব। নু সাধ্যতি নাং যোগোন সাংখ্যৎ
ধর্মান্ত্রন । ন স্বাধ্যায়ন্তপস্থাগোষ্থাভল্তির্যনান্ত্রিতা। ৩৫৭।। ভল্তাহ্মেক্যা
প্রাক্তঃ শ্রম্বাত্ম, প্রিয়ং সভাং । ৩৫৮।। স্বতঃ পরমপুরুষার্থত। তৃত্তিংক্ষ্মে
প্রিকাপিলেয়ে। সালোক সান্তিলামীপ্রসাক্ষ্যোধাপাখ্যানে। প্রীভগবদদুল্তৌ।
বিনা মংসেবনং জনার। ৩৫৯।। নবসক্ষ্যোগ্রায়ামাপাখ্যানে। প্রীভগবদদুল্ডৌ।

বিশ্বদায় বা ভক্তা। এবস্তুতোবিশ্বব্যোগণবিভিন্নতে চ জীদৈবকীগার্জাতঃ এনিশোদা বাংলিতো দামোদরোনিওাকিশোরকেতাাদিরপঃ । তদ্মে<mark>ন পরমার্থতোভ্রাতং শ</mark>কাঃ। শাস্ত্রতঃ প্রবেন্ট্রপ যম্মান্ত্রন নিত্যনিক্টবর্ত্তিত্বাদিন। বাহং ভ্রাত্তং শক্যঃ নচান্যৈরুপারিঃ ৮৩৫২।। 'দ্ৰুক্তি ব সকলমলাপগ্ৰমত্যোভগৰংসজ্মোনান্যথেতি সদৃষ্টাস্তমাহ। যথেতি। যথ: অগ্নিনা ধ্ৰুতং ত।পিতমেৰ হেম স্বৰ্ণং অমুম্লং জুহাতি নংফালনাদিভিঃ স্থানিজং ৰূপণ্ণ ভজতে। কৰ্মানুশ্যং কর্মার্শিনন । মাং ভজতে ম্য়া সঙ্গমমাপদ্যতে ॥ ৩৫৩॥ মহেশ্রত্বে হেইঃ। স্বাস্থেপন্তা-প্যায়ে বিশান্তিং। অভ্যাব ভদ্য কারণং মাং প্রকা সচিদানন্দ্রিগ্রহং। যদ্ধা ব্রহ্মণোরে দ্ব্য জীবভত্বস্য বা কারণং প্রব্রহ্মরপং মাং দেবকানন্দনং উপস্থাতি সামীপ্যেন প্রাংগাতি নিত্য সঞ্জিতরা মিলতীভার্থঃ ॥ ৩৫৪॥ অনাত্র শ্রীমণুরেতরস্থান। অর্চিতঃ সন্ দেবিনাং ভল্লাসপি ভক্তিং প্রেমলক্ষণাং। यदा। সেবিনাং পূজাপরিচর্য্যাকারিণানপি সমগ্রাং ভক্তিং ন দদাভি।৩৫৫। মায়া জায়া অধীনা বদা স মায়াজানিঃ। অতঃ স্বয়মমায়ং মায়াবিকারর হিতঃ। যদা ন বিদ্যুত মায়া বক্ষাৎ সং । ভক্তশনাং মায়োনিবওকেইতার্থঃ । অমায়য়া বিশুদ্ধয়া ভক্ত্যা সাধুভিঃ পুরুটেয়ঃ। যদা। সাধু যথাস্যান্তথা যৎ সাধাতে বলীক্রিয়তে তদ্ভবানের স্বয়ং জানাতি ভবতা ভদ্বশী করণাৎ অতস্তন্ময়। কিং নির্বেচনীয়মিতার্থ: ॥ ৩৫৬॥ ন সাধয়তি ন বশীকরোতি। উজি তা প্রিয়ইত্যর্থঃ। যদা। আলাপি অপ্রিয়োযমাৎ দ পরমপ্রিয়তমইত্যর্থঃ।। ৩৫৮।। সালোক্যং ময়া সহ একস্মিন্লোকে বাসং। সাটিং সমানেশ্বর্যাং। সামীপ্যং নিকটবর্ত্তিত্বং। সাত্রপ্যং সমান-ৰূপতাং। একত্বং সাযুক্ষ্যং। উত অপি। দীয়মানমপি ময়া। মৎসেবনং মন্তক্তিং ॥ ৩৫৯॥ বশে কুৰ্বস্থি মাং ভক্ত্যেতি হুৰ্বাদসং প্ৰতি জ্বিতাবতা পূৰ্বদ্যোকতউক্তং। নমু ভেষামপেক্ষিতং কিঞি-मना९ ध्रमाञ्चानः च्राञ्चशिक हिल्लाह् मर्मित्रिकि। स्वीतः च्राः स्वाक्षमिति। स्वाहिनस्मन

নং প্ৰের প্ৰতীত নত সালোক্যাদিচ ভ্ৰম্য থা নেচ্ছ ভি সেবয়া পূর্ণঃ কুতোইনাৎ কালবিপ্ল তুমি ভি 11 ৩৬০ 11 মহাত্মাৎ যচ্চ ভগবদ্ধ কানাৎ নিথিতৎ পুরা। তড়স্কে-বিপি বিজেয়ং তেষাং ভক্তৈয়েব তত্ত্বভঃ 11 ৩৬১ 11 তথা পূজা তদকানাৎ শ্রীমন্নাম্যে-হপারস্য চ। দ্রকীব্যমিহ মাহাত্মাৎ তেষাং ভক্তাঞ্চতা যতঃ 11 ৩৬২ 11

অথ শ্রীমন্ত্রগবড়জিনিতাতা। যাবজ্ঞনোভন্ধতি নোভূবি বিষ্ণুভজিবার্ডাসুধা রসবিশেষরদৈকসারং। তাবজ্ঞরামরণজ্মশতাভিঘাতদুঃখানি তানি লভতে বহুদেহজানি।। ৩৬৩।। দশনে ব্রহ্মস্তাতিংভজি সুদ্স্য তে বিভো ক্রিশ্যন্তি যে কেবল বোধলর্য়ে। তেষামসৌ ক্রেশলএব শিষ্যতে নান্যদ্যগা সূলত্র্যাব্যাতিনাং।। ৩৬৪।। একাদশে। মুখবাহূরুপাদেভঃঃ পু্রুষস্যাশ্রমিঃ

সাৰ্ণ্যসামীপ্য সাযুজ্যানি । সেবয়া মন্ত জৈয়েব পূর্ণাঃ পরিপূর্ণকামাঃ পরমানন্দরসভূতাবা। সেবাং বিনা নান্থ কিমপি বাঞ্জীত্যা । ভাজেরেব স্বতঃ পরমকলম্বাং । সদা ভাজ্যান্কাসক্তমান্তের কাসক্তমান্তের কাসকলম্বাং । সদা ভাজ্যানকাসক্তমান্তের কাসক্তমান্তের ক্রের্যালি হর্ষাসসং প্রতি বাক্যতাং পর্যাং ॥ ৩৬০ ॥ এবং পাপপ্রায়শ্চিত নিরসনমারভা স্বতঃ পরম পুরুষার্থতাপ্রাপ্তঃ শ্রীমন্ত ক্রেমাহাল্মাং লিখিয়া ইদানীং পূর্বেলিখিত-মখিলং তক্তমাহাল্মামপি ভক্তিমাহাল্মাএব পর্যারসায়ের মাহাল্মামিতি দ্বাভ্যাং।তব্যাহাল্মাঃখতেনে মখিলং তক্তমাহাল্মান ভিত্তির পর্যারসায়ের কর্মাহাল্মামিতি দ্বাভ্যাং।তব্যাহাল্মাঃখতেনে ব্যাং ভক্তানাং তব্যাহাল্মাং ভক্তার হেন্তনা ভবতি।৬৬১। তথেতি পূর্বেলিখিতসমূক্ত্যে পূজ্যাঃ তস্যাঃ পূজায়া অঙ্গানাঞ্চ শ্রীমন্ত্যামূশ্চ অপরস্য চ শ্রবন্তীর্থনাদেঃ অত্যে লেখ্য নাক্রান্ত প্রস্তাসান্তের। প্রত্যাব্যাহাল্মাং তথ্য স্ক্রান্ত ভিত্তমাহাল্মা ক্রিনাদেঃ অত্যে লেখ্য ব্যাহাল্মাং ভিত্তির ক্রমাণি ভক্তেরের ক্রমানীত্যথঃ। ৩৬২ ॥

এবমস্থানে গুণ্সমুদয়ং লিথিত্বা ইদানীমকরণে প্রত্যবায়ং লিথতি যাবদিত্যাদিনা পতত্যধ ইত্যন্তেন বিষ্ণু ভক্তের্বার্জা অন্যোন্যকথনমপি অধারসস্তং যাবদ্ধনান ভল্পতি ভক্তা নাশ্রতি। জরামরণজন্মনাং শতং বাছল্যং অভিযাতশ্চ নরকাদিয়ু প্রসারঃ। যদা জরাদিশতস্য যানি হংখানি তানি অনির্বাহনীয়ানি । এবং সংসারমহাত্রংথজালানিবৃত্তিরুক্তা।। ৩৬০। ভক্তিং বিনা তুজানং নৈন সিন্ধোদপত কেবলং ছর্থমেব স্যাদিত্যাহ শ্রেয়ইতি শ্রেয়ণাং অভ্যুদয়াপবর্গলক্ষণানাং সৃত্তিঃ সরণং যস্যাঃ সরসইব নির্বারাণাং তান্তে তব ভক্তিং উদস্য ত্যক্তা। শ্রেয়সাং মাগভ্তামিতি বা। তেষাং কেশলঃ ক্লেশএব শিব্যতে। অয়৽ ভাবঃ। যথা স্থপপ্রমাণ ধান্যং পরিত্যজ্ঞান্তরকানী স্বান্যভাগাংস্ত্রধান্ যেহবল্পত্ত তেষাং ন কিঞ্জিং কলং এবং ভক্তিং জ্জীকতা কেবলবোধায় যে প্রযত্তে তেষামপীতি।। ৩৬৪।। স্বজনকস্য ভগবতোহভজ্ঞনান্যক্রতাকেবলবোধায় যে প্রযতত্তে তেষামপীতি।। ৩৬৪।। স্বজনকস্য ভগবতোহভজ্ঞনান্যক্রতাকেবলবোধায় যে প্রযতত্তে তেষামপীতি।। ৩৬৪।। স্বজনকস্য ভগবতোহভজ্ঞনান্যক্রতোহেণ হর্গতিং যান্ত্রীতি বক্তুং ভগবতঃ সকাশাং বর্ণাশ্রমাণামুৎপজ্নিমাহ মুথেতি। গুণেঃ সত্তেনে বিপ্রঃ সত্ত্রকাভ্যাং ক্রিয়্রঃ রক্তন্তমোভ্যাং বৈশ্যঃ তমদা পুত্রতি। যদা গুণেরু বিঃ ভিশ্ব সহ। তথাচ তৃতীয়ক্রের মুখতোবর্ততেব্রেজপুক্রবদ্য কুরুম্বহ। যস্ত্রেপুবাদ্র্ণানাং মুথ্যাভ্রাক্রান্য বিশোবর্তন্ত ত্রোহর্ত্তকে ক্রেছ ক্রিরেজদক্রত্ত। যোজাতস্ত্রায়তে বর্ণান্যং ক্রাইন কর্তক্তিন্যনির্বাহ্ন বিশোবৃত্তির ত্রোহর্ত্রেকে ক্রিকেরীর্বিভাঃ। বৈশ্যস্তত্ত্বোবার্ত্রাং হুণাং মঃ সমর্ব্রক্ত

নহ। চত্বারোজজিরে বর্ণগুণৈরিপ্রাদয়ঃ পৃথক। ৩৬৫।। হএষাৎ পুরুষাঃ সাকাদাত্মপ্রভাগনির । ন ভজন্যবজানন্তি স্থানাজুনীঃ পতন্ত্যধঃ। ৩৬৬। অতএবোক্তং প্রীন্তগবতা। ন মাৎ দুক্ষ্ তিনোমূঢ়াঃ প্রপদ্যন্তে নরাধমাঃ। মায়য়াপহতে জানা আসুরং ভাবমান্সিতাঃ। নিত্যত্বং হৎ হদস্পানাং ভক্তের্বিলিখিতং পুরা। তেন তেনৈব নিত্যত্বমস্যাঃ সংসাধিতং পর্ব।। ৩৬৭।। লক্ষণানি চ তন্তক্তেঃ প্রিন্তাগবতাদিয়ু। খ্যাতানি প্রবণাদীনি লিখ্যন্তেহথাপি কানিচিৎ।। ৩৬৮।।

অথ শ্রীমন্ত ক্রিলক্ষণানি। তত্র সামান্যলক্ষণ । তৃতীঃ ক্ষাক্ষ শ্রীকাপিলেরে। দেবানাং গুণলিক্ষানামানুশ্রবিককর্মণাং। সত্মবৈকমনসোবৃত্তিঃ স্থাভাবিকী ও যা। অনিমিত্রা ভাগবতী ভক্তিঃ সিদ্ধের্গরীয়সী।। ৩৬৯।।

অথ বিশেষসাধনভত্তিলক্ষণানি। গৌতমীয়তন্তে।দেবতায়াঞ্চ মন্ত্রে চ তথা মন্ত্র-প্রদে গুরৌ। ভক্তিরফীবিধা যস্য ওস্য ক্লফঃ প্রসীদতি। তদ্ভক্তজনবাৎসল্যং পূজায়া-

রং। পদ্যাং ভগবতোজজ্ঞে শুক্রাধা ধর্মসিদ্ধায়ে। তদ্যাং জ্বাভাঃ পুরা শুদ্রা বদৃষ্ট্যা দ্বাতে হিরিতি। তথা আশ্রমাংশ্চ বথাসংখ্যমস্ক্রন্থ সদ বৃত্তিভিরিতি। বদা গুণেঃ বথাসংখ্যং শান্তিবীহাসনার্থান পরিচর্যাদিনপৈশ্চ সহ।! ৩৬৫।। এবাং মধ্যে যে জ্ঞান্তান ভজন্তি যে চল্ডান্তান জ্যানি বর্ণাশ্রমাদ তেশ্চ ভ্রন্তাঃ
ক্রানাল্য বদান ভজন্তি অতএবাবজ্ঞানন্তি। অতএব তে স্থানাথ বর্ণাশ্রমাদ তেশ্চ ভ্রন্তাঃ
ক্রানাল্য বদান ভজন্তি অতএবাবজ্ঞানন্তি। অতএব তে স্থানাথ বর্ণাশ্রমাদ ভ্রন্তানিভোক্রা। ক্রন্তানস্থান্ত ঈশ্বর্মিতি॥ ৩৬৬॥ এবং ভক্তেঃ স্বত্যোনিভাতাং লিথিত্বা ইদানীপ্
প্রব্রলিখিতেন তাবণাদিনিত্যত্মনাপি ভক্তেঃ প্রমনিত্যত্মসবগন্তব্যানিতি লিথতি নিত্যত্মিতি।
ভক্তেরস্লানাং শুবণাদীনাং। অদ্যাঃ ভক্তেঃ পরং প্রমং নিত্যত্বং সমাক্ সাধিতং॥ ৩৬৭॥ ভদ্যা
নিথিঃ মাহান্যায়া ভক্তেঃ শ্রবণাদীনি লক্ষণানি জ্মদ্ভাগবতাদিষ্ খ্যাতান্যের। তথাপি কানিচিল্লক্ষণানি লিখ্যন্তে॥ ৩৬৮॥

দেবানাং দ্যোতনাত্মকানামিন্দ্রিয়ানাং তদধিষ্ঠাত নাং বা সত্ত্বে সমুদ্রে শীভগবত্যের যা বৃত্তিঃ সাভক্তিঃ। এবং শ্রবণাদিলফাণান্যেবাদ্দিটানি ইতি সামান্যতোলকাণং। গুণা বিষয়া লিঙ্গান্তে জাংনন্তে বৈত্যোমিতি সদাবিষয়নিষ্ঠতা দর্শিতা। তেয়ামেবিষধকৃত্ত্বী হেন্তমাহ গুরেং-কুচারণমন্ত শায়তে ইত্যকুশ্রবোবেদঃ তদ্বিহিতমানুশ্রবিকং তদেব কর্মা থেষাং। অতএব এক-মেকর্বপং মনোযান্য পুংসঃ শুদ্ধমন্ত্বসা সভইত্যর্থঃ। যদ্বা। একন্মিন্ ভগবত্যেব মনোন্যা। অস্যা পদ্যা পরেণবা সম্বন্ধঃ। সা চ ভাগবতী ভগবৎসম্বন্ধিনী ভক্তিরেকমনসঃ পুংসঃ সতী জনিমিত্বা নিক্ষামা সতী অতএব স্বাভাবিকী অয়ভ্রমিদ্ধা চ সতী সির্দ্ধোক্ষাদ্বিপ গ্রী-র্দ্বীভ্রতীত্যক্ষঃ। এবমাদো সামান্যলক্ষণমুক্ত্য পশ্চাছ্ত্তমন্ত্রমৃক্তং। কাচিত্ব্যুচিতা ভক্তিরিতি শ্রীদেবত্তোগ্রমভক্তেঃ পৃইত্বাৎ।। ৩৬৯।।

স্মনাঃ শুদ্রতিক্তঃ শুদ্রাভিজিগুক্ত সন্ নিত্যমেকঃ প্রকারঃ । তদর্থে ভগবদর্থং

কানুমোদনং । সুননাঅর্চাহানিতাং তদর্থে দন্তবন্ধনিং ।।৩০০।। তৎকথাশ্রবদেরাগত্তদর্থে চাঙ্গবিজিয়া। তদনুষ্মরণং নিতাং যন্তমান্ধোপজীব ত ।।৩৭১।। তভিত্রট্রিধা চোষা যদ্মিন্ ন্যুত্ত্বপি বর্ত্তে। সমুনিং সত্যবাদী চ কার্তিমান্স ভবেমরং।৩৭২।। সপ্তমক্ষাম শীপ্রক্রাদোজেনা। শ্রবণং কার্তনং বিফোং স্মারণং পাদসেবনং। তর্ত্তান্ধ বন্ধনং দাসাং স্থামাজ্মনিবেদনং। ইতি পুংসার্ধিতা বিফো তভিত্তেলার লক্ষণা। ক্রিয়তে তগরত্যক্ষা তম্মন্যেইধীতমূল্তমং।। ৩৩০।। তত্তির শীনারদহিং তিরসল্বাদে। শ্রবণং কার্তনিক্ষাম্য মারণং মহতাঙ্গতেহ। মেবেজাবনতির্দাস্যং স্থামাজ্মনিবেদনং।। ৩৭৪।। পাল্লে কার্ত্তিকমাহাজ্যো শীঘ্রমধূমুকেউসম্বাদে। শ্রবণং কার্ত্তনং পূজা সর্বক্রমার্পিং ক্রৃতিং। পরিচর্য্যা নমক্ষারং প্রেম স্থালার্থনং করে।। ৩৫৫।। তত্তি বোতরথ্যে শিবপার্বতীন্যাদে। আদাস্ত বৈক্ষরং প্রোক্তং সম্বাভ্রাক্ষন হরেছ। বারণক্ষের্দ্বপূর্ণাণ তল্প্রাণাং পরিপ্রহা। অর্তনিক্ষ জ্পোধ্যানং তল্প ন্যান্ত্রা। কর্ত্তিমং প্রবিদ্ধর বন্দনং পাদসেবনং। তৎপাদোদকদেবার তলিবেদিতভোজ্ঞাং। কর্তিমং অবর্ণকৈর বন্দনং পাদসেবনং। তৎপাদোদকদেবার তলিবেদিতভোজ্ঞাং। কর্তিমং শ্রক্তিমানাঞ্চ সংনেরা দ্বাদ্ধী ব্রতনিত্রতা। তলস্বারোপনং বিফোর্টেবিদেব্দর্থা শান্তিন। ভক্তিয় বেন্ত্রারা বিদ্ধান্ত্রা ক্রিয়া ভ্রেজা তবর্ত্তিয়া তথ্য। বিফোর্টেবিদেব্দর্থা দ্বিত্তি চিত্তি চিত্তি চিত্তি চিত্তি চিত্তি চিত্রিরা ভ্রেজাই তি।। ৩৭৬।। বিফোর্টেবিদেব্দর্য দ্বিত্র চিত্তি চ

গুমনক্ষেন্দার্ঘন ।। ১৭০ ।। তাজবিজিরা হত্যাদিঃ ॥ ১৭১ ৷৷ স্থানিং কবিষাক্ষে সত্যং ভগবর্ষ বদিত্তং জীলম্সা স তথা। স্বত্রব কীর্জিমান্ দেবাদিলীয়্ম,ন্মাল। ১৮ ইতার্কাঃ॥ ৩৭২॥ । পাদদেবনং প্রিচ্ফা)। অর্জনং প্রো। দাস্যং কর্মাণ্ডং। স্থাং তাহি থাসালি। আশ্রমিবেদনং দেহসমপ্রং যথা বিক্রীভ্রা প্রাদেভরণপালনাদি(চন্দ্র) ন জিয়তে তথা দেহং ভট্রে সমর্প্য ভক্তিয়াবর্জনমিতার্থল। ৩৭৩।। অস্য নহত্যংগ্রেঃ শ্রীস্থ্রেক্সা । ইক্সা গুজা । ৩৭৫। স্ক্রে কর্মনোহর্ণণং। এতদের সন্তম্ভরে শ্রীপ্রজ্ঞাদেন দাসামিত্যক্তং। প্রেম নিখানং ভার্নিশে ব্যভিদ্ধেয়স্য প্রেমশক্স্য প্রমক্লতে মুখ্যসুভেঃ অত্এবৈত্থ ভেন তাত্রিব স্থ্যমিত্যক্ষণ প্রেম স্থ্যং এবং স্থানতায়ে নবলক্ষণা ভজিকুজা। প্রবণাদীনামেষানের নবপ্রকারাণাং মুখ্যায়াও। । ৩৭৫॥ তল্পানপি কাশ্চিমুগান্ দশ্যন্ যোভ্শ প্রকারান্ লিখতি আদামিতি চউডিঃ। ইংফারং বিফাভুভক্তিলকণ মিতার্থঃ । হরেঃ শক্ষচক্রান্তামন্তন»। তচ্চ তপ্রান্য:মিতিজেরং। ভদরন हैमान মুখা হাঁহ। তসা হরেশাল্রাণাং তদা হরেনামুাং সারণং। লঘুনঘু শলৈঃ কীর্ন্তনং মনদি বা চিন্তনং। এবং ধ্যানেন কীৰ্দ্তনেন বাগৃহীত্স্যাপি নামস্মরণস্য পৃথক নির্দ্দেশঃ ত্স্য স্বতিপ্রাবিব ক্ষয়া। তেদীয়ানাং উবৈষ্ণবৰ্ণনাং সম্যক্ সেৱা।।৩৭৬।।। এবং তত্ৰ তত্ৰ স্পাইসেকত্ৰোক্ত নি ভাজে-লক্ষণানি লিখিত্বা ইদানীমল্লকান্যপি লক্ষণানি পূর্বলিথিতাদ্যল্পারেণ লিখন্ প্রবেণজিয়াদীনা মিৰ চফুরাণীন্দ্রিয়াণামপি ভগবন্নিহুত্তা তথা মস্তকাদ্যঙ্গানামপি ভগবদর্থচেইয়া ভক্তিরেন তথা প্রকাঙ্গানায়পি ভক্তাশুর্গতত্ত্বেন জীয়ুর্গিদর্শনাদীন্যপি ভক্তিলফণ্যন্যেবৈতি লিখতি দর্শনমিতি ক্রিভিঃ। ক্ষেত্রসা শ্রীমথুরাদেঃ সেবনং তত্র গমনং ভ্রমণং নিবাদক্ত্যের্ঘঃ ইভি প্রায়ঃ পাদে দ্রিয় ষ্ঠু জিনিতা। ধূপশেষদ্য আদিশকেন নির্দ্ধাল্য জলস্যাদেশ্চাঘ্র ৭ং। এবং চফাুস্ত ক্পাদনাশে জিয়- ভগম তৈঃ স্পশ্নং কেত্রসেরনং ৷ আঘানং ধুপশেষ্ট দর্মির্যাল্যস্য চধারণং ৷ নৃত্যং ভগমদত্যে চ ভগঃ বীণাদিরাদনং ৷ ক্ষলীলাদঃভিত্যঃ শ্রীভাগবহুসেবনং ৷ পাদালিকালাদঃদিধৃতিরকাদশ্যদিকাগরং ৷ প্রাসাদরচনাদ্যন তেত্বংশস্থালু সারভঃ !৬৭৭৷ ভিনিতাভগবজ্যা জ্ঞানাং লক্ষণনি চ ৷ ভালি জ্যোলি স্কাণি ভাত্তিব লক্ষণনি ভি ৷৷ ৩৮ ৷৷ ভেম জ্যোলি গৌলি মুখ্যানি চ বিবেকিভিঃ ৷ বহিরজান্তরস্থানি প্রেম সিদ্ধৌ চ ভালি যং ৷৷ ১৭৯ ৷৷ ভেদাস্থ বিবিধা ভাত্তার্ভ ভাগাদিভেদভঃ ৷

प्रक्रिक्षभनकार्याम् निशिष्ट्राम्। शृद्धाः नवनकार्यम् अवगवाकामत्ना गत्याम् विशिष्ट्राम् । विशिष्ट्राम् লক্ষণের চ প'লোদকপান নিবেদিতভোজনাভ্যাং রমনেন্দিয়র্ভিরপলক্ষণং লিথিকং। পারপ ভবাশ্চ তত্ৰ সাক্ষাদ্যোগ্যন্ত্ৰ ভিত্ৰপলক্ষণ ন লিখিতং। ইদানীং মন্তকাদ্সচেই।ৰপলক-গানি লিখতি নির্মাল্যম্যে ভাপিন।। তর চ কৃতিদেক্য্যাঞ্স্য কৃতিৎ দ্বোঃ কৃতিদ্বস্থূনাং তত্রাপি কৃতিং সংহতানামণীত্যেবং বিবেচনীরং। যদাপি বন্দনেন শিরুশেচ্টা রূপলক্ষণং পরিচ্চারা চ ছস্তু!দিচেটাৰূপলক্ষণানি গৃহীতানোৰ তথাপি তত্ত তত্ত্তিৰ বিশেষান্তৰাপেক্ষয়া পুনস্তকেই।ৰূপ-লক্ষণানি নির্দাণ্যধারণবীণাবাদনাদীনি লিখিতানীতি দিক্। ভগবদগ্রতইতি অন্যত্র নর্ত্তনাদে-ত্র্বক্তি জিলক্ষ্য জাবাং প্রেমবৈশ্য হত্যাদেশ্চ ফলপরিকরাম্বর্গ তথ্য দিতি দিক্। তত্র যদাপি াল প্রায়েকেপাদয়োরের চেফা তথাপি সভাতৈরেরাকৈবলৈরপে স্যাদিতি সংহতানামের ক্ষেপ্ত। এবমগ্রেপ্ত্যস্তাপ্ত । তথেতি ভগবদতা এবেত্যর্থঃ। সিহ্ধাস্ক্ষণতা পূর্ব্যদেব। আদিশকেন বংশ্যা-দি। ক্লফ্ষা লীলা আদিশকেন অপাদি তদ্জকরণ জ্ঞানাগ্রন্তসা সেবনং আরণক্রিনাদিপরতা। शकाकवालावाः । अभिभारकम् खन्नेभानामीमाक् भावनश् अकामभार आभिभक्ताक्तवा सेवामि-न ह वार्षो कार्यवर्ग । श्रामानमा क्रियमानसभा बहन निर्मार । उन निक्र होन् वार्षार সবাদিশাং খ্রাক্তাকুসারেণ ভক্তিলজাণং তেরেং।। ৩৭৭।। তদেবাদিশক হৃতি হুমভিযুঞ্জতি নিখি-্লাইতি। ভগৰদ্ধান্ম যে পূৰ্বাং লিখিতাঃ। যানিচ ভগৰদ্ভক্তানাং লক্ষণানি লিখিতানি তানে স্ব্ৰি-ণ্যের ভক্তিলক্ষণানি জ্যেয়ানি। বৈ প্রানিক্ষো ॥৩৭৮॥। তেম্বের কিম্বিছিলেষং দশর্তি তেমিতি। প্রণাদিশর্মের এব লিখিতেযু ভ্রক্তিলক্ষণেয় মধ্যে কানিচিৎ জৌণানি অপ্রধানানি । কানিচিচ মুখ্যানি প্রধানানি বিবিচ্য জেয়ানীভার্য:। যথ যামাথ তানি লক্ষণানি প্রেম নিয়ের সাধনে মহিরজ্ঞাণি অন্তর্জ্ঞাণি চ। যানি বহিরজ্ঞাণি তানি গৌনানি । যানি চাত্তরজ্ঞাণি তানি স্বাস্থানী-ত্যপঃ। বিষেকিভিরিত্যনেন শ্রবণদীনি নব মুগানি। তত্রচ শ্রবণকীর্ত্রনমারণানি। শ্রোতব্যঃ কীর্ত্তিতব্যক্ষ অন্তরেগভগবানুনামিত সারোপদেশাং! তত্রাণি কীর্ত্তনশ্বরেণ ভক্তি ভঁবতি গোখিদে খারণং কীর্ত্তনং ভর্থতি জ্বান্দে ভব্তিবিশেষণ্ডয়া তয়েকেকেঃ। তত্র।প শ্রীভ্গবন্নামসঙ্গর্ভিনং । অঘ্চ্ছিৎ আবণ্মিত্যাদি বচনাং। তচ্চ স্বাং পূসাং লিখিতং। শ্রীজাগনতামৃতোত্তরখণ্ডেচ বিপুত্যস্তি ৷ স্থ্যাত্মনিবেদনে চ ফলপ্রিক্রাস্তর্গত্ত্বেন মুখ্যত্তমে ইত্ত্যেব **বিবেচনম**ভিপ্রেভং ৷ এতচাথিলং জীবোপদেবাচার্যাদিভিমুক্তাফলাদিগ্রন্থেষু জীমমহামুভাবৈশ্চ ভক্তির্যাণ্বে বিশ্বেশ্যে । বিচা দৰ্শিতমেৰান্তীতি বিস্তরতো ন লিখিতং ॥ ৩৭৯॥ কিঞ্চ জ্বন্তানাং ভগ্নৰ দেবকানাং ভাবঃ তামসোরাজনঃ সাজিকল। তথা কর্মজ্ঞানবৈরাগ্যমিখ্রঃ শুদ্ধদেত্যেবং ভেদেন আদিশকাৎ সাধন সাধ্যাদিভেদেন চু ভক্তেক্সছবিধা ভেদা ভবস্তি ৷তে চোক্তাঃ কভিচিৎ

মৃক্তাফলাদি গ্রান্থভাগে জেয়াশুলিথনৈর লং ।। ৩৮০ ।। প্রেমভক্তে চ সিদ্ধারা।

সর্বেহর্থাঃ সেবকাঃ স্বয়ৎ । ভগবাংশচাতিবশাঃ স্যালিথাতেঃ স্যাঃ সুলক্ষণং ॥৩৮১॥
ভথা প্রেমভক্তিলক্ষণং । নারদপঞ্চরাতে । তনন্যমমতা বিষ্ণো মমতা প্রেমসংগ্রুতা। ভক্তিরিকু চোতে ভীমা প্রস্থাদে।দ্ধিব নারদৈরি ভিতি৮২।প্রেমভক্তেশ্চ মাহা

ম্পেষ্টং একিপিলদেবেন ভূতীয়ক্তরে। অভিশ্বনায় যদ্ধিংশাং দয়ং মাৎস্থামের বা। সংরম্ভীভিন্ন-দৃগ্ভাবং ময়ি কুর্ন্যাৎ সতাম গঃ। বিষয়ান ভিগন্ধায় যশ ঐশ্বব্যমের বা । অর্চ্চাদাবর্চ্চয়ে দ্বোমাং ' পৃথপ্তাবঃ স রাজসঃ। **কর্ম**নিহার্মু দিশা প্রশান্ব। তদপণং । যদেদ্যটিবামিতি বা পৃথগ্ভাবঃ স সাত্মিকইত্যাদিভিঃ। এমু চ প্রত্যেকমপি ত্রিশাবান্তরভেদো দ্রুটব্যঃ। এবমেকাশীতি ভেদাঃ প্রসিদ্ধাঃ। অন্যেচ বছবে।লিখিতামুসারেণ ভবস্মের। তত্র্চ কণ্মজ্ঞানমিশ্রাদয়ঃ পূর্বাং ভক্তলক্ষ-ণেযু সংক্ষেপেণ লিখিতা এব । বিশেষতশ্চ সর্ব্বেপ্যেতে ভেদাঃ খ্রীব্যেপদেনা চার্য্যাদিভিনিব পিতা এব সন্তি। অতত্তে মুক্তাফলাদিপ্রতেতোহবগতবাং। আদিশবেন বিফ্রভক্তিচন্দোনর ভক্তিরুসার্ণবাদয়:। অতোহত্র তেষাং ভেদানাং লিখনৈরলং প্রয়োজনং নাস্ত্রীত্যর্থঃ। বৈষ্ট্রানা-মবশ্য কুত্যলিখনগ্রন্তে হিমান্ত দপেক্ষাবিশেষাভাবাৎ ॥ ৩৮০॥ ইপাং শ্রবণাদিল কণায় ।। সাধনভক্তেমাহাত্ম্যং লক্ষণঞ্চ লিথিয়া ইদানীং প্ৰেমলক্ষণায়াঃ একৰপায়া ভক্তেন্তভন্তিখিয়ন আাদৌ সংক্রেণে মাহাত্রাং দশ্রন্লক্ষণবিশেষ্লিখনং প্রতিজাদীতে প্রেমেতি।প্রেমলকণ ভক্তৌ দিল্ল য়াঞ্চ দৰ্বে অৰ্থা ধৰ্মাদয়ঃ পুরুষাৰ্থাঃ স্বয়মেব দেবকাঃ প্রেমভক্তিমভোজনগ্যাধীলা ভবস্তি। অপ্যর্থে চকরেঃ। ভগবান্ প্রমেশ্বরং একুফোইসি অতিবশ্যঃ প্রমায়কঃ স্যাদিতি সংক্ষেপতোমাহান্ত্যং মাদ্যপি অবশ্দিসাধন ভক্ত্যা তদশীকরণং পূর্বাণ লিখিতমস্তি তথাপি ভক্তমনোর্থপ্রণার্থং প্রেমপ্রদানার্থয়। তলিজেয়ং ৷ প্রেম্বাচ বদীকরণং ৷ প্রেমবতেশ্যনোর্লে সম্পাদিতেইপি তৎসঙ্গং কদাপি ন পরিতাজ্যুং শক্রোতীত্যেকং বিবেচনীয়ং ! অতএবাত্রাতিশব্দ প্রয়োগঃ। অস্টাঃ প্রেমভক্তঃ অংশাভনং লক্ষণং অনকামুক্তাফলাদিগ্রভ্কারলিথিত।পে-क्षा। ७४३।।

বিক্ষো ভগকতি প্রেমসংপ্লুতা প্রেমরসব্যাপ্তা বা মমতা মমাব্মিতি ভাবঃ সা ভাক্তঃ প্রেমলক্ষণেতি ভীয়াদিনিস্তন্নবিদ্ধিকাতাতে। কথন্তুতা মমতা। ন বিনাতে অন্যামিন্ দেহগোহাদী মমতা বদ্যাং সা ইতি প্রেমলক্ষণৈৰ স্থানিলা।। ৩৮২।। নত ঈদৃশ্যাভক্তেশাহান্যাং বিস্তরতোহপেক্ষাংত তত্র পিথতি প্রেমভক্তেশেচতি। প্রমনাক্ট উংক্ল ইং বা মাহান্মাং সিদ্ধমেৰ সাধনভক্তেরপি দৌলভাাদিনা নাধ্যভক্তেঃ স্বভ্রব প্রমদৌলভাাদিনিকেঃ। তত্র ঘদ্যাপি পাপোন্মলনাদিকমতাভ্রজ্জ ব্যক্তিয়ালাভীৰ সঙ্গজ্তে তথাপি প্রেমভক্তিমতঃ কথঞ্জিৎ সম্বাদ্ধিনামপি বিদূরতঃ সদ্যোহশেবদমূলপাপোন্মলাদিকং ভবতীত্যে মৃহ্যং। যতঃ প্রেমিৰ কলং নিশ্চিতং নস্ত বৈকৃতিবাসাদিকম পাত্যবাং। যদ্যাপি বৈকৃতিলোকোপ্যদৌ প্রেমভক্তিমন্ত্র তথাপি প্রেমবতাং তত্র নাতীবাপেফেতি প্রভাগবাম্তোন্তরথণ্ডেবিবৃত্মেবান্তি। কিঞ্চ বদ্যাপি প্রেমস্থাবেন কদাপি শ্রেবণাদিভক্তেং পরিত্যাগো ন শ্যাং অথ বা বিবৃদ্ধাত্র বিদ্বাদ্ধাত পুনঃ প্রেমবিশেষঃ সম্পান্ত ইতি পরস্পরং কাষ্যকারণতা প্রকৃতিব অভএব দাসীশভালপি বিভোক্ষিদধ্বং স্ম দাস্যমিত্যাদিনা প্রিমহির্বাণ্য বিবিধ্বেবান্সিকা শ্রীনারদাদীনাঞ্ছ ক্রির্বাদিরপা ভক্তিঃ জারতে। তথাপ্যত্র শ্রবণা

জ্যান ভজেমাহাত্মতঃ পরং। দিন্ধমের হতোভজেঃ ফলং প্রেমের নিশ্চিত্র(১৮৬)
চিক্লানি প্রেমনম্পত্তের্বাহ্যান্যাত্যন্তরানিচ। কিয়ন্ত্যুলিপতা ভন্যা মহিমের বিলি-খ্যতে ।। ৬৮৪।।

তথা প্রেমসম্পতিচিত্নানি। সপ্তমক্ষকে। প্রিথকাদস্য বালানুশাসনে। নিশম্য কর্মানুগুণানজলনে বার্যাণি লীলাতনুভিঃ কতানি। যদা তিহ্ধেণিপুলকাপ্রাক্তালাদম্প প্রেণ্ডকণ্ঠ উলায়তি রৌতি নৃত্যতি ।। যদা গ্রহপ্রতইব কৃচিদ্ধস্তাক্রনতি-ধ্যায়তি বন্দতে জনং। নুজঃ শসন্ বক্তি হরে জগংপতে নারায়ণেত্যাত্মমতির্গত্ত বিধান তিনি । বদা পুলান্ মুক্তসমন্তবন্ধনন্ত দ্লাবভাবানুক্তাশ্যাকৃতিং। নির্ধানি নির্বান্ধরালাহীয়সা ভক্তিপ্রেরাগেণ সমেত্যথাক্ষকং ।। ৩৮৬।। একাদশে চ্ প্রিক্বিযোগেশরোত্রে। শূণ্ন মুক্তমাণি রথাক্ষপাণেক্র্লানি কর্মাণি চ্যানি লোকে। গাতানি নানানি তদর্থকানি গারন্ বিলক্ষ্ণোবিচ্যেদসক্ষা। ৩৮৭।। এবং ব্রতঃ

দি ভক্তানন্তরং প্রেমলক্ষণভক্তেঃ নিদ্ধন্নং ভক্তা। সঞ্জাতয়া ভক্তা ইত্যাদাস্সারেণ কলং প্রেমিবিতি লিখিতমিতি দিক্।। ৩৮৩।। এবং প্রেমভক্তেঃ পরমং মাছাত্মাং দশিতমের পরমিলি ৩২ শব্দ বিলক্ষণভিদক্ষেন পরমমধুব্যাহালাবিশেষং দশ্য়ন্ প্রেমভক্তিসক্পন্তা। জায়মান বিশোলাবিকারাণাং সংক্ষেপত্যেলিখনং তত্ম তদ্যামাছাত্মালিখনমিপ প্রতিজানীতে চিহ্নান্ত উলিখতাউৎউদ্দেশেন সংক্ষেপেণ লিখত।। তদ্যাঃ প্রেমভক্তেমাছাত্মামের বিশেষতা।
লিখ্যতে প্রেমভিতিবিদ্ধান্য স্থাতাবিকলক্ষণানামিপি সাধ্বেষু পর্মধ্যস্তাহ।। ৩৮৪।।

ভাগান্ত কর্বাংসনাদিন বিগিনানি দৈত্যমার্ণাদীনি প্রাক্রমাংশ্চ। অভিহর্বেণালাভাঃ পুলকান্তানি চ তৈরালালং যথা ভবতি। এবং প্রোৎকঠ উচৈর্গায়িত। আত্মনি ভরবতি মতির্যা তথাভাতঃ সন। অভএব গভরপঃ নির্লজ্ঞাং সন। ৩৮৫। তস্য হরের্ভাবশ্চেটা দিন্তস্য ভাবোভাবনা
তেন, স্কর্লতে। যদা তিমিন্ হরৌ ভাবঃ প্রেমা ধেষাং জনানাং তেষাং ভাবঃ বাহ্যান্তর্রেটা তস্য
অলক্ষতঃ অনুক্রেরাব্য়েত্যাভূতে আশ্যাক্সতী মনঃশ্রীরে যদা। নির্দ্ধিং বীজমজ্ঞানং অনুশ্রেরাবাসনা চ যদা সঃ। সম্যুণ্ডে প্রাপ্রাক্তি নিত্যদলী ভবতীত্যর্থঃ ইতিবাহ্যান্তর্রবিক্রিয়ারূপলক্ষণং মাহান্ত্রাং চোজং। এবমপ্রেপ্যুহ্যং। ৩৮৬ । তদর্থকানি তানি জ্মানি কর্মাণি চ অর্থো
বেলাং নাম্বং। অনেন চ নামপানেনৈর জ্মকর্ম্বানানিদ্দের্নাম্যানান্য প্রধানামভিপ্রেতং। যদা
ভদর্থকানি রপাক্ষপাণ্যর্থমের তংপ্রাপ্তায়ে ইতার্থঃ। এভান্যাপি সাকল্যেন জ্যান্ত্রমান্তর্যাদ্দির্দ্ধান্ত। যানি গ্রেকে গীতানি প্রসিদ্ধানি যদা গৌলিকগাঞ্বঃ যান্যপি তাগাং জ্মাদ্যন্তর্গতন্ত্রেন
প্রপ্রিক্রিনা বিলি ত্রালা তানি পূন্ গায়ংশ্চ বিচরেং। অসক্ষোনিস্ক্রাণ্যপ্রক্রেরানান্য সংশার্থমাতীতাং
গতিনাহ। এবনিতি। এবং ব্রহং বৃত্তং নির্মানা যদা সঃ। স্বপ্রির্মা প্রক্রিনা ক্রিনা ক্রিনা
রং যংক্র্ফনান তস্য কীর্তনেন জাতোহ্যুরাগঃ প্রেমা য্বা স্কঃ। নামকীর্ভ্রাণ পুনকুক্তেঃ প্রমান্

স্কৃতিক । বিল্লাভটিকারতি নৃত্তে ত মানুভিন্ত ক্রিলার । ত্রা প্রতি লারভাগ ক্রিলার । ক্রিলার নির্দার ক্রিলার । ক্রিলার ক্রিলার । ক্রিলার ক্রিলার । ক্রিলার ক্রিলার । ক্রিলার ক্রিলার ভালার ক্রিলার ভালার ভালা

ক্ষাথ শরণাপতিঃ। এভিগ্রকীতাসু। সর্রাখ্যান্ পরিভালা মানেক শ্রণং

ম্পাত্রে প্রিয়নামকীর্ত্তনিয়াতান্তান্তরক্ষত্রবিক্ষয়া কিয়াপ্রেমসম্পাত্রের্লকণ্বিশেষবিদ্যাপনায় তেন ত্রা করল পর্যাবসামার্থং। তত্ত্রণ কীর্ত্ত্যা বিশিষ্টিইভার্যঃ। অত্তর্র জ্লেড্চিটঃ শুথ ক্রদায়ঃ কলাডি-भारतकः जङ्गान्त्राधिक प्राक्तिया वालापि दिएत प्रमान् मङ्गास वा छिटेक स्व अवस्थित का समू का समू एवँ ক্ষিতে হেন্দ্রীতি। যদ্ধ। পেমভবস্বাভাবিকনির্ভিতাবেন রোদিতি। ৃষ্ঠেট্রেক্সাং ভেইনের বা বেতি আজোশতি অভিহর্ষেণ কান্তিবিদেশের বা বাছতি ত্র্যারণ কর্মণথারণ বা গুণালিকর ক্ষতির্তি । সাক্ষাৎ ভূতমিব দুট্য বা হতাতি । উন্নাদৰৎ এতগুণীতবং । লোক্ষাক্ষ খলা উল্লাদবদিত্যনেন হাধাদের মরভারং লোকবাঞ্ছিতানেন চাট্টেরিকত-দ্র্শিতং ।। ওচ৮ ।। ' অংখ্যারহর সংসারজংগপরক্ষারাবিনাশকং । ভরা নাগনভারন সঞ্জাত্রা প্রেমলকণ্যা ভত্তা। ৮৬৮১ । জন্ম হরিং অসুশীলয়তি ভল্লীলা অভিন্যুতি। এবং প্রং প্রমেশ্রং এতা প্রাপ্য নির্ভিত সম্ভন্তীং ভবতি । যর। প্রমেশ্রাল্যালাল নির্তাঃপরমার্ত্তাঃ সন্তঃ তুক্ষীং ভবন্তি নিক্তেন্টাঃ স্থারিতার্থঃ ॥ ১৯০॥ রোমহবাদিকং বিনা কর্মাং ভক্তিঃ প্রেমলকণা গম্যতে ভক্তা চ মিনা কর্মাশয়ং শুধ্যেৎ হজ্যেকপরং সদাস্থাত্র লাক্ষা-দিব শীক্কঞ্পরিক্ষ্বর্ত্তিময়ো বা স্যাদিত্যর্থ: ১৪৯১৷ কিঞ্চ ভক্তিঃ স্বাশ্ররং শোধরভীতি কিংকক্তব্যং মতোগলাদবাগাদিলকণমংপ্রেমভিজ্মুক্তোলোকং দর্বং পুলাতীভাগে বাগিতি গলাদা গলাদ্রর, খুকা। অভীক্ষুং রুদতীতি প্রেম পরিপাকস্বভাবেন নিরন্তরবিরহাত্র্যংসংজঃ। কুচিৎ কদাচিৎ। অসা পবেণাপার্যঃ। পুমাতি সংসারমলাৎ অতৈভভুবাসনমলাদ। শোধয়তি ভগবদ্ধ জিপ্রার্জন কপাং ভক্তিং লিখিত্বাধুনা শ্রবণাদ্যসমর্থস্য শরণাগতমাত্রেণাপি ক্লতার্থতা স্যাদিতি শ্রণা-পত্তিং লিখতি যথোক্তেক্তি। মদ্যপি সখ্যাত্মনিবেদয়োর্ভক্তিপ্রকারয়োরন্তরের শরণ'গভত্তং পর্যা ৰুমাতি তথাপি তয়ে।র্দ্ধনোত্বন্তিবিশেষোহপেক্যতে। শরণাগতত্বে চ কেবলং ভগবদীয়োহছ ্মিত্যেতাবন্মাত্রমিতি অতঃ পৃথগদ্য লিখনং ভক্তাত্রে দ্যক্তং ভাবি।। ৩৯৩।।

সৰ্ববান্তে সৰ্বেতঃ প্রমণ্ড্রতমমুপদিশতি সর্বেতি। মন্তবৈতাৰ বা সর্বাং ভবিঘাতীতি চুচ্বিশ্ব

ব্রজ। তহং ছাৎ সর্বপাপেভ্যোমোক্ষয়ব্যামি কাশুচঃ ॥ ৩৯৪ ॥ একাদশন্ধকে চ। প্রভিগবদুদ্দবদয়াদে। তল্পান্ত্রুদ্ধবাৎসূজ্য চোদনাং প্রভিগে নিবৃত্তির প্রোভব্যং প্রভানের চ। মানেকমের শারনমান্ত্রানাই সর্বদেছিনাং। হাছি সর্বন্ধি প্রভাবেন ময়। স্যাদকুভোভয়ঃ ॥ ১৯৫॥ ভনিত্যভা চ । ব্রক্ষাবৈর্ভ্তো প্রাপ্রাপি দুর্লভত্রং মানুষং বিবুধেণ্ সভং। যৈরাপ্রিভোল গোবিন্দক্তরাদ্ধা বিশ্বতিদিরং ॥ অশীভিগভর্তাশ্বর লক্ষাং স্তান্ধি জীবজাতিমু। জামান্ত্রিঃ পুরুষ্ণে প্রভাপ্য মানুষ্ণ জ্যাপ্য য়াছ। তদপ্যক্ষতাৎ হাতং তেথামাল্যাভিমানিনাং। নরাকাণ্যমনাপ্রভিত্য গোবিন্দচরণদ্ব্যং ॥ ৩৯৬॥

অথ শরণাপতিসাছাস্তাং। উভ্জ রামারণে এর ঘুনাখেন বিভীষণগমনপ্র-লঙ্গে। সরুদেব প্রপারাযন্তবাদ্ধাতি চহাচতে। সভরং সর্বাদা তলৈ দদামে তদুত্ব মম। ৩৯৭। নারসিংকে বৈকুওলাথেন। তাং প্রপার্যাদ্ধান্তবং দেবদেবং জ্লা-দিনং। ইতি যাং শরণং প্রাপ্ততংক্রেশাদ্দরাম্যতং। নামাপরাধ্প্রসঞ্জ। পাদ্ধে প্রিনারদং প্রতি সনৎকুমারেণ। সর্বাচারবিবজ্জিতাঃ শঠহিয়োব্রাত্যাক্রগছঞ্জ-

দেন বিবিটকক্ষর্যাৎ নিম্না মদেকশ্রণোভ্র । এবং । বস্তুমানঃ কর্ম্মত্যাগনিমি**ত্তং পাপং স্যাদিতি** মাশ্রচঃ শোকং মাকার্যীঃ। যদ্ধা শরণাগত দ্বমারেণ প্রমক্লবিশেষরূপা ভক্তিমে ন সিদ্ধেতি মাণ্ডত শ্রণাগতত্ত্বসৈয় প্রম্বিশালাত্ত্বভিতিশেষ্ত্রপত্তাদিতি দিক্।ইদ্**থানালোকশি**-ক্চার্থনেবার্জ্যুনমধিক্ত্যোক্তং নত তং প্রতি তথে।পদেশঃ তদ্য নরাবতারত্বেন প্রমুদ্ধ্যাদি-মাচ স্ত্এৰ প্রমভাগ্ৰতভাং ॥ ৩৯৪ ॥ যন্মানেবন্তুতোমদীর্জনপ্রভা**ৰস্তন্মাং ।** তে দনাং ক্ষভিং প্রতিচোদনাং স্মৃতিঞ্চ। বছা বিধিং নিষেবং চোৎস্কা সর্বমেব পরিত্যক্ষাতার্থঃ। মানেবৈকং শরণং যাহি। মইয়বাকুভোভরঃ স্যাং। স্বলেহিনামাত্মানং অন্তর্গামিত্বেন ক্লি ছদি নিবসগুমিতার্থঃ। অনেন স্থায়কৈত্রবিংশবাশ্রণনিয়মোনিরস্তঃ। সর্বেণাস্থনোভাবেন ভাবনরা ইতি তদেকনিঠতোজ্যান্য বিলপরিতাগগেন স্করত্বমপি দর্শিতমিতি দিক্। কেচিচ ভগৰতঃ শব্ব: স্তর্যামি সুদৃষ্ট্যা সব্বেষু জাবেষু যোহপুৰগ্ভাবোভগৰন্ধ ফিব্ৰা ভদেৰ শ্রণাগতত্বং মনান্তে ৷ তচ্চ জ্ঞানভজ্যস্তর্গতমেথেতি জ্ঞানভক্তলক্ষণে স্বাভুতেষু যা পশ্যেদিতাত বিবৃত্তম-মান্তি। এবং সাক্ষাৎ শুভগবদ্বাক্যেন শর্ণাগতত্ত্বদ্য বিধেয়ত্ত্বং লিখিতং ॥ ৩৯৫॥। ভচ্চাবশ্য-মেব কার্য্য অন্যথা পরমদোযাপভেরিতি তথ্য নিত্যতাং লিখতি প্রাপ্যেতি ত্রিভি:। আইল্লব চিরং বঞ্চিতঃ বিবিধতঃখদাগরে দুদা নিপাতিতইত্যর্থঃ লক্ষানিত্যাদি পুংস্ক্রাদিকমার্ছ। চন্তুরশীতি সংখ্যকামিদিতার্থঃ। জনমপর্যারতে তত্ত ভার্নারেণ জন্মপ্রাপ্তেরনন্তরং প্রাপ্যং छवि । पाषाचिमानिनाः (पश्चिमानवेखाः। वहाकानाः एक्क्वूकीनाः भद्रगाने**ण्या**नाभा अप-ক্সনোমণভামিতার্থঃ। এবং ভক্তাশক্তেনাবশাং শ্রণাগভেনাপি ভাবাং। অন্যথা মামুব্য কন্ম বৈফল্যেন ভদশেষকর্মবৈকল্যাপজেঃ ইতিনিতাত্ত্বং নিজং॥ ৩৯৬॥

অপার্থে এব শব্দঃ। यः প্রপন্নঃ শরণাগতঃ সন্। তবান্মি ভবামীতিসক্কদৃপি ষাচতে। ষদা কথং প্রোপন্নস্তদাক্ ক্রেড্যাদিনা । শরণাগতস্বলক্ষণং চেদং ফ্রেয়ং। এবসগ্রেপ্যক্ষং ॥ ৩৯৭ ॥ কাঃ দ্তাহল্ তিপানপৈশুনপরাঃ পাপান্ত কা নিঠুবাঃ। ফে চানের ধনলার পুত্রনির তাঃ
সক্ষাধনান্তেপি হি প্রাণানিশপদার বিদ্দারণা মুক্তা তবছি ছিল। ৩৯৮। ব্রন্ধানির বিবর্ধে। নহি নারায়ণং নাম নরাঃ সংক্রিত্য শৌনক। প্রাণ্গু বস্তঃ শুকুং সুকুর নিদ্মুক্তং পুনং পুনং ।।৩৯৯।। বৃহন্ধারদীয়ে কলিপ্রসক্ষে । পর মার্থমন্দের্যা কার্তামাদিকারণং।
শারণাং শারণং যাতোগোনিশং নাবসীদিতি ।।৩৪০।। শস্তিপর্বাণ রাজ্ধর্মে তীল্মাইংক্রিসম্বানে । ছিল্কঃ প্রিয়হিতেনিত্যং হতার পুরুষর্ম্ভঃ । রাজ্বংস্তর বদুক্রেটোনৈকুল্ডঃপুরুষরাত্মঃ । হতানহ সংশ্রম্ভীত ভক্তা নারায়ণং হরিং। তে তরন্তাহ দুর্গাণি ন
মেত্রান্তি বিচারণা ।। ৪০১ ।। তৃতায়ক্ষক্ষে বিদুর্যমত্রেয়সম্বাদে । শারীরা মানসাদিব্যা বৈয়াসে যেচ মানুষাঃ । ভৌতিকাশ্চণকথং ক্রেশা বাধন্তে হরিসংশ্রমং ।। ৪০২ ।।
বামনে প্রীপ্রহলাদনলিসম্বাদে । যে সংশ্রিতা হরিমনত্রমনাদিমধ্যং নারায়ণং সুর গুরুং
শুভদং ব্রেণ্ড । শুদ্ধং শ্রেন্দুর্গমন্ ক্রলালয়েশংছে ধর্মারাজকরণং ন বিশ্বতি
ধারাঃ ।। ৪০০ ।। যে শক্ষাচক্রাক্তরুর সাল্মিকিং থগেন্দুক্তুং ব্রন্ধ শ্রিয়ংপতিং।
সমাশ্রমন্তে ভবভীতি নালনং তেষাং ভরং নাত্তি বিসুক্তিভাল্পাং ।। ৪০৪ ।। বৃহ্মারদ্বারে প্রাণ্ডিলাসমাকুলে ।
যে হরিং শরণং শ্বন্তি তে ক্রার্থান সংশায়া ৪০৫ ।। ব্রন্ধাপুরাণে । কর্মণা

ব্রাত্যাং সংস্কারহীনা দ্বিজাধনাঃ। পানমপ্রেস্য পাপাঅধার্মিকশৃদ্ধাঃ অস্ত্যজান্দ যে: यहा অন্ত্য-<u>ক্ষ্পি পাপা যে ইত্যর্থঃ । সর্বেভ্যঃ সর্ব্যাবাহ্ধমাঃ ।। ৩৯৮ ।। হিশক্ষোহ্বধারণে অশুভূং</u> व्यस्त्रकृष्ट्र अनिष्टे: वा किक्किदेशव आश्च विश्व । किश्व गर्यत्वाशव विश्व छार्थः। नाम अकारमा। যত্ন। ন্রারণ্মিতি নামাঞ্জিতা। ততক নামমাহাত্মে স্লোকোইরং জফীবাঃ। যত্না নামাঞ্যুণ্মপি ভূগুর্দাশ্রয়ণমেৰেতি ভয়োরভেদ।ভিপ্রায়েণ॥ ৩৯৯॥ পরমার্থং পর্মফলৰূপং পর্মভত্ত্বং বা-বের ব্রহ্মাদির বিষ্কু মধ্যে কেভোবা খাবলঃ লোঠঃ ।'অবভারিরাং। অভাবৈকুঠা অকুঠপ্রভাবঃ किथा श्रुक्तवाद्धमः वन्मार क्रिकेटीएण रमकदापि (ठाउमः हेलाहा क्रुक्तकाः । पाछ वर नावा-त्र ११ न व बाँदेव का व्याप्त र हिन्द व्याप्ताय मारळ । मर्वादा पर ११ मर ना इत्र ११ मर ना इत्र ११ मर ना व ছঃখানি॥ ৪০)। দিয়া আন্তর্জীকা মাত্রখাঃ শত্রপ্রভবাঃ। ভৌতিকাঃ শীতোকাদি প্রভবাঃ। রদ্বা শারীরা মানশাশেভগায়া আফাঃ দিব্যা মাথিলৈবিকাঃ। মাত্রাঅনাভৌতিকাশেভগাবিভৌতিকাঃ। ইতি ত্রিবিধা অপি তাপাঃ। বৈশাসকে হে বিছর ॥ ৪০২ ॥ সংশ্রেতাঃ শরণং যাতাঃ। ধর্মরাজন্য लक्षाः काग्रहः उक्षिथनाविकात्रमिङार्थः। नर्स भाभक्षमाद्यक्तिवादानानस्वानि विस्निद्देशमाङ्ग्रा-मुक्त विवार विधानक्षर देशक्ष अराजासा। विकारकार नि ॥ ६००॥ म देवनरमवर नत्रकार कीपर। किछ गरमातज्यक दिन्हीर शतमभूमक्षित्रशि सार्क्षणाई (य मरस्कि। मधानास्त्रस्य नवर् याषि विनिधाम् जिटेस क्रियामञ्जामा क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रियामा विकट ।। दियार न गर्वः । जार्छ दिन लाल्य किकिए कर्ड्, नमकू आविकार्यः। यहाः मूरद्धः

मनमा विशि (१००१ के भवन श्राहा न भग शिया एया ५ कि मृद्धिक ए कि । १८ १ मिन । १

ভিজ্ঞি জীবৈকৃঠলোক প্রাপ্তির তন্তু, লিনঃ , ৪০৫ । এবং জীবাংইলার পর্য র্বছাৎ ্রমালালালাত তদেকশ্রণানাম্যত্রবিজ্নের প্রমপ্রমিতি প্রক্র্থে নথ্যত্রলুভ সল্পিড্র ইতি : প্ৰণাং ৰাশায়স্য স্থায়স্থাঃ সচামৌ মুৱাবিশ্চ তদ্য পদপ্ৰবত্তৰ গুৰুঃ তুও সমাহাত্তিতেও : মহৎ ৭ৰং মহতাং পদম।শ্ৰাং। যথা মহচ্চ সংক্ৰাৎক্লুইঞ্জ তৎপদপ্তেতি তথা। ভেষাণ ভবাছ ধিক্ষংস গ্ৰহ এং তৰ্তি অনায়াদেন মোকঃ স্যাদিত।খঃ। তস্ত্ৰপ্ৰিকল্পেন স্তঃ সিলে। কিঞ্জলক েদং এটিবসুঙাগ্যাৎ পদং স্থানং ভবতি। বিপদাং যথ পদং। বিষয়ন্তথ পুনঃ কদাচিদ্পি তেষ্ণ ন ভবতি। ন ততঃ প্নর্বিত্তিইত্যর্থঃ।। ১০৭ 👉 এবং শ্রভাবংশর্ণাপ্রানাং জ্যেণ ভবতংখাদ্য ানং প্রমপদ্রাপ্তিঞ্লিখিড়াধুন। তেইন্যানপি। নিসার্য্টীতি লিখতি মংপাদেতি। হেড্ড গ্রা ভগবতঃ পাদাবের সংশ্রামেষাং তে শ্রণাগতাইতার্য । অতএব প্রশম্প্রকৃষ্টশান্তি রূপঃ অয়নং বল্ল শরণাপত্তিলক্ষণং যেযাং। যদ্ধা প্রশাস্থ্যনং। শরণাপত্তিশাধনং যেযাং। যদ্ধ প্রকৃতিঃ শমঃ স্থাং যাথাং সাঞ্জামঃ প্রামাতময়তে প্রামুবরীতি তথাভূতা মুনয়ঃ। উপস্পৃতিঃ সংনিধিমাত্তেণ দেবিতাঃ সন্তঃ পুনন্তি। যসা। মুনরঃ পূর্বমান্তার।মাঅপি মৃনিত্রং বিহায় যৎপাদ-সংশ্রাঃ সম্বৰ । অন্যথ সমানং । স্বৰ্দী পঞ্চা তস্যা আপস্ত তৎপাদনিক্তা এব নও তেত্ৰৈব ভিত্তি বিশেষতক্ষ বিষমপথবর্জিনাঃ পাগরগামিনা এব বা অতন্তৎপাদসম্বেলন পুনস্ত্যোহিপ্ অভ্সেবরৈর পুনস্তি তদপি ন সদ্যইতি শরণাগতানা মুৎকর্মঃ ।। ৪০৮ ।। কিঞা। কিরাতেতি। কিরাভাদখোষে পাপজাতয়ঃ। অন্যে চ যে কর্মতঃ পাপরপাঃ যদ্পাশ্রয়াঃ শর্ণাগতাসদাশ্রয়াঃ সন্থঃ শুদ্ধান্তি। অসম্ভাবনাশক্ষাং পরিহরতি। প্রভবিফবে প্রভবণশীলায়েতি।। ৪০৯।। যতস্কেষাং কিঞ্ছিদপ্যসাধ্যং নাস্থীতি লিখতি কিমিতি। ছন্নাপাদনং ছুদ্ধরং **কিমপিণ্ড সর্ব্ধমেব** স্থকরং। উদ্দামচেত্রসাং ধীরাণাং উদ্দামচেত্তস্ত্রমেব দর্শগুতি ধৈরিতি। যদ্বা উদ্দামচেত্রসাং বিবিধমনো-রথেনাসক্ষোচতইতস্ততোগচ্জ্মান্সান্মপ্তিদেষ্মনোরথিদিন্ধিরভিপ্রেতা। তত্ত হেওমাহ থৈ-রিতি। ভীর্থপদোভগবতঃ। একতীর্থাশ্রয়ণাদিপি সব্বং স্থানিকাতি কিংপুনঃ সংবাতীর্থময়া গঙ্গা-য়াঃ প্রভাগ ম্য়াদিতি ভাবঃ। ব্যসনং সংসারস্ত্রস্যাত্যয়োনাশো যত্মাৎ। যদা। অকার প্রস্লেত্রন অবাসনোমোক্ষন্তস্যাপ্যতায়োইতিক্রমোফ্যাণ স: ভক্তিরস্বিস্তারণাথ ॥ ৪১০ ॥ এবং শ্বণ্ড পত্তেঃ সাধনত্বং বিলিখ্য সাধ্যত্তঞ্চ দর্শয়ন্ তম্বতাং পরিপূর্ণতাং লিখতি ননাকেতি। রুসাধিপত্যা ভৌনং ন পারমেন্ত্রং ন রুসাধিপত্যং ৷ ন যোগসিদ্ধারপুনর্ভবন্ধা বাঞ্ছ ভি যুৎপাদ রুজঃ প্রপরাঃ ৷৷ ৪১১ ৷৷ একাদশে চ শ্রীকরভাজনযোগেশরোভরে ৷ দেবর্ষিভূতা প্রন্থাং পিতৃগাং ন কিন্ধরোনায়সূলী চ রাজন ৷ সর্বাজনা যঃ সারগং সারগং গাতাে সুকুন্দং পরিহাত্য কর্ত্বং ৷৷ ৪১২ ৷৷ অভএবাজেং শ্রীভগবন্তং প্রতি উদ্ধাবন ৷ তাপ্রিয়ণ ভিহতস্য ঘোরে সন্তপ্যানস্য ভবাধুনীশ ৷ পশ্যামি নান্যচ্ছরগং স্থাতি প্রাদ্যুতাভিবর্ষাৎ ৷৷ ৪১৩ ৷৷ ইথাঞ্চ বোধ্যং বিদ্যুত্তঃ সারগাপতিলক্ষণং ৷ ঘাচা হালা চ ভরাপি ক্লেক্ষাশ্রণং হি যং ৷৷ ৪১৪ ৷৷

অথ শরণাপ জিলক্ষণং। দ্ধান্দে। গোবিন্দং পরসামন্দং মুকুন্দং মধুসূদনং। ভ্যক্তানাং বৈ ন কানামি ন ভজামি কারামি ন। ন নমামি নচ ভৌমি ন পশামি শ্রচকুবানে স্পৃহামি ন গায়ামি ন বা মানি হুরিং বিনা। ইভি ।। ৪১৫ ।। কেচিনাত্দে শ্রণাগভত্তং ঘটপ্রকারকং। প্রায়ঃ স্থাপ্রকারে তৎ প্র্যাবস্থে দিচারতঃ। ৪১৬। ভচ্চোক্তং শ্রিকাক্তং শ্রিকারকং। আনুক্লাস্য সক্ষণণং প্রাতিক্লাস্য বজ্জনং।

আতালাদিস্থাম্য । বোগসিদ্ধীঃ ত্রিকালজ্জন্তাদায় ক্ষাঃ মহতীশ্চাণিম দাঃ। यদা র্ণাধেপত্য প্রতিব্রস্কিরাটেনাশ্বয়াং যোগসিদ্ধারণিমাদ্যাঞ্বেতি যথোক্তরমেধাণ শৈশ্রতাং ভত নাকণ্ঠতঃ সংস্তৃতে সমা ইশ্রষ্ঠাং ভূমৌ কর্মাক্ষেত্রে বৈরাগ্যাদিবিশেষসম্ভবেন জ্ঞানভক্তাদি প্রসিক্ষে কদা-তি ্ককুংস্তাদিচ ক্রক্তি সাহালোমেন্দ্রগ্রোজ্যপ্রাপ্তেশ্চ। অন্যং স্পর্টমের। পাদর জঃ প্রপ্রাধ ন্সুণাগ্রপুন ক্লিদেকণ সম্প্রমণশ্রিভাইত্যধং । ১১১।। এবং বিধিনিধ্যধনিকুত্তঃ কুত্রকুত্যভাগ লৈখতি দেবধীতি। আপ্তাপোধাঃ কুটয়ানি। দেবাদয়ঃ পঞ্যজ্ঞদেবতাঃ এতেয়া যথা ছকু অনী অন্ত এব তেষাং কিন্ধরঃ তদর্গণ নিত্যাং পঞ্চ মজ্ঞাদিকর্তা। তথাচ সমৃতিঃ হীনজাতিং পরি-की। মণাথ । কর্ম কার্যেদিভি। অয়স্থ ন তথা কোইনৌ যঃ সহ্বভাবেন মুকুন্দ সর্বতোমোক্ষদ । ্রবশ্বসদ্প্রদঞ্জ ভগবস্থা শ্রণং গভঃ। কর্ত্তং ক্রভ্যং পরিহ্নতা। যদা কর্ত্তং ভেদং ক্রভীচ্ছেদনইত্য লাংছ। রাস্ত্রদেবং স**র্বামতি বুদ্ধো**তার্থঃ। যদা অধৈতনিষ্ঠোইপি ভূত্বেতার্থঃ।। ৪১২।। তাপত্রনে লাভিছত্যা অতঃ সন্ত্রপামানসা। অগ্নিদ্দেক্সেবাতপতঃ বস্মাৎ ন কেবলমাতপতাং কিন্ত আগত প্রমানদ্রেশ্মপাভিহিতোবর্ষতি যক্তমাথ। এবং শ্রণাগতানাং স্ক্রিগ্রহানিঃ সুগ্ প্রাপ্তিকোক্তা। ৪১৩॥ এবং মাহাল্লালিখনরারা লিখিতম্পি শরণাগতলক্ষণ পুপক্ স্পান্তার লিখতি ইখাঞেতি অনেন লিখিতপ্রকারেণ সরুদের প্রপান্যায়র শামীতি চ যাচতে ইভ্যাদিনা স্বাস্থিদিভিঃ ক্লেকেসা আয়ণ্মের সং তদের শ্রণাগতলক্ষণং বোদ্ধব্যং। তত্র বাচাশ্রণং তবাসী-ভ্যাদিবতনং । খলসাশুয়ণং ভবৈদ্যবাহমিভ্যাদি চিন্তনং। কায়েনাভায়ণং তথকেত্রসেবলাদি। এতজ लक्ष्मध्य वाकः अवि ॥ ४२८॥

জনাং দেবতাশুরং। তত্র ভগবতঃ পৃথক্ত্বেনেতি সংসম্প্রদায়ঃ । গোনিক্ষমিতা।
দিবিশেষেতি মাহাত্মবিশেষেণ তদেকনিষ্ঠতা যুক্তেতি ক্ষিতিং। এবং সর্বধা তদেকাশ্রমণ
শ্রণাগতলক্ষণনিত্যভিব্যক্তিতং তংএকারশ্চ দ্ধিতঃ॥ ৪১৫॥ তত্র মতাশ্রহং নিথতি কেচিদিতি। স্থ্যক্ষেত্রকারভারভারভারভারভারতি কিন্তান্ত হুং বিচারতঃ প্র্যাবস্থে।
ভূজাত্রেইভিব্যপ্ত্রিত্বাং॥ ৪১৬॥ আমুক্লান্য ভগবন্তকনামুক্লতায়াঃ সঙ্কংপঃ কর্ত্ব্যব্রেন

রিজিষাভীতি বিশ্বাদোণোপ্ত্যবরণং তথা। আত্মনিক্ষেপকার্পণ্ডে বিড্রা শরণাণতি বিতি । ৪১৭ ।। তবাক্ষীতি বদন্ বাচা তথৈব মনসা বিদন্ । তৎস্থানমান্ত্রিত তন্যামেলতে শরণাগতঃ ।। ৪১৮ ।। অতএবোক্তং দশ্যে শ্রীভগবন্তং প্রতি অক্তরণ কং পণ্ডিত পুদপরং শরণং সমীয়াড়ক্ত প্রিয়াদ্তগিরঃ সুক্ষণ রুভজাৎ । সর্বান্দণতি সুক্ষণোভজতোহ ভিকামানাত্মানমপুপেচ্যাপ্তয়ে ন যস্য ।। ৪১৯ ।। ত্রায়ে শ্রীউদ্ধবেন। ততা বকীয়ৎ স্তনকালকুটং ভিষাংসয়া পায়য়দ্পাসাধী ।

নিরমঃ। প্রাতিকূল্যস্য ভবৈষপরীভাষ্য বর্জনং। গোপ্তরেন পতিত্বেন বরণং স্বীকরণং প্রার্থনয়। যালনোনিংক্ষেপঃ সমর্পং। কার্পাঞ্জগবন্রকারকেত্যাদিপ্রকারেণার্ড্রং। ততক্ বিশ্বাস-কপেপ্রীতিকপে চসখ্যে রক্ষিষ্টিতি বিশ্বাসং। ততএব গোপ্তস্ববরণং চেতি দ্বং। তথা প্রীতি পভাবেন আন্তকুলা সঙ্গপঃ প্রাতিকূল্যবজ্জনিং চেতি দ্বয়ং প্র্যাবসাত্যেব। তথা মাং প্রাপ্রো-জনঃ কশ্চিম ভুয়োহইতি শোচিওমিতি। আর্ত্তানাও শ্রণও মুহ্মিতি ভগবন্ধচনবিশ্বাদেনাল্ল নি ক্ষেপকাপ্রে। অপি তাত্রৈর পর্যাবস্তঃ। তত্র ফুক্মবিঢারাপেক্ষয়। নেবেদনে আত্মনিকেপঃ কার্পণ্যক্ষ প্রীতিবিশেষস্থাভাবিকতয়া প্রীত্যাত্মকে স্থাএব দ্রুষ্টব্য-নিশ্লাষা দিক্ ।। ৬১৭ । এবং ফলিভং সংকেপেণাভিবাধ্যুন্ শ্রণাগতকুতাক দশ্যুন্ ত্যাহা-গোমেব লিখতি ভবেতি। তথা দেছেন ভদ্য ভগৰতঃ স্তানং শ্রীমথুরাদিকমান্তিতঃ দন্মোদতে তা নক্ষত্রতি। স্কর্থা স্থ্যসিদ্ধে: । ৪১৮।। ত্র্ ত্রত্ত্যেত্পর্ইকঃ স্মীরাৎ দীর্ঘত্রণ প্রইক্ষ-পদ বা আবং। সমাক্ইয়ালাজেছে। তত কেউত্বেন বিশেষণ্চত্তকীরণ। ভক্ততব প্রিয়েংসা। খত সতা গীকাক্ যস্য। স্কুদঃ নিরুপাধিরপাকারিণঃ। রুত্মালনোভক্তস্য চ্জানাতীতি তথা তথাং। অভএব ভবান ভজাতোজনস্য অতএব সহস্দঃ সক্তিৰ্ধা। মহা প্ৰির্ম্নে স্থাঁক্তশ্য জনস্য সক্ষান অভিতঃ কামানু অভি অভয়° যথাস্যাদিতি আত্মানমপি দদাতি। ভজনেন বদ্য স্বতঃ স্বত্টপ্রচয়ে। লাভোনান্তি নিতাপ্রিপূর্বাং । অভজনের।প্রয়োন্তি নিতাং স্বতঃপ্রি-পুণ্ড্রেনানন্যাপেক্ষয়াও। সোহপি ভবান্ ভক্তিপুর্বশঃ সম্ আল্লানং দদাতি। যদ্বা তেন নিজে। প্রচয়াপ্রহয়ে। প্রমকারুণ্যাদিনা মন্যমানম্পি ভগবস্তং প্রতিনিজভক্তসূত্ইটা প্রম্বিন-য়েন এমদক্রবস্য তাদ্ভাক্তিজেয়। যদা উপচয়ালচয়ৌনেতি বৃদ্ধিত্বিলহ্লা মহক্তমতারাঃ পরা কাষ্ঠা দশিতা। তথাভুতমপ্যাত্মানন্দদাতি ভক্তবণ্যং করেটোত্যর্থঃ। অয়ম্বি শরণা গমনে তেওজে য়ঃ।। ৪১৯।। ইদানীং পর্মভুক্টেছপি পর্মরূপাং দশ্যন্ তলৈট্বক্স্য শ্ব-ণাতাং নির্দারয়ন্ নিজবক্ষাবর্গেণ সহ স্বায়মপি তং শরণং গছত্রপসংহরতি। আহোইতি আশ্চর্যাং। হস্তমিচ্ছয়াপি স্তনয়োঃ সন্তুতং কালকটং মহাছবিষং বং অপায়য়ং। বকী পূতন; অসাধী ছ্টাপি। ধাত্যাঃ যশোদায়াঃ শ্রীযশোদাধাত্রীত্বেন প্রশিদ্ধয়া:শ্রীমুখরায়া ব। শ্রীদেবকীবাত্রা ৰা কস্যাশ্চিৎ উচিতাং গতিং জন্মাদেব লেভে ভক্ত্যাবেশমাৱেণ যঃ সদাতিং দদ।বিভার্থঃ। यहः। মরণসময়ে তস্যাআর্ত্তনাদমাকর্ণ্য গাত্রাক্ষালনাদিছঃথমবলোক্য চ কেবলং পরছঃখাসহিষ্ণুত্রা মস্তাদৃশীং গ্রতিমদাদিত্যর্থঃ। তত্ত্রচ ধাত্রীগতিদানে স্তন্যদানং কপটেনাপি মাতৃভাবাত্মকরণঞ কারণমূহাং। তচ তাং তীক্ষাভিত্তামতিবামচেটিতামিতি শ্লোকোক্তয়া মাত্বলালনাদিপর্মর্মা চেইবা ব্যক্তিতমেবান্তি। বাখ্যাতঞ্ এস্বামিপাদৈ:। অহমণ্য জননী ইয়ং বেতি মোহিতে স্তাঃ

বিতি। তত্মাৎ জ্রিক্টাদন্যং কং দয়ালুং শরণং ব্রজেম । সম্ভাবনায়াং সপ্তমী। বাশব্দঃ কটাকে জাতোচন্যঃ কোপি দয়ালুর্নান্তি অতস্তমের বয়ং দীনাঃ শরণং গচ্ছামইতার্যঃ। যদ্যপি শরণাধ্যন্তি পিত্তিলিখনং কাদাচিৎক ক্তালিখনানন্তর মেবোপপদ্যতে সক্লদেরপ্রপ্রোযঃইত্যাদিরচনতঃ সক্লং প্রসৃত্ত্যের শরণাগতত্বসিদ্ধোঃ। তথাপি শরণাগতত্বস্য নিত্য ভগবৎস্থানাশ্রয়ণাদিলক্ষণত্বেন নিতান্মানুকূল্যসঙ্কপোদিলক্ষণত্বেন চ,নিত্যক্ত্যান্তরের পর্যাবসানাদ্বৈর লিখিতমিতি দিক্।। १२०॥

সমুদ্রং হস্তরং যাগ্য দয়য়া স্থামুন্তরেও। ভারাক্রান্তঃ থরোপ্যেয় তং শ্রীটেতন্যমাশ্রের। এবং ক্রান্ত্রিক্রেন বিবিচ্য লিখিত্বা ই দানীমেকতৈর নানাবিধানিক্রত্যানি বজানিচ লিখিত্বং প্রতি জানীতে অথেতি। শ্রীবৈঞ্চনাং কর্ত্তবাঃ কার্য্যাইত্যতহেত্বঃ শিন্তানাং সাধূনামাচারস্যাক্র সারতঃ ইতি। প্রাক্ লিখিতেন সাদাচারস্য নিত্যত্বেনাবশ্যং বৈফ্বৈঃ সদাচারোহস্মর্সর্ত্তবাইত্য ভোহেতোরিত্যর্থঃ। অত্র প্রস্তে সমাসতঃ সংক্ষেপেণ। বদ্যপি কর্ত্তব্যাইত্যনেন বিধেয়ানামের লিখনমায়াতি নস্ত বর্জ্যানাং তথাপি বজ্যেঘপি নিবৃত্তিক্রণা ক্রিয়ান্ত্যেবেতি তেপি কর্ত্তব্যেষু প্রবিশস্তোবেতি। যদ্বাক্রত্যালখনেহক্রতালখনমপ্যপেকেতৈতি সাহচ্য্যাদ্র্জ্যাত্মপি লেখ্যাঃ স্থারে ব ৷ তত্র দেবাদীনচ্চ ক্রেলিভোবমাদয়ঃ কর্ত্তব্যাঃ পরস্থান হরেদিভোবমাদয়ো বজ্জ্যা উহ্যা। হং>।। বৃদ্ধান্ বয়োজাতিবিদ্যাদিনা বৃহত্তর ান্ আচার্য্যাংশ্চ গুক্রন্। ওষধীঃ বিফ্বক্রান্থা দ্র্র্যাব্যাঃ। চহংতা প্রদিশ্ধা অলক্ত্রা অমলাশ্চ কেশা যাস্য সঃ । প্রস্নিক্রেতিপাঠঃ ক্রিছে।। হং৪।। নরোচয়েও নেচ্ছেও ৷৷৷ হং৫।৷ বছভিত্রেরিং যাসা অতিকীটকঃ অত্যন্তকীটবওপীড়কঃ। কণ্টকৈরিতি পাঠে স্থবার্ধ:। বল্ধকী অসতী।। হং৬ ৷৷ ন মহীং লিখের বৈরিতি জ্রেং। ন নবৈথিরি

त्तर मनक्ता म गूर्वर शंकनः प्रथः। मथान बाररप्रव्हिन्। म प्रशे न महीः निरथर। শস্তানি নাভিবীক্ষেত চ প্রভো।। ৪২৯।। ন হুকুর্য্যাচ্ছবং চৈব শবগন্ধোহি সো মজঃ।। ৪৩০।। চত্তপথং চৈত্যভক্তং শাশানোপবনানি চ। দুউদ্ভীসমিকর্ধ্য বৰ্জায়েলিশি নৰ্কদা। পূজ্য দেবদিলজোতিশ্ছায়াৎ নাতিক্রমেদুধ্যা৪৩১।। নৈকঃ भूगारिवीः शटक्क्ति गृनार शृहर उटकर। किमाखिककेकारिमश्विणख्याउसः ख्या। सानार्छा ९ ४वनी ९ टेठव मृद्र अविवर्ष्ड (यु । नानार्य) नामरा का भिन्न জিকাৎ রোচয়েছুধঃ। উপসপেরিট ব্যালাৎশ্চিরৎ তিঠের চোপিতঃ । যথেই । ভোজকাং শৈচৰ ভথা দেবপারাং মুখান্। বর্ণাশ্রমক্রিয়াতীতান্ দূরতঃ পরিবজ্ঞে য়েং। ভাতীৰ জাগৱস্থানী তদ্বং স্থানাসনৈ বুধং।ন সেবেত তথা শহ্যাং ব্যায়ামঞ্চ নরেশ্বরং नः किनः मृक्तिनरेम्ह्य आफ्रामृत्वन वक्तिराष । णवना । यक्ता । विक्ति पूर्वावाची -পৌতথা । ন সুয়োল স্বপেলগোনটেবোপ স্প্ৰেছুধঃ । মুক্তকচ্ছত নাচামেদেবাদ্য ল্পি বন্ধ যেহ। নৈকৰত্ৰঃ প্ৰবৰ্জেত বিজ্বাচনকে জ্পে ।। ৪৩২ ।। কিঞা । নচ লিগু খায়ে ২ কেশানালানেরৈব চোথিতঃ পাদেন নাক্রমেৎ পাদং ন পুজ্যাতিমুখং নতাং ।। ৪১১।। অপসব্যং নৈব গচেছদেবাগারচভতাথান্। মঞ্ল্যপূজ্যাং 🕫 ्या विश्वी छात्र मिक्ति । (मामार्का भाष्युवा युवा युना १ भृक्या नाथ न मरमूथर । कूर्य) र कं वन दिस् व्याप्य मर्गक शिख्यः। विष्ठेत्र मृत्य स्विष्ट श्रष्टानः नावमृत्येसः। (भू स-বিগুত্রকানি সকদেব ন লগুয়েৎ! শুেষ্ঠীবনকোৎসর্গোনায়কালে প্রশস্তে!

নিংক্ত্ নিনিত কেন্দ্রি। তেং। ন ক্ফীরাৎ সততমলাদ্যপসরণার্থং ন নিজ্ফে । ৪২৭।। তিংগ ন ও কংগ্রেলিত বিদ্যানিত। তথাত কৌর্মে। ন দিত নথনোমানিজিল্যাদিতি। ৪২৮।। জ্যোতিই নিজত বিদ্যানিত প্রথানিত প্রথানিত বিদ্যানিত প্রথানিত বিদ্যানিত বিদ্যানিত প্রথানিত বিদ্যানিত বিদ্যানিত বিদ্যানিত বিদ্যানিত বিদ্যানিত বিদ্যানিত বিদ্যানিত বিদ্যানিত ক্রি ক্রিলিত বিদ্যানিত ক্রি ক্রিলিত বিদ্যানিত ক্রিলিত বিদ্যানিত ক্রিলিত বিদ্যানিত ক্রিলিত বিদ্যানিত বিদ্যানিত বিদ্যানিত বিদ্যানিত ক্রিলিত বিদ্যানিত ক্রিলিত কিন্তিত ক্রিলিত বিদ্যানিত বিদ্যানিত ক্রিলিত বিদ্যানিত ক্রিলিত বিদ্যানিত বিদ্যানিত বিদ্যানিত ক্রিলিত ক্রিলিত ক্রিলিত ক্রিলিত ক্রিলিত ক্রিলিত ক্রিলিত বিদ্যানিত ক্রিলিত বিদ্যানিত ক্রিলিত বিদ্যানিত বিদ্য

ब्लिमअनक्ष नार्दिन न एक्ट्रिय न मक्ष्यता । यो विष्ठानां वसरता छ नहां नार विष्ठान-मुधा न दिर्विषु र् बिका मूनारिक्य्री का कार्षन । महना भून्मत्र क्षा का भूका ननि বাদ্যচান নিজ্বামেৎ গৃহাৎ প্রাক্তঃ সদাচারপরোনরঃ ।। ৪৩৪।। অকালগজিতি। मो जू अर्वायर मोठका निये । अन्थायः तूथः कूर्या मू शता गा नित्क उथा ।। १०७।। वर्षाज्ञानितक हजी नर्छी वाजा है वोस् ह। भवीवजानकात्मादि त्मानान कः नना ব্রিজেৎ।। ৪৩৬।। নোর্জং ন ভির্যাক্ দূর্যা নিরীক্ষন্ পর্যাটেরুধঃ। যুগমাত্রং महो भूषे १ न दा श एक विद्या करा ने विश्व मुक १ विष्य मुक १ विष्य में विश्व म । তদ্বদেৎ। শ্রেরস্তত্রহিতং বাচ্যংবদ্যপ্যত্যন্তমপ্রিরং। প্রাণিনানুপকারায় বদে-ৰেহ পরত্র । কর্মণা মনসা বাচা তদেব মতিমানু ভক্তে ।। ৪৩৭ ৷৷ বৃহলারদীয়ে সদাচারপ্রসঙ্গে । অসাবহ্মিতি ব্রুয়াদ্বিজোবৈ হ্যভিবাদনে। আদ্ধং ব্রতৎ জপং मान ( रिव जो जा अर्जन १ ज्यो । यद्धक जर्भ नरेक व कूर्य छ । ना जिवा मरा १ । । १०৮ ।। তথা স্নানং প্রকুর্বনতং ধাবন্তমশুচিন্ত গা । ভুঞ্জানঞ্চ শায়ানঞ্চ অভ্যক্তশিরসভ্যা। ভিক্ষারধারিণ চৈব রমন্তৎ জলমধ্যগং। কৃতাভিবাদনোয়স্ত ন কুর্য্যাৎ প্রতিবাদনং। নাভিবাদ্যঃ স বিজেয়ো যথা শূদ্রন্তথৈব নং ॥ ৪৩৯॥ মার্কভেয়পুরাণে মদাল-লালক সম্বাদে। অসংপ্রলাপমন্তং বাক্ পারিষ্যঞ্ বজ্জ য়েছ। অস্চান্তমস্থাদ त्रत्रश्य भूजक कम्यमाधनामम्मन्निन मस्यावनः। भूकाङ्गवव कार्यानि (एरजानांक छर्शंवर il 880 ll । উपका। पर्मनः न्यामं र राष्ट्रं सर्वायनस्या ।। 885 ll

কুর্যাৎ অধিকারং ন কুর্যাৎ। যদ্বাজীভোহধিকারং ন দদাদিত্যর্থঃ । দদাচারপরই বি
সর্কতিবাহেতি। ওচোজানাং সর্কোদাের নিতাত্ত্বমভিপ্রেতি॥ ৪৩৪॥ পর্কান্ত অইম্যাদিরু।। আদিশক্রেরগৃহীতো বিশেষঃ কাশীথণ্ডে। অকালনিচ্যু-ন্তনিতে বর্ষতোপাংশুবর্ষণে।
মহাবাতধনী, রাজাবনধ্যায়াঃ প্রকীর্ন্তিতাঃ। উদ্কাপাতে চ ভূকন্পে দিলাহে মধ্যরাত্রিয়।
সন্ধায়োর্বলোপান্তে রাজচক্রস্য সতকে। দর্শেহইকান্ত ভূতায়াং আদ্বিকং প্রতিগৃষ্ঠ ।
প্রভিপদ্যাপি পূর্ণায়াং মার্জারেণ কৃতান্তরে। খয়োইকোইবিহতে সমবায়ে রুদতাপি।
উপাকর্মণি চোৎদর্গে পশ্বি মার্গতরৌ জলে। আবশ্যকমধীত্যাপি বাণসাম্মারপি ধনৌ।
মার্ধায়েরসু চৈতেরু নাধীয়ীত দিজঃ কৃচিৎ। কৃতান্তরায়োন পঠেং ভেকাপুশাহবভূতিরিতি। এতে অন্ধ্যায়াঃ প্রায়োবেদপাঠ বিষয়া এব জ্রেয়ায়া ৪৩৫॥ ছত্রী সন্দণ্ডী চ
সন্ ব্রেজিদিত্যমায়াঃ প্রায়োবেদপাঠ বিষয়া এব জ্রেয়ায়া হিল্ডা ক্রিকা
পুরাণে ক্রমেণ বর্জমানানামপি কেবাঞ্চিৎ বচনানাং পরিত্যাগ পূর্বাং ক্রিয়েশিচভালেন্
প্রপ্রবাণ ক্রিমানানামপি কেবাঞ্চিৎ বচনানাং পরিত্যাগ পূর্বাং ক্রিয়েশিচভালেন্
প্রপ্রবাণ ক্রিমানানামপি কেবাঞ্চিৎ বচনানাং পরিত্যাগ প্রবাং ক্রিয়েশিন
বর্জ্যানাই আদ্বমিতি জিতিঃ আদ্বাম্প্রেগাগাহ । এবম্ব্রেপ্রহ্মা ৪৩৭॥ অভিবাদনে
বর্জ্যানাই আদ্বমিতি জিতিঃ আদ্বাদি কুর্বান্তং । ৪৩৮।। প্রতিবাদনং প্রত্যাভ্রিমিনং।
আন্তর্বাদনপ্রতাতিবাদনয়োঃ প্রকারঃ প্রসিদ্ধ এব ।। ৪৩৯।। অসন্তং অসাধুং। অসন্তর্বা

निर्वा कितः मानः कूर्याक्षिकावनः नतः। भितः मुक्ति टिल्लन नाक्षरः किथिः। मिशि म्ल्राम्था १८४।। शङ्ग (मर्याजाञ्चानां त्रार्वामुःथ्राख्वमा ह । विमाधि-कना छिक्तिना जातार्जना महोयमः ॥ ८८०॥ मृकास्वविदेशनाथ मर्जनामा कना চ। পুংশ্চল্যাঃ ক্তবৈর্গ্য বাল্দ্য পভিত্ম্য । উপান্দ্রনাল্যানি ধৃতান্যনৈ।র্ম ধারয়েং। উপবীতমলক্ষারং করকং চৈব বজ্জ য়েং। ন কি গুবাহু জ্বশ্চপ্রাজ্ঞ खिर्छ ९ कलावन। नवाणि विकित्भर भारती वामगी नव भून एवर ।। १८८१। मृर्थी-ग्राङ्क मित्रिकिशान् मित्रिक्था । नृग्नाङ्गानथमार केव (नःशहारका मृत्राये । ।। २१৫।। পরস্য দত্তং নোদ্যচ্ছেৎ নিক্ষার্থং পুত্রনিষ্যয়োঃ । নানুলেপননা দন্যাদমাতঃ সাভকী কৃচিৎ ॥ ৪৪৬॥ নচাপি রক্তবাসাঃ স্যালিত্রবাসধরোপি বা। ব্যুকেমানি চান্ডে চ স্ত্রীসভোগে চ পুত্রক। সুণরীত চেলবান্ প্রাতঃ কটভূমিমুপে-ত। চ। ৪৪৭। নুগপজ্জলমধিক বিভ্যান বিচক্ষণঃ। নাচক্ষীত ধরন্তীংগাং জলং নীঞ্জ-निना शिरव । भोठकात्मयु गर्यायु शक्षप्राध्यम् व। शूनः । न विनास्य भोठार्थः न मूर्थनाननः थरमः ॥ ८८৮॥ विश्व (यानिककान्। क इस्त्रक्षान्दाधिनः । कारची मूथ তোমে (४) न (१) संदर्भ मा । हो लगर । मो छः अमूबरन (मधार मकूनिः कल পাতনে। উদক্যাশৌচিলয়াৎশ্চ দূতিকান্তনাৰ সায়িনঃ। স্পৃট্টা সুয়াত শৌচার্থৎ তথৈব মৃতহারিণঃ ।। ৪৪৯ ।। নারং স্পৃতি বাস্থি সম্পেং ক্লিডঃ শুধ।তি মানবঃ । काहरेगायं व निः एम्हर गांमानकार्कियोका वा ॥ ३७०॥ न हाल ११९ जनर विकेर बीরহীনাং তথা ব্রিয়ং। দেবভাভিথি সচ্ছাত্র যক্ত সিকাদি নিন্দকৈঃ । কৃষা कू म्मानामा छाषामकीवानाकनार । चरानाका उत्यापकामा अन

শিরংলানঃ দন্ অঙ্কং তৈলেন ন স্পৃত্ধং ন লেগ্রেছ। নহা দ গুছিবনঃ ফুধাদি পীড়িত্স্য আন্তর্ম চ রুগ্র্মা পাঠান্তরে বোগাদিছঃখেন বিবশ্য্য মহীয়দঃ বৈফ্রম্য। ১৯০ ।। উপ-বীতাদিকমন্যৈ পূ্তং বর্জ্জারেছ। বাস্সা পরিধানোত্রনীয়ে লাতঃ সন্ন ধূনরেছ। ন নর্জ-রেছা নচাপি ধূনরেছকেশানিত্যেতদনন্তরোক্তেঃ। এবমনাল্লোকহর্ত্যপারং শ্লোকপাদঃ পুন লিখনপরিছারার্থমন্ত্র সংযোজ্য লিখিতঃ। অন্যথা তল্পয়াবর্তনাং শ্রীবিষ্ণুপুর্বাগদাবপ্যক্তানাং পুনলিখনেন বৈষ্ণ্যাপত্তেঃ। এবমনাদপূর্জ্য তিচ্চ ক্রম্যে নুলে পরিছার্থমেব।। ৪৪৪॥ উপহাদেছ উপহসেছ।। ৪৪৯॥ লাভকী লানার্থে। নাছল গ্লিছ্মিংশ্রশানং।। ৪৪৭। প্রক্তীং জলং পিন্তীং নাচক্ষীত কলৈছিল কথ্যেছ। নাজন্রেছিত্রিখিঃ। যদ্ধাবিষ্যালার গ্রেছিত্রিখিঃ। যদ্ধাবিষ্যালার মুখাদিরিরজায়তইতি। তল্প প্রিহোক্তাদি বিষয়ং॥ ৪৪৮।। আননং মেদ্যং মান্তর্থনাননং শকুনির্মেধ্যঃ।। ৪৪৯।। ইক্ষ্য নিরীক্ষ্যা ৪৫০।। লালপেছ ন বংজাবেছ লোক্ছিইং জনং। অস্ত্যজান্ চণ্ডালাদীন্ বিবস্তান্ নগ্লান্ অস্ত্যাবসামিন

পতিতৎ লঠৎ ৷ বিধুমি সূতিক যণ্ড বিবস্তান্ত্যাব সায়িনঃ ৷৷ ৪৫১ ৷৷ সূত নিঘাতকাশৈচৰ প্রদার্রতাশ্চ যে ৷ এতদেব হি কর্ত্বাং প্রাইজঃ শোধনমা-ত্মনঃ ।। ৪৫২ ।। কিঞা । যজাপি কুর্বভোনাত্ম। জুগুপ্সামেতি পুত্রক। তং কর্ত্র । মৃশক্ষেন যন্ন গোপ্যং মহাজনে । । ৪৫৩ ।। ভবিষ্কোত্তরে শ্রীকৃষ্ণযুধিষ্ঠির সম্বাদে। উপাসতে ন যে পূর্কাৎ দ্বিজাঃ সন্ধ্যাং ন পশ্চিমাং । সর্কাৎস্তান্ ধার্মিকোরাজ: শুদ্রকমাণি যোজ্যে । দূরাদাব্যথালাত্ত্রং দূরাৎ পাদ।বসেচনং। উচ্ছিটো १ मध्रेन १ जून महाकार्य। १ विकि विना। উ क्हि छोन न्यू भिक्कीर्यः मर्द्यश्राना-ন্তদাশ্রাঃ। কেশগ্রান্ প্রারাংশ্চ শিরস্যোতানি বছুরিং। ন পান্ত্যা-মুভাভান্তি কঞ্য়াজ্ঞাতুবৈ শিরং।। ৪৫৪:। কিঞা সুবাগিনীগুর্কিনীশ্চ বৃদ্ধ বালাতরৌ তথা। ভৌজয়েৎ সংস্কৃতালেন প্রথমৎ চরমৎ গৃহী। অংঘংসকে-ৰলং ভুঙ্ক্তে বদ্ধে গে।বাহনাদিকে। যোভুঙ্ক্তে পাওবশ্রেষ্ঠ প্রেক্ষভাস্থাদ:-त्र हा। 800 ।। वर्ड्स (श्रमिक अप तादों थानाक वामरत । किछ मुखक নাৰকৰ্যেত ন ৰহিধারয়াত চ। গৃহে পারাবতা ধন্যাঃ শুকাল্চ সহসারিকাঃ। কৌজে ব্যাসগীতায়াং । তৃণয়। যদিবা শাকং মূল্যা জ্লমেব বা । পরস্যাপাহরন্জ্যুন্রকং প্রতিপদ্যতে। ন রাজ্ঞ প্রতিগৃহ্বায়ার শূচাং পতিতাদিপি । নান্স্থাদ্ধাচকত্বপ নিন্দিতাদ্বজ্ঞ য়েদ্বধঃ। নিত্যং যাচনকোন স্যাৎ পুনস্ত তৈব যাচয়েং। প্রাণানগংহ তোষ যাচকত পা দুমাতিঃ। ন দেবছৰ) ছারী সাাদিশেষেণ দ্বিজোত্তমাঃ। ব্রহ্মমং চ নাপাহরেদাপদ্যপি কদাচন। ন বিষৎ বিষ্মিত্যাক্তর ক্লিয়্রৎবিষ্মুচ্যতে। দেবস্বং বাপি যত্নেন সদা পরিহরেত তং। ন ধর্ম স্যাপদেশেন পাপৎ কৃত্ব। ব্রভৎ চরেৎ। ব্ৰতেন পাপৎ প্ৰছোদ্য কুৰ্বন্ স্ত্ৰীশূদ্ৰদন্তনং। প্ৰেত্যেছচেদ্শোবিপ্ৰোগৰ্ছ্যেত ইক

নশ্চ যবনাদীন্।। ২৫১।। এতদেব অবলোকনমিতার্থঃ। ২৫২।। কিংবজনোক্তেন সংক্ষেপতঃ ক্রতাং বর্জাঞ্চ লক্ষণ শূণিতাাছ্যক্তেতি। আলা মনঃ। বর্জাঞ্চ তদ্বিপরীতমেবেতার্থঃ।। ৪৫৩।। শিরঃ আলানএব ন পরন্যতি বোদ্ধরাঃ। নসংহতাতাাং পাণিতাাং কণ্ডুয়াদালানঃ শিরইতি কৌর্মোক্তেঃ।। ২৫৪।। অবাসিনীঃ স্বগৃহবন্তি বিবাহিতকনাঃ। চরমং প্রশান গুলী ভুঞ্জীত। আহনমপ্রঃ। আদিশনাং বহুসর্গাদি তান্ প্রতি জলানিকমদন্ত্রেতার্থঃ।। ২৫৫।। ধানাভূট্যবাংশ্চ শিবসে বর্জারে ন খাদেহ তহু কারণং চোক্তে।। তত্তিবা দিবা ধানাস্থ বসতি রাজৌ চ দবিশাক্ত্রা। এককারীঃ কোবিদারেরু নিতামের কুটারেরি । নাবকর্ষেৎ স্বয়মাক্রয়ান ছিল্যাদি তার্থঃ। স্বং নোজাররেদিতি কেটিদাল্ডঃ। পন্যাঃ তে তল রক্ষাইতার্থঃ। অতন্ত তৈবাদ্ধিপদ্যং। ভবস্তোতে ন পাগার যথাবৈ তৈলগারিকাইতি। তুণাদিক্সপহরন্ নর্কং যাতি। যটোক্ত মত্রবা পুর্পে শাক্ষোদক্ষে কার্টে তথা হুলে কলে তথে। অদ্ভাদানমন্তেরং মন্ত্রাহেতি। তার শ্বিমার্থিকি বিরুদ্ধে। যতন্ত্রিকার্মার্থিকি ক্রাণ্ডি বিরুদ্ধি ক্রাণ্ডিকার কার্টে বিরুদ্ধি ক্রাণ্ডিকার ক্রাণ্ডিকার ক্রাণ্ডিরেলার্ডিকার ক্রাণ্ডিরেলার্ডিকার ক্রাণ্ডিরেলার্ডিকার ক্রাণ্ডিরেলার্ডিকার বিরুদ্ধনার্থিকার বিরুদ্ধনার্থিকার ক্রাণ্ডিরেলার্ডিকার বিরুদ্ধনার্থিকার বিরুদ্ধনার প্রতিভালবে ক্রিটিলার্ডিকার বিরুদ্ধনার্থিকার বিরুদ্ধনার্থিকার বিরুদ্ধনার্থিকার বিরুদ্ধনার্থিকার বিরুদ্ধনার্থিকার বিরুদ্ধনার্থিকার বিরুদ্ধনার্থিকার বিরুদ্ধনার্থিকার বিরুদ্ধনার বিরুদ্ধনার্থিকার বিরুদ্ধনার বিরুদ্ধনার্থিকার বিরুদ্ধনার বিরুদ্ধর বিরুদ্ধনার বিরুদ্ধ

বাদিভিঃ।। ৪৫৬।। দেবভোহাপুরুতোহঃ কোটিকোটিগুণাধিকঃ। জা<u>না</u>পবাদো-নাসিক্যং ভন্মাৎ কোটিগুণাধিক্। 11 ৪৫৭ ।। কিঞ্চ । হিমৰ্ঘ্ছিয় পোর্মধ্যে পূর্ক-পাৰ্ভিময়ে হৈ তথা মৃত্যু। সমুদ্ৰয়োদেশিং নান্ত্ৰ নিৰ্দেশিকঃ । রুফোনা ইত্র চরাত দুগোনিভাং অভাবতঃ । পুণ্যাশ্চ বিভাগতানদ্যস্তত্রবা নিবনে জিলঃ। অর্জজ্ঞো-भागनीयान्य वर्ष्ट ज्ञान विद्याखनीश १८४। किथा । कथिया सम्बन्ध देव भलिएन বিশেষত । ছাতেৰ স্তাৰাজেৰি মন্ত্ৰিং পাণ্ডি।বিভিন্নতে ।। পরক্ষেত্রে চর্জিংগাং म इन्हिली इन्नि हिर्मा १८८१। म मूर्ते १० विराधिर वा स्वाकृष्टी १९ महावितः । शतरेमा क्रमद्विष्याम् भाषान्या क्रमक्षमः। विविद् । शक्षमः मः ज्ञृत्तामस्यानि विनिर्मिष्यः। ११०७० ११ म स्पत्र शरारिकाभार मेसिया र छ बाररा २ । निया स्टर्स । इस्स् स्वर्ग । इस्स् स्वर्ग स्वर्ग स्वर्ग स्वर মাহলপাৰ্থ ছণ্ম। কপ্পকোটিপাতং সাত্ৰিং ছোৱাৰে পাচাগেত নাটে। । ৪৬১ ।। । জুক্টা-मानीक निकास में जुमांद कि विभूत्यर । करने शिषांत शरा १ महिनम्बर्भायeux 116 % त वर्ष्ण (होरेख १० माध्ये भारतमाथ भूगतापुर्यः । दिवाम ४ सङ्देगः भाषार ল ব্যাধনতির ভলাতন যা ৪৬০ যা ন পাপেং পালিন্ধ জুভাগপাপতা বিজ্ঞোভ্যাঙ ৪৪১৪ ।। তেকেতে,দাত্রামিতাই দাশিল্য বা নিটিয়তঃ ।। ৪৬৫ ।। গালে ন বালিজং লোপান্টিং নমধালং ৷ জিলেছিতং থাস্যা বা ন দুৰ্গান্তৱ গালিনং ।। ৪৬৬।। ন্যাং নিয়ং খুলাংগয় পুথীবং দুভাষেকা । পতি কেজ-ভালাল (লাই নাবেলাকয়েৎ II ৪৬১ টি । ন বুলাব্যালাপ বা নোলভাৎ সত্যেব र । म्यु मान क्वाइत शहीर रेग्नाबीहरू उ किर्योश ॥ ४५५ ॥ कृदर्ग गुण्याः पात्रा नामनजार रथामुरार । लामस्क ठाञ्चस्मानाशः म गुग्र धस्यापं ना॥ १०० ॥

ত্যেন বাংলবন্তনাথ। যদা প্রীক্ষা হ কণ্টং ব্যান্ । ৪২৬।। জাটো বা স্থাং বাংল অপ্রাদঃ খণ্ডন বাটা প্রাটা ক্রাটা নিবস্তা লাগিছিল। বিশ্ব বাংলবিদ্ধা বাটা প্রাটা নিবস্তা লাগিছিল বাই এক কণ্টা ক্রাটালি নিবা সক্ষাদোলাক ক্ষেত্র কর্মাটালি ক্ষাদোলাক ক্ষাদোলাক ক্ষাদোলাক ক্ষাদোলাক ক্ষাদোলাক ক্ষাদোলাক ক্ষাদোলাক ক্ষাদোলাক ক্ষাদোলাক ক্ষাদিল ক্ষাদালাক ক্ষাদালাক ক্ষাদালি ক্ষাদালাক ক্ষাদালাক ক্ষাদালাক ক্ষাদালিক বাংলাক ক্ষাদালাক বাংলাক ক্ষাদালাক ক্ষাদালা

ন শূদ্রায় মতিৎ দদ্যাৎ কৃষ্রং পায়সং দ্ধি। নোচ্ছিটং বা ঘৃতমধু নচ কৃষণজিনং হ्विः। 89. ।। न क्वां । कमाहिर भीषार मूज्य सिषाक जोष्ट्यर । नाजानदम-ন্যেত দৈন্যং যত্নেন বক্জ য়েৎ। নচ শিষ্যায় সংকুর্য্যায়াআনং শংসয়েদ্বুধঃ ।। ৪৭১ ।। ন নদীঞ্জ নদীং ব্ৰুয়াৎ পৰ্বতে যু ন পৰ্বতে । আবসেতেন নৈবাপি যন্তঃজেৎ সহবাসিনং ৷৷ ৪৭২ ৷৷ শিরোইভ্যঙ্গবশিষ্টেন তৈলেনাঙ্গং ন লেপয়েৎ ৷ রোমা বি চ রহস্যানি স্থানি খানি নচস্পৃশেৎ। ন পাণিপাদবাজুে এচাপলানি সমাশ্রয়ে । নাভিহ্নাক্তলং পদ্ধাং পাণিনা ন কদাচন । ন ঘাতরেদিটিকাভিঃ ফলানি ন কলেন চান স্লেচ্ছভাষণং শিক্ষের কর্ষেত্র পদাসনং। নোৎসঙ্গে ভক্ষেত্রকগান্ গাঞ্চ সয়েশায়য়হি। নাক্ষিঃ ক্রীড়েয় ধাবেত স্রীভিব্যাদং ন চাচরেৎ। ন দত্তৈর্নখলে:-মানি ছিন্দ্যাৎ সুপ্তৎ ন বোধয়েছ। ন বালাতপমাসেবেছ প্রেতপূসৎ বিবৰ্জ্যেছ। ৪৭৩। টনকঃ সুপ্যাৎ শূন্যগৃহে স্বয়ং নোপানহৌ বহে । নাকারণাদ্ধী নিজীবেল বাহুভ্যাং নদীং তরেং। ন পাদকালনং কুর্য্যাৎ পাদেনৈব কদাচন। নাগ্নৌ প্রতাপায়েৎ পাদে न कार्यन । शतरप्रमृक्षः ॥ १९४ ॥ नाष्ट्रिकातरप्रकान् द्वाक्रानान् गामशीलि व।। न স্পৃশেৎ পাণিনাে জিফুটোবিপা গো তাকাগনলান্। ন চৈবারং পদা বাপি ন দেব-প্রতিমাৎ স্পান্দেই । 189৫।। নোভরেদনুপস্পান্সুবন্তীং নোব্যতিক্রমেই । চৈত্যং द्कर रैनव व्हिन्छाबारमू छीवनगुरुगुरकर। नहाबिर लर्पासकीमान् लाशप्रधानधः কুচিৎ ৷৷ ৪৭৬ ৷৷ নাচৰিৎ পাদভঃ কুৰ্য্যাৎ ভিলবদ্ধৎ নিশি ত্যজেৎ ৷ ন কুপমৰ-রোভেত নাচক্ষীতাশুচিং কুচিৎ ৷৷ ৪৭৭ ৷৷ অর্থেন প্রক্রিপেদ্ধিং নাড্রিঃ প্রশাসরে-তথা। সুহুলরণনার্ডিরা ন স্বয়ং আবয়েৎ গরান্। অপণ্যমণ পণ্যা বিক্রং ন প্রযোজয়েৎ 11 39৮ 11 পুণ্ডখানোদকস্থানে সীমান্তৎ বা ক্ষেত্রত 1 ন ভিন্দ াহ পূর্ব সময়ং সভ্যোপেতৎ কদাচন। পরস্পারৎ পশূন্ব্যালান্ পক্ষিণো নচ যোধ-য়ে । কারয়িছা স্কর্মাণি কারন্ বিদ্যাৎ न वश्रः सर। ৪৭৯ ।। বহিগল্প কুদার-

হবিঃ যক্তিয়দ্রবাং ॥ ११० ॥ শংসায়ে প্রশংসায়ে দিতার্থঃ । ন্তর্বায়ে বিশ্ব বা। ১৭১ ॥ নদী ন ব্রাথ কিন্তু গল্পামিতি কালিন্দীমিতি চেত্যেবং ব্রুয়ামিতার্থঃ। এবমগ্রেপি ॥ ६৭২ ॥ বানি ইন্দ্রির চিত্রানি ন স্পৃশেৎ আচমনব্যতিরিক্তকালইতি জেয়ে । বালাতপং উদ্রাবরিশিতাপং । যদ্বা বলা কন্যা তদ্রাশিগত সূর্য্তাপমিতার্থঃ॥ ৪৭৩ ॥ হরেৎ বহেং । বহেদিত্যের বা পাঠঃ॥৪৭৪॥ পার্নিনা ন স্পৃশেৎ হেবিপ্রাঃ । উচ্চিন্টঃ সন্দেবপ্রতিমাঞ্জন স্পৃশেৎ ॥ ১৭৫ ॥ অমুপ স্পৃশ্যস্থনাচন্য। সুরন্তীং বহন্তীং নদী ক্রুজামিপি ন লগ্বরেং॥ ৪৭৬ ॥ তিলৈ ব্রদ্ধং দ্রবাদে বাদে বাদে আব্রাজার ন ত্রারাহালিতার্থঃ॥ ৪৭৮ ॥ ক্রিনা অপনাং অবিক্রেং বিক্রাং ক্রিমাদিতার্থঃ॥ ৪৭৮ ॥ ক্রেমান ক্রেমানত্র্যানিতার্থঃ॥ ৪৭৯ ॥

প্রবেশাঞ্চ বিবজ্জ য়ৈং । নৈকশ্চরেৎ সভাং বিপ্রঃ সমবায়ঞ্চ বজ্জ য়েং ।। ৪৮০।। দ বীজ্যেদ্য। বস্ত্রেণ ন দেবায়তনে স্বপেৎ । নাগ্রিগোত্রাক্ষণাদীনামন্তরেণ ব্রন্ধেৎ কৃচিং। নাক্রামেংকানতশ্ছায়াৎ ব্রাহ্মণানাং গ্রামপি। স্বান্ত নাক্রাময়েচ্ছ্য়াং গতিতাদৈ। নরোগিভিঃ। বজ্জয়েলাজ্জনীরেণুৎ বস্ত্রসান্যটোদকৎ ।। ৪৮১ ।। নাশ্রী-য়াৎ পায়সা তক্রং ন বীজান্যুপবীজয়েৎ । বিবৎসায়াশ্চ গোঃ ক্ষীরমেটিং বা নির্দশস্য চ। আবিকৎ সন্ধিনাক্ষীরমপেয়ং মনুরব্রবীৎ ।। ৪৮২ ।। ইন্তকারম্থা-গ্রায়া ভিক্ষায়া শক্তিতোদিজঃ । দদ্যাদ্তিথয়ে নিত্যৎ বুধ্যেত পরমেশ্বং। ভিক্ষাসাত্র্রাসমাত্রমগ্র তক্ষাজত ও বং । পুষ্ঠলং হতকারত্ত ভচতুও ব-নিষ্যতে । মার্কণ্ডেয়ে । ভোজনং হন্তকারং বা অগ্রংভিক্ষা**ন্থাপি বা ।** ক্ষন্ত্র ব তোক্তব্যং যথা বিভবনাত্মনঃ । কাশীখণ্ডে। নৈবোৎকটাসনে ২শ্বীয়ারারো বলুশুচি কিপেং। আদ্ধং ক্রত্বা পরআদ্ধে যোহস্বীয়াজ্জানবজ্জিতঃ। দাতঃ শ্রাদ্ধকলৎ নান্তিভোক্তা কিলিয়ভুগ্ভবেং। নোংপাটয়েলোমনথং দশনে-न कमाहन। कदरेखः कत्रकाष्ट्रहर कार्यापन विवर्ष्टा ११८५०॥ ন গন্তব্যৎ স্ববেশা পরবেশানোঃ। উৎকোচদ্যুতকৈত্যার্থ দ্রবাৎ পরিত্যজেৎ। নিষ্ঠীবনঞ্জেলাণ্ড গৃহাহত্ত্তে বিনিক্ষেপেছ। উক্ত্যুপঞ্জু মৃহপিণ্ডান মায়াৎ পর-জলাশরে। অনুজ্তা চ তথ কর্রেনসঃ স্যাত্রীয়ভাক ব্রান্দে। যন্ত্রপণিতলে ভুড্ ক্তে যন্ত ফুংকারসংযুতং। প্রসূতাল, লিভির্যন্ত ভন্য গোমাংসক্ষ ভন্য অতিক্তী। नुनाधिकछेनी या शोर्घाथवाभ्यक्षाठा दिनी । उटाम्मूर्दार न काठवार न काठवार । कमाठन ।। অজাগাবোসহিষ্ঠ হ ২০েখ্যম্পি ভক্ষংখং । इर्वः करवः চ তদ্ধং গোসয়ফ বিবজ্জ য়েছ। অলুবার দ্বকাঠক প্রতাক্তরণ তথা । নৃত্তিকা প্রাশনং টেব বলাং গোমাংসভকলৈঃ।। অত্রাণবাদোমনু ফা্তৌ। সামুত্রং সৈন্ধবং চৈব লবণে পারম'ড়াুভে। গ্রন্থাংফ জিপ ভে গ্রাহ্যে নিদেধসুনাগোচরঃ। জাত্রি-স্তে। দিব। কপিথাভায়া চ নিশারাং দ্ধিভোজনং। কর্ণাসন্তকাষ্ঠক শক্রা-দিপি হরেৎশ্রিয়ং ৷ বিফুক্সুতে চি ৷ কপিলায়াঃ গায়ঃ পীত্রা শূত্রন্ত নরকং ব্রজেৎ ৷ হোনশেষং পিবেদ্বিপ্রোবিগ্রঃ ন্যাদন্যবা পশ্য 18৮৪। পরিছভুং পুনর্বেখং ভত্তৎ

লমবারং বহুভিঃসহসদৈকবাসং।। ১৮০। বস্ত্রোদকং স্নান্দটোদক্ষ্য। ১৮১॥ অনির্দশস্থ অনিষ্কৃত্যশদিনস্য বৎসম্য ভক্ষ্যং বহু ক্ষীরং তদিত্যর্থঃ। দশদিনমধ্যেইপেয়ন্থং। সন্ধিনী ব্যভাক্রান্তা গৌস্তম্যাঃ ক্ষীরং।। ৪৮২ ॥ দান্তঃ অন্নদান্তঃ। কর্ত্রৈঃ নইখঃ।। ১৮৩॥ অভক্ষ্যং বিষ্ঠাদি তচ্চারিণী । অজাদয়স্তাসাং মধ্যে যা অমেধ্যং ভক্ষয়েছ তদ্যা ছুগ্ধং গোময়ঞ্চ । দন্ত-কাষ্ঠং দন্তশোধনং। হোমশেষং হোমাবশিক্তমেব পয়ঃ॥ ৪৮৪॥ অথোপসংহরন্ শ্রীবিষ্কৃত্যরাণাদিবর্ত্তিপাঠপরিত্যাগাদিনোচ্চাব্চোপচারাগামেষামন্যথা লিখনতোনিজ্ঞাপরাধং মন্থা সাধন্

শাস্ত্রোক্তমন্থা ! যদ্ত্র লিখিত ২ কিথিও তথ করে বং মহালুভিঃ ।। ৪৮৫।। আচারাশ্চেদ্শাঃ সন্তি পরে হপি বছলাঃ সতা ২ তে লোকশাস্ত্রভাতেরা অপেক্ষ্যা হিদি বৈক্ষবৈঃ ।। ৪৮৬।। নিতাল্বমেষা ২ মাহাল্যানপাত্রলিখিতাও পুরা। সদান চারসা নিতাল্যাহাল্যাচ সুসিদ্ধাতি ।। ৪৮৭।। ইতিনিতাক ত্রংসমা প্রং। ইতি ঞীগোপালভ উবিলিখিতে ভগবড় জিবিলাগে নিতাক ভ্যুসমাপনোনা মঞ্কাদশানিলাস

ক্ষমাপয়তি পরিছর্তু মিতি। অন্যথেতি কুরাপি য়ে হালিপরিত্যাগেন কৃতিধন্যই হিত্যাক পাদানেরন্যর বাজনেন কৃতিজান্যাক্ষরৈ স্বর্ধা । ধনেনেত্যুর্ধা তচ্চ প্রার্থানাম পরিচাধ কিবালাক কৈ অন্যথা প্রকরণান্তরেই তার লিখিত ব্যাপ্ত প্রালিখনেন হৈ মের্থাপিতে প্রতিষ্ঠাপতে প্রতিষ্ঠাপত কিবালা লাভি কিবালা লাভিক কিবালা লাভি কিবালা

## बाह्य विनामः।

নগোভগৰতে তলৈ যসঃপ্রিয়তমা তিথিঃ। একাদশী দাদশী, চ সর্বাভীষ্ট প্রদান্গাং ৷৷ ১ ৷৷

অথ পক্ষরত্যানি । ইঅঞ্চ নিত্যং কুর্মাণঃ ক্ষপূজানহোৎসবং । হরের্দিনে বিশেষেণ কুর্ব্যান্তং পক্ষয়োদ্ব হোঃ।। ২ ।। তত্র ব্রত্তস্য নিত্যজ্বাদ্বশ্যং তৎ সমা-চরে ২ । সর্ব্যাপাপাহং স্কাথিদ ১ শ্রীকৃষ্ট্তোষ্ণ ২ ।। ২ ।।

অথ শ্রীমদেকাদশীব্রতস্য নিত্যত্বং। ভচ্চ রুফপ্রীণনত্বাদ্বিধিপ্রাপ্তত্তত্তথা। ক্রেজনস্য নিষেধাচ্চা করণে প্রত্যবায়তঃ।।৪.। ভত্র শ্রীভগবংপ্রীভিহেতত্ত্বং। মৎস্য ভবিষ্যপুরাণ্যোগঞ্জাদশ্যাং নিরাহারোযোভুজ্তে দ্বাদশীদিনে। শুক্লে বাযদি বা

শ্রীতিতন্যপ্রভুং বন্দে যদাশ্রর রসাপ্পতা। বাঞ্চতীতং ফলত্যের মনোরথমহীর হঃ। পূর্বং বিভালভারি বিনন নিভাপুলাবিধিং লিখিব সমাপ্যাধুনা প্রকৃত্যাবিধিং লিখন প্রারিপ্সিত- ক্রিল্রের লেখ্যপ্রকরণালু দারেণ দেবং প্রণমতি নমইতি। মৃণ্য ভগবতঃ প্রিরতমা প্রমবল্লভ। একাদশী ঘাদশী চ তিথিরের নৃণাং স্কাভীফং প্রকর্বেণ দ্দাতীর্থঃ॥১॥

ইপং পূর্বনিথিতপ্রকারে। ক্ষপুর্টেজব মহোৎসবস্তং । হরের্দিনমেকাদশী ছাদশী ে ম্ব প্রাসদিনং লক্ষ্যতে তল্মিন্। তংক্ষপুর্জামহোৎসব্যাহা। তত্র হরিদিনে তদুতং । বংক্ ফলং স্মানেনোলিখতিসর্বেডি ৷ ৩॥

তত্ত্বচ শ্রীতগণত্ত্বাঘণত্বেন বিধিপ্রাপ্তত্ত্বেন ভোজননিধেধেন অকরণে প্রভাব রোধ পদ্যাচেতি চন্তর্জা নিতারং লিখতিতচ্চেতি । যদাপি অকরণে প্রভাবায়তএব মুখ্যং নিতারং তথাপি শ্রীবিফুপরাণানাং শ্রীভগবৎপ্রীণনত্বেনৈব পরমং মুখ্যং ভংলিখিতং । তথা সামান্যতোবিহিতনিধেধাতিক্রমেণ সর্প্তার দোষশ্রবণাৎ বিধিনিধেধপ্রাপ্তত্ত্বা চ নিতাত্বং, সিজ্যেদেব। তট্ট শ্রীহেমাজি প্রভৃতিভিপ্তিব্তা লিখিতমেবান্তীতাত্র তিম্ভারণেনালং। এবং নিবান্ত্রাস্থাহং॥ ৪॥ তত্র শ্রীবৈফ্বানাং মুখ্যতমনিতাত্ত্বমাদে লিখতি একাদশ্যামিতি।

ক্ষেত্ৰুত বৈষ্ণৰ মহৎ। আগ্নে । একাদশাং ন ভুঞ্জীত ব্ৰভমেত দ্ধি বৈষ্ণৰ ছাৰ হাৰ দায়ে। একাদশীনাহাত্মাৰ ডে। ব্ৰাহ্মনক্ষিত্ৰ য়বিশাৎ শূলাণাইঞ্চৰ যোষিতাং। মোক্ষণং কুৰ্ব্বতাং ভক্ত্যা বিষ্ণোঃ প্ৰিয়ত্ৰ ছিক্ষাঃ ।। ৬।। একাদশীব্ৰতং নাম সৰ্বকামকলপ্ৰদং । কৰ্ত্তৰং সৰ্বদা বিশ্ৰৈবিষ্ণুপ্ৰীণনকাৰণং ।। ৭।৷ ভ্ৰথ বিধিপ্ৰাপ্তত্ব । তত্ৰকণৃঃ। একাদশ্যামুণবদেন্ন কদাচিদতিক্ৰমেং । তাৰ্যায় । উপোধ্যেকাদশী রাজন্ যাবদায়ুঃ প্ৰবৃত্তিভিঃ।। ৮।৷ ভাতএৰ বিষ্ণু বহুসোঁঃ। দাদশী ন প্ৰমুক্তৰ্যা যাবদায়ুঃ প্ৰবৃত্তিভিঃ।। ৯।৷

অথভাজননিষেধঃ। শ্রীনারদীয়ে পালোত্রথণ্ডে। রটন্তীই পুরাণানি ভূয়োভূয়োবরাননে। ন ভোক্তব্যং ন ভোক্তব্যং সংপ্রাপ্তে হরিবাসরে। কিঞ্চ। আগনাঃ
শতশোরাজনিতিহাসা রটন্তি হি । নেত্যাদি। ঋষয়ঃ সম্বশঃ সর্পোং নারদাদ্যাশ্চ
চুক্রুন্ডঃ। নেত্যাদি। বিষ্ণুম্বাতে । একাদশ্যাং ন ভূঞ্জীত কদাচিদিপি নানবঃ। শৃঞ্জি
ঝিবিপ্রোক্তে চ। একাদশ্যাং ন ভূঞ্জীত নারী দৃষ্টে রজস্যপি।। ১০।। বৃহয়ারদীয়ে
ভবৈর। উপবাসফলং প্রেপ্যুর্জহ্যান্তক্তচত্তক্তরং। পূর্বাপরদিনে রাত্রো নাহর্নজ্ঞান
মধ্যমে। অন্যত্র চ। সায়মাদ্যন্তয়োরহ্রোঃ সায়ং প্রাতশ্চ মধ্যমে। উপবাসকলং
প্রেপ্যুর্জহ্যান্তক্তচত্তক্তরং।। ১১।। অথাকরণে প্রত্যবায়াঃ শ্রীনারদীয়ে। যানি
কানি চ পাপানি ব্রহ্মহত্যাসমানি চ। তল্পান্তিত্ব তিষ্ঠিত সংপ্রাপ্তে হরিবাস্রে। তানি পাপান্রোপ্যেতি ভূঞ্জানোহরিবাসরে। কিঞ্চ। সোহশ্রাতি
পার্থিবং পাপং যোহশাতি মধুভিদ্দিনে।। ১২।। স্কান্দে। মাতৃহা পিতৃহাতেব

বৈষ্ণবং বিষণুপ্রিয়তমমিতার্থ: ।। ৫॥ কুর্বতামেকাদশীব্রতমিতি ভেয়ং ॥ ৬॥ বিপ্রৈরিতি ভেষাংমুখ্যত্তাং ॥ ৭॥ যাবদায়; প্রবৃত্তিভিরিতি যাবজ্জীবমিতার্থ: ॥ ৮॥ এতেন ন কদাচি দতিক্রমেদিতানেন নিতাত্তং সাধিতমেব তদেব ত্যাগনিষেধেন সাধয়তি। দ্বাদশীতি॥ ৯॥

রইন্তি ঘোষয়ন্তি। বরাননে হেমাহিনীতি এক ক্রাঞ্চদবাক্যং। পাদ্যোত্তরথণ্ডে চ। এতি গাংশ প্রতি এশিবস্য।। ১০।। উপবাসস্য কলং এভিপবতোষণাদি তৎপ্রাপ্তামিচ্ছঃ। পূর্বেমিন্ সংযমদিনে অপরিস্থিংক্ষ পারণদিনে রাত্রৌ জহাদিতি ভোজনদ্বয়ং। তথা মধ্যমে উপবাসদিনে দিবান্তক্তে ভোজনদ্বয়মেবং ভোজনচন্তক্তয়ং পরিত্যজেৎ। ভক্তেতি পাঠেহিপি সক্রার্থঃ। যচ্চোজং। কহান্তক্তম্বং নিভ্যে কাম্যে ভক্তচন্তক্তয়মিতি। তচ্চবৈক্ষবেতরেষ কামিষ গৃহিষ নিত্যকাল্যভেদাভিপ্রায়েশের। বৈক্ষবেষ্ চ সর্বাথা নিত্যমের কলশ্রবণাদিকক্ষ দর্শপূর্ণমাগদিবনিত্যাত্তিশি বিক্ষদ্ধান্ত ইতি দিক্।। ১০।। পার্থিবং পৃথিবাশং বর্ত্তমানং সর্বমিত্যর্থঃ।। ১০।। ঘোত্তুক্তে স মাতৃহাদির্ভবিত ভক্তম্বপাপণ প্রাপ্তোভীতার্থঃ।। বিক্ষুলোকাৎ বৈকুঠাৎ চ্যুতোভবতি ন কদ্যিদিপি গচ্ছতীতার্থঃ। বিক্ষুলোকাৎ বৈক্ষবান্ত ভংসঞ্জং ন প্রাপ্তোতী

ভাত্হা গুরুহা তথা। একাদশান্ত যোভুজ্জে বিষ্ণুলোকাল্যুতোভবেৎ ।। ১৩।। কিলা তত্তিবোমামহেশ্ব সম্বাদে। অধিবর্ণায়সং তাক্ষুং কিপন্তি যমকিকরাং। मूर्थ তেষা। महापित य जूक्षि हरति पिता उक्त विवर्छ। म किवनमधः जूष् ज যোভুত্তে হরিবাসরে। দিনেংত সক্ষপাপানি ভবন্তান্নস্থিতানি ত। তানি সোহেন যোহশাতি ন স পাপৈর্কিনুচাতে । কিঞা পিতরং কোনবন্দেত মাতরং কোন পূজ্যে । কোহি দূষয়তে বেদং কোভুত্তে হরিবাসরে ।। ১৪।। বিষ্ণুধর্মোভরে । ব্ৰ স্বচারী গৃহস্বোবা বানপ্রস্থেব। যতিঃ। একাদশ্যাং হি ভুঞ্জানে।ভুড্কে গোমাং-সনেব হি। ব্রহ্মপুস্য সুরাপস্য ন্তেরিনোগুরুভিপেনঃ। নিষ্কৃতির্ধর্ম শাক্তোক্তানৈকা-দশ্যনভোজিনঃ।। ১৫।। একএব নরঃ পাপী নরকে নূপ গচ্ছতি। একাদশ্যন-ভোদ্রী যং পিতৃভিঃ সহ মজ্জতি ।। ১৬ ।। পাছোত্রখণ্ডে। ভুংক্ষৃ ভূক্তে যো-ব্যাৎ সংপ্রাপ্তে হরিবাসরে। গোবাক্ষণ ব্রিয়ন্ত্রাপি জহীহি বদতি কৃচিৎ। মদ্যং পিবেতি যোত্র মাৎ তেয়ামের অধোগতিঃ ৷ পুরোড়াশোংপি বামেক সংপ্রাপ্তে হরিবাসরে। অভক্যৎ সর্বাদা প্রোক্তং কিং পুনশ্চান্নসৎক্ষিয়া !। ১৭ ।। সনৎ-কুমারসংহিতায়াং। একাদশ্যাং মুনিশ্রেষ্ঠ আছে ভুড্ক্তে নরোযদি। প্রতিগ্রাসং সভুত্তে তু কিল্বিং মূত্রবিলয়ং। গৌতমায়তন্ত্রে। বৈক্ষবোযদি তুঞ্জীত একাদশ্যাং व्यमान्जः। विकुळ्न- द्या उमा नद्रकः भावमाश्रुषाः विकृतक्रमा। ममानाय विधा-নেন দ্বাদশীব্রতমূত্রমং । তস্যভঙ্গং নরঃ কৃত্বা রৌরবং নরকং বুজেৎ। তত্তিব বিধবাবিষয়কোদে। যবিশেষঃ। কাত্যায়নসমূতৌ। বিধবা যা ভবেলারী ভুঞ্জীতৈকা-দশীদিনে। তস্যাপ্ত সুক্তং নশ্যেজুণছত্যা দিনে দিনে । নারদীয়ে। একাদশীৎ বিনার্থা যতিক সুমহাতপাঃ । পঢ়তে হ্রতানিশ্রে যাবদাহূতসংপুর্থ।। অথ পক্ষদমেহপি নিত্যস্থং৷ তত্র দেবলঃ ৷ ন শক্ষেন পিবেক্তোয়ং ন খাদেৎ বূহ্য শূকরৌ৷ একদিশ্যাং ন ভুঞ্জীত পক্ষয়োরভয়োরপি। বিষ্টুরহ্ন্য ক্রান্দ কৌম্ নারদীয়েশু । ঘথ। শুক্লা তথা ক্লফা বিশেষোনান্তি কশ্চন। বিষ্ণুৱছসে। ব্ৰহ্মাজো। শুক্লাবা যদি-বা রুষ্ণা বিষ্ণুপূজনতৎপরঃ। একাদশ্যাৎ ন ভুঞ্জাত পক্ষয়েরভয়োরপি। সর্বাপ:-व्यनामात्र विकृत्रत्वायनात्र ह । উপোষ্যा द्वानमी पून्य मरेक्क उत्र कर्याः ॥ বারাহে একাদশ্যা মুপবসেৎ পক্ষয়োক্তয়োরপি। দ্বাদশ্যাং হোহর্চয়েছিফুর্ সমুক্তিফলভাগ্ভবেৎ ।। ১৮ ।। বিষণুরহস্য সৌরপুরাণয়োঃ। যথা সুপৃদ্ধিভো-গৌরঃ ক্ষোবা বেদবিদ্ধিকঃ। সন্তারয়তি দাতারং দ্বাদশ্যেতি তথা সাতে ।।

তার্ধ:॥১৩॥ হরেদিনে হরিবাসরে ॥১৪॥ নিষ্কৃতি: প্রায়শ্চিত্তমন্তি॥১৫॥ নরকে মজ্জতি। ॥১৬॥ অভক্ষাং অভক্ষা ভক্ষণে যৎ পাপং তদিতার্থ:। অন্নগ্য সংক্ষিয়া পাক:॥১৭॥ অধু-না ক্ষপকে সংক্রান্তাদাবপ্যপ্রাসবিধানেন নিতাত্বমের ক্রান্ত ন শক্ষেনেভ্যাদিনা প্রান্ত নাচরেদিতান্তেন॥১৮॥ দাদশ্যৌশুক্রা কৃষণ চ॥১১॥ এবং দ্যোঃ সাম্যং লিখিত্বাধনা

বিশুরহন্যে কান্দে চ। তৈলং শুক্লেতরাণায়ৈ তিলানাং সদৃশং তথা। রুঞ্চায়াশ্চ সিতাহাস্চ গোঃক্ষীরং সদৃশাৎ থথা। দ্বাদশোগঃ সদৃশাৎ তদ্বৎ পুণ্যৎ স্বাৎ ক্ষাশুল-রো:। কিঞা চন্দু সূর্যাপ্রহো পুণে নিযথৈব মুনিভিঃ স্মৃতে। তথা সিভাসিতে পুণে। हामरमाते विक्यू जुक्तिए । यथा शांजिनविद्यांगां क्रक्षंत्रः रेनव मूयंगः । अकाममी তথা রাজমুপোষ্যাপক্ষোদ্বো:। যথা বিষ্ণু: শিবকৈব সংপ্জ্যৌ মুনিভিঃ ষ্তৌ। তথা পূল্যতমে প্রোক্তে দ্বানশ্যের ক্লন্ড্রেকে। নারদ্যাতী। নিত্যং শক্তি मुमायूरेक नीत विक्थूभनायरेवः। भरक भरक छ कर्छवारमकाम्मामूरभाववश विक्थू-थर्सा दित ह । त्रभू वन्द न चार्य। न्द्र स्कान चिक्र नर्यु छः। अकाम नागू श्वरत्र পক্ষরে রুভয়োরপি।।১৯। কৃম্প্রাণে বিষ্প্রমে ভিরে চ। স বুক্ষছ। সুরাপশ্চ রু-তথ্যেগুরুতপেগঃ। বিবেচয়তি যোমহাদেকাদশ্যে সিতাসিতে । কালিকাপুরাণে সর্কোষামিছ পাপানামাশ্রঃ সতু কীর্তিতঃ। বিবেচয়ভি যো মোহাদেকাদশ্রী সিতা-সিতে। ভবিষ্যে ! এবং জ্ঞাত্বা সদোপোষ্যে দ্বাদাশ্যী রুক্ষশুক্রকে। তয়োর্ভেদং ন কুর্বাত ভেদেন নরকৎ ত্রজেং। গ্রন্ধা । শুক্রা বা যদিবারুষা বিশেষো-নান্তি কশ্ব । বিশেষং কুরুতে যস্ত পিতৃহ। সত্ত কীর্তিতঃ । সনৎক্ষার একাদশোগদ রোর্যন্ত বিশেষং কুরুতে নরং। তল্যোদ্ধারং ন পশ্যামি যাবদাগৃতদংপ্নাং।।২০।। বিধ্বহ্নো। য ইচ্ছেদ্ফ্না বাসং পুত্রসম্পদমান্ত্রনঃ । একাদশীলুপবঙ্গেৎ পক্ষরোরভয়োরপি।। ২১।। সাগেরে। যুখা শুক্লা তথা রুঞ্চা যথা রুঞ্চা তথেতরা। তুলো তে মনুতে যন্ত সাব-বৈষ্ণৰ উচ্যতে ।। ২২ ॥

অথ সংক্রান্ত্যাদাবিপি নিভাজ্ব। কাত্যায়নক্ষাতী। সংক্রান্তী রবিবারে বা যদা চৈকাদশী ভবেং। উপোষ্যা সা মহাপুণ্যা সর্বাপাপহরা তিথিং।। ২৩।। কিঞ্চ। ব্যতিপাতোবৈধৃতির্বা একাদশ্যাং যদা ভবেং। উপোষ্যা সাতু বিজেয়।

শুকুকৃষ্ণ ভেদে প্রভাবারং লিখতি দ ব্রহ্মহেতি পঞ্চিঃ ।২০।। নমু একাদশীযু ক্ষাম্থ রবিদংক্রন্থ বাল তথা। চন্দ্রম্থ্যোপরাগেচ ন কুর্যাং পুত্রবান্ গৃহীত্যাদিবচনৈঃ। পুত্রবতাং গৃহিণাং ক্রফেকান্দ্র্যাপবাপোনিবিধ্যতে তত্র লিখতি বইচ্ছেদিতি। অতথ্বচনানি ধনপুত্রাদিকামেন ব্রতং কিঞ্চিৎ কুর্বেতোগৃহিণঃ প্রতি ভলিমিজোপবাসনিষেধপর বি নতু নিত্যৈকাদশুপেবাদনিষেধকানি ইত্যেভদ্রে ব্যক্তং ভাবি।। ২১।। বিশেষতোবৈক্ষরে কথফিদপি ভেদে। নৈব কার্যাইতি লিখতি মুখেতি। অতঃ শুক্লামের সদা গৃহীতি বচনং সকামবৈক্ষরগৃহস্থবিষয়কমেবেতি জ্বেরং। এতঃ ক্রামের বিস্তর্গে ভাবি।। ২২।।

সংক্রান্তানে চ যদ্যেকাদশী ভবেৎ তদাপি উপোবৈষ্ট্র । ২৩।। পুত্রসম্পদ্ধির্দ্ধিনীতি সর্বাপশংকরীতি পুত্রপৌত্রানিবর্দ্ধিনীতি চেত্যনেন কৃষ্ণপক্ষে তু সংক্রান্ত্যাং গ্রহণে চ উপোষণং

পুরসক্ষান্তিবর্দ্ধিনা । সনৎকুমারতন্তে । ভালুবারেণ সংযুক্তা তথা সংক্রান্তি সংযুক্তা তথা সংক্রান্তি বিধান নারদক্ষা ভালুবারসমোলতাত তথা সংক্রান্তিসংযুক্তা । একাদশী সদোপোষ্যা পুরপৌত্রবিবর্দ্ধিনা । ২৪ ।। ভাতএনোন্তং ভৈনিনা । আদিতে ১২ হনি সংক্রান্তো গ্রহণে চলুসূর্ব্যােঃ । পারল্বান্তাপবাস্থান ক্র্যাং পুরবান্ গৃহী । তরিলিক্তোপবাস্যা নিষেপোরলুদাক্তঃ । নালুসস্গতোগ্রাক্তো যতোনিত মুপোষণং ।। ২৫ ।। ভাতএন সমুক্তিরা বিধানা আদিতে মুপোষণং ।। ২৫ ।। ভাতএন সমুক্তেরা আহিব বিশেষতঃ । এতাঃ প্রশান্তা ভালুবার তথৈ বচ । ভাত স্থানং জপোহোমোদেব তানাঞ্চ পূজ্নং । উপন্যান্ত্রা দাননেককং থাবনং মহং । ভাতএব দেবসং । শনেক্রারে রবেক্রারে সংগ্রান্তাং গ্রহণপিচ। ভারুবা নিশ্লী রাজন্ সর্লদৈয়েতি নিশ্লরং ।। ২৬ ।।

অথ সূত্রকাদাবিপি নিত্যন্তং। বিজুরহস্যে। পরমাপনগাণরো হরে বা সমুপ্রিতে। সূত্রক সূত্রক হৈব ন ত্যাজ্যং ধানশীবৃতং । হেগ্যা বাধাতে সূত্রকে পি নরঃ সূত্রক সূত্রক হৈব ন ত্যাজ্যং ন ভুগ্রীত বৃদ্ধেতর নৃপ্যতে। ভতরস্তেং সূত্রক ভু ন নৃপ্রেতি একাদশ্যাং নদা নরঃ । দ্যালগান্ত সমলীয় ৎ সাজ্য বিষ্ণুং প্রাম্য চ । পালে পূর্লস্থালিগতং ফচ বৃত্তং সূনিয়ত এতৈঃ। তৎ কর্প্রাহ্ম নরৈ সন্ধ্রহ দানার্কবিধি ভির্নতি । যথা সম্পেত্র সম্যাস্ত্রহ বিজ্পারাহ্মিঃ । কর্প্রাহ্ম ভিরেত্ সূত্র ম্বাহ্মিঃ ভিরেত্ সূত্র মান্যান্তর্ভিত । ১৮।।

व्याशिवामितियाक्रितियवः। शास्त्र शृक्तयः । এकामभार यम त्राम

একাদশ্যাং যদা রামেত্যাদিনা উপবাদদিনে আদ্ধং নিষিদ্ধং। যক্ষ কান্দাদৌ। আদিনিং

ন ক্বীত গ্ৰী রাজন্ স্তবজ্বনক্ষয় দিত্যাদিবচনতঃ প্ৰাপ্তঃ প্ৰজাদিনতাং গৃহিণাং তত্ৰ তত্ৰং ক্ৰানা প্ৰিক্তঃ ॥ ২৪ । তহি তনিবেধঃ বিভিন্ন কোহন্ত তত্ৰ লিখতি আদিত্যে হৃদ্নীতি ঘাভ্যাং। অনুমাদিত্যা হাদাবুপৰা সাদিনিধেধঃ। তনিনিজ্ঞ আদিত্যবানাদিনি নিজস্যোপ্ৰাসাদেঃ প্ৰতিবেধঃ উদাহ্যতঃ নজেকাদ গানাদিত্য বানাদিস ক্ৰিক্তানাপৰ, সপ্ৰতিবেধঃ যত একাদ গাস্যুপ্ৰিদং নিভ্যামৰ অভঃ কাম্যুল্য রবিবারা নুপ্রাস্যুদ্ধ নিধেধা হয়ং নিচেকাদ শুপ্ৰাস্থিনি নিধেধাভ ক্তিত্যি । ২৫ ॥ বিশেষতঃ সংক্রান্ত্যাদাবুপৰাসঃ প্রম্প্রশন্ত বেতি লিখতি অনেতি দ্বাভাাং॥ ২৬ ॥

পরমামাপদমাপন্যো যদি দ্যাৎ তথাপি দাদশীব্রতং ত্যাজ্ঞাং ন ভবতি। আপনৈরিতি বা পাঠঃ । ২৭।। প্রণম্য নননা হরিমিতি বিষ্ণুংপ্রণম্য চেত্যনেন ত্তকাদৌ ভগবংপুজা ন কার্য্যেত্যায়াতং কিন্ত যান্য বৈষ্ণবাদ্য নিত্যপুজানিয়মন্তেন তত্তাপি পুজা কর্ত্ব্যতাহে ববৈতি । ব্রহুং নিয়মঃ। বিষ্ণুপরায় নৈরিতি তদ্যোধানিরস্তাঃ।। ২৮।।

অধাধিকারিণঃ। আয়েয়ে। গৃহস্যোত্তকালারী চ আছিতারির্যভিত্তথা। একাদশ্যাৎ ন ভুঞ্জীত পক্ষয়েজভয়েরিপি। পাছ্মোত্তরথণ্ডে শিবপার্কতীসম্বাদে। বর্নানামাশ্রমাণাঞ্চ ত্রীণাঞ্চ বরবর্ণিনি। একাদশ্যপবাসস্ত কর্ভব্যোনাত্র সংশয়ঃ। ৩০ ।।
কাত্যায়নক্ষ্তৌ। অইবর্ষাধিকোমর্জ্যে অপূর্ণাশীতিবংসরঃ। একাদশ্যামুপাবন্দেৎ পক্ষরেজভয়োরিপি।। ৩১ ।। নারদীয়ে। ভাউবর্ষাধিকোমর্জ্যে হ্যশীতিনৈর্ব
পূর্য্যতে। যোভুত্তে মামকেরাট্টে বিফোরছনি গাপরুৎ। সামে বক্ষাশ্চ নির্বাদ্যে
দেশতঃ কালতশ্চমে। এতস্থাৎ কারণাদ্বিপ্রএকাদশ্যামুপোষণ্যা কুর্যায়রোবা নারী
বা পক্ষয়েজভয়োরপি।। ৩২ ।। বিষ্কুর্মোভরে । বিষ্কুর্মোভরে । বিষ্কুর্মোভরের । বিষ্কুর্মানিরাবা ক্র্য্যান্দেশীব্রতং। সৌরপুরাণে । বৈষ্কুরোবাবা শৈবোবা সৌরোপ্যতৎ সমাচরেৎ।
ভত্তবাক্তং স্কান্দে জীশিবেন। ন শৈবোনচ সৌরোবানাশ্রমী তীর্যনেবকঃ। যোভ্জুত্তে বাসরে বিক্ষোং শ্বপচাদ্যিকোছি সং। বিপ্রিয় তেন মে গৌরি ক্বতং দুক্টেন

সমাসাদ্য উপবাসোযদা ভবেৎ। তদা কৃত্ব। ভূ বৈ আদ্ধং ভুক্তবেশস্ত বস্তবেং। তৎ দৰ্বাং দকিং দি পাণে গৃহীত্বাসং শিখিধজ। অবজি ব্লেদনেনাথ ভবেং আদ্ধং শিথিধজ। পিভূগাং ভূপিদং তাত ব্ৰভজ্ঞান বিদ্যভইত্যাদি। তচ্চ বৈশ্ববেতরবিষয়ং মন্তব্যং। বৈশ্ববিপ্তৃণামপি জীবিঞ্জুদনে আদ্বাহণাযোগাদিতি দিক্।। ২৯।।

এবং সর্বৈরেব সদোপবাসঃ কর্ত্ব্যঃ ইত্যধিকারং নির্ণয়ন্ প্রথমং চন্ড্র্ণামপ্যাশ্রমিণাং ভ্রাধিকারং দর্শন্ত গৃহস্থইতি। পূর্বঞ্জ ব্রাক্ষাক্ষরিরবিশাং শূর্যাণাঞ্জৈব ঘোষিতামিতানেন তথাপ্রে চ কুর্যান্ধরোবা নারীবা ইত্যনেন চন্তর্বর্ণানানন্ত স্থানাং ঘোষিতাঞ্চাধিকারোদর্শিতঃ। তত্ত্বচ বিশেষতঃ । বিধবা যা ভবেনারীত্যাদিনা বিধবায়াং তথা সপুত্রশ্চ সভার্যাশেত্যাদিনা সধ্বায়াশ্রপি ত্রাধিকারোলিবিতঃ। তচ্চোক্তং মহানা । নান্তিন্ত্রীণাং পৃথক্ বক্তো ন ব্রতং নাপ্যপোষ্থমিতি। বিষ্ণুনাপি। পত্যৌ স্বীবিভি যা নারী উপবাস্ত্রভক্তরেও। আয়ুং সা হরতে ভর্তুর্রকবৈথব গক্ষ্তীতি । তর্চ ভর্তাদ্যনম্মতোপবাসক্বর্জ্বীবিষয়ং ক্ষেয়ং । অতএবোক্তং শশ্বলিবিতাভ্যাং। কামংভর্জুরম্বজয়া ব্রভোপবাসাদীনারভেদিতি। অথবা বৈক্ষবেতরন্ত্রীবিষয়ং ভিনিতি মন্ত্রাং। সপুত্রশ্চ সভার্যাশ্চ স্বন্ধবৈত্তিসংযুতঃ । একাদশামুপব্যেদিত্যাদিবচনাৎ জিক্কাশ্লদাদিব্যবহারশ্রবণাচ্চেতি দিক্॥ ৩০॥ তত্র চ বয়োমর্যাদাং লিখতি অক্টেতি বিজিঃ। অপুরে তাত্রাকারালোপোধ্বিবিক্তিত্বাথে। এবমগ্রেপি॥ ৩১॥ অক্টেতাদিনারদীর-দার্দ্বপাং শ্রিক্তিশ্বাংশ্বাধাণং॥ ৩২॥ অব্যুক্তি নামপ্যধিকারং লিখতি

পাপিনা। নম্ভ জিবলমাশ্রিত্য যেন ভুত্জ হরেদিনে।। ১৩।।

অধাশক্তৌপ্রতিনিধিঃ। বায়ুপুরাণে। উপবাদেদ্বশক্তস্য আহিতারেরপাপি बा। शूलान् वा कांद्र सम्मान् जाकार्गम् वाशि कांद्र त्य । । । अथवा विश्वमूर्य (छ। मानः महारे समक्तिकः। उभवामस क्रीनः भूनाः मञ्खनः नाउदाः समुक्तिमा क्र ठः ता २ शि मम्भूवं क्त्रगान्नु एउ। नादो स्र अियु फिना अकामना गुर्भाविका। পুণ্যং শতগুণং প্রান্থর পারদর্শিনঃ । উপবাসফলং তস্যাঃ পতিঃ প্রপ্রোত্য-সংশয়ং। বারাহে। অসামর্থ্যে শরীরস্য ব্রতে বা সমুশক্তিত। কারয়েদ্বর্মপত্নীঞ্চ পুত্রং ব: বিনয়াখিতং। ভগিনীং ভাতরং বাপি ব্রতমন্ত্র ন লুপ্যভে। কাত্যায়ন-শ্ভৌ। পিত্যাত্পতিতাত্ওৰ্ধথে তু বিশেষতঃ। উপৰাসৎ প্ৰকুৰ্কাণঃ পুণ্যৎ শতক্ৰং লভেং। দক্ষিণাত্ত ন দাভব্যা শুজাষা বিহিতাচ যা। গৃহত্বঃ ক্ষতিয়াপে য একাদশ । সুপোষিতীঃ। পুরোধাঃ সপ্রিয়ঃ দার্দ্ধং ফলং প্রাপ্রেতি নিশ্চিতং । शिलामर सिन् फिना अकामनाग्रिशासार। क्रवर रेयस कनर विश्राः नगशः उ ল্মায্যুং। কর্ত্তা দশগুণং পুণ্যং প্রাস্থ্যেত্যত্র ন সংশয়ঃ। য্যুদ্দিশ্য ক্তৎ দোপি সম্পূর্ণ ফলমাপু য়াৎ।। ৩৫ ।। মার্ক ওে য়পুরাণে। এক ভক্তেন নক্তেন বালবৃদ্ধান্তরঃ কিংশং।পয়োমূলফলৈকাপি ন নিদ্ধাদশিকোভবেৎ।বৌধয়নম্মূতে। উপবাসেদ্ধ শক্তানাম গীতেজ জ জীবিনাং। এক ভক্তাদিকং কার্য্যাহ বৌধায়নোমুনিঃ।। ৩৬।। কিঞ্ । বাধিভিঃ পরিভূতানাৎ পিত্তাধিকশরীরিণাং। তিংশদ্বর্ধিকানাঞ্চ নক্তাদিপরিক পান । ১৭।। কূর্যপুরাণে । একভক্তেন নক্তেন বালবৃদ্ধান্তরঃ ক্লিপেং। নাতিক্রমেদ্বাদশীঞ্জ উপবাস ব্রতেন চ । ভবিষ্যপুরাণে। দ্বাদশী-क्राणा। এकामणार श्रेष्ट्र विष्ट्र प्रमणा क्राणा क्राणा । উপোষিতেন नाक्किन

देवकरवारवि नार्क्षष्यम । देवक्षवहेलामा मृष्येष्य र्भूभागानः । ७७॥

षाहिलाद्याः यक्तामि मिक्किल्मा ॥ ०६॥ উপবাসং পিত্রাদার্থং কুর্বন্নপি স্বার্থোপৰাশাৎ শতগুণং পুণাং প্রাণ্ডোতি ॥ ৩৫॥ প্রাণ্ডাল্ডাবে চোপবাসাশকৈ কিং কার্যাং তল্লিপত্তি একভক্তেনেত্যাদিনা কদাচনেতান্তেন । বালোবৃদ্ধণান্তরক্ত কিংপেৎ দিনং নরেৎ । ন নির্বাদশিকঃ একাদশীব্রতরহিতো ন ভবেৎ । হাদশীতি একাদশাং হাদশামপ্রাপবাসসাম্যাৎ হাদশীশক্তেনিকাদশী লক্ষাতে । অভএব হাদশী দশমীবিক্ষেত্যাদি বাচোযুক্তিঃ । এহামেকাদশীশক্তেনাপি কুত্রাপি হাদশী জেয়া ॥ ৩৬ ॥ ত্রিংশহর্ষাধিকানামিতি বৃদ্ধিরেবোক্তমং বয়ঃ ইত্যুক্ত্যা ভারত্তমবয়সন্তিংশহর্ষরিকানাং নবতিবর্ষবয়সামিত্যর্থং যহা
বনং পঞ্চাশভোত্রকেণিতি বচনভোগৃত্ত্বস্য গৃহেপঞ্চাশহর্ষাণি স্থিতির্বিহিতা । ততাহিপি
ভবা ত্রিঞ্জাহ্বণ্যধিকানি যেবামিতি অদীতিবর্ষবয়সামিত্যর্থং । তক্ত অদীতিনহি পুর্যাত
ইত্যাদিনা উক্তমের । পাঠান্তরেইপি পূর্ববদেবার্থং ॥ ৩৭ ॥ উপবাসেন ত্রতেন । বহা

## প্রীতীধরিভতি বিশাসঃ।

ভবৈবাঘানিকেন চা। ৩৮।। একভাকেন বা ভাত ন নির্দাদিনিভাবেং। ভদেকনির্মা নিত্যং ন সীদতি কদাচন। অথবিশেষতোনজাদিকং। বারব্যে। নজ্ঞং গ্রিষ্যার্মনোন্নয়া ফলন্তিলাং ফারমথায়ু চাজ্যং। যথ পঞ্চাব্যং যদিবাপি বাশুঃ প্রশন্তমতোত্তরমূত্রক । ভবিষ্যে। উপযাসাথ পরং ভৈক্ষ্যং ভৈক্ষাং পরম্যাচিতং। অহাচিতাথ পরং নজ্ঞং ভলামজেন কর্ত্রেং। ৩৯।। কিঞ্চা মর্মজ্জলরং বাবিঃ গ্রাচেণ্ডেকগাননং। অব্রহ্যানি পঠান্তে হকুনেতানি শাস্তভা। মল্ভাবিতে উদ্যাপক্ষি।। ভক্তিতান্ত্রভদ্মনি আপোনুলং কন্যু পরঃ। হবিত্রাক্ষণ কাম্যাচ গুরোক্তন্যৌষধং।। ৪০।। ত্রাপ্রাদ্যা কাম্যাপ্রক্ষেক্তাত্রিয়া হবিত্রাক্ষণ কাম্যাচ গুরোক্তন্যৌষধং।। ৪০।। ত্রাপ্রাদ্যা কাম্যাপ্রক্ষেক্তাত্র মুল্লব্যালিকিতঃ কন্দিও বৈশ্বোভ জ্জেওপারঃ। ত্রাং বা খনি ভল্গেত ফল্ফুলব্যাণিকা বা। অগ্রাথন্তং ভস্য ন ক্ষমান্তি কাম্বান মংপাশ্ব পরিবর্জনে। ফ্রেম্ব্রেয়া হার্মি ক্ষিলাল্যং ত্রান ক্ষাগ্রেমে মন্ত্রাক্ষা পরিবর্জনে। ফ্রেম্ব্রেয়া হার্মি ক্ষিলাল্যং ম্যাপ্রের মান্ত্রানা মন্ত্রাক্ষালালারী ক্ষিলাল্যং ম্যাপ্রের্থা ৪২।। ইথং সুলিজে নিত্যজ্বোগ্রিছেন্ত্রাহিত্ব ক্লং। চিত্রথ ম্যাদ্দিতি মান্ত্রিয়াকাদেশ। বিলিখ্যুতে ।। ৪০।।

অথৈকাদশীমাহাত্যাং তত্ত্বসাগরে। সাতেব সর্ববালানানৌষধং নোগিণানিব।
বক্ষার্থং সর্ব্বনোকানাং নিমি তৈকাদশী তিথিঃ। নানাদুংশসমার্কার্নে সংসারে
নরজন্ত্র একাদশুলেবাসী হঃ সধস্যঃ সচবুদ্ধিনান্ একাদশীং পরিত্যজ্য যোন্যক্রতমুপাসতে। স করস্থ নহারত্য তাজ্বা লোকুং হি যাচতে। একাদেকাদশীঝাপি সমুপোষ্য জনাদ্র্যং। তোয়েনাপি সমত্যর্জ্য সৎসারামুত্তিমাধুষাং। প্রস্থাদণ্ডা দ্যানোভাছা তিদশাধিপা। একাদশ্যাং সনঃ

উপবাসে যদু তং কথঞ্জিময়তেন । কদাচন অসামর্গ্যাদ্যবহারাং ॥ ৩৮॥ তস্যাং দাদশ্য মেকৈক্যাং নিয়মবান্॥ ৩৯॥ সর্কাতৃতেভ্যোধ্যাতৃ দিচ্ট সম্ভভ্যাত্মং ॥ ৪০॥ সভানিক্ষেপবাদং লিখতি মহুপানেইভ্যাদিনা । অনাদিভোজনজপমপরাধং । যদ্ধা পূর্রভ্যাধ্বনিক্ষমগুল কর্মিতি ॥ ৪০॥ এবং কৈককৈর্বর্জিনীরনিতে লিখিতং অধুনাচ সামান্যতঃ সকৈবিক্ষেপগুল কর্মিতি ॥ ৪০॥ এবং কিল্ডামিতি বিশ্বতিমহুশাম্বইতি। করং মূলং জলং বাপি আহারং যাং করোভীত্যার্থঃ। মম হুদি শল্যমপ্রেদিতি মহাপ্রাদী স্যাদিত্যার্থঃ॥ ৪২॥ এবং পক্ষদ্মাদাবুপবাসম্যানিত্যার্থঃ। মম হুদি শল্যমপ্রেদিতি মহাপরাধী স্যাদিত্যার্থঃ॥ ৪২॥ এবং পক্ষদ্মাদাবুপবাসম্যানিত্যার্থং সাধ্যাহা তথাধিকারনির্গরেনাপি শর্কোবামেন ক্যান্ত্রন ভদেব দুর্গাত্মাত্মগুলানীনামপ্রেক্তাদিনা ব্রতপালনভক্ত ভদেব নিতরাং সূত্যীক্ষতং। এবং কলানপেক্ষকরূপং নিত্যাত্মং দর্শবিদ্যাহার্থন মহাক্ষান্যাপি দর্শবিদ্যা বিশ্বতি ইপ্রমিতি। নত্ম ক্রেন নিত্যাত্মং বিরুদ্ধাতে ভ্রাহ্ অগ্নিকোনিতি। আদিক্ষন দর্শপূর্ণ মাধাদি। তত্র যথা নিত্যত্মং কর্ম্ব সংযোগাঞ্জিকব্রেন ক্রেয়তে ভদ্মানিত্যিকা আক্রম্বদেবাচার্যাদিভিঃ স্পন্তং দর্শিতাক্ষাত্মতে ভদ্মানিত। তিরং জীবিদামুগ্নিকভেদেবাচার্যাদিভিঃ স্পন্তং দর্শিতাক্ষীতি। কিমএত দিয়ারবিতা। চিত্রং জীবিদামুগ্নিকভেদেন বছবিধং অভ্যুত্মিতি বা ॥ ৪৩॥

ক্ত্রা সর্বাস্থালিমুচ্যতে; । শনায়াস্য মহারোগাদ্যু: থিনাং সর্বাদেহিনাং। একাদশুলাপবালোয়ং নিমিতিং পরমৌষধং ৷৷ ৪৪ ৷৷ সংসারসপদিষ্টানাং नक्षांगार शांशकभागिर । এकांक्छाश्यास्य मार्थिय मूगर ভरवर । नांत्रमीस्य বশিষ্ঠোক্তো। একাদশীসমুখেন বহ্নিনা পাতকেন্ধনং । ভদ্মতাৎ হাতি রাজেন্দ্ অপি জন্মশতোদ্ভবং। নেদৃশং পাবনং কিঞ্চিন্নরাণাৎ ভূপ বিদ্যতে। যাদৃশং পদ্ম-माङ्गा मिन् शाञ्कश्निष् । जाव शाशानि प्राव्यान् जिलेख मनुकाधिश। হাবলোপবদেজন্তঃ পদ্মনাভদিনৎ শুভং ॥ ৪৫ ॥ অশ্বনেধসহসুণি বাজপে-য়শতানি চ । একাদশুঃপ্ৰাসস্য কলাং নাইন্তি ষোড়শীং । একাদশোলুরৈঃ পাপং যৎক্তং ভৰতি প্ৰভো। একাদশুঃপৰাদেন ভৎসৰ্ব্বং বিলয়ং ব্ৰঞ্জেৎ। একা-দশীসমং কিঞ্চিৎ পাপত্রাণং ন বিদ্যতে। স্বর্গমোক্ষপ্রদা হোষা রাজ্যপুত্রপ্রদায়িনী। সুকলত্রপ্রদা হোষ। শরীরারোগ্যদায়িনী। ন গঞান গয়া ভূপ নকাশী নচ পুন্ধরং। नहां भि को तवः क्षित्वः न दिवा नह विकिता । यमूना हन्मु जाशाह खला। जूभ इदत-র্ফিনাং।। ৪৬।। ব্যাজেনাপি কতা রাজন্ন দশ্যতি পাতকং। অনায়াসেন রাজেন্দু প্রাপ্যতে বৈষ্ণবং পদং ৷ ৪৭ ৷৷ চিন্তামণি সমা হ্যেয়া অথবাসি নি ধিঃ স্তা ় কপ্স-পাদপপ্রেকা বা সর্কবেদোপমা**থবা ।৷ ৪৮ ৷৷ ত**ত্তিবান্ত ৷ সংপ্রাপ্য বাসরং বিফোর্যোনরঃ সংযতেন্দ্রিঃ। উপবাসপরোভূত্য পূজ্যেরাধৃসূদনং । দহস্তি পূর্জ-পাপানি কিন্তপোভিঃ কিমধুরৈঃ। একাদশীং প্রপন্না যে নরা নরবরোক্তম। তেই-দ্বন্দ্বাহবে।ভূজা নাগারীক্তকেতনাঃ ।। ৪৯ ।। সুপ্নিঃ পীতবজাহি প্রযান্তি হরি-মন্দিরং। এষ প্রভাবোহি ময়া দাদশ্যাঃ পরিকীর্ভিতঃ। পাপেন্ধনস্য ঘোরস্য পা-বকাখ্যোমহীপতে। কিঞা যদেখাগৈৰ্যৎপদং সাংখ্যৈ প্রাপ্যতে বা ন বা দ্বিজ্ঞ অনায়ানেন তৎ প্রাপ্যং পদং হরিদিনানুগৈঃ। অন্নাভাবে যদা বিপ্র একাদশ্যা-সুপোষিতঃ। উপাবাসফলং তেন সমগ্রৎ সমবাপ্যতে।। ৫০।। রাজবল্ধাদ্যদ। বিপ্র একাদশ্যামুপোষিতঃ। উপবাসফলং তন্য সম্প্তবতি নিশ্চিতং ।। ৫১ ।। ব্ৰহ্ম-বৈবর্তে। যথাদাবাবিরুদ্তিঃ শুক্ষমার্জ গহুরে। দৃহত্যেব সমস্তানি কলুমাণি হরে-

অস্য মহারোগস্য শমায় উপশান্তয়ে পরমৌষধং ।। ৪৪ ।। জন্তরিতি সর্বেষামপ্যধিকারঃ স্চিতঃ ।। ৪৫ ।। হরেদিনাৎ দিনেন গুল্যান ভবতি ॥ ৪৬ ॥ ন দশরতি নাশরতীত্যর্থঃ ।। ৪৭ । বেদেম্বি গে বেদাউপনিষদাদয়ন্তৎসমেত্যর্থঃ । কৃচিৎ সর্বেষেতি পাঠঃ ॥৪৮ ॥ অত্বন্ধুবাহ্বঃ চপ্ত ভুজাঃ ।। ৪৯ ।। বিপ্র হেবাদ্ধান অবিক্ষিতত্বাদসন্ধিঃ ॥ ৫০ ॥ তস্যাপি ভবতি । সম্ক্ সম্পূর্ণং ।। ৫১ ।। শুষ্কং পাপং চিরকালকৃতং । আর্মপ্র সংপ্রতিকৃতং । মহাম্পপ্রায়শিক

র্দিনং ।। ৫২ ।। পাপেন্ধনস্য হোরস্য শুষ্কস্যার্ডন্য ভার্পব । নাম্যদিনাশার मुख्ः वितेनकाम्स्यारभाष्य । किन्छ । नर्स्याय्रामिष्डिभिषः नःनाद्वास्त्राव्याय्रकादकः । 'একাদশীপ্রতৎ বিপ্র কুর্মন্ মুক্তিমবাগুয়াং ।। নরোদিনৈর্ঘদশভিশ্চভর্ভিশ্চ করোত্যং। উপোষ্য পঞ্চদশমং দিনং বিফোর্হিনুচ্যতে ।। ৫৩ ।। ইতি সর্বাপুরা-ণেষু মুনীনাৎ নিশ্চিত সতং । উপোষ্ঠেকাদশীং পাপামুচ্যতে নাত্র সংশয়ঃ। কলাবুচ্ছিন্নমার্গাণাং নৃশংসাপাভিতাত্মনাং । একাদশীং বিনা বিপ্র ন সংসারাদ্ধি-মোকণং। কিঞা এতৎসার মিদৎ তত্বসিদং সত্যমিদং ব্রতং । প্রায়শ্চিন্তমিদৎ नमा शहर को प्रशासन । किया शिविन्त मात्र नृगी मिका प्रमाण । প্রায়শ্চিত্রমিদং নূনং সৎসারোভারকারকং। তত্তিবান্তি। সেহেন ভক্ত্যা বৈরেণ প্রসঙ্গেন যথা তথা। নিহন্তি সর্বাং কলুযমেকাদশ্যাৎ স্ততোহরিঃ ,। কিঞ্চ। এবং সম-স্তসুখধর্মগুণাশ্রাঞ্চ একাদশীব্রতমিদং কলিকেত্রক্তে । শাস্ত্রেষু শৌনক জগৎপতিযু প্রিয়ঞ্চ শ্রদাপরঃ প্রকুরুতে লভতে স মুক্তিং । তাত্রব সর্বান্তি। এতং শৃণোতি কুরুতেইনুমতিং দদাতি শ্রদাঞ্চ কারয়তি যশ্চ তথা নরাণাৎ । একাদশীব্রতক্তে केन्दिक्षिण् छः প্রাপ্রেভি দিব। ভুবনং গরুড়ধুজস্য ।। ৫৪ ।। পাছে বৈশাখনা-হাজা। দেবসূত্তিকুগুলসম্বাদে ৷ উপোধ্যেকাদশীমেকাং প্রসঙ্গেনাপি মানবং ৷ ন যাতি যাতনাং যাসীসিতি নো যমতঃ শ্রুতে । একাদশেন্দুরৈঃ পাপৎ যৎ রুতং বৈশ্যমানবৈঃ। একাদশুঃপবাদেন তৎ সর্বাৎ বিলয়ং ব্রাজ্থ। একাদশীসমং কিঞ্চিৎ পুণ্, লোকে ন বিদ,তে । ব্যাজেনাপি ক্তা যৈতে বশং যাতিন ভাস্কার: 11 ৫৫ !৷ এবমন্যত্রাপি নেদৃশনিত্যাদীনি সপ্ত পদ্যানি পূর্ব্ববৃদ্ত প্রব-र्फ्टा ७७ ।। किथा वालाकु व्यवनिवाणि वृक्ताक्षवाणि नाम्रत । छैलारेमाका-मभीर नृतः रेनव প্রাপ্রোভি দুর্গভিং। তত্ত্বৈ বৈশাখমাহাত্ম্যে। প্রীযমব্রাহ্মণসম্বাদে। একাদশ্যাঞ্চ বিধিবদুপবাসপারায়ণাঃ । শুক্লে সিতেতরে পক্ষে তে নরাঃ ম্বর্গভা-গিনঃ।। ৫৭!। মাতৃবৎসর্ধবালানামিতি পূর্ববে । কিঞ্চ। একাদশীসমৎ কিঞ্চিৎ পাপতাণং ন বিদ্যতে । তামুপোষ্য বিধানেন পুরুষাঃ স্বর্গগামিনঃ ।। ৫৮।।

শুত্রা তরোতেনঃ ॥ ৫২॥ পঞ্চদশমং একাদশীলক্ষণং॥ ৫০।। কলিকেতুঃ কলিকালে সর্বাধর্মাদিশ্রেন্ঠনিত্যর্থঃ। হেন্তরিতি পাঠে সমস্তম্বাদিকারণং। শাস্ত্রেন্ত । শাস্ত্রাম্বিত ইতিপাঠে শাস্ত্রবিত্তের । হেন্তরিতি পাঠে সমস্তম্বাদিকারণং। শাস্ত্রেন্ত । শাস্ত্রাম্বিত ইতিপাঠে শাস্ত্রবিত্তের । হেন্তা নাম্বিধিকার কাম লাকারে । হেন্তা লাকার লাকার । হেন্তা লাকার লাকার । হিন্তা লাকার লাকার । হিন্তা লাকার লাকার । হেন্তা লাকার লাকার । হেন্তা লাকার লাকার । হেন্তা লাকার লাকার লাকার । হেন্তা লাকার হিন্তা হিন্তা হিন্তা হিন্তা হিন্তা । হেন্তা হিন্তা হিন্তা হিন্তা । হেন্তা হিন্তা হিন

# श्रीवर्गिक विनामः।



একাদশেন্দ্রিঃ পাপং যৎ ক্তং ভবতি দ্বিজ। নরোনির্দুয় ততুর্ণং বুতী স্বর্গতিমান্ ভবেং। অখমেধে । দি গূর্ববং। কিঞ্চ। একতঃ ক্রতবং সর্বে সর্বভীর্থ তথাৎ বিচ। মহাদানানি দত্তানি ব্ৰত্ৎ বৈক্ষৰমেকতঃ। বৈক্ষৰবুতকোধম্মো ধিয়ো যিজ্ঞাদিসম্ভৰঃ। একত্র তুলিতো ধাত্রা তৎ পূর্ম্বোহ্যভবদুরুঃ ৷ হরিবাসরভক্তানামচ্যুতাচ্যুতভা-বিণাং ।। ৫৯ ।। নাহং শাস্তা।বিশেষেণ তেভ্যোবিপ্র বিভেম্যহ্ম। যেষাং পুত্রশ্চ পৌত্র ত একাদ শ্যামুপোষিতঃ। স মাহাত্মা স্বপুরুষান্ শতমুদ্ধরতে বলাৎ।। ৬ ।। উপোষণং ততঃ কুর্য্যাৎ পক্ষয়ে।রুভয়োরপি । একাদশ্যাং স পুরুষোভুক্তিমুক্ত্যেক ভাজনং। তত্ত্বি কার্তিকমাহাত্মে। এইমস্মুকেত্সয়াদে। একাদশান্ত था खाशाः ममूत्भात्वा इ मानवाः । मर्खभारे भिकिनिम् क्यां याखि विस्थाः भवः भनः धर्म-माङ्घिमाटेठव काममा योकमा किल मर्खकाम मूचा नृष् श्वाममी वत्रवर्गिन। अका-দশীবুতং সৌস্য যদে।কং সম্যগজ্জিতিং ৷ কিং দানৈঃ কিং তপস্তীথৈঃ সর্বাদৎ বিধিনা ক্তং। তত্রৈবোত্তরখণ্ডে। শিবপার্ধতীসম্বাদে। একাদশীৎ পরিত্যজ্ঞ যোহ্যন্যদুত্মাচরে । দ করন্থং মহারত্নং হিন্তা ভৈক্ষ্যন্ত যাচতে ।। ৬১ ।। কান্দে বিনাপি ঋকসংযোগাদেকৈবৈকাদশী নূণাং। বিনিছন্তীই চৈনাং সি কুন্পোবি-ষয়ং যথা ৷৷ ৬২ ৷৷ নদানং ন তপঃ সাুনং নচান্যৎ সুক্তং কৃচিৎ ৷ মুক্তয়ে २) छत् । मूझ मूरे कुकः इतिवामतः ॥ ७०॥ मक्राकारभायानमा । नमा छि भाभ-রাশায়ঃ। একভঃ পৃথিবীদানমেকভোহরিবাসরঃ। নসমং কবিভিঃ প্রোক্তং বাসরো-হ্যধিকঃ শা্তঃ। তত্তিবামৃতসারোদ্ধারে জীযমস্য দূতানুশাসনে। অগম্যাগমনে পাপং নিত্রদোহে চ পাতকং। ইত্যাদিপাতকং হচ্চ হতৈরন্যদুপান্ধিতিং। পা্যপ্রালাপজনিতং পতিতানাঞ্চ সঙ্গমাৎ। ত্রায়া মাজিতিং স্কামেকাদশুপ-বাসিনাং ।। ৬৪ ।। প্রতিগ্রহোখাং যথ পাপং দশাভ্রংশাত্তবঞ্চ যথ । তন্মরা মাড়িছ ভিং দূতা একাদশুপেবাসিনাং ।। ৬৫ ।। অতএব তত্র। একাদশু প্রবাসী যোনরোভবতি ভূতলে। মুক্তং ময়া শতানন্দ তেষাং ত্রিপুরুষং কুলং। একাদশ্যা-মভ্ঞান। যুক্তাঃ পাপশতৈরপি। ভবড়িঃ পরিহর্তব্যাহিতা মে যদি সর্বদা। কিঞ্চ। বরং চাণ্ডালজাতীয়একাদশুপেবাসকুৎ। নত বিপ্রশত্তর্বেদী যোভুগুক্ত

তয়োঃ পূর্বাঃ বৈক্ষবত্রতক্ষোধর্মঃ। অচ্যুতাচ্যুতেতি ভাষিণামিতি দৃষ্টান্তত্বেনাক্তং। ৫৯।। অহং যমে পি।। ৬০।। দানাদিভিঃ কিং তেনৈব দর্বাসিদ্ধেঃ। কুতঃ বিধিনা যথাবিধি দর্বাদং কর্মাকৃতং। যদা। বিধিনা বিধাত্রা তৎ দর্বাদং কৃতং। অথবা বিধিনা কৃতং দর্বাদং ভবতি কিং বিশেষোক্ত্যা দর্বোধামেব দর্বাকামং পরিপুরয়তীত্যাহ দর্বোতি। তেন বৈকুঠলোকপ্রাপ্ত্যাদি ক্মভিপ্রেতং।। ৬১।। স্বাদ্দানি তৎ সংযোগাদ্বিনাপি। তেষাং যোগমাহাম্মবিশেবাহত্তে লেখাঃ। ৬২।। স্বভ্রু হেপার্বাতি।। ৬৫।। আদিশক্ষেন স্বর্গস্তেয়াদি। অন্যং পর্বাদ্ধি অভক্ষ্যভক্ষণাদিকং।। ৬৪।। দশা অবস্থা ব্রুক্ষচর্য্যাদি তদুংশেনোস্ভবোষ্ণ্য তৎ।। ৬৫।।

## প্ৰিক্তিভি বিলানঃ I

হরিবাসরে। তত্তিব প্রীক্রকারদসয়াদে। কম্পেবৃক্ষসমাখ্যাতা দ্বাদশী বাঞ্জি-তার্থদ।। সুগতেদায়িনী পুংসাৎ স্মৃতা চ ক্তকীর্ত্তনা ।। ৬৬।। নাশ্বমেধসহসৈ শুচ ভীর্থকোট্যবগাইনৈঃ। যৎ ফলং প্রাপ্যতে বৎস দ্বাদশী বাসরে ক্তে।। ৬१॥ পূজানাপোতি সর্বাত্র নরোগেভ্যোভয়ৎ ভবেৎ। নোপসর্গভয়ং তস্য দুইজীব সমুদ্ধ १ । न मार्श नक्षांगाणिंः मार्गः मर्यम। इरतः । मल्ड न विसांगम्ह माननी का तिनार रुरबः। कथाक्रिक्टिविनिजार न छय्र विमार् क्रिकिर। तरन तामक्राक्त চৈব সর্মত্র বিজয়ী ভবেৎ। ধয়োঁপরি মতিনিত্যং রুষ্ণে ভক্তিঃ সুনিমল।। পাতকৈ নৈব লিপ্যেত দাদশী ভত্তিতোনরঃ। ইথাৎ গুহাৎ সমাধ্যাতং দৃষ্যা শাস্ত্রসমু-क्रयः। नक्षयमान् পরিতালা কলৌ কার্যাং ছরের্দিন।। ৬৮।। ने ভবেমান্সী পীড়া রোগাশ্চাত্যন্ত দুঃখদা। মাহাত্মাৎ পঠতঃ পুংমোদ্বাদশীসম্ভবৎ কলৌ। ন তং পুণ্। পুরুক্তেত্তে প্রয়াগেচ সভাং কলো। মাহাত্মাং পঠতাংপুংসাংয় ফলংদাদশী-ভवेष । ভবিষ্যে। একাদশী बङ्गाशृगा गर्वशाश्रविनाशिनो । তত্তে क तीशनी विष्याः পরমার্থগতিপ্রদা যামুপোষ্য নরোভক্ত্যা ন সংসারে ভবিষ্যতি । একাদশ্যাং নিরাহারো যোভুড্জে দাদশীদিনে। ন স দুর্গতিমাগোতি নরকানি ন পশ্যতি। ক্তা পাপসংসূতি একাদশ্যামুপোষিতঃ । ঘাদশ্যাসর্জগেরিফুং ন স দুর্গতি মবাপুষাং। এষা তিথিঃ পরাপুণ্যা বিকোরীশস্য ভটিদা। ত্র্যামেবজগ্রাথো অমুর্জ্যেন্ ভিতঃ। তেন মা সর্ব্যপাপত্নী সর্বাদুংখবিনাশিনী ুয়া সা বিফু-মগ্রী শক্তিরমন্তা ব্যাপ্য যা ছিতা। সা তেন তিথিকপেন দুইটব্যকাদশী সভী। ৬৯। সনংকুগারপ্রোক্তে। কৃত্ব। পাপসহস্যাণি ব্রহ্মহত্যাশতানি বৈ । একানেকাদশীং ভক্ত্যा नमू:शाष्ट्रा खिहिर्ভरिव । একাদশীক্রতাদন্যদ্যদূত্ব ক্রিয়তে নরৈঃ। তৎফলৎ ত বিজ্ঞানী রাদুঃ খোড়ু ত নিবালু রং। সৌরধমোঁ। এক ভশ্চারি হোতাদি দ্বাদশীমে কতঃ প্রভুঃ । তুলয়া তোলয়ত্ত্র দাদশী চ বিশিষ্যতে ৷ দেবীরহৃস্যক্ষদপুরাণয়োঃ । পাপৎ পঞ্চবিধৎ প্রোক্তং পাতকঞাতিপাভকং ! উপপাতকসংজ্ঞল মহাপাতকমেব চ প্রেকীর্ণকঞ্চ তৎ সর্বনেকাদশ্যামপোষণাং। বিলয়ং যাতি তোয়স্থং যথাচৈবামভা-

বাঞ্ভিং কর্ত্ত্বিউং।। ৬৬।। ছাদশীবাসরে কৃতে সত্তিয়ং কলং প্রাপ্যতে অশ্বমেধাদিতি-उत्र প্রাপ্যতে।। ৬৭।। উপদর্গার্মার টানি তেভ্যোক্তরং। স্বাদা হরেঃ স্মরণংভবতি। হরেঃ কথারাং রুচিরিত্যস্বরঃ। ভক্তিঃ অবশাদিকাশ প্রেমলফণা বা। এবং দাদশী ভক্তিতঃ धारमाः भारता । यदा द्वामभाः श्रीविमात्ववाधि भाउटेकः कथक्षि कियमारेवर्त्राप न লিপাতে। ৬৮॥ অস্তু তাবদ্ধাদশীব্রভাদিনিস্পাদনং তথা হারাপঠনাদপি নর্বজ্ংখশাস্তিঃ পরম-পুণ্যপ্রাপ্তিকেতা হ নতবেদিতি দ্বাতাং অমূর্ত্তাইব্যক্তঃ মূর্দ্বিমাস্থিতঃ ব্যক্তোইভূৎ।। ৬৯॥ ত্স্য অন্যত্রত্ন্য কলং তথ । একাদশীক্রতমেব বিশেষেণ জানীয়াথ । কথমিব ছঃথেন অন্যত্রত প্ৰস্ৰানেনে।জ্ডনকুরং প্ৰাৰীজোভেদনিৰ জানীয়াৎ। যদ্ম। তথ্য কলং তৎ বিজ্ঞানীয়াৎ। কিহিন

জনং।দেবীরহস্যে।গায়ত্রীহয়থা সর্দ্ধপাপপঞ্জরভেদিনী। একাদশী তথা সর্দ্ধপাপপঞ্জ রভেদিনী। বায়ব্যে স্কান্দে চা অভোজ্যভোজনাজ্ঞাতনগন্যাগমনাচ্চ যৎ। জ্যাজ্যখা-জনাদ্যক অভক্ষাবাঞ্ভক্ষবাৎ। অস্পাশ্সশনাদ্যক পরেষাং নিন্দ্যা চ যৎ। আঅসম্ভাবনাদ্যক পারদার্যক্রতঞ্ যৎ। বিহিতাকরণাদ্যক পরবিভাপহারতঃ। কামান্ধেন ক্তৎ যক্ত পাতকং চোপপাতকং। তৎ সর্বাং বিলয়ৎ যাতি একাদশ্যা-मू(भाषनार। विकृत्रहरमा श्रीतुरकारको । मनमाणि हिकीर्वछि वाममीर य नरता-ভুমাঃ ৷ তে২পি ঘোরৎ ন পশ্যন্তি সৎসারদুংখসাগরং ৷ বিকুপুরাণে ৷ ওঁকারঃ নর্ববেদানাং যথ। চাদ্যঃ প্রপূজিভঃ। তথা সর্বব্রানাঞ্চ দ্বাদ্শীর্ত্যুত্যং। দ্বারকা-মাহাত্মো। এক্ষণ প্রতি এচিক্রশমেনিকৌ। দ্বংপাদায়্জভক্তানাং ন দুঃখং পা-পিনামপি। কিং পুনঃ পাপহীনানাং দ্বাদশীদেবিনাং নৃণাং। ভত্তৈব শীবলং প্রতি প্রীপ্রজ্ঞালেজি। নোফত্তং হিজরাজেহি শীতত্তং ন হুতাশনে। বৈক্ষবানামপাপ-জ্মেকাদশুঃপ্ৰানিনাৎ ।। १० ।। বৈষ্ণবভৱে । একাদশী মহাপুণ্যা বিষ্ণোরীশাস্য বল্লভা। তস্যামু পাবিতো যুম্ভ দাদশ্যাৎ পূজয়েদ্ধরিং। তস্য পাপানি নশ্যন্তি বিক্ষো ভক্তিশ্চ জায়তে । বৃহয়ারদীয়ে । একাদশীমাহাত্ম্যারন্তে । মহাপাতক্যুক্তোবা সুক্তোৰা সৰ্বাপতিকৈঃ। একাদশ্যাৎ নিরাহারঃ ভিত্রা যাতি পরৎ পদ্ধ। বারু পুরাণে ৷ একাদশাত্রতং যন্ত ভক্তিমান্ কুরুতে নরং৷ সর্কপাপবিনিমু ক্তিঃ স বিষ্ণো-হাতি মন্দিরং। বিজ্পুপ্রেভিরে। একাদ্শুপ্রাসং হঃ অন্ধ্যা কুরুতে নরঃ। স সর্বা-পাতকৈঃ যদ্যস্বেবাহির্কিনুচ্যতে ৷ ন পশ্যত্যান্ত্রং নাপি নরকাত্রয়াতনাং ৷ স ননসঃ প্রপূজ্যশ্চ বাসুদেবপ্রিয়োহি সং। গারুড়ে। এক।দশীব্রতং ভক্তা যং করো-তি নরঃ সদা। স বিষ্ণুলোকং ব্রজতি যাতি বিষ্ণোঃ স্বরূপতাং। আংশ্রের। একাদ-শ্ব্যপরাসং যঃ সদ। তু কুরুতে নরঃ। স যাতি পরমং স্থানং যত্র দেবোহরিঃ স্থিতঃ। শিবপুরাণে। যঃ করে।তি নরোভক্ত্যা একাদশ্যামুপোষণং। স যাতি বিষ্কৃসালো-कार श्रापा विरकाः सक्षपा ।। ।। देन्या राजात्रा ना छ। ।। केन्या राजा राजा । ন্ত্যপি। কঃ সংগ্রহীত্তং শক্তঃ স্যাদত্ত রুফরুপাং নিনা।। ৭২।।

ত্যপেক্ষায়ামাহ। ছংখন্যোন্ত্ত্রমঙ্কুরমিব। একাদশীব্রত্যাগেনান্যব্রতকরণাদ্ধুংখনেবাপাজিতি চিন্তার্থঃ। পাতকং পাতিত্যকারকং। অতিপাতকং সু্যাগমনাদি। উপপাতকং গোবধাদি। মহাপাতকং ব্রহ্মহত্যাদি। প্রকীর্নং বছবিধক্ষুদ্রপাপং॥ ৭০॥ অধুনা বিশেষতোভগবদ্ধজ্ঞবেন ভগবদ্ধজ্ঞিতলোকাদিপ্রাপ্তিমহাফলং বৈশ্ববজ্ঞাদিবচনেরত্তে দর্শয়তি একাদশীত্যাদিনা স্বৰূপতামিত্যন্তেন॥ ৭১॥ ইদানীং মাহাম্মালিখনমূপসংহরন্ প্রমোপাদেয়ানামিপি প্
ত্যাহাম্মাবচনানাং সর্বোগ লিখনাসম্ভবং ব্যঞ্জয়তি ঈচ্গিতি। ক্রুর্ম্ভি প্রসিদ্ধতয়া প্রকাশমানান্যপি বিশ্বোগ্যন্ত্রেন তদানস্ভোন চ তানি স্ক্রাণ্য বংগ্র্ছ লিখিন্তং ন শক্যন্তই
ভার্থঃ॥

তথোপবাসদিননির্নাঃ । একাদশী চ সম্পূর্ণা বিদ্ধেতি দ্বিধা স্মৃতা। বিদ্ধা চ বিবিধা তত্র ত্যাজ্যা বিদ্ধা তু পূর্বকা ।। ৭৩ ।। তথাচ পৈঠানসিঃ । নাগবিদ্ধা চ যা ষ্টা শিববিদ্ধা চ সপ্তমী। দশমৈ কাদশীবিদ্ধা তত্র নোপবসেদ্ধাং । শারদাপরাণ একাদশী তথা ষষ্ঠা পৌর্নমাসী চন্তর্দশী। তৃতীয়া চ চন্তথা চ আমাবস্যাক্ষী তথা। উপোষ্যাঃ পরসংযুক্তা নোপোষ্যাঃ পূর্বসংযুক্তাঃ ।। १৪।। সৌরধমোক্তরে চ । একাদশীমুপবসেদ্ধাদশীমথবা পুনঃ । বিমিশ্রা বাপি কুর্ববিত ন দশম্যা যুক্তাং কুচিং ।। ৭৫ ।।

অথসামান্যভোবিদ্ধাপবাসদেশিঃ । ভত বর্ষায়িঃ । ভূতবিদ্ধাত্মাবস্যাদ্ধান্যকাদশীযুতা। দিশা বিদ্ধাতু সা স্বর্গং হন্তি পুণ্যং পুরা কতং ।। ৭৬ ।। নারদঃ। দশমানুগতা যক্ত তিথিরেকাদশী ভবেং । ততাপত্যবিনাশঞ্চ পরেভ্যানরকং ব্রজেং।। ৭৭ ।। নোপোয্যাদশমী বিদ্ধা সদৈবৈকাদশী তিথিঃ। সমুপোষ্যানরোজহ্যাং পুণ্যং বর্ষশতোদ্ভবং । কিঞ্চ । দশম্যাটের বিদ্ধায়ামেকাদশ্যামুপোন্যভাঃ। তস্যাযুঃ ক্ষীয়তে নিভ্যং নারদোহং ব্রবীমি বঃ । সভ্যং সভ্যং বিনশ্যেত শতুতিন্ত নচান্যথা।কিঞ্চ। মুহুর্জেনাপি সংযুক্তা দশমৈয়কাদশী তু যা । তামুপোষ্যানরোমাহাৎ সুথাদ্ধমানিচ হায়তে। বশিষ্ঠশ্য। দশমৈয়কাদশী যক্ত তা নোপবসেছুরঃ। অগত্যানি বিনিশান্তি স্বর্গলোকং ন গচ্ছতি। ত্রান্ধে ব্রতথণ্ডে। উপোধ্যোকাদশীং মোহাদশমীশোষসংযুকাং। ন নরঃ সুথমাধত্তে ইহ লোকে পরত্র চ। ধৃত্রাত্মেরা সহ। পূর্বাং স্থাঃ প্রাং নরাধিপাং। তদ্বাং তেবিয়োগোহভূৎ পুরাণাং ভার্যয়া সহ। পূর্বাং স্থা। বচাহারিণ দশমী শেষসংযুকা। ক্রতা চৈকাদশী রাজন্ত স্বান্থং কারণং মতং।। ১৮।। কিঞ্চ তত্রৈব। নচাহং স্থৈরিণী ভার্য্যা নচাহম-

বিদ্বৈকাদশী চ অত্রে লেখ্যেন বেধাতিবেধমহাবেধযোগাইতি ভেদচন্তইনের সন্দিন্ধা সংযুক্তাদিভেদত্রয়েণ চ কিয়া স্বতঃ সাম্যন্যনন্তাধিকৈয়ে দিশ্যাশ্চ সাম্যন্যনন্তাধিকৈয় নবভেদতো নানাবিধা ভবভি। তত্র পূর্ববিদ্ধোন্তরবিদ্ধয়োর্মধ্যে পূর্বয়া দশম্যা বিদ্ধা ত্যাজ্যা নোপোষ্যেত্যর্থঃ। অত্র চ ত্যাজ্যেতি সামান্যনির্দ্ধেশন সর্বৈরেব পরিত্যাজ্যেতি বোদ্ধব্যং। তত্ত্বছ শুইনব ভাদশী রাজমুপোষ্যা মোক্ষকাহ্ছিভিঃ। সকামেগৃহিভিঃ পূর্বা। বিদ্ধাপীতি বিনিশ্চয়ঃ ইতি
পুরাণসমুক্তয়াদিবচনার্থোনিরস্তঃ। তত্যক্তিশ্চাগ্রে দশ্রিতব্যেতি দিক্।। ৭৩।। নাগঃ পঞ্চমী
তেন বিদ্ধা। শিবঃ ষ্ঠী তেন বিদ্ধা।। ৭৪।। বিমিশ্রাং একাদশীং ভাদশীং চান্যোন্যমিলিতাং।
একাদশীযুক্তাং ভাদশীমিত্যর্থঃ।। ৭৫।।

ভূতেন চপ্তর্দশ্যা বিদ্ধা। একাদশ্যা যুতা দশ্মী চ ভবেং। সা একাদশী তু দিশয়া দশম্যা বিদ্ধা স্বর্গং পুণ্যঞ্চ হস্তি।। ৭৬॥ অপত্যানাং বিনাশং ব্রজেৎ প্রাপ্তোতি বিনাশইতি বা পাঠঃ।। ৭৭॥ ভার্যায়া সহ গাস্ধারীসহিত্স্য তব। ত্স্যাস্তব চ যদর্থং পুত্রবিয়োগোইভূৎ তস্যেদং কারণ মিত্যস্বয়ঃ। তদেবাহ পূর্বমিতি।। ৭৮॥ নচাহমিত্যাদিবচঃ। দশমীযুক্ত কাদশীং

পতি ব্ৰডা। নচেহ কলুৰৎ যেন কিং পাপং ছন্যজন্মনি। রামপাছ্যা বচঃ আন্দ্রা বাল্মীকিমু নিপুক্র:। চিরং ধ্যাত্বা মহারাজ ভামুবাচেদৃশৎ বচং।। १৯।। দশ-মৈ কাদশীং পূৰ্বাং সমুপোষ্য জনাৰ্দনঃ। অভ্যক্তি ভন্তুয়া দেবি তস্যোদং কৰ্ম্মণঃ ফল ।। ৮০।। কিঞাবশিষ্ঠঃ সমুবাচেদং পৃষ্টোমান্ধাতৃভাষ্যয়া। দশীম্যকা-দশী দেবি পুরাচোপোধিতা স্বয়া ৷৷ ৮১ ৷৷ তেন তে কর্মণা চেই স্বভত্সুতবান্ধ-বৈঃ। বিয়োগঃ সমনুপ্রাপ্তঃ সভাৎ বিদ্ধি পভিত্রতে। যানি যানীছ পাপানি তৈলো-ক্যে मखरिख देवा তেষাং স্থানং দশম্যা বৈ मহিতৈকাদশী মতা। সপ্তজ্মাক্তং পুণ্ডং নশ্যেত নাত্র সংশয়ঃ। কৌমনারদীয়বিষ্বুরহস্যেষু। দশ্মীশেষসংযুক্তাৎ যং করে। তি বিসূত্ধীঃ। একাদশীফলং তস্য न স্যাদ্ধ্যবাধিকং। যৈঃ কৃতা দশমীবিদ্ধা বিদ্যা মোহেন মানবৈঃ। তে গভা নরকং ঘোরৎ যুগানামেকসপ্ততিৎ। কিঞ্চ। দশমী বেধসংযুক্তা মুপোষৈ কাদশীং কিল। সম্বৎসরক্তেনেই নরোধর্মেণ মুচ্যতে ॥৮২ ।। ভবিষ্যে। পূৰ্ণ বিদ্ধাৎ পলাৰ্দ্ধেন নন্দাৎ পূৰ্ণমপি ত্যজেৎ। यमी छिन्। ज्ञानश চত্তবুনিয়মেমপি।।৮৩।। নোপোষিতখ নক্তঞ্চ নৈকভক্তনযাচিতং । নন্দায়াং পূक्वविकाताः कूर्यारिन वर्यात्माहिनः ॥ ৮८ ॥ जन्नरेववर्छ। शक्नाहकमा मम्भून्र यदा जाकर घरेर खत्र । मूत्राविनमूनमायूकर छर गर्वर मप्राचार उटकर ।। ৮৫।। शानार्म विषः (द्रोष्ठ कः शिव्या एशीन दः। मनगोम्नयमः गुक्ताः क উপোया छि সদুতী।। ৮৬।। এবং জাদ্বা মুনিশ্রেষ্ঠ দশমীশেষসংযুতা। বজিজতা মুনিভিঃ সবৈধাস্দেবমভীপ্সুভিঃ । গারুড়ে। বিদ্ধামেকাদশীং বিপ্রান্ত্যজন্ত্যতাৎ মনী-যিনঃ। তস্যামুপোষিতোযাতি দারিত্রাং দুংখনেবচ। নারদীয়ে। লববেধেইপি विख्यम् प्रभारेमाकाप्रभारे छ। छ । मूर्तायां विष्तू ना म्यू के शकाखः कनन यथा। अमृ एको शक्षनवाक मममा मृ यिक । जारक । । कारन । वाशवार छ नाकाको कूल-বংশবিবর্দ্ধিনী। করিষ্যতি চ সেনানি মূঢ়ভাবাচ্ছিখিধজ। তেন পুত্রশতং তম্যা না-শমেষ্যত্য সংশয়ং। কলা কাষ্ঠাপি যাচৈব দৃশ্যতে দশমী বিভো। একাদশ্যান্ত সেনানি কর্ত্ব্যা ন কথঞ্জন। কিঞা । দশনৈ । কাদশী যত্র তল সলিহিতো ২ সুরঃ। ছাদ-

<sup>॥</sup>৭৯॥ দেবি হে শ্রীনীতে ॥৮০॥ তামিতি পাঠে মাস্বাত্ভার্যাং প্রত্যুবাচ। দেবিহে রাজ্ঞি মাস্বাত্ ভার্য্যে ॥৮১॥ মুচ্যতে পরিত্যজ্যতে ॥৮২॥ পলার্দ্ধেনাপি পূর্ণয়া দশম্যা বিদ্ধাং নন্দামেকাদশীং স্থপূর্ণামপি চতুরু নিয়মের বক্ষামাণোপোবিতাদির তাজেং ॥৮৩॥ একভক্তেন নক্তেনেত্যাদিনা কদাচিদশক্তাদীনামেকাদশীব্রতপালনার্ধমেকভক্তাদিকং বিহিত্সন্তি তদপি বিদ্ধায়াং বর্জ্জ-নীয়মিত্যাহ নোপোবিতমিতি। উপবাসং যথাতথেতার্থঃ ॥৮৪ । ত্যাজ্যান্তে হেতঃ স্থরে ত্যাদিঃ ॥৮৫॥ এবং পরলোকে তঃধহেন্তত্বমুক্তং ইহলোকেপ্যাহ হালেতি । দশম্যাঃ শেষেণ বৃক্তামেক্কাদশীমিতি শেষঃ॥৮৬॥ শুনোদৃতৌ চর্মণি পঞ্গব্যমিব ॥৮৭॥ ত্রান্ত্রসমি

লৈ।কাকাশনী যত্র তত্র সন্নিহিতোহরিঃ।৮৮। কিঞ্চ তত্রৈবোমানছেশ্বরসম্বাদে। স্বর্গান পেফা মহাদেরি তেন ত্যক্তা ন সংশয়। বাস্থিতং নারকং সৌখ্যং বিদ্ধং কৃত্বা হরে-দিনং। নিহতাঃ পিতরস্তেন দেবতানাং বধং ক্তঃ। দতং রাজ্যন্ত দৈত্যানাং ক্সা বিদ্ধ ২ হরের্দিনং। পিতৃভিঃ সহিতং বৈরং ক্লতং তৈন্ত সুরৈঃ সহ। কারাপয়ন্তি বিদ্ধং যে কুর্বন্তি হরিবাসরং ॥৮৯॥ কিঞ্চ তত্রৈব । যে শংসন্তি দিনং বিষ্ণো-দ শমীবেধদূষিতং। জেয়াত্তে পাপপুরুষাঃ শুক্রমায়াবিমোহিতাঃ । উপোষণদিনে বিদ্ধে জাগরঃ পূজ্যৎ হরেঃ। বৃথা দানা দিকৎ সর্বাৎ কৃতত্বেষু কৃতং যথা। উপোষণ-দিনে ৰিন্ধে প্রারন্ধে জাগরে সতি। বিহায় স্থানং তদ্বিষ্ণুঃশাপংদত্বাপগচ্ছতি ।।১০। কিঞ্চাএকাদশীং যদ। বিদ্ধাং কুরুতে চারুলোচনো দশমীবেধজং পাপং নশ্বতে রফ-দর্শনাৎ ৷ নচারি সংশায়ঃ কশ্চিৎ পুনর্ক কুরুতে যদি ৷ কারাপায়বি যেস্বজাঃ কট-যুক্তান্ত হৈতকাঃ।। ১১।। প্রেত্যোনিং প্রপশ্যন্তি পিতভিঃ সহিতা নরাঃ। দাদশী দশদী বিদ্ধাধনসভাননাশিনী। ধৃৎসিনী সর্বপুণ্যানাং রুফভক্তিপ্রণাশিনী। তবৈ জীমার্ক গুরভগীরথসমাদে। ন স ভাগবভোজে রোফ করোতি হরের্দিনং। দশনী বেধসংযুক্তং পাপমূলং সদৈব হি । পুরাণমন্যথা কৃত্বা করোতে,কাদশীদিনং। দশমীশেষসংযুক্তং স নরঃ পশুসন্ততিঃ। ব্রহ্মসম্য চ যথ পাপং স্ত্রীবালগুরুঘাতিনঃ। দশনীশেষসংযুক্তং যঃ করোভি তদাগুয়াৎ ৷ বৃষলীসেবনাৎ পাপং শ্বতীগননে চ হাৎ। তৎ পাপিং জায়তে বিদ্ধাৎ যঃ করোতি হরে দিনি । দশনী শেষসংযুক্তং নি বিদ্ধাৎ বিষ্ণুনা পুরা। তদ্মাদ্রাগবতৈভূপি শোধয়িত্ব। হরেদিনং । উপোষিতব্যং মত্ত্রেন পূর্ব্ধ-সঙ্গতি বজিলতং। পৃথিব্যাং যানি পাপানি স্লস্কাণি ভূপতে। তেষাং কলসবা-প্রোতি সশলৈ কাদশী ব্রতে। কুরুতে বৈষ্ধবোভূত্বা সশলৈ কাদশীব্রতং । জান-তোইজানতোবাপি ন স বিষ্পুপ্রিয়োভবং। কিঞ্চ ভত্তৈবান্ত্র। বিদ্ধামেকাদশীৎ মোহাদশমীশেষদংযুতাং ! কুর্বন্নসুখমাধতে ইহলোকে পারত চ। ভদ্মাদেকাদশী যুক্তা দশম্যা নরসভ্য । ন কর্ত্তব্যাপ্রয়ত্বেন নিজনা ছাদশী মতা ১২। যথাচৈকাদশী द्वीकन् वापभी ह ज्था न्वार। त्रमाना ज्यक्ता (थाक्ता उर्ज्यम् हक्त पाविनः

হিতইতি দৈত্যানাং গুলুপ্ৰাসকলপ্ৰাপ্তেঃ।।৮৮।। কারাজীতি বক্তব্যে কারাপয়নীত্যার্যং।৮৯।।
শংদন্তি কর্ত্ত্রুপ্রদিশন্তি । নকু কর্বং তে পাপপুরুবাঃ বিদ্ধাপ্যবিদ্ধা বিজ্ঞেয়েত্যাদিশাস্ত্র বিধানাৎ তত্রাহ শুক্রেতি। তদত্রে ব্যক্তং ভাবি।।৯০॥ ক্রফদর্শনালশ্যতীতিপাপদ্য মহত্তরা
প্রায়াশ্ভরমপি চুর্যটং মহতুক্তং। পুনর্ন কুরুতে যদীত্যনেন পুনর্যদি বিদ্ধাং কুরুতে তদা পুনঃ
পাপোৎপত্তেরনিউমিবেতি বিদ্ধাকরণপাপদ্য মহাভ্রানকস্বস্কুতং । কূটং শাঠাংতত্যক্তাঃ
হৈত্তকাঃ শুক্তর্কপরাঃ।৯১॥ নিকলা শুদ্ধা দাদশ্যের মতা সুনিভিরুপ্রাদার্থমন্ত্রাতেতার্থঃ।।৯২।। শ্মানা বিফুল্বেবত্যেন। ততঃ তৎক্লাঃ দ্যানফলা। তত্র হেন্তঃ ব্রতইতি। চক্র-

1৯৩। দ্বারকামাহাজ্যে। চন্দুশ্মণিং প্রতি তৎ পিতৃণামুক্তো। বর্জনীয়ঃ প্রয়েন বেধোদশনিবভবঃ। নোচেৎ পুত্র ন নন্দেহঃপ্রেতযোলিনবাপ্ব্যাস। ১৪।। হত্যা প্র চ্ছতি কাশ্যান্ত গয়ায়াংপৈতৃক্ খনং। দশমীবেধজং পাপং ন কাশ্যাংন গয়াশিরে। ত্রৈলোক্যসম্ভবং পাপৎ তেয়াং ভবতি ভূতলে। সশল্যং যে প্রকু<del>র্বন্তি</del> বাসরৎ ক্লম্ব-সংজ্ঞকং। প্রেতত্বং দুঃসহং পুত্র দুঃসহ। যমযাতনাঃ। তত্ত্বৈ তৎ প্রতি এভগব-দুক্তো। পুণ্যং সুসঞ্চিতং যাতি কম্পকোটিশতাক্তিতং। সশল্যং যে প্রকুর্কন্তি মুক্তিদ্ধ মম বাসরং। অভএব তত্তিব ভগবন্তং প্রতি তৎপ্রার্থনে । দশনাবেধজ্ প্লাপং স্বদিনে মন পূর্বজৈঃ। যৎ কৃতং নাশমায়াত স্বংপ্রসাদাক্তনার্দ্দন। স্বিদ্ধং জদিনে রুফ যৎ রুত্র জাগরং বিভো। তৎপাপৎ বিলয়ং যাত লবণন্ত ম্থান্তিনি। ।। ৯৫।। সবিজ্ঞ বাসরং ফ্লাং ক্তং মম পিত্সিছে । প্রেতজ্বং তেন সংপ্রা-গুৎ নহাদুঃখপ্রদায়কং।। ৯৬।। পালে শীভগবদুক্ষসম্বাদে। শুক্রেণ নোহিতা বিপ্রা টলত্যানাং কারণেন ভা পুউ।র্থং দলমীবিদ্ধং কুর্ম্বতি মম বাসরং ।। ৯৭ ।। বাসরং দত্যাবিদ্ধং দৈত্যানাং পুঠিৰ্দ্ধনং। মদীয়ং নাত্তি সন্দেহঃ সত্যংসত্যৎ পিতাসহ ৷ যাবাদশালা সংযুক্তং করিয়াতি দিনৎ মম। তৎ পুণাং দৈতাজাতীনাং সুরৈদ্ভিৎ িতি, ছে। তেন পুণান সংপৃষ্টো হিন্নগাক্ষঃ পিতি। নহ। নিডির্জত্য বাসবং সংখ্যে হতে রাজ্য দিবৌকসাং ॥ ৯৮॥ শুক্তেণ মেতিভাই সর্বে দৈত্যানাৎ বিজয়ায় বৈ । আভোগিদ্ধং প্রকুর্বান্তি বাসরং মম মানুষাঃ। নার্কণ্ড গচ্ছ ভত্ততে ভূর্লোকস্ত মনাজ্যা । দশনীবেধবিষয়ে মায়াং শুক্রস্য নাশয় ॥ ১১ ॥ জীনিক্ষার্বচন্থ জ্লামার্কভোলুনিসভনঃ। সংপ্রাপ্তোনিমিবারণ্যং যত যজপুমান্ হরিঃ। মার্ক্ত वजन अन्या अयस्यारेनिम्यालयानारुक्यायाविनिम् का विकासः शतमः गणाः । > ०। ই अनुभूति কথিতং মহাভাগৰতার বৈ। গড়াশ্রমেষু সর্পেষু কথিতং বনবাসি नार्था २०२॥ हिदा अक्ना बाक्रानि मार्कछव्छनाड्डोनः। छाङा मनमिनःयुङा

পাণেরের ব্রত্তর্মেতৎ অতস্ত্র সাম্যং যুক্তমেবেতার্থঃ। ৯৩॥ দশমীতি হাস্ত্রমার্বং।। ৯১॥ জাগরমিতি নপুংসকর্মার্যং।। ৯৫॥ বিদ্ধং বেধং তেন সহ বর্ত্তমানং। তত্র চাথ্যারিকা তবৈর। চক্রশর্মা। বিপ্রঃ প্রীকৃতিদকভক্তঃ প্রীভগবিদ্ধের্থঃ কদাচিৎ স্থান্ধ দুট্টের্কিনাব্রতেন প্রেত্তরং গতিসংপিতৃগবৈঃ প্রীভগবদ্ধক্র্যর্থ মুপদিফোদারকাং গত্বা ভণান্তমারাধ্য সংপ্রার্থ্য সপিতৃকোবিম্নুক্তিং প্রাপেতি।। ৯৬॥ হিরণ্যাক্ষবধ্রসক্রে দৈত্যানাং বধং ছন্তরং দুট্বা বেক্ষাণা তথ কারণং পূট্য প্রীভগবানাহ শুকেনেত্যাদি। কারণমেবাহ পুট্যর্থমিতি মদীরং বাসরমেকাদশীদিনং। ৯৭॥ অতএব তেন রাজ্যাদি হতং।। ৯৮॥ তত্রাধ্রমাপায়ঃ কঃ তত্রাহ্ মার্কণ্ডেতি।। মারাং শুক্রম্য নাশরেতি বিদ্ধোপ্রাস্বচনানি শুক্রমায়াক্রতান্যেবত্যুপ্রান্ধিত তিলাপ্রাপ্রান্ধ। ১০০॥ বনবাদিনাং বনবাদিনঃ প্রতি ক্ষিত্রং মার্কণ্ডেরেন ।। ১০০॥ পূর্ণয়া

বিপ্রাল্যেঃ পুণ্যকাজ্ফিভিঃ। পূর্ণাবেধকুঠারেণ নরা দাদিশিপাদপং। ছেদয়ভি চ যে 'পাপা' ক'পান্তং নারকাহি তে ॥ ১০২॥ ভবিষ্যে মার্কণ্ডেয়পুরাণ চ। পূর্ণা বিদ্ধা মুপাংক কো নন্দাং বেদবলাদপি! কোবেদবচনাত্তাত গোসবে গাং নিহন্তি বৈ।১০৩1 प्रभागीर**भवम**रमुक्त्रम्थारप्रश्रकाखन्यः खन्नीन्याप्रकाप्रभी न्यामीशन নিখিত। উপোষ্য দাদশীং শুদাং তথাদশ্যান্ত পারণ,। কৌর্ফো ব্রহ্মবৈবর্জে চ। জ্বিধাসসূত্রসন্থানে। সুপুলাকাৰণী সূত্র যদিশেলা বিব জ্বিতা। কর্ত্বিরয়পাতায়সশ ল্যাসমুপোনিতা। শলাং বেয়ই ভি পোক্তং পুরাণার্থবিচক্ষণাচ্চাকিঞ্চ তলৈব। জীলুতা বিক্রবাদে। বেত্র নিস্যাতিধানেন মৌহয়ন্তি নরা ভুবি। বিমূচাঃ পাধিন-(अयाप दिन्तियः भातन्य हितः । व्यवगांशात्रक्षतिष्ठवाः शिख्वणानः तृषायः । কারে এরবুধা লোকে দ্বাদশীং দশবীবুভাগ। যে কারয়তি কুর্যতি দাদশীং দশবীন बुधाः । संदेशस उत्पार बीका कुर्वाप्तेनीवमाहरदः । नत्मानादासमारपञ्च छात्रा। ष्क्रीतमाधान । तराकीः विमुक्ताविष्ट क्रानिनः कार्य। निकान १ १ २०६१ । विश्विध् गृह থিতে পাপিল্ হম বিধ্বলারিক । হিংলিভোতগ্যাহস্তেন মাগ্লী মশ্মানুত। । য়ত। যেৰ বিষ্ণেই স্বাল্ড কং ময়া তব। সংভিতোতগৰাৰ জাকালাদৰ বিপাধূত্ यकः। ख्या १४० १११ च तक्ति। दाननी सनियोज्ञा। २०७।। विका प्रकासि म তেত্ত হাজা গলেশী । সমুপোষ্যাজ্য পাত্ৰসূত ৌচশ্যামেৰ শান্তি নিবিবঁধঃ।। ১০৭ ।। ष्यामभी कथाने मूडा रख भारत विकिति । व ७२२। अगहर मान। यकि असा घडा বাংখা। ১০৮ । অভএব লারদীরো। বছবাক বিরোধেন সংক্ষেজারতে হদ।। ऐशिया पापनी उन दशानमान्य भावतः । द्वीयार्कस्थरतन (एन्पून्नः अधि জীভগবদানারাঃ প্রতিপালনে। বিবাদেযু চ সর্বেষু দাদপ্রাৎ সমুপোলণ । পারি।

দশম্যা বেধএৰ কুঠানস্তেন ছেদয়কি তত্ৰ প্ৰতদাৱা।। ১০২ । বেদৰলাগণীতি বেদেয় তাল-শানি বচনানি ন সন্মেৰ। সংখিপি তদ্বলাৎ ক উপাস্তে অণিত নকোপি। কথাকিং পূৰ্ব্বস্থানা-মিপি বচনানাং পাৰ্বচনৈৰ্ব্বাধিতস্থাং। তত্ৰ দুটান্তঃ। গোগেধে পূৰ্ব্ব বৃত্তমাপি গোনধং কংকুৰ্যাং অধুনা কলিকালে তলিবেধাং। এবং শুক্রনায়াদিনা কথাকিং পূর্বাং বৃত্তানামপি বিদ্যোপবাসবচনানামধুনা প্রীক্তগবদাক্তয়া মার্কপ্রেষ্বচনেন নিবিদ্ধক্তাং পুনবিদ্ধোপবাসং কংকুর্যাদিত্যর্থঃ। ১০৩। বিদ্বাধিতি তিকাদশী সমুপোষিতা তদা অপুণ্যা প্রমমঞ্চলকারিণীত্যর্থঃ। ১০৩। বিদ্বাধিতা তদা কর্ত্বস্থাতকর্ত্ত্বিরিয়ে পতনায় ভবতি সৈব।। ১০৫। অধুনা বিদ্যোপবানোপদেশকালিকাতি যে স্থিতি সাইলিক্তর্ভিঃ। অবিজ্ঞেরং স্বয়ংজ্ঞাতুমশক্যমপ্রনানধ্যাপরন্থীতি।। ১০৫।৷ বিদ্ধাকরণে চ মহাদোষবিশেষং পুনরাহ হিংসিত ইতি দ্বাভ্যাং।। ১০৬।৷ কুতর্কবলতোবিবাদেনানিক্রেংপি জাতে বিদ্ধাং পরিত্যক্ত্য শুদ্ধা দ্বাদশীতি। অহং বেশব্যাসং।। ১০৮।৷ বিদ্ধার্কভিনমের তিথিক্রেদিনোপ্রাস্বাদ্বদর্শনাদিনা সাধ্যতি একা

हि बत्योषभागां सांख्याः सांगकी सूरत । हिल्लापान कर्ल्डाना एक नवः । অতএব পিতামহ:। একাদশী দিনক্ষয়ে উপবাসংকরেতি মঃ। তস্য পুত্রা বিন-শ্যন্তি নহারাং পিওতোহশা ।। ১০৯ ।। দিনক্ষয়ে ত সংপ্রাপ্তে নোপোষ্টা দশামী-मुकाः रत्रीएइ९ भूवर्शितांगार वृधिर मञ्चानभावानः ॥ ১>०॥ वहामः। এकाममी-দিনে জীলে উপৰাসী ভয়ে সূত্ৰী । ভলাভাবে নিরুদ্ধোৰা সহ প্রাছা বিশেষতঃ i ধর্মাহ।নিশ্চ ভব্তি সন্তর্নিশ্যতি প্রবং । ভস্যায়, ফীয়তে নিত্যং সমুৎসর্মিতি অগতিং। অভএব গোহিলঃ। একাদলাং মদা একান্দিনকারতিথিভবিৎ। ভদা সেকাদনীং ভাজা ছাদ্দীং সমুংগালাংখ । তত্ত্ত জভদাংং পুলাং ক্রয়েদ্দানিস্ত भारतः। भिभावसीरमः। भारतं वार्षायया मृत्यो भारतारखं या सिन्दरमः । উर्পायम प्रभागे एको जिल्लाम्मानिक श्रीवरण । ১১১ ।। जिल्ला। मुन्निका कालानिका श्रवराजी-रामनी व राज्य । चामनी र खास १४१८ । राजा घण तया शाहरू । रकी स्वा । मिनकरस् ए मा भुरक्ष देशिया प्राप्ति एसव । नवांत्रशतम्बर्गूकाश्च मुक्तील कनाहम । िछ। एशिव्यक्ती ख्या यहार पार हो। एतः भिष्य स्त्र । अस्तियापु । वाकायु चा-मनो अपुरशायस्य । ए । एक । विकि एक म जुन आह आह जान मीर नमू शास्त्र व শ্রত্যা ভ্রেন্স্পা হণিত জ্যোত্ত লাভ্রেষ্ট্র ১৯০ 🔞 💍 জ্বা হোমে ভ্রা দানে एक्स्सन्थः चर्वता भागाव । शिकारकम् वन्या । **च**रशाम्यी । **कारम् ।**। একাদ্দটাত বিপায়াং লোপৰাগতিনাদিকং। স্বাদশচামেৰ ভৎ কুৰ্মটাৎ ত্ৰয়োদশচাস্ত পার্ডির প্রভবভাধিকং পুরাৎ মৃতিন্ত্রি নতাং নাকিংগ । উর্দুং হরিদিনং ন স্যা ल्याम नीर आहरत इच्छ । क्षेत्र में भूषिया नास्य करता मना ख भारतः । अवर कूर्यन्-লায়ে ত সা বিফুলাযুজ্যমানুলাম। মন্যা জুলতে মন্ত ন যাতি নরকং কুবং 155 sx একাদনী খ্যানিটেম্ব দ্বাদনী চক্রগানিক।। ১৯১। ততএব সার্কভেয়েন্দুনুনু

দশীতাদিনা। একাদশীদিনসা কলোদশায়ঃ পেয়ালা বাবেব স্যাং। অভন্তদিনং বিদ্ধানের তালিন ব উপাবাসং করোতি॥ ১০৯॥ দশমীয়াতাত ছাদশীক্ষরব্যাবৃদ্ধার্থং॥ ১১৯॥ করের তিথিকরে। দিনত্ররে তাছ্ইতার্থং। এবং জ্রোদশী বিধেনতাসংযোগাভ্যাং ভেদং॥ ১১৯॥ তিবি-ছেদে তিবিকরে।। ১১২॥ যছেভিং বিফ্রুছ্স্যাদৌ। পারণন্ত ন কর্ত্তন্ত্র্যাপ্রাইঘাকাদশীমিছ। জ্রোদশ্যাং নরৈর্নিত্যং ধর্মাবৃদ্ধিনতাপ্রভাবিত্যাদি। তত্তাছ ক্রপইতি। এবং জ্যোদশীপার-গনিধেবচন নি জ্যোদশ্যাং লাদশীসন্তাবে ছাদশ্যতিজ্ঞান ত্রোদশ্যাং পারণবিষয়াণি জ্ঞাতব্যানি। এভচ্চাত্রে বিস্তং ভাবি। ১১৩॥ যদ্যপ্রেদশ্যপি ভগবতএব ভিথিঃ ভথাপি ঋষীবাং সম্বন্ধেনির ছাদশ্য চালাজক্রপাণেরেরেভি ছাদশ্যামাহাত্মবিশেষার্থমুক্তং॥ ১১৪॥ শ্রীক্রিরেন পূর্বনেকাদশ্যপ্রস্বাদেশ্যাঞ্চ পারণমিত্যুক্ত্বাহনন্তর্থ বেধসংশ্যাদৌ সভি ছাদশ্যপ্রাদশ্যাং পারণনিত্যুক্তং ভক্র সর্ব্বক্র স্থ্রেসিক্রাদশীব্রতপরিভাগেন কর্ব-ছিদ্দোষং স্যাদিত্যশঙ্করা মহারাজেক্রছ্যমেন পূর্ভে সভি ছাদশ্যপ্রাদেশীব্রতপরিভাগেন কর্ব-ছিদ্দোষং স্যাদিত্যশক্ষয়া মহারাজেক্রছ্যমেন পূর্ভে সভি ছাদশ্যপ্রাদেশীব্রতপরিভাগেন কর্ব-ছিদ্দোষং স্যাদিত্যশক্ষয়া মহারাজেক্রছ্যমেন পূর্ভে সভি ছাদশ্যপ্রাদেশীব্রতপরিভাগেন কর্ব-ছিদ্দোষং স্যাদিত্যশক্ষয়া মহারাজেক্রছ্যমেন পূর্ভি ছাদশ্যপ্রাদেশীব্রতপরিভাগেন কর্বন্ধিক্রান্ধ

मशामि! এकामनो अयोगास प्रामनी ठक्रभागिनः। उँ कथ द्वामनी जूभ तो পোষ্যা ক্রিয়তে জনৈঃ !। ১১৫ ।। এষা নিঃশেরসী ভূপ ফলভোগবিবর্জিনী। মোক্ষত্মিক। পুরা প্রোক্তা দ্বাদশী প্রবরাতিখিঃ ।। ১১৬।। একাদশী শরীরন্ত পুরুষোদ্বাদিশী অনুতা। দ্বাদশ্যামুপবাসেন সিদ্ধা ভূপ সহস্পঃ। চক্রবর্তিত্বমন্তলং সংপ্রাপ্তা অচলাং শ্রিয়ং। চতর্দ্ধশৈতে সঞ্জাতা বলিনশ্চক্রবর্ত্তিনঃ। বিষ্ণুং শাস্তে মহাবীরাদুউদৈত নিবছণাঃ । উপোষা দাদশীং শুদাং বাবজনবং ব্রতাবিতাঃ। छक्रवर्षिष्माश्या जून्। ८०१११त् म्थानि देव । क्वमार्थाविषशिक्दिति करिनुष्तनः 'পূর্বঃ । মরুত্রে ভিরত শৈচর কার্ডবীর্ঘ, শচ হৈছ্য়ঃ। মান্ত্রতা সগরো রামঃ ককুংস্থো নহুষত্তথা। উপোব্য দ্বাদশীং পুণ্যাসপরাঞ্চ বিবর্জা ও । ভূজা দ্বর্গ সুখানোতে ठळवर्डिञ्चमांग्रञाः ॥ ১১१ ॥ छनकानाः यशेशाः प्राप्तः । নগুত্যা সন্ততিযুক্তি। শংসিদ্ধিং পরিমাৎ গতা । পুরুকুংসোমহাপালোরাদশ্যাং সমুপোষণে । সিন্ধিক্তঃ পরিত্যজ্য ক্মবিন্ধৎ দুরাসদং ॥ ১১৮ ॥ সান্ধাতা যৌবনাশ্বশ্চদাদশ্যাং সমুপোষণে। সংগ্রামে নিঘনং প্রাপ্তঃ পরমংপদং। শ:কুন্তলোমহীপালোদৌগান্তিরপরাজিতঃ। দ্বাদশ্যামুপ্রাসেন গত-ছবৈ কবং পদং। বৈণ্যঃ পুরুরবা ভূপ পালয়িত্বা ধরাতলং। ধরণীধরমভঃচ্চ্য দ্বাদ-भीयू नमा शूनः । গতस्रिक्य र लोकः मार्थनस्र क्किंटः। এতে तः कर्सस्य पृश् हामगार मगुरशीयरैनः । मिकित शर्तायकार खाखा य विकासान् मृतुषु त्य। य। বক্রীতশ্চ বৈদর্ভোমাগুর্যঃ কৌশিকোমুনিঃ । ভরদ্বাজন্তথা কণুঃ কুন্তলোনিস্তথা মুনি:। অফাশীতি সহস্থানি মুনীনামূর্দ্বতেসাং। প্রথাতি স্ফান্স্যতিগ্রতিমিরা-রেজনাধিপ। তে সর্বে পরমাং সিদ্ধিং দাদশ্যাৎ সমুপোষণে। ময়া সহগতা ভূপ-কথন্তে সংশয়োভবেৎ। দ্বাদশীবাসরং রাজন্ হরিগুহৃৎ প্রকীর্ভিতং। নিরা পরাধং লোকে श्रिम खक्तः विक्क विक्व विकार । उमाजु शन मत्म इः कर्छ विकास मीर প্রতি। বিশেষফলদা প্রোক্ত: দ্বাদশী পাপনাশিনী ।৷ ১১৯ ৷৷

অথ সম্পূর্ণ লক্ষণের বিদ্ধালক্ষণং। ক্ষান্দে। প্রতিপাৎ প্রভূতরঃ গরা উদয়া-

মহাকলঞ্জেত দ্বাদশীমাহাত্মাং শ্রীমার্কণ্ডেরেনোক্তং লিখতি একাদশীত্যাদিনা পাপনাশিনী ভাত্তেন।। ১১৫।। ফলং মোক্ষাদি ভোগশ্চ বিষয়স্থাদিন্তরোর্ক্রেনী। পাঠাক্তরে ফলং স্থগাদিক্তিরোর্ক্রেনী। পাঠাক্তরে ফলং স্থগাদিক্তিরে।। ১১৬।। অপরাং একাদশীং।। ১১৭।। জ্রাসদাং অন্যৈক্তি ভাং দিক্ষিং পাঠাক্তরে পুষ্পারিহরং কর্মাব্দ্বং॥ ১১৮।। নিঃশেবেণ আ সম্যক্ অপ্যাত্তা বাধা যশ্মন্। পাঠাক্তরে নির্গতং আঅপরাধোদ্ভবং ফলং যম্মাৎ তথা। ১১৯।।

এবং সর্বাথা বিদ্ধা পরিত্যাক্ষ্যেতি নিশ্চিতং। তত্রাপেক্ষিতং বিদ্ধালক্ষণং সম্পূর্ণা লক্ষণ-ভিন্নত্বেন লিথতি প্রতিপদিতি ত্রিভিঃ। রবেঃ উদয়াৎ একনুদয়মারভ্য আউদয়াৎ অন্যোদয়াবধি যদি স্বাস্তদা সম্পূর্ণা ইত্যর্থঃ। হরিবাসরং একাদশী তদ্বর্জিতাঃ। স্ব চ নৈভাতৃশঃ কিন্তু উদয়াৎ

দোদয়াত্রবেঃ। সম্পূর্ণা ইতি বিখ্যাতা হরিবাসরবজ্জিতাঃ।। ১২০।। গারুড়ে শিবঃরহস্যে চ। উদয়াৎ প্রাক্ বদ। বিপ্র মুহূর্ত্বরসংযুতা। সম্পূর্ণকাদশী নাম তত্ত্বি বোপবসেক্ষ্রী।। ১২১।। ভবিষ্যে চ। আদিত্যোদয়বেলায়াঃ প্রাঙ্মুহূর্ত্বয়ানিতা। একাদশী তু সংপূর্ণা বিদ্ধান্যা পরিকীর্ভিতেতি।। ১২২।। অতএব পরি-ত্যাজ্যা সময়ে চারুণোদয়ে। দশনৈ ফাদশী বিদ্ধা বৈষণবেন বিশেষতঃ।। ১২৩।।

পূর্দাং মুনুর্রন্থরে বদ্যদৌ ভবতি তদৈব সম্পূর্ণ: স্যাদিত্যর্থ: ।। ১২ ।। তদেব শ্রীগারুড়পুরালাদিনচনৈর্দ্দর্শন্ত উদয়াদিতি দ্বাভাং। গৃহীতি বিদ্ধায়াং কেচিছ্পবাসং ব্যবস্থাপরাস্থিত প্রিহারার্গমূক্তং ।। ১২ ।। অন্যা উজলক্ষণসংপূর্ণতরা বিদ্ধান্তা ।৷ ১২২ ।। অতঃ পূর্বেবিদ্ধান্ত্যাগাদেব হেতোঃ। তত্র চ উদয়াৎ প্রাক্ষ্ মুহূর্ডদ্বান্তর্গদশীপ্রাপ্ত্যা বেধপ্রসঙ্গান্ধেলো
বেব । অনুণ্ন্যোদ্যোগ্রিন্ ত্মিন্ সময়ে দশম্যাবিক্রিকাদশী পরিত্যাক্ষ্যা সর্বৈরেব । তত্রচ
বৈক্ষবেন বিশেষতঃ পরিত্যাজ্যেতি বৈক্ষবেন ন কর্ত্তবাং তদ্ধি নৈক্ষণীত্রতমিতি ভবিষ্যপুরাণাদিবিশেযোক্তের্বিক্ষবেত্রাণাং শৈবসৌরাদীনাং কেষাঞ্চিৎ কর্যঞ্চিৎ বিদ্ধাপ্রাস্বাক্র

রবিচক্র র্জমাত্রাপীতি সার্থের রুণ্ন্যোদ্যাৎ প্রাণের রুণ্ট্রকাদয়। ততার্দ্ধিটকোদয়মাত্র-প্রাপ্তরেন অত্যাপাপীত্যর্থঃ। যথোক্তং ভবিষ্যে অরুণ্যেদয়ে জ দশনী গল্পমাত্রং ভবেদ্বাদীতি । ১২৪। ত্রিঘটিকেভানেন দশন্যা ঘটিকৈকা অরুণ্যেদ্রাবিষ্টেতি জ্বেরং। এতচ্চ সংজ্ঞাবিশেষার্থকুং। এব মর্গ্রোপ। তাঞ্চ ধর্মকাজ্জ্য়া বর্জ্জ য়েদিতি অন্যথা ধর্মহানিঃ স্যাদিত্যর্থঃ। এব মর্গ্রেগ্রহং। এবং গারুড়োক্তানাং ত্রিশ্লোকানাং। পুত্রাণাং পৌত্রাণাঞ্চ সমৃদ্ধ্য়ে। বছা পুত্রাশ্চ পৌত্রাশ্চ সমৃদ্ধ্য়ে। বছা পুত্রাশ্চ পৌত্রাশ্চ সমৃদ্ধ্য়ে ধনাদিসম্পত্তয়ন্ত দর্থং।। ১২৬।। তিথিরেকাদশী। অরুণোদয়ং বিনান প্রভূতান সম্পূর্ণ। একমরুণোদয়মার্জ্যান্যারুণোদয়ং যাবদ্যাপিন্যের সতী সম্পূর্ণ স্যাদিত্যর্থঃ।। ১২৭।। তত্র অরুণোদয়ে। ১২৮।। ত্রেকাণ্ বির্ণার্থ জ্যাত্র্যাঃ

कीम्भेड खरवादरशास्त्रां विष्यम् कीम्भः । यागावर्धा ममोठम् याखाः पृक्षेम्रा যণ্। চতসো্ঘটিকাঃ প্রাতররুণোদয় নিশ্চয়ঃ৷ চওষ্টয়বিভাগোংত বেখাদীনা, কিলো দিতং। ভত্তোপ্তরং।অরুণোদয় বেধঃ স্যাৎ সার্দ্ধন্ত ঘটিকাত্রয়ং। অভিবেধোদিঘটিক: প্রভাসংদর্শনাক্রবেঃ। মহাবেধোংপি তত্ত্রৈর দৃশ্যতেংকোন দৃশ্যতে। জরীয়-ন্তত্র বিহিতোযোগঃ সূর্য্যোদয়ে বুধৈঃ ।। ব্যাখ্যাতঞ্চেদং মাধ্বীয়ে । বেধাতিবেধ-শহাবেধ যোগাশ্চত্বার উপবাসস্য দূষকাং।তত্র রবেং সন্দর্শনাৎ পূর্বাং সার্দ্ধং ঘটিকা-ত্রয়মেকাদশ্যাব্যাপ্তং। ভত্র প্রাচীনে ঘটিকার্দ্ধে দশমী সম্ভাবে বেধঃ যদা ঘটিকাদ্বয় .মুপরি পলমেকাদশী ব্যাপ্তৎপূর্দ্মন্ত ঘটিকান্বয়ং দশমী ব্যাপ্তংজদানীমভিবেধইতি। পরিস্ত সুগমং। ভত্র দোষাগুলৈব। রাক্ষসানাৎ ফলং যোগে মহাবেধে ত বাক্ষলেঃ। জ্ঞাসুরস্যাতিবেধে মোহিনী বেধশম্পিনী। গোভিলোক্তৌ। অরুণোদয়বেলায়াৎ দশমা যদি সঞ্তা। সংযুক্তিকাদশীং তান্ত মোহিনৈ। দত্তবান্ বিভুঃ। পাছোত্তর-খণ্ডে। অরুণে দয়বেলায়াং দশমীমিশ্রিতা ভবেৎ। তাং ত্যক্ত্যা দাদশীং শুদ্ধা-मुर्भारवामिविष्ठातस्य । ভिविरवा। अकृत्यामरस जुम्ममी शक्तमां व ९ ভবেদ्विष । দ্রফব্যং তৎ প্রযত্ত্বেন বজ্জনীরং নরাধিপ।। ১২৯।। কিঞ্চ । দশমীশেষ-সংযুক্তোযদি স্যাদরুণোদয়ঃ। বৈঞ্বেন ন কর্ত্তব্যং তদ্দিনৈকাদশীব্রতং ।। ১৩০।। গাৰুড়ে ৷ দলমীশেষসংযুক্তো যদি স্যাদৰুণোদয়ঃ ৷ নৈবোপোষ্যংবৈষ্টবন্ত ভত্ৰ रेठकामभो उट्टा। २०२॥

অথ বৈফবলক্ষণং। গৃহীতবিষ্ণুদীকাকো বিষ্ণুসেবাপরোনরং। বৈশ্বশ্চাত্র সংগ্রাহ্য ক্ষান্দাদ্যুক্তানুসারতঃ । ১৩২ ।। তথাচ ক্ষান্দে। পরসাপদমাপারোহর্ষে বা সমুপস্থিতে। নৈকাদশীং তাজেদ্বর যগ্য দীক্ষান্তি বৈষ্ণবী। সমাত্মা সর্বাদেবিপ্পৃতি। থিকাচারং সহি বৈশ্ব উচ্যতে ।। ১৩৩ ।।
পাত্মেচ। সদীক্ষাবিধিসন্ন্যাসং সহন্তং দ্বাদশাক্ষরং। অফীক্ষরম্থান্যা যে মন্তং

।। ১২৯।। তদিনে যদেকাদশীব্ৰতং তথা। ১৩•।। তত্ৰতিমান্দিনে একাদশীব্ৰতে নিমিপ্তে নৈবোপোষ্যং। ব্ৰুইত্যত্ৰ দিনইতি বা পাঠঃ। ১৩১।।

নমু সচ বৈষ্ণবং কীদৃশং পূর্বাং ভগবদ্ধ জিলকণে যোলিখিতঃ উতান্যোবেতাপেক্ষায়াং লিখতি গৃহীতেতি। অত্র ব্রতবিধৌ সএব গ্রাহ্ণঃ। নতু পূর্বালিখিতোভজিনিষ্ঠাপ্রাপ্তঃ তস্য ব্র-ভাদানধিকারাৎ। এবং দ্বাদশ্যাদৌ ক্ষৌদ্রকাংশ্যাদিবর্জ্জনাদিদ্বপি তথৈব জ্বেরং॥ ১৩২॥ সর্বাজী-বেরু সমাদ্মা সমবৃদ্ধিঃ হিংলানিক্ষাদিরাহিত্যাৎ স্বাত্মবদ্ধিতকারিত্বাচ্চ। নিজাচারোবৈষ্ণবধর্ম স্তন্মাদবিপ্তঃ অপরিভ্রম্জঃ। বিষ্ণৌ অপিতোহখিলআচারঃ অধর্মাদির্থেন সং॥ ১৩৩॥ দীক্ষাবিধ্যাদিকং পূর্বাং লিখিতমেবান্তি। দীক্ষাবিধিসহিতং ন্যাসেন সহিতং যক্ত্রেণ সহিত্রা। এতচ্চ প্রকালবেত্যুক্তং। অন্যঞ্চ প্রিগোপালদেবাদিমন্ত্রং। ভথেতি সমুচ্চয়ে। তথাপি দীক্ষাদিং বিনা প্রকালকাত্যন্তীত্যের ক্রেরং। যদ্যা তথা তেন দীক্ষাগ্রহণাদিপ্রকারেণ। বিষ্ণুর্চন-

ममूभीमर्डा (ख्रद्रांख रेक्स्वालारक विक्क्नेत्रकाख्या ॥ ১७८ ॥

অথারণাদয়লকাং। ক্টান্দে। উদয়াৎ প্রাক্ চতসুশ্চ ঘটিকাজরণাদয়ঃ।
তত্র সুনং প্রশস্তৎ স্যাৎ সবৈ পুণাভয়ঃ ফ্ ভঃ। ব্রহ্মবৈর্দ্ধে। চতস্যেঘটিকাঃ প্রাভরর্জনাং প্রান্তম্ব উচ্যতে। ঘতীনাং স্থানকালোয়ং গঙ্গাজঃসদৃশঃ ক্ষ্ ভঃ। ১৩৫।। ব্রিঘামাং
রজনীং প্রান্তম্ব জ্বাদ্য কচন্তম্ব ইয়ং। নাড়ীনাং তে উত্তে সংল্যা দিবসাদ্যক্ত
সংল্পিতে ।। ১৩৬ ।। তথারুণোদয় বিদ্ধোপবাসদোধাঃ। তত্র কৌংসঃ।
তারুণোদয়বেলায়াৎ বিদ্ধা কাচিদুপোঘিতা। তস্যাঃ পুরশতং নফং তক্ষাভাং পরি
বজ্জ য়েও।। ১৩৭।। পাছে প্রভিগবদু ক্ষ্ সম্বাদে। তরুণোদয়কালে তু বেধং দৃষ্ট্রা
চত্তর্মিধং। মদ্দিনং যে প্রকুর্মন্তি যাবদাহতনারকাঃ।। ১৬৮ ।। রুতে ত মদ্দিনে তত্র
সন্তানস্যাপি সংক্ষয়ঃ। সপ্তজন্মনি নশ্যন্তি ধর্মাণি চ ধনানি চ। ভবিষ্যো চ। অরুণোদয়কালে তা দশনী যদি দৃশ্যতে। ন তবৈকাদশীকার্য্যা ধর্মাকামার্থনাশিনী
।। ১৩৯।। কিঞ্চ। তরুণোদয়কালে তু দশনী যদি দৃশ্যতে। পাপমূলং তদা
জেয়মেকাদন্ত্যপ্রাসিনামিতি ।। ১৪০ ।। বিদ্ধোপবাসদোষ্য যে সামান্যাহি, খতাঃ
পুরা। জেয়াতেইত্রাপি বিদ্ধায়া লক্ষণস্যানুসারতঃ।। ১৪১ ।। এবং জেয়ানি বাক্যা-

রতাইতি তেষামের বিশেষণং। সদেতি চ কৃচিৎপাঠঃ।। ১৩৪।। প্রাতকৃষদি যাশ্চতদ্রোঘটিকা-স্তাঅকুণোদয়ঃ। গঙ্গান্তঃসদৃশঃ প্রমপাবনইত্যর্থঃ।। ১৩৫।। রাত্রিশেষে চন্তর্ঘটিকাব্যাপ্যা-রুণোদরইত্যত্র হেন্তমাহ ত্রিযামামিতি। নাড়ীনাং আদ্যন্তয়োশ্চক্তফীরং রাতেরাদৌ নাড়ীচন্তফীর-মন্তে চ নাড়ীচত্ত্বউরং ত্যজ্ব। এবমেক যামত্যাগেন ত্রিযামামাছ্যু নয়ঃ। যতঃ ভন্নাড়ীনামাদ্যস্ত-চন্তক্ষরক্ষ দিবসম্যাদ্যন্ত্রণংজ্ঞিতে তে প্রসিদ্ধে উভে সন্ধ্যে প্রান্তঃ॥ ১৩৬॥ কাচিৎ একা। যা পোষিতা তদ্যা:। ১৩৭।। দৃষ্ট্যা জ্ঞাত্মাপি চাৰ্ক্তবিধ্যক্ষ বেধাতিবেধাদিতেদেন প্ৰাগ্লিখিত-মেব। ১৩৮।। ১৩৯।। তদা একাদশুগুপবাসিনামুপবাসঃ পাপস্য মূলং জেয়মিজ্যর্গ:।। ১৪।।। সামান্যাৎ অরুণোদয়বেধাদিবিশেষরাহিত্যেন সামান্যতঃ পূর্ব্বং লিখিতাঃ। অরুণোদয়বিদ্ধোপ-বাংশহপি। কুতঃ। বিদ্ধায়া লক্ষণস্য পূর্বেলিখিতস্যান্ত্রণারাং। উদরাৎ প্রাক্ মুহূর্ভন্ধর্যাপিনী সতী সংপূর্ণা অন্যথা বিদ্ধেতি বিদ্ধালকণেইরুণোদরবেধনৈয়ব স্থানিদ্ধে।। ১৪১।। ইপ্রং স্বর্ধা বিদ্ধোপৰালোনিষিদ্ধঃ তত্ৰচ যত্ত্ৰসূষ্যশূঞ্জেণ। একাদশী ন লভ্যেত সকলা দ্বাদশী ভবেং। উপোষ্যা দশমী विका स्वियक्ति विविधा विका अविकासि विविधा विकासि विविधा । अविकासि विविधा विकासि विविधा विषय विविधा वि মুহুর্তৈঃ পঞ্ভিধিদ্ধা আইছেই কাদশী তিথিঃ। তদধ্বিদ্ধান্যন্তানি দিনাম্যুপবসেদ্ধঃ। क्षि छ। शारवार न लाखाउ दाननी कलशांशि हर। उनानी नममोविका उरशारेशकानेनी-তিথি রিতি। পাজে চ। বিদ্ধাপ্যেকাদশী গ্রাহ্যা পরতোদ্বাদশী নচেৎ। দ্বাদশ দ্বাদশী হস্কি ত্রয়ো-मनााञ्च পার ११। विकाপ্য विका विस्क्रया श्रत जावामनी न कि मिन्नाना नामि ह यानि बह-লানি বর্ত্তমে তেয়াং বিষয়ং ব্যবস্থাপ।লিখতি এবমিতি। লিখিতপ্রকারেণ। অটবক্ষবাঃ বৈষ্ণবে-क्ताः देनवरत्रोद्राममः कामिरनाशृङ्खाक विवयकारि । उत्तामिश विष्काशवास वस्तार्भाष्ट्य- নি বিদ্ধারতপরাণি ত। অবৈক্ষবাশ্রয়াণ্যেব শুক্রমায়া রুতানি বা 1158২।। ইত্র্ জ্লাক্টম্যাদিরতান্যপি ন বৈক্ষবৈঃ । বিদ্বেষ্ঠ্যসূকার্য্যাণি তাদ্গ্দোষ্গণা-শ্রয়াও 1158৩।।

অথার্দ্ধরাত্রবিদ্ধা সমাধানং । জর্দ্ধরাত্রাচ্চ পরতোবর্ত্তে দশমী যদি। তদাপ্যেকাদশীং বিদ্ধাৎ মন্যন্তে যক্ত কেচন। তথাচ কৌম্যে। আর্দ্ধরাত্রমতিক্রম্য দশনী যদি
দ্শাতে । তদা হ্যেকাদশীৎ তাক্ত্রা দ্বাদশীং সমুপোষয়েদিতি। অভিজ্ঞান্ত মন্যতে পক্ষবর্দ্ধন্যপাশ্রিতং । অভ ডেচ তথানাক্র মহতাৎ নৈর সম্মতং ।। ১৪৪॥ তথা
ব্রহ্মবৈর্ত্তে ব্যাসোক্তেল তত্ত্বৈ । জর্দ্ধরাত্রেহিপ কেযাঞ্চিদশম্যাবেধইষ্যতে ।
তর্কণোদয়বেলায়াং নারকাশোবিচারণে ।। ১৪৫॥ কপাল বেধইভ্যাত্রাচার্য্যা
হং হরিপ্রিয়াঃ। ন তন্মম মতৎ যন্ধাৎ ত্রিযামা রা ত্রিক্রচ্যতে ।। ১৪৬ ॥ পালে চ ।

ণাদপরিতোষেণ পক্ষান্তরং লিখতি শুক্রেতি॥ ১৪২ । প্রসঙ্গাইনফণব্রতেরু সর্বেদ্বপি সবেধ-দিনানীপ্রং পরিত্যাক্সানীত্য দিশন্ লিখতি ইপ্রঞ্জেতি। নৈবোপে!য্যং বৈক্তবৈস্তিত্ত্যাদি লিখিত-প্রকারেণ। আদিশব্দেন রামনব্মী স্থাংহচগুর্দ্ধণ্যাদি। তাদৃশাং নিজৈকাদশীব্রংভাক্তসদৃশানাং দোষাণাং গণস্যাপ্রয়াৎ॥ ১৪৬॥

এবমরুণোদয়বেধে পতি ন কেনাপ্যাপবাদঃ কার্যা ইতি নিশ্চিতং । ততাচ কেডি-দর্দ্ধরাত্রাৎ পরতঃ কেচিচাত্রারিংশংঘটিকাভাশ্চ পরতোপি দশম্যসূর্বের বেধ মিচ্ছন্তীতি তন্মতমুখাপ্য নিরাকারে।তি । অর্জরাত্রাচেতি ষড়ভিঃ । যন্মনান্তে তৎ পক্ষবর্জনী নাম মহাদাদশী তদ্বিয়কমভিজ্ঞা মন্যস্ত ইতি উপ্ত:রণাম্বয়ং । তৎ অর্দ্ধরাত্রাৎপরতো বেধবচনং বিষ্ণান্থ বা। অন্যৎ চত্ত্বারিংশৎঘটিকোপরি । বেধবিষয়কঞ্চ মহতাং শ্রীব্যাদাদীনাং নৈব সম্মতঃ ভবতি ॥১৪৪॥ অরুণোদয়বেলায়াস্ত বেধবিচারণোপরি অবকাশোপি নাস্তীতানেনারুণোদয়-বেধএব নিশ্চিতঃ নত্মর্দ্ধরাত্রোপরি বেধঃ স্থাপিতইতি কৈমুতিকন্যায়বিচারাদিতি দিক্। ম ১৪৫।। নম্বর্জারাত্রোপরিবেধোচি কপালবেধত্বেন প্রদিক্ষোবৈঞ্বানাং সম্মতঃ অতঃ সোপি বর্জ্জনীয় এব তত্রাহ কপালেতি। যং অর্দ্ধরাতাৎ প্রভোবেধং আচার্য্যাঃ কপালবেধইতি বদন্তি। হরিপ্রিয়াইতি হরিপ্রিরতয়া বেধশ্রবণমাত্রেণ দোষাশক্ষয়াত্র্নস্ত বিচারণেত্যর্থঃ। যদ্বা হরিপ্রিয়াইতি তত্রত্যানাং শৌনক:দীনাং স্বোধনং। তেন চাথিলবিচারনৈপুণাং সমর্থ-व्यक्ति । (यहेक्ति भार्क किनिष्टः । उक्र (य इतिश्रितः भारार्या (स्वर्धाः समह (वनवारिमा सम्बदः ন ভবতীত্যর্ধঃ। তত্র ছেপ্তর্যস্মাদিতি। এবং ত্রিযামার। রাত্রের্মধ্যে একাদশ্যঃ প্রবেশ এব নাস্তি। শতোদশমাএব সা রাত্রি:। অভস্তত্র যতোদশমাবেধ: সাং অতোঅরুণোদয়ে একাদশীসদ্ধান বেন তৎশৃন্তা প্রতিপাদনাৎ তবৈর দশম্যকুর্টো বেধঃ কণ্পতইতার্থঃ। অন্যথা অতিব্যান প্ত্যাৰ্দ্ধরাতাৎ পূর্বাং ততোপি পূর্বামত্যেবং রাত্রিপ্রধনভাগেপি নিয়মাভাবাৎ বেশঃ দ্যাৎ ততশ্চানবস্থাপ্রসঙ্গদোষ এবস্যাদিতি দিক্।। ১৪৬। নি নমু তর্হি অর্ধারাত্রমতিক্রমোত্যাদি কূর্ম-পুরাণবচনং অর্জনাত্রাৎ পরং যাম্যাৎ কলাকান্ঠাদিসংযুতা। মোহিনী সাধিকারাচ ব্রহ্মণা নির্মিতা পুরা। নিশীপাৎ পরভোষাম্যাৎ একাদশ্যামুপে। যিতা। স পতেমরকে ঘোরে যাবদাহৃতদং

অধ্যাত্তং স্পৃথি পৃথি পক্ষকৃদ্ধির্যনপ্রতঃ । কপালবেধনী সাচ শুদ্ধাং ভতামুপো- । যয়েৎ ।। ১৪৭ ।। অথবেধবিহীনাপি সংপূর্ণেকাদশী তিখিং। অগ্রভোকৃদ্ধিগানি-ত্বাৎ পরিত্যালৈয়ের বেফাবৈং ॥ ১৪৮ ॥

অথ শুদ্ধাবিশেষপরিত্যাগং। গারুড়ে। সম্পূর্ত্রাদশী যত্র প্রভাতে পুনরেব সা। বৈফ্রী চ ত্রয়োদশ্যাং ঘটিকৈকাপি দৃশ্যতে। গৃহকোপি পরাং কুর্যাৎ পূর্বাৎ নোপবসেন্তদা।। ১৪৯।। কিঞ্চা উন্মালনীভেদমাহ। জ্ঞীনারদং। সম্পূর্ত্বকাদশী যত্র প্রভাতে পুনরেব সা। অত্যোপোষ্যা দিতীয়া ত পুত্রপৌত্রবিবর্দ্ধনী। অত্যব পাল্মে। দ্বাদ্দামিশ্রিতা প্রাহ্যা সর্বত্রকাদশী তিথিং। দ্বাদশী চ ত্রয়ো-

প্রথমিত্যাদি স্মৃত্যথঁদারবচনং যৎ তৃদ্য কোবিষয়ঃ ওত্তাত্ অর্প্রাত্মিতি। যদাগ্রতঃ পক্ষর্দ্ধি-ভবতি তদা পূৰ্ব। দশমী চেদধ্বিরাত্রং স্পূদেৎ তদা সা কপালবেধনী নামৈকাদশী স্যাৎ তদাচ শুদ্ধাং ভক্তাং দ্বাদশীমেবোপবদেদিত্যর্থঃ । অতশ্চ পূর্টে ক্চত্বারিংশচ্চ ঘটিকা দৃশ্যতে যদি। তদা बालमूथी জেয়া বৰ্জিতা মৎপরায় নৈঃ। দ্বিচত্বারিংশং ঘটিকা দশনী দুশ্যতে বদি। মহাব্যালে-তি বিখ্যাতান কার্য্যা মুক্তিকাজিকভিঃ। ত্রিচত্বারিংশদ্ঘটিকা ভরা পাহ্যভিবীয়তে। পূর্ণা চত্ত-শ্সারিংশং কথিতা সা মহাত্রেত্যাদীনি । জীক্ষার্জুনসম্বাদে । দ্বিপঞ্চাশচ্চ ঘটিকা দশমী দৃশাতে যদি। ছায়াভিধাও সাজেয়া নন্দাযা বৃদ্ধিগামিনী। ত্রিপঞ্চাশদ্যদাপূর্ণা এন্তা দৈব ত গীরতে। চত্তঃপশ্চাশকোঞ্জেয়ে।প্যতিবেধস্ততোহধিকঃ। মণ্ডামেধঃ ষড়ধিকস্ত-থে জঃ পূর্বাহৃতিভিঃ। প্রলয়ঃ দপ্তপঞাশৎ মহান্প্রোক্তন্তভোহপরঃ। নবাধিকা নহা-দোরা সম্পূর্ণা ষ্টিরাক্ষসী। ছায়াদিনববধেষু যং কুর্যাৎ সমুপোষণং। মৃতে স নরকং যাতি যাব-দ, ভূতসংপ্লবং। ইত্যাদীনি চ বচনানি স্বতএব নিরস্তানি। অর্ধ্বরাত্রবেধপক্ষস্যাপি নিরসনাৎ বি-শেষতশ্চ প্রাচীনৈর্মহন্তিরভিজ্ঞৈরসংগৃহীতত্বাৎ তান্যমূলানোব জ্ঞেয়ানি ॥১৽৭॥ এবমনেকদেধি-হেন্তব্যাদ্বিদ্ধোপবাসঃ পরিত্যাজিতঃ। অধুনা কদাচিৎ শুদ্ধাপি পরিত্যাজ্যেতি লিখতি অথেতি। मनभीरवर्यन विश्वीना পরিত্যক্তা কুতঃ পূর্ণা সম্পূর্ণ অরুণোদয়াদেব প্রবৃত্তেতার্থঃ। সাপ্যেকা-मभी পরিত্যাক্সা। তত্র হেন্তঃ অত্রতই।ত কদাটিৎ একাদশ্যা দাদশীদিনে কদাচিৎ দাদশ্যাশ্চ অরোদশীদিনে কদাচিৎ পক্ষান্ততিথেক প্রতিপদ্দিনে বৃদ্ধিগামিরাং। বৃদ্ধিগানিত্বভাবেন চ ত্রোদশ্যাং সম্পূর্ণায়ামপি সভ্যাং তথা ছাদশ্যামপি সংপূর্ণায়াং সভ্যাং পক্ষান্তস্যাপি বৃদ্ধা-ভাবে চ সতি সম্পূর্ণায়ামেকাদশ্যামেবোপবাসঃ। ত্বাদশ্যাঞ্চ লেখালক্ষণহরিবাসরত্যাগেন পারণমিতি ব্যবস্থা। সা চৈকাদশী নোশ্মীলন্যাদিষু কাম্বপি ভবতীতি বিশেষতোনোল্লিখিতা। বৈষ্ট্ৰেরিত্যনেন কেচিদ্বৈঞ্বাশ্চ ন পরিত্যক্ষেয়ুরিত্যগ্রে ব্যবস্থায়াং শেখাং সম্পূর্ণাঅরুণোদয়মারভা পরদিনে স্র্যোদয়ং ধাবদ্যাপ্তেতার্থ: । পুনরপি তৎপরদিনে প্রভাতে সা একাদশী ভবতি বর্দ্ধতইত্যর্থ:। বৈফবী দ্বাদশী। গৃহস্থোপীত্যপি শব্দঃ। একাদশী প্রবৃদ্ধা চেচ্ছুক্লে ক্লে বিশেষতঃ । ভত্তোন্তরাং যাতঃ কুর্য্যাৎ পুরামুপবদেশ্ছীভ্যাদিবচনপ্রা-প্রোয়ভেরেব পরদিনোপবানোন গৃহত্বেদ্যতি পক্নিরাশর্জ: ॥ ১৪৯॥ এবং অয়োদশ্যার্ দাদশ্যনিদ্ধ সভি শুলৈকাদশীত্যাগোলিখিত:। প্রায়েমবৈক্ষবানামপি সক্ষত:। অধ্না वामगानिक रमञ्जि महावागारा क्या रेवस्थानाः मग्राटः स्वानिविद्यातः लिथि ছ্যুবৈক্তঃ সম্পূর্ণভ্যাদিভিঃ। প্রভাতে দাদশীদিনে দৈবৈকানশী পুনর্ভবতি বৃদ্ধগামিত্বাৎ। এবঞ্চ দ্বাদর্শাপরতোবর্দ্ধতাং নবেত্যপেকা নান্তি অতএবোক্তং স্থান্দাদৌ পরতোদ্বাদশী নচেদিত্যাদি। অত্র অস্মিন্ কালে দ্বিতীরের কাদশী উপোষ্যা সংপূর্ণপ্রথমদিনপরিত্যাগেন নিষ্ক্রণদিনমেব্যে পোষ্যমিত্যর্থঃ। এবঞ্চ সংপূর্বৈকাদশী যত্র প্রভাতে পুনরেব সা। তত্ত্বোপোষ্যা দ্বিতীয়া তু পরতো-बादभी यहीजादिवहरेनः। जरशादभाः चादभीमुखार्य मर्जाय मर्श्रूर्वकादभी श्रविज्ञाको अना-খা ত নেতি ব্যবস্থাপিতঃ পকোনিরস্তঃ। নসু একাদশী প্রবৃদ্ধাচেদিতি বচনামুসারেণ যতিপরো-রমিভি ব্যবস্থাপয়িতব্যং তত্রাহু পুত্রেতি। এবং পুত্রপৌত্রবির্দ্ধনীত্যনেন তথাগ্রেলেখ্যেন গৃহিভিঃ প্তৰন্তিশ্ভেত্যাদিন। চ একাদশী প্ৰবৃদ্ধাচেদিত্যাদিবচনপ্ৰাপ্তোগৃহিশং দ্বিভীইয়ক।দশুলিবাদ-নিষেধোপি পরিহাতইতি দিক্। ১৫০।। প্রাতন্ত্রয়োদশ্যাং দ্বাদশী ভবপ্ত বা মা ভবপ্ত। নিত্যমুপো-বণমিতি উক্তপ্রকারেণোক্তলক্ষণস্যোশীলনীব্রত্যা নিত্যত্তাদিত্যর্থঃ।। ১৫১ । এবং দ্বাদশীবৃদ্ধি-क्ष्यर्यात्रनरभक्त्रमा शुक्काल्यानः निथिया हेमानीः चामनीक्ष्रमरभटेकात उचीननीः निथन् शुकाः পরিত্যাগমের লিখতি সংপূর্ণেত্যাদি ফান্দাদিবচনৈঃ পরতন্ত্রয়োদশ্যাং ন বর্দ্ধতে ছাদশী। কল-বিশেষং দর্শয়তি একাদশীতি পঞ্জি:॥ ১৫২ ॥ এবং শুদ্ধাপরিত্যাগে উন্সীলনী মহাদ্বাশীবিষয়ং मर्भित्रवाधून। रक्षुली महाषामनीविषय़ः निथंि धकामनीि गर्किनकिः। पूर्व। यमा धकामनी ভবেদিতি প্রায়ন্তম্যাঃ সংপূর্ণতৈত্বনৈব ভাদশ্যাঅপি সংপূর্ণায়াঃ সত্যাবৃদ্ধিসম্ভবাৎ নত্তত ভাদ-भीविष्क्रियाज्ञात्वका वक्ष लार्रिकाम्भीमः पूर्व जात्वकाशः। यदा पूर्वि सङ्गताम् सार , अव्खादन

পূর্ণা পরতোদ্বাদশী হলা। তদাহে কোদশীং তাজ্বাদ্বাদশ্যাৎ সমুপোষয়ে হা। ১৫৩। কালিকাপুরাণে। একাদশা তু সম্পূর্ণা পরতোদ্বাদশা ভবেৎ। উপোদ্যাদ্বাদশা ভত্র তিথি বৃদ্ধিঃ প্রশাসতেনা ১৫৪।। ভবিষ্যে। উপোদ্যাদ্বাদশা শুদ্ধা দেশ শুদ্ধা পরবাদ বিদ্ধান্ত বিদ্ধান্ত বাদশ্যাং কাচ বিকলাপা বা। বিকলায়ান্ত দ্বাদশ্যাং পারণং যা করোতি হি। তামুপোষ্য মহাপাল ন গর্জ্বে বিশতে নরঃ। ভাগবভাদি ভব্রে চ। সংপূর্ণকাদশা ত্যাল্ক্যা পরতোদ্বাদশা হদি। উপোষ্যা দ্বাদশা শুদ্ধা দ্বাদশ্যামের পারণং। ন গর্জ্বে বিশতে লহুরিত্যাহ্ ভগবান্ হরিঃ।। ইতি বঞ্জুলী নাম বা প্রেলা নাম বা প্রেলা বিদ্ধান্ত বিশ্বে করাদশা দ্বাদশা চ রাত্রিশেষে করাদশা। ত্রিম্পূলা নাম বা প্রেলা ভিথিঃ প্রোক্তা সর্ব্বপাপহরা স্মৃত্য। উপবাসঃ রুভন্তসাং সদা পাত্রননাশনঃ। একাদশা দ্বাদশা চ রাত্রিশেষে ক্রেরাদশা। তিতি মিলা ভিথিঃ প্রোক্তা সর্ব্বপাপহরা স্মৃত্য। উপবাসঃ রুভন্তসাং সদা পাত্রননাশনঃ। একাদশা দ্বাদশা চ রাত্রিশেষ ক্রেরাদশা। হল ক্রিনা দ্বাদশা চ রাত্রিশেষ ক্রেরাদশা। ত্রিশাব্রাম্বাদশা হলিক। ত্রিশাব্রাদশা হলিশা ক্রিল। ত্রিলা হলিক। ত্রিশাব্রাদশা হলিক। ত্রিলা হলিক। হলিক। ত্রিলা হলিক। ত্রিলা হলিক। হলিক। ত্রিলা হলিক। ত্রিলা হলিক। ত্রিলা হলিক। ত্রিলা হলিক। ত্রিলা হলিক। ত্রিলা হ

শুদ্ধাপরিত্যাগোদর্শিত ইতি দিক্।। ১৫৩॥ - ভিথেব্ দ্বিঃ প্রশাসতে তত্র ব্রভাদিকং মহাফলমি-ভার্বঃ। বঞ্জুলীমাহাত্মাবিশেষশ্চাতো মুখ্যপ্রসঙ্গে লেখাঃ। অত্ত শুদ্ধা পরিভাগিপ্রকরণীশ্যব সুখ্যবাছ্মীলন্যাদিনিৰপণপ্ৰক্রণমধ্যেমীলনীত্যাদিৰপেৰ স্পট্তয়া মুখ্যত্বেন নলিখিভমিতি দিক্।। ১৫৪।। যচ্চোক্তং পূর্ণাপোকাদশী ত্যাজ্যা পরতোবর্দ্ধতে যদি। দ্বাদশ্যাং পারণালাভে পূর্বির পরিগৃহতে। ইত্যানন একাদশীবংদ্ধাদশীরূদ্ধো পূর্বৈকাদশীত্যাগ ইতি। অতএব স্কান্দে। শুদ্ধা यদ সমাহীনা সমা ক্ষীণাধিকোত্তরা। একাদশীমুপবদেরত শুদ্ধান্ত বৈষ্ণবীং। অশার্থঃ L শুদ্ধা একাদশী সমা হীনা ব৷ উত্তরা দ্বাদশী সমা হক্ষীণাধিকা বা তদা একাদশীমেবে পবস্থে নত্ত শুদ্ধাং বৈষ্ণবীং দাদশীমিতি । তৎ পরিহারার্থং ভবিষ্যপুরাণা দিবচনং লিখতি উপো-ব্যেতি।শুদ্ধেত্যনেন একাদশীসংযোগাভাষাদেকাদীর্দ্ধির্নাপেকিতা। অতএবোক্তং ত্রাক্ষে। এক-লিপ্ত্যা সমাযুক্তা যদি বৃদ্ধিপরা তিথিঃ অথবৈকাদশী নাস্তি দশম্যা বাথ সঙ্গতা। দাদশী ও কলা কাঠা বদি म্যাদপরেহনি। ছাদশ দ্বাদশীইন্তি পূর্বাশ্যাং পারণং ক্তমিতি। অন্যার্থঃ। তিথিবৃদ্ধি-পরত্বেন একাদশী পরদিনে একলিপ্ত্যা সমাযুক্তা কিঞ্জিন্মাত্রাপ্যস্তীত্যর্ধঃ অধবা নাস্তি ছাদশী চ কিঞ্জিলাতো ত্রোদশ্যামন্তি তদা শুদ্ধ দাদশ্যামেবোপবাস: নত্ত্বেদশ্যাং ৷ দশম্যা সক্ষতে-ভাত্র দৃষ্টান্তত্বেনোদাহ্নতং। একাদশীমুপোষ্য সম্পূর্ণদাদশ্যাঞ্চ তদা পারণং ক্বতংশং স্বাদশশ্বা-দশীপুণ্যং হন্তি ইতি। ন গর্ভে বিশতে নরইতি ন গর্ভে বিশতে জন্তুরিত্যাদিন। চ ৰঞ্জুল্যামাহাত্ম বিশেষউক্তঃ। নত্ত তত্ত্ৰ মুমুকোরেবাধিকারোদশিতিইতি। ভাসামউমহাত্বাদশীনাং শর্কেবামেৰ নিত্যত্বাদিতি দিক্। পূৰ্ণাপ্যেকাদশী ত্যাজ্যা ইত্যাদিবচনানাঞ বিষয়ব্যবস্থাগ্ৰে লেখ্যা ।। ১৫৫।। व्यथन। जिल्ल्य्नाहामणीः नियंति भकामणीन्त्रामिन। भारतिमागासन।। १६७॥ उत्र ह यहकः

मृत्छ। এकाम्भोकनागुङा दाम्भो नूभात् यहा। এकामभो उत्तारभाषा दिखीया त्माक्क कि विश्वा विष्या विषय काम के कला शाका काम में निक्ष विषय विषय मनी उपःकातन देवणवस् मिनजयः । नर्यभाभाष्यः था सः जमूरभाषां मिकि माकिः। भाष्म ह । द्वारमोन्द्रका यज ভবতে।काम्मोकला । प्रिकेटर्रेश या भूवता न দশব্যা কদাচনা ত্রিস্পৃত্রিশকাদশী যত্র তত্র সমিহিতোহরিঃ। পুণ্যং ক্রন্ত শতস্থাক্তং ক্রমেদশ্যাম্ভ পারণং । দ্বারকামাহাত্ম্যে। পুরাচৈকাদশা স্বন্ধা অন্তে চৈৰ ক্রমোন मनो। नः भृगी वामनो सर्वा जिल्लामा ना कति थिया। जिल्लामा वामनोः थाना কুরুতে পূর্ববাসর । তেনাতানস্ত কল্যাণং দঞ্চং পাপাগ্রিনা দৃঢ়ং। ইতি ত্রিস্পূশ। 11 >৫9 11 ব্ৰহ্মবৈৰতে । ৰ্যাসোক্তো। তিথিঃ সশল্যা পরিবর্জনীয়া ধর্মার্থকানৈস্ত ৰুধৈৰ্ম নুষ্ঠাং। বিহানশল্যাপি বিবৰ্জনীয়া যদ্যগ্ৰভোবৃদ্ধি নুগৈতি পক্ষং।, ১৫৮।। তন্যত । দর্শন্চপৌর্মাসী চ সংপূর্ণ বর্জতে যদি । দ্বিতীয়েইত্নি নৃপ্তশ্রষ্ঠ সা ভবেৎ পক্ষবর্জনী ।। ১৫৯।। এবং মহত্যোদাদশ্যক্ষতস্থাদ শ্ভাঃ ক্রনাৎ। উत्रोतनी वक्षुनी ह जिल्लामा शक्तवर्कनी ।। २७० ।। जाश्रताम ह हज्नुका छत्रानक व-যোগভঃ। জ্বর। চ বিজ্য়া চৈব জ্বন্তী পাপনাশিনী ।। ১৬১ ।। তত্র তত্র বিশে-ষশ্চ যোহনাঃ কৃষ্ণার্চনাদিকঃ। লেখাঃ সোগ্রে বিশেষেণ তত্ত্বা খ্যনিক-भरत ।। ७७२ ।।

অথ পূর্বোপবানাদিসমাধান । এবং দ্বাদশ্যব্র্থীচ পূর্বোপোষ্যেতি হন্ত্রচঃ। তথা ত্যাজ্যা ত্রিস্পূশা চ রুঞ্চপ্যেকাদশীতি যৎ। তথাচ ক্ষান্দে। পূর্ণা একাদশী ত্যাজ্যা বর্দ্ধতে দ্বিতয়ং যদি। দ্বাদশ্যাং পারণা লাভে পূর্বের পরিগৃহতে।

এবং শুদ্ধাত্যাপে । বৈক্ষবানাং ব্ৰতনিশ্চর্বচনানি সংগ্রাধুনা তছিরোধীন্যন্যান্যপি বচ-

একাদশী দ্বাদশী চ রাত্রিশেষে ত্রয়োদশী। উপবাসং ন কুর্বাত পুত্রপৌত্রসমন্বিত ইতি তৎ পরিহরতি। ত্রিস্পৃদেতি। কামী ধনপুত্রাদিকামযুক্তঃ। অকামোবৈষ্টবং তত্র হেন্তঃ বিষ্ণুতৎপরইতি। যদ্বা অকামশ্চ মুনুক্তঃ বিষ্ণুতৎপরশ্চ বৈষ্ণবং। এবং সর্কেষামের তত্রোপ-বাসোবিহিতঃ। এতদের ব্রক্ষহত্যাংব্যপোহতীত্যাদিনা সর্ব্যহুখনদায়নূলপাপনিরসনোজ্যা তথা তত্র ক্রন্তশন্তং পুণুমিত্যাদিনা সর্ব্যহুখমকলহেন্তপুণ্যাংৎপাদনোজ্যা চ প্রতিপাদিতমিতি দিক্।। ১৫৭ ।। পক্ষর্বনীং নিথতি তিথিরিতি দ্বাভ্যাং। পক্ষইতি পক্ষান্তোহমাবাস্যা পূর্ণিমা-বেত্যর্থং।। ১৫৮ ।। তদের স্পাট্রতি। সম্পূর্ণা সতী দ্বিতীয়েইছি প্রতিপদিনে যদি বর্দ্ধতে।। ১৫৯ ৷। এতে চ মহাদ্বাদশীতেদাইতি স্পাইত্রা নিথতি এবমিতি লিথিতশুক্রকাদশীত্যাগ্রেকারেণ।। ১৬০ ৷৷ নম্বর্তী মহাদ্বাদশাং প্রসিদ্ধাং তত্র লিথতি অপরাশ্চেতি। তা মহাদ্বাদশাঃ ।। তিও তা নম্বর্তী মহাদ্বাদশাঃ । বিশেষেণ অসাধারণত্রা। ভাসাং মুখ্যং নির্ব্বশিক্ত ত্রেতি। উন্মীলন্যাদৌ ক্রয়াদৌ চ ৷ বিশেষেণ অসাধারণত্রা। ভাসাং মুখ্যং নির্ব্বশিং অপ্রত্তালেখাং ত্রিন্ধন্। ১৬২ ৷৷

একাদশী দ্বাদশী চ রাজিশেযে ত্রেরাদশী। ত্রিস্পূশং তর্বারাজৎ নোপোরাং তব পুরাবিভিঃ ।। ১৬৩ ।। অতোবিদ্ধুর্যোত্তরে । একাদশী মদা বৃদ্ধা দ্বাদশী চ ক্ষয়ং গরা। করং তত্র বিধীয়তে । ক্ষাদে চ ৷ একাদশী কলা হত্র দ্বাদশী চ ক্ষয়ং গরা। তত্র নক্তং প্রকুরীত নোপরামং গৃহাপ্রমী । ।। ১৬৪ ।। ভবিযোত্তরে প্রকৃষ্ণ হৃতিরসম্বাদে । যথা শুক্লা তথা কুফা দ্বাদশী মে সদা প্রিয়া শুক্লা গৃহস্থৈং কর্ত্ব্যা ভোগসন্তানবর্দ্ধিনী । কিঞ্চা সংক্রান্ত্যাদ্যুগরানের পারেণা ন যুধিন্তির। একাদশ্যাঞ্চ ক্ষামাং জ্যেষ্ঠং পুত্রাবিনশ্যতি। কিঞ্চা শামনী বেধনামধ্যে যা কৃষ্ণকাদশী ভবেও। সৈবোপোর্যা গৃহস্থেন নান্যা কৃষ্ণা কদাচন। অতএব গোভিলঃ। একাদশ্যাংন ভুঞ্জীত পক্ষয়োক্রভ্যোরপি। বনস্থিতি প্রত্যাহর্ণ শুক্লামের সদা গৃহীতি।। ১৬৫।। এতৎ সর্বাং তথান্যান্ধ ব্রুন্থ বিশ্বন্তর, ন্।

ন,নি ব্যবস্থাপয়ন্ লিখতি এবমিভি। লিখিত বৈক্ষবত্রতনিশ্যুপ্রকারেণ। ছাদশ্যাহি যুক্ষী ত্রেনে। দশীদিনে বৃদ্ধাভাবে শতি পূৰ্ব্বা এক দশী এবোপোষ্টোতি যহচঃ। পূৰ্ণাপ্যেকাদশী ভাগজ্যেতা।দি-ব্চনং তথেতি সমুচ্চয়ে। ত্রিস্পৃথিকাদশ্ভাগ্জ্যভাগে একাদলী দাদশাহৈত্যাদিকং যদ্ভঃ। ख्या कृतेसकामभाषि ভाषकाङ। (र्थ ह यथा स्कृत ख्या कृत्यनामि यवः এভৎ नक्तः देवस्वदं उ রান্ অবৈঞ্বান্ গৃহস্থান্ প্রতি মন্তামিত্যভ্রল্লোলেনাল্লঃ। তত্ত্বচনমের লিখতি পূর্বেতা-দিনা সদা গৃংগীত্যন্তেন। ত্বিতীয়ং একাদশী দ্বাদশী চ । পাঠান্তরে পঢ়তঃ অন্ত্রে যদি বর্ত্বতে একা-দশ্যেব। দ্বাদশ্যাং পারণস্য ব্রত্তসমাগ্রিকালস্যালাভে চ সতি। অভাবেইভি কৃচিৎ পাঠঃ। এবঞ্চ ছাদশীবৃদ্ধিরপেকিটেতব। গ্রা এব একানশী প্রথমদিনং। পূর্ণেতি পাঠেপি স্এবার্থঃ। অভএ-বোক্তং ভৃগুণাপি। সম্পূর্টর্ণকাদশী বত্র প্রভাতে পুনরেব সা। তত্রোপোখ্যা দ্বিতীয়া ভ পরতো-ছাদশী यদীতি। এতাদৃশান্যন্যানি বচনানি সন্তি তানি চ বৈঞ্বানামহপাদেয়ত্বাৎ ন সংগৃহী-তানি। এবমগ্রেপি জ্ঞেয়ং। এবং দ্বাদশ্যর্জ্যে পূর্ব্বদিনোপবাসব নং লিখিতং অধুনা পুত্রা-থিনাং গৃহস্থানাং ত্ৰিস্পূশাম্পবাসৰচনং লিখতি একাদশীতি ॥ ১৬৩॥ স্থতার্থিনাং ত্রিস্পূ-শার্পবাসমেব তত্র নক্তবিধানতঃ সাধ্য়তি একাদশীতি দ্বাভ্যাং। নক্তং নক্তভোজনং তচ্চ কিঞিৎ ফলাদিনৈব। ব্ৰভদ্য নিত্যস্থাৎ । এতচাত্ৰে ব্যক্তং ভাবি॥১৬৪॥ অধুনা গৃহস্থানাং ক্ষৈকাদশীত্যাগবচনানি লিখন্তি যথেত্যাদিনা। শুদ্ধা গৃহস্থৈ: কর্ত্তব্যতি তথা ক্ষামাং জ্যেষ্ঠ-পুতোবিনশাতীত্যানা কামিন: পুত্ৰবভোগৃহস্থসা কুইফকাদশুস্পৰাশোনিষিদ্ধ:। তত্ৰ চান্তৰ্ম্য-माः कृरेककानभारस्थनात्रि कर्खनाः हेल्याह भाष्यनीति । भष्यनीत्वाधरनारतकानत्भार्मरधा। स्कृता-মেৰ সদা গৃহীত্যনেন চ নৈবোপবাসোনিবিদ্ধাতে ব্ৰত্যা নিত্যত্বাৎ কিন্তু তত্ৰ পূঞাদিনিয়ম-বিশেষএব নিষিদ্ধাতে। তচ এক্সফদেবাচার্য্যবোপদেবাচার্য্যাদিভিরেৰ প্রবিস্তরং ব্যাশ্ব্যাতমন্ত্রী-ত্যতন্তথাত্র বৈষ্ণবক্ষতালিখলেহনপেক্ষত্বাচ্চ কিন্তবিন্তারনেন।। ১৬৫॥ এতৎ লিখিতং সর্কং বচনং।তথেতি সমুচ্চয়ে। তাদৃশং বা অন্যেৎ মহাদাদশ্যক্তকং কাম্যমিত্যাদিপরঞ্ যদ্ধনং। পুত্র বৈক্তাদিতৎপরানিতাবৈক্ষবলক্ষণং। পূর্বাং শুক্রমায়াক্পিতত্বেন বিক্ষোপরাশব্চনানাং সমা- भृहश्चान् शूविखानि ख्रश्नान् थिछ मानाजाः ॥ ५७० ॥ ख्रह्मात् श्वाकाः भ्रानं श्वाकाः भ्रानं श्वाकाः भ्रानं श्वाकाः भ्रानं श्वाकाः श्वाका

थामः क्रुं ७१। हेमानीक्ष देवस्थवाटेवस्थवरक्षमवावस्था कमाविष्ठुकाजारतम প्रवित्वाभवामामिविरवाः ধবচনানাং ক্তমিত্তি বিশেষঃ তত্ত্ৰচ যদ্যপি বিদ্ধোপবাসত্যাগে বৈফবেন ন কর্ত্তব্যং ভদ্দিনৈ-কাদশীব্রতমিত্যাদাবিবাত্র পরদিনোপবাসাদিবচনেযু সর্বেষু বিশেষতে টেবফবশব্দোগ্যক্তো নাস্তি। তথাপি দ্বাদশ্যামাহাত্মা বিশেষাৎতথা উন্মালন্যাদিযু ফলবিশেষশ্রবণাৎতথা কৃচিচ্চ তত্র সন্মিহিতোহরিরিতি কুচিচ্চ বিষ্ণুতৎপরইত্যাদি শব্দর্ক্তে:। তথা শ্রীবিষ্ণুপ্রীণনত্বেন মহাদাদশ্য-ফকস্য বৈষ্ণবেষু নিত্যত্বাচ্চ বৈষ্ণবাবৈষ্ণব ভেদেনৈৰ ব্যৱস্থা দাধীয়দীতি মহতাংদশ্মতমিতি দিক্। অতএবাত্রে লেখ্যংবৈষ্ণবদক্ষতেতি।। ১৬৬।। পূর্ব্বোপবাদাদিকমবৈষ্ণবিষয়কং প্রদিনোপ-বাসঞ্চ বৈষ্ণববিষক্তি ব্যবস্থাপ্য লিখিতং তদেব শ্রীমার্কণ্ডেয়াছাব্যবস্থা সাধ্যতি সংপূর্ণেতি চন্ত্রভি:। কামী পুত্রাদিকামবান্। নিদ্ধামশব্দেন গৃহস্থোপি গ্রাহঃ। তস্যাপি নিদ্ধামত্যসন্তবাৎ। অতএব স্কান্দাদৌ নিষ্কামস্ত সদা গৃহীত্যাদি। অত্ৰ চ কামিত্বেনা বৈষ্ণবস্ত্বং নিষ্কামত্বেন চ বৈষ্ণ বস্ত্রং স্থাসিদ্ধমের ।।১৬৭।। যতিরিব যতিঃ নিক্ষামইতার্থঃ। গৃহী সকামইতার্থঃ লিখিতন্যায়াৎ তত্ত্র প্রায়োষতেরের নিষ্কামতয়া গৃহিশত সকামতয়া যতিগৃহিশকপ্রয়োগইতি দিক্।।১৬৮।। প্রাত-खारहामभी मितम द्वामभी खरेख वा न खरेख। उथा उद्धेतारमदेवकामभी विकारमान् इदः नमा কুর্য্যাৎ নপ্ত পূর্বে। মিত্যর্থঃ। ॥ ১৬৯॥ মোকঃ জন্মনরণাদ্ধি সংসারবন্ধতোমুক্তিঃ। যদা মোক-য়তীতি মোকঃ এবিষ্ণু:। যদা অকারপ্রশ্লেষেণ অমোকং ভগবৎপ্রেম তদাকাজকাবন্তিঃ জনা-ৰ্দ্দনং পূজ্য়িত্বেতি বৈষ্ণবভিষেত্বদশ্যাপভাবে তদ্যাং পারণে ক্লভাদ্য ভগবৎপূজাবিশেষদ্য ত্রমোদশ্যামপি বিধানাজ্ঞরা সন্দেহোনিরন্তঃ।। ১৭০।। নতু নত্তং তত্র বিধীয়তইত্যাদিনা পুত্র-ৰতঃ কামিনোগ্ৰন্থস্য মক্তং বিহিতং তস্যাপি কথং তৎ সঙ্গল্ভতাং ন ভোক্তব্যং ম ভোক্তব্য-মিজ্যাদিনাধিক।রনির্ণয়ে সর্বেষাধ্যের ভোজননিষেধাৎ। সভ্যং। তেন।পি কথঞ্চিদবশ্যং ব্রতং পরিপালদীরমেবেতি লিখতি। তাদৃশঃ অবৈশ্বেপি অতএব পরং কেবলং পুতাদিকামুকঃ। ত্রিস্পৃশাদিনে কিঞ্ছিৎ পয়োমূলংকলাদিকং বা জক্ষ্যং প্রকণপরেৎ আহারং কুর্য্যাৎ ভদ্প পূর্বাং বিথিতমেব।। ১৭১।। অতঃ কিঞ্চিৎ ভক্ষ্যপ্রকণানাদ্বেতোরুপবাদোন ছ্যাতি উপবাসকলং

मृत्र ज्राभवां प्राप्त देशवां मकल शिष्ट ।। २२ ।। है थर भाव विद्याद मिकी हातान मात्र । धकाम भी राव दिश्व कि का विकास मात्र ।। विकास मात्र ज्ञान मात्र ।। विकास मात्र । विकास मात्र ।
यहाः मृति ने क्रिक धनाम छः। यहः ममात्री निक्षिण भृष्य । छात्र विकास ।। २१८ ।।
छथा ह मार्क खार स्तुमू मून महात्म । चाम मानि ने विकास मृत्य क्रिक क्रा छ । यह मृत्य क्रिक धार । यह मृत्य क्रिक धार । यह भूषा मही भाव धार स्वा विकास भूषा ।। २१८ ।। यह धन स्व क्रिक । यह भूषा हमा क्रिक । यह भूषा हमार क्रिक । यह भूषा हमार क्रिक । यह स्व क्रिक । स्व विकास क्रिक । यह स्व क्रिक । विकास विकास

অথ তত্র বজ্জাৎ বিশুরহসের। কৌস্মে চ। যেযাং ন কারণং বেদা ন বিপ্রান জনাদ্দনিঃ। তত্তাণি ধর্মাশাস্ত্রাণি তেষাং বাক্যৎ বিবর্জ্জয়েও।। ১৮০।। বৈক্ষবতন্তে। যেযাং গুরৌন জপের বা বিক্ষোচ পরমাত্মনি। নান্তি ভক্তিঃ সদা তেয়াং বচনং পরিবজ্জয়েও।। ১৮১।। স্কান্দে। যেযাৎ বিশ্বেশ্বরে বিক্ষোশিবে

শভতে ইতি॥ ১৭২॥ এবং বৈষ্ণবাবৈষ্ণতেদেন ব্যবস্থাং লিখিত্বা নির্ণপ্রপ্রবন্মপুসংহরন্ লিখতি ইপ্নিতি। শান্তবিচারেশ যং শিন্তানামাচারস্তদমুদারেশ। যদান দেবলং শাস্ত্র-বিচারেশ। কিন্তু শিন্তাচারামুদারতক্ষ। বৈষ্ণবানাং সম্প্রেভানেন বৈষ্ণবেভরাশাং কামিনাং গৃহিশাং বিদ্ধায়াসপ্যপ্রবাসস্তথা একাদশীদ্বাদশ্যোত্র দ্বৈত্যব সংপ্রেণিকাদশীত্যাগঃ তথা ত্রিস্প্রশায়াং চান্তর্মাস্যবর্ত্তিবিক্তক্তকৈ কাদশ্যাঞ্চামুপ্রাসোব্যস্থাপিতঃ। তক্ষ সংক্ষেপেণাদৌ লিখিতমের বৈষ্ণবানামমুপাদেয়ত্বাক্ষাত্র বিস্তরেশ্নালেখীতি॥১৭৩॥ অত্র একাদশীব্যবস্থায়াং বিদ্ধাংশ শান্ত্রবিদোপি বিমূঢ়াঃ স্থাঃ শুক্রমায়াদিনা। তাচ ভাগবদমুগ্রহাভাবাদেবেতি লিখতি রিনেতি। অসৌ ব্যবস্থা একাদশী বা ॥১৭৪॥ পুরা প্রাচীনাঅপি নরাঃ কিমুভার্বাচীনাইভার্থঃ। নরা স্থাইতি পাঠে ইতি নর্বপা অস্থ্রাট্নত্যপ্রক্ষত্রোমামুশাইত্যর্থঃ॥ ১৭৫॥ দৈবজ্ঞসন্তর্মেগাক্ষাক্ষাইত্যর্থঃ॥ ১৭৫॥ দৈবজ্ঞসন্তর্মেগাক্ষাক্ষাইত্যর্থঃ॥ ১৭৫॥ দিবজ্ঞসন্তর্মেগাক্ষাক্ষাইত্যর্থঃ॥ ১৭৫॥

তত্রচ গণকানাং ব্যবস্থাপকানাঞ্চ শাস্ত্রবিদাং বহুনাং বিবাদেন সন্দেহে শতি এডগবভক্তিপরাণাং বচনেনৈব ব্যবহর্ত্তবাং নত্বনোষামিতি লিখতি অর্চয়ন্তীত্যাদিনা বাবৎসমাপ্তি।
আর্চয়ন্তি সেবন্তে । মনোবাক্কায়ানাং কর্মভিশ্চেটাভিঃ । স্মরণকীর্ত্তনপরিচর্য্যাদিভি
রিত্যর্থ:।। ১৭।। সংপ্চ্ছোতি বক্তব্যে সংপ্ট্রেত্যার্যং। চীর্ত্রতান্ সমাপিভস্বনিয়মান্।। ১৭৮।।
বৈদিকং বেদোক্তমিব।। ১৭৯।।

(बनानत्त्रा न कात्रपः श्रमापः। छक्षांति आत्रमभाखानि ॥ ১৮०॥ अत्राप्त मास्त्र ॥ ১৮১॥

#### প্রীপ্রিভকি বিলাম।।

ভক্তিনবিদ্তে নৈ তেষাং বচনং গ্রাহ্যং ধ্যানিণ রিকিছার ।। ১৮২।। বিশ্ব।
পঞ্চরাত্রপুরাণানি সেতিহাসানি মানবাং। যে বিনিন্দন্তি তেষাং বৈ বচনং পরিবজ্জনি রেং।।১৮৩।। অতএব যাজ্যবক্ত্যাং। পুরাণং পঞ্চরাত্রগু বেদাং পাশুপভাত্তথা। অতি-প্রাণান্যেলানি ন হরব্যানি হেতভিং ।। ১৮৪।। ইতিশ্রীগোপালভট্ট বিলিখিতে শ্রিভাবদ্য জিবিলাগৈ একাদশীনিন্ধোনামদ্বাদশোবিলাসং—

শিবে পরমমঙ্গল অবংশ। যদা শিবে চ শ্রীরুদ্রে ॥ ১৮২ ॥ ইতিহাস গৈ শভারতাদয়ন্তংসহিতানি ॥ ১৮৩॥ হেন্তভিঃ কুতর্কবিজ্ঞিতহেন্তবাদৈন হন্তব্যানি ন খণ্ডায়িতব্যানি ॥ ১৮৪॥ ইতিহাদশোবিলাসঃ



### ज्रशाम्भ विवानः १

ं बल्ल हेड्डन। एवर ७९ क्रमः निडानत्यं र नवः । यमा श्रमालं र निकासि कीनमालि मह्हारमवाः ॥ ১॥

অথোপৰাসপূর্বনিক্তাং। প্রাভঃসানাদিকং ক্রনা সুবেশাধীতবক্সকঃ ।
ত্রত সক্ষণেং কুরিতি বৈফবৈশ্চ মহোৎসবং।। সক্ষণেমন্তঃ। দশনীদিনমারভাঃ
করিষ্যেহং ব্রতং তব । ত্রিদিন্ং দেবদ্বৈশ নির্বিহং কুরু কেশবং।। তত্র চাম্পৃশঃ
স্পার্শিনি ন সানং। বিষুষ্তে । উৎসবে বাসুদেবসাঃ স্নায়াদেবাইশুচিশক্ষয়া।
তাদৃশং কশালং দৃট্যু সবাসা জলমাবিশেদিভি ।। ২ ।। ভ্রমাহথ বৃহুধা কৃষণ থোবয়েরিয়মান্থিতং। জীরুক্যাক্ষমতেভপটহোদ্যোবিতং বচঃ ।। তথাহি নারদীয়ে।

যস্য শক্তাংশলাভেন ব্রজাদেরপি শক্তয়ং। তাস্ত বিভান্তি তং বন্দে নর্বাশক্তিপ্রনং বিভূং।
এবমেকাদশীব্রভং নির্গার্না দশম্যাদিক্ত্যমহোৎসবপ্রকরণং লিখন্ ভল্লিখনাদিমহোৎসব
নিদ্ধবে ভগবস্তং প্রণমতি বন্দে ইতি। নিত্যং নবনবোৎসবোভক্তানাং যক্ষান্তং। যদ্ধা প্রতিক্ষণ
নৃত্নোৎসবন্ধাং। ১।।

প্রাত্ঃ সময়ে স্নানং। আদিশব্দেন সন্ধ্যোপাসনাদি নিত্যক্ত তাঞ্চ সর্বাং সম্পাদ্য। স্থবেশইতি বৈফবানাং দশম্যাং কৌবকর্মাদিবিধানাং। কৌবকর্মাবসবশ্চ রত্ত্বমালাযাং। ভুক্তাভ্যক্ত নিরাস্থান্দ সমব প্রামান্দ্রপ্রস্থিতেঃ স্নাইতর্মো নবমেই ইনাতি বিবুধাঃ ক্ষোবং হি কার্যাং জন্তঃ। দীক্ষা বন্ধাবিমাক্ত মৃত্যুসমন্বোদ্ধাহের ভূপাক্তরা বিপ্রাণামথিলের তের কথিতং ক্ষোবং শুভং স্থবিভিবিতি। যক্ত মৃত্যে। উক্টেশ্বক্ত তবাভাক্তং শ্বাপ্ত্রনমৈগুনং। বর্জানে মত্ত্রানি মত্ত্রন দশম্যাদিদিনত রইতি তক্তাবৈক্ষবিধ্যক্তি ক্ষেয়ং। তথা ধৌতং বত্রং যাস্থান্দ বেতি ত বন্ধাদিপ্রক্ষালনাং। বৈক্ষবিধ্যক্তি বা। মহোংস্বনির্বর্ত্তন প্রেলিথতেনাপ্রেলেখ্যেন স্বাং সদাচারেণাপি প্রসিদ্ধ এব। মহিশেষক্ত শীক্তর্গবৃদ্ধানিরং সংমার্জনাদিনা সংস্কৃত্য মুজপতাকাদিভিরলক্ত্য চ ভগবন্তং সিংহাসনোরমে স্থামুপবেশ্য মহাপুজাং বিশ্বমান্ত ভক্ত্যা বৈক্ষবানাহূয় সংমান্য স্ত্যুনীতাদিকং বিনিম্পাদ্যেদিতি।। ২।। অব মহোৎস্থান্দ স্তব্ধ বহুধান্দ বহুধান্দ শীক্তর্প্যান্দ স্থা শীক্ত বিনিম্পাদ্ধানিত। বিশ্বমান্ত শীক্ত বিশ্বমান্দ স্বাধানিত প্রস্থা বিভিন্ন স্থা শিক্তং শিক্তান্দ ক্র বিশ্বমান্দ স্বাদ্ধানিকং বিনিম্পাদ্ধান্দ স্থা উদ্ধান্দ শীক্তং শিক্তং

প্রাতর্জনিক লোকান্তিইপুর চৈকভোজনাং। অক্ষারলবলাঃ সর্পের হবিষ্টার বিষেষিক:। অবনীতপশারনাঃ প্রিয়াসঙ্গবিবজ্জিতাঃ। মারপুর দেবমাশান- পুরাণর পুরুবোজনর। সরুজ্জেনসংস্কৃতা ভাদশ্যাঞ্চ ভবিষ্টা । কিঞ্চ। বরং স্থাতি প্রনার বরং পোলাংসভক্ষণং। বরং হত্যা সুরাপানং নৈকাদশ্যান্ত ভোজনং।। ত।। অধা ক্ষারাঃ। ভিলমুক্ষাদূতে শ্সার শন্যং গোধুনকোক্রকঃ। চণকং দেবধান্যঞ্জ এম ক্ষারগণঃ ক্ষাতঃ।

আধা হবিষ্যাণি। হৈমন্তিকং সিতা ছিলং থানাং মুক্লাযবাতিলাং। কলায়ক জুনীবারা বান্তুকং হিলমোচিকা। যন্তিকা কালশাকক মূলকয়েমুকেতরং। কলং সৈল্পবদায়ুত্ত গবের চ দ্বিস্পিয়ী। প্রোহনুক্ষ্ত্রসারক্ষ প্নসায়ে হয়তকা। পিশাসী জীরককৈব নাগরক্ষ তিন্তিত্বী। কদলী লবনী থাত্রী কলান্যওড়মৈক্ষবং। অতলগকুৎ মুনয়েহবিয়াণি প্রচক্তে ।। ৪ ।। অথান্যেপি নিয়মাং জ্বান্দে। কাৎসং মারক্ষ ক্রেঞ্জান্তভাষণং। পুনর্ভোজনমারাসং দলমগ্রং পরিবর্জারেং। কৌদ্রেং। কাল্যং মারক্ষ ক্রেঞ্জান্তভাষণং। পুনর্ভোজনমারাসং দলমগ্রং পরিবর্জারেং। কৌদ্রেং। কাল্যং মারক্ষ মার্ল্যং মার্ল্যং মার্ল্যং মার্ল্যং বিভ্রথ ভাষণা। ব্যায়ামক্ষ প্রবান্ধ দিবাস্থাপক্ষ মার্ল্যং। শিলা পিউই মসূর্ক্র জাদশৈতানি সন্ত্রেক্ষান লোল প্রায়ামক্ষ প্রবানক্ষ দিবাস্থাপক্ষ মার্ল্যং। শিলা পিউই মসূর্ক্র জাদশৈতানি সন্ত্রেক্ষান লোল প্রায়ামক্ষ প্রবানক্ষ দিবাস্থাপক্ষ মার্ল্যং। শিলা পিউই মসূর্ক্র জাদশৈতানি সন্ত্রেক্ষান লোল ক্ষান্ত থাদয়েন্ত্রন্তর্বা। জ্লাহান্ত্রং ক্রেন্টিন নিয়ভেন্দ্রিয়া আচন্য দন্তকাতির বিভাং লেখ্যতে হদা। ছাব্দী নিয়মার্থায় নিরাশঃ স্যাদ্বম্বন্ধ্যাংদক্তকাতেন বিভাং লেখ্যতে হদা। ছাব্দী নিয়মার্থায় নিরাশঃ স্যাদ্বম্বন্ধ্যাণ্ড ক্রেক্ষাতেন বিভাং লেখ্যতে হদা। ছাব্দী নিয়ম্ব্রিয় নিরাশঃ

যম্বচঃ বাক্যং তৎ যোষয়েও। আবিয়েও। নিয়মৈর্দশন্যাদিক্তৈয়েকো লেথ্যৈরনিত্বিতি নিয়ন্যং ক্ষ যোষয়েদিভার্ধঃ॥ ৩॥ শন্যং শনীধান্যং। গোধূনাদিকং শন্যং॥

হৈমন্তিকং হেমন্তকালভবং ধান্যং কথন্ত বিজে তৎ অধিনঞ্চ। বিজিকা ধান্যবিশেষঃ শাক্ষ বিশেষোৱা। ঐকবং ইক্ষুবিকারঃ তচ্চ গুড়বর্জিতং। অতৈলপক্ষতি তচ্চ শাকাদিকং তৈ-লেন পকুং দদ্ধবিষ্যং ন ভবতীত্যর্থঃ॥ ৪॥ আয়াসমিতি। অত্ত অভ্যাসমিতি কৃচিং পাঠঃ সঞ্জ ইব। হুবাং মানে দশম্যামবশ্যং তৈলং প্রাক্তমিতিলিথিতং দশম্যাং তৈলমস্পৃষ্ট্য বং সায়াদিহিক্ষণইতি বচনাৎ তক্ষ দশমীনিয়মেষ্ বজামিতি ন বিরুদ্ধং সকামনিদ্ধামতয়া পরিছায়া-ছবাং । তত্বারি তস্য নশ্যন্তি আযুংপ্রজ্ঞা যশোবলমিতি ততৈবোক্তেঃ। এবমন্যত্তাপি বিরোধং পরিহরণীয়ঃ॥ ৫॥ নভুক্তং কর্ম যেন নরকছঃখাদ্যভোগাং। সোপি সম্যক্ যাতি। আদশীব্রতার্থোদ্যমমাত্রেণৈর স্বাহত্তক্ষক্ষাং। এবং দশম্যাং ভোজনানস্তরং কাঠেন দন্তধাবন বিধানাদেকাদশ্যাং পূর্ণাদিনা দন্তধাবনং নিরস্তং অন্যথা পূর্বাদনান্তে ভদ্ধাবন প্রয়ানাত্র



खना। निर्भाद्धति ७ ९ পाश्र शहेश्वर मीनमाननः । अञ्चलकर्मा ग्रशां । शांकी

অথৈক ভক্তলক্ষণং। দিনার্দ্ধসময়েছতীতে ভুজাতে নিয়মেন যথ। এক ছক্ত সিভি প্রোক্তং কর্ত্তবাং তথ প্রযন্ত্তি। ততোরাতিং নমেরাঞ্ ব্রহ্মচারী জিতে। দ্বিঃ। ভগবদং আরন্ ভক্তা ভ্রিশায়ী সুথংস্বপন্।। গুগ

অথোপবাদদিনক্ত্যৎ। প্রতিংশান্তার্ক্ষিত্বা চ ভগবন্তং যথাবিধি। তানুপারেৎ সমাদায় ব্রত্মক্ষণসাচরেৎ।৮। তথাচোক্তং দেবলেন। গৃহীল্পেড্র্যুরং পারেং বারিং পূর্ন্মুদ্ব্যুথঃ উপবাদন্ত গৃহ্লীয়ান্ত্রন্তা সংস্পায়েরুধঃ। তত্রসক্ষপমন্তঃ। একাদশ্যাৎ নিরাহারঃ স্থিল্লাহ্মপরেইইনি। ভোক্ষ্যান্ত্রি পুঞ্জীকাক্ষ শরণং মে ভবাচুতেতি। উল্ভার্য্রিয়াং মন্ত্রং প্রাক্ষ্যরণাজ্যোঃ। পুপাঞ্জলিং সমর্প্যাথ মন্ত্রপূত্ৎ জলৎ পিনেৎ।ভদুক্তং মার্ক থেয়েন। ত ফাক্ষরেণ মন্ত্রেণ ত্রিক্তপ্রেনাভিমন্তিতং।উপবাদক্ষণ প্রেপ্রং পিনেরের্য়েং সমাহিতঃ। দেবার্চনং ভতঃ কৃত্রা পুজাালি মথাপি বা। দহম্পেন্ত্রা দেবার্য বিনিবেদয়েৎ।।৯।। দশম্যাং চার্দ্ধরাত্রোপর্য্যনুবৃত্তী পুরংসরান্। একাদশ্যাক্ষতর্যানান্ হিল্বা সক্ষপনাচরেৎ।। তথাচোক্তং। দশম্যাঃ সক্ষদোষেণ অর্করাত্রাৎ পরেণ তু । বক্জিরিয়ন্তর্ত্রোযান্ত্রান্ সংক্পার্চরে হা। ২০।। নারদীয়ে চ। পূর্বারাঃ সক্ষদোষেটেকাদশ্যাং মানপূক্তনে। বর্জ্বন্তিনরাঃ পূর্বান্থানি নামাণ্যতিত্র। তির্বারাত্র বিধারতে। দিনকার্য মন্সেষ্প কর্ত্র্যৎ শর্ব্যীমুথেতি।

পাপত্তে। কেবনং দাদশগণ্ড বৈবেব মুখাশোধনং তল্যাং কাৰ্যামিতি চাদৌ লিখিতমেব। ৬॥ বেকচানীতি স্ত্ৰীসঞ্চাদি বৰ্জায়মিত্যৰ্থঃ। বদ্যপি নিয়মেম্ সৈগুনবৰ্জানং লিখিতমেব তথাপি খভাবতঃ স্ত্ৰীদৰ্শনাদিকপং ব্ৰহ্মচাৱিত্মমত আহাং। তচ্চাগ্ৰে ব্যক্তং ভাবি। অতএব জিতং বশী-ক্লতমিন্তিয়ং যেন তথাতৃতঃ শন্॥ ৭॥

যথাবিখীতি পূর্বলিখিতঃ স্নানার্চমাদি বিধিক্রেরঃ ॥৮॥ উত্যুব্রং ভামুময়ং পাত্রং। উপবাসং গৃছীয়াৎ সক্ষণেরেছ। যদা সক্ষণেরেদিতি উত্যুব্রপাত্রাদ্যভাবে সক্ষণেমাত্রমণি কুর্যাদিত্যর্থঃ। শরণং মে ভবাচ্যুতেভাক্র গতিভব ম্মাচ্যুতেভি দেলেল পঠিতং স্থিত্বেভাক্রচ ভূত্বেতি। বিজুলা চ স্থিত্বাহ্মপরেছ্রমিতি। ভোয়ং পিবেছ। অথবাদেহার্চনংকুত্বা তদনস্তরং দেবায় প্রজ্ঞাঞ্জলিং বিনিবেদয়েছ সমর্পয়েদিতি জলপানপুজ্ঞাঞ্জল্যপণয়োব্রিকপ্পউক্তঃ। কুর্যাদিতিপাঠেত দেবার্চনপুলাঞ্জল্যপণয়োব্রিকপ্পৌদিতি জলপানপুজ্ঞাঞ্জল্যপণয়োব্রিকপ্পউক্তঃ। কুর্যাদিতিপাঠেত দেবার্চনপুলাঞ্জল্যপণয়োব্রিকপ্পো জ্বেয়ঃ। ৯। অর্জরাত্রোপরি চ দশমাস্থলভাগ পত্তাং একাদশ্যাঃ পুরঃসরান্ আদ্যান্ চন্তরোধামান্ হিত্বা ত্রতসক্ষপং কুর্যাছ। ইশ্ব মিপি অর্জরাত্রবেধঃ পরিক্রভঃ। ১০। পুরবায়াঃ দশম্যাঃ ॥১১॥ নম্থ দিনকৃত্যং কর্থং রাত্রী কুর্ত্ব্যং তত্রাহ ন দিবেতি। দিনকার্যাং যদি দিরা দিনমধ্যে গুদ্ধিং নাথোতি। তচ্চ শর্বরীমুধ্ব

# निन्दिर विकास विमान ।



। ১২।। ততক্ত ভগৰত্বক্তা পরিচর্য্যাদিরশয়। দিনং রাত্রিঞ্চ গময়েদুপবাসপরো-বুধঃ। তদুক্তং স্কান্দে। সংপূজ্য দেবদেবেশং ভক্ত্যা পরময়া যুভঃ। তহোরাত্রং কিপেদ্যামানুপবাসকলাগুয়ে।। ১০।।

व्याश्वामनकः । वृक्षविभिष्ठकां जाग्रनम् विविष्धर्भा जन्नरे वर्षा नियु । देशा বৃত্তম্য পাপেভ্যে যন্ত বামো ওলৈঃ সহ। উপবাসঃ সবিজ্ঞেরঃ সরভোগবিবজ্ঞিতিঃ। ।। ১৪ ।। ভোগাশ্চোক্তাঃ শতাতপেন। গল্বালফারবাসাংগি বুজ্যাল্যানুলেপানং। উপবাসেন দুষ্যন্তি দ্ভধাবনমঞ্জনং ।। এবিগাসেন চ ৷ পুস্পালফারবস্তানি গন্ধপূপানুলেপনং। উপবাদে চ দুষ্যন্তি দন্তধাবনমঞ্জনং।। ১৫।। পাপনি চোক্তানি नुगञ्जना । विश्विमाननुष्ठानिमिन्द्रियानायनि छाङः । निविक्तरमवन शिल्पः वद्धनीयः প্রযন্তঃ। শাতাতপেনাপি। অসত্যভাষণং দুতেৎ দিবায়াপঞ্চ নৈপুনং। একা-দশ্যাৎন কুবীত উপবাসপরোনরঃ। কিঞা বিজ্পদ্মেশু। পাবভিভিরসংস্পর্শ-তশাৎ পাষ্ডিভিঃ পাপৈরালাপস্পর্শনে ত্যজেৎ। বিশেষতঃ ক্রিয়াকালে যজাদৌ চাপি দীক্ষিতঃ । তৎ প্রারশ্চিত্তং তবৈবোক্তং । তস্যাবলোকনাং সূর্য্যৎ পশ্যেত মতিমানর:। বিফুধ্মেচ। সংস্পর্শেচ বৃধঃ সাত্র। শুচর দিত্য-দর্শনাৎ। সম্ভাষ্য তান্ শুচিমদং চিত্রেদ্যুতিৎ বুধং।। ১৬।। গুণাস্চোভাঃ েভবিষ্যা ক্ষমা সভাং দ্রা মৌন্থ কৌচনিন্দ্রিনিগ্রহ ৮ দেবপূজাগ্রিবনং সন্তোষ্টাপবজ্জনিৎ । সর্ব্বতেখুরৎ হল । সামানে । দশবা হিতঃ ॥ ১৭ ॥ পালে চা শ্রীষমপূসুকেত সমাছে।। দশম্যাৎ সংঘমং করে। এতাতে নিয়তে নিয়ুষঃ।

প্রদেশবর্ত্তাশেষণ কর্ত্তবাং ।। সহ ।। পরিবর্ত্তা। দিরণায়তি ত্রভাদৌ প্রজাবিশেষপ্রাধান্যাং ।। সহ ।। পরিবর্ত্তা। দিরণায় দার্ভাবিশ্বন্তা উপার্ভাগ্র জনসা গুলাং দহ যোবাদা দার উপবাদোবিজ্যের । কিঞা । দর্ব্বভাবিশ্বন্তি করেতি গ্রেন । অঞ্জনং নর্তকাদি লোচনয়োঃ । উপবাদেন দহ হয় জি অভস্তত্র বজ্ঞাদিতি ভাবিঃ । যক্ত কাশীখণ্ডে উপবাদেপি নোছ্যোলজন্ত্বানন মঞ্জনমিতাদি ভক্ত প্রানোবেষঃ যোধিতানের নেত্রাঞ্জনাচারেণ ভংশাহ্চর্যাৎ ভ্রোজ দহুধাবনাদিস্বরং ভবিষরমের জ্রেমিতি পুর্ন্ধং লিখিওনেরান্তি ।। সহ ॥ পাপেভাঃ উপার্ভইভাক্তং ভানোর দর্শরতি বিহিত্সোতি চয়ভিঃ । নৈবেতি পাঠেপি কাকা কার্যা মেবেতার্থ এব অত্র দর্শনমিপে নকার্যামিতি জ্রেরং । জ্যে ভং প্রারশ্বিজ্যাক্তা । শুচিম্বু শুক্তব্রু বা নির্যাদিতি শুকিষং ভং ॥ সঙ ॥ গুলাং সহেত্যুক্তং ভানের স্বশ্বতি ক্ষেত্র ক্ষেত্র ক্রেনি ক্রিছার্না একাদশীব্রকে শুক্তিক্ষেণ্ড নির্গতি দশ্যামিতি গার্জব্রেন । যাল্যপ্রত্রেক্তং । নির্বিজ্যান্ত্রা ক্রিলানিকমিপি সামান্ত্রাক্তানি ভিন্নতি দশ্যামিতি গার্জব্রেন । যাল্যপ্রত্রেক্তং । নির্বিজ্যান্ত্রা ক্রিলা নিন্ন নাননান্ত্রিক্তান্ত্র নির্বাদিকমিপি সামান্ত্রিকানি ভিন্নতি ভ্রাক্তিয়া ক্রিজনেনিপি সামান্ত্রিকানি ভ্রাকি ভ্রাকি ভ্রাকি ক্রিলা নিনান নানেনিং নারেদিত্যার্যা

ज्याधि हिश्मि विशेष मह क्षकोर्छ। दिन १ न त्या १ । १ । विशू थ र्या छ द । ए ज्या १ । ज्या १ । ज्या १ । ए ज्या १ । ज

অথোপবাসদিনে হন্যেপি নিয়মাং। তত্র কাত্যায়নং। ব্রহ্মচর্য্য সমাযুক্ত উপ-বাসৎ চরেররঃ। দেবলন্চ। ব্রহ্মচর্য্য মহিংসা চ সত্যনামিববর্দ্ধনং। ব্রতেষ্কৃতি চিন্নারি চরিতব্যানি নিতাশং॥ ২১॥ কিঞ্চ। অসক্তর্জলপানাচ্চ সক্তং তামূল ভক্ষণাং। উপবাসং প্রদুষ্টেত দিবাস্থাপাচ্চ মৈথুনাং। কিঞ্চ। দন্তধাবনতাম্বল দিবাস্থাপাক্ষ সৈথুনাং। অসক্তর্জলপানাচ্চ নোপবাসদলং লভেং। ব্রহ্মচর্য্যবিঘাতানি তেনৈবোক্তানি সর্বদা।। ২২॥ স্ত্রীণান্ত প্রেক্ষণাং স্পান্তিভিং সংকথনাদিপ। বিপদাতে ব্রহ্মচর্য্যং ন দারেষুর্তুসক্রমাদিতি।। ২৩॥ ততোনিত্যার্জনং ক্র্যা হরিষ্যেগুংহসবার্থিকাং। ক্রম্ম সায়ং মহাপূজাং কুর্যাজ্জাগরেং নিশি।। ২৪॥

অথ তত্র পূজাদিকং। ব্রাক্ষে। দেবস্যোপরি কুর্বাত শ্রন্ধয়া সুসমাহিতঃ।
নানাপুল্পানু নিশ্রেষ্ঠ বিশিষ্টং পুজ্পনগুপং। কিঞ্চ তত্ত্বব। একাদশ্যামুভৌ পক্ষে
নিরাছারঃ সমাহিতঃ। মাজা সম্যাগ্রধানেন ধৌতবাসা জিতেন্দ্রিঃ। মংপূজ্য বিধি
বিষয়াং শ্রন্ধাতিসমাহিতঃ পুল্পোর্গ ক্রেথা পূপেদী পৈরেবিদ্যকৈঃ পরিঃ। উপ-

বিধেরের মুখ্যতেতি দিক্ ॥ ১৮ ॥ পুনরতান্ধবিশেষং লিখতি তজ্ঞপামিতি । তচ্ছদেন দক্ষত্র ভগবতঃ পরামর্যঃ। জপ্যং মন্ত্রঃ। জপোমন্ত্রশ্য নাম্মোবা ধ্যানঞ্চ ভগবতইতি বিবেচনীয়ং। কথায়াঃ শ্রবণং। আদিশন্দেন তস্যাঃ কথনাদি চ। নামঃ কীর্ত্তনং প্রবণঞ্চ। আদিশন্দেন বন্দনালয়োইত্যে ভক্তিপ্রকারাঃ॥ ১৯॥ নিশ্বামশেঙে। যদা সকামোপি নিড়ামঃ সন্নিত্যর্থঃ। দৈত্যঃ শ্রীপ্রহ্লাদঃ তদ্বং। ব্রহ্মময়ং পদং শ্রীবৈকুঠলোকং প্রাপ্রোতি॥ ২০॥

আমিষ: জ্ঞানপ্য সংযমদিনে পারণায়াঞ্চ জ্ঞেয়ং। যদা অটেউতানাত্রতম্পানীত্যাদিবচনেন উপ-বাসে ঔষধন্যাদোষাৎ প্রাপ্তমা ঔষধন্যপামিষ্যা বর্জ্জনং তত্ত্রিব ক্ষেম্য। তথাচোক্তং ব্যাদেন । বর্জ্জায়েৎপারণে মাংসং ত্রতাহেপ্যৌষধং সদেতি ঔষধন্যপমপ্যামিশমুপবাসদিনে হর্জ্জায়িদিত ত্র্যাহা। ২১॥ এবং গুণানের দর্শয়িত্বাবশ্যং পরিত্যাগায় দোষান্ লিখতি অসক্ষিতি। যদ্যপিদিরা স্থাপাদিরজ্জনং পূর্বাং লিখিতমের তথাপ্যবশ্যবর্জ্জাক্তেনার নিয়মেয় পুনর্লিখিতমিত্যাদোষা। ২২। দারেয় নিজভার্যায় চ প্রেক্ষণাদিনা ব্রেল্ফর্যাং ন বিপদ্যতে কিন্তু ঝগুসংগ্রাম ব্যবায়াদেবেত্যর্থঃ ॥ স্বদারেছিতি চ কৃচিৎপাঠঃ । ২৩॥ হরের্ঘস্যোদিনমেকারশী ত্রোৎসবহেত্তকাং অত্রব মহতীং পূকাং॥ ২৪॥

হারৈ বহু বিধৈ জ পাহো মপ্রদক্ষিণে । তেতি ক্রনি না বিধৈন্ত গণিত বা দৈ । করিব প্র প্রিনি নার নিঃ।

দেওবং প্রনিপাতি শ্চ জয়শকৈ স্তথো তি মাঃ। এবং সম্পূল্য বিধিব জাতে । কুর্য্যাৎ প্রজ্বা
গরং ।। ২৫ ।। কথাৎ বা গাতিকা স্বাপি কুর্য্যা দ্বিষ্ণু পরায়ণঃ। যাতি বিষ্ণোঃ পরং
স্থানং নরোনাস্তাক্র সংশয়ঃ। ভবিষ্যে চ। একা দশ্তা পরোধে ভুরাক্রৌ সংপূজ্যে দ্বিং। তাঞ্চরাক্রিং যথাশক্তি পুরাণ শ্রণাদিনা।। নায় দি তি শেষঃ।। ২৬ ।।

অথ জাগরণপ্রকরণ। বৈষ্ট্রান্ জাগরেছভার্চ্য ভার্থ। শংখাদকাল্তিও। ভেভ্যোদস্তা স্বয়ং প্রাশ্য বিদ্বান্ স্তোত্রাদিকং পঠেৎ।। ২৭।। পুরাণাদি ভতঃ শ্রেষা গীতনৃত্যাদিকৎ স্বয়ং। কুর্যাৎ পশোচ্চ পারক্যং বারয়েসহসেন্চ।। ২৮।।

অথ জাগরণে গীতাদিনিবারণাদিনিষেধঃ। পাছে। নিবারয়তি যোগীতং নৃত্যং জাগরণে হরেঃ। যফিং যুগনহসুগি পচ্যতে রৌরবাদিয়ু। নৃত্যমানস্য মন্ত্যস্য উপাহাসং করোতি যঃ। জাগরে যাতি নিরয়ং যাবদিন্দু, শ্চন্তর্দশা। ২৯।। তথ জাগরণদর্শনাবশ্যকতা স্কান্দে। যমেন সূচিতং তস্য নরকং যাতনাকুলং। মুখাং ন
তস্য দ্রুইবাং যেন দৃষ্টোন জাগরং।। ৩০।। কিঞ্চ । উক্তং নেত্রসুগ্রন্থ দন্ত্য ভ্রন্থ
হাদয়ে পদং। কৃতং যে নৈব পশান্তি প্রাণিনোহরিজাগরং। কিঞ্চ। যেষাং চক্ষুর্ভবং
তেজা প্রদেশং কলিবল্লিনা। ন তে পশান্তি কৃষ্ণয়্য জাগরং ন জনাদ্দিং। কিঞ্চ।
কলিকল্ময়জাতেন পরমেণাবৃতে প্রবং । চক্ষুষী পাপিনী নৃণাং যেন পশান্তি
জাগরং।। ৩১।।

শথ জাগরণবিধিঃ। ক্ষান্দে ব্রহ্মনারদসম্বাদে। শৃণু নারদ বক্ষ্যামি জাগরস্য তু লক্ষণং। যেন বিজ্ঞাতমাত্রেণ দুর্ল ভোন জনাদ্দিনঃ।। ৩২।। গাতং বাদ্যক্ষ নৃত্যক্ষ পুরাণপঠনস্তথা। ধূপং দীপক্ষ নৈবেদ্যং পুজাগন্ধানুলেপনং। ফলমর্ঘ্যক্ষ আদ্ধা চ দানমিন্দ্রির নিগ্রহঃ। সত্যাবিতং বিনিদ্রক্ষ মুদাযুক্তং ক্রিয়ান্বিতং। সাশ্চর্য,ক্ষৈব

পরৈরবৈন্যক্ষ বছবিধৈরুপহারেঃ ফল তামূলাদিভিঃ । ২৫।। প্রস্থাগরপ্রকারমেনাহ কথায়। ইতি। রাত্রিং নয়েদিতি শেষঃ।। ২৬।।

তীর্থং চরণোদকং॥২৭। পারক্যং পরেণ ক্রিয়মাণং। নচ হসেৎ উপহসেৎ।। ২৮।।
নিবারয়তীত্যাদি শ্লোকদ্বয়েন নিবারণোপহাসে দোষোদর্শিতঃ।২৯। অধুনা পশ্যেদিতি যদুক্তং
তরিতাত্বং তদকরণপ্রতাবায়দর্শনেন লিখতি যমেনেতি ত্রিভিঃ॥ স্টিতং পাপাতিশয়াদতিরুবা ভ্রুভঙ্গাদি সঙ্কেতেন প্রতিপাদিতং।৩০। উদ্ধৃতং উৎপাটিতং যাম্যোঃ। অতীতপ্রত্যয়েইতি নিশ্চয়াৎ।
যদ্বা নূনং কেনাপ্যদ্ধৃতমেব। তত্র হেওঃ। ক্রতমিতি। জাতং সমূহঃ। প্রমেণ উদ্রিক্তেন ॥ ৩১॥

বিজ্ঞাতমাত্রেণাপি।। ৩২ ।। শ্রন্ধা বিশ্বাসে। জক্তিরা। বিনিদ্রমিতি কদাচিদণি কিঞ্জিলিদ্রা বিরহিতমিতার্থ: যদা ঘুর্ণাবর্জিতং। ক্রিয়া পরিচর্যাদি ভদন্তিং। আশ্র্যাণি অভিনয়াদীনি তৎ সহিতং। উৎসাহোমানসোলাসতংসহিতং। আদিশন্দেন ঘৃতাদি গ্রাম্যবার্ত্তাদিবা। নীরাজ-নেন সমাযুক্তমিত্যুক্তং তত্রৈব বিশেষমাহ অনিবিন্নেন নির্বেদ্রহিতেন চেতসা। যামে যামে চন্তঃ

সোহশাহৎ পাপালস্যাদিবজ্জিতং। প্রদক্ষিণাতিঃ সংযুক্তং নমস্কার পুরঃসরং। নী-রাজনসমাসুক্তমনির্বিয়েন চেতস। যামে যামে মহাতাগ কুর্য্যাদারাতিকং হরেঃ। এতিও গৈং সমাযুক্তং কুর্য্যাজ্ঞাগরণং হরেঃ। এতা। কিঞা যএবং কুরুতে ভক্ত্যা বিভ্রুলাত্য বিভূজিতঃ। জাগরং বাসরে বিক্ষোলীরতে পরমান্থানি। ধনবান্ বিভ্রুলাত্যের যং করোতি প্রজাগরং। তেলাল্থা হারিতোন্নং কিতবেন দুরাল্থনা।। ১৪ ।। তত্রিব শ্রীমদুমামহেশ্বরসম্বাদে সশাস্ত্রং জাগরং যত নৃত্যগান্ধর্মসংযুক্তং । স্বাদ্যং তালসংযুক্তং সদীপা সাধুভিযুক্তং। উপচারেশ্চসংযুক্তং যথোক্তিভক্তিভাবিতঃ। মনস্বৃত্তিজননং সমুদ্ধ লোকরঞ্জনং । গুণ্ডাদিশভিযুক্তং জাগরং আধবপ্রিয়া। কর্ত্তরা ও প্রয়াল্থন কর্ত্তরা পক্ষয়োহ শুক্ত হা পর প্রাদ্দাধ্য প্রিয়া । কর্ত্তরা পর প্রাদ্দাদ্য ভিত্তিভিত্ত স্বাদ্য রাহিত্ত দাসাক্ষিত । শাস্ত্রভীনমগান্ধর্মা তথা দীপবিবিজ্ঞিত হে । শক্ত্যোপভাররিভিত্তমুদাসীনং সনিত্রকং। কলিযুক্তং বিশেষেণ জাগরং নবধাধ্যমা। ৩৫ ।।। কিঞা তব্রের। ভভাবে বাচকস্যাথ গীতং নৃত্যে কার্যেৎ। বাচকে সতি দেবেশি পুরাণং প্রথম পঠেই।। ৩৬।।

ভথ জাগরণনিত, জ্বং। ক্ষান্দে ব্রহ্মনারদস্যাদে। সংপ্রাপ্তে বাসার বিক্ষোর্যেন কুর্মন্তি জাগরং। অতীতানাগতান বাপি পাতয়িষ্যন্তি পূর্মজান্। অকুর্যাণাং
প্রপৎস্যান্তি পূত্রধর্মাবসুক্ষয়ং। ক্ষায়তে নরকে বাসঃ পিতৃভিঃ সহ কালশঃ ।। ৩৭।।
ন পুরক্ষরণাৎ পাপং ব্রতির্দানিঃ সমাধিভিঃ। বিলয়ং যাতি বিপ্রেন্দু রিনা দ্বাদশিভাগরং।। ৩৮।। ভব্রৈবোমামহেশ্বরসম্বাদে । সংপ্রাপ্তে বাসরে বিক্ষোর্যে ন
কুর্মন্তি জাগরং। ভ্রম্যতে সুক্ষতং তেষাং বৈক্ষ্যানাক্ষ নিক্ষয়া ।। ৩৯ ।।
মতির্ন জাইতে হসঃ দ্বাদশ্যাং জাগরং প্রতি । নহি তস্যাধিকারোন্তি পূজনে কেশবস্য হি ।। ৪০ ।। অতএবোক্তং ব্রহ্মণা । ভব্রেব। হৃদয়ে বর্ত্তে হস্য সদা হোগে-

প্রান্তরেষু হরেরারাত্রিকং নীরাজনং কুর্য্যাদিতি। বিজুংশগুণসংযুক্তমিতি পাঠে পাপেন বর্জিতং আলস্যাদিনা চ বর্জিতমিতি দ্বরং এবং যিজুশতিগুণাং ।। ৩৩ ।। তত্র চ বিজ্পঠারের কার্যামিতাতিপ্রায়েণ বিজ্ঞাশাঠ্য শাঠ্যাভ্যাং ক্রমেণ মহাফললাভার্থনাশনে দর্শরতি যএবমিতি দ্বাভ্যাং। লীয়তে নিত্যমত্যস্তসঙ্কমং লভতে। আত্মা এব হারিতো বঞ্চিতঃ ।। ৩৪ ।। জাগরং জাগরণং নিজারাহিতাং।। এতদেব পূর্বেং বিনিজ্মিত্যুক্তং। অতএবাথ্রে জাগরমিতি পুনঃপ্রয়োগঃ ।। অমৃ-মেকোগুণঃ। এবং দ্বাদশভির্গুকিং। তত্র গান্ধ্বংগীতং। সমুদং গোৎসাহং। লোকানাং রঞ্জনমন্ত্রাগবর্জনং।। ৩৫ ।। তবৈর কঞ্জিন্থিশেষমাহ অভাবে ইতি।। ৩৬ ।।

অকুর্বাণাজাগরণাকারকাঃ প্রপৎসান্তি। কালশঃ চিরকালমিতার্থঃ।। ৩৭।। দ্বাদশাং জাগরণং বিনা পুরশ্চরণাদিভিরপি পাপং ন ক্ষীয়তইতি পাপক্ষপণেপি জাগরণস্যাবশ্যাপেক্ষত্বা বিভাত্বমেব সিদ্ধং।। ৩৮।। বৈষ্ণবানাং নিন্দয়েতি দৃষ্টাস্তোভ্জয়ঃ।। ৩৯।। অন্ত ভাবজ্জাগরাভাবদোষঃ জাগরণচিকীর্যারাহিত্যেনাপি প্রমানর্থইত্যাহ্ মতির্নেতি।। ৪০।। অন্তোভগব-

শ্বে। হরিঃ। মতিরুৎ পদ্যতে তদ্য দ্বাদশীজাগরোপরীতি।। ৪১।। সামান্যেন পুরালিখি গীতবাদ্যাদিনিত্যতা। অধুনা লিখ্যতে সোয়ং জাগরে চ বিশেষতঃ।। ৪২।।

অথ জাগরে গীতা দিনিত ত্রুং। ক্কান্দে। উমাম হেশর সম্বাদে। মূকব তি ঠতে ঘাবৈ গানং পাঠঞ নাচরে । সপ্তক্ষমসু মূকত্বং জায়তে জাগরে হরে:। যোন নৃত্যতি মূঢ়াত্মা পুরতোজাগরে হরে:। পালু ত্বং জায়তে তস্য সপ্তজন্ম পার্কতি।। ৪৩ ।। পালে পক্ষবর্জনীব্রতপ্রসঙ্গে। স্তর্বান্ত ন প্রশংসন্তি যে জনা জাগরং হরে:। নেং মবোভবতে তেয়াং গৃহে জন্মানি সপ্তচ।। ৪৪ ।। স্তর্বন্তি যে প্রশংসন্তি জাগরং চক্রপাণিন:। নিত্যোৎসবোভবতে যোং জ্বানি দশ পঞ্চচ।। ৪৫ ।।

অথ জাগরণমাহাত্মাৎ। ক্ষান্দে প্রীব্রহ্মনারদসন্থাদে। প্রীপ্রপ্রদানসংহিতা রাঞ্চ। ন গ্রাপিওদানেন ন তীথৈর্বিভ্ছিম্পিং। পূর্বজামুক্তিমায়ান্তি বিনা ছাদ্শিজাগরং। সর্বাবস্থাপি যং কুর্য্যাভাদশ্যাৎ জাগরৎ হরেঃ। যামেনৈকেন ছহতে পাপং জনসহসূজং।। যং কুর্য্যাভাগদানন্ত রাত্রৌ জাগরণে হরেঃ। নিমেরে নিমেরে বিপ্রালভতে গোশতং ফলং।। ৪৬।। যং কুর্য্যাভ্রাগরে পূজাৎ ছাদশ্যাং কুসুমৈর্গরেঃ। পুলেপ পুল্পেংশ্রমেধস্য ফলমাপ্যোতি মানবং। যোদহেচ্যা-শুরুং বিক্ষোঃ পূজাং কৃত্বা তু জাগরে। নিমেরার্জেন লভতে তিলপাত্রশতৎ ফলং। নিমেরফ দহেদুপং সমৃত্য গুগারে বিষ্যোর্গরিষ্যান্ত্র সমুত্রৎ। নৈবেদ্যং লভতে পুণ্যং শালিশৈলসমুত্রবং। পক্রানি চ যোদদ্যাৎ ফলানি বিবিধানি চ। জাগরে পদ্মাভস্য লভতে গোযুতং ফলং। সকপূর্গ্ণ তামূলং যোদদাতি হি জাগরে। পদ্মনাভ-শুরাদেন খেতরীপে বর্সেজরং। জাগরে পদ্মনাভস্য হঃ কুর্যাৎ পুল্সমণ্ডবং। মুন্থ তামূলং যোদদাতি হি জাগরে। পদ্মনাভ-শুরাদেন খেতরীপে বর্সাভিরং। জাগরে পদ্মনাভস্য হঃ কুর্যাৎ পুল্সমণ্ডবং। মুন্থ তামূলং গ্রেদ্যাভস্য সকপূর্থ তথাগুরুৎ। মুন্থ দ্বাভিত কৃষ্ণস্য দ্বিজীর্ঘ্তাদিভিঃ। রাত্রৌ জাগরণে বিপ্র মুক্তিভাগী ভবেদ্ধি সংধাতি কৃষ্ণস্য দ্বিজীর্ঘ্তাদিভিঃ। রাত্রৌ জাগরণে বিপ্র মুক্তিভাগী ভবেদ্ধি সংধা ৪৮।। দিব্যাম্বর্যাণি যোদদ্যা-

দম্প্রেষ্টেণৰ জাগরণং সম্পদ্যতইত্যাহ ক্লায়ে ইতি ।। ৯১।। প্রসঙ্গাজ্ঞাগরণে গীতত্ত্যাদের রিপ নিত্যত্ত্বং লিখন্ পূর্বং নিত্যপূজায়াং তন্নিত্যত্ত্বিখনাদধুনা পুনর্লিখনাদিপি পৌনরুক্ত্যাদাব-মাশস্ক্য ত্রিরসনায় লিখতি সামান্যেনেতি এবং জাগরণে অবশ্যমেব গীতত্ত্যাদিকং কার্য্য-মিত্যজিপ্রেতং। আদিশব্দেন স্তত্যাদি ।। ৪২ ।।

গোশতমিতি গোশতপ্রদানকমিতার্থ: । এবমগ্রেপিজেয়ং ॥ ৪৬॥ সাসসমৃদ্ভবমিতি ।
অন্যত্ত সমৃত্বপুর্বিদাহতোমাসেনৈকেন যৎ পুণাং স্যাৎ তদেকস্মিয়েব জাগরে সকংক্লেনে তেন তবতীভার্থ:। মাছেতি পাঠে মাঘ সানাদিকং॥ ৪৭ । গোযুতং গ্রাযুতং ॥ ৪৮ ॥

জ্জাগরে সমুপন্থিতে । মন্বন্তরানি বসতে তন্তুসংখ্যাসমানি বৈ ।। ৪৯ ।। দদ্যাদাভরণ বিষ্ণোর্ভেমজং রতুসম্ভবং । সপ্তকম্পানি বসতে সোৎসঙ্গে মৎ श्रिरशोरि मः ॥ ७०॥ শ্রীচন্দনং সকপূরিং সাগুরুম্ব সকেশরৎ ৷ যুক্তৎ गृगमामनानि यण्डल इतिकागात । अरेककरे मूनिमामृ न अथायथा थिक । कनी । करलो जरका मत्मरहावामुरमवश्रमामञः। घृरञन मोशकः विरक्षार्भरवान ह विरम्भषः। জ্যলয়েজ্ঞাগরে রাত্রে নিমেষে গোইযুতং ফলং। ভাগরে বাসুদেবস্য কপ্রেণ চ দীপকং। যোজালয়তি কোটীনাং কপিলানাং লভেৎ ফলং । আরাত্রিকং ইরের্যস্ত সকপূরি হ জাগরে। কুরুতে মোক্ষমাপ্নোতি কুলাযুতসমন্বিতঃ। বিনাপি যোহি কপূ-রং কর্য্যাদারা ত্রিকং হরেঃ। 'নিঃস্বোপি জাগরে বিষ্ণোর্দাতা ভূরিফলং লভেৎ। বারিজং বারিণা পূর্ণ শিরসি সাপয়েদ্ধরিং। বিভর্তি শিরসা সোয়ং গঙ্গাসানকতং কলং। রুত্বা পূজাং হরের্যস্ত জাগরে পুরতঃ শুচিঃ। পঠেরামসহসূপ গীতানাম-বিমোক্ষণং। মাসল্যং সুপানং পুণ্যং স্তবরাজ্যনুষ্যরন্। বৈদিকানি চ জপানি ভক্তা রাত্রৌ মুহুমুহিং।। ৫১।। ভবেৎপ্রত্যক্ষরং পুণাং কপিলাগোশভোদ্ভবং।। জাগরে যজ্ঞরপসঃ পুরতঃ পঠনং হরেঃ। যঃ পুনঃ কুরুতে গীতৎ সন্তাৎ বাদ্য-সংযুত্ত । ন ত্ ক্রভশতেঃ পুণ্র ক্রতদানশতেরপি । যঃ পুনঃ কুরুতে গীতং বিলড্জোন্ত্যতে যদি। সভতে নিমিষার্দ্ধেন চত্তরাশ্রমজৎ ফলং ।। ৫২।। জাগরে পত্মনাভদ্য কুর্য্যাৎ পুস্তকবাচনৎ । শ্লোকসংখ্যাৎ বলেৎ স্বর্গে মুগানি হ্রিস্মিধৌ ।। ৫৩ ।। কুর্য্যাদ্দনমালাং যো রস্তান্তক্তিঃ সুশোভনৈঃ । চূত-বৃক্ষোদ্ধবিঃ পবৈজাগরে চক্রপানিনঃ। যুগানি পত্রসংখ্যানাং স্বর্গে ত্রেগাৎসবো ভবেৎ! পূहाতে বাসবাদ্যৈশ্চ क्रीएंट চাপুরোবৃতঃ।। নৃত্যমানস্য মর্ভাস্থ कि जित्र वर्ष । विमुक्ता धर्मा दाकिन मुक्ति याचि इतः शनः ॥ ५८॥ शोछ-ধুনিসুসন্তকৌ জাগরে ত রমাপতিঃ ! বাসবস্যাধিকৎ সৌখ্যং দদ্যানন্তরংশ-তং । নৃত্ত্যেন মর্ত্তের স্বাধ্যস্ত স্থারে নৃত্ত্যেন জাগরে। রসাতলে তথা সৌখ্যৎ মুক্তিন্ত্যাদবাপাতে ।। ৫৫।। প্রেক্ষণীয় প্রদানেন যৎ পুণ্যৎ কথিতং বুধৈঃ।

তম্ববাংশরাণাং তৎ সংখ্যাভিঃ সমানি মন্ত্ররাণি॥ ৪৯॥ রত্মশুবঞ্চ। যদা রত্মপ্রতিমিত্যর্থঃ। উৎসক্ষে ক্রোড়ে। বিফোর্মম বাসরে সতি। বিসর্গ লোপে সন্ধ্রিরার্যঃ। পাঠাস্তরেপি সঞ্করার্থঃ। ৫০॥ বারিজং শঙ্খং পূর্ণং ক্রেডি শেষঃ শিরসা বিভর্ত্তীতি কলস্য স্থৈয়মভিপ্রতং। মাঙ্গল্যেন স্বপয়তীতি তথা তৎ এতচ লিঙ্গব্যতায়াদিনা সর্বেষামেব বিশেষণং জ্বেয়ং তথা পুণ্যমিতি চ। জাগরইতার্দ্ধপদ্যমুক্তন্যায়েন ব্যাখ্যেরং ক্রচিচ ন তিঠেদেব ॥ ৫১॥ চন্ত্রনাশ্রমধর্মসম্পত্তের্জায়তে যথ কলং তদিতার্থঃ॥ ৫২॥ শ্লোক সংখ্যাংপ্রতি যানি যুগানি স্থানানী বারস্তঃ শ্লোকান্তাবিস্থি যুগানীতার্থঃ। এবমগ্রেপ্যহং॥ ৫৩॥ যেকেচিদ্বান্ধ্রবাদ্রঃ॥ ৫৪॥ জাগরে যন্ত্রং তেন। মর্ত্রো মন্ত্রালোকে পৃথিব্যামিত্যর্থঃ॥ ৫৫॥ প্রেক্ষণীয়মৈক্রজালিকং নর্ত্কাদি

म ७९ काणिमरियः भूगार यारिगः नाररेशा द्वानार ।। १७।। मीनमानार ছরেরথ্রে যঃ করোভি প্রজাগরে। বিমানকোটিসংযুক্তঃ কম্পান্তং বসতে দিবি। চরিতং রামচন্দুস্য যং শ্লোভি হরের্দিনে। রাত্রী বাল্যীকিনা প্রোক্তং তৎ সমো নহি বৈক্ষর:। যঃ পুনঃ পঠতে রাব্তী মহাভারতসম্ভবাং। কথাৎ জাগরণে বিক্ষোঃ কুলকোটিৎ নয়েজিবং। গুলানপাদেশ্চরিতং প্রবস্ত মহাত্মনঃ। রুফ্স্য বাল চরিতং জাগরে পঠতে হি যং। যুগকোটিসহসুস্য ক্ষয়ং পাপদ্য জায়তে। ভক্ষা-জ্জাগরণ কার্যাং পক্ষয়োঃ শুক্রক্ষয়োঃ।। ৫৭।। শ্রীমন্ত্রগরতৎ ভক্ত্যা পঠতে বিষ্ণু नशिषी। জাগরে তৎ পদং যাতি কুলবৃন্দসমন্তিঃ।। ৫৮।। অফীদশ পুরা-ণানি পুরাণপুরুষস্যচ। দয়িতানি সদ। বিফো বিশেষেণত জাগরে।যোগীতাং পঠতে द्वार्त्वो विस्कानीयगर्मुक्य। व्यत्माङ्गानाय भूतावानाय क्वागती भूवायाश्चाय । ७५। ধেনুদানম্ভ যঃ কুর্য্যাৎ জাগরে চক্রপাণিনঃ। লভতে নাত্র সন্দেহঃ সপ্তদ্বীপাবনী-ফলং। জাগরে পথনাভদ্য যঃ কুর্য্যাচ্ছুভমগুপং। মগুলে ধ্রুবলোকদ্য যাবভিষ্ঠিতি পদ্মভূং।। ৬-।। সর্কোষামেব পুণ্যানাৎ মহৎ পুণ্যং মহীতলে। দ্বাদশ্যাং জাগরে বিপ্র প্রসিদ্ধং ভূবনত্রয়ে। জাগরং যে চিকার্যন্তি কর্মণা মনসা গিরা । ন ভেষাৎ পুনরা-वृक्षिकियु लाका कथका । काशरत मृक्ष्यान छ मृथ्या रेव धानमी मिरन। तो छो মার্জরতে শৌরিঃ পাপং তস্যুগার্জিতং। প্রোৎসাহয়িত্বা লোকান্যঃ কুরুতে লাগরং নিশি। প্রাপ্নেতি চক্রবর্তিত্বং ভরতেন যথা পুরা ।। ৬১।। শ্বপচেন যথা विष्युः छोषशिषा व कार्गात । था था मूकिः भूता विश्व गांकार्वाः कात्रार क्षतः। রাজ্যং প্রাপ্তং দিলীপেন নর্ভনাদাদরে হরে:। নহুষেণ চ সংপ্রাপ্তমর্ঘ্যদীনেন জাগরে। ফলদানাৎ সঞ্জের প্রাপ্ত রাজ্যমকত কং। বঞুলীবাসরে রাত্রী কৃত্ব। জা-গরণং হরেঃ। বস্ত্রদানাদিনে বিফোর্নাভাগেন তু জাগরৈঃ। রাজ্যং প্রাপ্তং মুনিশ্রেষ্ঠ व्यमामामाध्यमः हि। रेमन्योनर्खनां र मिका विथे। छा सनका मिवि । जिल्ला मा का-গরে বিপ্র সভ্যাৎ তে কথিতিৎ ময়া।। ৬২।। তুলসীজাগরাৎ প্রাপ্তং জাগরে চক্র-পাণিনঃ। অলকেণ কিভাশত্বং হশঃ কীর্ত্তিসমন্তিতং। ষ্টিবর্ষসহসাণি ষ্টিবর্ষ-

मश्क्षमात्रविद्यावा जम् क्षमात्म । यारिगवधीरिकः । माररेथावाक्रकारिमः॥ १७ ॥ यूनदमाि महम्ताि यूनदमाि महरेम् (क्षितामा एक् काजमा वा भाभमा ॥ १९ ॥ कागर्व भोठि ॥ १५ ॥ भूदानामार मर्व्ववार भोजाम्बर भूगार जमाश्रू यानिज्ञर्थः ॥ १० ॥ वावर भव्यक् का जिलेज जावर क्षवताकमा मश्रुत्व जभवि जिलेजीजार्थः ॥ ७० ॥ त्यारमाहित्वा माहाक्राव्याविभागिता क्षव्यवि पेरमाहर क्षमित्रा विकारित व्यार्थः ॥ ७० ॥ तेमस्यी नर्छ-की विद्याजार्थः । विश्वजाव वार्षमित कृष्टि भारते क्षमभूदान क्षक्षाममरहित्वाक्षरद्वारेतकार क्षक्षाममरहिजातार क्षक्षामवाममश्वारमा रूम्मदक्षत्रः ॥ ७२ ॥ व्याप्तान्यक्षानमरहित्वाक्षरद्वारेतकार

শতানি চ। অলর্কোনাম রাজাসৌ বুজুজে মেদনীৎ পুরা।। ৬৩।। শান্তিলীমার্জ-मार्शिका अकाममाराष्ट्र मखनार । भूतरकावामूरम्यमा भक्तरप्राः खक्रक्षरप्राः ॥ ७८ ॥ উন্মালনীদিনে প্রাপ্তে পরদীপপ্রবোধনাৎ। ইন্দুদুরমেন সংপ্রাপ্তং রাজ্যৎ জাগরণং হরেঃ। ৩৫। দোলাদিনে চ সংপ্রাপ্তে বীণাবাদ্যাৎ পুরুরবাঃ। চক্রবর্ত্তিত্বমায়াতো দুষ্পাৃপং যঃ সুরৈরপি। সংমানিতাঃ ককুৎস্থেন রাত্রৌ জাগরকারিণঃ। স্বশক্ত্যা চৈৰ দানেন প্রাপ্তং রাজ্যং সুদুর্লভং। ১৬॥ স্বপাকী চ মৃগীনাম গানং কৃত্বা হরের্দিনে। शास्त्रविकाकनातीनाः कांचा बाब्बी श्रक्षांत्रां । तिनुवान्ताम्हीकञ्च विक्रयावानत्व নিশি। জাগরে পুরতোবিক্ষোঃ পুনারাজা ভবিষ্যতি। যে কেচিকাায়কা বিপ্র বাদকা নর্ভকানরাঃ। নর্ভকীসহিতা যান্তি কৃত্বা জাগরণং দিবং। বিযোনিমাগতৈঃ সবৈরিঃ ক্রতা জাগরণং হরেঃ। সংপ্রাপ্তৎ পৃথিবীশত্তং সকালৈমুনিসভম। নিফামে मू किता था वस निविध कागबार। विवका नासि वर्गा १ रदिकां गत काविनार।। न करनी भारतः अन्न म करनी कां द्वरीकनः। न करनी भारतः खभाः मुरेक्कर জাগরং হরেঃ।। আশ্রমে বর্তুমানানাৎ ন ফলং হি দ্বিজ্ঞানাৎ। সংঘটেইরপি ঘটেড্ডে विना घोष्मिकांगद्रार ।। ७१।। कक्कीः श्रद्वारमुथी তেষार वामवाष्ट्रा पिरवोकमः। भिज्यः कवावानामा मन्याः भनकाम्यः। এकाणि हि कूलारशमः किश्वारेज्व-ङ्खिः मूर्षः। हाम्मीकांगरां नर्साः छात्रशियां छ शूर्सकान् ॥ ७৮ ॥ विमनाः ৰাসরে বিষ্ণোর্যঃ করোভি সুঞাগরং। স বৈ ভাগবতোলোকে গীয়তে ক্রহ্ম বাদিভিঃ। যস্য প্রসন্নোভগবান্ শীলেনোৎপদ্যতে সুভঃ। একোপি ভারয়েৎ সর্কান্ नत्रकश्चान् शिष्ठामहान्। न সৌরো मह रेगर्या वा म जोरक्कारिनव माक्किकः। नहाना-দেবতাভক্তো ভবেদ্বাগবতোপমঃ।। ৬৯।। গৃহেপি বর্ততে যস্য নিত্যৎ যস্য

জলদীবনান্তিকে যোজাগরস্তমাৎ। পাঠান্তরং স্থগমং। যুবেতি পাঠে যুবৈব সন্।। ৬৩।।
মণ্ডলাৎ সর্বতোভদ্রাদিমগুলবিধানাৎ। মণ্ডপইতি পাঠে দেবালয়ে তত্রাপি বাস্থদেবদ্য
পুরতঃ।। ৬৪।। হরের্জাগরণে পরদীপদ্য প্রবোধনাৎ।। ৬৫।। স্থান্ত্যা দানেন দামানিতাঃ।
জাগাতঃ প্রাপ্তঃ। আয়াস্থে ইতি পাঠে দেহাস্কে চ দেবছুর্লভং পদং প্রাপ্তবানিতার্থঃ।। ৬৬।।
জাগরে বিকোঃ পুরতোবেণুবাদ্যাৎ। মঙ্কলাচরণাদিতি পাঠে জয়তি জননিবাসইত্যাদিপঠনাদিতার্থঃ বেণুবাদ্য স্বরপবিশেষণং বা৷ বিবক্ষানান্তীতি তেবাং সংখ্যাং বক্তুং ন শব্যত ইতার্থঃ বদ্বা
বিবক্ষা বিচারঃ। বিশেষইতি পাঠেইধিকার্যপেক্ষা নান্ত্রীত্যর্থঃ। নংযুকৈঃ দ্যাগিকৈঃ।। ৬৭।।
তেবাং জাগরণহানানাং একোপি কুলে উৎপন্নং দন্ সর্বাংস্তারয়িষ্যতি অতঃ কিং বছভিরিত্যস্বয়ঃ।। ৬৮।। ভারয়েৎ জাগরণতঃ। ভগবতঃ জাগরণাদিকর্ত্রা তৎসমঃ প্রকরণবলাদেবমঞে
বিজ্ঞেয়ং।৷ ৬৯।। ইদানীং জাগরণমাহাত্মাকলপাঠাদিকলমাহ গৃহেপীত্যাদিনা। চেতদি চ

চ চেতসি। দাদশীচরিতং পুণাং চত্তর্বর্গফলপ্রদং ॥ १०॥ উপৌষিতৈইরিদিনৈঃ সমুৎ সরশত । ক কলং নিত্যমাপে। তি পঠন্ জাগরণং হরে:। নাহাজ্যং यः পঠেড্কুলা ময়োক্তং জাগরোড্রবং। দ্বাদশাস্ভবং পুত্র কুলানা-মুদ্ধরেচ্ছতং ।। ৭১ ।। চরিতং বাললীলায়া মথুরায়াঞ্চ যঃ পঠেৎ। দ্বাদশ্যাৎ দেবকাসূনোরাত্রৌজাগরণে কলৌ ॥ १२ ॥ ত্যুতানাং বসেৎ কোটিং পিতৃতিঃ পরিবারিতঃ । বঞ্জুলীমন্তবৎ যোবৈ মাহাত্মাং জাগরে হরেঃ। কীর্তমিষ্টি নিত্যয়া তস্য পুণ্যং বদাম্যহং। দশভিকাসবৈকিফোর্দশভিগুণিতৈমুন। क्ररेडर्डरिंड यह शूना विदासारगां डिड क कन्। कन्नरकां पिः मरेथर्य से में मूकि-র্জায়তে নৃণাং। দ্বাদশী জাগরেণৈব মুক্তিং গচ্ছতি মানবঃ।। ৭৩।। সর্ব্বপাপবি-শুদ্ধাত্ম। লভতে বৈশ্বং পদং। সর্বে দুটাঃ সমাস্তদ্য সৌম্যান্তদ্য সদা গ্রহাঃ। যঃ পঠেজ্ঞাগরে বিফোর্মাহাত্মাং দাদশাষু চা। ৭৪।। তত্তিব ঞানদুমামহেশ্ব-मश्वादमः। मधीः कलिजूका इन स्वर्शित मधूरामितः। कुर्वाति काशतः रेनव मात्राशाना-বিমোহিতাঃ ৷৷ ৭৫ ৷৷ প্রাপ্তাপ্যেকাদশী রেষাৎ কলৌ জাগরণং বিনা। তে বিনষ্টা পুনাং কোটিগুনং গৌরি বিষ্ণোর্জাগরণে কতে । পিতৃপক্ষে মাতৃপঞ্চে ভার্যা পক্ষে চ ভামিনি। কুল মুদ্ধরতে চৈতৎ ক্তে জাগরণে হরেঃ। অবিদ্ধবাসরে বিক্ষো-র্যেকুর্বন্তি প্রজাগরং। তেষাৎ মধ্যে প্রকৃষ্টঃ সন্নৃত্যং প্রকুক্ত হরিঃ। যাবদ্দিনা-নি কুরুতে জাগরং কেশবাগ্রতঃ। যুগাযুতানি তাবন্তি বসতে বিষ্ণু বেশানি। যাবদি-নানি বসতে বিনা জাগরণং হরেঃ। নৃত্যস্তু।দ্তশস্ত্রাশ্চ তাল্ছে যমকিলরাঃ। জাগরে বাসুদেবসঃ পুরাণং পঠভীহ যঃ। প্রাগোত্যভিমতান্ কামান্ প্রেতল্প নৈব षायुट्य। यः পুনঃ কুরুতে গীতং নৃত্যৎ জাগরণে হরে। ত্রাহ্মৎ পদং সদীয়ঞ্ সত্যৎ বৈ তস্যবৈষ্ণব । যা প্রবোধয়তে লোকান্ বিষ্ণুজাগরণে ততঃ। বসে চিরেল্প বৈকুঠে পিতৃতিঃ সহ বৈষ্ণবঃ। মতিং প্রয়ন্ততে যসু ইরের্জাগরণং প্রতি। ষ্টিবর্ষসহসাুণি শ্বেত্বীপে বদেররঃ। যথ কিঞ্চিথ ক্রিয়তে পাগং কোটিজ্যানি মানবৈঃ। রুফ্স্য

র্কোধর্মার্থকানমোক্ষাঃ কলঞ্চ ভক্তিঃ।। ৭০।। জাগরণং জাগরণমাহাত্মাং ।। ৭১।। দৃতীন্তত্বেন প্রসঙ্গেন বা তত্রান্যপাঠন্যাপি কলমাহ চরিতমিতি। দেবকীস্থানার্যুরায়াং যা বালবল্লীলা তদ্যাঃ নম্বন্ধি চরিতং কলৌ দ্বাদশ্যাং রাত্রৌ জাগরণে যঃ পঠেং দঃ অযতানাং বর্ষাণাং কোটিং বদেটেং বৃদ্ধিলোকইতি শেষঃ ।। ৭২ ।। জন্মকোটিং ব্যাপ্য যথৈঃ ক্রতের্মধেঃ ।। ৭৩ ।। সমাঃ ছুইতাং বিহার মিত্রতাং যান্তীত্যর্থঃ । পাঠান্তরে শান্তা ভবন্তীত্যর্থঃ ।। ৭৪ ।। মধুহেত্যাকারান্তব্দর্যার ।। ৭৫ ।। জাগরণং বিনা গতেতি শেষঃ ।। ৭৬ ।। দৃহতি পার্ব্বতীতি পাঠেপি দৃহতে ব্যা

জাগরে সর্বাং রাত্রৌ দহ।তি পার্বাতি।। ৭৭।। শালগ্রামশিলাগ্রে তু যে কুর্বান্তি হি জাপরং। যামে যামে ফলং প্রোক্তংকোটি। ন্দবসমূদ্তবং।। १৮।। কামার্থ-সম্পদঃ পুত্রাঃ কীর্ত্তিলোকশ্চ শাশ্বতঃ। যজাযুতৈর্ন লভ্যেত দ্বাদশীজাগরং বিনা ; যাবৎপদানি কুরুতে কেশবায়তনং প্রতি। অশ্বমেধসমানি সুর্জাগরার্থ প্রগচ্ছতঃ। পাদয়োঃ পতিতং যাবদ্ধরণ্যাং পাংশু গচ্ছতঃ। তাবদ্ধ সহস্থাণি জাগরী বসতে দিবি। তথালাহাৎ প্রগতবাৎ জাগরে মাধবালয়ং। কলৌ মলবিনাশায় দ্বাদশীদাদ-भीयू চ। কিং ব্র তৈর্মন্থ ভিশ্চীর্ণ স্তীর্থ বাদেন তস্য কিং। দ্বাদশী বাসরে প্রাপ্তে ন কুর্ম্যাৎ জাগরং যদি। প্রবাসে ন ত্যজেদ্বস্তু পথি খিলোপি পার্ম্বতি। জাগরৎ বাসুদেবস্য সহি মেহতি প্রিয়োনর:। যা পুনঃ সুস্চিত্তোপি স্বস্থানে বসতেহপি मन्। न रु त क्षी गत १ क्यी १ एक को यी १ न स्म कृष्टि । मा छ छोन रु त क्यी । জ্জাগরং পাপমোহিতঃ। ব্যর্থ মংপূজনং ত্স্য মৎপূজ্ঞাং যোন পূজ্য়েৎ।। १৯।। সবাহ্যাভ্যন্তরং দেহৎ বেটিতং পাপকোটিভিঃ । মুচ্যতে বাসরে বিফোর্জাগরে নৃত্যতাং নিশি ৷৷ ৮০৷৷ প্রাপ্তে কলিযুগে ঘোরে নরান্তে ত্রিদলৈঃ সমাঃ ৷ বিশল্যে বাসরে বিফোর্যে কুর্বন্তি হি জাগরং। কুপ্রং যমদূতানাং দর্ভং তেন যমস্য চ। রুত্বা জাগরণং বিষ্ণোরবিদ্ধদাবিতং৷ দ্বাদশ্যাৎ জাগরে বিষ্ণো থৈঃ কৃতৎ পুষ্পমগুপং৷ প্রতিপু স্পফলং তেষাং বাজিমেধসমং প্রিয়ে। দ্বাদশ্যাৎ ক্লফভবনং কদলীস্তয়শো-ভিতং। যে কুর্ব্বতি হরিষ্টেদাৎ স্বকীয়ৎ হচ্ছতে পদং। দীপদানং একুর্ব্বতি জা-গরে কেশবস্য হি। তে পুস্ততিমিরা গৌরি যাতি বিষ্ণোঃ পরং পদং ॥ ৮১॥ ব্রাক্ষণাঃ ক্ষব্রিয়া বৈশ্যাঃ ব্রিয়ঃ শূদ্রাশ্চ জাগরে৷ হীনবর্ণা অন্তঃজাশ্চ রাক্ষ্যা দৈত্য-দানবাঃ। প্রাপ্তাত্তে পরমৎ স্থানং শ্রীবিফোর্জাগরে ক্তে। ৮২। অপ্রেরিতঃ স্বয়ং ভক্ত্যাগীতনৃত্যং করোতি যা। জাগরে পদ্মনাভস্য স কিং নাক্ত মানবং ।। ৮৩ ।। যোন্ত্যতি প্রহাতী আ কলা বৈ করতাড়নং। গীতং কুর্মন্ মুখেনাপি দশ্যন্ কৌ ভকান্ বহুন্। পুরতোবা পুদেব সারাত্রো জাগরণে স্থিতঃ। পঠন্ রুক্চরিত্রাণি রঞ্য়ন্ দেবি বৈষ্ণবান্ ৷ মুশেন কুরুতে বাদ্যুৎ সংগ্রহুষ্টভনূরুহুঃ ৷ দুশ্য়ন্ বিবিধান ন্ত্যান্ স্বেচ্ছালাপাং শচ কু পাতি। ভাবৈরে তৈন রোহস্ত কুরুতে জাগরৎ হরে। নিমেষে নিমেষে পুণাং ভীর্থকোটিসমৎ স্তং। ভবির্মনসা হস্ত ঘূপং নীরাজনৎ হরে:। কুরুতে জাগরে রাত্রো সপ্তদ্বীপাধিপোভবেৎ।।৮৪।। কিঞ্চা অভাবে

মেব নশ্যতীতার্থ: ॥ ৭৭ ॥ ঐন্দবং চান্দ্রায়নং॥ ৭৮ ॥ সন্নপি সাধুরপি ॥ ৭৯ ॥ বাহানি অঙ্গানি আভাবিরানি ইন্দ্রিনি তৈঃ সহিতং। মুচ্যতে পাপকোটিভান্তাভাঃ ॥ ৮০ ॥ কুর্পরং দন্তং কুর্পরেণ প্রস্থৃতা বিষ্ণুলোকং প্রযাতীতার্থঃ । গ্বন্থং নন্তং তিমিরমজ্ঞানং যেষাং তে ॥ ৮১ ॥ জাগরে ভবন্তি জাগরং কুর্বস্তীতার্থঃ। হীনবর্ণাঃ সন্ধরজাতয়ঃ ॥ ৮২ ॥ স বিং নাক্ত অপিত্ত সর্বমেব কৃত্যসকরোদিতার্থঃ ॥ ৮৩ ॥ কুর্বন্তি করোতি। অধিগেন অনুস্থিমেন মনসা ॥ ৮৪॥

কুঞ্ধিফ্যস্যগত্বা মহান্দির । কাব্যং জাগরণৎ রাত্রো বিদ্ধি মাং মাধকপ্রিয়ং। অভাবে সম ধিক্যাস্য গড়া ভ রবিমন্দিরং। কার্যাৎ জাগরণং রাত্রৌ যথাবিকুতথা-রবিঃ। তদভাবে বিনা প্রামমর গৈ,কাদশী যদি। তদাকাশে সুরেশানি বিফোস্ত্রীনি পদানি বৈ। দৃষ্ট্য দেবি প্রকর্তব্যৎ জাগরৎ চক্রপাণিনঃ ।। ৮৫ ।। অথবা প্রতিমা বিষ্ণোঃ শালগ্রামশিলাইথবা। তিষ্ঠতে যদি দেবেশি কার্যায়ত্র প্রজাগরঃ ।। ৮৬।। মেঘসংছাদিতে ব্যোমি বিষেণস্ত্রীণি পদানি চ। অদৃনী বোধিমূলে ও কার্য্যং জাগরণং হরেঃ। ধাত্রিমূলে২থবা গৌরি তলসীবনসমীপতঃ। যত্র বা তত্র বা কার্য্যং তीर्थि वा निमूनांकरन । नर्कांचारव महारावि विक्यनमा ह मिल्ली। कर्खवार कांगतर বিকোমনিসীৎ ভক্তিমাস্থিতৈঃ। বিনা জাগরণং গৌরি বিক্ষোর্দিনফলং নহি। নান্মাকং ভবতি প্রতির্ক্তুক্ষাদীনাং দিবৌকসাং । যজ্ঞানামপি সর্বেষাৎ মহাযজ্ঞ স কথ্যতে। বাসরে বাসুদেবস্য হতোজাগরসংজকঃ। তম্মাজ্জাগরণং কার্য্যং ত্যজ্বা কার্যান্তরাণ্পি।। ৮१।। পাছে দেবদূত্বিকুগুলসম্বাদে । রাত্রৌ জাগরণং কৃত্বা সমুপাস্য জনার্দ্নং। দশ বৈ পৈতৃকে পক্ষে মাতৃকে দশ পূর্বজাঃ। প্রিয়ায়া দশ যে বৈশ্য তানুদ্ধরতি নিশ্চিত। জীমার্কণ্ডেয়পুরাণে। ধ্যানধ্যেয়বিহীনস্য সংজ্ঞাতী-তস্য ভূপতে। ক্ম ভিষ্টস্য ক্থিতোমোক্সত্ত হরিজাগরে ।। প্রহলাদসংহিতায়াৎ প্রজ্ঞাদোক্তো। যানি কানি চ পাপানি ব্রহ্মহত্যাদিকানি চ। রুঞ্জাগরণে তানি বিলয়ং যান্তি খণ্ডশঃ। একতঃ ক্রতবঃ সর্বে সমাপ্তবরদক্ষিণাঃ। একভোদেবদেবস্য জাগরঃ ক্ষবল্লভঃ। ন সমৎ ক্বয়ঃ প্রাত্রধিকঃ কৃষ্ণজাগরঃ । তত্র ক্রহ্মাচ রুদ্রস্চ শক্র'দ্যা দেবতাগণাঃ ৷ নিত্যমেব সমায়ান্তি জাগরে কৃষ্ণবলভে ৷ ঋষয়োনারদা-দ্যাস্ত্র ব্যাসাদ্যামুনয়তথা। অহঞ্চতত গচ্ছামি রুঞ্পূজারতঃ সদা। তত্র কাশী পুদ্ধরঞ্চ প্রয়াগোনৈমিষং গয়া। শালগ্রামমহাক্ষেত্রমর্ক্ষুদারণ্যমেব চ।
সুপুণ্যা মথুরা ভত্ত সর্বভীর্থানি চৈবহি। যজা বেদাশ্চ চত্বারোব্রজন্তি হরিজাগরং! গঙ্গা সরস্থতী রেবা যমুনা বৈ শতক্রকা। চন্দুভাগা বিভন্তা চ নদ্যঃ সর্বাস্ত তত্র বৈ। সরাৎসি চ হুদাং সর্বে সমুদ্রাঃ সর্বা এবহি। একাদশ্যাং দিজ্বেষ্ঠ গচ্ছত্তে কৃষ্ণজাগর্থ। স্পৃহনীয়া হি দেবানাথ যে নরাঃ কৃষ্ণজাগরে। নৃত্যন্তি গীত কুৰ্মন্তি বীণাবাদ্যপ্ৰহ্ষিতাইতি ॥ ৮৮॥ জনাইমীপ্ৰবোধন্যাদি-কেইন্টে মহোৎস্বে ৷ মাহাত্ম্য জাগ্রস্যাগ্রে লেখ্যং ভত্তৎপ্রসঙ্গতঃ ৷৷ ৮৯ ৷৷

অধুনা বর্মাদৌ মুখ্যাভাবে জাগরণস্থানমাহ অভাবইতি সপ্তভি:। অরণ্যে যদি একাদশী স্যাৎ সন্ধিরার্ষ:।। ৮৫।। প্রতিমাচলা ।। ৮৬।। বোধিরশ্বপর্কঃ। ৮৭।। অহং প্রহ্লাদঃ।। ৮৮॥ এবমেকাদশীজাগরণমাহান্তাং লিখিতং ভর্হি কিং জন্মাইচ্যাদিজাগরণ মহিমা নাস্তি তত্র লিখতি জন্মেতি। আদিশকেন রামনবম্যাদি।। ৮৯॥ কৌশিকী শৃঙ্গাররসপ্রধানগীতর্ত্তিবিশেষস্তাং

ততঃ প্রভাতে ভগবজাত্রিক্রীড়ারসাত্মকাৎ । কৌশিকীৎ প্রমুদা গায়েচ্ছীকৃষ্পরি-তোষণীং। তথাচ ফ্রান্দে। প্রভাতে কৌশিকীং যন্ত প্রগায়েজ্রাগরে হরেঃ। স সমুদ্ধ-রতে সর্বান্ধ্রপচান্ ব্রাক্ষণোযথেতি।। ১০।।

অথ পারণদিনক্ত্যং। মঙ্গলারাত্রিকং ক্ত্বাভ্যন্ত প্রস্থাপ্য বৈক্ষবান্। প্রাতঃ
পূজাঞ্চ নিজাদ্য কৃষ্ণে তৎ সর্ব্যাপরেছে।। ৯১।। তদুক্তং কাত্যায়নেন। প্রাতঃ
আত্রা হরিং পূজ্য উপবাসৎ সমপ্রেছে। পারণন্ত ততঃ কুর্য্যাৎ ব্রভদিদ্ধৌ হরিং
আরন্।। তত্র সমপ্নমন্ত্রঃ।। অজ্ঞানভিমিরাক্ষস্য ব্রভেনানেন কেশব। প্রসাদ সুমুখো
নাথ জ্ঞানদৃষ্টিপ্রদোভবেতি।। তত্র স্নানোপচারন্ত প্রাতনৈর সমাচরেছ। প্রামাণি-কানাং কেষাঞ্চিত্রিক্ষবানামিদৎ মতং।। ৯২।।

অথ তত্র জীভগবতঃ প্রাতর সুপনং। পালে ব্রতথণ্ডে। জনপ্রভৃতি য়ৎ কিঞ্ছিৎ
সুক্তং সনুপান্তিতি । নশাতি দ্বাদশিদিনে হরেনির্মাল্যলন্ধনাৎ। ৯৩। তৈলোক্য
নোহন পঞ্চরাত্রেচ। স্থানং ন হর্য়ে দদ্যাদ্ধাদশ্যাং বৈষ্ণবোদিবা। পক্ষপূজাফলৎ
সর্বাহ্ব লায়েগগচ্ছতীতি । ৯৪ ।। অতোদিবা নিষিদ্ধত্বাক্রন্তাং স্থাপয়েৎ
প্রভূং। পবিত্রাদমনদ্বাদশুৎসবে ভ ন নিশ্যপি ।৯৫। নিত্রক্কত্যং সমাপ্যাথ শক্ত্যা
বিপ্রাৎশ্চ ভোজ্যেৎ। কুর্বীত দ্বাদশীনধ্যে ভলনীং প্রাশ্য পার্বং। ৯৬ ।। তথাচ
ক্রান্দে।। ক্ত্বাচৈবোপবাসন্ত্রোহ্মাতি দ্বাদশীদিনে। নৈবেদ্যং ভলনীমিশ্রৎ পাপ
কোটি বিনাশনং।। ৯৭ ।।

অতএব ভগবতোরাত্রোযাক্রীড়া রাশাদি স্তদ্রশাস্থিকাং। যথা শ্রীগীতগোবিন্দে। রঙ্গনিজনিতগুরু জাগরেত্যাদি। অতএব শ্রীরুঞ্প্য প্রমর্দিক শিরোমণেঃ পরিতোঘণীং।: ৯০।।

অভ্যৰ্চ্চ্য মহাপ্ৰসাদাদিনা সংমান্য। প্ৰস্থাপ্য চ স্বস্থগৃহং। তৎ উপবাসাদিকং। কেচিচ্চ পার-গানন্তরমেব সমর্পণমিচ্ছন্তি॥ ৯১॥ তত্ত্ব দ্বাদশ্যাং। ভগবৎপূজায়াং প্রমাণিকানাং জ্রীক্ষণদেবা-চার্য্যাদীনা মিত্যনেন তেবাং মতং পালনীয়মেত্যভিপ্রেতং। কেবাঞ্চিদিত্যনেন সর্ব্বোমিতি স্চিতং জ্রীবৈঞ্বদীনাং তাদৃশাচারাদশ্নাৎ॥ ৯২॥

তন্মতমেব প্রমাণয়তি। জনেতি। নির্মাল্যসালয়নাৎ অতিক্রমাৎ উর্তারণাদিতার্থঃ। নচ পদ্যাং যলয়নং তন্মাদিতার্থঃ তস্য সর্বাদা সর্বাদেবসম্বিদ্যালাপ নিষিদ্ধত্বন দাদশী ইরিপদয়োবির্ম্যালিতার অতএব দ্বাদশ্যাং বর্জ্জনীয় মধ্যে স্থান্দাদৌ নির্মাল্য লয়্বনমপ্যক্তং।তচ্চাথ্রে নিয়মেয়ু লেখ্যং লিখিতঞ্চ পূর্বাং পক্ষরতাবিধে সময়েয়ু মধ্যে দ্বাদশ্যাং নিষিদ্ধেয়ু তত্র বিফোর্দিবা ন স্থানমিতি।৯৩। এতদেব পঞ্চরাত্রবচনেন সাধয়তি স্থানমিতি ॥৯৪॥ পবিত্রারোপণদমনকারোপণ দ্বাদশ্যায়্রুৎসবেক্ত রাত্রাবপি ন স্থাপয়েই। এতদিপ কেষাঞ্চিদেব প্রামাণিকাণাং মতং।। ৯৫॥ নিতার্কত্যং বৈশ্বদেবাদিকং জপাদিকয়া। জলসীং প্রাশ্যেতি জলসী প্রাশনপূর্বাং ভোজনং কুর্য্যাদিত্যর্থঃ। যদ্যপি নৈবেদ্যশেষং জলসী বিমিশ্রমিত্যাদিনা সদা জলসীযুক্তমেব ভোজনং বিহিতমন্তি তথাপি পারণে বিশেষতাইবশ্যমেবেতি জ্বেয়ং।। ৯৬॥ তদেব ক্ষন্দপুরাণোক্ত্যাভিব্যঞ্জয়তি কুত্তেতি।। ৯৭॥

অথ পারণে দ্বাদশ্যপেক্ষণং। যতউক্তং পাদ্ধে। মহাহানিকরী হ্যো দ্বাদশী লড়িতা ন্ণাং। করোতি ধর্মহরণ মসুতেব সরস্বতী ।। ৯৮। ক্ষান্দে। পারণাহনি সংপ্রাপ্তে দ্বাদশীং যোবাতিক্রমেং। ত্রোদশ্যন্ত ভুঞ্জানঃ শতজ্বানি নারকী। তত্রিব প্রীমার্কণ্ডে য়ভগারথসয়াদে। যোহি ভাগবতোভ্ত্তা দ্বাদশীং নহি সাধয়েং। ক্রুল্য পূর্বপূণ্যস্য দত্তকেন বিভাবসুঃ। কৌর্মো। একাদশ্যামুপোধ্যেব দ্বাদশ্যাৎ পারণং স্মৃতং। ত্রোদশ্যাং ন তৎ কুর্যাৎ দ্বাদশ দ্বাদশীক্ষয়াং। কিঞ্চা ক্রাদ্বাহ বাপি দ্বাদশীং নত্তিক্রমেং। অতিক্রান্তা দ্বাদশী ভ হত্তি পুণ্যৎ পুরাক্রতং। ভবিষ্যে। যোদ্বাদশীমতিক্রম্য পারণং কুরুতে নরঃ। দ্বাদশীক্রতং ত্র্যা তৎক্ষণাদেব নশ্যতি। দেবীরহ্ন্যে। দ্বাদশীৎ সম্ভিক্রম্য পারণং যুক্রেটি হি। সান্দানাদিকং সর্বাং নিজ্বলং তস্য জায়তে। ১৯।। জ্বাপা চেন্দান্দশী কুর্যান্নিত্যক্রমান্ধণাদয়ে। জ্বত্যপা চেন্নিশাথোর্জুমামধ্যান্ধিক্রেব তং।।

व्यथ द्वानमाण्यञ्चक्र जामभावानः। जितिया। यण्यामय ज्वान द्वानमानि मक्र लोनस्य। मानार्कनिक्याः कार्यानानस्यानिमः युजाः । यास्य जिविज्ञ याण्य। कि द्वानमी यात्रल नित्न। उपःकाल द्वारः कूर्याः थाजम्याङ्कितः ज्या। नात्रनीस्य। व्यण्यासम्य विश्वन् द्वानमानम्यक्रलानस्य। मानार्कनिक्याः कार्याः नात्रनीस्य। व्यणसामये विश्वन् द्वानमानम्यक्रियाः । मानार्कनिक्याः कार्याः। नात्रहोमानिमः युजाः।।>००।। (नवलार्क्तः)। व्यज्वत्वाक्तः भावनाय्युवाः।। निनक्यां नित्न मर्वः कर्षवाः यनि जिन्नित्न। तेनव मिक्तियवार्षाः जिन्ना वार्वः। विश्वीयः इति।

অথ সক্ষটে পারণাসমাধানং। ফ্লান্দে। কলার্দ্ধাং দাদশীং দৃষ্ট্ব। নিশীথা দুর্দ্ধ্যের হি। আমধ্যাহ্লাং ক্রিয়াং সর্বাঃ কর্ত্তরাঃ শস্তু শাসনাং।! ১০১। অশক্তরা সক্ষটে প্রাপ্তে পারণং বারিণা চরেং। তদ্ধি নৈবাশিতং নৈবানশিতঞ্চ বিদুর্ব্ধাং। অতএব তর। কলাদ্বয়ং ত্রয়ং বাপি দ্বাদশী যদি দৃশাতে। সানার্চ্চলাদকং কর্মা তদা রাত্রৌ বিধারতে। কালিকাশারদাপুরাণয়োঃ। স্বাদশী যত্র সানদানাদিকাং ক্রিয়াঃ। রজন্যামের কর্ত্ররা দানহোমাদিসংযুতাঃ। সঙ্কটে বিষমে প্রাপ্তে

লিখিতা পারণারামতিকান্তা। অরাতা সরস্বতীবেতি গঙ্গাদ্যাস্ত্রনা। নদীরুদীর্য্য পরে পাবে রানং কার্য্যং সরস্বতান্তে প্রথমং সাবৈত্ব পরং পারং গন্তব্যমিতি বিধেঃ স্নানমক্রোলিখিতা সরস্বতী যথা ধর্মাহরণং করোতি তদ্বদিত্যর্থঃ।। ৯৮।। দাদশদ্বাদশীক্ষয়াদিতি দ্বাদশদ্বাদশীযুক্তং প্রণাং কীয়তইতি হেতোরিত্যর্থঃ।। ৯৯।। অরুণোদরে নিত্যকর্ম কুর্যাং। আমধ্যাহ্নিকং মধ্যাক্ত্রতাপর্যান্তং তরিত্যকর্ম নিশীখাদুর্ধনর্দ্ধরাত্রোপর্য্যের কুর্যাং। আমধ্যাক্তিকমিত্যেতৎ পুর্বমিপ ক্রইবাং।। ১০০।।

অরুণোদয়ে নিত্যকর্মাচরণে ভবিষ্যপুরাণাদিবচনানি প্রমাণত্বেন লিথিত। অত্যশারাং নিশীখাদুর্দ্ধনেব তৎকরণে ফল্পুরাণাদিবচনানি প্রমাণয়তি কল।র্দ্ধামিতি মধ্যাত্রাৎমধ্যাত্রাবধি ষাঃ ক্রিয়াঃ রুত্যানি তাঃ সর্বাঃ।। ১০১।। তৎ বারিণা পারণং ভাশিতং ভুক্তমিতি ন বিছ্মুনয়ঃ

দাদশ্যাৎ পারয়েৎ কথং। অদ্ভিত্ত পারণ্ড কুর্য্যাৎ পুনত্ত্তংন দোষক্ত। কাত্যা-য়নোক্তো চ। মন্তৎ জপিত্বা হরয়ে নিবেদ্যোপোষণ্ড ত্রতা। অদ্ভিত্ত পারণং কুর্য্যাৎ সঙ্কটে বিষমে সতি। কিঞ্চ। সন্ধ্যাদিকং ভবেন্নিত্যৎ পারণস্ত নিমিত্ততঃ। অদ্ভিত্ত পারয়িত্বা তু কুর্য্যাৎ সন্ধ্যাদিকং পুনং। ইতি।। ১০২। দাদশীপূর্বপাদীয় ন্তত্ত্ব চেন্দ্রিবাসরঃ। দ্বাদশ্যাধিক্যতন্তিঠেৎ পারণ্ড ত্র নাচরেৎ।। ১০৩।।

অথ হরিবাসরকালে পারণনিষেশঃ। বিষ্ণুধর্মোন্তরে। ছাদশ্যাঃ প্রথমঃ পাদে। হরিবাসরসংজ্ঞকঃ। তমতিক্রম্য কুর্ম্বীত পারণং বিষ্ণুতৎপরঃ। কুচিচ্চ। ছাদশ্যে-কাদশা যোগে বিখ্যাতো হরিবাসরঃ। একাদশ্যন্ত্যপাদশ্চ ছাদশ্যাঃ পূর্ব্বএই হি। হরিবাসরইত্যান্তর্ভোজ্ঞনং ন সমাচরেৎ।

অথান্যেপি দ্বাদশীনিয়মাঃ কান্দে। ক্লেডিং মাৎসং সুরাং তৈলং ব্যায়ামং ক্রোধমৈথুনে। পরান্ধং কাৎস্যভাষূলে লোভং নির্মাল্যলন্ত্রনং। দ্বাদশ্যাং দ্বাদশৈতানি বৈক্ষবঃ পরিবজ্জ য়েও। ব্রহ্মাণ্ডপুরাণে। কাংস্যং মাৎসং সুরাক্ষেত্রং লোভং বিভগভাষণং। ব্যায়ামঞ্চ প্রবাসঞ্চ দিবান্ধপুমথাঞ্জনং। শিলাপিন্তং মসূর্ঞ্চ দ্বাদশৈতানি বৈক্ষবঃ। দ্বাদশ্যাং বর্জ্জয়েজিতাৎ সর্ব্বপাপেঃ প্রমুদ্যতে ।। ১০৪।। বৃহস্পতিরপি। কাৎস্যং মাংসং সুরাদ্যতং ব্যায়ামং ক্রোধমৈথুনং। হিংসামসত্যংলোল্যঞ্জ তৈলং নির্মাল্যলন্ত্রনং। দ্বাদশ্যাৎ দ্বাদশৈতানি বৈক্ষবঃ পরিবর্জ্জয়েও। ক্রিচ্চ। কাৎস্যং মাংসং মসূর্ঞ্চ চণকং কোরেদূ্যকং। রতেট্রের্থপরান্নঞ্চ দ্বাদশ্যামন্ত্রিক্র রেও।। ১০৫।।

चारानी ना । उम्म रेव विष्णु ना राज्य का निकार । उम्म रेव वर्ष । जी मृज्य मान ने ना स्वाप्त ने विष्णु ने व

ইতি পশ্চান্তোজনে হপি দিভোজনদোষপরিহার:। অনশিতঞ্ব বিছরিতানের দাদশীল ইনদোষপরিহার:।। ১০২।। দাদশ্যাঃ পূর্ব্বপাদসম্বন্ধী হরিবাসর:। তত্র পাবণদিনে দাদশ্যাস্থাধি
ক্যতঃ বাছল্যাৎ পঞ্চত্মারিংশদ্ঘটিকোপরি বৃত্তিশেদ।দি তিঠেৎ তত্র হরিবাসরে পারণং
নাচরেৎ। ১০৩।।

এবং স্বাশশ্যাং পূজাদিনিয়মং লিখিত্বান্যানপি নিয়মান্ লিখতি ক্ষ্টেমতি ষত্ভিঃ।। ১০৪ ।। অসত্যমন্তভাষণং।। ১০৫।।

क्रेमीननी ज्या वक्ष्मीणाव वाक्षनीजि कृष्टि भार्तः॥ २०७॥ भूनः भन्निमिकार्यः। वक्ष्मान

मा। जामत्मान विवर्द्धक मटेहरैककामणी यमा। वक्षुमी छ ख्खाट्यके कथिका भागना-भिनी।। २०१।। व्यक्रलाम्य काम्। माजामभी मकम् मिन्। कट्ड उद्यापभी প্রাতন্ত্রিস্পূশা সা হরেঃ প্রিয়া ৷৷ ১০৮ ৷৷ কুত্রাকে যদা বৃদ্ধিং প্রযাতে পক্ষ-वर्कनी। विद्यारेशकामभी ९ ७ ज द्वामभी मगुरभाषरप्र । भूषा खावन भूषामा त्वाहिनी-সংযুক্তান্ত তাঃ। উপোষিতাঃ সমফলা দ্বাদশ্যোকী পৃথক্ পৃথক্ ।৷ ১০৯ ।৷ ব্ৰহ্মৰু মপি সা পূর্ব্ধ বিশোধয়তি ভার্গব। বঞ্জুলীতি দ্বিতীয়া সা হত্যাযুত বিনাশিনী। মহাপাপানি চত্তারি শোধয়েৎ ত্রিস্পৃশা ক্রতা। কুরুতেহশেষকলুষবিচেছদং পক্ষ-বর্জনী। জয়া জযন্তা বিজয়া প্রেতমোক্ষৎ তথা পরা। জয়ন্তা নরকচ্ছেদমপি দুক্ত-কারিণাং। অফুমীত ভৃগুল্রেণ্ঠ যথার্থ পাপনাশিনী।। ১১০।। কিঞা । অথেতি মহতা পুণ্যপ্রসারেণ হরের্দিনং। শুক্রপক্ষে ভৃগুশ্রেষ্ঠ বিশেষব্রতসংযুতং। তদাযা-তमि जालः यपि भूगाः व विश्वकिष्ठः । जापजमगृजः खाखः क्रांषिगिनिठः क्रगार । এकामभी स्वर्णन थया । माका ब्ह्रनाम नः । उच्छ ती तमसर शास्त्र अ मू जी मनी ব্রভং।বিহায় বঞ্জুলীৎ পাপাঃ কারয়ক্যবরাং তিথিং। হিংসিতত্তৈরসৌ রুঞ্চাক্ষর ইত্যবধারয়। যে কারয়ন্ত্যবিদ্বাংসঃ শাস্ত্রমূলন্ত্য হৈত্তকাঃ। প্রাণিনত্তংকৃতং পাপৎ তেষা৲ গচ্ছত্যনংশয়ং। তেষাং নিরভিমানৈত্ত ভূত্বা শাস্তানুগামিভিঃ । যথাবদুপ-(पिकेंद्र)९ न ভाব।९ कनूषाभिरेयः ॥ >>> ॥ बात्क विभिक्तेभाकाञ्च्यातः । अत्र। চ বিজ্ঞয়া চৈব জয়ন্তী পাপনাশিনী। সর্বাপাপ্ররা হ্যেতাঃ কর্ত্ব্যাঃ ফল-कां क्रिकां जिंदे ।। ১১२ ।।

অথা উমহারাদশীনিত্যত্বং । ব্রহ্মবৈবর্তে । রাদশ্যোক্তো সমাখ্যাতা হাঃ
পুরাণে যিচক্ষণৈঃ । তাসামেকাপি চ হতা হন্তি পুণ্যং পুরাক্ষতং ॥ ১১৩ ॥ পালে।
মার্কণ্ডেরপুরাণেচ শ্রীভগবদুক্তো। ন করিষ্যন্তি যে লোকে দ্বাদশ্যোক্তা নমাজ্যা।
তেষাং যমপুরে বাসো্যাবদাসূত্যংগ্রহং ॥ ১১৪॥ স্কান্দে চ ব্রহ্মনারদস্যাদে।

এব বিশেবণং পাপনাশিনীতি॥ ১-৭ ।। অরুণোদয়ে সূর্য্যোদয়ে। আদ্যা একাদশী। পাঠান্ত-রেপি দৈব অরুণোদয়ং ব্যাপ্য॥ ১-৮॥ পুষ্যাদ্যং পুনর্বস্থনক্ষত্রং সমকলা ইতি সর্বাসাং নিভাগ্বাং॥ ১-৯॥ পুর্বা উন্মীলনী তথাপরা জয়ন্তীচেতার্থঃ। পুনর্ক্তবন্ত্যাবিশেষং দর্শয়তি জয়ন্তীতি। পাঠান্তরে জয়াদিতরং প্রেতমোক্ষং কুরুতে। তথা পরেতাস্য পরেণায়য়ঃ পরা সর্বশ্রেষ্ঠা যতইতার্থ। অইটনী পাপনাশিনী॥ ১১০॥ হরের্দিনং উন্মীলন্যাদি। বহিঃ ফ্রান্টেঃ অক্রতশাস্ত্রেরিভার্থঃ। নির্ভার্তঃ অক্রতশাস্ত্রেরিভার্থঃ। নির্ভার্তঃ অক্রতশান্তিরিনির্ভার্তঃ বা পাঠঃ। ততঃ তদাবিভারিভারি জলামতার্থঃ। তেষাং গছতে তান্ প্রামোতি। ভাষামিতি পাঠে মলিমাশয়ৈ ভূরা ন বস্তব্যমিতার্থঃ॥ ১১১॥ কলং তত্তোক্তং যন্তংকাংকিভিঃ॥ ১১২॥

ভাসাং মধ্যে হতা অতিক্রান্তা। পাঠাস্তরেপি সএবার্থঃ। ১১৩॥ যা অক্টো দ্বাদশ্যন্তা যে ম করি-ব্যক্তি॥১১৪॥ ক্ষান্দোক্তোশীলন্যাদীনাং সাহচর্য্যাৎ জয়াদীনামপি চতস্থাং নিত্যত্বং শিশ্ধমেব। জাগরণপ্রসঙ্গে। উন্নীলনী পরিভ্যক্তা বঞ্জুলী পক্ষবর্জনী। নরকে বসভে তাবদ্বাবদিন্দুক্তিজ্ব না ত্রিস্পূলা বিষ্ণুদ্যিতা যে ন কুর্বন্তি ভূতলে। তাবদ্বনপুরে কাসো
যাবনদ্যঃ সসাগরাঃ। ইতি॥ অথ ঋক্ষপ্রযুক্তানাং ব্রতকর্তব্যতা যথা। জয়াদীনাং
চতস্ণাং তথা ব্যক্তং নিকপ্যতে। ভান্যকোদরমারভ্য প্রবৃত্তান্যধিকানিচেং। সমানূমানি বাবস্যুস্ততোহমীষাং ব্রতৌচিতী। কিয়া সূর্য্যোদয়াৎ পূর্বং প্রবৃত্তান্যধিকানি চেং। সমানি বা তদাপ্যেষা ব্রতাচরণযোগ্যতা। শ্রবণাব্যতিরিজেষ নক্ষত্রেষু খলু ত্রিষু। সূর্যাস্তমনপর্যাত্তং কার্যাৎ দ্বাদশ্যপ্রকাণ । শ্রবণাব্যতিরতা ভবেং। ১৯৫ ।।
প্রাণ্ডাদশ্যং সমাপ্ততাং। গভারানপি তব্রৈব ব্রতস্যাতিততা ভবেং। ১৯৫ ।।

অথ পারণকালনির্মঃ। বৃদ্ধৌ ভতিথ্যোরধিকা তিথিকেই পারণস্ততঃ। ভান্তে স্যাচ্চেন্তিথিন্ত্রনা তিথিমধ্যে ত পারণ । দাদশ্যননুব্তৌত বৃদ্ধৌ ব্রহ্মাচ্যুত-ক্ষাঃ। তল্পারণ বৃদ্ধৌ শেষয়োফদতিক্রমে। জীদাদশীচন্তক্ষস্য মহতোসৌ-বিনির্মঃ। মৃসিংহপরিচর্য্যাদিপ্রতদ্ধীয়ানিক্সিতঃ।।

তাপো নীলন্যাদীনাং বিশেষতো মাহান্তাং তাসু পূজাবিধিবিশেষশ্চ ।
তাপো উলালনী বৃতং। পালে প্রীসৃত উবাচ। রাজ্যং প্রকৃষ্ঠতঃ পূর্বময়রীষস্য বেশানি। গৌতমন্তপদা শ্রেষ্ঠঃ সমারাতোমহামুনিঃ। দৃষ্ট্। তমাগতং রাজা সমুস্তস্থো নিজাসনাং। দ্পুর্ন্তাং পরয়া ভক্ত্যা প্রবোচাসনসংস্থিতং। প্রিমান্ত্র নিজাসনাং। দ্পুর্ন্তাং পরয়া ভক্ত্যা প্রবোচাসনসংস্থিতং। প্রিমান্ত্র প্রদাদ কর্তুমর্হদি। ধন্যানামণি ধন্যাহং হন্ত্বং মাল্হমাগতঃ। তপদঃ কুশলং তেইদ্য তক্তিঃ প্রীকেশবোপরি। নিশ্চলা মুনিশাদ্র ছদয়ায়াপসর্পতি। প্রিগাতমন্ত্রাচ। তপদঃ কুশলং রাজন্ ভক্তিঃ রুষ্কে সুনিশ্চলা। কুশলং তব রাজেন্দু ব্যাক্ষণ ন পাদি সর্বাদা।। ১১৬।। ভক্তিং ভাগবতীং নিত্যং কিং ক'রাঘি নরাধিপ। শাল-গ্রামময়ং বিশ্বং কিং ত্বং পশ্যদি প্রত্যহং। কিং ত্বং বন্দয়দে নিত্যং শালগ্রামন্ত্রাক্তবং কুরুষে গৃহহ । তদ্বিলেশনশেষেণ অস্থানি পরিমার্জনি। শালগ্রামশিলামালাং দ্রা মুর্জনি প্রত্যহং। কিন্তারয়িন ভূপাল কঠেনিত্যং সুভন্তিতঃ। বুপ্লেষম্ভ রুষ্ণন্য ভক্ত্যা ভজনি ভূমিপ। প্রাচারাত্রিকং বিষ্ণোভক্ত্যা বন্দয়দে

কিয়া তাস্বইস্থ মধ্যে উত্থীলন্যাদীনামের চতস্থাং প্রাধান্যাভিপ্রায়ের ভত্র তাসামের নিত্যত্ত্থ যুক্তমিভি দিক্।। ১১৫।।

তে তৰ অদ্য ইদানীং তপদঃ কুশলং কিমিতি প্রশ্না তথা ভক্তিশেনতি চ ॥ ১১৬॥ ভক্তিমেব প্রপঞ্জতি শালগ্রাদেভ্যাদিনা প্রযত্ত্তঃ ইত্যম্ভেন। বিশ্বং শ্রীমূর্ত্তিং। কিমিত্যগ্রে শর্কবৈবাস্বর্তনীয়ং প্রশ্নপ্রকরণবলাৎ॥ ১১৭॥ দত্ত্ব। বৈক্ষবেভাইতি শেবং॥ ১১৮॥ বৈক্ষবা-

भिषः याक्ष्मि देक्कवान् ।। ১১৯।। तेनदिमा (स्वरमवनाः मर्स्ताभक्षत्र नः युक्तः । विषु दक्षनाग्र मञ्जा प्रः जूक्षात्म देवकदेवः मह। निष्ठाः नाममहरम् । ज्ञानि क्रमा-र्मन । मी भार्च मान ५ रन्वमा कूक रच गी छनर्छन । मृर्साक देव भू अशिषा भू आरख मधुमृतनः। चक्करेजन् भभाकृ न किमर्ण्याम किमार्यः। भरकं भरकं मृशासके विश्वि-বদাদশীবৃতং। দশমীবেধ রহিতৎ কুরুষে জাগরাস্থিতং ।। ১২০।। ভলসীপত্রনি-करेत्र निंठा १ शृक्ष यर म इति । शृखु १ विष्विं (मरह द्व १ (गा भी ठन्म न मखद । विष्विं कर्छ घर निकार धावीकनमगुष्ठवार। मानार मथायूकममार खनमीभवमखवार॥ २२)। শালগ্রামশিলাযুক্ত দারকায়াঃ সমুদ্রব। নিত্য পূজয় ে ভূপ ভূক্তিমুক্তিফল-প্রদং। পুরাণং স্থা ভাগবভং পঠনে পুরতোহরে:। চরিতং দৈত্রাজন্য এ হলাদ-স্য চ ভূপতে। বাসরং বাসুদেবস্য সবেধং কুর্বতোনরান্। নিবারয়সি ভূপাল শাস্ত্র-मृष्णा श्रयज्ञा । मत्यभ तामत्र विष्णार्यमिन् तार्षे श्रवर्ष । निर्णार छन পাপেনরাজা ভবতি নারকী । বেধং চত্তর্কিধং ত্যক্ত্রা সমুপোষ্য হরের্দিনং। कूनकाहिः नमूक्छ। नतकाषुक्छ फिनः। अभवीय उनाह। अभा यमूकः विध्यन्त् তং সর্বং প্রকরোম্যহং। পশ্যাম্যহং বিষ্ণুময়ং জগদেভচ্চরাচরং। বিষ্ণু ৰূপা श्वभाशां । या विश्व विश्व विश्व दिक्षित मुनिमञ्जम । उत्तर्ध कथश्राम विश्व दिक्षित महिन्। যৎ কৃত্ব। ন পুনঃ কৃত্যৎ ভবতে ঋষিসভ্ম। পুনর্গতির্ঘণা বিপ্র বিফুলোকাড়বে-নহি। এগৈতিমউৰাচ। শৃণু ভূপাল বক্ষ্যামি ব্ৰতং হাফুক্তবং মহং। দাদশীসম্ভবং পুণাং ময়াখ্যাতং ন ক্স্যচিত।। ১২২।। বৈষ্ণবোধি মহারাজ ভক্ত্যা ভাগবতাং নৃণাং। বৈক্ষবং যন্ত্ৰাগুৰু তে তুত্তং তু নিশাময়। উন্নালনী নাম পুরা মম ভক্তাত विक्ना। कथिक। नूक्षमस्मन कार्य जून विनाम। इरा मन्त्रीर्विनामनी क्षाकि विराद्धि প্রবর্ত্বত উন্নালনীতি সা প্রোক্তা পাপপক্ষেমাশিনী ॥ ১২৩ ॥ ত্রৈলোকে যানি তীর্থানি পুণ্যান্যায়ন্তনানি চ। কোট্যৎশেনের ভল্যানি মথাবেদান্তপাৎদি 511 > 2811 डिगोलनी नगर कि क्षित्र मृखेर न अञ्चर्श्यत्र। श्रशालान कुक क्षित्र न কাশী নচ পুষ্কর । ন রেবা বুক্ষতনয়া কালিন্দা মথুরা নহি। পিগুারকং প্রভাসঞ্চ ন मलदशः, व विक्तारिनव रेनस्थः। शामावती ह कारवती हन्मुकाशा न मिविका । न काशी

নিতি পাঠে তান্ প্রতি শেষং নির্মাণ্যং কিং যছতি।। ১১৯।। উপস্করা ব্যঞ্জনাদীনি।। ১২০।। জলদীপত্রসম্ভবাঞ্ মালাং॥ ১২১।। জারকায়াঃ সমুদ্ধবং জারকাসম্বন্ধি চক্রাক্ষং ॥ ১২২।। ভাগবভানামিতি বস্তুরে ভাগবভামিত্যার্যং॥ ১২৩।। কোটানামংশানামেকেনৈবাংশেন ভীর্ধা দীনি জল্যানীত্যর্থঃ॥ যদা কোটাংশে বিষয়েপি নৈব জন্যানি॥ ২২৪॥ তদেব প্রপঞ্য়িত্তি

न পরোको চ न नीक्षा रेनद हन्तना। हम्मन्छो ह मत्रयून्हन्तु ज्ञाना न गर्को। शामको চ विপाम। চ मानरेम्घव महानमः। किमज वद्यााख्यन ভृয়োভৄয়োনরাধিপ। নোন্মালনীসমৎ কিঞ্জিল দেবঃ কেশবাৎ পরঃ। উন্মালনীমনুপ্রাপ্র হৈঃ ক্তৎ কেশবা-চ্চনং । পাপচক্রসমূহসঃ দত্তভেন দ্বানলঃ ॥ ২৫॥ হিমান্মাসে মহীপাল তিথিরুগীলনা ভবেৎ। তথাসনামু। গোবিন্দঃ পূজনীয়োযথাবিধি।। ১২৬।। জাতক-পমরং কার্য্যোসাসনামা ভু মাধবং। স্বশক্ত্যা বিশ্বরূপঞ্র আদ্ধাভক্তিসম্মিতিং।পবি ত্রোদক্সংযুক্তং পঞ্রত্সমন্বিতং। গন্ধপুজাকতৈ যুক্তং কুম্ভ ১ সুগ্দাসভূষিতং। পাত্রমৌজুমুরং কার্য্য গোপুমৈশ্চাপি পূরিতং। তণ্ডুলৈকা মহাপাল স্থাপনীয়ৎ य जिला वि । नाल शिक्षा जुला विन्मः क्ष्मू मा छक्र कन्मरेगः। क्ष्या वित्न निर्मा क्षा পনীয়োঘটোপরি ॥ ১২৭ ॥ প্রদ্যাদ্বস্তুগায় সোপবীতঞ্চ সোভরং। উপানছো চ রাজর্যে আতপত্রং শিরোপরি। ভাজনং জলপাত্রঞ্চ সপ্তধান্যং তিলৈঃ সহ। রূপ্যং চৈবত কাপাসিং পায়সৎ মুজিকাং হরেঃ। ধেনুৎ বানিজ্যুৎবাপি দদ্যামাধবভষ্টয়ে। শয্যাং সোপস্করাং দক্ত্র মাধবায় ভ ভক্তিতঃ । ধূপদীপস্ত নৈবেদ্যং ফলৎ পত্রৎ নিবেদয়েৎ। পূজনীয়োমহাভক্ত্যা মলৈরেভিস্তু বৈক্ষবৈং। তুলসীপত্রসংযুক্তিঃ পুল্পিঃ কালোড়ু বৈহরিঃ।। ১২৮ !। মাননামা ভ পাদৌ হি জানুনা বিশ্বরূপিণে। গুহান্ত কাম পতয়ে কটীঞ্চ পীতবাসসে। ব্রহ্মমূর্ণ্ডিভূতে নাভিৎ উদর্থ বিশ্বযোনয়ে। ছদয়ং জ্ঞান গস্যায় কণ্ঠৎ বৈকুণ্ঠলূর্ভয়ে। উক্রগায় ললাটন্ত বাহু ক্ষেত্রান্তকারিণে। উত্তমাঙ্গং সুরে-শায় সর্বাঙ্গং সর্বাসূত্রি ।। ১২৯।। স্থনামা চারুধাদীনি পূজনীয়ানি ভক্তিতঃ। অর্ঘ্য-

উন্মীলনীতি যদ্ভি।। প্রবাগনিত্যাদীনাং নপুংসকল্পমার্ষণ্ । এবং সর্কাত্রবোহাং। ব্রহ্মতনয়া সরস্বতী॥ ১২৫।। এবং মাল্লায়্রল্পা তত্র পূজাবিবিবিশেষমাই যদ্মিনিত্যাদিনা কথানকৈ-রিত্যন্তেন। ত্রাসনাম্মেভি মার্গাদি দাদশমাসের ক্রমেণ কেশবাদ্যাদামোদরান্তাঃ কেশবাদিনালাদদদি লিখিতা দাদশ দেবতাঃ। অতপ্রমাসদেবতানাম্নেত্যর্থঃ। অতশ্ব তন্তদায়ুধাদিকমিপি তবৈধ কর্জবামিত্যহং। এবমগ্রেপি ॥ ১২৬। শ্বশত্যা নিজ্মন্ত্যল্যাবেণ। বিশ্বরূপং সমগ্রনাদ্যাং যথা স্যাৎ। যদ্বা তদীয়াখিলায়ুধালাপাদ্যকেত্যর্থঃ। কুন্তং স্থাপমেদিতি শেষঃ। স্নাপারিরা পঞ্চাম্তাদিনা। ঘটোপরি স্থাপনীরইতি ঘটোপরি যতাম্পাত্র তত্পরীত্যর্থঃ তত্রাপি ঘটোপরিল্বস্যাব্যভিচারাথ। স্থাপনঞ্চ এহেহি ল্বং জগনাথ বৈকুঠ প্রদ্বোত্তম । পরিবারগণো-পেত লক্ষ্যা সহ জগৎপতে। ইত্যাবাহনেন তথা মনোজ্যোতিরিতি প্রতিষ্ঠাদিনা চ জ্বেরং। গদ্ধপ্রপাদিসমর্পণঞ্চ ত্রামনজ্যেণৈর ॥ ১২৭। সোত্তরং উন্তরীয়নহিতং॥ ১২৮॥ অবয়ব-পূজামাহ।মাসেতি ত্রিভিঃ।মাসনাম্য স্থনাম্মুত্যর্থঃ। অত স্ক্রিব নমঃ শক্ষং প্রয়োজ্যঃ। এতএব সন্ত্রাঃ। পাদৌ পূক্বমেদিতি শেষঃ। এব্যবেপি সর্ক্র॥ ১২৯॥ স্থনাম্য স্থদর্শনায় নমইত্যাদি-

দানং প্রকর্তব্যৎ নারিকেলাদিভিঃ ফলৈঃ।। ১৩০ ।। শব্দোপরি ফলং রুত্বা গন্ধ-शुष्णकनान्विष्ः । मृत्विन विकेनः कृषा मन्तामर्घाः विधानेषः । तम्बत्मव सङ्गाति महाशूक्ष शृक्षक। मूर्वकानः नमरखश्ख शूनाकी विविक्तन । भाकरमाहमहाशाशा-গামুদ্ধর ভবার্ণবাং । সুক্তং ন কৃতং কিঞ্চিন্দ্রমান্তর পতি বি । তথাপি নাং জগন্নাথ সমুদ্ধর ভবার্ণবাং । ব্রতেনানেন দেবেশ যেচানে। মন পূর্বেজাঃ। বিযোনিঞ গভাশ্চান্যে পাপান্ত্যুবশঙ্গভাঃ। যে ভবিষ্যন্তি যেইতীতাঃ প্রেভলো-কাৎ সমুদ্ধর। আর্ত্রসামন দীনসা ভক্তিরব্যভিচারিণী। দত্মর্ঘ্যৎ ময়া তুভ্যং ভক্ত্যा शृङ्के शनाधत । मञ्जार्घार धृशनीशारेमार्टेझ वित्रकृतिक हिता । त्यारेज भीता-জনৈ গাঁতৈ নৃতিতঃ সম্ভাষয়েদ্ধরিং।বস্ত্রদানৈশ্চ গোদানৈর্ভোজনৈ স্ভোষয়েৎ গুরুং। অকুর্মন্ বিভ্রশাঠান্ত ব্রতং কুর্য্যাজু বৈক্ষবং। ভ্রষ্টার্থং পদ্মনাভ্স্য কার্যাং জাগরণ ख्या। निभारत उ चक्र गुद्ध छत्र व जिल्लास्य । छत्रो निर्वात ज्भ भिन्नि ५ ভবেছুতং। রুত্ব: দিনরুতং কর্ম ভোজনং ব্রাক্ষাকৈঃ সহ। কর্ত্তব্যং নৃপশার্দ্ধ দিনং নেয়ৎ কথানকৈঃ।১৩১। অনেন বিধিনা যস্ত কুর্য্যাদুল্লীলনীব্রতং। কম্পকোটিসহস্যানি বসতে বিষ্ণুসন্নিধৌ ।। ১৩২ ।। কিঞ্চ। উত্থালনীক্রতং কুর্য্যাদেবং যঃ স ধনী ভবেং। मीघागूः পুध्यवान् विषान् न कर्जा नित्रग्नः खडा । तुकारेववर्षः मृठामीनक-সম্বাদে। ভাবৎ পাপানি দেহেষু দুঃসহা যমযাতনাঃ। প্রাণিনাং কুরুতে ভাবদ্যাব-লোনালনাবতং। यদত দায়তে দানং ভূয়তে বাত্র যদ্ধবিঃ। সর্বাং ভদক্ষয়ং প্রাত্-क्योलन्तरः महर्षयः। इंज्योननीखं छः ।। ১००॥

च्या वक्ष्र्नोज्ञ छ । भाष्यव विशिष्ठ मा स्वीष्ठ मा स्व

ৰপেণ।। ১৩০। বিধানতইতি সজলকুষ্কুমশজ্খোপরি একস্তাবেটিতং গল্ধাদিসহিতং কলং কৃষার্যাং দদ্যাদিতি বিধানং ক্ষেয়ং। তত্র মন্ত্রঃ দেবদেবেত্যাদ। ব্রত্ত্বকুত্যং ব্রতোপক্ষরং শ্রীমূর্ত্যা-দিকং। দিনকৃত্যং নিতাকৃত্যং। কথানকৈঃ ভগবদ্বার্ত্তাদিতিঃ।। ১৩১॥ এবং ব্রত্ত্যা পুনং কল বিশেষমাহ অনেনেতি দ্বাভ্যাং।৷ ১৩২।৷ যাবছন্সীলনীব্রতং ন কুরুতে জনঃ তাবদেব প্রাণিনাং দেহেষু পাপানি তাবচ্চ যম্যাতনা হঃসহা ভবস্তীতান্বয়ং। নকারাভাবপাঠেপি উন্মান্তনীব্রতাচরণং যাবদেব পাপাদম্ভিষ্ঠিন্ত তাবদেব তন্মিন সতি চ নতিষ্ঠন্তীতি তথৈবার্থং॥ ১৩৩।৷ দাদশী চ সম্পর্ণা সতী ত্রয়োদশ্যাং মুহর্ত্তার্কংকিঞ্ছিত্তবতীতার্থং।৷ ১৩৪।৷তকং শ্রীমূর্ত্তিং। ঘট্-

বা । কৃত্ব। সানং গৃহে বালি নিভাক্স চকারয়ে । মাধকেণ সুবর্ণেন কৃত্বা নারা-য়ণীং তনুং। রত্মগর্ভঘটে কৃষা তামুপাত্রোপরি স্থিতং। আতপত্রস্ত মায়ূরং বৈণ বয়া স্বশক্তিতঃ। উপানহৌ প্রকর্ত্তব্যৎ কাংস্যপাত্র ঘৃতান্তিও। গোধূমেঃ পূর-(य़ भाजः माभा (नवः नामा छः। वस्य यूर्यन म रहामा कार्यारेक्षव विरामानः। অচ্চয়েদুদকুষ্তত্ব পুত্পমাল্যাভিবেফিডং। ততঃ পূজা প্রকর্তব্যা সুগলৈঃ কুসুমৈঃ শ্তভঃ। নারায়ণায় পাদেণিত জানুনা কেশবায় চ। উক্তাৎ নাধবায়েতি গুহাংকামা-ধিপায়চ।গোবিন্দায় কটিৎপূজ্যংনাভিং মাধ্বমূর্ভয়ে।উদরং বিশ্বৰূপায় বক্ষঃকৌস্তভ পারিণে। বৈকুপ্তায় নমঃ কণ্ঠং চক্ষুষী জ্যোতিকপিণে। সহসুশীর্ষায় শিরঃ সর্বাঙ্গং বিশ্বৰপিণে। আয়ুধানি স্বনামের এবং দেবার্চনে বিধিঃ। শুভেন নারিকেলেন দদ্যাদর্ঘ্য বিধানতঃ। শব্ধে কৃত্বা ত পানীয়ং সাক্ষতং কুসুমানিত। নারায়ণ জগ-রাথ পীতাম্বর জনাদন। মামুদ্ধর মহাবিক্ষো নরকাদ্ধেঃ সনাতন। সপ্তকল্পগতং পাপং ষং ক্তং মনপূর্কলৈঃ। অনেনার্ঘ্যপ্রদানেন সকলৎ তৎ প্রণশাত। মুক্তিৎ প্রয়াম্ভ পিতরোময়া সই জ্গৎপতে। ময়া তবার্ঘাদানেন যে চান্যে পিতরোগতাঃ। বসমু ত্বংসমীপে ২ন্য দেবদেব জনাদন। ব্রতং সম্পূর্ণতাং যান্ত বঞ্জু লীসম্ভবং মম। দশমীসংযুত্ত দেব যৎ কৃতং দাদশীব্রতং। তজানাদথবা জ্ঞানাৎ পরিপূর্ণং তুদম্ভ म । जातन विधिना नमाश्रमञ्जार्थाः मधुमृत्ता । वरमः कल्लमञ्जू विस्थार्लारक মন্থেরি। অরিটোমসহসূত্য অখ্নেধোবিশিষ্যতে। অখ্নেধ্সহসূত্যোবা-জপেয়োবিশিষ্যতে। বাজপেয়সহস্তে পুগুরীকোবিশিষ্তে। পুগুরীকসহস্তেঃ সৌত্রামনির্বিশেষ্যতে। সৌত্রামনিস্হস্ত্রোরাজসূয়োবিশিষ্যতে। রাজসূয়স্থ-সুভোবঞ্জুলী চাধিকা নৃপ। বঞ্জুলীতি ক্তোচ্চারৈঃ কলিকালে ভ মানবৈঃ। জ্মা-যুতসহস্তে ক্তঃ পাপস্য সক্ষয়ং ।। ১৩৫ ।। দত্ত্বা পূজার্ঘ্যদানন্ত পূপনৈবেদ্যদী-প্রিং। কৃত্বা নীরাঙ্গন্ম বিষ্ণোগুরুৎ সম্পূজ্যেত্ততঃ। দদ্যাদৃত্রাণিগাং ভূমিংধান্যং-है व नम्किनः । कूर्याष्ट्रिकानुमाद्धन मन्त्रीर्गार्थः ब्रुग्राशि । मलुष्टि खर्त्रो विष्णुः প্রতিভবতি নান্যা। গুরুংসম্পূক্ষেত্তমাতুট্যর্থ চক্রপাণিনঃ। রাত্রৌ ত্ত জাগরঃ কার্য্যঃ শ্রেষ্টির টবক্ষরী কথা। গীতানামসহসূত্র পুরাণৎ শুকভাষিতং। পঠনীয়ং প্রয়ন্ত্রন হরে: সন্তোষকারণং। প্রত্যেকং গোদহসুস্য পঠতাং শূণ্ভাং ফলং। গাতং নৃত্যন্ত বাদিত্রং কারয়েৎ পুরতোহরে:। দাতব্যং গুরবে সর্বং প্রভাতে দেবতাদিক । ক্ষমাপয়িত্বা দেবেশং গুরুফৈব বিশেষতঃ। রুত্বা নৈমিত্তিকং দর্বং ভোক্তব্যং বন্ধুভিঃ সহ। কান্দে এত্রন্ধনারদসম্বাদে। জাগরণ প্রসঙ্গে। অগম্যা-

স্থাপনাদিকমত্রাপি পূর্ব্ববৎজ্ঞেরং বিশেষশ্চান্যঃ স্বর্মেব বক্ষ্যতে। ,নারায়ণেত্যাদ্যর্ঘ্যমন্ত্রঃ।১৩৫।

গমনে পাপমভক্ষ্যস্যাপি ভক্ষণে। পাপং বিলয়মায়াতি কীর্ন্তিতে বঞ্জুলীদিনে। যৎ পাপং ভূমিহরণে দেবস্বহরণে তথা। মানকূটং তুলাকূটং স্বর্ণন্তেয়াদিকঞ্চ যং। অজ্ঞানাদ্যংকৃতং পাপং জাত্বা যং পাতকং কৃতং। পূর্বজনাদ্রিতং পাপমিছ জন্মনি যৎকৃতৎ। সর্বাং লয়মভ্যেতি ক্তরিকং বঞ্জুলীদিনং। ন ভবে-নানসী পীড়া রোগাশ্চতি ভেদুংখদাং ।। ১৩৬ ।। বুক্ষবৈবর্ত্তে শ্রীসূতশৌনকসম্বাদে । বঞ্জুলীবাসরে বিপ্র সংপ্রাপ্তে গরুড়ধুজঃ। স্বস্থানাদ্সুধামেত্য কুরুতে চ স্থিতিং বিশন্।।১৩१।। ৰঞ্জু লী বিমুখৎ বিপ্রমালোক। রবিনন্দনঃ। কুরুতে সন্বিদৎ সাকং চিত্রগুপ্তেন হর্ষিতঃ। অয়মেষ্যতি মনাত্মা বিষ্ণুবৃত্বহিষ্কৃতঃ। বশং মনেতি ভং-পুণ্যং মাৰ্জ্জ হাদ্ধা পুৱাক্ততং ॥ ১৩৮ ॥ । শিরোভি নিতরামেষ। মাৎ সদৈব প্রবা-ধতে। কিঞা সর্ববুভানাং চরণং সর্বভীর্থাভিষেচনং। সর্বাদান প্রদানঞ্চ সম্ স্গাৰঞ্জুলীবুত্থ।। ১৩৯।। ভত্ৰালদানং বিপ্ৰায় বিধায় শ্ৰন্থানিভঃ। প্ৰাপ্ৰেটি পুরুষোবিপ্র কলষঃ রুষণে ন্নিধিং । লক্ষ্মীং নারায়ণং দেবং সৌবর্ণং তর্ত্ত পূর্জী য়েৎ। যথাশক্তঃনদানঞ দত্বা বৈকুপ্তনাগুয়াৎ ।। ১৪০ ।। অধমণ্তয়া কালা-ল্লোভাদ্ভাদ্পি দিজ। হতি ত্রিপুরুষৎ পাপং বঞ্জুলী পুরুষেঃ রুতা। সএয় সর্কশা-প্রার্থ: নর্ববুদ্ধিমতাৎ মতং। হিতং সর্বসমীচীনং ঘদ্ধপুল্যামুপোষণং। উপবাসং যথাশক্তা দানং ব্ৰাহ্মণপূজন । বিধায় বঞ্জুলী চৈবৎ পুৰুষোযাতি সদ।তিং। 

অথ ত্রিস্পৃশাক্রতং। তত্রৈব। শুক্লা বৈশাখনাদে ত্ত সংপ্রাপ্তা মধুসূদনী। দ্বাদশী ত্রিস্পৃশা নাম পাপকোটিকয়াবহা। ধন্যাঃ সর্কে মনুষ্যান্তে বৈশাথে মধুসূদনী। সংপ্রাপ্তা ত্রিস্পৃশা থৈস্ত বুধবারেণ সংযুতা। দ্বারকা মাহাত্ম্যে তত্রৈব। আদৌ নলা জ্য়াচান্তে মধ্যে ভদ্রা ভবেদ্দি। উপবাসার্চনে গীতে দুর্লভা রুক্ষসন্থি। একেনৈ-বোপবাদেন উপবাসাযুতং ফলং। জাগরে শতসাহসুং নৃত্যে কোটিগুণং কলৌ। গৃহেপি কুর্কতামেতাৎ কিম্পুনঃ রুক্ষসন্থি। পালে শ্রীননংকুমারব্যাসসম্বাদে। সর্কাপপপ্রশান্ত মহাপাতকনাশনং। শৃণু রুত্বা হবধানং ত্বং ত্রিস্পৃশাখ্যং মহাপ্রতং। কামদং সম্পৃশানাঞ্চ নিস্পৃহানান্ত নোক্রদং। ত্রিস্পৃশাখ্যং ব্রতং বিফোঃ

কুর্যাদেবং ।।১৩৬ ।। বিশন্ বঞ্জুলীব্রতকারিণাং মধ্যে প্রবিশন্ স্থিতিং কৃরুতে বসতী ত্যর্থঃ। আস্থিতমিতি পাঠেপি ভাবে ক্তপ্রতায়াৎ সএবার্থঃ। পাঠান্তরে ও বিশাং ধনিনাং প্রজানায়া ইন্টং দদাতীত্যর্থঃ। যদা বিশাপ্ত ধনিনাং ধনসম্বিল্লবাঞ্জাং পুররতীত্যর্থঃ।)১৩৭।। সন্তিবং মন্ত্রণাং ।।১৩৮।। শির্সোইজিঃ পীড়া।।১৩৯।। কল্বঃ পাপৰ্বপোপি।।১৪০।। অধসং ধনাভাবেন পর্মদোষাবহংখনং যস্য তস্যাভাবস্তত্তা তয়া ঋণব শ্যতয়েত্যর্থঃ। অতঃ ত্রিপুরুবসম্বন্ধি পাপেং হন্যি। যদা ঋণিত্বনাপি কৃষ্য। স্থাগামাদিভিন মোক্ষো ভব্তি।। ১৪১।।

শ্ १ वृ १ पर जो भग । প্র । कि का নিত্যং যাং করে।তি মহামুনে। ন পুরশ্চরণে চীর্ণে সর্ব্বপাপক্ষয়ে।ভবেৎ। ত্রিস্পৃশা নামমাত্রেণ ভবতে নাত্র সংশয়ঃ। নাগমৈর্ন পুরাণৈশ্চ সমষ্টেষ্টার্থকোটিভিঃ। বহুভি-ব্ৰ তসংঘৈশ্চ পূজিতৈ স্ত্ৰিদশৈর পি। মোকোভবতি বিশ্রেন্দু বিস্পৃশা ন কৃতা যদি। মোক্ষার্থং দেবদৈবেন সৃষ্টা দেবা তিথাশ্বরী। বিষয়ের্বিপ্র যুক্তানাং ধ্যানধারণ ৰডিজনাৎ। কামভোগপ্ৰসভানাং তিস্পৃশামোক্ষদা সদ।।। ১৪২।। শহুবসঃ পুরা প্রোক্তা চত্তর্ম্ব প্রুম্য সাগরে । ক্ষারোদে প্রণতানান্ত মৎসমীপেত চক্রিণা ॥১৪৩ ॥ ত্রিস্পৃশাৎ যে করিষ।ডি বিষরৈরপি নিজিভিভিঃ । তেখামপি ময়া দত্তৎ নোক্ষং সাখ্যাবিবজ্জিতিং। কুরুষু স্বং মুনিশ্রেণ্ঠ ত্রিস্পৃশ্ধং নোক্ষদায়িনীং। বহুভি-মুনিনট্রেন্ত তাজু: সাস্থ্যং মহামুনে। কার্ত্তিকে শুক্রপাক্ষে তু বিস্পৃশা ভবতে যদা। লোমেন সোমজেনাপি পাপকোটিবিনাশিনী। হস্যামুপোষণং ক্ত্বা হত্যামুক্তো-মহেশ্বঃ। হস্তাদুক্ষকপালয় তৎক্ষণাৎ পতিতং মুনে । গত্বা ভৃগূপদেশেন তিস্পৃশা সন্পোষণাং । ব্ৰহ্মহত্যা সহসুণি ত্ৰিস্পৃশা সমুপোষণাং। হিত্বাফৌ বাছবাৰ্য্যস্ত পূর্বজাতো মহামুনে।। কলিকল্যুবপাগাভু মুক্তা দেবা ত্রিমার্গণা। উপদেশাঝাধবস্য ত্রিস্পৃশ। সমুপোষণাং ।। বুলহত্যাসহস্যুণি ত্রিস্পৃশাসমুপোষণাং । বিলয়ং যান্তি বিপ্রেন্দু পাপেষ্নাষুকা কথা। ন প্রয়াগেন কাশ্যান্ত গোমত্যাং রুফসলিধৌ। নোক্ষোভৰতি বিপ্ৰেন্দু ত্ৰিস্পৃশাসমূপোষণাং। মরণেন প্রয়াগে ভ মুক্তিঃ কাশ্যা-ন্তথৈৰ চ। স্থানমাত্ৰেণ গোমত্যাৎ মুক্তিভ্ৰতি নান্যথা। গৃহে চৈৰ ভ্ৰেমুক্তিঃ স্ত্রিস্পৃশায়ামুপোষণাৎ। বিষয়ে বর্তনানন্য কামভোগান্বিত্ন্য চ । নিবৃত্তবিষয়-স্যাপি মুক্তিঃ সাংখ্যেন দুর্লভা । ভদ্মাৎ কুরুষ বিপ্রেন্দু ত্রিস্পৃশাং মোক্ষদায়িনীং । विषयानिष्ठवाह। कोम्भी माना निवत जिम्मा वापमी वरा विमू किया या मर्कानाइ স্বয়া প্রোক্তা মমাধুনা। সনৎকুমার উবাচ। জাহ্নব্যাঃ পুরতোরিপ্র তিস্পৃশা মাধবেন তু। প্রার্চা সরস্বতী তীরে কপিত। সুমহাফলা। কলিকলায়পাপৌঘৈত্র ক্স-হত্যাদিকৈ যু তাঃ। কলিকালে হৃষীকেশ স্থানং কুৰ্মন্তি মজ্জলে। তেষাৎ পাপশতৈ-र्मकः माम्बर्भ कल्योक् जः। कथः यागाजि स्मापन शाखकः शक् प्रश्रं छ। औथा वीमाथक উবাচ। কথয়ামি ন সন্দেহে। মাপুত্র রোদনং কুরু। এত্রিন নাম মে স্থানং প্রাচীদেরী মমাগ্রতং। বহতে ব্রহ্মতনরা মদ্ট্যগ্রে সুরেশরি। সান্ধ কুরুদ নিভাগ ছৎ মন্ত্রপূতা ভবিষ্যতি।যত্র প্রাচী ক্রহ্মসূতা তত্রাহৎ নাস্তিস্ৎশয়ঃ। তীর্থকোটিশতৈযুক্তঃ সুরৈঃ সহ বসাম্যহৎ। তত্র নশ্যন্তি পাপানি হত্র প্রাচী সরম্বতী। বিশেষতোমনাত্রে ভ কলিকালে বিশেষতঃ। শ্রীজাত্বরুবাচ। নাহং শক্রোমি দেবেশ আগনত্তং নিত্যমেবহি।

हि विश्व विषदेशपू किनाः ॥ ১८२ ॥ श्वनकानागरनामाक श्वाका ॥ ১८० ॥ कूक्रमणापि मनः

কথাং ন্মান্তি পাপানি কথয়ত্বেহ মাধব ৷ জীপ্রাচীমাধব উবাচ ৷ সরস্বত্যধিকা হা চ তীর্থ-কাটিশতাধিকা। মথকোট্যধিকা যাপি ব্রতদানাধিকা চ যা। তপোজপাধিকা निত্যং চত্তর্বর্গ ফলপ্রদা। সাৎখ্যযোগাধিকা যা চ িস্পূশা কুরুতাং শুভে। যদিন্ মাসে সমায়াতি নিতাচাপ্যমিতাথবা। কর্ত্তব্যা সা সরিৎশ্রেষ্টে তব পাপং হরি-ষ্যতি।। ১৪৪ ।। জীমনদাকিনুবেচ । কিদুশী ত্রিস্পূশা দেব মনাচক্ষর মাধব। केन्ट्रभाविह्या घना। खुरा (थाका ववायुना। मभावाकामभी कका मिरेनक आन् रमा ভবেং। ত্রিস্পূশাসা ভবেদেৰ ন বেলি বদ মে প্রভো ৷৷ ১৪৫ ৷৷ শ্রীপ্রাচা সাংব উবাচ। আসুরী ত্রিস্পূশা দেবি যা ত্রয়া পরিকীর্তিতা। বর্জনীয়া প্রয়েন ত্রতহীনো ঘথা যতিঃ। অসুরাণাৎ রাক্ষসানা মায়ুর্বেলবিবর্দ্ধনী। বজ্জনীয়া প্রয়ত্ত্বন হথা নারী রজস্বলা। যথা রজস্বলাসক্ষন গায়াং বজ্জিতিং সদা। তথা দশ্মিসং যুক্তং মন্দিনং বৈষ্ণবৈশ রৈঃ। হত। যুত্রশতং হতি নৎপ্রসাদেন লভ্যতে । মৎপ্রসাদবিহীনানাৎ ত্রিস্পূশা যাতি জাহুবি ।। ১৪৬ ।। একাদশা দাদশা চ রাত্রিশেষে ত য়াদশী। ত্রিস্পূশা না ভ বিজেয়া, দশমী নংযুতা নহি। ভুক্তং হালাহলং তেন শ্বিষ্ঠা ভক্ষণ ক্লতং। দশনীমিশ্রিতং যেন ক্তমেকাদশীব্রতং । ইতি ভাষা ন কর্ত্বাৎ মদিনং দশনীযুতং । জলকোটিক তৎ পুন্যং সন্তানং যাতি চ কয়ং । পকাবৃদ্ধী বিশেষেণ সন্দেহে সমুপস্থিতে। মমাজয়া প্রকর্ত্ব্য দ্বাদশী বল্লভা সদা । মযাজয়। প্রকর্তব্যং সন্দিনৎ মইপরারগৈঃ। মদ্দিনং ভদ্বিজা ীয়াদ্দশমীবেধবজ্জিভিং। জি যেদ বাস উবাচ। বিধানং বুহি মে ক্রেন্ মুনে যেন করোম হেং। প্রীসনংক্ষার উবাচ। দামোদরৎ হেমনরং কন্ধা বিভবসারতঃ। পাত্রং তামুমরৎ কার্যাং তঞ্চলঃ সুপ্রতিৎ ।। ১৪१ ।। সজলন্ত ঘটং শুদ্ধৎ পঞ্চরত্রসমন্তিং । বেভিতৎ পুস্প-মালাভিঃ কপূরাগুরুবাসিতং। ন্যাসেন্তামুময়ং দেবং স্থাপয়িত্বা বিলেপিতং। পরিধানং ততঃ কার্য্যৎ বস্ত্রযুগেন ভক্তিতঃ । মক্ত্রৈস্ত পূজনং কার্য্যং গুরুণা সনুদী-त्रिटेंडः । शूरेणाः कालाफुरेनः खरें बखलभीमनाकामाले । इत्र रेवनवर मम्रोट পাদুকা২ম্বর সংযুত্থ। নৈবেদ্যানি বিচিত্রাণি ফলানি সুবহূন্যপি। উপৰীতং ভাদাতব্যং সোত্তরীয়ৎ নবং দৃত্ং। বৈণবং দাপয়েদগুৎ সুক্রগং সুন্তং শুভৎ।। ১৪৮।। দামো-मतात्र भारती ख जानूनी माथवात्र छ । खराख कामभावत्त्र किर वामनमूर्जरत् । शबा-নাভায় নাভিস্ত উদরৎ বিশ্বমূর্ডয়ে। হৃদয়ৎ জ্ঞানগন্যায় কণ্ঠং একি ঠসৎজ্ঞকে। সহসু-

কুমার বাক্যং মুনিষ্টশ্বঃ সহ।। ১৪৪। ভদ্রা দ্বাদশী॥ ১৪৫॥ মংপ্রসাদেটনর ত্রিষ্পৃশালভাতে। যাতি ব্যর্থভামিতি শেষঃ॥ ১৪৬॥ বিভবসারতঃ নিজধনাদ্যসুসারেণ॥ ১৪৭॥ পাত্রং ঘটঞ্ ন্যসেদিত্যযুদ্ধ ॥ ১৪৮॥ শ্রীকৃঠসংজ্ঞকইতি শ্রীকৃঠায় নমইতি জ্বেয়ং। এবমন্যত্রাপি। উরগায়েতি

অথপক্ষবর্দ্ধনীবৃত্ত । পাল্লে শ্রিব্লে,ক্তৌ। অমাবা যদিবা পূর্ণা সম্পূর্ণ জায়তে যদা। ভূষা চ ষটিঘটিকা দৃশ্যতে প্রতিপদিনে। অখনেধাযু তৈন্তল্যা না ভবেৎ পাক্ষবর্দ্ধনা। পূজাবিধিন্ত বিপ্রেল্যাঃ শ্রোন্তমর্থ সাম্পূত্ব । মান্ত্রঃ সংপূজিতো বিফুরর্ঘ্য দানেন ভ্রাতি। জলপূর্ণ নবং কুছং চন্দ্রনিব চর্চিত্র। পঞ্চরত্ত সমাযুক্তং পুজামালাবিভূষিতং। স্থাপ্যং তামুময়ৎ পাত্রৎ সংগাপুমং ঘটোপার। সৌবর্ণং কারয়েদেবং মাসসংজ্ঞাবিধানকং। পঞ্চামতেন সুপানং কর্ত্ব ঃ মাধবস্যা । বিলেপন্ত্র কর্তব্যং কুলু মাগুরুচন্দনৈং। বস্ত্রযুগ্য দাতব্যং ছত্রোপানং সুমংযুতং। পূজ্রেদ্রেলামাশং কুল্রপাত্রোপরি স্থিতং। পদ্মনাভায় পাদে জ জানুনী যোগমূর্ত্রে। উরুযুগাং নৃসিংহায় কটিং জ্ঞানপ্রদায় চ। উদরং বিশ্বনাথায় হৃদয়ৎ শ্রীধরায় চ। কণ্ঠং কৌস্তুভকণ্ঠায় বাহু ক্ষত্রান্তকায় চ। ললাটং ব্যোমমূর্ত্রায় শিরোবৈ সর্কারপিণে। স্বনামা চৈব শস্ত্রাণি সর্বাঙ্কং দিব্যরপিণে।। ১৫৪।। এবং সংপূজ্য বিধিবৎ ততোহর্ঘ্যৎ সংপ্রদাপয়েৎ। নারিকেলেন শুভেণ দেবদেবস্য চক্রিণঃ। সৎসারার্ণপোভায় পাপকক্ষমহানল। নরকাগ্রিপ্রশামন জ্লান্ত্র্জরাপাহ। মামু-দ্বর জগরাথ পতিতং ভবসাগরে। গ্রাণার্ঘ্যৎ ময়া দত্তৎ পদ্মনাভ নমোস্ততে।

পাঠে উরগশয়নায়েতি জেয়ং ॥ ১৪৯ ॥ উভাজাং পাণিভামর্ঘ্যং দদ্যাদিতি পুর্বেশেষ্য়ঃ। অর্থামের বিশিন্তি পাণােঃ সংস্থিতমিতি॥ ১৫০॥ স্মৃতইত্যাদ্যঘামন্ত্রঃ ॥ ১৫১॥ শিরসঃ উপরি। বিসর্গলােপেপি পুনঃ সন্ধিরার্যঃ। জলজং শহাং॥ ১৫২॥ ভোজনং ভোজাং॥ ১৫৩॥ বৃতিঘটিকা ব্যাপ্য ভূত্রা সম্পূর্ণায়দি দৃশ্যতে। অতএব প্রতিপদ্দিনে চ কিঞ্চিদ্শাতে॥ ১৫৪॥

रेनर्वितानि প্রদেষানি ঘৃতপকানি চক্রিণে। ফলানি সুমনোজানি ছাদুনি রসবন্তি চা
সাগুরুঞ্চ সকপূরিং দদ্যাদ্ধূপন্ত মাধবে। সঘৃতং গুণ্ডলুঞ্চাপি দদ্যাদ্বিভানুসারতঃ।
তাসূলন্ত সকপূরিং দদ্যাদ্দেবস্য ভক্তিতঃ। ঘৃতেন দাপকং দদ্যান্তিলতৈলেন বা
পুনঃ। করা সম্যান্ধানেন গুরুপূজান্ত কার্য়েং। বস্ত্রানি চৈব সোঞ্চীমং কঞ্চ্বঞ্চ প্রদাপয়েং। দক্ষিণাঞ্চ যথাশক্তি গুরুবে সংপ্রদাপয়েং। ভোজনঞ্চৈব তামূলং
দন্ত্রার্ঘ্যং সংপ্রতাব্য়েং। স্বন্তর্কর্ত্রমানৈস্ত যথাশক্ত্যা চ নির্ধানঃ। কার্য্যা
সম্যক্ প্রয়ন্ত্রন দ্বাদশী পক্ষবর্জনী। ততোলাগরণং কুর্য্যাদ্যাত নৃত্য সমন্বিতং।
ইতি পক্ষবর্জনী-ক্রতং।।১৫৫।।

অথ জয়াত্রতং। ক্রহ্মপুরাণে এবিশিষ্ঠমান্ধাতৃসম্বাদে। দ্বাদশ্যান্ত সিতেপক্ষে ক্ষম্ম যদি পুনর্বসুং! নামা সা ভ জয়াথ্যাতা তিথানামুত্রনা তিথিঃ। তামুপোষ্য নরোঘোরে নরকে নৈব মন্ধ্রতি। আগ্নফোমাদিযজ্ঞানাং ফলমাপ্যোত্যসৎশয়মিতি।। জয়াত্রতন্মুষ্ঠেয়ৎ যথৈবোগীলনীত্রতং। তদুক্তং মার্কণ্ডেয়েন। শালগ্রামশিলাবারি ভল্পীজলমেবচা সমমেবোদ্ধরেভত্র বিজয়াত্রতমাচরেৎ,।।

अथ विकास विद्या निर्मा क्षित्र । उस्मिश्र स्थाल विद्या । विद्या मा विद्या । विद्या मा विद्या । विद्या निर्मा विद्या । विद्या । विद्या मा विद्या । विद्या ।

অথব্রতবিধিঃ ।। স্বাদে ওরং নমক্ত্য ততঃ সক্ষণসাচরে । শরশার্জনিরং দেবং সৌবর্ণং রচয়েত্রাং ! সক্ষণসন্তঃ । দাদশ্যান্ত নিরাহারঃ ভিত্রাহ্মপরেলনি । ভোক্ষ্যে ত্রিবিক্রনানত শরণং মে ভবাচ্যুত । সোপাবীতন্ত কলসং পূর্ব্ববং স্থাপয়েদুলী । পাত্রং ভদুপরি ন্যাস্যান্ত্রং বৈণবমেব বা। তত্রোপবেশ্য
সংস্থাপ্য দেবং বিষদচন্দনৈঃ । আলিপ্য গুলং বদনং দদ্যাচ্ছত্রঞ্চ পাদুকে ।। ১৫৭।।
বাসুদেবায়েতি শিরঃ জ্ঞাধরায়েতি বৈ মুখং । ক্রফায়েতি চ কণ্ডং বৈ বক্ষঃ জ্ঞাপতয়ে
ইতি । শক্রাজ্রধারিণে বাহুং কক্ষে চ ব্যাপকায় বৈ । গিরীশায়োদরং মেদুং
ত্রৈলোক্যজননায় চ । জঘনং চার্চয়েদিদ্বান্ স্ব্রাধিপতয়ে ইতি । স্ব্রাত্মনে ইতি

অর্ঘ্যসন্তঃ সংগাবেত্যাদিঃ ॥ १৫৫॥

ঘোরইতি স্বরূপনাত্রনির্দেশঃ। উত্থীলনীব্রতমিব জ্বরাব্রতং কার্য্যমিতি তত্র যো বিবিরুক্তঃ সোত্রাপি দ্রষ্টব্যইত্যর্থঃ। বিজ্ञয়াব্রতম্ভ নদ্যাদিসঙ্গমএব কার্য্যং॥ ১৫৬॥ শরং শার্জ্ঞায়ুসং ধারমতীতি তথা তংগ্র ১৫৭॥ অবয়বপূজামন্ত্রং লিখভি বাহ্বদেবায়েতি দ্বাভ্যাং। পূর্ববিৎ

পদাবেবমঙ্গানি পূজায়ে ২ । ৷ ১৫৮ ৷৷ শাজাচক্রগদাপা শারকশারভূষিতং ৷ হাগার্থ্য মরা দত্তং শার্জপাণে নমোন্ত তে ৷ ইত্যর্যাং পূর্দ্ধবং করে। ধূপানীপৌ সমর্প্য
চ ৷ ঘৃতপাকুপ্রধানানি নৈবেদ্যানি নিবেদ্য়ে ৷ তাষ্মূলাদানি দত্যথ করে। জাগারংং
নিশি। প্রাতঃ সাজার্জিরিক্তেশং পূজাক্রিলিনথার্পয়ে ৷ নমস্তে অন্ত গোবিন্দ বুধশ্রবণকংজক ৷ অঘোরং চাক্ষয়ং করে। সর্বাস্থাপ্রদোভব ৷ ইতি প্রার্থ্য ততঃ সর্বাং দত্ত্বা
চার্য্যং প্রতি ষ্য হি ৷ ভক্ত্যা বিপ্রান্ ভোজায়িরা সুখং পারণমাচরে ৷ ৷ ১৫৯ ৷৷
ভাতে মালি বুধস্যান্থি মদিস্যাধিজায়াব্রতং ৷ তদা সর্বাব্রভেভ্যেইস্য মাহাত্মনতিরিচ্যাতে ৷৷ ১৬০ ৷৷

অথ জয়ন্তীব্রতং । বেরূপুরাণে ।। যদা ত শক্রদাদশ্যাং প্রাঞ্গাপত্যং প্রজাদ য়তে । জয়ন্তী নাম সা প্রোক্তা সর্বাপাপহরা তিথিং । সপ্তজনক্তৎ পাপং স্থাপেয়া যদি বা বহু । তৎ ক্ষয়ৎ যাতি গোবিন্দেৎ তস্যামভার্চ্চা ভত্তিতং । ক্ষান্দে চ শ্রীব্রহ্মান্দির স্বাধানে । সর্বাপাপপ্রশাননং সর্বাপ্রাক্তির স্বাধান । সর্বাপাপপ্রশাননং সর্বাপ্রাক্তির হৎকালোজয়ভীবাসরং বিনা । তৎ ধ্রমানুষোৰ হর্ষি নরাণামুগজায়তে ।। ১৬১।।

অথতদূতবিধিঃ ।। গুরুৎ প্রণমা সংগ্রাথ্যি গৃহীয়ানিয়মং রুতী । কুফৈণ্ডিলৈশ্চ মধ্যাক্রে সারাদ্বাত্রীকলেন চ ।। সঙ্গপেমতঃ ।। জয়স্ত্যান্ত নিরাহারঃ খ্যেভূতে পরনেশ্বর । ভোক্যামি পুগুরীকাক্ষ শরংগ্বরণো তবেতি ।। ১৬২ ।। পূর্কবিৎ

সর্বাবের নমঃশক্ষপ্রয়োগে ছিন্তার । পূজ্বেনিজুজ্বেরণ শির্ত্তানীনাং সর্বেশামন্তর । ১৫৮।। অর্ঘ্যামন্ত্রঃ শক্ষেত্যাদি। সর্ববং প্রীয়ৃর্ত্ত্যাদিকং॥১৫৯।। কালবিশেষে চাধ্য ব্রত্যা কলবিশেষং লিখতি ভাত্রইতি তদানীং শ্রীবাননদেবপ্রান্ত্র্তাবাং। এব্সপ্রেপি॥১৬০॥

প্রাজাপত্যং রোহিণীনক্ষত্রং। জয়ন্তীবাসরং তদ্তং বিনেতার্থঃ।। ১৬১।।

গুরুং সংপ্রার্থ্যচ। প্রার্থনাপ্রকারশ্চোক্তঃ স্থান্দে নার্দং প্রতি শ্রিল্লাণা। আদৌ গুরুগৃহং গরা পশ্চানিয়মমাচরেও। শিরস্তৎপাদয়োঃ কৃত্বা পাদৌ স্পৃষ্ণী চ মৌলিনা। কৃতাজনিপুটো ভূত্বা প্রার্থিয়েত গুরুং ততঃ। নিয়মং দেহি বিপ্রেন্দ্র দাদশাক্ষিমম প্রভা ইতি। নিয়মং কলমাপ্রোতি ন শ্রেরাছ্রিরাছ্রিরাছিরেই। তথাচ তবৈর গৃহীয়ানিয়মং পূর্বাং দন্তধাবনপ্রব্রেং। নিয়মাৎ কলমাপ্রোতি ন শ্রেরানিয়মং বিনেতি। এতচ্চ পূর্বালিখিতালুসারেণ একাদশামেবেতি বোদ্ধরাং। অথ দাদশী কৃত্যমাহ কৃষ্ণৈরিত্যাদিনা কৃষ্ণতিলৈর্ধাতীকলেন স্বায়াদিতি পাত্রীকলেন শিরোভাঙ্গং কৃষ্ণতিলৈশ্চ গাত্রপরিমার্জনং কুর্যাদিত্যর্থঃ। তথাচ তবৈর । তথাচ ভবের । তথাত কর্মান্ত সম্প্রাহ্রের্থা প্রস্থাদিত্যর্থঃ। তথাচ ভবের । তথাত ভবের । পূর্ব্বেদিতি জলপূর্ণং নবং কুন্তং চন্দনেন্ট্রের্থা পঞ্চরত্বসমাযুক্তং প্রস্থালাবিভ্বিত্মিতি যথাপক্ষর্কনীব্রতপ্রোক্তং ত্রদিত্র্থঃ। তথাচ স্কান্দের্বং ঘটং। পঞ্চরত্বসমাযুক্তং প্রিরোদ্ধি ভ্রির্থা পঞ্চরত্বসমাযুক্তং প্রবিরোদ্ধি

স্থাপয়ের কুন্তং তদ্যোপরি চ ভাজনং। হৈরণ্যং বাজতং তামুং বৈণবং বা তিলৈভ্তিং।। ১৬৩।। তত্র চ সুপিতং হৈমং দেবনীন্তনপায়িনং। মাতৃবক্তে ক্লকং দেবং নিবেশ্যাবাহয়েছুতী। আবাহনমন্তঃ। এহি এহি জগনাথ বৈকুপ্ত পুরুষোত্তম। পরিবারণণোপেত লক্ষ্যা সহ জগংপতে ইতি।। ১৬৪।। প্রতিষ্ঠাপ্য মনোজ্যোতি-রিতি মন্ত্রেণ বৈষ্ণবঃ। পাদ্যাদীনুপকল্প্যানুলেপনৈরনুলেপয়েৎ।। ১৬৫।। বস্ত্রমুগং সিতং দন্ত্ব। পুলাদীনি সমর্পয়েৎ। দীপান্ প্রজ্বালয়েচ্ছক্ত্যা কুর্যাৎ কুসুমনগুপং। ১৬৬। গীতবাদ্যাদিভিঃ শান্তিপাঠৈঃ স্থোতিশ্চ কীর্ত্তিনঃ। আরভ্যতাশঠঃ পূজাৎ

পুরিতং। সচনদনং গন্ধাযুক্তং কপুরেণ হ্রব।সিতং। হুধূপণাসিতং শুভ্রপ্রপ্রালাভিনোভিতমিতি। তস্য কুম্ভ:স্যাপরি ভাজনঞ্ পাত্রং স্থাপয়েৎ। তদেব নিশিন্ফি হৈর্ণ্যমিতি। তত্র পূর্ব্বপূর্ব্বাভাবে উত্তরে তারং স্থাপয়েদিতি জ্রেয়ং। তথাচ তত্ত্রব। তদ্যোপরি ন্যানেৎ পাত্রং শৌর্বং শ্রহ্মান বিতঃ। তদভাবেন বৈ ৰূপ্যং তামুং বেণুময়ং মুনে ইতি ॥ ১৬৩ ॥ দেবকীস্তনপায়িনমিতি হেমুা ঞ্জিবেৰক্যাঃ প্ৰতিমাং কুত্বা তদক্ষে স্তনপানপরাং শ্রীভগবন্দুর্ন্তিং শাস্ত্রোক্তলক্ষণাং কুত্বা তত্র পাত্রে নিবেশ্যাবাহয়েদিত্যর্থঃ রথস্তুতং স্নপিতং ক্ষীরাদিনা কারিতস্নানং। তল্লকণং কিঞি-ছুল্লিথতি মাত্তর্দ্ধেৰক্যা ৰজ্ঞেক্ষকং মুখুমবলোকয়ন্ত মিত্যর্থঃ। তথাচ তত্ত্বৈব। তদ্যোপরি ন্যাসে-দেবীং হৈমীং লক্ষণদংযুতাং। দদমানাস্ত পুত্ৰদ্য স্তন্যং বৈ বিশ্মিতাননাং। পিৰমাৰ্ত্তঃ স্তনং ভত্ৰ-মাননং পাণিনা স্পন্। অবলোকমান: প্রেমা বৈ মুখং মাত্রমুভ্রুতি।। ১৬৪।। অহ-লেপনৈস্তলসীকাষ্ঠচন্দনমিশ্রিতমলয়জকুক্ষুমকপূরিশগুরুকস্তুরিক।দিপকৈঃ। অফুলেপয়য়দেবং। তথাচ স্কাল্দে তত্ত্বৈব। গুলসীদারু জাতেন চন্দনেন বিলেপনং। কুল্পুনেন মহাজাগ কণু রাণ্ডরু-চর্চিতং। পদ্মকোষীরগলৈশ্চ মৃগনাভি বিমিশ্রিতমিতি। অত্রচ প্রকণ্পায়েদিতি। পূর্বস্লোকস্থ-ক্রিয়য়ান্তয়: ॥ ৬৫ ॥ পুষ্পানি মল্লিকামালভী চম্পকাদীন। আদিশব্দেন গুল্গী মঞ্জীদল-বিলুপতাদীনি। তথা কুগাওনারিকেল ফলাদীনি চ গ্রাহাণি। তথাচ তত্ত্রিব। মল্লিকামালতী-পুর্টেশ-চম্পেটকঃ কেতকो দলৈঃ। বিলুপত্তির থইওশ্চ জলসীদলকো মলৈঃ। ভালৈ নানি বিধঃ পুল্পৈঃ করবীরেঃ সিতাসিতেঃ। যূথিকাশতপত্রিশ্চ তথালোঃ কালসম্ভবেঃ। পূজনীয়োমছাভাগো-মহাভক্তা। জনার্দ্দনঃ । কুয়াটওর্নারিকেলৈশ্চ থর্জ্জানুরের্দাড়িমৈতথা । বীজপুরেঃ পুগফলৈঃ স্থানিষ্পারেঃ স্থাপোভটনঃ। দ্রাক্ষাফলৈর্জ্জাতিফলৈর্জ্ঞাবৃক্ষসমুদ্ধবৈরিতি । ৬৬॥ স্তোত্রাদীনি চ তত্রৈবোক্তানি। শান্তিপাঠং শাস্ত্রপাঠং গীতাপাঠং তৃতীয়কং। সহসুনাম চাত্তর্থংপঞ্চমং গঞ্জ-মোক্ষণং। বালন্য চরিতং বিষ্ণোঃ পঠনীয়ং পুনঃ পুনরিতি। অশঠঃ ভগবদর্চন শুরুপুজাদৌ বিভাদিশাঠ্যহীন: সন্। তথাচ ততৈব। শ্রাদ্ধে দানে তথা পর্বতীর্যক্রতমথেশু চ। বিশুশাঠ্যং ন কুৰ্বীত সৰ্ব্বধৰ্মপ্ৰযোজনে। ভবিষ্যে চ । বিভবে সতি যোমোহাল কুৰ্য্যাদ্বিধিবিস্তরং। ন তৎ-ফলমবাগোতি দেবদোহী দ উচ্যতে। প্রথমং ভক্ত্যা গুরুং সমাত পুরুষিত্ব। পশ্চাৎ পুরুষমার-ভেৎ। তথা স্বান্দে তত্ত্বৈর। অতিক্রম্য নরোযস্ত গুরুং ধর্মোপদেশকং বিপ্রেক্ত স্বেচ্ছ্য়াপুণ্যং कूर्वार्गानव्रकः उत्कर। अजिवामा श्रकः उत्माक्रमंकार्यानि कात्रायर । धर्मामर्थकः कामकः वर्गी-চ্ছেদান্সনোহিতং। দদ্যাৎ স্বভক্তিতোভক্ত্যা গাং মহীং কাঞ্চনং বহু । শুক্লং ধান্যঞ্চ বস্ত্ৰঞ্চ

अङ्गः मः भूषा ভिक्तिकः ॥ ১৬१॥ एदामि शिः (मदकी भूषा । कामिरक (मदमा छत्रुः সর্কপাপপ্রণাশিনি। অত্তর্ধ পূজায়িধ্যামি ভীতো ভবভয়স্য ত ।। পূজিতাসি যথা দেবৈঃ প্রসন্না স্থং বরাননে ।। পূজিতা মে তথা তক্ত্যা প্রসাদং কুরু সুব্রতে। যথা পুত্রং হরিৎ লক্ষ্য প্রাপ্ত তে নিব্তিঃ পরা। ভামেব নিব্ভিং দেবি স্বপুপ্রাৎ मर्गा अञ्चल । मा खाली तन मर शृक्षा प्रविको १ क्रम्भ मर्ज ( ३० ७ मने । क्रा शाय १९ **७ रैमा** পূর্ববদপরিং। তত্র পূজামন্ত্রঃ।। অবতারসহস্যুণি করোষি মধুসূদন। ন তেও সংখ্যাবতারাণাৎ কন্চিজ্ঞানাতি বৈ জুবি। দেবাব্রহ্মাদ্যোবাপি স্বরূপৎ ন বিদু-ন্তব। অতস্থাং পূজ রষ্যানি মাত্তকংশঙ্কসংস্থিতং। বাঞ্ছিতং কুরু মে দেব দৃদ্তং চৈব নাশার। কুরুষ মে দয়াং দেব সংসারার্ভিভয়াপহেতি ।। অর্ঘ্যমন্তঃ ॥ জাতঃ কৎসবধার্থায় ভ্ভারোভারণায়চ। দেবতানাৎ হিতার্থায় ধর্মসংস্থাপ-নায় চ। কৌরবাণাং বিনাশায় দৈত্যানাং নিধনায়চ। গৃহাণার্ঘ্যং ময়া দন্তং দেবক্যা সহিতোহরে ইতি ।। ১৬৮ ।। ছর্ঘ্যনাহাত্মঞ্জ স্কান্দে ভতৈবে । पढ़ा ह नकनामूक्षी र ननागत्रना निर्हार । कर्यामातन ७९ शूगार निर्हाण नाना । জুর্বাভি।। ১৬৯।। প্রদাপো সমর্পাথ নৈবেদ্যং বিবিধৎ শুভং। ফলানি চ বিচিত্রাণি ভাষুলাদীনি চাপ্য়েং।। ১৭০।। ক্সানীরাজনং গীতং নৃত্যাদুঃৎসবমা-চরন্। कूर्यताङ्कागद्रभः कृष्ण वानानीनांकथा दिना ॥ ১१১॥ उत्ताशाङ्कागद्रभः करिन उटेजव। কাগরে পদানভিদ্য পুরাণং পঠতে ত যং। জন্মকোটিরতং পাপং দহতে ভূলরাশিব-দিতি।। ১৭২।। প্রতিঃ কৃত্বা ক্রিয়াৎ নিত্যাৎ তল্মুন্তিৎ গুরবেইপ্রেই। বস্তা-

ভূবণং মধুরং বচঃ। ততঃ পূজা বিধাতব্যা দেবক্যা কেশবস্য চেতি।। ১৬৭।। অনেন অদিতে ইত্যাদিনাদী দেবকীং সংপূজ্য ততঃ ক্ষমং পূজ্যেং। স্বমাতৃকায় দেবকীসহিতায়। তথাচ তবৈব। ক্ষায় প্রথমং দদ্যাৎ দেবকীসহিতায় চ । অর্যাং মুনিবরশ্রেষ্ঠ সর্বকামফলপ্রদামিত। অতএব মন্ত্রেপি দেবক্যা সহিতোহরে ইতি। মন্ত্রবিশেষশ্চ ততৈব। শ্রীকৃষ্ণায় দেবকীসহিতায় সগণায় সপরিবারায় লক্ষীসহিতায় অর্যাং নমইতি। পূর্ববেং ইতি নারিকেলেন শুভেণেত্যাদিকং যৎপক্ষবর্জনীব্রতাদাবপ্যক্তং তদম্সারতঃ পূজ্যাদিসহিতং শুভনারিকেলশসং শব্ঘে নিধায় তেনার্যাং দদ্যাদিত্যবিং॥ ১৬৮॥ নকলাং পৃথীং দত্ত্বা যৎ পুণ্যং লগুতে তদর্যাদানেন লগুতে ইত্যর্থঃ॥ ১৬৯॥ বিবিধং ঘৃতপকৃপায়সাদ্যনেকপ্রকারং শুভং পরমোৎকৃষ্টং ফলানি চক্ষাপ্রাদীনি তানি কান্দোক্তানি লিখিতান্যের আদিশব্দেন দর্পণছব্রচামরাদীনি॥ ১৭০॥ কৃষ্ণায় বালালীলায়াং কথা কথনং তদাদিনা। আদিশব্দেন তজুবণাদি প্রৌচলীলাকথাদি চ। তথাচ তবৈব বালস্যাচরিতং বিষ্ণোরিতি লিখিতমেব। কিঞ্চ জ্বাগরণপ্রসঙ্গে। চরিতং দেবকী-স্নোব্যাদিহেৎ তদ্বিতি॥ ১৭১॥ দহতে দহতি। তুলরাশিবদিতি যথাগ্রিস্থলরাশিং সদ্যোদহেৎ তদ্বদিত্যর্থঃ। হরতইতি পাঠেপি তবৈবার্থঃ। যদ্বা বাযুর্যথা তুলরাশিং হরতীতি॥ ১৭২॥ তাং মুর্তিং প্রকার্শিতাং প্রতিতাং। শ্রীদেবকীসহিতাং ভগবৎ প্রকৃতিং। এবং বিক্র্কানং

দিকং দক্ষিণাঞ্চ দত্ত্বা কুপ্নতি পারণং। কিঞ্চ তত্তৈব। বিধিনানেন সংযুক্তাং জয়ন্তীঞ্চ করোতি যা। নামীবোদ্ধরতে ভক্ত্যা পুরুষানেকবিংশতিং। সংক্ষেপেণ চ যা কুয্যা-জ্ঞয়ন্তীৎ হরিবল্লভাং। মানসেউফলংপ্রাপ্য বিষ্ণুলোকং সগত্ততি।। ১৭৩।।

অথ পাপনাশিনীব্রতং। ত্রহ্মপুরাণে ততৈব। যদাতু শুক্ল দ্বাদশ্যাৎ পুষ্যা ভবতি কহিছিৎ। তদা সা তুমহাপুন্যা কথিত। পাপনাশিনী। সগরেণ ককুংস্কেন ধুর্মমারেণ সাধিনা। তস্যামারাধিতঃ ক্ষোদ্রবানথিলাং জুবং। বাচিক্মোনসাং পাপাৎ কায়িকাচ বিশেষতঃ। সপ্তজ্মক্তাদ্ঘোরাল্যুচ্যতে নাত্র সংশ্রং। ইমানকা মুপোষ্যির পুষ্যানক্তা সংশূতাং। একাদশী সহসূদ্য ফলমাপ্যোতি মানবং! স্নানং দানং জপোহোমঃ স্বাধারো দেবতার্চনং । যদস্যাং ক্রিয়তে কিঞ্জিন্তদনন্ত-শুণং ভবেং। তক্ষাদেষাপ্রয়াহন কর্ত্ব্যা ফলকাজিক্তিঃ।

ক্তমন্ত্ৰীতিবোদ্ধব্যং। তচ্চ সৰ্বত্ত সাধারণতয়া প্রাপ্তত্ত্বাৎ ন স্পান্টং লিখিতং। আদিশব্দেন শক্ত্ৰো কুওলকঞ্জুকোন্টাষমুদ্ধিকাদি॥ ৭৩॥

মায়কেণ অবর্ণস্যেতি জ্বেরং ।। হৈমমিতি বিশেষণাৎ। ক্তং বিনির্দ্দিতং ।। ১৭৪ ।। বিশোদ্দার নম: ইতি চরণো যঙ্গেৎ পূজ্যদিতান্তরেণাশ্বরং। এবং পূর্ব্বব্ধ সক্ষত্তিবোলেয়ং। অভোদ্

ধনং ধান্যঞ্চ সম্পদঃ। সৌভাগ্যৎ তব ভক্তস্য সন্তানং বিপুল্প ভবেং। সর্বান্ কামানাপু বানি দিব্যং সৌখ্যং নিরস্তরং।অস্তেপান্ত মমেশান ভক্তিস্করণে প্রভাগ জনার্দ্দন হাধীকেশ লক্ষ্মীনাথ সুরার্চিত। রাম রাম মহাবাহে। কার্ত্বীর্য্য বিনাশন ।। ১৭৫।। এতং সর্বাং ময়া ৭তঃ জ্ঞানৎ জ্বেং তবাচুট্ট। মালুদ্ধর জগন্নাথ দয়াং কৃষ্মা মমোপরি।। ১৭৬।।

অথ ধারীপূলা। পিতা পিতামহাশ্চান্যে অপুতা যে চ গোতিলং। বৃক্ষযোনিং গতা যে চ যে চ কটি স্থ মাগতাং। রৌরবে নরকে যে চ মহারৌরবসংক্রকে।
বিয়োনিং চ গতা যে চ যে চ ক্রেলাণ্ডমধ্যগাং। পিশাচত্ত্বং গতা যে চ যে চ প্রেভ স্থ মান্
গতাং।তে পিবস্তু ময়া দত্তং ধাত্রীমূলে সদা পায়ং। তে সর্বে তৃপ্তিমায়াদ্ধ ধাত্রীমূলনিষেচনাং। ইতি ধাত্রীং চাভিষিচ্যুবারানফৌত্ররং শতং। তাঞ্চ প্রদক্ষিণীক্ষত্য কুর্য্যাজ্ঞাগরণং ব্রতী। প্রাতশ্চ দেবং নীরাল্য নিত্যং কর্মা সমাপ্য চ ।। মূর্ভ্যাদি
গুরবে দন্তা প্রাগৃৎ পারণমাচরেৎ। ফাল্গুণে মানি যদেয়ে। দ্বাদশী পাপনাশিনী।
ভবেত্রদা ব্রতস্যাস্য মহিমা স্যাদ্বিশেষতং ।। ১৭৭ ।। ইতি ক্রমেণ লিখিতং বিজয়াদি ব্রত্রেয়ং। শীভবিষ্যোত্তর স্কান্যভাগং শীব্রন্ধাগুপুরাণতং ৷৷ ১৭৮ ৷৷ অন্যেশি
দ্বাদশী ভেদা বহবং সন্তি বিশ্রুতাং । অপ্রতোলেখনীয়ান্তে তত্র্মাস প্রসঙ্গতঃ ৷৷
ইতি শ্রীগোপালভ উবিলিখিতে শীভগবদ্ধ জিবিলাসে বিফুব্রতোৎসবোনাম ত্রয়োদর্শবিলাসং ।৷

ৰতেতি শব্দোনান্তি তত্ৰ সোধ্যাহায্য ইতি। যত এতে সৰ্বে মন্ত্ৰাইতি। তং ঞীপরশুরাম-ৰূপং ॥ ১৭৫॥ জ্ঞানাদিকঞ্চ সর্বাং তব স্তভ্যুৎ দত্ত্যানিতং ॥ ১৭৬॥

প্রাথং শক্তা ব্রাহ্মণভোজনাদিন। ।। ১৭৭। বিজয়াদিবত ত্রয়ং তওঁছিবিঃ ভবিষ্যান্তরাদিতোলিথিত মিতি তত্রত ত্রোক্তং সংক্ষিপ্যার্থতোলিথিতং নক্ত তত্ত্বতনানি সংগৃহীতানি প্রস্থানিত্যর ভয়াদিত্যর্থঃ। অতএব তত্ত্বছিবিলিখনে ভবিষ্যাে তর্হত্যাদিকং নোল্লিখিতং ক্রমেণেতি। ভবিষ্যাে তরতোবিষয়াব্রতং ক্ষন্দপুরাণাজ্জয়ন্তীব্রতং ব্রহ্মাণ্ডপুরাণাচ্চ পাপনালিনীব চমিতি।। শন্পে মৎস্যানিষ্যান্ত্রানাাল্ডা। ইতিত্রে দেশঃ

## চত্তদ'শ বিলাদঃ।

জগত্যেকগতিৎ নত্ত্ব। হীনার্থাধিকসাধকং । চৈতন্যদেবং লিখ্যন্তে নাস-পূজামহোৎসবাং ॥ ১॥

অথ নাসক্ত্যানি। আগ্রহায়ণিকোনানোনাসের প্রবরঃ স্মৃতঃ। নাসানাং নার্গশীর্ষেরিতিয়াঃ সনিয়নং ক্তাঃ। নাঘাদাবিব নার্গেইন্মিন্ ভগবড়ুক্তিভূতিদাঃ।। ৩।। তলসীকাননে পূজ্যো নার্গে মাসি বিশেষতঃ। ভগবাস্ত্যগীতাদিমহেন সহ বৈষ্টবঃ।।৪।। বিশেষতঃক নাসেইন্মিন্ বস্ত্রং শীতনিবারণং। চিত্রং ভগবতে দদ্যাজ্জগভ্যাত্যহরং হিতং।। ৫।। কিঞা বিশ্বুধ্যো । নার্গশীর্ষে ত্বেকভক্তং ক্রা যোহভ্যন্তিরেলারিং। ভোজ্যির। দ্বিজালুক্তঃ স্যাদিত্যাহ কলিপ্রিয়ঃ।। ৬।। নক্তং ব্রতেন যোলাসং মার্গশীর্ষে হরিপ্রিয়ং। নয়েদ্সী নরোযাতি বিশ্বুলোকং

ত্রত্ব প্রতিষ্ঠানাং প্রতাহরত্যানি প্রতিসক্ষরত্যানি চ লিথিত্বা অধুনা প্রতিসাসর্ত্যানি লিথিতং প্রমপ্তর্কীতগবন্ধাহায়্যেনৈর তৎ সিদ্ধাতীতাভিপ্রেতা তরমকারপূর্বকমারভতে অগতীতি প্রীতগবন্ধাহাল্যমের দল্পতি অগতীনামেকামনন্যং গতিং শরণং । নচ গতিমাত্রণ কিন্তু হীনানাং সজ্জন্মকর্মাহীনানামতিনীচজনানাং যেহর্থাঃ প্রয়োজনানি ধর্মাদয়োবা তেযামধিকং যথাস্যাত্তথা সাধক্মিতি। মাসেষু ভাদশস্থ যে ভগবংপূজাধিশেষৰূপামহোৎস্বাস্থে ।। ১॥

ত্ত্রাদৌ মার্গশীর্ষমাসস্য ক্ত্যানি লিখন্তস্য সর্ব্যাসাদ্যতাং দর্শয়ন্ ত্রাহার্যং লিগতি আগ্রহায়ণিকইতি হায়নস্য সন্থশরস্য অগ্রবিদ্ধিন্দার্গ্রাইনিকইতিবাৎপঞ্জা সর্ব্যাসাদ্যম্মেন দিল্লং তৃস্য শৈর্যাস্থানিকইতি হায়নস্য সন্থশরস্য অগ্রবিদ্ধিতি । ত্রহেণ্ডঃ মাসানামিতি । যঃ আগ্রহায়ণিকঃ নাধ্যনে মধুকুলসমুক্রচন্দ্রেণ স্বয়মের বিভূত্যধ্যায়েউক্তঃ ॥ ২ ॥ ত্রাদৌ শীভগবিভূতি-ত্বেন তৎপ্রিয়ত্রা মাঘাদিসাদৃশ্যাৎ মাঘাদিক্ত্যানাং স্নানাদিসংক্রণাস্ত্রাপ্যাচরণাৎ কল-বিশেষং স্যাদিতি পুরাণোক্তমার্গশীর্ষমাহাল্যান্ত্র্যারেণ লিখতি স্নানেতি। ব্রতং ভক্ষ্য দিনিয়মঃ। অর্চা ভগবিভূত্যা আদিশক্ষেন ভগবদ্যান্ত্রা বৈক্ষবসঙ্গমাদি । সনিয়মং স্বঙ্গলগাং স্নাহরণ বা যথা স্থাৎ। আগ্রা শৈধিল্যসম্ভবাৎ। ভগবদ্ধক্তিং ভূতিঞ্চ সম্পদং যদ্বা ভগবদ্ধক্তিরপাং লক্ষ্যীং দদ্যতীতি তথা তাঃ॥ ৩॥ ইদানীং তত্র ক্ত্যবিশেষং দর্শগ্রি জলসীতি দ্বাভ্যাং। বৈফবৈঃ স্বচ্চ হত্যগীতাদিরপোয়োমহোৎস্বস্থেন ভগবান্ পূজ্যঃ ॥ ৪॥ চিত্রং বন্ধপ্রকারকং॥ ৫॥ মুক্তঃ স্যাৎ শ্রীবৈকুণ্ঠপ্রাপ্ত্যা পুনঃ সংসারবন্ধাভাবাৎ। কলিপ্রিয়ঃ শ্রীনারদঃ॥ ৬॥ অধুনা তত্র ক্রত্যং

সনাতনমিতি। ক্রমাদাশাবভারাণাং মংশ্যাদীনাং সিতাসু চ। যন্নার্গাদিয়াদাশী বু ব্রতং দুর্বাসসোদিতং। গৌতনীয়তন্তে। মার্গাশি হিত্যা মাসি প্রাতঃ শুজা নরো-ড্রমা ক্রমপূলাং সনাসাদ্য জপছোমৌ তথা চরেৎ। পায়সং গুড়সংমিশ্রং প্রভাহং বিনিবেদয়েৎ। এবং মাসার্চানং ক্রহা ভবেড্রাগ্যধরঃ পুমান্। দেহান্তে মোক্ষমা-প্রোতি প্রসাদাং শার্কা, ন্তনং। তৎ কার্যাৎ তত্র ভত্তব জ্বাত্বা বারাহতোবিধিং। তত্তৎ ফলঞ্চ ভব্রোক্রং কামাত্বাত্তর লিখ্যতে। তথাচ দশমে। হেমান্ত প্রথমে নাসিলদগোপকুমারিকাঃ। চেরুহবিষ্যং ভুঞ্জানাঃ কাত্যারন্যর্চন ব্রতং ।। ৭।।

অথ সাঘরত্যং । পালে মাঘ্যাহাত্ম্যে বিদ্যাধর ধ্রুবসংবাদে । মাঘ্য মাসি কুরু সান্ধ্যানিকূট নদীজলো ঋষি সিদ্যানু রৈজু টেকথয়ামি চ তদ্বিধিং। তব ভাগ্য বশায়াঘে নিকটঃ পঞ্চমেংহনি। পৌষ্টস্কাদশাৎ শুক্রামারভ্য স্থিতিনেশয়ং। মাস

শীবরাহপুরাণোক্তং মৎসাদাদশীব্রতমুদ্দিশন্ তৎপ্রসঙ্গাৎ সাম্যেন ছাদ্দমাসব্রহানামেব ক্তাতা সংক্রেপেটাকত্র এব লিখতি ক্রমাদিতি দ্বাতাং। শীমৎস্যাদীনাং দশাবতারাণাং ক্রমেণ মার্গদীবাদিদ্বাদশমাসের । তথা শীপদ্মনাভস্যাপ্রিনে শীযোগেশ্বস্য চ কার্ত্তিকে ইত্যেবং মার্গ-শৌর্বাদিমাসের শুক্রদাদশীয় দুর্বাসেনা মুনীশ্বরেণ যদ্রতমূক্তং তত্র তত্র তাতে বিধিং শীবরাহ্প্রাণতাজ্বাত্বা তৎকার্যমেব বৈষ্ণবৈঃ বিষ্ণুব্রত্বাহ। অতথব তদ্য কলং। যদ্বা অনির্বাচনীয়ং কলং তত্র বারাহে উক্তং দুর্বাদিশৈব। নমু তার্গত্ত্ব তং কলঞ্চ বিষ্ত্র্যা লিখ্যতাং তত্র লিখতি, কাম্যাদ্বিত। প্রায়োহত্র প্রস্থে বিষ্ণুব্রতানামাবশাক্রতাদ্যেব লিখনাহ। অত যন্তদিত্যাদৌ বীপ্রায়া অভাবেপি ব্রতানাং বহুত্বাত্ত্বা তত্রত্ত্ত্তাদৌ বীপ্রা প্রয়োগাজ্যান্তাপি বীপ্রায়ান্বিত্রিগ্রেতি। ৭।।

স্থানিশায় ভূমিশায়ী সন্।। ৮।। দধ্যোদনেন তদর্পণেন তদ্রপোষা উৎসবোষন্যাং তাং করেঃ পূজাং করে।। ৯।। স্থতঃ স্থতাঃ ভক্তিঃ বৈষ্টবং সমং গীতাদিভিদ্ধিমিত্রিতং ভক্তং নয়েৎ ভগবদগ্রে সমর্পণায়। প্রসাদং উচ্ছিউরপং তথা ১০॥

মাঘক্তাং চাখিলং পদ্মপুরাণাদৌ ব্যক্তনেকতৈবোক্তত্বাৎ পূর্ব্বদর্থতঃ সংগৃহ স্বয়মনিখিত্বা
তপ্তত্বচনৈরেব লিখতি সম্প্রাপ্ত ইত্যাদিনা প্রীয়তামিত্যন্তেন। সংকার্য্যাঃ সংমাননীয়াঃ। অগ্রতো

মেকং নিরাহার স্ত্রিবারং সানমাচরেৎ। ত্রিকালসর্চয়ে দিফং ভ্যক্তভোগো জিতেন্দ্রং। माघरेनाकामभी शकार याविष्णाधाताखान्व। भाष्य श्रीप्रखात कार्खवीर्या সম্বাদে। সংপ্রাপ্তে মকরাদিতেঃ পুণেঃ পুণাপ্রদে সদা। সং কার্য্যান্তিথয়ঃ সর্কাঃ স্নানদানাদিকৈ: সদা ।। ১১ ।। কর্ডব্যোনিয়ম: কশ্চিষ্টুতরপী নরভূমৈ:। ফলাভি-শয়হেতোকৈ কিঞ্জোজ্যং ত্যা অধুধঃ। ভূমো শয়ত হোতব নাদ্যৎ তিল-বিমিজিভং৷ ত্রিকালৎ চার্চ্চয়েনিত্যং বাসুদেবং সনাতনং ৷৷ ১২ ৷৷ विशामीभारकार्थात्मवमूष्मिगा भाधवः। देखान् कञ्चलः वञ्चमूभानः कृक्षूमः घृष्ठः। रैकतः कार्भामरकाषक जूनी जूनवजीः भिन्। जन्नरेकव यथामाञ्चि रमग्र मारघ নরাধিপ। স্বর্ণার বিকামাত্রং দদ্যাছেদ বিদে তথা । পরিসায়িং ন সেবেক ভাজেদিপ্রঃ প্রতিগ্রহং । নাঘাতে ভোজয়েদিপ্রান্ যথাশক্তি নরাধিপ। দেয় চ দক্ষিণা তেভ্য আজুনঃ শ্রেয় ইচ্ছতা ।। ১৩ ।। একাদশীবিধানেন মাঘস্যো-म्। श्री १ ७ था । कर्खवार अम्पर्शातन अक्षय्य श्री विष्या ।। ১৪ ।। वरवी बार्च शाविन्ताहू जिसाधव । जातिनातन य एव यथां उक्क कारता छव । हे म्र নত্রং সমুচ্চার্য্য সাহাকৌনং সমাশ্রিতঃ। বাসুদেবং হরিং বিষ্ণুং মাধবঞ্চ স্মরেৎ भूनः ।। ১৫।। किश्रः। উष्मिन वादिना मुन्नः राम्ग्ट्र क्रिय़ ए नर्देवः। यज्यस्य मन् তিদ্ধি মকরত্তে দিবাকরে। বহিঃ শানস্ত বাপ্যাদৌ দ্বাদশাক কলং সমূতং । তড়াগে দ্বিও । দশধা দেবখাতে ত শত্রী ও মহা-নদীং। শতক্ষত্ত গণ রাজন্ নহানদ্যাত্ত সঙ্গমে । সহসূত্ত তিং সর্বং তৎ ফলং মকরে রবৌ। গঙ্গায়াং সানমাত্রেণ লভতে মানুষোদ্প।। ১৬।। শতেন গুণিতৎ মাবে नङ्गु तास्न तस्य । निर्मिष्ठे मृति ভिः नानः शक्रायागून नक्षरम ।। ১१।। किथः। অপ্রাবৃত্তশরীরস্ত যা কটং সানমাচরেৎ। পদে পদেশ্বমেধস্য ফলং প্রাপ্তোতি মানবং। ভবিষ্যোত্তর চ জীভগবদ্ধু হিন্তিরসন্তাদে। পৌষ্ফাল্গুণয়োর্মধ্যে প্রাতঃ

যথা শক্তী তাু জুন সর্বার তবৈধ বেংলাবাং শান্তেম্প্রান্যাং বিধেয়বাং । আদিশকাং কিঞ্জিদ্ধক্য ভাগাদি ॥ ১১ । তদেবাভিবাঞ্জাতি কর্ত্ববাইতা দিনা। নিয়মনেবাই কলেতি ছাভাাং। কিঞ্চি-ছোজ্ঞাং তাজেদিতি নিতাং প্রবৃত্তানাং ভক্যাণাং মধ্যে কিঞ্জিন্তাক্রেদিতার্থং॥ ১২ ॥ অথপ্তঃ অংহারাত্রমাস্ব্যাণী ॥ ১৩ ॥ উদ্যাপনং অজ্জির্বচনাদিনা নিয়মসমাপ্রমেব নপ্ত পুন্র্যায়ব্রভাকরণাল্লকং। একাদশীত্র হব ত্তম্য নিত্যন্থাং তচ্চাত্রে ব্যক্তং ভাবি ॥ ১৪ ॥ তত্র স্নান্তিধৌ বিশেষমাহ। মকরস্থতি ছাভ্যাং। গোবিক্তে আদিনা ভক্ত্যা পুনং পুনং সম্বোধনং। স্নানে নাম কীর্ত্তনিবিশেষোরা। তথা বাস্থাদেবমিত্যাদীনি চ নামানি স্মরেৎ মনি জপেৎ লঘু লঘু কীর্ত্তনিবিশেষোরা। তথা বাস্থাদেবমিত্যাদীনি চ নামানি স্বারেৎ মনি জপেৎ লঘু লঘু কীর্ত্তনিবিশিত বা। পুনরিতি মুছ্রিভার্ম্বং ॥ ১৫ ॥ মহানদীং প্রতি ভন্যামিত্যর্থং॥ ১৬ ॥ শতেন-ছাণিতং সহসুলক্ষ্যিত্যর্থং ॥ ১৭ ॥ অপ্রার্তশ্রীরত্বক্ষ স্নান্যকৃপ্যং স্নান্র্বপ্রমন্তারভা

न्। त्री गम छदद ।। ५ ।। তত্র চোথার নিয়মং গৃহ্বীয়াদ্বিধপৃধ্বকং। মাঘ্নাদ্বিদং পূর্ণ সাংসাহৎ দেব মাধব। কিঞা। অপ্রাবৃত্তলরীরস্ত যঃ রুৎ দুং সানমাচরেৎ। বেদোজবিথিনা পার্থ সূর্যাস্যার্থাং নিমেরেং। পিতৃন্ নন্তর্প্ত তির্ভ্তঃ নমুন্ত্রীর্ষ্ত জনালয়াং। পদে পদে মামেরস্য ফলং প্রাপ্রেটি মানবং। ততঃ সাজা শুভে তীর্থেদ্দার। পার বৈ মৃদং। ইউং দেবং নমফৃত্ত্য পূজ্রেয়াধুমূদনং। শুজাচক্রধরং দেবং নাধবং না প্রায়েং। বিহ্নং ভজা বিধানেন তত শৈকমনা ভবেং। তিলামলফলানের তীর্থে দেরপ গোময়ং। তথা প্রজ্যালয়েদ্বিহ্ণং নিংশীতার্থা দিজলনাং। ভোজনাবিত্রপালয়েং। পূজ্রেচ বিলেপনৈং। ক্যলাজিনর লানি বাসাংসি বিবিধানি চা। ১৯।। চৈলকানি চ দেরানি প্রভাদনপটেন্তর্থা। উপানহো তথা রাজন্ মাধ্যালন দাপরেং। তানেন বিবিধান রাজন্ মাধব্য প্রার্তামিতি।। ২০।।

্তি আৰু সাদ্দানস্য নিত্যন্ত্রং। ভবিষোত্তরে তত্তিব। প্রাংগং পুরুষ্ণ, প্রাপ্ত করুক্তেত্রসংগাপি বা। যত্ত বা ভত্ত বা শুরাঝায়ে নিত্যমিতি জ্বিভিঃ। কিঞ্চ। অবশ্যানিতি কর্তব্যং সাদস্যান্থ অথাবিধি । পাছে। অকালোবা সকামোবা মাবসারী ভবেরতা । বিজ্ঞা ভটি ব জিল্টাতেরকার্ডবীর্যসন্ধানে। অমাবসারিনাং নুনাং নিক্তবং জ্বাকীর্ত্রন্থ। অসুর্য্তির বং যাদচন্দ্রমুদ্ধগুলং। ভরম ভাতি সৎকর্মানায়ন্দ্রন্থ ক্রিন্থ। অসুর্যান্থ বং যাদচন্দ্রমুদ্ধগুলং। ভরম ভাতি সৎকর্মানায়ন্দ্রমান নিল্লাইব ভোগের পুরিভাইব অর্যু। জারতে মর্লাইর মাঘ্দাবিবিজ্ঞিতাঃ ।।২১।। কিঞা আভ্রানতপোভিন্ত ন তথা প্রীয়তে হরিঃ। নাঘে মাজন্মাত্রেণ ম্বাণ প্রাণ্ডি মাধ্বঃ । কিঞা প্রতিরে বাসুনেবস্য মাবস্থিব প্রকীর্তিতং।।২২।। ।

অথ ভত্রাধিকারিনির্ণয়ঃ পাছে তত্ত্ব। স্কেইথিকারণোইত বিমুভ্রে যথানুপ। সর্কেষাং স্বর্গনোই সর্কেষাং পাপনাশনঃ ।। ২০।। অভএব ভবি-ব্যোভরে তত্ত্বব। ব্রহাচারী গৃহহুক্ত বানপ্রস্থোধ ভিক্ষুকঃ । প্রাতঃ সর্কে প্রশংযভি দল মাঘদ্য মজ্জনং ।। ২৪।। বালান্তরুণকাবৃদ্ধা নরনারীনপুংসকাঃ। সুদ্ধা
সাধং শুভে তীর্থে প্রাপ্রতীপ্নিতং ফলং। বাল্লাণ্ড ক্রিয়োবৈশ্যোমন্তবং স্নানমাচরেং। তুকীমেব তুক্তুসা জ্ঞীলাঞ্চ কুড়নন্দন।। ২৫।।

তপ্ৰাৰ্থি গৃহাগসনপৰ্যান্তমা বোদ্ধবাং॥ ১৮॥ মাঘ্যাসমিতি মাঘ্সানাইন্তে সঙ্কংপবিশেষো দশিতঃ। তত্ৰ স্থানবিধিক সংঘার্ণএবেতি নাত্ৰ লিখিতঃ॥ ১১॥ টেলকানি কস্থাদীনি। মাধ্বঃ প্ৰার্তামিত্যনেন বিধিনা দাপয়েৎ দদ্যাৎ॥ ২০॥

পুত্তিকাঃ স্থাকীটবিশেষাঃ সদ্যোজনামর গাঃ। এবং মাঘ্যানাভাবেন জনাকর্মাদিবৈকল্যা নিতাত্বং সাধিতং॥২১॥ অধুনা ভগবস্তোবণত্বাং প্রমনিত্যত্বমাই ব্রতেতি সাক্ষেন। ২২॥ অত মাঘ্যানে। বিষ্ণুভক্তাবিভি দৃষ্টাস্তেন মাঘ্যানস্যাপি বিষণুভক্তিত্বন্ভিপ্রেতং॥ ২৩॥ প্রতর্মজ্বং॥২৪॥ নরঃ পুরুষঃ॥২৫॥

অথ নাঘনাহাত্মাং। তত্র কাত্যায়ন:। মাঘনায়ী নরে। যং স্যাদ্ধতিং নৈব পশ্যতি। তল্লান্তি মানুষে লোকে কিলিখং যন্ন শোধরেং। ভবিষ্যোভরে ভবৈৰ। মাঘমানে রটন্ত্যাপঃ কিঞ্চিদভূষ্ণিতে রবৌ। ব্রহ্মত্বং বা শুরাপয়া কম্পতন্ত্রং পুনীমছে। প্রাসাদা যত্র সৌবর্ণাঃ স্ত্রিয় কাপ্সরসোযথা। দধিকুল্যা তথা যত্র নদ্যঃ পায়সকদ সাঃ। তত্র তে যান্তি মজ্জন্তি যে মাঘে ভাস্করোদয়ে। কিঞ্চ। পিতা পিতা-মহৈঃ সার্দ্ধৎ তথৈব প্রশিতামহৈঃ। মাত্মাতামহৈঃ সার্দ্ধৎ বৃদ্ধমাতামহৈতথা। একবিংশতিকুলৈঃ সার্দ্ধং ভোগান্ ভুক্ত্বা যথেপ্সিতান্। মাঘমাসুষ্পি সাজা বিষ্ণু-লোকং সগচ্ছতি ৷ যোমাঘনাসু যিসি সূর্যকরাভিতামে স্নেৎ সনাচরতি চারুনদী-প্রবাহে। উদ্ভঃ সপ্তপুরুষান্ পিত্মাত্তশ্ত স্বর্গং প্রযাতঃমলদেহধরোনরোসৌ। সৌপর্নে শ্রীদারদেক্রসম্বাদে। দুর্লভোমাঘমাসস্ত বৈষ্ণবানামতি প্রিয়ং । দেব-তানাম্বীলাঞ্চ মুনীনাৎ সুরনায়ক। বিশেষেণ শচীনাথ মাধবস্যাতি বল্লভঃ। অধিকোনাঘ্যাসম্ভ মাসানাত্ত শচীপতে। পৌৰ্যান্ত সমতীতায়াৎ যাব্দ্ববিভি পূর্ণিম।। মাঘ্নাদ্স্য দেবেক্ত পূজা বিষ্ণোবিষধীয়তে । স্থানং বিলেপনং ধূপং নৈবেদ্যাদিচ শক্তিতঃ। মাঘমাসকৃতং বিকোঃ শর্কাৎ ভবতি চাক্ষয়ং । মাসার্দ্ধৎ বা সমগ্রস্থা দশাহং বা তদর্জকং । যথাশক্ত্যা হরেঃ পূজাৎ কুর্মায়াগোতি তং-পদং। ফ্রান্দে ব্রহ্মনারদগ্রাদে। মাঘ্লানস্য মাহাত্ম্যং শৃণু ভাগবভপ্রিয়। ত্বৎসমোনান্তি লোকেহন্মিন্ বিষ্ণোর্ভক্তোমহামুনে ॥ ২৬ ॥ চক্রতীর্থে হরিং দৃষ্ট্য মগুরারাঞ্ কেশবং । যথ ফলং লভতে জন্তর্মাঘর্মানেন তথফলং । জিতে ক্রিয়ঃ শার্মনাঃ সদাচারেণ সংযুতঃ। শানং করোতি যোমাঘে সংসারী ন ভবেৎ পুনঃ। ওঁকারঃ সর্ববেদানাং যথাদৌ পরিগীয়তে । তথা বিষ্ণুব্রতানান্ত মাঘুদানং মহামুনে ইত্যাদি। কিঞ্চ তত্রৈৰান্যত্র । মনসাপি চিকীর্ষ্টি মাঘুদানস্ক যে নরা:। তে ঘোরং ন প্রযাস্যন্তি সংসার দুংখসংকুল । সৌরিমার্গং মহাঘোর । যমদৃতান্ খনভথা। স্বংশুপি নহি পশ্যতি মাঘ্যানরতা নরাঃ। খদীচ্ছেছিফুনা বাসৎ সুত ন্ नम्भाषानः। भाषन्तानः जमा कार्याः वर्षि वर्षे व नातम। अर्जान रेवक्षवनीक মনসাপি চিকীর্যন্তি। তত্তাস্য বিলয়ৎ যান্তি পাপৎ জন্মশতোদ্ভবং।২৭। মাঘ্যানং নরঃ কল্পা সদা দান্তমনা ব্রতী। প্রাপ্যেতি চ পদং বিষ্ণোঃ স্থানং ত্রৈলোক্যবন্দিত্য। কৃষা ভূরি মহাপাপং জ্ঞানতো২জ্ঞানতোপি বা। মাঘদু:নেন বিপ্রেন্দু দহ্যতে তূগ-রাশিবৎ। কর্মণা মনসা বাচা হৎ পাপং সমুপাডির্ডিতং। দহততে নাত্র সন্দেহে। মাঘ-সানেন নারদ। সানিৎ দানং অপোছোমঃ সমুদিশ্য জনাদ্দিং। নরৈর্থৎ ক্রিয়তে সাঘে তদনন্ত ফলং সমূতৎ ।। ২৮ ।। বিভবে াতি যোমোহার কুর্যাছিধিবিস্তরং ।

ত্বংসমোবিষ ভক্তোনান্তীতি পরমগুছমেতত্ত্বং শৃণিতি ভাব:।।২৬।। বৈষণানি ব্রতানি মাধসানাদীনি ইহ ভারতে বর্ষে। যদ।। অস্মিন্ মাঘমানে বিষ্ফুদ্দেশেইন্যান্যপি ব্রতানি একভক্তাদীনি যশ্চিকীর্বতি তম্য তৃত্মহাপাতকাদিকং।।২৭।। পদমেবাহ স্থানমিতি।।২৮।।

ন তৎ ফলনবাপোতি যোলোভাক্রান্তমানসং। যে ভবিষ্যান্তি যেইতীতা আকম্পর পুরুবাঃ কুলে। তাৎস্তারয়তি বিপ্রেক্ত নাঘদানেন্ আধবং ।। ২৯ ।। সংপ্রাপ্তে মাঘ-মাসে ত তপ বিজ্যবলভে । বিলয়ং যাত্তি পাপানি তমঃ সূর্য্যাদয়ে যথা ! যতিৰৎ পথি গচ্ছেত মৌনী পৈশুন্যৰজিভি: 11 ৩০ 11 যদীচ্ছেৎ বিপুলান্ভোগান্ रिक्षितः भागवाग्रः। महानमीकाल मृश्वा हेल्य वाशि नातम । मृशिग्रिया इतिर ভক্ত্যা পূজ্যেত্বলসাদলৈঃ।। ৩১।। এক্ষবৈবর্তে জ্রীসূতশৌনকসম্বাদে। ন মাঘ্মাস-मानमा नेत्रमन कृश्वर । जभः किमि ज्ञार्थि व्यार्थितिमा मून साविष्टः । भी क्रकारन मूनीरजन जरनन सरे वशुर्सतः। श्रकाना मरमानियुष्ट विरमाध्यकि मुक्ष्णः। किया। অপি শূদ্রোপি দাসোপি মাঘ্যানপরারণঃ। প্রোক্তোমুখ্যতমোবিথানত ভদ্ধি-मुर्थाविकः। यत माकाफिनाधीरमा ভবেদুদ্যমাহিতः। ততः किमश्रदः नाम अभःमाः ধর্মসাধনং। মাঘনানং সমুদ্দিশ্যোষসি গেহাৎ সমুখিতঃ ।। ৩২।। যাবৎ পদা-ন্যখনেধস্যানি ব্যুদ্দিতি যা:। যথা হথা পুনান্ মাঘে প্রাভরুত্থায় ধাবতি। তথা তথাই ভুক্তকম্ম সংক্ষাদ্যতে যমঃ। হৎ ফলং কপিলাদানে কুরুক্তেতে রবিগ্রহে। ভদবশ্যমবাপোতি ম ঘদানং করোতি যা তেতা পাছে ভূনিখণ্ডে শ্রীবশিষ্ঠদিলীপ-সম্বাদে। সমাগুক্তং পরং শ্রেয়োলোকছয়হিতাবহুং। নির্মালীকরণং তেন সুনীনাং বন-বালিনাং। ক্রন্তভূক্কালিনানং যে প্রত্যাসভিন্থ গুড়াং। কাময়ন্তে মূলাকে তে-সোত স সুদ্র সর্বাদ।। বিনা ব ছিং িন। হজনি টাপূর্ত্ৎ বিনাপি যে। বাঞ্ভি স্বর্গতিং সামু প্রাত্মাযে বহির্জনে। গোভ্মিতিলবাসাৎসি মর্ণধেত্রকানি যে। অদত্ত্বেছটি

নমু স্নানমান্তে নৈ কর্ম করে কিং দানাদিন। তত্রাহ বিভব ইতি। শক্তে বিশ্বশাঠ্যন কলং ন সমাক্ নিদ্ধাদিত ভাবং।। ২৯॥ মাহাত্মাকথনান্তরেচ মাঘ্রপ্রাভ্যান্তর্মনার্থিমনার্ধিমাহ যতিবদিতি। হিংলাদি শূন্যং। মৌনী ভগবল্লামঞ্জিনাভিরিক্তবচনর হিতঃ বিশেষতঃ পৈশুন্যেন ম বক্তাত্যাগাদিপরদোষস্কানন বজ্জিতাহীনক্ষ সন্প্রি গছেহে। বহা মহোত্মামেবাহ্ মাঘ্রানিতঃ ঘদামাঘে সংপ্রাপ্তে সতি সর্ক্রোপি ছ নং যতিবহু মৌনী আত্মারামন্ত্রাদিমুনিধর্মাযুক্তঃ সন্ অতএব পৈশুন্যবিজ্ঞিতঃ সন্পরি স্থার্গে গছেহে। সংযতইতি পাঠেপি ভাচ্পেবার্থঃ॥ ৩০॥ ঘদীছেন্ডা পুত্রাদিতি সার্দ্ধেনান্ত্রঃ॥ ৩১॥ দাসং কৈর্জ্ঞঃ ত্রা সত্তজলচারিত্রেন কর্পর স্থাত্মঃ স্ব্রেক্তাত্যাপি ঘদি মাঘ্রানংনিয়মেন করোতীত্যর্থঃ। অথবা অন্ত্যাহত্মে তাহুপর্যাং। মুখ্যত্মঃ সর্ক্রেন্ট্রিক্তানির্ব্রেন করে।বিত্রিক্তানালিতিপ্রায়েন। ৩২। যাবন্ধি পদানি ঘোদদাতি ন্যান্তিত্বতি কিঞ্চিদভুদিতে রবাবিতি সানকালাতিপ্রায়েন। ৩২। যাবন্ধি পদানি ঘোদদাতি ন্যান্তি ত্যা ভাবত্যি পদানি অস্থ্যেধ্যক্তমানি স্থারিত্যর্থঃ। যইতি অধিকার্যানিধিক, যানপেক্তয়া যঃ ক ক্টানিত ভাবঃ। অভুক্তানাং নরকপাতনাদিন। অক্তভোগানামপি কর্মনাং সমাক্ ক্যান্ধেতোঃ॥৩৩॥ কদাচিলাঘে মূগ্রার্থং বনপ্রবিত্রির রাত্রৌ বনান্তরেবোধিতেন প্রাত্ত্তোনির্ভ্রন রাজ্ঞা দিলীপেন পথি গছ্জ্তোনাপ্রস্থা স্বর্ধির রাত্রৌ বনান্তরেবোধিতেন প্রাত্ত্তোনির্ভ্রন রাজ্ঞা দিলীপেন পথি গছ্জ্তোনপ্রশ্রেম্বরার্থয় স্বর্ধির রাত্রী বনান্তরেবাধিতেন প্রাত্ত্তেটেনির্ভ্রন রাজ্ঞাং স্বিশ্রং পরিপুট্স্য

নাকৎ তে মাঘে গান্তনরাধিপ । ৩৪ । তিরাত্রেন্দুব্র হৈঃ কচ্ছেঃ পারকৈশ্চ নিজাই তত্ত্ব । অশোষে । চছন্তিযে স্বর্গৎ তপ নি সাস্ত্র তে সদা । হরেরজা ত বৈশাখে তপঃ পঞ্চ চকার্ত্তিক। তপঃ পুলা তথা স্থানং ত্রং মাথে বিভিন্ন ত ।। ৩৫।। কিলে। নিরনাহ্যদিতিঃ সল্লে ঘান্দাদশ মান্দে । পুরান্সা দাদশাদিত্যান্লেভে ত্রৈ ল'ক্টোপকান্। সূভা । রোহিণী মাঘাদানশীলাহারুজভী। শতীচ ৰূপসম্প্রা অনস্য়া পতিব্ৰ ।। ৩৬ ।। উভানে বিষয়ে রাজন্ প্রদাদে সংগুভৌনিকে। ভ্রমণী ক্লভশোভাচে; রত্নকৈঃ খচিত।জিরে। দ্বিপাকর্ণ মক্লছেরে রূপক স্ক্রাজনাকুলে। গীত-বাদিত্রনির্বোধে মঙ্গলাচারশে,ভিতে।বেদগুনি গবিত্রেচ বিশ্ববিধরলফ্টে । গুরা-ह्मन्त्राट्ड व्रत्मः नता जिथिनिष्यविष्ठ ॥ ७१॥ सूरिङाए उपसीह देशः नु। ७० मक्त র:বা। বৈদ্তিং বহুধা মাথে মুরানিঃ পূজিতত থৈঃ -। ইঞ্চীবস্তুপরিত্যাগানিগ্রমস্য চ পালনাথ। ধর্ম মূলথ সদা মাষঃ পাপিমূলং নিরু মতি। এতদেব পারং পথাম প্রুলং कोर्ङ्डिः। काममूनः कनहातः निकामङानमः मना।। ७५।। य लाका मानभी-লানাং ঘৈ লোক। বিপিনৌকসাং। লোক। যেইভিথিভক্তানাং তে নাম্মারিনাং- নৃণাৎ । দেবলোকা য়িবার্ভন্তে পুলাৈরনৈ । পরতথা । কদাচিৎ ন নিবর্তন্তে আঘ্যানরতাং দিবঃ। নাতঃ পরভর্থ কিঞ্জিৎ পনিত্রং পাপনাশনং। এতাদেব পর্থ প্রাথ সন্যোদ্রিতনাশনং। বিদ্যাধরায় সঞ্চীতং ভ্রণা নণিপ্রতিন্ধ বিকুণ্ডলার চনেত্র দেবদূতেন ধামতা।। ভ্গুবিদ্যাধর সন্থাদে। নাঘ্যানৈর্বিপক্সাশো নাঘ্যানৈর্ধন এঃ। সর্ব্যাধিকে। ম.ঘঃ নক্ষদানকলপ্রদং ।। ৩৯ ।। সাঘোগর্জতি যোগেতে নামানে। যোগাচ্চ গর্জাত। ভীক্রাচ্চ তপ্যোমাঘো ভোষিদ্যাধর গর্জাত। পুদার চ কুরু ক্রে ব্রহ্মাবর্জে পৃথুদকে। অবিমুক্তে প্রয়াগে চ গঞ্চাসাগরসক্ষা । হৎফ্সং দশভিষ্ধে প্রাপ্ততে নিয়মের রৈঃ। তৎ ফলং লভতে মাথে ত্রেং সানার সংশহঃ। স্বর্গডোগে চিরং বাঞ্ছা যেষাংমনসি বর্ডতে। যত্র ক্রাপি এলে তৈন্ত মূতিব্যৎ সুগভান্ধারে॥ ৪০॥ আয়ুরারোগ্য সম্পত্তী রূপে সুতগভা গুণে ! বেবাং মনোর্থাটেক্স ন ত্যাজ্যং মাঘ-মজ্জনং। যে বিত্যতি নরকায়ে দারিজ্ঞালেশ্চনিভ্যাশাঃ। সর্বাথা তৈঃ প্রধায়েন মাঘে কার্য্যৎ নিমক্তনং। দারিত্রপা পদৌর্ভাগ্যপক্ষপ্রকারণায় চ। মাবস্থানায় চান্যোত্তি

তং প্রতি বাক্যং সমাগুক্তমিত্যাদি। ক্রন্তভুক্কামিন্যোইপ্যরসং প্রত্যাধিক্তং সন্ত্যোগং॥ ৩৪॥ বিরাবৈরিন্দুত্রতৈশ্চ॥ ৩৫। মাঘাৎ মাঘ্রানাদিকরণাও॥ ৩০। প্রত্যামিকে উপযুগ্রিররিন্দুত্রতিশ্বানিক। ত্রমুলীক্রন্তরা বাহুল্যেনান্যেশক্রির শেলারা যুক্তে॥ ৩৭॥ কিঞ্চ বৈদ্বিং তে চ বসন্থীতি পূর্বেশবান্তরঃ। যদ্ধা তেবাং কিয়ক্তব্যমিতি শেষঃ। স্কাত্রৈব হেন্তঃ ধর্মাসূলমিতি। নিক্ষামাণাপ্র জ্ঞানং দদাতীতি তথা। এবং চন্ত্র্বর্গপ্রদত্তমুক্তং॥ ৩৮॥ ত্রাচান্ত্রেধর্মাত্রানাম্যাধিকোৎকর্মমাত্র্যে লোকাইতি চন্ত্রিঃ॥ ৩৯॥ গর্জ্জতি অধিক্ষিপতি ততোপিবিশিষ্টইত্যর্থঃ॥ ৪০॥ ক্রেপে সৌল্র্যে স্কার্গতা ক্রণছল্ভতা ত্রেপে

**14.** 58 1

উপায়ো দেবসভ্য। শ্রকাহীনানি ক্যাণি মতান্যপ্যকলানি বৈ। ফুলুৎ দদাভি সম্পূর্ণ- মাঘদ্যন- যথা তথা ।। ৪১ ।। অকানোরা সকামোবা যত্র কাৃপি বহিজ্ঞলৈ । ই श्रमूब ह मुःथानि माधन्नाशी न विन्ति । शक्षात्र मध्या हतः क्षीग्रास्त वक्षात्र स्था । পাতকং ক্ষায়তে মাথে পুন্রাশিশ্চ বর্জতে। যথান্ধ্রে জায়তে রজানি বিবিধানি छ। मानभूगानि जायस्य नेतागाः भाष्ठस्था। व्यागुविद्यकन्तानि मण्णामः अख्यस्थि চ। কানংখন্যথা কামং চিতামণিশ্চ চিত্তিতং। মাযস্যানং দদাতীহ তদ্ধং সর্বামনোরথান্। ক্ত তপঃ পরং জ্ঞানং ত্রেতারাণ্ যজনতথা। দ্বাপরে তু কলৌ मानः नायः नक्षयुः भन् ।। १२।। मर्क्षयाः मर्कावर्गानामाध्यमानाकः **ভূপতে। माय**-म् नमु क्षया न। का वा विष्या विष्या । जोजव श्रीप्रमा विषया को विषया मि । প্রতিরে বাসুদেবস্য সর্লপাপাপনু হয়ে। মাযসানং প্রকুরীতি স্বর্গলাভার মানবঃ। ন সমং ভবতে কিঞ্চিৎ তেজঃ দৌরেণ তেজনা। তত্ত্ব সানেন মাঘস্য ন সমাঃ ক্রন্ত-জাঃ ক্রিয়াঃ। কিং রক্ষিতেন দেহেন সুপুষ্টেন বলী রসা। স্প্রবেণ সুজীর্বেন মাঘসানং विना छरवः ।। ८० ।। जिल्लिस प्रशिष्ट्य मृश्चिकारं मार्यक्र विज्ञानिकार । विकासिकार मूर्गिका शृर्वः मृज्युतीनायाः। अतः भाकविशेषा छ॰ व्यागनिकत्रमाख्यः। तब्बन-मनिन्त्रम् मर्साम्यमभाषाकः। भवान गणिया भाषि भराज्यारभाव विकास निन्त्रभ সিংখনংক্রের ফুডলাত ক্লিক্ম তথা । । ৪৪ ।। দুপ্রং দুর্বরং দুউৎ দোষত্রবিদূ-ষিতং। অশুটি সুবি সচ্ছিত্রং তাপন্যবিলোহিত। নিন্ধতোইপ্রারতং তৃষ্ণা শ্তসমার্লং। কামজে,ধনহালোভনরক্তারদংখিতং। ক্রিক্তিভন্দাদি পরিণা-নে শুনাং হবিঃ। জিলুন্ শ্রীরক্ষম ব্যর্থং যাঘদানে বিবক্তিভিং । ভাইবফরোছতে। বিপ্রো इड९ आह्ननत्याणि हा च्याक्ता इड९ नर्स९ द९ इड९ शावलोकिकश । हेइ लाका হতে। নুণাং দারিছেণ যথা নুধা মনুষ্যাণাৎ তথা জন মাঘ্যুনিৎ বিনা হতং ।।s৫ ।। মকরত্থে রবৌ হোছি ন স্নত্যনুদিতে রবৌ। কথং পাপেঃ প্রসুচ্যেত স কথং ত্রি-

শুণে ॥ ৪১ ॥ বহির্জনে মাঘুলায়ী ॥ ৪২ ॥ সংক্রিলালাপ্রনাণানিতি সম্বালা । যদা সংক্রিদানিতি বালস্কালীনানিতাবস্থা প্রিক্তা ॥ ৪৩ ॥ গোর্থ চন্দান্তনিপ শরীরং মান্দ্রানেন প্রমোজমং সার্থ করু ভবেৎ জন্যথা ভজারণমের বার্থনিতাগ্র। অস্থীতি বছ্ ভঃ। আজরং বিবশং রক্ত্রন্থ রক্তোগুণ প্রধানং কর্মজ্যে মন্ত্রাজন্প্রাল্ডেঃ পরেষান্ত্রণালয়ঃ। তথা পরেষাং দ্রোহঃ। পরেষানীর্যা চ যাথাৎ তথা মন্ত্রাজন্প্রাল্ডিঃ লগান্দ্রাদ্রা গাপ্তঃ ক্রোধোৎগাদনানিনা আর্তিঃ ॥ প্রেষানীর্যা চ যথাৎ তথা । ভরোগভাপোন্ত্রাদ্রা গাপ্তঃ ক্রোধোৎগাদনানিনা আর্তিঃ ॥ প্রহারাদিনা ছোহঃ অমঙ্গল চিন্তাদিনা। জর্মা চাক্ষান্তিঃ ॥ ৪৪ ॥ দোষত্রয়ং পিত্রাদি। ক্রমাদি যারকজারং তিমান্ সমাক্ স্থিতং বর্ত্ত্রমানং। পরিণামে মরণে ক্রমাদিরূপং। অতএন শুনাং হবিঃ পরমভক্তাং ॥ ৪৫ ॥ রবাবস্থাতি সতীতাক্রোক্তং ভবিষ্যোগ্ররে চ ভাক্রোক্য়-

मिवः अख्यः। अक्षरा द्याराजी ह मूदारभाखक्र छण्मभः । बाषमात्री विभाभः मां ७ ७ मः मंगी ह भक्षमः। मानमात्म द्र हेखानः कि कि मणू मिरक द्रार्थे। उन्मच वा সুৱাপদ্বা কম্পতন্তং প্ৰীমহে। উপপাতকানি স্কাণি পাতকানি মহান্তিচ। ভন্মীভবস্তি সর্বাণি মাঘুরাহিনি মানবে। বেপন্তে সর্বপাপানি মাঘুমাসসমাগুমাৎ। नाभकारमाञ्चरकाकः यहि जानाञ्चि वादिनि। शावकाहेव हीशास्त्र याचनारेन-র্রাক্তমাঃ। বিমুক্তাঃ সর্বাপাপেভেগ্রেম্বভা ইব চক্রমাঃ।। ৪৬।। खकः नघु खूनः वाजानः कर्मा छिः इष्ठः । माघनानः मरहर भाभः भावकः मिर्धाः যথা। প্রমাদিকঞ্ষ যৎ পাপৎ জানাজানকৃতঞ্যং। বানমাত্রেণ তরশোমকরত্বে দিবাকরে। নিস্পাপাঞ্জিদিবং যান্তি পাপিষ্ঠাযান্তি শুদ্ধতাং। সন্দেহোইত ন কর্তব্যামাঘস্থানে নরাধিপ। এতদেব পরোমন্ত্র এতক পরমন্তপঃ। প্রায়শ্চিত্রৎ পার ক্ষৈত্ত মাঘ্যানমনুভ্মং । ন্ণাং জন্মান্তরাভ্যাসানাঘ্যানে মতির্ভাষে ।। ৪१।। व्यथाञ्चकानको समार क्यां ज्यानाम्यथा ज्या नः मात्रकर्मभावाक व्यक्तानन বিশারদং। পাবন পাবনানাঞ্ মাঘদানমনুত্মং। সাভি মাঘে নরারাজন্ সর্বিগ্নফলপ্রদে। তে কথাৎ ভুঞ্জতে ভোগান্ চল্ড সূর্য্যপ্রহোপমান্।।৪৮।। কিঞা নানবাপ্তোত্র তস্যান্তি পুরুষার্থেছি কশ্চন। নাক্ষীণং পাতকং কিঞ্চিনাঘে সজ্জতি যোনরঃ ৷৷ ৪৯ ৷৷ ভলয়ন্তি ন ভেনাত্র যজাঃ সর্বে সদক্ষিণা নাযুসানেন রাজেন্ত ভীর্থে চৈব বিশেষতঃ। নচান্য স্বর্গদং কয়ন্তিলা্থ পাপানাশনং। নচান্যৎ মোক্ষদং চাত্র মাঘদানসমৎ ভূবি। কিঞানাত্র। একবি শংকুলৈঃ সার্দ্ধৎ ভুক্তা ভোগান্ যথেপিসভান্ । মাঘে মেষ্ট্রেছডাস সাজা বিষ্ণুলোকৎ স গচ্ছতি। তত্তৈব কুণ্ডবিকুণ্ডলোপাখ্যানানন্তরং । ত্রিকন্তিবীর্য্য উবাচ। ছেত্রনা কেন বিপ্রর্ষে সাঘ-দ্রানে মহাদ্রুতঃ। প্রভাবোবনিতোৰূন১ ভয়ে কথয় পুরত। গভপাপোযদেকেন षिठी राम निवं भाषा । वरमा भाषा अपूर्णाम दुहि स्म ७० कू जू इमा । श्री पढ़ा राज्य-উবাচ। निमर्शां मिलल राभा निर्माण स्टिन भावन । मणक् भूक्षव । पु जावकः দাহকং তথা। ধাবকৎ সর্বভূতানাং পোষকং জীবনঞ্চ ত । আপোনারায়ণোদেবঃ সর্ববেদেয়ু পঠ্যতে ।। ৫০।। গ্রহাণাঞ্চ যথা সূর্য্যোনক্ষত্রাণাং যথা শশী। মাসানাৎ

रेगुकः उथा श्र्वमजाभि किश्विमज्ञामित्व त्रवाविति। विषय वामकाम प्रवास मात्र आपित । अव ।। अव विषय । अव विषय

হি তথা মাঘা শ্রেষ্ঠঃ সার্বেষ্ঠ কর্মসু। মকরছে রবৌ মাথে প্রান্তঃ বালালে।
গোল্পনেহপি জলে সানং রগদ্ধ পাপিনামপি। গোগোরং দুর্লভারাজন্
লৈলোকেঃ সচরাচরে। অন্মিন্মাসে অশক্তোপি সায়াদপি দিনত্র বং। সদ্যাৎ
কিঞ্চিদ্যথাশক্তি দারিত্রাভাবমিক্ত্তি। ত্রিসানেনাপি মাঘে সুর্থনিনাদীর্ঘলীবিনঃ।
পঞ্চব। সপ্তবাহানি চক্রবর্জতে ফল্প। নার্ছীরে চ। দেবৈক্তেজঃ পরিক্রিপ্তং
মাঘ্মাসে জলেছু বৈ। অতঃ পবিত্রং হি জলমন্দেষাঘৌষনাশন্মিতি।। ৫১।।
অন্যানি মাঘ্যাহাত্মাবচনানি বিশেষতঃ। উপাখ্যানেষু বর্তুত্তে পাঘাদৌ ভত্ত তত্ত্র হি।। ৫২।। ইপাঞ্চ মাঘ্যানসঃ প্রায়েইত্র মহিমোদিতঃ। মাঘ্রুত্যেষু বং
প্রাতঃসানসৈর প্রধানতা।। ৫৩।। বাস্তী পঞ্চমী মাঘে ভৈনী চৈকাদলী সিতা।
বারাহী দ্বাদশী যা চ তাসু কুর্যামহোৎসবং।। ৫৪।।

व्यव व म ख भ क्यों । यो घ म ए क भ क्यों । यह भ क्यों । यह भ क्यों क क्यों क्यों

অথ ভীমাউনী নাঘদ্য চাউনিং শুক্লামারভ্য দিনপঞ্জ কং। ভর্পয়েদ্ধবাউদ্যাৎ ভীমাং ভাগবভোত্তমং । ৫৭।। নিভ্যভর্পনতঃ পশ্চাৎ সলিলাভক্ষমমুখঃ।

ত্ত্র চ ভগবৎসম্প্রবিশেষইতি কালবিশেষে ভাইবিশেষোভবতীতি পরিহরতি গ্রহাণামিতি ঘাতাং ।। ৫১॥ গ্রন্থবিস্তরতীতাা পরিতাক্তানি চ মাঘ্মাহাত্মাদিবস্থানি বচনান্যান্যাপি দর্শরতি অন্যানীতি ।। ৫২ ।। নমু পূর্বাং মাঘ্যে স্নানাদিসংকর্মাপ বিহিতং সামাদ্যভো-মাঘ্মাহাত্মাদিলিখনাচ্চ তদেব দূটীকৃতং অধুনা চাস্তে স্নানমহাত্ম্যমেব ক্রার্তে। গ্রন্থবিদ্ধান বাপে সংহারয়োরেকার্থতা ন স্যাথ। সভ্যং। মাঘ্যে প্রাতঃস্নানীত্যার প্রধানতা তথাপি লিখিত-মিতি লিখতি ইপ্রেণ্ডি। প্রধানতা মুখ্যতা। অভএব স্নানীতার নিতারং ইতি দিক্ ।। ৫৩ ।। তিকৈব তিথিবিশেষেয়ু কুতাং মহোৎসববিশেষং লিখতি বাসস্থীতি ।। ৫৪ ।।

তবৈৰ বসন্তপঞ্মীমহোৎগৰে। বিশেষতঃ কাৰ্য্যইতি লিখতি মাঘ্ন্যেতি। তবৈষ ক্ত্য-বিশেষং লিখতি নবৈরিতি লার্জেন। জনয়নিতি ভগৰক্ষ্যনে সতি তলানাদন্তহিতমিব প্রাছ্র্ডাব-য়নিত্যর্থঃ ॥ ৫৫ ॥ বসন্তপঞ্চম্যুৎসবমাছাল্মং লিখতি বৃন্দবিনবিহারিণইতি বসন্তেম বৃন্দবিশ্বস্থা শোভাবিশেষপ্রকটনাদ্য্যাসে সদা ডিছিহারশীলস্য ভগৰতোহত্যন্ত প্রিয়োভবতি ভবা সোপি-লাাদিতার্থঃ ॥ ৫৬ ॥

जानवर्षम् वर्षः वेषमः । उरश्रिक्ता भागमात्र निक्थिषिक्षाणातिन् भाकास्मवदेखव जलवार-मनावित्यव्यक्षेत्रमः निक्षिक्षक्षेत्र मर्यमारः । उक्तनिभरमणापिक्षेत्रेत्रः व्यवस्थिताः श्रीवस्थितः व्यक्तिकर्णनः विक्षितः कार्यस्मतिक कारः ॥ ६१॥ किषिः निक्षि निक्षिः । जवक भीवस्थित्

## NAME OF STREET

নিবাতী তর্পং কুর্যাদ্গালেয়স্য মহাত্মনঃ । তত্ত মন্তঃ । বৈশ্বাগ্রপদ্যগোত্তায় সাক্ষ্ তি প্রবরায় চ। অপুপ্রায় দদাম্যেত চ্ছলিলং ভাত্মবয়্পে ।। ৫৮।।

অথ ভৈন্যেকাদশী। তত্র মাৎসের শ্রিজ্ঞানাচ। কথমানোগ্রেশ্বর্মন্ত্র নমরেশ্বর। মৃণ্পেন তপসা দেব ভবেমোক্ষো যথা নৃণাং । ৫৯। শ্রিমন্ত্র ইবাচ। জ্বরা পৃথ্টসর ধর্মা স্বা রহস্যস্যাস্য ভেদক্র । ভবিতা সভদ। ক্রন্ধন্ত্র ইবর বৃক্ষো-দরঃ। কিঞ্চ। ইদং ব্রতমশেষাণাং ব্রতানামধিকং হতঃ। কথরিষাতি বিশ্বাস্থা বাসুদেবোজগল্পুক্রঃ। অশেষ্যজ্ঞকলদমশেষাঘবিনাশনং। অশেষ্টুশমনমশেষ কুরুপুঞ্জিতং। পাবত্রাণাং পবিত্রগ্ধ মঞ্চলানাঞ্চ মঙ্গলং। ভবিষ্যঞ্ধ ভবিষ্যাণাং পুরা-ণানাং পুরাতনং॥ ৬০।। তত্ত্বি শ্রিভীমং প্রতি শ্রীভগবদুক্তো। যদ্যম্বনী চন্তর্দশোলা দ্বিশাষ্য ভারত। অন্যেধপি দিনর্ক্ষের ন শক্তত্বমূপোষিত্ব। ততঃ পুণ্যামিমাং ভীমতিয়াং পাপপ্রণাশিনাং। উপোষ্য বিধিনানেন গত্ত বিষ্ণোং পারং পদং। কিঞ্চ। ভবৈত্ব তন্ত্রিধিকথনাতে । ইদ্যেব কৃত্ব মহেন্দুমুখ্যুর্ক্সুভিন্টেৰ সুরাদিভিত্রেশা ক্রম্যা ন শক্যতে হি বজুং যদি জিল্লা যুতকোট্রোমুথে সু্যুর্বিত ।। ৬১।।

পিতামহকোভীয়াতপ্ৰং ন কুৰ্ব্যানিতি জ্জেয়ং। জ্জীবংপিতা ন কুৰ্বীত তপ্ৰং যমভীয়ায়োরিতি পা:অংডিধানাং।। ৫৮।। তথানা কুছেুে।। ৫৯।। ভেদকুং প্রকাশকইত্যুর্ধঃ। ভবিষ্যাণাং ব্রতানাং মধ্যে ভবিষাং পরমান্তাং। ন কেবলং ভবিষ্যমের কিন্তু পুরাণীনাং পূর্বায়্তানাং মধ্যে পুরাতনং সর্বাদ্য মিত্যর্থঃ। এবং মাহাত্ম্যবেশেষোদর্শিতঃ। তথাচ তত্তৈব শ্রীভীমং প্রতি শ্রীভর বছজৌ। কুরু ব্রতমিদং সম্যক্ মেহাত্তব ময়েরিতং। ত্বয়া কুত্রমিদং ধীর ত্বদামার্কং ভবিষ্যতি। সা ভীসদ্বাদশী গ্রেষা সক্ষপাপহরা শুভা। যা ছ কল্যানিনী নাম পুরাকপেযু পঠ্যতইতি॥ ৬০॥ वामनीयू এकामनीयू। अमा नित्न स् अयाके मा। मयू। याक्ष वा नवामना। मयू ।। ७३ ।। श्र्वा-বিধিবিশেষযুক্তঃ । অস্মিন্ ত্রতে ক্তাবিধি র্যাং স চেদ্যাদ অপেক্ষ্যাং ইতি তাদৃশক্তা বিধেরাবশাক্ষাভ বেন বৈফার্বৈনাভাতাপেক্ষণা দতি দিক্। তত্ত্রৈব তং প্রতি আভগবছক্তৌ তথাছি। মাঘমাৰ্প্য দশ্মী যদা শুক্লা ভবেওদা। ঘৃতেনাভাঞ্জাৰং ক্সনা তিলৈঃ লানংসমাচেরেৎ । **७ देशव विक्युमञ्जर्कत्र निम्मानावाव्यक्ति । कुल**ाव शास्त्रे मध्यक्षा भितः म**र्वाञ्चरमञ्जर्का मध्यस्य** চক্রিণে ভদ্ধদিনে বরদায় বৈ। শব্দে নারায়গায়েতি সংমুখ্যা বাছক ক্রমাৎ । দামোদরায়েত্য দরং মেতুং পঞ্শরায় বৈ ৷ ঊর গোভাগ্যনাধায় জাতুনী ভূতধারিশে ৷ নানানীলায় বৈ অত্ত পালে বিশ্বক্তকে নমঃ । नेत्यात्मदेवा नमः শ।देखा नम। । देशमा नमः প্রিটা । नमञ्जदेका नमः शूरेका ब्रह्मा कृटेका यरकाष्ट्रियः। नत्माविद्यानाथाय वाञ्चलवात नाकित्व । मधुश्रमाथितः নিভাং গ্রুড়ঞ্চাভিপুজয়েৎ। এবং সংপ্রা গোবিন্দ মুসাপতি বিভাটকৈ । শবৈশ্বর্মালো তথা পূর্বপভ বৈক্যান।বিধৈরপি। গবোন প্রসা সিজাং ক্রবর্লের ক্রাড্ডঃ। দর্শিষা সহ ভুক্ত্বাভাৎ व्यथाम्बर्गनः वृत्री नात्थावर मखवावनम्बना थानितर भूनः। गृहीच। भावतम्बन्धा माहान्तः आधन षा थः। द्वता मात्रस्ति क्यानका मस्याप्ति । निमानात् । स्वापति स्वापति स्वापति । स्वापति स्वापति । स्वापति । स्व प्याः नितानातः नमण्डे हृद्देश्वः। द्राविकः न्वनाः स्त्रि सानकः भन्नमा छवा । निर्मिकानि

ব্রতে রুত্রবিধিশ্চাব্দিন্ পূজাবিধিবিশেষবান্। বৈক্টব্শেচ্দপেক্সঃ স্যাঞ্জেয়ো সংস্পূরাণতঃ ।।

कथं काक्षुन क्र ठा९ । छत् यकः। थाटः न्। शो छत्व क्र छः महिने हि। माध-काल्छती। एत्वान् शिकृत् नमछार्कः मुद्दार्ग नर्काकिल्दिः ॥ किथानात् । यमोद्देष्ट्रिष्ट्रान् खागान् वन् मृद्दाराशमान् खान् । माध्याल्छनत्यार्मार्थः थाछः न्। छत्व । शोष्ठभीत् । काक्षुत्न एत्वकोश्रुत् शृक्तस् धर्मवन्शिकः । वृष्ठ तोगिक्षि कृत्रेम पूरिश्विक्षः सुविष्ठ देविष्ठ ।। ७२ ॥

অথ শিবরাতিঃ। শিবরাত্তিক্তমিদ্ হদ্যপ্যাবশাকং নহি । বৈশ্বানাং তথাপাত্র সদাচারাদিলিখাতে। শিবরাত্তিবতং কুফ্চভর্দশান্ত ফাল্গুণে। বৈশ্ব-

#ভন° হৃত্বা ব্রাহ্মণপুঞ্চবৈ:। সহৈব পুগুরীকাক্ষ ভাদশ্যাং ক্ষীরভোক্ষনং। করিষ্যামি যতাত্মাহং নির্সিল্পেনা স্ত তক্ত মে। এবমুজ্ঞা স্বপেদ্নুমাবিতি হাসকথাং পুন: ৷ ক্রত্বা প্রভাতে বিধিবৎ ক্র্যা চ পিত্তপ্ণ । প্রণমা চ ক্ষীকেশমমলং চাক্মীক্ষা চ। গৃহসা পুরতোভক্তাা মওপং কারয়েছুধ:। শশহস্তানথাটো বা করান্ কুর্য্যাৎ বিশাম্পতে। চত্তর্হস্তাং শুভাং কুর্য্যাদ্বেদীমরিনিহৃদন। চত্ত-ইন্ত প্রমাণফ বিন্যদেপ্তত্র ভোরণং। প্রকণ্পাং কলসং তত্র মাৰমাত্রেণ সংযুতং। ছিছেন জলসংপূর্ণং অধঃক্ষাজিনে স্থিতঃ। তদ্য ধারাঞ্চ শিরসি ধারয়েৎ সকলাং নিশাং। ধারাভিভূ রিভিভূ রি ফলং বেদ বিদো বিছঃ। যত্মান্তত্মাৎ কুরুশ্রেষ্ঠ ধারা ধার্য্যা স্থশক্তিতঃ। তথৈব বিষ্ণোঃ শির্দ্য ক্ষীরধারাং প্রদা-পয়েং। অর্জুিমাত্রং কুণ্ডঞ্ রুদ্ধাতত্র তিমেখনাঃ! যোনিবক্তৃঞ্চতংক্ত্বাত্রাক্ষণৈযবদর্শিষী। তিলাং-শ্চ বিষ্ট্রবৈত্যমনৈত্রকালিবজ্ব। ছতা চ বৈষ্বং সমাক্ চরুগোক্ষীর সংযুক্তং। নি:পরার্দ্ধ প্রমাণাং বৈ ধারামাজ্যগ্য পাতয়েং। জলকুস্তান্ মহাত্রীর্যা স্থাপয়িসা ত্রোদশ। ভক্তৈনানাবিংধ-যুঁক্তান্ সিতবলৈষ্ক্তান্। যুক্তানৌডুষ্টর: পাত্তৈঃ পঞ্রত্নসমন্বিতান্। চতুভিক্সস্টেচর্ফোমস্তত্র কার্যাউদজা বৈঃ। রুদ্রজাপশতভূতিশত যজুর্বেদপরায় গৈঃ। বৈঞ্বানি চ সামানি চতুর: সামবেদিনঃ। অরিষ্টবর্গাহতান্যভিতঃ পরিপাঠয়েং। এবং দ্বাদশ তাদ্ বিপ্রান্ বস্ত্রমাল্যালুলেপনা। পূজ-য়েদজুলীয়ৈশ্চ কটকৈংইমস্ত্রকৈঃ। বাসোভিঃ শ্রেমণীয়েশ্চ বিস্তুশাঠ্যবিবৰ্জ্জিতঃ। ততঃ প্রভাতে বিমলে সমুপায় ত্রয়োদশ। গা বৈ দদ্যাৎ কুরুজ্ঞেষ্ঠ সৌবর্ণমুখসংযুতাঃ। পয়স্থিনীঃ শীলবতীঃ কাংস দোহসমন্বিতাঃ।রৌপ্যথুরাঃ সংৎসাশ্চ চন্দনেনাভিষেচিতাঃ। তাস্ত দত্ত্বা তত্তাভক্তা ভক্ষাভক্ষ-পতপিতান্। রুত্ব। বৈ ত্রাক্ষণান্ সর্বাল্লেনানিবিধন্তথা। ভুক্ত্যাচাক্ষারলবণমাত্মনা চ বিসর্ক্ত-য়েং। অনুগম্য পদান্যফো পুত্র ভাষ্যাসমন্বিতঃ। প্রীয়তামত্র দেবেশঃ কেশবং ক্লেশনাশনঃ। এবমুক্তার্ ভান্ কুন্তান্ ভাশ্চ গাঃ শয়নানি চ। বাসাংসি চৈব সর্বেষাং গৃহাণি প্রাপমেদুধঃ। অভাবে বছশয্যানামেকামপি স্থসংফৃতাং। শন্যাং দদ্যাদ্যুরৌ ভীন সংবাপকরসংযুতাং। ইতি-হাসপুরাণানি বাচয়িত্রাইভিবাইয়েৎ। তদ্দিনং নরশাদিব্ল ঘদীছেছিপুলাং শ্রিয়মিতি॥ ৬২।;

অন্যোন্যভক্তিদানার্থমন্যন্যোপাসনাকরে। বন্দে ইরিহরে দেবাবন্যোন্যপ্রেমতৎপরে।
নম বৈক্ষবানাং কিং শিবরাতিত্রতক্রণেন তত্র লিখতি জ্ঞিক্ষপ্রতিয়ইতি। শিবরাতিত্রত-পরিত্যাগেন ভগবৎপূত্বাক্লাম্দ্যাৎ ভগবৎপ্রত্যভাবঃ অতন্তদর্থং বৈষ্টবিঃ কর্ত্তব্যমেবে-

রশি ভং কার্য্য প্রীক্ষপ্রতিয়ে সদা ।। ৬৩। তথাচ পাছে বুভখণ্ডে। কোরোবা বৈফবোবান্যাদেবতান্তর পূজকঃ। ন পূজাফলমাপ্রোতি শিবরাত্রিবহিদু খিঃ।। ৬৪।। কিঞা! তদিদং গুদাসো দূষণং। দ্বেষে ত কোর্মে ভূগাদীন্ প্রতি ষয়ং ভগব-তোক্তং। পরাং পরতরং যাতি নারায়ণপরায়ণাঃ। ন তে তর গমিষান্তি যে দ্বিষন্তি মহে ধরং। যোমাং সমর্চয়েরিত্যমেকান্তং ভাবমাপ্রিতঃ। বিনিন্দন্ দেবমীশানং স যাতি নরকাযুতং। জন্যত্র চ। মন্তক্তঃ শক্ষরদেষী মদ্দেষী শক্ষরপ্রিয়ঃ। উভৌ তৌনরকং যাতৌ যাবচ্চ দুদিবাকরাবিতি।। ৬৫।। অত এব হয়শীর্ষপঞ্চরাত্রে। প্রীহরিহরপ্রতিয়ায়্য প্রীভগবতিবাক্তং। হঃ শিবঃ সোহমেবেহ যোহহং সভগবান শিবঃ। নাবয়োরন্তরং কিঞ্চিদাকাশানিলয়োরিব। অত এব বহ্ব চপরিশিক্ষে। শিবায় বিফুলগায় শিবকপায় বিফবে। শিবস্য হাদয়ং বিফুবিক্ষোন্ত হাদয়ং শিবঃ।। ৬৪।। যথাশিবময়োবিফুরেবং বিফুনয়ালিবঃ। যথান্তরংন পশ্যমি তথা মে স্বন্তিরার্ব ইতি। কার্যাৎ গুণাবভারতেনক্যাক্রস্রা বৈফবৈঃ। বৈফবাগ্রতয়া স্রৈতাং স্বাচারাচ্চ ত্রুতং। চন্তর্যক্ষেদ্ট্যাতু নৈকে কুর্বন্তি তদ্বতং। তথাচ ভূগুশাপঃ। শিবব্রতখর। যে চ যে চ তান্ সমনুব্রতাঃ। পাষ্টিনত্বে ভবন্ত সচছান্ত্রপরিপছিন ইতি।। ৬৭।।

ভার্থঃ। অপি শব্দাৎ কিং পুনঃ শৈবৈঃ শাক্তেঃ সৌরাদিভির্বেভার্থঃ।। ৬৩।। দেবতান্তরং ছর্গা-গণেশাদি তৎপূত্রকোংন্যোবা। ন পূজাফলমাপ্রোতীত্যনেন ব্রত্স্য নিত্যবং বেধিতং। ৬৪॥ কিঞা এশিবত্রতাকরণে মহাদোষপ্রদর্শক্তেন নিভ্যতামেব ত্রুরতি পরাদিতি ত্রিভিঃ। পরাং চত্তবের্গের্ শ্রেষ্ঠাৎ মোক্ষাদ্পি পরতরং এীবৈকুঠাথ্যপদং নারায়ণপরাযাস্থীতি সভ্যমেব কিন্তু যদি তে ঞ্জীশবেহপরাধিনোন ভবন্তীত্যাহ নেতি। অত্রচ পূর্বপদ্যার্দ্ধং লীশিবেনোক্তং পরার্দ্ধঞ্চ শ্রীভগবতেতি সৎস্থ প্রাসিক্ষণ যদি চ কৌর্মাদৃষ্ট্যা সর্বং পদ্যং শ্রীভগবন্তুমের । ওর্হি নিথিলগুণামৃতনিধিনা ভগবত। নারায়ণেন পরোক্তবদ্বির ভরেণোক্তমিতি ক্রেয়ং । দ্বিষয়ীতি ছেষস্ত তদু তাকরণাদিনা তদনাদরলক্ষণএব। যথা গুরুদেব তাদিদ্রোহঃ এবং নিন্দাপি॥ ৬৫॥ নত্বান্যং দেবং নমস্ব্যালান্যং দেবং নিরীক্ষয়েৎ। চক্রাম্কিতঃ সদা তিছেনজ্জঃ পার্ নন্দনেতি ভবিষ্যোত্তরোক্ত শ্রীভগবদ্বচনাদিনা বিরোধঃ স্যাৎ তত্র শ্রীভগবদ্বচনমেব লিখতি যঃ শিবইতি। আকাশানিলয়ে।রিবেতি দীপাদ্দীপান্তরবৎ কারণেন সহ্কার্যাস্যাভে-দাভিপ্রায়েণাবভারিণাত্মনা সহাবভারস্য শ্রীশিবস্যাভেদোদশিতঃ।। ৬৬।। তথা ততইত্যর্থ:। পাযুষোজীবনস্য ভগবছজিলক্ষণস্য স্বস্থিঃ শোভনসত্তা সদা সম্যথ্ বিভূঁৰ্তীত্যৰ্থঃ। অস্থিতি শেষো বা । শিবস্য শ্ৰীবিফোর্যইছ গুণনামাদিসকলং ধিয়া ভিন্নং প্লোদিত্যাদিকঞ জীমনামাপরাধস্তোতে পূর্ববং লিথিতমেব । অতোহতায়ং দিদ্ধাস্তঃ। **बिविक्दिक्दिकारनवः** ঞীশিবশ্চান্যোদেবইত্যেবমন্যত্ত্বে ভাসমানে ভন্নমন্তানাদিকং বৈক্ষবানামযুক্তমেব কিন্তু যথা মৎস্যাদয়োলীল। ইবভারাস্তথা জ্রাশিবশ্চ গুণাবতারোইয়মিত্যভেদেন ন দোষাবহং অপিত্ত গুণ এব ভগবন্তক্তিবিশেষএব পর্য্যবসানাদিতি ॥ ৬৭॥

অথ শিবরাতিনির্নাতিত কালে। মাঘ্যাল্গুনয়োর্মধ্যে অসিতা ষা চন্ত-দশী। শিবরাতিস্থ সা গাড়া সর্কাজেরিমান্তমা। মাঘ্যাসস্য শেষা যা প্রথমা ফাল্গুণস্য চ। কৃষ্ণা চতুদশী সা ত শিবরাতিঃ প্রকাতিতা।। কিঞ্চনাগরখণ্ডে। যানি কান্যত্র লিঙ্গানি স্থাবরাণি চরাণি চ। তেবু সংক্রেমতে দেবস্তস্যাৎ রাত্রো যতোহরঃ। শিবরাত্রিশুভঃ প্রোক্তা তেন সা হরিবল্পভা ইতি।। শুদ্ধোপোষ্যা চ সা সর্কৈবিদ্ধা স্যাতেলভন্দশী। প্রদোষব্যাপিনী প্রাহ্যা তরাপ্যাধিক্যান্গভা।। ৬৮/।। তথাচোক্তৎ। প্রদোষব্যাপিনী প্রাহ্যা শিবপ্রিক্রোরাত্র শাবপ্রিয়ঃ। রাত্রি জাগরণং তস্যাৎ ফ্যান্তস্যামুপোষণং । কিঞ্চা প্রদোষণ্ট চতুর্নাড্যান্ত্রকোভিজ্জ জনৈর্মত ইতি।। প্রদোষব্যাপিনী সাম্যোপ্যুপোষ্যং প্রথমং দিনং। নোপোষ্যা বৈষ্ণবৈর্দ্ধিদ্ধা সাপীতি চ সতাং মতং।। ৬৯।। হত উক্তং। শিবরাত্রিব্রতে ভূতং কামবিদ্ধং বিবর্জ্জয়েই । অত্রব্যক্তিৎ পরাশ্রেণ। মাঘ্যাসিতং ভূতদিনং হিরাজমুগৈতি যোগং মদি পঞ্চদশ্যা। জয়প্রযুক্তাং নতু জাতু কুর্য্যাচ্ছিবস্য রাত্রিৎ প্রাক্রিছিব্ব্যাতি।। যোগংশ্যাক্তোলোগান্ধিনা। দিমুহুর্ত্রো ভ্রেদ্যোব্রেধামিট্র্রিকঃ স্মৃত ইতি।। ৭০।। শিবরাত্রী চ কর্ত্র্যং নিয়মেন ত্রং বুধৈঃ। উপবাস মহাদেব পূলাজাগরণং নিশি।। ৭১ ।।

অথ শিবব্রতবিধিঃ। সায়ৎ শিবালয়ৎ গদ্ধা শুচিরাচম্য চ ব্রতী । কৃষ্ঠা শিবাগ্রে সক্ষণসারভেত তদর্জনং । ৭২ । পঞ্চাক্ষরেণ মন্ত্রেণ শতরুদ্রেণ বা দ্বিজ্ঞা

হরিবল্লভত্ত্বনাস্য শ্রীশবিপ্রিয়ত্বাদেব বৈক্ষবৈরপি কর্ত্তব্যমিতি ভাবং । ৬৮॥ শিব-প্রিয়েরিত্যনেন বিদ্ধান্তত্ত্য বৈক্ষবানামকর্ত্তব্যুৎ প্রতিপাদিতমিতি ভাবং ॥ ৬৯॥ এতদেব প্রতিপাদয়তি সভাং মতমিতি তত্ত্ব প্রমাণমাহ । মাঘেংসিতেত্যাদি। এবঞ্চ মাঘ্ ফাল্গুণয়ো-মধ্যে যা স্যাচ্ছিবচন্তর্দেশী । অনক্ষেন সমাযুক্তা কর্ত্তব্যা সর্বাদা তিথিরিতি বচনং ভবিষ্যোভরেক্ত শিবচন্তর্দ্দেশী সংজ্ঞকত্রতবিষয়কং কিয়া পর্বাদনে অমাবাস্যাযোগাভাববিষয়কং সকামবৈক্ষববিষয়কং বা ক্ষেয়ং। অন্যে চ মাঘাসিতমিত্যেতৎ বচনং শিবরাজিত্রতে ভৃতমিতি বচনং পর্বাদনপ্রদাযোগি চন্তর্দ্ধশ্রপাসবিষয়কমিতি ব্যবস্থাপয়ন্তি তচ্চা-সঙ্গতমিব মাঘেতি পঞ্চশ্যাযোগমুপেতীত্যাদি বিশেষোক্ত্যা প্রদোষব্যাপিনীত্যাদিবিরোধানপ্রেঃ। লিখিতব্যবস্থৈব যুক্তেতি দিক্ । ইপ্রে যদা চন্তর্দ্দশীক্ষয়ং স্যান্তহি বৈক্র্যানামপি বিদ্ধোপ্রাদঃ প্রসন্ত্রেত্ব অন্যথা অমাবাস্যাসংযোগব্যবস্থায়া অত্য লোপপ্রসঙ্গাৎ। অভঃ সা ব্যবস্থা বিশ্বে জন্মত্বতিব অন্যথা অমাবাস্যাসংযোগব্যবস্থায়া অত্য লোপপ্রসঙ্গাৎ। অভঃ সা ব্যবস্থা বিশ্ব জনসংমতা ন স্যাদিত্যুপেক্ষ্যা। এতচ্চাত্রে জন্মাইনীত্রতনির্বয়ন্তে লেখ্য মেবইতি।। ৭০॥ শিবরাত্রী চোপ্রাসপ্রজাজাগরাণানাং ত্রয়ণামেবাহশাকত্বং লিখতি শিবেতি। ৭১॥

অধুনা ভবিষ্যোপ্তরক্ষনপুরাণশিবধর্মোন্তরাচ্যক্তাত্মশারেণ ব্রতাত্মহান প্রকারং লিখতি সাম-মিতি পঞ্জিঃ। তদ্য শিবদ্য অর্চনং পূকামার্ভেং ॥ ৭২॥ তদেব লিখতি দ্বাভ্যাং । আদি- ক্ষীরাদিভিক্ত শুর্রান্তর্ধারয়। দ্রাপয়েচ্ছিবং ।। ৭০।। মহার্চাৎ বিধিনা রুত্বা গন্ধপুলাভিলাদিভিঃ। সমর্প্য ধূপদীপাদীন শন্ধেনার্য্যৎ নিবেদয়ে । তত্র মন্তঃ। গৌরীবল্লভদেবেশ সর্পাঢ্যশাশিশেখর। বর্ষপাপবিশুদ্ধার্থমর্য্যৎ মেপ্রভিগৃহ্যভামিভিয়ে । হার্যার্থ পরিপূক্ষ্যাথ দন্ত্রা হব্যৈ চ দক্ষিণাং। বিধিনজ্জাগর ২ রুত্বা প্রাভংশারণমাচরেং ।। ৭৫ ।। তত্র পারণানির্বঃ। পূর্ববিদ্ধোপবাসে চ পরেহনি চন্তর্দ্ধানী ।
দিবসব্যাপিনী তিঠেং কুর্য্যাং তস্যাং হি পারণ ।। ৭৬ ।। তথাচোজং। সা
স্থসময়পর্যান্তং ব্যাপিনী চেং পরেহনি। দিবৈব পারণ কুর্যাং পারণে নৈব দোহভাক্ ইভি ।। ৭৭ ।। অনুষ্ঠানবিধিশ্চাস্য ব্রভস্যোক্তোইভিনিস্তর । শিবধর্মোন
ভরাদৌ ভ জেয়োপেক্ষ্যঃ সচেত্রতঃ। শিবব্রতস্য মাহাত্মস্য সর্ব্য বিশ্রুতং।
ব্যাধোপি মুক্তোয়স্থাদৃক্ লিস্থার্চাক্ষাগ্রাদিনা ।। ৭৮ ।।

শব্দেন ঘৃতমধ্যদি ক্ৰাক্ষারদাদিকঞ্চ।। ৭৩।। বিধিনেত্যতায়ং বিধিঃ। প্রথমে যামে শিৰায় নমইতি পঞ্জ্রক্ষমন্ত্রের্বা গল্প বুষ্পতিলমানগোধুমাদিনা মহাপ্রপাং ক্রত্ব। ততক্ষ ওঁ আদ্যায়নমঃ **ওঁরামায়নম: । ওঁতৎপুরুবায়নম: । ওঁবোরায়নম: । ইতি প্রত্যুগাদিচতুর্দ্দিকু । ওঁঈশায়নম: ।** ইত্যপরি। এবং পঞ্চ বক্তানি পুষ্পাদিভিঃ সংপ্রদ্ধাপশ্চাদিষ্টপুষ্পং সমপ্রেং। আদিশকা-देवद्यम्। তাষূ লাদি অর্ঘ্যঞ্ফ কলগন্ধাক্ষতান্বিতং জ্ঞেরং ॥ ৭৪ ॥ আটার্ঘাং শিবব্রত্বিধ্যুপদেশকং অক্তপুষ্পান্নবস্ত্র: দিনা সংমান্য বিধিবদিতি দ্বিতীয়ে যামে শঙ্করায় নম ইতি তৃতীয়ে মহেশ্বরার নমঃ ইতি চত্তর্থে রুজায় নম ইতি পূর্বেতোবিশেষঃ। অন্যশ্চ সমান্ত্র বিধিজে মিঃ। তথৈকাদশী-জ্ঞাগরণবদ্দীতহত্যাদিনেতি চ জেয়ং । পার্ণমাচরেদিত্যত্রাপি বিধিবদিতামুবর্গুনীয়ং। ততশ্চ প্রভাতে নিভাক্তাং ক্রা গৃহে শিবমভার্চা শিবভক্তান্ বৈক্ষণান্ বিপ্রাংশ্চ সন্তোজ্য বন্ধুভিঃ সহ ভুঞ্জীত ইতি জ্বেয়ং॥ ৭৫॥ নমু ভদ্ব তপারণে চ শুদ্ধায়ামুপবাসে সতি তথা প্রদোষব্যাপত্মা-দিনা পর্দিনেপ্যুপবাদে সতি প্রাতর্মাবদ্যায়ামের পার্ণম্বাধং পূর্ব্ববিদ্ধোপবাদে চ কৃষ্ণা-ষ্টমী কন্দ্ৰতী শিৰ্বাত্ৰিচত্তৰ্দ্দী।এতাঃ পূৰ্ব্ববৃতাঃ কাৰ্য্যান্তিথান্তে পাৰণং ভবেদিত্যাদিক্ষন্দৰচলৈ-প্রিথ:ত্তে পারণবিধিন। ভত্রচ সমস্তদিনব্যাপিচত্তর্দ্দশী নিষ্কুমে সভি কদা পারণমস্ত ইত্যপে-ফারাং লিখতি পূর্ব্বেতি হি শব্দস্তে বার্থে। তস্যাং চন্তর্দ্দশ্যামের পারণং অন্যথাইমাবস্যারাতৌ ভোঙ্গনস্য প্রসঙ্গাৎ তচ্চ নিষিদ্ধং। ভূতাউন্ম্যাদিবা ভুজ্ব। রাত্রৌ ভুজ্বা চ পর্বানি। একাদশ্যাং দিবা রাত্রৌ ভুক্ত্বা চান্দ্রায়ণং চরেৎ। এবং যদ্যপি চত্তর্দ্ধশ্যাং ভোজনং নিষিদ্ধং তথাপি পার-ণান্তবোধেন অমাবাস্যারাতি ভোজনবভক্ষোষ্বিশেষাবহং নস্যাদিতি জেয়ং। কিঞা সর্বেষ-বোপবাসেরু দিবাপারণনিষ্যতে। অন্যদা চতুর্দ্ধশান্তে সত্ত্যের পারণং ।। ৭৬॥ সা শিবরাত্রি-চত্তদিশী তুপরস্মিন দিনে অন্তময়পর্যান্তং ক্র্যান্তিস্ময়াবধি ব্যাপিনী চেন্তবভি। এবং চতুর্দ-শাস্তপারণে চ ত্রতী ক্ষেমভাক্ ত্রভভঙ্গনোযভাগী ন স্যাৎ অন্যধামাবস্যারাতিভোজন-প্রাপ্তেবিতি ভাব:। এনমুপ্রাসন্বয়ঞ্জনিরস্তং। অতএবোক্তং। যামত্রয়োর্দ্ধগামিন্যাং প্রাতরের হি পারণমিতি দিক্।। ৭৭।। অসা শিবরাতিসম্বন্ধিতের সা। অভাস্তবিস্তরং <mark>যথা স্যাৎ ।</mark> অপেক্যান্টেম্ভবতি তলা ততঃ নিব্ধর্মোত্রাদিতঃ স্বিধিজ্ঞেয়ি। আদিশব্দেন ভবিষ্যোত্তর-क्निश्रागिवयामनापि ॥ १४॥

अग्रस्थी मांश्राच्याः निवार तामकथास्था।। রামভক্তি সমং যামৎ নয়েদ্রাম -मनुमातन्। ইতি প্রথমধামকতাং ।। ১৬।। मञ्जालामनाकाक कूर्या स्वारमयुष्ठ-ব্রিতঃ। যামে দ্বিতীয়ে সংপূজ্য মধ্যাক্ষেত্রত ভাবয়েৎ।। ১৭।। উচ্চত্তি প্রাছ পঞ্জে সুরগুরৌ সেন্দৌ নবম্যাং ভিথৌ লথে কর্কটকে পুনর্বসুমুভে মেযং গতে পুধ্বি। निर्मकृ शिलाः शलाभगिषिधारमधामयाधात्व तावि वृ उमकृमशृक्विकवः वदः िक्षिरम्कः महः।। खरेख्यः बामरयद्यामहानहर्याः ममहाक्ष्वं भरतः। कलभूष्णामू मम्मूर्वः गृशेषा मद्यमुद्धुनः । चामाक पृष्ठकू मूर्यम् उत्थ उनमी परेनः । चर्मा मेषः ।। দশাননবধার্থায় ধর্মসংস্থাপনায় চ। দানবানাং বিনাশায় দৈত্যানাং নিধনায় চ। পরিত্রাণায় সাধূনাং জাতোরামঃ স্বয়ং হরিঃ। গুহাণার্যাং মরা দত্ত জাতৃভিঃ সহি-তো अन्या वि ।। शूनः शूष्णाञ्जलि पञ्च यात्र या দিবারাত্তং নয়েদ্বুখং। ভতঃ প্রাতঃ সমুখায় নিভাক্ত্যং সমাপ্ত চ। বিধিবজাম-মভার্চ্চা ভক্তাচার্যাৎ প্রতোষা চ ।। বাহ্মণৈঃ সহ ভুঞ্জীত তেভ্যোদদ্যাক দক্ষিণাং।। পারণমন্ত্রঃ। তব প্রসাদস্বীকারাৎ ক্তং যৎ পারণ্ং মরা। ব্রতেনানেন সম্ভুটঃ স্বস্থি ভক্তিং প্রয়ছ মে ইতি।। ক্তেরং ব্রহ্মহত্যাদিপাপেভ্যোমুচ্যতে ধ্বং। ন্তলাপুরুষদানাদিফলৎ প্রাপোতি মানবঃ ৷ অনেকজন্মসৎসিদ্ধপাপেভ্যো মুচ্যতে ধ্রবং। বহুনা কিমিহোক্তেন ভক্তিস্তস্য করে স্থিতা। অকিঞ্নোপি নিয়ত উপোষ্য নবর্মাক্রতং। শ্রুত্বা জাগরণং ভক্ত্যা পূজ্বেছিধিবন্মুনে। গঙ্গায়াং প্রক্রিপেলেপ্যাং লেখ্যাৎ মূর্জিং গৃহে ন্যানেও। আচার্য্যায় চ হৈমাদিং দদীত প্রতিষাৎ বুধই ভি॥৯৮॥

অথ দোলমহোৎসবং। চৈত্রে সিতৈকাদশ্যাঞ্ছ দিক্ষণাভিমুখং প্রভুং। দোলয়া দোলনং কুর্য্যাক্ষণিভন্ত্যাদিনোৎসবং। তথাচ গারুড়ে ।। চৈত্রে মাসি সিতেপক্ষে দক্ষিণাভিমুখং হরিং। দোলাকঢ়ং সমভ্যত্ত্য মাসমান্দোলয়েৎ কলো ।। ভন্নিত্যতা চ পামপুরাণে। উদ্ভের্ত রখং মধৌ দোলাং প্রাবণে ভন্তপর্কচ। চৈত্রে দমনকারোপম্কুর্কাণোত্র জন্তাধং ইতি। দোলাকঢ়ক্চ ভগবানবলোক্যঃ প্রয়ন্তঃ। দোলাকঢ়ক্য চাস্যাপ্রে কুর্য্যাজ্ঞাগরণং শুভং।। তনাহ্য্যাঞ্জাক্তৎ ভত্রৈব।। দোলাকচং

यामः नवमीनिवन्ध्यथमध्यद्वरः ॥ ৯७ ॥ ज्ञाज्ञ हो जिल्ला वारम्य भाष्णाणभीठानाः श्रमामनानात्मावनाः कूर्यानिज्ञाः ॥ ৯१ ॥ क्रमानावन विधित्मवाः छेष्ठः इडि स्प्राद्याकान् कित्र व्यम् खी कूनीवास्त्रापृत्क निश्च द्वाज्ञ प्राविश्व महान् विश्वान्। भाषान् यावष्णां यवन हेज्याद्याकानिकान्द्र द्वाविश्व व्यवस्थान् त्यस्य कृत्वक विश्वान्। भाषान् यावष्णां यवन हेज्याद्यकानिकानिकान्द्र द्वाविश्व विश्व कर्वते निष्य कर्वति निष्य कर्वते निष्य कर्य निष्य कर्वते निष्य कर्वते निष्य कर्या निष्य कर्या निष्य कर्य कर्य कर्य निष्य कर्य कर्य कर्य विषय क्रिक्य कर्य कर्य क्रिक्य क्रिक्य कर्य क्रिक्य क्रिक्य कर्य कर्य क्रिक्य ख्रिश्च शाशानि क्यार विकास । प्रशास शरी सु मुखा ए यूर्न कर । जार- डिशेख शाशानि क्यार विकास । यांच्या क्यार विकास । क्यार विकास । व्यार क्यार कर विकास । व्यार क्यार विकास । क्यार क्यार व्यार विकास । क्यार क्यार विकास । क्यार क्यार विकास । क्यार क्यार क्यार क्यार क्यार । क्यार क्यार । क्यार क्यार । क्यार क्यार । क्यार विकास । विकास । विकास । विकास । विकास विकास । विकास विकास । विकास । विकास विकास । विकास । विकास विकास विकास । विकास विकास । विकास विकास विकास विकास । विकास विकास विकास विकास विकास । विकास विकास विकास विकास विकास । विकास विकास विकास विकास विकास विकास । विकास विकास विकास विकास विकास विकास । विकास विकास विकास विकास । विकास विकास विकास विकास विकास विकास । विकास विकास विकास विकास । विकास विकास विकास विकास विकास । विकास विकास

ভাষনী লাখ্যনি বিশ্ব । চৈত্ৰসা শুক্ল দ্বাদশ্যাং প্রতিঃ কৃত্যৎ স্থাপাচ। নিত্য-পূজাং বিশ্ব নাম কুর্যালেনার খসবং ত্রতী। তদর্পন্ধ বিশেষের নৈবেদ। দিকমপ্রেৎ। সংগাদ্য বৈক্ষাংকৈ দ্য িখন ত্যাদি কার্য়েৎ। মহানীরাজনং কৃষ্ণা প্রদিশেদি চ্যুভোগরি। গলাবুলেন্ট্র নিবিচিত্রাণি বিভাগশং । ১০০ !৷ সভোষ্য বৈক্ষাং বৈক্ষাং গিডেল্ গীতনু সাদিভিঃ প্রভুং। নত্রাভাগ্যাপ্রমন্তঃ মন্ দোলামারোক্রেচ্ছাভাং। নীজা বহির্বিদিকারামূলুক্ষায়াৎ ম্থাবিধি। অভ্যন্ত্যান্দোলয়েৎ কৃষ্ণং স্ক্লোকার-

ঘূর্ণনে আন্দোলনে সতি বে প্রপশ্যন্তি তে নুক্তা ইত্যয়য়ঃ। মুদ্রা ঘূর্ণনে পিঃস্কৃতে সর্বেছি পরাধসঃ বৈ মুদ্রা অবহাতি বাক্যান্তরং। মধুমাধবে বসন্তইত্যর্থি মদা মধ্যে মাধবে বেতার্থিঃ। কুদানি বিল্লাপাতা দ্বৈশার্থাহপি তং করণাও।। ১৯॥

অথ নিতাপুজানতবং। ব্রতী ক্তে প্রবাদঃ গুর্বলিথিতদশ্যাদিনিয়ম যুক্তোরা। তদর্থং দোলোৎস্বার্থং। বিশেবেণ অন্যাদনাদাধিকোন। সংমান্য আদৌ সাদরং নিমন্ত্রা হুর পাদ প্রফালনপুর্বেকং প্রিরণামৃতান্ত্রেপনমাল্যাদিনহাপ্রদাদপ্রদানেন সম্পূজা। তৈর্বৈফ্টেংঃ। আদিশকেন বাদ্যনামস্কীর্ত্তনানি। বিচিত্রাণি গ্রাদীনি। বিভাগশং প্রমদক্ষেষ্টীয়াদিভূষণ দোলাদৌ ভাগে ভাগে পৃথক্ পৃথক শ্তোপরি প্রক্ষিপেছ। তত্র গল্ধঃ। অগুরুক্তসমনাদিসাধত অরভিত্রাবিশেষঃ। অনুলেপশ্চন্দনাদিপক্ং। চুর্ণানি চ প্টবাসাং বুক্কবন্ধনেতি প্রসিদ্ধানি। প্রভাগ বাসন্তির্গাদিকি। বিভাগ কর্মাদিকি ক্রিক্রান্ সন্তোধা প্রভুঞ্জ ভগবন্তং নত্রা প্রথম অভ্যুগ্র চ স্ক্রেলাকহিতার্থং নিক্সনম্বার্থিক স্বর্থং দোলানিমান্ত্র্ সাবধানমান্দোলন লীলাং বিধেহীত্যাদি তথা বলীয়সা গদা স্থামিন্ পদবীমবধারয়েত্যাদিক প্রথম্য স্বার্থানঃ সন্ধ্রার্থানঃ সন্ধ্রার্থানঃ সন্ধ্রাণ্ডিং নিক্সন্ত্রার্বিশেষত্রান্ত্রমাং দোলাং

অথ দমনকারোপণোৎসবঃ। চৈত্রস্য শুক্লদ্বাদ্শ্যং দমনারোপণোৎসবং। বিদ্ধ্যাত্তদ্বিধিকৌধারনাদ্যকোত্রলিখ্যতে ॥ নধােঃ নিতৈকাদশাক্ষ প্রাতঃ ক্ত্যং সনাপ্য চ। গছা দমনকারামং ভত্রাশোকং আরং যকেন ক্রিত্র নতঃ।

जी टामि जितारतोकरस्थ । ज्यामिनार**क्त कराकरमञ्जानिमञ्**लास्य 'सरत्रमरमास्य राम्यस्थी, ईनामि । द**्रि** র্দের।লয়াৎ উজ্জায়াং অলুচ্চায়।ভূতপরীভার্গঃ এতচ্চ সর্বলেক নাং অ্খদর্শনার্থণ যথাবিদীতি বেদিকাং ত।মুপফ্ত্য ধ্রুপভাকাভোল্যাদিভিন্নজ্ভা চ চ্চুপট্টবসনে পাশ্বিয়ে স্তম্ভাদৌ দোলাং নিবধ্য দোনার্জন্য ভগবতে ১৯৩ন কলবিশেনাক্তে শান্দালন**গ্রমবিশে**ষভূষ্টেশ্চ প্রজান निभाषः कृता मधानीवाज्ञमः कृता शक्तामिकश्च श्रीक्रिशा भरेनः भरेनः भावधानमारिकालरतः भिन्धाः **मध्यकात् छेण्यः । मर्त्वातारेकवर्तना** भिन्नः यथाभाष्ट्रियारकानस्य । स्मानाब्र्यन्तर्यक्षेत्र-ফলবিশেষোক্তেঃ । ২০১॥ এবমনের িথিতপ্রকারেণ যামে নামে প্রতিপ্রছরং প্রাভুমভার্চারন্ আন্দোলয়ংশ্য সন্মংখং স্বেন হতাগীতাগিন। দিনং রাভিঞ্গনরেং অত । প্রতিযানম হার্চন মানেদালনগু ততঃ পুষ্পাঞ্জিং দত্ত্বা যামে যামেগ্ৰু ছিত্ৰ ই ভিলাম:চেন্চক্ত্ৰিকোক্তেঃ / ভথা একা-দশীজাগরণে যামে যামে মহ ভাগ কুর্যালানালিকং হারতিআদিক কোভেশালেলারতঃ তথাতৈব ঘণনে কৃতইতি যাব্যাক্ষোনয়েদিত্যাত্যক্তাকোনন্সা পৌনঃপ্রন্যপ্রতীতেরিতি দিক্। প্রার্থ্যেতি দেশালয়াম্বধিবাস্য শ্রীশালগ্রামণিলাগ্রে স্থাপিত্সা দমনক্ষাণ্রোপণেশ্যের র্থমান্দোলন লাঁলামেতামপ্তায় ভগৰজ্জনৰাৎসলোন ফুখং সাবধানং স্বান্দিরে ৰিক্ষয়ংবিধেতীত্যাদি প্রার্থনাং করা। নির্মঞ্জ দোলকীড়ারাং দৃষ্টিমুদ্ধার্য্য। স্থালয়ং দেবালয়ং আসমাক্ গীতবাদা-দিনা নয়েং। ইমং দোলযাত্রাখাং ॥ ১০২॥ রাকা পূর্ণিমা। আদিশকেন প্রতিপদাদি। কদ:চিৎ প্রতিপদি কদাচিন্দিতীয় য় মপি উত্তরকাল্ভনীনক্ষত্রযোগাৎ কার্যাইতি বৎ তচ্চ শ্রাপুরু যোক্ষ ক্ষেত্রে নপ্ত প্রক্ষোভন্য প্রাচী ভটান ত্সাবিধানং ॥ ১০০ ॥ তথাপি তল্পী मार्जाभि তথৈব দোলাছাৎসব: কর্ত্তবাইতি নিখতি কিন্তিভিত। ঈরণী মূর্ত্তিপূজা বাত্রে।ৎস্বাদি-ৰূপা যা ভক্তিঃ তস্যাঃ সমাগ্দশ্নশীলস্য লোকপ্ৰাছকসা জীকগল'গ্ৰেবস্য অফুসারতঃ যশ্মিন্দিনে যথা তৎক্ষেত্ৰে ভবেক্তিম্বালি তথা দোলযাত্ৰাণ চন্দ্ৰমাত্ৰাণ জলমাত্ৰাণ রখ্যতাঞ কুৰ্য্যাদেবেতাৰ্থঃ তত্ৰ হেত্তত্বেন লিখিতমেৰ ঈচুণ্ডিজি স্ন্দশীতি। নহোৎসংবাছলাঞ্চ গুণাৰহ-মেৰেতি দিক্যা ১০৪।।

অশোকায় নমস্তভাং কামস্ত্রীশোকনাশনঃ। শোকার্ডিং হর মে নিভামানদং জনয়স্থ নে ইভি । ১০৫ । নেষ্যামি রক্ষপূজার্থৎ সাং রক্ষপ্রতিকারকং। ইভিসংপ্রার্থান নত্তাচ গৃত্তীয়াদমনৎ শুভং ।। ১০৬ ।। প্রোক্ষাতৎ পঞ্চাবোন প্রকালাাড্রিঃ প্রপূজা চ। বস্ত্রোগচ্ছাদা বেদাদিঘোষেণ গৃহমানয়েৎ ।। ১০৭ ।।

অথ দমনকাধিবাসবিধিঃ। ক্ষণ্যাত্রে সমুদ্র স্থাতে ভিদ্রমণ্ডলং। নিধায় দমনৎ তত্র রাত্রে তদধিবাস্থে । তত্র মন্ত্রঃ। পূজার্থং দেবদেবস্য বিফোর্লক্ষ্মীপর্ভেঃ প্রভাগ দমন জমিহার চ্ছ সামিধ্যৎ কুরুতে নমঃ। ইতি ।। ১৮ ।। স্বীজং কাম্দেবঞ্চ তথা ভ্রমা শরীরকং। তনজং মন্মথিঞ্চিব বসন্তমখনেব চু । স্মরন্তথেক্ষুচাপঞ্চ পূজাবালঞ্চ পূজ্বেং। প্রগাদিদিক্ষু কত্যাচাং বিধিবদ্দমনে ক্রমাং।। ১০৯। অফো-তরশতং কামগায়ত্র্যা চাভিমন্ত্র্য তং। দত্ত্বা পূজাঞ্জলিৎ কামদেবৎ বন্দেত মন্ত্রবং। মন্ত্রশতং কামগায়ত্র্যা চাভিমন্ত্র্য তং। দত্ত্বা পূজাঞ্জলিৎ কামদেবৎ বন্দেত মন্ত্রবং। মন্ত্রশতং কামগায়ত্ব্যা চাভিমন্ত্র্য তং। দত্ত্বা পূজাঞ্জলিৎ কামদেবৎ বন্দেত মন্ত্রবং। মন্ত্রশতায়ং। নামান্ত্র পূজাবালায় ক্রগদাহ্লাদকারিণে। মন্মথায় ক্রগদ্বের রভিপ্রীজ্ঞিনিয়েন ইতি। আমন্ত্রিতাসি দেবেশ পুরাণ পুরুষোত্রম। প্রাতম্বাৎ পূজাবিশ্বামি সামিধ্যৎ কুরু কেশব। নিবেদয়াম্যহং ভ্রভাৎ প্রাতর্দ্যনকং শুভং। সর্ব্যা সর্ব্যা বিফোনমন্তর্য প্রসীদ মে। ইত্যমামন্ত্র্য দেবেশং দন্ত্রা পূজাঞ্জলিং পুনঃ। গতিন্ত্যাদিনা রাত্রে কুর্য্যাজ্ঞাগরণং মুদা।। ১১০।।

অথ দমনকার্পণবিধিঃ। প্রাতঃ দানাদি নির্বার্ত্য নিত্যপূঞাং বিধায় চ। দমনা— বোপণার্থক মহাপূজাং সমাচরেৎ। ততোদমনকং ভক্ত্যা পাণিভ্যাং পরিগৃহ্যচ। ঘণ্টাদিবাদ্যঘোষেণ ইঞ্কফায় সমর্পয়েৎ।। ১১১।। তন্ত্র মস্কঃ। দেবদেব জগমাথ

সমর্পষ্টেদিতি শমর্পণঞালে দেবস্য শির্সি দমনকমঞ্জরীমারোপয়েৎ ভতোঘথাশোভং জীচর-থাদাবারোপয়েদিতি জ্ঞেরং॥ ১১১॥ কামেশ্বরী রতিঃ তস্যাঃ প্রিয়েতি। জীক্ষণ্য কামদেবত্বেনা-

তত্ত্ব দমনকারামে অশোকবৃক্ষরপং স্মরমক্ষতচন্দন। দিনা পূক্ষরেৎ । অত চ কামরপেণ প্রিভাবত এবপূজাদিকং জ্রেরং । যদা ভগবদর্পণায় দমনকগুণবিশেষার্থণ কামদেবস্যেবিভি দিক্ ।। ১০৫।। গৃহ্নীয়াদিতি নিজদমকারামাভাবেহনোদ্যানাদপীত্যর্থং । শুভং পরমোজমং স্থান্দরমঞ্জর্যাতি যুক্তং ।। ১০৬।। তৎ দমনং অদ্ভিং শুক্ষোদকেন প্রকাল্য প্রপূক্ষ্য অক্ষতগঙ্গাদিতিং সমভ্যচ্চ্য বস্ত্রেণ আছোদ্যতি নবে পটলে নিধায় গিতধৌতবাসসাচ্ছাদ্যতি জ্রেরং। আদি শব্দেন গীতবাদ্যাদি ॥ ১০৭।।

তত্র মণ্ডলে তৎপটলনিছিতং দমনং। অধিবাসরেদিতি নিত্যক্রিয়াং নির্বাস্ত্র্য ভগবতঃ পুজাং বিশেষতঃ কৃত্রা তদপ্তরা তদধিবাসনং কুর্যাদিতি বোদ্ধব্যং। ১০৮॥ দমনকস্য প্রগাদ্যইন দিক্ষুক্রমেণ কামদেবাদ্যইকং কামবীজসহিত্য বিধিবৎ ইক্ষুক্ষতগদ্ধাদিভিঃ পুজারেৎ। তত্র প্রয়োগঃ। ক্রাঁ জাঁ কামদেবার নমঃ। জাঁ রত্যৈ নম ইত্যাদি। যলা কেশবাদিন্যাসবৎ ক্রাঁ কামদেবার রত্যানম ইত্যাদি॥ ১০৯॥ তদ্দমনকমভিমন্ত্রা। জাগর্থ্য দোলাক্র্যা ভগবতেনি হত্যে বস্তাদেব কিয়া লক্ষ্যে সভ্যাং দমনকাধিবাসস্থানে পুজাদিলারেণ পৃথক কুর্যাৎ। ১১০॥

তথা বৈশাখরত নে । পাছে পাতালখণ্ডে নারদায়রীষসম্বাদে । মাধ্যে
মাসি সংপ্রাপ্তে মেনতে কর্মসাঞ্চিনি। কেশবর্প্রতিয়ে কুর্য্যাৎ কেশবর্প্রতসঞ্চয়ং ।
দদ্যাদনেকদানানি ভিলাভাপ্রভ্নিনাপি। জনকোটিসন্ত্রভূতপাতকান্তকরানি চ।
জলালশক্রাপেনুভিলধেনুলুখানি চ। বিত্তনানেন দেয়ানি দানানীপ্রিতসিদ্ধয়ে।
বৈশাখে বিধিনা স্নানদ্মং নদ্যাদিকে বিজঃ ।। ১১৯ ।। হবিষ্যং ব্রহ্মসর্যাঞ্জ্লুত্র্যা নিয়মন্থিভিঃ। ব্রতং দানং দ্যোদেবনধুসূদ্নপূজ্রনং । মাধ্যে মাসিকুক্রিতি মধুসূদ্নভ্তিলৈং । ভিলোদকসুর্বার শক্রান্থরয়োহিনীঃ। পাদ্রাণাত-

র্জনাৎ। যদ্ধা সর্বাকামপ্রদা ভগবতী লক্ষ্যীঃ যদ্ধা শ্রীকৃক্ষ্যা সর্বাদামপুরণী জ্বাধা ভৎপ্রিয়েতি সংখাধনং কামবিশেবপূলার্থং প্রীত্যা দমনকগ্রহণার্থং বা ইতি দিক্ ॥ ১১২ ॥ দামনকীং দমনকমঞ্জীবির্তিতাং মালাং ভগবতে সমর্গ্য অনন্থং গ্রান্ত্রালার্য পঞ্চ সমর্প্য গীতহত্যা দিনা মহোৎসবং দমনকারে পেণ্যাত্রাসম্বন্ধিনং কৃত্ব। মণিবিক্রমেত্যাদি প্রার্থরেৎ ॥ ১১৩ ॥ ইয়ং মংকৃতদমনকার্পণকার্থা পুরুবে মণিবিক্রমমালাদিভিঃ পূজা তবাস্তা। তাভির্যথা প্রীয়েশে অন্যাপি তথা প্রীত্রেভবেতি ভাবঃ॥ ১১৪॥ পূজাঞ্চ হৃদয়ে বহু প্রীত্যা স্বীকৃক্ ॥ ১১৫॥ এবং বিধিং বিলিখ্য তত্র কালং নিশ্চিনোতি পারণাহহাত ছাত্যাং ॥ ১১৬। বিদ্বভোষদি মধৌ টৈত্রে ন স্যাৎ ভদা বৈশাখ্যাং পূর্ণিমায়াৎ ছাদশ্যায়া প্রাবণে বা তন্য দমনক্স্যার্পণং কর্ত্বয়ং। প্রাবণে তথৈব বোদ্ধব্যং সর্বাক্র ভগবত্তিথিত্বাং ॥ ১১৭॥ খ্যাদিশক্ষেন বৈশাখ্যাং দমনকারোপণমাহাত্মগ্রাহ্বাহ্ন সর্বাকামানিভিপাদত্রয়েণ॥ ১১৮॥

পত্রায় কুন্তান্ দদ্যাদ্বিজাতিবু। তিসজাং পূজয়েদীশং ভক্তিতো মধুসূদনং। সাক্ষাদ্বিলয়া লক্ষ্যা সমুপেতং সমাহিতঃ।। তত্তিব বরাহ ধরণীসয়াদে। বিশেষাদিহ
দাতব্যান্তিলামধুসমন্বিতাঃ। ধর্মায় মহতে দীর্ঘদুরিতক্ষয়হেতবে ইতি। যদ্যপ্রান্তে
২থিলং কৃত্যং মাহাত্মালিখনে ক্রুটং। তথাপ্যেকত্র সংগৃহ্য ব্যলেখীদং সমাসতঃ।। ১২০।।

অথ বৈশাখ ক্ত্যনিত্যতা। বরাহধরণীসম্বাদে। যং পরিত্যজ্য বৈশাখৎ ব্রতমন্যদুপাচরেৎ। স করন্তং মহারত্রৎ হিন্তা লোক্ট্র হি যাচতে ।। কিঞা। অবৈশাথী ভবেচ্ছাখী বিপ্রঃ শ্রেভিপরোপি চেতি।। ১২১।। অথ সামান্যতো-বৈশাখ মাহ'আং। ভতৈত্ব নারদায়রীয়সয়াদে। ন মাধ্বসমোমাদো ল মাধ্ব-সমোবিভুঃ। পোতোহধিদুরিতাডোধিমজ্জমানজনন্য যা ১২২ ৷৷ দত্তং জপ্তং ভ্তং স্নতিং হত্তত্ত্যা মাসি মাধবে। তদক্ষয়ৎ ভবেভূপ পুল্যং সাধববল্লভে । ১২৩। কিঞ্চ।। বৈশাখান্তানি পাপানি সূর্য্যান্তানি তমাংসি চ। পরাপকারপৈশুন্য প্রাপ্তানি সুক্তানি চ। কার্ত্তিক মাসি যথ কিঞ্চিত্তলাসংস্থে দিবাকরে। সাুনদানা-দিকং রাজ ওত পরাধ্যগুণ ভবেং। তশাৎ সহসুগুণিতং সাঘে মকরগে রবৌ। ভভোপি শতসংখ্যাকং বৈশাথে মেষগে ভগে। তে ধন্যাস্তে সুক্তিনো রা-देवनाथमानि যে। প্রাতঃ স্নাত্মা বিধানেন পূজয়ন্তি মধুদ্বিষং। কিঞ্চ। পুনঃ কলিমুগে রাজন্ নৈতদ্যোপ্যং ভবিষ্যতি। অশ্বনেধাদিকং ফলামাহাল্যং মাধ্বস্য চ। **তि**मारिस्टिया नरेतः পोरिपर्शस्त्रग्राः नतकार्गस्य । **घण्डः** वित्रमञ्जा প्रচार्ताञ्खन নির্মিতঃ। কিঞাত ঠৈবে । দুর্ল ভিংভারতে বর্ষে জন্ম তত্র মনুষ্যতা। মানুষ্যে দুর্লভিৎ লোকে ষম্বধৰ্মপ্ৰবৰ্ত্তন । ততাংপি ভক্তিভূপাল বাসুদেবেংতি দুল্ল । তত্ৰাপি দুল্ল ভোষাসো মাধবোমাধবপ্রিয়ঃ। তমবাপ্য ভতোমাসৎ স্থানদানজপাদিক।। কুর্বস্থি বিধিমা যেত্ত ধন্যাত্তে ক্তিনোনরাঃ । ১২৪।। তেষাং দর্শনমাত্রেণ পাপি-নোপি বিকল্যবাঃ । ভৰম্ভি ভগবদ্ভাবভাবিতাধম্ম কাংক্ষিণঃ ।। তত্ৰ কম বিশেষ-মাহাজ্যং। তত্তিব। প্রাতঃসান্ধ বৈশাথে যজ্ঞদানমুপোষণং। হবিষ্যং ব্রহ্মচর্যাঞ্ মহাপাতকনাশনং । কিঞা বৈশাখং সকলং মাসং নিত্য সায়ী জিতে দিনু য়ঃ। জপন্ হবিষ্যভুক্ শান্তঃ সর্বাপাপেঃ এমুচ্যতে। একভক্তমথোনক্তম্যাচিত্মভিত্তি। মাধবে মাসি যং কুর্যারভাতে দর্মনীপ্সিতং। বারাহে ধরণীসম্বাদে। বৈশাথে-

ভক্তাদি। দমঃ ইদ্রিসনিল্রাইল রেটিলিঃ গাঃ ॥ ১২০॥

বৈশাৰং বৈশান নির্মন্তভামিত্যা: ॥ ১২১॥ মাধবেন জ্রীক্ষকেন সমঃ বিভুরীশ্বরোষধা-নান্তীতি দৃষ্টাস্তোহবগন্তব্যঃ এবমগ্রেপি। যোমাসঃ॥ ১২২॥ মাধবস্য বল্লভইতি সর্কবৈত্রব হেপ্তক্র ফ্রাঃ॥ ১২৩॥ ভাগে সূর্য্যে। তিয়ে ক্লিযুগো॥ ১২৪॥ ভগবন্ধর্মকাজ্ফিণঃ সন্তঃ ভগব-

বাসি যোবিপ্রান্ ভোজায় ড জিতৎপরঃ। সিক্থে সিক্থে ভবেন্থ ভবেন্থ গৈ পিতৃনাং যুগসংখ্যা ।। ২২৫ ।। যদ্ভি তত্ত্ব মধুরাধিক ভোজনানি যে বা যবাশসভিলোদকভোজনানি। ছপ্রাম্রাণি চরণোচিতর ক্লণানি ধন্যান্ত এব পরিভোহরিভোষণানি।।
এবং ক্তেন যৎপুণ্যং প্রাপ্তে নিয়মেশ্চ তৈঃ। তৎকেন গণনাং যাতি বর্ষকোটি
শতৈরপি। পুপ্রপৌত্রাদি সম্পতিং দীর্ঘায়ু যি যথেপিসতং। ইহাগোতি পরত্রাপি
মাবেব প্রতিপদ্যতে ।। ১২৬ ।।

অথ তত্র প্রাতঃস্নানমাহাত্ম । তত্ত্বের নারদায় রীষসম্বাদে। অমুরীষ মহাপুণ্ড श्री खर य कूक वीका १ । माधरव मानि रेयः माजर श्री जिस मन यूरे ।। যদানন্দপুরে প্রোক্তৎ বসতাং বর্ষকোটিভিঃ । তৎপ্রাতর্মাধ্বে মাসি সানেনৈকেন শভ্যতে। কিঞ্চ। যথৈৰ মাধবোধ্যাতোবিনাশয়তি কিল্বিশ। তথৈৰ মাধৰে সাুনৎ नियस्यन विनिभिज्दः ।। ১২१।। তক্র শীভগবৎপূকামাহাত্মাং ।। তকৈব বিধি-কথনে। বিশেষাদিপি বৈশাখে যোহর্চয়েয়ধুস্দনং। দর্বসম্বংসরং যাবদর্চিতত্তেন মাধবং ।। ১২৮ ।। কিঞা যশ্চাপি নিঃস্বং পুরুষোমাধবে মাসি মাধবং । পুত্পার্চন বিধানেনপূজ্যেরগুসূদনং ৷ সর্বপাপবিনিম্ ক্তিঃ পিতৃণাং তারয়েচ্ছতং ৷ স**জন্ম শত**-সাছসুং ন শৌকফলভাগ্ ভবেং। নত ব্যাধিভয়ৎ তম্য ন দারিজং ন বন্ধনং। সবিষ্ণু ভক্তোজায়েত ধন্যোজননি জনানি। যাবদ্যুগ সহস্থানি শতমষ্টে। তার ৭ তাব ৭ স্বর্গে বসেধীর ভূপতিশ্চ পুনর্ভবেৎ ।।১২৯।। ভূপত্বে বিবিধান্ভোগান্ বিহত ছ হথা সুখং। সাধ্বস্য প্রসাদেন মাধ্বে লীয়তে তভঃ।। ১৩০।। কিঞ্চ। বরাহ ধরণী সন্ত্রাদে। বিধিনাংকবিধিনাবাপি যে যজন্তি নরাধরে। মাধ্যে মাসি মাং ভক্ত্যা তৈশ্চ-যাজ্যোন্ম্যাহৎ সদ।। ১৩১।। যে যঞ্জি ধরে নিত্যমধুরৈর্জিবিধৈর পি । মাধবে যজতে যোমাৎ তেভ্যন্তদধিকং ফলমিতি। বৈশাখস্য পরঞ্চতে ততে, শাখ্যান পঙ্ক্তিযু। সামান্যেন চ মাহ;ত্ম্যং বিশেষেণ্চ সর্বশঃ ।। ১৩২ ।।

অথ তত্র সানবিধিঃ।। তত্রৈব নারদায়রীষসমাদে। মেষসংক্রমেণ ভানো-মাধিবে মাসি যত্নতঃ। মহানদ্যাৎ নদীতীর্থে নদে সর্সি নির্মরে। দেবখাতে তথা সামাৎ যথা প্রাপ্তে জলাশয়ে। দীর্ঘিকাকৃপবাসীমু নিয়তাত্মা হরিং সারন্। মধু-

ন্তাবভাবিতা ভবন্ধি ॥ ১২৫॥ মধুরাধিকভোজনানি মধুরক্রব্যপ্রধানভোগ্যানি । যবাশনং যবালং। তস্য পুনরুক্তির্বিশেষায়॥ ১২৬॥

আনন্দপুরে তীর্ধবিশেষে। তৎকলং ॥ ১২৭॥ বিশেষ্থ অন্যমাস্তআধিকান যএককালমত্যর্জয়েথা অপিশব্দস্ত্বর্থে॥১২৮॥ পুল্পৈর্যদর্জনবিধানং পূজাকরণং তেনাপি কেবলেন ॥১২৯॥
লীয়তে সংযোগং প্রাপ্তোভি॥ ১৩০॥ সদা যাজ্যঃ কৃতপুজোন্মীতার্থঃ। যদা সদৈর মৎপূজান্তে
করিষ্যন্তি মন্তক্ততাংপ্রাপ্তাইতার্থঃ ॥ ১৩১॥ তস্যাধিকং কলং স্যাৎ। অলিধিতমপি যুক্তাঃ
সংগৃহ্ণাতি বৈশাথস্যতি।পরঞ্চ মাহাদ্মান্যান্তে। তত্র পদ্পর্বাণাদৌ উপাধ্যানপঙ্কির ইতিহাসপরম্পরাম্ব। ১৩২॥

মাসস্ শুরায়: মেকাদশ্যামুপোষিতঃ। পঞ্চশ্যাঞ্চ বা বীর মেষসংক্রমণেপি বা।
বৈশাখনান নিয়মং ব্রাহ্মণনামনুজ্য়া। মধুসূদনমভ্যুষ্ঠা কুর্য্যাৎ সবনপূর্বকং।
বৈশাখন সকলং মাসং মেষসংক্রমণে রবেঃ। প্রাতঃ সনিয়মং সাস্যে প্রীয়তাং মধুসূদনঃ। মধুহন্তঃ প্রসাদেন ব্রাহ্মণানামনুজ্য়া। নির্দ্রিঘ্যন্ত মে পুণ্যং বৈশাখ সানমন্তং। মাধ্বে মেষগে ভানৌ মুরারে মধুসূদন। প্রাতঃ সানেন মে নাথ যথোক্ত
ফলদোভব। যথাতে মাধ্বো মাসো বলভো মধুসূদন। প্রাতঃ সানেনমে ভলিন্ ফলদোভব পাপাল। এবমুচ্চার্য্য তত্তীর্থে পাদৌ গ্রহ্মাল্য বাগ্যতঃ। শার্মারায়ণং
দেবং স্নানং কুর্যাছিধানত ইতি। বিধানঞ্চ পরং জ্বেরং প্রসিদ্ধং স্তিশান্ততঃ।
ভৎ কিঞ্জিগ্রিতং পূর্বং প্রাতঃস্থানপ্রস্পতঃ। ১৩৩।

অপ বিশেষত তাল য়ত্তীয়াক্তা । তলাছা আঞ্চ মাংলে । বৈশাথে মালি শুক্লা যা ত্তীয়ায়াং জনার্জনঃ। যবানুং পাদয়ামান যুগঞ্জ কতবান্ কত । ব্রহ্মালাকাং ত্রিপথলাং পৃথিব নামবভার য়ং। তদ্যাং কার্যোয়বৈর্হোমো যবৈ বিষিষ্ঠ সমর্চয়েং। যবান্দ্যা দিল্লা তিভাঃ প্রয়তঃ প্রাশয়েদ্যবান্। পালে চ প্রীবারাহ্বরণী সম্পাদে। ত্রেতা সুগং তৃতী রায়াং শুক্লায়াং মালি মাধবে। প্রবৃত্ত রেয়ীধর্মাঃ প্রবৃত্তান্ত প্রতিভাঃ। অক্রা সোচ্যতে লেকে তৃতীয়া হরিবল্লভা। স্থানে দানে হর্তনে প্রাদ্ধে লুক্লি তর্পণ। যেহর্ত্যের যবৈ বিষ্কৃৎ প্রাদ্ধং কুর্কিন্তি যত্তঃ। ত্র্যাং দদতি দানানি ধন্যাত্তে বৈঞ্চনা নরাঃ॥১৩৪॥

অথ শুরানপুরী। ভবৈর নারদায়রীষসয়াদে। বৈশাখশুরুমপুরাং জাহ্নী জয়ুনা পুরা। ত্রোগেং পীতা পুনস্তাক্তা কর্নস্থাতু দক্ষিণাং। তন্যাং সমত্রিদেরীং গঙ্গাং ভুবননেগলাং। সুত্রা সম্প্রিগানেন সধন্যঃ সুত্রতী নরঃ। তস্যাং সন্তর্গানেবান্ পিত্র মর্ত্যান্ যথাবিধি। সাঞ্চাং পাশ্তি তে গঙ্গামাতকং গত কলামং। ১৩৫।।

অথ শ্রীনরসিংহচন্তর্দশী।। বৈশাখস্য চন্তর্দশ্যাং শুরায়াং শ্রীন্কেশরী। জাতন্তদ্যাৎ তৎপূলোংসবং কুথাতি সব্রতং ।। ২৬৬। নরসিংহচন্তর্দশীব্রত-নিত্যতা বৃহন্নারসিংহপুরাণে শ্রীভগবন্নসিংহপ্রনাদস্যাদে ব্রতবিধিকথনে। বৃর্ষে বর্ষেত্র কর্ত্ব্যং সম সম্বৃদ্ধিকারণং। মহাওহ্যমিদং শ্রেষ্ঠং মানবৈর্ভ্বতীরুভিঃ ।।২৬৭। কিঞা । বিজ্ঞায় মদিনং যস্থ লক্ষ্মেৎ স ত পাপভাক্। এবং জ্ঞাত্বা প্রকর্ত্ব্যং

শবনং স্থানং।। ১৩৩।। অমী বেদঅয়ং। তয়া অয়া প্রবর্তি হাধর্মান্দ প্রবৃত্তাঃ।। ৩৪।। কৃতস্থানং স্থার্থে কন্।। ১৩৫।।

ব্রতম্পবাসাদিনিয়মন্তৎ সহিতং ॥ ১৩৬॥ বর্ষে বর্ষেত্রিভি বীপ্রয়া নিত্যত্বং সাধ্যতে: ভক্ত হেমাদিপ্রভৃতিভিরেকাদশীপ্রকরণাদৌ বির্তমেবান্তি ॥ ১৩৭॥ অক্রণপ্রভাবায়েন চ মদিনে ব্রতমূত্তমং। অন্যথা দরকং হাতি যাবচ্চদুদিবাকরে।। ১৩৮।। ভতাধি-কারিনির্বরঃ।। তত্তিব সর্বেধামেব লোকানামধিকারোডি মনুতে। মন্তুরৈক্ত বিশে-বেণ প্রণেয়ং মংপরায়ণৈঃ।। ১৩৯।।

অধ তনাহান্তঃ । তত্তিব। এপিজ্ঞাদ উবাচ। নমতে ভগবন্ বিকো নৃসিংছ-বপুষে নমঃ। বৃদ্ধকোহৎ সুরেশৈকং ত্বাং প্রপৃচ্ছানি তত্ত্বতঃ। স্বানিংজ্রি মমোৎ-भन्नो ७ किर्द्र विधा कथर । कथरत मूखिरताकाठः कात्रनः यम तम अरा । श्रीन्तिरङ् উবাচ। কথয়ামি মহাপ্রাক্ত শ্ণুছৈকাগ্রমানসং। ভক্তের্যৎ কারণ্ বৎস প্রিয়ন্ত্রস্য চতং পুন:। পুরাকশেষাভূর্বিপ্র: কিঞ্জিং নাপ্যধীতবান্। নামাচ বসুদেবোহি বেশ্যয়াৎতৎপরোহ্যভূ:। তিমান্জনানি নৈব দ্বং চকথ সুক্তংকিয়ৎ। মুক্ত্বা ভ মদুভ॰ हेकर विभागमञ्जिनानमः । महुजमा প্রভাবেণ ভক্তির্জাতা তবেদ্শী। প্ৰহ্লাদউৰাচ। খ্ৰীন্সিংহাচ্যুত স্বামিন্কসঃ পুত্ৰেণ কিৎ কৃতং। বেশ্যায়াং বৰ্ত্তমানেন कथः उक्ति क्रजः मग्रा। योथानः विख्राद्वातमः वङ्क् मर्हिन माम्युष्टः॥ १८०॥ नृति १ इ-উবাচ। পুরাবন্তিপুরে হ্যাদীদ্বাক্ষণোবেদপারগঃ। তনাম বসুশর্মেতি সর্বা-লোকেষু বিশ্রুতং। নিত্যং হোমক্রিয়ামেষ করোতি দ্বিদ্ধসন্তমঃ। ব্রহ্মক্রিয়াসু সভতৎ সর্বাসু কিল তৎপরঃ। অগ্নিফৌমাদিভির্য জৈরিফাঃ সর্বে সুরোত্তমাঃ। তেনাপি বিদ্যমানেন ন ক্তৎ দুষ্ঠ্তং কিয়ৎ। তস্য ভার্য্য সুশীলা ভূদিখ্যাতা ভূবনত্রয়ে। পতিক্রতা দদাচারা পতিভক্তিপরায়ণা। অজিরে চ সূতাঃ পঞ্চ ভস্যাং বিজ্বরাত্তঃ। স্দাচারাঃ সুবিদাংসঃ পিতৃভক্তিপরায়ণাঃ। তেষাৎ মধ্যে কনিষ্ঠস্ত্রং বেশ্যায়াং তৎপরঃ সদ। ।। ১৪১।। তাং সন্নিবেশমানেন সুরাপানং ক্তং প্রয়া। সদা পাপরতস্তৎ হি নাক্রথা ধ্যয়নং ভূশং। বিলাসিনীগৃহে নিভাং ৰস্তি হঁ,ভবত্তব। একদা তদ্হে হ্যাসীত্তয়া সহ মহান্ কলিং। ততঃ কলহভাবেন ভোজনংন ক্তংস্থা। অজ্ঞানামদুতং চক্রে ব্রতানামূরমং ব্রতং । তথা সহ বিবাদেন রাত্রৌ জাগরণং ক্তং। বেশ্যায়াঅপি তৎ সর্বং প্রজাতন্ত ত্বয়াসমং। রাত্রী জাগরণে তস্যাং সঞ্জাতং কায়শোধনং। যুবয়োম্ধুতং জাতমজানাদছ-

নিত্যত্বমাহ বিজ্ঞায়েতি। বিশেষেণ জ্ঞাত্বাপি জ্ঞাননিষ্ঠোপীত্যর্থ: ॥১৩৮॥ প্রণেমং কর্ত্তব্যং। মৎপরায়ণৈর্মদেকনিষ্ঠৈরিতি তদু তস্য তদ্ধক্তিবিশেষৰূপত্বাদিতি দিক্॥১৩৯॥

ৰথমা তছ্তং ক্তং।। ১৪০।। ব্ৰক্তিক্য়াস্থ বৈদিককৰ্মস্থ।। ১৪১।। অধ্যয়নং নাক্ণাঃ না-

পুণ্যদং !! ১৪২ ৷৷ বেন চার্নবিভেনাদ্য মোদন্তে দিবি দেবভাঃ ৷ সৃষ্ট্যর্থস্ত ততো-ব্রনা চক্রে মনুত্রু রমং। মদুত্সা প্রভাবেণ নিমিতিং সচর চরং। ঈশ্বরেণাপি তজীনং ৰধাৰ্থৎ ত্ৰিপ্রসঃ চ। মহিংমুব ব্ৰহ্মগাসঃ ত্ৰিপুরং সংনিপাভিতং। অনৈ। শচ বহু ভির্দে বৈঋষিভিশ্চ পুরাতনৈঃ। রাজ্ঞ ভিশ্চ মহাপ্রাক্তি বিহিতং এত-নুত্রম । এতলুতপ্রভাবেণ সর্বে সিদ্ধিমুপাগতাঃ। বেশ্যাপি মংপ্রিয়া জাতা द्विः लाका मुश्वादिनी। छेन्नश्मकुष्ठः वर्न देवत्नाका हेव्य विक्षकः । शृर्वीयाण বিলাসিনা। ব্ৰত্যেতদুপশ্বিতং। প্ৰহলাদ তেন তে ভক্তিমঁয়ি জাতা হানু হযা।।১৪০।। ना বেশা। স্বংসরা জাতা দিবি ভোগাননেকশঃ। ভুক্ত্বা কামং বিলানা ভু স্বং প্রজ্ঞাদ विविधे गाः। कार्यार्थमवकात्रस्य मण्डतीताः शृथक् प्रामी। विधाय गर्यकार्याण শীঘুং মরি গমিষ্যসি। য ইদং মত্রতাগ্রান্ত প্রবিধাস্যতি মানবাঃ । ন তেষাৎ পুনরা-বৃতিঃ ৰূপেকোটিশতৈরপি। অপুত্রোলভতে পুত্রান্ মন্ত্রজাৎশ্চ সুবর্চসঃ। पति छाल ७ जिल्ली १ ४ न मग्र ह या पृशी। एक कार्यान एक एक ता का के मृताला-মুভ্মং। আয়ুষ্কামোলভেদাযুর্যাদৃ শন্ত শিবস্চ। স্ত্রাণাৎ ত্রতমিদৎ সাধু পুত্রদং ভাগ্যদন্তথা৷ অবৈধব্যকরৎ ভাসাং পুল্রশোকবিনাশনং ৷ ধনধান্যফলঞ্চৈর পতি-প্রিয়করং শুভ্ । সার্বভৌমং সুখ তাসাং দিব নে স্থাও ভবেত তঃ। জিয়োবা পুরুষাবাপি কুর্বন্তি ব্রভ্যুক্তমং। তেভোদদাম্যহং সৌখ্যং ভুক্তিমূকিকলন্তথা। বহুনোকেন কিং বৎস ব্রতস্থাস্য ফলস্তি। যদু তস্ত ফলৎ বক্তু ৭ নাছং শক্তোন শঙ্করঃ। ব্রহ্মা চন্তর্ভিকিকৈ কুন্চ নালং স্যাজ্জীবিতাবধি। কিঞ্চ। তবৈৰ ব্রতবিধি कथान। यथा यथा अवृत्तिः नतार भाठकमा कलो यूर्ण। उथा उथा विधानाति মদুত্ৎ বিরলং জনাঃ। তদুত্ব্য বিধানেন মতির্ন্যাৎ দুরাজ্বনাং। সদা পাপরতা-नान्छ পুরুষাণাং বিকম্পি। বিচার্যৈগ্রং প্রকর্তব্যং মাধবে মাসি মদুতং। প্রাপ্তে ভূতদিনে বংস সর্বকলামনাশনং ॥ ১৪৪॥ যেনৈব ক্রিয়মাণেন সহসুদাদশী ফলৎ। জায়তে ন মূবা বিচ্যি মানুষাণাৎ মহাত্মনাং।। ১৪৫।। তদভে চ। যইদৎ শূণুয়াম্বক্তা ব্রতৎ পাপপ্রণাশনং। তস্য প্রবণমাত্রেণ ব্রহ্মহত্যাৎ ব্যপোহতি। পবিত্রৎ পরমং গুহাৎ কীর্ডিরান্ত মানবং। স্বান্ কামানবালে।তি ব্রভ্স্যাস্য क्लर ल(७२॥ ४८७॥

অথ ভদুতনির্বঃ। আগমে। বৈশাথে শুক্লপক্ষে ত চত্তর্দশ্যাং মহাভিথে।। শারং প্রজাদ ধিকারমসহিষ্ণুঃ পরোহরিঃ। সদ্যঃ কটকটাশক্ষবিমাপিতসভা-

কার্যা: সন্ধিরার্যঃ ॥ ১৪২ ॥ চীর্নের ক্তেন ব্রতেন ।। ১৪৩॥ বিলীনা প্রবিষ্টা মরীতি শেষঃ।
মাং বিবিষ্ট প্রাবিশঃ কার্যার্থং ভক্তিপ্রবর্ত্তনার্থং॥ ১৪৪॥ মানুষাণাং জায়তে। মাহাত্মনামিতি
সন্ধুতাস্ঞ্চানাং। নচাত্রাসম্ভাবনাদিকংকার্যামিত্যাহ ন মৃষাবচ্নীতি।। ১৪৫॥ ন ভাবদম্ঞানাং

ননঃ। লীলয়া গদ্ধ স্ত স্থান্তা দুছ্তঃ শক্ষভীষণঃ।। দৃতরেয়বভারাভাং যত্তঃ সমৃপোারেং। মহাপুণ্ডমায়াঞ্চ সায়ং বিয়ৃং প্রপূজ্যেং। বৃহনার সিংহে। বৈশাধ শুলশক্ষনঃ চন্তর্জনারং সমাচরেং। মজ্জন্মসন্তবং পুণ্ডং ত্রতং পাপ প্রণাশনং ॥

ক্রান্তা নক্ষত্রেয়াগে তু শনিবারে হি মদুতং। সিদ্ধযোগস্য যোগে চ লভ্যতে
নিবযোগতঃ। সর্বিরেতিস্থ সংযুক্তৈর্ত গাকোটিবিনাশনং ।। ১৪৭ ।। কেবলঞ্চ
প্রকর্ত্রাং মদ্দিনং ফলকাংক্ষিভিঃ। বৈফবৈর্ন তু কর্ত্র্বা আর বিদ্ধচতুর্দ্দী।
ভাগি ম। প্রিয়া চতুর্দ্দী ভৌষে কর্ত্ব্যা কিল্মাপ্রা। কামবিদ্ধান কর্ত্রা আতীভৌমনুতা যদি।। ১৪৮ ।।

অথ ভদু ভবিধিঃ। প্রাতরুখায় কুর্রতি নিয়মং মনসা সারন্। মামের মদিলে বংল দত্রধাবনপূর্বকং ।।১৪৯।। নিয়ময়ত্রঃ। শ্রিন্দিংই মহাভীম দয়াং কুরু মমোলরি। অন্যাহং তে বিধাল মি বুড়ৎ নির্মিয়তাং নয়েতি । বুভ্তেন ন বজব্যৎ মদিনে পাপিভিঃ সহ। মিথ্যালাপা ন কর্ত্রাঃ সমগ্রফলকাং ক্লিভিঃ ।। ১৫০।। স্ত্রিয়ং দূভং বিহায়োদৈরে তিহেন মহাত্মন: । সার্ভ্রাৎ নয় রপঞ্চ মদিনে সকলে শুভে। ততোমধ্যাত্র বেলায়াং নদ্যাদৌ বিমলে জলে। গৃহে বা দেবখাতে বা তড়াগে বাতিশোভনে । বৈদিকেন চ মন্ত্রেণ স্থানিহিক্লণঃ। মৃত্তিকাগোময়েনেই তথা ধারীফলেন বা। তিলৈর্বা। সর্বপাপদ্মিঃ সান্ কৃত্রা মহাত্মভিঃ। পরিধার শুচিক্রন্ত্রে নিভ্যকর্ম সমাচরেৎ। ততোগৃহৎ সমান্ত্য সারন্ মাং ভিতিযোগভঃ। গোলমেন বিলিপ্যাথ কুর্যাদেষ্টদলামুকং। কলসং তত্র সংস্থাপ্য ভাযুং রল্পমন্থিও। তব্যোপরি ন্যমেন পাত্রং ভত্তুলৈঃ পরিপ্রিতং। হেনী মৃত্তিম্ব তবৈর স্থাপ্য লক্ষ্মি ক্রেণিটা বিভ্রাত্য। পঞ্চাম্ভেন ভে স্থাপ্য পূজনং তু সমান্ত্রে। থথা শক্তি তথা কার্যা বিভ্রাত্য। বিভ্রাত্য। পঞ্চাম্ভেন ভে স্থাপ্য পূজনং তু সমান্ত্রেৎ। ১৫৩ ॥ ততোব্রাজ্বনমাহূর তমাচার্য্যলোল্প্র । কুর্যাচ্ছান্ত্রসমাযুক্তৎ শান্তং দান্তং জিতেনির্বং। তেনৈর কারয়েৎ পূজাৎ দক্ট্য শান্তান সারভঃ। আচার্য্রচনান্ধান্ পূজাং কুর্য্যাচ্চার্রন্ বৃত্রৎ। তথাচাগ্যন। প্রভ্রাদ

শ্রবণাদিনাপি মহাফ্লং স্যাদিতি লিখতি যইতি॥ ১৪৬॥

দৈৰ্যোগতঃ কদাচিন্মহাভাগোনৈৰ লভাতে ইতাৰ্থঃ। যতঃ। সৰ্বৈঞ্জি। ১৪৭।। কেবলং তওঁদেয়াগহীনমপি ফলকাজ্জিভির্পি কর্ত্তগ্রামেব নিভাত্বাহু। স্মুরস্ক্রয়োদশী তেন বিদ্ধা॥ ১৪৮॥

প্রতিশত জনিশী প্রভাতে সর্ব্রেতসাধারণত্বাৎ পূর্বাদিনে চৈকভক্তাদিসং যমেবিজ্ঞেয় এব দন্ত-ধাবনন্ত উপবাসদিনে কাঠেন তরিষেধাৎ তুণাদিনা বোদ্ধবাং ॥ ১৯৯॥॥ ১৫•॥ তামুং তামুমরং মূর্ত্তিঃ শ্রীনার সংস্থী তথৈব লক্ষ্মীঃ হৈমী লক্ষ্মীমূর্ত্তিশ্ব। ১৫১॥ কার্য্যে ছে মূর্ত্তী। কার্যেতি পাঠে প্রত্যেকং সম্বন্ধঃ। ১৫২॥ তে ছে মূর্ত্তী স্নাপ্য স্থাপয়িত্বঃ। ১৫৩॥ দৃষ্ট্বা শাস্ত্রোক্তবিধিং জাত্বা। প্রাচার্যাজ্ঞিয়া পশ্চাৎ স্থয়মপি পুস্বরেদিত্যাই আচার্যেতি॥১৫३॥ প্রশাবিধিমাই

ক্লেশনায় যাহি পুর্বা চতুদ্দী। পূজরেভত যত্মেন হরেঃ প্রহলাদম্মতঃ। বৃহন্নার-সিংহে। মদ্রপং কারয়েভত্র পুজা তবক শোভিতং। ঋতুকালোড়বৈঃ পুলো পুল্যোহঞ্চ মথাবিধি॥ ১৫৫॥ উপচারেঃ বোড়শভি র্মান্তের্নামভিত্তথা। ততঃ शीत्रानिटेकम रेखः भृष्ठभोरग्रानिरमघणः। তत हम्मभमाः। हम्मभः मोठल५ मिना५ ठम्नुकुक्कू ममीनिष्ठः। प्रमानि एव ध्येखकार्थि नृनि९३ श्रेदामध्तः। श्रुष्णमञ्जः। कार्ला-क्वरानि गुज्ञानि खनगानीनि देव थएछ। । भूक्यानि मृनि १ दश्य नक्या नह नरमाञ्चर । পুপমন্তঃ। কালাগুরুময়ং ধূপং সর্বদেবসুদুর্ল ভে । করোমি তে মহাবিক্ষো সর্বা-কামসমূর্ধয়ে। দীপমত্রঃ। দীপঃ পাপহরঃ প্রোক্তন্তমসাং রাশিনাশনঃ। দীপেন লভ্যতেতিক কুক্সাদ্দীপং দদামি তে ইতি। নৈবেদ্যমন্ত্রং নিবেদ্যৎ সৌখ্যদং চান্ত ভক্ষ্যভোষ্যসমস্থিত। দদামি তের্মাকান্ত সর্বাপাপক্ষয়ং কুর্বিভি। অঘ্যমন্ত্রঃ। ন্সিংহাচ্যুত দেকেশ লক্ষ্মীকান্ত জ্বগৎপতে। অনেনার্যপ্রদানেন সফলাঃ সুর্যনো-রথা ইতি। পূজামন্তঃ। পীতাম্বর মহাবিফো প্রহলাদভরনাশকং। যথাভূতার্চনে **নাধ যথোক্তফলদোভবে**তি ।। ১৫৬ ।। রাত্রৌ জাগরণং কুর্য্যাক্ষীতবাদিত্র-নিষ্বনৈঃ। পুরাণপঠনং নৃত্যং শ্রোতব্যং মৎকথানকং ॥ ১৫৭ ॥ ততঃ প্রভাত-ৰময়ে স্নান- কৃত্বা হাতব্ৰিতঃ। পূৰ্ব্বোক্তেন বিধানেন পূজ্যেনাং প্ৰযত্নতঃ । কিঞ্চ। मदः भारता काका वा किनियासि मद्भूतः । छाः सुमूकत प्रायम मुः महास्त्र শাগরাৎ। পাতকার্বমগ্রসা ব্যাধিদুঃখাষুরাশিভিঃ। তারৈত্ত পরিভূতদ্য মহাদুংখ গতস্যমে। করাবলম্বনং দেহি শেষশায়িন্জগৎপতে। শ্রীনৃসিংছ রমাকান্ত ভক্তানাং ভয়নাশন। ক্ষীরামুধিনিবাস তং প্রীয়মাণ জনার্দন । বুতেনানেন মে দেব ভক্তি মুক্তি প্রদোভব। এবং প্রার্থ্য ততোদেবং বিসর্জ্য চ যথাবিধি। উপহারাদিকং नर्समाठार्यात्र निरवपस्य । पिक्रगां छिः नूनरङ्गाया व्यक्तांश्यक विषक्तिस्य । सम ধ্যানসমাযুক্তোভুঞ্জীত সহ বন্ধুভিরিতি।।

অথ তত্র পৌর্নাসী। পাছে। ওত্তবে শ্রীষমুনাবুক্ষিণসম্বাদে। মেবসংক্রমনারভ্য তিথয়জ্ঞিং শদুভ্রমাঃ। সর্বেজ্ঞাধিকাঃ পুণ্যাঃ পুরাণেষু প্রকীর্জিভাঃ। তত্রাপি
পূর্ণিমা পুণ্যা মাধবী মাধবপ্রিয়া। যেয়ং বরাহক পেন্য তিথিরাদ্যা মহাফলা। ১৫৮।
কিঞ্চ। সানদানার্চনপ্রাক্ষ্রিজয়া পুণ্য বিবজ্জিতা। যস্যাতীভা চ বৈশ্বাধী সন্নং
নিরয়ালয়ঃ। ন বেদেন সমং শাস্তং ন তীর্থং গঙ্গয়া সমং। ন দানং জলগোভ্রম্যং ন
বৈশাধী সমা হিশিঃ। জলধেনুঞ্জ যোদদ্যাৎ বৈশাধ্যাং বিশ্বভূৎপরঃ। তায়াণামপি

মজপমিতি নবভি:। মদীয় মুর্স্তিং।। ২৫৫।। যথা ভূতেন যথোপপদ্মেন সম্যক্ সম্পাদরিশ্তমশক্তেক ্নার্চনেনাপি।। ২৫৬॥ মম কথানকং কথা।। ২৫৭।।

মাধবী বৈশাখী : : ৫৮।। অয়াণাং শ্রীব্রকাদীনাং চত্তর্ধঃ সার্প্যাবিপ্রাপ্ত্যা ভগবতঃ সদা

## শীশীপরিভাক বিলাসঃ।

দেবানাং চন্ত্রথা্হয়৲ বিশেষতঃ 1 ১৫৯। তত্ত্বৈর ধনশর্মাণং প্রতি প্রেভাক্তো।
ময়া নৈকাপি বৈশাখা পূর্ণা পূর্ণ কলপ্রদা। স্নানদানক্রিয়াপূজাসুক্তিঃ পরিপালিতা
। ১৬০। তেন মে বৈদিকং কয় জাতৎ কর্মক নিজ্ফলং । ততাে বৈশাখনামাছং
প্রেভোজাভোমি গর্মবিঃ । কিঞ্চ । তত্ত্বৈব । পাংশেলনদবজালা তমোদ্রুমকুঠারিকা।
ক্রতা নৈকাপি বৈশাখা বিধিনা তত্র পূর্ণিমা। ১৬১। অবুতা যস্য বৈশাখা স বৈ
শাখা ভবেন্নরঃ। দশ জনানি চ তত্তির্যাগ্রেণানিযু জায়তে । ১৬২।।

অথ সমন্তবৈশাখাশক্তর হাং। তত্তিব শ্রীযমুনা ব্রাহ্মণসম্বাদে। এয়েদশ্যাং চতুদিশ্যাং বৈশাখ্যাঞ্চ দিনত্র মান্তবাশকোশকোছ পি বিধিনা নারী বাপুরুষোপি বা। পূর্ব্বোক্ত
নিয়নে যুক্তঃ প্রাতঃ সাত্রা স্বশক্তিতঃ। বিমুক্তঃ পাতকৈঃ সর্বৈঃ স্বর্গমক্ষয়ম শুকে।
বৈশাখ্যামপ্যশক্ত্যা বা ভোজয়ে মুক্ষনান্দশেতি।। ১৬০। ইতি শ্রীগোপাল
ভট্রিলিথিতে শ্রীমন্ত্রগবদ্ধ কিবিলানে যাণ্যা সিকোনাম চত্তর্দশ্বিলাসঃ

সমীপবর্ত্তি নিত্যপার্ষদোভবতীত্যর্থঃ।। ২৫৯॥ স্থানদানার্চনেতি শ্লোকোক্তং বৈশার্থীকুতানিত্যদ্বনেব বচনান্তরৈদ্র্ভি ময়েতি চপ্তর্ভিঃ। তত্রচেয়মাথ্যায়িকা কল্চচ্ছ্যোত্রিয়োবিপ্রঃ পূর্বজন্মনি
নিথিলং বৈদিককর্মাকরোৎ কেবলং পৌরাণিকং বৈশার্থীকুত্যমপ্যেকং ন চকার তেন সর্বাহ
তগ্য বৈদিকং কর্মা বিকলমভূৎ প্রত্যুত ভগবৎপ্রিয়বৈশার্থানাদরেণ প্রেতত্ত্বং জাতমিতি। তত্র
চ ধনশর্মণোরিপ্রস্যা পথি দৃক্টেম্ডদাদিপ্রেতেঃ সহ সম্বাদে তলামকারণ নির্বাচনে নিজনামকারণ
নির্বাক্তি ময়েতি দ্বাভ্যাং। স্নানাদিরপন্তক্রতঃ। তত্র ক্রিয়া আদ্বাদি॥১৬০। গর্বতঃ বৈদিকদ্বাভিমানাৎ। অয়মেব বৈশাব্যপরিপালনে হেন্তঃ।।১৬১। বৈ নিশ্চিতং। স শার্থী বৃক্ষোভবেৎ।।১৬২।

অক্ষরং স্বর্গং শ্রীবৈকুঠলোকনিত্যর্থঃ । ১৬৩ ।। ইতি চন্তর্দশঃ——,

## श्याम्भ विलागः।

যক্ষাল্ডলবিহারাদি মহোৎসবপরম্পরা। সিদ্ধেদীনতরস্যাপি তং জীচৈতন্যমাশ্রয়ে।। >।।

অথ জৈ ঠকত । আরভ্য রাকাং বৈশাখীং জৈ ঠীৎ যাবলহোৎসবৎ। কুর্য্যাৎ সংপূজ্যন্নিত্যং কুঞ্চৎ জলবিহারিণং। তত্রৌফ্যতার তম্যান্ধি কুফ্ণ, তোয়স্থ-মাচরে । বৈশাখেপি তথাবাঢ়ে আবণেপ্যব্তু বন্ধিতে।। ২।।

অথ জলে ভগবৎপূজাবিধিঃ। উত্তাপেহর্কাংশুভোজাতে শীতলেন সুগন্ধিনা। জলেন পূরিতেপাত্রে প্রীক্ষম্পবেশয়েৎ।। ৩।। নিত্যার্জাবিধিনাহভ্যর্জ্য সায়ং সন্ধ্যাসুপাস্যত। দেবং সিংহাসনে নীত্রা গন্ধাদিভিরথার্জ্যেৎ।। ৪।। নীরাজ্য দেবং সর্বেভ্যাদ্স্থ। তীর্থ্য ভলেৎ স্বয়ং। দ্বাদশ্যান্ত বিশেষেণ রাত্রৌ ভোয়ন্থমর্জ-য়েৎ।। ৫।।

অথ তনাহাল্যং। গারুড়ে। স্থাপাত্রেইথবা রোপ্যে তামে বা মৃণারেপি বা। তোরস্থ যোহজরেদেবং শালগ্রামসমুদ্ধবং। চক্রান্ধিতং বা ভূপাল নিবৃত্তে মধু-মাধবে। প্রতিমাৎ সমহাভাগ স্তস্য পুণ্যমনস্তকং। যাবদ্ধরাধরোলোকে যাৰচ্চ দু-

এবমাগ্রহায়ণিকাদিবৈশাখান্তমাসষট্কস্য ক্নত্যং লিখিত্বেদানীং কৈন্তাণীনাং লিখন্তগণবেতঃ প্রভাববিশেষং দর্শয়ন্তং শরণং যাতি যক্ষাদিতি। আদিশব্দেন ক্ষীরাক্ষিমহোৎসব জন্মনেহাৎসবপাশ্ব পরিবর্ত্তনমহোৎসববিজ্ঞ য়োৎসবাদি। এবং মহোৎসবানাং পর ম্পরা শ্রেণী। এবমশক্তস্যাপি মম তল্লিখনোৎসবস্তৎপ্রভাবেণ সেৎস্যতীতিভাবঃ॥ ১॥

তত্র জলবিহারমহোৎসবে। ঔষ্ণাস্য ভাপস্য ভারতম্যং নূয়নাধিক স্থং ভস্মাৎ লাবলোপে পঞ্চমী তদিচাথৈ্যেবেতার্থঃ। অতোবৈশাথেপ্যক্ষতাতিশয়ে সতি কুর্যাৎ। কদাচিৎ কুত্রাপি জৈচেপি শীতামুর্জৌন কুর্যাদিত্যভিপ্রায়ঃ। অতএব গারুড়ে। কুচিজ্যোষ্ঠেইতি কৃচিদ্যুীয়াইতি কৃচিৎকর্ক টরাশিগতে হুর্যাইতি কৃচিচ্চ মাসে মাধবসংজ্ঞকইতি বিকল্পোদর্শিতঃ। ভচ্চাগ্রে ব্যক্তং ভাবি। শীতাভাবেপি মেঘাগম্দিনে ম কুর্যাদিতি লিখতি অন্ত্রেতি। ঘনাগমইত্যগ্রতোলখ্যবচনাৎ॥ ২॥

অর্কাংশুতঃ উত্তাপে খর্মপ্রাচুর্য্য জাতে মধ্যাহ্লসময়ে ইত্যর্থঃ পাত্রে তামাদিনির্দ্মিত শ্রীমৃর্তিনিবেশনযোগ্যভাজনে ॥ ৩ ॥ নিত্যার্চায়া নিত্যং ক্রিয়মাণ প্রজায়াবিধির্যঃ প্রকারন্তেন ॥ ৪ ॥ তীর্থং শ্রীচরণোদকং সর্কবৈক্ষবৈভ্যোবিভজ্য দত্ত্বা স্বয়ং ভজেৎ প্রাশ্বীয়াৎ। দ্বাদশীরাকৌ চাবশ্যং জলশায়ী ভগবান প্রজায় ইতি লিখতি দ্বাদশ্যামিতি। দ্বাদশ্যান্ত বিশেবণেষ্ঠ্যাদিগারুড়োজেঃ। তচ্চাপ্রে সমগ্রং ব্যক্তং ভাবি ॥ ৫ ॥

দিবাকরে। তাবন্ত্রস্য কুলে কশ্চিম ভবেদ্ধুপ নারকা। ভলাভৈছ্যতে সদা ভূপা ভোয়ন্ত্রং পূজ্য়েদ্দরিং। বাততাপোনর ন্তি চেলাবদাহ তুসংপ্রবং। কৃতিঃ সুশীভলৈ- ন্তোয়েন্ত্রসাদলবাসিতৈঃ।। ৬।। শুচিশুক্রগতে কালে যেইচ্চ য়িষ্যন্তি কেলবং। কুলন্ত্রং বিবিধৈঃ পুল্পেমা চ্যুতে যম্যাতনাৎ। জলসুকী যতোবিষ্ণুর্জলশায়ী জলপ্রিয়ং। ভলাল্ট্রাম্ম বিশেষণ জলন্ত্রং পূল্যেদ্দরিং। নার মধ্যন্তিওং রুদ্ধা শালগ্রাম সমূত্রবং। বোইভার্চয়েম্বাভক্ত্যা সভবেৎ কুলপাবনঃ। কর্কিরাশিগতে সূর্য্যে রিখুনান্ত বিশেষতঃ। যেনার্চিতোইরি রুল্যা জলমধ্যে মহীপতে। । দ্বাদশ্যান্ত বিশেষণ জলন্তং জলশায়িনং। যোইভার্চয়েৎ কৃতং তেন যজকোটিশতং ভূবি।। ৮।। পাত্রে গন্ধাদিকং কৃত্যা যং ক্ষিপোলারডধুকং। দাদশ্যাং পূল্যেন্ত্রাক্রৌ মুক্তিভাগী ভবেন্নরঃ। কিঞ্চ। ঘনাগমে প্রকৃষ্যি জলন্ত্রং বৈ জনার্দনিং।যে নরা নূপতিশ্রেষ্ঠ তেষাং বৈ নরকং প্রবংমিতি ।। ১।। তথৈবাত্যুক্ষসময়ে কালিন্যান্টো বিশোষতঃ। সম্পাদয়েন্তুগবতোজনক্রীড়ামহোহসবং।।১০।।

অথ নির্দ্ধলৈকাদশী। পালে। ঐতিমদেন উবাচ। পিতামই হাশক্তোহমুপবাসে করোমি কিং।আতোবছকলং বুহি ব্রতনেকমপি প্রভাগ্রাস্ট্রাচ। বৃষদ্ধে
মিথুনেছেকে শুক্লাদ্যেকাদশী হি যা। জৈ তে মাসি প্রয়ন্ত্রন সোপোষ্যো জলবজিল্ল তা।২ং।মানে বাচমনে চৈব বর্জ্জ য়িজোদকং বুধং। উপযুক্তীত নৈবান্যদুভভক্ষে
ন্যথা ভবেৎ ।।১৩।। উদয়াদুদয়ৎ যাবদ্ধজিয়ে জলং বুধং। স্বপ্রয়ন্ত্রাদ্বাপোতিদাদশদ্বাদশীকলং ।। ১৪।। ভতঃ প্রভাতে বিমলে দ্বাদশ্যাং স্থানমাচরেৎ।
জলৎ সুবর্ণং দত্ত্বা তু দিল্লাতিভ্যো যথাবিধি । ভুঞ্জীত ক্রন্তরন্ত ব্রাক্ষাণেঃ সহিতো
বশী। এবং ক্রভে তু ঘৎপুণ্যং ভীমসেন শৃণুষ্ব তৎ । সম্বংসক্রস্থ যা মধ্যে একাদশ্যোভবন্তি হি। তাসাং ফলমবাগোতি পুত্র মে নাত্র সংশয়ং। ইতি মাং কেশবঃ
প্রাহ্ শস্ত্রতি সভ্যং ব্রবীমি তে। যমদ্তা মহাকায়াঃ করালাঃ কামক্রপিণঃ। দশুপাশধ্রারীদ্রা নোপসপ্তি তং নরং। পীতাম্বধ্রাঃ শস্ত্রন্ত্রহন্তামনোজ্বাঃ।

<sup>॥</sup> ७॥ শুচিবাষাতঃ। শুক্রোক্রোষ্ঠঃ॥ १॥ তে মরা ভুবি দেবতাঃ প্রমপুজ্ঞাইতার্থঃ। পাঠান্তরে কোটিযজ্ঞকলভাগী ইতার্থঃ॥ ৮॥ ফিপেৎ স্থাপয়েও॥ ৯॥ ন কেবলং পাত্রাস্তরে জলক্রীড়াকার্য়িতবা নদী সরোবরাদাবপি যথাযোগং কার্য়িতব্যেতি লিথতি তথৈবেতি। পূর্বে লিখিত প্রকারেণ। অত চ শ্রিমূর্ণ্ডি বিশেষেণ জলক্রীড়া বিধিবিশেষোহবগস্তবাঃ॥ ১০॥

এবার্থে অপিশক্ষঃ। একমেব ব্রতং বৃহি বহুনাং কিয়া দ্বারেপাশক্যত্বাৎ॥ ১১॥ কদাচিদূষত্বেকদাচিমিথুনত্বেচেভার্থঃ॥ ১২॥ স্নানাচমনয়োর্যন্তদকং তদ্বিনেভার্থঃ॥ ১৩॥ উদয়াদ্বের্দয়মারভা। দাদশেতি মহাদ্বাদশাে। ২০টো শয়নীপার্যপরিবর্ত্তিনী বােধনীচেতি তিসুঃ
ভৈমীচেতি কলবিশেষাপেক্ষয়া। যদা দ্বাদশমানের যা দ্বাদশান্তাসাং কলং॥ ১৪॥ বশী দিতে-

অন্তকালে নয়েন্তে নে বৈক্ষবা বৈক্ষবাং পুরাং। কিঞ্চ। তোয়স্য নিয়মং যন্ত কুরুতে বৈক্ষবান্তমঃ। ফলং কোটিসুবর্ণস্য যামে যামে স পুণ্ডাক্। সান্দ দানং জপং হোমং দাদশ্যা। কুরুতে নরঃ। তৎ সর্বঞ্চাক্ষয়। প্রাপ্তমেতৎ কৃষ্ণস্য ভাষিতং। কিঞ্চাপরেণ ধর্মেণ নিজ্জ লৈকাদশীং নৃপ। উপোষ্য সম্যাগৃধিনা বৈক্ষবং পদ্ম্য পুরাং। ১৫। কিঞ্চ। যাঃ কৃত্যাভীনসেনিষা নিজ্জ লৈকাদশী শুভা। স্বকুলং তারিতং সর্বাৎ কুলাতীতং তথাশতং। আজ্মনা সহ তৈনী তং বাসুদেবস্য মন্দিরে।। ১৬।। কিঞ্চ। আজ্মদোহঃ কৃত্তিস্ত হৈরেষা নহুপোষিতা। পাপাত্মানাদুরাচারা দুফাস্তে নাত্র সংশ্রঃ। ১৭।। কিঞ্চ। যশ্চেমাং শৃণুয়াজ্বক্ত্যা যশ্চাপি পরিকার্ডয়েছ। উভৌতে স্বর্গমান্তে হি নাত্র কার্য্যা বিচারণা।। ১৮।।

তাধ নিজ্জনিব তবিধিং। যথা প্রাগ্লিখিতৎ কৃত্যা সঙ্গপেং নিয়মংব্রতে। ক্রানানার গৃল্লীরান্মজেণানেন বৈষ্ণবং। একাদশ্যাং নিরাহারোবজ্জ রিষ্যামি বৈ ক্রানা (কেশবপ্রাণনার্থার অভ্যন্তমনেনচেতি।। ১৯।। বর্জ্জরেচামুহেরাজং বিনাচাচমনার্থকং। বিনাচ প্রাশন্ধ পাদোদক্র্যাভ্যত্তপাবনং।। ২০।। একাদশ্যাং নিশায়ান্ত নিভ্যপূলাং বিধারহি। হৈমীৎ বৈবিক্রমীং মূর্ত্তিং সাপরেৎপর-আদিভিং। বস্তাদিকং সমর্প্রাথাভার্চ্য গন্ধাদিভিশ্ব তাং। প্রণম্য জাগরং কুর্যাহ তদ্প্রে নর্জনাদিনা। মাভং সানাদি নির্ক্ত্য তং ত্রিবিক্রমমর্চয়েই।। ২১॥ শক্ত্যামুকুরান্ বিপ্রেভ্যেদ্যাই গন্ধাদালক্ষ্তান্। তত্র মন্তঃ। দেবদেব ক্র্যাকেশ সংসারাণবিভারক। জলকুরপ্রদানেন যাস্যামি পরমান্ধভিমিতি।। ২২।। দদ্যান্ত করকং ছলং বস্তায়ুমুপানহা। জলপাত্রাণি দিব্যানি বিভবে সভি বৈষ্ণবং। শক্ত্যাবিপ্রান্ ভোজ্যিত্বা পীত্রা ভ্রাত্করাজ্জলং। স্বয়ং বা পীয় নৌনী সন্ভুঞ্জীত সহ বন্ধুভিঃ।। ২৩।।

ন্দ্রিঃ। যত্নতোনিদাবমধ্যে জলপানাদিবর্জনিং ॥ ১৫॥ কুলাতীতং সম্বন্ধিশতং ॥ ১৬॥ তদুত্ব্য নিত্যতামাই আর্ত্রো ১৭॥ এতনাহান্মশ্রণাদিফলমাই যশেতি॥ ১৮॥

এবমবশ্যক্তাত্বং লিখিত্বা ইদানীং ভবিষ্যোত্তরোত্যাত্সারেণ তস্য বিধিং লিখতি যথেতাদি নবভিঃ। যথা প্রাপ্লিখিতং পূর্ব্বমেকাদশীব্রতপ্রকরণে দশমীনিয়মাদিকং যল্লিখিতং তদত্বসারেণ নিয়মং গৃহীয়াও।।১৯। অহোরাত্রং অমু জলং বর্জ্জয়েও। তত্র চ স্নানাদাবাচমনে
শীচরণাদকগ্রহণে চ ফলং ন বর্জ্জনীয়মিতি লিখতি বিনেতি। তত্র তত্র তংপানাবশ্যকত্বাও।
অন্যথা শুদ্ধিহানেঃ। নতু স্নানে চাচমনে চৈবেত্যুক্তং নচ পাদোদকমুদ্দিত্তং তত্র লিখতি
অত্যক্তেতি। আচমনাদপ্যেত্রৎ পরমশুদ্ধিকরমিত্যর্থঃ। তন্নিত্যতা চাদৌ লিখিতেবাস্তে।।২০।।
পর আদিভিঃ পঞ্চাম্তেন স্নাপয়েও॥২১॥ শক্ত্যেতি যাবতোযাদ্শান্ দান্তং শক্ষোতি তাবতন্তাদ্শান্ দদ্যাদিত্যর্থঃ। আদিশকেন প্রস্বত্রকলাদি॥২২॥ বিভবে সতি কনকাদীনি
চ বিপ্রেভ্যোদদ্যাও॥২৩॥

অথ আষাদৃক্তা । আষাদৃ শুক্রবাদশ্যাৎ হরৌ শিশরিষৌ সভি। বৈশবঃ
পারণং করা তপ্তমুত্রাশ্ট ধারয়ে । ব্রাক্ষণং ক্রিয়োবৈশ্যং শূত্রশৈকাভিড্রিয়ে ।
কুর্বরাত্মার্পণং তপ্তমুত্রাভির্দেহমক্ষয়ে ।। ২৪।। তপ্তমুত্রাধারণং।। বারাহে।
ত্প্রমুত্রাপ্রসঙ্গে । চক্রাদিধারণং পুংসাৎ পরৎ সম্বদ্ধবেদন । পাতিব্রভানিমিতং
হি বলয়াদি বিভূষণমিতি।। ২৫।।

অথ ত প্রযুদ্রাধারণ নিত্যতা। বায়ু পুরাণে। অরিনৈব তু সন্তর্গুং চক্রমাদায় বৈক্ষবং। ধারয়েৎ সর্ববর্ণানাং হরিসালোক্য সিদ্ধরে।।২৬।। ব্রহ্মাণ্ডে। রুত্বা ধাত্ত-

আষাঢ় শুক্লদ্বাদশ্যামিত্যত্র যদ্যপি ভবিষ্যপুরাণে। আকাভাষিতপক্ষেষু দৈত্রপ্রবণরেবতী। আদিমধ্যাবদানেষু প্রস্থাপাবর্ত্তনৈ রিতি । অদ্যার্থঃ । আবাচভাদ্রকার্ত্তিকানাং দিতপক্ষেষ্ শুক্রদাদনীরু অন্তরাধাশ্রবণরেবতীনামাদিমধ্যান্ত্যপাদেরু শয়নপাশ্বপরিবর্তনোপানং ক্রমা-खवडीि । उथाि পानस्थानामा जाति मि विकास क्याँ। एथा है साम्याद পাদযোগেপি ছ। দশ্যামেব কারয়েদিতি। বারাছে চ । ন পাদনিরমস্তত্র স্থাপেবা পরিবর্ত্তনে। পान्यात्शायना नगान्यक्रगाथि जना अविनिधि। किन्छ। द्वानभार मिक्किमस्य नक्ष्वागासमञ्ज्य । আভাকাদিতপক্ষেয় শয়নাবর্ত্তনাদিকমিতি। অতএবোক্তং পুষ্করপুরাণে । যস্যযস্য ও দেবস্য যলকতং তিথিশ্চ যা। তদ্য দেবস্য তিমাংস্ক শারনাবর্ত্তনাদিকমিতি। যচ্চোক্তমজিণা। মিথুন-স্থেদ। ভাত্রমাবস্যাদ্যং স্পূশেৎ। দ্বিরাঘাড়া স বিজেয়া বিষ্ণু স্থপিতি কর্কটে । ইতি। তা মলমাসাভিপ্রায়েণ তথাপি দ্বিতীয়াষাচ্ছক্রদাদশ্যামের শয়নমিতি সম্যাগের লিখিতং আষাচ্-শুক্রদাদশ্যামিতি। এবং পাশ্ব পরিবর্ত্তনোত্থানয়োরপি জ্বেরং। ষচ্চোক্তং ব্রহ্মবৈবর্তে। আবা-ত্যা সিতে পক্ষে একাদশ্যামুপোষিতঃ। নক্তং দ্বিজ্ববরশ্রেষ্ঠ গৃহ্লীয়ান্নিয়মং ব্রতীতি । তঞ্চ একা-দশীঘাদশ্যোরভেদাভিপ্রায়েণ জ্ঞেয়ং লিখিতবচনজাতার্ম্পারাৎ শিফাচারদর্শনাচে। এতত দর্ব্বমণ্ডে প্রবোধনীপ্রকরণে বিস্তরতোব্যক্তং ভাবি। শিশরিষৌ শরিন্তমিচ্ছতি। পারণাং ক্রত্তেতি প্রায়োদ্বাদশ্যামের পারণাপত্তেঃ। কদাচিৎ তদ্যামুপরাসে চ তত্ত্রৈর শয়নং তপ্তমুদ্রাধারণাদিকঞ জেয়ং লিখিতবচনামুদারাং। তত্ত্ব চ সবৈরের বর্ণৈস্তপ্তমুদ্রা ধার্যোতি লিখতি। ত্রাহ্মণইতি। একান্তিতা শিবলিঙ্গান্ধিত ব্যবজ্ঞীভগবদেকনিষ্ঠতা তস্যা ঋদ্ধয়ে সিদ্ধার্থং। আত্মাপণং আত্ম-নিবেদনৰূপভক্তিপ্ৰকারবিশেষং কুর্বন্ কর্ত্ত্বং। ত্রাক্ষণসাপি তদ্ধারণমত্রে 🗬ন্যায়ং ব্যক্তং ভাবি ॥ ২৪।। তপ্তমুদ্রাধারণেন চৈকান্তিতা সিদ্ধিং প্রীবরাহবচনেন প্রমাণয়তি চক্রাদীতি। পরং কেবলং সম্বাবেদনং ভগবদীয়ত্বজ্ঞাপকং । পাঠান্তরে পর্ম্য পর্মেশ্রম্য সম্বাবেদনং। তত্ত দৃষ্টান্তঃ। পাতিত্রত্যেতি বলয়াদিধারণেন স্থবালক্ষণেনের পতিমক্তা জ্ঞাপ্যতে। তত্র চ স্তীনাং প্রায়ঃ পতিসন্তোষার্থমের ভূষণধারণাৎ তদ্ধক্তিবিশেষোপ্যভিব্যক্তএবেতি দিক্।: ২৫।।

তত্রাদৌ ধারয়েদিত্য।দিবিধিবলামিত্যতাং লিখতি অগ্নিনৈবেতি দশভিঃ। সর্ব্বর্ণানাং মধ্যে যোবৈক্ষবঃ স ধারয়েছে। বৈক্ষবস্থাৰ ভদ্ধারণপ্রাধান্যাছে। তথাচাত্রে লেখ্যং। ইবক্ষবত্তস্য সিদ্ধার্থ-মিত্যাদি। যদা সর্ব্বর্ণানাং যা হরিমালোক্যাদিসিদ্ধিস্তদর্থং । তথাপি সর্ব্বর্ণানাং ভদ্ধারণমান্যাত্তমেবেতি দিক্। ২৬।। তত্র চ ব্রাহ্মণম্য গাত্রে দোবাদিদং ব্রাহ্মণেত্রবর্ণবিষয়কমিতি ন শঙ্ক-

मशेः यूषाः छाभशिषा वका ५ छन्। ठळा मिहिक्शि छा १ पूर्ण थावर प्रदेश करवान है। নারদীয় পঞ্চরাত্রে। দ্বাদশারস্ত ষট্কোণং বলয়ত্রয়সংযুতং। হরেঃ সুদর্শনং তঞ্জ धातरत्र हिन्द्रकाः ।। भोभर्गि जनवनात्र हमस्रात । उथमू छ। अकत्र वा शक्र अञ्च বিশেষেণ সর্ববর্ণেযুরং বিধিঃ। বিপ্রোবা ক্ষত্রিয়োবাপি বৈশ্যঃ শূত্রন্ত থৈব চ ।। ২৭ 🏃 পালো। অগ্নিহোত্রং যথা নিভাং বেদ্সাধ্যয়নং যথা। ব্রাহ্মণস্য তথৈবেদ্ৎ ভগুচক্রাদিধারণ । কিঞ্চ। ভতৈবোত্তর খণ্ডে শ্রীশিবোমানসামে। শশ্চক্রাক্ষনং কুৰ্যাৎ বাক্ষণোবাহ্মূলয়োঃ। ছতাৱিনৈৰ সন্তপ্য সৰ্বপাপাপনুত্য়ে। চক্ৰয়া শশ্বচক্রে বা তথা পঞ্চায়ুধানি বা। ধারয়িত্বৈ বিধিবদুক্ষকর্ম সমারভেৎ। কিঞা তৎ প্রসঙ্গুবা বিধিনা চক্রৎ ব্রাহ্মণঃ প্রাক্তভোভবেৎ।। কিঞা ন তস্য কিঞ্চিদশ্লীয়াদিপি ক্ত্যুসহসূিণঃ। সর্ববেদবিদোবাপি সর্বশান্ত্রবিশারদঃ। অধ্তা বিধিনা চক্রণ ব্রাহ্মণঃ পতিভোভবেং।। ২৮॥ কিঞ্চ। তপ্তেনৈবাঙ্কনৎ কুর্য্যা-দ্বাক্ষণস্য বিধানতঃ। শ্রেতিকার্তাদিসিদ্ধ্যর্থ মন্ত্রসিক্ষ্যৈ তথৈবচ। হরেঃ পূজাধি-কারার্থ চক্রং ধার্য্য বিধানতঃ । বৈক্ষবস্থাস্য সিদ্ধ্যর্থ ভক্তিসিল্পি বিশে-ष्ठः ॥ २५॥ किश्व । উপवीकानिवकार्याः मञ्चाहकानग्रस्था । जाजान । विस्नारम् বৈক্ষবস্য বিশেষতঃ ।। ৩০ ।। শুন্তয়শ্চ। যোহবৈ সুশোকমৌলে ধর্মাননুতি ঠমানো-शीयना ठक ५ थरख । अधिरेक महमुद्रिः महमुद्रितानिमिर्निमिना उश्वजन्ः । नायुक्र १ সলোকতামাপ্রোতীতি।। ৩১।। চক্রংবিভর্জি বপুষাভিতপ্তং বলং দেবানামমূতসঃ বিকোঃ। স এতি নাক্ৎ দুরিভৎ বিধূয় বিশক্তি বৃদ্ধতয়োবাতরাগাইতি॥ ৩২ ॥ ঋক্ পরিশিটে। অতপত্নুন্ তদামো অধুতে হ্মুত। সহ ইছহততং সমাসভেতি খাথেদীয়<del>াখলায়ন শাথায়াঞ্</del>ট। প্রতিদিকোরজ্জচক্রে সূত্রে यकुः ॥ ७७ ॥

নীরং। সৌপর্ণাদৌ তস্যাপি স্পান্টমুক্তত্ত্বাদিতি লিখতি গরুত্বান্নিতি সপ্ততি:।। ২৭।। সর্ববেদবিদিপি ।। ২৮।। শ্রোতাদিকর্মসিক্ষয়ে।। ২৯।। ব্রাক্ষণস্য ধার্যা ভবন্তি তেন ধার্যাইত্যর্থঃ। এবং বৈক্ষবস্যেতি চ।। ৩০।। যং অগ্নিনা বিশিক্ষং চক্রং ধত্তে স সাযুজ্যং নিত্যং সংযোগরূপাং সলোকতাং সালোক্যং প্রতি। তত্ত্বচাগ্নিসম্বন্ধেন ন কোপি দোষোহ্থচ গুণএবেতি দর্শযন্ত্যাইন্নিতপ্তচক্রধারণ প্রকারমেবাছঃ অগ্নিরিতি। সহসারঃ চক্রং। অগ্নিঃ পাবনঃ চক্রং পরমপাবনং তয়োশাভিমত্বং অতোদোষাভাবো গুণশাতিমহানেবেতি ভাবঃ। নমু চক্রৈকদেশেনৈর তমুদাধারণং সভাং সোপি চক্রাদভিন্ন এবেত্যাত্বং সহসারোনেমিঃ চক্রাস্তভাগোপি চক্রমেবেত্যর্থঃ। ৩১।। দেবানাং বলং রক্ষকমিত্যর্থঃ। ন বিদ্যতে অকং ছঃখং যত্র তৎ পরমপদ্মিত্যর্থঃ। ৩২।। অতপ্তত্ত্বরিতি কুচিদ্দীর্যন্তিপাঠোপি তত্ত্বত ছান্দসঃ। অতপ্তত্ত্ব্বাদেব আমঃ অপকঃ বালবুদ্ধিরিত্যর্থঃ। অতপ্তত্ত্বাদিক কানিক্রিনীয়ং পদং নাশ্রুতে ন প্রাপ্রোতি।ইৎ ইতি বহন্তঃ তপ্তমুদ্রাং ধারয়ন্তঃ তৎ পরমং পদং। অশ্বুতানহেতি ছান্দসঃ। অপ্নুবানাঃ সম্যক্ আসত স্থাংবর্ত্তিক্ত স্ম। শং ইতি পৃথকপাঠে শৃতাঃ পরিপক্রঃ সন্তর্গং। বহন্তঃ শং মক্লং যথাস্যান্তথা আসত। শৃতা সহ ইতি পাঠে ছান্দসমেব। শৃতাঃ পরিপক্রঃ সন্তর্গং সন্তর্গং। ৩৩।। প্রতিস্থা প্রকর্বেণ প্রিক্ষন্য বিন্ধাঃ। প্রতে ইতি পাঠে অজন্ত পরিপক্রাং সন্তর্গং সন্তর্গং। বহন্তঃ প্রস্থা স্থাতা প্রকর্বেণ প্রিক্ষন্য বিন্ধাঃ। প্রতে ইতি পাঠে অজন্ত প্রস্থা স্বানাঃ সম্যুক্ত প্রকর্বেণ প্রিক্ষন্য বিন্ধাঃ। প্রতে ইতি পাঠে অজন্ত

জন্মান্তাধিং বর্ততে চর্মানিল্যাঃ। মৃলে বাজ্বার্দ্ধন্তে হবে। পুরাণা লিক্সান্যন্যে তথামুধান্যপ্রন্তে ইতি ।। ৩৪ ।। ছন্দোগপরিশিটে । সহোবাচ হাজ্ঞ্বন্তা তথ্যমুধান্যপ্রিভায় প্রেমা হরিন্ত ক্রেমান হিন্দান করি লাইটে । সংশানাল্যহিতায় প্রেমা হরিন্ত ক্রেমান হিন্দান করি লাইটি তথ্যকরে । দেবাসো হরে বিত্তকে বাহুনা সুদর্শনেন প্ররতাঃ স্বর্গমার্দ্। যেনাক্ষিতাসনবোলোকস্টিৎ বিত্তকাণাত্ত্বহন্তা । ৩৬ ।। পাল্লে জ্রিশিবেন তপ্তমুদ্রাপ্রন্তে । বিষ্ণুচক্রাণিরেন তপ্তমুদ্রাপ্রন্তে । বিষ্ণুচক্রাণিরেন তপ্তমুদ্রাপ্রন্ত । বিষ্ণুচক্রাণিরেন তপ্তমুদ্রাপ্রন্ত । বিষ্ণুচক্রানিল্য প্রমান্ত্রে বিবর্জয়ের ।। ৩৭ ।। নারদীয়ে তপ্তমুদ্রাপ্রসাল । শিক্তার নিক্ষাল সমর্চের্গরিমক সদ্য ইতি ।। ৩৮ ।। বহ্যাল্য বিশ্বটার্য্যপাদপ্রত্তিতির্ব্ধিঃ। শ্রুত্তরাহ্বাহ্পার বিষ্ণাভাঃ লিখিতাঃ পরাঃ ।। ৩৯ ।। অর্ত্রার নারাণাঃ অবলোক্য মুখং তেরামানিত্যমবলোক্ষের ।। ৪০ ।। অর্থান পুরাণে চ । দশর্পহত্তপুশ্রবিশ্রবিল্যাপে । শিলাবুদ্ধিঃ কৃতা কিয়া প্রতিনায়াৎ হরেন্মা। কিং মরা পথি দৃষ্টা বিষ্ণুভক্তন্য কর্ছিচিং। তল্মুদ্রান্ধিতদেহন্য চেত্রানারিণঃ কৃতঃ। যেন কর্মা বিপাকেন পুরশোকো মনেদ্শঃ ।। ৪১ ।।

চক্রিশেষণং। অর্থশ্চ তবৈধন। যদ্ধা প্রয়তে পরিত্রে ইতার্থঃ। জন্মান্তোধিং লক্ষীক্বত্য যোরস্তুতে সংসারীত্যর্থঃ যে চ চর্ষণীক্রা: জীবমুক্তা: তে সর্বে এব পুরাণা: পুরাতনা: বাহ্বোমূলে অজ-চক্তে দে पथरछ। অন্যে কেচিচ্চ লিঙ্গানি বিফোশ্চিক্লানি আয়ুধানি গদাদীন্যপি সর্বাণ্যেব অর্পয়ন্তি গাত্রেযু ধারয়ন্ত্রীতার্থঃ।। ৩৪।। প্রেমু। ভজনলক্ষণমেবাই স্থান্নোকেতি। ধর্মাণি চিহ্নানি চক্রা-मीनि ॥ ७६ ॥ (मवामहेि हान्ममः (मवाः मछः मीवासःमस्यादरार्थः। व्याप्तन् वाप्तराः। ७९ স্থদর্শনং।। ৩৬॥ এবং বিবিধবচনসিত্ধং নিত্যস্ত্রং তদ্ধারণপ্রাদেনা দ্রচয়িত্বা ইদানীমক-রণ প্রত্যবায়দ্বারা সাধয়তি বিশিষ্ধি। সর্বাকর্মণি আদ্বাদৌ ॥৩৭॥ অঞ্ল ভোন্পতে সদ্যঃ সবাসাঃ স্নাত্রা হরিং সমাগচ্চ রেং।।৩৮॥ বেশ্বটাচার্যাপাদাঃ শ্রীবৈক্ষবসম্প্রদারিনোমুখ্যতমাস্তদা-দিভিঃ বুধৈঃ শ্রুতিসমূত্যভিজ্ঞৈঃ অত তপ্ত মুদ্রাধারণপ্রকরণে বহ্বাঃ বহুলাকু পরালিখিতাঃ। বিখ্যাতাইতি প্রসিদ্ধতয়াত নদংগৃহীতাইতি ভাব:।। ৩৯।। এবমবশ্যকর্ত্তব্যত্তে সিদ্ধেপ্যজ্ঞানাৎ তরিন্দকাদীনাং দোবং দশ্য়ন্ নিত্যভাষের সাধ্য়তি তপ্তেগাদিত্রিভি:।। ৪০।। দশ্রধেন হতঃ পুক্রঃ অবণনামা যদ্য তদ্য বিপ্রদ্য বিলাপে। অত্যেমাখ্যায়িকা। শব্দবেধিনা রাজ্ঞা দশ্রথেন श्खितुका। पृता विश्व वात्रा **उदा माञ्चलक्**रामात्राकारायश्थिरकात्रस्थिकः खकीः शरु রাজ্ঞি হা অবণ কথং বিলম্বিডঃ কথঞ্চ ন বদসীত্যাদি সকরুণং ভাষমাণে পিত্রি দশর্থোইহং তৎ পুত্রহস্তেতি রাজ্ঞে। বচনমাকর্ণ্য বিমুক্ষ চিরাৎ সংজ্ঞাং লক্ষা বিশ্বোদৌ বছ বিল্লাপে-ज्यापि॥ ४३॥

অথ তপ্তমুদ্রাধারণনাহান্তাং । সৌপর্লে । অশুচির্বাপ্যনাচারঃ সর্বধ্যা বহিছ্তঃ। প্রতপ্তশেষ্টক্রাভ্যামক্ষিতঃ পঙ্ক্তিপাবনঃ । বারাহে তপ্তমুদ্রাধারণপ্র-সঙ্গে । মুচ্চ্ছেশে শুভেবাপি চক্রাক্ষা যত্র কিঠিতি । যোজনানি তথা ত্রীণি সম ক্ষেত্রং বসুন্ধরে । ত্রন্ধাণ্ডে । আয়ু ধৈবৈক্ষবৈঃ সর্বৈ স্তাপিতৈঃ ঘতনুং যদি । চিহ্নুস্থেই ক্ষেত্রে । ত্রন্ধাণ্ডে । আয়ু ধৈবৈক্ষবৈঃ সর্বৈ স্তাপিতিঃ ঘতনুং যদি । চিহ্নুস্থেই স্মাতি পরমাং গতিং। পাছে চ তত্রৈব । অগ্রিতপ্তং পবিত্রক্ষ পূত্রা বৈ বাছ্মুল্রোঃ । ত্যক্রা যমপুরং ঘারং যান্তি বিক্ষোঃ পরং পদং ।। ৪২।। হতারি-তপ্তচক্রেণ স্বীরং যস্য চিহ্নিতং । তেন তীর্থানি যজান্চ লভ্যন্তে নাত্র সংলয়ঃ । অগ্রিতপ্রেন চক্রেণ ব্যাহ্মুল্রেয়াঃ । অক্ষয়িত্রা জপেনান্তং সংসারান্মোকভাগ্ভবেং । অগ্রিতপ্রেন চক্রেণ বাহ্মুলেরু লাঞ্ছিতাঃ । তে সর্বে পাপনিমুক্তা যান্তি বিক্ষোঃ পরং পদং ।। ৪৩ ।। কিঞ্চ । অপ্রাক্তমহাত্মানোবিষ্ণুচক্রেণ লাঞ্ছিতাঃ । বিক্ষুচক্রবিহীনান্ত প্রাক্তরাঃ পত্তিভাঃ স্বৃতাইতি ।। ৪৪ ।। ইথাং নিষ্প্রচনং নিমূলং সদনাদ্তং । সমূলং যচ্চ তৎ সম্যাগ্রিধ্যভাবাদি তৎপরং ।। ৪৫ ।।

অথ তপ্তমুদ্রাধারণবিধিঃ। তপ্তমুদ্রাধারণার্থমুপচারেস্ত পঞ্চভিঃ। রক্ষমভার্চ্য সং-পূজ্য চক্রশন্থী তথা নমেৎ 18৬। তত্র মন্ত্রঃ। সুদর্শন নমস্তেহস্ত পাঞ্চল্য নমোস্ত তে ইতি। অগ্রিমভার্চ্য মূলেন ভূত্বা চাজ্যাভ্তীঃ রুভী। চক্রশন্থী গদাদীনি শস্ত্রাণ্য গ্রে প্রতাপয়েৎ।। ৪৭।। তন্তনাক্রেরথাবাহ্য ভান্যভার্চ্য প্রণম্য চ। গুরুং রক্ষণ্ড সম্বন্য ভক্তা বিজ্ঞপয়েদিদং। উচ্ছিউভোজনাদেব কিন্ধরঃ শরণাগভঃ। তপ্তচক্রদরানি তবাঙ্কানীশ ধার্রে ইতি।। ৪৮।।

পবিত্রং চক্রং।। ৪২ ।। ছতেন ক্তহোমেনায়িনা তপ্তং যক্তক্রং তেন।। ৪৩ ।। অপ্রাক্তাইতি বিষ্ণু চক্রচিক্ধারিণঃ প্রাক্তাক্রপি অপ্রাক্তামহাল্লানঃ এব। তদ্রহিতাল্প অপ্রকৃতাঅপি প্রাক্তাইতি পতিত্রা ছুই। এব ক্ষৃতাইতার্থাঃ।৪৪।। এবং সর্বধা তপ্তমুদ্রাধারণং নিশ্চিত্র ত্রিক্কবেচনং যুক্তাপরিহরতি ইপ্রমিতি। লিখিতপ্রকারেণ। নিষেধবচনং তপ্তমুদ্রাধারণনিষেধকবাক্যং ক্ষার্ত্তম্যাণ ক্রেমাণং নিমূলমেব। ক্রতিক্সাতিপ্রাতিহাসাদিপুরাতনগ্রেয় কুলাপ্যবিদ্যামানত্রাং। নমূ কুলাপি দৃশ্যতে ইত্রি চেউই ছফু মার্ত্তবিল্ধ ক্লিওমেবেতাপেক্ষণীয়মিতি লিখতি সন্তি রনাদৃতং উপেক্ষিতং। পতিব্রতা যান করোতি যাবন্তং ব্যাধিযোনিং নিয়তং বিজ্ঞানিত্যাদিবদুক্ষতভাবিত্রাং। নমু বজ্বকদরাদীনি নিজাঙ্গেয় ছিলোত্য। নিত্যং সন্ধার্থিয়ন্তি পাষণ্ডোপহতাং কলাবিত্রি ব্রহ্মগীতারাং প্রশিক্ষবেচনং অল লিখতি সমূলমিতি ঘচ্চ বচনং শাস্ত্রবিক্ষহত তৎসমাক্ সমগ্রোঘোবিধিং তপ্ত মুদ্রাধারণপ্রকারস্তস্য অভাবোহানিঃ আদিশ্বাদবৈক্ষবাশ্চ তত্তৎপরং তদ্বিষয়কং জ্বের মিত্রর্থা। অরং ভাবঃ। ব্রহ্মসংহিতায়াং বক্ষমভিব্যাহ্মতত্বাৎ বজ্বেগ সহিতানাং চক্রাদীনাং ধারণং দূর্যিতং। অরং ভাবঃ। ব্রহ্মসংহিতায়াং বক্ষমভিব্যাহ্মতত্বাৎ বজ্বেগ স্ক্রাপি সমূল্যচনে বিষয়ব্যব্র্থাপি কল্প্যা ক্ষাক্যায়ান্ত তন্ত্যবন্ধায়াং বৈক্ষবাবৈক্ষযভেদেনের ব্যব্র্যাপ্র আর্থীয়া এবেতি দিক্।। ৪৫।।

তথা তেনৈব প্রকারেণ চক্রশস্থী চ সংপ্রজ্ঞা নমেৎ।। ৪৬ । মুলেন নিজমস্ত্রেণ আজাছতীুর্থাশক্তি ছয়।। ৪৭॥ তানি চক্রাণীনি সম্বন্ধ প্রণম্য।। ৪৮॥

অথ চক্রাদীনামাবাহনমন্ত্রঃ। ওঁনমোভগবতে সুদর্শনায় নির্ণাশিত সকলরিপু-ধৃঞ্চায় ভগবনারায়ণকরাড়োরুহস্পর্শুর্ললিতায় । এছোহি ত্বং সহসুর চক্রনাঞ্জ সুদর্শন। যুক্তভাগৎ প্রগৃহাস্ত পূজাঞ্চিব নমোনমঃ।। ওঁনমোভগরতে পাঞ্জন্যায় वियुम्बाय। भडीतथीत्रपुन। कूनीक्र छ कोत्रववाहिनीमाथाय जित्रथा मिनावर्षा स ত্রিপ্রশন্তার। এ হ্যেছি পাঞ্জন্য ত্বং নারায়ণকরস্থিত। যজভাগৎ প্রগৃহ্যম্ব পূজা-ফৈব নমোনমং। ওঁরংণ্থ মং নং পাঞ্জন্যায় নমং। ওঁভগৰতে খড্গায় নন্দকায় ত্রৈলোক পাবিত্রায় সকলসুরাসুরসুন্দরীনেত্রোৎপলার্চিভায়া এছে হি থড্গরতু স্বং নক্কাখ্য সুরার্চিত। যজভাগং প্রগৃহ্য পূজাকৈব নমোনমং। ও খড্গায় নমং। उनरमाज्यवरेका कीरमामरेका भागरेम मानरवन्तृतिमृमनारेम ज्यवक्र छातकवामूरमव-লালিভারে। এহেত্তি স্বং গদেদেবি কৌনোদক্যাযুধেশরি। বজভাগৎ প্রগৃহত্ত পূজাকৈব নমোনমঃ। ওঁরং খৎ চং ফং সংগদারে নমঃ। এবং পালায় নমঃ। সশারার শারস্থার নমইতি । ধারণমন্তঃ। সুদর্শন মহাধান সূর্য্যকোটিসমপ্রভ। অজ্ঞানাজ্জন্য নে নিত্যৎ বিক্ষোমার্গং প্রদর্শর । তথা পাঞ্জন্য নিজ্পানপুত্রপাতক্রজয়। পাহি মাৎ পাপিনং ঘারসংসারার্বপাতিনমিতি। ইম্মুচ্চারয়নাত্রৎ দক্ষিণাদি-ক্রেণ ভা ভুক্রোশ্চক্রপূর্বাণি কৃষ্ণসন্ত্রাণি ধারয়েৎ।। ৪৯ ।। কলত্রাদি পরীবারাণ্ নিজান্ সন্ধা। শচ বৈক্ষবঃ। ভগবত্যপত্মন্ত গুমুতাভিস্থাতিবস্বয়ে ।। ৫০।। তথাচ বারাহে।। অন্নয়েত্তপ্তচক্রাদ্যৈরাজনোবাত্যুলয়োঃ। কলতাপত্যভূত্যেরু পশাদিযু চ সম্পদি। কিঞা। আয়সং বিধিবৎ রুত্রা পঞ্চাযুধবিধানতঃ। তত্ত্বাত্রেণ মন্ত্রুঃ প্রতিষ্ঠাপ্য পৃথক্ পৃথক্ ।। ৫১ ।। ললাটে চ গদা ধার্য্যা নূর্ক্তি চাপৎ শরস্তথা। नमकरिक्षव क्रमाधा मञ्चठाक जूकद्वारा।। १२।। किथा। पिकल व जूरक विस्था বিভ্রাছৈ সুদর্শনং। সব্যে চ শত্ত্বং বিভ্রাদিতি ব্লক্ষবিদে বিদুঃ।। ৫৩।। অথ চক্রাদিপ্রতিক্তিত্ব্যং ।। নবপ্রশাপঞ্চরাত্রে ।। সৌবর্ণং রাজভং তামুং

ভুজনোঃ বাহুমূলয়োঃ। চক্রপুর্বাণীতি প্রথমং চক্রং ধারয়েউতোইন্যানি শঞ্চাদীনীত্যর্থঃ। তবিদেয়তব্য দক্ষিণাদিক্রমেণ স্থিতি। আদৌ দক্ষিণবাহুমূলে ততোবামবাহুমূলাদিষিত্যর্থঃ। তবিদেয়শ্চান্তে প্রীবারাহ্বচনতো ব্যক্তোভাবী॥ ৪৯॥ ভগবতি শ্রীক্রেই অর্পরন্ তদীয়েরেন নিশ্বেদয়ন্।
তথাইচকাদশক্ষকে। দারান্ স্থান্ গৃহান্ প্রাণান্ যথ পরকৈম নিবেদনমিতি। তক্র দারাদ্যর্পনক্ষ বথাযথমূহং। তাভিঃ পুজিতচকাদিরপাভিঃ॥ ৫০॥ আয়সং লোহ্ময়ঞ্চকাদীতি শেষঃ।
আয়উপলক্ষণং সৌবর্ণাদ্যপি তক্তাত্রে ব্যক্তং ভাবি। পঞ্চায়ুধানাং বিধানং নিশ্বাণং ধারণপ্রকারোবা তেন। ৫১॥ চাপশরৌ মূর্দ্ধ্রেক্রব ধার্যাবিতি তয়োঃ সহচারিত্রৈনেক্যাং। পঞ্চায়ুধানি জেয়ানি॥৫২॥ ভুজদ্বে শশ্বচকে ধার্যা ইত্যক্তং। তদেব বিবিচ্যাহু দক্ষিণেহিতি॥ ৫০।

काश्मावाम्याय वा। ठक्क क्ष्वां यथावी थां द्वां विक्र वे हिंद श्वां विद्या विद्

অথ চান্তর্মাস্যনিয়মাবশ্যকতা। তবিষ্যে। যোবিনা নিয়মং মর্ভ্যোক্তং বা জ্বপ্যমেব বা। চান্তর্মাস্যং নয়েলুথো জীবন্নপি মৃত্যোহ্ন সং।। ৬০।। অথ চান্তর্মাস্যনিয়মাণ ক্ষান্দে নাগরখণ্ডে। আবেনে বর্জ্যেচ্ছাকং দধি ভাত্রপদে তথা। দুখামাস্যুজে মাসি কার্ত্তিকে চামিষ্ণ ত্যজেং।। ৬১।। তত্তিব ক্রিজানারদস্যাদে।
নিস্পারান্ বাজ্যাৎসাংশ্চ সুপ্তে দেবে জনার্দ্নে। যোভক্ষয়তি বিপ্রেন্দু খপচাদধিকাহি সং। কার্ত্তিকে তা বিশেষেন বাজ্যাৎসাং শ্চ ভক্ষয়ন্। নিস্পারান্ মুনিশার্দ্নি যাবদাসূত্রনারকী।।৬২।। কলিঙ্গানি পটোলানি বৃদ্যাক্ণ সন্ধিতানি চ।

षात्रकात्राः देखि एनाः ठळाजीः विक श्रकाविदिण्याना ज्ञान्य प्राप्ता द्वाप्ता विद्यापि ।। १८८ ।। एउ छ भू का धार्त ना स्व हर। देव हे देव नि ना स्व हर। देव हे विक हे नि ना स्व हर। देव हे विक हर हर्षा । १८८ ।।

নিরমমেক বিবিচ্যাই প্রস্তং বা জপাসা বিনেতি।। ৩০।। স্বতএবামিস্ত্যাগনিত্তিধর্মনির-তশ্মিবস্থানে মাধান্ তাজেও।। ৬১॥ নিম্পারাঃ শিদীপ্রতেদান্তান্।। ৬২।। হরতে ন শি- এতানি ভক্ষয়েদ্যন্ত সুপ্তে দেবে জনার্দ্যনে। সপ্তজনাজিতিং পূণ্যং হরতে নাত্র সংশয়ং ।। ৬৩ ।। কিঞ্চ । ক্রচ্যং তত্তৎ কাললভাং ফলমূলাদি বর্জনের দিতি ।। ৬৪।। জপাহোমাদ্যনুষ্ঠান্য নামসঙ্কার্জনন্তথা । স্বীকৃত্য প্রার্থিয়েদেবং গৃহীতনিয়ামানুধা । ইদং ত্রতং ময়া দেব গৃহীতং পুরতন্তব। নির্দ্রিয়া সিদ্ধিমায়াতু প্রসাদান্তব কেশব। গৃহীতেই ক্মিন্ বুতে দেব পঞ্চবং যদিব। ভবেৎ। তদা ভবত সম্পূর্ণং প্রসাদান্ত জনার্দ্যনিতি ।। ৬৫ ।।

অথ চাত্রমাস্ত্রতনিয়মমাহাত্মাৎ। বিষ্কুরহস্যে ত্রত্মনারদসম্বাদে। শূণু মারদ কাৎস্কেরন চাত্তমাস্য ক্রতক্রিয়া। যা নিবর্ত্ত্য নরো ভক্ত্যা প্রযাতি পরমাই গতিং ৷৷ ৬৬ ৷৷ ব্রতানি বৈষ্ণবানীই মনস্যুপি চিকীর্ঘতঃ ৷ নরস্য ক্ষয়মাণোতি পাপং জন্ম শতোদ্ভবং ॥ ৬৭ ॥ একভক্তোনরঃ শাস্তোনিভাসায়ী দৃঢ়ব্রভঃ । যো-২ জ রেজভরোমাসান্ হরিং স্যাভ্স্য লোকভাক্ ।।৬৮।। যন্ত সুপ্তে জ্যাকেশে কিভি শায়ী ভবেলরঃ। বার্ষিকান্ চভয়োমাসান্ লভতে বৈক্ষবীং গতিং। যন্ত কেশব-মুদ্দিশ্য চান্দুায়ণ পরায়ণঃ। চাত্তম্বাস্যং নয়েড্বক্ত্যা স বিষ্ণুতনুমাবিশেৎ । ভবি-विश्व दि । ভগব म्यू विधित मधारम । চ छ ति । विकान् मानान् मितरम । । জ্ঞীবা নরোবা মন্তক্তো ধর্মার্থং সুদৃঢ়ব্রতঃ । গৃহ্লীয়ালিয়মানেতান্ দন্তধাবন-পূর্বকং। তেয়াৎ ফলানি বক্ষ্যামি ত্থকর্ছুণাৎ পৃথক্ পৃথক্। মধুরম্বরসম্পন্নো ভবেল্লবণবজ্জনাথ। লভতে সন্ততিং দীর্ঘাৎ ভৈলঙ্গা পরিবজ্জনাথ। অভাঙ্গবজ্জ-নাৎ পার্থ সুন্দরাক্ষঃ প্রজায়তে। পকৃতিলপরিভগাগাচ্ছতুনাশনবাগুয়াৎ। মধূক তৈলভাগেন সৌভাগামভলং ভবেৎ। পুস্পোপভোগভাগেন স্বর্গে বিদ্যাধরো-ভবেৎ। যোগাভ্যাসী ভবেদ্যন্ত সক্র ক্ষপদমাগুয়াৎ। কটুমুভিক্তমধুরক্ষারকাষায়ঞান্ त्रमान्। यावक्कर्यः म देवलपाः देवशकाः नांभू यां क्वितः। जायं नवक्कं नात्काशी অপকাদোহমলোভবেং। পাদাভ্যঞ্সিরোভ্যঞ্পরিভ্যাগাচ্চ পার্থিব। দাঁপ্তি-गान् मी शहद्र (भामशूरको एक भद्रिक) स्वर । मधिमु श्राक्क निश्रमा स्मारमा स्वर मा छ नदः । हेन्मा विथिषे नामा कि शामी शाक विविद्धे नार् । नर्डिक मस्विर मिर्मार वार्थ-পক্ষ। वर्ष्क नारा जृत्मी अस्तर मात्री ह विष्णात नुहत्वा ज्वा मना मूनिः मना वाशी মধুমাৎসম্য वर्জनार । निकाधिर्निक्रशाक्ष्या पूरायनाविवर्জनार । এकास्टर्माभ-

ন্তি।। ৬৩ ।। রুচ্যং রুচিকরং চাস্তর্মাস্যজায়মানফলাদিমধ্যে নিজ্ঞপ্রিয়ং কিঞ্ছিজ্যমিত্যর্থ:।।৬৪।। এবং বর্জ্যানি লিখিতানি। কুত্যানি চ সংক্ষেপতোলিখতি জপেতি। আদিশব্দাৎ পুরাণ্শ্রবণাদি। শীক্কত্যেতি অন্যমাসতো বিশেষেণ উত্তর্মিয়মং গৃহীত্বেত্যর্থ:।। ৬৫।।

অন্যানপি নিয়মান্ দর্শয়িত্তং তেরু শ্রজাবিশেষমূৎপাদয়িতঞ্ তথাহাজ্যং সামান্যবিশেন বাভ্যাং লিখতি শূলিত্যাদিনা পদদমং ইত্যস্তেন ॥৬৬॥ বৈক্ষবানীতি ভগবতঃ শ্রনে বিশেষত্ত স্থা সঙ্গপবিশেষে গৃহীতত্বাভন্ত ক্রিকাপত্বেন তভোষণান্যেবভার্ষঃ। অতএব ক্রম্প্রং প্রাতি পরমাং গতিমিভ্যাদি॥৬৭॥ চত্তরোমাগান্ যোহরিমচ্চয়েৎ॥৬৮॥ দানশ্তং

বাসেন ব্রহ্মলোকে মহীয়তে। ধারণামধলোমানাং গঙ্গাসানং দিনে দিনে। মৌন-ব্ৰতী ভবেদ্যস্ত ত্ৰাজাম্বলিতাভবেং। ভূমৌ ভুজ্কে দদা যন্ত দপৃথিব্যাঃ পতি-র্ভবেং। নমোনারায়ণেতি জপ্তা দানশতং ফলং ।। ৬১ ।। পাদাভিবন্দনাদিফো-र्जादालामानकः कलः। विकृतानामुङ्ग्लामा क्रव्हाराज्यावत्रः। विकारमंत्रा-লয়ে কুর্য্যাদুপলেপনমার্জ্জনে। কপেছায়ী ভবেতাজা সনরোনাত্র সংশয়ঃ। প্রদক্ষিণ্-**जरू**। रुषा यञ्च मार ञ्चिषिरीठेकः। इरम्युक्तियात्मन मह विस्पृश्वः उद्याप्तः। গীতবাদ্যকরোবিফোর্জর্বলোকমাপুয়াৎ। নিত্যং শাস্ত্র বিনোদেন লোকান্ যন্ত व्यवाधरावः। म वर्गमबभी ভগবানন্ত विश्वभूतः उत्वरः। পूष्प्रमानाकृताः পূজাৎ কৃত্ব। বিফোঃ পুরং ত্রজেং । কৃত্ব। প্রোক্ষণিকং দিব্যৎ স্থানমণসরসাং লভেৎ। তীর্থাদিযু ক্তসানে। নিমলং দেহমাপুয়াৎ। পঞ্গব্যাশনাৎ পার্থ চান্দায়ণফলং লভেং। এক ভক্তাশনায়িত্যমগ্নিছোত্রফলং লভেং। নক্তভোজী সমগ্রস্থ ভীর্থযাত্রাফলং লভেং। অ্যাচিতেন চাপোতি বাপীকূপপ্রদাফলং। ব্যুকালোহনভোজী যং স্থায়ী স্বর্গে নরো ভবেং। নিত্যসায়ী নরোহস্থ নরকং স ন পশাতি । ভাজনৎ বক্তরিদ্যন্তু স স্নানং পৌন্ধরং লভেৎ ॥ १०॥ পত্রেষ্ যোনরোভুঞ্জে কুরুক্ষেত্রফলং লভেৎানিশায়াং ভোজনং নিভ্যং ভবেৎ বুন প্রয়োগজং। যাসদ্বয়জলত গাগায় রোগৈঃ পরিভূয়তে। এবমাদিত্রতৈঃ পার্থ তুটি মায়। তি তোযিতঃ । १১। কিঞা যোগনিতাং সমালয়া শেষাহিশরনে স্থপন্। ক্রীরোদভোর-বীচ্যবৈত্র ধৌতপাদঃ সমাহিতঃ। লক্ষ্যকরামূজৈঃ শ্লক্ষ্মূর্জ্যমানপদ্ভয়ঃ 19২1 ভিন্নি কালে চ মদ্ভক্তোযোমাসাংশচতুরঃ ক্ষিপেই । ত্রতিরনেকৈনিয়সৈঃ পাওবত্রেই মানবঃ। কম্পেস্থায়ী বিষ্পুলোকে ভবেলান্ত্যত্ত সংশয়ঃ। সভাগ এতসমাপৌচ জ্ঞিকক্ষস্য প্রসাদতঃ। যদ্দদানাদিক্ত্যঞ্জ লেখ্যৎ ভব্তিক কার্ত্তিকে।। ৭৩ ।। স্তুরাথ क्षमान्त्राक्ष्य अभागा ह भूनः भूनः । तमयः नाल्याम् जीव्यं ह स्रोक्यं गर 11 93 ।। গাতন্ত্যাদিনা দেবং পরিতোষ্যাথ বৈক্বান্। সংপূজ্য নর্যানেন দেবৎ স্থালয়মানয়ে । প্রভোনীরাজনং কৃত্বাবিসজ্জিবত বৈফ্বান্। নিবেশ্য স্থাসনে एवं भारी छ जूरि जः मात्रम्। अवशः कूर्य जानामाः महजादाया छि रेव मूर्थे । अनाथा প্রভবেদ্ধুখননাবৃষ্টিশ্চ জায়তে। তথাচ ভবিষ্যে। সিথুনত্তে সহস্যুৎশোন যাপয়তি यारुद्रिः। देवकरेवः मह मधुः श्रनावृश्चिष्ठमा ভবে । किश्च। ভবিষ্যোজরে। যোদেব नवनः পাर्थ अनुरमम् नम्हित्दः। উত্থानः वाशि क्ष्णाः न इत्वर्लाकमान् वार 1901

বছলদানজমিত্রার্থঃ।। ৬৯।। ভাজনং কাংস্যপাত্রং।। ৭০।। এগমাদিত্রতৈস্তোবিতঃ সন্ একেশব-ইতি শ্বেং।। ৭১॥ তমেব বিশিন্ধি যোগেতি সার্দ্ধেন। সমাহিতঃ যোগনিজামান্তিতঃ ।। ৭২॥ কার্ত্তিকে কার্ত্তিকরুতালিখনে।। ৭৩॥ স্তব্ধা এব্রহ্মস্তত্যাদিতিঃ স্ততিং কৃত্বা। অভ্যর্থ্য স্বস্তাস্ত্র বিশ্বস্থেত্যাদি সংপ্রার্থ্য। প্রসাদ্য বিচিত্রার্থবিচনৈঃ প্রদানং কৃত্বা। শেষং ভগবছ্চিত্ত মহাপ্রসাদ-প্রশাদনদিকং। শস্তোদকং তীর্থক প্রচিত্রণোদকং।। ৭৪॥ অনুমোদ্য স্থেটাভূত্বেত্যর্থঃ। যথা।

व्यथं आंवन्त्रकारी । शोषमीत्त्र । आवत्व मानि क्रकः चर शूरेक्यः (क्षक्रमस्रोतः । চন্দ্ চন্দন कलुति कुकू मापि मुरामिरिङः। धनानवक्रक कान कनामि कस्थार्भ रत्न पिछि। शविजारता ११९ कूर्या प्राप्ता प्रमाग्य विकर्तशः। श्रीर्गमा मुक्कि कडाएक विधान वः ।। १७ ।। ज्य शविजार्त्राश्यः । व्यावनम् मिर्क शक्त वाममाराः देवकदेव-মুদা। কর্তব্যঃ ক্ষণেবস্য পবিত্রারোপণোৎসবং। তন্নিতাত। বস্চপরিশিকৌ। न जांबः नर्काबीरर्थयू नर्कायर छवू मीकिकः । इति मा थोकिमार्थिक यः भवितः मगाहरतः ।। ११ ।। विधिना भाजामृत्केन यान कूर्यता शविजवः । इत्रत्नि ताकना-স্তন্য বর্ষপূজাদিকং ফলং।। १৮ ।। যোগদারে পৰিত্রোৎপত্যুপাখ্যানে নাগরাল পবিত্রৎ প্রতি রুদ্রেণ বরপ্রদানং। যে ত্বাং ন বস্তু মন্যান্ত যথাসন্তাবিতোময়া। क्रशास्त्रामिकः उत्रिष्ट क्रमः द्वारमञ्जलिक्षाः ॥ १८॥ विक्रुब्रह्मः । न করোতি বিধানেন পবিত্রারোপণন্ত যং। তস্য সাম্বৎসরী পূজা নিজ্ফলা মুনি-भव्य । च्याष्ट्रिक्मिमायूरेक्टर्न दिक्षियू भवां ग्रेशः । वर्स्य वर्ष्य कर्खे व ८५ भविजा-রোপণং হরে:।। ৮০।। পবিত্রারোপণমাহাত্ম্যং। তত্র বৌধায়নঃ। যাবৎ সূত্রং পবিত্রদ্য তাবং স্বর্গে মহীয়তে। আয়ুরারোগ্যমেশ্বর্য্যং বিপুলং তস্য বর্দ্ধতো।৮১!। মহাসংহিতায়াং। সমুৎসরেণ যা পূজা হতা বৈ মন্ত্রিণারিজ। পবিত্রদানাৎ পূर्वी न्यापिका इ कावान् इतिः। विक्यू बंहरम्य। भविकाताभागः विष्मार्कक्षिमुक्ति-প্রদায়কং। জ্রীপুংকীর্ভিপ্রদৎ পুণ্যৎ সুখসম্পদ্ধনাবহং ॥ ৮২॥ পুণ্যানান্ত তথা পুণ্য সর্বাপাপ ইরম্ভ বৈ । পবিত্রারোপণং তক্ষাৎ পবিত্রং পরমৎ ক্ষৃতং ।। ৮৩।।

দাদশ্যাং ভগবতঃ পবিত্রারোপণং কুর্যাৎ। পৌর্ণমাস্যাঞ্চ ঋবিতর্পণং কুর্যাৎ। তত্র তত্র পবি বারোপণে ঋবিতর্পণে চ বছ শাস্ত্রোক্তং বিধানং প্রকারস্তেন ॥৭৬॥ প্রথমং শ্রীভগবৎপ্রীণনত্বার্ন্নি ত্যতাং দর্শরার্ভ সন্নাতইতি॥ ৭৭॥ অকরণপ্রত্যবায়দ্বারা নিত্যতাং লিখতি বিধিনেতি ত্রিভিঃ। আদিশন্দেন অপহোমাদি। ফলমিতি ভগবৎপূজাদেঃ স্বত্রব কলব্রপত্মাং ॥ ৭৮॥ পবিত্রোপাধ্যানং চেদং। নাগরাজস্য বাস্ককের্ক্রার্ভা শ্রীপবিত্রনামা নাগবরো ভক্ত্যা শ্রীশিবমারাধ্য সন্তন্টে চ তন্মন্ বরম্বাচত ত্রহুক্রভিত্বগত্তাং প্রাপ্রামিতি। তত্তক পরম্বস্কুটেন শ্রীশিবেন তথা স্বীক্রত্যোক্তমিদং এবং সর্ক্রেবানের দেবানাং কর্ভভূবণতাং ব্রন্ধ তত্ত্বং দেবকৈঃ সর্ক্রেবিপ স্বস্বেউন্দেবে ত্বদাকারত্বেন পবিত্রাণি নির্মায়ারোপ্যস্তামন্যধা চমহান্ দোধােহিস্থৃতি। তদেব লিখতি যে ত্বামিতি॥ ৭৯॥ বর্ষে বর্ষে কর্ভব্যমিতি বীপ্রাবিধিদ্বারা নিত্যতাক্তা বসস্তে বসস্তে ক্যোতিষা যজেতেতি বহ।ভত্রচ বিষ্ণু পরায়নৈরিতি বৈষ্ণবানামাবশ্যক্তমমিতি বোধিতং॥৮০॥ মহীয়তে প্রত্তে পবিত্রারোপকঃ॥ ৮১॥ স্ত্রীপ্রপ্রায়ার্জিপ্রার্গণ বিত্রোরোপণং কার্য্যমিতি অভি-শ্রেখং। ৮২॥ প্রণ্যানাং মধ্যে প্রতঃ পর্রান্ত্রিদিত্যর্থঃ। এবঞ্চ পবিত্রনাম নিক্রক্তং।। ৮৩॥ ত্রীপ্রা মিত্যর্থঃ। এবঞ্চ পবিত্রনাম নিক্রক্তং।। ৮৩॥

সম্বংগরেণ যোজন্তা সমভ্যক্ত জনার্কনং । যথকাং সম্বাপ্রোক্তি পরিব্রায়োপণেন তথ । কিন্ধ । পানরভ্যেনসোনিত্যং ত্রায়তে ভববন্ধনাথ । পানিতাং তেন বিখ্যাতং ত্রাক্ষং তেলোং ভিঁধীয়তে । ৮৪।। বিষ্ণাখ্যয়া ত বিখ্যাতং তদালোকে বিধীয়তে । সএব সূত্রকপেণ যজেশাক্ষণাং প্রভুঃ ।। ৮৫ ।। তদেব ত্রিগুণী সূত্রং ততং নারাম্বণাখ্যয়া । ত্রিদেবাদ্বা ত্রিকেরাদ্বা ত্রাক্ষরঃ প্রণবং স্বৃত্তঃ ।। ৮৬।। তত্র বৌধায়নাদ্যুক্তঃ পবিত্রা রোপণে বিধিঃ । সম্তোবিদুষাং ক্লোর্ডনে যোহত্র স লিখ্যতে ।। ৮৭ ।।

অথ পবিত্রারোপণবিধিঃ। সৌবলৈ রাজতৈন্তালুঃ ক্লোম্যৈঃ সূত্রৈন্ত পাত্মিকৈঃ। কার্পাদৈর্বা পবিত্রাণীষ্যমে কাশেঃ কুশেরপি ।। ৮৮।। তত্র কার্পাদিকং সূত্রং ব্রাহ্মণীকর্তিং শুভং। আনীয় ত্রিন্তণীক্ত্য পুনস্ত্রিন্তণয়েৎ শুচিঃ।।৮৯।। পঞ্চগব্যেন তৎ প্রোক্ষ্য প্রহ্মাল্য শুচিনামুনা। মূলেনান্টোত্তরশভং মন্ত্রেণাথাভিমদ্রয়েৎ ।। ৯০॥ ত্রীণি সাইশভেনাস্য ভস্যার্দ্ধেনাস্য চার্দ্ধভঃ। কানূর্নাভিদল্লানি পবিত্রাণ্যাচরেৎ প্রভোঃ।। ৯১ ।। বট্ ত্রিশৎ প্রভ্যাম্যোদ্য কার্যান্ত্র সধ্যমে। চতুর্বিংশতি-

বিশেষতন্ত্রদেব নির্ব্বক্তি পাবয়তীতি। বতন্ত্রদান্ধং পরব্রহ্মমাং তেজইতাভিতোগীয়তে॥ ৮৪॥ এবং বনমালাদিবদ্বীভগবতঃ প্রতাল্পরপেণ তদভেদতাং দশ য়ন্ মাহাল্মাবিশেষমাহ বিজ্বাখাযেতি ছয়েন। তত্র হেন্তঃ দএবেতি॥ ৮৫॥ ত্রানাং গুণানাং নম, হারঃ ত্রিগুণী তল্ময়ং স্ত্রং। ত্রিগুণান্ধে কাবণমাহ ক্রিদেবেতি ত্রয়োদেবাব্রহ্মাদ্যান্ত্রদাল্পর:। এবং শ্রীবৈকুণ্যলাকে ভগবন্তুবণত্ত্রন নিতাদিজমেব পবিত্রং শ্রীমহেশবরাপেক্ষয়া শ্রীবৈক্ষবানাং ভব্তিবিশেষেণ ত্রিগুণীর হত্ত্র নির্দ্ধিতপবিত্রশ্রীস্থাইত ত্র্বানিবাবিষ্ঠায়াত্রাপি শ্রীভগবন্তু হিণতাং প্রয়াতীতি বোদ্ধারা। অত্রবাবাহনমন্ত্রে বিশ্বলোকাৎ পবিত্রাদ্য আগচ্ছেতি॥ ৮৬॥ বিদ্রাং সামতইতি দম্পুদায় ভেদেন বিবিধঃ স্যান্ত্রত শাস্ত্রাভিজ্ঞসম্পুদায়ান্ত্রমতোবিধিবত্র লিখ্যত ইতার্থঃ॥ ৮৭।

সৌবর্ণাদীনাং স্ত্রাণাং সধ্যে প্র্কিপ্রবিভাবে পরিঃ পরৈবিতি জ্ঞাং। তত কৌইমাঃ প্রস্থিতী প্রতি পালিকৈঃ পদ্মন্তির। ৮৮॥ অত্র কার্পাদিকের কঞ্জিবিশেবং দর্শান আদৌ পরিজ্ঞাণবিবিং লিখতি তত্ত্ত্যাদিনা। ত্রাহ্মণ্যা ত্রাহ্মণত্ত্বার্যা স্থলীলয়া বা বিধ্বয়া নম্ভ শুদ্রখা দুংশালয়া বা কর্জিতং শুল্ডং উত্তমং লিখিতন্যান্তেন কর্জীতঃ স্বতক্ষ অনতিস্থোম্যাদিনা। শুচিঃ সালাদিনা পরিত্রঃ কন।। ৮৯॥ তৎ নবগুণীক্তস্ত্রং শুচিনা শুদ্ধেন জলেন প্রক্ষাণ্যা। অধান্তরং দুলেন মস্ত্রেণ অটোত্তরশাতবারান্ অভিমন্ত্রয়েও।। ৯০। তেন চ স্বত্রেণ জ্যেষ্ঠমধ্যম কনিষ্ঠানি ত্রীণি পরিত্রাণ জমেণ শুলৌ দেশে বৈক্ষবৈঃ সহ যাজ্ঞাপনীত্রবং বন্ধীয়াদিতি লিখতি জ্রীণীতি। অসা নবগুণীকৃতস্ত্রন্য সাফ্রশতেন অফ্টেপ্তর্কাতন তাবক্ষুণিতেনেত্যর্থঃ। এবং স্থোলা লাফ্রণত্যাগ্রিন চন্তঃপঞ্চালতা। অসা ভদর্জনা চার্ল্ডঃ ক্রমেণ জাফ্রান্টিরাণ পরিমাণং লিখতি প্রভাগ শীল্ডান্য ক্রিলান্ত ক্রমেণ জাফ্রান্টিরাণ ত্ত্তান্তির কর্ত্তানির্মাণং লিখতি প্রভাগ শীল্ডান্ত। চন্ত্রেণ ক্রম্নান্ত। ক্রিকার্যন্তং ক্রমিরিতি জ্রেরং।। ৯১।। পরিত্রাণাং মধ্যে মধ্য চ সমল্পার্কার বিশ্বতা চন্ত্রিকার্যন্তং ক্রিকিরিতি জ্রেরং।। ৯১।। পরিত্রাণাং মধ্যে মধ্যে চ সমল্লার্গান্ত বিশ্বতা চন্ত্রীয়াদিতি লিখতি ঘট্রিংশ্নিতি। তেরংগ ক্রমাণাং নধ্যে হ্বানো মধ্যে চন্ত্রাণ কর্তানির বিশ্বতি ঘট্রিংশ্নিতি। তেরংগ ক্রমাণাং নধ্যে হ্বানো মধ্যে চন্ত্রানিক ক্রিকার ঘট্রিংশ্নিতি। তেরংগ ক্রমাণাং নধ্যে হ্বানো ক্রান্তে। মধ্যমে চন্ত্র

## STATE FORM



বাবে চ দাশল গ্রন্থবাবুদৈ। ১২ । অকু ঠণার্বান্তর কুর্যান্ত্রি নির্দ্ধের বিশ্বান্তর কর্মান্তর ক্রান্তর ক্রান্তর

বিংশতি এন্থয়ঃ কার্যাঃ। অস্তে কনিষ্ঠে।। ৯২।। গ্রন্থিপরিমাণং লিগতি অঙ্গুটেতি। ভত্তাঙ্গুঠপর্ব চ এভগবমূর্ত্তের্গ্রাহং। অন্যথা হস্ত জীলর্ত্তঃ পবিজ্ঞাপি ভ্রত্ত্বে যজন।নাজু ঠপর্বসরিমত তাবলুন্তি সংনিষেশাভাৰাৎ। তদৰ্জং অজুষ্ঠপকাৰ্জমিতঞ্চ মধামে তদরিং চ অজুষ্ঠপকাণাদমিতং ক নিষ্ঠে প্রস্তিং কুর্য্যাদিত্যর্থঃ ॥ ৯৩ ॥ সংক্র সংক্ষেষের পবিত্রে বু। বৈ প্রসিংদ্ধী। বিষমসংখ্যাকান্ অমুগান্ কুত্রচিৎ পরিবারাদি পবিত্রেছপি ন কুর্যাৎ ॥ ৯৪॥ তদ্য নবগুণীকুত্দা ভক্ষা। অক্টোপ্তরশতং গ্রন্থায়িশ্মন্ তৎ ।। ১৫ ।। বনমালাপবিত্রপরিমাণং লিখতি আংভ্যেতি মুক্টাভাবে সতি এমস্তকং গ্রাহাং॥ ৯৬॥ তৈঃ নবগুণীক্ততঃ স্থতঃ অধিবাসনার্থং সমর্প্যং প্ৰিত্ৰং যন্তকান্ধপৰিত্ৰং ।। ৯৭ ।। উভূনি নক্ষ্তাণি তৎ সংখ্যাদিপুণিতৈঃ । তৈৰ্নপুণিতৈঃ সূত্রৈঃ ক্রমেণ জ্যেষ্ঠমধ্যমক্রিষ্ঠানি জীণি পবিত্রাণি সম্যাগচরেছ। তত্র উভূনি সম্ববিংশতিঃ। গুংরারশ্বেশ্চ দ্বে পবিক্রে সপ্তবি॰শতিভিন্বগুলী কলাঃ বোড়শ। অৰ্কাআদিত্যা দ্বাদশ ॥ ৯: কুত্সুকৈঃ আত্মনঃ যক্ষমানস্য পৰিত্রং মড়িশতি -ি কুর্যাৎ ।। ৯৯ । অন্যেষাং বৈফবাদাং ভত্ত ভত্তাশক্তাৰপি লিখিভানি শক্ষাণ্যেৰ পতিত্ৰাণ স্কাণ্ডোৰ কৰ্মণিকি লিখভি স্প্ৰাছয়ে দিভি॥ ১০০॥ বিশোভদ্য শোভারছিত্দ্য সূত্রদ্য পবিত্রদ্য দানেন কর্ভুর্থমানশ্ব। শোভ্রং ছন্দরং।। ১০১।। অর্থ নিশ্বংগনভ্রং তানি সর্বাণি পবিত্রাণি কাশ্বীরাদিনা রঞ্জিদ্বা বঞ্জা-भाजः मस्तव अश्विषः कात्रश्चिता देवनव्यवेशमान्यूवे छः एज व्यापाना द्वापादाव । আদিশক্ষেন কপুরাদি জন্তাশক্ষো কেবলকুল্পুমেনাপি জন্তাপ্যশক্তো হয়িছালিনাপীতি জেরং।। ১০২।। ইদানীং পরিত্রারোপণে। হসবে দশ্মানিদ্ধিনত মক্ত্যানি লিখনাদৌ দশুমীক্ষতাং কিংজি হবেতি। দশ্মাং কুজাঞ্চ যথা আন্ত্রিধিক্তং পুরুষ্ণ দশ্মীনিম্বমে যলিখিতং জুলুলাবেণ জেয়ং। एक ममत्रीनित्रामन केटिक का का विविधिक विशिष्ट महान् भाषित्र विश्वीप्रमा नदा (क्या

## विविश्विष्ठि दिगानेः।

নামের ।। ১০৩।। তিকাদশ্যাৎ প্রভাতে চ নিত্যক্ত্যৎ সমাপ্য ছি । দেবালয়মুপক্ত্য মগুলং রচ্যের শুভং ।। ১০৪ ।। কৃত্যা কৃষ্ণস্য নিত্যাক্ষাৎপবিত্রারোপণার্থকাং।
পূজাং বিশেষতঃ কৃত্যা কৃষ্ণং বিজ্ঞাপয়েদিদং ।। ১০৫ ।। ক্রিয়ালোপবিঘাতার্থং
মত্ত্রা বিহিতৎ প্রভো। মহাৈতৎ ক্রিয়তে দেব তব ভাষ্ট্য পবিত্রকং। ন নে বিদ্যোভবেৎ ত্বত্র কৃত্র নাথ দয়াং ময়ি। সর্বাথা সর্বাদা বিষ্ণো মমত্বং পরমা গতিবিত্যাদি
।৷ ১০৬ ৷৷ দেবস্য সর্বাভোন্যসেদ্ভকাষ্ঠং জলং কুশান্। মৃত্তিকাঞ্চ হরিদ্রাঞ্চ কৃষ্ণু মং
রোচনানিচ। উপানহৌ সিতচ্ছ শ্রং চামরং ব্যক্তনন্ত্রণ। যবব্রীহ্যাদিধান্যানি মধাস্থানং পৃথাক্ পৃথক্।। ১০৭ ৷৷ কৃষ্তং শুদ্ধায়ু নাপূর্য্য সর্বতোভ্তমগুলে। দেবাগ্রতো

নির্ব্বর্ত্তা ভগবন্তং পূজয়েদিতি। ততক্ষ পূজ্পাঞ্জলিং দত্ত্বা ভগবন্তু বিজ্ঞাপ্য। তব যাগং করিষ্যেতং পবিত্তময়মচ্যুত। আমক্তিতোশি ভগবন্পরিবার্যুতোময়েত্য।দি সংপ্রার্থ্য তল্যা দশম্যার।তিঞ্ যথা প্রাপ্লিখিতমেৰ ব্রহ্মচর্য্যভূশয়নাদিনিয়মেন নয়েৎ অতি বাহয়েৎ তত্ত্ব চকেষাঞ্চিন্সতে দশমী রাত্রিমিশ্বং নীত্রা একাদশ্যাং প্রাতঃ ক্তনিত্যক্ত্যো ভগবস্তমভ্যচ্চ্য পবিত্রারোপণসঙ্কপ্পং যথাবৎ কৃত্বা পবিত্রারোপণোপকারণানি যথাশক্তি সমুত্য গুরুং প্রণম্য দলিখে চ সভন্তস্যা मुख्या পविजानि कूर्यामिति । उक जिल्लासित कामनीमित्न পविजनिर्मानामाशिनकर्मास শক্তস্য তথৈব বেক্ষেব্যমিতি দিক্।। ১০৩।। একাদশীদিনক্ত্যং লিখতি একাদশ্যামিত্যাদিনা নিশীত্যন্তেন। নিত্যকৃত্যং প্রাতঃস্নাদি। উপকৃত্য লেপনাদিনা বিতানবন্ধনাদিনা চাল-কৃত্য শুভং মণ্ডলং সক্ষতোভজাদি অত কেযাঞ্চিন্নতেইধিকমিদং। আদৌ দারাধিঠাতৃ দেবতাচ্চনপূর্বকং যাগমগুপং প্রবিশ্য ষট্তি॰শন্দর্ভদলৈবেণীমরত্নি সংমিতাং নির্মায মূল মস্ত্রেণ তাং পঞ্চগব্যবিশুদ্ধাং বিধায় ভূতশুদ্ধিং কৃত্বা পঞ্চগব্যাক্তবা বেণ্যা সর্বভোষাগমও পাভ্যস্তরং প্রোক্ষয়েং 🗓 ততোগুর্কাদিনমস্কারপূর্ককং স্ব গমে।ক্তপ্রকারেণ ন্যাসঙ্গালং কৃষ্ণ ন্দিং হবীজেন সর্যপানধিমন্ত্রা দিক্ষু নিক্ষিপেৎ। তাংশ্চ প্রাকারাকারেণাবস্থিতান্ বিচিন্তয়েৎ। ত্তক স্থশীলং বেদবেদাঙ্গপারগং বৈষ্ণবমেকং হোমার্খং বিধিবৎ বৃণুষাৎ। স চাগমোক্তপ্রকাবেণ স্বগৃহ্যোক্তবিধিনাফৌত্তরশতমউবিংশভিবারান্!বক্ষ্যান্ততীন্ত স্বাসংশ্রবপাতে আন্ততশেষাব্দ্যং পবি-সংস্কারার্থং নিক্ষিপেৎ। यक्षमानञ्ज यथाविधि न्যাসান্ কৃত্বা নৈমিত্তিকীং মহাপ্রকাং কৃত্বা পশ্চাৎ পবিত্রারোপণোৎসবছেত্তকাং মহাপ্রজাং বিধিবদারভেতেতি।। ১০৪।। নিত্যার্কাং নিত্যকরণীয পূজাং কৃত্বা পশ্চাৎ পৰিত্ৰাৰোপণোৎসবছেত্তকাং পুনবিশেষতঃ আধিক্যেন পূজাং কৃত্বা। ইদং ক্রিয়ালোপেত্যাদি।। ১০৫।। ক্রিয়াণাং সম্বংসরক্তপুণ্যানাং লোপস্য যোবিঘাতঃ পরিহারস্ত-দর্খং।পরিত্রকং পরিত্রারোপণং। আদিশব্দাৎ উপবাসত্রতেন ত্বাং তোষয়ামি জগৎপতে। কাম ক্রোধাদয়োহেতে ন মে স্থাত্র তিঘাতকাঃ। অদ্য প্রভৃতি দেবেশ যাবলৈ শেষিকং দিনং। ভাবদ্রকা ত্বরা, কার্য্যা সর্ব্বস্যাস্য নমোস্ত তে ইতি গ্রাহ্ণ। তচ্চ সর্ব্বস্থারণত্বান্ন স্পর্টং লিখিতং। ১০৬॥ रेमानीः अधिताममञ्जादानामनः निथिषि (मदरमाणि वाजाः। मर्द्धाः शतिजःमञ्चकाष्ठीमीम यथाः श्वानः, उत्मवानाश्वाल পृथक् পृथक् नात्मामिषधाणि वृद्यात्रव्यः।। >०१। व्यक्ताधिवामध्यकातः

निधायां चिम् भविजानं धिवाम्दयः।। ১०৮।।

অথ পৰিত্ৰাধিৰাসন। ভগৰৎপুরভন্তানি পটলতানি পূল্বন্। আদা-वावाहरस्त्रमृत्युका उम्मम्मा वृक्षः ॥ २०२॥ क्याक्षेण्डासः । ७ नाम्यम् सम्माना পবিতাকরণায় ভোঃ। বিফুলোকাৎ পবিতাদ্য আগচেছ্ছ নমোস্ত তে ॥ ১১,॥ ভেষাবাহ্য যথাস্থানং ক্রজাদ্যাদেবভাস্তভঃ। ভন্মক্রঃ সংনিধাপ্যাথাক্ষতগল্পাদিনা र्क्ट ।। ১১১ ।। एक एक एमवडारम्हाव्हाः । ब्रक्कविक्यूमहारम्वाज्ञिम्कीरम्बद्धाः व्युठाः । व्यनत्वावायुवक्की ह उदका नानः मानी द्रविः । मित्रक वित्याप्तवाम्ह नव সূত্র্ধিদেবতাঃ। ক্রিয়াচপৌরুষী বীরা চন্তথী ঢাপরাজিত।। জয়াচ বিজয়া टेव्य मुक्तिमा व नमानिया । मतामश्री कूनवमी मनमी नर्वाछामूथी । अञ्चीनाः দেবতাত্ত্বেতা তত্রতত্র নিবেদয়েদিভি। তম্মস্রাইশ্চতে । ও সর্ব্যাভরণ চিত্রাক नर्तिप्ति नमक् । नार्गाक्षभिष्याञ्चन् कार्षमृतः नमालयं । उ नर्तनक्षीकत यान नक्छान्त्रमाञ्चक । निवृद्धक्त विश्वाञ्चन् मधी मृत्यः ममाध्वत्र । उ अिहादन মরুদ্যোনে পুরুষাত্মন্ দিবস্পতে। কনীয়ে৷ হেপ্রভো দেব তেঞ্চা সূত্রমাশ্রয়ে ভ্যাদি ।। ১১২।। যত্ৰ মন্ত্ৰোন বৰ্ত্তেত ভত্তলামূৰ তত্ৰচ। নমোন্তঃ সচত্ত্ৰী-कछेहाः धाक्रियनामनुः॥ >> ।। व्यथं क्रयःकदारस्राक्षभक्तेमृत्वन निमिर्कः। विक खिनावः वधीयां एवं वकः मक्नाचकः। छव मकः। उ नम्रे नद्रक्राक्रीयाः मन्नू न क्लामानि यए। शिवजीकत्रनारियुष्ट कोलकः धत्राक नमः देखि । खाडानक्षशिव-অঞ্ গৃহীত্বা ধূপিতং বুধঃ। ভগবন্তং নমক্ত্য ভক্ত্যা সংপ্রার্থরে দিদং।। ১১৪।।

লিখতি কুম্বমিত্যাদিনা অবপ্তঠয়েদিত্যম্ভেন । অস্মিন্ কুম্ভে তছপরি পবিত্রাণি বৈণবপটলাম্ভ-নিহিতান্যেব নিধায় ন্যাধিবাশয়েৎ।। ১০৮।।

তানি পবিতানি মূলযুকা মূলমন্ত্রযুক্তেন। তদ্য পবিতাবাহনদ্য মহনা মন্ত্রেণ। ১০৯॥ অদ্য আবোপনকালে আদ্যেতি বা ॥ ১১০॥ তেরু পবিত্রেরু দেবতাঃ পবিত্রাধিষ্ঠানীঃ যথাস্থানং স্বস্থানে আবাহনমূত্রয়া ভত্তমন্ত্রেরাবাহ্য সন্নিধাপ্য সনিধীকরণমূত্রয়া সনিধীকতা চক্রমুক্তরা সংরক্ষ্য ধেহামুক্তরা অমৃতীকৃত্য অক্ষতাদিনা পুক্রেং। আদিশব্দেন পুক্তা ধুপদীপ নৈবেদ্য তায়ূলাদি ॥ ১১১॥ কনীয়ঃ কনিষ্ঠ স্ত্রেমাশ্রের। আদিশব্দাং বনমালায়াং ভদ্ধিষ্ঠান্ত্র্যঃ প্রকৃতে রাবাহনমন্ত্রাদি । প্রকৃতে বঞ্জগক্ত্রে সর্বলাবন্যদারিনি। প্রস্তুত্রে নিত্যকল্যানি সানিধ্যং কুরু তে নমইতি ॥ এতক্ত কেবাঞ্চিক্তমিতি ব্যক্তং ন লিখিতং ॥ ১১২॥ নম্বন্য কত্যে মন্ত্রান্তর্জা লিখতি ঘত্রেতি। নমোন্তং নমঃ শব্দান্তকং সচন্তর্থীকং চন্তর্থীবিভক্ত্যেক বচনিদ্ধাং ভন্তমানৈব মহর্মন্ত্র উহাং। তক্ত পূর্ব্বমেব লিখিতমন্ত্রীতি লিখতি প্রাগিতি। প্রয়োগশ্চায়ং। ভ্রম্পবায় নম ইত্যাদি ॥ ১১৬॥ ধূপিতং সন্তর্থীদিধুপযুক্তং স্কাক্ষণবিত্রং হন্তাভ্যাং পৃহীদ্বা ॥ ১১৪॥

আমস্ত্রিভোদি দেবেশ সার্ক্ষ্ণ দেবগণেশ্বরৈঃ । মন্ত্রেশৈর্লোকপালিশ্ব সহিতঃ পরিচারকৈঃ। আগত্র ভগবন্ধীশ বিধিসম্পূর্ণকারক। প্রাতত্ত্বাং পূঞ্জিরিষ্যামি সামিধ্যং
কুরু কেশবেতি। ততক্ষা বিষ্ণুতেজাদ্ধেশ রম্যং সর্বাপাতকনাশনং। সর্বাকামপ্রায়েশ দেব তবাজং পার্যাম্যক্ষ্ণ। আনেন মনুনা বিদ্ধান্ শূলসম্পূর্টিতেন হি। দদ্যাকান্ধপবিত্রন্ত ই কুফ্চরণাজ্ঞায়োঃ।। ১১৫।। নীরাজ্য দেবং স্তত্ত্বা চ দত্ত্বা প্রস্পাক্রেলিং ততঃ। তৎপবিত্রানি তৎকুস্তমপ্রেমনুনাথবা।। ন্সিংহ্মনুনা রক্ষেৎ
ক্রেমেবগুঠারেং। গীতন্ত্যাদিনা কুর্যাদ্বিধিবজ্জাগরং নিশি।। ১১৬।।

অথ পৰিত্ৰাপ্ৰং ।। প্ৰাতঃক্ত্যানি নিৰ্ব্যু নিত্যপূক্ষাং বিধায় চ। বিশেষতাহচহিংদ্ৰেবং পৰিত্ৰাণি চ পূক্ষয়ে । মহাবাদিত্ৰ ঘোষণ নাম সন্ধাৰ্তনাং সবৈঃ ।।১১৭ ।। মূলসম্পুটিতেনৈৰ পৰিত্ৰাণ্যপ্রেং ক্রমাণ ।।১১৮ ।। বক্ষ্যমাণেন মন্ত্রেণ ভক্ত্যাক্ষমায় বৈষ্ণৱং । পূজাৎ কৃত্বা পরীবাৰদেবানাং তান্যথার্প য়েং ।।১১৯ ।। কর্পনিস্তঃ ।। কৃষ্ণ রুষ্ণ নমস্তভাং গৃহাণেদং পৰিত্রকং । পৰিত্রীকরণার্থায় বর্য পূজাফলপ্রদা। পৰিত্রকং কুরুষাদ্য যমায়া দুক্ষ্ তৎ কৃতং । শুক্ষোভবাম্যহং দেব স্থাদাজ্জনার্দ্নিতি ।। মহাপূক্ষাং ততঃকৃত্বা স্তত্বা নত্বার্থয়েৎ প্রভুং ।। বন্যালাং যথাদেৰ কৌস্তুভং সততং কৃদি । তদ্বংপবিত্রং ভস্তং চ পূক্ষাঞ্চ হৃদয়ে বহু ।।১২০ ।। জানতাহজানতা বাপি ন কৃতং যত্রবার্চনং । কেনবা বিঘুদোধেণ প্রিপূণ্ ভদ্ম মে ।।১২১ ৷৷ তথাগ্লিবিধিনাভ্যন্ত্র্য পৰিত্রং তস্য চার্প্রেই । কৃক্ষে নিবেদয়ন্ মন্ত্রানমিত্যাদিনা কৃতং ।।১২২ ৷৷ গুরুঞ্চ ভক্ত্যা সম্পূক্য পৰিত্রং গুরুবেহপ্রেই । বৈষ্ণবেভ্যঃ প্রিত্রাণি দক্তিকং ধার্য়েই স্বয়ং । ১২৩ ৷৷ সংপূক্য বিষ্ণবান্ বিপ্রান্ শক্ত্যা সংগ্রুৱ্য বন্ধুভিঃ । সমংমহাপ্রসাদান্তং সুথং ভূঞ্জীত বিষ্ণবান্ বিপ্রান্ শক্ত্যা সংভোজ্য বন্ধুভিঃ । সমংমহাপ্রসাদান্তং সুথং ভূঞ্জীত

ভদ্পয়িত্বা গৃহীতং গল্ধ পবিত্রং।। ১৯৫॥ অস্ত্রমক্ত্রেণ হসিংহমক্ত্রেণ বারক্ষেৎ। আদিশব্দেন পুরাণ পাঠাদি। বিধিবদিতি। বিধিশ্চ বাচকে সভ্যাদে পুরাণপাঠস্তভোগীতাদি। তথা প্রতিযামঞ্চ নীরাঞ্চনাদি এভচ্চাদৌ জাগরণ প্রকরণে লিখিভমস্ত্যেব।। ১১৬।।

দাদশীদিন কৃত্যং লিথতি প্রাতরিত্যাদিনা বৈষ্ণবইত্যন্তেন। বিশেষতইতি পবিত্রাপণিংর্থং নিত্যপুঞ্জাংধিকতয়েতার্থঃ।। ১১৭ ।। ক্রমাদিতি ক্রোপ্তাদিক্রমেণ যতীনাঞ্চ কনিষ্ঠাদিক্রমেণ ইতি ক্রেয়ং।। ১১৮।। ক্রথ পরিবার দেবতানাং পূজাং ক্রয়া তানি তদর্থক্তানি পবিত্রাণি তেভাছ পরেং।। ১১৯।। ততন্তদনন্তরং ভগবতোমছাপুঞ্জাং ক্রয়া প্রভুং প্রার্থাছার্যাং।। ১২০।। কেনচি-ক্রেদােবেণ বল্ল কৃতং। আদিশন্দেন দেব দেব জগলাথেত্যাদি। তচ্চ পূর্বাং লিখিতমেব।। ১২০।। বিধিনা অ্যিসংক্ষারাদিপ্রকারেণ। নচীদাবেব লিখিতভান্তি। নিত্যহােমনির্বার্তনপূর্বাকং পবিত্রং মূলমন্ত্রেণ তব্যৈ সমর্পয়েও। তত্তক্ষ মন্ত্রহীনং ক্রিয়াহীনমিত্যাদি লিখিতপ্রসিদ্ধাবচনেন কৃতং কর্মা বর্বং কৃষ্ণে নিবেদয়েও।। ১২২।। একং পবিত্রং স্বয়ং যুদ্ধমানো ধারয়েও।। ১২০।। বন্ধু তিঃ

टेवक्कवः ॥ >२८॥

অথ পৰিত্ৰবিসৰ্জনবিধিঃ।। ভত্তে।। মাদৎপক্ষমহোরাতং ত্রিরাতং ধারয়ে ख्या। (मर्तिमार मृजममर्जर पम्मकानानुमात्रजः। अठ।इर मानकमापि मृजावू।खार्यः। कांतरप्रथ ।। अजिविकाशि जारमन भूनर्पाद निर्वप्रयूथ ।। ১২৫ ।। ज्योरम रायम-ভार्का विश्वासार भूष्प्राप्तिनः । रेनरविष्टः विविधर पञ्चा छरमृत्वस् विमर्द्धाः १ उँ माञ्चरमत्रीः खंडार शृकार मन्त्रामा विधियग्र । उटक्रमानी । शविक दर विकृ ला-कः विमिष्किं छ ।। ১২७ ।। यावटक्राव भविज्ञानि ভाविद्धि छ नमाहिकः । उ क्राहोती হবিষ্যাশী দেবপূঞ্জাপরায়ণঃ ।। তৎফলঞ্চেকেৎ বৌধায়নেন।। এবঞ্জুক্তে বিদ্ধান্ বর্ষে বর্ষে ন সংশয়ঃ। স যাতি পরমংস্থানং বত্র দেবোন্কেশরীতি ।। ১২৭।। অথ ত व मूथार शोनकान निर्नेषः ॥ मूथाकानमा देव कमा विद्रा छ। भागाना-विश केर्डवार भविजादाभनः अल्डाः ॥ ১২৮॥ उथा विकृत स्टमा ॥ आवनमा गिटलभटक कक्रवेटह मिवाक्दत । खामभागः वाम्रामवात्र भविजादताभागः मा छ ।।। সিৎহত্তে বা রবৌ কার্য্যুৎ কন্যামপি গভেইথবা। তদ্যামের ভিথৌ সম্যক্ ওলান্থে न कथकन् ।। ১২৯।। মন্ত্ৰতন্ত্ৰপ্ৰকাশে চ।। কৰ্ক টকং গতে সূৰ্য্যে তথা সিংহগতে পি বা। দ্বাদশ্যাং শুক্লপক্ষস্য হরেদ্দ্যাৎ পবিত্রক্ষ ।। ১৩০ ।। অথচেদ্বিযুপা-ভেন মুখ্যকালো ন লভ্যতে। কন্যাগতে২পি কুর্কীত যাবয়োভিঠতে হরি রিভি ৷৷ ১৩১৷৷

অথ ভাত্রকভাৎ। ভাত্রে ভগৰভোজন্দিনে কার্য্যোমহোৎসবং। বিশোষণ মহাপূজাং ব্রত পূর্ণেন বৈফবৈ:।।১৬২।।

অথ প্রীজন্ম উমীব্রতং ।। সর্বৈরবশ্যংকর্ব্যংজনা উমীব্রতংনরৈঃ। নিত্যছাৎ পাপহারিছাৎ সবার্থপ্রাপণাদপি ।। অথ গ্রীজনা উমীব্রতোৎপত্তিঃ ।। ভবিয্যেত্রে ।। শ্রীমুধি ঠিরউবাচ । জন্ম উমীব্রতংবুহি বিস্তরেণ মমাচ্যুত । কন্মিন্কালে
সমুৎপন্নৎ কিৎ পুণ্যং কোবিধিঃ মৃতঃ ।। ১৩৩।। শ্রীকৃষ্টবার্চ। হতে কংসাসুরে

সমং ভুঞ্জীত।। ১২৪॥

স্ত্রসন্দর্ভং প্রিত্রাণীভার্থ:। দেবসা স্নানাদিকর্মস্ত্রাণি ভোয়েনাভিষিচ্য তান্যের প্রোক্ষা । ১২৫॥ বিসর্জ্জনমন্ত্র:। ওঁ সায়ৎসরীমিত্যাদি ॥ ১২৬॥ যান্ত্র পরিত্রণি কিষ্ঠন্তীতি শেষঃ ॥ ১২৭॥ এতসা প্রারণগুক্লঘদশীলক্ষণস্য মুখ্যকালস্য ॥ ১২৮॥ তস্যাং দ্বাদশ্যামের ॥ ১২৯॥ কর্ক টকঃ কর্ক টরাশিঃ তংগতে ॥ ১৩০॥ প্রারণ্যাং পৌর্ণমাস্যাম্বিত্তপ্রক্র শাখাভেদাদিনা বছ্রিধং স্যাৎ ভচ্চ। পিগুদানং পিতৃণ্ঠে পিতৃপক্ষে ন বৈ কৃত্যা ব্রতং ন কার্ত্তিকে মাসি প্রারণ্যাম্বিত্রপ্রমি ত্যাদি বচনতো হকরণপ্রত্যবায়মধ্যে স্কান্দাদিবিধানাদ্বদ্যুপি নিত্যতাং লভেত তথাপি মহন্তিট্রেক্রবধর্শেদ্বসংগৃহীত্রাইদ্বেধানামাদরবিশেষাভাবেনাত্র বিব্রু ন লিখিতং ॥ ১৩১॥

ভগৰতো জন্মদিনং রোহিণ্য উমী আবণদাদশী চ তিন্মিন্।। ১৩২।। তত্ত্ব কিং পুণাং বিধিশ্চ কং॥ ১১৩॥ মে ময়ি বাৎসল্যাৎ। মে মামিতি বা প্রার্থেন অনুং।

দুটে মথুরায়াং যুধিষ্ঠির। দেবকা মাং পরিবৃদ্ধা রুত্বোৎসঙ্গে সংরোদ হ। তাত্রব बक्रवार है ना मक्षाबहा करना भारत। मलयूष्क श्रुवावृत्त मश्लका कू कू वाक्र किः। सक्र नि-ৰ্বছভিঃ সুিথৈতেষাৎ জ্ৰাভিঃ সমাবৃতা। বসুদেবোপি ভবৈৰ বাৎসল্যাৎ প্ৰহ্নৱোদ মে। সমাগম্য পরিষ্ক্তা পুত্র পুত্রেত্যুবাচ হ। স্যাদ্যদ্যদেষবোদীনোবাষ্পপর্য্যাকুলে-ক্ষণঃ। বলভত্রঞ্চ মাঞ্চৈব পরিষ্জ্যেদমক্রবীৎ। অদ্য মে সফলং জন্ম জীবিতঞ্চ সুজীবি-তং। যদুভাভ্যাং সুভাভ্যাংমে সমুভূতঃ সমানমঃ। এবৎ হর্ষেণ দম্পত্যোহ্য ইছিৎ সর্বাৎ छमा नृषा अनिभाव इसनाः मर्स्य मामृदूर् धार्मिकाः ।। अमः धार्मिक्याक्रमः क्वार्ञाकनार्कनः । जामा मलाक्रयुर्कन मुखेः क्रामिशाष्ट्रिः । এवः मरहार्मवर দৃষ্ট্বাসমাকে মধুসূদন। প্রসাদঃ ক্রিয়তামস্য লোকস্যান্যোপি শীঘুতঃ ।। যশিন্ मित्न श्रमृद्युक (मवको ज्ञार अनार्जन । किन्नर (महि रेवकूर्थ क्या रिख कव हिर नवং । সমাগ্ভক্তিপ্ৰপন্নানাং প্ৰসাদং কুরু কেশব। এবমুক্তে জনৌঘেন বসুদেবো-१পি বিশিতঃ । বিলোক্য বলভদ্রং তং সংপ্রহাটতনুরুহঃ ।। ১৩৪ ।। এবনন্তি তি লোকানাং কপয়স্ত্র যথাতথং। তত্তাতসমাদেশাক্ষয়। জন্মাইমীব্রতং। মথুরায়াং কনৌঘার পার্থ সম্প্রকাশিতং ৷৷ ১৩৫ ৷৷ পৌরাশ্চ ভজ্ঞদিনং বর্ষে গর্ভাইন গতে। পুনত্তনাউমীৎলোকাঃ কুর্বস্ত ত্রাহ্মণাদয়ঃ।। ক্ষতিয়াবৈশ্যঞ্জাতীয়াঃ শূদা यश्ता श्रि धिर्मि नः ॥ २०७ ॥ निः इत्रामित्र छ मृत्या तरात सन्तात्म । मानि ভাতপদে स्वेगाः क्रम्भाक्ष द्रावाक । नागाः वृष्द्रानिष्ट आवाभागां मः যুতে। বসুদেৰেন দেৰক্যামহং জাতো জনাঃ স্বয়ং । ১৩৭।। এবমেতৎ সমাথ্যাতং লোকে জন্মাউমীব্রতং। ভগবভ্যাশ্চ তত্তিৰ কুরুধ্ব সুমহোৎসবং। মথুরায়াং ভতঃ পশ্চালোকে খ্যাতিৎ গমিষ্যতি ॥ ২০৮॥ ইত্যাকর্ন্য যথাখ্যাতং তথালোকৈর-নুষ্ঠিত১। শান্তিরন্ত সুধ্ৎচান্ত লোকাঃসম্ভ নিরাময়াইতি ॥ ১৩৯॥ নিত্যত্বঞ্চ পর-স্তৰ্য ভগৰৎপ্ৰীণনান্মতং ৷ বিধিবাক্যবিশেষান্তাকরণে প্রত্যবায়তঃ ॥ ১৪০ ॥

হেতি পাঠে ক্রুটা। ১৩৪।। এবমজ্বীত্যাদি তাতসমাদেশাৎজনীঘায় জনসমূহং প্রতি প্রশানিতং সমাদিউং। পাঠান্তরে পূর্ব্বগৃঢ়ং দং ময়া হধুনা প্রকটিতং।। ১৩৫।। কথং তদাহ পৌরাজিতি গর্ভাদ্বলৈ বর্ষে গতে সতি অক্টবর্ষজারত্যেতার্থা। যথোক্তমেকাদশীব্রতাধিকারি নির্ণয়ে অক্টবর্ষাধিকোবালইত্যাদি।। ১৩৬।। হেজনাঃ স্বয়ং স্কেয়য় সম্পূর্ণতয়। বেতার্থাঃ। পাঠান্তরে তু তুইজনদংহারার্থমিত্যর্থা। ১৩৭।। ভগবত্যাঃ জ্রীদেবলাঃ। অতন্তত্তং সক্ষএর জগবং প্রকাবিধিঃ। বলা ক্রিক্লাদেবাাঃ প্রভাতে নবনীদিনে বথা মম তথা কার্য্যোভগবত্যা মহোৎসব ইতি বিধিকধনান্থোক্তোঃ।। ১৩৮।। এতদমূষ্ঠানেনচ সর্ব্বেষাং পরমন্থাং সর্বাভাগেরমান্তর্যাভিনাক্তাভিপ্রাধ্যেণ ব্রত্তকল্মাহ শান্তিরিতি। ১৩৯।। তল্য চ নিত্যতাং ত্রিধা লিখতি নিত্যত্বক্ষেতি। পরং কেবলং পরমং বা । জগবংপ্রীতিহেও জ্বরণেন বৈক্ষবানামবশ্যং ভক্ত্যাপ্রব্রেঃ। বিধিবাক্যবিশেষক্ষাত্র বর্ষে বর্ষেত্ত কর্ত্বব্যতি। তন্মাৎ প্রাব্রণয়েতি মুখ্যচাক্র মাশান্তি-প্রারেণ। এব্যপ্রেণি।। ১৪০।।

মথ জীজনাইমীরতনিত্যন্তং। তত্র জীতগৎপ্রাণনং বিধিশ্চ । ক্ষান্দে। প্রজ্ঞানাইমী শুভা। ক্ষায়া পরয়া বিক্ষোঃ প্রতিয়ে ক্ষাবল্পতা। কিঞ্চ। প্রজাপ্রতিষ্ঠিমী শুভা। ক্ষায়া পরয়া বিক্ষোঃ প্রতিয়ে ক্ষাবল্পতা। কিঞ্চ। প্রজাপ্রতিষ্ঠিমী বর্ষে বর্ষেত্র কর্ত্তরা ভ্রম্টার্থাই চক্রপাণিনঃ।। ক্ষাবাকরণপ্রতাবায়ে প্রথমংভোজনে প্রভাবায়ঃ। জীবিষ্ণুরহস্যে। ব্রহ্মনারদস্যাদে। শুভারেন তু যৎ পাপং শবহস্তত্মভোজনে। তং পাপং লভতে পুংভির্জয়ন্তাং ভোজনে কতে।। ১৪১ ।। গৃধুমাংসংখরং কাকং শোনং বা মুনিশ্রম । মাংসঞ্চ দ্বিপদাং ভুক্তং ভুক্তং জন্মানীমী দিনে।। ১৪২ ।। ক্ষান্টমীদিনে প্রাপ্তে যেন ভুক্তং বিজ্ঞান্তম। বৈলোক্যমন্তবং পাপেং ভুক্তমেবন সংশায়ঃ।। ১৪৩ ॥ কিঞ্চ ।। জয়ন্তীবাসরে প্রাপ্তে করোত্যুদরপূরণং। পীডাতে ভিল্পাত্রন্ত যমদূতৈঃ কলেবরং।। ১৪৪।। যোভুজ্তে চ বিমূঢ়ান্ত্রা জয়ন্তীবাসরে নূপ। ন ভস্য নরকোভারে। দ্বিশীং চ প্রকৃষ্ণতঃ ।। ১৪৫।। অতীতানাগতন্তেন কুলমেকোত্রং শতং। পাতিতং নরকে ঘোরে ভুঞ্জতা ক্ষ্যবাসরে।। ১৪৬ ।।

অথোপবাসপূর্বকপূজাবিশেষমহোৎসবাদিব্রতত্যাগপ্রত্যবায়ঃ।। তত্তিব।। যে ন কুর্মন্তি জানতঃ রক্ষজনাউমীব্রতং। তে ভবস্থি মহাপ্রাজ্ঞ ব্যালা মহতি কাননে ১৯৪৭। ব্রহ্মহত্যা সুরাপানং গোবধঃ স্ত্রীবধ্যেপিবা। ন লোকোমুনিশাদূল জয়ন্তীবি-মুথ স্যাচ। ১৪৮।। বর্ষে বর্ষে তুমা নারী রুক্ষজনাউমীব্রতং। ন করোতি মহাপ্রাজ্ঞ

বিক্ষাঃ প্রীতয়ে ইতি রুফবল্লভেতি স্তর্জ্যর্গং চক্রপাণিনঃ ইতি ভগবংপ্রীণনদ্বারা বর্ষে বর্ষে তুক্তব্যেতি বাপ্সাবিধিবাক্যদারা চ বসন্তে জ্যোতিষা যজেতেতিবদ্বীপ্সয়া নিত্যন্তং লিথিন্বা ইদানীমকরণপ্রত্যবায়দ্বারা নিত্যতাং লিথতি শূদ্রান্ত্রেনেত্যাদিনা চন্তর্দ্ধণেত্যন্তেন। তত্রচ প্রত্যান্থা দিখা ভোজনেন শক্তে পূজাদিমহোৎপবাকরণেন চ ঈদ্ধিধনিয়মএব ব্রতশব্দেনাভিধীয়তে। তত্রাদৌ পরমং নিক্ষ্যং ভোজনপ্রত্যবায়ং লিখতি,পুদ্রেতিষত্ভিঃ। শূদ্রস্যাবৈষ্ণব্দ্রান্ত্রের যদ্বা অনাপদি ব্রাহ্মণস্য তেন যৎ পাপং স্যাৎ। ১৪১।। জ্যান্তমীদিনে যেন ভুক্তং তস্য গূর্ধমাংসাদ্যভক্ষ্যভক্ষণপাপং স্যাদিত্যর্থঃ। ১৪২।। পাপমেব ভক্তং তন্দিনেহন্নস্য সর্ব্বপাপন্মর্থাৎ পাপফলোপভোগস্য সন্ধাঃ প্রত্যাসন্তর্ব্বা।। ১৪৩।। যং করোতি তস্য কলেবরং তিল্নাত্রং ভিলশঃ পীডাতে। তিলমাত্রমিত্যস্য পূর্বেশ্বের বাস্বয়ঃ। তিলমাত্রমণ্পমপ্যুদরপূর্বং যং করোতীত্যর্থঃ। ১৪৪।। অপ্যর্থে চকারঃ দ্বাদশীমপি প্রক্রুক্তঃ দ্বাদশীত্রতেনাপি জ্যান্তমী ব্রতোলম্বন্ধনমহাপর্ধানপ্রমাণ। ১৪৫।। কুফবাসরে প্রক্রক্ষক্রাদিনে।। ১৪৬।।

জানন্তঃ জানন্তোহপীত্যজ্ঞানেনাকরণাৎ পাপমপ্শমিতাভিপ্রেতং। বছা। জ্ঞানবস্তোপি ব্যালা ভবন্তীত্যর্থং। ব্রতমিত্যনেন যদ্যপ্যভোজনং পূজামহোৎদবাদিকমিপি দর্কাং গৃহতে তথা-পাত্র ভোজনাদিশন্ধাভাবাৎ পূজাদিমহোৎদবপরমেব তদ্যাহাং এবমগ্রেপ্যহাং॥ ১৪৭॥ তদু ত বিমুখন্চ ব্রহ্মত্বং স্বাপন্চ। তদ্য গোবধংস্ত্রীবধোপি জাতং। পাঠান্তরং স্থামং। অতোলোকং ঐহিকামুগ্রিকস্বধং দর্কমেব ন ভবতীত্যর্থং॥ ১৪৮॥ সভর্জ্কাপি যোষিৎ কুর্য্যাদিতি লিথতি বালী ভবতি কাননে ।। ১৪৯ ।। আবণে বছলে পালে ক্ষজনাক্ষনাত্তং । ন করোভিনরোয়ন্ত সভবেৎ ক্রুরাক্ষনং ।। আবণে বহুলে পালে ন করোভি যদাইনীং ।
ক্রোরাধাং ক্রুরমুখা হিৎসন্তি ষমকিক্ষরাং ।। ন করোভি যদা বিফোর্জ্যুদীসম্ভবৎ
ব্রতং ৷ যমস্য বশমাপন্নং সহতে নারকীং ব্যথাং ।। কিঞ্চ ।। তত্ত্বৈ ।। ক্ষজনাইমীৎত্যক্ত্বা যোহনাত্রতমুপাসতে ৷ নাগ্গোতি সুক্তৎ কিঞ্চিদ্ইৎ ভাতমথাপিরা ।। কিঞ্চ ।। ভাষ্ট্যর্থং দেবকীসূনোর্জয়ন্তীসন্তবং ব্রতং ৷ কর্ত্ব্যং বিভ্নানেন
ভক্ত্যা ভক্তকনৈরপি ।। অকুর্বন্ যাভি নিরয়ং যাবিদ্যুশ্চভর্দনা ।। ১৫০ ।।

অথ শীমজ্জনাউমীনাহাত্মাৎ ।। ভবিষ্যোগ্রের শীর্ষণ্যুধিষ্ঠিরসম্বাদে জগানিক ত্বৰধনে। একেনৈবোপবাসেন ক্তেন কুরুনন্দন। সপ্তজ্মরতাৎ পাপাৎ মুচ্যতে নাজ সংশক্ষঃ।। পুত্রসপ্তানমারোগ্যং সৌভাগ্যমন্তলং লভেৎ। সত্যধর্মনরভাভূত্বা মৃতোবৈকুঠমাপুরাৎ ।। তত্র নিত্যং বিমানেন বর্ষলক্ষৎ যুথিষ্ঠির। ভোগানানাবিধান্ ভুক্তা পুণ্যমোদিহাগতঃ।। সর্বকামসমূদ্ধে ভু সর্বাসুথবিব জির্ভিতে। সর্বধ্যা যুতে পার্থ সর্বগার্কুলসংকুলো।। তল্মিরান্ট্রে প্রভুভু ড্কে দীর্ঘায়ুর্মনসেপ্রিভান্। ভোগানত্তে চ পরমং পদং যাত্যপুনর্ভবং।। তৎকুলে নপবিখ্যাভারতে হামরক্ষমাঃ।। যাক্ষিন্ সদৈব দেশে তু লিখিতৎ বাপি চর্চিতং। মম জন্মদিনং পুণ্যৎ সর্বালক্ষার শোভিতং। পুক্ততে পাগুবত্রেষ্ঠ জনৈক্ষংস্বসংযুতং।১৫১। পরচক্রভম্নত্তর ন কদাচিত্রবত্যত। পর্জন্যঃ কামন্বর্ষী স্যাদীভিভ্যোন ভয়ংভবেৎ।। ১৫২ ।। গৃহে বা পূজাতে যাক্ষিন্ দেবক্যাশ্চরিতৎ মম। তত্র সর্বসমৃদ্ধিঃ দ্যামোপ্রগাদিকৎ ভয়ং।। পাশুকোনকুলাদ্যালাৎ পাপরোগান্ত পাত্রকাৎ। রাজত্বেচীরতেবািশি ন কদাচিত্রয়ং ভবেৎ।। ১৫৩ ।। কিঞ্চ।। যাক্ষিন্ গৃহে পাগুপুত্র লিখ্য-তে দেবকীব্রত্থ । ন ভত্র মূত্রিকি গর্ভপভনং তথা। নচ ব্যাধিভয়ং তত্র ভবে-

বর্ষে বর্ষে ত্বিতি। অরং শ্লোকঃ কৃচিন্ন তিঠেদপি॥ ১৪৯॥ বিস্তুশাঠ্যেনৈতি পাঠে অপ্পবিস্তব্যয়েন নাপি কর্জব্যং নম্ভ বিস্তব্যয়ন্তরাৎ ত্যক্তব্যমিত্যর্থঃ। বিস্তুমানেনেতি পাঠে ত ধনাত্মগারেণেত্যর্থঃ। ভক্তক্সনৈর্দ্ধিক্ষমবৈক্ষবৈরপি ভক্তা। কর্জব্যমেব॥ ১৫•॥

লিখিতং তত্ত্বসূর্ত্ত্যাদি চিত্রপেন পটাদাবক্ষিতঞ্চিতং চন্দ্রমূর্ত্তিকং নং। যথা পৃস্তবৈলিখিতং বর্ণময়ত্বেন চচ্চিতং পটাদিষু চিত্রিতং বাপীত্যর্থ:।। ১৫১।। ঈতয়শোক্তাঃ। অভিবৃত্তিরনার্টিঃ শলভামবিকাঃ থগাঃ। প্রত্যানমান্দ রাজানঃ বডেতে ঈতয়ঃ স্মৃতাঃ ইতি।। ১৫২।।
দেবক্যা সম চরিতং তথৈব লিখিতং অল্পদিন্ত্তাং। উপসর্গাবিবিধোপদ্রবা আদিশন্দাং নরকাদি
তক্রপং ভয়ং। উপসর্গাদিজমিতি বা পাঠঃ। উপসর্গানেবাভিব্যপ্তরত পশুতইত্যাদি॥ ১৫৩॥
দেবকীব্রতমিতি: আত্মনা দহ ভসাত্রভেদভিপ্রায়েণ। মন্ত্রা ওপ্রপাং কলবপং মজ্জুস্বদিনব্রক্ত্রমিত্রর্থঃ। পাঠান্তরং স্থগমং। স্ত্নিক্কান্তির্নভবতি কিন্তু জীব্রেব গর্ভাৎ নিক্কামতীত্যর্থঃ।

मिछि मर्छः मेम । न देवथवाः न दर्शार्धाशाः न मह कंनदर्शाः हा ।। ३६८ ।। मण्यार्किशाः যঃ কুৰ্য্যাৎ কল্ডিজনাউমীত্ৰতং। বিস্ফুলোকখৰাপোতি সোপি পাৰ্থ ন সংশয়ঃ। ।। ১৫৫।। क्यांकेमीनर्कक्तारमवाष्ट्रा भाभाभहा मगिन निम्कनन्तरांभा। या-দেবকীং সদ্য়িতাং যঞ্জীত ভস্যাৎ পুত্ৰানখাপ্য সমুপৈতি গদ্ৎ দ ৰিফোট !!১৫৬!! विक्षर्था। (दाहिनीह यम क्ष्म्भाक्ष्मे क्ष्मा दिखां क्या व्यवही नाम ना (क्षांखा দর্বাপাপছর। ডিখিঃ।। যদ্বাল্যে মচ কৌশারে যৌকনে বার্দ্ধকেপি যথ। সপ্তজন্ম হৃতং পাপং ৰূপেয়া হদিবা ষ্চ্ । তৎ কালয়তি গোৰিন্দং তন্যাৰভাৰ্চ্য ভব্তিতঃ ।। ১৫৭।। হোমযজ্ঞাদিদানাশাৎ ফলফ শতসন্মিতং। সংপ্রাপ্রোভিন সন্দেহো যজা-ন্যৎ মনদেপ্লিভং । উপৰাসক্ত তত্ত্ৰোক্তো মহাপাতকনাশনঃ ।। বিষ্ণুরহক্যে ।। জয়ন্ত্যামুপৰাসন্ত কৃত্বা যোহৰ্জয়তে হরিং। তস্য জ্মশতোভূতং পাপৎ নশ্যতি मर्का । को भारत योवत्न वारम । वार्काक यमू भाषिकं छ । छ । भाभ भारत र रूष-खिथावन ११ गुश्किष्ठः ।। भान मान छथा होमः बाधा त्रार्थ कशख्याः। नर्वः শতশুণং প্রেক্তিম জয়ন্ত্রাংয়ৎ কৃত্ম হয়ে।। ধনধান্যবহা পুণ্যা সর্বাপাপহরা শুভা। সমুপোষ্যা নরৈর্ঘতাজ্জয়ভী রুক্তজিলা।। ব্রহ্মপুরাণে পূর্বথতে জনাউমীমা-হাত্মে শ্ৰীসূতোকোঁ। যাতু কৃঞাউদী নাম বিশ্ৰুতা বৈশ্বী তিথিং। তস্যাং প্ৰভাৰ মাশ্রিত্যপূতাঃ সর্কোকলো জনাঃ। আবণে মাসি বছল। রোহিণীসংযুতাইনী। জয়ন্তাতি সমাখ্যাতা সর্বাধৌঘবিদাশিদী ৷ তস্যাৎ বিশ্বতিখোঁ কেচিজন্যাঃ কলিযুগে জনাঃ। বে২ভার্কয়তি দেবেশং লাগ্রতঃ সমুপোবিতাঃ। ন তেষাং বিদ্যতে কুংপি সংসারভয়মুল্ণং । যত্র ভিঠন্তিতে দেশে কলিন্তত্র ন তিঠতি । তত্রৈব জীশুক জনমেজয় সম্বাদে ।। খএৰ ভগবান্ বিষ্ণু দৈবক্যাৎ বসুদেবতঃ । জাতঃ कः नवधार्थः हि ए जिनः अञ्चलविषः । य। न। खेठे अस्यायां वि खावल वर्णाके भी। সঙ্গতা রোহিণ্যক্ষেণ নৃণাংশু জিফলপ্রাদা। থস্যাং পনাতনঃ সাক্ষাৎ পুরাণঃপুরুষো-ন্তমঃ। অবতীৰ্ণ ক্লিতৌ সৈধা মুক্তিদেতি কিমন্তুত্ব। ভৱৈবাত্তা ব্ৰভবিধিকখনে।। ইদমেব পারংশ্রের ইদমেব পারগুপাঃ। ইদমেব পরোধ্যের যদিফুর তথারণং।। ক্ষান্দে ব্ৰহ্মনারদসমাদে ।। কৃষ্ণসন্মান্তমী লোকে প্রসিদ্ধা পাপনানিনা হৈ তকোটি সমা-জেষা ভীৰ্যাযুত্শতৈঃ সমাঃ। কপিলাগোসভুসন্ত যো দদাতি দিনে দিনে। তৎ ফলং সমবাপোতি জয়ন্ত্যাৎ শমুপোষণে। হেমভাদসহস্তু কুরুক্ষেত্রে প্রয়ন্ত্তি। তৎফ-লং সমবাপোতি জয়ন্ত্যাং সমুপোষণে। রত্নকোটিসহস্যুণি যোদদাতি ছিজেতিম।

গর্জন্য পতনং সাবন্ধ ন ভবতি।। ১৫৪।। সম্পর্কেণ প্রসঞ্জোপি কেনচিৎ।। ১৫৫।। সদরিতাং শ্রীবস্থদেবযুক্তাং।। ১৫৬।। কৌমারমত্র পৌগণ্ডং কৈশোরঞ্জন্মিন্। এবস্বপ্রেছ্পূর্ছং।। ১৫৭।। শ্রোয় ঐত্কাসুত্রিকস্থাং।। তপঃ স্বধর্মাচরণং কুজুদিবা। ধর্মোযজ্ঞাদিলং পুণাং ভক্তিলক্ষণা

छ एक तः नमें वार्त्वाछ का बार नमूर्तिका । वानीकृत नक्ना नि स्वकां ब्रज्यानि ह। कन्याकां विभागतन यश्कनः कवि जिःमृतः ।। मार्जाभित्वां विवाक छिन् मू-बर्ठाः कनः ॥ ১৫৮॥ धर्वार्थ जाक्कनार्थ वा सागार्थ वा छात्मछन्। भारतार्थ-কারযুক্তানাৎ তীর্থদেবারতান্ধনাং। সত্যব্রতানাং যৎপুণ্যং ক্ষয়ন্ত্যাং সমুপোষণে। নিরাশ্রেষু বসভাৎ তাপদানাম্ভ যৎফলং। রাজসূয়সহসূেষ্ শতবর্ষায়িহোতভঃ।। अस्किरेनरविश्वितात्रन सम्रस्ता ७९कन्यम् ७९ । इस्ता त्रासार महीर चुक्ता श्वाभा कोर्लिक नायठीः। क्यासारकानवारमन विरकाम् एकी नम्र गजाः ॥ धर्मामर्थकः कामक मुक्तिक मूनिপুঙ্গ । দদাভি বাঞ্ছিতান্কামান্ আবণে মাসি চাউমী। জনা-कैभी अ ७५ रष रेवे श्रक्ति विद्यार्थ मार ।। कात्र मुखि ह विश्विन्तु न क्योरिख या ५ नहा স্থিরা।। ন বেদৈ র্ন পুরাবৈশ্চ ময়া দৃষ্টং মহামুনে। খৎসমঞাধিকং বাপি কৃষ্ণজন্মা-ই নীব্রতা থা ১৫৯। নিয়মস্থ নরং দৃষ্ট্র জন্মাইম্যাং দিজোভ্ম। বিবর্ণদনে:-ভূষা তল্লিপিং মার্জ্জেদ্যমঃ।। ১৬. ।। কিঞা ব্রতেনারাধ্য তং দেবং দেবকীসহি-তৎ হরিৎ। ত্যক্ত্রা যমপথৎ ঘোরৎ যাতি বিফোঃ পরং পদং। স্মরণৎ বাসুদেবস্ত মৃত্যকালে ভবেশুনে । সিদ্ধ্যন্তি সর্বাকার্য্যাণি কৃতে জনাইনীব্রতে ।। মনাজ্যা कूक्ष् छज्ज्यस्थी मूल्या उथा।। बन्धाए श्रीमृत्वाक्षी ह छत्रु वसहिमानु वर्गनात्त्र।। ইত্যেত্ৎ কথিতমশেষশাস্তঞ্চ্যং শ্ৰীকৃষ্ণবুতমহিমানুবৰ্নং যথ। শ্ৰুত্তিৎ সক্দপি পাতকৈর্বিমুক্তো দেহান্তে বুজতি নরোম ুরারিলোকং ।। ১৬১।।

व्यथ बीकवासमीतुर्वनिर्वत्रः ।। कृष्कानाम्यासमी चाट्य द्वादिन्यां । महा

বা॥ ১৫৮॥ শুর্বাদ্যর্থে যস্তম্বং তাজেৎ তদ্য যৎপুণ্যং স্যাদিত্যর্থঃ। জয়স্ত্যাং সম্প্রপোষণে উপবাদে সতি তৎ স্যাদিতি শেষঃ। তত্তপোষণইতি বা পাঠঃ॥ ১৫৯॥ তদ্য লিপিং পাপাদি । লিখনং॥ ১৬০॥ তদ্ব তাচরণমাহাত্মাং কিং লেখ্যং তচ্চুবণাদিপি পরম্পদমিতি পুনর্ত্র ক্ষাণ্ড-পুরাণবচনং লিখতিইতীভি॥ ১৬১॥

ভাজে মাসি কৃষ্ণান্তমী উপোষ্যা সাচ রোহিণীনক্ষত্রেণ যুতা সতী মহাফলা। কেবলান্টম্য প্রাসতা রোহিণীযুতান্টম্য প্রবাদে কলাভিশয়োভবতীত্যর্থঃ। এবময়ং পূর্ব্ধভোহপবাদঃ। পূর্ব্ধ-বিদ্ধে রোহিণীযুক্তায়া অন্টম্যারিক্ষায়াঃ সত্যাঃ তথা শুক্ষায়াঅপি সত্যাঃ পর দিনে বুধবারাদিয়োগ প্রালভাগি প্রক্রাপরিভ্যক্তারাৎ। অতেনরোহিনীযোগে ফলবিশেষএব তাৎপর্যাঃ। অতএব লিখিতং মহাফলেভিএবমগ্রেপিজ্যেং। অত্র রোহিণীযোগেপি নিশীথে অর্দ্ধরাত্রে অন্টমী মহাফলা। কি-ক্ষেতি পূর্ব্বসমুক্তয়ে। ইন্দে সোমবারে জ্রে বুধবারে বা নিশীথে রোহিণ্যাত্যান্টমী যদা ভবতি তদা মহাফলেত্যর্থঃ। অত্র চ ব্রভদ্ধে দাহরণং ক্রন্টবাং। যদ্যপি ভক্ষিন্ বচনে নিশীথযোগোন শ্রুরতে ভ্রমণি কিং পুনর্বমীযুক্তেভ্যাদি কৈমুভিক্র্যায়েন পৃথগুক্তেনিশীধ্যোগে ব্রভাপেক্ষয়া ভিদ্দিন ব্রতে সতি পরদিনভিথিনক্ষত্রহৃদ্ধিসম্ভবাং ভিথিভান্তে চ পারণমিত্যস্যাবকাশঃ স্যাৎ। ভচ্চাগ্রে পারণলিখনেব্যক্তং ভাবি। অপিশক্ষেপি পূর্ব্বসমুক্তয়ে সোনে বুধে বা রোহিণ্যান্টমীযুক্তা

ফল। নিশাথেইতাপি কিঞ্চেন্দে জে বাপি নবনাযুতা ।। ১৬২।। ভত্ত রোহিণীযুক্তা विस्पृत्रहरिता। প্রাঞ্গণত । क्रिन्यूका कृष्ण नजिन , हास्त्रेमी । मूह्र्स्मिन नएज । रेमरवारभाषा। महाकन। ॥ ১৬৩ ॥ मूहूर्डमभारहाद्वारक यमिन् यूकु न छारक। অউম্যা রোহিণী ঋকং তাং সুপুণ্যামুপাবসেৎ ॥১৬৪॥ কিঞ্চ। ভতৈব। অউমী রুক্ত-পক্ষ সং রোহিণী ঋক সংযুতা। ভবেৎ প্রেষ্ঠ পদে মাসি জয়ন্তী নাম সা স্তা।। ১৬৫।। বিষ্পুধর্মোভরে।। রোহিণ্ডকং যদা কৃষ্ণ পকেংউম্যাৎ দিকোভন। জয়ন্তী নাম সা প্রোক্ত। সর্বাপাপহরা তিথিং। ঘদালের হচ কৌমারে হৌবনে বার্দ্ধকে তথা। বছজ-. ম রুতৎ পাপং হস্তি দোপোষিতা তিথিং।। ক্ষান্দে। প্রাঞ্চাপত্যেন সংযুক্তা অইমী পুষদা ভবেং। আবণে বছলে পক্ষে নর্বপোপপ্রণাশিনী।। জয়ং পুণ্যঞ্চ কুরুতে क्ये स्त्री ९ एवन जार विष्टुः ।। विष्टुभू ताता। कृष्णकियाः ভবেम्यक करेनका द्वारिनो ন্প। জয়তী নাম সাজেয়াউপোষ্যা সাপ্রযুক্তঃ।। সপ্তর্গুক্তং পাপং রাজন্ যশিবিধং নৃণাং ৷ তৎ কালয়তি গোবিন্দন্তিখৌ তস্যান্ত ভাবিতঃ ৷৷ ১৬৬ ৷৷ উপ-বাসশ্চ তত্রোক্তো মহাপাতকনাশনঃ। জয়ন্ত্যাং জগতীপাল বিধিনাত ন সংশয়ঃ।। ১৬१।। ত্রেভায়াং দাপেরে চৈব রাজন্কভযুগে ভথা। রোহিণীসংযুভা চেয়**ং বিদ্বভিঃ** সমুপোষিতা।। অলিপুরাণে।। অর্জরাত্রাদধশ্চের্জুং কলয়া বা যদা ভবেৎ। জন্তী নাম সা প্রোক্তা সর্বপাপপ্রণাশিনী ।। অধ্রে তেমুতা ভবিষ্যবিষ্ণুধর্ময়োঃ।। রোহিণ্যামর্করাত্রে চ যদা রঞ্চাইটমা ভবেং। তস্যামভার্চনং শৌরেইন্ডি পুণ্যং ত্রি-জনজ।। প্রাজাপতার্ক্রণংযুক্তা কৃষ্ণা নভিসি চাইনা।। সোপবাসোহরেঃ পূজাং

চেন্দ্রবভি তদা চ মহাকলেত্যর্থ:। অত্রচ যদ্যপি রাত্রিশেষে নবমীযোগে সতি নিশীথযোগেপি ঘটতে তথাপি উদয়ে চাউমী কিঞ্জিনবমী সকলা যদি ইতি বচনাপেক্ষয়া নিশীথযোগেছত্র ন প্রায়েণাদরণীয়:। যদি চ কদাচিন্নিশীথে তগুদেষাগোর্গুঃ নবমীচ রাত্রিশেষে স্যান্তদা সংযোগ বিশেষোমস্তব্যঃ যতঃ কেয়াঞ্জিয়তে কিঞ্জিদউমীর্ক্ষৌ রোহিণ্যাং সত্যাং নবমীদনএব তগুদ্ধারা-যোগে তগুদ্ধনবলাত্মহাকলতাবগম্যতে লান্যত্রেতি। তচ্চ তিথিভাস্তে চ পারণমিত্যস্যান্বকাশারাদরণীয়মিতি দিক্। এতচাশেষমগ্রে লেখ্য তত্ত্বচনতঃ সবিশেষং ব্যক্তং ভাবি॥ ১৬২॥ জন্মাইমীদিনে প্রাপ্তে যেন ভুক্তমিত্যেত্ব তথা যে ন কুর্বন্তি জানস্তইত্যাদীনি চ নিত্যতা লিখনে প্রবাং লিখিতানি বচনান্যের কেবলভাক্রফাইম্যুপবাসোদাহরণানি বর্তম্বত্র ইদানীং রোহিণ্যাদিযোগবচনাত্মদাহরণত্বেন লিখতি প্রাজাপত্যেত্যাদিনা বিশেষতইত্যন্তেন । নভাবিশাবে।। ১৬০॥ অইম্যা যুক্তং॥ ১৬৪॥ কিঞ্চ। যা চ রোহিণীযুক্তা সা জয়ন্তী নাম। সৈবোপ-বাসাদৌ মহাকলেত্যভিপ্রায়েণ লিখতি অইমীত্যাদি সার্দ্ধাইকেন। প্রৌষ্ঠপদে ভালে।। ১৬০॥ বিথাকাদিভেদেন বা।ভাবিতঃ প্রজ্ঞান্তংখ্যাতোপিবা।১৬৬। বিথিনা উপবাদঃ॥ ১৬৭॥ নস্বেইম্যা রোহিণীযোগঃ কদা গ্রাহঃ ইত্যপেক্ষায়াং লিখতি আর্দ্ধতি। ব্যাহণ ত্রেপি কার্মাং লিখতি আর্দ্ধি।

ভত্র কৃত্যান সীদতি। অর্জরাত্তে চ যোগোইরং তারাপত্যুদ্ধে সতি ।। কিঞা। রোহিণী महिला क्रका मानि छाज्ञ शास्त्रकेमी। व्यक्त बाजामश्राम्छार्द्धा कन्यांशि यमा छत्वर ।। তত্র জাতোজগরাথঃ কৌন্তভী হরিরবায়ঃ ৷ তমেবোপবসেৎকালং কুর্য্যাৎ তত্তিব জাগরং।। জয়ন্তা নাম সা রাত্রা তত্ত জাতোজনার্দ্রনঃ। নিয়তাত্মা শুচিঃ স্বাত্বা পূজাৎ তত্র প্রবর্ত্তরে ।। ১৬৮।। বৃদ্ধিরাণে।। সমযোগে তুরোহিণ্যা নিশাথে রাজ मख्य । সমজায়ত গোবিকো বালকপী চত্তভুক:।। তन्या छ १ পূজ্ঞ য়েত্ত যথাবিভানু-সারতঃ।। ভবিষ্যোত্তরে।। মাসি ভাত্রপদেইউম্যাং ক্ষপক্ষেইজ্রাত্রকে। শশাঙ্কে ব্ষরাশিষে প্রাজাপত। জ্বংযুতে।। উপোষিতোইছ্রেৎ রুষণ্ যশোদাং দেবকী-, ख्था।। किश्रः। मानि ভाजभाष्ट्रक्रेमा निर्मात्य क्षभक्त । भगात्क वृषद्राभि-স্থেকে রোহিণীস\জকে। যোগেংস্মিন্ বসুদেবাদ্ধি দেবী দেবমঞ্জিন ।। ভস্মাৎ সংপূদ্ধেদত্র শুচিঃ সম্যশ্রপোষিতঃ ॥ ১৬৯।। পাছে॥ প্রেত্যোনিং গতানাম্ভ প্রেতত্বৎ নাশিতং নরৈ: ৷ যৈ: ক্তা আবণে মাসি অইমী রোহিণীযুতা ৷৷ কিৎ পুন-वू विवादित भारमनाशि विस्मविष्टः। किश्यूनन्वभीयुक्त। कूलाका है। श्रुक्तिमा ।। क्कात्मः।। উपरात्र ठाकियो किश्वित्रयमो मकला यपि । ভবতে वृथमः युकाश्वाकाशकाशका সংযুতা। অপি বর্ষশতেনাশি লভ্যতেবানবাবিভো।ছিবিয়েচ। নবম্যাং যোগনি ভায়াঃ জ্যাফীম্যাৎ হরেন্তভঃ। নবম্যা সহিতোপোষ্যা রোহিণী বুধসংযু-তেতি।। ইন্দুঃ পূর্বেহনি জ্ঞেব। পরে চেদ্রোহিণীযুতা। কেবলা চাইমী বৃদ্ধা সোপোষ্যা नवमीयुका।। छशाह शास्त्र ।। मुङ्खिनाशि मध्युको नम्शूनी हास्त्रमी छरवर । किः शून-ৰ্বমী যুক্তা কুলকোট্যান্ত মুক্তিদা।। সূভোক্তোচ।। মাসি ভাতপদে রক্ষা অইমী নবমী ভবেৎ ৷ পূজ্যাইমা ভভঃ পুডিঃ স্ত্রীভিশ্চাপি বিশেষ্তঃ ৷৷ ১৭০ ৷৷ রোহিণ্যা-दिवियुक्ति (मालाया किवलास्मा। एखल्याग्रंख विभिक्ति। उल्लालाङ्गा ভবেৎ ।। ১৭১ ।। ইতাং শুদ্ধৈব লিখিতা যোগাদ্বন্থ বিধাইনী। ভ্যাক্যা বিদ্ধা চ

পর্যাৎ নত্বর্দ্ধরাত্রে। তথা বিবক্ষায়াঞ্চায়ং স্লোকোইর্দ্ধরাত্রবোগপ্রকরণে দ্রন্টবাঃ ॥ ১৬৮ ॥ সমবোগইতি নিশীথমাত্রবাপিনী রোহিণীচাইনীচেতি বোধয়তি। অতএব শুদ্ধেতি পর্যাবস্যাতি॥ ১৬৯ ॥ লভ্যতে বা নবেতি পরমদৌর্লভ্যোক্ত্যাইস্য বোগস্য মহামহিমাভিপ্রেতঃ॥১৭০॥
নক্ষেবং রোহিণার্দ্ধরাত্রাদিযোগাপেক্ষয়া কদাচিদ্বিদ্ধোপবাসপ্রসক্ষঃ স্যাৎ তথা তত্তদেবাগাভাবে ব্রতলোপপ্রসক্ষোপি ভবেৎ তচ্চায়ুক্তং অগ্রে বিদ্ধাবর্জ্জনাৎ। তথা ব্রত্তস্য নিত্যত্বাচ্চ ॥
সভ্যং তত্তদেবাগক্ষ কলবিশেষার্থএব জ্রেবঃ নন্ধ ব্রতেহ্বশামপেক্ষণীয়ঃ অভন্তদেবাগাভাবেপি কেবলাইন্যামের ব্রতং বিধেয়মিতি লিখতি রোহিণ্যাদীতি। আদিশন্দেন অর্দ্ধরাত্রনবম্যাদি। সা ভাদ্রমাসস্য কৃষ্ণপক্ষীয়া বিশিক্তনিমিক্তে কলবিশেষার্থমেবেত্যর্থঃ। এবঞ্চ
রোহিণ্যর্দ্ধরাত্রাদিযোগানাসবশ্যাপেক্ষত্বাভাবাদ্বিদ্ধাবর্জ্জনমপি নিদ্ধমের ॥ ১৭১॥ এতদেবান্তিব্যঞ্জয়ন বিদ্ধাব্রতং ত্যাক্ষমতি ইপ্রমিতি। যোগাদিতি রোহিণ্যাদিযোগভেদেন বছবিধাপি ক্ষমা-

मध्या माविकिकामणी यथा ॥ ১५२ ॥

অথ সপ্তমীবিজ্ঞ লাউমীব্রতনিষ্ধেঃ ।। ব্রহ্মবৈবর্ত্তে ।। বর্জনীয়। প্রয়ত্ত্বের সপ্তমীসহিতাই মী। সঞ্চাপি ন কর্ত্ব্যা সপ্তমীসংযুতাই মী। পাছে। পঞ্চাব্যং মধ্যসংযুতং। রবিবিজ্ঞাতথা ত্যাজ্যা রোহিণীসহিতা ইদিয়া ২০০। পূর্ববিদ্ধা হথা নন্দা বিজ্ঞাতা শ্রবাস্থিতা। তথাই মীৎ পূর্ববিদ্ধাং সঞ্চলাঞ্চ বিব্দুর্ভার ।। বর্জ্ঞনীয়া প্রয়ত্ত্বন সপ্তমীসংযুতাই মী। বিনা ঋষ্ণেণ কর্ত্ব্যা নবমীসংযুতাই মী। অবিদ্ধায়াং সক্ষলায়াং জাতোদেবকিনন্দনঃ। বাসরে বা নিশার্চ্চে বা সপ্তমাঞ্চ যদাই মী। পূর্ববিদ্ধাং সক্ষলায়াং জাতোদেবকিনন্দনঃ। বাসরে বা নিশার্চ্চে বা সপ্তমাঞ্চ যদাই মী। পূর্ববিদ্ধাং সক্ষলায় সি। বিহায় নবমীৎ শুদ্ধার্থা স্থামিতা তদা ত্যাজ্যা প্রাজাপত্যক্ষ্ণংযুতা। ১৭৫1 পাছে । কলাপি সঞ্চলাপি নবমীসংযুতাপিচ। জলাই মী পূর্ববিদ্ধান কর্ত্ব্যা কদাচন ।। পলবেধেত বিপ্রেন্দু সপ্তম্যা চাই মীং ত্যজেহ। সুরায়া বিন্দুনা স্পৃত্তীং গঙ্গান্তংকলসং হথা ।। বিনা ঋজেণ কর্ত্ব্যা নবমী সংযুতাই মী সঞ্চলাপি ন কর্ত্ব্যা সপ্তমীসংযুতাই মী। ১৭৬।। তলাহে সর্বপ্রয়েন ত্যাজ্যমেবান্ডভং বুবৈঃ। বেধে পুণাক্ষরং যাতি তমং সূর্য্যাদরে হথা। ১৭৭।। যাত্তবন্ধ্য লাতা।। সম্পূর্ণ চিছরাত্রেত্ব রোহিণী হদি লভ্যতে। কর্ত্ব্যা সা প্রয়ত্ত্বন পূর্ববিদ্ধাং বিবর্জ্জরেদিতি।।হচ্চ বন্ধি-

ফিনীয়ং শুটারাব সপ্তানীবেধবার্কিটিতব লিখিতা নত্ত রোহিণ্যাদিযোগাপেক্ষয়। বিদ্ধেত্যর্থঃ এ অতো বিশুদ্ধায়ামের সত্যাং তত্তদ্বোগ আদরণীয়ঃ নত্ত বিদ্ধায়ামিতি ভাবঃ ॥ যতোবিদ্ধা সর্ববৈধব ত্যাক্ষ্যেতি। সা জন্মাফিমী চ সপ্তম্যাবিদ্ধা সভী ত্যাইদ্বাব। তত্র বৈশ্ববানাং সর্বাথা সর্বাত্ত বিদ্ধান্ত্যাগং দুন্তীন্তেন স্মারয়তি বিদ্ধেতি। এতকৈচনাদশীপ্রকরণে স্পাফং লিখিতমেব॥ ১৭২॥

রবিঃ সপ্তমী। যদ্যপি রোহিণীসহিতা॥ ১৭৩॥ নন্দা একাদশী শ্রবণান্থিতাপি। অত্রচ যথাশন্দবলাৎ কেচিদেবং মন্যন্তে। অরুণোদরে দশ্ম্যা বিদ্ধা যথৈকাদশী বিজ্ঞিতা তথা অরুণোদরে সপ্তমাবিদ্ধা জন্মইয়াপি ত্যাজ্ঞা। অত্যেরোহিণীং বিনাপি নবম্যেবোপোষ্যা। অত্যে-বোক্তং স্কান্দে। জন্মইমীং পূর্ববিদ্ধাং সক্ষান্ধাণি। বিহার শুদ্ধাং নবমীমুপোষ্য ব্রতমাচরেদিত্যাদি। অনেনাভিপ্রায়েশৈব পাছ্ম স্কান্দাদৌ নবমীয়তাপীতি অইমু।পবাসম্য প্রাশস্ত্য মুক্তমিতি তচ্চ ন স্বস্কতং । একাদশীতরাশেষ তিথীনাং রব্যুদয়তঃ প্রবৃত্তানামের সম্পূর্মব্তেনায়্যণাদয়বেধ।সিদ্ধাঃ। তচ্চ পূর্বাং সম্পূর্ণালক্ষণে লিখিতমেব । ১৭৪।। অপ্যর্থে চকারঃ। স্বাক্ষাং রোহিণীসহিত্যমপি ॥ ১৭৫ ॥ প্রাজ্ঞাপত্যক্ষণংযুতাপি নবমীসংযুতাপীতি অইমীক্ষাভিপ্রায়েণ ॥ ১৭৫ ॥ প্রজ্ঞাপত্যক্ষণংযুতাপি নবমীসংযুতাপীতি অইমীক্ষাভিপ্রায়েণ ॥ ১৭৬ ॥ অশুভং বেধলক্ষণং ॥ ১৭৭ ॥ এবং জন্মইমী সর্বধা শুইশ্বেকর্বান কর্বপ্রেছিজেতি নিশ্চিতং। তন্ত্র যানি বিদ্ধান্তত্ত্বপুরাণি বচনানি বর্ত্তয়ে। তথাচ বহ্নিপ্রানে। সপ্তমীসংযুতাইম্যাং নিশীথে রোহিণী যদি। ভবিতা চাইমী পুণ্যা যাবচন্দ্রদিবাকরাক্তি।। অগ্রিপুরাণে।। তন্মাৎ ক্রফাইমী পূজ্যা সপ্তম্যা রোহিণীসহিত্যান্তমী। ত্রোপ্রামণ ক্র্যাতিতি বিভাতিত্বত পারণমিতি।। বিক্র্যুর্জাত্বেচ।। জন্মন্তী শিবরাত্রিক্ষ কার্য্যেভক্রমান্থিতে।

পুরাণাদৌ প্রোক্তং বিদ্ধান্ট মীক্রতং। অবৈষ্ণবপরং তচ্চ কৃতং ওদ্ধেষমায়য়।।১৭৮।।
তথাচ স্কান্দে।। পুরা দেবৈঋ বিগণৈঃ স্বপদচু।তিশক্ষয়া। সপ্তমীবেধজালেন গোপি-তং হান্টমীক্রতং।। ১৭৯॥ ইয়ং প্রামাণিকৈঃ কৃষ্ণদেবাচার্য্যাদিবৈষ্ণবৈঃ। ব্যবস্থান্য চিনিনীতা লিখিতা চারতঃ সতাং।১৮০॥ শুদ্ধা চ রোহিণীযুক্তা পূর্দ্ধে হিন

ব্লব্লোপৰাসং ভিথ্যন্তে তথা কুৰ্ক্ষীত পারণমিত্যাদীনি। তানি বিষয়ভেদব্যবস্থাপনাদিনা পরি হরতি যচেতি। অবৈষ্ণবাঃ বৈষ্ণবেতরাঃ শৈবসৌরাদয়স্তৎপরং তদ্বিষয়কং। সর্ববৈত্রকাদশী রাম नवभी लिमिश्हा देक्त भारती देव क्यां नाश्विका विकास । नत्र विकास विकास के नवहर नमु देव क्यां नाम প্রযুক্তঃ দোষাশ্চ বহবঃ প্রুয়স্তে অতঃ সর্বেষামের সামান্যতোবিদ্ধারজ্জনং যুক্তমিত্যতঃ পক্ষা ন্তরং লিখতি ক্বতং বেতি।। ১৭৮।। ঋষিগণৈঃ ক্ববা। এবঞ্চ শতি বিদ্ধাবচনানাং স্থানং কণ্পরিবা বিদ্ধান্ততং যে ব্যবস্থাপয়ন্তি তেপি দেবমায়;বিমোহিতাইতি জ্ঞেয়ং। যতোবক্তৃভেদেন প্রবাণাদি-ভেদেন চ পৃথক পৃথক বর্ত্তমানানি তত্তদ্বচনানি কথমেকাধিকারিপরতাং লভন্থামতোবিষয় ভেদব্যবস্তৈর যুক্তেতি দিক্।। ১৭৯।। এতাদৃশী চ ব্যবস্থা ন ময়া নিজবু দ্বৈতা কণ্পিতান্তি কিন্ত সর্বাশাস্ত্রবেদিপুরাতনবৈষ্ণববরলিখিতপদ্ধত্যাদিদৃকৈয়বাত্র নিবদ্ধেতি লিখতি ইয়মিতি । জন্ম:-ইমীব্রতবিষয়া। প্রামাণিকৈঃ সর্বালোকাদরণীরেরাপ্তরতদৈরিতার্থঃ । অন্যাচ শিংরাত্রাদি ত্রতবিষয়া নির্নাতা বর্ততে কিন্তু ময়া সভামাচারতঃ সভাংশাস্ত্রাসূবর্ত্তিনাং বৈক্ষবান্যং আচারতঃ আচারদুষ্ট্যা নির্নীতেভাষ্য়ঃ। যদা ন কেবলং তত্তংপদ্ধতিগ্রস্থলুট্যা লিখিতা কিন্তু সতামাচারতশ্চেতি মধ্যদেশীয়ানাং বৈক্ষবানাং বিদ্ধাবর্জ্জননিয়মেন প্রায়ঃ প্রদিনে ব্রত্য-চরণাৎ। এবং শ্রীবৈষ্ণবরগ্রশাতিবাত গ্রন্থে ব্যবস্থা লিখ্যতে নক্ত বৈষ্ণবেতরশাতিপরজন-কম্পিতেতি ভাবঃ। ইপথ উদয়ে চাউমী কিঞানিতি পূর্বাদিনে সপ্তমীবেধে রোহিণ্যভাবে বা সত্যেব প্রদিনে ত্রতমিতি। তথা প্রেত্যোনিগভানাং স্থিত্যাদিচ রাত্রিশেষে নবসীযুতত্ত্ব বিষরং এংমেব মুহুর্জেনাপীতি ছয়ঞ। তথা শিবরাতৌ বিদ্ধাত্যাগবচনদ্বয়ঞ পূর্বাদিনে প্রদোষব্যাপ্ত্যাদাবিতি। তথাচাগ্রে লেখ্যশ্রবণদাদশীব্তবিষয়িক। বৈফ্বেতর স্মার্ক্তপদ্মতা দকা ব্যবস্থা নিরস্তেতি দিক্। অলমিতি বিস্তরেণ ।। ১৮০।। নমু তর্হি তিথিভান্তে চ পারণমিত্যদ্য সর্বত্র প্রশিক্ষণ্য বাকাস্য কা গতিরস্ত। শুদ্ধোপবাসে সতি প্রদিনেই উমীনিযুক্তমা সম্ভবাৎ। তত্রলিথতি শুদ্ধাচেতি। যদা তিথিবৃদ্ধিক্রমেণাইফী রোহিণী চ সাম্যেন হুর্কাদনং ব্যাপ্য পরদিনে নিষ্ক্রমেৎ ভদা পূর্ব্বদিনে ব্রতং কৃত্রা পরদিনেইফীমীরোহিণ্যোরস্তে সভি পারণং কার্যামিতার্থ:।। যদ্যপি উদয়ে চাউমী কিঞ্চিলবমী সকলা যদীতি বচনবলাৎ পরস্মিলেব দিনে ত্রত মাপদ্যেত তথাপি বুধে গোমে বা শুদ্ধাইউম্যামর্দ্ধরাতে রোহিণীপ্রাপ্ত্যা যোগবাহুল্যাপেকা তন্ত্রথা শুদ্ধান্তমী পরিত্যাগবচনা শ্রবণাচ্চ পূর্ব্ব শিলেব দিনে ব্রতমুপযুক্তং। এবঞ্চ পূর্ব্বদিনেইন্ধ রাতে রোহিণীযোগে চ পরস্মিমের দিনে ব্রতং জেয়ং।। অতএব প্রাঞ্চাপত্যক্ষ্ সংযুতা নবমী সকলা যদী ভাক্তং। অন্যথা তপ্তদেষাগ প্রশস্ত শুদ্ধাই মীত্যাগাপক্তেঃ ॥ যদ্ধা ভবতে বুধবারেণে ত্যাছাক্তেবু ধণোমবারয়োরেকতরেণ যোগে সতি সম্পূর্ণমপি শুদ্ধামপ্যদ্ধরিতে রোহিণীযুক্তা-মপাউমীং 'পূর্বাং পরিতাজা তত্ত্বচনবলাছ্ভবৈবোপোষ্যা অনাদাভ পূর্বৈব। তদানীমেব

পরত ছ । অকীমুনপোষ্যা পূর্বের ভিথিভান্তে চ পারণং ॥ ১৮২ । কেবটক্রেশ পাসনাশান্তে গৌতনীয়তন্তে তন্ত্ৰদীকামুদ্দিশ্য যথোক্তং ।। অধ ভাত্ৰসিভাইম্যাৎ প্রাদাহ দ্বং হরিঃ। ব্রহ্মণা প্রাথিতিঃ পূর্বং দেবক্যাং রূপয়া বিস্তৃঃ।। রে;হি-বৃ।ক্ষে শুভভিবে। দৈত্যানাং নাশহেতবে।মহোৎসবং প্রকুর্বীত যত্নতন্তদিনে শুভে।। ताकरेन। व किरोपिक किरोपिक मृद्धिकित माकिकः। उपवामः श्वकर्वता न क्लाकुनाः কদাচন।। ক্রুজন্দিনে যস্ত ভূত্তে সত্ত নরাধ্যঃ। নিবসেল্লককে ঘোরে যাবদাইত मः क्षयः ।। क्ष्मिमी द्वाविनीमुक्ता ठाक्षताज्ञ यमा म्प्रामः । উপোষ। তাং তিथि विवान् कार्षियळकनः लए७०। मामाङ्कि वूधवाद्य वा अखेमी दाहिनीयूठा। अवस्त्री নাম সা খ্যাতা তাৎ লভেৎ পুনাসঞ্চয়েঃ।। তস্যামুপোষ্য যৎ পাপৎ লোকঃ কোটি-ভবোদ্ধবং। विमूठा निवरत्रिय विकृष्ठे विवरक पूरत ॥ असेनी नवभीविकः समा-मार्ट्यती विथिशा रेनरवारभाष्या मना भूग्रका क्रिके बीरवार्टिनी श्वना।। भव्रविका मना कार्या। পূर्विकास वर्ष्ट्रायः । असेमी मस्मीविका स्ना ९ भूनार भूवाक्रस्य ।। उन्मर गायन प्रमामिति देवमूथाकात्र । (करमसूर्क घारान उपनामिखिष विना। ন যদ্জতি শুভং কার্যাং মুনিভিঃ পরিকীন্তিতং ।। পরেছত্নি পারণং কুর্য্যাৎ তিথান্তে बाथ ঋक তথা যদৃক্ষয়া ভিথিকাপি রাত্রিং ব্যাপ্য ব্যবস্থিতা। দিবসেপারণং কুর্য্যা-দন,ধা পতনং ভবে দিতি।। উমামাছেশ্বরী তিথিরিতি তৎসংফ্রেভার্থ:।। অত্র কারণঞ্চ যথোক্তং ভোজরাজীয়ে ।। অন্টম্যাৎ পূজ্যেচ্ছমুং মবম্যাৎ শক্তিরিজ্যতে । ভয়োর্যোগে তু সংপ্রাপ্তে দয়োঃ পূজা মহাফলেভি।। অত কেবলমিভ্যাদাবুমামা-হেশ্বরী তিথিঃ। তিথিঃ প্রোক্তা দৈব মন্মাদুশোষাত্মেন নিশ্চিতা।। অণিশক্ষ তত্র স্যাদ্যদুক্তং রোহিণীং বিনা। তক্ষাদত্রাপি সপ্তম্যা বিদ্ধান্তমাব বির্জ্জিতা। যদৃ-ক্ষণেতি যদান্য ততু সামান,তদ্যতো। প্রসঞ্চাদুক্তমন্মিন্হি বিদ্ধাত্যকৈর সাগ্রহং। শ্রুতিলিজাদিকন্যায়াজুতেরের হি মুখ্যতা ।। তদেবমন্তমীহানৌ ব্রতলো-পঃ প্রসম্ভাতে ।। ভন্নিতং পূর্বমেৰ ক্ষান্দ্বাক্যানুসারভঃ। জনাইমীংপূক্ৰিকা মিত্যাদ্যৎ যদুনীরিতং ।। নৃদিংৰপরিচর্য্যান্নাৎ দৃষ্টান্তাশ্চ প্রদর্শিতাং। দশনীবেধ যোগেন শুক্ষে। হি ছাদশীব্রতঃ।। বপ্তম্যবেধবেধেজি ব্যবস্থা যাক্তা পরিঃ। নির-छ। मा भूता (मरेवितिक) मिवहरमाबना ९ ॥ देवस्वादेवस्वविधान्। वर्ष्यं कम्बन्धि।। यञ्जेकमार्यत्र विक्थ्भर्याद्याः ।। । । । । । । ज्ञुक्मार्जी लाद्किश्चिन् रेमवचागूर्य व । विक् चिक्किशरदारित चात्रुदछिशर्याद्वः॥

তিথিতাত্তে চ পারণমিতি। কেচিচ্চ বৈষ্ণবা মুহূর্ত্তেনাপীতি পদ্যবয়াদরেণ তগুদাররোহিণ্য-ভাবেপি দাদশীনির্গমবৎ পরস্মিন্নের দিনে ত্রতমিচ্ছন্তি তিথিতাত্তে চ পারণমিত্যানিকঞ্ বৈষ্ণববিষয়মিতি মন্যতে। তত্র সক্ষণোলার এব গতিরিতি দিক্।। ১৮১।। অথ লখাইমীপারণাকালনির্দ্ধ ।। শুদ্ধায়াঃ কেবলায়াশ্চাইমীবৃদ্ধী ভু পারণং। তিথ্যন্তে ভেইধিকে ভান্তে দ্বিবৃদ্ধী চৈকভেদতঃ। অথাচ বৃদ্ধিপুরাণে।। ভান্তে
কুর্যাথ তিথেবিপি শন্তভারত পারণথ।। কিঞ্চ। রোহিণীসংযুতঃ চেয়়থ বিদ্ধৃত্বিঃ
সমুপোষিতা। বিয়োগে পারণং কুর্যুমুনয়োব্রহ্মবাদিনঃ ।। সাংযোগিকে তু স্থপ্রাথে যত্রকোপি বিযুক্তাতে।। তত্রিব পারণং কুর্য্যাদেবথ বেদবিদোবিদুঃ ।।১৮২।
মদ্বা তিথ্যক্ষেরারেব দ্বয়োরন্তে তু পারণং। সমর্থানামশক্তানাং দ্বয়োরেকবিযোগতঃ
।। ১৮৩।। অতউক্তং যাত্রবল্কোন। যাঃ কাশ্চিভিগ্রঃ প্রোক্তাই পুণ্যা নক্ষত্র সংসুভাঃ। ঋক্ষান্তে পারণং কুর্য্যাদিনা শ্রবণরোহিণীং।। ১৮৪।। অতএব ব্রহ্মবৈবর্ত্তে।
অইম্যামথ বোহিণ্যাংন কুর্য্যাহ পারণং কৃচিথ। হন্যাহে পুরাক্তংক্ম উপবাসাক্রিভিথ ক্রমের স্বর্থাই পারণং হন্তি নক্ষত্রঞ্চ চতুর্যুণ্থ। ভিন্মাই প্রযান্তিবিভান্তে চ পারণং।। কেচিচ্চ ভগবজ্জ্মমহোহাইদনিনে শুভে। ভক্ত্যোহ্মবন্তর বাক্তে কুর্বন্তি বৈক্ষবা ব্রতপারণং।। তথাচোক্তথ গারুড়ে।। তিথ্যন্তে চোহসবাত্তে বা
ব্রভী কুর্বন্তি বৈক্ষবা ব্রতপারণং।। বায়ুপুরাণে।। যদীচ্ছেৎ সর্ব্বগাপানি হন্তং নিরবশেষ্তঃ। উৎসবান্তে সদ্যা বিপ্র জগনাথান্নমাশ্রেদিভি।। ১৮৭।।

শক্ষারাঃ সপ্তমীবেধর হিতারাঃ কেবলারাঃ একাকিন্যাঃ রোহিনীং বিনা ভূতারা ইত্যর্থ: ॥ বৃদ্ধৌ সভ্যাংতিথের্ট্টম্যা অস্তে নিচ্ছেদে সতি পারণং । তে চ রোহিণীনক্ষত্রে কেবলে অধিকে বৃদ্ধে সতি তস্য রোহিণীনক্ষত্রস্যাস্তে পারণং ধ্রোশ্চ তিথিনক্ষত্রয়োর্দ্ধী সত্যাং একস্য ভয়োর্মধ্যে তিথেনক্ষত্রসা বা কস্যচিদ্ধেদতশ্ছেদে সতি পারণং কার্য্যমিত্যর্থঃ পূর্বস্তু তিথিভাস্তে চ পারণমিতিবল্লিখিতং তচ্চ ছয়োরের সাম্যেন বুদ্ধাতিপ্রায়েণ কিয়া অগ্রে লেখ্যপক্ষান্তরাদরেণেতি জেয়ং। সাংযোগিকে ব্ৰভইজ্যনেন সংযোগণ্যাপেক্ষয়া অইম্যাং সংযোগভাৰে রোহিণ্যামপি পারণংকার্য্যমের ॥১৮২॥ অথবা ছয়োরেবাস্তে পারণমিতি কেষাঞ্চিম্মতমঙ্গীরুত্যাধিকারিভেদেন ব্যবস্থাপয়ন্ পক্ষান্তরং লিখতি যদেতি। সমর্বানাং উপবাসদ্যুশক্তানাংদ্যোরেবাস্তে পারণং। অশ্রুণানান্ত ছরোমধ্যে একবিচ্ছেদ্এব পার্বং।।১৮৩।। তান্ত চ ঋক্ষান্তে সত্যের পার্বং কুর্য্যান্নত তিথ্যস্তমপেক্ষতে ইতার্থঃ। বিনা অবণরোহিণীমিতি অবণদ্বাদ্ন্যাং রোহিণাষ্ট্রম্যাঞ্চ ঋকান্তে তিথান্তে চ সতি পারণং কুর্যা। । নত্ত কেবলখকান্তইতার্ধ:। কুর্যাদিতাত্র তাগামিতি কুচিৎ পাঠং। অর্থস্ত তথৈব। ভাতে অবশ্বাদশ্যাং জীবামনপ্রাত্তরিপেক্ষয়া অবশাস্তেপি ন পারণং কিন্তু ভদহোরাত্রসুস্ত এব। অভএব সমর্থানাং তত্তোপবাসদ্বয়ং।। এভচাণ্ডো ব্যক্তং ভাবি। কেচিকৈৰং ব্যাচক্ষরেত তাম্ম ঋক্ষান্তএৰ পারণং। অবণ রোহিণ্যোস্তু তিথান্তএৰ পারণং নত্ত্বে-ख्याः अकारसार्भकाशिः देखि **अवक ध्यनवामगीखर्ड भा**तनाशः वामगा जिक्रमामारया-প্রেডছিশেষ বচনবলাৎ সোঢ়ব্যঃ যথা ডিথান্তরশ্রবণত্রতে এবং জ্রেয়ং ইভি দিক্।। ১৮৪।। যতোহন্যাৎ পারণমের কর্ত্ত্য ১৮৫।। উৎসবাতে অধিকাধিকভোগত্তাকীর্দ্রনাদিন। পুরুষ-বিশেষে বৈষ্ণবকুলসংমাননবিশেষেচ সমাপ্তে সতি।। অত্তচ শুভেপরমোত্তমে মছোৎস্বদিনে। ইতিকারক্লেশাযোগ্যতা স্চিতা।। তথা জস্ক্যেতি নিত্যোচ্ছিউমহাপ্রসাদভোক্ষননিয়মদাস্যবিশে-यारिक्ता देखिरक्खितिभवक मूर्णिख देखि निक् ॥ २৮७॥ आभारत्रमञ्जीतार ॥ १৮१॥

ष्यथं म्याकिमोज्र विविधः ।। ज्रावनाथात्र मुख्यामि मिनज्रात्र । कर्चना नियमाः गर्स मणगापि पिति वित ।। अथ विधिविष्णवः ॥ छविरवाखाः । कियुधि-छित्र है वाह । छत्रु छ १ की मृग १ (पर लाटिकः नर्स्तित नुष्ठिकः । समायि भी उप नाम शिव-তাং পুৰুষোভম ।। যেন ছং ভটিমায়াসি লোকানাৎ প্ৰভবাৰ্যয় । এতলে ভগৰন্ এ হি প্রসাদা অধুসূদম।। এক ফউবাচ।। পার্থ ভিদিবলে প্রাপ্তে দন্তধাবনপূর্বকং। উপবাসস্য নিয়মৎ গৃহ্লীয়াদ্বতমানসং ।। ১৮৮ ।। একেনৈবোপাবাসেন ইতেন কুরুনদন। সপ্তজনাক্তাৎ পাপানুচাতে নাত্র সংশয়ং ।। উপাৰ্ভস্য পাপেভ্যো যন্ত বালোগুলৈ সহ । উপবাস: স বিজেয়ো নোপবাস্ত লঙ্ঘনং ।। ১৮৯ ॥ আদ্য স্থিয়। নিরাহার: সর্বভোগ বিবজির্ভাতঃ। ভোক্ষ্যেহং পুগুরীকাক্ষ স্পরণং মে ভ্রা-চুতে ।। ১৯০ ।। ততঃ স্বাত্বাতু মধ্যাহ্নে নদ্যাদৌ বিমলে জলে। দেবক্যাং শোভনং কুর্ব্যাৎ সুক্ত প্রতিকাগৃহং ।। পদ্মরাগৈঃ পটেনে ত্রৈন গ্রিভং চর্চিতং শুভিঃ ।। तमार्वन्यनेमालां विकासिविकृषिवः। मर्सर्शाकृतवर कार्यःर शाभीवनममाकृतः। घ छ। यर्जन मञ्जी ७९ याञ्च । कनमानि ७१। यदार्ज स्थिकाखारेमाः भञ्चदानितं मङ्गून । वकका दी त्वारथ ष्रेशमी भाषा गम विष्ठः। महानवादि गृरेशम पृष्ठिमर्य भविङ्का । षाविविन । समृतः हित्र कि छ । त्रक्ष भागतिकः । यह । एव । १ के छ छ जिव विभाग विधिवस्था। এবম্বিধং ঘর্ষাশক্তি কর্ত্তব্যং সূতিকাগৃহধ। তন্মধ্যে প্রতিমা স্থাপ্যা সাচাপ্যক্ত-विধা স্তা। কাঞ্নী রাজভী তাম্বী পৈত্তলী ম্ণাম্মী তথা ।। বাক্ষী মণিময়ীচৈব বৰ্ণিকা

ভবাদী ব্রত্যাধারণান্ নিয়মানভিদিশতি ব্রতেতি সপ্তম্যাদিদিনত্ত সংযমদিনমুপবাদিদিন পারণদিনঞ্জিশিন। দশম্যাদিদিনে ছিব যথা দশম্যোদদিনি জ্বাদিদিন জবে তথা সংক্ষি নিয়মাং কর্জ্ববাং। দশম্যাদিবিহিতাজাপি তে নিয়মাং সর্ক্র্ত্রত্যাধারণ ছাদত্র সপ্তম্যাদিষ্ঠপি কর্জ্ববাইতার্থং। তে চ পূর্ব্বমেকাদশীব্রতপ্রকরণে লিখিতাএব সন্তি॥ তৈলমত্যমুপানফেত্যাদিদদশনীনিয়মাং। অনুক্ত্র্রুলপানাচেত্যাদ্যেকাদশীনিয়মাং॥ কাংস্যামিষে স্করাং ক্ষেত্রমিত্যাদি ছাদশীনিয়মাং॥ অতএব ভবিষ্যোন্তরে। উপাবৃদ্যম্য পাপেভাইত্যাদি তচাত্রে লেখ্যমেব।।১৮৮॥ এবং সর্ক্র্রুতসাধারণবিধিমুল্লিখ্যাধুনাত্র বিশেষং লিখতি একেনেত্যাদিনা। সপ্তম্যামেকভক্তানন্তরং দন্তধাবনপূর্বকং সক্ষপ্তং কুর্যাং। অব্যাইমাং প্রাতঃ কুর্যাং।। ১৮৯॥ তত্রাইমীপ্রাতঃ সক্ষপাত্রং লন্তধাবনপূর্বকং সক্ষপ্তং কুর্যাং। অব্যাইমাং প্রাতঃ কুর্যাং।। ১৮৯॥ তত্রাইমীপ্রাতঃ সক্ষপাত্রং লিখতি অদ্যেতি। যদ্যপি সঙ্কপ্রমন্ত্র সর্কান্তাগবিবিজ্জিতইত্যাদি ভবিষ্যোন্তরে ক্রাপ্তিরং প্রতি শ্রীভাবতা স্বযুত্তথা নোকং প্রমলক্ষান্তণাদিত্র। অব্যাহ্যহং।। ১৯০॥ অথ লোকে ক্সন্তিথিক্ত্যাবং প্রাতঃ শ্রীভাগবিতাপি তিলম্পনাদিকং লোকিকভক্তিরীত্যপেক্ষরা কার্যামিতি লিখতি কুর্ক্ষীতেতি।। প্রভোঃ শ্রীক্ষম্য স্নপনাদি তিলৈঃ ক্রইফঃ কুর্ক্ষীত।। আদিশন্দাছ্র্র্জ্বনাদি।। তথাচোক্তং।। ভিলোম্বর্জী তিলমানী তিলাদী চ বটিছলী নাব্দীদতীতি। প্রত শিক্ষানায়ং

সারেণাক্টোত্তরশতভূক্বাগ্রাদিযুক্তেন সহস্চিত্ত্বটেন ধার্যা স্প্রনাদিকমপি জ্ঞেয়ং। সর্ব বস্ত্রাদিকঞ্চ নবমেৰ ভগৰতে অর্পয়েক্ষ্ট। শিকীচারামূদারতইতি প্রেতাগ্রেপামূবর্ত্তনীয়ং সংস্পুদায়াচারাসুনারেবৈবাত্তাধিলবিধিলিধমাৎ। শুভে তীর্থে একালিদ্যাদৌ তত্রাপি এবি আস্ত্রাদৌ। তদলাতে চু অন্যত্র বা সক্তলে পবিত্রনির্মালসলিলে। তথাচাত্রে লেখ্যং ভবি-ষ্যোজরবচনং নদ্যাদৌ বিমলে কলইতি । ব্রতী উপবাদপরোক্ষন: ৷ ধাতীকলং মৃদ্ধি দ্ব্রা তেন मलकः সংমূজ্য শুটভ: এভগবত: স্থানাদ্যৰশিটেই মহাপ্ৰসাদৰটেপ: কুটক শ্বিটল: কুত্ৰা স্থানং কুৰ্য্যাৎ। ভথাচ ভৰিষোঁ ॥ উপোবিতস্তু মধ্যাহ্নে স্পাত্মা কুফডিলৈঃ শুভৈঃ। ধাত্ৰীকলং শিরে-দশ্যামহাপুণাবিবৃদ্ধরইতি। যদ্যপি ভদ্বচন্মতো মূলে স্বয়মেব লেখ্যং। ভথাপ্যেতদত্ত স্থার্থং লিখিতং। এবমগ্রেপ্যস্থা। অন্যাদ্ উদেবপুর্বাদিস্থদেশে শোভনপ্রদেশে দিব্যং প্রমোত্তমং তৎ-প্রকারং দর্শরন। তদেব বিশিন্তি বিভূবিতমিতি দ্বাভ্যাং। তোরণাদিনা চাত্র বাসোদর্পণ পল-বাদি বিরচিতানি বন্দনমালেতি খ্যাতান্যের। আবদ্ধৈর্বিতানাদি স্থানে সম্যক্রদৈ: কলসাদি-ভিশ্চ ভূষিতং। ববদুর্বাষ্ট্র:। আদিশব্দাৎ মধনরক্ষাস্বস্তিকাদিভিশ্চাঢ্যং যুক্তং। দ্বারি দ্বার-বিন্যক্তিঃ শৃত্থলাদিভিঃ সংগৃতং ৷ আদিশকাচ্চাত্র পুর্বলিথিভমার্কণ্ডেয়পুরাণাদি বচনামস বেণ মধ্যে ওষজন্য প্ৰস্মৰ্পনিযুক্তানি জেয়ানি । তত্ত স্তিকাপ্তে তদ্ভিংসাদৌ গোপগোপী-नर्सिषकः । उना ञ्डिकाशृहमा मर्सा नर्साठाख्याचाः मधनः विवरण जिमान् कुछः त्राभरतः मिलार्थः॥ छमा घरेत्राभिति देहमः यूर्वनिर्मिलः जनकारत देवनवश भावः नात्मार खाभरत्र। জ্ঞবিষাপুরাণোক্তং তচ্চ পাত্রং ভিলপূরিভমিভি জ্ঞেরং। পাত্রপরিমাণঞ্চ দেবীপুরাণোক্তং পূর্বাং निश्चिष्ठामवास्त्रि। छर्रभाजः उद्द्रभति (एवकीः स्राभाति । कथेखुणः स्रामंनामा क्रियानिका কুভাং নিশ্বিভাং। স্বৰ্ণাদিমানং ঢোক্তং।। সৌবৰ্ণী রাজতী ভাষী বৃক্ষকা মাৰ্ক্তিকী তথা। চিত্ৰকা পিউলেপস্থা নিজবিত্তামুদারত: ।। আঘাতপ্র পর্যান্তং কর্ত্তব্যা শাচ্যবর্জিটেতবিতি ॥ তত্র দেবকী প্রতিমামাহ সর্বেতিসার্দ্ধেন। সর্বেণ দিবস্ত্রীলক্ষণবিশেষেণ সম্পন্ন। সম্পর্ণ। লকণং চাত্রেলেখ্য লক্ষীপ্রতিমাসুশারেণ জেরং। অর্দ্ধস্থে কেতি। অর্দ্ধান্তেন স্থপ্তিকেতার্থ;।। এতচ বালকস্তনদানার্থং শ্যাবাং কৃতা নিশ্মিতা পাঠান্তরে ময়া সহেত্যুগ্য অধ্বস্থাকৈত্যনেন সম্বন্ধঃ।। তপ্রবিদী পরমভাগ্যবভীতি পূর্বেকমত্বতপঃ স্মরণাদেব।। প্রস্নুতা ক্ষরিতস্তনী॥১৯১॥ निज्ञ मृद्धिमार मास्मिष्ठ घाणाः। वानकः वानवशः एवः एगाणमानः विवाबभया। তদেবার শত্থেতি মহঃপূর্ণং তেজঃস্বরপং। যদা মলো ত্রহ্মস্বরপং।। मर्किमानमम्बन्ध यार 

হশোদাঞ্চাপি তকৈব প্রস্তুত্বরুক্ন্যকাং ।। ১৯৩ ।। তত্র দেবা প্রাণ্থা নাগা বন্ধ বিদ্যাধরোরগাঃ । প্রণতাঃ পূজ্যবালাভির্যপ্রহন্তাঃ দুরাসুরাঃ ।। সঞ্চরভইরাক্ষামে প্রকারের দিতোদিতৈঃ ।। ১৯৪ ।। বসুদেবোপি তকৈব থড়গচর্মধরঃ হিছেঃ ।। ১৯৫ ।। কশ্যপোবসুদেবোহয়দিভিশ্চাপি দেবকা । দেবনাগোহলা চাত্র যশোদাদিভিবেব চা। নক্ষঃ প্রজাপতির্দক্ষোগগশ্চাপি চন্তুমুখিঃ । এযোহব তারোরাজেন্দু কংলো বৈ কালনেসিজঃ ।। ১৯৬ ।। তত্র কংসনিযুক্তা যে দানবাবিবিধারুধাঃ । তেচ প্রাহরি কাঃ সর্বের সুপ্তা নিজাবিমোহিতাঃ ।। অরিটো ধেনুকঃ কেশী দানবাঃ শস্ত্রপাণয়ঃ ।। ১৯৭ ।। নৃত্যপ্রের প্রস্তা গল্পকাগিতত পরাঃ । লেখনীয়শ্চ তত্ত্রে কালী-যোযসুনাতুদে । নন্দগোপশ্চ গোপাশ্চ যশোদা চ প্রসূতিকা ।। ১৯৮ ।। রম্যান্মেবং বিধাং কন্তা দেবকীনবসূতিকাং । তাং পার্থ পূজ্যেজ্বজ্ঞা গল্পপাক্ষতিঃ ফলাং ।। কুরাত্তের্নারিকেলৈন্চ থক্জ্ বির্দাড়িমীফলৈঃ । বীজপূরেঃ পূগফলৈর্নার ক্ষৈণ্ণনিস্থা । দেশকালোড্রের্মি ফিঃ পুক্সেশ্চাপি সুগলিভিঃ । ধ্যাত্বাবতারান প্রত্তান্ মন্ত্রেণানেন পূজ্যেং ।। অদিতির্দেবমাতা স্থং সর্বগাপপ্রণাশিনী । অত্ত্যান্ মন্ত্রেণামি ভয়ভীতোভবস্য চা পূজিতাসি যথা দেবৈং প্রসন্না স্থং বরাননে । তথা নে পুজিতা ভক্তা প্রসাধং কুরু সূত্রতে ।। যথা পুঞ্ প্রিয়ং লক্ষ্বা প্রাপ্তাত

ইতাগ্র যশোদামিতি। প্রস্তা বরা শ্রেষ্ঠা মায়া দেবীৰূপা কন্যকাযয়া তাং। শ্রীনন্দবল-ভদ্র রোহিনী গোপগোপ্যাদি প্রতিমাশ্চ স্থাপ্যা ইতি জ্ঞেরং। একত্রৈব তেষাং স্থাপনা-ড়াক্তেঃ।। ১৯৩।। তত্র হৃতিকাপৃহে স্থরাস্থরাইতি পুন: স্থরগ্রহণং তেষাং হর্ষবিশেষোদ্যাং। যদা স্বর্বদেব্হস্থবাআস্থ্রভাবরহিতা যে দৈত্যান্তে শ্রীপ্রহ্লাদাদ্য়:। মুদিতানি হর্যস্কানি উদি-তানি বচনানি যেয়ু। যদ্বা মুদিতানাং যে উদিতাঃ শাস্ত্রাছ্যুক্তাঃ প্রকারা বেশব্যবহারাদয়-रु विशिष्टीः मद्यः आकारम मक्षत्र सुरेत स्वतानशः सामग्रेडि स्वतः। তानुमा खख्ट श्रेटिमाः कार्याः পটাদৌ লেখ্যা ইতার্থ: ।। ১৯৪ ।। বস্তুদেবোপি খডগচর্মধর: কংশবধার্থনাত্তথড্গচর্মাএব স্থিতস্ত হৈব সংস্থাপ্যঃ ॥ ভাদৃশ তৎপ্রতিমা জ্রীদেবকীনিকটে স্থাপনীয়েভি জেয়ং । ১৯৫॥ শ্রীবস্থদেবাদীনাং ধ্যানবিশেষমাছ কশাপ ইতি সার্দ্ধাভ্যাং। কালনেমিজঃ কালনেমেরবতার-ইতার্থঃ। পাঠান্তরং চিন্তাং॥ এবং গর্গকংসাদয়োপি প্রতিমাদারা লিখনেন বা স্থাপাইতি জ্ঞেরং ।১৯৬ । প্রহরিকা: প্রাহরিকা: ভানেব নির্দ্ধিতি অরিষ্ট ইতি। অন্যেচ শস্ত্রপাণ্যো-मानवान्छान्त्रामयः। ১৯९॥ च्छामश्यतामयः व्यामि लिथाः। **उटे**बक्षमः यसूना लिथनीयाः তস্যাং হৃদন্তএচ কালীয়োপরি জ্বক্তভাদি স্ব্রেজসম্ব্রি লীলারপাদি প্রতিমা স্থাপ্যতি বেদিত্যবাং । প্রস্তিকা প্রস্তক্ন্যকা॥ যশোদায়াঃ 'পুনরুক্তিন্তৎস্থাপনেন 🛍 নন্দাদিস্থাপ-নাভিপ্রায়েণ প্রাধান্যবিশেষাপেক্ষয়া খা। দ্বিতীয়াম্তপাঠে ক্রত্বেভ্যনেন পরেণসম্বন্ধঃ। পাঠ স্তরে ক্ন্যকালিখনেন তল্লেখো জেয়:। তভক প্রস্তিকামিতি সদ্যোজাতামিত্যর্থ:॥ ১৯৮॥ দেবক্যা নব স্তিকাং নূতনস্তিকাগৃহং। তাং দেবকীং গলাদিভিভ্জ্যা পুৰুষেদিভি দ্বাভ্যা;

बिवृद्धि भद्या । ख्या त्य निवृष्टि । त्वि नभूता घर तन्य त्या शाविष्ठि विश्वति रिगः मञ्ज्ञातिवृजा त्ववृतीवाहिनारेष कृत्राबाहर्म कृष्ठ धकत्र स्वकरेतः किवरेतः (मदामाना । পার্যাক্তে স্বাস্থ্তিয়া মুদিততরমুখা পুত্রিণী সমাগাতে সা দেবী দেবমাতা ক্লয়তি जूबमना (मदकी कास्त्रक्रमा ॥ ১৯৯॥ शामावण्डाक्षत्रका और प्रक्रामहत्रवास्टिक । নিষয়া পক্ষকে পূজ্যা নমোদেৰৈ। প্ৰিয়ে ইতি ।। ২০০ ।। অৰভারসহসুং বৈ ক্বভং তে সধুসূদন। ন সভাগামৰতারাণাং কশ্চিজ্ঞানাতি বৈ ভুবি ।। ব্ৰহ্মা শিবাদয়োবাপি स्वाभार न विष्युव । चारुस्य भूकायामामा माख्य रत्रमाविनः ॥ २००॥ सनाम-ভিশ্চত্তর্থ বৈষয় প্রণাদিনমোহতকৈঃ ৷ পূজায়েমুদ্ধি জাঃ সর্বে জ্ঞী শূড়া মন্তব-জ্রিভাং ।। ২০২ ।। বিধ্যস্তরমপীচছ্তি কেচিদত্র দ্বিক্ষোত্তমাঃ। চল্ট্রেদরে শশাক্ষায় मन्त्रापर्धा रुदि । व्यवस्था वामनः तीवि देवकूषे शूक्रद्याखनः। व्यवदा-क्षिष्ठः वात्रुष्टवः बाधवः बधुमृत्वः ।। वद्राद्यः भुखदीकाकाः मृति १३५ धद्रशीधदः । দামোদরং পদ্মনাভং কেশবং গরুড়ধূলং ।৷ গোবিন্দমচ্যতং রুঞ্মনতং পুরুষো-ख्रार। व्यक्षाक्रकः क्रमद्वीवः मर्गञ्जिष्ठास्त्रकाद्रगर। व्यनामिनिधनः विसूर विला-কেশং ত্রিবিক্রমং ৷ নারায়ণ্ চন্তর্বান্ত্রং শত্মচক্রগদাধরং ৷ পীতামূরধরং নিত্যং বনমালাবিভূষিতং ৷ জীবৎসাঙ্কং জগৎসেত্তৎ জীপতিং জীধরং হরিং ৷৷ দেবকী-গরুস্মত্ত হৈত্যকৈ।বিনাশনং । গৃহাণার্ছাসদং দেব গোবিন্দায় নমোনমঃ। ইত্যর্যাসন্তঃ।। যোগেশ্বরায় যোগসন্তবায় যোগপত্তয়ে গোবিক্ষায় নমোনমঃ।। ইতি সানমরঃ। যজেশ্বায় যজ্ঞসম্ভবায় যজ্ঞপতয়ে গোবিদ্দায় নমোনমঃ।। ইতি বস্ত্র মন্ত্র:। বিশ্বেশ্বরায় বিশ্বসম্ভবায় বিশ্বপভয়ে গোবিন্দায় নমোনমঃ ইতিধূপমন্ত্র:। ধর্মে খরায় ধর্ম পত্রে ধর্ম সম্ভবায় গোবিন্দায় নমোনমঃ।। ইতি নৈরেদ্যমন্তঃ।। ক্লীরো-

মব্য়: । অবতারাশ্চ বছবিধালেখাস্তেশ্চ অবতারং ধ্যাত্ম অদিতিরূপাং দেবকীং বিচিন্তা। অবতারানিতিপাঠে সর্বেষামেব তবৈব তত্তৎপুজনার্থমেকবৈবপ্রসঙ্গাছদিউনিতিছ্জেরং ॥ অনিতিরিত্যাদি পূজামন্ত্র: ॥ ১৯৯॥ পাদে শ্রীভগবতঃ দেবক্যা এব বা অভ্যঞ্জয়ন্ত্রী শ্রীগঁলাদিছিঃ পূজা। কথন্তুতা দেবক্যাশ্চরণান্তিকে পঙ্কজে নিজাসনে নিষ্ণা উপবিন্ধা। তত্মপ্রনাই নমইতি কেচিচাবাহনাদিপুর্বেকং লক্ষ্মীপুজনমিদং শ্রীদেবকীপুজনাৎ পূর্বমিচ্ছন্তি॥ ২০০॥ নিজপুজানমন্ত্রমাই অবতারেতি ছাভ্যাং ন তে সংখ্যাবভারতরাণামিতি পাঠে বিসর্গলোপেপি পুনং সন্থিঃ সংখ্যায়া জানাতি ক্রিয়ান্ত্রশুলান্তাশ ম স্যাদিতি ভাবঃ। অতঃ ব্লেল্যাদিতিরপি তব শ্বরপান্তানা-ছেতোঃ কেবলমান্তর্কুৎসঙ্গণায়িনমেবত্মাং পূজ্যামীত্যর্থঃ। যদ্ধা ঘস্য অ্বপং তেপি ন বিছঃ তমদ্য সাক্ষামান্তর্কুৎসঙ্গণায়িনমেবত্মাং পূজ্যামীত্যর্থঃ। যদ্ধা ঘস্য অ্বপং তেপি ন বিছঃ তমদ্য সাক্ষামান্তর্কুৎসঙ্গণায়িনমেবত্মাং পূজ্যামীত্যর্থঃ। যদ্ধা ঘস্য অ্বপং তেপি ন বিছঃ তমদ্য সাক্ষামান্তর্কুৎসঙ্গণায়িনং সন্তঃ পুজ্যামীত্যর্থঃ। যদ্ধা ঘস্য অ্বপ্রবিদ্ধিতাঃ প্রবেহিতাঃ। ভত্তমন্ত্রাক্তিবা উচারণীয়াইত্যর্থঃ। অত চাত্মক্তাপি বিশেষতঃ পূজায়াঃ ক্রমোবিধিশ্চ বছলপুরাণা-ছাক্তিতঃ সম্পূদ্যায়স্বারাচাত্তে লেখ্যবের ॥ ২০২ ॥ কুচিচ্চ বজ্লেশ্বরায়েত্যাদি পাদ্যাদি দীপা-

দার্থিকার ত অন্তিনের কালুর । পৃছানার্থ্য শাশাক্ষেয়ং বেছিনীসভিতোমন ।। ইতি
চল্পার্থ্য মন্তঃ ।। ২০৩ ।। স্বভিলে স্থাপরে দেবং শাশাক্ষং বেছিনী তথা । দেবকীং
বসুনেবঞ্চ যশোদাং নন্দমের চ ।। বলভত্তৎ তথা গোপানু গোপীগোকুলমের চ ।
এবং ক্ষতে ন সন্দেহে। নরঃ পাপাৎ প্রযুচ্যতে ।। ২০৪ ।। অর্চ্চাতে বলোর্ধারাৎ
পাতয়েল্পপুসর্লিয়া । ততোর্ব্ধাপনং ষতা নামাদিকরণন্ততঃ ।। কর্ত্বাং তৎক্ষণে রাত্রৌপ্রভাতে নবমাদিনে । যথা মন্ত তথা কার্য্যে ভগবত্যা মহোৎসবং ।। ব্রাহ্মনান্
ভোক্তঃরত্তক্তরা তেভ্যোদদ্যাক্ত দক্ষিণাং । হিরণ্যং রক্ষতং গাবো বাসাংসি বিবিধানিচ ॥ ২০৫ ।। যদ্যদিউত্যং তেন ক্ষোমের প্রতিয়ামিতি । যং দেবৎ দেবকী দেবা
বসুদেবাদজীক্ষনং । ভৌমস্য ব্রাহ্মণোন্ত হৈও তবৈ ব্রহ্মান্থনে নমঃ ।। ২০৬ ।। সুক্রম
বসুদেবার গোব্রাহ্মণ হিতার চ। শান্তিরন্ত শিবকান্ত ইত্যুক্ত্য তং বিস্ক্রেরিং।।২০৪।
এবং যঃ কুক্লতে দেব্যা দেবক্যাঃ সুমহোৎসবং । বর্ষেবর্ষে তু মন্তক্তো ধর্মাথী ধর্মান
নার্যা বা যদি বা নারী যথোক্তং কলমাপু যাং ।। ২০৮ ।। ভবিষ্যা। পৃত্তীয়ানির্যান্তরঃ ।। অদ্য হিছা নিরাহারঃ খো ভূতে পারমেখর । ভোক্যামি দেবকীপুত্র অন্মিন ক্রান্টিমীক্রতে ।।২০০। উপোনিতন্ত মধ্যাত্বে স্থাত্বা ক্র্যান্টিনাং শুটভাঃ

স্থোপচারমন্ত্রঃ বিশ্বেশ্ররায়েভ্যাদি নৈবেদ্যমন্ত্রঃ ধর্শেশ্বরায়েভ্যাদিশয়নমন্ত্রঃ ইভি। অধুনা ভটত্তব মন্ত্রাদিভেদেন প্রমতমাহ বিধ্যন্তর্মিতি। স্মরন্লঘুলঘুকীর্ত্রন্ অথে অনহাদিনামোকেঃ। স্মরণপ্রকারমেবাহান্য মিতি। ২০৩॥ স্বাপ্তিলে মন্ত্রসংস্তভূমৌ স্থাপয়েৎ আবাহ্নাদিকং ক্লত্বাহচ্চয়েদিত্যর্ধঃ । ২০৪। শুড়সর্পিষা বশোর্ধারাং পাতয়ে । বর্দ্ধাপনং নাড়ীচ্ছেদনং। আদৌ वर्छीः সংপূজা পশ্চারাড়ীচ্ছেদঃ কার্যাইতি সদাচারভোভেরং। ততঃ মন্ত্রী মন্ত্রীনিঃসরণমিতার্থঃ ভতোনাসকরণং আদিশকাৎ জাতকর্মারভা কংস্বধান্তং স্কামের চরিতং যথাক্রমমকুকর্দ্রব্য-মিতার্থঃ।। তচ্চ রাক্রৌ তৎক্ষণাদের কর্জ্ব্যমিতি বর্দ্ধাপনবস্থপারাপাতনাদ্যভিপ্রারেণ। ভগবভাঃ শ্রীত্বর্গাদেব্যা মহাপূজা নবমীদিনে প্রভাতে কর্তুবে তার্থ: ॥ ২০৫॥ ভক্ত দ্বাহে। ভত্ত সঙ্কপ্তাপ্রকার মাহ। ভেন দানেন মে ক্ষণ্ড প্রীয়ভামিভ্যেবং। ব্র ক্ষণভোক-नामिक क्षिमः विमर्क्क नाम छत्रः ऋकेवार ॥ २०७॥ विमर्क्क न श्रकात्रमार । यभिष्ठि छ। छ। । ভৌমস্য প্রপঞ্জনপস্যেত্যর্থঃ। ভূমেশ্চেভিপাঠে ভূমিমারভা ব্রহ্মপর্যাত্তম্য। স্থশোভনং জন্ম যুদ্য ৰাহ্নদেবস্য তথ্যৈ নম ইতি পূৰ্টেক্টেণবাস্বয়ঃ। মুদ্ধা বাস্ত্রদেবায় তৎপ্রীভার্ধং মুম সর্ক্ষোমপি,বা इक्वास्त्र ॥ २ - १ ॥ भर्त्वार्थी हानाः कन्हन । यथा । धर्त्वाञ्ज वर्द्धालन कन्य पर्यो नन् रामहर्जः কুরুতে। যদা স মন্তক্তোভবতি। অতএব ভক্তিলক্ষণধর্মার্থী চ ভবতি। কিম্বছনা সকামোধধোঞ্জ কলং চাপ্লাব। পাঠান্তরে ভাগবতোবৈঞ্ব: গৃহীতবিফুদীক্ষাক: ইতার্থ:। তাদৃশো যো মন্তক্তঃ স:॥ यदा॥ অকারপ্রশ্লেষেণ অভাগবতোপি মন্তক্তঃ সন্নিতার্থঃ। ২০৮॥ নিয়মং সঙ্কপাং॥২০৯॥ ২১০।। শিরে শির্মীস মহাপুণ্যং ভগবন্তব্জিস্তম্য বিশেষেণ বৃদ্ধয়ে। ধাতীকলম্য ভগবৎপ্রিন্ন-

थाकीकल भारत प्रमाणकार्युगाविव्कास ॥ २ >> ॥ क्षा भाषाक्रिकः कम् छार्शसम ত্রণংঘট্। পঞ্চরত্মসমাযুক্তৎ পবিত্রোদকপূরিতং।। তস্যোপরি ন্যাসং পাত্রৎ कপূ ता छ इस वानि छ । मुधू भेवानि छ १ अव १ श्रुष्ण माना छि । मा छ छ । भोदर्श विख मर्यु छार। नम्मानाञ्च भू जमा खनर रेव विश्विकाननार ॥ २००॥ शीसमानः सनर माश्यं कूচাতো পাণিনা স্পৃশন্। অবলোকমানঃ প্রেমা বৈ মুখৎ মান্ত মহিমহং।। ২১৪।। রুত্বা তৈবন্ধ বৈকুঠং মাত্রা সহ জগৎ প্রভুং । ক্ষীর মদিল্লপনং রুত্বা চন্দনেন বিলেপয়েৼ ।। কুক্লুমেন মহাভাগ কপূরাগুরুচ চিতিং । পামকোষীরগলৈশ্চ মূগ-নাভিবিমিশ্রিতং। শ্বেতবস্ত্রযুগচ্ছরং পুজামালাসুশেভিতং।। মালতীমলিকাপুজো कार्याद्यः त्विकोष्ट्रां । পृक्षनीयामश्चाग मश्चला क्रमाप्तः। क्रुपाट्य नादित्क-रेन-४ थक्कृरितर्मा फिनोकरेनः । हृ टत्कन मुफुर् छः करेन तसान मुस्रोतः ।। छ ९ का न मस्रिकिति देवाः कोननीनिविधम् तिनः । निविधम् विविधः खोज प्रिक्तिनिक्षा ।।২১৫।। দীপান্বৈ কারয়েচাগ্রে তথা কুসুনমগুপং। গাতং বাদ্যং তথা নৃত্যং স্তোত্রপাঠঞ্চ কারয়েৎ । বালস্য চরিতং বিস্ফোঃ পঠনীয়ঃ পুনঃ পুনঃ ॥ ২১৬॥ ষ্ব বৃক্তঃ প্রজ্য প্রজ্য বৈ পুরুষীয়ন্ত তোহরিঃ। নিশি পূজ: বিধাতব।। দেবকাঃ কেশবস্চ।। মন্ত্রেণানেন বিপ্রেন্দু পুরাণবিহিতেন বৈ। অদিতে দেবমাতস্ত্রং সর্বাহ পাপপ্রণশিনী ।। অততাং পূজায়য়ামি ভীতোভবভয়স্চ । পূজিতাতু যথা দেবৈঃ প্রসন্না দ্বং বরাননে । পূজিত। ভুমহাভক্তর প্রবাদং কুরু সুব্রতে ।। যথা পুত্রং হরিং লব্ধা প্রাতে নিবৃতিঃ পর।। নিবৃতিং দেবি তামেব সপুতা সং প্রথচ্ছ বে ।। জ্রিক্ষপূজানস্তঃ ।। অবতারাঃ সহস্যুতি করোবি মধুসূদন । নতে সন্থ্যাবভারাণাং কশ্চিজ্ঞানাতি বৈ ভুবি ।। দেবাব্রহ্মাদয়োবাপি স্বৰূপাৎ ন বিদু-ন্তব।। অভন্তাৎ পূজ্যিয়ামি মাত্রহংসঞ্সংস্থিতং ॥২১१॥ বাঞ্চিতৎ কুরু মে দেব দুক্তং চৈব নাশার। কুরুষু মে দয়াং দেব সংসারার্ভিভয়াপাই।। এবং স১-পূল্য গোবিন্দং পাত্রে তিশময়ে স্থিত্য।। ২১৮। ততশ্চ দাপত্মেদ্র্যাং রবেরুদয়তঃ एक्किः। क्रकाश क्षयमः प्राः (प्रकोमिश्काश देव ।। अर्घः अविवत क्षेत्र मर्यकामः ফলপ্রদং। জাতঃ কৎসবধার্থায় ভূভারে গ্রেগায় চ।। দেবতানাৎ হিতার্থায় ধর্মা সংস্থাপনায় চ। কৌরবাণাং বিনাশায় দৈত্যানাং নিধনায় চ।। গৃহাণার্যাং ময়া

ত্বাঁৎ ॥২১১॥ অব্রণং নিজ্সুং ॥ ২১২॥ দেবীং দেবকীং হৈমীং হেমনির্মিতাং ॥ ২১৩ ॥ পীয়মানঃ পিবন্। ২১৪॥ কপুরাগুরুচচিতি তিমিত্যাদীনি জগৎপ্রতুমিত্যস্য পূজনীয়ইতি ক্রিয়ায়া বা বিশেষ-ণানি। মৃগনাভিনা বিমিশ্রিতং লেপিতং ॥ কুচিচ্চ স্বত্যাত্র প্রথমাস্তপাঠঃ॥ ২১৫॥ অগ্রে ভগবৎ পুরতঃ ॥২১৬॥ পূজ্য পূজায়িত্ব।॥২১৭॥ তিল্ময়ে তিলপুরিতে অন্যাচ্চ স্বাংস্ক্রীর্থমেব ॥২১৮॥

## श्रीश्रीकिक विनामः।



प्रसः (प्रविकोगशिष्टांगम । औक्रकांस (प्रविकोगशिष्टांस न्याप्रीनिश्चांस व्यर्गः नमः। मधिभूव्याक्ररेविर्म्यः उत्वाक्ष्यं । मनित्न मृत्न ।। कीतामार्गतम् व অ ত্রিনেত্র সমুদ্রের। অর্থামিশের গৃহাণ স্থান রোহিল্যা সহিতো মন। নারিকেলেন শুজেন দদ্যাদর্ঘ্য বিচক্ষনঃ ।। রুক্ষায় পরিয়া ভক্তা। শাস্থে রুত্ব। বিধানতঃ । দদ্যা-ডুম ওলং কংলং স্পাগ্রনগান্তি।। অহাদানেন তৎশুণাং লভতে মান্বোভুবি। शीं जमाखकथा नारिभः कूर्य ते इद्यागद्र निमि ॥ धूश मीशक नित्व मार छा युनः मार्शिय कारतः । अवः अन्नास्त्रभीः कृष्णा कर्त्वाः नावनिष्ठारः । नर्वाभूगाक्तः श्रीभा अस्त यां जि भन् १६ तः। उम्म भूवात्व ।। अथ ভाजभाम मानि दक्षिमा १९ कत्नी यूर्ण। অফাবিংশতিমে জাতঃ ক্লোগসে দেবকীসূতঃ।। ভারাবতারণার্থায় ক্লবিয়াণাং ক্ষায় চ। তন্মাৎ সতত সংপূজ্যে। যশোদা দেবকী তথা। গদ্ধমালৈ; স্থা যাবৈষ্ধ গোপুসমন্তবৈং। সগোরসৈভক্ষ্যভোটেল্যং ফলৈশ্চ বিবিধৈরপি ৷৷ বাত্রৌ প্রজাপরং কার্য্যেন্ভাগীতসমাকুলইতি । ১১৯ । যোভবিষ্যোত্তরাদ্যুক্তো বিধিন্তদনুসারভঃ। সর্বং জনা ক্রম ক্রত্য মেকী ক্রত্যাত্র লিখ্যতে ।। ২২০। একভক্তানন্তরম্ভ দন্তধাবনপূর্ম-কং। সপ্তম্যাম্থ বাউম্যাং প্রাতঃ সংকল্পমাচরে ।। ১২১ ৷৷ অদঃ ডিছা নিরাহারঃ খোভূতে পরমেশ্র। ভে: কে। ২হং দেবকীপুত্র অন্মিন্জনাইসীব্রতইতি ।। ২২২ ।। कुकी व প্রাত র से गार मुश्रमानि ভিলৈঃ প্রভোঃ। ত প্রেচ নবংসর্বং শিষী চারা नू-সার হঃ ।। ২২৩ ।।নধ্যাত্রে চ শুভে তীর্থে ২ন্যত্র বা সজ্জলে ব্রতী। মূর্দ্ধি ধাতীফলৎ

ভক্ষা ভাষা নাঞ্চ চর্ব্বাচর্ব্বান্ত্বেন ভেদং ।। ২১৯ । আদিশব্দাৎ ভবিষ্যপুরাণাল্যক্তো গোবিধিস্থস্যান্ত সারতঃ। একীক্ষত্য ক্রমেণ সংঘোষ্ট্য এবং ভবিষ্যান্তর ভবিষ্যান্ত ক্রম্ট্য তৎ পদ্ধতিকার প্রম্ম
প্রাম্ নিক প্রীক্ষণ্ড দেবাচার্য্যাদিনিখন দৃষ্টা। ভন্ত দেকবাক্য ভাষাং ব্রেদং নিধ্যতে নচ কেবলমেক
গ্রন্থ ভাষাং ।। ২২০।। এবং সর্ব্বেভসাধার নিবিধি মুলিখ্যাধুনাত্র বিশেষং লিখতি একেত্যাদিনা। সপ্তম্যামেন ভক্তানন্তরং দন্তধাবন সূর্ব্বকং সঙ্কপেং কুর্যাৎ অথবাহন্টম্যাং প্রতঃ কুর্যাং।
।। ২২২।। ভবাকী প্রাভঃ সঙ্কপ্যান্তং লিখতি আদ্যেতি। যদ্যপি সক্ষপমন্ত্রে সর্বভোগ বিবিজ্ঞিত
ইত্যাদি ভবিষ্যান্তরে পাঠন্তথাপি স্থোভূতে প্রমেশ্বরেত্যাদিভবিষ্যোক্তঃ পাঠেছিক লিখিতঃ
দেবকীপুত্রেভ্যাদিবিশেষনির্দ্ধেশন শিষ্ট গণাদৃত্তথাৎ ভবিষ্যান্তরে চ প্রীমুধিন্তিংং প্রতি প্রীভগবতা স্বয়ং তথানোক্তং পরমলজ্ঞান্তনিশীলত্বাৎ এবমন্য আপুত্রং।। ২২২।। অথলোকে ক্সাতিথি
কৃত্যবং প্রাতঃ প্রকালজ্ঞান্তনাদিকং লে)কিকভক্তিরী তাপেক্ষয়া কার্য্যমিতি লিখতি
কুর্ব্বীতেতি। প্রভোঃ প্রীক্রম্বা স্থাপনাদিকং লে)কিকভক্তিরী তাপেক্ষয়া কার্য্যমিতি লিখতি
কুর্ব্বীতেতি। প্রভোঃ প্রিক্রম্বা স্থাপনাদিকং লে)কিকভক্তিরী তাপেক্ষয়া কার্য্যমিতি লিখতি
ক্রাক্রেণ্ডাভ্যাদিকি প্রত্রাদিকার স্বান্য তিলসায়ী তিলহোতা ভিলপ্রদঃ। তিলবাপী তিলাদীচ ষট্ভিজী
নাবসী দতীতি। অত্র চ নিষ্টাচারাম্ব্যারেণাট্টোন্তর্মত দ্র্বা্তাদি যুক্তেন সহস্ছিত্রঘটেন ধার্য্যা
স্বপনাদিকমপি জ্বেষ্টুং। সর্ব্বং বস্ত্রাদিকং নবমের ভগবতেহপয়েচে। শিক্ষাচারাম্ব্যারেতঃ ইতি
সর্ব্ব্রাপ্রাপ্রান্ত ক্রিনীরং। সৎ সংপ্রদায়াচারাম্ব্রারেনিবাত্রাখিলবিধি লিখনাৎ।।২২৩।। শুভে

## निनिर्दिक कि विकारित ।



मञ्जा आंदार म्हकिटिनः क्षेत्र ।। १२६॥ व्यव साधाद्विकः निकाहक स्मार मन्नाना हि। সুদেশে রচয়েদিব্যং দেবক্যাঃ সৃতিকাগৃহং ॥ ২২৫ ॥ ভূষিতং মণিভিক্ষল্পৈ বিভিটন एउ। देशद्रिश । **चारिकः कन शूरेक्श म घ्ठशक्। मिक्छिया । घ**वमूर्सः श्रुकाम । एउ ব।দ্যগীতাদিসকলুলং। দ্বারে চ শৃত্থলালোহখড্গছাগাদিসংযুত্তং। গোকুলং বিলি-খেতত গোপগোপীজনাব্তং। রক্ষপালাৎ ক গেহস্য সর্কতো ২বস্থিতান্ লিখেৎ। তন্ত্রে সর্বতোভদ্রত্বে স্থাপরেদ্ঘটং।। পাতাং তদুপরি ন্যের্দ্রেন বৈণ্বন্মব বা। দেবকাঁ স্থাপয়েভত্ৰ ম্বর্ণনানে ন বা ক্তাং। সলক্ষণাং সুপর্য্যক্ষে শুভাৎ সুভ পরোধরা। তথৈব ভগবন্তঞ্চ তদুৎসঞ্জে ন্তনন্ত্রং। নিজ লক্ষণসম্পন্নং স্থাপরে-চ্ছয়িত শুখং। তথা কুচিৎ প্রদেশে চ জীহশোদাং সকন্যকাং। জীনন্দ রোহিণীং রামং গোপান্ গোপাশ্চ গাঅপি ॥ বশুদেবঞ্দেবক্যাঃ সন্মাপে মুদিভাননং। খড্গপাণিং স্তবভঞ বিক্ষয়োৎকুল্লোচন । দেবান্মুনীংক্চ ভতোর্থে প্রণতান্ পুজ্প वर्ষिन्। গন্ধ রাপ্সরসাদী ১ শচ গীতন্ত্যাদিত ৎপরান্। কংস্থা তৎপরীবা-রান্গৃহীতাস্ত্রাৎশচ নিজয়া। মোহিতান্ স্থাপয়েৎ কাপি রক্ষায়াংকালিয়ং লিখেৎ।। ইথং ক্লন্ত্র। যথাশোভং মশক্ত্যা সূতিকাগৃহং । তত্ত্বসূর্ত্রীশ্চ বিন্যস্য প্রারভেতা চ্চনং নিশি।। ২২৬ ।। গঙ্গপুষ্পাক্ষতাদীনি বত্তল্ঞরণানি চ। নৈবেদ্যানি বিচিত্রানি ফলানি স্থাপারেরথা।।২২৭।। ততঃ শাল্পোক্তমন্ত্রেণ বিধিনাবাহ্য দেবঁকীং। প্রতি-

তীর্থে একালিন্যাদে। তদলাভে চ অন্যত্ত সজ্জলে পবিত্র বিমলজলে স্ত্রতী উপবাসপরোজনঃ।। ধাত্ৰীফলং মূৰ্দ্ধি, দস্ত্ব।তেন মস্তকং দংমৃজ্য শুকৈ: শ্ৰীন্তগৰৎস্নানাদ্যবশিষ্টেমহাপ্ৰসাদৰবৈপঃ কুকৈ-ন্তিলৈঃ কুত্রা স্নানং কুর্য্যাৎ ॥ তথা চ ভবিষ্যে ॥ উপোষিতস্ত মধ্যাহে কুত্র: কুফ্তিলৈঃ শুভৈঃ। अভৌকলং শিরে দদ্যামহাপুণাবিৰৃদ্ধর ইতি।: ২২৪।। অন্যৎ ইউদেবপুজাদি। স্থদেশে শোভন প্রদেশে দিব্যং পরমং শোভনং।। ২২৫।। তৎ প্রকারং দশ্য়ন্তদেষ ধিশিন্টি ভূষিত্মিতি-দ্বাভ্যাং। তোরণাদিভিন্চ ভূষিতং ক্লুত্বা গোকুলাদি সর্বাং লিথিত্বা স্বস্থযোগ্যস্থানে তপ্তন্মূর্জীন্চ সংস্থাপ্যার্চনং প্রারভেত পূজারম্ভং কুর্ঘ্যাৎ। নিশীতি নিশি পূজা বিধাতব্যা দেবক্যাঃ কেশ্বস্য চেতি ভবিব্যোক্তে:। তত্ৰ চ চক্ৰোদয়ে চক্ৰাৰ্য্যদানাৎ পূৰ্বং দেবক্যা ভগৰত চ ভবিষ্যে পূজোকে: শিষ্টবর্গান্থসারাচ্চ প্রথমরাত্রএব পূজারন্তো জ্ঞের ইতি দিক্॥ ২২৬॥ পূজারন্তপ্রকারমেব নিখতি গল্পেতি। আদিশব্দেন পঞ্চামৃতোদ্ধৰ ক্ৰাপ্তিক্তাদকাদীনি চল্ৰাৰ্থাৰ্থং নাথিকেলাদি চ। বস্ত্রপ্ত 🗟 ভগবদর্থং পরিধানোত্তরীয়ং শুক্লবস্ত্রযুগ্নং জেন্নং শুক্লবস্ত্রযুগচ্ছনমিতি ভবি-ষ্যোক্তে:। বৈবেদ্যানি স্তশর্করাস্হিতপায়ন্য্তপক্ষধ্যাদীনি। তথেতি সমুক্তয়াৎ বিচিত্রাণী-ভাষা কলানীতানেনাপি সম্বন্ধঃ তানি চ স্পাইং তত্ত্বতবৈশক্তানি। অর্ঘ্যপাদ্যাদিকব্যাণি চ সর্ব্যস্থাসাধারণান্যেবেত্যত্র বিশেষভোনোলিবিতানি। যদ্যপি পদ্ধপুষ্পাদীন্যপি প্রেপেকর-ণানি দ্ৰেপ্ৰজাদাধারণান্যের ভথাপি মহোৎদ্র বিশেষেহিন্মিন বিশেষতস্তুত্তদুত্য সমাহরণার্থং ক্সব্যবিশেবোপাহরণার্থক ভাষ্যাল্লিখিভানীতি দিক্ ৷৷২২৭ ৷দেবক্যাবাহনে শাল্লেকেমস্ত্রশ্চ ন<sup>মো</sup> ষ্ঠাপ্য চ তবৈ প্রাকু পুল্গাঞ্জলিমথার্গরেৎ ।। জ্রীদেবকীংয় নঞ্চোক্তং !! গান্ধড়িঃ
কিন্নরাদ্যিঃ সততপরিবৃতা বেণুবাণাদিনাদৈ ভূঞারাদর্শকু এথকর কতকরৈঃ কিন্নরৈঃ
সেব্যানা। পর্যাক্তে সান্ত্তেয়া মুদিততর মুখী পুত্রিনী সম্যগান্তে সা দেবী দেবমাতা
ক্ষয়তি সুতন্যা দেবকী কান্তরূপতি ।। ২২৮ ।। তথা ক্রিক্জদের স্য প্রাগুদাবাহনং
বুধঃ । প্রতিষ্ঠাঞ্চ বিধায়ালৈ দদ্যাৎ পুল্পাঞ্জলিং ততঃ ।। ২২৯ ।। চল্লোদয়ে বহির্গেহাৎ সংমার্জ্যাক্তোপরীন্দবে । নারিকেলাদিকং শন্থে কৃত্যা তেনার্ঘ্যমর্পয়েৎ ।।
তত্র মন্তঃ ।। ক্ষাবোদার্শবস্থুত অতিনেত্রসমুদ্ধর । গৃহাণার্ঘ্যং শশাক্ষেশ রোহিণ্যা
সহিতোমম ।। ক্ষ্যোৎসাপতে নমন্তন্তং নমন্তে জ্যোতিষাং পতে । নমন্তে
রোহিনীকান্ত অর্ঘাং মে প্রতিগৃহ্যতামিতি ।। ততোগৃহান্তরাগত্য কৃত্যা জন্ম
জন্মপুনিং । ধ্যাত্বা শ্রীভগবজ্জন কৃষ্ণান্যার্ঘ্য নিবেদয়েৎ। তত্র মন্তঃ ।। কাতঃ
কংসবধার্থায়েত্যাদি ।। ২৩০ ৷৷ ততঃ ক্ষীরাদিনা শুক্ষোদকেন তু মুখাবিধি ।
দেবকীসহিতং ভক্ত্যা শ্রীকৃক্ষং সাপয়েৎ কৃত্য ।। ২৩১ ৷৷ তত্র মন্তঃ ৷৷ যোগে-

দবৈ। শ্রিয় ইতিলক্ষীমন্ত্র এব । পুষ্পাঞ্জলিসমর্পণে চ গায়ছিরিত্যাদিল্লোকএব শিউসমতো-মত্রঃ বিধিনেতি আবাহনমুদ্রাদিগীতবাদাক্তাপুরাণপঠনাদিসর্ব্বপ্রাসাধারণো বিধিজ্ঞেরিঃ। ভূঞাবং সৌবর্ণ লঘুজলপাত্রং। ভূজারাদীনাং প্রকরে সমূহে কুতাঃ ন্যন্তাঃ করা থৈতৈভূঞা-রাদিপাণিভিরিত্যর্ধঃ। পাদাবভাঞ্জয়ন্তী এর্দেবকাশ্চরণান্তিকে। নিষণ্ণা পক্ষপ্রে পুজ্যোত ভবি-ব্যোজ্বোক্তং যদ্ধবেকীপূজনানন্তরং লক্ষীপূজনং প্রায়ঃ শিষ্টবর্গানাদৃতত্ত্বাৎ তথাত্রে নবস্যাং প্রাতঃ এতুর্গপুঞ্সমপি নাত্র লিখিতং ॥ ২২৮॥ প্রাথদিতি নিত্যপূজারাং যথাবাহনাদিকং লিখিতমন্তি তথেতার্থঃ তথা জয়ন্তীব্রতে চমন্ত্রবিশেষোলিখিতো হস্তি সোপ্যত্র সর্বোচ্ছেয়ঃ। রোহিনীযোগেন ছয়োরপানয়োরভেদাৎ। তত্ত এহি এহি জগন্নাথেত্যাদিরাবাহনমন্ত্রঃ। মনো-জ্যোতিরিতি প্রতিষ্ঠামন্ত্রঃ। পুষ্পাঞ্জলিসমর্পণেচ বিশেখরায়েত্যাদি মন্ত্রএব শিইটবর্গসম্মতঃ॥২২৯। নারিকেলং তদ্য শুভ্রসম্মাদিশকাদ্ধিপুষ্পাক্ষতানি। দ্ধিপুষ্পাক্ষতৈমিশ্রং ততােহর্ঘ্যং শশিনে সুনেইতি ভবিষ্যোক্তেঃ ।। তচ্চ সর্বাং শস্থে নিধায় তেন নারিকেলাদিনা কমলোপরি চক্রা-ব্রাঘ্যং দদ্যাৎ। যদ্যপি দেবকৈয় জীভগবতে চার্ঘ্যার্পনানস্তরমেব চক্রার্ঘ্যার্পনং ভবিষ্যোক্তরে ভবিষ্যেচোক্তমন্তি ভথাপি প্রামাণিকশিষ্টলিখিতপদ্ধতান্মনারেণ ব্যুৎক্রমেণাত্র লিখিতমিতি জেয়ং। গৃহাস্তঃপুজামন্দিরাভাশ্তরে আগতা জীভগবতোজন্ম প্রাছর্ভাবং। তমস্তুতং বালকময়ুকে-ক্ষণমিত্যাদিনা জ্রীদশমক্ষরাত্যক্তপ্রকারং ধ্যাত্মা শিক্তাচারাত্মারেণ তমজুতমিত্যাদিশ্লোকাংশ্চ পঠন । শুভनারিকেল সম্যেটনৰ শক্ষানিছিভেনার্ঘ্যমর্পথেও। নারিকেলেন শুভেণ দল্যাদর্ঘ্যং বিচ-ক্ষণঃ। কৃষ্ণায় পরয়া ভক্তা। শঙ্খে রুত্বা বিধানতইতি ভবিষ্যোক্তেঃ। জাতঃ কংস্বধার্ধায় ইত্যস্য পরভাগোহত ন সংগৃহীতঃ ভবিষাপুরাণবচনমধ্যে তথা পুর্বাংকয়ন্তীব্রতে চ লিখিতত্বাৎ এবমগ্রে প্যুহাং।।২৩০।। যথাবিধীতি নিত্য পূজায়াং স্নপনবিধিত্ ত্যগীতবাদ্যাদিপূর্বকোযোলিখিতস্তদসু-লারেণেতার্থঃ কৃতী ভত্তৎপ্রকারকুশলঃ।২৩১॥ আদিতে দেবসাতস্কুমিত্যাদি চ প্রার্থনামস্ক্রঃ।নমো-

শ্বার যোগসম্ভবার যোগপতরে গোবিন্দার নমোনমই তি ।। কুচিচ্চ। যোগেশ্বার দেবার দেবকীনন্দনার চ। যোগোড়বার নিত্যার গোবিন্দার নমোনমঃ ।।
আদিতে দেবমাতস্কুমিতাাদি প্রার্থ্য দেবকীং। গলাদীনার্পরেউদ্যানমোনেইব্য শ্রিরে
ইতি ।। ২০২ ।। আব চাবসহসুংগীতাাদিনাভ্যর্থ্য চ প্রভুং । পাদ্যাদি বস্তুভ্যাদি
প্রপদীপাদি চার্পরেং ।। তত্র পাদ্যাদিদীপান্তমন্ত্রঃ ।। ও যোগেশ্বরার যোগসম্ভবার ব্যক্তপত্রে গোবিন্দার নমোনমঃ ।। ইতি নৈবেদ্যমন্ত্রঃ বিশ্বেশ্বরার বিশ্বসম্ভবার বিশ্বপত্রে গোবিন্দার নমোনমঃ ইতি ।। ২০০ ।। বসুদেবং যশোদাঞ্চ নন্দং
রামঞ্চ রোহিণীং। অন্যাংক পূজ্রের ত্তনামমন্তর্যথাবিধি ।২০৪ ।। পকান্নানি বিচিত্রাণি প্রাণানি বিবিধানি চ। তৎকালীনফলান্যত্র তায়ুল্ফ সমর্পরেং । তত্র মন্ত্রঃ ।।
ধর্মেশ্বরার প্রম্পন্তরে পোবিন্দার নমোনমঃ ইতি ।। ২০৫ ।। নিশীথে
গুড়দর্পির্ভাং বসোর্থারিঞ্জ পাতরেং ।। ২০৬ ।। তথে কুর্য্যান্ত্রগবতাকাতকর্মা
মহোংসবং । শ্রীনালবর্দ্ধনং কুর্য্যাৎ ব্যীনিংসরণং ততঃ ।। শ্রীনামকরণং তত্ত্রলান
নুকরণন্তরা। অথাচার্য্যং সমভ্যক্ত্য কুর্য্যান্ত্রগেরণং মুদা।। গাতন্ত্যাদিনা বাল্য-

দেবৈ আহে ইতি চ গন্ধাদার্পণমন্ত্র: ইতি বিবেচনীয়ং। এবমত্রেপ্যুহাং। আদিশকংথ প্রস্থাপুপ-देनदबम्यानि॥२७२॥ প্রাদাদীতি প্রথমেনাদিশক্তেন মধুপর্কচেমনীয়াদি। দ্বিতীয়েন গত্তপুর্কাদি। ভূঙীয়েন নৈবেদ্যাদি ! ভত্তবিশেষক সর্বাপুরা সাধারণীরাদত নোলিখিত:। এবমত্রোলিখিতে।-হন্যোপ্রাপচারঃ পূজানাধারণত্বাদশেষ এবোলঃ যতোংত্র প্রায়োবিশেষভাগএব দর্শিতইভি অত হব লিখিতং ক্লতীতি।। ২৩ গা রামং শ্রীবলদেবং অন্যান্ গোপগোপীগবাদীন্ দেবানীং শচা ্ভত ক্রমূর্ত্তিনির্মাণাশক্তে চ স্থণ্ডিলে আবাহনাদিকং কৃত্ব। পূজয়েদিতি লিখিতভবিয়োওরবচন-ट्यादोक्षवाः।। ऋखित्न ऋाश्रदात्क्वर मनाऋरे ताहिनीख्या। (पवकीर वस्त्रक्व यरनाकार नक-মেব চ। বলভদ্রং তথা গোপান্গোপীগোকুলমের বেতি ভবিষ্যোত্রোক্তেঃ। তদা ত্স্য वस्राम्बारमर्भाष्ट्रिकम् देखः ७९अकात्रकः शृक्षः मक्त्रं निथिष्टाश्रस्तुतः। व्यव छित्रियाः ভবিষ্যোত্তরে চে: छः। चनामिं के वर्षाटेखः अववानिनरमाश्चेतेकः । शुक्रात्रमु विकाः मर्स्य छी-শ্দ্রামন্ত্রবিজ্ঞিত। ইতি। অতোহয়ং প্রধােগঃ । ওঁ বস্থােবায় নম ইত্যাদি । যথাবিধীতি আবা-হনাদিকং কৃত্বা ৷ কশাপোবহুদেবোয়মিত্যাদি তথা ধ্যত্তিবতারং প্রাপ্তক্ষিত্যাদেশ ভবিষ্যো-ন্তব্যক্তি নাম্পারতন্ত ক্রা পাদ্যাদিলৈ বেদ্যান্তাপ চারান্দমপ্রেদিত্য বং পুশ্ববিপূজ্য সাধারণ বিধ্যমুসারেণ পুরুরে বিত্যর্থঃ ॥ ২৩৪॥ অথ মহোৎসববিশেষস্যাস্য লক্ষণ্ট পুনত্রিয় বিশেষদমর্পণং লিখতি পকুলানীতি। খাদ্যানি চর্বাবীজেক্ষুকুড়্কাদীনি। তৎকালীনানি জন্মাইটমী সময়োদ্ভবানি ফলানি কুমাওকদলিকাদীনি চ ॥২৩৫॥ নিশীথে ত্বৰ্দ্ধরাতে গুড়যুক্তেন গৰাঘ্তেন বদোর্ঘারীং পাতয়েৎ ॥ তত্র মন্ত্র: ।। বদোঃ পবিত্রমসীতি এতচ্চ লোকে জন্মানস্তর সাধারণক্বতাং ৷ ২৩৬ ৷৷ কিঞ্চ এনালস্য এনাভি নাড্যাবর্দ্ধনং ছেদনং ৷৷ তচ্চ হৈরণ্যক্তরেণ কুর্য্যাৎ।। যথোপচারেঃ ষষ্ঠিকারে নমইতি ষষ্ঠীং সংপ্রজ্য বিধিবলিঃসরণং কুর্যাদিতি জেয়ং।। नर्सक ভগবনিবেদিতশেষেটেগৰ সিকাত।তি স্থাপনে পৃথক্ ন লিখিতং ॥ তদ্যাঃ তদ্যাঃ স্প্রি-

ক্রীড়াশ্রবণপূর্বকং ।। ২৩৭ ।। ক্রান্দে ব্রহ্মনারদসম্বাদে ।। আঞ্চলোপার্চিত্র পাপং তৎক্ষণাদের লায়তে। রাত্রৌ জ্বাগরণে বিপ্র দৃষ্টে নশ্যতি দেহিনার ।।২৩৮। প্রভাবে সভি নির্বান্ত্য নিভাকর্মাণি বৈক্ষরঃ। দেবমভ্যক্ত্য সংপ্রার্থ্য প্রণমা চ বিস্ক্রেরেং। প্রণামমন্ত্রঃ। যাং দেবমিত্যাদি সার্জ্যপদার ।। প্রার্থনমন্ত্রঃ।। শান্তিরত্তি ত্যাদি ।। ২৩৯।। অথাচার্য্যায় তৎ সর্বার্থ শ্রীমূর্ত্ত্যাদি সদক্ষিণং। প্রদায় বিপ্রান্ সন্ত্রোক্য বিদ্যাৎ পারণোৎসবং।। ২৪০।।

অথ অবণদ্বাদশীব্রত১।। ভার্ত্রস্বাদশ্যাং যুক্তায়াৎ অবণেন হি। উপোষ্য সঙ্গনে সাত্বা দেবং বামনমর্জন্তেও।। অথ তন্মাহাত্ম্যৎ।। মাসি ভার্ত্রপদে

দায়াঃ লীলায়াঃ প্তনাবধাদি কংসবধাস্তকীড়ায়াঃ অমুকরণং। আচার্য্যং নিজগুরুং যদা ব্রত থে গুরুবেন বৃতং বিপ্রাং সমভ্যক্ত ব্রালক্ষরণাদিনাসমাক্ পূজায়েদ্বা বাল্যকীড়া জ্বিজগবতঃ প্তনাবধাদিচরিতং তজুবণপূর্ব্বকং জাগরণং কুর্যাং। জাগরণবিধিক্ষ সর্ব্বেতসাধারণ এবেত্যত্র বিশেষভোনোলিখিতঃ। ২৩৭। কথা লীয়তে ইত্যপেক্ষায়ামুক্তপোষন্যায়েনাই রাত্রাবিতি। কে বিপ্রা। দুটেতমইতিপাঠে চ তমোহজ্ঞানং। ২৩৮। নিত্যকর্মাণি স্নানাদীনি। সংপ্রার্থ্য কম-ব্যুত্তাদিকমভার্থ্য বিসর্ক্রারেদিতি জন্মান্টমীব্রতার্থনির্দ্মিভ্রী দুর্বিবিশেষদ্য ব্রতান্তে গুরৌ সমসণার্থনিত্যেরা দিক্। ২৩৯।। তৎ সূতিকাগ্রোপকরণং ভক্তরগবদাদিপ্রতিমাঃ আদিশব্দেন পুর্দ্বোপকরণাদিক্ষ সর্ব্যং দক্ষিণাসহিতং প্রকর্ষণ শীর্ষ্কানিত্যেবং দন্ত্ব। তথৈব বিপ্রান্দ্র্যাক্ত ভার্মান্ত্রবং ভ্রের্থা ব্রতসমান্তিরপমহোহদবং কুর্যাৎ পরমহর্ষেণ বন্ধুভিঃ সমং ভগবন্ধহা-প্রসাদানাদ্দকং ভ্রেন্তীতেত্যর্থঃ। ২৪০।।

শয়নে শেষ বাদাত যথা শয়নে ক্ষীরাজিনছোৎ সবপ্রকারোলি খিতন্তথেত্যর্থঃ। তত্র যদাপি ভবিষোগ্তরে একাদশ্যামিত্যক্তং ভথাপি পুর্বালিখিত শয়নাদিকালনির্ণ য়মুসারেণ ছাদশ্যামিতি লিখিতং।। তিছিশেষক্ষ পূর্বমের শয়নোৎ সবপ্রকরণে লিখিভোইন্তি। ভবিষোগ্তরে চ একাদ শীভাদশ্যারভেদাভিপ্রায়েণাক্তমিতি বোজাঝাং॥ ২৪১॥ শয়নোৎসবাৎ কঞ্চিছিশেবমস্থাদপূর্বাকং লিখতি জলেতি ত্রিভিঃ।। কর্ণিকায়াঃ কট্যাঃ পরিবৃত্তিং দক্ষিণাক্ষে প্রকল্পয়েৎ ইতি পূর্বাং বামাজিন স্থাপয়েদিভার্থঃ। তৎকালবিশেষক্ষ পূর্বমের নির্ণাভোৱি॥ ২৪২॥ । ২৪০।।

अक्षा दानभी धादगांत्रिका । मर्की दानभी एकता उभवात्म मराकना । कर्लशिका-২চ্যতৎ ভক্তা। লভেৎ পুণ্যং দশান্দিকং ॥ ২৪৪॥ ফলং দত্ততানাঞ্জন্যাৎ नकश्च ७८व९ ॥ कार्यम् । मानि ভाजनाम एका वामनी व्यवगात्रिका । महको দ্বাদশী জেয়া উপবাসে মহাফলা ।। সক্ষমে সরিতঃ পুণেও দ্বাদশীং তামুপো বিতঃ। আপুরাদের চাপোতি ভাদশ ভাদশীফলং ।। ২৪৫ ।। বুধশ্রবণসংযুক্তা সৈর চেদ্রা-मभी खर्वर। অভান্তমহতী তস্যাৎ দত্তৎ ভবতি চাক্ষরং।। অর্চরিত্রা হচুতেং ভক্ত্যা লভেৎ পুন্য দশাকিকং। ফলং দত্তস্তানাঞ্চ তদ্যাৎ লক্ষণ্ডণং ভবেৎ।। ব্ৰহ্মবৈ-বর্ভে পিতাপ্রসম্বাদে। মানি ভাতপদে শুক্লপক্ষে যদি হরে দিনে।। বুধব্রবণসংযো-গঃ প্রাপ্ত তত্ত পূজিতঃ ।। প্রফছতি শুভান্কামান্বামনোমনসি স্ভান্। বিজয়ানাম সাপ্রোক্তা তিথিং প্রীতিকরী হরেং। সঙ্গমে সর্বতীর্থানাং সঙ্গমন্তত্র জার তে।। শুক্লা ভাদ্রপদে অর্গৎ ক্ষণক পুষ সংক্ষাং। ফাল্ওনে ব্লুক্তে মোক্ষ মপি उक्तरक्षाञ्गः ।। महाभूग् अमा रहाया मञ्जाम विकाश विधिः।। मर्काभाक्तरमानृत्र কায়তে তদুপোৰিণাং ।। কিঞা। সর্বতীর্থানি ভূপ্ঠে সঙ্গমে যান্তি সঙ্গমং। বিজয়া वामरत मर्स रमवानाः नकस्माजूवि ॥ हमः मर्सभूतारभयू तहमार भविगीयरा । मञ्जरम বামনং পূজ্য প্রেতযোগে ন জায়তে ॥ ২৪৬॥ বিষ্ণুধর্মোত্তরে ॥ এপরশুরাম উবাচ।।উপবাসাসমর্থনোং কিং স্যাদেকমুপোষিতং। মহাফলং মহাদেব তল্মাচক্ষ্ সুব্রত। এলিক্সরউবাচ। যারাম অবণোপেতা দ্বাদশী মহতী তুসা। তদ্যামুপো-विजः प्राजः পृक्षित्रा सनार्मन । প্রাপ্রেত্যবুগৎ ধর্মজ দাদশদ। দশীফল । । ২৪१।। কিঞ্চ। শ্রবণদ্বাদশীযোগে বুধবারোভবেদ্বদি। অভ্যন্তমত্তী রাম দ্বাদশীসা প্রকার্তিতা।। সাুনং জপাৎ তথা হোমোদানং আদং সুরার্চনং। সর্বাক্ষরাপোতি তস্যাং ভৃগুকুলোদ্ব । ভিন্মিন্ দিনে ভথা সাতো যোপি ক্চন সঙ্গমে। স গঙ্গা সান জং রাম ফলং প্রাপেত্রসংশরং। অবণে সঙ্গমাঃ সর্বে পরিপুটিপ্রদাঃ সদা।।২৪৮। विस्मयानाम्भीयूटक वृथ्यूटक विस्मयकः ॥ ভविर्याख्द श्रीयूथिकित उवाह ॥ उभ-वाजानमधीनार निरम्व पूर्करवाङ्म । এका या द्वामणी भूगा छात्रमञ्च ममान्य।। <u> এরিকউবাচ।। মাসি ভাত্রপদে শুক্রা দ্বাদশী অবণান্থিত।। সর্বকামপ্রদা পুণ্যা উপ-</u> वार्ति महाकना ।। नक्त्म महिणाः मुाजा शकामुनिष्किः कतः। (मानवामः नेमात्मा-ि नाज कार्या विहात्।।। किथा। वृथ्यवा मृश्युक्ता देनव देहन्ताममी ভবে ९। अ**छो**व विश्वकार ।। जनार नर्वर प्रकृषिक उठिव विश्वनाथात । स्वर्धामनी-

मगोक्षिकः मगोक्खभवमक्षर्भवाकः भूगाः जगामक्षित्रा नाखः ॥२८८। আध्रवार मङ्गमवि भागार ॥२८८॥ ভাত্তপদে শুক্লা আৰণদাদশী স্বৰ্গং কুৰুতে। কাঞ্জনে কুফা কলুষদংক্ষয়ং কুৰুতে। পুজ্য হৈৰব্বিদ্বা॥२८৬॥ উপোৰিতমুপোষণং॥२८९॥ পরিপুঞ্চি প্রদাঃ পুণ্যাতি শয়করাঃ॥२८৮।

यारा भूकतिष्ठ। केनाम नर्। मानक मख् वित्थकाः त्राभवाता विक्लिम्हितः। মহানদীসক্ষে চ সাত্তা দিকীন্তমাগতঃ । অবাপ পরমং স্থানং দুর্লভং সর্বামানবৈঃ। যত্র কামফলা বৃক্ষা নদ্যঃ পায়সকর্দ্মাঃ। শীতলামলপানীয়াঃ भूकति (गामरनाइताः ।। **७० (एमगामाम) विश्वाम् म्य्येकाम् नम**ভृषि**ठाञः।** कण्भः ममश्रः मूत्रमूल्यत्री जिः माकः म द्वारम मूक्तिकः गरेषव ।। किशास्ति।। वृथ्यवन मर्युक द्वापेणाः मक्त्यापकर । मानः वास्तापनर मस्यूर्शवामः भरताविधिः । मगरत्न ककू श्रष्टन धुक्त्यारत्न गाधिना। এতি कारिनाक ता काम् कामना शानमी क्रञा।। ২৪৯।। যা ছাদনী বুধযুতা অবণেন সাৰ্দ্ধং স্যাৎ সা লয়েতি কথিতামুনিভিন্তন্যে। তামাদরেণ সমুপোষ্য নরোহি সম্যক্ প্রাপ্নোতি সিদ্ধিমণি মাদি গুণোপপর ইতি ।।২৫০।৷ অথ অবণদাদশীব্রতনির্বয়ঃ ৷৷ দ্বাদদেশ্যকাদশী ৰা স্যাদুপোষ্যা অবণান্থিতা। বিষ্ণুশৃঙ্খলযোগশ্চ ভৰ্তুয়ৎ মিশ্ৰিভং যদি। অথ শ্ৰবণ हामभू । श्रीयार्क (अया। व्यवन्क्ष्म्मायुक्त हामभी यमि मछ। ए। উপোय। वामनी छ् वादामना । अप्रति ।। २०।। यमना यमा कुरुक्त वामना। नक्क শ্ৰবণং ভবেৎ। তদা সৌত্ত মহাপুণ্যা দ্বাদশী বিজয়া স্মৃতা।। ছত্ৰ দানোপৰাসাদ্য মক্ষয়ং পরিকীর্ত্তিতং । একাদশ্যা বিশুদ্ধত্বে দ্বাদশ্যান্ত পরেইহনি।। শ্রবণে স্তি শক্তস্য ব্রত্যুগ্রং বিধীয়তে॥ কিঞ্চ। অসমাপ্তে ব্রতে পূর্বে নৈব কুর্যগুদুভান্তরং। है ज्यापि वहनम्याज वाधकष्यः निवाद्य ॥ ज्याहि ভविष्याखाद ॥ ज्यापमामा प्रा-रेषाव द्वाममी नमूरभाषरप्र । नहाळ विश्विताभः मामू खरप्राप्तवका इति विषि। अभक्त उ ज्वत्म पूर्क रेकामभोमित । हिशवामः वृथः कूर्याष्ट्रवन्वामभोमित । छथाठ नातमीरा ।। উপোষ্য प्राममीर भूगार विष्णु अस्मन मर्युकार । এकाम्ख प्रवर পুণ্যং নরঃপ্রাপ্রেজ্যসংশয়ং।। বাজপেয়ে যথায়জ্ঞে কম হীনোপি দীক্ষিতঃ। সর্বাৎ ফলমৰাপোতি অনাতোপ্যহতোপি সন্। এৰমেকাদশাংত্যজ্বা দাদশ্যাং সমুপো-यगार । भूक्तवामत्र अर भूगार मर्क्षर शालाजामर मग्रमि ।। जाल्यां पि जनायार्याता ভবেত্তিথি ভয়োর্যদি। উপাদেয়ঃ সএবস্যাদিত্যতোপবসেদুধা। তথাচ অবণদাদ-

বহব ওদনা যন্মিন তথা শন্তং মঞ্চলং॥২৪৯॥ নভগ্যে ভাদ্রে সিদ্ধিং মোক্ষং শ্রীবৈকুঠলোক্ষা॥২৫০ ছাদশীতি অবণনক্ষত্রযুক্তা যদি ছাদশী স্যাৎ তনা শক্তৈরশক্তৈশ্য সর্বৈরেব ছাদশ্যেবো-পোষ্যা।যদি বৈকাদশী অবণাহ্যিতা স্যান্দাদশ্যাং অবণং নান্তি তদা সর্বৈরেকাদশ্যেবোপোষ্যা।। যদি চ তিথিক্ষয়ান্তল্রং ছাদশ্যেকাদশী অবণঞ্চ মিলিতং একন্মিয়েব দিনে অন্যোন্য মিলিতং স্যান্তদা বিষ্ণুশ্বলোনাম যোগং॥বিষ্ণুদ্বত্যানাং ত্র্যাণামেব তেষামেকত্রশ্বলাবৎ গ্রাপিত্রাৎ তেওক্ষ স্থবোপোষ্টত্যর্থং। তত্তি দেশক্ষাদাহারধ্য মাণবচনতোহত্যে ব্যক্তোভাবী ॥২৫১॥ নিক্রেণ্ডক্ষেকাদশীত্যাগেন দোষং স্যাদিতিলিশ্বতি। উপোষ্যেতি ত্রিভিংগ বিষ্ণুশক্ষেণ অবণ্যা বিষ্ণুশ্বদিং

শ্বাং প্রকৃত্য তত্তি বাজেং। তিথিনক ত্রেয়ার্যোগে হল। চৈব নরাধিশ। দ্বিকালো-বদি লভ্যেত সজেরোহ। উয়াসিকঃ। তথৈৰমাৎসে। দ্বাদশী শ্রবণাযুক্তা ক্রুয়া পুণ্য-তমা ভিথিঃ। নত্ত সা তেন যুক্তা চ ভাৰতে য়ব প্রশাসতে ।। ২৫২ ।।

অথ প্রবণনক্ষত্রযুক্তি দিশুঃপবাসং নারদীয়ে।। যদি ন প্রাপ্তিতে শ্বক্ষৎ ছাদশ্যাৎ বৈশ্ববং কৃচিছ। একাদশী তদাপে: বা পাপদ্মী প্রবণান্থিতা। উভয়োর্দেরতাবিষ্ণুঃ পুরাণঃ পুরুষোন্তমঃ। বিভেদোত্র ন কর্ত্ব্যোবি:ভদাছ পভতে নরং।। অভএব
ভবিষ্যোন্তরে।। একাদশী যদা চ ন্যাৎ প্রবণেন নমন্থিতা। বিজয়া সা তিথিঃ প্রোক্তা
ভক্তানাৎ বিজয়প্রদা ।। ২৫৩ ।। বিষ্ণুপুরাণে।। যাংকাশ্চিভিথয়ঃ প্রোক্তাঃ পুণ্যা
নক্ষত্রযোগতঃ। তান্থের তদু তং কুর্য্যাচ্চু বণদ্বাদশীং বিনেতি।। ২৫৪ ।। একাদশ্যপ্রাদে চ দ্বাদশ্যাৎ কৃষ্ণমর্চয়েছ। প্রাদুভূতোহি ভগবান্ দ্বাদশ্যামের বামনঃ।
তথাচ মহন্যপুরাণে ।। উপোষ্যেকাদশীং তত্র দ্বাদশ্যাং পূজ্যেক্রিমিতি।
অতোষদি ন লভ্যেত মধ্যান্থে দ্বাদশী দ্রা। দ্বাদশীমধ্য এবার্চেট্য বামনস্তর্হি পূরি
ভিরিতি।।

অথ প্রীবিষ্ণু শ্বলযোগং ।। মাৎস্যে। দ্বাদশীশ্রবণস্ট। স্প্লেদেশাৎ মদা। সএষ বৈষ্ণবোষোগো বিষ্ণু শ্বলসংজিতঃ।। তিমানুপোষ। বিধিবরবঃ সংক্ষাণকল্মষঃ। প্রাপ্তানুত্তমাং সিদ্ধিং পুনরাবৃত্তিদুল্ল ভামিতি। একাদৃশীপদেনাত্র তদহোরাত্র উচাতে।। অন্যথা দ্বাদশীস্পর্শন্তম্যাং নিতাং হি বিদ্যুতে। তিথি নক্ষত্রয়োর্যোগ ইত্যাদ্যং যতু দ্বিতিং। তেনাপেকলেসংযোগেইপ্যাইযামিকতেন্যুতে।। অত্রৈব দ্বাদশীমধ্যে পারণে শ্রবণহধিকে। বক্ষ্যমাণঞ্চ ঘটতেইন্যথা প্রাণ্ডিন্থা তার তংগা দ্বাদ্যা শ্বনিক্ষাণ্ড ভবেদিং। দ্বাদশীশ্রবণস্প্টেত্যিংশ্চ স্থিত ভবেদিং। দ্বাদশীশ্রবণস্টেত্যিংশ্চ স্থিত। থলু । তদ্বং সাহিত্যমেবাই পূর্কেশাদেব হেন্ততঃ।। তন্মাদয়ন্ত তত্রিব

দাদশ্যাং শ্রবণযোগে মহাদাদশীত্বেন তত্তোপবাসাং। তথানারদীয়াদি বচনেমত্ত শক্তাশক্তাদি বিশেষপরিত্যাগেন নর ইত্যাদি শামান্য নির্দ্দেশাচ্চ॥২৫২॥

বৈষ্ণবস্থাৰ অবণং কৃচিদিতি রাত্র্যাদৌ কিম্মংশ্চিৎ সময়েপীভার্থঃ॥ অন্তএবাক্তং মাৎস্যে।
ভাদশী অবণস্পৃ ফৈতি। নারদীয়ে চৈতৎপ্রকরণএব।। তিধিনক্ষত্রযোগানাং যোগশ্চৈব নরাধিপ।
ভিকলোয়দি লভ্যেত সভ্জেয়োস্থাইযামিকইতি॥২৫৩। যাঃ কশ্চিদিতি যেন কেনচিমক্ত্রবিশেষযোগেন যাঃ কাশ্চিন্তিপরঃ পুণ্যাঃ প্রোক্তাঃ তান্থ যদ্বিহিতং ব্রতং তন্তাস্থোব কুর্য্যাৎ ন তিপান্তরে
তন্তমক্ষত্রযুক্তে। তথা কাল্গুনী শুক্লা ভাদশী পুষ্যক্ষেণ যুক্তা গোবিন্দ ভাদশী নাম তদ্যামুপবাদক্রেং বিহিতং ভদ্যামের কুর্যাম্বচ পুষ্যান্ত্রিতয়ামেকাদশ্যাং এবং নিয়মশ্চ অবণভাদশীং বিনা।
আবণ ভাদশীব্রতন্ত অবশৈকাদশ্যামপি ভবতীভার্পঃ॥ ২৫৪॥ নকু তহি ভগবতোবামনদ্যান্তনমপি তবৈৰ প্রসক্ষ্যেত্র নেতি নিখতি একেতি। কৃষ্ণং ক্রিরামনত্রপং অবতারত্বেনাভেদাৎ। হি
বতঃভগবাদ শীক্ষফোভাদশ্যামের বামন ক্রপেণ জাতঃ। তথাচাইমক্ষক্ষে। জ্যোণায়াং অবণ-

विश्वा । यथा विश्वपाणिय । विक्रोत्र विश्वम्य महाराष्ट्र । अकामणी वारली के देश्वर अभी कर करवर । कि स्व मृथ्य । नाम विश्व मृश्व अक्षा वर्ष । कि स्व प्राप्त मृश्वा अक्षा कर्ष । विश्व मृथ्य । विश्व प्राप्त विश्व । विश्व प्राप्त विश्व विश्व । विश्व विश्व । विश्व विश्व । विश्व विश्व विश्व विश्व । विश्व विश्व विश्व विश्व । विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व । विश्व विश्व विश्व विश्व । विश्व विश्व विश्व विश्व । विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व । विश्व विश्व विश्व । विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व । विश्व विश

দ্বাদশ্যাং মুহূর্ত্তে হভিজিতি প্রভুরিভ্যাদি। শ্রোণায়াং শ্রবণস্থচন্দ্রইত্যর্ধঃ।। ২৫৫।। নিবিদ্ধমপীতি वकामनीयू (शिरेयाव वामनार शातगः त्र्राटः । जात्रामनाः न उर क्यां व वामनवाननीकया-দিত্যাদিমৎসাপুরাণাদি বচলৈপ্রয়োদশ্যাং পারণনিবেধাৎ। এতচ স্থৃদ্ধ্যা বৈক্ষবেতরবিষয়ক-ব্যবস্থাপেক্ষর। চেতি চ্ছেরং। অতৈর প্রবণক্ষেত্যাদিনা অয়োদশ্যামের এমার্কণ্ডেরাদিভিঃ পারণোক্তেঃ। তথা প্রায়েটবক্ষবানাং দাদশুপবাদেন সর্বত তরোদশ্যামের পারণাপতেঃ।। অত-এবং ব্যাখ্যেরং। প্রীবিষ্ণু শার্ষ্যাদ্যপেক্ষরা সর্বকর্মাদ্যনাদরেণ নিষিক্ষাপি কর্জু মুচিতং ইত্যেষা চ প্রমেশ্বস্যাইছবে। দাদশীবল্লভগ্য ভগৰতো দাদশীব্রতপ্রিয়ত্বং। অভএৰ শর্মত বৈঞ্-ৰানাং দাদশীব্ৰতগ্ৰহণাদি অূ্যত ইতি দিক্॥২৫৬॥ পারণাহে ব্ৰতপারণাদিনে দাদশ্যা: চ্ছাবণায়াশ্চ বৃদ্ধৌ সভাং শক্তশ্চেৎ ব্রভদ্বং কুর্য্যাৎ ॥ ২৫৭ ॥ নতু পারণাস্তং ব্রভং ভেরং ত্রতাম্ভে দিল ভোজনং। অসমাপ্টে ত্রতে গু:বা নৈব কুর্যাদ্ ভান্তরমিতি বিষ্পুধর্মান্তরোজেরা পারণে দোষঃ স্যাৎ, তত্রাহ নচাত্রেতি। উভয়োঃ একারশীদাদশ্যোঃ॥২৫৮॥ এবমসমর্থোব্রতমেক-মেব কুৰ্য্যাদিত্যায়াতং ভত্ৰচ অবংশন সিতা যত্ৰ দাদশী লভ্যতে কুচিৎ। উপোধ্যৈকাদশীং ভত্ৰ দ্বাদশ্যামর্চ্চবেদ্ধবিমিত্যাদি শ্রীধমাত্মক্তেরশক্তলৈকাদশ্যামেবোপবাসশক্ষা স্যাৎ অভোলিখড়ি দ্বাদশ্যামিতি। বৈক্ষবেম্বট মহাদ্বাদশীব্ৰভদ্য নিত্যত্বাৎ। ভক্ত পূৰ্ব্যমেৰ তবৈৰ লিখিভমন্তি॥২৫৯॥ নসু যথা জন্ম উম্যাং বে: ছিণ্যাদি যোগান্তাবেপ্যাপব। সঃ তথাত প্রবণযোগাভাবেপি জীবামনদেব-প্রাত্ত বিদেশক্ষাসমর্থেনোপবাস্বয়পক্ষে ভাদশ্যামুপবাস: কর্তব্যোনবেত্যাশস্থ্য লিখতি দিনে-তি।। তস্য দাদশ্যাং প্রবণযোগস্য হানিতঃ অভাবাৎ।। ষতস্তদ্যোগাপেক্ষরৈবাত দাদশ্যামুপবাৰ বিধানমিতি দিক্॥ যজেৎ পূজ্যেৎ॥ ২৬।। ছয়োভিগ্যক্ষয়োঃ দাদশী অবণয়োঃ পারণাহে জ্যু-

## अधिकृतिकृषि विवासी

সচ ব্রতবিকশেল দিভীয়বিশ্বুশৃখলে চ স্পার্টএব কেবলখাবগনিক্ষর্যে ভ ন ভ্লাদরঃ। তিখিনকত্রসংযোগ ইক্যাদিবক।মাণেভ্যঃ ।। প্রথমবিষ্ণুশ্রতে যথা ।। তলুবৃত্তি-র্ঘারের পারণাহৈ ভবেন্দদি। তত্রাধিক্যে তিথেব্ত্তে ভাত্তে সভ্যের পারণং।। यमुक्त भावमीरम् ।। विश्विनकव्याद्यार्यारम् छेभवारमा छत्वात्वम् । भावनम् न कर्ववः যাবন্ধিকলা সংক্ষয়ইভি।। ১৬১।। ঋকন্য শক্তি চাধিকো ভিশিমধ্যে হি পারণং। দাদশালখনে দেখো বহুশোলিখিতে। যতঃ ।। ২৬২ ।। তথাচোক্তৎ । তিথিনক্ষত্ৰসং যোগে উপবাসে। যদা ভবেৎ ।। ভাবদেব ন ভোক্তব্যৎ যাবলৈকস্য সংক্ষয়ঃ । বিশ্লে-ষেণ মহীপাল অবণং বর্দ্ধতে যদি ।। তিথিকয়েণ ভোক্তব্যং দ্বাদশীং নৈব লগ্নয়ে-দিতি। এবং দ্বোনিশাব্যাপ্তো চাছ্লি পারণ মীরিতং। ন রাত্রৌ পারণং কুর্য্যাদিতি হান।ত্র সমাত্র ।। অভো রাত্রিগভো দ্বাদশ্যংশোনাত্র বিচার্য্যন্তে । অভোবর্দ্ধত-ইত্যাহ পার্ণাব্যরাত্রং ৷৷ ঘতোরাতাবৃক্ষলস্কাবিপি দ্বাদশ্যভিক্রেমঃ ৷৷ অভঃ কৃতং পৌনরুক্তং ছাদশীং নৈৰ লছ্বেছ। এৰকারেণ চ পুনস্তদেৰ নিরধারি যথ। দ্বাদশ্য-नामरतानाजः कार्यााचमा च म माजः ॥ ज्या ह कारमा याः कान्हिर जिथियः প্রোক্তাঃ পুণ্যা নক্ষত্রযোগতঃ । ঋক্ষান্তে পারণং কুর্য্যাদ্বিনা শ্রবণ রোহিণীমিতি। ত্রয়োদশ্যাং পারণম্ভ নৈতদ্বিষয় মিষ্যতে ॥ ত্রয়োদশ্যামপীত্যেতদনুক্তেরদ্বিধা ততঃ। প্রত্যুতাত্র তু শক্ষেন তদ্যৈকেধ্যং প্রদশিতিং। পর্যাবদ্যোদতো ভক্ত্যা দ্বাদশী-ক্ষর এব তৎ। তথাপি সন্দিহানশ্চেলা্রীয়াচ্চরণামূতং। পারণায়াঃ পরং সম্ক্ পূরকং ভদ্ধবেদ্যতঃ। গৌতমীয়েতু ক্ষুট মেবোজং। যদৃক্ষং বা তিথির্বাপি রাত্রিং ব্যাপা ব্যবস্থিতা। দিবদে পারণং কুর্য্যাদন্যথা পতনং ভবেদিতি ॥ ২৬৩॥

অধ শ্রীবামনক্রতবিধিঃ।। নত্তা গুরুমনুজ্ঞাপার পাশ্চান্নিয়মমাচরেৎ। নহি সিধ্যেশ্যুরোর্ভক্তিং নিয়মঞ্চ বিনা ফলং।। নিয়মমন্তঃ।। একাদশ্যাং নিরাহারঃ স্থিত্তা চৈবাপরেহনি। ভোক্ষ্যেশ্রীবামনানন্ত শরণাগতবংসলেতি।। ২৬৪।। একাদশ্যা

গুরুমিতি নিজ্পুরু র্যাদ সমিহিতঃ স্যান্তর্হিতং তদভাবে আচার্যান্ত্রন বৃতং বিপ্রমেকং। পশ্চাদিতি আদৌ গুরুগেছে গল্পা পশ্চানিরমমাচরেছ। শিরন্তছ পাদরোঃ কৃত্ব। পাদৌ স্পৃষ্ট্র। চমৌলিনা। কৃতাঞ্জলিপুটোভূল্বা প্রার্থিয়িল্বা গুরুন্ততঃ। ইতি স্কান্দে জরন্তী ব্রতপ্রসংক্ষাং। নির্মাণ কল্পাদিকং। তথাচ তবৈবে নির্মাণ কল্মাপ্রোতি ন শ্রেরানির্মং বিনেতি।। ২৬৪।। একা-

রজন্যাম্বা দাদশ্যাৎ চার্চারেৎ প্রভুৎ ।। ২৬৫।। মুর্বপারয়ে পাংদ্র ভাসুবংশমরে পিবা। কু তিকাৎ স্থাপয়েৎ পার্শ্বে ছিত্রিকাপাদুকান্তথা। শুভাঞ্চ বৈণ্ৰীং ঘটি নক সূত্রং পবিত্রকং ।। ২৬৬ ।। পুলেপর্গ ক্রিঃ ফলের্গ্র হিপর্বামনং চার্ক্তরেন্ধরিং। নানা-বিধৈশ্চ নৈবেদ্যৈভাক্তভোক্তি ভিড়েদ্নৈঃ। জাগরৎ নিশি কুর্ব্বীত গীতবাদ্যাদি नर्ख रेनः ।। २७१।। এবমারাধ্য দেবেশং প্রভাতে বিনলে সতি। আদাবর্ঘ্যং প্রদাত-ব্যং পশ্চাদেবং প্রপূজয়েং। নারিকেলেন শুভেণ দদ্যাদর্গঞ্চ পূর্ববংয় তত্ত মন্ত্রা! বাসনায় নমস্তভাং ক্রান্ত ত্রিভুবনায় চ**া গৃহাণার্ছং ময়া দঙ্কং বামনায় নমোস্ভ তে** !! বামনার অর্ঘাং নমঃ ॥ ২৬৮ ॥ মৎসাৎ কুর্মাং বরাছঞ্চ নরসিংছঞ্চ বামনৎ । রামৎ तामक क्षयक ज्ञाप्ति वृक्षक किता। भाषर्शकानुतार्श्व दश नाखामूत्र निककरशाः। জুজয়োমৃ জিন্ন কাজেদর্জয়েদায়ুধানি চ ।। ২৬৯ ।। মহাপূজাততঃ কৃত্বা গোমহীৎ কাঞ্চনাদিকং। শক্ত্যাচাৰ্য্যায় দাত্ৰ্যৎ ক্ৰাহ্মণেভ্যুম্চ মন্ত্ৰতঃ ।।২৭০ ।। ক্ৰাহ্মণশ্চাপি মন্ত্রেণ প্রতিগৃহ্ণাতি মন্ত্রবিং। দদাতি মন্ত্রতোহ্যের দাতা ভক্তিসমস্থিতঃ।। তত্র দান-সত্রঃ।। বামনো বুদ্ধিদে; দাত। তব্যস্তো বামনঃ স্বয়ং। বামনশ্চ প্রতিগ্রাহী তেন মে বামনে রতি। বামনঃ প্রতিগৃহ্লাতি বামনোংপি দদাতি চ। বামনস্তারকোদ্বাভ্যাৎ তেনেদং ৰামনে নমইতি ৷৷ ২৭১ ৷৷ এবং ক্লম্বা বিধানেন ভোজনং পূষ্দাজ্যকং ৷ পূর্বং দদ্যাৎ ব্রাহ্মণেভ্যঃ পশ্চান্ত্র্ঞাত ব্রুভিরিতি ॥ ২৭২ ॥ যদ্বামনপুরাণে চ यक्विरियां खाद द्वारु । वामनरमाप्तिकः क्रमान्मादान्निथि कः विपर ।। बाक्यरेवदर्छ । शृहायः नियम । প্রতের जानम्या मह मञ्जदम । मोर्वेन् वामनः कृषः मोर्वेन् मायदन वा। যথাশক্ত্যাথ বিভ্রস্য কুন্ডোপরি জগৎপতিং। স্বর্ণপাত্রে সাুপরিছা মল্লৈরেতৈশ্চ পুজ্রেৎ।। ওঁ বামনায় নমঃ পানে কটিং দামোদরায় চ। উরু শ্রীপভয়ে গুহাৎ কাম-

নশ্যারজন্যানিতি নাদলীক্ষয়াভিপ্রায়েণ। কদাচিচ্চ স্থপয়োং বৃদ্ধায়ামপি তস্যাং পারণাপেক্ষ-রেতি । ক্রাই পাই ৬৫। স্বর্ণমন্ত্রে রপ্যামরে বংশময়ে বা পূর্ব্বপূর্ব্রাভাবে উত্রোজরন্মিন্ ইতি জ্রেং। এত কুর্ত্রে ক্রাদ্রের বিধানিক ক্রাদ্রের ক্রাদ্রের বিধানিক ক্রাদ্রের ক্রাদ্র ক্রাদ্রের ক্রাদ্র ক্রাদ্রের ক্রাদ্র

म्वाय श्वरय । भूषायाकारणाः शजू इत्यः विश्वभातित । क्षायः वानाभाष कर्छः এপিতয়ে নমঃ। মুখঞ্চ পক্ষক।খ্যায় শিরঃ সর্বাত্মনে নমঃ। ইতাৎ সংপ্রস্ত वारमाजिताण्डामा व स्रामगूकः । पमाः । मुन्यकतावार्याः नातिरकनामिजिः करेणः ॥ ওঁনমোনমন্তেগোবিক বুধআৰণসংজক। ভাষৌ্ঘসংক্ষয়ং কৃত্বা প্রেডমোকপ্রদোভৰ॥ ইতাৰ্ঘমতঃ ছেতোপানহ গোদানং দদাদঁত কমগুলুং বিশেষেণ দ্বিলাঞ্চায় বামনঃ প্রীয়ভামিতি । যথাশক্ত্যাচ দানানি দ্বিজাগ্রেভ্যঃ প্রদাপয়েৎ। কুর্য্যা-জ্জাগরণৎ রাত্রৌ গীভশাস্ত্রসমন্বিতং। শ্রহ্মাপরয়া যুক্তোনিশামনিমিষেক্ষণঃ। প্রভাতে ভোজয়ে শ্বিপ্রান্দানাৎ পারণৎততঃ। কুর্য্যাৎ স্বরং শ্রদ্যা তৎসর্বাং সফ-লভাংব্ৰছেং।। ভন্মাহাদ্ম্যঞ্ভতৈৰ ।। এবং ক্তে ত কালেয় ত্ৰতেন্মিন্ বিজয়াদিনে। ন দুর্লভতরং কিঞ্ছিলেকে হথব। পরে। ফলমস্য ব্রতস্যোক্ত দত্ব। পিত্রো-র্নরোত্তমঃ। বংশোদ্ধারকরো মুক্তিং যাতি পৈত্রাৎ ঋণাদপি। ন পাবনতরং কিঞি-দতঃপরমিহোচ্যতে। বিজয়াব্রতন্তল্যঞ্চন পরং পরিপঠ্যতে। ভবিষ্যোভরে চা। সমাপ্তে ত্রতে ভিমান্ যৎ পুণ্ডে ভিমিবোধ মে। চত্তযুগানি রাজেন্দু সপ্তসপ্ততি সংক্ষাঃ।। প্রাপ্য বিষ্পুরং রাজন্ ক্রীড়তে কালমক্ষং। ইহাগতা ভবেদ জা প্রতি পক্ষভয়ন্তর ৭ ৷ ইস্তাশ্বরথযান নাং দাতা ভোক্তা বিমংসরঃ ৷ রূপসৌভাগ্যসম্প-নোদীর্ঘায়ু নর্জাভবেৎ।। পুত্রপৌত্রৈঃ পরিবৃত্তো জীবেচ শরশাৎশতং। ২৭৩।

অথাশ্বিনক্ত্যং ।। আশ্বিনস্যসিতেপক্ষেদশাম্যাং বিজয়োৎসবং ৷ কর্তবে গা-বৈক্ষবৈং সার্দ্ধৎসর্ব্বতিজয়ার্থিনা ।। ১৭৪॥

অথ বিজয়োৎসববিধিঃ।। রথমারোপ্য দেবেশ্য স্থালক্ষারশোভিত।
সাসিতৃণধন্ধাণ পাণিং নক্তঞ্রান্তকং । স্থলালয়া স্লগ্রান্ত্ মাবিভূতি রঘূদ্দং ।।
রাজ্যেপচারেঃ প্রামাংশর্মাবৃক্ষতলং নয়ে । সাতাকান্ত শমীমুক্তে ভক্তানামভয়
ক্ষরং। অর্চন্ত্রিরা শমাবৃক্ষমর্চ্চার্রিজ্যাপ্তরে।। তর মন্তঃ ।। শর্মা শময়তে পাপ্য
শমীলোহিতকটকা । ধরিত্র জুনিবাণানাং রামস্য প্রিরবাদিনা । করিষ্যমণা যাচার যথাকালং সুথং ময়া।। তরানবিষ্কর্তী স্থা ভব প্রীরামপুলিতইতি। গৃহীদ্বা
সাক্ষামার্ত্রাং শমীমূলগতাং মুদা।। গীতবাদির্ত্রনির্ঘেষি স্ততাদেব গৃহে নয়ে ।
কৈশ্চিনৃক্তিস্ত্র ভাব্যং কৈশ্চিদ্রাব্যঞ্চ বানরৈঃ। কৈশ্চিত্রজমুথৈভাব্যং কোশলেশ্স্য ভাইয়ে। নিজ্জিতারাক্ষ্মানৈত্যা বৈরিণোক্রগতাতলে। রামরাজ্য রামরাক্রাং
রামরাক্র্যমিতি বুবন্। আনীয় স্থাপয়েদেবং নিক্সিৎহাসনে সুধ্য। তভোনীরাজ্য

ত্রতং অবণদাদশীব্রভঞ্চ পৃথকু নিরূপিতং ।। তদসুসারতক্ষ বামনস্ত্রতমিদং লিখিতং। অতোহত এত্রৈকদৃষ্ট্যাহনদেরেনে কার্য্যইভি ভাবং॥২৭৩।।

नर्सव अग्निन्तारक अत्रित्या कि ब्रह्मार्थिन। উৎकर्यक्ट्र न। ।। २१८ ।। अकानि कि की वामिकि

ইতি জ্ঞীগোপালভট্টবিলিখিতে জ্ঞীমন্তুগবন্তুক্তিবিলাসে দিব্যাবিভাবোনামূ পঞ্চদশবিলাসঃ ৷৷ ১৫ ]৷

## रवाङ्ग विवाहन ।

• অথ কার্ডিকরতাং ।। দামোদরং প্রপদ্যেহং প্রীরাধারমণং প্রভুৎ। প্রভাবাদাস্য তৎ প্রেষ্ঠঃ কার্ডিকঃ দেবিভোভবেং ।। ১ ।। ভাতি কার্ডিকরত্যাদি ক্ষান্দ পালাদিযুক্ষু টং। তথাপ্যেকত্র সংগৃহ্য সারতোত্র বিলিখ্যতে ।। ২ ।। কার্তিকেই মিন্ বিশেষেণ নিত্যং কুর্মাত বৈক্ষবং ।। দামোদরার্চ্চনং প্রাভঃ স্নানদানত্রতাদিকং ।। ৩ ।। তথা দিনবিশেষে যন্তগ্রহপূঞ্নাদিকং । কুর্য্যাদ্বিধিবিশেষেণ লিখ্যমগ্রে বিবিচা তং ।। ৪ ।।

অথ কার্ত্তিক ব্রন্থ নিত্যতা। ক্ষান্দে ব্রহ্মনার দসন্থাদে।। দুব্পুপ্যং প্রাপ্ত নানুষ্যং কার্তিকোক্তং চরেন্নহি। ধর্মণ ধর্মভূতাৎ শ্রেষ্ঠ সমাত্পিত্যাতকঃ। অব্রতন ক্ষিপেদ্রেন্থ মাসৎ দামোদর প্রিয়ৎ। তির্য্যুগ্যোনিমবাগোতি সর্ব্ধর্মাবহি-ক্তঃ।। ৫।। স ব্রহ্মহা স গোল্লচ স্থান্তেরী সদান্তী। ন করোতি মুনিশ্রেষ্ঠ যোনবঃ কার্ত্তিকে ব্রত্থ ।। ৬।৷ বিধবাচ বিশেষেণ ব্রত্থ যদি ন কার্ত্তিকে। করোতি মুনিশাদূল নরকথ যাতি সাধ্রবং।। ব্রত্ত্ত কার্ত্তিকে মাসে যদা ন ক্কুতে গৃহী। ইফ্রান্স্রিং বৃধা তস্য যাবদাহূলনারকী। সংপ্রাপ্তে কার্ত্তিকে মাসে দিক্ষোব্রতপরাঙ্গুখঃ। ভবস্তি বিমুখাঃ সর্ব্বে তস্য দেবাঃ স্বাস্বাহ । ইফ্রাচ বহু ভির্য ক্ষৈঃ কৃদ্বা প্রাদ্ধ শতা-

শ্রীভগবৎপ্রিরতমকার্জিকমাসক্তাং লিখন্ তদ্ধিষ্ঠাত্দেবং শ্রীরাধিকাসহিতং শ্রীদামেশদরং শরণং যাতি দামোদরমিতি। সেবিতঃ ক্ষৃত্যলিখনাদিদ্বারা॥ ১॥ তৎ কৃত্যাদিকক স্কার্ট্রব প্রাস্থিমিতি লিখতি ভাতীতি। আদিশকাৎ তন্মাহান্যাদি। নসু তর্হি কিমত্র তল্লিখনেন তত্ত্ব লিখতি তথাপীতি। সারতইতি তত্ত্ব তত্র বিবিধকর্মমিশ্রিতং সাধারণক বর্ত্তবে অত্রচ কেবলং তদেব বিশিষ্য লেখ্যমিতি॥ ২॥ তত্রাদৌ কার্জিকক্ত্যনিয়মনিত্যতাং লিখিষ্যন্তদর্গং সংক্ষেপেণ তত্র নিত্যক্ত্যং দিনবিশেষক্ত্যক্ষ লিখতি কার্জিক ইতি দ্বাভ্যাং। আদি শক্ষেন দীপদানরাত্রি-শেষকাগরণাদি ॥ তচ্চসর্কাং সবিশেষমগ্রে ব্যক্তং ভাবি॥ ৩॥ তথেতি সমুচ্চয়ে॥ দিনবিশেষে ক্রকাইম্যাদৌ ॥ আদিশক্ষেন স্থানাদি॥ ৪॥

কার্ত্তিকে উক্তং ক্তাছেনাভিমতং ধর্মং ব্রতাদিকং যোনাচরেৎ। অব্রতেন ব্রতং বিনা। ব্রতং চাত্রাছ্মমমানাদিনিয়মঃ কিঞ্চিক্তক্যত্যাগৰপনিয়মোবা। তত্ত্ব চ সদাম্দয়মানাদিপরাণামন্যমাসতোহত্ত কশ্চিত্তভিদ্বিশেষঃ তৈত্বস্থাহারিণাং তত্ত্র তেত্রাক্তানাং যতিপ্রভূতীনাং নামসংস্কীর্ত্তনা, দিনিয়মবিশেবোচ্চেয় ইতি দিক্। ে। অস্তী মিধ্যাবাদী। ৬।। বৈক্ষব্যতি স্বৰূপনির্দেশঃ

নি চ। ছৰ্গং নাপোতি বিপ্ৰেন্দু অক্তত্বা কাৰ্জিকে ব্ৰতং ।। মতিশ্চ বিধৰাচৈৰ বিশে-বেণ বনাশ্রমী। কার্ত্তিকে নরকং যান্তি অকৃত্বা বৈক্ষবৎ ব্রতৎ। বেদৈরধীতৈঃ কিন্তুস্য পুরাণপঠনৈশ্চ কিং। রুতং যদি ন বিপ্রেন্দু কার্তিকে বৈঞ্বং ব্রতং। জন্ম ভূডি য়ং পুণ্যং বিধিবং সমুপাজিভতে । ভক্ষীভবতি তৎসর্কমকৃত্বা কার্তিক্ত্রতং। যদন্ত্রক্ষ পরং জপ্তং কৃত্রক সুমহত্তপঃ। সর্বাৎ বিফলতামেতি অকৃত্বা কান্তিকৈ ব্রতং। সপ্তজন্মান্ত্রিতং পুণ্যং বৃথা ভবতি নারদ।। ভরুত্বা কার্ত্তিকে মাসি বৈক্ষবং ব্রত-মুত্তমং।। পাপভূতান্ত তে জেয়া লোকে মন্ত্যা মহামুনে। বৈক্ষবাখ্যৎ ব্ৰতং হৈত্ত কৃতং কার্ত্তিকে শুভং।। কিঞ্চ। অকৃত্বা নিয়মং বিফোঃ কার্ত্তিকেহঃ কিপেয়রঃ। জনা-জিভিস্য পুণ্যস্য ফলৎ মাপোতি নারদ।। ৭। কিঞ্চ। নিয়মেন বিনা চৈব যোনয়েৎ কার্ডিকং মুনে ।। চাত্তর্মাস্যং ভথা চৈব ব্রহ্মহা স কুলাধমঃ ।। ৮ ।। কিঞ্চ ।। পিশু-দানং পিতৃণাঞ্চ পিতৃপক্ষে ন বৈ ক্তং। ব্রতং ন কার্ত্তিকে মাসি প্রবেণ্যামূবি फर्भार । हिटल नात्मालि ভোবि सूर्या पन्नानः न न इंडल । न इंडा मर्फ की पूर्वा आव-ণে রোহিণান্টমী।। সঙ্গমে ন ক্তা যেন দ্বাদশী অবণা ন্বিতা।। কুত্র যাস তি তে নূঢ়া নাহং বেলি কলিপ্রিয়।। ১।। পালে চ জ্রীশৌনকাদিমুনিগণসম্বাদে।। মানুষঃ কর্মা ভূষৌ যঃ কার্ডিকং নয়তে মুধা । চিন্তামণিং করে প্রাপ্য ক্ষিপতে কন্দ মাযুনি ।। নিয়মেন বিনা বিপ্রাঃ কার্তিকং যঃ কিপেন্নরঃ। রুফঃ পরাঙ্ম্থ তসঃ হক্ষাদূরেছা-হস্য বল্লভঃ ।। ১০ ।। ভত্ৰ বিশেষেণ সুংনদানাদি সংক্রম নিভ্যত: ।। স্কান্দে ভতৈব ।। টংর্নজৎ ছতং জপ্তং ন সাুনং ন হরেক্তিং । ন ক্তৎ কার্তিকে পুত্র দিলাতে বৈ নর ধেমাং।। কিঞা। হৈর্ন দত্তং ভ্রুৎ জপ্তং কার্ত্তিকে ন ব্রভংক্লতং। তেনাত্ম: হারিতো নূনৎ ন প্রাপ্তং প্রাথিতিৎ ফলং।। ১১।। কিঞা সংপ্রাপ্তে কার্তিকে মাসি যেরতা ন জনাদ্দনে। তেয়াৎ সৌরিপুরে বাসং পিতৃভিঃসহ নারদঃ ॥ ১২ ॥ কিঞ্।। কার্তিকে-নার্চিতোথৈস্থ ভক্তিভানেন কেশবং। নরকং তে গমিষ্যন্তি যমদূভৈস্থ যক্তিভাঃ ।। ১৩। জনকোটি সহপৈত্ত মানুষ্যৎ প্রাপ্যদুর্ল ভং। কার্ত্তিকেনার্কিতোবিষ্ণৃহ্ণিরিতৎ एक क्रम रेव।। विष्णाः शूका कथा विष्णार्थ्य स्वानाक मर्गनर । न ভराद कार्डिएक यगा इछि পুन्तर ममास्मितर ।। >8 ।।

মর্ক্রস্যাপি ক'র্ত্তিক্ত্রত্বস্য বিষ্ণুপর্ক্ষাৎ ॥ ৭ ॥ তথা চান্তর্মাস্যমিতি চান্তর্মাস্যত্রত্বস্যাপি নিত্যত্বং দশ্যিত্বা দৃষ্টান্তব্রেলাজোদ। ক্রমিতি ॥ এবমগ্রেপি । ৮ ॥ আমর্দ্ধকী আমর্দ্ধকাত্রতং । এবমগ্রেপি ॥ ৯ ॥ মুধেতি নিয়মং বিনেতার্থং ॥ ১০ ॥ এবং সামান্যতোত্রভ্বস্য নিত্যতাং লিখিত্বেদীনাং দানাদিকর্মবিশেষস্য লিখতি বৈন্দপ্তমিত্যাদি বর্জ্ ভালা ব্রতং কুজু, দি কিঞ্জিজ্জাত্যাগাদি বা ॥ কিয়া দন্তাদিৰপমেভন্ধার্ত্রে তং । পুজ্র হে শ্রীনারদ ॥ ১১ ॥ ন রতাং পুজাদিনা ন ভক্তাং প্রীতিং ন ক্রতবন্থোবা ॥ ১২ ॥ ভক্তৌ জ্ঞাব একাপ্রতা তেনেতার্থং ॥ ২৩ ॥ স্থানমিতি পাঠে স্থানমিত্যর্থং । তেনাপি পুলৈব লক্ষাতে ॥ ১৪ ॥

অথ কার্তিকমাহাত্মাং বার্তিকস্য তু নাহাত্মং প্রাক্ সামান্যেন লিখ্যতে। ভতোবিশেষভন্তত্ৰ কম্পেশাদি ভেদতঃ। ১৫॥ অথ সামান্তঃ ক্ষান্দে ভতৈৰ। কাৰ্ডিকস; ত্ত মাসস্য কোট্যংশেনাপি নাইতি ৷ সর্বতার্থেযু যৎস্থানৎ সর্বদানেষু ষৎ ফলং।। ১৬।। একতঃ সর্বভীর্থানি সর্বে যজ্ঞাঃ সদক্ষিণাঃ। একতঃ পুস্করে বাসঃ কুরুক্তেত্র হিমাচলে। মেরুওল। সুবর্ণানি সর্বাদানানি চৈকতঃ । একতঃ কার্ডিকো-বংস্ সর্বাদ। কেশাব প্রিয়ং ।। ১৭ ।। যং কিঞিং ক্রিয়তে পুণাং বিষ্ণু দুদিশা কার্মিন্তিকে। তদক্ষরং ভবেৎ দর্বাৎ দত্যোক্তং তব নারদ।। ১৮।। কার্ন্তিকং খলু रेव मानः नर्समारमषु छाउमः । भूगानाः भव्नः भूगाः भावनानाकः भावनः ॥ ५৯॥ किथा। यथा नमीनाः विध्यन् देशनानारेक्षव नातम । उन्धीनाक विश्ववर्ष ক্ষয়োনৈৰোপপদ্যতে ।। পুণ্যং কাৰ্ত্তিকনাসে তু যৎকিঞ্চিৎ ক্ৰিয়তে মুনে । ন ভন্যান্তি ক্ষোত্রকন্ পাপন্যাপ্যেবমের চ ।৷ ২০ ৷৷ ন কার্তিকসমোমানে৷ ন ক্তেন সমং যুগং। ন বেদসদৃশৎ শাস্ত্রং ন তীর্থং গঙ্গয়া সমৎ। কার্তিকংপ্রবরো মানো বৈষ্ণবানাং প্রিয়ঃ সদা ৷৷ কার্ত্তিকং সকলং যস্ত ভক্তা সেবেত বৈষ্ণবং। পিতৃনুদ্ধরতে সর্বান্নরকস্থান্ মহামুনে ।। পালে চতত্তিব ॥ ২১ ॥ স্বাদশস্থপি মানেষ্ কাত্তিকঃ কুঞ্বল্লভঃ।। তিমান্ সংপূদিতোবিষ্ণুর পেকৈর প্যুপায়নৈঃ। দদাতি বৈক্ষবং লোকনিতে বং নিশ্চিতং নয়। যথা দামোদরোভক্তবংসলোবিদিতো-खरेनः । তमायलाम् मामामः खल्यमश्रीक्रकातकः । मूल्ल लिमानुरवादमः । प्रि নাং ক্ষণভঙ্গুরঃ। তত্রাপি দুর্লুভঃ কালঃ ক।র্ত্তিকোহরিবরভঃ ।। দীপেনাপি হি হত্রা-সৌ প্রীয়তে হরিরীশরঃ । শুগতিঞ্চ দশতে।র পরদীপপ্রবোধনাৎ ॥ ২২॥ তথবত মাছাত্মাং ।। ক্ষান্দে ভত্তৈব।। ব্ৰতানামিছ দৰ্কেষামেকজন্মানুগৎ ৰুলং। কান্তি কৈ তু ত্রতস্যোক্তৎ ফলং জন্মশতানুগং ।। ২৩ ।। জক্রতীর্থে বিপ্রেন্দু কার্তিক্যাং সমু-পোষ্য চাসাত্ম যথ ফলমাপোতি ভচ্ছা বৈক্ষৰ ব্ৰতং ॥২৪ ॥ বারাণ্সাং কুরুক্তে নৈমিষে পুরুরে২র্কুদে। গত্ব। যৎ ফলমাপোতি ব্রতংক্ত্রা তু কান্তি কৈ।

তত্র কার্ত্তিকে কর্মাদিভেদেন যোবিশেষস্তেন। আদিশব্দান্তীর্থাদি॥১৫।। কার্ত্তিকস্ কার্তিক-রুত্যমাহাত্মস্য কোট্যংশান্যমেকেনাপ্যংশেন সর্বাতীর্থ স্নানাদিকলং সমতাং নাহতীত্যর্থঃ॥১৬॥ সর্বাদা কলিকালাদাবিপি॥১৭॥ সত্যোক্তং সত্যমুক্তং॥১৮॥ কার্ত্তিকং উদ্ভমং বিদ্ধীতি শেষঃ॥১৯॥ পাপস্যাপ্যেৰমিতি কার্ত্তিকে রুত্স্য পাপস্য ক্ষয়োনাস্তীত্যর্থঃ অতঃ কার্ত্তিকে যত্তঃ সর্বাধা পাপং পরিহরণীর্মতি ভাবঃ॥২০॥ তত্র শ্রীনারদশৌনকাদিসহাদএব।।২১॥ উপায়নৈঃ উপচারৈঃ॥২২॥ ত্রতং কার্ত্তিকরুত্যনিয়মস্তস্য যৎ ফলং কার্ত্তিকত্রতোৎপদং পুণাৎ ভক্ষমণতান্যস্থাক্তিতীত্যর্থঃ॥ পাঠাস্তরেত্ত তথৈবার্থঃ॥২৩॥ বৈষ্ণবং ত্রতং কার্ত্তিকনিয়মং শ্রুত্বাপি তদাপ্যেতি॥২৪॥ পিতৃত্তিঃ পিতৃত্যঃ॥ যদ্যকরণাদিনা পাতিত্যং

অনিফ্ৰী চ সদা যজৈ নঁ কৃত্বা পিতৃভিঃ স্বধাং। ত্ৰতেন কাৰ্ডিকে মাসি বৈক্ষৰম্ভ পদং একেং॥ ২৫॥ প্রবৃত্তানাঞ্চ ভক্ষ্যাণাং কান্তিকৈ নিয়মে ক্তে। অবশ্যং কৃষ্ণকপদ্ধ প্রাপ্যতে মৃক্তিদং শুভং ।। কিঞ্চ। ত্রাহ্মণঃ ক্ষতিয়োবৈশ্যঃ শূদোবা মুনিসন্তম। বি-যোনিং ন ব্ৰদ্ধত্যেব বুভংক্ষা তু কান্তি কৈ । কিঞ্চ। কান্তি কৈ মুনিশাৰ্দূ ল স্বশক্ত্যা বৈষ্ণবংত্রত । যা করোভি যথোজন্ত মুক্তিন্তস্য করে স্থিত।। সুপুণ্যে কার্ভিকে মাসি দেবৰ্ষিপিত্ৰেৰিতে। ক্ৰিয়মাণে ব্ৰতে নুণাং স্বংপেপি স্যান্ত্ৰিক্সং ॥ অথ ভব্ৰ কৰ্মবিশেষমাহাত্ম্য**্ৰ কাল্দে ভ**তৈৰ। দানং দত্তং ভূতং জপ্তৎ ভপ*ৈ*চৰ ভ**থা** ক্নৃতং। ভদক্ষয়ং ফলং প্রোক্তং কার্ত্তিকে চ দ্বিজ্ঞোন্তম। কিঞ্চ। যথ কিঞ্ছিৎ কার্ত্তিকে দক্তং বিষ্ণুমুদ্দিশ্য মানবৈঃ। তদক্ষয়ং লভ্যতে বৈ অন্নদানৎ বিশেষভঃ। ২৬।। কিঞ্চা যন্ত সম্বৰ্সরং পূর্ণ মগ্নিহোত্রমুপাসতে। কার্দ্তিকৈ স্বৃত্তিকং কৃত্তা সমমেতন সংশয়ঃ।।২৭।। কান্তিকৈ যা করোভ্যেবং কেশবালয়মণ্ডলং। স্বৰ্গছা শোভতে সাতু কপোতী পক্ষিণী যথা। যা করোভি নরোনিত্যং কান্তিকৈ পত্র ভোজনং । ন স দুর্গতি মাপোতি যাবদিন্দ্রাশ্চত্দ শ। জন্মপ্রভৃতি যৎ পাপং মানবৈশ্চ ক্লতং ভবেৎ । তৎ সর্বাং নাশ মাপ্রোভি ত্রহ্মপত্রেষু ভোজনাৎ ।। সর্বামফলং ত্যা সর্বভীর্থফলং লভেং। নবাপি নরকৎপশে। দুকাপত্রেবু ভোজনাও।। ২৮।। ত্রকা চৈষ সমৃতঃ সাক্ষাৎ প্রভাশঃ সর্বকামদঃ।। মধ্যমং বজ্জিতং পত্রৎ শূদ্রস্য মুনিসন্তম। ভুঞ্জনরক-মাপোতি যাব দিন্দু কত কুদা। তিলদানং নদীসানং সংকথা সাধু সেবনং। ভোজনং ব্র ক্ষপত্রেষু কার্ত্তিকে মুক্তিদায়কং।। জাগরং কার্তিকে মাসি যং করোভারুণোদয়ে। দানোদরাথ্রে বিপ্রেন্দু গোসহস্ফলংলভেৎ । জাগরং পশ্চিমে যামে যঃ করোতি মহামুনে। কার্ত্তিকে সন্নিধৌ বিষ্ণৈন্তৎপদ্শ করসশস্থিতং॥ ২৯॥ সাধুসেবা গ্রাং গ্রাসঃ কথা বিফোরথার্চনং। জাগরঃ পশ্চিমে যানে দুর্লভঃ কার্ত্তিকে কলো। ৩০।। কিঞা। জলধেনুসহসুঞ্চ ব্যসংস্থে দিবাকরে। তোয়ৎ দত্ত্বা যদাপোতি সানং রুত্বা তু কার্ত্তিকে।। সন্নিহত্যাৎ কুরুক্ষেত্রে রাভ্গ্রন্তে দিবাকরে। সূর্য্যবারেণ যৎস্নানং তদে-কাহেন কার্ত্তিকে ।। পিতৃনুদ্দিশ্য যদত্তং কার্ত্তিকে কৃষ্ণবল্পতে ।। তল্লোদকৎ মুনি-শ্রেষ্ঠ অক্ষয়ং জায়তে নৃগাই ।। ৩১ ৷৷ কিঞ্চ। গীতশাস্ত্রবিনোদেন কার্তিকং যৌন-

স্চিতং তথাপি কার্ডিকত্রতেন বৈষ্ণৱপদং যাতি । ২৫॥ প্রবৃত্তানাং নিত্যং ক্রক্ষ্যানানানানিত্যর্থঃ ।। নির্মে সঙ্কোচে কিঞিৎ ত্যাগে ক্রতে সতীত্যর্থঃ ।। ক্রফ্রপত্মং ক্ষ্মান্তপ্যং । মুক্তিদং সংসার্ভ্যুথমোচনং শুভং পর্মমঙ্গলং স্থ্যবন্ধিত্যর্থঃ ।। তত্ত্বের শ্রীক্রক্ষাক্ষদমোহিনীসমাদেও মুক্তিনাধকমিতি পাঠে মুক্তিঃ সাধিকা বস্য তৎ । বদা অকারপ্রশ্লেদেও অমুক্তিঃ ক্লেফ্র নত্যান্তিংসাধকং । বিঘোনিং ক্র্ক্স পাশৈর্ক্তির্তির পি ন প্রাপ্তোত্তি । দীয়ত ইতি দাদসন্ধাদি ।।২৬।। যুক্ত কান্তিকে স্বন্ধিকং ক্র্যা স্থিতঃ কুর্যাদিতি বা পাঠঃ ।।২৭। ত্রহ্ম পলাশর্ক্ষশুস্য পত্রেরু ॥২৮।। পশ্চমে অস্থ্যে ।। তস্য বিক্ষোঃ পদং তস্য ক্র সংস্থিতং ॥ ২৯ ॥ ছল্ল ভঃ মহাভাগ্যেনৈর সিদ্ধান্তি তীত্যর্থঃ ॥ ৩০ ॥ সংনিহ্ত্যা নাম জ্রেশ্বাং প্রাপোত্যর্থঃ ॥ ৩১ ॥ ব্র্মাত্র সংখ্যা যাবন্তি

রেলরঃ । ন তস্য প্নরাবৃত্তির্মরা দৃষ্টা কলিপ্রিয় ।। কিঞা। প্রদক্ষিণঞ্জ মং কুর্য্যাৎ कार्ङ्क विकृतवानि । भार भारत्याप्रथम् क्रम्णानी खावत्र ।। नीच वाम क्र নৃত্যক কার্ডিকে পুরতোহরেঃ। যঃ করোতি নরোভক্ত্যা লভতে চাক্ষমৎ পদৎ।। হরেনামনহসাখ্যং গজেন্দুস্য চমোকণং। কার্তিকে পঠতে যন্ত পুনজর্ম ন বিদ্যতে। কার্তিকে পশ্চিমে যামে ন্তবৎ গানৎ করোতি যং ৷ বসতে খেতদ্বীপে তু পিতৃভিঃ সহ নারদ।। নৈবেদ্যদানেন তু হরেঃ কার্জিকে যবসংখ্যয়া । যুগানি বসতে স্বর্গে তাবস্থি মুনিসভম।। ৩২।। অগুরুদ্ধ সকপূরিৎ যোদহেৎ কেশবাগ্রতঃ। কার্ত্তিকে জুমুনি শ্রেষ্ঠ যুগান্তে ন পুনর্ভবঃ।। ৩৩ ।। কিঞ্চ। নিয়মেন কথাং বিষ্ণো র্ঘে শূণ্তি চ ভা-বিতাঃ। লোকাৰ্দ্ধ লোকপাদয়া কার্ভিকে গোশতং ফলং।। ৩৪।। সর্বধর্মান্ পরি-ত্যজ্য কার্ত্তিকে কেশবাগ্রতঃ। শাস্তাবতরণৎ পুণাং শ্রোতব্যঞ্চ মহামুনে। শ্রেয়সা লোভবুদ্ধা বা যঃ করে।তি হরেঃ কথাং। কার্ত্তিকে মুনিশাদ্লি কুলানাং তারয়ে-**ष्ट्रिंग । निर्छार भाजि वितासन कार्न्डिकः यः किर्पाने तः। निर्फार्ट्य मर्वा भागिन** यक्षायू च्यन १ ल त्व १। न ज्या ख्राटिन मारेन मं येरेक्टर्ला श्रक्त । यथा मा ख्रक्था लारिनः कार्खिक अधुमृतनः।। कार्खिक मूनिमाम् ल यः मृत्नाि हत्तः कथारः। न निख-ব্ৰতি দুৰ্গাণি জন্মকোটিশতানি চ।।৩৫।। যঃ পঠেৎ প্ৰয়তোনিভাং শ্লোকং ভাগবতৎ मूरन। व्यक्षीममानु वानानाः कार्खिक कनमानु यार ॥ ७७॥ किथा मसीन् धर्मान् পরিত্যজ্য ইন্টাপূর্তাদিকামরঃ ৷ কার্ডিকে পরয়া ভক্ত্যা বৈষ্টবেঃ সহ সংবদেশাত গা কার্ত্তিকে ভূমিশায়ী যো র ক্ষালারী হবিষাভুক্। পলাশপত্রং ভুঞ্গানো দামোদর মথা-र्कत्त्र । म मर्सभा छकः रिखा रेवकूर्ण इतिमित्रियो । स्मामरक विस्मृतमृत्ना छक्ना-नन्निवृত्यः।।৩৮।। কিঞা কার্তিকং সকলৎ মাসং প্রাক্তানু । জপন্ रिविश्रजूर्मासः नर्मभारेभः अगुठारा। १००। कार्जिक नितामानः यः कूर्याएमक टकाष्ट्रनः मृत्रम्ठ वस्रवोर्याम्ठ कार्खिमार्म्ठ म स्वायाखा। शिक्षा भवाष्ट्राक्षी ह कार्खिक शूक्रसानद्रः। निष्णाभः महाखू नेत्वमहर इत्वर्क्षा विमूहहरू। मध्यस् মৈশ্বং পত্তং বৰ্জ্যে ব্ৰাহ্মণেত র:।। কিঞ্চ। অপরাধসহসূতি পাতকানি মহান্তাপি। ক্ষমতে হস্য হরিদে বিঃ পূজিতঃ কার্ত্তিকে প্রভুঃ ।। নৈবেদ্যং পায়সং বিফোঃ প্রিয়ং খণ্ডং ঘৃতান্বিভং। বিভন্না তত্ত্ব ভুঞ্জানো যজসাম্যং দিনে দিনে।। ৪১।। তত্ত্বিব

देनदिमानि তाविष्ठ यूर्गानि। निक्षिि পाঠिशि उरेश्वार्थः॥ ७२॥ यूर्गास्त्रिश निक्षा ७०॥ छाविछ। छावस्त्रुकाः। एवसः रगामजमानकनः नग्नः॥ ०८॥ विरम्पेठः कार्छिक निष्ठः नक् छावस्क्षामा हान्यामाह नर्सि शिक्षि शिक्षिः॥ क्रिंगि चाश्रमः॥ ०८॥ छात्रवणः छत्रवण्यतः छात्रवणः अध्या छात्रवणः छत्रवण्यतः । ०८॥ छात्रवणः छत्रवण्यतः । ०८॥ च्याप्रवणः नश्ममाहान्यामाह नर्सानिष्ठि॥ ०१॥ विष्ट्रवणः नाक्ष्यामिधारिकः॥ ०५॥ विष्ट्रवणः नाक्ष्यामिधारिकः॥ ०५॥ प्रास्तः विष्टर्द्वाभाषः। नास्त्रहेष्टिया शाकः॥ ००॥ न्याः नर्सिनिक्ष्यान्। वस्त्रीर्याः महाश्राक्षाक्षः॥ १॥ वस्त्रामाः। वस्त्रमान्। वस्त्रीर्याः महाश्राक्षाक्षः॥ १॥ वस्त्रमानः वस्त्रमानः नष्ठिष्टिकः । १॥ ।

শ্রীক্ষণত্যা সমাদে। সানং জাগরণং দীপং ত্তলসীবন পালনং। কার্ভিকে যে প্রকৃত্রি তে নর। বিষ্ণু মূর্ভরঃ ।। ৪২ ।। ইতাং দিনত্রয়মপি কার্ভিকে যে প্রকৃত্রিত। দেবানামপি তে বন্দ্যাং কিং বৈরাজন তৎ ক্বতং ।। তত্রিব কার্ভিকের তাঙ্গানি।। হরিজাগরণং প্রাভঃ সানং ত্লমিদেবনং । উদ্যাপনং দীপদানং ব্রভানে তানি কার্ত্রিকে । পঞ্চতির্কৃত্রকৈরে ভিঃ সম্পূর্ণ কার্ত্তিকে ব্রভী । ফলমাপ্যোতি তৎ প্রাক্তং ভুক্তিমু ক্রফলপ্রদং।। বিক্ষোং শিবুস্যবা কুর্য, দোলয়ে হরিজাগরং। কুর্যাদেশত্র্মাল বা তুলনীনাং বনেবু চ ।। আপদ্গতোষদাপ্যস্তোন লভেৎ সবনায়সঃ।। বাধিতোবাপুনং কুর্যাদিফোর্নামাপমার্জনিং। উদ্যাপনং বিধিং কর্ত্ত্মশক্তোযোব্রতে হিভঃ। ব্রাহ্মণান্ ভোজয়েছক্ত্যা ব্রতসম্পূর্ণ হেতবে।। জশক্তোদীপদানস্য পরদীপান প্রবেধিয়েৎ। তেষাং বা রক্ষণং কুর্যাহ বাভাদিভ্যঃ প্রযন্তঃ। অভাবে ক্তলসীনাঞ্জির ক্রেক্ষরং দিজং। সর্বাভাবে ব্রভী কুর্যান্ত্রান্তানাং গ্রামপি। সেবাং ধা বোধিব টয়োব্র তিসম্পূর্ণ হেতবে।।

অথ দীপদানমাহান্ত্য ।। ক্ষান্দে তত্ত্বৈ ।। ক্ষত্বা কোটি মহসুদি পাতকা ঐ বহ্নাপি । নিমেষার্জেন দীপস্য বিলয়ং যান্তি কার্তিকে ।। ৪৩ ।। কিঞ্চা শূণু দীপস্য মাহান্ত্যং কার্তিকে কেশবপ্রিয়ং । দীপদানেন বিপ্রেন্দুন পুনর্জায়তে ভুবি ।। রবি-গ্রহে কুরুক্ষেত্রে নর্মাদায়াং শশিপ্রহে । তৎ ফলং কোটিগুণিতং দীপদানেন কার্তিকে ।। ঘতেন দীপকোষস্য তিলতৈলেন বা পুনঃ । জ্বাতে মুনিশাদ্র্ল অধ্যমধেন ভস্য কিং ।। মন্ত্রহীনং ক্রিয়াহীনং শৌচহীনং জনার্দ্ধনে । সর্বং সম্পূর্ণতাং যান্তি কার্তিকে দীপদানতঃ ।। ৪৪ তেনেইং ক্রন্তভিঃ সর্বৈঃ ক্রন্তং তীর্থাবিগাহনং । দীপদানং ক্রন্তং ঘেন কার্তিকে কেশবাপ্রতঃ ।। তাবলার্জন্তি পুণানি স্থর্গে মর্ত্রেরসাভলে । যাবল্ল জ্বাতিকে কেশবাপ্রতঃ ।। তাবলার্জন্তি পুণানি স্থর্গে মর্ত্রেরসাভলে । যাবল জ্বাতে জ্যোতিঃ কার্তিকে কেশবাপ্রতঃ ।। ৪৫ ।। ক্রন্তে চাপি পিত্রভিগাথা গাতা পুরা দিল্ল । ভবিষ্যতি কুলেংআকং পিত্রভক্তঃ সুতোভুবি ।। কার্তিকে দীপদানেন সন্তোবন্ত কেশবং । মুক্তিং প্রাণস্যামহে নূনং প্রসাদানজ্বপাণিনঃ ।। কিঞ্চা মেক্রমন্দারমাত্রানি কত্বা পাপান্যশেষতঃ । দহতে নাত্র সন্দেহো দীপদানাজু কার্তিকে ।। গুহে বায়তনে বাপি দীপং দদ্যাচক কার্ত্তিকে । পুরতোবাসুদেবস্য মহাক্রবিধান্নিঃ ।। ৪৬।। সজ্বাভোমানুষোলোকে সধন্যঃ সচ কর্তিমান্ । প্রদত্তঃ ক্রানিধানির ।। প্রদত্তঃ মন্ত্রিকানির ।। প্রদত্তঃ মানুষ্বালোকে সধন্যঃ সচ কর্তিকান্ । প্রদত্তা

स्रानः कागतगर निर्णः ताजास्रगामित्यग्रकः ॥ विष्णु म्र्डिः विष्णु माकाणः श्रान्य खीर्ण्यः ॥ ८ ॥ कल्लाकाणिमभूगानि वाला यानि लाककानि ॥ कृषा बेर्ज लाठि खिलानाज म्पदः ॥ वहनि महास्रालि विविधानाजीजि वा ॥ ८० ॥ कृक्ष्रक्रजामो विवस्त त्रविश्रशामो मानामिना यर कलः ॥ सन्तामिशीन कर्नाकान यर कृष्ण जर । यदा कर्नाकान मौलान र वेजिनस्कः ॥ ८८ ॥ क्यां कर्मा विश्वा कर्नाकान प्रतिकालि माना । सन्ति विव्या क्यां विश्वा कर्मा क्यां विश्वा कर्मा क्यां विश्वा कर्मा क्यां विश्वा क्यां विश्वा कर्मा क्यां विश्वा कर्मा क्यां विश्वा क्यां क्यां

কার্ত্তিকে মাসি দীপোবৈ মধুছাগ্রতঃ। নিমিষাদ্ধাদ্ধমাত্রেণ দীপদানেম কাল্তিকে। ন'তং ক্রন্তঃ প্রাপ্যং ফলং তীর্থশতৈরপি। স্বানুষ্ঠানহানোপি স্বপাপ-রতোপি সন্। পূয়তে নাত্র সন্দেহে। দীপৎ দত্ত্ব কার্ত্তিকে । ভন্নান্তি পাভকৎ কিঞ্চিত্রিবু লোকেষু নারদ। হন্ন শোধয়তে দীপঃ কার্ত্তিকে কেশবাগ্রতঃ। পুরতোবাসু-দেবস্যদীপং দত্ত্ব। তু কার্ত্তিকে। প্রাপ্নেতি শাখত স্থানং সর্ববাধাবিবজ্জিতিং। यः कूर्यता का वि रके मामि कपृ (तन जू मी भक्ष। चाम मान्य विस्मायन जमा भूनार দদামি তে। কুলে তস্য প্রসূতা যে যে ভবিষ্যন্তি নারদ। সমতাতাশ্চ যে কেচিন্দেযাং সংখ্যান বিদ্যতে ।। ক্রীড়িছা সুচিরং কালৎ দেব:লাকে যদৃচ্ছয়া ৷ তে সর্বে মুক্তি-माशास्त्रि अनामाकज्ञभागिनः ॥ किथा ॥ मृत्वताकिन वित्याम् कास्त्रिक कम्पतः লয়। দ্যেত্যেদ্যোমহাভাগ পুনাত্যাসপ্তমং কুলং।। কান্তিকে দীপদানন্ত কুর্য্যা-দেঘাবৈষ্ণবালয়ে। ধনং পুত্রো যশঃ কীন্তিভিবেন্তস্য চ সর্বদা।। ৪৭ ।৷ যথাচ সথনা-प्रक्तिः नर्यकार्छयु मृनाऽर्छ । छथाह मृनाऽर्छ थर्खामीनमारन न मश्नाः ॥ १৮॥ কিঞ্চ ॥ নির্ধনেনাপি বিপ্রেন্দু ক্তব। চৈবাত্মবিক্রয়ং। কর্তবাং দীপদানত্ত যাবং কান্তি ৰপূৰ্ণিমা।।৪৯।। বৈষ্ণবোন স মন্তব্যঃ সংপ্ৰাপ্তে কান্তি কে মুনে। যোন যদ্ধতি মূঢ়াজা দীপং কেশবসন্ধনি ।। ৫০।। নারদীয়ে জ্রিক্সাঞ্চনোহিনীসম্বাদে ।। একভঃ সর্বদানানি দীপদানানি চৈকতঃ। কান্তিকে ন সমং প্রোক্তং দীপদোহ্যধিকঃঘ্রঃ ।। ৫১ ॥ পাদ্মে চ ভত্তৈব ।। কান্তিকে খণ্ডদীপৎ যোদদাতি হরিসন্নিধৌ। দিব্যকান্তি বিমানাগ্রেরমতে স হরেঃ পুরে।। ৫২।। অথ তত্রপরদীপপ্রবোধননাছ স্মাং। স্কান্দে তব্রৈব। পিতৃপক্ষেইন্নানেন জৈ। ঠাষাঢ়েচ বারিণা। কার্ত্তিকে তৎ ফলং शूरमार अवनाभव्यवाधनाय। वाधनाय अवनीभमा देवस्थनानाक मिवनाय काछि-কে ফলমাগোতি রাজসূয়াশ্বমেধয়োঃ।। ৫৩ ।। দীপদানন্ত যে দীপৎ বোধয়তি হরে-গ্হে। পরেণ নৃপশার্দ্ন নিস্তার্ণাযম্যাতনা।। ৫৪।। ন ভদ্তবতি বিপ্রেন্দু ইট্টেরপি। মহানথৈঃ। কার্ত্তিকে যৎ ফলৎ প্রোক্তং পরদীপপ্রবোধনাৎ।। একাদশাং পরৈদভিং দীপং।প্রজ্বাল্য সূষিকা। মানুব্যং দুর্ল ভং প্রাপ্র পরাং গতিমবাপ সা ॥৫৫॥

স্যাৎ ॥ ৪৭ ॥ ইদানীং মাহাত্মাদ্বাবৈব নিতাতামতিপৈতি যথেতি ত্রিভিঃ। সর্ব্বকাষ্টেয়ু স্থিতোপি বিজ্যুখা মথনাদেব দৃশ্যতে প্রকটোভবতি তথা সর্ব্বন্দ্র্যাস্থ স্থিতোপি ধর্মোদীপদানে সত্যেব দৃশ্যতে নান্যথা অত্রচ সংশ্যোনাস্তি অত্যোদীপদানং বিনা সর্ব্বধর্মোবিফলঃ স্যাদিত্যর্থঃ ॥ ৪৮ ॥ আত্মবিক্রয়ং কৃত্ব। বেজনাদিকং কৃত্যাপি ॥ ৪৯ ॥ বৈষ্ণবানাং চৈতদাবশ্যক-মিত্যাহ বৈষ্ণবইতি ॥ ৫০ ॥ এতৎ কর্মদ্বয়ং সমংন প্রোক্তং ব্রহ্মাদিভিঃ ॥ ৫০ ॥ অথগুদীপোনরাক্রং দিনমবিচ্ছেদেন ঘোজুলতি তং ॥ ৫২ ॥ অস্ত তাবদ্দীপদানমাহাত্মাং কার্ত্তিকে প্রদীপপ্রবিধ্বনাপি কৃত্যুর্থ স্যাদিভ্যাহ পিতৃপক্ষইতি পঞ্জিঃ ॥ ৫৩ ॥ পরেণ দীয়মানং ॥ ৫৪ ॥ বং ফলং সাক্ষাদ্দ্ উমেবাস্তীভ্যাহ একাদশ্যামিতি । অয়মিতিহাসক পালেকার্জ্বকমাহাত্ম্যে প্র-

कथ मिथत्रमीभागां जाः ।। कारम ठेकत। यमा यमा योगग्रह मीभकः कनामा-পরি। তদা তদা মুনিশ্রেষ্ঠ দ্রবন্তে পাপসঞ্জঃ ৷৷ ৫৬ ৷৷ যোদদাতি ছিলাভিড্যো মহীমুদধি মেথলাং। হরেঃ শিখরদীপস্য কলাং নাইতি যোড়শীং।। যোদদাভি গ্ৰাঃ काणिर मवरमार को दमरयुकार। इत्द्रः निथदमी शना कनारनार्ज कि साएमीरा। दशी সর্বস্থদানং কুরুতে বৈষ্ণবানাং মহামুনে। কেশবোপরি দীপস্য কলাৎনার্ছতি (वं फ्मीर । एम । किश्व।। यः करतां छि शत्र भीशर मृत्तानांशि महांगुरन। निथ-রোপরি মধ্যে চ কুলানাংতারয়েচ্ছতং !৷ বিমানংক্যোভিষাদীপ্তং যে নিরীক্ষন্তি কার্ন্তিকে। কেশবস্যমহাভক্ত্যা কুলে ভেষাং ন নারকী।। ৫৯।। দিবি দেবা নিরী-करल वियु मी भ श्रम । वन । वन । ভविषा छ। न्यां कर मक्ष्म । भूगा कर्मा ।। कार्लिक কার্ত্তিকীং যাবং প্রাসাদোপরি দীপক্র। বোদদাতি মুনিপ্রেষ্ঠ ভস্যেন্দ্রং ন দুর্র ভং অথ দীপমাল:মাহাত্মং ।। স্কান্দে তত্ত্বৈ । দীপপার্ভরণত রচনাৎ সবাহ্যাভান্তরে হরেঃ। বিক্ষোর্বিমানে কুরুতে স নরঃ শশুচক্রধৃক্ ।৷ ৬১ ।৷ দীপ-পঙ্-ক্তশ্চ রচনাৎ কুরু তেকেশবালয়ে।তস্যালয়ে প্রসূতানাৎ লক্ষানাৎ মরকৎ নহি।। বিষ্ণে বিমানে দীপাটাং স বাহ্যাভান্তরে মুনে। দীপোদ্যভকরে মার্গে ভেন প্রাপ্তং পরং পদং ।। ৬২ ।। ভবিষ্যে চ ।। যং কুর্য্যাৎ কার্জিকে মাসি শোভনাৎ দীপমা-লিকাং। প্রবোধে চৈব দ্বাদশ্যা মেকাদশ্যাংবিশেষতঃ।। সূর্য্যাযুতপ্রকাশস্ত তেজসা ভাসয়ন্দিশঃ ৷ তেজোৱাশৈ বিমানস্থে জগদুদ্যোতয়ৎস্থিয়া ৷ যাবৎ প্রদাপসংখ্য তু ঘ্তেনাপূর্য্য বোধিতা। ভাবদ্বর্ষসহস্যানি বিষ্ণুলোকে মহীয়তে।। ৬৩।।

অথ আকাশদীপমাহাত্মঃ। পাত্ম ভতৈব।। উচ্চঃপ্রদীপমাকাশে যোদদাং কার্তিক নরঃ। সর্বাংক্র ক্রাংসমৃদ্ধৃত্য বিষ্ণুলোকমবাপ্ন্যাং।। বিষ্ণুকেশবমুদ্দশ্য দীপংদদ্যাত্ কার্তিকে। আকাশস্থ জলস্বঞ্চ শৃণু তস্যাপি যংফলং। ধনধান্যং সমৃদ্ধিক পুপ্রানীশ্বরোগ্তে। লোচনে চ শুভে তস্য বিদ্বানপি চ জায়তে
।। ৬৪।। কিঞ্চা বিপ্রবেশনি যোদদ্যাং কার্তিকে মাসিদীপকং। অগ্নিটোম

অস্যাপি যৎ কলং তৎ শূণুত ভো বিঞ্জা: ১। ৬৪।। এবমাকাশে অলফীপদানমাহাত্মাং লিখিত্বা

নিদ্ধএব । ৫৫॥ কলসোয়ঃ প্রাসাদোপরি বর্ত্ততে তস্যোপরি। ভাসয়তে দিশঃ প্রকাশয়তি সার্থে বা ইন ভাসতইতার্থঃ ৫৬ । কলাং অংশং নার্হতি তৎসদৃশমপি কলং নাপ্রোতীতার্থঃ ॥ এবম্বরিপি॥ ৫৭॥ বৈষ্ণবাং বৈষ্ণবেভাঃ ॥ ৫৮ অন্ত তাবচ্ছিপরদীপস্য দানমাহাত্মং তদ্দর্শনাদিপ ক্রতার্থতা স্যাদিত্যাহ বিমানমিতি। কেশবস্য বিমানং বিমানবদাকাশগম্ভতরং প্রাসাদ্দিত্যাহ নিরীক্ষন্তে। পুণ্যকর্মণা দীপপ্রদেনানেন নরেণ সহ।।৬০॥ সবাহাভান্তরে বিমানস্য বহিরস্তশ্ভের্থঃ। শস্ত্রভক্ত্মধ্ক্ সাক্ষপ্যং প্রাপ্তাত্মধিঃ।। ৬১। দীপাঢ়াং যেন ক্রতমিতি শেষঃ।। ৬২।। বোধিতা প্রজ্বালিতা। বোধিতানাং প্রদীপানাং যাবতী সংখ্যাইত্যর্থঃ।। ৬৩।।

कन जन। धनाहि मनीविनः ॥ ठडम्माविषु त्रवान् जनावन विकृत । वृक्तमृत्वयु গোछितु कांखादा गरमित्र । मीनमानािक नर्सक महाकलमवाश्रीयार ॥ ७৫ ॥ আকাশদীপদানমন্ত্র:।। ভতৈর।। দামোদরার নভসি ভলারাং লোলয়। সহ। প্রদী-পত্তে প্রয়ন্থাম নমোহনন্তায় বেধসে। ইতি।১৬। অথদেশবিশেষে কার্তিকমাহাত্ম্য-বিশেষ।। পাত্মে ভবৈর ।। যত্ত্র কুত্রাপি দেশে यः কার্ত্তিক সানদানভঃ। ভারি হোত্র-সমফলঃ পূজায়াঞ বিশেষতঃ। কুরুক্ষেত্রে কোটিগুণোগজায়াঞাপি ভৎসমঃ। ভতে†-२थिकः भूकत्त्र मााम्यात्रकाग्राक ভार्गव । क्रकमालाकात्मामानः भृकामारिनम्ह कार्जित्व ॥ ७१॥ व्यन ११ भूग्री छ ९ ममाना मून एवा मशुतार विना । मारमा मत्र वर हि हरत छ दिव वा नी मन छ । किन ।। ७৮ ।। सर्थु ता ग्रां १ ७ छ एका छ दिव कू छे थी छि व ईत नः । কার্ত্তিকে মধুরায়াং বৈ পরমাবধিরিষ্যতে।। ৬৯ । যথা মাঘে প্রয়াগঃ স্যাট্দুস্যাথে জাব্ববী যথা। কার্ত্তিকে মথুরা সেব্যা ততোৎকর্ষপরোনহি।। १०।। মথুরায়াং নরৈ-कार्ष्क्व मुख मात्मामद्रार्किनः। कृष्णक्याहि एक एक्ष्या नांव कार्या विठावना ॥ १५॥ দুর্ন্ন ভঃ কার্ত্তিকোবিপ্র মথুরায়াৎ নৃগামিহ। যত্রার্চিতঃ স্বকং রূপৎ ভক্তেভ্যঃ সংপ্র-यक्छि। छक्तिः मुक्तिः इद्रिम्मामिर्किष्ठारनाज मिनार। जुक्किक न ममाकाय याजावभाकती रुद्धः ।। ना पक्षना रुद्धिर्ज्जिक्षः एक कार्न्डिक नरेद्रः । सर्थुताद्वार मक्षि औषारमापद्र शृबना १।। १२।। मञ्जू प्रवादिशेनक विधिशेनक शृबनः। मन १८७ কার্ত্তিকে দেবোমপুরায়াং সদর্চনং ।। ৭৩ ।। যস্য পাপস্য যুক্তেত মরণান্তা হি নি-क् जिः। जष्कुकार्थिमः थोकः थोत्रिक्डि मूनिक्ठिः।। १८। को वित्के मधूतात्राः रेत-ঞীদামোদরপূজন। কার্ন্তিকে মথুরায়াৎ বৈ পূজনাদর্শনাস্ক্রণ। শীঘুং সংপ্রাপ্ত-ৰান বালোদুল ভং যোগতৎপরিঃ। ৭৫।। সুলভা মথুরা ভূমো প্রভাকং কার্তিক-

আদিশকলিখনেন গৃহীতং ব্রাহ্মণগৃহাদৌ দীপদানমাহান্মং লিখতি বিপ্রেতি দ্বান্তাং ।। রথ্যাত্ম রাজ্মার্গের্য়। ৬৫॥ ন্তনায় তলায়াং কার্ত্তিকে ইত্যর্থঃ। লোলয়া লক্ষ্যায় লক্ষ্যংশকত্মতি-প্রায়েণ প্রেমবিশেষণ বা চঞ্চলয়া। অকারপ্রশ্লেষণ বা ধীরয়াশ্রীরাধয়া সহ সহিতায়। ৬৬ ।। ভার্মবিশেষণ বা চঞ্চলয়া। অকারপ্রশ্লেষণ বা ধীরয়াশ্রীরাধয়া সহ সহিতায়। ৬৬ ।। ভার্মবিশোনকদারকায়াঞ্চ ক্ষ্পালোক্যাঃ। ৬৭। হেমুনয়ঃ। অন্যা অঘোধ্যাদয়ঃ। তত্ত মধুনয়ায়ং কার্ত্তিকে চ॥ ৬৮।। বৈকুঠে শ্রুক্তি প্রক্রশ্রীতিঃ প্রেমা তস্য বর্দ্ধনঃ অতিশয়েষবাৎপাদকঃ। অত্যাব পরমাবিধঃ কলে পরমকাষ্ঠাং প্রাপ্তইত্যর্থঃ॥৬৯।। ভতঃ কার্ত্তিকে মধুরাসেনলাং। বিসর্গালেশবিশাকে পরমাবিধঃ কলে পরমকাষ্ঠাং প্রপ্রেইত্যর্থঃ॥৬৯।। ভতঃ কার্ত্তিকে মধুরাসেনলাং। বিসর্গালেশবিশাকে। বুলা ক্ষ্পবং পূজ্যাইতি ভাবঃ। যদা তৎসারপ্যাং প্রাপ্তা ইতি জ্বেয়া ইত্যর্থঃ॥৭১॥ অন্যক্র শ্রেমবাতিরিক্তান্তানে। দেবিনাং অর্চনাদিকারিণাং ভেত্যঃ॥৭২॥ ভক্ত মথা কথ্যিৎ প্রক্রেমবাকি সাক্রিরা। বুলা কর্পঞ্জং পালে আন্তেহপি প্রায়শিক্তান্তরাপেক্ত্রাক্ ঘলোতি সার্জ্বেল।। বুলা ভি ক্রপ্রকান কর্পক্রির ক্রান্তরাক্ত্রাক্র হিত্তি বৈ প্রসিদ্ধা। যোগতৎপরিঃ সনকাদিভিরপি ছল্ল ভং শ্রুত্রাবন্ধান মানক্রতি বৈ প্রসিদ্ধা। যোগতৎপরৈঃ সনকাদিভিরপি ছল্ল ভং শ্রুত্রান মানক্রিয়া ভিছিম্থান

ख्या। ज्यां भि मर्गद्रश्चीह नद्रा मृण ज्यायुर्शे॥ १६॥ किः येखः किस्पां जिन्न जिर्थिति निम्न तिर्वे । कार्जिक मर्थुद्रा य्राक्षिक हिंदि द्राप्ति विद्राः॥ ११॥ यानि मर्वाण ज्यां नि नम् नम् । मद्रार्शि । कार्जिक निवमस्य वाश्वास्त मर्वे भ्या । महर श्विके श्वास्त प्रकार कार्जिक स्वास्त क्ष्मिक । कार्जिक स्वास्त क्ष्मिक । कार्जिक स्वास्त व्यक्ति । मर्थुद्रा मर्थुद्रा मर्थे प्रमान वाश्वास । भ्राप्त स्वास । भ्राप्त मर्थिक म्या । मर्थुद्रा सार मर्थिक म्या । मर्थुद्रा सार मर्थिक म्या । स्वास या नद्र हिंदि । १८॥ हिंदि क्ष्मिक कार्जिक म्या । स्वास या नद्र हिंदि । १८॥ हिंदि क्ष्मिक कार्जिक म्या । स्वास या नद्र हिंदि । १८॥ हिंदि क्ष्मिक हिंदि क्ष्मिक विद्र हिंदि । १८॥ हिंदि क्ष्मिक हिंदि क्ष्मिक विद्र हिंदि । १८॥ हिंदि क्ष्मिक हिंदि क्ष्मिक हिंदि क्ष्मिक हिंदि क्ष्मिक हिंदि क्ष्मिक हिंदि क्षमिक हिंदि क्षिक हिंदि हिंदि । १८॥

অথ কার্ত্তিকরত্যবিধিং। তত্তোপক্রমকালশ্চেক্তিং। জ্রিক্সসভ্যাসমাদীয়-কার্ত্তিকমাহাত্মের। আধিনসর স্ত মাসসর যা শুক্রেকাদশী ভবেৎ। কার্ত্তিকসা ব্রতানীহ তসাৎ কুর্যাদত্তিতেং। নিত্যৎ লাগরণায়াত্তের যামে রাক্রেং সমু্থিতেং। শুক্তিভূর। প্রবাধ্যাথ স্থোবিনা রাজ্যেৎ প্রভূৎ। ৮১।। নিশমর বৈষ্ণবান্ ধর্মান্ বৈষ্ণবৈং সহ হর্ষিতিং। কৃষ্বা গীতাদিকৎ প্রাত্তেদিবৎ নীরাজ্যেৎ প্রভূৎ। ৮২।। নদ্যাদৌ চ তাতাগন্তাচনর সক্ষণেমাচরেৎ। প্রভূৎ প্রথ্যাথ তাস্যেক দদ দর্ঘ্যং যথাবিধি।। ৮০।। তত্র সক্ষণেমাতরেৎ। প্রভূৎ প্রথ্যাথ তাস্যক দদ দর্ঘ্যং যথাবিধি।। ৮০।। তত্র সক্ষণেমজঃ।। কার্তিকেহৎ করিষ্যামি প্রাত্তঃ স্থান জনার্দ্ধে। প্রতির্থাৎ তব দেবেশ দামোদর ময়া সহেতি।। ৮৪।। প্রার্থনামক্রং।। তব ধ্যানেম দেবেশ জলেহন্দিন্ সান্তম্বদ্যতং। ত্রংপ্রসাদান্ত যে পাপং দামোদর বিনশ্যন্তিতি।। অর্ঘ্যমন্ত্রং। ব্রতিনং কার্তিকে মাসি সাত্রস্য বিধিবন্মম। দামোদর গৃহাণার্ঘ্যৎ দন্দেন্দ্রন্দ্রন। নিত্যে নৈমিন্তিকে কংস্কে কার্তিকে পাপশোষ্থে। গৃহাণার্ঘ্যং ময়া-

শোচ নিবাহ স্থলভেতি পঞ্চতিঃ। ভূমৌ ভারতবর্ষে মধ্যদেশ। স্তর্বর্জিরাং।। ৭৬॥ যজাদিকলঞ্চ তেনৈব নিদ্যোদিত্যাই কিমিতি। রাধিকাপ্রিয়ঃ শ্রীদামোদরঃ।। ৭৭॥ কার্জিকেইন্যত্র গমনঞ্চ বিফলমেবেত্যাশরেনাই যানীতি। অস্ত তাবং সমস্তমপুরাসেবনং শ্রীদামোদরপূক্ষনং বা শ্রীভগব-জ্যুমানপ্রবেশমাত্রেশৈর শ্রীকৈক্ঠলোকপ্রাপ্তিরিত্যাই কার্জিকেইতি।। ৭৮॥ ভত্র শক্ষেণি হল কুত্রাপি শ্রীমপুরামধ্যে শ্রীকৃষ্ণপুজাভাসেনাপি ছল্লভং লভতইত্যাই পরোপেতি। অত চেকিন্হানস্ভবৈর প্যাতঃ যথা ধূমকেশনামা মহাপাতকী রাজকুমারঃ পিত্রা বিবাদিতো দম্যবৃদ্যা ক্রমেণ বৃন্দাবনং গভে। মথুরাপুর্যাং চৌর্যার্থং গভোবেশ্যারতন্তং প্রীত্যৈ বৃন্দাবনান্তর্মার্জিভগবং পরসভ্যাত্রভাখ্য বিপ্রচেটিত মুপ্রসন প্রভাতে রাজপুরুক্ত প্রাপ্তা হতোধর্মরাজেন বহু সংকৃতন্ত স্থাজর্মনিত ভ্রং প্রকাশ্য বৈকৃঠলোকং গভইতি।। ৭৯।। ইত্যং মাহাল্যাদি লিখনপ্রকারেণ। অভক্ষ পুর্কেম্বারিতান্যন্যান্যপি কার্জিক্রভ্যানি জ্ঞেমানীতি ভাবং।। ৮০॥

কার্তিকে শেষষামন্ত্রাপরণায় মাহাত্মাবিশেষোক্তেন্তর বিশেষতোলিখিতং এবমগ্রেপ্যন্তং। উপ্থানাদিকং চানাৎ সাধারণমেবেতি দিক।। ৮১॥ পুনর্নীরাজ্বরেদিতি মঙ্গলনীরাজ্বনং লিখি-তং। ৮২॥ ষধাবিধীতাস্য পূর্বারাপি সর্বৈট্রবাস্বঙ্গং ॥ প্রাতরুপানাদিবিধিশ্চ পূর্বমেব লিখিতো-ইন্তি। অপেক্যান্তরিশেষ্ট্র তত্র এব জ্ঞেয়ঃ অত্রচ মধ্যে মধ্যে কিঞিছিলেশ্বলিখনায় পুনন্তংকিঞ্চি-ছল্লিখিতং। ৮৩॥ মা লক্ষ্মীঃ শ্রীরাধারূপা তয়া সহিত্যা তব প্রীত্যর্থং।।৮৪॥ বং স্বৃতীরং দেহং।

मखर ताथवा निरुष्टां होडि ।। जिलियां निर्मा (महर सर मारमान्नांवन भूर्यकर । माजा मिविधना मस्तान्यामा गृहमाज छ । ৮৫।। উপ निया । प्रतादा निर्मात स्टिकः श्रकः। उनेने मान्छी भवागराष्ट्रभूष्णा दिनार्कत्त्र ।। ४७।। निर्दृश বৈষ্ণবসঙ্গত্যা সেবেত ভগবৎকথা। সপিয়াহনিশি দীপৎ তিলতৈলেন চাৰ্চয়েং। বিশেষতশ্চ নৈবেদ্যান প্রেদাচরেত্তথ।। প্রণামাংশ্চ যথাশক্ত্যা একভক্তাদিকং ব্রত১। ৮৭। তথাচ পালে তত্ত্রেব। প্রাত্তরখায় শৌচাদি রুত্বা গত্ত্বা জলাশায়ে। রুত্বাচ বিধিবৎ সাুান্ৎ ততোদামোদরার্চ্চনং।। কিঞ্চ।। মৌনেন ভোজনং কার্য্যং কার্ডিকে ব্রতধারিণা। ঘৃতেন দীপদানং স্যান্তিলতৈলেন বা পুনঃ । ৮৮। দিনঞ ক্ষকৰায়া বৈষ্ণবানাঞ্চ সঙ্গমৈঃ। নীয়তাং কাৰ্দ্তিকে মাসি সঙ্গপাত্ৰতপালনং ।। ৮৯।। আশ্বিনে শুক্লপক্ষস্য প্রারম্ভোহ্রিবাসরে। অথবা পৌর্নাসীতঃ সংক্রান্তৌ বা তুলা-शस्त्र । मीनमान सथखक मन्त्रदि विक्यूनिहासी । (मवानाय खनन्त्राया आकारन दा **७ मृख मः ।। किथा। त्रञ्जाकः कनकः मोशामानिमू क्वाकना मिकः । मारमा मत्र म**ु श्रीकः-र्थे अनुमा का कित्क नद्रः। कात्म চ।। এ ই কু বিশ্ব সামি নাম্বাদে।। ন গৃহে কার্তিকে কুর্য্যাদ্বিশেষেণ ও কার্ত্তিকং ।। তীর্থে তু কার্ত্তিকীৎ কুর্য্যাৎ সর্ব্যাহন ভাবিনীতি। অথ কার্ত্তিকে বজ্জানি।। তত্তিব ব্রহ্মনারদসম্বাদে। কার্তিকে তৃ বিশেষেণ রাজমাৎসাংশচ ভক্ষয়ন্। নিস্পাবান্ মুনিশাদূলি যাবদাহূতনারকী কলিঙ্গানি পটোলানি বৃত্তাকং সন্ধিতানি চ। ন ভাজেৎ কার্ডিকৈ মাসি যাবদাহত-নারকী ৷৷ ৯০ ৷৷ কার্ত্তিকে মাসি ধর্মাত্মা মৎস্যমাংসং ন ভক্ষয়েৎ ৷ ভত্তিব যত্ত-স্ত্যাব্যং শাশকং শৌকরং তথা।। ৯১।। কিঞ্চ। পরানং পরশ্যাক্ত পরদারং পরা-अनाः। प्रस्ता वर्द्धाः व প্राक्ति विस्मारम जू कार्त्ति ।। ১২। देवला छ। अः ज्या শযা। পরামং কাংস্যভোজনং। কার্ত্তিকে বর্জ্জায়েদ্দাস্ত পরিপূর্ণক্রতী ভবেৎ।।

নাম শ্রীকৃষ্ণনারায়ণেত্যাদি তছ্চারণ পূর্বকং ।। ৮৫ । আদিশব্দেন কেতকীবিল্প আদি ॥ ৮৬ ॥ বিশেষতঃ অন্যাস্তঃ কিঞ্চিদাধিক্যেনোন্তমত্মা চেতার্থঃ ॥ তথা বিশেষতঃ প্রণামাংল্চাচরেৎ । যথাশক্তীত্যস্য পূর্বে পরেপি সর্ববৈত্র সম্বন্ধঃ । এক ভক্তাদিকং ব্রতমপ্যাচরেৎ ॥ আদিশব্দেন এক। স্করেপ বাসাদি ॥ ৮৭ ॥ স্বলিথিতং পুরাণোক্তিভিঃ প্রমাণয়ন্ পরং ক্রত্যবিধিং দর্শয়তি প্রাত্রিত্যাদিনা ভাবিনীতান্তেন ॥ ৮৮ ॥ সঙ্কণেপ স্বত্যাচ । যদ্ধা সঙ্কণেপন যদাহীতং ব্রতং তম্য পালনং ॥ ৮৯ ॥ ব্রতগ্রহণকালমাহ আশ্বিনে ইতি । হরিবাসরে একাদশ্যাং । অস্য বৈষ্ণ্যপক্ষর দাদি নির্দ্দেশঃ । অশক্ত্যাদ্যপেক্ষয়া বিকণ্পউক্তঃ । বিশেষেণেতি অন্যদাপি ভক্ষয়ন নারক্ষাবে কার্ত্তিকে স্ত ভক্ষয়ন বিশেষতোঘাবদাহূতনারকীত্যর্থঃ । ১০ ॥ তবৈবেতি ধর্মাপেক্ষয়া মাংসঞ্চ ন ভক্ষয়েদেব যদিব। কল্ফিয়হারোগগ্রস্তম্বভাবাদা রোগী স্যান্তদা তেনাপি যান্তঃ শশ পূকয়োর্মাংসং বর্জনীয়মেবেত্যর্থঃ ॥ ৯১ ॥ কার্ত্তিকে তুবিশেষেণ বর্জমেদিতি তৎ সন্ধণ্ণাদিকমপি ন কুর্যাদিত্যর্থঃ ॥ ৯২ ॥ জক্রং কাঞ্জিকাদিপর্যুষিতামুক্রব্যং সন্ধিতঞ্চ

সংপ্রাপ্তে কার্ত্তিকে দৃদ্ব। পরায়ৎ যন্ত বর্জ্জরেও। দিনে দিনেতু কুচ্চুস্য ফলং প্রাপ্তে বিজ্ঞানিক। তাত্তিব শ্রীকক্রাক্ষদমোহিনীসম্বাদে। কার্ত্তিকে বর্জ্জরেই কার্তিকে বর্জ্জরেই কার্ত্তিকে শুক্রসন্ধিতেও। ন মাৎস্যুৎ ভক্ষরেয়াংস্থ ন কৌর্যুৎ নান্যদেব হি । চাগুলাং সভবেও সুজু কার্ত্তিকে মাংস্ভক্ষণাও।। ১৩।।

অথ শ্রীরাধাদামোদরপূজাবিধিং ।। পাল্পে ততৈব । ততঃ প্রিয়তমা বিষণে রাধিকা গোপিকাসুচ । কান্তিকে পূজনীয়া চ শ্রীলালারসন্নিধৌ ।। দিজৎ দামোদরং কৃষা তৎপত্নীৎ রাধিকাৎ তথা । কান্তিক দুন নিয়ে তৌ বাসোহলকারভাজনৈং ।। ৯৫ ॥ রাধিকাৎ প্রতিমাং বিশ্বাং পূর্বয়েৎ কান্তিকে তু যং । তস্য ত্রাতি তৎপ্রতিত্য শ্রীমান্ দামোদরোহরিত্রিত ॥ ৯৫ ॥ দামোদরাইকং নাম স্থোতং দামোদরার্চনিৎ । নিতাং দামোদরাকর্ষি পঠেৎ সভাব্রভোদিতং ॥ ৯৬ ॥ শ্রীদামোদরাইকং ॥ তত্রিব ।। নমামীশ্রৎ সচিদানদ্রপং লসংকুগুলং

वर्डित्य ।। २ ३ ।

ততঃ পূর্বেজন্মর তারাধনাদ্ধেতোঃ। গোপিকাস্থ মণ্যে প্রিয়তমা। তদ্ধ্রণ তত্ত্বৈর প্রথিতং।।
যথা জ্রিগোলালার দেনস্য শ্রিয়র্ত্তঃ সৌন্দর্যাবিশেষং বিলোক্য তেন সহ ক্রীড়িন্তকামাংশেনাবতীর্যা যোগিল্পাবেন প্রেমন্ত গদিনা তমারাধ্য তদীপ্সয়া তদেঘাগ্যতদিব্যব্ধপা ভূষা তদেক
ভক্ত শ্রীব্রাল্যানাদার তেন সহ স্বর্মের সর্বাংশৈরবতীর্যা গোপ শ্রীব্যভান্কন্যা হভূদিতি ।।৯৪।।
তস্যাঃ জীর।পিকায়াঃ প্রাট্ত্য সঞ্জোবার্থং ॥ ৯৫ ॥ নিত্যং পঠেই দামেন্দরমাক্র কুং বশীকর্ত্তুং
শীলমস্য সত্যব্রতনাম মুনিনা উদিতং প্রোক্তং ॥ যদ্ধা তম্মাই উদিতং পূর্বসিদ্ধমেবাম্মাই প্রকট্তাং গত্যিতার্থঃ।। ৯৬ ॥

ক্রীরাধাসহিতং নত্বা শ্রীদামোদরমীশ্বরং। দামোদরাই কব্যাথ্যা দিগেকা দর্শ্যতে ইথুনা। তত্রাগ্রে কিমপি প্রার্থিয়ে মাদে তা তত্ত্বৰূপলীলাগুণাদিবিশেষেণে । ইবিশেষং গোকুলপ্রকৃতি নিজ্প ভগবত্তাসারস্ব্যস্থিত বর্ণরন্ ভক্ত্যাদে নমন্বরোতি নমামীতি। তচ্চ মঙ্গলার্থং স্ব্যক্ত্মপ্রপ্রপ্রপ্রাণ্ডাব দাস্যবিশেষে বিধানাদাদে নির্দিইং। কং ঈশ্বরং স্বর্দাক্তমন্তং জগদেক নাথং নিজপ্রত্যুং বা। তত্তাদাঃ পক্ষঃ স্তত্ত্যাদিশক্তার্থং। দিতীয়ং পরমবন্দ্যভার্থং অন্ত্যুক্ত ভক্তিবিশেষেণতি দিক্। কথম্ভুতং। সচিদানন্দরূপং সচিদানন্দয়নবিগ্রহমিতার্থং ইতি তত্ত্ববিশেষেণাৎকর্ষ বিশেষ উক্তঃ। সৌন্দর্যবিশেষেণাৎকর্ষ বিশেষমাই লসন্ত শ্রীড়ন্তী কুওলে যস্য তং ইতিশ্রীমুধ্র শোভা বিশেষ উক্তঃ। যা যা ।। শ্রীগণ্ডচুম্বনসৌভাগ্যতং কুওলয়োঃ স্বর্জ্যবেণ্যু মুধ্যত্তাভাগং তানি স্ব্রাণ্ডাবিশিক্তার্যা ততক্ষ লসন্তী শোভমানে কুওলে যন্দাৎ তংভূষণভূষণাক্ষমিত্যর্থং। অত্তর্বাক্তং শ্রীক্তানি দিক্তার । ততক্ষ লসন্তী শোভমানে কুওলে যন্দাৎ তংভূষণভূষণাক্ষমিত্যর্থং। অত্তর্বাক্তানি নির্দিশ ক্ষেরে। ইত্তানি রুধ্বেরা। বিন্দাপনং স্বস্য চ সৌভগর্মেঃ পরংপদং ভূষণভূষণাক্ষমিতি।। উদ্ধবেন চ ভূতীয়ক্ষক্ষে।। বিন্দাপনং স্বস্য চ সৌভগর্মেঃ পরংপদং ভূষণভূষণাক্ষমিতি।। পরিবারবিশেষেণােৎক্র্ববিশেষমাহ। গোকুলে গোপগোপী গোবৎসাদিনি

গোকুলে ভাজমানং। যশোদাভিয়োলৃথলোদাবিমানং পরাম্থীসভাৎ ভভোজুভা-গোপানা ১৭। রুদ্ভৎ মুহুর্নেত্রযুগাৎ মূঞ্জং করাডোজ্যুগোন সাভক্ষনেত্রং।।

বাসে ভাজমানং যোগ্যস্থানবিশেষে পূর্বতোপ্যুৎকর্যবিশেষপ্রকটনেন গোকুলস্য স্থাভাবিকশো-ভাবিশেষেণ বা শোভমানং। তচ্চ জীদশমক্ষপাদৌ। চকাস গোপী পরিষদাতো বিভুক্তৈলোক্য करिकारकभमः वभुक्तिविष्ठाः निरनाकः । लीलाविर्भाषरगादकर्षविरभषमारः । यरभारमिक नार्ध्वन ॥ যশোদায়া মাক্ত: সকাশাৎ ভিয়া দ্ধিভাগুভেদনাদ্যপ্রাধক্তভীত্যা উদূখলাৎ শিক্স্তিভনৰ নীত চৌর্য্যার্থমুদ্বর্ত্ত্য তলে সমার্ক্তা ছদূথলতঃ ধাবমানং ত্বরয়া সরন্তং। অত্র চ বিশেষাপেক্ষটকর্দ্ধ-শমস্বন্ধনাধ্যায়োক্তং উদূখলাগ্রেরুপরি ব্যবস্থিতমর্কায় কামং দদতং শিচি স্থিতং। হৈয়ঞ্চবং চৌর্যাবিশক্তিজেনং নিরীক্ষ্য পশ্চাৎ স্থতমাগমচ্ছবৈঃ। তামাস্তর্যটিং প্রসমীক্ষ্য সত্তরস্ততো ২ব-রুধ্যাপদদার ভীতবং।। গোপাস্বধাবন্নয় মাপ যোগিনাং ক্ষয়ংপ্রবেষ্টুং তপদেরিতংমনঃ। ইত্যা-দ্যানুশক্ষোয়ং।।ততশ্চ অত্যন্তং ততো হ্লুত্য বেগেন ধাবিত্বা সমাদৈকপদ্যেন যবাদেশঃ।গোপ্যা শ্রীয-শোদায়। পরাসামৃষ্টং পৃষ্ঠতোধৃতং॥ অত্ত চ অতাস্ততোক্তুতোতানেন প্রীয়শোদায়া অপি স্তননিতম
গৌরবাদিনৌন্দর্যাবিশেষঃ স্নেহবিশেষশ্চ স্থচিতঃ। গোপ্যেতি প্রেমোজিপরিপাট্যা গোপজাতী নামেব তাদৃশং মহাসৌভাগ্যমিতিধনিতং।। প্রাস্ফীমিত্যনেন ত্স্যাং ভগবতঃ স্লেহ্বিশেষো-ধনিতইতি দিক্।। অতা চ অব্ঞ্মানা অননী বৃহচ্চলচ্ছে। বীভরাক্রাস্তগতিঃ স্থমধ্যমা। জবেন বিশৃংসিতকেশবন্ধনচ্যুত প্রস্নাত্মগতিঃ পরাম্যদিত্যথোহ্মসন্ধোয়: । ৯৭ ॥ ভদনন্তরলীলা-বিশেষং বদন্ কুতাগদং তং প্রক্রদন্তমকিণী কর্ষতং স্বপাণিনা উদ্বীক্ষমাণা ভয়বিহ্বলেক্ষণং হত্তে গৃহীত্ব। ভিষ্যস্তাবাপ্তরদিতার্থমাছ রুদন্তমিতি । মাতৃহত্তে যক্তিংদৃষ্ট্য তয়া তাড়নমাশস্ক্য ভীতত্বাদিপ্রদর্শনেন তৎ পরিহরণায় ক্রন্দন্তং।। অতএব করান্তোজমুগ্মেন নেত্রমুগ্রং মৃক্তন্তং-যুগপঝার্জ্রয়ন্তং এডচে বাল্যলীলাবিশেষস্বভাগত:। যদ্বা ভয়াবেশেন সদ্যোহ্রগছতে।২ শ্রুনোনিস্কাসনার্থং যদ্বা অশ্রুধারাপসর্ণার্থমিতি দিক্।। যতঃ সাতক্ষে সশক্ষে নেত্রে অপি কিম্পুনর্মনোযস্য তং।। যদ্বা সভয়নিরীক্ষণ নেত্রযুগমিভার্থঃ।। ততক্ষ ভাজনপরিহারার্থ মিদমপি লীলান্তরমূহাং।। কিঞ্চ।। মুহুঃ স্থাদেন রোদনাবেশ ক্তেন কম্পৎ কম্পানং ত্রিরেধাক্ষে কয়ু-বক্রেখাত্রয়চিক্সে কঠে স্থিতং তৈএবং তৈএবেয়কং সর্বাং বা ত্রীবাভূষণং মুক্তাহারাদি যস্য দাম উদরে যস্য । অনেন চ গোপিকোল্থলে দামা ববন্ধ প্রাক্তং যথেত্যুক্তং । দাম্যেদরে উল্পলে চোভয়তো वञ्चनमूळः তদেবাভিবাঞ্ষয়ন্ ভক্তবশাতাবিশেষেণে। एक्वविग्यमा ह ।। ভকৈতাৰ মান্তঃ স্ববিষয়করা তদ্য বা মাতৃবিষয়কয়া বন্ধং স্বীকৃতবন্ধনং ন তু পাশবর্গবলাৎ। শব্বতঃ সমুচ্চিতৈরপ্যনথ্যঃ পাশেন্যু নদ্যকুলাপূরণাৎ ।। তচ্চোক্তং তদ্দাম বধ্যমানশ্য স্বাভক্স্য কুতা-পসঃ। দ্বাঙ্গুলোনমভূত্তেন সন্দধেহন্যচ গোপিকা । যদাসীপ্ত দপি নানং তেনান্যদপি সন্দধে।। তদপি घाळू लन्। नः यास्यमा मख्यकानः । এবং স্বংগ হদাম। नि यानामा जनमध्या পि ইত্যাদি। यखा দামোদরত্বে হেতু:। ভবৈজ্যৰ বন্ধং বশীক্কতং তথাপি সএবার্থঃ পর্য্যবস্যতি ॥ কিঞ্।। স্বমাতুঃ বিলগাজারা বিস্তুক্বরস্কঃ। দৃষ্ট্র পরিশ্রমংক্ষ্ণং ক্রপয়াসীৎ স্ববন্ধনে। এবং সন্দর্শিতাহাক্স হরি-ণা ভক্তবশ্যতা। স্বৰশেনাপি ক্লফেন যদ্যেদং সেশ্বরং বশে । নেমং বিরিঞ্গেনভবেংন জ্রিরপ্যঙ্গ-्रशः खारा। अभागः लि जित्र त्राभी यख्य आश विमुक्तिमार । नात्रः स्थारशाज्यवाम् महिनाः

মুহু:শাসকন্স প্রিরেথাক্ষক স্থ স্থিত প্রৈবং দামোদর ও জিবজাং ।। ৯৮।। ইতীদৃক স্থলীলাভিরানন্দকুণ্ডে স্বঘোষং নিমজ্জন্ত মাথ্যাপয়ন্তং। তদীয়ে শিতজে বুভ জৈজিত-ত্বং পুনং প্রেম তন্তং শতাবৃত্তি বন্দে ।। ১৯।। বরং দেব মোক্ষং ন মোক্ষাবিধিৎ বা নচান্যং বৃণেছং বরেশাদপীহ । ইদন্তে বপুর্নাথ গোপাল বালং সদা মে মনস্যাবি-

গোপিকান্তঃ। জ্ঞানিনাঞ্গন্মভূতানাং যথাভক্তিমতামিহেতে।যামর্থঃ। তথা দেবর্ধিমে প্রিয়-তমোষদিমৌ ধনদাত্মকৌ। তত্তথাসাধয়িষ্যামি যদ্গীতং তত্ম হাত্মনেত্যাদেরর্ধোপি শ্রীনারদভক্ত্য পেক্ষয়া যমলাৰ্জ্জুন ভঞ্জনাদি তত্তল্লীলাৰপোহনেন স্থচিত:।। ৯৮॥ গুণবিশেষেণাৎকর্ষ-ব শেষমাহ ইতীতি এবং ভক্তবশ্যতথা। যদ্বা ইত্যনয়া দামোদরলীলয়া ঈদৃশীভিশ্চ দামোদর-লীলা সদৃশীভিঃ পরমমনোহরাভিঃ শৈশবীভিঃ স্বস্য স্বাভিস্কা অসাধারণাভিঃ লীলাভিঃ ক্রীড়াভিঃ গোপীভি: স্তোভিতোনৃতান্তগৰান্ বালবৎ কৃচিৎ উল্পায়তি কৃচিম ক্ষন্তদশোদারুষস্তবৎ বিভর্জি কুটিদাজ্র থৈঃ পীঠকে:স্তানপাছকং বাহুক্ষেপঞ্চ কুরুতে স্বানাং প্রীতিং সমুদ্ধহন্নিত্যাছ্যক্তাভিঃ অঘোষং নিজগোকুলবাসি প্রাণিজাতং সর্বমেব অংনন্দকুত্তে আনন্দরসময় গভীরজলাশয়-বিশেষে নিতরং মজ্জন্তঃ মজ্জন্নন্তঃ। এতদেবোক্তং স্থানাং প্রীতিং সমুদ্বহন্নিতি। যদ্বা ঘোষঃ কীর্ত্তিঃ মাহংস্মোৎকীন্ত নং বা ।। স্বদ্য স্থানাং বা গোপগোপাদীনাং ঘোষো যথাদ্যান্তথা স্থমেবানন্দ-কুণ্ডে নিমজ্জ তং প্ৰমন্থ বিশেষমন্থ ভব স্তমিত্যৰ্থ:।। কিঞ্চ তাভিরেব তদীয়ে শিতক্ষেষু ভগব-দৈশ্বর্জ্জানপরেৰু ভক্তৈজিতত্বং আত্মনোভক্তবশ্যতাং খ্যাপয়ন্তং। ভক্তিপরাণামেৰ বশ্যোহং নতু জ্ঞানপরাণ মিতি প্রথয়ন্তং অনেন চ দর্শয়ংস্ত দ্বিদাং লোকে আত্মনোভক্তবশ্যতা-মিতাস্যার্থাদর্শিত ॥ তৃষ্যার্থ:। তং ভগবস্তং বিন্দৃন্তীতি তথা তেষাং তল্ভানপরাণামিতার্থ: তান্ প্রতি দশ্যনিতি। যদা তদীয়ানাং ভাগবতানাং প্রভাবাভিজ্ঞেদের নচানে। দ্বাখ্যাপয়ন্তং বৈষ্ণব মাহাত্মবিশেষানভিজেষু কেবলজ্ঞানপরেষুভক্তিবিশেষতন্ত্রনাহাক্মসা চুপরমগোপ্য-ত্বেন প্রকাশনাযোগ্যত্বাৎ । এবঞ্ তদিদামিতি ভ্তাবশাতাবিদা মিডার্থোদ্রফীবাঃ। অতঃ প্রেম্ভঃ ভক্তিবিশেষেণ শতাবৃত্তি যথাস্যাত্তথা শত্শ ত্বারান্ত্মীশ্বরং পুনর্কান্দে ।। অতো-ভক্তানামবশ্যক্ষতাং ভক্তিপ্ৰকারবিশেষৰূপং বন্দনমেব মম প্রার্থ্যংনবৈশ্বর্যজ্ঞানাদীতি ভাবঃ ॥৯৯॥ এনমুৎকর্ষবিশেষবর্ণনেন স্তত্ত্বা প্রার্থয়তে বরমিতিদ্বাভ্যাং। দেব হেপরমদ্যোত্যান হেমধুরক্রীড়াবিশেষপরেভি বা । বরেশাৎ সকলবরপ্রদানসমর্থাৎ অপি ত্বতঃ মোক্ষং চত্তর্থ পুরুষার্থার মোক্ষম্যাবধিং বা পরমকাঠারপং ঘনস্থাবিশেষাত্মকং শ্রীবৈকুঠলোকং অন্যক্ত শ্বেণানিভক্তিপ্রকারমহং বরং প্রাপ্য। যদা অনৈয়ব্রণীয়মপি। যদা বরতয়াইহ বৃন্দাবনে ন হুণে। ইংহত্যস্য পরেণাপি সম্বন্ধঃ অত্রচ মোক্ষাদিত্রয়স্য যথোক্তর ত্রৈষ্ঠ্যসূত্যং। তত্র মোক্ষাদৈত্র কুঠলোকন্য শ্রেষ্ঠাং ঐভাগবতামৃতোন্তরথতে ব্যক্তমেবান্তি । বৈকুঠলোকাচ্ছুবণাদি প্রকারস্যচ শৈষ্ঠাং কামং ভবঃ স্বর্জিনৈনির্যেষু নস্তাদিত্যাদিবচনতঃ আবণাদি সিদ্ধা নরকাদিছপি যত্র তত मस्रदेखव देवकूर्धवामिष्क्रविकि पिक्। छहिकिः वृशूस छमाए। एइ नाथ हेइ वृन्मावतन ইদং বর্ণিতং গোপালবালৰূপং তে বপুঃ সদা মে মনসি আবিরান্তাং অন্তর্যামিত্বাদিনা স্থিত মপি সাক্ষাদিব সর্বাঞ্চে সাদ্র্যাদিপ্রকাশনেন প্রকটং ভূয়াৎ। নতু মোক্ষাদয়োপি প্রমো-পাদেয়াস্তানপি বৃণু : ততাহ'কিমলৈরিতি ।। অনৈমেশিকাদিতির্মম প্রয়োজনং নাস্তীত্যর্থ:।

द्वाला किमरेनाः ॥ २००॥ हेमल मूथाखाकमवाक्रनीता वृद्धः कूछलिन्धा-द्रोक्तम् । भूक्ष्मपूचिष्ठः विश्ववक्षाधदः य मनमाविद्रालामनः लक्षमारेखः ॥ २०२॥ नयाम्ब मामाविद्रान्द्रान्छ विष्णा श्रमीम श्राप्ता मुश्यकालाक्षिमदः। कृथाम्किवृक्षेत्रिकोर्गिनमन् गृशालम मामळ यमाक्षम्गा। २०२॥ कूवनाज्ञाको

ভস্য সর্বানন্দকদমাত্মকত্বাত্তংসিক্ষ্যের সর্বাসিদ্ধেঃ ॥ তথা তদলাভে নিজেপ্সিতাসিদ্ধ্যা বিশেষ-তশ্চ স্বচ্ছলাভেন শোকবিশেষে। পোদনাদলৈ ারপি কিমিতি ভাব:।। যদা।। নতু মোকাদয়োন ব্রিয়ন্তাং নাম প্রমাপেকাণি মদায়ঞীচত্তভুকাদি মূর্তিদর্শন সম্ভাষণাদীনি ব্রিয়তাং তত্তাই কিমনৈারিতি চিত্তে ত্বদেভজুীমদ্বপুঃ সদা স্কৃত্তাবের সমাত্যন্তপ্রীতিনানাত্রেতি ভাবঃ ॥ অন্তর্দশনমাহাত্মাঞ্জ শ্রীভাগবতামতোত্তরখণ্ডে তপোলোকে শ্রীপিপ্পলায়নেন বিরুভ্যোক্তমন্তি। এবং তস্য প্রার্থনাপি স্ততাবেব পর্য্যবদ্যতি ভটেদ্যব দর্ক্ষোৎক্রফীত্বেন প্রার্থনাৎ এব মন্ত্রেপি।। ১০০। তত্ত চতৰ ত্রীমুখং প্রমমনোহরং বিশেবেণ দিলুক্ষ ইত্যাহ ইদমিতি । কদাচিক্ষ্যানেইমুভূম্মান মনির্বাচনীয়দৌন্দর্য্যাদিকং তদেব নির্দিশতি মুখমেবাস্তোজং প্রফুল্লকমলাকরত্ব নিথিলসন্তাপতা-রিত্বপরমানন্দরসবস্ত্রাদিন। তথ্যে মনসি মুজ্রাবিরাস্তাং। কথস্তুতং। অভান্থনীলৈঃ পরমশ্যানলৈঃ স্নিটেশ্বন্দ রুটেলা কেটেশরলকৈর্বা বৃতং । কমলং ভ্রমটেররিবোপরিবেটিতং । গোপ্যা শ্রীবশোদয়া শ্রীরাধয়াবা চয়িতং মুছরিত্যস্যাত্রাপি সম্বন্ধঃ। তত্ত । তয়া মহাধনায়া মুছ্ শচুমিত মপি মম মননি সক্রদপ্যাবিরাস্তামিত্যর্থ:। যদ্বা সদেতি পূর্বাগতস্যাত্রাপ্যর্থবলাদয় এব স্যাৎ বিষ-দ্রকৌ অধরৌ যামন তথা ততক লক্ষণটেতঃ জানোর্লক্ষণটেথাল কৈরপি প্রয়োজনং নাস্তী ত্যর্থঃ। নিখিলার্থমেবৈতৎ।। ১০১॥ এবং স্তৃতিপ্রভাবাৎ সদ্যঃ সমুদিতেন প্রেমবিশেষেণ সাক্ষাদি-*कृ*क्षमानुख्य टेठकः नाममःकीर्खनरमव প्रवम्माधनः मन्त्रमानुखरेषव स्रकार्याः आर्थश्रर् नमहेडि । জুভামিত্যধ্যাহার্য্যমেব। ভচ্চ ভয়গৌরবাদিনা প্রেমবৈকল্যেন বা সাকাল প্রযুক্তং।। হে প্রভো মদীশ্বর প্রদীদ। প্রসাদমেবাহ। ছঃখং সাসারিকং ওদার্শনজং বা তস্য জালং পরম্পরা তদেবাবিঃ আনস্থাদিন। তিমান্মগ্ন মাং অতএব অতিদীনং পরমার্জং। যদা তত্ত সংসহায় সাধনাদি হীন-ত্বাৎ পরমাকিঞ্নং যদা মুমূর্ জীবন্মূতং বা তত্র চাজ্ঞং তৎপ্রতীকারাদ্যনভিজ্ঞং। রূপয়াচৃষ্টি-নিরীক্ষণং ত্র্যা বৃষ্ট্যা পরত্রয়া। কুপাচ্টিরপংমৃতবৃষ্ট্যা বা অর্প্রহাণ। সমুদ্ভ্য জীব-য়েত্যর্থঃ। তদেবাভিব্যপ্তয়তি। অকি দৃশ্য মল্লোচনগোচর এধি।। এবং প্রার্থনাক্রমেণ প্রার্থনং কুত্র পরমদৌর্লভোন সহসা প্রাণেব নির্দেশানহ্ত্যাৎ ।। অন্তর্দর্শনাৎ শাক্ষাদর্শন মাহাত্মাঞ প্রভিগবৎ পাব দৈঃ সন্যাযমুক্তং শ্রভাগবতাম্তোত্তরথওতোবিশেষতোজেরং।। ভত্রদেব দেহি দিবারূপেতি দিদৃক্ষায়াং হেন্তঃ।। দামোদরেতি ভক্তবাৎদল্যবিশেষেণাপি বোলাভায়াং।। অভোনান্তোবস্মা দিতান্তেতি রূপাদৃষ্ট্যসূত্রহেণ।। প্রভো ছে অচিস্থানস্তা-স্তুতমহাশক্তিযুক্তেতি ইন্দ্রিয়াগ্রাহ্যাস্যাপ্যকিদ্শাতাসন্তাবনায়াং। ঈশ হে পরমস্বতন্তেতি অধোগাংপ্রতি তাদৃশানুগ্রহকরণে কস্চিদপানপেক্ষতায়াং ভেয়ঃ।। কিঞ।। বিষ্ণো হে সর্বা बाभिक ॥ यहा ছে জীবৃন্দাবন নিকুঞ্জ কুহরাদিপ্রবেশশীল । ইতিচাক্ষিদৃশাতার্থং । দূরা গমনশ্রমাদিকং নাস্তীতি।। অথবা হে অনস্ত অপরিচ্ছিন্ন। বিষ্ণো শর্বব্যাপিন্ হে দামোদরেত্যেবং পরমবাংশল্যবিশেষেণ তবাকৃতং কিমপি নাস্তীতি ধ্নিতং অন্যৎ সমান্মিত্যেষা দিক্। ১০২।।

বন্ধনৃতির যদস্থানে চিতৌ ভক্তিভাজৌ করে। চ। তথা প্রেম ভক্তিং স্বকাং মে প্রহ-দত্ন নোক্ষে গ্রহোমেংতি দানোদরেই।। ১০৩।। ননস্তেম্ভাগে, স্কুরদ্দীভিধানে

উপাং প্রেমিরিশেষেণ প্রমোৎকঠিয়া সহসা সাক্ষাদ্দর্শনং প্রার্থ্য তত্ত্বর সন্যোক্ষাতপ্রেমভক্তিবি-শেষেণ ত্র্য প্রমদৌল ভিঃং মন্যমানস্ত্র চ প্রমোপায়ভূতংং প্রেমভক্তিমভিজ্ঞায়। যহা সক্ল-র্ননে মনোতৃপ্তিং বিরুহতঃথোপ্তরতাং চাশক্ষা সদা তদ্দীকবণার প্রেমভ ক্রিমেবৈকমুপায়ুমভি-জার। তত্রত পরমাপরাধিনো মম ক্থং সা সম্ভবেদিত্যাশঙ্কা ীভগবদাৎসলামহিমা চাসন্তাব্য-মপি সর্বামের সম্ভাবেদিতি নিশ্চিত্য মোক্ষত্যাগেন প্রেমভক্তিমের প্রার্থয়তে কুবেরেতি। বছয়া-োপ্যা পাশৈকৃদ্ধলে শৃছলিভয়া মুৰ্দ্ত্যা শ্ৰীবিগ্ৰহেটেণৰৈতি তয়োৰ্দ্যান্ত স্থা প্ৰাবেশাৎ। প্রম-অনুর লীলাদিবিশিষ্ট্রা ভগবতঃ সাক্ষাদ্দ্রশ্বস্পর্শাদিকং স্থাচিতং। মোচিতৌ এীনাবদশাপাং সংস্থাত ন কেবলং ভাবদেব প্ৰমন্ত ক্ৰিষ্ঠ তাভ্যাং দত্তেভাহে। ভতিং ভন্নতঃ প্ৰম্যাধ্য' ন্মা-শ্রমুক্ত ন কথাঞ্চিদ্পি তাজকঃ ইতি তথা দৌ এবঞ্চ প্রেমভঞ্জিরের দত্তেজভিপ্রেতং। তথাচ শ্রীল-গ্রন্থচনং। সঞ্চিতাময়ি ভাষা বামীগ্রিতঃ প্রমোহতক ইতি। অসাপিঃ॥ বাং গ্রয়োবীপ্সি-চোহপেক্ষিতঃ প্রমোভাবঃ প্রেমা ।রি সমাধ্কাত এব। ন ভবঃ প্রবর্তীয়া সংসারছঃখং বা যক্ষাং ল ইতি ৷৷ তে দামোদন তথা তা্ৎ স্বাস্থ্যকরণাঃবি*দৈ*কাশ্রমাং এতাজ্যুসক্বিমরংং বা **মে** মহুং প্রকার্যণ হজ্ঞ দেহি। মহা কিমাল্রপ্রেছেণ কুবেরাঝাজবংঝাকোংশি পৃষ্ঠতাং পান্যথ। জ্যামরণাদিসং-শারাপাক্ষে ভত্রাই নেতি।ইছ অস্যাং প্রেমভক্তাবের মমগ্রহুআগ্রহোত্তি নচ মোক্ষে গ্রহোইস্তি। অধ্নৰ্থঃ (প্ৰমত্ত্যু: শংসার্ধু-বেভিৰ্তি চেড্ছিভিৰ্ভ নাম নিমাজেউচি মান্ত্ৰাম তত্ৰ মম্-পেক; নান্তীতি। গত্র গুড়োয়ং ভাকঃ । চিন্তামধীে করন্তে সক্ষমেৰ স্বয়ং সেংঘ্যতি কিন্তদেকমা-অন্তদ্যন্ত্রবাতা হবেতি। যদ্রা ফেদামোদর স্বকাং প্রেমভক্তিং প্রয়য়েত্রের প্রাণবদ্ধোদরভাগবিষ্ কপ্রেমভক্তিপ্রার্থনিয়া নিত্যমুদরে পাশ্বক্ষনাগ্রহমাশ্স্যাছ মোকে পাশ্বক্ষনাউব মে'চনে-মমাগ্রহোনান্তি কিং কাকু৷ সত্যোবেতার্থঃ কিন্তু ইছ অস্মিনের রূপে স্বকামদাধারণাং প্রেমভক্তিং প্রথক্তেতি।। যদ্ধ ইছ বুদাবনে প্রেমভক্তিং প্রয়ংছত্যয়ঃ।। তত্ত্বতে তথ্যাঃ স্থাবিশেষাবিদ ভাৰকত্বাৎ প্রান্তর্ভাব বিশেষাক তথা তধ্য সাক্ষাদ্দর্শনবিশেষাকারত্বাক্ত তথা তত্ত্বৈৰ তদ্বিহারি জীভগ্ৰদিনত্বনাৰিশেষাট্ট তত্ৰ সদা নিবাসোপি প্ৰাৰ্থিত ইত্যন্তং। অন্যচ্চ পূৰ্মবদেৰ।।১০৩॥ এবং স্ত ভিং সমাপদন স্বপ্রার্থিতনিদ্ধয়ে ভক্তিবিশেষেণ বা তদীয়াদাধারণপরিকরাবয়বপরিবারাদীনপি প্রত্যেকং পূথক্ প্রণমতি নমস্তেপ্তি।। তে তব দামেুউদরবল্ধনমহাপাশার নমোহস্ত। কথ ছতায় : ক্ৰুৱাদীপ্তেন্তেজনোধামে আশ্ৰয়ায় এবং তুলাপি ব্ৰদ্যেন্বপতাভিপ্ৰেতা। অথানস্তঃং বুলীয়ায় উদরায় নমোইস্ত পাশবক্ষেন তেনৈব সৌন্দর্যাদের্বাৎসল্যাদের্বাল্যলীলাদেশ্চ বিশেষতঃ প্রকা-শনাৎ। কথন্তুতায় বিশ্বস্য চরাচরপ্রপঞ্চজাতস্যধান্নে আধারায় ততএব চত্তর্জণভুঃনাত্মকক্ম-লোৎপত্তে:। তত্তিব চ মাত্রং প্রতি বার্ছয়ং বিশ্বকণপ্রদর্শনাদিতি দিক্!৷ এবমুদরবন্ধনেন বিশ্বস্যাপি বন্ধনাপত্তেঃ শ্রীষশোদ্য়া বিশ্বম্পি ব্শীক্তমিতি ধনিতং : তথা ঈশস্য বন্ধনা-সম্ভবেপিবন্ধানস্বীকারেণ ভক্তবাৎসল্যবিশেষস্তথা বন্ধনেন প্রপঞ্চাসস্কোচাবস্থিত্যাদি সমা-বেশস্য তর্কাপোচরত্বাদৈশ্বর্যাবিশেষশ্চ ধনিতইতি দিক্।। দামনমকারানন্তরমুদর্নমকার-শ্চেদেরোপরি দাম্মেবর্জমানস্থাৎ যথোক্তরমুৎকর্ষবিবক্ষয়। বা। ইদানীং তদীয়প্রিয়তমঙ্গনর্জ্প-

জুলীয়োদরায়াথ বিশ্বস্য ধামে। নমোরাধিকারৈ জুদীয়প্রিয়ারে নমোনন্তলীলায় দেবার তুভ্যম। ১০৪।।

অথ তত্র শীর্ষাইনীর্তাং পাল্মে তত্রৈব।। গোবর্দ্ধনগিরৌ রম্যে রাধাকুণ্ডং প্রিয়ং হরে:। কার্ন্তিকে বহুলাইন্যাং তত্র স্নাত্মা হরে: প্রিয়ং । নরোভক্তোভবে ক্রিপ্রান্তিদ্ধি তদ্য প্রক্রায়ণ ।।১৫না যথা রাধা প্রিয়া বিষ্ণোন্তদ্যাঃ কুণ্ডং প্রিয়ন্তথা। দর্বনাপীযু দৈবৈকা বিষ্ণোরত্যন্তবল্পভা ।। ১০৬ ম কিঞ্চ তত্ত্বৈ শীরাধিকোপা-খ্যানান্তে। বৃন্দাবনাধিপত্যঞ্চ দন্তং তদ্যাঃ প্রত্যাতা।। রুষ্ণেনান্ত্র দেবী তু রাধা-বৃন্দাবনে বনে। তৎকুণ্ডে কার্ত্তিকাইন্যাং স্নাত্মা পূচ্চ্যোজনার্দ্দনঃ। সুবোধন্যাৎ যথা প্রতিন্তথা প্রতিন্ত তোভবেৎ ।। ১০৭ ।।

অথ কৃষ্ত্রোদশীক্তা ।। পাছে চততৈব।। কার্ত্তিক কৃষ্পক্ষে তু ত্রো-দশ্যাং নিশানুখে। যমদীপং বহির্দ্দ্যাদপম্ত্যুর্কিনশ্যতি।। তত্র মন্ত্রঃ। মৃত্যুনা পাশদণ্ডাভ্যাং কালঃ শ্যামলয়া সহ। ত্রেমেদশ্যাং দীপদানাং সূর্যাজঃ প্রীয়তা-মিতি।। ১০৮।।

বৈষ্
বাঞ্জিতং বাঞ্জাতীতমপি সর্ব্যেব স্থলিধ্যেদিত্যাশয়েন ভগবতীং জীরাধাং প্রণমতি নম
ইতিতথাচ দর্ব্যা এব গোপিকা উপলক্ষ্যয়ে। কিয়া তাস্থ মুখ্যতমাত্র দৈবৈকোক্তা।। জীরাধিকেতি
দর্ব্যাকৈ জীভগবদারাধনবিশেষাদর্থ দংজ্ঞা।। অতএব স্থলীয়প্রিয়েতি।। যদ্বা রাধিকেতি কাচিদংজ্ঞা। ততশ্চারাধনাদ্যপেক্ষয়া দাহিত্যপ্রিয়েবেতি। তত্রচ স্থলীয়া অপি সর্ব্যে জনাঃ প্রিয়াস্ত্র্যুণ্ডা যদ্যাঃ কিমুত বক্তব্যং স্থমিতি। এবং তদ্যান্তব্যিন্ প্রেমবিশেষঃ স্থচিতঃ। তদ্যা নমঃ।
যদ্বা স্থপ্রিয়ারৈ ইতি।। ততশ্চ যদ্য স্থং প্রিয়োদি দোপি জগদ্দলঃ দ্যাৎ। এবা চ তবৈব প্রিয়াজ্জির ক্রপ্রেমাদ্রে। ততশ্চ তয়া দহ রাদক্রী ড়াদিকং পরমস্ত্রতিস্থেনাস্থে বর্ণয়িস্তমিচ্ছন্ তচ্চ পরমগোপ্যস্থেনানভিব্যপ্তয়ন্ মধুরেণ দমাপয়েদিতি ন্যায়েন কিঞ্চিদেব।শক্ষেতেনোদ্দিশন্ প্রণমতি।
দেবায় লোকোন্তরায়েতি লীলানামপি লোকোন্তরতাভিপ্রেতা। যদ্বা জীরাধিকয়া দহ নিরন্তরক্রীড়াপরায় অতএবানস্থলীলায় স্থভাং নমইতি। এবং গোকুলবিষ্য়িকা দর্ব্যাপি লীলোদ্দিন্টা
তবৈয় চ নমইতি ভাব ইত্যেধা দিক্।। ১৪।।

গ্রীরাধাপ্রাণনাথায় শ্রীমদ্দামোদরায় তে । সর্বাং চৈতন্যদেবায় শুরবেং পিতমেব মে।। তত্র কুণ্ডে নরঃ স্বাত্বা হরেঃ প্রিয়োভক্ততমোভবেৎ।। হি যতঃ। তত্র তত্র স্বানং তস্য হরেঃ প্রতোষণং। প্রকর্ষেণ তোষয়ভীত্যর্থঃ।। ১০৫।। তত্র হেতুমাহ যথেতি।। নচ সাধারণপ্রিয়েত্যাহ সর্বাস্থ গোপী ঘপি মধ্যে।। ১০৬।। তদ্যাঃ ভলৈয় শ্রীরাধারে। অন্যত্র বৃন্দাবনেতরস্থানে সা দেবী লক্ষ্যাদিরপা বৃন্দাবনাথ্যে চ বনে রাধৈব স্বয়ং স্বনামাদিনৈর প্রসিদ্ধেত্যর্থঃ।। স্থবোধন্যাং উপানেকাদশ্যাং এভচাগ্রে তৎ প্রসঙ্গে ব্যক্তং ভাবি।। ১০৭।।

অধ রক্ষতভুদ শীরুত্যং ।। তবৈব। চতুদ শ্যাং ধর্মবাল পূলা কার্য্যা প্রমান বিষ্ণান্ধ কার্যাং নবৈর্বরকভীরুভিঃ।। অরুণোদরভোহনাত্র রিজ্ঞারাৎ লাভি যোনরঃ। ভদ্যাক্ষিকভবোধর্মোনশ্যভোব ন সংশ্রঃ। ক্ষান্দে চ তবৈব। কার্ভিকে ক্ষপক্ষেত্র চত্তদ শ্যাং বিধূদরে । অবশ্যমেব কর্ত্তব্যং স্থানং নরকভীরুভিঃ।। ১০১।। কিঞ্চ পালে তবৈব। ততশ্চ তর্পণ্য কার্যাং ধর্মারাক্ষ্য নাম্ভিঃ। জীবংপিতা ন কুর্বীত তর্পণ্য মভীন্মরোঃ।। ১১০ ।। যজ্ঞোপবীতিনা কার্যাং প্রচানাবীতিনা তথা। দেবস্বঞ্চ পিতৃস্বঞ্চ যমস্যান্তি দ্বিপতা।। ১১১ ।। নজ্ঞান বিভাগ তথা। দেবস্বঞ্চ পিতৃস্বঞ্চ যমস্যান্তি দ্বিপতা।। ১১১ ।। নজ্ঞান বিভাগ হাং কুর্যাাচ্ছিবস্থিয়ে। ন তৎ ক্রতৃশতেনাপি প্রাপ্যতে পুণ্যমীদ্বাং।। ১১২ ।। কুমারীবটুকান্ পূজ্য তথা শৈবতপোধনান্। রাজসূর্যক্ষণ তেন প্রাপ্যতে নাত্র সংশ্রঃ।। ১১৩ ।। কার্তিকে ভৌমবারেণ চিত্রা রুষ্ণা চতুদ্দ শা। তদ্যাং ভূতেশমভার্চ্য গচ্ছেচ্ছিবপুরং নরঃ।। কিঞ্চ ।। অমাবস্যা চত্তদ্দ শ্যাঃ প্রাদ্বান দ্বান্ত । যসমার্গান্ধকারেভ্যামুচ্যতে কার্তিকে নরঃ।।

অথামাবাস্যাক্তরং ।। পাছে তত্তিব ।। দিবা তত্ত্ব ন ভোক্তব্যং বিনা বালাতুবান্ জনান্। প্রদোষে সময়ে লক্ষ্মীং পজ্যেত্ত যথাক্রমং ।। ১১৪ ।। কিঞ্চ । প্রদোষ
সময়ে বিপ্রাঃ কর্ত্তব্য দীপমালিকাঃ । দীপদানাজ্তঃ পশ্চালক্ষ্মীং বিপ্রাঃ প্রবোধয়েং ।। ১১৫ ।। ত্বং জ্যোভিঃ জীরবিশ্চন্দ্রে বিদ্যুৎসৌবর্ণভারকাঃ । সর্বেষাং
জ্যোভিষাং জ্যোভিদা পিজেলাতিঃস্থিতে নমঃ । ১১৬ ।। মান্ত্রেণানেন কমলাং দীপহস্তাঃ জিয়োদ্বিজাঃ । দেবীং প্রবোধয়েরুশ্চ ততঃ কুযুর্গ্চ ভোজনং । প্রদোষ
সময়ে লক্ষ্মীং ভোজয়িজা ভুনক্তি যঃ । পুনান্ সম্বংসরং ষাবলক্ষ্মীস্তং নৈব মুঞ্চি ।।
অথামাবস্যানির্বয়ঃ ।। যথানির্বয়াসূতে ॥ উপবাসাদিদ্বাবাস্যা প্রতিপদ্মুভা
গ্রাহ্যা ভদুক্তং। অমাবাস্যা তৃতীয়াচ ভাউপাস্যাঃ পরান্ত্রিভাইতি ॥ চন্তর্দ্ধী
বিদ্ধানিষ্যেশ্চ নিগমে। ভূতবিদ্ধা জ্বাবাস্যা নিক্ষলং ন্যাপ্রয়ন্তি। কৃচিৎ
ফান্দেপি ভূতবিদ্ধাজ্মাবস্যা ন গ্রাহ্যা মুনিপুশ্বরৈ রিতি।।

অথ শুক্রপ্রতিপৎ ক্ষানে॥ প্রাতর্গোবর্দ্ধাং পূজ্য ঘৃতকৈব সমাচরেৎ। ভূষণী-

চতুর্দ্ধাাং স্নানং চারুণোদয়ে সত্যেব কার্যাং নিতাস্থাদিত্যাই অরুণেতি'।। ১০৯ '। তওদিশী-রুহ্যমন্দপি লিথতি ততশেতি ষড্ভিঃ ।। নামডিঃ যমায় ধর্মরাজ্ঞায়েত্যাদিনোকৈঃ ।। ১১০ । বিশ্বনপতা দেবৰূপতা পিতৃৰূপতা'চ ।। ১১০। নক্তং নক্তং ভোজনত্রতং ।১১২। পূজ্য পূজ্মিস্থা ॥১১৩। তত্র অমাবাস্যায়াং ॥ ১১৪॥ হে বিপ্রাঃ ॥১১৫॥ বিহ্যাচ্চ সৌবর্ণঞ্চ সুবর্ণজ্ঞাতং তারকাশ্চ ॥ ১১৬॥ লোহোলোহনপাত্রাদি বাহনঞ্জ শকটাদি তৎশহিতাইত্যর্থঃ ॥ যদা ন বিদ্যুতে দোহোদোহনং গ্রহণং চ যাসাং তাঃ তিমান্ দিনে গাবোনদোহ্যা ব্যাশ্চ নবাহ্যাইত্যর্থঃ ॥ পাঠাজরেপি



য়ান্তথা গাৰঃ পূজ্যান্চ দোহবাহনাঃ।। ১১৭।। এক্ষদান বার্যোয়ং এগোবর্জন ভূধরং। শুক্লপ্রতিপদি প্রাতঃ কান্তিকেইচ্চ্যোইত্র বৈষ্টবৈঃ। প্রাতর্গোবর্জনং পূজ্য রাত্রৌ জাগরণং চরেদিতি কৃচিৎপাঠঃ ॥ তক্ষাত্রদিদংকর্ম গোবর্জনপ্রাধানে ন গোপ্রাধান্যেন চখ্যাত মপ্যেব জেয়ং ।। তত্র দিননির্বঃ । যদাহ দেবলঃ ।। প্রতি পদদর্শসংযোগে ক্রীড়নম্ভ গবাং মতং। পরবিদ্ধান্ত হঃ কুর্য্যাৎ পুঞ্চারধনক্ষয়ঃ।। নির্বাম্তধ্তং পুরাণান্তরবচন ।। যা কুহুঃ প্রতিপনিশা তত্র গাঃ পূজ্যেন্প । পূজামাত্রেণ বর্দ্ধন্তে প্রজাগাবোমহীপতিঃ ৷৷ ততঃ প্রাতর্গোবর্দ্ধনং পূজে,তি পূর্বাহ্নতাৎপর্যাকং । দ্বিতীয়াসময়ে তু সর্বাথা নিষিদ্ধং ।। ভদবথা ৷৷ নন্দায়াং দর্শনে রক্ষাবলিদানদশাসুচ। ভক্রায়াং গোকুলক্রীড়াদেশনাশায় জায়তে। প্রাণ नमूछ्रा जू मस्राविक हत्नु । नशक्ति वीसामः रश्याध्य निविधः । नशः कोस्रावित থত রাতৌ দ্মোত চন্দুমাঃ। সোমোরাজা পশূন্ হতি সুরভী পূজকাৎ স্থা।। তদুদর সম্ভাবনঞ্চ নির্ণামূতে নির্নাতিং । প্রতিপদ্যাপরাল্লিকত্রিমূর্জ্বগাপিন্যাৎ দ্বিতীয়ায়াৎ চন্দুদর্শনংসম্ভ'ব্যক্তে তদুক্তমগ্লাধানবিষয়ে । বৃদ্ধশাতাতপেন। দিভীরা ত্রিমূহুর্ভা চেৎ প্রতিপদ্যাপরাত্নিকী।। ভার্যাধানগভদ্দ শ্যাৎ পরতংসোম দর্শনাদিতি ॥ অপরাহ্নশ্চ পঞ্চধা বিভক্তস্যাহ্নশচন্তর্থেভাগঃ ॥ ভত্শ্চ হত্র প্রতি পদি মমুহূর্ত্তব্যাপিনী দ্বিতীয়া ভত্র চন্দুদর্শনসম্ভাবনমিভি। অন্যদ।ভ পুরেব প্রতিপত্ত গৃহত। তথৈব পুরাণসমুদ্ধরে। বর্দ্ধমানতিথৌ নন্দা যদা সার্দ্ধতিযা-মিক: । দ্বিতীয়াবৃদ্ধিগামিত্বাদুত্র। তত্র চাচ্যতে ॥ কিল ।। যদাপূর্গতিপং পরত্র নিষ্ক্রমতি তদাপুতেরৈর কার্যা। যথোক্তৎভবিয্যোত্তরে ॥ যথা দ্বাদশতি র্মাদৈর্মাদোক্দোমলিমু চং ॥ তথৈবাহোরাতিক্দা তিথিং প্রোক্তোমলিমু চং ॥ यथागनिम्, हः शृद्धामात्मारेनवस्रथाभवः । ত্যাজ্যা তিथिस्था भूषा आध्या रेहव তথোত্তরেতি নির্থাম্তমতং। কিন্তু বঞ্জুলীন্যায়েন পূর্বৈর মন্তংশক্যতে। তম্বদত্রাপি দেবলাদিবচনপ্রামাণ্যমন্ত্রীতি ॥ ১১৮ ॥

অথ গোবর্দ্ধনপূজাবিধিঃ। পাছে তত্তিব। মথুরায়ান্তথান্যত্র ক্বরা গোবর্দ্ধনং গিরিং। গোময়েন মহাস্থূলং তত্ত পূজাগিরিয়থা।। ১১৯॥ মথুরায়াংতথা দাক্ষাৎ ক্বরা চৈব প্রদক্ষিণং।। বৈষ্ণবং ধাম সংপ্রাপ্য মোদতে হরিদন্ধি।। ১২০॥

পূজামন্তঃ। গোবর্দ্ধনধরাথার গোকুলতাণকারক। বিষণুবাহুক্তোচ্ছায়ো-

তথ্যবার্থ: ॥ ১১৭ ॥ শ্রীগোর্দ্ধনপূজাচ শুক্র প্রতিপৎপ্রভাতে বৈক্তবির্বশ্যং কার্য্যতি লিখতি শীক্ষেতিহন্তালমদ্রিরণাহরিদাসবর্য্যইত্যান্ত্যক্তে:॥ ১১৮ ॥

মথুরায়াঃ অন্যত্ত মথরামগুলব্যতিরিক্তদেশে বর্থা যথাবে । ১১৯ ।। সাক্ষাৎপূভারিত্বেতি শেষঃ।। ১২০।।

গরাংকেটিপ্রদেভিব ইতি।। গোপ্তামন্তঃ। ক্ষান্দে তত্তিব।। কক্ষীর্যা লোকপা-লানাং ধেনুৰপেণ সংস্থিতা। ঘৃত১ বহতি যজার্থে যমপাশং ব্যপোহতু।। অগ্রতঃ সম্ভ মে গাবোগাবোমে সম্ভ পৃষ্ঠতঃ। গাবোমে পার্শ্বঃ সম্ভ গবাং মধ্যে বসাম ছে মিতি।।

অথ গোক্রীড়া। তত্তিব। ক্রোধাপয়েদ্ধাবয়েচ গোমহিষ্যাদিকং ততঃ। বৃষান্
কর্ষাপয়েদ্যোপেরুক্তিপ্রত্যক্তিবাদনাৎ।। ১২১।। পাত্মে চ তত্তৈব।। মহিষ্যাদেতথা ভূষাক্রীড়নং বারণস্তথা।। ১২২।। তন্মাহাত্মাঞ্চ তত্তিব। এবং গোবর্দ্ধনং গাশ্চ
পূজনীয়া বিধানতঃ। গোবর্দ্ধনমখোরম্যঃ ক্লম্মতোষকারকঃ।। ১২৩।।

অথ শ্রিবলিদৈত্যরাজপূজা।। লিখিছা শ্রীবলিং পটে বিস্ত্যাবল্যানিতং মুদা। প্রদোবে তৎপ্রতিপদোভগবদ্ধ ক্রমর্জরে ।। ১২৪।। তথাচ ক্ষান্দে ।। বলিমালিখ্য দৈত্যেন্দ্র বর্গ কৈঃ পঞ্চরঙ্গকৈঃ। সর্বাভরণসম্পূর্ণ বিদ্যাবল্যা সহাসিতং ।।১২৫।। কুত্মাপ্রময়জন্তোরুমুক্রদানবসংবৃতং । সম্পূর্ণক্ষীবদনং কিরীটোৎকটকুপ্রলং ।। বিভুজং দৈত্যরাজানংকার য়িছার্চ্চয়েমুপ ।। ১২৬ ।। তক্রপূজাকরণং । পাত্মে তবৈব । যথাপিতিং দেহমনেন বিষ্ণবে ভীতেন মিথ্যাবচসোমহাত্মনা । দৈত্যেন তেনাথ কঠোরচেইটা বন্ধাবলির্দ্ধামনমূর্তিনাবত । বন্ধানীতোধ পাতালং বিমনাঃ থিরমানসঃ । নাভ্যসূয়দ্ধরিং দৈত্য স্থাক্তাহংমমতে সুধীঃ ।। তদোবাচ হরিঃ প্রাত্তিকা দৈত্যায় ভাগরুৎ। অশ্যোত্রিয়ে দত্তমমন্ত্রকং হতং জপ্তং ভথা ব্যগ্রধিয়া জনেন যৎ। তথোক্তিশুক্রপ্রতিপদিনে নতু দ্বামর্চয়েন্তং সুকৃতং তবাস্তা। ১২৭ ।। ইতি ভব্মে বরো দ্বো হরিণা দিতিজায় চ। ততোহ্বশাং প্রপ্তাহিসৌ বলিরাজ-দিনে মুদা। রুক্ষসাহ্বিয়াত্বটাপি পূজনীয়ঃ প্রযন্ত্রং।। ১২৮ ।।

ज्य विलिशृक्षाविधिः ॥ कात्म छरेखव ॥ गृहमा मध्या मानायो । विमानायाः

ক্রোধাপয়েদিত্যার্যং ক্রোধংকারয়েদিত্যর্থ:। গোপে: ক্লুবা কর্বাপয়েৎ আকর্বয়েৎ।। ১২১।।
ক্রীড়নং আকর্ষদিক্রীড়াং কারয়েদিত্যর্থ:। বারণং বরং কারয়েদিত্যর্থ:।।১২২।। গাগাব:।।১২৩।।
ত্যাগোর্বন্ধনাদ্রিপুরাসম্বন্ধনাঃ শুক্রায়াঃ প্রতিপজ্জিখেঃ প্রদোষে। যতোভগবতোভক্তং।১২৪।
আসিতং আসীনং। ১২৫।। স্পইতানেন এভচ্চ রাজকৃত্যমিতি বোধিতং।। স্বয়মিতিপাঠে চ
সর্বোজনঃ স্বয়মেব নত্মাহস্তেনাচ্চয়েদিত্যর্থ:।। ১২৬।। যস্ত্রাং নার্চয়েরস্ত্রস্য যাবং স্কৃতং তৎ
সর্বাং তবাস্ত্র।। ১২৭।। এবং প্রভগবদাক্তয়াবদাং পুরুষ এব। ক্র্ফসমীপবর্তিত্রাচ্চাবশ্যং ভক্তা।
পুরুষ ইত্যাহ ক্রফেতি।। ১২৮।।

ততো इन्हें त्र । बाज्यां ज्वां का नार्काः महत्यो विष्णु खिख्यां। ১২৯।। कमरेनः क्यूरेमः भूरेणः कञ्चारेतः त्रक्क कार्याः । शक्षभू ज्ञामित विराम क्यारे के क्यारे के विद्या का नार्वे के विद्या के विद्या के विद्या के विद्या के विद्या का नार्वे के नार्वे के विद्या का नार्वे के विद्या का नार्वे के विद्या का नार

শব্দ যমন্তি নির্মারত্যং ।। ক্রান্দে পালে চ ।। উদ্ভে শুক্ত দ্বিতীয়ায়াং মধ্যারে যমনচর্চেরে । লানং রুলা ভানুজায়াং যমলোকং ন পশ্যতি ।। ১৩১।। কিঞ্চা। ত্ব্যাং নিজগৃহে বিপ্র ন ভোক্তব্যং ততোবুধৈঃ ।। সেহেন ভিনিনিইন্তাল্লোক্তব্যং পুষ্টিবর্দ্ধনং ।। ১৩২ ।। দানানি চ প্রদেয়ানি ভগিনীভ্যোবিধানতঃ । সর্বাভিনিয়া সম্পাঞ্জ্যা আভাবে প্রভিপত্ত্রাঃ ।। ১৩৩ ।। কিঞ্চা। যস্যাং তিথো যমুনয়া মমরাজদেবঃ সন্তোজিতত্ত্বিশয়ল্পনাজ্বদেন। তস্যাং স্বশুং করতলাদিহ যোভুনক্তি প্রাপ্রেটি বিদ্বসূভ্যং ধনমুত্রমং সঃ ।। ১৩৪ ।।

অথ শুক্লাই মীক্ত্যং । পালে তথৈব কুর্মপুরাণে চ। শুক্লাই মী কার্দ্ধিক তু স্বৃতা গোপাই মী বুধৈঃ। তদ্দিনে বাসুদেবোই ভূলোগঃ পূর্বস্ত বংসপঃ। ১৩৫।। ভত্র কুর্য্যান্ধাবাং পূজাং গোগ্রাসং গোপ্রদক্ষিণাৎ। গবানুগ্যনৎ কার্য্যৎ সর্ব্যান্ কামানভাপ্সতা।। ১৩৬।।

অথ প্রবোধনীক্ত্যং। শায়ন্যামির ক্ত্বাস্যাৎ ক্ষীরাস্ত্রোধিমহোৎসবং। প্রবোধ্য ক্ষণ সম্পূল্য বিধিনা রোহয়েএখং। ১৩ গা অথ প্রবোধনীক্ত্যনভাতা ক্ষান্দে তারে। জন্মপ্রভৃতি ঘৎ পুণ্যং নরেণোপাজ্জিত ও ভূবি । বৃথা ভবিত তৎ সর্বাৎ ন ক্ত্রা বোধবাসরং। ১৩৮।। অথ প্রবোধনীমাহাত্মাৎ তারের।। প্রবোধন্যাম্চ মাহাজ্যং পাপস্থ পুণ্যবর্জন । মুক্তিদ্ধ ক্তবৃদ্ধানাং শৃণু ত্বং মুনিসভ্রম।। তাবদার্জ্জিতি বিপ্রেন্দু গঙ্গা ভাগারথী ক্ষিতৌ। যাবনায়াতি পাপঘ্নী কার্জিকে হরিবোধনী।। ভাব-দার্জিতি তীর্থানি আসমুক্রম্বাৎসি চাযাবৎ প্রবোধনী বিক্ষোন্তিথির্নায়াতি কার্জিকে।

भालाग्नाः चाग्नजनित्भरतः।। यद्या भालाग्नाः গৃছে। তত্ত্ৰ মধ্যুবত্ত। সন্ত্ৰী হৰ্বুক্তঃ সন্:। ১২৯॥ কহলারেঃ সৌগদ্ধিকৈঃ॥ ১৩•॥

ভাষুজায়াং শ্রীযমুনায়াং ॥ ১৩১।। ভচ্চ পুষ্টিং বর্দ্ধাতীভার্থ: ॥ ১৩২।। প্রতিষত্ম বিমাত্রেয়া:॥ ১৩৩॥ বিশ্বস্থাত শে।ভটনশ্র্যাং উদ্ভামং ধনং ধর্মলক্ষণং। ধর্মাইউং ধনং পুংসামিত্যেকাদশক্ষোত্তে:॥ ১৩৪॥

যতঃ পূর্বাং বৎসপঃ সন্ ত দ্বিনমারভা পোপোহভূৎ।। ১৩৫।। গ্রামমুগমনং। ১৩৬।। অস্যাং প্রবোধন্যাং।।১৩৭॥ বোধবাসরং প্ররোধম্যক্তক্তামিভার্থঃ॥ এবং রথযাকাদেনি-ভাস্বমায়াতং।।১৩৮।। ছল্লভং ছঃবেন প্রাপ্যং ছ্প্রাপঞ্চ অপ্রাপ্যং ঘৎ তদ্পি প্রার্থিতং সং।।

বাজপোরসহসাণি অশ্বনেধশতানিচ । একেনৈবোপবাসেন প্রবোধন্যালভেয়রঃ।। मूर्ज उर रेवर मुल्ला १९ देवाला का महत्राहरत । उनिम श्रार्थिकः विश्व मना कि स्तिरवा-थनी ॥ ७० ॥ विश्वर्यार मछिर भृषार ताकाक मूथमण्यामः । ममाकूर्णाविका ৰিপ্ৰ হেলয়া হরিবোধনী।। ১৪০।। মেরুমন্দার তুল্যানি পাপান্যভ্যজ্ঞিতান্যপি। একেনৈবোপবাসেন দহতে হরিবোধনী ।পৃথিব্যাংয়ানি দানানি দক্ত্ৰী যৎকলমাপ্লুতে। একৈনৈবোপবাদেন দদাভি হ রিবোধিনা ॥১৪১॥ কিঞ্চ। জাভঃ সএব সুক্তা কুলং তেনৈব পাৰিতং। কার্ডিকে সুনিশাদূ न কুতাযেন প্রবোধনী।। ১৪২ ।। যানি কানি চ ভীর্থানি ত্রৈলোক্যে সম্ভবন্তি চ। তানি তস্য গৃহে সম্প্রঃ করে।তি প্রবো-ধনীং।। ১৪৩।। সর্বার্কতাৎ পরিত্যকা তুষ্টার্থৎ চক্রপাণিনঃ। উপোধ্যৈকাদশী नगाक् कार्न्डिक इतिरविधिनी । किस्तरी वद्यक्तिः क्रिकाः श्रेतलाकश्रीमपूरिन। সক্ল:চ্চাপোষিতা যেন কার্ত্তিকে হরিবোধদী ॥ ১৪৪ ॥ স জ্ঞানী সহি যোগী চ স তপস্বী জিতেন্দ্র:।। স্বর্গনোক্ষেটি তস্যান্তামুপান্তে ইরিবোধনীং।। ১৪৫।। বিকোংপ্রিয়-তরা হোষা ধর্মাসারসঃ দায়িনী। ইমাং সরুদুপোষ্টের মুক্তিভাগী ভবেয়রঃ। প্রবোধনীমুপোষ্টের ন গরে বিশতে নরঃ। সর্বধর্মান্ পরিত্যজ্য তস্মাৎ কুর্বীত নারদ।। ১৪৬।। স্থানংদানং তপোহোমঃ সমুদ্দিশ্য জনাদ্দিশ। নরৈর্যৎ ক্রিয়তে বিএ প্রবোধন্যাং ভদক্ষং। ১৪৭। মহাত্রভমিদং পুশ্র মহাপাপৌঘনাশনং। প্রবোধ-বাসরৎ বিষ্ণোর্বিধিবৎ সমুপোষয়েৎ।। ব্রতেনানেন দেবেশং পরিতোষ্য জনার্দ্দনং। বিরাজয়ন্ দিশোদী প্র্যাপ্র অ্বনং হরে: ।। ১৪৮।। পালে চ তত্তিব।। দুধাকিভো-গিশয়নে ভগবাননস্থে যি স্মিন্ দিনে স্বপিতি চাথ বিবুধ্যতে চ। ত স্মিন্ননীমনসামু-, প্রাসভালাৎ কাম্প্রাভ্যভিমতং গরুড়াঞ্চশায়ী ॥ ১৪৯ ।। বারাহে চ।।উপরাসা-সমর্থানাং সদৈব পৃথ্লোচনে ।। একা সা দ্বাদশী পুণ্যা সমুপোষ্যা প্রবোধনী ৷৷ ১৫০ ।। তস্যামারাধ্য বিষেশং জগতামীশ্বরেশ্বরং ।। প্রাপ্নেতি সকলং তদ্ধি দাদশদ্বাদশী-ব্রতং। ২০। উত্তরাঙ্গারকষুতা যদি সা ভবতি প্রিয়ে। তদা সা মহতীপুণ্যাকোটিকোটি श्वरनाञ्जा। अग्रत्न त्वाथरने रेठव काणिशासन गूमति। উপোरियाव विश्वासन याश्विमञ्ज-য়তাং নরাং।। ১৫২।। একাদশী সোমযুতা কার্তিকে মাসি ভাবিনি। উত্তরাভাত্রসং-

यात व्यवसाना क्षेत्रीहिंका॥ बनाः य कियर कम नर्समानसामभू रह। व्यवस-পুণ্ফলদা তেনানস্তা ফলে ।। ১৫৪।। তত্ত্বৰ শ্ৰীযমনারদসম্বাদে।। অন্তচ তে প্রক্রামি গুহ্রাদ্মুহ্রভরং মুনে। কার্ত্তিকেইমলপক্ষে ত সাক্ষাদেকাদশী স্মৃতা। ভ-ক্তিপ্রদা হরেঃ দা ভ নামা খ্যাতা প্রবোধনী।। ১৫৫। যা দা বিক্ষোঃ পরা মূর্ডিরব্যক্তা নেকৰপিণী। नা कि छ। মানুষে লোকে দাদশী মুনিপুঙ্গব ॥ ১৫৬।। বিংশষতঃ।। পালে তত্ত্বৈ।। তাৰদাৰ্জনি তীৰ্থানি বাজিনেধাদয়োমধাঃ। মথু-রায়াৎ প্রিয়া বিষ্ণোর্যাবন্ধায়াভি বোধনী।। সংসারদাবভগুনাং কামসৌখ্যে পিপা-সিনাং। জীক্ষপাদপদ্মস্য সান্নিধ্যং শীতলং গৃহং। ভবপাত্তজনানাৎ বৈ প্রাপি-় কেয়ং প্রবোধনী। **কথং** ন সেব্যতে মূচ মথুরায়াং কিমন্যতঃ।। ১৫৭।। তথা বিশে-ষতঃ প্রবোধন্যাং শ্রীভগবৎপূজাদিনাহাত্ম্য । স্কান্দে তত্ত্বৈ । প্রবোধনীমাহ,ত্ম্যে। যে২র্চরম্ভি নরান্তন্যাৎ ভক্ত্যা দেবস্ত মাধবং ৷ সমুপোষ্য প্রমুচ্যন্তে পাপৈন্তে সমু-পাজির্জ তৈঃ। বাল্যে যচাজির্জ ৩ বংস যৌরনে বার্দ্ধকে চ যং। সপ্ত জনাক্ষতং পাপং ষশ্পং বা যদি বা বহু। শুক্কা দ্র্নশাদূল সুগুহামপি নারদ। তৎ কালয়তি গোবিন্দন্তিথৌ তস্যাৎ প্রপূজিভঃ ॥ ১৫৮ ॥ কিঞ্চ ॥ প্রবোধবাসরে বিষ্ণোঃ বুরুতে . চ হরেঃ কথাং। সপ্তদ্বীপাবনীদানে যৎ ফল্ল তড়েবেলুনে।। ১৫৯।। কৌ বুদস্য ত মাসস্য যা সিতা দ্বাদশী ভবেং। অর্চয়েদ্বস্থ মাং তত্র ভস্য পুণ্যফলং শ্ণু ৷ যাবল্লোকাহি বৰ্তন্তে ধাৰজ্বকৈব মাধৰি ৷ মড়ক্তোজায়তে তাবদন্তিকোন काय्रा ।। ०७ ।।

অথ প্রবোধকালনির্গ্ন। ভবিষ্যে। আভাকাসিতপক্ষেষু মৈত্রপ্রবৃতী। আদিমধ্যাবসানেষু প্রস্থাপাবর্জনাদিকং ॥ ১৬১॥ পাছে। পৌঞ্লেষপদেনাত্নি

দ্ধরেভক্তিপ্রদা ।। ১৫৫। তৎসেবয়া চ সাক্ষাদ্ধরিসেবৈব সম্পদ্যতইত্যাশরেনাই যা সেতি।
দাদশীকপেণ কিপ্তা নাস্তা ।। ১৫৬।। শ্রীকৃষ্ণপাদপত্মসারিধ্যক্ষপং শীতলং ত্রিতাপইরংগৃহং ভব-পাস্থ জনানাং সংসারমাগর্ভ্রমণপরিশ্রাম্ভ জনান্ প্রতি প্রাপিক। প্রাপরেদিত্যর্থঃ । অন্যতঃ তীর্ধান্তরেণ কর্ম্মান্তরেণ চ কিং প্রয়েদ্রনং। শ্রীমথুরায়াং তৎ সেবনে সত্যস্তিচ ইত্যর্থঃ ।।১৫৭।। তত্র চ বিশেষতোভগবতঃ পূজাং কীর্ত্তনঞ্চ কুর্যাদিত্যুপদিশনাদৌ পূজামাহাত্মমাহ ষেইতি ত্রিভিঃ ।।
শুস্কং চিঃকৃতং আদ্রপ্তি সাম্প্রকিং। ১৫৮।। কীর্ত্তনমাহাত্মমাহ প্রবোধেতি। কর্থামিত্যুপলক্ষণং
সর্বাকীর্ত্তনপ্রকারস্য ।। ১৫৯ ।। অন্যস্য ভক্তো ন জায়তে ন স্যাদিতি একান্তিতাং প্রাপ্রোতী
ত্যর্থঃ ।৷ ১৬০।।

আভাকেতি সঙ্কেতেন আধাতভাতকার্তিকমাসা স্তেষাং সিতপক্ষেষ্ শুক্লন্তাদশীষু অমুরাধা শ্র-ব্ণরেবতীনক্ষত্রাণমোদ্যমধ্যাস্ত্যপাদের শয়নপার্শপরিবর্তনোপোনানি ক্রমেণ ভবস্তীত্যর্থঃ। ১৬১। 'তত্তদেয়াগ্যভাবে চ দ্বাদশ্যামেবোপানাদিকং কুর্য্যাদিতি বিশ্বতি পৌষ্ণেতি॥ পৌষ্ণং রেবতী ত্রসাশেষোইস্তাপাদোর্ষদিদিনমধ্যে ন স্যাৎ ইমত্রাদ্যমপি অমুরাধাদ্যপাদোনিশি ন স্যাৎ তদ্যু, নৈতাদ্যমপি না নিশি। ছাদশ্যামপি তৎ কুর্য্যাদুখানং শর্মং হরেঃ । ১৬২। নিশি ছাপোদিবোখানং সন্ধ্যায়াংপরিবর্তনং। অন্যত্ত পাদযোগেপি ছাদশ্যামেব কার্য়েৎ।। ১৬৩।। বারাহেচ।। অপাদনিয়মন্তত্ত ছাপে বা পরিবর্তনে। পাদযোলগোষদা ন স্যাদ্রেলাপি তদা ভবেৎ।। ১৬৪। কিঞ্চ। ক্ষান্দে ।। বেবতাভো হদা রাত্রো ছাদশ্যাচ লমন্ত্রিতঃ। তদা বিবুধ্যতে বিষ্ণুর্দিনান্তে প্রাপ্য রেবতাথা ১৬৫।। রেবত্যাদিরপান্তোবা ছাদশ্যাচ বিনা ভবেৎ। উভরোরপ্যভাবে তু সন্ধ্যায়াঞ্চ মহোৎসবং।। ১৬৬।। বারাহেচ। ছাদশ্যাং সন্ধিসময়ে নক্ষত্রাগামসন্তবে। আছা কাসিতপক্ষে তু শর্মনাবর্তনাদিকং।। ১৬৭।। অতএব পুক্রপুরাণে।। বস্য হস্য ত দেবস্য যমক্ষত্রং ভিশিষ্ট যা। তম্য দেবস্য তিলাংশ্য শায়নাবর্তনাদিকং।। ১৬৮।। অধ্য ভগবংপ্রবিধিঃ। শায়ন্যামিব নিস্থাদ্য মহাপূজাৎ জলাশয়ে। কৃষ্ণৎ

কেবলায়ামপি দ্বাদশ্যাং হরেরুপানাদিকং কুর্য্যাৎ ॥ ১৬২ ॥ পাদযোগে ভতোন্যত্তাপি পাদ-यागाजात्वित् द्वाममारमव कातरह ॥ ১७७॥ व्याभामनिहमः भामरवागनिहरमानाछी-এবং সামান্যেন শয়নাদিকালত্রিকং নির্ণীয়েদানীং বিশেষতঃ প্রবোধনকালং লিখতি রেবতীতি দ্বাভ্যাং। দ্বাদশ্যা সমন্বিতঃ সহিতোরেবত্যস্তপাদো যদা রাত্রৌ ভবেৎ তৃদা-দিনান্তে অপরাক্ষে। তথাচোক্তং। রেবভ্যস্তোযদা রাত্রৌ গতঃ পাদান্তরেপি চ। অপরাক্ষে তদা-বিষ্ণুর্যোগনিদ্রাং বিমুঞ্ভীতি॥১৬৫॥ ভদভাবেচ সন্ধ্যায়াং প্রবোধয়েদিত্যাহ রেবভ্যাদিরিতি। রেবত্যাঝাদিঃ আদ্যপাদঃ অস্তো বা অস্ত্যপাদঃ দ্বাদশ্যা বিনা ভবেৎ। এবমুভয়োরপ্যভাবে সভি यनि ছাদশ্যাং কথঞ্চিদ্রেবভ্যাযোগোনশ্যাদিভার্ধঃ তদা সন্ধ্যায়ামেব প্রবোধনমহে।ৎসবঃ স্যাৎ্। তর্কোক্ত মন্যত্রাপি। রেবভ্যন্তোযদা রাত্রৌ দ্বাদশ্যাচ বিনা ভবেৎ। উভয়োরপাভাবে স্যাৎ সন্ধ্যা-য়ান্ত মহোৎসবইতি।। ১৬৬।। এতদেব বারাহপুরাণবচনেন সম্বাদয়তি দ্বাদাসামিতি।। আঘাত ভাত্র কার্ত্তিকানাং সিত্রপক্ষেষু যা দ্বাদশী তস্যাংনক্ষত্রাণাংসৈত্রাদীনামসম্ভবে সর্ব্বথা অভাবে সঙ্কি সন্ধিসময়ে সন্ধ্যায়াং শয়নাদিকং স্যাৎ এতছ্ক্তংভবতি ভগবচ্ছয়নাদৌ আঘাঢাদীনাংশুক্লদাদশী ক্রমেণাসুরাধাদীনামাদ্যমধ্যাস্ত্যপাদ্যুক্তা রাত্তিসন্ধ্যাদিবাযুক্তা চ সভী পরমপ্রশস্তা।। যদাচ তত্র তত্র পাদযোগোনলভাত তদা দাদশীনক্ষত্রযোগআদরণীয়ং। পাদযোগে চ তত্রায়ংবিধি-শেষঃ। দিবা রেবতীদ্বাদশ্যোর্যোগে তত্ত্বচ রাত্রিগামিনি নক্ষত্রশেষে শতি দিনান্তে প্রবোধনং দিবোপানমিত্যাত্মক্তে:। যদাচ রেবভীদ্বাদশ্যোর্যোগোনস্যান্তদা সন্ধ্যায়ামেব প্রবোধনং সন্ধ্যা য়াস্ত মংহাৎসবইত্যাত্যক্তে:।। ১৬৭।। এবং দ্বাদশ্যামের প্রবোধনং নির্ণীতং ভত্তচ কার্ত্তিকে-শুক্লপক্ষস্যএকাদশ্যাং সমাহিতঃ। মস্ত্রেণ চৈব রাজেন্দ্র দেবমুত্থাপয়েদ্দিজ ইত্যাদিভিভবিষ্যো-গুরাদিবচনৈঃ সহ বিরোধমাশক্ষ্য পরিহরতি যস্যেতি। অতোবিষ্ণুতিথৌ দ্বাদশ্যামের উত্থানং ভবেদিতার্থঃ। ইপাং ইয়য় দাদশী দেবেভি প্রাপ্তাতবেয়ং দাদশী কৌমুদ্যাপ্তোতি মস্ত্রলিকারগৃহী-তত্বাৎ শিকীচারদর্শনাচ্চ সর্বাধা দাদশ্যামেব প্রবোধনং সিদ্ধং ।। যচ্চ ভবিষ্যোত্তরাদাবেকাদশ্যা-मुव्यानरम्बिजाद्याकः उक्त वकानभीवान्यात्र उनारनक्षम् उनवानाम्य अवास्त्र रहि उक्त स्था यित्रवेकामगीनिन धर्वा भवामः न्यांखर्हि जिन्ना सुभवानिन। नमाहिजयः व्यादाधनश्य वामभ्या-মেরেভি বোদ্ধবাং অ তএবোক্তমেকাদশ্যাং সমাহিতইত্যেষা দিক্।। ১৬৮।। শয়ন্যামিবেভি তত্ত-

नीष्वं मकण्यः कृषा ७१ धार्यापास ॥ ७७ ॥ ७७ मजः । उत्कृषुकृषाधि কুবের সূর্য্যবোষা দিভিকান্দিত পাদপল। বুধ্যন্ত দেবেশ লগনিবাদ মন্ত্রপ্রভাবেণ সুখেন रित ।। देश हाम भी एप व थावाधार्थ पिनिमिर्जा । घटेश्व मर्कालाका नाः विकीर्थः শেষশায়িনা।। উত্তিভোত্তিত গোবিন্দ ত্যঞ্জিতাং জগৎপতে। ছয়ি সুপ্তে জগনাথে জগৎসুপ্তং ভবেদিদে। উত্থিতে চেউতে সর্ব্ব মুব্তিঠোত্তিই মাধবেতি ।।১१०।। বারা-হে চা। ব্ৰক্ষেদ্যুক্ত ব্ৰবিভৰ্ক্ত ভাবে৷ ভবানৃষিক্ষিদিভৰন্দনীয়ঃ ৷ প্ৰাপ্তা ভবেয়ং দ্বা-দশী কৌমুদাখ্যা জাগৃষ জাগৃষ চ লোকনাথ !! ১१১ !! মেঘাগতা নির্মালপূর্ণচন্দুঃ শার-मार्थुक्यानि ह लाकनाथ । कर् प्रमानी कि ह चिक्टिर्ट का क्ष्य का श्व के लाकनाथ ।। ঞ্তিশ্চ। ইদংবিষ্ণুর্বিচক্রমে ত্রেধা নিদধে পদ্ৎ সমূচমস্য পাংশুলেত্যাদি। ততন্ত-ल्मा नमूर्थाभा क्षेप घन्टो मिनिस्टिनः। छोद्र मूथरं निर्वमाश्य वार्थरम् अरू। তথাহি তৃতীয়ক্ষে । প্ৰিক্ষন্ততৌ ।। সোহসাৰদভক্ষণোভগৰান্ বিবৃদ্ধেনিশি-তেন নয়নামুক্রহং বিজ্অন্ । উপায় বিশ্ববিজয়ায় চ নোবিষাদং মাধুসা গিরাপনয়-তাৎ পুরুষঃ পুরাণইতি।। ১१২।। ততঃ পুস্পাঞ্জলিং দত্তা সংস্থাপ্য বিধিবৎ প্রভুং। नीताका नामभूर्वक वञ्चामीनि नमभर्यः । ज्थान बारका। अकानमाह छक्नायार कोर्जिक मानि কেশবং । প্রস্পুং বোধয়েজাতৌ অন্ধাভক্তিসমন্তিঃ ।। নৃত্যৈগাঁতিতথা বাদৈঃখ্ণ্যজুংসামমঙ্গলৈঃ ৷ বীণাপণবৃশ্তিকশ্চ পুরাণশ্রবণেন চ ৷ वाम्र्रिवकशां जिन्ह रहारे जबरेन। मह रेवकरेवः। मूर्जावरेज विन्तुकारेन । जू बिरमाजा-जित्व ह ।। পু? প্ৰাৰ্থিশ চ নৈবে দৈয় দা পিবৃইক্ষঃ সুশোভনৈঃ। হোইমর্ভ কৈয় ব পূপে-न्छ करेनः गारिकन्छ भाष्ठिमः । ই क्लार्क्सिकारित्र म्र्यूना जाकारकोरेजः नमाजित्रः। कूट्द्रक्मा मक्षरी। मन्छा नवदनन ह।। श्रमांखा प्रक्रत्रक्वाखा प्रमनाखाक नर्सरा ।। ১१० ।। कुक्रू मानकका जाकि बक्रमृतिः मकुक्रू रेमः । छशा नाना विदेशः भूरेका

লখিত প্রকারাস্থারেণাত্রাপি পূজাদিকং কার্যামিত্যর্থ:। জলাশয়ে নীত্রা ইত্যাদিকং বিশেষলিখনারাস্থ্রপ্রথমাত্রং ।। ১৬৯ ।। বন্দনীয়েতি পাঠে ব্রহ্মাদিভির্বন্দিতা একান্তভক্তাত্তৈর্বন্দনীয়েতি॥ ১৭০ ।। ঋষিমস্ত্রভ্রত্তী ।। ১৭১ ।। অদত্রকরুণ: মহাদয়ালু:। অতঃ বিবৃদ্ধপ্রেম্য যৎ স্মিতং
তেন ।। বিজ্ঞুন্ বিজ্ঞুর্ন্ উন্ধীলয়ন্ বিশ্বস্য বিজ্যায় উদ্ভবায় ।। যথা। নিজভক্তিপ্রচারণেন
বিশ্ববশীকরণায় ।। যথা। জগল্লহোৎস্বায় । চশন্দাদিশেষতোহস্প্রহায়চেতি নোহস্মাকং
ভক্তানাং বিষাদং প্রস্মাৎ চিরবাগম্তপানাভাবতোবা শোকছঃখং মাধ্যা মধুয়য়া গিরা অপনয়তাৎ ।। লোকন্টায়ং শিফাচারাস্থারেণাত্র লিখিতঃ কিন্তুন্তাপি যথেষ্টং পঠনীয়াঃ।। ১৭২ ।।
একাদশ্যামিতি পূর্বাং লিখিতাভিপ্রায়মেব ।। রাজাবিতি পাঠে চ দিনাস্তাদ্ভিপ্রায়েণ রাত্রিশক্ষঃ ।
ভাজা বিশ্বাসং ভক্তিঃ প্রীতিঃ তাভ্যাং সমন্থিতঃ। ঋগাদিমক্লশক্ষঃ ভূমিশোভাভিঃ স্বস্তিকরচনাদিভিঃ। কুচেরকং কৃষ্ণজ্বানী পর্ণাসইতিকেচিৎ। ন্বনং পুস্পবিশেষঃ ।। ১৭৩ ।। বীরক্রয়োনাম-

দ্র বৈষ্ণারিক্ররাছাতেঃ। ১৭৪। এবনের প্রায়ঃ পাছে চ।। তথা কান্দে চ। বছপুলৈর্বাছফলৈঃ কপূরাগুরুকুলুমৈ । হরেঃ পূজা বিধাতব্যা কার্তিকে বোধবাসরইতি ।। ইতাং কৃত্বা মহাপূজাং মহানীরাজনং তথা । স্ব্রতান্যর্পয়েৎ
কৃষ্ণে সপূজাকতবারিলা ।। ১৭৫।। বেদস্তত্যাদিনা স্তত্মা স্বর্তান্যর্পয়েহ
সংপ্রার্থ্য গীতবাদ্যাদিঘোটেররারোহয়েত্রখং। তথাচ ভবিষ্যোত্তরে ।। প্রিক্রফ্রুধিক্রিন্যাদে। মহাত্র্যারটের রাক্রো জাময়েৎ সান্দনে স্থিতং টেখিতং দেবদেবেশং
নগরে পার্থিবঃ স্বরং।। দীপোন্যোতকরে মার্নে নৃত্যগীতসমাকুলে ।। ১৭৬।।

অথ রথযাত্রামাহাত্ম্য ।। ভবিব্যোত্তরে তত্ত্বৈর ।। বংবংদামোদরঃ পশ্যে-मूर्शिकाधत्रशीधतः ॥ ७९ ७५ श्राम्भ५ तास्मृ नर्स५ सर्गाम् कण्भास्तर ॥ किश । योव १ भगिन क्ष्म । तथनाकर्य १ नतः । करता क क्षिष्ठानि जूनानि नद्रनायक । द्रथञ्च य निद्रीकार को क्रांकिनांशि किन्नेवः । (एवछानां शर्वाः गर्वा ভৰতি শ্বপচাদয়ঃ।। : প্রাপ্রাপে মুক্তিমায়াতি রথযাত্রাপরারণাঃ । পিতৃ মাভৃভর্তুকুলং নয়ন্ডি হরিমন্দিরং ।। কুর্বন্তি নর্ত্তারপং রথাগ্রে কৌতুকান্বিডং অপ্সরোভিঃসহ ক্রীড়াৎকুর্বস্তীন্দুাশ্চন্তর্দশ ।। ১৭৮ ।। যেরখাগ্রে প্রকুর্বন্তি গীতবা- ় - া म्राप्ति मानवाः । प्रविद्याकार शति बक्ता कांग्रस्त मश्रामधा ११ ५१ । स्मीत्मान স্যান্দনস্যাগ্রে গায়মানাশ্চ গায়কাঃ। বাদকৈঃ সহ রাজেন্দু প্রয়ান্তি হরিমন্দিরং।। ১৮০।। রথোৎসবে মুকুন্দস্য যেষাং হর্ষোপি জায়তে । তেষাং ন নারকী পীড়া যাব-मिन्तु। मह क्षम्भ ॥ ১৮১॥ রথে। প্রথাৎ সবস্য মাহাত্ম্যং কলৌ বিতনুতে হি যং। পুণ্যবুদ্ধ্যা विरम्या (माजिनार्भ) थवा नदः ।। मश्चिमीराम्यासा द्वासा प्रमानिका । मरिमनवन-পুজাত্যা তেন দত্তা মহা ভবেং। অন্যত্র চ। বোধনী জাগরাধারা কার্তিকে শুক্রপ-ক্ষতিঃ।রথস্থে।যত ভগবাং স্তক্টো যচ্ছতি বাঞ্চিতং।।১৮২।। ভল্পতে যে রথাকঢ়ৎ দেবৎ সর্বেশ্বরেশ্বরং । তেষাং যাত্রাক্তাং নূণাং কামানিষ্টান্ প্রথচ্তি ।। এক্ষ রথশোভাৎ যে প্রকৃষিন্তি প্রহর্ষিতাঃ। তেষাৎমনোরথাবাপ্তিং মৃচ্ছতে পুরুষোত্তমঃ ।। ১৮৩।। শ্রীকৃষ্ণরথ সংশোভাং যঃ করোতি স্বশক্তিভঃ। বাঞ্চিতং তস্য মচ্ছন্তি

বিক্রেন্তরুপনান্তমূল্যপ্রদানেন ক্রমন্তেনাছাতে: ।। ১৭৪ ।। ইত্থং ত্রহ্মপুরাণাছ্যক্তপ্রকারেণ স্বদ্য ত্রভানি চান্তর্মান্যাদিবিহিতানি ।। ১৭৫। স্বন্ত্যস্ত বিশ্বস্য মনঃ প্রসীদতামিত্যাদিনা প্রভুং সংপ্রার্থ্য ।। ১৭৬ ॥

তে শ্বপচাদয়োপি দেবগণাভবন্তি।। ১৭৭।। নর্জক্যাইবন্ধপং বেশং কুর্বন্তি॥ ১৭৮॥ দেব-লোকাৎ পরিভ্রফী ইতি প্রাক্ দেবলোকে যথেন্টং ভোগান্ ভুক্ত্বা ততঃ পরিভ্রফীঃ সন্তই-ত্যর্থঃ । ১৭৯।; মৌল্যেন বেতনেনাপি গৃহীতেন ॥ ১৮০॥ অস্ত তাব্যথথাতা নিষ্পাদনং তত্তোৎসাহাদিনাপি মহাফলং স্যাদিত্যাহ রথেতিত্রিভিঃ॥ হর্ষে হন্থমোদনমুৎ সাহোবা॥ ১৮১॥ যুত্র যস্যাং বোধন্যাং ॥ ১৮২॥ মনোর্থাবাঞ্জিং বাঞ্জিতকলং ॥ ১৮৩॥ মঙ্গলং জায়তী-

নিত্যং সূর্য্যাদরোক্রিহা: ।। ক্ষুণা র**থ**শোভাং যা পতাকাদি সমীমৃতাং। করোতি বরনারীণাং ভোক্তা মন্তরা শিষট্। ক্ষস্য রথশোভাং যে প্রকৃষি সুহর্ষিতাঃ। পদে পদে তথা পুত্র তেষাং পুণ্যং প্রয়াগজৎ ।। রথযাত্রান্থিতে রুফে জয়েতি প্রবদন্তিয়ে। करत्रिक पूनर्य देव मृनुभूना द वर्गा प्रदर्श शक्का वाद अत्रार्गक शक्का मागद्र नक्ष रा।। वातानमामि छीर्थियु (मवानाक्षिय मर्गान। यर कलर कविष्डिः व्याखर कारस्त्र-न ह नरद्रश्व । छत्रभरक् कृष्ठ विरयो दर्शस्य ७९ कन् मृष्टः ।। दर्शविष्ठानदेवर्श्व পূজিভোধরণীধরঃ। যথা লাভোপপরৈশ্চ পুলৈভভিত্য সমর্চিতঃ। দদাতি বাঞ্জিতনে कोमानत्त्र চ পরমং পদং। মঙ্গলং যে প্রকৃষ্টির ধূপদীপাংত্তথা তবং। নৈবেদ্যং ৰস্ত্ৰপূঞ্জাঞ্চ ভক্ত্যা নীরাজনং হরে: ।। ১৮৪।। রথাক্চ্স্য ক্ষণ্স্য সংপ্রাপ্তে হরি-বাসরে। ফলৎ ন তন্ময়া জ্ঞাতং জানাতি যদি কেশবং॥১৮৫॥ ব্রহ্মস্থারী গোপ্সশ্চ जुन्हा उन्निन्नकः। महाপा छक्यु एका शि उन्नहा छ क्रज्लिशः। महा भः नर्स भारभाशि किलकात्मन भाष्ट्रिकः। त्रथाश्राज्यः भीमरकन मूहार् मर्स्वभाष्ट्रोकः ॥ ১৮७॥ কিঞ্চান্যত্র। রথাকটে মহাবিষ্ণে যে কুর্বন্তি জয়স্থনং । পূজাঞাখিলপাপেভ্যো-সুক্তাযান্তি হরেঃ পদং।। ১৮৭।। কিঞ্চ।। রথস্যাকর্ষণৎ পূর্বং কুরুতে দৈত্য নায়কঃ। ততঃ সুরাঃ সিদ্ধসংখ। যক্ষণজ্বমানবাইতি ।। ১৮৮।। ইতাঞ্চ রথযাত্রায়া বিধিব্যক্তঃ ষতোহতৰং।। তথাপি কশ্চিত্তত্রান্যে। বিশেষোপি বিতন্যতে।। ১৮৯।। অথ রথ-যাত্রাবিধিঃ।। জীক্ষে তু রথারঢ়ে কৃত্ব। জয়জয়ধ্নিং। নিজ্পাদ্য চ মহাপূজামাশীর্দ্যা-ক্যানি কীর্ত্তরেং।। তথাট বিষ্ণুধর্মে।। বজুং নীলোৎপলরুচি লসংকুগুলাভী াং প্রমৃষ্টিং চন্দু।কারং রচিতভিলকং চন্দনেনাক্ষতিশ্চ। গত্যা লীলাঞ্জনসুথকরীং প্রেক্ষণেনা-ম্তৌঘং পদ্মাবাসাং সভতমুরসা ধারয়ন্ পাতু বিষ্ণুঃ ॥ ১৯০ । যুক্তঃ শলাদিবাহৈ-

ভাদিৰপং। বস্তবিশেষার্গণেন পূজাং ॥ ১৮৪॥ যদীতি সংশয়শ্চানস্ত্যাভিপ্রায়েণ ॥ ১৮৫॥ সর্বাণি পাপানি যন্দ্রিন্ সোপি॥ ১৮৬॥ পূজাঞ্চ কুর্বান্ত ॥ ১৮৭॥ নচায়ং রথোমস্ব্যমাত্র-শক্ত্যা চলতি কিন্তু ভগবন্তক্তানাং মহতামেবেত্যাশ্যেনাহ রথসাতি দৈত্যনায়কঃ শুপ্রকাশিয়া ১৮৮॥ ইপ্রং মাহাম্মালিখনদ্বারেত্যর্থঃ॥ স্বতএব ব্যক্তঃ প্রকটোহতবৎ অতন্তদ্বিস্তারণেনালমিত্যর্থঃ। বিশেষআশীর্বাক্যকীর্ত্তনাদিঃ॥ ১৮৯॥ বিশেষমেব লিখন তৎপূর্বকৃত্যমস্মার্য়তি শ্রীক্রফেন্থিতি॥ চন্দ্রাকারং পূর্ণেন্দুমগুলসদৃশাক্তবিক্তং ধার্য়ন প্রকট্য়ন্। বক্তমেব বিশিন্তি নীলেত্যাদি প্রথমার্কোন। নীলোৎপলস্যেবকৃতিঃ শ্যামকান্তি যন্মিন। লসন্ত্যাং গগুয়োঃ ক্রীড্রাং শোভমানাভ্যাং বা কুগুলাভ্যাং প্রমৃত্যং পরমোক্ত্র লং। লসদিত্যস্য পূর্বেশ্বের বা সম্বন্ধঃ। চন্দ্রনাক্তান্ধ রাচিতং ভালে নির্মিতংতিলকং যন্মিন। পুনর্বিশ্বুং বিশিন্তি। গত্যা রথযাত্রয়া জনস্থকরীং সর্বলোকানন্দবহাং লীলাং কৌতক্বিশেষং ধাব্য়ন্॥ কিঞ্চ॥ প্রেক্ষণেন কুপাবলোকেন অমৃতৌষং স্থধপুরং ধার্য়ন॥ কিঞ্চ উর্বা পদ্মবোসাং লক্ষ্যীং ধাব্য়ন্ সততং পাত জগদিতি শেষং॥ ব ইত্যুম্বর্গ্লোকস্ব্যা বা সম্বন্ধঃ॥ ১৯০॥ শৈলং আদিশব্দন স্থতীব-

र्भभूत जतर्व कि कि नो बाल मारेल तर्जी रेपरमे रिक्त नाम वित्र जमनिकिः न र कृरेकरे न्हर हार्रिः। रहरेमः कूरेखः পতाका मिवज इक्षि छि ज् विरुध क्रिक्य क्षेत्र व्या क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र विरुद्ध क्षेत्र क् দুরিতহরহরেঃ পাতু জৈতো রথো বং ।। ১৯১॥ মোদভাৎ সুজন। হ্যনিন্দিতধিয়ঃ मुंखांशिलार्रायाः संदाः मुस्ति वृक्षयः शक्षिणामिकात्रमसाः मूथे । (व रेम्छा। शिति-গহ্বরানি গহনান্যাশ্র ব্রজধুৎ ভয়াদৈত্যারির্ভগবানয়ং যদুপতি র্যানৎ সমারোহতি। পলায়ধুৎ পলায়ধুৎ রেরে দিভিজ দানবাং ৷ সংরক্ষণায় লোকানাৎ রথাৰটোন্কে-শরীতি।। ভতোবিচিত্রগদ্যানি পঠিস্বাথ মহাপ্রভোঃ। মহাপ্রসাদমালাঞ স্বীকৃ-र्या १ भत्रा मूमा। विवादायाः ठाउः।। ভক্তा গृहाजि यामामा रेत्सवीर মঙ্গলাশ্রাং। ন তেষাং দুর্ল ভং কিঞ্ছিদহ লোকে পরত চ। ভঙ্গাৎ সর্বাপ্রয়ভূন সর্কামসমূদ্ধয়ে ৷ মালামেতাং প্রগৃদ্ধীয়াৎ সৌখঃমোক্ষপ্রদায়িনীমিতি ৷ সঞ্চিন্ত্যা-क्रयानाक औপ্রস্থাদাদিভারথ । আকর্ষয়েতাজপূর্য্যাং ভাসয়েদৈকবৈঃ সমৎ ।। ১৯২।। তথাচ ভবিষ্যোত্তরে ভত্তৈব।। নৃত্যমানৈর্ভাগবহৈগী তব্য দ্তানিষ্টনঃ। जामराय मान्यनः विष्णाः পूरमर्था ममख्यः ।। किथा । व्यवाधवामरत व्याख्य का-र्ভिक शा धुनन्तन। तिवान रिषेषु भक्षिषु श्रुवमाधा ममछ छ।। जामरिष देशिया वि त्रथन् धत्रे विषयः ।। ১৯৩ ।। त्रथानर्त्र मृकुन्मनः भूताना छात्र कावरत् । नर्वरः রমণীয়ন্ত পতাকৈরূপশোভিতং। তোর**ণৈ ব্যন্ত**ভির্যুক্তং র**ডান্তভিঃশুশোভিতং।।** স্থানে স্থানে সহীপাল কর্ত্তব্যং পুণাসংযুত্ত। বিচিত্ররথশোভা চ কর্ত্তব্য ভাবি-रेजर्न देववि छि ।। ১৯৪ ।। রথেন গচ্ছন্ ভগবানন্গমেগাইথিলৈ জ্ঞ নৈঃ । স্বস্থাহা-গ্রভশ্চার্ক্যের প্রাধ্যামহান্ভবেৎ ॥ ১৯৫ ॥

মেঘপুস্বিলাহকাঃ তন্তৎ সংজ্ঞ কৈ ব্বাহৈর শৈশুক ভির্ ক্তঃ। এবমন্যাপি রথুস্য ভগবদাক্ত ব্যাভিল্ তার্থসাদৃশ্যমভিপ্রেতং। কথ্যু তৈবাহৈঃ। মধুরতরং যথাস্যান্তথা রণস্তীনাং শন্ধান্ধনানাং যদা মধুরাণাঞ্চ পরমন্ত্রনাণাং রণস্তীনাঞ্চ কিন্ধিনীনাং জালস্য মালা যেয়ু তৈঃ। পুনং কথ্যু তৈঃ। অবিরতা নিরন্তরা মণয়ো যেয়ু তৈমৌ জিকানাং হারৈঃ॥রড্নৌ ইফ্লানৈয়ং মস্তু তৈঃ পরিপূর্তিঃ। ঘলা রথন্যের বিশেষণং। তভক্ষ মণয়োমৌজিকগণ্ডণকানি যথা জপমালাদ্মিণয়ঃ। মৌজিকানামবিরতৈর্মণিভিঃ রজ্নৌ ইফ্লান্তরাতিঃ। পতাকানাং শিবভরাতিঃ। মরিরতির্মণিভিঃ রজ্নীয়েক্ষ সম্ভু তৈর্মি থিতৈ হারে ভূ বিতই তাষয়ঃ। পতাকানাং শিবভরাতিঃ। পরমোন্তমাভিঃ ক্রচিভিলিজিভিঃ ছবৈক্ষ ভূ বিতঃ ছরিত হরস্য হরেঃ কৈতঃ জয়শীলঃ।। ১৯১॥ রঞ্জ তং প্রপ্রালাদিভিরাক্ষ্মমাণং সঞ্জিষ্য পরিভাব্য স্বয়ং আময়েং। প্রেরম্মিভিপাঠে পশ্চাক্রার্ম্ম। ১৯১॥ স্বভামানিক্ তান্তিভাগবইভর্তাবস্তাহ্ম আময়েং। প্রেরম্মিভিপাঠে পশ্চাক্রার্ম্ম। ১৯১॥ স্বভামানিক্ তান্তিভাগবইভর্তাবস্তাহ্ম সর্ব্বতই লি বার্মেনি সর্ব্বমহাযাত্রাক্রার্মাভি ত্র তবৈবত্যর্থঃ। এবং পুরশোভাকের্মণম্বহ্মলাকর্মকং প্র্রেমণি সর্ব্বমহাযাত্রাক্রার্মাভি কোর্যায়েবেভি জ্বোরং।। পুরশোভামের বিবৃত্যাহ সর্ব্বতই লি বার্মেনাভা চ স্থানে স্বান্তিভালার প্রস্থা। ১৯৪॥ অথিলৈরান্ধারামাদিভিরপি স্বর্গেহাগ্রতঃ নিজনিক্রান্মাগ্রতঃ প্রাপ্তং সন্তু জ্বাঃ। মঙ্কা। অর্থা, স্বর্গনালিরানার্মাদিভিরপি স্বর্গেহাগ্রতঃ নিজনিক্রাল্যাগ্রতঃ প্রাপ্তঃ সন্তু জ্বাঃ। মঙ্কা। মান্তিভালির নিজনিক্রাল্যাগ্রতঃ প্রাপ্তঃ সন্তু

অথ রথানুগমনাদিনিত্যতা ।। তত্তিব । রথেন সহ গচ্ছন্তি পুরভঃ পৃষ্ঠভোহত্র-তঃ। বিষ্ণুনৈৰ সমাঃ সর্বে ভবন্তি শ্বপচাদয়ঃ ॥১৯৬॥ রথস্থং যে ন গচ্ছত্তি ভ্রমমাণ্ জনার্দ্দন । বিপ্রাধ্যয়ন সম্পন্না ভবন্তি শ্বপচাধনাঃ ।১৯१। কিঞ্চ। যেষাং গৃহাত্রতো-যাতি রথস্থোমধুসুদনঃ। পূজা তৈতিঃ প্রকর্ত্তর্যা বিভ্রশাস্থাবিবজ্রি তৈঃ। অনর্জিতো-ষদা যাতি গ্রাদ্যসাস্থাধরঃ। পিতরস্তস্য বিমুখা বর্ষাণাং দশপঞ্চ । ১৯৮।। যঃ পুনং ক্ৰাং গৃহায়াতে তুমাধবে। বসতে খেতদ্বীপে তু যাবদিন্দু।শতভৰ্দশ।। ১৯৯।। জনাত্র চা নানুব্রজ্জি থোমোহাছুজন্তং পরমেশ্বং। জ্ঞানাগ্রিদ্ধাক্র্মাপি कात्म छ जिव । भूर्यक्रममहरम्यू भाभः यथ ममूभाष्टि छ । कांशरत् अरवाधना দহতে তুলরাশিবং ।। ২০২ ।। কৃত্বাপি পাতকৎ ঘোরং ব্রহ্মছত্যাদিকং নরঃ। রুত্বা জাগরণৎ বিষ্ণোধৃতিপাপোভবেমুনে ।। কর্মণা মনসা বাচা পাপৎ যৎ সমুপা-জির্কিও । ক্লালয়েন্তচ্চ গোবিনাঃ প্রবোধন্যাম্ভ জাগরে । দুস্পূাপ্যং যৎ ফলং বিলৈ-त्रश्रामधानि चिम् रेथः । **वाभाष्ठ ७**९ मूर्यरेनव প्रतिधनासु कागरत ॥ २०७॥ আপুত্য সৰ্বভাৰ্যানি দন্ত্ৰাচ কাঞ্চনং মহাৎ৷ ন ভৎ ফলমৰাপ্ৰোভি যৎ কৃত্ৰা জাগৱৎ হরে:।। চন্দুসূর্য্যাপরাগে তু যৎ ফলৎ পরিকীর্ভিতং। তৎ সহসূত্তণং পুণ্যং প্রবো-ধন্যান্ত জাগনে। স্নানং দানং তপোহোমঃ স্বাধ্যায়শ্চার্চনং হরে:।। তৎ সর্বাং কোট্ গুণিতৎ প্রবোধন্যান্ত জাগরে ।। ২০৪ ।। সমতীতৎ ভবিষ্যঞ্চ বর্ত্তমানৎ কুলাযুতং। বিষ্ণুলোকৎ নয়ত্যাশু জাগরেণ প্রবোধনী। চলন্তি পিতরোজ্টা বিষ্ণু-লোকমলস্তাং । বিশুক্তানারকৈদু ংথিং কর্ত্তঃ রফপ্রজাগরৎ ।। ভার্যাপক্ষে তু যে

অকরণে প্রভ্যবায়দ্বারা নিত্যত্বং লিখিন্তমাদে করণেন প্রমন্তণং লিখিত রথেনেতি। মহা-বিপ্রেতি পাঠে মহাবিপ্রাঃ জ্ঞাননিষ্ঠা মুনয়ৈত্বঃ সমাস্তল্যাঃ। যদ্যপি মহাব্রাহ্মণশব্দেন চাণ্ডা-লোহভিধীয়তে তথাপি বিপ্রশক্ষপ্রয়োগান্তৎ পরিহারোজ্ঞেয়ঃ॥১৯৬॥ অধ্যয়নসম্পন্নাঃ অধীত-শাস্ত্রাম্বপি বিপ্রাঃ। বিদর্গলোপেপি সন্ধিরার্যঃ॥ ১৯৭॥ পশ্যন্তীতি পাঠে দর্শনস্যাপি নিত্যত্বং জ্ঞেয়ং।ততশ্চামুগমনস্য নিত্যত্বং নামুব্রক্রতীতি প্লোকাদবগন্তব্যং॥ ১৯৮॥ নচ কেবলমকরণ-প্রত্যবায়পরিহারার্থমেব পূজা কার্য্যা কিন্তু তয়া মহাফলত্ব স্যাদিত্যাহ ঘইতি॥ ১৯৯। জ্ঞানা-গ্রিনা দক্ষানি কর্মাণি যস্য জীবস্মুক্তস্য সোপি ভগবিষ্বয়ক্ষহাপরাধবলেন প্রমহ্মর্মোৎ পত্তেন্তন্তোগার্থং ছর্জ্জন্ম লভতইত্যর্থঃ॥ ২০০॥ পূর্ববিদিতি শয়ন্যাদে যথালিথিতং তম্বদিতার্থঃ॥ বিধিবদ্যথাবিধীতার্থঃ॥ রথ্যাত্রারাক্রৌ জাগরণ মুন্সীলনীত্বাদিনা হৃদশ্যামুপ্রাসাহ। অন্যথা পূর্ববিদ্যাক্রাস্বিলিন জাগরণং পারণাদিনে উপ্যানানন্তরং রথ্যাত্রেতি জ্ঞেয়ং॥২০০॥ তত্র জ্বাগরণতঃ প্রথমং পাপক্ষমাহ প্রেতি ত্রিভিঃ॥ ২০২॥ যক্তরীর্থদানাদিতোপ্যাধিক্যমাহ ছুম্পু প্রামিতি ত্রিভিঃ॥ ২০২॥ যক্তরীর্থদানাদিতোপ্যাধিক্যমাহ ছুম্পু প্রামিতি ত্রিভিঃ॥ ২০২॥ যক্তরীর্থদানাদিতোপ্যাধিক্যমাহ ছুম্পু প্রামিতি ত্রিভিঃ॥ ২০২॥ বিশ্বকুলসমেত্স্য শ্রীবৈকুর্থলোকপ্রাপ্রকর্থাই সম্ভীত-

জাতা মাতৃতঃ পিতৃতত্তথা। তাররেরাত্র সন্দেহং প্রবোধন্যাম্ভ জাগর: ।। ২০৫ ।। किथा। करेनर्नानाविरेष्ठ विदः व्यवाधनास्त्र कागरतः। मत्य ভाषाः नमानात्र व्यर् ९ मम्। इन्द्रना क्रिन्। यर कनः मस्त्रमातम् मस्त्रिशिर्थम यर कन्। उर मस्र कार्षि-গুণিতৎ দক্তার্যাং বোধবাসরে।। ২০৬।। পাছে চ তত্তিব ।। অন্যত্রাপি প্রিয়া-विष्म इर्जा शाद मा शादाधनी। किः भून मं भूदा शार मा जरकरिव स्वाम सनि ।। २०१। **ब्रिकेटेकोममो क्रम्म अवस्था है कि का निर्देश । क्रिकेटिक न कर्जिंग लाहि किस्ने** বিদ্যতে।। রাত্রৌ জাগরণং তত্র প্রতিয়া কুর্বন্তি যে নরাঃ। সংসার মোহস্বপ্রান্তে সদা জাগ্রতি জাগ্রতি ॥ ২০৮॥ কিঞ্চ ভবৈর ॥ জীরাধিকোপাধ্যানান্তে ॥ সুবো-धनीकांशत्र मूनारेव खवार अमन्ने स्थाविधिवाका मछाक्र ।। इकांत्र त्रारमारमवनर्खनर সহ বৃন্দাবনেইন্যাভিরপীহ রাধয়া ।। ২০৯ ।। সা.নৃত্যমানাজুতগোপৰপিণা কৃষ্ণেন জ্মান্তরবাঞ্ছিতেন ৷ রাধা মহাপ্রেমজবাকুলেন্দ্রিয়া নিন্যেইন্যলোকং কথয়া কৃতা-र्था छ। १ २ ।। ज्यार मूरवाधनीः कृषा द्वार्को कृषा ह कानद्रः। मूरश्राधिकः इदि मृष्ये का जीः मरमात्रका विकार ॥२७॥ मथुत्रामात्र किर वाठ। कागर विविधिति । কার্ত্তিকে বোধনীৎ প্রাপ্য ভতঃ শ্রেয়ঃ পরিং নহি।। মথুরায়াং প্রবোধন্যাং হৃত জাগরণস্থ হি। ক্ষণাদ্ধাদন্তভাবৈশ্যে ২মোচয়য়ুক্সরাক্ষনং ॥২১২॥ জাগরস্য চ মাহাত্মাং গীতবাদিত্রকীর্ত্তনং। হরেঃ প্রীতিকরং রাত্রৌ বজুং মে নৈব শক্যতে ।। २>७ ।। यञ्च गाय्रिक कृष्णात्य कोगूपीर द्वापणीर कानः । मर्यत्नाकान् श्रीव्रिकाका

মিতি ত্রিভিঃ। ক্রফ্স্য জাগরণং কর্জুঃ যাং করোতি তাস্য যে পিতরন্তে ইত্যর্থঃ॥২০৫॥ আগারে অর্ঘানামাহাত্মাং লিথতি ফলৈরিতি দ্বাভ্যাং॥২০৬॥ অন্যত্র মধুরাব্যতিরিক্তস্থানেপি॥২০৭॥ সংসারে বোমোহং অজ্ঞানং স্কর্ব স্থপ্তস্য অন্তে নাশে নিমিত্তে সদা জাগ্রতি সংসারমোহস্তস্যক্ষাচিদপি ন তিঠেদিত্যর্থঃ॥ বীণ্মা নিশ্চয়ার্থা॥২০৮॥ বিধিবারঃ সর্বান্থ গোপীমধ্যে অহং শ্রিক্ষ্প্য পরমপ্রেয়নী ভবামীতি স্বর্গে চক্রকান্তিনামাণ্সরসঃপ্রার্থনয়া তথান্তি ত্রক্ষ যদাহ তৎ সতাং করোতীতি সং এতচ্চ পাত্মে কার্ত্তিক মাহাত্মে স্বিস্তরং বর্ত্ত এব। তত্র যদাপি ভগবতী শ্রোধা স্ত্রত্ব তলা নিত্যপরমপ্রেয়নী তথাপি বিধিবাক্য সত্যতার্থং ক্রতমিত্য নাজনের্যাপরিক্রার্থা স্থত্তবি দিক্। রাধয়া সহ অন্যাভিরপি গোপীতিঃ সহ॥২০৯॥ অন্যলোকং পরমপি জনং সর্বার্থ ক্রত্তি দিক্। রাধয়া সহ অন্যাভিরপি গোপীতিঃ সহ॥২০৯॥ অন্যলোকং পরমপি জনং স্বর্থা নিজচরিতাদিবার্তিয়া কৃত্র্বতাং শ্রিক্ষ্ণপ্রিয়মতাং নিন্যে। তত্র হেন্তঃ মহান্ প্রেম্মোক্র বেগজেনাকুলানীন্দিয়াণি যস্যাঃ সা। অত স্তর্যান্তাজিবণমাত্রেণৈৰ স্বতঃ প্রেমভরেণেপত্তেরিত্র্যি।।২১০॥ ২১১॥ ত্রক্ররাক্ষপঞ্চ বৈশ্যোমোচয়দিত্যত্রেতিহাসো মধুরা মাহাজ্যে ব্যক্তং বর্ত্ত এব যথা স্থধননামা বণিক জাগরণ্য মক্রত্তীর্থং গচ্ছন্ পথি ত্রক্রাক্ষদেন গৃহীতঃ পুনরাগ্রমার্থং শপথে ক্রতে সতি পরিত্যক্রোজাগরণং ক্রত্রা প্রনায়াতন্তং দ্বীত্রা রাক্ষদেন সকাকৃ প্রার্থিতা জাগরণ ক্রত স্ত্রালেশমাত্রদানেন তং মোচয়ামানেতি॥২১২॥ মাহাত্মাং বক্তুং নৈবেশক্তে। যতঃ রাত্রে) গানাদিকং প্রত্যেকং হরেঃ প্রীতিকরমিতি।২১৩॥ কৌমুদীং প্রবোধনী-

বিফুলোক । স পচ্ছতি ।। ২১৪।। অতএবোক্তং ভত্তিব ।। ক্লাক্সন্ত সংভ্জা को उ॰ निरुष्ठ कणे कर। कार्किक मणु वात्रादेश का गूमार आ शतकात ।।

অর্থ পারণাদিনক্ত্রং ।। পাত্মে কার্ডিকসাহাজ্যে।। পারণং কার্ডিকে শুক্লে बारमाख उठम्हाद । क्रक्नाथा निविद्यार उठः कृष्ट्राधान्य स्वार । विकृत्लाक মবাংশতি ভক্ত্যাভাচ্চ্য জনার্দ্নং।। মহাভারতে।। চত্তর্দাগৃহ্য বৈ চীর্ণ চাতুর্মাস্ বেতং নরঃ। কার্তিকে শুক্রপকে ভুষাদশ্যাৎ তৎ সমাচরে । প্রতিনিভ্যক্রিয়াং রুত্বা শক্তা সংভোজ্য ভুসুরান্। গৃহুন্ কৃতব্তাকৈছত্রং প্রদদ্যাৎ দক্ষিণাদিকং। দানং যথাব্ৰতং তেভ্যো দল্ভ। পাৰণমাচরেৎ। প্রবর্তয়েচ্চ স\ত্যক্তং চাত্তর্মাস্যব্রভেষ্ বং।।।২১৫।।ভবিষ্যোত্তরে ভতৈরে।। প্রভাতে বিমলে স্নাত্ম। ভোঞ্যেদয়বিস্ত রৈঃ। चृजकोत्रस्थिकोजकानात्रश्रष् । याम्टेकः। याक्टरश्रुकमरेन कृटेर्नः शूटेक्य श्रेक्षि छ। मान् ॥२३७॥ भागात्वजाखरणाममा वाङ्य यद किक्षिपेत कि। मुनान नुमाना छोष्ठे भव भूष्णकना निकर ॥ २ > १। ठजूर द्वाव विकास मानान् नियम रना यर इन्हर । कथियात्रा विष्याचा उपमन्त्राकु उत्ता मूनिकशार । এवस्यव भाष्य करें जव কিঞ্চাধিকং ।। চাৰ্জমান্যব্ৰতেবিপ্ৰাঃ পশ্চাদচ্ছিদ্ৰবাচনমিতি ।। ২১৮ ।।

অথ ব্রতেষু দানানি। কৃচ্ছুযুগ্মে তু গোযুগ্ম দদ্যাদ্বিপ্রংশ্চ ভোজারেং। ত্রিরাত্রে মণিক ছ প্রমন্ত্র চাপানছো তথা ।। ২১৯।।। একান্তরোপবাসে চ দদ্যাকা। শস্মল-क्षाः। विভবে চ श्लान। रहे। वनीवर्मयू शनिख। जाकरश्रमक जरक ख विश्रामर ख क्षुमान्।। वर्ष्त्व हाबाहित्क प्रमां वृष्ट मसर् हन्मनः। मालीन् प्रमां कलाहा त शाक्ष ममा । शाया । भाका शाय जू विजय म्यृष्ट वाक्ष जाकरेनः। देवल जाकर घृष्ठ प्रमार घृष्ठ जू विजातर भश्रः।। २२०।। विक्विष्ठ मिश्व स गर कीरत ह तक्ष छ । वृद्धः॥ अशृर्भ वर्गाध्मवद्धानि जोहियू खिद्राम्। भानीन् वर्ग ह भाना जू भानीन्

মিত্যর্থ: ॥২১৪॥ কুতানাঞ্জুর্মাদেষু বিশেষতঃ কার্জিকে চ বিহিতানাং ব্রতানামকৈ দুরু অচ্ছি-দ্ৰতাং গৃহ্ণন্।। যথা ব্ৰতমিতি ষদুতে যদানমুক্তং তদন্ত্ৰারেণেত্যর্বঃ।। তচ্চাগ্রে বিশেষতোবাক্তং ভাবি। চাত্তর্পাস্য ত্রতেষু যৎ সম্ভাক্তং তৎ প্রবর্ত্তয়েৎ ভক্ষণাদিকং কুর্য্যাৎ ।। ২২৫।। বিমলেজাল ইতি শেষঃ ॥ यहा॥ श्रें ভাতইতালৈয়ৰ বিশেষণং বিমলইতি । কালারোমধুরতরপকুলয়বিশেষঃ। চুरेर्नः अठेवारेनः वृक्कावन्मत्मजामि अनिरेक्षः ॥ २>७।। তाङ्कः ठाख्यानामिनियय विक्षितः। স্থবাচা বিনয়পুর্বাকমধুরোজ্যা দদ্যাৎ ॥ ২১৭॥ হে বিপ্রাঃ পশ্চাদিপ্রতিভালনদকিণাদানানস্ত রং 1 **हार्ख्या**माञ्च एक क्रिक्व वाहन श्याक्षित मस्त्रिष्ठ वाक्ष वान् वाहर मि छ। विश्व वि

মণিকং বৃহজ্জলভাও বিশেষং অজামেকাং ছাগীং।। ২১৯।। নক্তে নক্তত্ৰতে যভুগান্মধুরা-मीन् वास वस्त्रपृथाकः ममारः। व्यगाविख्याक ख स्वर्णन वन्मतन व नहिकः वृष्यनज्ञाहः ममार ঘৃতে চতাক্তে বৰ্জিতইতি সৰ্ববাথে পঞ্মশ্লোকং যাবৎ সপ্তম্যন্তেম সুবৰ্ত্তনীয়ং।। তথা বিতরে-দিতি যথাস্থানমগ্রেপাস্বর্জনীয়ং ॥ ২২০॥ প্রিয়ানঅভীফান্ উত্তমানিত্যর্থ: ॥ লাবণীং লবণ-

বাধান্যমেৰ চা। লবণে লাবনাং ধেনু । স্বৰ্ণ চাড্যপ্তানেস্বধ। কৈলপূৰ্ণ ঘটং কিন্তু সাঞ্জাপায়ন ভোজনং ।।২২১।। পাদভি কেন্তু সম্পূল্য বিপ্ৰান্ সংবাহ্য তৎপদৌ। দক্ষিণামথ ভাষুলৈবিভিনেম্বরম্বয়ং।পুল্পে চপুন্সং সৌবর্ণমুপানহমুপানহি। খন্তীয়াং শয়নংকাংস্যে সঘৃতং কাংস্যভাজন ।।২২২।। ত্যক্তে মধুনি সংদ্যাৎ পায়সং সমিভাঘ্তং। মৌনা চ ঘণ্টাং দভিলাং দদ্যাৎ কনকসংখ্তা ।। ভূমিভোজা কাংস্যপাত্তং গাঞ্চ দীপান্য দানতঃ। সঘৃতং তামুপাত্রকাদশ্ব কেশাদিরক্ষণে।। ২২০।। দদ্যাৎ সুবর্ণপ্রতিমাং দম্পত্যোক্র ক্ষচ্যাতঃ।। স্বোভাবে চ সন্তোয়াক্তিম বিপ্রাংছ বাচয়েও।। ২২৪।। ভথাচ ক্ষান্দে ।। সর্বোমপ্যভাবে ভু যথোপকরণ বিনা । বিপ্রবাক্য ক্ষৃত্র সমাক্ ক্রতন্য পরিপূর্ত্রে।। ২২৫।। বৃথা বিপ্রবচোষ্ট গ্রাভি মনুক্ষোহবুধঃ। অদ্বা দক্ষিণা পাপো যাত্যসোনরকং দ্রবং।। ২২৬।। ব্রতবৈষ্ণ্যমাসাদ্য কুলী অক্ষণ্ড জায়তে।। ২২৭ ।। ভ্যাহাত্মঞ্চ সামান্যভঃ ভবিষ্যোত্তরে। তবৈব বিশেষঃ।। এবং য আচরেৎ পার্থ শোভনং ধর্ম মাগুরাৎ। অনসানে ভুরাজেন্দু বাসুদ্বেপূর্ব ক্রেছে ।। ২২৮।।

অথ ভীম্মপঞ্কাদি।। আরভৈ কাদশীৎ পঞ্চ দিনানি ব্রতমাচরেৎ। ভগবৎ প্রীত্যে ভীম্মপঞ্কং যদি শকু ্যাৎ।।২২৯।। ভথা ধাত্রীব্রতৎ পৌর্ণমান্যাৎ কুর্কীত

নির্মিতাং ধেমুং তিন্নিযাল তিলধেয়াদিপ্রদক্ষে ভবিষ্যোন্তরাছাক্তোভ্জেয়: । অথ অভাপ্তনে তৈলেন শিরোভাঙ্গে তৈলপূর্ব ইং সাল্পাপায়সভোক্ষনঞ্চ বিতরেং ॥ কিঞ্জেতি সমুচ্চয়ে ॥ ২২১ ॥ অরব্ধরং বস্ত্রমুগ্যং শর্নং শয়াং ॥ ২২২ ॥ সিতয়া শর্করয়া ঘ্তেন চ সহিতং পায়সং দদাদিত্যগ্রেপ্যন্থবর্ত্তে । দীপস্য দানে ঘৃতসহিতং তামুপাত্রং । আদিশব্দেন নথগাল্ল্যাদি ॥ ২২৩ ॥ ব্লাচর্যো গ্রামধর্মত্যাগে । নমু তন্তদলাভে কিং কার্যাং তত্র লিখতি । সর্বেষাং লিখিতানাং গোযুগ্মাদিন্তব্যাণামভাবে সতি বিপ্রান্ সম্ভোষ্য দক্ষিণাদিনা প্রীণয়িত্বইচ্ছন্তাং অছ্ডিমান্ত্রি বাচয়ে বৃতং সম্পূর্ণমান্ত্রিত তদ্বনং পৃক্ষীরাত্তেনৈর সর্বাং সম্পূর্ণং স্যাদিত্যর্থং ॥ ২২৪ ॥ যথোপকরণং যত্র ব্রতে যদিহিতং দানজবাং তদিনা চ ॥ ২২৫ ॥ বৃথেত্যের বির্ণোতি অদন্ত্রা দক্ষিণামিতি । অত্রবার্ধং পাপক্ষ॥ ২২৬ ॥ নরকভোগানস্তরং কুন্তী অক্ষক্ষ সন্ ছর্যোনিমু জায়তে প্রারণাদৌ শাকাদিবর্জ্জনব্রতে চ সর্ব্বপাপক্ষরাৎ তথা ব্রন্ধ বিক্ষু শিবানাং প্রত্যেকৎ সমুক্তয়েনচ প্রারণাদৌ শাকাদির্জ্জনব্রতে চ সর্ব্বপাপক্ষরাৎ তথা ব্রন্ধ বিক্ষু শিবানাং প্রত্যেকৎ সমুক্তয়েনচ প্রারণাদৌ শাকাদির্জ্জনব্রতে চ কর্বপাপক্ষরাৎ তথা ব্রন্ধ বিক্ষু শিবানাং প্রত্যেকৎ বিশেষত্যে নোদ্দিইং কিন্তু সর্ব্ববিত্যাধারণত্তান্ত্র কঞ্চ পূর্বাং শারনী প্রক্রমণে লিখিতং ব্রত্মানিকং কর্ত্বরামিত্রাহাং তাক্তং যৎকিঞ্চিদেবহীত্যক্তেঃ কঞ্চ পূর্বাং শারনী প্রক্রমণে লিখিতং ব্রন্ধনোকাদি ভোগমিত্রর্থঃ । যথা ভগবন্ধর্দাং প্রেমভক্তিকক্ষণং ॥ ২২৮ ॥

ইদানীং সক্তেমপেণ পৌর্ণমাসীকুত্যং লিখন্ পরমপ্যলিখিতং কার্ত্তিককুত্যং সংগৃহ্ণতি আর্ভ্যেতি তিতি: ।৷ বদি শকু মাদিতি কাম্যত্মিতি দিক্। এবস্থেপ্যুষ্যং ।৷ ২২৯ ৷৷ তথা দয়ং

কার্ত্তিকে। তথা নৰম্যাং শুক্লারামক্ষরং নবমীক্ত ।। ২০০। গৈতাম্বাদি রুজুনি নাসোপোষণমেব চ। সমর্থঃ কার্ত্তিকে ক্রুর্যাৎ জ্রাত্তা পাল্লাদিতোবিধিং।। ২০১।। অধাধিমাসক্ত যা ভবিষ্যোত্তরে। অধিমাসে তু সংপ্রাপ্তে ক্রুলা গোপীপ্রিরং ক্রিং। সুবর্ণ চাজ্যসংযুক্তং অয়ন্তিংশদপূপকং। দদ্যান্ত বেদবিদুধে শ্রোতিরার কুটুরিনে। নশ্যত্যকরণে শীঘুং পুণ্যং ঘাদশনাসকং।। ২০২।। ইতি জীগোপালভক্তিবিলিখিতে ভগবত্তিকিবলাসে জীদানোদরপ্রিয়োনাম বোড়শোবিলাসঃ।। ১৬।।

সমুক্তরে॥২৩০।। বৈভামহং নাম ক্লুজুং চোক্তং পাজে।। অপং ক্ষীরং দধি ঘৃতং সপ্তম্যাদি চন্তর্দিনং।। কার্ত্তিক্স্য নিতে পীত্রা একাদশ্যামুপোষিতঃ। কুলুং পৈতামহং কুর্মন্ দিনং সম্পূজ্জ রেজরিমিতি।। আদিশব্দেন বৈক্ষরমাহেন্দুাদীনি সমর্থশেওছি কুর্যাৎ।। নমু ভীম্বপঞ্চ কানীনাং ব্রভানামেষাং বিধিঃ সমর্থরিপেক্ষ্যঃ কুভোজ্ঞাতব্যস্তত্তাহ জ্ঞাত্ত্বেতি॥ পদ্মপুরাণ্যা ব্রভ্রত্তি কার্ত্তিক্রমাহান্ত্রং আদিশব্দাৎ ক্ষন্দুপুরাণ বিক্ষুরহ্স্যাদি তত্তাবিধিংজ্ঞাত্ব।। তত্তচাবশ্য-কত্বাভাবেনাসৌ বিস্তার্য ন লিখিতঃ ইতিজ্ঞেরঃ।। ২৩১॥

অধিমাদোনাম মলমাদন্ত স্মিন্।। তত স্থবৰ্ণাদিদানস্য নিত্যত্মাই নশ্যতীতি। এতদপি শক্ত-বিষয়কমেব । দক্ষোমপি কৰ্মণাং স্মৃতএব সমর্থবিষয়কত্মাদিত্যেয়া দিক্।। ১৩২।। ইতি

(वाक्षः॥ >७॥

## मधम्भ विवामः।

কলাছিদাশ্রমাদনস্প্রোদ ছুক্তিবিলাসভগদীনোপি রঞ্য়েজিখং ত১জিটিতদাঁ মাশ্রয়ে।। ১।। প্রভাহং প্রতিপক্ষণ প্রতিমাসমপি ক্রমাৎ। বিলিখ্য ক্রভামধুনা কদাচিৎকং বিলিখ্যতে ।। ২।।

चर्य भूतकांत्र ।। श्रीखार्ता श्रिकां माना भूतकांत्र वि । नीकां देखा भून ख-नार्र नुकां छ थात एक कथा। जाय भूतकांत्र नातकां ।। जागरमा। विना रम न निकः नामाराज्ञ वर्ष मेरेक ति । इरका रम नकां क मायराजां वर्ष मेरे ति । भूतकां तनम्भरतामराज्ञ हि कमना प्रकः। ज्ञकः भूतिक् ग्राः कूर्या नाज्ञ वि थ निकि कां क्या ।। ।।। किः द्योपः किः स्रोभिक्त किः मजायोगित छोतः। तक्या नाथि मजां। यनि न नाथ भूतिक्या।। ७।। भूतिक्या हि मजां। श्रीकां कथा मेरे वीर्य मूठा छ। वीर्य । कोरनायथा एको मर्वकर्माम् न क्याः। भूतकात्र विश्वा मिक्ष छथा मजः थको दिका।। ७।।

ইদানীং পুরক্ষরণং লিখিয়ান্ততে সর্ব্বশক্তিবিহীনস্যাপ্যাত্মনো ভগবতি ভক্তি প্রযুত্মাতাসে নাপি জগদ্রঞ্জকতামপি সন্তাব্য তং শরণং যাতি কন্মাচিদিতি। যদ্য শ্রীচৈতনাদ্য কন্মাচিদপ্যাশ্রন প্রপত্তের্য় প্রক্ষেপি উদ্যুদ্য উদয়ং প্রাগ্পুত্র ক্রিলাদন্তেন দীনং সর্ব্বশক্তিরহিতোপি জনং বিশ্বং জগদপি রঞ্জারে তং আশ্রয়ে শরণত্বেন প্রপদ্যতে।। ১ ।। এবমভীইস্থাসিদ্ধয়ে পরমন্তর্কা ভগবন্তমাশ্রিত্য ইদানীং বিলাদচন্তক্ষেণ লেখাং প্রতিজ্ঞানীতে প্রত্যহমিতি।। প্রত্যহং যৎ কৃত্যং প্রতিমাদমপি যৎ কৃত্যং তৎ ক্রমাৎ যথাক্রমং বিলিখ্যাধুনা কাদাচিৎকং ক্লাচিৎ করণীয়ং কৃত্যং কর্মা লিখ্যতে।। ২ ।।

প্রতারেঃ সকাশাৎ পুরশ্বনকর্মনি নিমিত্তে পুনদীক্ষাং কৃত্যা তেন প্রশুক্তনাত্ত সন্তৎ পুরশ্বনকর্ম প্রকর্মেরভেও।। তথা চ ক্রমদীপিকায়াং। চৈত্রে কৃত্যুত্রমানি কর্মাচ্চপক্ষে পুণাক্ষে ভ্রোদৈশিকাৎপ্রাপ্য দীক্ষাং। তেনাম্বজ্ঞাতঃ পূর্বসেবাং দ্বিতীয়ে মানি দ্বাদশামার-ভেতামলায়ামিতি॥৩॥ যেন পুরশ্বনের।।৪॥ মস্ত্রেষু আয়াসবিস্তরেঃ॥ অনৈরপি বৃত্ব-শুনিং কিং॥৫॥ বীষ্ঠং শক্তিঃ বীজমিতি পাঠে কারণং মূলমিত্যর্থঃ॥ ৬॥

वा भूतम्हत्वनमा हो खार। वान छ। मः हिला हार। मरनात मूः श कृ शिर्छ य हे एक्ट সুখমাত্মনঃ। পঞ্চাঙ্গোপাসনেনৈব রামং ভল্পত্ত ভক্তিতঃ।। পঞ্চাঙ্গোপাসনং ভক্তিঃ পুরশ্চরণমুচ্যতে। এতদ্ধি বিদুষাং শ্রেষ্ঠ সংসারচ্ছেদকারণং ।। ৭ ।। নানেন সদ্ধো ধর্মোনানেন সদৃশন্তপঃ। নানেন সাধনং কিঞ্চিদিটার্থস্য তপোধন।। ৮।। পূজা विका**निको निकार सम**राज्य विकास का हिन्दी स्वास्त्र । विकास कि कि स्वास्त्र के स्वास के स्वास्त्र के स्वास खरतार्नञ्जन। यञ्जन। अभाष्मन यथाविधि । शक्षारञ्जाशामना निरेका शूतरेम्छ छिथी-য়তে।। ১০ ।। নিকামাণামনেনৈৰ সাক্ষাৎ কারোভবিষ্যতি । অর্থনিদ্ধিঃ সকামা-नारमर्बररेव छक्तिमान एक ।। भक्षा श्रामण्ड कृरवी किया भूत महत्र नर्व । मरेव विकय-তে লোকে বিদ্যৈশ্ব্যাসুভাদিভিঃ ।। ১১ ॥ ক্রমদীপিকায়াঞ্চ ॥ যইমৎ ভক্ততে বিধিং নরোভবিতা ২সৌ দয়িত: শরोরিণাং। অপি বাক্কনলৈকমন্দিরংপরমন্তে সমুপৈতি ভন্মহইতি । ১২।। গোপালোপাসনাগ্রন্থসার শীক্রনদীপিকাং। প্রায়োনুস্ত্য লিখ্যে-ত পৌরশ্চরণিকোবিধিঃ।।১৩।। অথ তত্র স্থাননিয়মঃ।। গিরিশ্সং সরিভীরং বিল্-मृत्र बनाखद्र । गाष्ठेर विकृषित्राम्य यञ्चर वाथायु (४२३ छ । । । विकि । পুণ্যক্ষেত্রৎ নদীতীরৎ শুহাপর্কতমন্তকং। পুণ্যপ্রদেশঃ নিজুনাৎ মঙ্গলঃ পারনং বনং ।। উদ্যানানি ৰিবিক্তানি বিশুমূলং ভটং গিরেঃ । ভলসীকাননৎ গোষ্ঠৎ বৃষ-শূন্যঃ শিবালয়ঃ। অশ্বথামলকীমূলং গোশালাজলমধ্যতঃ। দেবভায়ভনং কূল্প সমুদ্রস্য নিজং গৃহং। গুরুণাং সন্নিধানঞ্চ চিত্তৈকাগ্রন্তলং তথা। প্রেতভূম্যাদিক-কৈৰ ভত্তংৰপপ্ৰকাশিতং । এবামন্যতমস্থানমাশ্ৰিত্য জপমাচরেৎ ॥ ১৫ ॥ অন্যত্র চা। সমুদ্রগায়াঃ সরিভ: সঙ্গমঃ পাপনাশনঃ। পশ্চিমাভিমৃথং লিঙ্গৎ পুরাণোক্তৎ স্বয়সুবং ॥ সংকাৎকৃতং মহাবিক্ষোং স্থানৎ চান্যৎ মনোরমং।

বিছ্যাং শ্রেষ্ঠ হেস্কৃতীকু ।। ৭।। অনেন পুরশ্ববেশ ।। ৮। পঞ্চাজোপাসনমের বিশিষ্যাহ্ পুরেতি ।। ৯।। পঞ্চাজোপাসনস্যাস্য পুরশ্বরণমিতি নাম নির্ব্বক্তি গুরোরিতি । গুরোঃ প্রশানেন লব্ধস্য মন্ত্রস্য তৎপঞ্চালোপাসনং পুরং প্রথমং বিধীয়তইতি পুরশ্বরণমূচ্যতইতি পুর্বেশিংবাহ্যয়ঃ । প্রথমনেতি পাঠেপ্রসম্নচিত্তেন সতা বিধীয়তে। যদ্ব। ভাবে জ্পপ্রত্যয়ং । অর্থঃ পূর্বেশ্বেষ্যঃ ।। বিদ্যাদিভিলোঁকে বিজয়তে প্রমোৎক্রটোভবতি ।। ১১ ।। বিধিং বিধানং পুরশ্বেশবেশ ।। ১০ ।। বিদ্যাদিভিলোঁকে বিজয়তে প্রমোৎক্রটোভবতি ।। ১১ ।। বিধিং বিধানং পুরশ্বেশবেশ পাঠান্তরে বাচঃ সরস্বত্যাঃ কমলায়ালৈর মন্দিরমিণ ভবতি ।। ১২ ।। তত্রচ বছবিধেষু মধ্যে ক্রমদীপিকোক্তাম্পারেশ পুরশ্বরণবিধিলিশ্বনং প্রভিজানীতে গোপালেভি । গোপালোপাসনায়। গ্রন্থের মধ্যে সারঃ শ্রেষ্ঠভূতা যা শ্রীমতী ক্রমদীপিকা ভামস্প্রত্য ত্রোক্তানুসারেণেভার্থঃ । প্রায়োবাছল্যেনেভি ভব্বিশেবজ্ঞানাধ্যর্থমন্যাক্রগ্রন্থেক্যমিণ কিঞ্চিদ্মৃস্ত্য লেখ্যমিণ্ডার্থঃ ।। ১৩ ।। জলস্য অন্তরং মধ্যং । অন্থপেন্য আমলক্যাশ্চ মূলং ।। ১৪ ।। তন্য তন্য মন্ত্রশাধনস্য ক্লেন কণ্পাথ্যেন শান্ত্রণ প্রকাশিতং এবাং মধ্যে জন্যতমেকং ।। ১৫ ।। শুচি প্রতিং পূহং

গ্रং वा শুচি সংকার স্বভাবাভ্যাং প্রসিদ্ধিরুং ।। ১৬ ।।

অথ স্থানবিশেষে ফলবিশেষা। উক্তশ্চ প্রীয়াজবল্কেরনা। গৃছে ছেকগুল্

অপাং নদ্যান্ত দ্বিগুলং স্মৃতং। গবাস্থোষ্ঠ দশগুলং ভরাগারে দশাধিকং। 1:২৭।।

সিদ্ধক্ষেত্রেষু তীর্যেষু দেবভানাঞ্চ সন্নিধৌ। সহসুং শভকোটীনামনতং বিষ্ণুসন্নিধৌ।:১৮।। অথ ভত্র ভূমিপরিগ্রহঃ। শুভে দিনে চ সঙ্কংপ্যস্থিবিহারাদিহেতবে।

ক্রোশমেকমুভৌ বা তৌ স্বক্ষেত্রং পরিকল্পয়েহ।।১৯।। ক্ষারিবৃক্ষভবানট্ট কালকান্

ঘাদশাস্থলান্।। দশক্ষোহস্ত্রমন্ত্রেণ প্রভাতাকমভিনস্তরেও।। ততোহভার্চ্যান্ট

দিক্পালান্ ক্ষেত্রপালঞ্চ মধ্যতঃ।। বলিং দন্তা চ নিখনেই কালকান্টদিক্ষু তান্ঃ
ভথাচাগমে। গ্রামে ক্রোশ নিভং স্থানং নদ্যাদৌ স্বেচ্ছয়ানিতং।নগরাদাবথ ক্রোশং
ক্রোশমুগ্রনথাপি বা ।। আহারাদিবিহারার্থই ভারতাই ভারতাই তেরপুজ্রেই ।
ক্রেকান্তবান্ কালানস্রমন্ত্রভিমন্তিভান্। নিখনেক্ষ্পদিগ্রাগে ভেমন্ত্রপ্র প্রপূজ্রেই।
ক্রেকান্তবান্রিং দন্ত্রা তভং ক্ষেত্রং সমান্রায়েই। ক্ষেত্রমধ্যং স্থান্তিও

কূর্যচন্ত্রহির ।। কিঞ্চা ক্র্যচন্ত্রেণ সংশোধ্য দীপন্থানে কুটীং প্রয়েই।
চন্তরস্চত্রহিন্তাই হস্তোন্নতস্বেদিকাং। চন্দ্যতপপভাকাভ্যাং ভোরবৈরপালস্ক্তাং।
বিবিক্তামভিলিপ্তাঞ্চ প্রাকারেণাভিবেন্টিভামিতি।। ইং॥

বা। সংস্কারেণ স্থানাদিশোধনেন স্বভাবেন চ নিজ্সৌশীল্যেন প্রকৃতীং দিলিং করোতীতি তথা। এতচ্চ সর্বেষামের বিশেষণং॥ ১৬।:

অপ্যং জপঃ জপকলয়।। ১৭।। দেবতানংং শ্রিক্সাদীনংং । ১৮।। আদিশব্দেন আহারানি-চেষ্টা। তৌ কোশৌ ব্যাপ্য।। ১৯॥ কুটিং বিশিন্থি তত্ত্তরপুতি সার্গ্রেন।। ২০।।

যথকুর্মস্যাঙ্গানি তথাতাইকোষ্ঠানীতোবং কুর্নাজ্তিত্ব হেডনাই কুর্নাস্যতি।। ২১ ॥ স্বরাণাং অকারাদীনাং যোড়শানাং ছন্দুং অআইতোবং অইমুগলং পুর্বাদিয়ু অইস্থ নিক্ষুতত্ততা-

পুসুভিঃ। কুর্মতক্রমবিজ্ঞায় যং কুর্ম্যাক্তপসংজ্ঞকং। তদ্য জপাঞ্চশং নান্তি সর্কানর্থ য় কংপজে। ২২ ॥

আথ ভক্ষণনিয়মঃ।। তত্ত্বে । শাক্ষ্য মালং ক্ল্প্য্বাপি গব্যং ক্ষাব্রে বা দ্বি ।
সাধুভ্যে ভক্ষাব্রায় শক্তবং পায়সং হি ক ২৩ ।। কৃচিচ্চ ।। বৈদিকাচার মুভানাং শুচানাং জীনতাং সভাং । স্বক্ষাব্যাতানাম ভিক্ষাশীলোগ্রজননাং ।।
ভূজানোবা হবিষ্যান্থ শাকং হাব্যুম্ব বা। প্রোগুল্ম ক্লং বাপি ম্বেম্বেরোপপ্রভাবের হা নারদপঞ্চরাত্রে। স্দুকোক্ষং সুপকৃষ্ণ কুর্য্যাবৈ লঘুভোজনং। নেন্দ্রি
রাণাংযথাবৃত্তিতথা ভূজাত সাধকং ।। কিঞ্চ । ব্রহ্মপত্রেচ ভূজাত মধ্যপত্রম্ব বিব্দুদ্রে । দক্ষ্য ব্রহ্মোজরম্বিশ্বু মধ্যপত্র্যাক্ষের্যা । হও ।। অথাবশারভ্যানি সংক্র্রের্যা মধু মাংসং তথা ক্লারলবং তৈলনের চ । স্থিনং পার্যু স্বিত্তিকে নিঃমেহম্
কাটদ্বিতং ।। ২৬ ।। কাঞ্জিম্ম গৃঞ্জনং বিল্ম কলঞ্জন লন্তনং বিষয়ে। মসূর্য্যক্রিম মাধ্য মন্তুক্ষণকালিক্য। তায়ুল্ম কাংস্যপাত্র্যা দিবাভোজনমের চ।।কিফা
অসংসঙ্গং পরার্য্য বর্জ্জরেদনাপূজনম। বিনা কর্ম্যোচিতংনিত্যম্য নৈনিভিক্ষারং ।
জ্বীশুল্পতিত্রাত্যনাভিকোজিন্ট ভাজনং ।। অস্ব্যভাষ্য দিবাভোজনমের চ।।কিফা
অসংসঙ্গং পরার্য্য বর্জ্জরেদনাপূজনম। বিনা কর্ম্যোচিতংনিত্যম্য নৈনিভিক্ষারং ।
জ্বীশুল্পতিত্রাত্যনাভিকোজিন্ট ভাজনং ।। অস্ব্যভাষ্য দিবাভাষ্য দিবাভা

কোটেয়ু ন্যাসেং। কাদরঃ প্রার্থার বাদ্যােহয়ান্তা একোবর্গর। শাদরউল্লাইন্টের্গরেগর। এবং সপ্রাণান্ সপ্তানিক্ষু ন্যাসেং। শিবনিজাং বিনেতি ঐশান্যাং ন কিজিলাসে দিতার্থর। প্রাণেশকেন কর্মপ্রাক্তির ভাষা মর্থাদি তিলালাগ্রাই মকারাদিরিভার্থর। তথাচ শাংদি তিলাক। চত্তরপুণ ভুবং ভিল্পা কোষ্ঠানাং নবকং লিখেছ। পুর্বকোষ্ঠাদি বিলিখেছ সপ্তবর্গানিক্ষ মন্তবর্গানিক ক্রেলার্যাদ বিলিখেছ সপ্তবর্গানিক ক্রেলার্যাদ কর্মানিকে ক্রেলার্যাদ বিলিখেছ সপ্তবর্গানিকে ক্রেলার্যাদ কর্মানিকে মতান্তবং দশর্ম হন্তানি বিভাগং তন্তহক্রাদিকক্স লিখতি স্বর্ণ্গানিতি পক্ষতির। কাদীংশ্বরণান ক্রেলার্থর প্রাণ্যানিক পক্ষতির। ক্রিলার কর্মান্যাং দিশি। স্বলাধিপক্ষাধিষ্ঠ ভারং মধ্যে কোষ্টে নিখেছ। ভুদা স্থলাধিপক্যাব্রাম তদান্যাক্ষর বছ স্যান্তহ কর্মিয়াসাং তক্ত দীপকং দীপস্থানমিত্যর্থর। তথা-লোজং । বৃশ্বর স্বরণাং ক্রমতোবিলিখ্য কাদীংশ্ব বর্গান্ত ক্রমিন। স্থানাবিপ্রয়াক্রমন্তি ব্র তং দীপদেশং মুন্রোবদন্তীতি।। ২২ ।।

শক্তবোৰবৰ্মাৰ্মতাজ্যোঃ। তথাচ শারদাতিশকে । তৈক্যাং হবিষ্যং শাকানি বিছিতানি ফলং গ্রঃ। মূলং শক্তবুর্ববোৎপরে। ভক্যাণ্যেতানি মন্ত্রিণামিতি।। ২৩॥ উজ্ঞানাং মধ্যে যদ্মজুব্যান্যালেন যত্রোপপদাতে তদেব বা ভুঞ্জানঃ॥ ২৪॥ ব্রহ্ম পলাশবৃক্ষন্তস্য পত্রে পত্রেম্বিতি পাঠে মধ্যমত্রং বিবর্জ্জায়েদিতি পাঠঃ। দক্ষং দক্ষিণপত্রং। উত্তরং বামপত্রং॥ ২৫॥ নিঃস্নেহং ফ্রক্ষং । বিধ্যমিতি মূর্জ্ননাম্বণাঠে ঔষধাদিপ্রযুক্তমপি। আদিশকেন রাজ্মাশাদি॥ ২৬॥ উচিতং নিজ-

দক্ষান্মনিবেদিতভোঞ্জনং।।কিশু।। বিহায় বঙ্কিং নহি বস্তু কিধি দুৰ্গাহ্যৎ পরেভ্যঃ সতি নম্ভবে চ। অসম্ভবে ভীর্থবিহিকিশ্রেলাৎ পর্বাভিরিক্তে প্রতিগৃহ্য জপ্যাৎ।তত্রা-সলংথ ি নুদিন ৭ বিশুদ্ধাৎ যাচেত যাবদিনমাত্রভক্ষ । গৃহাতি রাগাদ্ধিক ৭ ন দিদ্ধিঃ প্রজায়তে কম্পানতৈরনুষ্য ।। অথ ক্রত্যানি । বৈশম্পায়নসংহিতায়াৎ ॥ স্থানং ত্রিসবনৎ প্রোক্তনশক্তে দিঃ সক্তথা। অসুতিস্য ফলৎ নাস্তি নবা তর্পয়তঃ পিতৃন্। শ্রীত দুর্শিঘ্যায়াং শুচিঃ প্রতমানসং ৷৷২৭৷৷ তদাসং কালয়ে রিত্যনা-था विज्ञमावरहर ।। किथानाज । मखर नाध्यमान जिनकार (प्रव्मार्छ राष्ट्र । दिनका মেকশক্ষ্যা ন মত্রং কেবলৎ জপেৎ।। একগ্রামস্থিতোনিভ্যং গত্তা বন্দেভ স্বৎ গ্রহং। নিভ্যং নৈমিত্তিকৎ কুর্য্যাৎ সক্ষমঃ শাধুভিঃ সদা।। স্নায়াচ্চ পঞ্গব্যেন কেবলাম-লকেন বা। আছি স্বৃতিপুরাণোক্ত মজৈঃ সুায়াদনন্তরং ।। কিঞ্চ ।। গ্রাসদানাদিনা জুরন্ গবাৎ শুলাবণং সদা। ভূতানুকম্পী প্রজপেৎ শুল্রপাক্ষালয়। ॥২৮॥ পঞ্বিংশতি বারাংশ্চ প্রজ্ঞেন স্বনন্ততঃ ৷৷ শিরোডদাভিষিঞ্জেঞিঃ সানকালে নিজ্বর্ধঃ। তথৈবা চমনং কুর্য্যাড্রোজনাবসরেপি চ। তর্গণ সপ্তরুত্বক্ষত্রজ্ঞ প্রথ ভক্ষেত্যা ২৯। কিঞা । হল। দেবে চমজে চ গুরৌ তিবুপি নিশ্লো। न ব।বচ্ছিদ্যতে বৃদ্ধিস্থন্য নিধিৱদূরভং।। মন্ত্রাত্মাদেবতা জেয়া দেবতা গুরুক্পিণী। তেষাং ভেনে। न कर्डरवा धनोएक् निध्वेनाञ्चनः देखि॥ ७०॥

অথাসননিয়ন। সর্বাসন্ধার ব্যাপুচন্ম জানসিলৈ। ম্গাজিনং । বস্তাসনৎ রোগ ছবং বেজজৎক্রীবিধর্জনং ।। কোলেয়ং পৌন্টিকং প্রোক্তং কঘলৎ দুংখমোচনং । জাভিচারে ক্লবন্ধং রক্তং বস্যাদিকর্মনি। শান্তিকে ধবলং প্রোক্তৎ বিচিত্রং সর্বন্ধ-কর্মাপু ।। কিঞ্ ।। কুগাজিনায়রেগাচ্যেৎ চন্তরগুং সমন্ততঃ । একহন্তং দিহন্তয়। চন্ত্র-রন্ধু লনু ন্তিত্রহুৎ ।। ৩১।।

অথ জপানানা ভামিত্যভাচ। বারাহে।। যন্ত ভাগবতোভূগা ন গৃহ্লাতি গাঁডিকাং। আমুরী ভদ্যদীকা ও ন মা ধর্মার বিদ্যতে।। ৩২ ॥ গাঁগিতিকাৎ

ন্ত্ৰিমধ্যেল্য নিভাং নৈমিত্তিকথ যথ কথা ভিনাইন্যথ কাম্যং বৰ্জ্জানিত্যৰ্থন হণ্য ভদ্বাসং।
কালেন্য । বদ্বা যেন বাসসা জপ্তং তথা ২৮ । পঞ্চিংশতিবায়ান্ অমন্ত্ৰতানিজমন্ত্ৰণ জপ্তমাজনলিত যদক্ষেজনং তেন নিজমিরোবার এই যাভিষিপ্তেই । তথৈবেতি পঞ্চিংশতিবারস্থাই মণ্ডেন জনেন সানকালে ভ্যোজনবালেন্য্যমনং কুয়াদিত, ইংলা তেন অকীয়েন মন্ত্ৰেণ
ভাষা । তথাত জন্মদী।পকারাং । কুষ্ণনাজীয়ং কর্মা বর্গাশ্রমন্ত্রং অপ্তাতিঃ সানকালেই ভিফিকোল । আচাননার্থ স্তম্বসংখ্যাং প্রস্তিধ্য ভূজানশ্চান্ত্রং সম্ভ জপ্তায়ু নার্টেনিতি । ২৯॥ নিয়েবিছিন্দ্রিক নাজনিত নিজনিতি । ২৯॥ নিয়েবিছিন্দ্রিক নাজনিত নিজনিতি । ২৯॥ নিয়েবিছিন্দ্রিক নাজনিত নিজনিত । মন্ত্রাজ্যিকা দত্ত ।

ক্ষাবিশেষে ব্যাণীনাং বৰ্ণবিশেষং লিখতি অভিচার ইতি । ৩১।। চিত্রকং বিবিধানিং। গণ্যতেখনয়েতি গণিত্রিকা জপমালা তাং। ৩২।। তেনাহং চিন্তিতো-

গৃহীত্বা যো মন্ত্রং চিত্তয়তে বুধঃ। জন্মাত্রসহসূতি চিন্তিতোহহণ তেনবৈ। মাজলা। কুশলা সিদ্ধা সর্বসংসারমোক্ষণী।। ৩৩।।

অথ মালা মণিনির্বস্তৎপরিমাণাদি। তত্তিব।।পরিমাণন্ত বক্ষ্যামি শূণু তত্ত্বেন মাধবি। উত্তমা মধ্যমা চৈব কন্যমী ত মণিত্রিকা।। অফৌত্তরশতেঃ পূর্ব্বাপক্ষা শক্তিস্ত মধ্যম।। কন্যসী পঞ্বিংশভ্যা পরিমাণং বিধীয়তে। ৩৪।। রুদ্রাকৈ-শ্চোত্তমাৎ তাঞ্চ জীবপুত্রৈশ্চ মধ্যমাৎ। কুশেঃ কনীয়দীৎ বিদ্যাদেতত্তে কথিতং ময়া। ৩৫।। শ্রীনারদপঞ্চরাত্রে অফৌত্তরশতং পূর্ণং তদর্জং পাদমেব বা। কুর্য্যা-ন্তব্য বিধানোক্তং বিধিনা সক্ষকর্মসু।। হারীতক্ষ্তৌ। শস্থাৰপ্যময়ী মালা কাঞ্চনা নীরজোৎপলৈঃ। পদাক্ষৈশ্চাপি রুদ্রাকৈকিদ্রমৈর্মণিমৌক্তিকৈঃ।। নির্মিতা অক্ষ-কৈৰ্মালা ভথৈবাজুলিপকভিঃ। পুএজীবময়ী মালা সামস্তা জপক্মাণি ॥৩৬॥ গৌ ভ্রমারে। তথ্যসাক্ষমূতৈ গুলসাকৃতি নিমি তৈরি তি ।। ভাগমে চা। আদিক্ষান্ত:-র্বয়োগস্বাদক্ষমালেতি কীর্ত্তা। তদ্র্বসংখ্যৈ বিভিত্তপমালাং প্রকল্পয়েৎ।। কিঞ্চ। অনুলোমবিলোম। নৈ মতিকায়াঃ সবিন্দুকৈঃ। ক্ষমেরুকৈঃ কাইটবলৈ লাভ স্যান্দোগিনাং শুভা । ৩৭॥ অথ মালানাং মণিবিশেষের বিশেষ্ট্যৎ জাগ্নেয়ে॥ হিরণাশখ্মণিভিজ্পাং শতত্ত্বং ভবেং। সহসুত্ত্বমিলুটক্ষং প্রচাটকর্যুত্বং ভবেৎ। নিযুত্ত চালি রুদ্রাকৈভ্রাকৈশ্চ ন সৎশয়ং॥ পুলজীবকজপানে। পরি-मःचा न विषारा ॥ ०৮ ॥ निवभूतात्।। ष्यञ्जूना भविभःयानस्यवस्य মুদাহতং। রেখরাইওণং বিদ্যাৎ পুল্জীবৈর্দশাধিক।। শতং স্যাচ্ছখনণিডিঃ व्यवित्रक महमूकर । क्वांविदेकर्ममाहमुर स्मोक्किकर्मम् मुहारा। १३॥ श्रातिक र्मभानकन्तु ताकरेकः (कारिक्रठारक ॥ स्मार्थिक मा प्रमार्थिन मरिसर्मभञ्जा म्यूका।

ভবামি শিদ্ধাণিদ্ধকরীতার্থঃ ॥ ৩৩॥

কুশগ্রন্থা চ রুপ্রাক্ষৈরনন্তগুণিতং ফলং। খেতপদ্মাক্ষমালাভিরপি স্যাদ্যিতং ফলং। যাতৃকং বর্ণসমূভ্যালারাস্ত তদেব হি।। ৪০।।

অধ মালানির্মাণবিধিঃ। শিবাগমে।। মুখে মুখং প্রকর্ত্তর্ত মুখং মূলে ৰিবৰ্জ্জয়েং। ধাত্ৰীফলপ্ৰমাণেন শ্ৰেষ্ঠমেতদুদাহতং। ব্দরাও প্ৰমাণেন গদ্যতে মধ্যমাধ্যে। নবত্তিভদ্ধনা চৈতদান্ত্নীয়মসংস্পৃশং। উদ্ধৃ বজুঞ্চ মের্দ্ধাখ্যং কর্ত্তৰ্যং তন্ন লখ্বরে ।। ৪১।। জ্রীনারদপঞ্রাত্তে চ।। অক্ষান্থিয়া তৈর্মণিভির্জ্বেটিং কুর্য্যান্ত্ वर्ष्त्रः। शाजीक्नानाः शर्ष्ट्व ध्यावि सथामः सृष्ठः। वन्त्राव्धिमाविन कनामः त्रमूमाञ्च १। १२। किश्व। श्र श्वितकावत्थो छत्र मिनस्याधिकः विकाः। स्मर्कः প্রকিপায়েন্সধ্যে একেন গুণকেন গু।। ৪৩।। শিবাগমে ভত্তৈব রুদ্রাকানুদিশা।। একবকৈজুল্লবকৈশ্রুণ্ট চত্তর্বকৈজুণ্ট পঞ্চতিঃ । ষড়কৈজুর্বাথ কর্ত্ব্যৎ নিথোমিশ্রাং-স্ত বৰ্জ্জবৈং ।। কিঞান্যত্ত । কুতনিত্যক্ৰিয়ঃ শুদ্ধউক্তেদক্ষু মন্ত্ৰবিং । যথা-কাম যথালাভ । অকাণ্যানীয় যতুভঃ।। অন্যোন্যসমন্ত্রপাণি নাতিসূলকুশানি চ। কীটাদিভিরদুষ্টানি অজ্জিভানি নবানি চ। গবৈঃস্ত পঞ্চিত্তানি প্রক্ষাল্য ও পৃথক্ পৃথক্। ভভৌদ্বিজেন্পুণ্জ্রানিমিতিং প্রস্থিতিও ।। ত্রিগুণ্ ত্রিগুণীরুত্য সূত্রং প্রকাল্য পূর্ববং। শুক্রং রক্তং তথা রুষ্ণঃ শান্তিবশ্যাভিচারিকে।। সূত্রং সংস্থাপয়ে-দিলান্ পউসূত্রমথাপি বা। অশ্বত্যপত্তিন বকৈঃ প্রভাকারেণ কণ্পিতৈঃ।। সূত্রৎ স্নীং-শ্চ গন্ধাড়িঃ ক্ষালিভাংস্তত্ৰ নিক্ষিপেৎ।। ৪৪।। ভারৎ শক্তিৎ মাত্কাঞ্সূত্রে চৈব सिव्यथ । विनाना शृक्षश्चमारमो जूछ्या किव् मिक्किः । १८ ।। विमकर्सनामकरम्ब विश्व क्षा का करते । मित्र किक्मामात्र मृत्व ह योक्षा र मूर्थ ग्रंथ मुर्थ मुर्थ स मः योकः भू एक भू कह खा बराय । ता भू करम्मी कार्या यहा मेर्भा कृष्टिः एका ।। তৎ সঞ্জীয়নেক। কং মেরুত্বেনাপ্রভোন্যসেৎ । একৈকমণিমধ্যে ত ব্রহ্মগ্রন্থি ध्यक प्रायत । क्षाना विधाद प्रायत करन कातान् ममाहत्त्र ।।

গুণেতি দশকোটিগুণেতি জ্ঞেয়ং। এবং মতভেদক মন্ত্ৰভেদেন কামফলাদিভেদেন বা৷ এবমন্যত্ৰাং প্যহ্নমিতি পূৰ্বাং লিখিতমেব ।। ৪- ।।

এতৎ মালারা অক্ষং বদরস্যাওয় বং তৎপ্রমাণেন চেত্যর্থ:।। ক্রমান্মধ্যমধ্যমধ্যমধ্যমভাগাহতং।
পাঠান্তরে বদরকলস্য তদগুস্য চ প্রমাণেন ক্রমান্মধ্যমধ্যমধ্যে গণিতে। নবেন নূতনেন বিভন্তনা
বিগুনীক্তস্তেলেতার্থ: ।। যদা ।। নবেতি নবসংখ্যা প্রাপ্তেন তদ্ভতায়েণ। প্রথমং বিগুনীক্ত্য
পলাচ্চ বিশ্বনীক্তা নবগুনীক্তেন স্ত্রেণেতার্থ:। বিগুণং বিশ্বনীক্ত্যতাতারে লেখাদ্বাহ। অসং
স্পূল্য অন্যোন্যং স্পর্শমপ্রাপ্তবং সহ ।। এতৎ অক্ষং গ্রন্থনীয়ং প্রত্যেকমধ্যে ব্রন্ধগ্রন্থিকিন
নীরইতার্থ: ।। ৪১ ।। অক্ষং ক্রেক্সিং বিভীতকং বা তদন্ত্রমাণে। ক্রাসংক্রিপ্রাপ্তা প্রাণাদি
ক্রিক্সায়াবধী অন্তে॥ ৪৩ ।। নবকৈন্তিনেরশ্রপ্রতির সহিতং ।। গল্পান্তিরশ্রপায় প্রাণাদি
ক্রালারেদিতার্থ:। তর প্রাকারকিপ্রতাশ্রপ্রের্ ॥ ৪৪॥ তারং প্রণবং শক্তিং মারাবীকং।।৪৫।।

व्यथमानामः कांतः। निवाशाय कानत्त्र मानाकारकन वांत्रास्त्रम वर्षात्र । ধূপরেদপ্যযোরেণ লেপারেৎ পুরুষেণ ভা মন্ত্রেৎ পঞ্চমেনৈৰ প্রত্যেক্স শভং माडर । (मक्ष अक्षरमतेन ज्याद्यादान मजदार ।। १७।। मूजाकैकः मर्मायिचा প্রত্যেকং পূজায়েৎ ক্রমাৎ। গ্রাধিতৎ পঞ্চতিঃ পূজা পূর্ববন্ধ বর্ণা দিরঃ।। ৪৭।। অধ মালাভেদেনাধিকারভেদশ্চ। নারদপঞ্চরাত্রে। কুশপতৈর্জপেদ্বিপ্রঃ সুবর্ণমণিভি-न् भा । পু व के वक्टेनरेर्व नाः भवारेकः गर्या व । । याकाशी भक्षिव भारता धनाशी ত্রিংশতা অপেৎ। পুষ্টাধী সপ্তবিংশতা ন পঞ্চশভিং কৃচিৎ। জপদ্য গণনা-क्षां इः भवारेक जिंदिक केरिकः विश्वाक কিঞান্ত্র। রুদ্রাক্ষৎমালিকাসূত্রে জপেন স্বমনোরথান। পদ্মাকৈর্বিহিতা মালা শত্লাৎ নাশিনী মতা।। কুশগ্রন্থিময়া মালা সর্বপাপবিনাশিনী। পুত্রনীবফলৈঃ কপ্তাকুরতে পুলদম্পদঃ ।। ৪৯ ।। নির্মিতা রূপ্য মণিভিজ্ঞপিমালেপ্সিতপুদা। হিরণ, রৈবির চিতা মালা কামান্ পুখছতি। পুরালৈবিহিতা মালা পুযচ্ছেৎ পুঞ্জলং ধন্। সৌভাগ্যং ক্ষাটিকা মালা মৌক্তিকৈৰ্কিছিতা শ্ৰিয়ং।। নিৰ্মিতা শন্তমণিভিঃ कुङ छ कोर्डिमक्स सार । मर्दिर दि दे दिव कि वा नाना मान्यू कर सम्वार ।। किश्व ।। ত্তল নীকাঠ ঘটিতৈ মণিভিজ পিমালিকা । সূর্ব্যকর্মণি সর্বেষামীপুসিতার্থ ফলপুদা ।। গোতমীরে। পুগুরীকভব। মালা গোপালমনু সিদ্ধিদা । আমলক্যাভবা মালা সর্ব সিদ্ধিপ্রদা মতা। তুলসামন্তবা যা তু সা মোক্ষণ তনুতে ২চিরাৎ।।

कालरार প्रभारवारनाज्यकालन ह श्रकालरार ॥ उद्व ।। कालरार प्रभारवान मामाजार्जन मञ्जरेनति ।। मामाजाजानिकः आस्त्रामञ्जानावरेनमञ्जनाम । अमानाजाजः প্রপদ্যামি সদ্যোজাতায় বৈ নমোনমঃ। ভবে ভবে নাভিভবে ভল্পস্থোং ভবোদ্ভবায় নমঃ॥ ঘর্ষ-(ब्रष्ठन्मनोपिन्डिः। उथारठाकुः ठन्मना शुक्रविषारीमार्वामरम्यत्व चर्षरब्र्था। अँवामरम्याब मरमारकाः-ঠায় নমঃ শ্রেষ্ঠায় নমোরুদ্রায় নমঃ কালায় নমঃ কলবিকরণায় নমঃ বলপ্রমথনায় নমঃ। ওঁ ঘোরেভ্যোঘোরতরেভ্যঃ সর্বেভ্যঃ সর্বসর্বেভ্যোনমত্তে অস্ত রুদ্রবপেভ্যঃ শিবেভ্যঃ । লেপয়েচ দ্দনাদিবা। ওঁ তৎপুরুষার বিঅহে মহাদেবায় ধীমহি তল্লোরুদ্র: প্রচোদয়াৎ পঞ্চমশ্চায়ং ওঁ ঈশা-নঃ শর্কবিদ্যানামীশ্বরঃ সর্বভূতানাং ত্রন্ধাধপতিত্রান্ধণোহধিপতিত্রন্ধাশিবোমেইস্ত শিবায়ে-তি।। নতু সন্ত্রেণ দ্রব্যাভিমন্ত্রণন্য সম্ব্যাদিনিয়মঃ সর্বতে শুরুত ভদত্র কর্বৎ মন্ত্রন্ত্রেদিভাপেকায়া-মাহ।। প্রভ্যেকং একৈকং মণিং শতং শতং বারাম্মন্ত্রয়েদিভি।। কেচিচ্চ ক্ষালনাদিকমপি তত্ত্ত-ক্সত্রেণ প্রত্যেকং মণিং শতং বারান্ কুর্যাদিত্যাছঃ॥ কেচিন্তু সদ্যোজাতাদিমন্ত্রাণামেকৈকং মন্ত্রং काननामिककानि वाद्रमञ्जः भार्कामिङ व्याहकार्छ।। व्याह यथामः श्रमायः वावदर्खवामिङ দিক্॥ ৪৬ ৷ মুক্রাইকং আবাহনাদিকং। সংস্তৈত্বং বুধোমালাং তৎপ্রাণান্ স্থাপয়েত্তঃ ইত্যুক্তে:। পূজা পূজ্মিস্থা।। যথাশির: সম্ভকক্রমেণ প্রথিতং। মালা চ প্রথমং এতিয়ন্ত্তাদেব প্রাহা গুরুং সংপূজা ভদ্ধন্তাদৃহীয়াৎ সর্বাসন্ধার ইতি ভস্তোক্তে:।। ৪৭ ।। ভক্তিবর্জনৈরিতি ভগবস্তক্তার্থী পঞ্চাকৈর্জ্জপেদিতার্থ:।। ৪৮।। 🛭 ব্রপ্তারচিতা।। ৪৯।।

অর্থ অপান্ধুল্যাদিনির্বয়ঃ।। শিবাগমে।। অনানামধ্যমাক্রম্য অপ্যংকুর্য্যান্ধু मानम्। मधामामधामाक्रमा स्वार कूर्यामुर्गार एकर ॥ कर्जनीर कू ममाक्रमा स्र নৈৰ জু কারয়েৎ । এইককমণিমঙ্গু তেনাকর্ষন্ পুদ্পেন্ন গু ।। মেরৌ জু লঙ্ঘিতে পেং। অজুঠেন বিনাকর্ম কৃতৎ ভদফলং ভবেং ।। কনিটানামিক। মধ্যা চত্তথী ख्र्बनी मणा। তिন्तुरिक्ष्व वाजिनकाः मुर्मिश्व मा है हिक्न सिका ।। ৫·।। निक्षियः আরভ্যানামিকামধ্যাৎ পুদক্ষিণমনুক্রমাৎ । তজ্ঞনীমূলপর্য্যন্ত ক্রমাদশসু পর্বসূ ।। ७२ ।। अञ्चलीतं वियुक्षीज किकित मरकाहरम्बनः । अञ्चलीनाः विरम्भारत जू हि जियु मुन्न के अपने ।। कृष्ठिक । आजि जान मिकामृना र भुान कि ए। दे कमार । মধ্যমামূলপর্য্যত্তং জপেদশ্যুপর্বপু।। গৌতমীয়ে ।। আরভ্যানামিকামূলাৎ পরিবর্ত্তে বৈ ক্রমাৎ। তভ্জনীমধ্যপর্যান্তৎ জপেদশসু পর্বসু।। ৫৩ ।। মালায়া নিয়মান্তরং ॥ তত্ত্রন্যা ন স্পৃশেৎ সূত্রৎ কম্পায়ের বিধূনয়েৎ ৷ অঙ্গু ঠপর্বমধ্যস্থৎ পরিবর্জৎ সমাচরে ।। কিঞ্চ 10 न স্পৃশেৎ ৰামহন্তেন করভাষ্টাৎ ন কারয়েৎ ।। অন্ত্র চ। অশুচিন স্পেদেনাং করভটাং ন কারয়েৎ। অঙ্গৃতীয়াকমালাং हालरब्रव्यश्रमानुष्टः।। एडव्यन्। न न्न्न्र्रम् त्नावः मुक्तिरमान्यनकमा ।। जूकी মুক্তৌ তথা ক্ষেটী মধ্যমায়াং জপেৎ সুধীঃ। অঙ্গু ঠানামিকাভ্যান্ত জপেদুত্তম कर्मा वि।। उद्ध नाष्ट्र के मरयां शिष्टि विकारित करिष के निकाष्ट्र के मश्रा शास्त्र रिमा ব্ৰণকৰ্মণি।। ৫৪।। কৃচিচ্চ।। অঙ্গু তং মোঞ্চনং বিদ্যাত্ত নীৎ শতুনাশিনীৎ। মধ্যমা थनितिका माण्डा खिक्यां गाना भिका। कनिष्ठा कर्यां ए छित्रा अभक्यों निकिता ॥ ৫৫।

অথ জপে গুণাং। মন্ত্রাণ্বে। মনংসংহরণং শৌচং মৌনং মন্ত্রার্থচিন্তনং। অব্যুগুত্বমনির্কোদো জপসম্পত্তিহেতবে। ৫৬। অন্যত্র চ ।। জপান্যকালে মালা-স্কু পূজ্বিত্বা সুগোপরেৎ। গুরুৎ পূকাশয়েবিদ্বান্ মন্ত্রীর পূকাশয়েৎ। ৫৭ ।। অক্যালাঞ্চ মুত্রাঞ্চ গুরোর পি ন দ্র্যায়েহ। ভূতরাক্ষ্যবেতালাঃ নিদ্ধগল্পকারণাঃ। হরন্তি প্রকটং হন্মান্ত মান্ত্রাক্ষ্যপেহ সুধীঃ।। ৫৮।।

মনশং সংহরণং বিষয়েভ্য: প্রত্যাহার:॥ ৫৬। জপাদন্দিন্ কালে॥ ভারুমপি প্রকাশ-মেৎ॥ ৫৭॥ ভারোঃ ভারুং প্রতাপি॥ ৫৮॥

मामूशे जित्रमूनी जिः তত্ত হৈ उः अमूर्ए ति । তি मुः किनिशे ना मिका छर्ज नाः ॥ ৫०॥ এবং সধ্যমাপ বিষয়ং॥ ৫১॥ দশস্থ পর্বায় গণয়ে দিতি শেষঃ॥ ৫২। আরভ্যানা মিকা মধ্যা দিত্য ত্র মতাস্তরং আরভ্যানা বিকামূলা দিতি । ৫৩॥ স্তুমিতি মালা মিত্যর্থং। ন কম্পয়েৎ নোবি ধূনমেন্ত ন প্রক্রিপেৎ॥ উত্তমকর্মণি শান্তি স্বস্তায়নাদৌ। বিদ্বেষ উচ্চাটনে চ। ৫৪॥ তত্তিব মতাস্তরং লিখতি অসু ঠমিতি।। আকর্ষণে আরু ফিকর্মণি॥ ৫৫॥

ज्यथं कर्रि (मांयाः ॥ नांत्रम्रशक्षतात्व ॥ ज्यानिकस्त्रांमधः नित्रनि श्वान्-ভোপি বা। श्रम्भन् वा अर्भम्बावडाविधक्तमपूर्ण । १ किशा वस्य গচ্ছ স্বশন্নান। ৎ কিমপি সংস্থান নু স্কুন্তু ওণহিকাদি বিফলীকৃত মানসং। মন্ত্রসিদ্ধি-মবাপোতি ভক্ষান্দত পরোভবেৎ ।। কিঞ্ ।। স্ত্রীশূতাভ্যাং ন ভাবেত বাত্রৌ জপ-পরো নচ ।। ব্যাসক্তি ।। অঞ্ব্যপ্তের বৃষ্টে গুন বছাপ্ত মরুলগুনে।। অসংখ্যাতঞ্ यक्क थ्रः ७९ मर्बर निष्कृतः ७ वर्षा विक्रम्भाग्ननमः हिकाग्नार ।। विक्रवामाक्षरभ-ন্মন্তং বহুবন্ত্রাকুলোন চা। উপর্য্যধ্বহির্বন্ত্রে পুরশ্চর কং তাজেও ।। ৬০। অত এব-মন্তাৰ্বে।। উফাষী কঞ্কী নয়ো মুক্তকেশোগলাব্তঃ। অপবিত্রকরোৎশুদ্ধঃ প্রলপ-म करभरकृतिया ७७। चभाव्षकरताज्या मिवनि वाव्रामित । विद्यावारक्षिवित ৰা ক্ৰুদ্ধোভাতঃ ক্ষুধান্বিতঃ ।। অনাশনঃ শয়ানোবা গছ্মুথিত এব বা। রখ্যায়া-মশিবে স্থানেন জপেভিমিরান্তরে ।। উপানশ্চুগাদোবা যানশয্যাগততথা। প্রদার্ঘ্য ন ক্রেণে পাদাবুৎকটাসনএববা ॥ ৬২ ॥ যাতকে ক্রুসংহিতায়া ।।। ন চংক্রময়চ হসর পার্ষ্যবলোকয়ন্। নাপাঞ্জোনয়প্পংশ্চ ন প্রাবৃত্দিরাতথা। ।। ৬৩।। ন পদা পদমাক্রম্য নটেব হি তথা করে। নচাসমাহিতমনা নচ সংশায়নো জপেৎ। ৬৪। ধ্যায়েত মনসা মন্ত্রৎ জিব্বোঠো নত চালয়েৎ। ন কম্পায়ে-চিছ্রোপ্রবিং দন্তারৈব প্রকাশয়েৎ। ৬৫।। যক্ষরাক্ষসভূতানি নিদ্ধবিদ্যাধরাগণাং। হর ন্তি প্রসভৎহক্ষান্তক্ষাকার প্রংসমাচরে ৭। স্ত্রীশূদ্রপতিভাংশৈচৰ রাগভঞ্চ রজন্বলাং। ক্পকালে ন ভাষেত ব্রভ্রেমাদিকে বুচ। ৬৬।। ত্রৈলোক্যসম্মোহনভস্তে চ।। ন চ্ছায়ামাক্রমেরিভান্বিভাতককরঞ্রোঃ। ব দদ্যাৎ ক্স্রচিৎ কিঞ্মি গ্রীয়াজ্ঞপা-खद्र ॥

অথ দোৰপ্ৰায় শিতভানি।। ত্তকীমানীত সংজ্ঞপংশ্চাণ্ডালপতিতাদিকান্। দৃষ্ট্ৰ তান্বাৰ্যুপস্প্শাভাষ্য স্নাত্বা পুনজ্জ পেৎ। আচম্য প্ৰয়তোনিত্যং জপেদশুচি দশনে॥ ৬৭। কিঞ্।। যদি বা যমলোপঃ স্যাজ্জপাদিয়ু কথঞ্জন।ব্যাহরে দৈক্ষবং মন্ত্রং

আভাষ্য সম্ভাষ্য। অশুচীনাং মলমুত্রাদীনাং দর্শনে সতি ॥ ৬৭ ॥ যমঃ জপবিষয়ক নিয়মস্তশ্য লোপোভঙ্গঃ । কাগ্যমেতিপাঠে মৌনলোপঃ ॥ মক্রং নামাত্মকং বিষয়

অপবিত্রঃ কুশহীনঃ করে। যদ্য দা । ৫৯॥ উপরি অখল যে বহিবস্ত্রে পরিধানোন্তরীয়ব্যতিরিক্তং বস্ত্রমং ত্যজেং ॥ ৬০। গলে আবৃতঃ বস্ত্রাদিপ্রাবৃতঃ । অশুদ্ধঃ শৌচাদিরহিতঃ ॥ ৬১॥ অশিবে অমঙ্গলে স্থানে শাশানাদৌ ॥ যচ প্রেতভূম্যাদিকমিতিস্থাননির্মে লিখিতঃ
তচ্চ তামদানাং ছদ্ধামবিশেষাপেক্ষরা । তিমির্দ্য অক্ষকার্দ্য অস্তরে মধ্যে যানগতঃ শ্যাগতোবা ॥ ৬২॥ চংক্রমন্ ইতন্ততোভ্রমন্ অপাশ্রিতঃ কিঞ্চিদ্টেক্কবান্ দন্ ॥ ৬৩॥ নচ করৌ
আক্রম্য সংশ্র নঃ সংশ্রং কুর্বন্ ॥ ৬৪॥ গ্রীবাঞ্চন কম্পারেৎ ॥ ৬৫॥ এবং দ্রব্ধা জপং
বৈর প্রকাশরেদিত্যভিপ্রেতং তত্র হেন্তু মাহ্ যুক্ষেতি ॥ ৬৬॥

শারেষ। বিষ্ণুমব্যাং॥ ৬৮॥ মতান্তরে॥ পতিতানামন্তার্জানাং দর্শনে ভাষণে প্রতার কুতি হুলের বালায়ামং বড়ককং। কুলালে জপমুৎস্কের । ৬৯॥ প্রাণিদর্শনং ॥ १०॥ মার্ছারং কুকুটং ক্রোঞ্চং খানং শুদ্রং খরং কপিছে । দৃষ্টাচম্যাচরেই কর্ম স্পৃদ্ধি স্থানহর্ম বিষায়তে ॥ १১॥ নারদপঞ্চরাতে । সক্ষুক্তারিতে শব্দে প্রবাহ সমুদারয়েই। প্রোক্তে চাচম্য বালাপি প্রাণায়ামং সক্ষরেই। বহুপ্রলাপে চাচম্য ন্যাঙ্গানি তিতোজপের বিজ্ঞান্ত প্রাক্তির ভাষাক্ষ্য স্থানাহাতি । বিশ্বান্ত । জার্লি সূত্রে পুনং সূত্রই প্রথমিষ্বা শতংজপের । প্রমাদার পতিতে ইন্তার শত্তর প্রথমিষ্বা শতংজপের । প্রমাদার পতিতে ইন্তার শত্তর জ্বের । তার্মিষিদ্ধসংস্পর্শে ক্ষালয়িষ্বা যথোদিতং ॥ ৭২ ॥

অথ জপভেদাঃ। তলকণাদি চ। নার সিংহে। তিবিধােলপযক্তঃ স্যাৎ তস্য ভেদানিবাধত। বাচিকশ্চ উপাৎশুশ্চ মানসশ্চ তিধা মতঃ। তয়াগাং জপযজ্ঞানাং শ্রেয়ান্ স্যাদুররোভরঃ। যদুচ্চনীচয়রিতঃ স্পাইশাক্ষবদক্ষরৈঃ। মন্ত্রমুচ্চারয়েরভাত্তং জপযজ্ঞঃ স্বাচিকঃ।। ৭০।। শনৈরুক্সারয়েয়্রম্রমীয়দােটো প্রচালয়েছ। কিঞ্চিন্দ্রক্ষে য়র্থ বিদ্যাদুপার্শুঃ স্কুলঃ য়েগঃ মৃতঃ।। ৭৪।। ধিয়া যদক্রপ্রেণ্যা বর্ণায়ণ্থ পদাৎ পদ্ধ। শকার্থচিন্তনাভ্যাসঃ স্টক্রোমানসোজ্পঃ।। ৭৫।। তত্র চ যাজ্রঃ বিল্কাঃ। উপাংশুজ্পযুক্তপ্য তল্মাচ্ছতগুণোভবেছ। সহস্যোমানসঃ প্রোক্তোহল্মান্ ক্যানসমােহি গঃ।। ৭৬।। মন্ত্রাবি । পশুভাবে ছিতা মন্ত্রাঃ কেবলছ বর্ণরিপিতঃ। সৌবুমুগ্রনুক্তরিভাঃ প্রভুত্বং প্রাপ্তরুতি ছি ।। ৭৭।। ন দোষোমানসে জপ্যে স্বান্দ্রেশিপ স্বাদা। জপনিত্রোদ্বিশ্রশ্রেষ্টাঃ স্বা্যজ্ঞ্বণং লভেছ।। ৭৮।। অশু-

উচ্চনীচম্বরিতঃ উচ্চেন নীচেন বা উদান্তামুদান্তম্বিতসংক্তৈঃ মরৈরিতার্থঃ। স্বরেণ যুক্তিঃ স্পেটশন্দবন্তিরক্ষরৈঃ অতএব বাক্তং মন্ত্রমুচ্চারয়েদ্বং ।। ৭০ ।। স্বর্মের বিদ্যাৎ জানীয়াৎ শ্রুমাদিতার্থঃ ॥ ৭৪ ।। বর্ণাদেকক্ষাৎ ক্রমেণানাবর্মং ব্যাপ্য এবং পদাং পদং ব্যাপ্য ইত্থং শন্দর্ম অর্থস্য চ বচ্চিন্তনমম্পদ্ধানং তস্য অভ্যাসঃ পুনঃ পুনরাবৃত্তিঃ ॥৭৫॥ উপাংশুলপ্যুক্তস্য জপঃ শত্ত গাঁহ স্যাদাচিকাক্ষ্তপাক্তবর্ণাভবেদিতার্থঃ ॥ ৭৬ ॥ সৌষুম্মে মুম্মাধ্যা নাড়ী সম্বিদ্ধি অধ্বি ক্রিমার্গে উচ্চরিতাঃ সন্তঃ। প্রভূত্বং সামর্থ্যং ॥ ৭৭ ॥ অতএব মানসোজপঃ পর্মোত্তমইত্যাহ্ ন দোবইতি। দিল্লপ্রেটাইতি তত্রভাবিপ্রাণাং সম্বোধনং ॥ দিল্লপ্রেটইত্যেক বচনাত্রপাঠাণি ক্রিং ॥ ৭৮ ॥ মন্ত্রকশ্বণইত্যনেন প্রশ্বন্ধাদিপ্রস্ত যথেন্তিদেশকালাদাবেবাভ্যমেণিত্যভিত্তি

हिसी एकिसी शि शक्दरिकेन् स्थाप्ति। महिक्यां द्वानियान् मनरेवव मणाकारत्र। কিঞ্চান্যত্ত। মানসঃ निक्तिकारेगञ्ज পুর্ফিকাरৈগরপাংশুকঃ । বাচিকোমারগোচ্চাটে প্রশাস্তাজপদিরিভঃ।। ৭৯।। অথ জপমাহাত্ম্যৎ। যাত্তবেক্ত্যঃ। পাক্যজ্ঞান্চ চত্যা-রোবিধিয়জ্ঞ সমস্থিতাঃ । সর্বেতে এপয়জ্ঞ সা কলাৎ নাইন্তি যেতৃশীং ।। ৮০।। পদানভীয়ে। যাবন্তঃ কর্মহফাশ্চ প্রদীপ্তানি তপাৎসি চ। সর্বেতে জপহজ্ঞস্য क्लार नाई खि (वाड़ मीर । करनन (पर्वा निकार चूब्रमाना क्षत्रीपिक । क्षत्रक्ष विপুলান্ ভোগান্ দদ্যান্ জ্ঞি শাখতীং ৷৷ ৮১ ৷৷ অথ অপশাকারবিশেষেণ क्मविष्यः। देवानाकामरस्रोहनज्ञास्य। श्रीमहारमरबामानबारमः। ज्ञालाकारमाने श्री ক্যামি মন্ত্ৰপাৰিখিং প্ৰিয়ে। কেবলং অপমাত্ৰেণ যস্য সিদ্ধ্যন্তি সিদ্ধয়ঃ।। ৮২।। জীবীজপুটিভং মন্ত্ৰ-যদি জপে।ত মন্ত্ৰবিৎ। কমলা ভদ্বশে তিভেদ্যখা ক্ষে বলেড সা।। ৮৩।। কামেন পুটিত। মন্ত্ৰং প্ৰজপেদ্দদি ভামিন। মোহয়ভোৰ সকলং জগদেব ন সংশয়ঃ। মায়াবীজেন পুটিতং যদি জপ্যেৎ মহামনুং। অফিখর্য্যানি সমূর তস্য পাদে গতানি বৈ ॥ ৮৪॥ বাগ্তবেনাপি পুটিতং যদি জপ্যেৎ मगोहिकः। (वमद्यमाञ्चभाव्रकः मर्क्त छा छविष्ठ अव । ४०। अद्ये भूषि छ भक्तः यनि अर्भाज्यस्यति । बोकः कृष्टेक विष्ट्रिमः मूक्तिणां ज्यस्त्रः । हेमानीः শ্লু দেবি অ১ কেবলসঃ নৰোকিধিং। দশক্ষোজপেশস্মাপৎকণ্পেন মুচ্যতে ॥৮৬॥ বিংশত্যা অপমাত্রেণ রক্ষয়েশ্বপ্রব হি। শতক্তেন নত্তেণ দিনপাপেঃ প্রমুচ্যতে । সহসুকত্তেন তথা মুচ্যতে মহতৈনসা । অযুত্রস্ঞপে-নৈব মহাপাতকনাশনং। অথ লক্ষপান্ত্রী দেববন্যোদতে দিবি। কোটিকপ্তেন মরেণ মুক্তিভাগী ভবেষরং। অহর্মিশং মপেদ্বস্ত মন্ত্রী নিয়তমানসং। স পশ্যতি নসন্দেহোগোপবেশধরং হরিং।। ৮१।। অথবা যানি মন্ত্রন্য পদানি কথিতানি তে। **ভেষামন্যভমং জপাদের বৈ রোচ তে মনঃ। বীজং জপ্তা বিশালা**কি ভৌমেখর্য্যেন যুজ্যতে। দ্বিতীয়েন সুখাস্বাদৎ কুকুতে সন্তিসভ্মং ॥৮৮। জানবান্ স্যাৎ তৃতীয়েন ত্তরীয়েণ জগদ্যুক্রঃ।ভবেৎ পঞ্মজ প্যেন মুক্তিভাগী ন সংশয়ং।। ৮৯।। অজানী চ

প্রেতং ॥৭৯॥ পাক্ষজ্ঞা ব্রহ্মযক্তব্যতিরিক্তা দেবযক্তাদয়ः॥ বিধিযক্তাঃ জ্যোতিকৌমাদয়ঃ॥৮০॥ শাশ্বতীং মুক্তিং শ্রীবৈকুঠলোকপ্রাপ্তিলক্ষণাং ।৮১॥ কেবলং পূজাদিকং বিনাপীত্যর্থঃ॥৮২॥ কমলা সর্বাসম্পত্তিরিত্যর্থঃ॥৮০॥ কামেন তত্তীজেন॥৮৪॥ বাগ্ভবেন সরস্বতীবীজেন ॥৮৫॥ প্রবেশ প্রণবেন ! বীজন্ধপং কৃটন্দপঞ্চ কর্ম বিচ্ছিদ্য নিরস্য আপৎকশ্পেন সর্বোপদ্রবেশ ॥৮৬॥ বিংশত্যা বিংশতিবারানিত্যর্থঃ॥ মন্ত্রএব রক্ষয়েদিতি ভারপাল্যামিকাদিব্যতিরেকেণাপি তস্যাস্ব্রের ছ্টাদিভ্যোরক্ষা স্যাদিত্যর্থঃ॥৮৭॥ তেষাং মধ্যে যত্র যন্মিন প্রদেশ সনোরোচতে তৎ অন্যতমমেকং পদং জন্প্রপ্ত।। স্থান্থাদং অর্থভোগং ॥৮৮॥ জরীয়েণ
চত্তর্থেন ॥ জগদগুরুঃ সর্বাশাস্ত্রার্থতত্ত্বাপদেক্ষা ॥৮৯॥ প্রথম জ্ঞানসিদ্ধিং প্রযক্তীত্যুত্তরেণা-

জপেদাপি নিজক্রচ্যনুসারতঃ । প্রথমৎ জ্ঞানসিদ্ধিস্ক দিতীয়ংজ্বনিমাদিকং যা ৯০।। ত্তীয়ৎ সর্বনৌখ্যঞ্চ চন্তর্যং দেবভাত্মতাৎ । পঞ্চমৎ বৈক্ষবৎ লোকং ষষ্ঠং মুক্তিং প্রযুক্তি ।। ৯১ ।।

অর্থনিধিঃ । গুরুৎ সংপ্রা বিপ্রাংশ্চ সন্তর্পানরসাদিভিঃ । আরভেড লপং কালে মঙ্গলেহনুজয়া গুরোঃ ।। ১২ ।। প্রাভঃ সানাদিকং কৃত্যা দত্রা
চার্যাং বিবস্তা আচমা লপসক্ষপথ বিদ্যাত যথাবিধি ।।১৩ ।। বিধার বিধিনা
পূর্বাথ লিখিতেনিচনং প্রভাঃ । আত্মাপ্রান্তং শক্ত্যাথ লগাং পূর্লাকমাচরেথ । ১৪ ।
সমর্প্য তঞ্চ দত্রার্থ কৃত্যা পূজাঞ্জলিং পুনঃ । ভত্মা কৃষণং প্রণমার্থ প্রাশ্মীরাচরেণা
মৃতং ।। ১৫ ।৷ ক্রমন্তে বদন্ প্রার্থ্য চেদুদ্বাসাথ ক্রদেস্কা টিদ্বাসা বিধিবস্থান
বোপচারের্যজেৎপুনঃ ।। ১৬ ৷৷ ক্রম্থে সমর্গ্য চান্তান মৃষ্যাদিন্যাসপূর্বকং । নিজং
মন্ত্রথ লেপেন্তক্ত্যা সম্পূর্ণার্থান সারভঃ ।। ১২ ৷৷ অরিপ্রাণে। দর্ভক্তত্থানীনোদর্ভেন্
বৃদক্পানিনা। প্রাভ্রুখোন্তর্যেশ্বালাং সক্ষণ শতনের বা ।। মন্ত্রেলর প্রকাশিন্যা।
সূর্যাস্যাপ্রে গুরোরিন্দোদী প্রা চ জলস্য চ ৷ বিপ্রাণাঞ্চ গ্রাইণ্ডব সমিধৌ সম্মুর্থে
কপেণ ।। নারদ্পঞ্চরাত্রে চ ৷ শ্বনিঃ শবৈঃ সুবিস্প্রত্থিন ক্রতং ন বিলম্বিতং। ন .

স্বয়ঃ।। এবমগ্রেপি।। ৯০।। দেবতাত্মতাং শ্রিক্রফ্লাব্রপ্যং তদেকচিত্ততংং বা।। ৯১ ।।

পুরন্দরণকর্মারন্তে প্রথমং শ্রীগুরুপুর্বাং ত্রাহ্মণভোজনাদিকঞ্চ লিখতি গুরুমিতি। মঙ্গলে ি গুভে কালে। গুরোর মুক্তরা জপমারভেৎ।। তথাচোক্তং।। বিপ্রান্সম্বর্গরেশন ভোজনাচ্ছাদনা-দিভিঃ। বহুভির্বস্ত্রভূষ্ভিঃ সম্পূজ্য শুরুমাত্মনঃ।। আরভেত কপং পশ্চান্তদমুজ্ঞাপুরঃসর-মিতি॥ ৯২॥ তত্র নিত্যক্কতাং লিখতি প্রাতরিতি পঞ্জিঃ। ষধাবিধীতাস্য প্রের্বাপি সর্বেণ সম্বন্ধঃ।। তত্র সঙ্কপেবিধিশ্চামং। অদ্যাফীদশাক্ষরশংমোহনমন্ত্রশ্য দিক্ষিকাম ইয়ৎসংখ্যজপত-ক্ষশাংশামুক্তব্যকহোমতক্ষশাংশামুকতর্পণ তক্ষশাংশাভিষেক তদ্দশাংশব্যাহ্মণভোকনাত্মকপুর-শ্বরণং করিষ্যে ইতি। ৯৩॥ পূর্বাং নিতাক্তালিখনে লিখিতেন বিধিনা প্রভোঃ ঐক্ফদেবস্যার্চনং আত্মার্পণান্তং বিধার পূজারা অঞ্জুতং জপসাচরেৎ স্বমন্তং জপেৎ। শক্তাা যথাশক্তীতার্ধঃ। ততক্ষ শক্তৌ मত্যামফৌন্তর্নস্মুমন্থাফৌন্তর্শতং। তবা শক্তৌ मপ্তাবরণসহিত্স্য অন্যধা আবরণদহিত্যা কেবলস্য ধ্যানমাত্রেণ বেত্যাদিকমূহং।। এতচ্চাগ্রে স্পটং ভাবি।। ৯৪। তঞ্চ জপং।। ৯৫।। উদ্বাসাং উদ্বাসনযোগ্যং। চেম্বাদ স্যাপ্তদা ক্ষমস্বেতি বদন্ প্রার্থ্য সম্প্রানস্ত্রণ কুর্বিত্যভার্থ্য হৃদযুক্তে উদ্বাদ্যং বিধিবদিত্যদ্য প্রবেশ পরেশাপি সম্বন্ধ:। ততোদ্বাদনবিধি-শ্চায়ং।। উদ্বাসনমুদ্রবাদা দাক্ষণনাসাপুটকগুমারোণ ক্রংকমলে নিধায়াকুশমুদ্রা নিরোধয়ে-দিত্যাদিকমানসোপচারপূজাবিধিক পূর্ববং সংক্ষেপেণ লিখিতএবাত্তি। সচ বর্থাশক্তি স্বরুচানু-সারেলৈর সর্বাত্ত জেয়ঃ। পুনরিতি পুরশ্চরণার্থং পুনঃ পুজনং জ্ঞেয়ং। শক্তে সভ্যাং কিঞ্চিছহিঃ পুজনমপি কেচিদিছক্তি॥ ৯৬॥ ক্বকে চাত্মানং সমর্প্যেতি দানবিশেষোদর্শিতঃ। সম্প্রদায়াত্ম-সারত ইতি জপসংখ্যানিয়মাদিভেদেন বছবিধঃ পুরশ্চরণবিধিঃ স্যাপ্তত্র যথাস্বগুরুসম্পুদায়মেৰ-সন্ত্রং জপেদিত্যর্থঃ।। ৯৭।। দভেষু আসীন: প্রাঙ্মুধ: সনু উদক্যুক্তপানিনা মালাং উদ্ভাষ্থে

नृत्वः नाधिकः वाणि छर्भः कूर्यतिकानिति क्ति। किथा। मन्भू खार्थ छर्भः कूर्यतिकाविष প্রছরদ্বরং। তদুর্দ্ধে পূর্বেবৎ স্নাত্বা বিশেষেণ বিধানবিং। ন্যাসাবসানমখিলং সর্বাং কুর্য্যাৎ পুরোদিতং। পূজাগ্রিছোমপর্য্যস্তং ততশ্চ জপমাচরেছ।। যাবদিনাবসানস্ত ভূয়ঃ সায়ান্ততোদ্বিজ। উপাস্য বিধিবৎ সন্ধ্যাৎ দেবেশং পূজ্যেৎ পুনঃ।। ১৮॥ বিসজ্জা ভোজনং কুর্য্যাৎ সততং তারকোদয়ে । ভুক্তা শন্ধীত শয়নে মৃৎস্থিত বাথ ভূতলে।। ৯৯।। অধ্বাতে সমুখায় পাদশৌচং চরেৎ দ্বিভা আচম্যদেবং সংশৃত্য শাঘুং সম্পূজ্য পূর্ববং ॥ অপং কুর্য্যাদ্ধ থাশক্তি অপন্থিত তথেশ্বরে। অন্ত্রত। নৈরন্তর্য্বিধিঃ প্রোক্তন্তনিমৎ নাতিলগ্ধরেৎ। দিবসাতিক্রমান্তেবাং সিদ্ধিরোধঃ প্রজায়তে। কিঞ্চ । অনন্যমানসং প্রাতঃকালায়ধ্যন্দিনাবধীতি ১০০ 🔢 অতঃ কুর্য্যাজ্ঞপং নিত্যং শক্ত্যা নিয়ত সংখ্যয়া। সংখ্যাপুর্ত্তৌ চ কুর্রাতি প্রাণায়ামং পুনঃ ক্তা॥ > > । অথহোমনিরমঃ। নারদপঞ্রাত্রে । জপস্য তু দশাংশেন ছোসং কার্য্যং দিনে দিনে । অথবা লক্ষপর্যান্তৎ হোমঃ কার্য্যো বিপশ্চিতেতি ।। ১০২ ।। হোমে চ কুগুনির্মাণাদিকস্য লিখিতো বিধিঃ। পর্বাংদীক্ষাবিধাবত্র বিশেষঃ কোপি . লিখাতে। ১০৩।। কুর্য্যাদ্রক্তামুকৈর্ছোমং গুড়াজ্য মধুসংগু ভৈঃ। তদলাভে পার-সেন-সিতাসপিযুতিন হি।। ১০৪।। হোমাশক্তৌ জপং হোমসংখ্যায়ান্ত চত্ত-প্র । বড়গুণং চাইত নিতৎ ক্রনাৎ কুর্তিরিজান্তরঃ।। ১০৫।। কেচিচান্তঃ। হোম কর্মণ্য শক্তানাৎ বিপ্রাণাৎ দ্বিগুণোঞ্জা। ইতরেষান্ত বর্ণানাং ত্রিগুণাদিন্দিধী-युट्टा ११ २०७ ।।

পরিবর্ত্তিয়েৎ বিদর্গলোপেপি সন্থিরার্যাঃ। সহসুৎ বারান্ অশক্তে । তেও প্রাক্তিনি তারপাতি প্রায়েণাক্তং দর্ভ হস্তরাদিকক সমানমেবেতার লিখিতং। অথ স্নানানন্তরং। ৯৮। বিদর্জ্যে দেবং। ৯৯। প্রাতঃকালমারত্তা মধ্যারপর্যান্তং জপংকুর্য্যাদিত্যক্রেভং। নারদ পক্ষরাত্রে চা। শ্রীতগবতোক্তং মধ্য হাৎ পরতোনহীত্যাদিতেদোমস্ত্রভেদেন শক্ত্যাদি ভেদেন বা দ্রুট্যঃ। ১০০। শক্ত্যা যথাশক্তি যা নিয়তা নিতা নিয়মিতা জপদংখ্যা তয়ৈর নিতাং জপং কুর্যাছে। নন্যনং নাধিকং বাপি জপং কুর্যাদিনে দিন ইত্যান্তাক্তেঃ। সংখ্যায়ান্তস্যাঃ পূর্ত্তে । ক্রাপ্তে নাতাং গ্রুতি । বক্ষ সংখ্যায়াং পূর্ণায়াং একৈকলক্ষপ্রপে সম্পূর্ণেসতি। এতচ্চ ফলবিশেষার্গ লহ্মচন্তক্তর্যাদি জপাতিপ্রায়েণ। ১০২।। পূর্বাং দীক্ষাবিধাে লিখিতঃ অত্রচ পুরশ্বন্ধারিধা কোপি বিশেষোলিখ্যতে॥১০৩। তদের লিখিত কুর্যাদিতি।তদলাতে রক্তান্ত্রজান্তরাক্তিবিধা করাে দিজাবিপ্রায়াঃ হোমস্য যাবতী সংখ্যা লিখিতা জপদশমাংশব্রপা তস্যান্তর্ত্তর্যাহ বিশ্যাং ক্রমাৎ হোমসংখ্যান্তাং হোমস্য যাবতী সংখ্যা লিখিতা জপদশমাংশব্রপা তস্যান্তর্ত্তর্গং জপং বিপ্রং বড্গুণং ক্রিয়অন্টগুণং ইবশ্যঃ কুর্যাদিত্যর্থঃ। তথাচোক্তং হোমাশক্তৌ জপং কুর্যাহ হোমসংখ্যান্তর্ত্তর্গং। বজ্বানাং ব্রায়েশ্বর্তার্য হিশ্য পূর্বাণ্ডাং বিশ্বান্তর্ত্তর্গং। বজ্বাণাদিঃ। ক্রিরান্তর্বান্তর্ত্তি:। ১০৫।। ইতরেষাং ক্রিরা ইবশ্য পূর্বাণং ব্রিগুণাণিঃ। ক্রিরান্য ব্রিগ্রণং যুব্যস্বা চত্তর্ত্তনঃ পূর্বা পঞ্চর্যুণ হিত্রেয়াঃ। ১০৩।।

অথ জপদংখ্যা নিয়নঃ। সহোমন্ত ত্রিবর্ণানাং তল্যেএব জপঃ লুডঃ। অপোর্যোন্ধানিকার্যান্ধানিকার নিয়ন । ১০৭।। স্থানিজ্রিয়ালপো সদ্দ শুদ্রস্য বিহিতঃ দহি। এবমন্টাদেশার্গ্ত মন্ত্রোজপ্যাহযুত্ত্ব থ । ১০৮।। তথাচ শারদারাং। মন্ত্রমেনং যথান্যায়মযুত্ত্বিতয়ং পঠেছ । জুলুয়াদরণাডোলৈজদশাংশং সমাহিতঃ।। প্রপঞ্চনারেইপি। জপঃ স্যাদসমর্থন্য অযুত্ত্বিতয়াবধিরিতি।।১০৯।। জ্রীমছ্ সন্দর্মারাদিপ্রোক্তম্য অনুসারভঃ। মন্ত্রং ফলবিশেষায় জপেলক্ষচন্তন্তর । তথাচ সনহকুমারাদিপ্রোক্তম্য অনুসারভঃ। মন্ত্রং ফলবিশেষায় জপেলক্ষচন্তন্তর । তথাচ সনহকুমারকপ্পে। উক্তম্ন লক্ষং কৃত্রমুগে ত্রেভায়াং তু দ্বয়্য মৃতং। লক্ষত্রয়ং হাপেরে চ চন্তর্লক্ষং কলো যুগে।। তৈলোক্য সম্মোহনভন্তে চ। বেদলক্ষং জপেরানুমিতি।।১১০।। অতএবোক্তম্য যদ্মিংস্ত নিগদেনের জপসংখ্যা বিধায়তে। তত্র সর্বত্র মন্ত্রাণং সংখ্যাবৃদ্ধিরুগক্রমাছ। ক্প্পোক্তির কৃতে সংখ্যা ত্রেভায়াম্ দ্বিগুলা স্মৃতা। দ্বিপার প্রির্গক্তমাছ। ক্পেণিকির কৃতে সংখ্যা ত্রেভায়াম্ দ্বিগুলা স্মৃতা। দ্বিপার প্রির্গক্তমাছ। ক্পেনিকার সংখ্যা ত্রেভায়াম্ দ্বিগুলা স্বৃত্যা হ্বিপার প্রির্গিকার কলো সংখ্যা চন্তর্ভুগিতি।। ১১১।। সদ্য ফলবিশেষার্থ্য হ্বিপারে প্রিপার জ্বিয়া কলো সংখ্যা চন্তর্ভুগিতি।। ১১১।। সদ্য ফলবিশেষার্থ্য

এবং হোমাসমর্থন্য বর্মতায়ন্য হোম পরিবর্দ্তকুতাং জপভেদং নিখিত্বেদানীং হোমনমর্থন্য তন্ত্রস্য জপঃ সমান এবেতি জপনিয়মং লিখতি সহোমশ্চেতি।। ত্রিবর্ণানাং বিপ্রক্ষত্রিয়বৈশ্যানাং তৎস্ত্রীণাঞ্চ। অপনিয়মং লিখতি জপইতি তেষাং ত্রিবর্ণানাং হোমরহিতোযোজপঃ চত্তর্গুণাদি ৰূপঃ স তদেঘাৰিতামপি। বিপ্ৰস্ত্ৰীণাং বিপ্ৰভশ্তপ্ত গোলপস্তথা ক্ষ ত্ৰিয়ন্ত্ৰীণাং ৰড্গুণোইবশ্যস্ত্ৰী-ণাঞ্চাটগুণইতি। তথাচ ক্রমদীপিকায়াং।। অশক্তানাং হোমে নিগমরস্বনাগেন্দ্রগুণিতোক্সপঃ কার্য্যোবেতি দ্বিজ হপবিশামাত্রপরে। সহোমশ্চেদেবাং সম ইহ জপোচোমরহিতে য উজে।-বর্ণানাং সথলু বিহিতত্ত চলদৃশামিতি। অস্যার্থঃ। হোমে অসমর্থানাং বিপ্রক্ষতিয় বৈশ্যানাং যথাসংখ্যং নিগমাবেদাশজ্বারঃ রসাঃ দট্ নাগেক্রা অফৌএতৈ গু নিভোজপঃ কার্যঃ। ত্বর্থেবাশকঃ। অপরইতি হোমকর্মাণাশক্তানাং ইত্যাদি লিখিত মতান্তরাপেক্ষয়োক্তং ৷ অন্যৎ স্থগমমে-বেতি।। ১৭।। শুদ্রস্য জপ নিয়মং লিখতি। স্বামী ভর্ত্তা গুরুর্ব্বা তদ্য স্ত্রিয়া যোজপঃ সএব সূদ্রস্য বিহিত আচাইর্য্যঃ। তথাচ ক্রমদীপিকায়াংন। যং বর্ণমাল্রিতো যঃ সূদ্রঃ সচ তদ্বর্ণ বিহিতং। বিদধীত অপং বিধিবচ্দ্রাবান্ ভক্তিপরন্মৃতহুরিতি ৷৷ এবং বর্ণাদি ভেদেন জপ সংখ্যা-ভেদং লিখিছেদানীং পৌরশ্চরণিকমূলমন্ত্রজপ নিয়মং লিখতি এবমিতি লিখিত সংখ্যা ভেদেন ।। অযুত্ত্বয়ং বিংশতি সহসানি। তথাচ ক্রমদাপিকায়াং। প্রজপেদ্যুত্চপ্তত্তং দশাক্ষরং মন্ত্ররং ক্রমশঃ। অফাদশাক্ষরপ্রেদযুত্বয়মিত্র্দীরিতা সংখ্যেতি।। অক চ ক্রমশইতি তত্তোক্তেমক্রি-শৃঙ্গাদ্যক্তস্থানেষু ক্রমাজ্জপেদিত্যর্থঃ। তত্ত্বচ প্রতিস্থানমযুভদ্বয়ং জপেদিতি ন মন্তব্যং কিন্তু তত্ত্ব তত্রাদ্রিশূক্সাদিক্রেন তথা জপ্তব্যং ষথা সর্বাত্র ক্রতেন তক্জপেনাযুত্তয়মৃশংখ্যা স্যাৎ অন্যথা-২ফস্থানে যু প্রত্যেকমযুত্ত ময় জপেন যোড়শাযুত জপঃ স্যাৎ সচ শারদাদি মূল গ্র**ন্থোক্তেন বিরুদ্ধ্যত** ইতি দিক।। ১০৮ । অতএব শারদাছাক্তং লিখতি মন্ত্রমিতি সার্ধেন।। ১০৯।। এবং মহামন্ত্র-বরস্যাস্যাযুত্ত্বরৈনের পুরশ্চরণদিন্ধির্ভবেদের তথাপি ফলবিশেষার্থমধিকাধিকমপি জপেদিতি निथं जि श्रीमिक्यां मिना शक्षकिष्ठारस्थन। मञ्जमकोषमाक्यतः ॥ २०॥ निशर्पन माक्याक्रका।। এতচ্চ সর্বাযুগে ক্রমেটণৰ ভেন্নং ॥ ১১১॥ সদ্যঅচিরাদেৰ ফলবিশেষসিদ্ধ্যর্থং। বাশব্দোশক্চন্ত-উয়াপেক্ষয়। বিকল্পে লক্ষপঞ্চৰং অপেৎ। তদ্য লক্ষ্5 ব্ৰেটয়দ্য লক্ষপঞ্চদ্যাপি দশান।মংশা-

खरभहा नक्षभकर । स्थार कूर्य। क्षभारण विधिता निशिष्टम हि। १३६ ।। कि कि भूक्तिवाधार खकार्थर कक्षभर भूतः । क्षयु व्हायमस्य क्षभारस्य नक्षभारस्य । क्षयु व्हायमस्य क्षभारस्य । क्षयु व्हायमस्य क्षभारस्य । क्षयु व्हायमस्य क्षभारस्य । क्षयु व्हायमस्य । क्षयु व्हायस्य । क्षयु व्हायस्य । क्षयु व्हायस्य व्हायस्य व्हायस्य क्षयस्य व्हायस्य व्हायस

च्या कर्ननि ।। देवलाक । नः राह्म न कार्य । च्या देव तक्ष नार्य दिन में मार्थन व्या दिन नि विद्या ति कार्य विद्या ति नि विद्या ति विद्या ति नि विद्या ति विद्या ति नि विद्या ति नि विद्या ति विद्य

নামেকমংশং লিখিতেন কুর্য্যান্তক্রাষু কৈরিত্যাদিবিধিনৈব কুর্য্যাৎ।৷ তত্র লক্ষচত্ত্রতীরে চত্তা-রিংশৎসহসাণি লক্ষপঞ্চকে চার্দ্ধলক্ষমিতি॥ তথাচ ক্রমদীপিকায়াং। যুগলশুষিরবর্ণং চেমাত্রং পঞ্লক্ষং প্রজ্ঞপত্ত জুত্যাক প্রোক্তক্তথার্দ্ধলক্ষমিতি । অস্যার্থঃ । মুগলশুষিরবর্ণং অউ।দশাকরং মন্ত্রং যদি জপেৎ তদা লক্ষপঞ্চকং জপত্ত পূর্বেবাক্তবিধিনা অর্দ্ধলক্ষং জুন্ত্য়াচ্চ হোমস্য জপ-দশাংশকত্মাদিতি।। ১১২।। তত্তিব সদাঃ ফলবিশেষাপেক্ষয়া মতান্তরং লিথতি কেচিচেতি। অযুত্বয়ং লিখিকং। তদ্য বাফাদশাক্ষরমন্ত্রদা জপং শুদ্ধার্থং মন্ত্রাদিশুদ্ধয়ে পুনঃ পুরশ্চরণাদৌ , মন্যন্তে। অতঃ পূৰ্বেদেবেভ্যাখ্যা যশ্য তং । অস্তেচ তৎসমাপ্তে; লক্ষপঞ্কং মন্যন্তে।।তথাচ ক্রমদীপিকারাং। এবকৈথামশক্তো গদিতমিছ ময়া প্রবেদবাবিধানং ॥ কিঞ্চ। নির্ত্তিংশিন্ প্রনশ্চ প্রজপত্ত বিধিবৎ দিন্ধয়ে সাধকেশ ইত্যাদি॥ অস্যার্থঃ ৷৷ অশক্তৌ পূর্ব্বাক্তাদ্রিশৃক্ষা-দাউস্থানগমনাসামর্থ্যে তথা তত্ত্বতত্ত্ব ক্রমেণোক্তশাকাদ্যন্তী হারাসামর্থ্যে চ এষামত্রিশৃঙ্গাদ্যন্ত-স্থানানাং মধ্যে একং স্থানং। তথা শাকাদ্যউবিধাহারেছেকমাহারমাভিত্য জপং কুর্যাৎ। অনেন চ প্রকারেণ ইহ গ্রন্থে প্রকারবিশেষে বা পূর্ব্বসেবাভিধানং পুরশ্চরণকর্মা। यहा।। পূর্ব্বসেবেতি নাম বিধানং ময়োক্তং। অস্মিন্ পূর্বেদেবাখ্যকর্মণি নির্ত্তে সমাপ্তে সতি সিদ্ধয়ে বিশিষ্টকল-দিদ্বার্থং পুনঃ প্রজপত্ত পুরশ্বরণজপবিশেষং করোক্ত। ভক্ত যুগলশুবিরবর্ণেত্যাদিবক্ষামাণং লিখিতমেবেতি।। ১১৩॥ এবং পুরশ্চরণে সম্পূর্ণে চ ক্নত্যং লিখতি অন্তইতি। যথা লিখিতজপ-সমাপ্তৌ সত্যাং মহদ্বধাস্যাৎ। পরান্ ভুঃথিতান্ দীনান্। তেচাগ্রে লেখ্যাঃ দীনঞ্চ্যাদিনা !১১৪॥ । এবং তর্পণাদিনিয়মং বিনাপি কেবলহোমদহিতেন হোমাশক্তৌ চ চত্তর্গুণাদিনা অপেনৈব পু্র-শ্বরণবিদ্ধিঃ স্যাদিতি কেষাঞ্চিৎ প্রমাদিকানামাচার্য্যাণাং মতমঙ্গীরুতা বহুলনাধুকুলননাততপণা-দিনিয়মঞ্ লিখতি পুরইতি।এবং লিখিতপ্রকারেশৈব। পূর্বেষাং পুরাতনানাং সাযুক্তনানাং ।১১৫॥

পূর্বাবদিতি পূর্বাৎ প্রান্তঃ স্নানে যথা লিখিতং তথেতার্য: ॥ ১১৬॥ দেবতারুদ্ধাতি নিজেই-দেবে স্বাত্মানং সমপ্যেতার্য: ॥ ১১৭॥ এবং তর্পণাদিকং হোমবন্তাবৎপ্রতিদিনং কুর্যাৎ হি ভূসুরান্ । ভকৈননারনোপেতৈভোজয়েদ্ব জিভাবিতঃ । কিঞ্চা এবং প্রতিদিন কুর্য্যাল্যাবং সংখ্যা প্রপূর্যতে । ভদত্তে মহতীং পূজাং জুর্য্যাদ্বিপ্রাংশ্চ তোষয়েৎ । গল্পমাল্যায়রৈ কৈবে ভক্ষাডভাল্যাঃ সদক্ষিণেঃ । দীনালারপণানাখান্প্রিবিদ্যাল সাক্ষ্য গুরুমাত্মনঃ । মিন্টায়৸ব্দুভিঃ মার্মং ভুঞ্জীতোৎসাহপূর্বকং ।। ১১৮ ।। কেচিজ্লপাদ্দাংশাংশ হি মন্যতে ভর্পাং । অপেক্ষ্যোহন্যোবিশেষোহত্র জেয়োহন্য গ্রন্থ ল চ ।। ১১৯ ।। অথ ভত্র রিক্তপূরণং । উক্তঞ্ । যাল্যদক্ষ বিহীয়েত ভৎসংখ্যাদ্বিগুণাজপঃ । সাক্ষ্যাভাবিদ্য কর্ত্ববাত্যভাশক্তান ভক্তিভঃ ।। ১২০ ।। সর্বাথা ভোলারে প্রান্ত কর্বাত্যভাশক্তান ভক্তিভঃ ।। ১২০ ।। সর্বাথা ভোলারে প্রান্ত কর্বাত্যভাশক্তান ভক্তিভঃ ।। ১২০ ।। স্বাথা ভোলারে প্রান্ত কর্বাত্যভাশক্তান ভক্তিভঃ ।। ১২০ ।। স্বাধা ভোলারে প্রান্ত কর্বাত্যভাশক্তান ভক্তিভঃ ।। ১২০ ।। স্বাধা ভোলারে প্রিন্তিগ্রামান্ত্রণ বিহীন্যত জপত্তিগুণামতঃ । ভাবৎপুস্পপ্রদানস্বা ভাবভী বা নমক্ষ্যা ।। ১২২ ।।

चथ न्य क्षित्व न्य त्र क्ष्य । ज मुक्य । शृंकाः विख्य दः कर्षुः योग माक् । ज विना क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य । ज्य विश्व क्ष्य क्ष्य । ज्य विश्व क्ष्य क

যাবক্তপোক্তসংখ্যাপূর্ত্তির্ভি। তদন্তে সংখ্যাপুত্তী চ সন্তাং॥ ১১৮॥ হোমদশাংশং তর্পণং লিখিতং তত্র মতান্তরং লিখতি কেচিদিতি। নমু পুরশ্চরণকর্ত্তুঃ সন্ত্যাদিসময়ে কতমঃ কৃত্য-বিশেষ ইত্যপেক্ষায়াং লিখতি অপেক্ষাইতি। অত্র পুরশ্চরণক্ষপাদিবিধী ঘোহন্যো বিশেষঃ কন্দিদপেক্ষ্যঃ স্যাৎ সচান্যগ্রন্থতঃ শারদাতিলকাদিপঞ্জাত্রাদিশাত্রেভ্যোপ জ্লেয়ঃ অত্রচ গ্রন্থ-বিস্তর্জ্যান্ন বিস্তার্য্য লিখিতইতি ভাবঃ॥ ১১৯॥ অঙ্গং তর্পনাদি। তস্য অঙ্গন্য সংখ্যায়াঃ দিগুণঃ। সাঞ্গন্য পুরশ্চরণম্য সিদ্ধার্থ্যং জপঃ কর্ত্তব্যঃ॥ তচ্চ দিগুলকপকরণং তত্র তত্রাশক্তিব নচ ভক্তিতঃ। ভক্ত্যা চপ্রযুদ্ধতঃ সর্ক্ষমন্থ্যন্তর্মেবেতার্ধঃ॥ শাক্ততইতি পাঠেপি শক্তৌ সভ্যাৎ মুখ্যকপতর্পনাদিপরিত্যানেন গৌণকপ্পে প্রবৃত্তের্গ্রে দোঘোক্ত্যা প্রযুদ্ধতামুখ্যকপ্পেন সাঞ্গং কুর্যাদেবেতার্থঃ॥ ১২০॥ নমু রিক্তনিবারণার্থং অপাশক্ত্যা কিং কার্য্যং তত্রাহ্ সর্ক্ষধেতি। ব্যঙ্ক-সাঞ্চতার্থং সদ্যাঃ কলবিশেবদিদ্ধার্থপ্রেভ্যাদি সর্ক্পকারেণ। বিশেষতণ্ট ক্ষত্ন্য সাঞ্চন্ত্রেবে । বিশেষতণ্ট ক্ষত্না সাঞ্চন্ত্রেবে । বিশেষতণ্ট ক্ষত্না সাঞ্চন্ত্রেবে । বিদ্যান্তর্শন সাঞ্চন্ত্রির প্রশান্ধ।। ১২২॥ তত্রাপ্যাদিকানাপ্রকারেণেত্যর্থঃ॥ ১২১।। তত্রাপ্যাদক্ষী লিখিতি যাক্ষাদিকান প্রস্তার্বেরিতার্থঃ॥ ১২২।।

অঙ্গাদ্যাবর গৈবিনা নিজেউদেবমাত্রং পূজরে ।। ১২৩।। দেবভামাত্রং কেবলনিজেউ দেবমেব ধ্যাত্বা নপ্ত ভক্তত্বভারসমর্পণাত্যক্তভক্তানং ক্রত্বা। ১২৪।। কেবলাং মানসিকপূজা-ব্যতিরিক্তাং।। ১২৫॥ প্রথমকপেন্য মুখ্যপক্ষন্য প্রভুস্তত্ত সমর্থদেও । অসুকপ্পেন গৌণপক্ষেণ বর্ত্তরেও কর্ম কুর্য্যাৎ।। সাম্পরায়িকং পারলৌকিকং।। ১২৬॥ প্রমুপোধিতঃ গ্রহণপ্রকদিনে বিষ্ঠঃ ।। ১২৭। নদ্যাং সমুত্রগামিন্যাং নাজিমাত্রোদকে স্থিতঃ। গ্রহণাদিবিমু ক্রান্তং জপেন্সন্ত্রং সমাহিতঃ। জনস্তরং দশাৎশেন ক্রমাজামাদিকং চরেছ। তদন্তে মহতীং পূজাং কুর্য্যান্ত্রাজ্ঞাভাজন । তভোমন্ত্রপ্রান্ত্রাক্রাল্রাজ্ঞাভাজন । তভোমন্ত্রপ্রান্ত্রাক্রাল্রাল্যাং পৌরশ্চন রেছ। এবঞ্চ মন্ত্রালিজাং স্যাছ দেবতা চ প্রসাদতি । অথবান্যপ্রকারোয় প্রশাহিত্র নিক্রেরিধী। চন্দুসূর্য্যোপরাগে ভ স্নাত্রা প্রত্রমানসং ।। ১২৮ ।। স্পর্শাহিত্র করেছে করেছি মাদিকং কৃতী । ১২৯। তথি বিধী। চন্দুসূর্য্যোপরাগে ভ সাত্রা প্রবিদেবাথ কুর্যাক্রোমাদিকং কৃতী । ১২৯। তথি বিক্রালিপং করে ধ্যাত্বা প্রভাবরেছ । তস্য চ্ছায়ানুসারী স্যান্ত ক্রিযুক্তেন চেত্রসা। গুরুমূলমিদং সর্বা তথা বিভাগে গুরুং ভজেছ । পুরশ্চরণহানোপি মন্ত্রী সিজ্যের সংশায়ঃ। তথা চোক্তং। যথা সিজর সম্পর্শান্তামু ভবতি কাঞ্চনং। সমিধানা-দুরারের শিব্যাবিষ্ণুম্য়োভবেছ।। ১৩০।

ভত্তৈব প্রকারান্তরং গৌভমীয়ে। গ্রানুগমনৎ কার্য্যৎ গোগ্রাসং গোপ্রদক্ষণং। নিত্যৎ তাসু প্রসন্মাসু গোপালোপি প্রসাদতি !৷ অথ সিদ্ধমন্ত্রস্য লক্ষণং। উক্তঞ্চ বৌধায়নেন। সিদ্ধস্য ত্রীণি চিহ্নানি দাতা ভোক্তা প্যযাচকঃ ।। ১৩১ ।। সিদ্ধমন্ত্রস্য ভস্তোক্তাঃ প্রবর্তন্তে ২ত্র সিদ্ধয়ঃ।। ১৩২ ।। নারদপঞ্চরাকে চ শ্রীভগবতা। মন্তারাধন শক্তস্প্রথম বৎসরত্রয়ং। জায়ন্তে বহুবোবিল্লা নিয়মস্ক্স্য নারদ। নোদ্বেগং সাধকোষাতি কৰ্মণা মনসা যদি। তৃতীয়াদ্বংসরাদূদিং রাজানশ্চ মহীভ্তঃ। পার্থ-য়ত্তে ২নুরোধেন গর্বিতা অপি মানিনঃ। প্রসাদঃ ক্রিয়তাং নাথ মমোদারণ কারণং ॥ ১৩৩॥ প্রজ্বন্তঃ প্রপশ্যন্তি তেজসা বিভবেন চ। অতন্তে মুনিশার্দ্র নিপুরং বজুমক্ষমাঃ। নবমাদ্ধংসরাদূর্দ্ধং তান্যাশ্চর্য্যাণি পশ্যতি। আত্মানন্দপ্রদান্তা-শু প্রত্যক্ষেণ বহিন্তথা। কিঞ্চ। বলেন পরিপূর্ণ চ তেজনা ভাক্ষরোপমঃ। পূর্বে-ন্সদৃশঃ কান্ত্যা গমনে বিহগোপমঃ। স্বন্ধাননেপ্যক্ষতা বহুনা নচ খিদ্যতে ।। ১৩৪।। বিন্যুত্রয়োরথাপেত্ব১ ভবেন্নিডাজয়ন্তথা। জপধ্যানরতোমৌনী ন খেদ-মধিগচ্ছতি । বিনা ভোজনপানাভ্যাৎ পক্ষমাসাদিকং মুনে । ইত্যেবমাদিভি-শ্চিবৈশ্বর্যারিভিঃ। প্রবৃত্তিঃ সংপ্রবোদ্ধব্যং প্রদলোমন্তরাভিতি।। মন্ত্র প্রসাদজনিতং লিক্ষ্ণ ন গুরোর্জিনা। প্রকাশনীয়ং বিপ্রেন্দু ক্স্যুচিৎ সিদ্ধি-মিচ্ছতা।। ১৩৫।।

ক্তোপব। সং সন্।। ১২৭ ।। অথবান্য প্রকারোয়মিত্য অসমুদ্রগামি নদী জলাস্তঃস্থিতিবাতি÷ রেকেণ সংক্ষেপে পূর্বভোবিশেষঃ ।। ১২৮।। স্পর্শাৎ গ্রাণমারভ্য।। ১২৯।। কেবলঞ্জির্র-প্রসাদেনৈব পুরশ্বেণসিদ্ধিঃ স্যাদিতি প্রকারাস্তরমাহ অথবেতি ত্রিভিঃ।। ১৩১।।

দাতা ভোক্তাপি দন্ অযাচকঃ কমপি ন যাচত ইত্যর্থ:। ১৩১।। নচৈত আত্রমের কিন্তু সর্বাজ্ঞ বাদিসিদ্ধয়োপি তদ্য স্থারিত্যাহ সিদ্ধেতি॥ অত্র অন্মিনের লোকে দেহে বা।। ১৩২।। শুসুরোধেন আমুকুল্যেনের প্রার্থিয়ন্তে।। ১৩৩।। বছনাহশনেন।।১৩৪॥ লিঙ্গং চিহ্নং।।১৬৫।।

## প্রস্তিতি বিলাসঃ।

(Car)

অথ সিদ্ধান্তর্ভা । ভচ্চোক্তং । সিদ্ধান্তাহি নিভাং হৈ জিলকাং ক্রুমচর্চরেং। নিয়মেনৈক্সকায়া জপেদ্টোত্তরং শতং ॥ ১৩৬॥

অথাসিদ্ধসাধনোপায়াঃ ।। তোচোক্তা ।। অনুষ্ঠিতোযথান্যায়ৎ যদি মজোন নিদ্ধাতি। পুনস্তাবৎ প্রজপ্তব্যস্ততঃ সিদ্ধোভবেৎ ধ্রবং ।। পুনঃ সোংনুষ্ঠিতো মজোন্ যদি সিদ্ধো নজায়তে। উপায়া স্তত্র কর্ত্তব্যাঃ সপ্ত শক্তরভাবিভাঃ ।। ৩৭ ।। রুদ্রেণ দ্রাবণাদ্যাশ্চ কথিতা মন্ত্রসিদ্ধয়ে। সপ্তোপায়া বুধৈর্জে গ্লাস্তেশ্ন ক্লভ্যেষ ।। ১৬৮ ।। শ্রীমদ্যোপালমন্ত্রায়ং নৈব কিঞ্চিদপক্ষতে । হণ্যাব্রস্পূক্ ক্লভ্যেষ স্পৃক্টোহি দহনোযথা।। ১৩১ ।।

व्ययक्षः। मनदक्षातकण्णा। व्हर्नार्थं मूत्न वक्षाः दक्षः क्षीकत्रमुख्यः। स्वतृद्धः वा वत्न वाथ विक्षाताय्वात्रस्थवा।। ১৪०।। स्थानस्वाद्धः व्याविद्धः क्षित्रस्य विद्धः विक्षाः विद्धः व्याविद्धः विद्धः विद्यः विद्धः विद्य

শালগ্রামে মনৌ যন্ত্রইত্যাদিনা পূর্ব্বং পূজাস্থানের যন্ত্রমুলিথিতং। তমন্ত্রং যন্ত্র আলি থ্যেত্যাদিনা সাধ্যসাধনোপায়ের চ যন্ত্রমুদ্ধিইং। অতাংপক্ষিতং যন্ত্রস্থালকংং লিখন কেবল-যন্ত্রধারণমাত্রেনৈর সর্বাদিজ্য স্যাদিত্যন্তেন তদ্ধারণমাহাত্মঞ্চ প্রমাণয়ন লিখতি অর্চনার্থ-ইত্যাদিনা যাবৎ সমাপ্তি। মুনে হে শ্রীনারদ। শ্রীকরং বিভূতিসম্পাদকং॥ ১৪০॥ একান্তং নির্জ্জনং। ১৪১॥ বহিপুটিতং মণ্ডলম্বরং ষটকোণমিত্যর্থ্য অত্রে ষট্কোণকোণেম্বিত্যুক্তেঃ। তথাচ ক্রমদীপিকারাং কর্ণকারান্ত্র ষট্কোণ হ্রসাধ্যং তত্র তমুমুমিতি॥ কামং কামবীজং। শিস্টেঃ অবশিক্তাঃ সপ্তদশভিরক্তরৈর্বেইরেই স্থেশভিরি নির্দান তথাচ ক্রমদীপিকারাং॥ শিক্তির সপ্তদশভিরক্তরৈর্বেইরেই স্মরমিতি॥ ১৪২।৷ ঘটকোণস্য তস্য কোণেয়ু ঐক্রাদিরু শ্রিরং লক্ষীবীজং আলিখ্য বহ্যাদিকোণেয়ু ক্রিমুমায়াং ভূবনেশ্বরীবীজং লিখেৎ। তথাচ ক্রমদীপিকারাং। প্রাগ্রক্ষোহনিলকোণেমু শ্রিরং শিক্তেরু সম্বাহিতি। তর বইকোনের বহির্যে ষট্ সন্ধ্রের্ ষড়ক্ষরং মন্ত্রং লিখেৎ একৈ-

একদন্ধাং বা অর্চ্চয়েৎ।। তত্র চাফৌন্তরশতবারান্ নিক্ষমন্ত্রং জপেদিত্যর্থঃ॥ ১৩৬॥

শক্ষরভাবিতাঃ তচ্চ সর্বাং শক্ষরণোদিভমিতি যাবং ॥ ১৩৭॥ ১৩৮॥ তেচোপায়া মন্ত্রান্ত রেঘের নত্ত্বিন্ মোহনাথ্যান্টাদশাক্ষরমন্ত্রইতি লিখতি শ্রীমদিতি। কিঞ্চিৎ সংস্কারাদিকং। কিন্তু ক্ণ্যাত্রং স্পৃশতীতি তথা সন্নপি ফলত্যের। তত্ত্র দৃষ্টান্তত্বেনার্থান্তরমুপন্যদ্যতি স্পৃথ্যোগীতি ॥ যথাকথঞ্জিৎ স্পর্শনাত্রেণ দহনোদহেদের তচ্চ্ত্তেন্তথাত্বাদিতি ভাবঃ॥ এতচ পূর্বাং মাহাত্ম্য লিখনে ব্যক্তীভূত্যেবান্তি। ১৩৯॥

প্রথিক ক্রিনাত্কাং তর্ব হির্নাসে । ভূবিষ্থা লিখেবাহে ব্রীমারাং দিগিদিকু চ। এবং মত্রং সমালিখ্য জাতবাপময়ে পটে। রাজতে তামুপটে বা ভূর্জে কৌমময়েশি বা। সুক্ষাত্ত্বপটে বাশি প্রতিষ্ঠাপ্য সমীরণং। ছত্বা সহস্মাজ্যেন মন্ত্রসম্পাতশূর্ককং। আর্চায়ত্বায়তং জ্বখ্য ধারয়ে ক্ষন্ত মুন্ত । ত্রৈলোকৈ শ্র্যামাপ্যেতি দেবৈর শি সুপ্র জিতং। আকর্ষণং মুর্জ্রীগাং নাগলোকনিবা দিনাং। পিশাচযক্ষরকাং দি জুর্ভূত-গণাশ্চ যে। দুইসর্পাদয়ঃ সন্ধা হ্যপ্সর্পন্তি দূরতঃ। মন্তরাজধরং দৃশ্ব। বিদ্রবন্তি চ বিভাতি। বছনা কিমিহোজেন সর্প্রলোকস্থাবহং। জ্বীণামাকর্ষণং সদ্যোরাজ্যাংবং শাক্তরং ভুবি। যোগ সিদ্ধিকরং পুংসাং ভবসাগরতারকং। ভুক্তিমুক্তিপ্রদং দিব্য মিতি প্রোক্তঞ্চ বেধসা।। ইতিশ্রীগোপালভট্টবিলখিতেশ্রীভগবড়িকবিলাসে পৌরু শ্রেরণিকোনাস সপ্তদশবিলাসঃ।। ১৭।।

শিন্ সংক্ষা এইককাক্ষরং লিখেদিতার্থঃ। বড়ক্ষরশ্চাত্র কামবীক্ষে সহিতশুন্তগ্রেশনতান্তশ্ব বিধানিতার্থিঃ। তথাচ ক্রমদীপিকায়াং। বড়ক্ষরং সাল্লিয়ু চ কেশরেষ বিশান্তিবান্তার্থিং ব্যার্ত্রীমিতি। কামমালামস্ত্রস্য বর্ণান্তচন্ত্রারিংশদক্ষরাণি প্রত্যেক্ষলং ঘট বর্ণানিত্যেমই ব্যার্ত্রীমিতি। কামমালামস্ত্রস্য বর্ণানইচন্ত্রারিংশদক্ষরাণি প্রত্যেক্ষলং ঘট বর্ণানিত্যেমই বুলু লিখেৎ তথাচ ক্রমদীপিকায়াং মালামস্ত্রং দলাইকে। কৈলিখেৎ তল্তৈরুত্তমৈগৃহাঞ্জনৈ নাল্লিয়েই তেত্যোহউদলেভ্যো বহির্মাত্রুমেকপঞ্চাশদক্ষরান্ত্রিকাং সবিন্দুকাং ক্রমেণ থেই । তথাচ ক্রমদীপিকায়াং ॥ তল্বাহ্যে বেইর্মোত্রুকাক্ষরৈরিতি। তল্বাহ্যে মাতৃকাতোক্রিয়া ভিষাহ পরিতোলিথেৎ। তন্য দিক্ষু প্রাচ্যাদি চতক্যু প্রিয়ং লক্ষীবীজং বিদিক্ষু লিখেদাত্য । তথাচ ক্রমদীপিকায়াং ॥ ভবিষ্ক লিখেদাত্য । তথাচ ক্রমদীপিকায়াং ॥ ভবিষ্ক লিখেদাহে । বারে দিখিদিক্ষুপীত্যর্থং ॥ তম্বহিশ্ভংকোণং কোণ্ডগুইং । নাগলোকং পাতালং তদাসিনাক্র প্রজ্বানামিতি শেষ্ণ। দিব্যং শ্রীবৈকুপলোকপ্রাপ্কপ্রেত্যর্থং ॥ ইতি সপ্তদশং ॥ ১৭ ॥

#### कि। दिनामः।

খস্য প্রসাদাদজ্যোপি সদ্যঃ সর্ব্দক্তভাৎ ব্রজেং। স ঐতিতন্যদেবোমে ভগবান্
সংপ্রসাদত্ত ।। ১।। তপেক্যন্তেইচ্চনেইবশ্যমধিষ্ঠানানি বৈষ্টবঃ। ঐসূর্ত্রশ্চ তত্রাপি সাক্ষাহকারসুথপ্রদাঃ।। ২।। প্রীসূর্ত্রনিং লক্ষণানি লিখিতান্যে কানিচিং।
প্রাদুর্ভূতেবিধিস্তাসাং প্রতিষ্ঠারাশ্চ লিখ্যতে।। ১।।

অথ শ্রীমৃতিপ্রাদৃত্যবণং। ভবৈতাব ভগবন্যৃতিপ্রাদৃত্যবৈশিপ চেন্তবেশ। কর্ত-ব্যাহথাপুপোয়েহত পূর্বৈঃ সড়িঃ প্রদর্শিতঃ।। তত্রাদৌশ্রীমৃত্যাবির্ভাবন মাহাত্মাং। বিষ্ণুধর্মোন্তরে। প্রতিমাংকারয়িদ্বান্ত দেবদেবস্য চক্রিনঃ। ন দুর্গতিমবাংপাতি বিষ্ণুলোকং সগচ্ছতি। দেবস্য প্রতিমায়ান্ত যাবন্তঃ পরমানবঃ। তাবদ্বর্ঘসম্পানি বিষ্ণুলোকে মহায়তে। কিঞ্চা। প্রাসাদবত্তথা ভস্যাঃ ফলং সম্যন্তনাহাত্ম। উত্তরোত্রতোত্রবৈয়র্কিনা পাক্রেকাং দিজাঃ।। ৫।। নারসিংছে। প্রতিমাধ্ব লক্ষণোপেতাং নরসিংহ্যা কারয়েশ। স্ক্রপাপানি সন্তাজ্য সত্ত বিষ্ণুপুরে

শ্রী গুরুমু থৈকগম্যং শ্রীমূর্জিপ্রাছ্রভাবণবিধিং লিখন্ প্রমছ্তের রোপি ভগবৎ প্রসাদাৎ স্বজ্ঞেরো জবতীতি তৎপ্রসাদং প্রার্থরতে যদ্যেতি॥ ১॥ অর্জনে নিমিস্তানি অধিষ্ঠানানি পূজা স্থানানি। তত্র অধিষ্ঠানেঘপি মধ্যে শ্রীমূর্জয়ঃ ভগবৎ প্রতিকৃতয়োহবশ্যমপেক্ষ্যন্তে। কৃতঃ। ভগবৎ সাক্ষাৎক্ষারে বহু প্রথং তৎ প্রকর্ষেণ দদতীতি তথা তাঃ॥ ২॥ লিখিতানি পূর্বাং বহিঃ পূজায়াং চন্তর্বিংশতি মূর্জ্যাদিলিখনে কানিচিদিতি অধুনা তান্যাপি লেখ্যানীতি ভাবঃ। তাসাং শ্রীমূর্জানাং প্রাত্তুতঃ প্রাত্তর্ভাবস্য প্রতিষ্ঠায়াশ্চ বিধিলিখ্যতে । ৩।

নিজভকৈয়কসাধ্যেপি শ্রীমুর্জিপ্রান্থভাবণে শিকাচারাক্ত্রদারে যত্ন: কার্যাইতি লিখতি ভকৈয়-বেতি।। অপিচেৎ যদ্যপি ভক্ত্যের নচ শিল্পাদিশক্ত্যা ভবেৎ তথাপি অত্র ভগবন্যূর্ত্তি প্রান্থভাবে উপায়ঃ সাধনমসুষ্ঠেয়ঃ সচ ন স্বকল্পিতঃ কিন্তু শাস্ত্রদারা সাধুপরল্পরয়াভিত্যঞ্জিত ইতি লিখতি পূর্কৈরিতি॥ ৪।। প্রাসাদবৎ প্রাসাদনির্দাণে যথা কল মুক্তং তথা তস্যাঃ প্রতিমায়া নির্দাণে পীত্যর্থ: বিভঙ্কাত্রে মন্দিরনির্দাণে লেখাং। তথাহি॥ স্বরবেশানি যাবস্থাদিক্ত্রাঃ পরমাণবঃ। ভাবেদ্বর্ষস্থাণি স্বর্গলোকে মহীয়ভে। প্রাসাদে মৃণ্যুয়ে পুণ্যং ময়ৈতৎ কথিভং দ্বিজাঃ। তন্মান্দ্রশন্তণং পুণ্যং ক্রতে শৈলময়ে ভবেৎ। তত্যে দশগুণং লৌছে তামে শতগুণং ততঃ। সহস্থাণিতং রৌপ্যে তত্মাৎ কল মুপাল্লুতে। ততঃ শতসহস্থ বৈ সৌবর্ণে দ্বিজনন্তমাঃ। অনন্তং কলমাপ্রোতি রাস্চিত্রে মনোইরে ইতি। সম্যাণিতি প্রাসাদ্ভোপ্যত্র বিশিক্তং কলমিত্যর্থঃ।। ৫।৷ লক্ষণেরত্রে

বনে হাঙা প্রানুষ্ঠ্যাবির্ভাবণবিধিং।মাৎন্যে। বিক্ষোন্তাবং প্রবক্ষ্যানি যাদুক্ কপং প্রশানে । শশ্বন্দ্রধরৎ শান্তং পালহন্তং গদাধরৎ। ছত্রাকারং শিরন্ত স্য ক্র্যাবৎ শুভেক্ষণ । তুষ্কনাসং শূর্পকর্ণ প্রশান্তারু জ্বদ্বরং । ক্রিদ্টভুজৎ বিদ্যাদন্তঃ ভুজন্যান্য যথান্তানং নিবোধত। খড়গো গদা শরং পদাং দেয়ৎ দক্ষিণতোহরেঃ। ধনুশ্চ খেটকক্ষৈব শশ্বন্তক্রক্ষ বামতঃ।। চত্তভুজ্ম্য বক্ষ্যানি যথৈবায় ধনংস্থিতিঃ। দক্ষিণে চ গদা পদাং বাসুদেব্দ্য কারয়েং। বামতঃ শশ্বন্তক্র চ কর্ত্বে ভুতিনিচ্ছতা। ক্ষাবতারে ভ গদা বামহন্তে প্রশান্ত । যথেচ্ছ্যা শশ্বনক্র উপরিক্তিং প্রকণ্যেং।। ৮।। অধন্তাং পৃথিবী দেবী কর্ত্ব্যা পদমধ্যতঃ। দক্ষিণে প্রণতং ভদ্দাক্রন্তাং নিবেশয়েং। বামতন্ত ভবেলক্ষ্যাং প্রন্থতা সুশোভনা। গরুলান গ্রহাল বাসি সংস্থাপ্যাভূতি মিচ্ছতা। প্রশিষ্ট কর্ত্ব্যে পার্ম্বয়োং পত্মসংক্রান গ্রহাল বিতাং। পত্রবল্পার্মীন মান্তিং। তথা কপ্রতাপেতং স্ত্রির্দ্বিতং। পত্রবল্পার্মীন মান্তিং। তথা কপ্রতাপেতং স্ত্রির্দ্বিতং। ১।।

শ্রীমূর্ত্তিপরিমাণ । তত্তিব। অঙ্গু প্রপর্কাদারভা বিভন্তি থাবদেব ও। গৃহে বৈ প্রতিমা কার্য্যা নাধিকা শাসতে বুধৈঃ।। ১০।। আংষাড় শান্তু প্রাসাদিঃ কর্ত্ব্যা নাধিকা ততঃ। মধ্যোত্তমকনিষ্ঠা ও কার্যা বিত্তানুসারতঃ।। ১১।। বারাহাঞ্চ । সৌম্যা ও হস্তমাত্রা বসুদা হস্তব্যোচ্ছিত্তা । প্রতিমা ক্ষেমসুভিক্ষায় ভবেশ্রিচত্তর্সন্ত প্রমাণাচ।। ১২।।

অথার যে ক্রত্য । প্রীহ্যশীর্ষ পঞ্চরাত্রে। প্রাদাদস্যেত্রে ভাগে শিলাং নীত্রা চলেনিকঃ। ক্রা কর্ম কুটীং রম্যা ১প্রতিমাকর্ম কার্য়েও। ১৩। চত্তরসূায়তাং ক্রা শিলাং সংস্থাপ্য চার্চরেও। শিরোমুখঞ্চ পৃষ্ঠে চ অক্ষয়িত্বা তু বুদ্ধিমান্। যজমানানুকুলোন গুরুং কর্ম সমারভেও। শিলাং পূর্বাননাং ক্রা অথবা উত্তরাননাং। ভোমেন ব্রহ্মঘোষাদৈয়ে স্লাপ্য পশ্চাত্রলিও হ্রেও। ১৪।। দ্ধি দূর্বালকত পূজাং নবার্য্তে সমাচ্যেও। শুক্রৈর্গ জিশ্চ মাল্যৈ শহমত্রণানেন দেশিকঃ। তদ্বধা। তত্ত্ব সংল্যা ভগবান্ স্ক্রজগতঃ প্রবীরং সক্ষর্যাবাস্দেবং প্রবর্

লেখ্যৈ নৃষ্ঠি। ৬। ভবনে গৃহপূজায়ামিতার্থঃ স বিষণুঃ দ্বিভুলোপি আচার্য্যেণ কার্যাঃ।। ৭।। থেটকং চর্মা। ৮।। সর্বেষাং পরিবারপরিচ্ছদসন্নিবেশমাহ অধন্তাদিতি সাইদ্ধশন্তভিঃ। এঃ সর্বসম্পদ্ধিষ্ঠাত্রী মহালক্ষ্যংশভূতা।। অমরেশ্বরৈত্র ক্ষক্তাদিভিক্রপেতং। প্রণামন্তবনমুদ্রা চ শিম্পিযু প্রসিইদ্ধব।। ৯।।

গৃহে স্বগৃহান্তরর্কনে। 1 ১-। আধোডশাৎ একহন্তমারভ্য যোড়শ হন্তপর্যন্তমিভার্ধঃ।। ১১॥ কেমার তিহন্ত। স্বভিকায় চন্তর্হন্তেতি ঘর্থাসংখ্যং জেরং।। ১২ ॥

প্রতিমায়া: কর্ম নির্মাণকুতাং।। ১৩।। স্থাপ্য স্থাপয়িত্ব।।। ১৪।। বাচ্য বাচ

বরাহ জয় ড়য় সুপ্রতিতিত কীর্ত্তি প্রবন্ধয়য় ওঁ ওঁ ফট ফটনমঃ। য়তি বাচ্য ছিজান্ সমাক্ গুরুতজ্ঞা সমর্জয়ে । বস্ত্রপুলাদিদানেন অশাঠোন ও পূজয়ে । ১৫ ।। মঙ্গলৈর জ্বোঘাট্দোঃ প্রতিমাৎ সংবিভাজয়ে । মধ্যসূত্রৎ সমাক্ষাল্য তীমুশস্ত্রেণ চোহকিরেছ । ১৬ ।। অথাঙ্গপরিমাণবিশেষঃ । মাৎসের। স্বকীয়াঙ্গুলিমানেন মুখং স্যাদ্দাদশাঙ্গুলং । মুখমানেন কর্তুর্যা সর্কাবয়বকপেনা । ১৭ ।। অঙ্গুলিপরিমাণং । প্রীহয়শীর্ষপঞ্চরাত্রে । অভিপ্রেতপ্রমাণন্ত নবধা প্রতিভাজয়ে । নবমে ভাকরৈভজে ভাগঃ স্বাঙ্গুলমুচ্যতে ।। ১৮ ।। প্রীনারদীয়ে চ । বিয়মানত্ত নবধা প্রেচ্ছুয়াং সংবিভজ্ঞা বৈ । ভাগং ভাগং ততোভ্রোভবেদ্দাদশধা দিল ।। তদঙ্গুলং স্যাদিয়্রসাত্রে । ১১ । এবং পুরাণভল্লাদি দৃষ্ট্বাত্রেদং বিলিখ্যতে । ললাটাচ্চিবুকাত্তং স্যাহ প্রীমুগৎ ঘাদশাঙ্গুলং ।। ২০ ।। তত্রাননংভাগত্রকস্তরের চত্তরঙ্গুলে । ললাটাছিবুকাত্তং স্যাহ প্রীমুগৎ ঘাদশাঙ্গুলং ভবেং ।। ২১ ।। অর্জাননংভাগত্রকস্তরের চত্তরঙ্গুলে । ললাটাছবুকাত্তং মানভিত্রবিধা পরে । তত্তাহপরঙ্গ মেচুন্তি স্থানাহ্ববিভাগকৌ।।২০ ।। তথা দিভানিকে জধ্যে ভানুনা চত্তরঙ্গুলে । পাদৌ চ তৎসমাবিত্যাৎ দৈর্ঘ্যভাগা নবেঃদিতাঃ ।। ২৪ ।। কুরাপ্রচাহ ললাটসোপরিষ্টাপ্রস্তলং শিরঃ। তত্তাল্যা নবাংদিতাঃ থাপি মুর্লব্রব তে ।। ২৫ ।। ইতি ন্যাৎ স্বাভানিদ্র্যি সান্টোত্রসাত্রান্ত্রণাভান্ত্রশাভ্রম্বতার নাম্বিরা কানুপাদাত্তর দাঙ্গুলো নেনিলিঃ কচিচ্চ দ্বাদশাঙ্গুলিঃ ।২৬ । বিস্তারেইফাঙ্গুলে তস্যা ললাটং

রিত্বা॥ ১৫॥ সমাক্ষাল্য পাতরিত্বা উৎকিরেৎ অঙ্কয়েৎ॥ ১৬। স্বকীয়ং শ্রীমূর্জিরের যদসুলং তদ্য মানেন। অঙ্কুলিরিতি বক্তব্যে অধুলমিত্যার্যং। এবমগ্রেপি॥ ১৭॥ স্বকীয়াপুলিমানমের লিখতি অভিপ্রেত্ত্তাদিসপাদ্বয়েন। অভিপ্রেত্তং নিজাভীউপ্রমাণংশ্রীমূর্জিপরিমাণং॥ ভাকরৈত্ব দিভতাগৈভঁকে বিভক্তে দতি তদেকভাগং স্বদ্যাং শ্রীমূর্ত্ত্বেমূলং॥ ১৮॥ বিষং প্রতিমা ॥ ১৯॥ অধুনা অবয়বমানং লিখতি এবমিত্যাদি। আদিশব্দাৎ সংগ্রহপুস্তকাদি॥ ইদমগ্রে লেখ্যং॥ ললাটাৎ শ্রীললাটোপরিভাগাদারত্যা। তথাচ॥ শ্রীনারদীয় পঞ্চরাত্রে। চিবুকাচ্চ ললাটান্তমিত্যাদি। এতদাদিকমগ্রে সর্বাং তত্ত তত্র ব্যক্তং ভাবীতি সম্পূর্ণবিচনমত্র ন সংশ্রীম্থানি দ্বিত্যাদি। এতদাদিকমগ্রে সর্বাং তত্ত্ব ত্রক্তং ভাবীতি সম্পূর্ণবিচনমত্র ন সংশ্রীম্থানি দ্বিত্যাদি। তত্ব ভিন্মিলান এব ললাটঞ্জব্রপুলং তত্ত্ব চন্তর্মুলেত্যর্থঃ॥ ২১॥ অপরঃ অধ্বনঃ শ্রীমূর্খনিভাগাং লিখিছা তদ্ধঃ শ্রুমাদিলিখনেন ভিন্নোপক্রমাদথ শব্দঃ। এবমগ্রেপি জ্বেং॥ ২২॥ অন্যঃ শ্রীমূর্খবিভাগান্তিয়ঃ। তত্মাত্বক্রমা। ২৩। তথেতি সমুক্তয়ে॥ তৎসমৌ চন্ত্রমূর্ণা। তৌ চন্তল্বকাৎ পার্কি পর্যান্তে ভিন্মায় লিখনাৎ॥ ২৪॥ কুলাপি শ্রীনারদীয় এব। এতদাদিপ্রমাণবচনানি চ সর্বাংণ্যেগ্রে ভক্ত তত্র ব্যক্তী ভবিষ্যন্তোবেত্যক পূর্ববন্ধ লিখ্যন্তে। গ্রীমান্তরালি ত্বলা ব্রীমান্তরে জ্বেরা। নিক্রালার্যারিয়ে। তথাপি ছাদশাক্রল্জং ছাঙ্কুলালক-স্বল্ডাগোপরি শ্রীমন্তরে জ্বেয়ঃ। তথাচ তবৈর পরেণ ছাঙ্কুলোশস্থাবিত্যাদি। অন্যার্থঃ। পরেণেতি লঙ্গান্তি। পরতঃ তত্তপারীভার্থঃ॥ তৎপাশ্বরারাধিক্যান্তর্থালক্ষাবিত্যাদি। অন্যার্থঃ। এবং দৈর্ঘ্যং

व्यक्तिम्वर । ज्योतिन्वां अर्घा ख्या विद्यम् त्व ।। ज्या विद्य मा क्ष्य मा

লিখিস্বাঙ্গানাং বিস্তারং লিখতি বিস্তারইত্যাদিন।। তসাাঃ শ্রীমূর্ত্তে:। কুচিৎ শ্রীনারদীয়ে॥ উত্ত-যধাপ্যলিখতে এব তে।।২৭॥ বাশব্দো মতভেদাৎ।স চাত্র বিদ্ধত্বাপেক্ষয়া ঘটতএব। উচ্চে 🕽 দৈর্ঘাইত্যর্থঃ। এবমগ্রেপি চিবুকাবধীতি বিদ্ধয়োর ফ্রান্তুলত্বেন তাবৎপ্রদেশপ্রাপ্তঃ।।২৮/ প্রায়ে অধন্তলাম্ভাভাগে ॥ এককমেকং। একাঙ্গুলৌবা ॥ ঈদ্ক মতভেদঃ স্বস্থরুচারুসারেন সৌন্দ-র্যাস্য তত্তৎকালীন শ্রীমদক্ষেষদ্ভেদস্য বাপেক্ষয়া। নেত্রান্তাভাগং সমং ন তাভাগমুচ্চং নচ নীচং সমরেথয়োঠার্স্তমানমিত্যর্থঃ।। যচ্চোক্তং এই মুম্বীর্ষদেবে ন।। ভুসমেত্যাদি। ওচ্চ ভুবোঃ প্রান্ত-ভাগস্য প্রায়োদেতান্তথ্যপিকতাভিপ্রায়েণ ॥ ২৯॥ দ্বাদশাঙ্গুলমিতি কিরীটস্যদ্যঙ্গুলোক-ত্বাৎ মৌলেছ দিশাপুলতা পক্ষে কিরীটন্যেব শ্রীমন্তকস্য তাবছচ্চত্বাৎ। যজমানেচ্ছয়া মৌল্যভাবে চ স্বতএব তাবজেজ্ঞ ।। তস্য এমস্তক্ষ্য পরিধিঃ পবিণাহঃ ত্রিগুণঃ বট্তিংশদশুল ইতার্থঃ।। এব্মত্রেইন্যত্রাপি।। স্কেশন্ত ভদ্য পরিধিশ্বারিংশদস্পুলইত্যর্থঃ।। কেশপাশস্ত্র দীর্ঘঃ করে।-পরি বিন্যস্। কুতাপি জ্রীনারদীয়ে। একলমেকং।। ৩০॥ কুচিস্তবৈর ।। তৎপ্রান্তৌ চার্জাসুনৌ জেয়ৌ। দ্রোণী চার্দ্ধাঙ্গুলা মতেতি এইয়শীর্ষদেবোক্তেঃ। দুশোদ্ধ য়োর্মধ্যং।। ৩১। কুত্রচিৎ জ্ঞীনার-দীয়এব।। কর্ণ দুশোর্মধ্যং। স্থক্কিণী ওষ্ঠপর্যাম্বভাগে অতএব এমুখবিবর ম্যাপান্তভাগে স্যাভাং।। তথাচ আদিশমক্ষকো।। তং জিহ্বরা দিশিশ্বরা পরিলেলিহানং দ্বে স্কিণীইতি। কিঞ্চ প্রতিস্প-র্জেতে স্থাকিভাং স্ব্যাসব্যে নগোদরেইতি। বড়ঙ্গুলৈবিদুরতো বর্ত্তে । যচ শ্রীনারদীয়ে। স্কিনী চত্তরসূর্লে ইতি।। তত্র স্থক্ষিশব্দেন স্থকিষয়পর্য্যন্তং প্রীমুখবিবরভাগএবাভিপ্রেতঃ॥ ৩২।। হুমুকংকর্ণাশ্ভঃ কপোলপর্যান্তোভাগঃ। অতঃ কর্নুলং কর্ণাশ্বতেবেভার্থঃ। কর্ণাধন্তাচ হমকং চেত্তথাপি ভছপর্য্যের কপোলো। ততক্ষহমুনোগ্রেউপরীত্যর্থঃ।। গণ্ডয়োর্দর্পণাকারত্ত্বন শব্দতশ্বরশুলত্বান্ধন্ধভাগব্যাপ্তে:। তথাচ মাৎসো।। হত্তে ছাঙ্গুল ইত্যাদি ।। অস্যার্থ:।। रया मधनः गधमधनः विखाताक्षयणा विश्वनश्चतक्ष्म नः। उक्र मस्व हे जिल्ला स्वाप्त विश्वनश्चित्र विश्वनश्चन विश्वनश्चित्र विश्वनश्चित्र विश्वनश्चित्र विश्वनश्चित्र विश्वनश्चन विश्वनश्चन विश्वनश्चित्र विश्वनश्चन विश्वन विश्वनश्चन विश्वनश्चन विश्वन विश्वनश्चन विश्वन विश्वनश्चन विश्वनश्चन विश्वनश्चन विश्वन विश्वनश्चन विश्वनश्चन विश्वन विश्वनश्चन विश्वन विश কনকমুকারাদি সাদ্শ্যোক্তেরিভি ॥ ৩৩॥ পুটেচ স্বতি একাশুলে জ্ঞেয়ে। করবীর সাদ্-भारिकः कृष्ठिकित भूक्षेक्तारकारकमः। कात्राभू विद्यार्थितः हिष्यः॥ ७८॥ मनक कात्रारहित

श्वीनाः निष्पातः विषनाञ्च विष्नयः। अद्भारति। अक्षकारत्व ना माना कत्वीत्रभूष्प्रमृ-भी।। ७৫।। তারে বিস্তারে উচ্চৌ বাহুমূলাৎ। অতএবোক্তং মাৎস্যে। কক্ষয়োরুপরিষ্টাচ্চে-ত্যাদি।। ৩৬।। বিস্তারশ্চ তয়ের্ব্বান্ত্যূলাকুণীবান্তং। পীনাবিত্যনেন তত্পরি ভাগবিস্তারশ্চ স্তু-রুদ্ধোক্তের: ব্যক্ষকোপমত্বাং। তত্র তয়োভুজিয়োকর্জোভাগঃ বাছঃ বাছদংজঃ।। ৩৭।। ভদ-ধস্তাদ্রজমানশ্চ প্রবাছসংজ্ঞ:।। কুচিৎ হয়শীর্ষীয়াদৌ স্বন্যধা তদ্বিপরীতঃ।। বাছর্ষ্টাদশাস্ত্রং প্রবাহঃ বোড়শ अनुनरे তি তচ চিন্তাং সধন্তাৎ করা শিখরা দ্বাহা । বোড়শা সুল ইতি জীনার-मीरशारकः लात्क उन्नर्भनाष्ठ। किए।। कृति अवाष्टः मश्रममा द्वामणः॥ व्यववान नहीनस দ্বিতীয়ং প্রস্কুমুচাতে ইতি মাৎস্যোক্তে: । ৩৮॥ অন্যা প্রবাহোরগ্রে পৃথু বিস্তীর্ম । ৩৯॥ কুণপি শ্রীনারদীয়ে । সলক্ষানাঃ রেখাছাকৈধু জবজাদিভিরারণ্যাদিভিশ্বান্তিং ৷৷ মধ্যমাঙ্গুলিঃ ৷৷ অন্যে তর্জ্জন্যনামিকে ছে॥৪০॥ ক্বাপি তবৈর । অঙ্গুঠং সার্জন্তা অয়মুঙ্গুল গোপু-চ্ছেতি মূলে স্থূলত্বাৎ ক্রমশোহত্রে ক্ল'ড্বাচ।। শোভনাইত্যনেন ততোংধিকং সৌন্দয্যং ৰোধিত-মেব। স্বস্মানাস্কপত ইতি স্বকীয়ং দৈর্ঘ্যপরিমাণং তৎ তৃতীয়ভাগেনৈকংপর্বেভারং দর্ব্বাশাং পर्वागीजार्थः । १८। कृष्विषा १ मर्वा भर्वा । मर्वा भर्वा । मर्वा भर्वा । मर्वा भर्वा । যবোষ্বস্তু সর্বস্যা ইত্যাদি।। ক্রমাদিতি ষ্স্যাধাবৎ প্রমাণংপর্বে তদস্সারেণ ন্যুন্মিত্যর্থ:।এব-মগ্রেপি জ্যোং।। ৪২।। পর্বাহঃ পর্বাবতী অপরে দর্বাইতি অঙ্গু ইস্যাধোৰ স্ত্রী তথৈব পরাণাঞ্চ সর্বেষাং সর্বে পরিধয়: ॥ ৪৩॥ স্থদ্য স্থদ্য তদ্য বিস্তার:। অতঃ ষড়ঙ্গুলস্তয়ো: পরিণাছো-চ্চেয়: ৰাত্যুলয়োরস্তরে মধ্যবয়ং ॥ ৪৪॥ চারু অখ্পপতাকারাত্তপা তিবলিস্কারেথাতায়া-

জ্ঞারৎ ভবেৎ। মধ্যে চৈকাঙ্গুলা নাভিনিষা চ বিহতা তথা।। ৪৫।। দাভিমধ্যের পরিধিদি চিন্তারিংশদঙ্গুলা। বিতারে পুরুষস্যোক্তা কটিরই।দশাঙ্গুলা।। ৪৬।। পরিগাংহাভবেরস্যাক্তরঃপঞ্চাশদঙ্গুলা।। উর্জোম্পলে ত বিতারেরান্দশাঙ্গুলকোভবেৎ। মধ্যেংহিরিং ক্রমাদূনঃ পরিধিন্তিগুণােংথিলঃ ।। ৪৭।। চত্তর্ন শাঙ্গুলং কৃণি পরিণাহস্ত তাদৃশঃ। উচ্চমেকাঙ্গুলং জানুদ্বয়ং ক্রাঙ্গুলকং ততং ।। ৪৮।। তরাধ্যে পরিধিন্তেকবিৎশত্যঙ্গুলকোভবেৎ।। কৃণিয়াল্লকং ততং ।। ৪৮।। তরাধ্যে পরিধিন্তেকবিৎশত্যঙ্গুলকোভবেৎ।। কৃণিয়াল্লকং ততং ।। ৪৮।। তরাধ্যে পরিধিন্তেকবিৎশত্যঙ্গুলকোভবেৎ।। কৃণিয়াল্লকাবিনার তিন্তা হিতি হারি ক্রমান্দলাভবেই ।। ক্রমান্দলাভবির । পরিধিন্তিভাগের তার্বানিকাবির ক্রমান্দলাঙ্গুলা । বেং।। পরিধিন্তিভাগেরে তিন্তার ক্রমিকাবির ক্রমান্দলাভবির ভিত্তবির নির্দিশিকাবির তার্বানিকাবির তিন্তার ক্রমান্দলাকরাবির নির্দিশিকাবির ক্রমান্দলাকরাবির ক্রমান্দলাকরাবির ক্রমান্দলাকরাবির ক্রমান্দলাকরাবির ক্রমান্দলাকরাবির ক্রমান্দলাকরাবির ক্রমান্দলাকরাবির । পঞ্চাঙ্গুলো হস্যাপরিধি দেশিন্যান্ত্রাঙ্গুলোভবেই।। বেং।। অন্যান্দান্তিকাবির । পঞ্চাঙ্গুলো হস্যাপরিধি দেশিন্যান্ত্রাঙ্গুলোভবেই।। বেং।। অন্যান্দান্তিকাবির । বির্দিনিকাবির ভিত্তিকাবির দিলিন্যান্ত্রাঙ্গুলাবির । অন্যান্দ্রির বির্দিনির । বির্দির মান্দ্রান্তা ক্রমান্দান্তির । বির্দির বিরানির ভিত্তির স্ক্রমান্তার পরির বিরানির । বেং।। অন্যান্দান্তির বিরানির ।। বেং।। অর্বানির বিরানির ভিত্তির নির্দিনির নির্দিনির নির্দিনির নির্দিনির নির্দিনির নিরানির নির্দিনির নিরানির নিরানির নির্দিনির নিরানির ন

দিনা চ স্থন্দরং।। ৪৫।। পুরুষদ্যেতি স্ত্রীণাং ভদাধিক্যাৎ ভলাপ্রে ব্যক্তং ভাবি।। ৪৬।। অধিকোবিস্তারস্তদ্রে চ ক্রমেণানঃ হস্তিহস্তকদলীবৃক্ষাদ্যাকারশাদ্শ্যাৎ। অথিলইতি মূলমধ্যাপ্রবর্তী সর্ব্বোপি পরিধিঃ স্থন্সমানাস্থ্যারে। বিপ্রণঃ। ৪৭।। ক্রাপি বারাহাং। তাদ্শস্ত্রিগুণঃ। তভং বিস্তীরং।। ৪৮।। ক্রাপি শ্রীহয়শীর্ষীয়ে। তৎ জাম্ব।। ৪৯।। অপিশক্ষাৎ মধ্য ইত্যালেজ্যুর্ভাগুরু তেপান্ত্রয়ং পরিধিস্তাদ্শস্ত্রপ্রণঃ। ক্রাপি শ্রীনারদীয়ে। ৫০ ।। ক্রিউরেব।। সং অগ্রাঃ পরিধিঃ একাধিকঃ পঞ্চদশালুলইত্যর্থং। অভস্তন্তে তয়োর্থে বিস্তারঃ পঞ্চালুলোজ্যুরঃ। তথাচ তবৈর। বজারণানইত্যাদি চন্তর্জনালুলো জ্রেরা দৈর্ঘে।। তল পান্ধিপৃষ্ঠতোহদুষ্ঠাগ্রান্তং।। তথাচতবৈর। পার্ব্যোশ্য পৃষ্ঠতইত্যাদি॥ ৫১ ।। ক্রাপি শ্রীহয়শীর্ষীয়ে দৈর্ঘ্যে ভাদশালুলো ভালুলকং দৈর্ঘ্যে বিস্তারে চ জ্বেরং। তয়োঃ পাদ্যোঃ তল্ভ জ্বুলং বর্ভুলং জ্বেরং।।৫২।। ক্রিচ শ্রীনারদীয়ে প্রেদেশিনীযোড়শাং শোনানামধ্যমাল্পুলিঃ।। ৫১ ।। অন্যে অনামিকাকনিঠে। ক্রমাদিতি অনামিকার্যা অইমাংশোনানা কনিঠা জ্বেয়া। এ৩।। অন্যে অনামিকাকনিঠে। ক্রমাদিতি অনামিকার্য় অইবেরান্তরাজ্বলিপি সর্বাংক্রমেণাইমাংশোনাইত্যর্থং। তথাচ শ্রীহয়শীর্ষীয়ে। অইমাংশাইমাংশোনাইত্যদি। মাৎস্যে স্ত অলুঠ্স্যা সমা ত্রুদিত্যসাম্বর্জ্বনাদন।মিকাকনিটে মধ্যমাতঃ পাদ্হীনে।। অন্যেপি ক্রমাদিত্যস্থাম্বর্জ্বনাদন।মিকাকনিঠাজেরাঃ। সং অক্সুঠ্যাক্রেনাভন্তির চ তত্তৎপরিণাহাত্মপারেরীয়ে সপাদাল্বনেনাভং। পরা প্রেদেশিন্যাই স্ত্র্যাক্রিকারাজিলাভিত্তর চ তত্তৎপরিণাহাত্মপারেরীর সপাদাল্বন্তন্ত্রাং। ক্রমানামন্যাসামিত্যর্থং।

নথঃ পাদোনালুলে হর্দ্ধালুলোহন্যভঃ ।। ৫৭ ।। ক্রমেণ কিঞ্ছিদ্নশ্চ কৃর্মিণ্ চ্বান্থি দিনালুলে হর্দ্ধাল্ডা বিস্তারে বাড়শাল্পলো ।। ৫৮ ।। বট্রিংশদলুলং ক্রনাং পৃতং নিমুং ক্রমেণ ভং । বিংশত্যলুলপর্যান্তং নভবংশঞ্চ তল্পতং । মধ্যদেশাল্ড বিভতং মিলিতং মংস্যুগারুং । জন্যজালিখিতং কার্যাং লোক্দ্র্ট্যাংখিলং বুধৈঃ ।। ৫৯ ।। হর্মানী রে। এতত্তে লক্ষণং প্রোক্তম্দেশেন ময়ানঘ । জনবৈর দিশা কার্যাৎ য়য়মপূাহ্য দেশিকৈঃ ।। ৬০ ।। লোকেয়ু লক্ষণং দৃদ্ধা হরিছাদি নিরীক্ষণং । তথা তথৈব কর্ত্বঃ মূহ্যং যত্ত্বেন দেশিকৈঃ ।। ৬১ ।। জীনারদীয়ে মনোহরাল্লাবয়বাঃ সর্ব্বে কার্যাঃ সুলক্ষণাঃ । কৌশরলকজাতং চ ললাটোপরি শোভনং । হারমুপুরকেয়ুরমেখলামৌলিভূ যিতং । শিক্তং ধ্যানোদিতং নর্বং ময়ানুক্তং প্রকল্পরেং ।। ৬২ ।। বারাহে চ । দেশানুলপভূষণবেশালক্ষারমূর্ত্তিঃ কার্যা। প্রতিমা লক্ষণযুক্তা সংহিতাবুদ্ধিলা ভরতি ।। কিঞ্চ হয়শীমী রে। বাশুদেবং প্রক্রীত চন্তর্বাহুং সুরেশ্বরং। দক্ষিণোপরি চক্রং ত্ত পদ্মং চাধঃ প্রকল্পয়েং । বাধ্যাপরি গদা কার্য্যা শংখং চাধঃ সুশোভনং । এতল্লক্ষণসংযুক্তা প্রতিমা শুভদা ভ-বেং । জীপুন্টা চাপি কর্ত্বের পদ্মবীণাকরান্থিতে । উরমাত্রোচ্ছিত্বা যামে কিঞ্ছি-

।। ৫৭। স নথঃ। করিকুস্তাভাবিতানেন স্থবর্তা স্থবিভক্তে চ জেয়ে। বোড়শাঙ্গ লবিস্থা-রত্মেন তয়োঃ পরিধিস্ত জিগুণোজেয়এব।। ৫৮।। তৎ পৃষ্ঠং। বিংশতাঙ্গুলপর্যান্তং ক্রমেণ নিমুং নতং পৃষ্ঠবংশং। যদ্যপাবউদ্ভাদনাদিনা শ্রীমূর্তেনিত্মপূর্ষে ন দুশোতে অতএবান্যত্র তে ছে নেংকে কেবলং জ্রীনারদীয়এবোক্তে। তথাপি কুচিদ্বুটন্তরাহিত্যাদিনা তদপেক্ষয়াত্র তে লিখিতে। এবং প্রসিদ্ধপ্রধানপ্রকটসর্ব্বাঙ্গপরিমাণং লিখিত্বা অত্যালিখিতান্য প্রকারং লিখতি অন্যচেতি। লিঙ্গাদিকং কর্ণচ্ছিদ্রপাশ্ব দ্বানিমৃত্বং নথাগ্রাদ্ধচন্দ্রাকৃতিত্বং পাশ্ব দ্বাদিকঞ্ লোকদৃষ্ট্যা লোকেয়ু তত্তদঙ্গসৌষ্ঠবাদিদৃষ্ট্যা। বুধৈরিতি তত্ত ততৈব স্থবুদ্ধ্যা বিচার্য্য তত্তাপি শাস্ত্রোক্তধ্যানধ্যেয় প্রীভগবদক্ষসৌন্দর্যাদ্যন্ত্রারেটেণর সর্বাহ কার্যামিতার্থ:।। ৫৯।। উদ্দেশেন সংক্ষেপেটেণৰ নম্ভ সাকল্যেনেত্যর্থঃ। দিশা উদ্দিষ্টেকাংশেনেত্যর্থঃ। তত্রাপ্যহ্য বিচাইর্য্য-বেতার্থঃ। লিখিতার্থমেবৈত্র ॥ ৬০॥ লক্ষণং অঙ্গুসোষ্ঠবপ্রকারং। যথা শ্রীমুখ্না পূর্ণচন্দ্রাদ্যা-कारत श्रीत्मकरशाम्क श्रम्भारक नामृभाग्रिकामि । उत्तम्मश्रा । किथा नितीक्रग्मवरलाकमः হসিতাদি চ দৃষ্ট্য। তথা তেন লোকোন্তরবিষয়কদৃষ্টলক্ষণপ্রকারেণ বীপ্সা দার্ঢ্যার্থা ভক্তজ্ঞ-ণঞ্চ দামুদ্রকাদাবুক্তং। সাক্ষাৎ কমিংশিত অপুরুষে দৃশ্যমানঞ্চ জ্বেরং।। ৬১।। মনোহরাঃ অঙ্গ্রা এীমূর্ত্তেরবয়বা: । কিয়া অঞ্চং এীমূর্ত্ত্যাকারাদিকং অবয়বাচ্চ স্থলোভনং লক্ষণং भारत्वाकः महाभूक्षनका १ राष्ट्र (छ। क्ट्रोभः नहः भाष्ट्रनः जमत्राकात्र नाम्भापिना विद्याल-মানং কেলৈ: শোভনমিতি বা। মৌলাধঃ কিঞ্ছিৎকেশপাশ্যুলদর্শনাৎ হারাদিভিঃ সহকৈভূ-विठः উপলক্ষণমেতং বনমালাকুওলাদিভির্পি। यक्ठाळाञ्चः भिष्ठेमवभिष्ठेमन्रारोशंदापिकः खर्थात्म উनिजमजानाजाश्राखः अक्रवं चट्डाश्रारक्षेत्र्य। कण्यात्र तहत्त्रः ॥ ७२ ॥ (मना-\_

माविद्धारिक उथा। नानाविमाधरही कार्यो। श्रष्टांमधन् न विष्ट्रिको। श्रष्टाः विष्ट्र्यस-ल्यञ्जाकाकवानापि छित्रं १ भक्कां भाषभीठेक उथा (माधानमिष्ठः। प्रभाषमाम् ক্রপেণ কর্ত্তব্যৎ দেশিকোন্তরেনঃ ।। ৬৩ ।। অথ তত্র কশ্চিদ্বিশেষঃ । জ্রীগোপালদে-वन्। विक्षुधार्वाखात । गाभामथा जिमार कूर्यता विश्व वामन वर्भवार। वर्श भी ए। ঘনশ্যাশাং দ্বিভ্রমানুধ্বং স্থিতাং। গৌতমীয়ে তত্ত্বে। প্রতিমাং রুফদেবসঃ যত্নতঃ কারয়েৎ সুধীঃ। শিল্পনা কৃষ্ণভক্তেন বিশ্বকর্মোক্তকানতা। দলপঞ্চললা মুখ্যা মধ্য-मा बामभाक्रुमा। अक्टोक्रमाधमा मांख मृत्नाधिकाः न कांत्रश्र । अख्वातनां शि मारह-न यि कूर्य। विक्र । श्रेष्ठिम। विक्र ना उत्रा, शृक्षनात्र कनः ना उत्र मानान् निविशे-নাচ প্রতিমা যত্র ভিষ্ঠতি। রাজা নিপীড়য়ত্যের গৃহস্থোনরকং ক্রঞ্জে। মানাস্কু लেन ना कार्या। नानाथा मूनिनलम।। काश्वादी कानमा (थांका चर्काशि ह मूकिम। मम्भिद्धिमा भिनाका ख ताक्वी वञ्चकिमा। (ठाकामा माक्रका या ख देत बिकी भव्ना-শিনী। তামী ধনবিবৃদ্ধিক করোতি বহুদৌশ্যদা। সদৈব মৃণ্যুয়ী প্রোক্তা প্রতিমা শুভলকণা। ভোগদা মোক্ষদা সান্ত প্রতিমাক্থিতা তব। লেপ্যা লেখ্যা দিধা চৈব প্রতিমা পরিকীর্ত্তিত। পর্বতাথ্যে নদীতীরে চত্ত্রে গোঠভূমিষু। সমুদ্রকূলেইরণ্য वा मानहोना न मृष्गो । क्रम्थि তিক্তিং কুর্য্যাদিব গ্রাৎ বেশসু চিক্লিতাৎ । তান্ত সংস্থাপ-स्त्रमञ्जी शृटर वा त्राष्ठेमका उः ।। ७३ ।। **अथा** अथा अः खानाक । ठढर्म माञ्च नः रेम र्घा कोत्र विच्छा कृष्टिः। हारिश्मक अनुना ह्योगार छत्नो ह द्वापमान्न हो। ७৫।। किथ आस्त्रो ভূজी তাসাৎ কিঞ্চিদীর্মথং ভবেৎ। নাসাগ্রীবাললাটানি সার্জ্ব্য-ঙ্গুলকানি চা। ৬৬ ।।বিস্তারে কিঞ্চিদ্ধিকার্দ্ধাঙ্গুলোহধরপল্পর:। নেত্রে চত্তর্থভা-গোনে পরং জীবচ্চ পূর্ববং ।। ৬৭ ।। তথাচ মাৎসে।। স্ত্রিয়ঃ কার্য্যাশ্চ বিদ্বডিন্ত-নোৰজঘনাধিকাঃ । নানাভরণসংযুক্তাঃ কিঞ্চিৎ হুম্বভুজাঃ শুভাঃ ।। ৬৮ ।।

स्कार विज्याः यावाङ्गाता हुन शर्जकानिया प्रणामि हां कथ्यू कायियानि। विभाव क्या विद्या विद्या विद्या हिन्द्र हिन्द्र हिन्द्र विद्या विद्या हिन्द्र हिन

তথাত औमारनाभुतारम।। चकीताम् मनारमम मूथर न्यारकामुमान् तर। शक्तियाम् धनारमम नमछा-গান্ এক পারেং। চন্তর শুলা ভবেই গ্রীবা ভাগেন ক্ষরং পুন:। নাভিন্ত স্মাদধঃ ক পায় ভাগে-रैनरकन माजन।। निमुद्ध विखन्नर्य व अनुनग्धः श्वकीर्खिकः। नात्वत्रभशास्त्रपृ । छ जातिन-কেন কম্পারেং। দ্বিভাগেনায়ভাবূৰ জামুনী চক্তরলুলে। জয়ে দ্বিভাগে বিখ্যাতে পাদৌ চ চক্ত-वन् तो। हर्फनान् नरुषस्मिनिवना श्रकीर्षिष्ठः। উर्कमानिमनः श्रीखनः পृथुदः ह निर्दाधर । नर्कार ययगात्मम् विखातः भृग्ज विचाः। छखतन् नः नना छैः नाम् किः नामा छरेथे व छ। वानूनः छ हत् (छा शरमार्थणा मूनमः मिछः। व्यक्षामूनः ननापेः उ जावमात्व कृत्वी मर्छ। व्यक्षामून कृत्वा-লেখা মধ্যে ধসুরিবোলতা। উল্লেখ্য ভবেৎ পাশ্বে দূক্য ভীক্ষা প্রশাসতে। অকিণী দ্বাস্থামে তদর্জং চৈব বিস্তরে। উন্নতোদরমধ্যে ত বজুাত্তে শুভ্রশকণে। তারকা তল্ভিভাগেন দৃষ্টিঃ স্যাৎ পঞ্জাগিক।। ছाक्रुनः ख जुर्वार्भशः नामामृनमथाक्रुनः। नामाश्रविखतः उत्रः व्यव स्पूरेषश्रमुखमः। নাসাপুট বিলং তঘদর্জাঞ্ল মুদাহতং। হত্তকে ছাদুলে তদ্ধং কর্ম্লাছিনিঃস্তে। হল্পমগুলং **७ विखाता १ वाळ्या अर्थ । अर्** के खिविखरत । एकि ने रानि जूरना जू कर्न मृला र यड़क्यूरन । कर्गी जू जूमसी खिशावृक्षक ठजूत-क्यूल १ काक्यू त्न कर्न भार्य जू माजा रमेकास्त्र विखता कर्नरताक्र भतिकास्त्रे मखेक १ साममान्त्रेन १ नन्ति পৃষ্ঠাদর্জেনপ্রোক্তমন্টাদশাসুলং। ষটত্রিংশদশুলুশ্চাপি পরিণাহ: শিরোগভঃ। সকেশনিচয়স্যাস্য দ্বিচত্ব।রিংশদ্ধুলঃ। কেশাস্তাদ্ধসুকাওদ্বদৃদ্ধানি ও বোড়শ। গ্রীবামধ্যে পরিণাহশ্ত বিংশতি-কাপুলঃ। অউ।अनुलाভবেদ্পীবা প্থুত্বেন বিশিষ্যতে। স্তনগ্রীবাস্তরং প্রোক্তমেকতালং স্বয়স্ত্রবা। खनरेशातखत्रखप्तकामिमानूनामिषारके। खनरशाम खनः उत्तरकानूनः পরিকীর্জিত: 1 চুচুকৌ মগুল**मा**।स যব্মাতাবুভৌ স্থাতী। দ্বিতালং চাপি বিস্তারে বক্ষঃস্থলমুদ।হ্নতং। কক্ষে ষড়পুলে প্রোক্তে বাছমূলস্ত নাষ্টরে। চপ্তর্দশাঙ্গুলৌ পাদাবঙ্গুগুজুজুরু লং।। পঞ্চাঙ্গুলপরীণাহা অঙ্গুগুগুগুং তথোরতং।। অঙ্গুগুসা সমা তত্বদায়ামে সাং প্রদেশিনী। তস্য যোড়শভাগেন হীয়তে মধ্যমাঙ্গুলী।। অনামি-কাফীভাগেন কনিষ্ঠা চাপি হীয়তে। প্রবিত্রেণচালুল্যো গুল্কৌ ত দ্বাঙ্গুলৌ স্ভৌ। পাফি দ্বা-সুলমাত্রাতু কলয়োচা প্রকীর্ত্তি গা। দিপর্ববাঙ্গু চকঃ প্রোক্তঃ পরীণাহেন স্বতাঃ প্রদিনী-পরীণাহস্ত্রাস্কুলঃ সমুদাহতঃ। কনিষ্ঠাচাইভাগেন হীয়তে ক্রমশোদিজাঃ। অঙ্গুলেনোচ্ছুয়ঃ কার্য্যো-অঞ্ঠন্য বিশেষতঃ। তদর্জেন ও শেষাণামশুলীনাংসমুলয়ঃ। জছুয়োঃপরিণাহস্ত অঞ্লানি চওর্দ্দশ। জ্জামধ্যে পরীণাহস্তবৈধান্তাদশাঙ্গুলঃ। কাসুমধ্যে পরীণাহএকবিংশতিরঙ্গুলঃ। কানূচ্ছু রো হল্প লঃ প্রোক্তাম ওলস্ত ত্রির শুলং। উরু মধ্যে পরিণাহঃ অফাবিংশতিকালুলঃ। একতিংশোপ-तिकाक व्यापो छ जित्र म्यापो । जित्र मुलक ज्यारमण्ड भतीगार यज्ञ लही मिगरवधार ममार বিদ্যাৎ কোশরেখাং ভথৈবচ। মণিকোশপরীণাহশুন্তরকুলইব্যতে।বিস্তরেণ ভবেওছৎ কটিরফী मगात्रुवः। वाविःगिञ्छिथा जीगाः स्टानोह वामगात्रुवो । नास्त्रियापानश्चीगारशिवह्यादिश्मम-क्षुतः। পুরুষে পঞ্চ পঞ্চাশৎ কট্যাক্তিব ও বেইনং।কক্ষয়োরুপরিউ।চ ক্ষন্তৌ প্রক্রে বিভেন্ন বেটা। व्यक्षाक्रुत्नो छ विखात औं वारेक्षव छ निर्म्तित्मर। পরিণাহে তথা औवा कनाषाममनिर्मित्मर। आग्नारमाञ्चरशाखष षिठञ्जातिश्मकृतः। कार्याख वाक निथतः श्रमात् वाज्माकृतः। केर यक्षारुश्वास्य विमानिकानभाक्र नः। उरेथवाक्रुत्तरीन्स क्षिजीयः श्वा मृद्या । वास्मर्था श्रीगारर्श ভবেদফীদশাকুল: ৷ বোড়শোক্ত প্রবশ্চ্ স্কু ঘটকলাইএকরোমত: ৷ সপ্তাকুলং করতলং-यधामाक्रू लशक्षका। जनामिका मधामासाः मञ्जू जातन शैयात। जमाञ्ज शक्षकार्यन कनिका शक्ति

হীয়তে। মধ্যমায়াস্ত হীনাবৈ পঞ্জাগেন ওর্জনী। অব্দুষ্ঠ স্বর্জনীমূলাদধঃ প্রোক্তস্ত তৎসমঃ। অঙ্কুষ্ঠপরিণাহস্ত বিজ্ঞেয়শ্চন্তরঙ্গুলঃ।শেষাণামঙ্গুলীনাস্ত ভাগ ভাগেন হীয়তে। মধ্যমামধ্যপক্ষন্ত অংগুলম্বয়মায়তং। যবোষৰস্তুদর্ব্ধানাং তদ্যান্তদ্যাঃ প্রাহীয়তে। অংগুর্তমধ্যপর্বস্তে তর্জ্জন্যা দদৃশং-ভবেৎ। যবস্বয়াধিকং তদ্বদগ্রেপর্বমুদাহ্নতং। পরার্দ্ধেন নথান বিদ্যাদংগুলীযু সমং ততঃ। স্নিগ্ধ-প্লাক্ষ্য প্রকৃষ্ণীত ঈষদ্রক্তং নথব্র জং। নিমপৃষ্ঠং ভবেমধ্যে পাশ্ব তিঃ কুমেণোচ্ছুতং। তথৈব কেশ-বলর্ঘ্যঃ ক্ষেপেরিদশাংগুলাঃ। স্ত্রিয়ঃ কার্য্যাশ্চ বিশ্বন্তিঃ ন্তর্নোবজঘনাধিকাঃ চত্তর্দশাংগুলায়ান মুদরং তাস্থ নির্দ্দিশেৎ।নানাভরণসম্পন্নাঃ কিঞ্চিৎ জ্রস্বভূকাঃ শুভাঃ। কিঞ্চিদ্দীর্ঘং ভবেদ্বস্তুমলকাব লিরুক্তমা। নাদা গ্রীবা ললাটঞ্ দার্দ্ধমাসাং তিরংগুলং। অধ্যর্দ্ধাংগুলবিস্তার: শস্যতে হধরপল্লবঃ। অধরংনেত্রযুগ্মং তা চতুর্ভাগেন নির্দ্ধিশেৎ।গ্রীবাবলিশ্চ কর্ত্তব্যাকিঞ্চিদদ্ধাংগুলোচ্ছুয়া৷ এবং নারীযু সর্বাস্থদেবানাং প্রতিমাস্থচ। নবতানমিদং প্রোক্তং লক্ষণং পাপনাশনং। ঐহয়শীর্বপঞ্চরাত্রে। শ্রীভগবদ্ব হ্মসংবাদে। অতঃপরং প্রবক্ষ্যামি প্রতিমালকণং পরং। যন্ন কন্যচিদাখ্যাতং গুহাদ্যু হ-তরংপদং। অভিপ্রেডপ্রমাণং ও নব্ধা প্রবিভাকয়েৎ। নবমে ভাস্করৈর্ভক্তভাগং স্বাংগুলমুচ্যতে । ছাঙ্গুলং গোলোকং নামা কলা নেত্ৰং তত্তাতে। ভাগমেকং ত্রিধা ভক্ত্য পাঞ্চি ভাগং প্রকল্পয়েং।। ভাগদৈকং তথা জানৌ গ্রীবায়াং ভাগমেব চ। মুকুটং তালমাত্রং লাখ তালমাত্রং তথামুখং। তালমাত্রেণ কঠং ভ তালেন হৃদয়ং তথা। নাভিমেদুবরং তালং দিতালাবুরুকৌ তথা। তাল-षराम जन्नाजु मृजानि मृनू मारथा छ । कार्यारमृज पार पार पार पार पार । कारमे मृज पार-কার্য্য মূরুমধ্যে তথাপরং। মেঢ়েতথাপরংকার্য্যং কট্যাংসুত্রং তথাপরং। মেথলাবন্ধসিদ্ধ্যর্থং না ভ্যাপ্রৈর পরংতথা। হৃদরে চতথাকার্যাং কঠেসূত্রদ্বয়ং তথা। ললাটেচাপরং কার্যাং মন্তকে চ তথাপরং। মুকুটোপরি কর্ত্তব্যং সূত্রমেকং বিচক্ষটেনঃ। সূত্রাণার্দ্ধং প্রদেয়ানি সব্তৈব স্থরসন্তম। ककाञ्चिकाञ्चरत्रदेशव शाहेर मूजानि माश्रराष्ट्र । मधामृजानि मरञाका मृजानादर निरवसरार । नला-चैनानिकावळ् कर्खवार छखत्र मन्तर । श्रीवाकर्ग स्ट कर्खवा मात्रामाळ खत्रमू लरा घारगु लस्नू द्वकार्या বিস্তার চিচ্বুকং তথা। অফাংগুলং ললাটন্ত বিস্তারেণ প্রকীর্ত্তিতং। পরেণদ্বাংগুলো শভ্নৌ কর্ত্ত-ব্যাবলকানিবতৌ। চতুরংগুল মাথ্যাত মন্তরং কর্ণনেত্রয়োঃ। দ্ব্যগুলৌ পৃথুকৌ কর্ণী কর্ণাদ্ধাংগং চ পঞ্চমে। ভ্রসমেন ভু দূত্রেণ কর্ণ দূত্রং প্রকীর্স্তি ছং। বিদ্ধং বড়ংগুলংকর্ণমবিদ্ধং চতুরংগুলং। চিবু-কেনসমংবিদ্ধমবিদ্ধাং বা ষড়ংগুলং। খড়্গপাত্রং তথানর্ত্তং বিশল্যং কণ্পেরেন্তথা। অংগুলেনাধরঃ কার্যান্তব্যার্কেনোভরাধর:। অর্জাংগুলং তথা গুল্ফং চক্রং তু চতুরংগুলং। আয়ামনে তু বৈপুণ্যং ৰাৰ্দ্ধমংগুলমুচ্যতে। অব্যাপ্তমেবং ব্যাদ্বজুং ব্যাত্তং দ্বাংগুল মুচ্যতে। নানা বংশসমুচ্ছায়ং মূলে-ত্বেকাংগুলং মতং। উচ্ছিতাদ্বাংগুলং ঢাগ্রে করবীরোপমা স্মৃতা। অন্তরং চক্ষুবোঃ কার্য্যং চতুরংগু-লমানতঃ।দ্বাংগুলং চাক্ষিকোনং তৎ দ্বাংগুলং চান্তরন্তরোঃ। তারা নেত্রভিভাগেন ছক্তারাপঞ্চমাং-শিকা। অংগুলং নেত্রবিস্তারং দ্রোণীচার্দ্ধাংগুলা মতা। তৎপ্রমাণা ভুবোর্লেখা ভূবৌ নেত্রসমে-মতে। ভূমধ্যং দ্বাংগুলং কার্যাং ভ্রেদর্ঘাং চভুরংগুলং। বটকিংশদংগুলায়ামং মন্ত≉ন্য ভুবে-केनर। मूर्डीनाः क्लमवामीनाः वाजिः माखकेनः ভरवर । शक्ष्याजानसाधीवाविखात्रीरह-ষ্টনং পুন:। ত্রিগুণন্ত ভবেদুর্দ্ধং বিস্তাফীংপুলং পুন:। ত্রীবাত্তিগুণমায়াসংগ্রীবাবকোৎস্তরং ভ-त्वर। क्षेत्रावकीः श्वतो कार्यो जिक्नावः भरकी श्वत्वी। यश्वत्व मार्ष्को वाष्ट्र क्षवार वाष्ट्रभार-श्वती। जिक्तः विश्वत्वी वाष्ट्र क्षवार् कालि उरमानी। बार्म शक्षां त्वास्काः भन्नीगाहः कनानवः ।

नथनभाक्त ना मध्य कृर्णदार्द्ध ह स्वाज्भी। कृर्भत्रमा खरवत्राहित्यथनः ऋत्रमखम। नाहः धवाह মধ্যে ও বোড়শাঙ্গুল উচ্যতে। অগ্রহন্তে পরীণাহোদ্বাদশাঙ্গুল উচ্যতে। বিস্তারেণ করতলং कीर्छिङ ख गएक वरे। रेमधार मश्राकृतः कार्याः मधा श्रकाच्ना मछ। उर्व्हा ना ना मिका हाशि जन्मानकान्नुलः विमा। कनिकान्नु केरको कारयो ठ खत्रन्नु लमः भिरठो। विभावान्नु केकः कार्याः स्निया-জুল্যস্ত্ৰিপৰ্বিকাঃ। সৰ্বাসাং পৰ্বিণাৰ্ছেন নথমানং বিধীয়তে। ৰক্ষ্, বে অমাণঞ্চ জঠরং তৎ-প্রমাণকং। अमुदेलकः ভবেয়াভীবেধেনচ প্রমাণতঃ। নাভীমধ্যে পরীণাছো দিচ স্থারিংশদদ্ লৈঃ। অন্তরং স্তনয়োঃ কার্য্যং তালমাত্রংপ্রমাণতঃ। চিবুকৌ যবমানৌও দ্বিযবং মগুলং ভবেং। চন্তঃ যক্ত্য-স্লং কার্য্যৎ বেক্টনং বক্ষসঃ ক্ষুটং। চন্তব্যুখংক্ত তদধোবেক্টনং পরিকীর্ত্তিতং। পরীণাহস্তথা ক-ট্যাংচস্কঃপঞ্চাশদঙ্গু লৈঃ । বিস্তারশ্চোরুমূলেও প্রোচ্যতে দ্বাদশাঙ্গুলঃ। তস্মাদভাধিকং মধ্যে ত-তোনিমুত্রং ক্রমাৎ। বিস্তৃতোন্টাঙ্গুলং জামু প্রিগুণং পরিণাহতঃ। জন্বামধ্যেও বিস্তারঃ সপ্তাঙ্গুল উদাহৃতঃ। ত্রিগুণঃ পরিধিশ্চাস্য জন্বাগ্রং পঞ্চবিস্তরাৎ। ত্রিগুণঃ পরিধিশ্চাস্য পাদৌ তালপ্রমা-ণকৌ। আয়ামাৎ উচ্ছিতে। পাদে। চত্তরঙ্গুলমেবচ। গুল্কপুর্বস্ত কর্ত্তব্যং প্রমাণাচতত্তর জুলং। विकलः विस् रठो भारमे दाक्र ताश्क्ष केवः स् एकः। भेक्षाबुनः ख नार्शमा मीर्घनः ख अरममिनी। चकेमाश्माकिमाश्मानाः (मवान्ताः कत्म। कामान्त्रभ्यम् अप्रतिष्ठाः श्वितः । भारताम मञ्जूनः कार्या मन्द्रश्रेमा नथः नमा । व्यक्तांन्त्रनः उथानायाः कमान्नः छ कात्राः । वान्ताने द्यानी কার্য্যে নেতুন্ত চক্তরস্থলং। পরিণাছেন কোষাত্রে কর্ত্তবাং চন্তরক্ষুলং। ষড়ক্ষুলপরীণাছৌ ব্যণৌ পরিকীর্ত্তি। ব্রণালক্ষ্তা কার্য্যা প্রসন্নবদনেকণা । প্রতিমা বাস্ক্রেন্স মানেন স্থ্রসম্ভম । শ্রীনারদপঞ্চরাত্রে। শ্রীভগবাল্পারদসংবাদে। চিবুকাচ্চ ললাটান্তং স্যাত্বক্তুং দ্বাদশ্যস্কুলং। ললাটা-দুর্কতোবিপ্রা স্ত্রাঞ্লং চোন্নতং শির:। দ্বাদশাঞ্লবিস্তীর্ণং তিগুণং পরিণাহতঃ। বিস্তারে দ্বাশুলৌ কর্নে বিজ্ঞান জ্বিত্ত । কন্যকাগ্রসমং বিদ্ধি রক্ত্র আেত্রস্য চান্তর।। কর্নাবটাবর শেচার্ক্তে নানেনার্দ্ধাঙ্গুলৌ স্তৌ।কর্ণছিদ্রাদধো বাছে কর্ণমধ্যে স্পুলোবটঃ। অঙ্গুলা কর্ণপাণ্যোশ্চ পার্শঃ স্যাদা বদুছ্যা। ভুলতা শশিরেথে চ আয়ামাঞ্জুরঙ্গুলা।অর্দ্ধাঙ্গুলেন বৈ কার্যা মধ্যস্থলাগ্রতঃ রুশা। ভূমধ্যমলুলসমং নাশাপ্ত চপ্তরলুলা। অস্থলাচাগ্রতঃ কার্য্যা তিলপুষ্পাকৃতিতথা। নৈত্র্যৌরস্তরং ভ্রেয়ং ত্রাঙ্গুলং নেত্রতস্তথা। দৈর্ঘোণ ত্রাঙ্গুলং নেত্রং তদায়ামেন চাঙ্গুলং। অংশেন তারুকং মধ্যে জ্যোতিস্ত ত্রাংশভাগতঃ। ঘাণাধশাঙ্গুলেনৈর পাদহীনেন গোধিকা। কণ্প্যতে মুনিশার্দ্দুল একাং শেন ততে। হধর:। উত্তরাখ্যোপ্যধন্ত প্রমাণে নাকুলং স্তং। দ্বালুলং চিবুকং বিপ্র উচ্ছায়েণ প্রকীপ্তিতং। বিস্তারস্ত্রান্ধুলোজেয়ং স্থক্কিনী চন্তরঙ্গুলে। ঈষদিহসিতং তেন কর্ণপৌণ্যাং পরস্পারং। কপোলমর্দ্ধশিবস্তব্যধ্য চন্তরঙ্গুলৌ।ভৌচ গণ্ডৌ দমৌ কুর্য্যাত্রোংশপূর্ণে মনোরমৌ।কর্ণোচ্ছায় স্ত্রাঙ্গুলঃ স্যাৎ বিস্তারেণ ভ নারদ। অফাঙ্গুলোহর পরিধি স্ত্রিগুণঃ পরিকীর্ত্তিতঃ। কঠাবধি স্থিতং व एको यावर मामविधियू रेन। ममूक्राञ्चनविश्विष्टः मरेमव सामभाक् तर। विश्वनः एक विस्तातार साम् तर खनम् अलः। এত্যোশ্চুকং কার্যা मस्य माश्यः चकाकृतः। পর न्यादः नाष सम्यादः वानगा-कुलः। অফাকুলৌ স্ভাবংসৌ রিস্তারেন মহামতে। প্রোমতত্ত্ব কুর্যাচ্চ হস্তমূলাৎ বড়কুলং। উচ্চু য়েণ ও নাভ্যান্তং কুর্য্যাইছ ভাদশাক্ষুলং। কুর্য্যাৎ প্রদক্ষিণাবর্ত্তনাভিংমে চুাবধি দ্বিত্ব। উচ্চু।য়ে-ণ চ সংপাদ্যং অসমং ভাদশাসুলং। মাভেরধন্তাত্দরং সংপাদ্যং চত্তরক্ষুকং। শেষঃ স্যাৎ কটিভূ-ভাগোবিস্তারেণোদরং মুনে। विमश्चाक्र क्यानः मार् পরিধিস্তি । কুর্নাৎ প্রকাশ বিপ্র উচ্ছায়েণ বড় সুলং। ছা সুলেন চ বিস্তীর্নে ) র্ষণে চন্তর সুলো। তিচ উদ্ধল সংপ্রণৌ উরুদ্রে

उत्तिष्ठि । उत्ति वह कर्डियार हर्डिक्सिमाञ्च नामूति । शृथुम्ती कमकारमी नरलाभी शक्तभावि-वर। विखादिन छ क्कीं छ छेसमूनः वज्मूनः। यहे जिः भेषमूनः नाका वूसमधाः भवामूनः। छे दिनाः রপ্যবসানে ভ বেফনং ত্বেকরিং শতিঃ। ত্রাদুলং মুনিশার্দ্দুল পরিতোজামুমণ্ডলং। বিস্তার মুম্নতিং চাপি জানোরপাধ্না শৃগু। ছিছাদশেনাং গুলেন জানোবিস্তার উচ্যতে। ৰড়ংগুলেন বিস্তীর্ণং क्ष द्वागृलः প্রকীস্থিতং। জন্বামধ্যে তথা নাভাবস্তাবপ্যথ বিংশতিং। জন্বাবদানে বিস্তারোক্ষেয়ঃ পঞাংগুলোমুনে। তমেব ত্রিগুণীক্তা তলৈয়ব পরিধিভবেৎ। গুল্ফাদধস্তাংগুলঃ ন্যাৎ পাদে।চ্ছা-अञ्च नातम। शास्कानिक शृष्ठेरका यावसः गुर्काधाः विख्वाख्य । शाममा जावरेक्चाः मानः गूनानाः वि मश्रकः। यज्ः शूलन विञ्जः कृषां পৃষ্ঠো त्रजः क्रमाः। চন্ত जिंतः शूरेल मीर्घ मः शूष्ठेः পরি কীর্ত্তিতः। 
ক্রিপুণং বেইনং তদ্য দৈর্ঘ্যান্ত সাদশাধিকা । পাদপ্রদেশিনী কার্য্যা তৎ সমীপস্থিতাং গুলী। অংগু-ষ্ঠিশ্য সমা কার্য্যা পাদেনোনা ত্ব নামিকা। অনামিকায়াঃ পাদেন হীনা পাদকনীয়সী। ত্রাংশেনবিস্থি সর্ব্বাসাং পর্বামাণং ও নারণ। পর্ব্বার্দ্ধেন নথাং কার্য্যা অর্দ্ধেন্দুসদৃশাং শুভাং। ষট্তিংশদংগুলং বিপ্র ক্ষরাৎ পৃষ্ঠসমাবধৌ। গোমুখং বা ক্রমান্নিমুং যাবদংগু লবিংশতি। মধ্যপ্রদেশান্তিততং পৃষ্ঠ বংশোন্নত ক্রমাৎ। ইশুভং অধিভক্তঞ্চ বিভক্তঞ্চ তথা মুনে। স্থমীলিতং মৎস্যুগ্রং ক্রামপঞ্চাংগু-লং মতং। স্থবর্ত্ত কৌষ্টোকায্যো বিস্তারাৎ বোড়শাংগুলৌ। স্থবিভক্তৌচ পীনৌচ করিকুন্তো-প্রমৌ স্মৃত্তী। অবস্তাৎ কর্মশিখরাদ্বাছঃ স্যাৎ যোড়শাংগুলঃ। অথো বিংশাংগুলং বিদ্ধি উপ-বাহুং দ্বিজোন্তম। মণিবন্ধ প্রদেশস্ত তত্ত ত্যুংগুল উচ্যতে। মধ্যমাংগুলিপর্য্যন্তং মণিবন্ধাবদানতঃ। দাদশংগুলমানস্ত ক্ষক্ষঃ স্যাৎ পরিবর্জুলঃ। চন্তরংগুলবিস্তীর্ণঃ পরিধি স্তিগ্ণোমতঃ। মূলতশ্চে। প্রাহুরৈ পঞ্চাংগুলউদাহতঃ !৷ তিগুণস্ত তদুর্দ্ধন্ত ক্রমাৎ দংক্ষাময়েচ্ছনৈঃ । গোপুচ্ছ সদৃশং রুত্বা যথা স্যাৎকলয়ামুনে। মণি ইক্ষপ্রদেশান্ধি বিস্তারেণাথ বেইনাৎ। তথাংগুল প্রমাণেন পাণেশান মতঃ শূণু। মণেরংগুলমানাত্তং বিদ্ধি সপ্তাংগুলং সদা । পঞ্চাংগুল প্রমাণেন তিকাছিন্তার উচাতে । নিমুং করতলং কুর্যাৎ শুভরেখাবিভূষিতং । তত্র মধ্যাংগুলিং বিপ্র বিদ্ধি পঞ্চাংগুলং সদা। তুস্যা অপ্যংগুলিঃ পাখে উনা অর্ধাংগুলেন বৈ তিৎ পঞ্চমাংশহীনাচ নিত্যং কার্য্যা কনী-য়ুসী। সাজিদ্বাংগুল মংগুষ্ঠং দ্বিপর্ব্ব পরিকীর্তিতং। ত্রিপর্ব্বণ্যাশ্চাংগুলয়ঃ পর্বার্জেন মথাঃ স্মৃতাঃ গোপুচ্চনদৃশী কার্য্যা অংগুল্যোংগুলধীমতা। পাদচীনাং কনীয়স্যাং নপাদান্চাংগুলৌ ক্রমাৎ। স্ব প্রমাণস্য বিস্তারাৎ ত্রিগুণং বিদ্ধি বেঁকীনং। কূর্মপৃষ্ঠ মথাঃ দর্বে অগ্রতশ্চার্দ্ধচন্দ্র । কেশেরলক জাতংতু ললাটোপরি শোভনং। ললাটোদ্ধাংগু লিছাদীন্ কুর্যাজিবলিসংযুতং। বারাছাঞ্য॥ रिश्वतः जून भरी मारे वाम भामा शंख ह मूथ । नग कि छ। जू ठ जू में मक्षू न रेम छा । जा वि छः क-थिए। नामाननारे विदुक औराम्बजुदार्गु नाख्या कर्गी। एव दिश्मु तन व इनुरक विदुक्रव दार्गु नर প্রস্তং ॥ অফ্টাংগুলং ললাটঞ্ বিস্তারান্দ্যংগুলৌ পরৌ। শস্থে চতুরংগুলৌচ শস্থে কণেচি ছ্যং গ্লং পৃথুনে। करेना পास्तः कार्या कि পঞ্চ खूनरमन मृत्वन । कर्नः त्नाङः मुकूमातकः ह नम्न প্রবর্ণসমং। চতুরংগুলাবশিষ্টঃ কথরতি নেত্রান্ত কর্ণয়ে বিবরং। অধরোংগুল প্রমাণ স্তস্যার্জে-নোওরৌষ্ঠাত। অস্ত্রাংগুলা তু গুল্কা বক্তুঞ্চ চত্তরঙ্গুলায়তং কার্য্যং। বিপুলং লাদ্ধমলুলম-था उर जाक तरवा थर । बाक तर्ज का नामां पूर्ण नामां पूर्व विकास हो । नवा मूल मूल्या स শ্চত্তরঙ্গুল মন্তরংচাক্ষো:। দ্বাঞ্লুলমিতোকিকোশো দে নেত্রৈ তল্লি ভাগিক। তারা। দূকতা-त्रां प्रकारमा निविकारमारुक् नः उर्व । प्रयाखार प्रयाखार मम्बुद्वाद्याममाकूना जूरवा-

কিঞা। গ্রীবাবলিশ্চ কর্ত্তবনা কিঞ্চিদূর্জ্বাঙ্গুরা। এবং নারীযু সর্বাসু দেবানাৎ প্রতিমাসু চ। নবভালমিদং প্রোক্তৎ লক্ষণং পাপনাশনং।

অথ মৃণ্যুয়ীনাং এীমূত্রনিং বিশেষঃ। এই য়শীষা য়ে। প্রতিমাঞ্চসঞ্চে। মৃত্তি-কাবর্ণ পূর্বেণ গৃত্তীয়ুঃ সর্বাবর্ণিনঃ। নদীভীরে ২থবা ক্ষেত্রে পুণ্যস্থানে ২থবা পুনঃ। পাষাণকর্করালোহ চূর্ণানি সমভাগতঃ । মৃত্তিকায়াং প্রযোজ্যাথ ক্যায়েণ প্রসীড়-য়ে । খাদিবেণার্জ্নেনাথ সর্জ্জীবেণ্টকুলুমৈঃ। কৌটজৈরায়সৈঃ স্লেহৈদ্ধিকীর ष्ठां पि जिः। चारलाजः मृद्धिकाः रेखरेखः छात् छा भा भूनः भूनः । मानः भर्ग्रविष्टः রুত্ব। প্রতিমাৎ পরিকণ্পয়েৎ। স্থাপয়েৎ প্রতিমাশূলৎ রত্মন্যাসস্য চোপরি। শূলঞ খাদিরাদীনাং ষজ্ঞিয়ানাং প্রকম্পায়েৎ। বি১মোত্তরশত১ শূল১ কুর্য্যাদ্বা পঞ্চ-বিৎশতিঃ। প্রতিমাঙ্গুলমানেন কৃত্ব। সংস্থাপায়েদুধঃ। চন্তর্দশাস্থ্রণং প্রোক্তৎ সপা-मः जानामन ना। मखिर्मिक ठायला बाजाधार्काक ल मूथः। शुक्षविः माकृत्नो চোক नार्क्षजिक्त मस्कः। উक् मृत्र नतम अद्ध भारमाञ्चायाः स्थानः मित्रः। तिज्वयः नमू क्षि मर्का मून नमनिष्ठ । विशासनाका ভবেশীবা অर्का मून नमनिष्ठा। ভাগन। वृक्षिः वक्षामि शक्षविः मारमाक उथा। चक्षाक्षमञ्जूलर मन्। क्षमग्रामिय् छा-গশঃ। পঞ্বিংশাঙ্গু বংকা বিস্তারেণ প্রকীর্ত্তিও। কটির্বিস্তারতঃ কার্য্যা যোড়-माखीपमाञ्चला। भक्षविश्माञ्चलो बाङ् चायात्मन श्रकीर्छिछो। छथा मश्चमम প্রেংক্তাবায়ানেন প্রবাহ্নে । মণিবন্ধং কলায়াম স্তন্মান্তং প্রতি মস্তকং । আয়ামো মধ্যমায়াস্ত বড়ঙ্গুল ইতি মৃতঃ। এতং সংক্ষেপতঃ প্রোক্তং দশ তালস্য লক্ষণং। প্রতিমায়াশ্চন্তর্থেন কর্মার্চ্চা পরিকীর্ন্তিতা। ত্রণ্রিভাগেন তৎপীঠৎ কুর্য্যাৎ সিদ্ধ্যর্থ মৃত্তমং।। অথ এীমূর্তিবিশেষেণ পরিমাণ বিশেষাদিঃ। মাংসে। অতঃ পরৎ প্রব-ক্লামি দেবাকারান্ বিশেষভঃ। দশতালঃ স্তোরামো বলিবৈরোচনিত থা। বরাহো নর সিংহশ্চ সপ্ততালম্ভ বামনঃ। মৎস্য কুয়োভি নিদ্দিটৌ যথাশোভং স্বয়মুবা। কিঞ্চ। মহাবরাহৎ বক্ষ্যামি পদাহস্তৎ গদাধরং। তীক্ষুদৎফু। গ্রঘোণাস্যং মেদিনীং বাম কূর্পরে। দংক্টাগ্রেণোদৃতাং দীপ্তাং ধরণী মুংপলান্বিতাং। বিক্সয়োৎ ফুল নয়নামুপরিষ্টাৎ প্রক'পয়েৎ। দক্ষিণাং কটিনংস্থাঞ্চ করং তস্য প্রক'পয়েৎ। কূর্মোপরি তথাপাদ মেকং নাগেন্দু মূর্দ্ধনি। সংসূত্যমানং লোকেশৈঃ সমন্তাৎ পরি-কম্পেরেৎ। নার সিংহন্ত কুর্মাতি ভুজাইতকসমন্তিত। রৌজৎ সিৎহাননং তদ্বদারি তमुर्थकनः। खक्कशीन महोकोर्नः मात्रव्रसः मिर्लः मुखः। विनिर्श्वाक्कामसः मान-বং পরিক পরে । বমন্তং রুধিরোদারে । ভুকু টাবদনেক্ষণং । মুধামানং চ কুরুতি কুচিৎ করুণ বদ্দনৈঃ। পরিশ্রান্তেন্ দৈত্যেন তর্জ্জানং মুদ্ধর্মু ছং। দৈত্যান্ প্রদর্শ-য়েন্তত্র পড়্গথেটক ধারিণঃ। সূর্মানং তথা বিষ্ণুং দর্শয়েদমরাধিপৈঃ। তথা ত্রিবি-ক্রমং ব্ল্যে ব্রহ্মাণ্ডাক্রমণ্রেব্রন। পাদপার্থে তথা বাছ মুপরিকাৎ প্রকশ্যেৎ।

# विश्विक क विवास।

Min-1

व्यथलां विभाग उप र कल्ला स्व नकम अनु । मिलाल इजिकार मना क मूर्य होना প্রবর্ণ বের । ভূকার ধারিণং ভদদ্বিশিং উস্য চ পার্শ্ব তঃ। বন্ধনং চাস্য কুর্বস্ত । গ্রহণ ড়ং তস্য দর্শয়েৎ । নৎস্যৰূপাং তথা মৎস্যং কূর্মাক্ তিৎ ন্যানেৎ । এবং काপः স ভগবান্ কার্যে। নারায়ণো হরিঃ। বিষ্ণুধয়ে ভিরে। দেবদেবং ভথা বিষ্ণুৎ কারয়েক্সরু ছিভং। কৌস্তভোদ্ধাসিতৌরক্ষৎ সর্ব্বাভরণ ধারিণং। সজলায়জ স্বদ্ধারৎ পীতদিব্যাস্থরং তথা। মুখ্যান্চ কার্য্যান্চত্বারোবাহবোদিগুণান্তথানৌম্যেন্দ্ वमनः भूतिर नात निरुश्छ पिक्तर । किशिलर शिक्तर बकुः छथा वाताश्यु उतः। তगा पिकि । इस्ति । इस् र्याणि विष्युप्रामां के वामश्रेष्युनुक्रमाए । इंडि मश्विष्टे। किश्वः । এकवरकु । वि-বাহুশ্চ গদাচক্র ধরঃ প্রভুঃ । ইতি লোকপালবিষ্টুঃ।। কিঞ্চ। একবক্তুশ্চত্তর্কাছঃ সৌম, ৰূপী সুদর্শনঃ। সলিলাধ্যাতমেঘাভঃ সর্বাভরণ ভূষিতঃ। কণ্ঠেন শুভদেশেন কমন্তলে। ন রাজতা। বরাভরণ যুক্তেন কুগুলোগুম ভূষিতঃ। অঙ্গদী বন্ধকেয়ুরো বন-মালাবিভূষিতঃ। উরদা কৌস্তভৎ বিভ্রৎ কিরীটং শিরদাতথা। শিরঃ পদস্ত থৈ-বাস্য কর্ত্র্যুশ্চার ক্রিই। পুষ্টাশ্লিষ্টায়তভূজ ন্তামুনখাঙ্গুলিং। মধ্যেন তিব-লীভঙ্গ শোভিতেন সুচারুণা। স্ত্রীরূপধারিণী কার্য্য। ক্ষৌণী তৎপদরধাণা। তৎকর-सिं गुगला (परः कोर्या) जनाक्तनः। जालास शपतिनामः किथितिष्कास पिकाः। অনুদ্শ্যা মহो कार्या। দেবদশন বিক্ষিতা। দেবশ্চ কটিবাসেন কার্যোজান্তবলম্বিনা। বনমালাচ কৰ্দ্তব্যা দেবজান্ববলম্বিনী। যজোপৰীতং কৰ্ত্তব্যং নাভিদেশমুপাগত১। উৎফুল্ল কমলং পাণে কুর্য্যাদেবস্য দক্ষিণে । বামপাণিগতং শেষ্**। শ**ন্ধাকারং ভু कातरप्रर । मिक्कित जू गमा दियो जन्मध्या मुलाहना । ख्रीकिशधादिनी मुक्का नर्वाज्यन ভূষিতা। পশ্যন্তी দেবদেবেশং কার্য্যা চামরধারিণী। কার্য্যৎ তমূর্দ্ধি বিন্যন্তং দেব-হন্তং তু দক্ষিণ। বামভাগ গতশ্চক্রঃ কার্য্যোলয়োদরন্তথা। সর্বাভরণ সংযুক্তো বিস্ত বিস্ফারিতেক্ষণঃ ৷ কর্ত্তব্যস্চামরকরো দেবকীক্ষণ তৎপরঃ ৷ কার্য্যো দেবকরো বামো বিনাস্তস্ত্ৰস্য মূৰ্দ্ধনি। ইতি জীবাসুদেবঃ।। বাসুদেবস্বৰূপেণ কাৰ্য্যঃ সক্ষৰ্ণঃ প্ৰভুঃ! नजु खक्रवभुः कार्या नीनवामा यमृख्यः। श्रमाञ्चात जु गुमनः ठक्कशात छ नाकनः। कर्छित्तो छन्ने स्थाो তৌ न्वरभी क्रिमेश्स्रु छो। ইতিসঞ্চ वं ।। বাসুদেব অৰপেণ এ-मूर्ग्ने ७ ७१। ७८१। मेख मूर्वाङ्क् तम्यामः त्येठवामा विधीय्रा । ठक्रशान ७१४-क्रांभिः गमाञ्चात्न তथा नातः । তथा विश्वी जू कर्खवि । यथा मूयल नाम लो। हे छि প্রদুর্ম:।। এতদেব তথাৰপমনিরুদ্ধস্য কার্য়েৎ। পদ্পত্রভিবপুষোরক্তামরধর-স্য তু । চক্ৰছানে ভবেজম গদাস্থানে হসিরেব চ। চম স্যাচক্রেরপেণ প্রাংশুঃ थफ्रा विभीयरा । इक् निक्रकः ।। ठका मोना । यक्षानि कि कि १ पूर्व १ अम्म (यर । রমুগাণগার ধকপাণি চক্রাদীন্যের যাদ্বঃ । বামপার্খগ্তাং কার্য্যা দেবানাং প্রবরা-

भुका। मुभठाकायुका बाक्षम् चिक्कितास्य यत्थाहिकः । किथा । इरलास्टमाख्या कूर्यः कार्या छ जाभभाविनः। भूनो प्रकाष कर्षविशास्त्र दिस्य प्रवासिन । असर्या सिन इक्त व वशस्त्रा जानास् इतिः। असर्यः भक्ता मः खु। श्रानमूष्म जनम्बाः। नृत्रा हा १ श्राम कार्याः स्मादा श्राहः श्राहः। स्माद्य कृष्यः कार्यः। होक्रव कृष्णा सिकः स्माप्तः स्माद्रयुक्तनश्रता स्तर दीक्तनकद्रभातः । कर्लुस्ता भोतमूचरनी कत्रद्रशाचना भागन। नर्भाकोष्ठ कर्लतास्त्रोधन तिकास्त्रीतः । कानीप्रशाननेश्वान स्वर्श्यके स्वानाम् स्वत्यः । मृर्स्तिस्वर्गतेश्वर्याः हिन्नगाकः विसूत्रीयाः । क्षेत्रर्गागविष्यरम् न निहत्सा-विमक्ति । स्वतादशक्ष्या कार्याधारत किलावद विकः। विक्षाव्यव कार्याः शिखनिकाशिकामाजः। त्रस्य द्वाष्ट्वाष्ट्वरभावा वस्त्रमनव यथानः। स्वतारस्वतारस्वा कर्ष्व ३३ क्याविषात्र १ । क्षानविद्धाः म्बरवारकुष्टान १ शत्यवर्षानः । शीनक्रवकिः ঞীবঃ ক্লমধ্য কুশোদরঃ। সিৎহাননোনুদেছ্ণ্ট নীলবালাঃ প্রভাস্থিতঃ। আলীচন্থান-जश्यानः नर्ताण्यविष्टा स्वानकानाकुनगृदश क्वादकभावमधनः। विवानाकिका भाक्तकः भाष्ठित्रवर्षते धर्तः । नीरमाद्यमान् क्षात्रा (प्रवक्षानुग्रुख्या । वित्रग्र-किनिपूर्वकार बकामः विवृद्धाः । कर्नुराधाःमानारमयः नक्षरिमाञ्च शक्षाकिः। भीनशाज्य के इत्याप्यो हाराइदनात्र कः। मूर्याभाग्य कु कर्द्धवाः क्रकाविनधत्र ख्या ॥ जकनात्रुक्तनकान्यक्या कार्याञ्जितिकाः। एए शांबाधवः कार्याः मञ्चठकानाधवः। मञ्च ठक्रभमां शिक्षाः कार्या उन प्रवृतिभाः। नित्मं शास्त्र न कर्ष्ट्रवाः (भाषः कार्याम् भूतिः बद्दा अटकार्स्नवमनः कार्त्यदारम्यता विकादिर ठक्काः । कार्याञ्च छार्गद्वाद्वारमा कृष्टे। मध्य मम्बिगः। एएछरमा भवतः कार्याः स्वयाजितस्तमा जू । द्वारमामान्त्रिः कार्या। इम्बिलक्षनविक्षकः। एउ किल्लाने क्ष्य मञ्जूष्म स्थाने । ७१थव मर्स्य कर्ष्याः किङ ओनिविविक्कि काः। कृष्णपञ्जाधवः कार्या मीलाद श्रम्भनक्तिः। हेम्मीवव्यक्षवा कार्य। जमा माकाल क्रिक्ति। भोत्र भागिर्वनः कार्या। मूचनो देवककू धनो। (चर्छः इन्डि सीलवनत्ना सत्तावृति छ लाहनः। हा शवानधन्नः कार्याः अपूर्मण्ड नूपर्णनः । नाकन् मूर्वाहरामानाः (यज्वानां घटमाथकरैः । कामरमवङ् कर्छरवाः ब्रह्मशाश्चिरमाञ्चि । क्षकेबाह्य न कर्स्डवाः मञ्चलक्षां बक्रूयवः । हालवावस्तरेन्त्रव सराक्रुशिकरताहनः । व्रक्ति व्योच्यिया मक्तिममक्तियाथाक्ष्मा। इच्युयम् कर्षवाः भरक्षाक्रभयत्नाइताः। हच्चांद्रण्ड कड़ांख्या कार्या ভार्याखिलाशशाः। (क्छण्ड सकद्रः कार्याः शक्षवाग्रूरथा भराम्। कर्जवान्वामिक्राकारिनि अञ्चारुषा ध्वः अपुः। भाषः कार्यागराहस्यस्वात्ना-क्नावरमञ्चकः । माञ्चामिक्तको कर्ल्स्यो श्वाली ब्रङ्गवानस्य । शाशानश्रविकाः सूर्या १ (वन् वाममण १ निवार। वर्षाणी कार वनमावार विख्लान क्रिनशिकार। कावा-सरकाररी कक्षानः मूक्त भीवतः । शबाममाष्ट्रा विकृत्वाधात्री दुकः अमेर्किकः । मृक्ता-भारमानदः कार्र्याविञ्चक मराञ्चः। माहाद्रशम् वीर्माद शनकात्विः। चरता मत्या छू वन्त्री कार्या कनिवृत्या । नत्रनातात्रात्री त्रवायक्त्रमानाथवावृत्की । अक

हरका दिलो सारत प्रमुख्य माताहरम। ह्रकासिनधाडी मोरकी करें। मधनधाडिरनी।। भारमन देवत्कन व्यक्तिकन भारमन देवत्का व सामुलन । कार्यास्तिन्वाक मरम् श्रुनाः क्रात्काविन नातायनजूनाम् र्विः।। मृद्धिं मर्श्योवस्य नास्त्रीमनिकक्रविः। मीला-श्वतथतः का.धारमरवास्त्रभिरताधतः। विकि म-कर्षनाश्यमन दमवश् स्त्रभिरश्वाधतः। कर्छ-লর্কান্তরণভূষিতাঃ । প্রদুর্ন্ত বিদ্ধি বৈরণ্যাৎ কাপিলীং ভলুমাল্লিডং। মধ্যে উল্ল-করঃ কার্যান্তলেগাৎলক্ষগতঃ পরঃ। দোবুলিং চাপরং ভদ্য শল্পচক্রধরং ভবে । शकांत्रस्माभविकेष्ठ धानमः बीमिटकक्रनः । कर्षानाः कशिलांत्रस्याक्षेत्रस्थनम्-क्षृंभाः। बाह्यग्रद्वाधभीमाकः भवाक्षक्रत्रभवदः । वृशाक्षिनश्रताद्वाकम् अञ्चरका-পৰীভৰান্। বিভূমিন্তমহাপক্ষকণিকামধ্যমাহিতঃ। বৈরাগ্যভাষেন মহানুভাষো-भारित विकः सः भारत्र भाग ७२। भागाः उथा एक भूवतमा लाखा मान्याध्यवस्ता भूक्षयः भूतांगः। भागांवर्गञ्नुर्ताागः भिक्रकारकाष्ठि। धतः। मूमखरैर्क्सिनिः रेभरना-বৈদ্যক্ষায়ন এব চ। ক্তন্য শিকাঙ্চ কৰ্জব্যাশ্চন্তারঃ পারিপাশ্বিকাঃ। গৌরস্ক কার্য্যে: बादबोकि इति व अनुर्म् भः। जलना छित्र छः भारका न क्लामा नह शीववः। बान्तीकि-क्षार मकनर प्रमाद्वित्रम्। क्षार्वाद्वर्गः क्षार्वाः कार्याः स्मान्यक्षानः ॥ क्षा भूक्ष महात प्रमुति तीका भिद्राधतः । (एउएएवछ कर्छवाः । भाषछाताकारिष्टः । একো-फूटकारमा कर्डवाखन कारनो धमाहिलः। कर्द्धवानाकिम्म छ छम। छम। शहः कतः। छरेथवानाकतः कार्त्यात्ववनां मुन्तित्वाधतः। मखानमक्षतीधाती छरेथवानः भरबाक्टवर । नाकीमह्रमि मरख्टि कमल छम्। सामबः । मर्द्यमृथीबस्यारमबः क्षाभु कार्याः शिकाम इश्वाना न ता है कर्क (वर्ष) भवामा मधुरेक है छि। न ति श्वापात्री वि জুজসমধ্যে কার্য্যান্যথাস্ত্রানি তথা সমীপে। তার্ক্সোমরকতপ্রথাঃ কৌশিকাকার-मानिकः। एउष्क्रिक कर्द्रदाव्यद्भारत्या थल्या। श्रीताक्ष्रकात् इतः भक्षप्रविष् विचः। धाणामप्यानम्बिन्कलात्मन विवाक्तिः। इत्या भूनंकू अक कह द्वाष्ट्रमा कांतरप्र । कत्रव्यक कर्खनार कथा निविधिकाक्षा निः। महाना कर्गनान् भूरके हजकूछ-धरतो करतो। म कर्ख (वा) जू कर्ख वातिमवनामधतः वूट्डी। कि शिन्नदशम्बा कार्बाः नर्सा-खत्र व भूषि क ।। विश्व क संगादिक ह ।। लक्को नाता ग्राह्मों कार्यी नश्यु एके वियास शिर्मी। मिक्तिनका विद्याम् विजिल्लोम् विश्व वामना। पिक्तनः क्रेन्ट्यारमा वामक्रमद्राक्षम्क। वि छार्यामक (क्रानका । द कू कि छारा छि छ। नक्षा नक्षाव प्रमः भूनी नक्षानका क्र क्रिका। मुणुरमजकरणांनामाजनपरयोगममशयुका। निकिन कार्या। ममीणका हामझक्षा हिनी खडा।। कर्डवार बागमर गर्वर एकारधाकांशार गरा । आर बहुक्स की क्षेत्रा हो कार्रकी भूकार्यो भूतः । बामानी सात्राक्ष्यत्र कित्रीचेम्निकृतिको ! क्रमानाको नमीभरची

প্রভাক কি নাজক। রননাং যোগপউফ শিখামঞ্জনিয়াছিকো। ছতি नक्ती-নারায়ণ মূর্জিঃ।। পদ্মাসনসমাসীনঃ কিঞ্জিলীজিতলোচনঃ । গুলাগ্রে দত্তদৃষ্টি ৮চ খেতপালাপরি হিতঃ। বামদক্ষিণগৌ হন্তাবুভাবুৎসঙ্গভাগগৌ। তৎকরদ্বয়পাশ স্থ शक्कक्रक्रक्र शत्म। উर्द्ध्य कत्रवास हाम। भारश्यां शि मूम्म्य । याशसामी म विरद्धियः পূজোমোদার্থযোগিভি:। এইয়শার্ষপঞ্চাতে । অতঃপরং প্রক্যামি মংগ্যা-मीनाख नक्षा । वर् जिश्मम् नायामः छम् र्कान ख विस्टर्। रेम्ब्राकिमारम मध्युक्तर शुष्क्वकः ख कातरहर । त्राव्छिर विवृषामास कामभाक्त्रमानणः । কলৈ কংপৃষ্ঠ রোমন্ত পুচ্ছার্কং ক্রোড়গং তথা। ক্রতসৈ বংবিধস্যেছ রোহিতস্য ম্থোদাতং। নারায়ণস্ত কুষৌত আগুল্ফং তলুখোদাতং। এবং নৃমংস্যং মংস্যং বা স্থাপয়েদ্যস্ত মানবং। সর্বজন্ত্রং ভবেত্তপ্য সর্ব্বাপমুক্তিরেব চ। দৈর্ঘ্যা-প্রিভালসংযুক্তং তদর্জং পরিমগুলং। চত্তশ্চরণসংশ্লিষ্টং চত্তরস্থলমাত্রয়া। কপাল-ष्वत्रमाध्य खं शाविन्तर ख ममूकारुः। कृषा व। खल्कशर्य। खमूकाष्ट्रसर्मा विकर न्कृ मर् कात्र शिष्ट्रवः कृ मार वा छानशीच यः। खवः माक्रवनः जना काय्राज मुक्ति दव ह । विकु : कला छेका याम । त्या जमना विर्णालकः । इन् मश्राक्ष्य लि जमा मृक्ति । षाञ्जू तम मारा म खाञ्जू नः मूथ । त्यांकः तमो मार्कक तमो विक । नामात मुः ভरत-ন্মেত্র থ যবহানে হক্ষিণী মতে। কিঞ্চিদ্বক্তে স্মিতে শ্রোত্রেদিগোলক সমায়তে।। চত্ত ছলং কর্ণমধ্যং তদক্ষেক্তবু চ্ছিতং। বয়ঙ্গুলা ভবেল্টুবা নেত্রৈকং চোয়ভা ত্র সা। শেষৎ নৃসিংহবৎ কার্য্যং বরাহস্য ভ বিগ্রহং। শেষাহিবিধৃতং পাদং বাহুনা ধাবয়ন্ ধরাং। শংখং বামে তথা পদ্মংগদাচক্রে ও দক্ষিণে। এবং নরবরাছ্ঞ রুত্ব। যঃ স্থাপ-রেমর:। ভবোদধিসমূতারং রাজ্যং চ হতকণ্টকং। প্রাপ্তারাতা সন্দেহোহ্যমুত্তে হৈব वा जूवि। विर्याष्ठ नृतिः इरम्वमा छथा विभूलमाननः । वर्षुरावश्मा छथा नित्वे कत्वी ভালমিতৌ শুভৌ। ব্যাকুঞ্চিতে জুবৌ বজুং বিবৃতং চোগ্রদং টুকং। লেলিহানা তথা জিলা সমুদা চশটং শির: । দংট্রে দ্বাঙ্গু লনির্যাতে ব জ্রাপ্রে তু সিতেতথা। ত্রিকুলাভাধিকং বক্ষঃ পঞ্চনেত্রাধিকা কটিঃ। দ্বিকলাভ্যধিকো চোৰ জানু চাপি কলা-ধিকো। লঙ্গে সার্দ্ধকলে মধ্যে বিস্তৃতাপ্রে বিভাগত: । উর্জ্বে কিঞ্চিৎ স্থতৌ পানৌ বাস্ত্ৰসূলে কলাধিকৌ। কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ ভথা হীনৌ পৰ্য্য তে চোপৰান্তকৌ। বপুরিখং ন্সিংহস্য কুর্য্যাদেশিকসভ্তমঃ। জান্তংশে তস্য সংস্থাপ্য বিদারিতমহামুরং। ভূষি-তং বৈ জয়ন্তা তুমালরা শ্রীসমন্বিতং । খড়গঢক্রধরং দেবং নৃসিংহং কারয়েছুধঃ। স্থাপায়েৎ পাপনাশায় জয়ায় নরকেশরীং। ভুজং ত্রিগোলকায়ামং বকোঁবি স্তারশো-ভিতং। পাণি পাদং তুরীয়াংশং প্রবৃদ্ধশিরসংতথা। উর্বাধীদিতয়ায় মবিহীনমুখযু-গাকং। কটিস্পৃকপশনিভীক ভদ্দং বামনং বুধং। ক্বতা সংস্থাপরেদেবং মোহনাথায়ি সর্বধা। জামদবান্ত কুকীতি জটামুকুটমণ্ডিতং। চতুর্বান্তং মহাভাগং সর্বক্ষতান্তকং विजू । मिक्ति शवता हत्य ब्राम मन्। बना । बज्न मिक्न हत्य व वामहत्य

Date we from



ख (वर्षेकर । क्रुवातरखर विज्ञार क्रुवाचा त्रव कानुकर । सर्वेश्वय क्रिकेट क्रुवेट क्रुवेट सम्बद्ध मानवः। म विख् शाक्ष द्वार भी मुद कामार्क ममदन श्रीष्ठी मुक्ति । स्वर्था सम्बद्ध থিং রাম্ সপ্ততালং চত্তভূ জং । শরকার্শুকহন্তং ত শব্দক্ষর ১ শুভং । দাক্ষে পুর ভবেজক্রং বামেজিং শহামের চা দক্ষিণাথোভবেষাণো বামাথোধনুরেই হা 🎉 जुबः भवरुः वावामः कूर्याः नकाम् कर। इत्यवः वायवः वायः नेकालकानः যতং। ক্রেশত্রবিনাশার স্থাপায়েৎ সর্বকামদং। তৃতীয়ং তু বর্থা রামং চতুর্বাস্ত্রু শূণুবু মে। বানোর্জ্ব লাঞ্লং দদ্যাদধঃ শভাৎ সুশোভনং। গদাৎ ক্রপাণং বাদদ্যাক সংস্থানে শক্তিচক্রয়োঃ । কুজৈবং বলদেবং ও যোনরঃ স্থাপায়েৎ অকুং । পুত্রৎ দদাতি ভস্যাথ বিপাকাংক জয়ত্যসৌ। দশতালং ভথা বুদ্ধং পদ্মাসমগতং হয়ি। প্রলম্পরণং কুর্য্য চ্চাবরালফ্তং তথা। মণিনাভৎ সমাধিতং পদান্যৎ পদান্যে । শমাধিস্থোত্তানপাণি যোগদৃতিসমন্তিতং । স্থাপ্রেক্রপকাম**ন্ত পিতেব অগতঃ** ভিতং। কলিকনং তু চন্তর্কাভং বন্ধতূণং ধনুর্দারং। শশ্চক্রশরং কুর্যান্তর। খড়্গ ধর্ প্ৰভুং। দ্বিভুজং বা হয়াৰতং খড়্গ পাণিং সুরেশবং। কলিকনং স্থাপদ্ধি দ্বৈশং শক্ষ স্থানং লভেম্বঃ। ইতি দশাবভার প্রতিমালকণং। কিঞা । আদিমুর্তিকাসুদেবী পুर्वत्यत्वापित्वाचा । निकलार्क्षः शना यम । वात्मार्ष्क् व मुन्त । ब त्कारम् । शार्थ-भा निका भाषा मन्त्र श्रविष्य । विकी स्त्रावानु मरवाम श्राप्त निकार । वि-ज्रकावाथ कर्छद्या वात्र मञ्चभद्रः श्रज्य । वद्रता मैकित्वनाथ वानूरम्दवाधिरथा-निचः। वलामिवक्रद्यां एः कूथरेनकविख्विछः। काञ्चली मूचनी तमात्रा शमाणव्यवती বিভূ:। শশুচক্রগদাপাণি কর্তব্যাব:।দোহথবা । প্রদুগুনুন্চ চন্তবাহঃ শশুচক্রধরঃ छङः। ठळः पिक्र वहार । वायहार धन् एथा। मञ्चक पिक्र प्रमानामा दास अप-मर्दार । श्रमूत्रमु कांत्रदात्मवर नर्यनकाने रम् छर। खिरात्रो रेहवाना कर्खाता थक्श हर्मः ধরে শুভে। রতিপ্রতিগ্রামধাগতং কয় গ্রাবৎ সক্রামুকং। দিভুলেৎ শরহতং বা প্রদু মং কার্যেছুধঃ । অনিরুদ্ধ: কয়ু গ্রীবশ্চতুর্বাতঃ প্রভূবিতঃ। দক্ষিণেইস্য গদা (मर्ग ठक्र मार्थ) जू वामकः। मिक्श ह कथा शब्म निक्क मार्ग माशस्त्र । माद्रास्मक-जुर्वाद्यः कार्य। उल्लेकनः मग्ना। मृर्जिदामनात्म नर्वर कोर्डिक । अन्ननः मृन् । हजूर्यु व শ্ভুকান্ত বৃহিজ্ঞঠর মণ্ডলঃ। উর্দ্ধুজটাজুটঃ সধুম্সমমেশলঃ। শোভন্ম দ্বিট্ रुख पन्नामनाक नृज्कर । नुवक्ष मिन्छ। सन्नामामरुख **कू कू खिकार** । "मामा-স্থালী । কুশোপেতাং বামহত্তে নিষোজয়ে । শখ্চক গদাপাণি কার্য্যোবাধ চর্ত্ত মুখিঃ। সরস্বতী চ দাবিত্রী বামদক্ষিণ সংস্থিতে। কর্তব্যা মুনয়ো বার্থা পরিবার্থী वाविष्ठाः । विनिविष्ठः नमा जन्मा कार्याश्चारा छ एकार्माया । नृनिपर्यक्र-स्था-वा उ कि शिम् छ। विक् में के कू के कार्या के कू बा शिक्षा कि मा दिवसर कर गढः जोगुः मः मरकोष्ठे भूरदे। शिवा । यक्तर नमार मुद्रदे मगामित्र मुद्रप्रमेशद्द ।

कां मू वर् (श्रीकः हक्तर अवार वास्त्रका मानासर । हजू क्र का शा प्रका मिकान बद्रापीवतः । वात्म मञ्चक्ष ठकक्ष विष्युष्तद्रद्रश्विष्यां । नद्रजिर्द्शक्ष्यां । मञ्जूक्षां एः मञ्जूक्षां एः मञ्जूक्षां एः मञ्जूक्षां एः मञ्जूक्षां एक्ष्यां एक्यां एक्ष्यां शानिशास धृष्ठः । धात्रयम् वास्ता १ श्वीः वास्मन कमलामव । शामलदा धना कार्या यशामकी खूं कि का । वदार् कांद्र सम्बद्ध मध्यक शराधवः। मश्रकातो समामारक ৰব্লাছ মন্ত্ৰেশন্নী। নৰভালাৰভ্যধিকৌ পুরস্তাৎ কথিতো তব ৷৷ ইতিনববূ ্ছপ্রতি-मानकन्या किथा असेवासः वृथः कूर्यात्मवय देवत्नाकात्माहनः । शक्रकांमनगर দেবৎ প্রথমে বরসি স্থিতং ৷ চক্রং পড়গঞ্জ মুবলং সাল্পং দ্ফিলে ন্যসেৎ। শবং मार्कः शहाः शामः वामहत्खयु विनाति । लक्षीनत्रवि कार्याः श्रामीनामाविष्ठ । কিঞ্চ। প্রতিষ্ঠাপ্রসঞ্চে । অফবাছ: পূর্বমেব কথিত: পুরুষোত্তম: ।। চতুর্বাছং দিবা-क्ष मालकशां क क्यांमि एक । पिक्ष मासिषः इतः कूर्यापनाः प्रानिकः। बारमार्कः कांत्ररत्रक्रकः शाक्षकनार ज्यादाधः । श्रीश्रुशिगहिनः कूर्यार हर्ज्या एः সুৰোজনং। প্ৰাসাদে স্থাপয়েমিত্যং গৃছেৰা মগুপেপি বা । অথ দিবাছং তং দেবং कूर्य। एक महाराज्य क्षेत्र क्षेत्र क्ष्यभित्र हे कि ज्या कि विश्व के विश्व कि विष्व कि विश्व कि विश् कि विश्व क स्क्रमात्रक्रत्व नारमेर । शमाठक्यद्वर वालि विक्रूष्टर शूक्रवाखमः । भोत्रभावि मरमा-পেত মেকালং শানি তং বিভুং। চত্তর সায়তে ধানি ছাপয়েৎ সর্বকামদং। অতসী भूक्षानकामाः भीगवकः इत्वादनः । जावगाम् अत्वादन निक्षत्र भिव भव्यवः । दिद्या-(क) यम। ब्रालन न जृत्का न खिवाजि । छः देनदः कात्रदार मोम। शूक्रवाखममूखमः। वनरम्बर विमार्गेशः वर्षविखास्यानावनः। नामनामस्यानिस मूवःनाम् । কুৰ্য্যাৰা তস্য বাহ্বোন্ত শশ্বচকৌ সুশোভনৌ । শ্বচাপধরৌ বাপি বরশান্তি প্রদৌ छथा। कार्या) जुल्लो महाजाग वनामवना नखमः। जागान् भक्षाथवा नख कूर्य। मना खनखद । जकानः भाख स्थार्थ (का का बरम र नो मा किनी । वत्र मार भाष रखा र वा मक्तितन जूरमम छ। त्यानिष्ठ दामरछा । कुर्या छजा । मूरत्र मही । वद १ ए विजू-(काविकः किथा नक्काममः। वनस्यतम महिर्छ। एखन्ना व नमित्रकः । त्रवना स्कित्न পात्त्र मुख्जाः विनिद्यभद्रियः। ७७: शत्रममाकाख्याहनः साभद्रिक्तः। देखि शुक्रवाद्यमः ।। किथा। विश्मवास् विश्वतार कूर्य। खू नक्तर मृतू । हजर अस् शक वृष्णमञ्जूमः अधिमः प्रथा। मूलाइक छथा भामः मज्जिः मृतः भद्रः छथा । एकि-(व्यू श्राम्हारिक बारमम् मृत् नारश्रकः। आवार आकर श्रामः शामार जाननः कवा। शक्ष्य हृद्विकार प्रवार हमा आक्रमणर छवा। नृतिरहाल्य शहर मानर विश्व-क्रशना कोव्हिन्त । इसमू वर प्रक्रियारमा जिल्ला वामरका नारन । स्वरक्षीमूनवः कार्य। विजवरका मिम्बाइनाः। देखि विश्ववर्गः । वामशास्त्रं म महितः काइरहज्ञान-मात्रिनः,। (म्यशर्याक्रमः (पवः उन्दर्शानूः स्मार्फनः। वित्राप्रिक्ठत्रुः नर्वानकात्र

ভূবিত। দেবীভিৰ্মিলাদ্যাভিঃ নেব্যমান মিতত্ততঃ । নাভুগ্ৰে পঞ্জাৰচ পিতা-मर नगर्वितर । (अवभय् । क्षत्राम्भवर इखकां हर समार्भनर । व्यिश्वार्ष्ट्रेष्टक इद्रम्भ नर्का-नकात भृतिष्ठः। ইতি क्रमभात्री। किथा। व्यक्तेषाना छ कर्द्धना (प्रवी नक्तीः मृद्धभद्गी। তৎক্রমং শৌরকাণ্ডে ত কথরিষ্যে ত্বান্ছ। নবভা**লিক ক্লেতা ২ ভ কথ**্য**মানামিতঃ** मृगू। जुरवी यराधित्क कार्याः यरशेना छ नामिका। शात्नात्कमाधिक र वस्तु मृष् छि-र्या शिविद्धि ७१ । आत्र ए नयरन कार्या जिलाशारेनर्य देविद्धि छि । छम् र्किन जु देव পুণ্য নেত্রয়োঃ পরিকল্পয়েৎ । কর্ণাশোহধিকঃ কার্য্য: সূকিণ্য সমসূত্রিভঃ। मगु कनाविशीन कु कूर्य। पर महत्र मना । श्रीवा मार्क्षकना कार्या कि विखादा-পশোভিতা। নেত্রে বিনা তু বিস্তারে উক জানু চ পিণ্ডিকে। আছি পৃষ্ঠ ক্ষিচে किंगाः यथात्यागाः श्रकण्णताः । मञ्जाः स्माना उथाकृत्ना। रेमर्गः निक्रुसनाहकः। নেত্ৰৈকৰজিভায়াম। অংগ্ৰাৰ চ তথা কটিঃ। মধ্যপাৰ্থ ন তচ্তং ঘনপানং কুচছয়ং। ভाলমাত্রৌ তানৌ কার্য্যৌ কটিঃ লার্জকলাধিক।। শেব্যনাদ্র্থোদিউৎ লক্ষ্যশেচরং প্রকীর্ত্তিতা। সর্ব্বাভরণ সংপন্ন। মধ্যে ক্ষামা স্তনোন্নভা। শ্রোণীভটস্থ বিস্তীর্ণ: কার্ম্যা দেবী সুরেখরী। দ্বিভুজা কয়ুগ্রীবা চ বিশালাক্ষী সুলক্ষণা । ন্তনৌ সমুন্নতৌ কার্যেটী কথুকেনাবগুণিতৌ। নাগহভোপমৌ বাহু উৰ রম্ভাসমৌ শুভৌ। নানার সোক্ষ্পা प्तरा (मथला त्यानीमः युका । युका पित्रान शाद्रम (कश्रूद करेका का । शामाना প্রকর্তব্যা পদ্ম এফলপাণিকা। मिक्काल পুগুরীকস্ত বামহতে তু এফল। স্থিতা বা ত্রিবলা ভঙ্গ শোভিত। চপ্রশন্যতে । জিন্মী পার্শ্বয়ে কার্য্যে সম্মেরহন্তকে। ভূসারহন্তো দৌ নাগৌ নুপরন্তো শ্রিয়ং বিছে। শ্রীরিয়ং বক্ষণোপেতা স্থাপিতা नर्ककामना। देखि नष्कोः। थर्शनाना ध्वकानि छव कर्नः मूर्त्नाखनः। नद्रखनाः ভবেলাতিং নাসিকা চঞ্কামিতা৷ ষড়সুলোচ্ছুয়া সম্তক্ চঞ্ৰপেণ কল্পিতা৷ मछ्रक मून्द्रद (कमर निख रेवनामा वर्जु ति। चायरकी विख् की वामा भामा व्या मूर्णाल्यो। क्षम्भथात्म मश्नश जुनम्बि नमथाली। शामरत्रान्थताः कार्याः नर्भम खल मिख्छाः। नृशुद्रो छन्। हो नाशी (क्यूद्रो शवक्षलो। क्षिप्रभारमः कुलिकः भित्रभानमा (वक्केनः । वृश्किरेकः कर्णिका क्रीर्या। शक्रफ्भा महास्त्रनः । एवमा পুরতঃ স্থাপ্যো যউ্যাং বা মগুপেহথবা। প্রাসাদ্স্য প্রমাণেন কার্য্বের গরুড়মগুপঃ। थक्योः नमुष्ट्यः कार्याः धानामात्रामरकार्ककः । ইकिरेनमरक्यः ॥ किशः । नरस्वास्यव (परानाः विकृतः मानमूहारक । (परीनामणि नक्तामाः नक्त्रातः मानमूहारक । किन्नवामान कर्डवाः मखनःश्रान मध्यूषा ॥

ज्य जीगूर्डाक्राधिकापि (दायः । माधिकाक्षा न दोनाका कर्जना (एवका कृष्टि, । सामिनः पाठग्रकूँमा कतानवरना कथा। जिसका जिल्लिनः हनार क्षणा देववार्थनानिमो । क्राणापत्री ख पूर्किकः निर्माशना धनमाणिमो । वज-माना ख मून्थात्र नः क्रिक्षाको सत्तक्षो । विशिष्ठो मून्थ (णाकांत्र जानका निजनाणिमो ।

## विविधिक विवास

ক্ষুৰা হীনৰজ্য ভুপা নিপানকলাতথা। হীনাংশা হীনজন্ধ আৰু আদকরী নৃণাং।
ভাষবজ্য ভুরাজানং কটি হীনা চ যা ভবেং । পানিপান বিহীনারাং জারতে নরকো
নহান্। জন্নাহানা ভু যাত্মজা শত্রকল্যান কারিনা । পুত্রমিত্র বিনাশার দীনা বক্ষঃভলে ভুযা। সংপূর্ণা বরবা যাভু জায়ুর্লজ্মী প্রদা সদা ।। বারাহ্যাং ।। নৃপভর মভ্যজারাং হীনাক্ষারানশ্পকতা কর্জুঃ । শাতোদর্য্যাং ক্ষুদ্ধর মর্থ বিনাশঃ কশাঙ্গায়াং।
মরণং ভ কভারাং শস্ত্র নিপাতেন নির্দিশেং কর্জুঃ । বামে বিনভা পারীং দক্ষিণ
বিনভা হিনন্ত্যায়ুঃ । অল্পনুর্দ্ধৃদ্ট্যাং করোভি চিন্তামধোনুখী দ্টিঃ । কিঞ্চঃ
প্রিজ্ঞাদোক্ত পুরাণোদ্ধারে । সুরাচ্চাং লক্ষণৈ হীনাং যন্ত পূজরতে নরঃ। তস্যামং
নাভিগ্রুত্তি ভন্যাত্তাং পরিবজ্জারেং।

অথ দ্রব্যভেদেন শ্রীমূর্ত্তিভেদঃ।। মাৎসের। চিত্রজা চৈব লেপরা চ শস্ত্রোৎকার্ণা চ পাকজা।। পটে কুভেত চ পাত্রে চ চিত্রজা প্রতিমা স্ফৃত।। লেপ্যাতু পার্থিবী জেয়া লোহজা পাকজা মতা । শৈলজা বৃক্ষজা চৈব শস্ত্রে। কীর্তিতা।। চতুর্দ্ধ। দ্রব্য ভেদেন প্রতিমা পরিকান্তিতা। হয়শীর্ষ পঞ্চরণত্রে। মৃণ্যা দারুঘটিতা লোহজা র প্রজা তথা। শৈলজা গন্ধজা চৈব কৌসুমী সপ্তমী স্তা। কৌসুমী র তৃজা চৈব মৃণ্যুয়ী প্রতিমাহিতা। তৎকাল পূজিতাশৈচতাঃ সর্বাম ফলপ্রদাঃ। কিঞ্চ। ভাগ্যদা শৈলজা স্যাচ सर्वमा পৃষ্টিদা ভবেং। সুখপ্রদা স্যামণিজা রাজতা কীর্তিদা ভবেৎ। তা गुका धनमा প্রোক্তা এপিদা বৃক্ষ মতা। কৌ সুনা সুখদা প্রোক্তা গ্রহণ ভোগজা মতা। প্রত্যপ্রস্থাপিতা বাপি মৃণ্যুয়া সর্বাসদ্ধিদা। কিঞা ভবৈব চিত্রজা প্রতিষ্ঠা প্রদক্ষে। যাবন্তি বিষ্ণুরপাণি সুরপাণীছ লেখয়েং। ভাবদ্ধুগ সংসু।ণি বিষ্ণুলোকে মহীয়তে । লেপেট চিত্রে হরিনিভাং সমিধানমুগৈতি হি । তলাৎ সক্ষপ্রয়েন লেপ। চিত্রগতং যজেৎ । কান্তিভূষণভাবাদ্য। শিচতে যকাৎ স্ফুটং হিতা । অতঃ শারিধামারাতি চিত্রজাসু জনার্জন:। তঙ্গাচিত্রার্জনে পুণ্ডং অতৃতং भाउछनः तूरेशः । विजयः भूखत्रीकाकः भविनामः भविज्ञाः । मृक्षे विम्वारे भारेश क्किंगरका कि मूनिकिटेन्। कमाक् जार्थिकिशे दिवर्गशुना किनीयती। भाषेत्रः भूकनीय ख দেবো নারায়ণ: প্রভুমিতি।

অথ শিলাগ্রহণ । তিকূটাতিষু গৃহ্লীয়াৎ কিয়া শ্রীপর্বাচাদ্য । শিলাং ভূমি গভা বাধ জালা ভলকণংবু ধৈং । তথা চত তৈব । সুবারে সুভিথৌ যোগে স্বর্ফে সুকরণান্তিতে । আপূর্যামাণ পক্ষে ভ সুগ্রহে চোত্তরায়ণে । যজমানানুকূলে ভ প্রতিমার্থ ব্রজেলা কং । খেতব প্রপরীধানং খেতচন্দন চচিতিং । খেতপু প্রকৃতাপীড়া শিলিভিং সহিতোওকং । নিপুণৈং শিলিভিং সার্ধ সহার্মের্বলবভবেং । নৃসিৎ হ্র পুলা বিজ্ঞাপ্য পুলাট্রাদিকং ততে । ধ্যাত্ব। হরিং হাজি প্রাশ্বা মন্ত্রালন্ত বিপ্রকৃত্তি বু ভিলাগ্রা মুক্তি বু ভিলাগ্রহ বিপ্রকৃত্তি বিজ্ঞান্ত বিশ্বাহন বিশ

আদর্শন কুসুমং দিতং। ফলঞ পূর্ণকুম্তঞ্চ বন্দয়িত্ব। বনং ব্রঞ্জেৎ। দিব্যান্তরীক্ষ- छोगानि निमिखानाभनकारा<। यात्रा</li>
 छछनिमिख्य विभवी
 मिवर्डाय ত্রিরাঘমা ততঃ প্রাণান্ধ্যায়েৎ সিংহতনুং হরিং। পুনশ্চান্টোভরং অপ্তাল-मूयमः कर्लाः । गोठवामः द्रावाम्युका याजा मार मिकिना नृगाः । मच्चीः धात्रन् वने यात्रा महारेष्ठः मिल्लि छिः नेह । मध्यकाहनमारेक म भूगाहकप्रमिखिरिछः । अगुजूः नामनश्रेषम् धाम् निष्द्र वनः उद्याप्तः । आहीर निमम्यानिहीरेममानीः ৰা ব্ৰজেশ্যুক্ষঃ। ভূধরাদ্যান্ত যে পূর্বাৎ সংস্থানাঃ কথিতা ময়া। ভত্র গদ্ধা সমীপে ভ ক্তরকোবনৎ বিশেৎ। প্রবিশেৎ তত্র যত্নেন শিল্পিভিঃ সচিভোগুরুঃ।। নিরূপয়েৎ সমস্তাজু বৃক্ষং ৰাপ্যথবা শিলা১ ৷ লক্ষণেন ত মন্ত্ৰজ্ঞো যৎ পূৰ্বং কথিতং ময়া ৷ এক-বর্ণাং শিলাৎ দৃষ্ট্র বাহ্যদোষ্বিবজ্জিতাৎ। চন্তদিক্ষু সমং রুত্বা ভূমিভাগৎ বিশোধ-রেং। প্লাব্য তোয়েন পূতেন গোময়েন বিলেপয়েং। ভবৈর মগুলং রুত্বা বাসুদেবং ত তোজপে । পতা কৈ छोत्र रेगिन्छ विज्य थ भर छ । विज्य रव । भूक रव प्र विज्य रव । ভূত क्रविनिः हरत्र। माष् इतिजा हृर्वक्ष मिश्र जूनमन्निजः। ननास्माय छङ्क দদ্যাৎ ক্রুব্ৰলিং বুধঃ। বিষ্ণুং পূজ্য বিধানেন ক্রমশস্তান্ প্রপূজয়েৎ। বায়ব্যামস্ত্র মত্ত্রেণ গদ্ধপুলৈশঃ প্রপূজ্যেৎ। বিক্লং প্রজ্বাল্য বিধিনা মন্ত্রান্ সংতপ্ত পূজ্যেৎ। ছত্ত্বা যথোক্তবিধিনা শান্তিতোয়ং সমারভেৎ। শান্তিতোয়ং ততোগৃহ্য অক্তেণ প্রোক্ষ-য়োচ্ছিলাং। দভৈরুলেখারেৎ পশ্চাদস্তমন্ত্রেণ তাৎ শিলাং। মলৈরালভ্য তাং যত্নাৎ स्क्रवरखन (वर्षे । व्रक्रां क्या नृतिः रहन मरेर्जवाण्हामः পृत्रायः । गरेकाः भूरेष्णक रेन(वरेम) धूरिभः मः भूषा छाः भिनाः । ७७ ख मूनमाञ्जन चाकामायो छतः छ्रायः । ততः পূर्नाक् ि ए महा । मखदा एकन देव खक्रः । अवर निः कर्णा मः भूका विकामा ह विनिः रदि । गरिकः পूरिष्णस्था धृरेभर्मम्। छु एवलि पृथः। अव (यश्वविकाः मन्ना যাত্রধানাশ্চ গুহাকা:। সিদ্ধানরোবা যে বান্যে তান্ সংপূজা ক্ষাপয়েৎ । বিষ্ विश्वार्थममाकः यारेज्य। कमवाञ्चम्ना। विष्युर्थः यक्तावः कार्याः यूचाकमान उद्धारः । অনেন বলিদানেন প্রতি। ভবথ সর্বব।। ক্লেমেণ গচ্ছতান্যত্র মুক্ত্ব। স্থানমিদং পুনঃ। এবং প্রবোধিতাঃ সত্ত্বাঃ পরিত্তটা যথাসুখং ।। আচম্য সংবিশ্য ততঃ ক্তরক্ষাপুরঃ-नदः। চরুং প্রাশ্য নিরাহার: শিল্পিভিঃ সহ দেশিকঃ। হরিং বিজ্ঞাপ্য বিধিবদেবীৎ চ कमलाफ्रवार । পশ্চিমে দর্ভশয্যায়াং বসেকাং রজনীং গুরুং । নিরাহারঃ স্থিত। ভূদ্ব। প্রায়ামারম্ভক ১ লপন্। ওঁ নমঃ সর্বলোকপিত্রে বিষ্ণবে প্রভবিষ্ণবে । বিশ্বায় विश्वक्यात्र नर्शाधिश्रक्षत्र ममः। व्यात्रिक् एत्य एत्या श्रम्भ श्रम्भ क्यांत्रिकः। स्व नर्सानि कार्यानि कि मिक्नानि यानि त्या उँ छोश करे बारा। यहा न भन्नार् वृक्र कुनत्रधूमविक्विष् । कृनिष्र भूनिष्र रेहत् , छम्। निक्किन मन्नष्रः। शक्नित्रोः

শিলাং পশ্যেচ্ছিয়া বাধিন্ঠিতাং শিলাং। ব্ৰহ্মণাধিন্ঠিতাং বাপি সা তদা সৰ্বকামদা। প্রিয়া মুটাং এজুলন্তমথ পশ্যতি পর্বতং। ততঃ প্রবৃদ্ধ শিখর। কাঞ্চনক্রমমণ্ডিতং। यू छ १ मार्सा छ देव वृ कि: कल भूक्न मानि देख: । अव प् प् ए छ मू ए छ यू मा अ कार्रा मू मा-ভনা। অপরেহনি সংপ্রাপ্তে কৃত্রকঃ কৃতাত্নিকঃ। শস্ত্রাণি বিধিবং পূজ্য শিলাং পূজা বিধানতঃ অর্গ্য দন্ত্রা শিলায়ান্ত শস্ত্রমন্ত্রেণ পূজ্বেরং। মন্ত্রবিদ্বা স্বমন্ত্রেণ প্রজ্বল্ভং বিভাবয়েৎ। মধাজ্যাক্ত মুখং কৃত্বা আন্থানং চিত্তয়েদ্ধরিং। শিল্পিনং বিশ্বকর্মাণং भाष्यामक् वा धर्या शिवा । मञ्जः विकाशकर धाषा श्रमणा क्रिल्भित छकः। गूथ পৃষ্ঠাংসলাজুলং শিশিপনে দশরেক্ষুর:। শুক্র গদ্ধানুলিপ্তাত্বংশুক্রপুত্যাদ্যলক্ষ্ত: । উদ্ভনুখা প্রত্থাবা স্থাতিঃ সংযতঃ শুচিঃ। ধ্যাত্মাত্মদেবতাং শিল্পী টক্ষহতো জিতেন্দ্রঃ । যথেটং শান্তরেৎ পশ্চাক্ষচ্চিলান্তচ্চুপুর মে । উদক্শিরাং প্রাক্লিরাং বা ভথৈবেশানদিগ্গতাং। উর্দ্ধাগং ভবেং পৃষ্ঠমধোভাগং ভবে-ন্মুখ্। কিঞ্চিন্মানাধিকাৎ কৃত্বা কপ্তায়েৎ প্রতিমানিলাৎ। কিঞ্চিন্মানাধিকা ভাজ্যা বিবিধা যাচ পিণ্ডিকা। ছেদয়িত্বা সমুদ্ধ্ত্য চত্ত্রসাৎ ত কারয়েছ। অনেনৈব বিধা-নেন পরীক্ষ্য গুণদোষতঃ। বৃক্ষং যত্ত্বৈ গৃহ্লীয়াৎ বিধিজ্ঞে। দেশিকোত্তমঃ। সমা-নীয় রথং শ্রেষ্ঠং সুশীলৈবৃষিভৈযুতিং। রথে স্থাপ্য শিলাং যত্নাচ্ছাদয়িত্বা ত বাসসা। হরিং ধ্যাত্বা স্মর্মুক্তমর্ঘ্যং দদ্যাত্তো গুরুঃ। আনীয়্মানেত রথে রথাঙ্গপরি-চারকৈ: । বৃষভে বা সমুৎপাল্ল অনিমিত্তে চ সাধক:। বৈঞ্বাগ্নৌন্সিৎহেন তিলৈঘু তিবিমি শ্রিটিভঃ। ছত্তা চাউশতং সম্যক তদ্যোষেণ বিমুচ্যতে। আনীয় শংখ-নির্ঘোট্যগাতিমঙ্গলনিঃষ্টনঃ। প্রাসাদদেগান্তরে ভাগে কৃষা কর্মকুটীং গুরু:। শিলাৎ সংস্থাপ্য ভিমাৎস্ত অচ্যাঞ্জা বলিং হয়েছ। ততঃ প্রবর্তয়েছ কর্ম বিদ্বান বিজ্ঞৈ স্থাতি । কিঞা যথোক্তারাৎ দিশারাং ভ ন লভ্যেত যদা শিলা। তদা বিদিক্স্তি। গ্রাহ্যা বিধিনা যেন তচ্চুণু। সমানীয় শিলাং সম্তক্ পূর্ব্বোক্ত লক্ষ-रेन्यू छार। आत्रामरना उत्त जाल अदा ज्यिः विधानवित। मिनाः मे जाना उद-খাতে মৃদা সংপুরুয়ে পুরুষ । সমীক্ষ্যাথ তাং ভূমিং মণ্ডপৎতত কারয়েৎ। পতাকা-थस्र भक्तोरमा स्वांत्री क ममस्रकः । তোর निः कमनी खरिस सिकातन क स्वरत्र । आहार ख शृक्ताकः नकनः वाशि विधानः नमुशाहत्त्र । ज्ञक्तृत्वनिः नम्। शृक्तिक विधित्व छ। প্রতীচ্যাৎপূর্ববধিনা হোমৎকুর্য, দিল্থো দিতং। দিগ্দোষপরিভিদ্ধ্যর্থং विरम्पाकाममाठात्र । भाजाननत्रिंग्ट्न नश्तुः देवक्यानान । निग्रम्याना-মথাঙ্গানাং হত্ত্বা পূর্ণাং যজেকারুঃ। ভর্পিতে মন্ত্ররাকে ত দিগ্দোবৈমু চি তে শিলা। ७७ शृर्काङविधिन। ऋषा भूष्णामिकः छकः। शृर्कारकन विधानन भित्रः शृष्ठामि कल्लाख्य । माखामाकन मराखाका निनार जार खाका याना कर । मिन्ति विकास नार्थः शृष्टिः ভर्ताः सलक्षाः । तूर्वं म्यत्र्युकाः काःनारमादाः भन्नस्रिनी ।

ভামুপৃষ্ঠীং সোপবীতাং দদ্যাত্রৌপ্যখুরাং গুরো:। তোষয়ীত গুরুং যত্নাৎ বস্ত্রালক্ষ-রণাদিভিঃ। শিল্পিনং ভোষয়েদ্যভাষন্ত্রালক্ষার চন্দনৈঃ। আচার্য্যে ভোষিতে বিষ্ণু-স্তোধিতঃ স্যান্ন সংশন্তঃ। শিশ্পিনং ভোষয়েদেবং বিশ্বকর্মাথ পুদ্ধিতঃ। ততঃ कर्मानि युक्षीत नर्सकामश्रामा छरवर ।। अथ मिनानकन र छरे वन ।। कात्रामा मिनिका যা চ নদী ভীরসমুদ্ধবা। পুরমধ্যে স্থিত। যা চ তথাপিতু বনে স্থিতা। চত্ত স্পথে স্থিত। যা চ মৃচ্ছিলাপকুনেচ যা। উষরে চ তথা মধ্যে বল্পাকে বাপি যা স্থ্যর শি প্রতপ্তা যা যা চ দকা দ্বাগ্নিন। অন্যকর্মোপযুক্তা যা অন্যদেবার্থনিমিতা। ক্রব্যাদাদ্যৈরপহতা বর্জ্জা হজেন বৈ শিলা। যেন কেনচিদানীতা বর্জনীয়া তথা শিলা। পুণ্যেতৃদ্ভবা গ্রাহ্যা পুণ্যতীর্থোদ্ভবাত্ত যা। নদীপর্বতসংলগ্না বৃক্ষচ্ছায়া-দ্যনাবৃতা। নিমন্নাভূতলে যা চ যাহস্পৃষ্ট। সূর্যারশিমভিঃ। অন্তজ্ঞ লোষিতা নদ্যা-মেকবর্ণা মনোরমা। পাগুরা চারুণা পীতা রুঞ্চা শস্তাচ বর্ণিনাং। ন যদা লভ্যতে সম্যক্বনিনিং বর্ণভঃ শিলা। বর্ণস্যাপাদনে তত্র জুভ্য়াৎ সিংহবিদ্যা। ক্তে বর্ণস্য खनत्न जमा वर्गमा एडा। (अर्थवर्ग मूर्गा ह तिथा मस्त्रमा नमारज। व्यथतमा छ বর্ণস্য শ্রেষ্ঠস্য ন প্রশাসতে। বর্ণিনামিহ সর্বেষাৎ কৃষ্ণরেখা প্রশাস্যতে। শিলানামিছ সর্বাসাৎ শুক্লরেখা প্রশাস্তে। রেখানামিছ সর্বাসাং ব্যভ্যয়ে হোমনাচরেৎ। পাতালমরসিংহেন সহসুং দেশিকোত্তম:। অর্পিতে মন্তরাজে ও ততঃ সা শুভদা न्गाः। विभव्नो ए उ विभाग विन्तू कि होत्र किथा। इमरमव विधिः कूर्य। मन् भिन्नि গহিতে। যুবা মধ্যা ভবেক্ষাহ্যা বালা বৃদ্ধা চ গহিতা। সুগন্ধনিবিড়া ন্নিধা তথা গম্ভীরনিশ্বনা। শীতলা যা চ তে যাচ্যা যুবেতি প্রোচ্যতে শিলা। তদ্রপা প্রোচ্যতে মধ্যা কিন্তু সা কঠিনা ভবেৎ । অতিমূদী ভবেদালা বৃদ্ধাতিকঠিন। মতা। টক্ষাযাতা মহাবালা বৃদ্ধা লোকক্ষয়ৎকরী। স্ত্রীপুৎ নপুৎসকলৈৰ লক্ষণে-रेनव लक्षरप्रद। উৎপাদ্যমানে দৃশাতে তিন্তকালাতবং জ্বন্। কুলিঙ্গং শ্রমতে नामः काः नाम-होनिनामव १। मृत्ने मार्थः ज्यात्वा ह पूर्वित हे पि जूना मृता। তদেব লক্ষণং যদ্বনন্দং মন্দং প্রতীয়তে। স্ত্রীলিক্ষেতি তদা সাচ ভিন্নকাংস্যধুনিস্ত যা। নপুংসকেতি নাজেয়ান যত্তৈতদ্যং ভবেং। পুং লিজৈঃ প্রতিমা কার্য্যা স্ত্রী-लिकिः भामभीठिका। भिष्ठिकार्थः छ मा आङ्गा मृद्या या यखनक्रणा। निकानार ख विशर्य। एक शृद्यां छ १ व्याममा हत्त्व । एक एन एक एन वाशि भिना गर्छः मभी-ক্ষাতে। দ্শ্যকে মণ্ডলা যস্যাৎ সগভাং তাং বিনিদ্ধিশং। মণ্ডুকোমণ্ডলে ভস্যা-লোহিতে নাত্র সংশয়ঃ। হরিদ্রাভে ভবেলোধা ক্লফসর্পতথা সিতে। নিস্ত্রিংশ সদৃশে ভোরং গৃহগোধাত্ত কর্মা। আখু: শিঞ্জলবর্ণে স্যাদ্রুণে শর্টন্তথা। পিঙ্গ বণে গুপাষাণা পলাভে শীক্তা ভবেৎ। বৃশ্চিকঃ স্যাদ্বিচিত্রে তুপীতনীলে প্তঙ্গকঃ। পারবিতাতে খদ্যোত্ মণ্ডলে ও বিনিদ্ধিশ্ব। অৰুপেনাত মৃণ্ডুকে দৌর্ভাগ্যহ

গোধয়া ভবে । সর্পে বিষেণ মরণমতিবৃষ্ঠি কথা জলে। ধন ছানিজু গোধায়ামাখুনা-নিষ্ট মুন্তবেৎ । অপায়ুকুং ভ শরটে পাষাণে বিদ্যুতা বধঃ। বালুকায়া মনাবৃষ্টিঃ क्लर्श वृश्वितक ভবেৎ । রাষ্ট্রোচ্ছিত্তিন্তু শলভে থদ্যেতে গাত্র সংক্ষয়:। তন্মাৎ পরীক্ষা হতেন শিকাং গৃহ্লাত দেশিকঃ । সগত্ত য়াক্ত শিলয়া ৰূপকঃ ক্রিয়তে যদি। তদেশে সুরতে রাজা যজমানোথ দেশিকঃ। শিলায়ামপি বৃক্ষেষ্ যত্নালার্ভং সমী-ক্ষয়েং। অথ নিশিপ কৃত্যং। নাংস্যে। বিবিক্তে সংবৃতে স্থানে স্পতিঃ সংযতে-শিদুর:। পূর্ববং কালদেশজঃ শাস্তজঃ শুক্রভূষণঃ। প্রয়ভো নিয়ভাহারে।দেবভা ধ্যান ভৎপরঃ। যদ্মানুকূলেন বিদ্বান্কর্দ্ম সমাচরেৎ। ধৃত্বা পূকামুখং দ্রবামথবা 🛊 हाल्डामूथः। पि मूर्काकरें : शृष्टा कमांत्र ख विलः रदि । शृक्ववृक्त धारारेमाः স্থাপায়েদুব্য মাচবেৎ। শুক্রৈর্গ জোশ্চ পুল্পেশ্চ দ্রব্যং সংপূজ্য ভক্তিভঃ। স্বস্থিবাচন-कः কৃত্ব। প্রতিমাণ সং বিভাজয়ে । অথ পিত্তিকা লক্ষণ । হয়শীর্ষ পঞ্চরাতে। অতঃপরং প্রবক্ষ্যামি পিণ্ডিকালক্ষণং তব। উচ্ছুয়েৎ প্রতিমার্দ্ধণ দৈর্ঘ্যে প্রতিমা সমা। চক্তঃষ্টি পুটান্কৃত্বা পিণ্ডিকাং তত্র কম্পায়েৎ। ভ্যক্ত; পঞ্জিদ্রং চাধস্ত-मृद्धः यञ्चरकाष्ठेकः । नमस्यमू अरहाः भारतं व्यस्यः भतिमार्काः सर्। উर्द्ध भरकि हा ये कि वा वा का वा कि का कि তয়োর্ন্মধ্যগতৌ তত্র চত্তফৌ মার্জহেন্তত:। চত্তর্দা ভাক্ষিত্বান্ত উর্দ্ধ পংক্তিদ্বয় বুধঃ। মেখলা ভাগমাত্রং ম্যাৎ থাতৎ তম্যার্দ্ধ মানতঃ। ভাগং ভাগং পরিভাল্য পার্শ্ব স্বৌরুভয়োঃসমং। দন্ত্রটিচকং পদ্ধ বাহ্যে প্রমাণং কারয়ে দুধ্য। ত্রিভাগেন চ ভাগঃ স্যাদপ্রেস্যান্তোয়দিগ্গতঃ। নানাপ্রকার ভেদেন ভদ্রেরং পিণ্ডিকা শুভাঃ। কিঞা। ভবৈবাগ্রে। দৈর্ঘ্যেণ প্রতিমা জল্যা তদর্কেন ত বিস্তৃতা । উচ্ছিত্রাযামতার্কেন সুবিস্তারোদ্ধ ভাগত:। ত্রিভাগেন ত বাহুল্যং তঞ্জিভাগেন মেখলা। খাত ১৮ ছৎ প্রমাণং ও কিঞ্চিদুত্তরতোমতং। বিস্তারস্য চতুর্থেন প্রমাণস্য বিনির্গমঃ। সমৎ মূলস্য বিস্তারমগ্রে কুর্য্যান্ত দর্জতঃ । বিস্তারস্ত তৃতীয়েন তোয়মার্জন্ত কারয়েৎ। পিণ্ডিকার্জেন বাত্ল্যং দৈর্ঘ্য কৃশ্স্য কীর্জিতং। কুশ বাহুল্য দৈর্ঘ্যেণ জ্ঞাত্বা সূত্রৎ প্রকল্পায়েৎ। উচ্ছু। য় পূর্ববং কুর্য্যান্তাগশোষণ সংখ্যায়। অধস্তস্য বিভাগন্তু কঠং কুর্য্যাপ্রভাগিকং।শেষাহ্যৈকৈকশঃ কার্য্যাঃ প্রতিষ্ঠা নির্গতান্তথা । হফ্টিকাপিণ্ডি-কাচেয়ং সামান্য প্ৰতিমাসুচ। প্ৰাসাদদ্বারমানেন প্ৰতিমা দ্ৰব্য মুচ্যতে। গজ-बानकमः यूका প্রভা স্যাৎ প্রতিমাসু চ। পিত্তিকাসু যথাশোভং কর্ত্তব্যা সততৎ रदः। मार्ना । शिष्ठिका नक्षनः वत्कः यथावमन् शृक्षमः । शीरोण्हायाः यथा-ৰক ভাগান ষোড়শ কারয়েৎ। ভূমাবেক পুতিষ্ঠা স্যাৎ চত্ত ভিজ্গতীমভা। বৃত্তে। ভাগত থৈকঃ স্যাদ্ত্রপষ্ট বু ভাগতঃ। ভাগৈদ্রিভিত্তথা কণ্ঠ: কণ্ঠপট্রিভাগতঃ। ভা-शासा मुर्क् भेडेलू (मुक्कार्शन शिका। शुविकेः ভाগমে केकर अंशकी यावास्य छ।

# - श्रीरिविक किमामा



निर्शमक शूनस्या म्यावरेष्ट्राभयशिका । वाजिनिर्शमनार्थे एक सार्थाः सार्थाणकः। शीठकानी ख नका नारा माना नकनः। विस्मिशा क्वित्र मृत्य विस् সত্যাঃ। স্থিকা চাথবা পাঠযক্ষী বেদী চ মগুলা। পূর্বন্দু চ বজু চ পদ্মাচাজ্য শ্লী-তথা। ত্রিকোণা দশ্যী তাসাং সংস্থানঞ নিৰোধত। স্থিল। চত্তরসা ও বঞ্জিতা-মেথলাদিভিঃ। বাপীদ্বিমেথলা জেয়া যক্ষী চৈব ত্রিমেথলা । চত্তরসুয়েতা বেদী ন তাং नित्त्र প্রয়োজয়েৎ। মওলী বর্জু লা যা ত মেখলা ত্রিতণা প্রিয়া। রক্তা দিমেধ-লা মধ্যে পূৰ্চন্দু। প্ৰকীৰ্ত্তিতা। মেথলাত্ৰয়সংযুক্তা ষড়সু। ৰজিকা ভবেৎ। ষোড়শাসা ভবেৎ পতা কিঞ্ছিল্জাচ মূলতঃ। তত্তিব ধনুরাকারা সার্জচন্দু। প্রশস্তে। ত্রিশুল-সদৃশী তদ্বৎ ত্রিকোণা উর্জানতা। প্রাপ্তদক্পরণা তদ্বৎ প্রশন্তলক্ষণাস্থিতা। পরি-বেক্টা ত্রিভাগেন নির্গমৎ তত্র কারয়েং। বিস্তারং তৎপ্রমাণং চ মূল চাগ্রে তথো-र्ष् वः । अनगार्शस कर्वे । खिलारान मूर्णालनः । निक्रमार्ष्कविलारान स्थालान সম্বিষ্ঠিতঃ। মেধলা ত প্রভাগেন খাতা চৈতৎ প্রমাণতঃ। অথবা পাদহীনং ভ শোভনং কারয়েৎ সদা । উত্তরস্থং প্রণালশ্চ প্রমাণাদধিকোভবেৎ। স্থপ্তিলায়ামথা-রোগ্যৎ ধনধান্যক্ষ পুক্ষলং। গোপ্রদান্ত ভবেদ্যকী বেদী সংপ্রপ্রা ভবেং। মণ্ড-वागार ভবেर कीर्डिक्त तमा পূर्व िमुका। आग्नुः श्रमा ভবেদ্ব জু। भूमा (मोजागामिती। পু এদা স্বৰ্দ্ধ চন্দু। স্যাঞ্জিকোণা শক্তনাশিনী। দেবস্য যজনাৰ্থং ত পিওক: দশ কী-र्खिडाः। रेगल रेगममग्रीः निखीः नार्थित नार्बिवीः ज्या। माझ स माझकाः कुर्या-নিশ্রে নিশ্রাং ভথৈব চ। নান্যযোনিস্ত কার্য্যা বৈ সদা শুভফলেপ্স ভিঃ। অর্চ্যাম-नमः रेलर्चाः निकायायनमः ७थ।। यना प्रवना या शक्री छाः शीर्के शतिकन्त्रायः। এবমেৰ সমাখ্যাতং সমাসাৎ পীঠলকণং। কিঞা। দারোচ্ছায়স্য যন্ত্রানমন্তথা ততু কারয়েং। ভাগদ্যেন প্রতিমাং ত্রিভাগীক্ত্য তৎ পুনঃ। পিণ্ডিকা ভাগতঃ কার্য্য নাতিনীচা নচোচ্ছিতা। জীনারদ পঞ্চরাতে চ। বিশ্বমানাদ্যথা পীঠং কুর্য্যাদ্দেবস্য ভচ্চণ। চত্তরসুং চ ভিদ্ধি চত্তরসুয়েতং ত ব।। বিষেচ্ছায়সমং পীঠং পরিভদৈচ व বিস্তং। তদর্জেনোয়তং কুর্য্যাদেতং সমান্যলক্ষণং। চক্তরসুস্য পীঠস্য-ক্থিতং ত মহামুনে । চত্তরসায়তস্যাথ প্রমাণমবধারয় । বিশ্বাদ্ধীনন্ত বিস্তার্থ তৎপ্রমানেন टाइकः। ममः (प्रमा देवर्गः वा ठखत्रमुख्य ७ ७०। कार्याः छक्रान्यस्थानः (प्रव-তানাং মহামুনে। চলানাং বেশ্মসংস্থানাং বিয়ানাং পীঠমন্যথা। কুর্য্যাদ্বিয়ুসমৎ देनर्घा १ स्वन मात्नन वा भूनः। जाशामकान् भर्याखः विखादाताकृद्यन ह। उद्धाद्धः নাথবা কুর্যাাৎ সবিস্তারৎ দ্বিজোমভিৎ । বক্ষোইস্তরে বা বিশ্বস্য ভস্যার্জন চ বিস্তৃতং। তচ্চত্রর্ভাগহীনং ও ত্রিভাগং চার্দ্ধবেব বা। অঙ্গদ্ধং বিদ্ধি তৎ পীঠং চল-विश्वना नर्यमा । शांख्यवाना हांचावार विद्यानारम्बरम्बह । क्षा छ छम्भः कूर्यान-

### প্রিপ্রভিভি বিলাসঃ [

90°

मूर्शशीरे श्रमानेकः । जिलाशिनाध शीर्रेगा श्रमान मधारकोल्य । उत्तरिम कर्णिने स्वानिक विकास कर्णिक विकास करणिक विकास कर्णिक विकास कर्णिक विकास कर्णिक विकास कर्णिक विकास करणिक विकास करणिक विकास करणिक विकास करणिक विकास करणिक विकास करणिक करणिक करणिक विकास करणिक क

### একোনবিংশতি বিলাসঃ।

জ্ঞীরকার নসঃ।৷ জীচৈতন্যপ্রবিটোছনি শরণং সুষ্ঠু যেন হি। সাবিটো বাতি দুটোপি প্রতিষ্ঠাং সদভিফ্তা১।। ১।।

ভবাসাং প্রতিষ্ঠা। প্রতিষ্ঠারের ভগবদাবির্ভাবো বিশেষতঃ। প্রতিমাসু ভততাসাং প্রতিষ্ঠাৎ বিধিনাচরে ।। ২।। তথাচোক্তমেকাদশক্ষকে প্রভিগবতা। প্রিমাত্মা হরিদের উচ্চক্তিঃ প্রিরেছাদিত।। প্রিদেরী প্রকৃতিঃ প্রেক্তাক্তকের প্রকৃষ্ণঃ ক্রমাত্মা হরিদের উচ্চক্তিঃ প্রিরেছাদিত।। প্রিদেরী প্রকৃতিঃ প্রোক্তাকেশবঃ প্রকৃষণ ক্রমাত্মা বিনাদেরী ন হরিংশল্পজাৎ বিনা। অর্চা মূর্ত্তিঃ ক্র্যুতঃ ক্রম্যুত্মা ন বিমুনা বিনাদেরী ন হরিংশল্পজাৎ বিনা। অর্চা মূর্ত্তিঃ ক্র্যুত্ত ক্রম্যুত্মা কর্মালালয়া। তয়োর্যোরিধিনা যোগঃ সা প্রতিষ্ঠা প্রকৃতিতা ।। অর্থা প্রিপ্রতিষ্ঠামাহাত্মাৎ। মাৎসে।। প্রায়য়উচুঃ ।। ক্রিয়াযোগঃ কর্মং বিদ্ধান্দিইভানির কর্মাযোগারি শিব্যতে ।। ৪।। প্রসূত উবাচ।। ক্রিয়াযোগঃ প্রক্রামান দেবতার্চানুকার্তনং । ভক্তিমুক্তিপ্রদং মন্দ্রান্যলোকের বিদ্যতে ।। ৫।। প্রতিষ্ঠায়াঃ সুরাণাং চ দেবতার্চানুকার্তনাৎ। দেবযক্তোৎস্বাচাপি বন্ধনেন বিমুচ্যতে ।। ৬।। বিমুধ্র্যো। স্থাপিত্রাং প্রতিমাং বিক্ষোঃ

শ্রীকৃষণায়নমঃ । জীয়াৎ চৈতন্যদেবোহদৌ যৎপাদাজ্বসং স্পৃশন্। নিত্যং চিত্রং কলত্যের মনোরথমহাদ্রমঃ । শ্রীমৃর্প্রিপ্রতিষ্ঠাবিধিং লিখন্ তৎস্থাস্থারে পরগুরুত্রপং ভগবন্তং শরণং যাতি। শ্রীচৈতন্যমিতি। হি যক্ষাৎ যেন শ্রীচৈতন্যেন আবিষ্ঠঃ কুত্যাক্রান্তঃ সন্ হুফোপি জনঃ সন্তিরভিষ্ট্রাং প্রতিষ্ঠাং যাতি। অত্যেহ্ত্যযোগ্যোপি কৃদি তৎপ্রেরণয়া লিখনহং সম্যোত্রিল থিত্তমহামীতি ভাবঃ।। ১॥

যদাপি শ্রীমৃর্জ্যাবির্ভাবেশৈর সর্বলোকের সাক্ষাদাকারাদিক্ষ্র্ত্ত্যা ভগবদাবির্ভাবেশ্বস্তুএর তথাপি বিধিনা প্রতিষ্ঠায়র প্রতিমাস্থ বিশেষভোভগবত আবির্ভাবং স্যাৎ । তওন্তম্মান্ধেতো-ন্তাসাং প্রতিমানাং শাস্ত্রোক্তপ্রকারেণ প্রতিষ্ঠামান্তরেদিত্যর্থং ॥ ২ ॥ এতদের শ্রীভগবছক্ত্যা প্রমাণয়তি। প্রতিষ্ঠিত প্রতিষ্ঠায়া যুদ্ধা প্রতিষ্ঠা তবতি চেওহিঁ জীবয়তি জগপ্পেতয়তীতি জীবং। পরমাত্মাহং তস্য মন্দিরমধিষ্ঠানং ভবতি । এবং প্রতিষ্ঠায়া নিত্যত্বমভিপ্রেতং। ৩ ॥ পিণ্ডিকোপরি শ্রীমৃর্ত্তেং প্রকর্ষেণ স্থিতেঃ প্রতিষ্ঠেতি নিরুক্ত্যা তল্পকণমাহ । পরমাত্মেতি সার্দ্ধয়ের অর্থবিশেষস্ত শ্রীবৈক্ষবানাং ক্রদয়গমাত্রবৈতি কিন্তবিস্তায়ণমের কেবলমত্রোপযুক্তমের লেখাং॥ ৪ ॥ দেবতানাং যত্মা দেবতায়াং পরমপ্রসাস্য ভগবতাহর্চ্চা পূজা প্রতিমা বা অক্ষরীর্ভনং চ । ঘন্দ্বকাং। তদ্ধপং ক্রিয়াযোগং প্রবক্ষ্যামি তত্র হেতঃ । যত্মান্দেবতার্চামুকীর্ভনাদন্যৎ ক্রিফিস্তক্তিমুক্তিপ্রদং নান্তি ॥ ৫ ॥ স্বরাণামিতি বছত্বং শ্রীশিবাদ্যপেক্ষয়া ভগবতঃ পরম-লৌরবাপেক্ষয়া বা । প্রতিষ্ঠেত্যাদি প্রথমান্তপাঠে নৈর দেবতার্চামুকীর্ত্তনং নৈরদেব যজ্ঞোৎস্কর বা দেবতার্চামুকীর্ভনেন দেবযজ্ঞোৎসবেন চ কর্মবন্ধাক্তনোমুক্তোভবতি॥ ৬ ॥ বৈক্ষক

সম; ক্ সংপূজ; মানবং। যং যং প্রার্থরতে কাম্ম তং তং প্রাংপাত। মুন্তুমং। যথোক্তবিধিনা দেবং প্রতিষ্ঠাপ্য জনার্দ্দনং। অক্ষয়ৎ লোকমাপোতি বিফোরমিত-তেজনঃ। স্কালে। যাবদিনানি লোকেই স্মন্ স্থাপায়েৎ প্রতিমাৎ হরেঃ। ভারদ্ধুগ-সহসাণি বিষ্ণুলোকে মহায়তে । অক্ষোভৰতে তাবদ্যাবদাহতসংপ্ৰা। যেনাৰ্জা श्राणिका विष्याः मञ्जलाकमा नायकः। প্রতিষ্ঠা শক্ষরাদীনাং দেবানাং ব্রহ্মনন্দন। ক্ষতা তেন ন সন্দেহঃ সভ্যোক্তৎ ভব নারদ। পিতৃণামর্য্যমাদীনাৎ বাসবাদিদিবৌ-কসাং। কৃতা তেন মহাপ্রতিঃ স্থাপয়িত্বাজনার্দনং। १।। যা স্থাপয়তি দেবর্ষে (मवः मधूनिमृत्नः। छमः সংভাষণাদেব পাপः याछि मगोक्तिकः। य नित्रीकि खि নক্তি প্ৰতিষ্ঠাৎ কেশবস্য হি। তে বসন্তি হরের্লোকে যুগানামেকবিংশতিং। প্রয়াগে যৎ কলং প্রোক্তৎ মাঘ্যাদে ও স্থানতঃ। গ্রায়াং পিওদানেন পিতৃপক্ষে চনারদ। কার্ভিকে পুদ্ধরে প্রোক্তং কুরুক্ষেত্রে রবিগ্রহে। দারকায়াং চ ৌশাথে প্রভাবে চ শশিগ্রহে। সিদ্ধেশরে শিবরাক্রোক্ষেত্রেচৈব ভ হাটকে। শুক্রতীর্থে ভ রেবায়াৎ গঙ্গাসাগরসঙ্গমে। অশ্বমেধাদিভিষ্ঠজ্ঞ ক্রিতৈর্দ্রাদশীসংজ্ঞ কৈঃ। কপিলা-কোটিভির্দত্তৈর্হেমভারশতৈরপি। চাক্রায়ণৈশ্চ পারাইকঃ ক্রতৈর্ঘৎফলমাগুয়াৎ। প্রতিষ্ঠাপ্য হরেরর্জাৎ পুণ্যমাশ্লোতি নারদ। ভক্ষাৎ কলিযুগে ঘারে বিশেষেণ নরোন্তমৈঃ। স্থাপনীয়া হরেরজা পিতৃণাং মুক্তিমিচ্ছত।। অন্যক্তে চ প্রামাদে প্রতিমাণ স্থাপরেভু যং। কুলাযুভশতৈযু জোবসতে বিষ্ণুবেশানি। সধন্যং স কুলী-নশ্চ পিতৃণাং ভবতে সুতঃ। কারয়িত্বা হরে ধিঞ্চং হঃ স্থাপয়তি কেশবং। হরস্য विक्षार्जात्नाक्वा প্রাসাদে চাপি নারদ। স্থাপরিত্ব, হরেরচ্চাং মৃথ্যং পুণ্যমবাপু-য়াৎ।।৮।। জীহয়শীর্ষপঞ্চরাত্তে। প্রতিষ্ঠাবিধ্যন্তে। যোবিষ্ণুং স্থাপয়েদেবং সর্বদেবনস্কৃতং । স্থাপিত তেন সর্বং স্যাজ্ঞগৎ স্থাবরজন্ম। অভীতান্ দশ পূর্বোৎশ্চ ভথৈবা নাগতান্ দশ। আত্মানং সপরীবারং বিষ্পুলোকৎ নয়েমরঃ। কোটি জন্মগতং পাপং স্বস্পকং যদিবা গুরু! তৎ সর্বাং ভন্মশাৎ কুর্য্যাৎ সংস্থাপ্য মধুবাতিনং। তথৈব ভবিষেয়ে। এবং যং কুরুতে রাজন্প্রতিষ্ঠাং দেবচক্রিণঃ। সর্ব-পাপবিনিমুক্তিঃ সর্বভূষণভূষিতঃ। বিমানেন বিচিত্রেও ত্রিসপ্তকুলজৈঃ সহ। পূজাং नः था थ। यह ठी मिन्द्र लाका नियु क्रमार। नवास्तवः नूथः श्राभा विक्रु लात्क मही-রতে। নারসিংহে। প্রতিষ্ঠাং নরসিংহস্য যঃ করোতি যথাবিধি । নিফামোনর-भार्क् इति एवर कार अमूहार हा नकारमानद निश्वना भूदः श्राभा ह स्वामर हा मस्छ-রাণ্যনেকানি লক্ষ্রসিথ্যোবিমূচ্যতে। নরসিংহৎ প্রতিষ্ঠাপ্য যং পূজামাচরেল্লরঃ।

বানাং বিষণুপরিবারাণাং শঙ্করাদীনাং। হেসপ্তলোকস্য নায়ক নারদ। নারদেতি বা পাঠ:। ততক্ষ সপ্তলোকস্য বিশেষত: শঙ্করাদীনাং চ প্রতিষ্ঠা তেন ক্তেতান্বয়:।। ৭।। সুখ্যমিতি প্রসাদং স্বয়ং নির্মায় তত্ত হরেরচ্চাস্থাপনেন যৎ পুণ্যং তদিতার্থ:।। ৮।।

তস্য কামাঃ প্রশিক্ষ্যন্তি পুঅপৌপ্রাদয়োভূবি। বিধিবৎ স্থাপরেক্ষন্ত কাররিত্বা জনাদর্শনং।ন জান্ত নির্গমন্তস্য বিষ্ণুলোকাৎ কথঞ্চন। গৌতমীয়ে। গোঠে বা শৈলশ্লেবা
পুণ্যারণ্যে নদীতটে। প্রাসাদে স্থাপয়েৎ ক্ষণ্য ভার্যকোটিফলং লভেৎ। কোটিকোটি মহাজ্ঞানাৎ কোটিভার্থপরিভ্রমাৎ। তৎ ফলং লভতে ভক্ত্যা সংপ্রতিষ্ঠাপ্য
কেশবং। সদা মন্ত্রকোটিজপাৎ যৎফলং পুরুষোলভেৎ। তৎ ফলং সমবাগোভি সংস্থাপ্য পুরুষোভ্রম্থ। কোটি যজ্জেন হৎপুত্যং পুণারণ্য নিষেবণাৎ। তৎ ফলং লভতে মর্ত্যন্তবিধ্যাপ্ত কশবং। যাবজ্জন হরেন্ন গ্রহণে যৎফলং লভেৎ।
ভৎফলং সমবাপ্যেভি সংস্থাপ্য পুরুষোভ্রমং।

অথ প্রতিষ্ঠাকাল: ।। মাণুদে; ।। চৈত্রে বা ফাল্গণে বাপি জৈচিষ্ঠ বা মাধ্বে তথা। মাঘে বা সর্বদেবানাং প্রতিষ্ঠা শুভদা ভবেৎ । প্রাপ্যপক্ষৎ শুভং শুক্রম-তীতে চোতরায়ণে ৷ পঞ্মী চ দিতীয়া চত্তীয়া সপ্তমী তথা ৷ দশমী পৌর্না-সী চ তথা শ্ৰেষ্ঠা ত্ৰয়োদশী। আসু প্ৰতিষ্ঠা বিধিবৎ কৃতা বহুফলী ভবেৎ। আৰাতে ष তথা মূলমুব্তরাত্রমের চ। জে। ঠাশ্রবণরোহিণ্যঃ পূর্বভাত্রপদ। তথা। হস্তাশ্বিনী রেবতা চ পুষ্যোম্গশির তথা। অনুরাধা তথা স্বাতী প্রতিষ্ঠাদিষু শস্তে।। ১।। বুধোবৃহস্পতিঃ শুক্রস্তায় এতে শুভাবহাঃ । এভিনিরীক্ষিতং লগ্নং লক্ষতঞ প্রশ- ' স্যতে। গ্রহতারাবলং লক্ষ্ম গ্রহপূজাং বিধায় চ। নিমিত্তং শকুনং লক্ষ্ম বৰ্জয়িছা দু,তাদিক। শুভে যোগে শুভে স্থানে ক্রুরগ্রহবিব জিতিত। লগে রীকে চ কুর্মতি প্রতিষ্ঠাদিক মুদ্ভমং । অয়নে বিষুবে তদ্বৎ ষড়দীতি মুখে তথা। এতেষু স্থাপনং কার্য্যৎ বিধিদ্ফেন কর্মণা। প্রাজাপত্তা ভ শয়নৎ খেতে ভূআপনং ভথা। মুহুর্ভে-স্থাপনং কুর্য্যাতথা ত্রাক্ষে বিচক্ষণং ॥ ১০ ॥ হয়শীর্ঘপঞ্চরাত্রে চ । উত্তরাশা-শ্রিতে ভানৌ শুক্রপক্ষে সুরেশর । রুঞ্পকান্তিম ত্রাংশাদৃতে সুরগণান্তি ত। শুক্র-স্যাদ্যং পরিতাজ্য প্রতিষ্ঠাং কারয়েদ্বুধঃ। মাসি মাঘে ফালগুণে বা চৈত্র বৈশাখ-য়োর পি। জৈতে মাস্থবাধাতে শুযোগকরণান্তি। প্রতিপাচ দিতীয়া চ তৃতীয়া পঞ্জমী তথা। मक्षमी प्रभामी देवव दाप्रभी व जरबाप्रभी। अखेमी পৌर्वमामी व প্রতিষ্ঠায়াং সুশোভনাং। গুরুং সোমোবৃধং শুক্রং প্রতিষ্ঠায়াং শুভাবহাং। মেধো-ব্ধোহথ মিথুনং কর্ক টোবৃশ্চিক গুথা। সিংহং কন্যাচ সততং বিজ্ঞেয়াং শান্তিকা-রকাং। উত্তরাসু তথা মূলে রৌজে পুষ্যেহথ শস্তে। বৈষ্ধ্যে চানুরাধে চারবত্যাং রোহিণীযু চ। অশ্বিন্যামর্থ চিত্রায়াৎ ভরণ্যাৎ চ পুনর্বসৌ। প্রতিষ্ঠাৎ কারয়েছি-দ্বান্ নক্ষত্রে মৃগশীর্ঘকে। অয়নে বিষুবে চৈব বড়শীতিমুখে তথা। মিত্রৎ পরমমিত্রঞ্

অতীতে চোর্ত্তরায়ণইতি মকরশংক্রাস্তো ব্যতীতায়ামিত্যর্থ:। দক্ষিণায়নে প্রতিষ্ঠানিষে ধাৎ।। না অন্তং ভূকম্পাদি। আদিশব্দেন গ্রহণাদি।। তানৌ উত্তরাশাং দিশং

অথ প্রতিঠান্থানং তত্তিব। সিদ্ধক্ষেত্রং সরঃ পুণ্যবনং রম্যং নদীত টং। প্রান্থানির্মিতঃ শক্ত্যা মনোরমগৃহাদি চ। হয়শীর্ষপঞ্চরাতে । অথ দিরিয়মোপেতং দেবতান্থানাং শুভাই । পুরো দিশি মথা দেবাঃ স্থাপ্যাঃ শূলু তথা মম। নগরপ্রামন্মধ্যে ও ব্রহ্মণ স্থান্মুভ্যং। আথগুলন্য সূর্য্যস্য পূর্বেণায়তনং শুভাই। মদিংগতং কুশানোর মাতৃণাঞ্চৈব দক্ষিণে। ভূতানামালয়ন্তমিন্ ধর্মরালালয়ঃ শুভাই। চিওকায়াঃ পিতৃণাঞ্চ দৈত্যানাং নৈশ্ব তে ভবেই। প্রচেতসং সমুদ্রন্য সিকুনাং পশ্চিমে ভবেই। ফুণিনাং চৈব বায়ব্যাং বায়োঃ স্থানন্ত তচ্ছুভাই। মন্ধাধিপার্য ক্ষান্থাই উনিচ্যাং শ্বানুত্যতে । বিক্ষোঃ স্থানান্ত কর্মানান্ত ক্রানান্ত লিল্ডাই শুভাই বিক্ষোঃ শুলাই স্থানান্ত । বিক্ষোঃ শুলাই ক্রানান্ত ভিলাবিদ্যারিম্নাচরেই । তদ্বর্ভির্বানিপতিই ভিলাবুশারিম্নাচরেই । তদ্বর্ভির্বানিপতিই ভিলাবুশারিম্নাচরেই । তদ্বর্ভির্বানিপতিই ভিলাবুশারিম্নাচরেই । তদ্বর্ভির্বানিপতিই ভিলাবিদ্যারিম্নাচরেই । তাম্মধ্যইশ্বারণ্যে নদীনাই ক্ষামে তথা । নগরস্য সমন্তাচ্চ কর্মতাহং প্রভিতিতঃ । ভুক্তিমুক্তিপ্রদং পুইনাই বিশেষই শ্রুচাপরেই । তাম্বাহি প্রিক্সিভির্ইই । যাম্যাই শ্রুচাপরই । তাম্বাহির্বিয়াই পরিবজ্জিতং। যাম্যাই শ্রুচাপরই । তাম্বাহির্বিয়াই পরিবজ্জিতং। যাম্যাই

আশ্রিতে উত্তরারণে দতীত্যর্ধঃ। ক্লকপক্ষেপি বোগবাছল্যে কাররেৎ কিন্তু তত্ত্র ত্রােদশীচতু-র্দশ্যমাবস্যাবর্জ্জরেদিত্যাই ক্লকেতি।১১॥ কালভেদেন ভিদ্যতইভি যছজং তদেব দর্শক্রিভি

প্রশান্তরে শন্তৎ নৈখ্তিয়াৎ ভয়দং ভবেৎ। ত্রব্যাদীনাং প্রাক্তির্বাহ বারুণ্যাং রাজ্যসিদ্ধয়ে ।। বায়ব্যাং বর্জন্মেজাৎ কৌবের্য্যাৎ পুষ্টিবর্ক্তনং। ঐশান্যাং বজনং শ্রেষ্ঠং সর্কাসম্পৎকরং নূণাং ।। ১২ ।।

অথপ্রতিষ্ঠাধিকারী ।। দেবীপুরাণে । বর্ণাশ্রামবিভাগেন দেবাঃ স্থাপ্যাহি
নান্যথা ।। ১৩ ।। কিঞ্চ ।। চাত্তর্বনৈত্তথা বিষ্ণু: প্রতিষ্ঠাপ্যঃ সুথার্থিভিঃ ।। ১৪ ।।

অथ ञ्रार्थकोष्टिमक्कन्ः ॥ उद्विव ॥ शक्षत्राजीर्थकूणामञ्जलकावभातकः । **ञ्रा**त्र-নে সর্বাদা শত্যে ব্রহ্মচারী চ শান্তিযুক্ ।। ১৫ ।। অন্যথা কলহোছেগং কুর্য্যারিভ্যং মহাভয়ং। ব্রুমানে নৃপে রাষ্ট্রে স্থাপকে চ নিরাগমে।। কিঞ্চ মাৎস্যে।। অভঃ পরং প্রক্রামি মূর্তিপানাং ও লক্ষণং । স্থাপকস্য সমাসেন লক্ষণং শৃণুত ছিলাং। সর্বাবয়বসংপূর্ণো বেদমন্তবিশারদঃ। পুরাণবেত্তা তত্ত্তোদন্তলোভবিৰচ্ছিতি ।। ১৬।। ক্ষণারবরে দেশে য উৎপন্ন শুভাক্তিঃ। শৌচাচারপরোনিভ্যং পাষ্ওকুল-निष्ण्दः। त्रमः भाजी ह मिल्ल ह जिल्लार्भम् इति श्रेष्टः । উहार्भाहार्भ छञ्चलावाड-শাত্রদ্য পারগং। আচার্যান্ত ভবেন্নিত্যং সর্বদোষ্বিবভিত্ত:।। ১१।। সূর্তিপান্ত-দ্বিধানৈচৰ কুলীনা ঋজৰন্তথা। দ্বাত্ৰিংশৎ ষোড়শাথাপি অকৌ বা আছৈ পারগাঃ। কোষ্ঠমধ্যকনিষ্ঠান্ত মূর্ভিপাঃ পরিকীর্ভিতা: 1 **জীহরশীর্ষপঞ্চরাতে চ** 11 কর্তু-মিচ্ছতি यः পুণ্যৎ মন মূর্ভিপ্রতিষ্ঠয়া । অন্তেবণীয়জ্বাচার্যান্তেন লক্ষণসংযুতঃ। मश्यक्ष उक्त रंगिने ख अन रंगे रेगिन विमा चित्र हिर । यादि ख कूम साधी माना हार्य प्रश হি সোহতি। সংমতঃ সর্ববর্ণাং পঞ্জাত বিশারদঃ। ক্রোধলোভবিনিমুক্তো-দোষমাৎসর্য্যবিজ্ঞিত:। ক্ষয়াপস্থাররহিত: কুষ্ঠরোগবিবজ্ঞিত:। রিক্তাঙ্গো যুবা লক্ষণলফিতঃ। অনন্যদেবভাভক্তঃ শূদ্রারপরিবজ্জিভিঃ। ব্রাহ্মণা-নামলাভে ভ ক্রিয়োবৈশ্যশূত্রো:। ক্রিয়াণামলাভে ভ বৈশ্য: শূত্রণ্য ক্রিয়াণা क्रमाहिमि भृज्ञ निवाहार्याञ्चमई छि।। १४।। शृहदः उक्काहर्यादः ककाता के क-बिद्धिकः। छङ्गः कूद्धी व नवजमू भवा नदा व तकः । अञ्चल व स्थूद्र जिल्लान ভিভাষিণং।। ১৯।। কিঞা সক্ষত্র ব্যতিরিক্তন্ত্ব আত্মানং বেভি যোষিকঃ। সর্ব্ধ-

जेन्द्रामिजानिना मार्कवरत्रन ॥ ১२ ॥

বর্ণাশ্রমবিভাগেটনর দেবাঃ স্থাপ্যাঃ কেনচিদ্বর্ণেন কেনচিদাশ্রমাদিনা চ কশ্চিক্ষেরঃ স্থাপ্যঃ
নচ সক্রৈবের সর্বাইত্যর্থঃ।। ১৩।। শ্রীবিষণুস্ত সক্রৈবের স্থাপ্যইত্যাহ চাতুর্বাগৈরিতি।। ১৪।

ত सम् में श्री न श्र कार्यः ॥ ३६ ॥ दान्य के विष्ठि के विष्ठा कि तान्य में स्वानि कि विष्ठ विष्ठा के विष्ठा विषयः । यद्या यक्ष भागि विष्ठा विषयः । यद्या यक्ष भागि विष्ठा विष्ठा विष्ठा । यद्या यक्ष भागि विष्ठा विष्ठा विष्ठा । विष्ठा । विष्ठा विष्ठा विष्ठा विष्ठा । विष्ठा विष्ठा विष्ठा विष्ठा विष्ठा । विष्ठा विष्ठा विष्ठा विष्ठा विष्ठा । विष्ठा विष्ठा

লকণ্ছীনোপি সপ্তরু নাত্রসংশয়: । অপি পাপসমাচার: সপ্তলকণ্ড জি ত:। দেশিকঃ সন্ত বিজেয়: সংসারাণ্বতারকং। । ২০॥ পঞ্চরাত্রপ্রবৃদ্ধস্থ সিদ্ধান্তার্থস্য তন্ত্ববিষ্ণা স্থাকলকণ্টানোপি আচার্যাঃ স বিশিষ্যতে । হস্য বিষ্ণো পরা ভক্তির্যথা
বিষ্ণো তথা গুরৌ। সএব স্থাপকোজেয়ঃ সভ্যমেত্রদামি তে॥২১॥ কিঞ্চা যেন
ভক্তেণ প্রারক্ষা প্রতিষ্ঠা গুরুণা ভবেৎ । তন্তরপারগাঃ শস্তাঃ মূর্ত্তিপাশ্ছিনসংশয়াঃ।
বড়ক্সবিদুষঃ সর্প্রে মন্ত্রাক্ষণপারগাঃ । এবংবিধৈক্ষিবৈস্ত প্রতিষ্ঠামানভেদাকুঃ।। ২২।।

অথস্থাপকত্বে বজ্জনীয়াঃ। তত্তিব । শৈবং সৌরোনৈতিকক্ষ নয়ঃ সক্ষরকোহশুচিঃ। বৃদ্ধঃ কুৎ সিত্যূর্ত্তিযোমহাপাতকচি হ্লিডঃ। কুঠা চ কুনখা শিত্রা নিঠাবা
ঘর্ষরঃ। অর্কু দা গাগুরা ব্যক্ষা গর্কিছোরধিরস্তথা। তক্ত্রবিদ্ধেষককৈ পরজোহরতস্তথা। কুগুঃকাকষরঃ ক্রাবিঃ কাতরঃ ক্রোধনস্তথা। পুনভূ ক্ষ ষ্বয়মূক্ষ গোলকোনান্তিক্তথা। জড়োহতিগোরঃ খলাটোহানাক্ষঃ স্থল এব চ। অতির্ক্ষোঘৃণঃ পাপা ক্লোক্রেষাইলসস্তথা। ব্যাপন্নোইসংস্কৃতকৈ উলিরোদানএব চ। ক্রভোপবাসহানক্ষ
বৃষলাপতিরেব চ। পণ্যরকোপদাবা চ পণ্যস্ত্রাপারদারিকঃ। আচার্য্য পুঞ্কাদানাহ
বিদ্বেটা পরসেবকঃ। ভোলকঃ সেবককৈ ক্র ব্যুননা পিশুনা গদা। অতিরোগা ভিষক্
চৈব সাহনী সময়চ্যুতঃ। দ্বিজাতিগুরুদেবানাং নিক্ষকঃ পাপকস্তথা। পায়দেশখুমুবর্ণাক্ষোবিড়ালাক্ষন্ত থৈব চ। মৎসরা গগু মালা চ বকব্ জিরভত্তথা। উপায়দেশহানক্ষ ক্রুটঃ কুং সিক্রতঃ। নির্দ্ধানিক্র নিঃ সম্বোনিপুন্গরিবজ্জি তঃ। প্রতিঠাভক্ত্রিকিঞ্জ্জোইবেদবেদাক্ষ পারগঃ।। ২৩।। বর্জ্বরীত প্রয়ন্ত্রেন সর্বজ্মিপা নান্তিকং।। ২৪।। পরবাব্যপ্রমাণ্জ্যেরাক্ষণোবেদপারগঃ। বঞ্জিতঃ পশুশান্ত্রেন নাচর্য্যেত

বিশেষমাহ সর্বাত্তেতি চতুর্ভি:। ব্যতিরিক্তং দেহাদিভিন্নং। সর্বৈক্তরের্জনক্ষণৈহাঁমোপি।। ২০।। পঞ্চরাত্তে শাস্ত্রে প্রবৃদ্ধঃ অভিজ্ঞঃ ।২১।। মূর্ত্তিপানাং লক্ষণমাহ যেনেতি দ্বাভ্যাং। বড়কেয়ু বিছবং বিদ্ধাংসঃ ব্রাহ্মণং বেদভাগবিশেষঃ। ২২।।

উক্তলক্ষণাচার্য্যালাভে তদন্যবরণেপি শৈবাদয়োচবলাং বর্জ্যাইত্যাই শৈবইত্যাদিনাদেশিক-ইতান্তেন। শ্বিত্রং শ্বেতকুঠং তদ্বান। নিজীবী নিজীবনশীল। অর্ফা দং মাংস্প্রন্থিরপোরোগ-বিশেষস্থদান্ গাপ্তবঞ্চ গানরোগবিশেষঃ তদ্বান। অমৃতে ভর্ত্তরি জারজঃ কুণ্ডঃ। পুনভূঃ দ্বিদ্য স্ত্রীঅত্র তৎস্থতোজ্ঞেয়ঃ স্বয়্যুঃ কানীনঃ মৃতে ভর্ত্তরি জারজোগোলকঃ। প্রলাটঃ কেশরহিতমন্তক-মধ্যঃ।ব্যাপল্ল আপদ্যন্তঃ।ভোজকঃ দেবালভোজী।সেবকঃ অল্পনাত্রাধাদেব দেবাপরঃ। গদী সদা রোগযুক্তঃ ভত্রাপ্যতিরোগী। উপায়োনি অবৃদ্ধিঃ স্বদেশক তাভ্যাং হীনঃ। প্রতিষ্ঠাতস্ত্রস্য কিঞ্চিদেব নচ সামগ্রাং জানাতীতি তথা। ন বেদবেদাসানাং পারগঃ তেমামপি কিঞ্চিদেব জানাতী-ভার্ষঃ। ২৩।। নাস্তিকং পাব্যাবিং। ২৪।। পরেষাং ব্যুক্যস্য প্রমাণানি প্রামাণ্যাপাদকানি বচনাদীনি জানাতীতি তথা। তাদুশোপি বেদপারগোপি অধীতবেদচন্তইয়োগি পশুশাস্ত্রেব পাব্যালাক্ষেণ ব্যিতোয়ঃ। স্কার্য্যান ক্রিয়েত যথা পরবাক্যমের নাত্রবাক্যমন্তত্রা প্রমাণং সদেশিক: । যদ্যেতিকজিউতির্বিফোঃ স্থাপনং ক্রিয়তে কৃটিৎ। অসাধকং ভুক্তিমুক্ত্যোনিজলং ভন্ন সংশয়ং।।২৫॥

অথ প্রতিষ্ঠাবিধ্যভিত্রস্য প্রতিষ্ঠানাচরণে দোষং। তত্ত্রৈর। নাভিষেকৎ তু ষং
কুর্ব্যাৎ প্রতিষ্ঠালোভমোহিতঃ। স যাতি নরকৎ ঘোরং সহ শিষ্যৈন সংশয়ং।।২৬ ।।
ইনানীমর্ত্রনায়াস্ত প্রীমূর্তে প্রাগ্রিলিখাতে । প্রতিষ্ঠাবিধিরাক্ষ্য শাস্ত্রতঃ সাধুসন্মতঃ ।। ২৭ ।।

অথ ত্রিদ্র্তিপ্রতিষ্ঠার্ডঃ। সুসাতঃ শুন্নবত্রঃ সন্ রুত্রত্যঃ শুভক্ষণে। তিথ্যক্ষ দৈবতে বিঘেশরং মাতৃশ্চ পূজ্যেও। মাতরশ্যেকাঃ যোড়শ। গৌরী পদ্মা শাচী মেধা সাবিত্রী বিজয়। জয়া। দেবলেনা অধা স্থাহা মাতরোলোকমাতরঃ। বৃতিঃ পুটিশ্চ তথা স্বকুলদেবতেতি।। ২৮।। অথাচার্য্যাদিবরণং।। বৃদ্ধিশ্রাদ্ধং ততঃ কৃত্রা বিধিন্দ্র্রাদ্ধঃ। আচার্য্যাদ্ধানাথ সমর্চায়েও।। ২৯।। এবং ব্রুক্ত তথাহোত্তত্তিয়ং। স্বার্কাপি চভক্ষ প্রুম্প্রাপিনং। তথা মূর্তিগরং তৈকং পুরণ্তত্তিয়াকং। স্বান্ সংপূজ্য পুন্যাহং অন্ত্যাদৈটেত্ত ব্যাহেরও।। তা

অথ নওপাদিনির্মাণ ।। মিতং ষোড়শতির্থৈ কিয়া দাদশভিশ্চ তৈঃ।
দশভিশা, প্রকুমর্কা । মণ্ডপং সমলকৃত্য। সগুধান্যাক্ষুরোপেত্য নদীম্ঘালুকা চিতং।

জ্ঞানাতীতি তথা সঃ যতঃ অবেদপারগঃ বেদার্থানতিজ্ঞঃ অনধীতবেদোবা। অতঃ পশুশাস্ত্রেণ রিপ্লিডঃ। অন্যং সমং। ২৫ ম

প্রতিষ্ঠা স্বরং পৌরহিত্যাদিবিদ্যথা ইত্যাদি রূপা লোকে খ্যাতিস্তন্যাং লোভঃ যথা প্রতিষ্ঠাকর্মাণ অধিকপ্রাপ্তৌ যোনোভস্তেন মোহিতঃ সন্। অভিযেকপ্রতিষ্ঠাং যোন কুর্যাং : ২৬ ॥ প্রতিষ্ঠা চ আ ুর্ভেশ্চলাচলত্বভেদেন বিধা তত্রেদানামত্রলায়াঃ প্রতিষ্ঠাবিধিবিবরণেন নিধ্যতে। প্রাগতি অচলা প্রতিষ্ঠায়মুখ্যত্বাৎ তথাবিধিজ্ঞানেন চলায়া অপি প্রায়ঃ প্রতিষ্ঠাবিধি বিজ্ঞানাছ । শাস্ত্রভঃ পুরাণাগমাদিভা একেয়া তত্ত্বচনানি ক্রেটেণকর সংগৃষ্ঠ । সাধুনাং সম্মতইতি সাংপ্রদারিক তত্ত্বস্বতিশারশিউগণ্যমাহৈতাব লিখ্যত ইত্যর্থঃ । ২৭ ।।

कुंगित क्र्यानि निर्माण पित्र मानि विनमः। जिथिः स्थिक निष्य ए एसार्मित् । श्रुक्षनस्थ क्षेत्रीनिन्नित्र क्ष्यां । स्रित्रानि । स्रित्र

কিষেতাদিবিকপশ্চ শক্তাত্সারেণ প্রাসাদপ্রদেশাত্সারেণ বা। তচ্চ প্রীহ্রশীর্ষপঞ্রাত্তহ

তোরণাদিযুত্ত দিবাৎ শভাভর্যাদিনাদিতে ।। ৩১।। তথাচ ভবিষ্যো প্রসাদা-নাতিদূরে ও কুর্য। ২ মঞ্জনগ্রহঃ। দশবাদশহতং বা পরি কিন্তং সমন্তহ ।।৩২।। চত্তভিত্তোর নৈযুক্তিং পূস্পদামাভিশেভিতং। পুরেশাভুষর মশ্রথাং বটং পূর্বাদিতঃ क्रमार । इन्दर खेदरमार बेकु को मृमार इस प्रवस्ति वर । मृभिन खर मूमरम् छेर प्रवित्र । সংযুত্। স্থাওলসোপরি কিন্তং সময়াদুপশোভিতং। নদীতীরন্দা যুক্তং বাল্কা-য়াঞ্চ কারিতং।। ৩৩।। মাৎ স;।। প্রনাদদে। তেরে বাপি পূর্ণের ব: মন্ত্রপোভবেৎ। হস্তান্বোড়শ কুল্লীত দশ দ্বেশ বা পুনং। নথে বেদিকয়া যুক্তঃ পরিকিপ্তঃ সম-खाउः। मक्ष शक ठाउँकाशि कड़ान् कूक्षीं उ विकार। ठाउँ छिए उटिंग् जिला ए छशः স্যাজন্তর্মুখঃ ।। ৩৪ ।। পুক্রং ভারং ভবেৎ পূর্বং যাম্যানীড্যারং ভবেই । পশ্চা-দশ্বযাটিত। নৈয়প্রোধং তথোত্তরং। ভূমৌ হস্তপ্রবিকীনি চতুর্হতানি চোচ্ছত্র। স্পালিপ্তান তথা পুকং ভ্তলং স্যাৎ সুশোভনং। বস্তৈনানাবিধৈতদ্ব পুস্পালব-শোভিত। আহ্মশার্ঘপঞ্চাত্রে চ। প্রাসাদং বেফীমিত্বা ভ কুর্য্যাক্ প্রভরং বুধঃ। ক্ত্রা গুপ্তৎ ভক্তঃ পশ্চাদ্যাগমঙ্পমারভেং। গর্ক্তপূত্রৎ তু নিঃসার্য্য প্রাসাদ্য্যাগ্রতো গুরুঃ। রুদ্ধা ভূমিৎ জু নিঃ শল্যং মগুপং সূত্রতাত্ত । ইানস্ত মগুপাঃ কার্য্যোহানে ত্বায়তনে সদ্দি উক্তনে ভূতমং কার্যোমধামে নধামতথা । দশাইক্তং হানং তু मधार चारमा (वाजनार। विस्मार्यः ठजुर्किः समुख्यरमा उभर विका ठछई अपिया নানাং প্রাসাদানাং হথাক্রং। মওপান্ট হও।দীন্ কংগ্রেছেদবৃদ্ভিঃ। সম-বৃত্তং চতুর্ধারং চতুস্তোরণভূষিতং। বিচিত্রস্তাবিন্যাসং রচনাচরিতং শুভং। গৃপ-নির্গমনোপেতং মণ্ডপং করিয়েদুধঃ। কিঞ্ ভতৈর । মন্ত্রপং মণ্ডয়েদার্জনাখ্যাভিত্র ममञ्जः । विमरत्न विভारनन श्लोक† ভिष्ण ভূवरत्र ।। ৩৫ ।। पर्भर १ व्हास रेव्हें है खबरेखिकि मृषदा< । कनरेमर्ब किंका जिल्हा नाथारे≲ि धुरैकस्था । मधगः जृषदि-

নতো ব্যক্তং ভাবি। যদ্যপি দশাইছন্তং হীনং তু মধাং দাদশ্যে ড্ৰাং । বিংশইন্তং চতুর্বিংশনুত্মস্যোদিতং দিজেতি হয়শীর্ষপঞ্চরাত্রোক্তং ওবাসি ভবিষ্যপুরাণান্যস্থারে শিফাচারতঃনাধুপদ্ধতিকারবর্গসন্মত্যা লিখিতং মিতং বোল্লাভিছ্ বিভং ভার্মেশ্রণ ভবিষ্যপুরাণানিবচনতো হগ্রে
নামগলস্কৃতং পুল্পানামবিতানপল্লবাদিভিছ্ বিভং ভার্মেশ্রণ ভবিষ্যপুরাণাদিবচনতো হগ্রে
ব্যক্তোভাবী ॥ ৩১॥ স্বলিখিতার্থং প্রমাণয়ন্ ভবিষ্যভাগিদিবচনানি সংগৃহণতি প্রাসাদানি
ত্যাদি। এবমগ্রেপি সর্ব্য জ্যেং। অগ্রভঃ পূর্বেদিনি আদৌ বা সমন্তভঃ সর্ব্বভং পরিজিপ্তং
॥ ৩২ ॥ চপ্তস্তোরণান্যেবাই প্রক্ষেতি পুক্ষাদিকং তন্তু মিনধ্যে ইন্তমাত্রং প্রবেশয়েং। উপরি চ
হস্তচতুইন্তারং দৃশ্যং কুর্যাদিত্যর্থঃ। পুনঃ প্রস্তুতং মণ্ডপমের বিশিন্তি সুপ্লিপ্ত মিতি সার্জেন।
স্পলিপ্ত ইত্যাদিসপ্তমান্তপাঠে চ স্থাজিলিপ্তাইতিরা পাঠঃ। ততল্ড স্থিলে কারিতমিত্যময় ॥ ৩৩॥
উত্ব্যুশভন্তদ্বিরঃ ॥ ৩৪ ॥ বেদবৃদ্ধিতঃ চতুর্হন্তবৃদ্ধিকমেণ অইহন্তে প্রাসাদে দ্বাদশহন্তমপ্রপং
দাশহন্তে চ শোড়বহন্তং ইত্যেবং কল্পরেদিত্যর্থঃ।। ৩৫।। ঘটনীঃ বৃহদ্ঘনীভিঃ স্বংপঘণ্ট ভি

देखन्य काङ्गती वाल्कार खडाः । वाङ्राम्हरम्य विकित्वर शिक्षणताम ध्याक्रायर ।
किथा क्रयाखिष्ट्रा हिन नाध्याधः श्रुक्षः अवह । जाइनार्श्य कथिणः शृक्षाम्य यथाक्रमः । अक्रडः थानक्षुमा हजूङ्गः उथाक्ष्र्यः । विश्वाख्य मानाः शृक्षितीयाक्ष्रम्य विक्राख्यः । जिर्याक् श्रुक्षमानः नार खडानामक्ष्रमानः । रेग्नाः शृक्षितीयाक्ष्य खानाः शृक्षाख्य जाइनाः । खङ्गमञ्जयप्राक्ष्रमान् मर्जिक्षक्ष्यमः यूजान् । शृक्षितीयाक्ष्य खानाः शृक्षाख्य जाइनाः । खङ्गमञ्जयप्राक्ष्यान् मर्जिक्षक्ष्यमः यूजान् । शृक्ष्यान् यानाशिक्षिक्षान् जाइनान् शिक्षक्ष्यम् कार्याः । विद्यान् वाक्ष्यान् वाक्ष्यान् वाक्ष्यान् वाक्ष्याक्ष्यान् वाक्ष्याः । व्यवपाद्यान् विक्षाः । व्यवपाद्य विक्ष्यान् वाक्ष्याः । व्यवपाद्य विक्ष्यानः वाक्ष्याक्ष्यानः । व्यवपाद्य विचानकः । व्यवपाद्य व्यवपाद्य विक्ष्याव्य किष्ठः । विचानकः । व्यवपाद्य विचानकः । विद्यानकः । विचानकः । विचानकः । व्यवपाद्य विचानकः । विचा

অথ তত্র বেদ্যাদিনির্মাণং!! তমগুপস্য মধ্যে তা বেদীৎ হস্তোচ্ছিতাং সমাং!
পক্ষর্থনিতাৎ দিব্যাং চন্ত্রসূং প্রকল্পয়েৎ।। ৪০ ।। এশান্যাং হস্তমাত্রাঞ্চ প্রহ্বেদীৎ সমাচরেৎ। তথা কুণ্ডচন্তক্ষ বেদ্যাং প্রাচ্যাদিদিক্ষু হি। তচ্চ হস্তমিতৎ
যোনিবক্ত্রাচ্যং সত্রিমেখন্তং। চন্তরসূর্দ্ধিনীতাংশুবর্ত্বলাজাক্ষতী ক্রমাৎ। দীক্ষাবিধাে পুরালেখি কুণ্ডলক্ষণসত্র ত । চন্তর্দিক্ষু ত্যজেদ্বেদীমস্কুলানি ত্রয়োদশা।
আচার্যকুণ্ডং কুর্য্যাচ্চ প্রহ্বেদ্যান্ত দক্ষিণে। হন্তমাত্রাবৃত্তি তচ্চ চন্তরসুং সুকক্ষাং। ৪১॥ তথাচ তত্রৈব।। তিভাগেনার্দ্ধভাগেন কুর্য্যাদেদীৎ সুশোভনাৎ।
হস্তমাত্রোচ্ছিতা কার্য্যা মধ্যে সম্যাগ্যাবন্থিতা। কিঞ্চা। চন্তদ্ধোণং ভবেৎ কুণ্ডং
পূর্ব্বস্যাং দিশি সর্বাদা। অর্দ্রচন্ত্রং ভবেদ্যাম্যাং বারুণ্যাং বর্ত্ত্বং ভবেৎ। পদ্যাতমুতরে ভাগে কুণ্ডং স্যাংশিদ্বজ্বজনেতি। ৪২।

<sup>।।</sup> ৩৬।। দ্বিট্ দ্বাদশকাষ্ঠাভির্দশ বা বেউনে অনুলানি যাগ্য তং ষট্ চত্বারি বা অলুলানি যাগ্য তং । বাশন্দব্যবধানেনাপি সমাসাদিকমার্যং। বিকল্পশ্চ পূর্ব্বাক্ত মগুপ মানাপেক্ষয়।। ৩৭।। উপরিটাৎ ভোরণোপরি তত্তং প্রসঙ্গাৎ বর্জ্বমানং স্থাপঘটং বস্থাগোন ভোরণসাই মাংশেন।। ৩৮।। বিমানেন বিভানেন ইত্যুক্তং ভদেব বিশিন্ধি নবেনেভি সার্জ্বদ্বায়াং বক্তেণেভি শেষঃ। ৩৯ সমাং পার্যাদাবেকরপাং ।। ৪০।। ক্রমানিভি প্রাচ্যাং চন্তরসুং দক্ষিণস্যামর্জচন্দ্রাকারং । পার্নিমায়াং বর্জ্বলং উদীচ্যাঞ্চপআকারমিভার্থঃ। অত্য প্রভিষ্ঠাবিধ্যে তু চতুর্দ্ধিক্ষু ব্রয়োদশাঙ্গুলানি বেদ্যংপরিভালেও ভাবও প্রদেশং বেদ্যাঃ পরিভস্তাক্ত্বাক্ত্রানি কুর্যাদিভার্থঃ। তথাচমাৎক্যো।। বেদ্যাভিত্তিং পরিভাজ্য ক্রয়োদশভিরঙ্গুলৈরিভি॥ ৪১॥ বিজ্ঞাণেন মণ্ডপ্যা ভৃতীয়াংশেন্ন। শর্জ-জাগেন বা পরিমিভাং।। ৪২॥

অথ কুমন্থাপনং ।। যজমানঃ সপাত্রীকঃ পুত্রপৌত্রসমন্তিই। অতিগ্রিভাগ সহিতঃ
পাশ্চাদ্বেল প্রবিশেন্তভঃ ।। ৪৩ ।। নাসেন্তসা চত্র বিদ্বাহিন কুটো যবোপরি ।
জলপ বির্বাহিন প্রবিদ্যুতী শুভৌ ।। ৪৪ ।। কুইছবং মণ্ডপং পূর্বং চতুর্
র্লারেষু বিনামেং । অব্যান কলসানকৌ জলকাঞ্চনগতিবান্ ।। চূতপল্লবসংচ্ছনান্
সিতবন্ত্রযুগান্তিবান্ । সুক্রদনফলোপোতান্ চন্দনোদকপুরিতান্ ।। ভবিষ্যে ।।
অকালান্ কলসানকৌ চতুর্লারেষ্ স্থাপয়েং । অন্তঃকাঞ্চনসংযুক্তান্ ফলপুলে
রলংকতান্। অইতিযুগলৈর্বিপ্রতিবাহাং তু নিবেশিতৈঃ । চন্দনাগুরুতোয়েন পূররিদ্বাযথাক্রমং ।। ৪৫ ।। কিঞ্চ হয়শীর্ষপঞ্জরাত্রে ।। শাতকুল্ভময়ান্ কুর্যাং রাজভান্ শুক্রজানথ । জলাচকপ্রপুরাংশ্চ লোহন্তান্ কারয়েজ্তান্ । মূলুয়ান্ কলসান্
বাপি পক্রিয়োপমান্ শুভান্ ।। অইতিংশাধিকশতপলপুরাংশ্য স্ত্রায়ান্। আরভোন্ স্কেটারহিতান্ কালমণ্ডলবন্তিভান্। আহ্নতঃ কলসান্ বস্তুপূততোমেন পূররেহ । সহিবগান বস্তুযুগাবদ্ধকণীন্ধিবেশয়েং ।। ৪৬ ।।

অথ স্থানমন্ত্রপাদি নির্মাণং ।। ক্র্যাদ্ভরভতনাদ্ধিবাসনম্ভপাহ। চত্র্রিখং চতুর্বি কোণং স্থানমন্ত্রপং। তত্তেউকাভিঃ পক্ষা ঃ বিত্রিভ্তাঞ্চ বেদিকাং। বিদ্ধ্যান্ত্রভাগ বাথ সকলং বাল্কাময়ং।। ৪৭ । তথাই ভবিষ্যে। এবং কুশোভনং ক্রা মণ্ডপং তু সুহোরণং। তবৈয়বোদ্ভরপার্শ্বেই কর্ত্রন্থ স্থানমন্তর্পঃ। সম্মাভন্ম তৃ কর্ত্ব্যং স্থিতিলং বাল্কাময়ং। মাৎস্যে। এবং সভোরণং ক্রা ভাবিনাসনম্ভপ্যাত্রির তঃ কুর্যাৎ সানমন্ত্রপম্ভ্রমং। তদর্জেন ত্রিভাগেন চতুর্ভাগেন বা প্রঃ।। ৪৮ ।। হয়শার্ষপঞ্জরাত্রে। সানার্থং কলসার্থঞ্জ স্থান্ত্রন্থ বিভাগের চা জলনির্মনোপত্যক্রিন সানমন্ত্রণং। এশান্যাং কলসার্থঞ্জ স্থাদ্দিক্রগেচিরে। প্রান্ত্রাণ মন্তর্পং কুর্যাদ্দির্গাদ্ধান্তর্যার্থ্যায়ত ইভি।। ১৯।।

অথ ধুজপতাকাস্থাপনং।। অথ বাদ্যাদিভিদিবৈয় বিচিত্তম গ্লম্বনিঃ। রূমা মহোৎসবং ন্যায়েৎ পতাকা বিধিৰদাকুঃ। তদ্বিশেষোভরিয়ে । পূর্বেণেদ্যুষুধা

ততোযজনানঃ প্রাদি সহিতঃ পশ্চিমভারেণ তং মগুপং প্রবিশের ॥ ৪৩॥ ন্যাদেঘজনানো গুরুক্ষ। তস্য মগুপদ্য ॥ ৪৪॥ অকালান্ কুফবর্ণতর ন্। অহতৈন নৈঃ ॥ ৪৫। অথেতি বিষ্-শেপ গুরুজান্ কোটরহিতান্ নিশিছ্দ্রান্ কালেন শ্যামেন মগুলেন বিন্দুন। আবর্থেন বা বির্দ্ধি । ভান্॥ ৪৬॥

চত্বাবি দ্বারাণি কোণাশ্চ যদ্য তং । অথবা অ নমগুপ্দ্য ভূতলং দকলমেব বালুকাময়ং বিদ্ধাাং। যদ্যপি ভবিষ্যমৎদ্যপুরাণয়ে দ্বজিপতাকানিবাহণানন্তরমেব স্থানমগুপনির্মাণমেব লিখিতং তথাপি হয়নীর্ষপঞ্চবাজোক্তামুদারেল নির্মাণপ্রমঙ্গেহি আন্ নিখিতং ॥ ৪৭ ॥ ওদ্য অধিবাদমগুপ্দ্য অর্দ্ধেন তৃতীয়েন ভাগেন বা চন্তর্থেন বা পরিমিতং ॥ ৪৮॥ স্থানার্থমেকং আনকলসার্থং কৈং স্থানজব্যার্থং তৈক্মেবং মঞ্পত্রয়ং কুর্যাৎ তদেব বিবিচ্যাহ জলেতি দার্দ্ধেন । স্থানদ্ব্যান্ধ্ব বাগজব্যং স্থান্বাল প্রাধ্যান্ধি। ৪৯ ॥ মৎদ্যপুরাণে ম্বজপতাকয়োরভেদাভিপ্রামেণ

कांबामार बंघामधिनविভार । कृष्णरेक्षव जू यामाग्राम रेन अकार जू जरेबव ह । हेन्द्र গোপনিভাকারাং বারুণ্যাং চৈব দাপয়েছ। শিরীষপুষ্পপ্রতিমাং বায়ব্যাং বিনি-বেশয়ে । কৌবের্য্যাং পীতবর্ণাং তু এশান্যাং পাগুরা ভবে । মাৎস্যো ধুকাদি-রোপণৎ কার্যাং মগুপস্য সমস্ততঃ। ধৃজাংশ্চ লোকপালানাং সর্ক্রদিক্ নিবেশয়েৎ। পতাকা জলদাকারা মধ্যে স্থানগুপস্য তু ।। ৫০। হয়শীর্ষপঞ্চরাতে । পঞ্চত্ত-প্রমাণং ত পুরংক্র্যাদিচক্ষণঃ । বৈপুলাং চাদ্য কুর্কীত ষোড়শাঙ্গুলসংমিত্ । সপ্তব্যোচ্ছিত্তং চাদ্য দশুং কুর্যাং সুরোভমং। সপ্তহন্তভোদৈর্যাদিনাদাদ-শাসুলাঃ। দ্বিপঞ্ছস্তদণ্ডেযু পতাকাস্ত্র নিবেশয়েৎ। বাহ্যদেশে মণ্ডলস্য তোরণা-ভাতরে তথা৷ অফৌ পূজাঃ স্থাপনীয়াঃ পূর্বে দিক্রমযোগতঃ ৷৷ তারুণোগ্নিনিভশৈচব ক্ষণ শেকে ২থ পীতকঃ। ককুৰণ্ডথা খেতঃ সর্ববর্গস্থাব চা। ৫১ ৷৷ অথ ধুজা-দ।পণলে•কপালপূজাবিধিঃ।। হয়শার্ষপঞ্জরাতে। কুনুদঃ কুনুদাখ।শচ পুণুরীকোথ বামনঃ। শল্পকণঃ ধকানেত্রঃ সুমুগঃ সুপ্রতিষ্ঠিত। ইত্যেতে বিষ্লোকস্ট দিক্পা-लगन । त्रकाः ॥ ७२ ॥ कार्षि मरशा छरेनयू कि। शृक्षनीया यशानिना भाष्ट्रमः। शक्त पूर्णामिक १ कूर्या १ देश रेश्वर खित्र नुक्या १। विनक्ष लाक पाल छाः श्वस्य में स् বেদরেং।। ৫৩।। উর্দ্ধে তু ত্রকাণে দেয়কুধস্তাচ্ছেয্বাসুকেঃ। সংহিতায়াস্ক যে মন্তা ন্ত দৈৰত্যাঃ প্ৰাত । তৈঃ পূজা লোকপালানাৎ কৰ্ত্ৰ্যাহি সমন্ত ।। ৫৪ ।। इस मेर्य भक्ष दावा। ७ जासाहीन्य सहाताका श्रिताक वजुङ्ख सवलवाहनावृ ७ इहा गर्छ -গচ্ছ তিষ্ঠ তিষ্ঠ পূর্ব্বদ্বারমভি রক্ষ রক্ষেত্যাবাহ্য ওঁ ত্রাভারমিন্দু মতানেনার্ঘ্যৎ দত্ত্বা গলাদিভিরচ্চয়েৎ টও আয়াহি চিত্রভানো মহারাজাধিরাজ শক্তিহন্ত স্ববলবাহনা-বৃত ইহাগচ্ছাগচ্ছ তিষ্ঠ ভিষ্ঠ আর্মেয়ীং দিশং রক্ষ রক্ষেত্যাবাহ্য ওঁ অগ্নিমূর্দ্ধা-দিব ইত্যনেনার্যাং দত্ত্ব। গলাদিভিরর্জয়েৎ। ওঁ আয়াহি যম মহারাজাধিরাজ দণ্ড-হস্ত স্বৰলবাহনাবৃত রক্তান্তায়ভলোচন ইহাগচ্ছাগচ্ছ তিন্ঠ তিন্ঠ দক্ষিণদারমভি-वक्त व्रक्तिकार्गिका अँ रेवक्श्वर भश्यमनिश्वित्रात्तिनार्घार पञ्चा शक्तां पि चित्रार्घात्र । ওঁ আয়†হি নিঋতি মহারাজঃধিরাজ স্বলবাহনাবৃত খড়্গহস্ত মহাবল ইহাগচ্ছা-গচ্ছ তিই তিই নৈখাতীং দিশমভিরক্ষ রক্ষেত্যাবাহ্যওঁ এম তে নৈখাতে ইত্যানেনা-র্ঘাং দত্ত্বা গন্ধাদিভিরচ্চরেৎ। ওঁ আয়াহি বরুণ মহারাজাধিরাজ পাশহন্ত স্ব বলবাহ-নাবৃত ইহাগচ্ছাগচ্ছ তিষ্ঠ তিষ্ঠ পশ্চিমদারমভিরক্ষরক্ষেত্যাবাহ্য। ওঁউরু হিরাজা-

सकामिताहिमिछा। मुळ्या. পশ্চাৎ পতাকাক समाकाति चुळार। उखि विश्वस्य हम्भीर्य भक्षताळ वि । दिश्वस्य मण्या हि । प्रमे प्रकारित हा अर्थ । उद्यापा विश्वस्य प्रमाण पर्यम् । वर्ष । वर्ष

বরণশচকারেত্যনেনার্গ্র দত্ত্ব: গলাদিভিরচ্চ য়েৎ। ওঁ আরাহি প্রম মহারাজাধি-রাজপুজহন্ত স্ববলবাহনাবৃত ইহাগচ্ছাগচ্ছ তিন্ঠ তিন্ঠ বায়বাং দিশমভিরক্ষ রক্ষেত্যা-বাহ্য ওঁ বাত আবান্ত তৈষজ মত্যনেনার্য্য দত্ত্বা গলাদিভিরচ্চ য়েৎ। ওঁ আয়াহি সোম মহারাজাধিরাজ শশহন্ত স্ববলবাহনাবৃত ইহাগচ্ছাগচ্ছ তিন্ঠ তিন্ত ইল্লার-মভিরক্ষ রক্ষেত্যাবাহ্য। ওঁ সোমং রাজানমিত্যনেনার্থাং দত্ত্বা গলাদিভিরচ্চ য়েৎ। ওঁ আয়াহীশান মহারাজাধিরাজ শূলহন্ত স্ববলবাহনাবৃত ইহাগচ্ছাগচ্ছ তিন্ঠ তিন্ঠ তিশানীৎ দিশমভিরক্ষরক্ষেত্যাবাহ্য। ওঁ ইশানায় নমস্যেত্যনেনার্থাং দত্ত্বা গলাদিভিরচ্চ য়েৎ। ওঁ আয়াহি চত্তর্মুখ সর্বাকোধিপতে সুক্সুবৃহন্ত স্ববলবাহনাবৃত ইহাগচ্ছাগচ্ছ তিন্ঠ তিন্ঠ উর্দ্ধাৎ দিশমভিরক্ষ রক্ষেত্যাবাহ্য। ওঁ হির্ণ্যান্ত্র সমবর্ত্তাপ্র ইত্যনেনার্যাৎ দত্ত্ব। গলাদিভিরচ্চ য়েৎ। ওঁ আয়াহি অনন্ত মহারাজাধি-রাজ স্ববলবাহনাবৃত লাজ্বাহন্ত ইহাগচ্ছাগচ্ছ তিন্ঠ তিন্ঠ অধ্যাদিশমভিরচ্চ রেং। ওঁ নারাহ্য। ওঁ নারাহ্য সর্পইত্যনেনার্যাং দত্ত্ব। গলাদিভিরচ্চ রেং ।

অথ প্রতিষ্ঠাকর্মারম্ভ: ।। দ্রব্যাণি সর্বাণ্যাহ্যত্য রুত্বা রুষ্ণার্চ্চনাদিকং। বেদ্যা-मानिश्र ठक्तांपि भेग्रापि तहरत्रञ्चः ।। ७६ ।। ७थाह चरैक्व । भाषधान् नास्टि-কান্সর্বান্দেববা আণদূষকান্। দীকাব হিজ্তান্সর্কান্ হেত্রাদরভাৎতথা । নি-বার্য্য প্রারভেৎ কম বৈক্ষবৈদ্য ফিভেঃ সহ। আছত্য সর্বাধ্য সূত্র সূত্রং বিই-রাণি চ। যক্তপাত্রাণি সর্বাণি স্থাপ্য যুত্রন দেশিকঃ । স্থেতবস্ত্রপরীধানঃ সোফীয শ্চন্দনোকিতঃ। অঙ্গুলীয়কহন্তশ্চ স্মালস্কারভূষিতঃ। আত্মানং বিষ্ণুবৎ পূজ্য গন্ধ-পুষ্পাদিভিগুরিঃ। ধ্যাত্ব। দেবং বিষ্ণুক্রপৎ মন্ত্রান্তক্রমথে। শুচিঃ । হরিছ প্রাম্য विकाभा मृर्खिभानिभ भूषरा । निर्वा भूरिका सम्बद्धियुरेग्रात मूलीरे त्रतथा करिनः । निभू-বৈঃ শিল্পিভিঃ সার্দ্ধং ভতঃ কর্ম সমাচরেৎ । পঞ্চাব্যেন সংক্ত্য শোধ্য কুন্তান্ বিচক্ষণঃ। স্থাপয়েমুর্জিপান্পশ্চাৎ কুণ্ডে কুণ্ডে ত দেশিকঃ। কিঞ্চ। ক্রীছীনাছভঃ দেবেশং বাসুদেবেন চার্চয়ে । ক্ষিপেচ নারসিংহেন পাতালে মুষলেন তু। সিদ্ধা-র্থকান্ কিপেক্যায়য়ৃসিংহমত্তেণ মল্লয়েৎ। রক্ষোঘান্ পঞ্চাব্যেন প্রাক্ষেত্যম-মাদরাং। ততন্তামুময়ং কুড়ং মৃণ্যুয়৲ বা নবং দৃত্। জলপূর্ণ স্থাপয়িতা সরঙ্গক-ব্রকাযুতং। ঐশান্যামচ্রেভিয়িন্ সাঙ্গং গ্রাদিনা হরিং।। ৫৬।। তর্মারেণ করকাং শতবারান্ত মত রেং। তদ্ধারা চিছেরয়া সিঞ্চেরগুপং তং প্রদক্ষিণং। কুডং তং পৃষ্ঠভোনীত্ব। কুড়মন্ত্রেণ দেশিকঃ । ব্রীহীন্ সংস্কৃতঃ সর্বাৎস্ত কুড়ৎ ভত্তোপরি পুন: সংপ্রায়ে ছিফুৎ কলনেষু সমাহিতঃ। বস্তুযুগ্যেন কলনমে-मारमर ॥ ६१ ॥

জ্ব্যাণি পূজোপকরণাদীনি। বেদ্যাং অধিবাসন মণ্ডপান্তর্নির্দ্মিতায়াং।। আদিশবৈদ্য হীতমগ্রে ব্যক্তংভবিষ্যতি।।৫৫।। বাহুদেবেনৈত্যাদয়ো মন্ত্রাঃ।।৫৬।।তং অধিবাসার্থ নির্দ্মিতং মণ্ডপং।। ৫৭। চক্রাজ্ঞ সংজ্ঞং মণ্ডপং। তচ্চ বোড়শারং বা চক্রং অফদ্লপদ্মার্ভং তছ্হিশ্ভসুং চন্তর্মারং লিখে- কেন করকা মুধঃ। ছাদ রিছা ততে গৃহ্য করণীৎ মণ্ডলীৎ নয়েছ । চন্তরুসং চন্ত দুরিং চক্রাজ্যার্কারকং। পঞ্চবর্নে চূর্নে দ্বাদার মথাপি বা ।। ৫৮।। বেদ্যামেবং লিখিছা চ মণ্ডপে পূর্বাদিকণে। চন্তর্ন্তঃ চতুক্ষোণং মধ্যে পক্ষকভূষিতং। চন্তর্দ্ধারং তু চূর্নেন অন্তিকং মণ্ডলং লিখেছ। তস্যোদ্ধেনি কা সা পর্যাক্ষং কুশান্ সংখার য়েভতঃ। ঘোণে যোগেতি মন্ত্রেণ গল্ধভায়েন প্রোক্ষয়েছ। তুলিকাং বিন্যাসন্তর্ত্ত দিব্যাং পট্ডাংশুকা হিতাং। উপধানদ্বয়ৎ কুছা পার্যাং গেণ্ডুক্মের চ। কপোলধারণং কৃছা কুর্যাদ্রিং বিতানকং। পুজায়ালাপরি ক্ষিপ্তাং মুক্তাহারো সন্দোভিতং। কুর্যাছ পুলাগৃহং ক্র্যাং সক্রাণ্ডাই বিতানকং। পুজায়ালাপরি ক্ষিপ্তাং মুক্তাহারো সন্দোভিতং। কুর্যাছ পুলাগৃহং ক্রণ্ডাই মল্যাগুরুপ্তিত্বং। বিদ্যাধিপান্ত সংপূজ্যাঃ শক্তা। দিক্ষু বিদিক্ষু চ। বিশ্বর্মধুনিহ। চৈব তথৈবচ ত্রিবিক্রমঃ। বামনশ্চাপি দিক্ষেত্ত পূর্বাদ্যাসুব্র স্থিতাঃ। বিশ্বরিক্রাই পালনাভন্তথৈর চ। দামোদরশ্চ সংপূজ্য আয়েয়াদিব্যব্দিক। গুলা। চন্তর সুণ চর্ডাদিশান গাং স্লানমণ্ডপে। চন্তঃ স্তম্ভারুতে রম্যে তম্মধ্যে বেদিক। গুলা। চন্তর সুণ চর্ডাদিশান গাং স্লানমণ্ডপে। চন্তঃ স্তম্ভারুত রম্যে তম্বধ্যে ত্র নিরেশয়েছ। ৫৯।।

व्यथं कन्नमधिवाननः । তত্তিব।। श्रान्जवाि मर्सािन न्नानीय विष्क्रनः।

निक्तिं सानकृत्यं कृष्ठा । सानि । सानि । हिल कृ निक्क वाािन्छाः

छाः। कन्नमः द्वां भनीयाः कि छित्यं स्वां । छ०।। वर्षे छुयुद्ध का व्यथं

हम्म का मानि श्री क्रमान्। भागां ज्ञां भा भूकाः मह कम्य वकु ना मुक्कान्। भद्या । श्रु यां । भ्रानीय भृत्यं कृष्ण विनिक्ति । भ्राप्त । श्रु वां । महा म्यू प्राप्त । भ्रु वां । स्वां । भ्रु वां । स्वां । स्वां । स्वां । विष्यः ।

सा विक्ष भा ने वां । स्वां । छ०।।

विक्ष भा ने । स्वां । स्

দিতি জ্ঞেয়ং॥ ৫৮ ।। তল্য স্নানমগুপদ্য মধ্যে যা বেদিকান্তি তত্র তদ্যাং পীঠংনিবেশয়েৎ । ৫৯ কলসাধিবাদনাদিকং ম ৎসাভবিষ্যামুক্তমপি ভগৰতা শ্রীহয়শীর্ষণাক্তত্বাছপযুক্তরা নিধ্যাতে স্নানেত্যাদিনা। শাতকুল্পময়ানিত্যাদিনা কুলেক্ষণং চোক্তমেবান্তি দিক্তস্থাণি চাত্রে স্বয়্মের বক্তব্যানি বটোভুয়রে ন্যাদিত্যাদিনা।। ৬০ ॥ পরে পিক্চমকুল্পে ।। ৬১ ।। বিষ্ণুপর্ণাদ্যাশ্টভবরে ন্যাদেতি জ্রেয়ং॥৬২॥ কলানি বদরাদীনি আমুরসাদীনি বা॥ ৬০ ।। একত্র একস্মিন্ঘটো।৬৪।

বালুকা ভোয়ং বিন্যাসদপরে ঘটে। বরাহ বৃষনাগেত বিবালোদ্ভ স্ভিকাং। কুল-हर्मम् नम् । विनारमम् शद्र घटे । मृक्ति। शक्तम् शक्तम् कूममा शामद्र घटे । ভীর্থ পর্বত মৃদ্ভিন্ত যুক্তমপ্যপরে ঘটে। নাগকেশর পুষ্পঞ্কাশ্মীরমপরে ঘটে। व्यान विक्र कर् देवः भूविष्य वाष्ट्र नारमः । विकृषीर विक्र में कुला स्कारिकः বজুমেবচ। এতানে।কত্র নিফিপ্তা স্থাপয়েদেব সত্য।। ৬৪।। নদীনদ ভড়াগানাৎ निनिद्रभद्रः नात्रः । এकामोजिभाप চानान् मधाभ कलनामात्रः । शृदिजान् গন্ধতে হৈন ধান্তাংস্তাংস্তুমন্তরে । ত্রীসূক্তেন সমস্তেন সর্বানেব সক্ষৎ সক্ৎ ।। व्यथार्घ। जनामि छाथनः उरेजन ॥ कलमानिधिनारेम। वर्मानेन् विनिदन मास । यवः निकार्थकः शक्तः कृणायः ठाक्क ७ ७था। जिलान् कतः ७थ। भूष्ण मर्व। र्थ পূর্বতো ন্যবেং। পল্লং শ্যামলতাং দূর্বাং বিফ্লুপর্নাং তথা কুশান্। পাদ্যার্থং দক্ষিণে ভাগে স্থাপয়েদেশিকোত্তমঃ। স্থাপয়েৎ পশ্চিমে ভাগে মধুপর্কৎ সুসৎবৃতং। কল্পোলকং লবজ্ঞ তথা জাতীফলং শুভং৷ উত্তরে স্থাপয়েড্যুগো দ্রবামনায়ত ৷ আব্যেঘ্যাং স্থাপয়েৎ পাত্রং পূর্ণ দূর্বাক্ষতৈবু ধিঃ। নীরাজনার্থং দেবেশ দেবদেবস্য সর্বদা। নৈশ্বত্যামুদকং গদ্যুক্তৎ সুনায় বিন্যসেৎ। উদ্বৰ্ভনায় বায়ব্যাং গন্ধ-পিউং নিবেশয়ের । ন্যাসেদামলকং পাত্রে মুরামাংসীযুতং শুভং ৷ সহদেবাৎসদা-ভতাৎ কুশাগ্রাং রম্বনীং তথা। এশান্যাং বিন্যসেৎ পাত্রে শিরীষং সূর্য্বর্ণিনী । নির্মঞ্কার দেবসঃ স্থাপকঃ সুসমাহিতঃ। অফৌ দিক্ষু ন্যাসভিদ্ন লোহযাতী-প্রদীপকান্। শস্থং চক্রঞ্জীবৎস কৌস্তভ্য পক্ষজাদিকং। হেমাদিপাত্তে কৃত্বাথ গোমরেনাথ বা পুনঃ। নীরাজনায় দেবস্য তথা বৈ পুষ্পাজাতয়:। স্থাপনীয়া স্তথা-চান্যে মাঞ্চল্যাঃ স্থানচোদিতাঃ ॥

चश श्रीमृर्छः नुनमञ्चल श्रवनन । मिल्निमानाः ততে। গছা গীতবাদ। দিনিংষনৈ । चानस्मानग्र जिंद मह मिणिक्या छछः ।। ७৫ ।। चश विष्मानि
कूष्ठा जिः सानमञ्ज भर्ताविशः ।। स्रामिश्र प्राचिष्म खीमृर्छः छाः विष्मान । चश
वा मिल्निमानायाः नामिश्र यथाविशि । श्रावन्य ए मिछिकायाः छाः विश्विः
मानमञ्जा । ७७।। छशा छशा छित्या । चानार्यामृर्छि मिल्न श्रीष्ठ गृहिः मह मःयूरेषः । विश्व छश्रेदः मारिः विश्व माञ्चान् विश्व छि। चानार्य भविश्व । विश्व छात्र विश्व । विश्व छात्र विश्व । विश्व छि। विश्व छात्र । विश्व छि। विश्व छात्र । विश्व छि। विश्व छात्र । विश्व छात्र । विश्व छि। विश्व छात्र । विष्व छात्र । विश्व छात्र । छात्र । विश्व छात्र । विष्व छात्र । विश्व छात्र । विश्व छात्र । विश्व छात्र । विश्व छात्य

ততঃ শিশ্পিশালাতঃ শ্রীমূর্ত্তিং পিণ্ডিকাসহিতামানয়ে ।। ৩৫।। বিংশতিকুম্বন্ধলেন স্নানমগুপাছহিঃ স্বাপরিত্বেতি কেষাঞ্চিৎ সভাং মতং নিখিতং শ্রীহয়শীর্ষভগবন্ধতং নিশ্বতি অথবৈতি তর্চাগ্রে তছ্বনতোব্যক্তং ভাবি।। বিশ্রৈঃ কৃত্বা তাং ভগবন্দূর্ত্তিং পিণ্ডিকাসহিতাং স্নান
মগুপং প্রবেশয়ে ।। ৬৬।। অফাভিন্তিতাত ও শন্দোবার্থে। ততক্ষ বিকশ্পোমুধ্যকম্পাশক্তাবশ্বেসংখ্য ব্রাহ্মণবরণামুসারেণ শ্রীমূর্জ্যস্কারেণ বা জ্বেয়ং। ক্রমেণানীয় নতু হঠাদেকদৈব

প্লান্ত ক্লান্ বৃদ্যানি তে নহাপতে। গায়ত্তাটের গোমূত্র গ্রহারেতি গোমরং। আপ্যারম্বেডিচ ক্ষারং দধিক্রাব্রেডি বৈ দধি। তেলোনি শুক্রমিত্যাক্যৎ দেবস্যত্তাকুশোদকং। এভিন্ত পঞ্চতিশক্তিঃ প্রথমং স্থাপয়েকরিং। দ্বিভীয়ে দধি-ক্রাবেতি দধ্য চ স্নানমাচরেৎ। স্বাপ্যায়স্তেতি মন্ত্রেণ স্বাপয়েরুধঃ। তেলোল नोवि छङः शन्हः श्रवन मानमाहत्त्र । जनत्य मधूना मानः मधवाजाक्षकाम्राकः। রত্বারি ততঃ পশ্চাঞ্জিরণ্যক্ষেতি মন্ত্রেরে ।। কুশান্ত্রসা ততঃ স্নানং দেবস্যত্ত্বতি মন্ত্রেৎ। ফলোদকৈন্ততঃ সানং অগ্ন আরাহিৰীভয়ে। দদ্যাজুগন্ধভোয়ানি সাবিত্রা অভিমন্ত্রেছ। করিয়েচ্চ মহাসানং ভতঃ সানাদনস্তরং। কলসানাং সহসেণ কুর্য্যাত পঞ্চলতেন বা। অথবা ভস্য সার্কেন তথা চাই শতেন বা। চত্তঃ ষ্ট্যা ভদক্রেন বো-**फ्रेन्य के जिख्या। यथानाज्य यथानान्य यथानि जनमञ्जनः । जनानमृत्रैनः कन्रोतः** সুপক্ষৈ: সুদ্টৈন বিঃ। রাজতৈন্তামুগৌবলৈ কাংস্যারৈভিকপার্থি বৈঃ। বলা চাতি-वेला देवर मञ्जूष्णी मूर्वर्षमा। महरमेरी व निष्ही व ववा बार्षी करेथव व। अस्रीमाष গণেটনবং সাপায়েদেবমচ্যুভমিভি ৷৷ অথতত্তিব বিশেষভিরং ৷৷ ফলোদসুপনাৎ পশ্চাৎ চূর্বৈরুদ্ধ শোভবেঃ। সাপয়িত্বা কদুক্ষাদভিঃ সাপয়েৎ শীত্বারিণা।। हम्प्रनारेपा विक्रितिभाष क्ष्क्रमानाश्चर्यापना । ज्यशिष्याभवीजः ह प्रख्याके प्रवान পয়েং।। ৯১।। ততশ্চ কারয়েং সানং সুগন্ধিসলিলাদিনা। ইত্যেৰমত্ত বিভেয়ে। বিশেষ: শিকীসমূতঃ।। ৯২।। তথাচ হয়শীর্ষপঞ্চরাত্রে। ঘৃতেনাভ্রপ্রের পশ্চাৎ পठेन घृठव छी १ वृक्षः । ममूत्र हूर्ण नाचर उत्तर जारा परिवर्ध को उत्तर । का नास प्रमूक्ष राज्य न माश्चर्षाव दिन्तिकः। हन्द्रतेनान् विष्णु क्रिमानिव हेक्ष्षा नात्त्रेयः स्राण्य ভোরৈ রাপোছিটেভি দেশিকঃ। সাপয়েতত্বভোয়েন পারমানীভিরেব চ। সমুত্রৎ গচ্ছ মন্ত্রেণ রাপায়েচ্নদনোদকৈঃ । নাগকেশরভোয়েন প্রাশ্চ ভেত্যভিষেচ-য়েৎ ।৷ ৯৩ ৷৷ গায়ত্র্যা পদ্মতোয়েন পঞ্চমৃত্তিকয়৷ ততঃ ৷ হিরণ্বর্ণাঃ শুচয়ইতি মন্ত্রেণ সেচয়েৎ। ইমৎমেতি চ মস্ত্রেণ স্থাপয়েৎ সিকতাজলৈঃ। বল্যাকতোয়েন হরিং তদ্বিকোরিতি স্নাপয়েৎ। যা ওষ্ধিরিতি মক্তেণ স্থানমোষ্ধিমঙ্গলং। যজ্ঞযুক্তিতি याञ्चल मन्। काषायञ्चलकाः। भयः भृथिव।।याः

मिखितः यवामिनस्रितः स्विक्षित्वायूरिककम्पत्न वामामकार कृक्षुमामिकिक मिखिरिकिकिनिश यरकाश्रवीकः ह स्कृत्यवार्णस्य । उत्थिति नमूक्तः ॥ २० ॥ उतः मस्कृष्ठार्थाम् नस्वतः कृष्ट्र मस्याद्वात्रात्रीत्यामिनस्र कर्षाः विकाश्यामानस्र तः यर स्विक्षितिनामिन। वानमूकः उत् कार्सः मिछार्थः स्वविक्ष निनाः ह उत्तरम् कार्यस्य क्षि प्रत्याः मश्कृतः स्वतः स्वाक्षित्र निकाश्याम स्वतः स्वाक्षित्र प्रतिम्हित्र प्रतिम्हित्र प्रतिम्हित्र प्रतिम्हित्र प्रतिम्हित्र प्रतिम्हित्र प्रतिम्हित्र प्रतिम्हित्र प्रतिम्हित्र मिल्लाक्षित्र प्रतिम्हित्र प्रतिम्हित् प्रतिम्हित्र प्रतिम्हित्र प्रतिम्हित्र प्रतिम्हित् प्रतिम

আধ নৃপনমাহান্তাং ভবৈব। এব সাধারণ প্রোক্তঃ স্পনস্য বিধিম্যা। যএবং বিধিবং কুর্যাৎ তস্য পুণ্য ফলং শৃণু। যাবন্তি জলবিন্দুনি মম গাত্রে নিবেশয়েং। তাবদ্বর্যসহস্যুনি স্বর্গলোকে মহীয়তে।। ১৬।।

অথ এমূর্ভ্যথাপনং। ততশ্চ বিধিবছিদ্বান্ সংপ্রা বাহনাদিভিঃ। ওথাপানিক্মন্ত্রেণ দেবমুখাপরেচ্ছনৈঃ।। ৯৭।। মাৎস্যো। এবং সাপ্য ততোদেবং প্রা গল্পান্থ। প্রচাদ্য বস্ত্রযুগ্ধন অভিবস্তেত্যদাহরন্। উথাপয়েন্ততোদেব- মুন্তিত ক্রন্ধান্তা। ভবিব্যে হয়শীর্ষে চ। আবাহয়েন্ততোবিষ্ণুং শুক্রকটিক-সংনিভং। এহ্যেহি ভগবন্ বিশ্বো লোকানুপ্রহকারক। যজ্ঞভাগং গৃহানেমং বাসু- দেব নমোনমঃ।। অনেনাবাহ্য দেবেশং কুর্য্যাৎ কৌন্তকমোচনং। মুঞ্যিভেডি মন্ত্রেণ দেশিকস্যাপি মোচয়েৎ। হিরণায়েভি মন্ত্রেণ অর্থ্যং দেবায় দাপয়েৎ।

স্বৰ্গলোকে মহীয়তে ইভি বৈকুওলোকং গাছন্ পথি ইঞাদিভিভক্তা। বিশ্ৰমষ্য চিরমভার্চ্যভ ইত্যর্থং।। ৯৬।।

উত্থাপনিকেন উত্থাপনসম্বন্ধিনা মন্ত্ৰেণ এবমগ্ৰেপি ।। ৯৭।। অপনামস্কর মুত্থাপন পূর্ব্ব-

পঞ্চমৃত্তিকাঃ তীর্থা দিস্থান পঞ্চক মৃদঃ তাভিন্দ হিরণ্যেত্যাদিমক্ত্রেণা ভিষেচয়ে । মৃত্তিকরেত্যেক বচনান্তমার্বং। ওয়ধীতি মঁক্ষলং যথ তথ স্থানা । ১৪ ॥ পূর্বং শিশিপ ক্ষিতোরণানস্তরং কুশান্যান্তরণে ন্যান্যেত্যাদিনা স্থপনং বিশেষতঃ স্থপনমেত লিখিতং ইত্যেবং বার্ঘ্যং স্থপনং কেষাঞ্চিৎ শতাং পদ্ধতিকারাণাং সংমত্যা লেখি। তত্র মাৎশ্যে। তত্তা লিক্ষ্যথার্চাং তেত্যাদিনা সুপনমেকমেবোজ্যা ভদনস্তরমেব গল্পবস্ত্রাপণং ভতদোখাপনাদিক মৃত্যং। তথাতঃ সংপ্রবক্ষ্যামি দেবসুপন মৃত্তমমিত্যাদিনা চান্তে কেবলসুপনবিধির্বিবেচ্য বিস্তরেণ দর্শিতঃ। ভবিষ্যে চ। আনরিত্বা তুদেবেশ মিত্যাদিনা তথান্তে চ যথা কুর্যান্তর্চ শক্ত্রেপতঃ শূণিভ্যাদিনা চ প্রায়ন্তবিধবোক্তং এবমেকমেব স্থপনং গম্যতে তথা ভগবতা শ্রীহ্যশীর্ফাপি শিশিপশালায়াং শুদ্ধতোর্যমাত্র স্থপন মৃত্যাদিকং প্রক্রিয়ানান্তরং ঘৃতেনাভ্যপ্তরেও পশ্চাদিত্যাদিনা-মৃপনমেকমেব বিহৃত্যোক্তং ইত্যেবমাদিকং প্রক্রিয়াগৌরবঞ্চ বিচার্য্য পূর্বালিখিতং কেষাঞ্চিৎ পদ্ধতিকারাণাং পক্ষং নির্সান্ত্রিব পক্ষান্তরং লিখিত । অথেতি । পঞ্চক্ষায়পঞ্চণব্যাদিতঃ স্থপনং যথ তথ সক্ষ্ একবারমেব কার্যাং। নতু পূর্ববিধ্যাত্যকৈ ভদনস্তরলিখিত ক্ত্যমণি নিকার্যং অপিজ্ব তথন্ববং কর্ত্তব্যেবতি লিখিত জন্যচেতি । তৎ পূর্বলিখিতং শ্রীনেত্রোশ্বীলনা-দিকং । ৯৫।।

অতাদেবেতি সৃত্তেন পাদাং ক্ষায় মন্ত্রিতং। মধুবাতেতি মন্ত্রেণ মধুপর্কং নিবেদ্বের । মরি গৃহাতি মন্ত্রেণ দদ্যাদাচমনং বুধঃ। অক্ষমামদংত্রেতি কিরেদ্র্রাক্তং-বুধঃ। নির্মান্তনং ততঃ কুর্য্যাৎ কাণ্ডাৎ কাণ্ডেতি দেশিকঃ। গলং গল্পবতীত্যের মুল্লামাতি মাল্যকং। ইদং বিফিতি মন্ত্রেণ দদ্যাদ্যজ্ঞোপবীতকং। বৃহস্পতেতি মন্ত্রেণ বস্ত্রায়ামাতি মাল্যকং। বদাহমেকং পুরুষমুদ্ধরীয়াং নিবেদরের। সকলীকরণং ক্র্যাহে পঠন ব্রতমহাব্রতং। ওম্বয়ঃ সংবদন্তে সপুস্পকরণং ততঃ। ধূরসীতি পঠন ভক্ত্যা ধূপং দদ্যাহ সন্তর্গত্রেহা বিজ্ঞাতিতি চ সৃত্তেন অঞ্জনং ভ প্রদাপয়ের। যুপ্পত্তিতি চ মন্ত্রেণ রোচনাতিলকং তথা। দদ্যাহ পুস্পানি মাল্যানি দীর্ঘায়ুত্তেতি মন্ত্রেণ ব্যত্ত হত্রং প্রদাপয়ের । আদর্শং ভ বিরাদ্ধেন বিকর্নের ভ চামরং। রথান্তরেণাভরণং ব্যক্তনং বায়ুদৈবতৈঃ। মুক্ষামিছেতি সৃত্তেন পুস্পমালার্চনং ততঃ। ততঃ তথাত গোবিদ্যং মন্ত্রের্বেদাদিভির্বিত্রং। তথা পুরুষ-সৃত্তেন বৃহহসামা সুরোভ্রম। শশিক্রণীতি নবভিঃ সৃত্তেঃ সুরগণার্চিতং। প্রান্তাতীয়েন চ ভূয়াক্ষ্রেহাপনিষ্টের্ম্বরাত্ত্র। সর্ব্রাত্তরে মান্ত্রিহালিকার স্ব্রাত্রালানসময়ে সৌপর্লং সর্ব্রাত্র পিণ্ডিকায়ানপি দ্বিদ্ধ। বেস্ত্রোত্যানসময়ে সৌপর্লং সর্ব্রাত্র পিণ্ডিকায়ানপি দ্বিদ্ধ। মন্ত্রেস্ত্রাল্যানসময়ে সৌপর্লং সর্ব্রাত্র না ৯৮।।

অধিবাসমগুপে প্রবেশ:। মহতানেকবাদ্যেন পতাকাদিবিভূষিতং। যানমা-রোহয়েদেবমারোহনিকমন্ত্রতঃ। আনীয় তোরণাভ্যাসমধিবাসন মগুপং। প্রবেশনিকমন্ত্রেণ সুখং দেবং প্রবেশয়েৎ।। ৯৯।। তথাচ তত্রৈব।। উন্তিটেতি সমু-্থাপ্য কুর্য্যাদুক্ষরথে শুভে। শাকুনেন ভ সুক্তেন মগুপে সংনিধাপয়েৎ। ভবিষ্যে। রথে তিঠেতি মন্ত্রেণ রথমারোহয়েৎ প্রভুং। শল্পুদুকুভিনির্ঘোষ্যঃ পৃতাকাভিরল-স্কৃতং।। আরোপ্য সদৃশে যানে আনয়েন্তোরণান্তিকং। প্রবেশয়েন্তভোদেবং স্থাপকঃ শংসিতব্রতঃ।। মাৎস্যে। রথে ব্রহ্মরথে চাপি ধৃতং শিল্পগণেন চ। আনরোপ্য চালয়েন্বিনান আরুফেন প্রবেশয়েৎ।।১০০।। শ্রীমৃর্ভিস্থাপনপ্রকারঃ।। পালে। রুত্য প্রার্থিতিক্র্লিভঃ প্রাণট্রের্থশপল্পবিঃ। প্রপ্রেরণং কুত্যা বস্ত্রেণাচ্ছা-দ্যেৎ গুরুং। প্রান্তম্বং সাপয়িত্বান্সিন্ত্রেণং কুর্য্যাৎ প্রদক্ষিণং। নিত্রাকুন্তং শিরো-

কৃত্যমাহ আবাহেত্যাদিনা উদ্বেদিতান্তেন । নৰ্বাংস্পটাৰ্থমেব পিণ্ডিকায়ামপীতি চ যথা-ভগবসূৰ্দ্তে: অপনাবাহনাদিকং কুৰ্য্যান্তথা পিণ্ডিকায়া অপি অপনাবাহনাদিকং কুর্য্যাদিত্যর্থঃ। এতছাত্রে পিণ্ডিকাশোধনে লেখ্যমেব। উত্থাপনং চ উত্তিষ্ঠেতি সমুত্থাপ্যেত্যতো লেখ্যবাক্যা-দুদ্দিউমেব। তকৈকপাদমাত্রভাদত্ত ন লিখিতং॥ ১৮॥

পশ্চিমদারেণ দেবং প্রবেশয়েদিতি সভাং মতং পিঞিকামপি প্রীমূর্ত্ত্যা সহ রথমারোপ্যাধিবাসনমগুপং প্রবেশয়েতি। তথাবিধে পরে স্থানে ইত্যাদি প্রীহরশীর্ষোজ্যে। অক্রে পিঞিকাশোধনে
লেখ্যান্সারেণ দেইবাং। তথা ততৈবৈকিমন্ মগুপান্তঃপ্রবেশে নিৰেশ্য তস্যা ক্ষিবাসাদিকং
চ বোদ্ধবাং। ১৯ ।। ত্রক্ষরেধে ত্রাক্ষণবাহ্য শিবিকাদিখানে। ১০০ ।। অশিন্ বস্তাচ্ছাদিতা-

एटल नारमपराञ्चा भर्षानकः ।। >•> ।। स्थाका का भिकार्थान् पञ्चा शांकानि त्रश्मिन्। शक्ष शृरेकाः समस्त्रार्का सम्हार शक्ति वर निरु । (सर् काष्ट्रामा सहरेख-"क्जामीनि विश्वात है।। श्रेक्षान हिंद्यामीशान् न (मार क्षा: कि शामरमा । कीता-निकः निक्ति। अकारभन्नामिकिः खरेकः। मखना **७९ धन्**र्याथ नर्सकाविकतः দ্বনিং।। ১০২।। হয়শীর্ষে।। পুশোপশোভিতে স্থানে চন্দাতপ বিভূষিতে। মুক্তাহা-देत्रम्बनारेनम् निमात्नान्यां जिल्छ। ज्या एकारेकात्रत्यके मानुने व्यवस्था जिल्छ। দিব।প্র্যক্রন্তারাং ভূলিকারাং সুরোভম। অভোদেবেভি মক্ত্রেণ শহ্যায়াং স্থাপ-श्रुक्षद्भिः। ভথাবিধে পরে স্থানে পিত্তিকাৎ সংনিবেশয়েৎ ॥ ১-৩ ॥ সূক্তেন জীসূক্তেন বিবেষয়েৎ । নিজাখ্যং কলসং রত্মত্বস্তমুগান্বিভং। খণ্ড-कोटेल । इत्तरके क शूर्वरम् नमस्र कः ॥ २०४॥ ভবिষ্য ।। প্রাগত্রে দভবং শৈক রা-क्रम् दिवादिनः खरेखः। शृरेक्शण्ठ ब्रह्म्या५ कामरेनदिवाशन्तव। উপविद्योक न्याया (प्रशः श्रष्ठत्वः श्रष्ठः । पूक्तः भक्षेत्रः इत्रकार्भागः वाभागस्य । अपिकार ছত: কুর্যাৎ স্থাপক: প্রয়ন্ত: শুচি:। প্রাঙ্মুখন্ত ততঃ কৃত্বা ভতপাঠে সুসংস্থিতে। পূর্য়িত্বী দ্রদা স্প্রকলদং চাপ্তলংক্তং। সপুত্র শাক্ষতৎ কৃত্ব। শিরোদেশে ও দাপ-রেং ॥১০৫॥ শিরোদেবীতি মক্তেণ মাতরঃ শুদ্ধয়ন্তচ। ততঃ শিরোনতে ভূয়উপধান-नमञ्जाला भग्नत कात्रस्य एवर विधिमृष्टिन कर्मना । मधूना नर्नियाच्यालान् प्रमा निकार्थकान् एकान्।। হিছাচ দকিলে পার্থেনতঃ চ সমুদাহরে । আপ্যায়স্থেতি মক্তেণ যাতে রুদ্রে শিরেতি চা। সর্বাঙ্গঞ্চ সমানেভ্যোদদ্যাৎ পূষ্পাং নরাধিপা। খেতান্ श्राञ्चित्रवान् मम्। याद्धरेनव नदाधिश । वृह्ण्णाच्या जा महार माखन श्रादिवकेरस्र ।। দুকূলপট্টকাপীলৈতথা বল্কজরোমকৈ:। চিত্রপট্টেকিচিত্রৈশ্চ ছাদয়েত সমন্ততঃ। চামরংব্যঞ্জনংছত্রং বিভানঞ সুশোভনং। দর্পন্ৎ পার্শ্বতঃ স্থাপ্যং রত্বান্যোষধয়ত্তথা।

ত্তরণে ॥ ১০১ ॥ গতাণি সংস্পৃশন্দেবস্য দক্ষিণ পাথে উপবিষ্টঃ। অত্যে লেখ্যেন ও আপ্যায়যেতাদি মন্ত্রবয়েন দেবসাঙ্গান্যা লভমানঃ সন দেবহন্তে প্রতিসবংস্ত্রবিশেষং দদ্যাৎ আদিশব্দাৎ চামরব্যক্তনাদীনি তানি চাগ্রে ব্যক্তানি ভবিষ্যন্তি । শিটাচারতঃ সায়ং ছারেষ্চ চন্তরোদীপান্ প্রদীপঞ্চ পঞ্চরব্যতীর্থেদিকপূর্ণকুল্লাং চন্তরঃ পাদয়োঃ দেবপাদান্তিকে ন্যস্যুৎ ধার্য়েৎ। তথা ক্ষীরং আদিশব্দেন মৃতং মধুচ। ও অভিত্রাশূর নোহাম ইতিমন্ত্রেণ দেবপাদনিকটন্বানে নিবেদ্য তৎ অধিবাসমগুপং বলিঞ্চ সর্ব্যতাভূবিদদ্যাৎ । সন্ত্যায়াং মধ্যরাত্রে উবিচিচ দশদিক্ষু শক্রাদিভাঃ ভগবানপ্রীয়ভামিভাভিধায় মাত্রিম্বরণে ভাক্ষ প্রত্যোহাং মুক্তামাহ প্রস্থাপাদাভিতইত্যাদিনা ভারভোজ্ঞের্য়া।১০২॥ মগুণে সন্ধিপান্যাদিভাছাং তদনস্কর ক্রভামাহ প্রস্থাপান্যাভিতইত্যাদিনা স্থানেইতি মগুণান্তরবৈদিকায়ামিভি বোদ্ধবাং ॥ ১০৩॥ পিণ্ডিকাং সংনিবেশয়েদিত্যুক্তং তক্ত কেন মন্ত্রেণেভ্যাই আয়ন্ত্রীয়েনভি ।। ১০৩॥ পিণ্ডিকাং সংনিবেশয়েদিত্যুক্তং তক্ত কেন মন্ত্রেণেভাহি আয়ন্ত্রীয়েনভি ।। ১০৩॥ দিন্তাক্তং দাপয়েৎ । ভত্র মন্ত্রন্থং শিরোদেশে নিছাকুন্তং দাপয়েৎ । ভত্র মন্ত্রন্থং শিরোদেশে নিছাকুন্তং দাপয়েৎ । ভত্র মন্ত্রন্থং শিরোদেশী

গুহে।পিকর গৈতাইন্যঃ সমস্তাৎ পরিবারয়ে ।। ভক্ষাভোজ্যান্ধপানৈত মত্বিধৈ তি বিশেবতঃ ।। সমস্তাৎ কার মেত্র মণ্ডপঞ্চ সুশোভলং ।। প্রকাণতাপ্রকাণত লাতব্যে দেবসনিধা। তামকং মলামহেতি সর্বমেতনি কার মেং ।। মাংল্যা। ততঃ প্রান্তার্য্য প্রায়াম স্থাপরে জ্নেক্ত্রি। কুলেব্যুত্তীর্য্য প্রাণি সাসীরেৎ প্রাভ্যুত্তম ততঃ। ততপ্ত নিদ্রাক্রসং ব্রকাঞ্চনসম্পুত্ম । শিরোভাগে তুলেব্যু লপানেব নিধাপরেছ ।। আপোদেবীতি মত্রেণ আপোক্ষামাতরোপি চ। ততোদুকুলপান্ত শুলি শালাল নেত্রোপধানকং ।। দলাং শিরসি দেবস্য কৌশেরং বা বিচক্ষণঃ ।। মধুনা সর্পিবাভ্যপ্তা দেবম সিন্ধার্থ কৈততঃ। আপ্যায়ন্তেতি মত্রেণ বাত্মত্রো শিবেতি চা। উপবিশ্যার্করেদেবং গন্ধপুর্ত্তা । আপ্যায়ন্তেতি মত্রেণ ঘ্রাছার দেবম সর্ক্রে হ্রাণারিকর গাণি বা। আক্রান্য দেবম সর্ক্রে হ্রাণার মান্তার কিলার দর্শণ বিভিত্রাণি কারান্যান্সনানি চ। অভিদ্যা পূর্মত্র বিভানমপুত্রসম্ব তুল । রম্বান্যামধ্র ত্রিদ্যান্তান্য নেবং । লাম্বানি বিচিত্রাণি শ্রনান্যান্যানি চ। অভিদ্যা প্রান্যান্যান্যান্য বিভবতোন্য নেবং । ক্রিং ক্লোক্রং বৃত্তত্বত্তক্রাং ভোল্যঞ্চ পায়েলং। বিভিন্তান মন্ত্রা বিভাম দল্যাৎ প্রমুক্ত মন্ত্রা বিভাম দল্যাৎ প্রমুক্ত মন্ত্রা মন্ত্রামান বিভিন্তান স্বান্যান্যান্যান্য বিভামিকর মন্ত্রামান্যান্য বিভামিকর মন্ত্রামান্যান্য স্থা বিভবতোন্য কর পরিপ্রয়েশ ।। ১০৬।। বিলাং দল্যাৎ প্রমুক্তা মন্ত্রামান ভ্রিমান । তাল্পক্ষ মন্ত্রামান ক্রিমান বিভিন্তান স্বান্য ক্রান্য ক্রান্য মন্ত্রামান ক্রিমান বিলান্যান্য ক্রান্য বিল্য ক্রান্য ক্রান

भय भीमूर्क भिराजनः।। ज्राह्मित छठः इदा नामकार विधान है। धार्षा ज्रुद्धः भन्न भूक्षा ज्रुद्धः भन्न भूक्षा ज्रुद्धः । भूक्ष द्या ज्रुद्धः नाम भावि । धार्षा ज्रुद्धः भन्न भूक्षा ज्रुद्धः । भूक्ष द्या ज्रुद्धः । ज्रुद्धः । ज्रुद्धः । ज्रुद्धः । ज्रुद्धः । ज्रुद्धः । ज्रुद्धः ज्रुद्धः । ज्रुद्धः ज्रुद्धः । ज्रुद्धः भूक्षः । ज्रुद्धः । ज्रुदः । ज्रुदः

তস্য তস্য ভৃতগুলিকরণাদের্বিশেষক অখনিরসঃ 
অহয়শীর্বস্য পঞ্চরাত্রতা বিস্তরেণ ক্রেয়া
তবৈককৈর ব্যক্তরাদকত প্রস্থাক্ষরে স্থাক্ষরিগ্যতই ডিভাবঃ । যদ্যপি সাৎস্য ভবিষ্যরে ভূতভল্পাদিকমেতদক বিশিষ্য নোক্তমন্তি ভাবাপি ভগবজুীহয়শীর্বোক্তিপ্রামাণ্যেনাক লিখিতং ।
এবং প্রহয়শীর্বাস্ক্তমপি ত্রাক্ষণস্থাপনাদি সাৎস্য ভবিষ্যোক্তপ্রামাণ্যেন শিক্ষাভৃতত্বাদ্ধে
লেখাং। এবসন্যক্রাপ্যহং ॥ ১০৮॥ তথেতি হোক্রাদ্বীক্তেরক্রেরেভার্থঃ প্রস্কৃত্রকাপকং
ক্রিকং মণ্ডপাভারেরে স্থাপরে । শিক্ষাভারাস্বারতইতি জাপহোষ্টের মৎসাপুরাণাদিবচনৈর্ক্ত

भावकः ॥ ১०৯ ॥ मांदरमा ॥ मूर्खिशान् द्वाशास्त्रद्वत नर्समिक् विक्रमनः । छ्छरबा-क्षात्रशामार्ये पारत्रयू विनित्यमास्य ॥ ১১०॥ ष्यथ द्वारत्रयु स्वर्शनित्रमः ॥ व्यांकरम् প্রীসূক্তৎ পাবমানং তু লোমসূক্তৎ সুমঙ্গলৎ। তথাচ শান্তিকাধ্যারমিন্দুসূক্তং ভবৈব চ। त्रकाप्रः ह उँवा मृद्धः भूविष्ठावस्त्र्हाक्ष्रि ।। ১>>।। क्रजान् भूक्षमृद्धक শ্লোকাধ্যায়ৎ সসুক্রিয়ং । ওথৈব মণ্ডলাধ্যায় মধুযুর্জিকিলে জপেৎ ॥ ১১২ ॥ বামদের ১১ বৃহৎসাম জে। ১১ সাম রথন্তর । তথা পুরুষসূক্তক রুদ্রসূক্ত মশান্তিকং। ভাৰণ্ডানি চ সামানি ছন্দোগঃ পশ্চিমে জ্বপেৎ ॥১১৩॥ অথকাঙ্গিরসন্তদ্ধী-লরুদ্রং তথৈব চ। তথা পঞ্জাজিতাং দেবীৎ মধুসূক্তং সরৌদ্রকং। তথৈব শান্তিকা-ধ্যায়মধ্যু (শেচাভরে জপেৎ।। ১১৪।। ভবিষ্যো। ত্রীসূক্তৎ পাবমানগ তাম্যৎ माग्राक्ष वाक्रमर। वृवाक्रिशिर ह रैमजर ह वस्तृहः शन्हितम खर्लीर ॥ १७७ ॥ त्मवज्र ७९ পুরুষগতিং জ্যেষ্ঠ সাম রখন্তরং। ভারশুনি চ সামানি বামদেব্যং তথৈব চ।। উত্তরাং দিশমাস্থায় ছন্দোগতজ্ঞপেৎ সদা ।। ১১৬।। রুডান্পুরুষসূক্তৎ চ শ্লেকা-ধ্যারং সসুক্রিরং ৷৷ ব্রাহ্মণং মৈত্রমন্ত্রঞ্চ অধ্যুর্তুঃ পূর্বতোজপেং ৷৷ ১১৭ ৷৷ আথর্বা-

স্ত্রাদিভেদভোবিরো**ধে নিজ্ঞাৎসংপ্রদা**রব্যবহারোসুসর্ক্ত ব্যইত্যর্থ: । এবং সর্ক**রৈত্ব জে**য়ং ॥ ১০৯ । সৰ্বাস্থ অউত্থ দিকু ভৰাচ ভৰিব্যে। মূৰ্জিপান্ স্থাপয়েৎ পশ্চাদিশাস্থ বিদিশাস্থচেভি। সমানার্থ-ত্বাত্তদেতদর্জপদাং ন সংগৃহীতং ৷ এবমন্যত্তাপি জেরং॥ ১১০॥ জীসূক্তাদিকং পূর্বতঃ পূর্বভারি বহব্চোজপেদিতি সার্জেন। স্বয়ং । তত্ত্র জীহুক্তং হিরণ্যবর্ণাং হরিণামিত্যাদি॥ প্রাবমানং আদি-ইয়ামদিউয়েত্যাদি। দোমস্কং স্থং দোমমহেত্যাদি স্বমঙ্গলং কলিহৃদ্ভস্থীমিত্যাদি শান্তি-কাধ্যায়ং শক্রোইন্দ্রাহীত্যাদি । ইন্দ্রস্থক্তং যোজাতত্রবৈত্যাদি রক্ষোত্রনুক্তং চ রুত্র অপাঞ্চ ইত্যাদি।। ১১১।। রুজান্নুমন্তে রুজ ইত্যাদি। পুরুষস্ক্তং সহসুদীর্ষেত্যাদি। শ্লোকাধ্যায়ং দেব-সবিতরিত্যাদি স্থাক্রিয়ং কুতং বাচং প্রাপদ্যে ইত্যাদি । মঙ্গলাধ্যায়ঞ্চ আদিত্যোবা এব এত্যা-গুলমিত্যাদি তৈত্তীরীয়কে প্রাসিদ্ধ।। ১১২ ॥ বামদেবাং কয়ানশ্চিত্রমিত্যস্যামূচি গীতং সাম।। বৃহৎদাম ত্বামিত্বিহ বামহ ইত্যদ্যাং গীতং।। জেষ্ঠদাম মূর্দ্ধানং দেবে। অবতি মিত্যাদ্যাঞ্চীতং।! রথস্তরং অভিত্রা শূরনোমুমইত্যস্যাং গীতং। রুক্রস্তুং সংহিতা আয়ে।রাজতংত্বাবর্গআল্যালা-হানি দেক্ত্রতানি চেড্যে**তং। সশান্তিকং শান্তিকাধ্যায়সহিতং। ভার**গুানি সামানি চ ইমং স্তো**-**ম ইত্যাদীনি ॥ ১১৩ ॥ আথর্বাণং স্কুণ দোষাগায়েত্যাদি আঞ্চরসং স্কুণ অঙ্গিরসোজন্ম:নী-ত্যাদি নীলকজং ক্লতং জনেত্যাদি অপরাজিতাং দেবীপরিবর্তমানেত্যাদি। মধুস্কুং মধুবাতা-রিতায়ত ইত্যাদি। রুদ্রস্কুং ভবা সর্বোমুভতং শানিয়াতমিত্যাদি॥ ১১৪॥ তাম্য স্কুং নাস-मानौपिकि नश्चर्षः। माम्यम्**खः नामाक्रमार्वेकि एक** विक्या हर वाक्षित्र खः , एक खिरमहाकिन देखि। ব্যাৰপিং বিহিনোভোৰ ক্ৰডেডালি মৈলছত্তং মিতোজনান্পালয়ভীতি নবৰ্চং।। ১২৫ । দেব-ত্ৰতং অধিক পতায়ীভা*দি পুৰুষগাঁডিং পুৰুষস্কুং* ॥ ১১৬ ॥ ত্ৰহ্মস্কুণ আত্ৰন্ধনিতি মৈত্ৰসূক্তণ देभजना চর্বনীধ্ত ইতি। ইফ্রাস্ক্রং আশুঃ শিশান ইত্যাদি॥১১৭॥ আথর্বাঙ্গিরনং আথর্বাণ-

সূক্তং আঙ্গিরসসূক্তঞ্চ।। ১১৮।। পঞ্জাত্রাস্থাবৈক্ষবন্তোত্তং মন্ত্রং চ বিদন্তীতি তেতথা।। ১১৯।। মধ্যে প্রাদাদাভান্তরে মণ্ডপমধ্যে বা পুনরিতি অথাচার্য্যে ন পুনর্জ্জপতেভ্যাদিন্তালত্ত্বারন্তে দারজাপকাশ্ওদারের পুনঃ শান্তিকাধ্যারং জপেরুরিতার্ধঃ । ১২০।। তত্ত্ব মণ্ডপাভ্যস্তরে ব্রহ্মা-দীন্ চক্তরোত্রক্ষণোছোতৃংশ্চ যথাস্থানং স্বস্তুতেও যথোচিতং নিবেশ্য উপবেশ্য আচার্যান্চ দেব শিরঃ স্থানবর্ত্তি নিজকুওসমীপন্তঃ তত্ত্র হোমং যথাবিধি, কুর্য্যাৎ তে চ ব্রহ্মাদয়োষথাবিধি ছোমং কুৰ্তি। বিধিশ্চায়ং । সৰ্বাএব স্বস্হ্য বিধিন। গ্লিস্থাপনত্রক্ষোপবেশনাদিকুশণ্ডিকাং কৃত্বা সুক্সুৰ পূর্নপাত্রপ্রণীতা আত্মস্থালী সমিদাজ্যতিল্যবকুশ্বর্হিবিধ্যাদিকং চ কুণ্ডেমু কম্পায়েমুঃ। ততঃ স্থাপকোগ্রহবেদ্যাং গ্রহ্যজ্ঞাক্তবিধিনা তত্তমন্ত্রেণ সূর্য্যাদিলাতিংশদেবতাঃ সংস্থাপ্য যথাবিহিত-পুষ্পারের দ্যাদিতিঃ সংপূজ্য নিজকুতে হয়িত্বাপনাদিকুশতিকাং কৃত্বা আঘারাবাজ্যভাগাদিকং হুত্বা পলাশোডুগরাখ্বপাপামার্গনমীসমিধাং প্রত্যেকং প্রথমং মহাব্যাহ্রভিভিরাছভিভিউয়ং। ততঃ শঙ্গই ক্রাগ্নীভবতামরোভিরিত্য।দিভিঃ শাস্তিকৈস্ত্রিভিরাহুতিকরং।। ততঃ ওঁপুটির্নবত্বাওঁ-ময়স্কানৌ অমীবহা ইতি ওঁ ত্ৰাস্বকং যজামহ ইত্যেতৈন্ত্ৰিভি: পৌটিকৈরাহুতিত্রমং৷ এবমাবৃত্তি-ক্রমেটাক সহসুং ছত্ত্বা যথাক্রমং দেবন্য পাদয়োর্নাভৌ মধ্যে বক্ষান শির্সি চ স্পৃশেও। তথা-হোতারোপি স্বরগ্রেক্তবিধিনা আবারাবাজ্যভাগাদিকং চ হত্যা দবপ্রকামধামকৌত্তরশত-মন্তাবিংশতি মন্তে বা প্রছেভ্যোছত্বা অথ ইক্রাদিলোকপালেভ্যোছত্বা তথা বহুধান্যক মৃত্যি-দেবেভ্যশ্চ নর্বাদিভাতত হৈ দিকমক্তৈহোঁমং কুর্যুরিত্যাদি। এবচাথে ভবিব্যাদিবচনতোব্যক্তো-ভारी ॥ ১২১ ॥ व्यवस्थानित्रवार निवन्धारस स्वार एक ग्रामी व्यवस्थः मूरकारिशका

क्रकीरवर्णः कृत्यपु नश्चाद्वर । अकोनामिक्षिणांम् वरका देविविधान्षिणांमकाः । भृथिवीर भाकि नर्वत्र भर्त्वभणाविष्मव जू। यक्ष्मांनर करेवरवार्शाकृत्र महानिष्ठारमव ह। खरवाक्रमः नमा नाष्टि वांत्रुमीमान अव ह। महास्वछशा हम्पूर खीमम्हाकामास्व ठ। नर्वत्वयिष्ठित्रे मृर्डिभार्श्विवस्य ॥ १२२ ।। এতে ভোটिविष्ठिक स्थिर्थश्वरः হোমমাচরেৎ ।। ১২৩ ।। হয়শীর্ষে ।। রুত্বারিৎ বৈক্ষবৈশ্বস্তিঃ কুর্য্যাৎ শাস্ত্যদ্কৎ বুধঃ। তৎ নিজ্ব। প্রতিমাসুদ্ধি বিহ্ন প্রণয়নং কুরু।। দক্ষিণেং রিভূতমিতি কুণ্ডেরিং প্রণয়ে-षु ४३ । अधिमहोस्ड मूर्व्संख कूर्छ रिवः अनस्त्रषु ४३।। উत्तर अनस्त्र कि विभिन्नि विभिन्नि ভ ধীমহি। অৱিপ্রণয়নে মক্তবুমহাত্বিতি পশ্চিমে।। পলাশস্মিধানাং ভ ঘৃতা-ক্তানাং মহানলে । অফোভর সহসুৎ ও কুণ্ডে কুণ্ডে ত হোময়েৎ ।। ১২৪ ।। বেদাদি মলৈদেবেশ ততোক্রীহীওভ হোময়েং। তিলানাং ঘৃত্যুক্তানাৎ কুণ্ডে কুণ্ডে ভ-मृद्धिभाः। महोमुक् बताक्षिणिक् ह्यूः मामतमणः। गृनमायन जुल्यः साहा-खन मूर्ताबम् ।। **चरको**खनगर्मु । छ कूछिकूछ यथाविधि। मृज्हाममिनः रुपुालः শান্তিহোমসতঃশৃৰু। মধ্রতিভয়েনাথ জুভ্যাদ্বাদশাকরৈঃ। পানৌ নাভিং হচ্ছি-उम्ह म्लूरमञ्जूषा यथी क्रमरे। घृष्टर एषि शश्रीम्हवर्माकिकः एमिकः सत्रः। প্रक्रिलामर च्या (भाष्ठा थि सञ्जा ख मधूत्र जन्न । भारत को खित्र स्वा विषुः भित्र नि नः च्या । ভথৈব হৃত্বা পঞ্চাশৎ হৃদয়ে সংস্পৃশেষ্করিং। ভতোঞীবিৎশতিং হৃত্বা নাভিদেশে इति भ्रिट्सर। अकेविको उट्डाइया शामाक्रो स मरम्भ्रमर ॥ ১২৫॥

व्य भासिय हो एक म्लासिय । एवर भासिय है एक मारि किया मारि हिला मिन । मारि है विद्या । मारि है । कि कि मारि मारि है । कि कि मारि है । मारि है ।

একনেত্রএক মৃত্তি প্রিকৃতিঃ প্রীকৃতিঃ লিবশ্চেতি। তে স্থান স্থৈন নিজিবা ক্ষেত্রাঃ তেবাং নস্ত্রাশ্চ প্রথার ।। ১২২ ।। বধাস্থং বধাক্রমং বধা স্থানস্থান লাচরে দিত্যনে নাচার্যোপি তওজোমং কুর্যাদিন্তর্য: ।। ১২৩ ।। অগ্নিভ্তমিদং সন্ত্রেণ দক্ষিণে কুথে অগ্নিং প্রণাহে ।। অগ্নিমন্ত্রীতি মন্ত্রেণ প্রতিলোমং শির্মাদিন্দমেণে তার্থ: । তদেবাভিব্যঞ্জন রন্ত্রে তর হোমসংখ্যামাই শতমিতি ছাভ্যাং ।। ১২৫ ।।

সংপাতাছতে র্বৎপাথোজনং তেন। তৎসাধনপ্রকারশ্বাত্রে মাৎস্যবচনতোব্যক্তো ভাবী ।
সংপাতাছতিজ্লং চ শান্তিষ্টে দেবস্য স্থাপনানন্তরং স্থানার্থং কিঞ্চিদ্বশিক্তং কার্যামিতি

## প্রথারভতি বিদাসঃ



ভে বা সহসাতে সুকপূর্ণাহতিরিয়াতে। সমাপ্যাহতিমূর্দ্ধ প্রশান্ত আ বিনিক্ষি-পেং।। আত্তীনাৎ তু সংপাতং পূর্ণকুষেষু বিন্যমেং। गृनমধ্যোত্তমাক্ষেষু দেবৎ তেনাবসেচয়ে ।। স্থিতঞ্চ স্থাপয়েত্তেন সংপাতাক্তিবারিণা ১২৬ ।। প্রতিযামেযু थुभः চ নৈবেদ্যং চন্দনোদকং। পুনঃ পুনঃ প্রকৃষ্ধতি ছোমঃ কার্য্যঃ পুনঃ পুনঃ। পুনঃ
পুনশ্চ দাত্ব্যা যজনানেন দক্ষিণা। সিতবল্তৈশ্চ তে সর্বে পুজনীয়াঃ সমস্তভঃ। বিচি-ত্রংমকটকৈর্মেসূত্রাস্কুরীয়কৈঃ। বাসোভিঃ শয়নীয়েশ্চ প্রতিযামেষু শক্তিতঃ। ভোজনৎ চাপি দাতব্যং যাবৎ স্যাদ্ধিবাসনং। ত্রিসন্ধ্যং বলয়োদেয়াভূতেভ্যঃ সর্বভোদিশং। ব্রাহ্মণান্ ভোজয়েৎ পূর্বং শেষ:ন্ বর্ণাংস্ত কামতঃ। ব্লাতৌ মহোৎ সবং কার্য্যো নৃত্যগীতকমঙ্গলৈঃ। ১২৭।। তিরাত্রমেকরাতেং বা পঞ্রাত্রমশাপি বা। সপ্তরাত্রমথো কুর্যাৎ কুচিৎ সদ্যোহধিবাসনং ॥ ১২৮ ॥ হয়শীর্ষপঞ্চরাত্রে চ ॥ यागमञ्जयमामाम्। मिक्निवातरगाहरतः । উख्राजिम्थाः साम्। महज्रम्भारताइ-নঘ। গঙ্গেতি প্রথমাখ্যাতা দ্বিতীয়ে যমুনেতি চ। গোদাবরী তৃতীয়া চ চন্ত্রথী ত্ সরস্বতী! দোহনং বিষ্ণায়ত্ত্র। কৃত্বা পশ্চাৎ চরুং শ্রম্মের । গায়ত্র্যা হোময়েট্ডিব গায়ত্রৈ বলিৎ হরেং ৷ ভোজয়েদ্বাক্ষণৎ চৈব মগুপাদুভরে দিজ। পায়সেনাজ্য-यুক্তেন শর্করা নিশ্রিতেন চা৷ মাসাধিপানাং ভক্তার্থ দদ্যাৎ কনকদক্ষিণাং।। গাশ্চ তাংস্তান্ সমুদ্দিশ্য একৈকায় নিবেদয়েৎ। দেবাসুরাদীনুদ্দিশ্য কুর্য্যাবলি-নিবেদনং।। অধিবাদৈয়ৰ দেবেশং কুর্য্যাক্তাগরমাদরতি। মজিলৈত্র ক্ষিঘোধৈশ্চ क्यमक्तरविख्या ।। भूगाइमटेक्किभूदेनगी उवादिजिनिः स्रदेगः । मञ्चादारम सहजा वीनारवनुतरवन চ। কোলাহলৈশ্চ ভের্ম্যাবিদ্যং কুর্য্যাজ্জাগরণং হরেঃ ।। ইভ্যধিবা-সন্ধ। অধিবাসন্মাহাত্মাং তত্তিব। যত্ত্বেৎ বিধিনা ভক্ত্যা কুর্য্যাদ্বোধিবাসনং। স সর্বতীর্থযজ্ঞানাং দানানাং তপসাং তথা । ফলং শতশুণং প্রাপ্য বিষ্ণুলোকে-মহীয়তে।। আত্তসংগ্ৰবং যাবদেৰ্বভত্ৰ মোদতে।। ১২৯।। অথ প্ৰাসাদাদেগৰ্ভি-নির্মাণাদি । প্রাতঃপ্রাসাদগন্ত হৈ পুস্পাদ্ধিং প্রোক্ষ্য সর্মতঃ। নিশ্চিত্য মধ্যমৈ-শান্যাৎ গর্জৎ কৃত্বাপয়েচ্ছিলাং ॥ ১৩০॥ ভবিষ্যে। অধিবাদ্য ভভোবিষ্ণুং

তস্যান্তে স্নাপয়েন্তেন সংপাতাছতিবারিণেতি স্নাপনানন্তরং অগ্রে লেখাভবিষ্যামুসারেণ জ্যেং॥ ১২৬॥ ঋত্বিগ্রেদক্ষিণা দাতব্যা। তে চাচার্য্যাদয়ং সর্বে পুনঃ পুনঃ পুলনীয়া ইত্যেবং প্রতিযামং যথোক্তং হোমাদিদেবপূজান্তে। বিধিরাবর্তনীয়ইত্যর্থঃ ॥ ১২৭॥ ক্রিছে সদ্যোহিধিবাসনমিতি চল্মূর্ত্ত্যভিপ্রায়েণ দেশকালাদ্যপেক্ষয়া ॥ ১২৮॥ হয়শীর্যদেবেন্দ শান্তিঘটতোয়স্পনাদিকং হোমপ্রস্কতএবনির্দ্ধিতং। অধিবাসন শেষক্ষত্যমন্যচ্চ কেচিদাছ র্যাগেত্যাদিনা॥ অন্যৎ স্পাটার্থমেব।। ১২৯॥ গর্জন্যাধঃ ব্রক্ষশিলাং ন্যুদেহ।। ১৩০॥ মত্ত্রেণ ওঁসরঃ

भवः कूर्यार नमाहिकः । श्रीमानगान्बरणन श्रीक्रमात्राण छोत्र । श्रीमानः প্রোক্ষ্য সর্বাত্ত মন্ত্রপূত্তেন বারিণা। পাতয়েৎ পক্ষসূত্রাণি দারসূত্রং তথৈব চা৷ ১৩১ ৷ ভতোমধাৎ नमः गृहा कर्डवाः श्वितमामताः । कूर्याः मूजर व्यमाणन क्रमगास् ए-कभंगः। मृताधरार नात्रर भृतिर मिनार् उमाजिकार श्रेष्ठार ॥ मार्रमा॥ क्या-धिवानः (मवाना भवः कूर्य)। नगाहिनः। शानामार्कानुवरभग मानालिन्ना वा পুনঃ। পুজোদকেন প্রাসাদং প্রোক্ষ্য মন্ত্রযুতেন ন্ত। পাতয়েৎ পক্ষসূতাণি ছার-मृत्र ७१वर ह । আশ্রেছ किक्षिरमभानी स्थाप कृषा मिनर तूषः । ঐশাनीया-विष्ठः ( त्वः পू अप्रसि पिरवोकमः । वागू द्वारतागा कनं प्रभारता खद्र मा खिलः। खलः न्। मिस्ड र त्यांक्रमन । यो श्रामन दूरियः । यथः कृ म्मिना त्यांका मना उम्मिना-ধিকা।। হয়শীর্ষপঞ্চরাত্রে।। অধিবাস্য বিধানেন দেবদেবৎ হরিং প্রভুৎ । পিণ্ডি-কাস্থাপনার্থায় গর্ভাগারৎ বিশেক্ষুরুঃ। যাদৃশং গর্ভগেহৎ ত রুতং সুরগণার্চিতং। সংবিভজ্ঞা প্রকৃষ্ণতি সপ্তভাগৎ বিচ্হন । পুনশ্চ সপ্তধা কৃত্বা স্থানভাগৎ প্রকংপ-য়ে । ব্রহ্মভাগং ভবেমধ্যং দৈবং স্যান্তদনভরং।। তৃতীয়ং মানুষং ভাগৎ পৈশাচং জু চত্তর্থকং । বিভুজং ধ্যানযোগস্থং নিবিষ্টং স্থিতমেব চ । চত্তভুঞ্জং বা ত্রন্ধ্বে তু ভাগং সংস্থাপয়েদ্ধরিং । ক্রন্ধভাগং পরিত্যন্ত্রা কিঞ্চিদাশ্রিত্য বা দ্বিজঃ ।। সদৈব স্থাপারেদেবং দেবমানুষভাগায়োঃ। দৈবমানুষভাগাভ্যাৎ শয়নং পরিকপায়েৎ। দারবীং মৃণ্যুয়ীৎ মৃত্তিং দেবস্থানে নিবেশয়েৎ। মানুষ্ কিঞ্চিদাশ্রিত্য আসীনং क्षां शरमक्रितः। नतंत्रिर्दं वताद्य एवजाता निर्योद्धराष्ट्र ॥ विष्यमप्रिकाः (मवीर आज्रृष्ट् जननर ख्या । आमीख्यामीन् इरत्रत्नग्रात्नवयामी रख्या शतान्। रेशमाः চে স্থাপয়েই স্থানে নাত্র কার্য্যা বিচারণা। স্বস্থানব জ্ঞিতাঃ সর্বে ভয়দুঃখাময়প্রদাঃ। ভন্মাৎ সর্বেণ যত্নেন স্বস্থানে বিনিবেশয়েৎ।। ১৩২।।

অধ পিণ্ডিকাশোধন ।। এমূর্ত্ত্যা সহ পিণ্ডীং চ স্থাপরিস্থাভিপূজ্য চ। রথেন মণ্ডপং নীত্বা সংস্থাপ্য পুনরর্চয়েই ।। মাৎস্যে।। ততঃ প্রকালিভং রুত্বা পঞ্চন গব্যেন পিণ্ডিকাং। ক্যায়তোয়েন পুনর্মস্ত্রযুক্তেন সর্বতঃ।। দেবভার্য্যাশ্রয় মন্ত্রং পিণ্ডিকাসু নিযোজয়েই । হয়শার্ষে ।। শ্রিয়ং সুক্তেনার্চয়ীত প্রত্যুচং পিণ্ডিকান্ মপি।। ১০৩।।

ষ্টেত্য ভৈষক্তোত্বেতিমন্ত্রেণ পূতং যন্তেন। পক্ষসূত্রাণি পার্শ্বসূত্রাণি।। ১৩১।। শুভমভিস্থানমন্যথা উক্তপ্রকারয়তিরেকেণাশুভং স্যাদিতি বুধৈঃ প্রোক্তং।। ১৩২ ।

পূৰ্বং সাক্ষাদলিখিতং পিণ্ডিকাত্মপনাদিকং পিণ্ডিকাশোধনপ্ৰসঙ্গেত লিখতি শ্ৰীমূৰ্জ্য। সংহতি। মধেন শ্ৰীমূৰ্জ্যধিয়োহিত্যানেন অসংভবে অন্যেন বা॥ ১৩৩॥

আথ প্রানাদে জীমূর্তিবিজয়ঃ!! প্রাগৃৎ জীমূর্তিমুখাপার মানে চারোপার মন্ত-পাৎ। প্রাদক্ষিণ্যেন সানন্দৎ নয়েৎ প্রামাদমন্ত পং ।। ১৩৪।। তথাচ মাৎসের।। তত উত্থাপার দেবেশং উত্তি প্র জ্ঞানস্পতে। আনীয় গর্ভতবনং পীঠাতে স্থাপারেদুখং ।। ভবিষ্যে ।৷ ততশ্চোখাপয়েদ্রেবং মত্রেণানেন ভূমিপা। উত্তি প্র জ্ঞানস্পতে
ব্রহ্মঘোষেশ্চ পৃদ্ধলৈঃ। পুণ্যাহ জয়ঘোষেশ্চ শস্থাতের্য্যাদিনিঃম্বনৈঃ। রঝং চালক্ষ্ তং
করা তিমাৎশ্চারোপয়েচ্ছনৈঃ।। বথে তিঠেতি মত্রেণ রথস্থং কারয়েদ্রিং। প্রামৎ
বা নগরং বাপি শনৈঃ কুর্যাৎ প্রদক্ষিণ ।। পুস্পর্গ স্থৈতথা নাদ্যৈঃ শকটং পূর্মেচ্ছতিঃ। শন্ত্রানিনাদেশ্চ পতাকাভিশ্ব কৈন্তথা। চামবৈশ্চ বিতানেশ্চ কলসৈঃ
পদ্মশোভিতিঃ। দীপদর্পন্সংযুক্তগাতিমঙ্গলনাদিতৈঃ। বলিং প্রক্ষিপারানম্ভ শনৈর্গচ্ছেৎ প্রদক্ষিণং।। ২৩৫।।

অথ রত্নাদিন্যাসঃ।। অর্থাদ্যাদিকং দত্ত্ব তত্র বিশ্রাম্য চক্ষণং। তস্যাং
ব্রহ্মশিলায়াং তু ন্যমেত্রানি মন্ত্রতঃ।। ১৩৬।। ভবিষেয়।। আনীয় মগুপেপশ্চাদর্যাৎ পাদ্যং চ দাপয়ে । তিম্মিন্ মুভূর্ত্তে বিশ্রম্য রত্ন্যাসং তু কারয়ে ।
সর্মবীজানি ধাতৃংক্ট রত্নান্যোষ্থয়ন্তথা। কাঞ্চন্থ পাল্লাগঞ্চ পারদেন সমস্থিতং।
পল্লঃ কূর্মক্ট পৃথিবী গরুড়কানুপূর্মকাঃ। ব্রহ্মস্থানে তু দাতব্যা মন্ত্রপূতা ষ্থাবিধি ।। ১৩৭।। বীজং গাঢ়ং ন কুর্মীত সমূলাখন্তান্ প্রপাতয়ে । বীজগাঢ়োমহাদোষোব্যাধিদোষভয়্ম ভবে । বীজকানামলাভে তু স্বর্ণ সর্মত্র বিন্যদে ।।
১৩৮।। অর্ঘ্যপাদ্যাদিকং তত্র মধুপর্কং প্রযোজয়ে । ভত্যোমুহর্ত্তং বিশ্রম্য রত্ন
ন্যাসং সমাচরে ।। ১৩৯।। বজুং মৌক্তিকবৈদূর্য্য শঙ্খং ক্টিকমেব চ। পুষ্পারাগেল্টুনীলঞ্চ নীল্প পূর্বাদিতঃ ক্রমাং ।। ১৪০।। তালকঞ্চ শিলাবজুমঞ্জনং শ্যাম
মেব চ। কাক্ষীং কাশ্লীসমাক্ষীকং গৈরিকঞ্চাদিতঃ ক্রমাং। গোধুমং চ যবংভত্ব-

প্রদক্ষিণেন নগরস্য গ্রামাদের্বা প্রদক্ষিণং কৃত্বা। সানন্দং গীতবাদ্যাদিসংহাৎসংবনেত্যর্থ: । প্রাসাদে তদগ্রতো যমগুপং তৎ॥ ১৩৪॥ শকটং তদ্রথমের ॥ ১৩৫॥

তত্র মণ্ডপে ক্ষণং বিশ্রমা। তদ্যাং গর্জাধোনাস্তায়াং। মন্ত্রতঃ তপ্তরাক্তঃ। রত্মনাদ্বিধিক্রমশ্চ
মৎসাপুরাণাদিবচনতোইত্রেব্যক্তো ভবভোব ॥১৩৬। পদ্মাদয়শ্চ স্থানির্দ্ধিতাঃ অত্রে লেখ্য শ্রীছয়শীর্ষোক্ত্যা জ্রেয়াঃ॥১৩৭॥ বীঙ্কং গাঢং কচিনমিত্যর্থঃ জাতাবেকত্বং ॥১৬৮॥ তত্র গর্ভভবনে প্রয়োজয়েৎ সমর্পয়েৎ ॥১৩৯॥ বজাদাউকং অইদিক্ষু প্রাদিশমারভ্য ক্রমেণ অত্রে লেখ্য তন্ত্রমক্ত্রৈর্বিন্যমেৎ। এবমর্গ্রেপ ক্রেয়ং। তত্র প্রয়োগঃ। ইন্দুস্ত মহতা দীপ্তঃ সর্বাদেবাধিপোমহান্ ॥ দ্রোনিহন্তঃ সত্রাচান্তক্রৈ নিত্যং নমোনমঃ। ও ইন্দুয় নমইত্যাদি। পঞ্চরাজামুদারেণ চাপ্রে লেখ্য
তারোক্তমন্ত্রেরেব। তত্র বজুং হীরকং॥১৪।॥ তালকং হরিতালকং শিকা মনঃশিলা বজুমত্রকং।

खिमयुकाः करिथव ह ।। "85 ।। नीवावमध मामाकः नर्षभ खीशिमव ह। नारमध क्रायम श्रुवीरमी हन्मनः ब्रक्काहन्मनः । अध्यकः हाक्षमः हैहव उमीबन्ध उच्छ भद्रः। रेवस्वी र महरम्बोर व नम्मनार व ज्वः भवर । स्वानिभानामा जून रमरमाक्षात-পূর্বকং ।৷ ১৪২ ।। সর্ববীজানি ধাতৃ ১ শচ রত্নান্যোষধয়ন্ত্থা। ব্রহ্মন্থানে ও দাত-व ्राः म र इ छाः मु ः भव म्भ द । । १ ।। काक्ष न र भवा वा भ भ व ।। व ।। काक्ष न र भवा व ।। কুম ৎ ধরাং বৃষৎ ভদ্বৎ ন্যাসেৎ পূর্বাদিতঃ ক্রমাৎ ।। মূলকৎ বিদ্রুমৎ ভামুং কাংস্যং চৈবাবকূটকং । রজভং বিমলং পৃষ্পাং লোহং চানুক্রমেণ ভ । কাঞ্চনং হরি-जानक मर्खाভारि विनिक्तित्थः । मन्त्राष्ट्रीकोषधीस्थात महत्ववोः यवानिशः। ১८८।। হয়শীর্ষপঞ্চরাত্রে। নপুংসকশিলায়াং ত রত্ন্যাসং সমাচরেৎ। বস্তাভরণগলাদ্যৈ পূর্ববজু বিভোগুরুঃ। ভত্তাভ্তিশতং বিপ্র নারসিংহেন বা পুনঃ। তেনৈবানস্ত্রঃ রত্াদীন্ পি গুকাংখতকে ন্যসেহ। গুগ্ওলং দ্রাবয়িত্বাথ গর্ভে ত বিনিবেশয়েৎ II রত্নাদীনাং ভ ন্যস্তানাং নিশ্চল করণায় তু। ততে।নিবেশয়েন্তাংস্ত দিশাসু বি দিশা সুচ।। প্রথমাবরণে ত্রীহীন্রজান্যপি দ্বিতীয়কে। তৃতীয়ে বিন্যেক্ষাতৃন্লোহং চাপি চত্তর্থকে। প্রতিবার্ণগর্ভে তু পঞ্চমাবরণে দ্বিষ্ক। চল্দনাদীংশ্চ বিপ্রেন্দুশ্চাস্ট দিক্ষু নিবেশয়েছ। একৈকং দিক্ষু বিন্যুস্য মধ্যে চৈবাপরং ন্যুসেছ। ঐন্দ্যুাং চ চন্দন্ৎ नामानारायाः तक्कान्तनः । क्रकां छकः पिक्तनाः रेनक्षं जामानाकः । उनीवः পশ্চিমে ভাগে বিষ্ণুক্রান্তামথাপরে। সহদেবীমুদীচ্যাং ত লক্ষণামীশগোচরে। जाकीः गुर्कानाः मार्थ। वृक्तिः जात्का निर्वाशयः । शानारेमलुताः निर्वामताथ जात्य-য়াংত কুল্পক্। যবান্দক্ষিণভাগেও গোধূমং নৈশ্বতেনাসে । তিলাৎস্ত পশ্চিম দদ্যাল্লীবারং বায়ুগোচরে । মৃদ্যামুত্তরতোদদ্যাৎ নিজ্পাবানীশগোচরে। माथा निकार्थकः मन्त्राज्ञञ्चतामः ममाहत्वः । बङ्गः जू भूक्तांकाननानात्वयाः মৌক্তিকং তথা । বৈদূর্যাং দক্ষিণে দদ্যাত্ত্ ইন শ্বতিগোচরে ৷ স্ফটিকং বারুণে

শ্যামমঞ্জনং সৌবীরাঞ্জনং। কাফ্লীং সৌরাউ্মৃত্তিকাং। কাঞ্লীসং সীসং। মাক্ষীকং হ্বর্ণমাক্ষিকং।
।। ১৪১॥ ব্রীহিং ধান্যং। অঞ্জনং কৃঞ্চাগুরুং।। বৈষ্ণবীং বিষ্ণুক্রান্তাং।। ১৪২।। এবং সর্বাণিবীক্তানি সর্বান্ ধাতৃন্ সর্বাণি রত্নানি সর্বা ঔষধীক্ষ ক্রমেণ নাসেৎ।। ব্রহ্মস্থানে চ মধ্যে বীক্ষাদয়ঃ পরস্পারং সংহতা মিলিতা দাতক্যাঃ।। ১৪৩।। পুনঃ কার্য্যকং অয়স্কান্তলোহমিতি যাবৎ। বিম্বাং তিবিধং হেমবিমলং তার বিমলং কাংগ্যবিমলমিতি প্রসিদ্ধং। পুষ্পাং লোহবিশেষং যত্র পক্ষাকারা বিদ্যবোবস্তান্ত। লোহাভাবে কাঞ্চনং ধাতৃন্ ঔষধ্যভাবে সহদেবীং দদ্যাদিতি ক্রেয়ং এতচ্চ সর্বামণ্ডে হয়্নশীর্ষপঞ্চরাত্রে বচনতো বিবৃত্তং ভাবি। তত্র কৃচিভিরোধক্ষ কলভেদাক্রিকারা পরিহ্রণীয়ইতি লিখিতমেনেতি দিক্।। অন্যৎ স্থগমং।। স্থিতস্য তন্তক্রব্যোপর্যাব স্থিতে সতীত্যর্থঃ। এবং মৎস্য ভবিষ্যপুরাণোক্তাম্ব্যারিণাং স্তাং মতে প্রথমং প্রানাদে শ্রীমূন্ত বিক্ষয়ন্ততে। রত্নাদিন্যাস ইতি লিখিতং॥ শ্রীহ্রশীর্ষমতে চ তভিপরীত্মিত্যুল্লিখন তবৈর

দদ্যাৎ পাল্লরাগং ত বায়বে । উত্তরে চন্দুকান্তং ত এশান্যানিন্দুনীলকং । পাল্লরাগং ন্যান্যাধ্য হথাবং বিজসন্তমঃ। হরিভালং ন্যানেং পূর্বে আরেয়্যাং ত মনঃশিলাং। অঞ্জনং দক্ষিণে দদ্যাৎ মাক্ষাকং ক্রন্ধান্যাহের । সৌরাষ্ট্রীং বারুণে দদ্যাদ্বারব্যাং গৈরিকং তথা। সীসং চৈবোত্তরে দদ্যাদিশান্যাং গল্ধকং তথা।। পারদং ত ন্যান্যায় হথাবি এদশেশর। হিরণ্যং পূর্বে তোদদ্যাদারেয়্যাং তারমূত্তমং। আয়সং দক্ষিণে ন্যায় কৈ ভাগং ক্রপ্রং তথা। পশ্চিমে বিন্যামেদ্ঘোষং নাবং বায়ব্যগোচরে। সিফ্লকং চোত্তরে ন্যান্য শুলুমানানগোচরে । পালং ক্র্যাং তথানান্তং পৃথীং মধ্যে নিবেশয়েং। সুমার্ক্ত সুরক্ষেতি সর্বমেতিরির গ্রাং। এঘামেকত্তমং মধ্যে ন্যানেং স্বান্যানি বানান্যান্যানি বানান্যান্যানি বানান্যান্তির বিশ্বান্তির বিশ্বান্যান্ত বিশ্বান্তির বিশান্ত্রিক নির্বান্তির নির্বান্যান্ত বিশ্বান্তির বিশান্তির নির্বান্যান্ত সর্বাব্রানাং বিশান্তির শুলুমান্ত । আলাতে সর্বাবাত্নাং হরিতালং বিনিং-ক্রিপেং। জালাতে স্ব্রানাং মুকুল সর্বান্তির শ্বানানি প্রদাপয়েৎ।।

অথ রজন্যানসভঃ।। ভবিষ্যে। ইন্দুস্ত মহসাদীপ্তঃ সর্বাদেবাধিপোমহান্। দংখালিছন্তঃ সত্মাত্য নত্যে নত্যে নমোনমঃ ।। আধ্যেয়ঃ পুরুষোদীপ্তঃ স্কাদেব ময়ো-২বারঃ। পুন্কেন্রনাধ্ধ্যত সৈ নিভাং নমোনমঃ।। যমনেচাৎপল বর্ণাভঃ পুরুষো-দগুগুক্ মহান্। ধর্মসাক্ষী বিশুদ্ধাত্মা তকৈ নিত্য নমোনমঃ।। নিখ তিঃ পুরুষঃ রুকঃ নর্জারকোহধিপোমহান্। খড্গহস্তোমহাসত্ত স্থাম নিভ্যুৎ নমোনমঃ।। বরুণঃ সবংলাবিষোঃ পুরুষো নিমুগাধিপঃ। পাশহস্তোমহাবাহুন্ত সৈ নিভাং নমোনমঃ।। বাধুকৈ শ্যামবর্ণোইয়ং সক্ষণন্ধবহঃ শুচিঃ। পুরুষোধুজহন্ত ভব্মৈ নিত্যং নমো-নমঃ।। আত্রেয়ঃ পুরুষ: সৌম্যঃ সকৌষধিসমন্তিতঃ। নক্ষত্রাধিপতিঃ সোমস্তব্য নিত্যং নমোনগঃ। ঈশানঃ পুরুষঃ শুক্রঃ সর্মবিদ্যাধিপন্তথা। শূলছস্তোবিজ-পাক্ষস্ত সৈ নিত্যং নমোনমঃ।। পদ্মযোনিশ্চ তন্ম স্থিকেদবাসঃ পিতামহঃ। যজা ধ্যক্ষ সতত্ত তিয়া নিত্যং নমোনমঃ।। যোহসাবনন্তৰপেণ ব্ৰহ্মাণ্ডঞ্চ চরাচরং। मार्गि ह श्रीयः नर्सामवामव ।। পুজ্পবঢ়ারয়েন ক্রিতকৈ নিত্র নমোনমঃ ।। কিঞ।। ওঁকারপর্ফিকা হেততে ন্যানে বলিনিবেদনে। মন্ত্রাঃ সুতঃ সর্কদেবানাং বৃদ্ধি-পুত্রফলপ্রদাঃ। হয়শার্ষপঞ্কাতে চ। দিগাশানাৎ তুমজেণ রত্নাদীন্ বিনিবেশয়েং॥ ত দ্বথা।। শক্রঃ সুরপতিঃ জীমান্সহসুনয়নোজ্বলঃ। যটা যঃ ক্রতুমুখ্যানাৎ নম-স্তাম মহাত্মনে।। ওঁত্রাভারমিতি মন্ত্রেণ সানিধ্যং তত্র কারয়েৎ।। অজঃ পৃষ্ঠগতঃ শক্তিয়ন্য পৃষ্ঠে মহাজানঃ। হব্যকব্যবংগ্ৰোবৈ নমন্তকৈ মহাজানে।। ওঁ ভাগ-আয়াহি মন্ত্রেণ সালিধ্যৎ ভস্য কারয়েৎ।। রুক্ষাঞ্জননিভো রৌদ্রো দণ্ডপাণিঃ সূত্ত-জ্বলः। সর্বপ্রেতাধিপোদেবোন্যুস্ত মৈ মহাত্রনে।। সামিধ্যকরণে ওস্য মক্তব্নির্মুঙ

শাহঃ ।। ঘারদং দ্রীকরালন্ত থড় গপাণিঃ সুভৈববঃ । রাজসাধিপতির্দেবানমস্তুলৈ মহাত্মনে । সামিধ্যার্থং তস্য মন্ত্রথম তে নিশ্ব তে স্কৃতঃ ।। সপ্তসাগরদেহস্ত
পাশপাণির্মহাদ্যুতিঃ ।। যাদসাংপতিরেকোযোনমন্তলৈ মহাত্মনে । তস্যালভন
মন্ত্রপ্ত পল্প নদ্যঃ সরস্বতী ।। সপ্তসুরানুগা যস্য যোনিগী তোমনী যিভিঃ ।। অশরীরেতি বিখ্যাতোনমন্তলৈ মহাত্মনে । মন্ত্রস্যাপি সামিধ্যে বাত আবাত্
ভেষজং ।। ধনাধিপোদ্রেষ্মুর্ভির্গদাহন্তোন্বাহনঃ । উত্তরাশাধিপঃ প্রীমান্নমন্তলৈ
মহাত্মনে । সোমংরাজেভিমন্তোহ্ম তস্য সামিধ্যকারকঃ ।। বিদ্যাধিপোর্যাক্যঃ
শূলপাণির্মহাবলঃ । তৈলোক্যবন্দিতঃ শ্রীমান্নমন্তলৈ মহাত্মনে ।। ঈশাবাব্যাতি মন্ত্রেণ তৎসামিধ্যং প্রকল্পয়েৎ ।। যইমাং সকলাং পৃথীং সপ্তসাগরভূষিতাং ।
বিভর্তি মালাপ্রতিমাং নমন্তলৈ মহাত্মনে । নমোহস্ত সর্পরত্ব সামিধ্যং তস্য
কম্পয়েৎ ।। ক্রন্ধা চন্ত্রমুর্থঃ স্থামী সর্কলোকপিতামহঃ । কমগুলুধরঃ শ্রীমান্নস্তুলৈ মহাত্মনে ।। ক্রন্ধাদেবেতিমন্ত্রেণ সামিধ্যং তস্য কম্প্রেৎ ।।

অথ কামবিশেষেণ দ্রব্যবিশেষন্যাসং ।। ভবিষ্যে।। ক্ষীরবৃক্ষত্তহং পুত্সমন্ত্রন-জ্লসংযুতং। শ্রীকামস্ত ন্যদেৎ সম্যগ্দেশবৃদ্ধিকরং শুভৎ ।। পারদৎ ঘৃতগোধৃমান্ দূর্বাৎ রোচনয়া সহ। গোশ্স্মৃতিকাৎ চৈব কূর্চেন সহ নিক্ষিপেৎ। স্থিতসঃ তসঃ দেবস্য প্রিয়োবৃদ্ধিঃ সদা ভবেৎ। রুষরং কাঞ্চনং চৈব পাছেন সহ বিন্যাসেৎ। স্থিতস্য ভস্য দেবস্য চাত্তর্বার্থিত ছবেং। চত্তস্পাদাশ্চ বর্দ্ধন্তে নচ শস্যং বিনশ্যতি ৷ লাকা মধুঘৃত ১ চৈর শমী চাশ্বথমের চ। বেদ্যা সহ চ দাতব্য যজোৎ সবকরা তথা ।। মৃতি-কা পর্বভদ্যাথ জ্বদাদাদায় মৃত্তথা। সদা ক্রমেণ দাতব্যা রাষ্ট্র বৃদ্ধিকরী নৃপা। কাঞ্চ-নং সর্ববীজানি মেদিন্যা সহ বিন্যুদেৎ। স্থিতস্য ত্ব্যু কৃষ্ণসঃপ্রজা রাজা চ বর্দ্ধতে । ব্ৰহ্মস্থানে চ বিন্যস্য সৰ্ব্যকামাৰ্থনং শুভং । ন ভয়ৎ নচ দুৰ্ভিক্ষং তত্ৰ দ্ৰব্যব্যবস্থিত हेि।। बीश्यमीवर्षर्वन तञ्जन। नामनखत्रः। वृत्स मालायुरमारक जू श्रामारम विकार्य। मछः ॥ इश्रमीर्स् ॥ त्रज्नामिविधिः कृषा প্রতিষ্ঠামার ভৈলুকः । ममनारेक पर्छ-পিঞ্চিঃ সহদেবী সমস্থিতিঃ। মহাক্ষতৈক্ত সংক্ত্য পঞ্চাব্যেন শোধয়েৎ।। প্রোক্ষ-য়েলান্ধভোয়েন নদীতীর্থোদকেন চ। হোমার্থে স্থপ্তিলং কুর্য্যাৎ সিকতাভিঃ সম-खा । नार्क १ इख्यमान्छ ह्डत्र मू (भाष्ट्रनः ।। अधि रिक् यथानामि कनमानि পূজারে ।। মদ্রেণান্টাক্ষরেণৈর পূর্বাদিক্রেমযোগতঃ । আনায় সৎকৃতং বহিং অমধ্যে প্রতেত্যা। প্রাশসমিধানাং তুর্তাক্তানাং সুরেশ্ব । শতং বাথ সহসুং বা গায়-ত্র্যা বিষ্ণুস্পত্রয়া । জুহুরাচ্চ শতং দ্দ্যাদাজ্যমন্তাক্ষরেণ ন্ত্র। পূর্ণাহুতিং শান্তি-ভোরৎ কুর্যান্তত্র বিচক্ষণঃ ৷ কলসেষূদকৎ গৃহ্য ভামুপাত্রে নিবেশয়েং। মস্ত্রে-চ্ছতবারাংস্ত মূলমন্ত্রেণ দেশিক:। সেচয়েদেবতা মূদ্ধি জীশ্চ তেত্যনয়াই নহ। ব্রহ্ম ষানেন চোক্ত্য উত্তিষ্ঠ ব্ৰহ্মণুস্পতে। ত্বংবিকোরিতিমুদ্রেণ প্রাসাদাভিমুখং নয়েৎ।

A CONTRACT A CONTRACT RESERVED TO THE RESERVED

मिविकाशः इति शिंभा तथा वाथ मूर्यक्विष् । जामन्नोष्ठ भूतः मर्सन्नथवात्रक्रमः खकः । अपिकालिन प्रतिभा भर्ति भाष्टिकः । जाम्यक्विष्यं भूतिनिस्तिः । अपिकालिन प्रतिभा भर्ति । जाम्यक्विष्यं । जाम्

অথ তত্র মললরপন্ত। এরকায়াং তু সংস্থাপ্য স্পায়েম্পলান্তিং। চত্তেল্যু হবিধবাস্তত্র দিব্যমন্তাভিমন্তিভাঃ। স্ব্যাপসব্যস্ত্রেণ বেষ্ট্য স্পৃশ্য কুশেন তু । আচার্যোণাভ্যনুজ্ঞাভা ঘটের্যলয়ভূষিতৈঃ। স্প্যাস্তি হরিং ভক্ত্যা অইমঙ্গলসংযুত্তং। তত্যোগলাদিনাভার্জ্য মূলমন্ত্রেণ দেশিকঃ। শুক্লবস্ত্রেণ সংছাদ্য অকাঙ্গার্ঘ্যং
নিবেদয়েং। ১৪৫। এবং ক্রমো বছবিধঃ ক্ত্যুং চ বিবিধ্বভবেং। প্রতিমায়াৎ
ব্ধৈশ্চাত্র কার্য্য স্বস্তুক্রসংমতং।। ১৪৬।।

অথেন্দু দিবলিদান । দদ্যাৎ প্রীমৃতি মুখাপা শক্রাদিভ্যোবলি বুধঃ।
তত্ত্রামা চত্ত্তিব নমাচ্তপ্রণবাদিনা। তথাচ তত্তিব ।। ইন্দুদে লোকপালাংশ্চ
আদিত্যাৎশ্চ বসূংস্তথা। বিশ্বেদেবা স্থা স্কান্স্বনামা চোপল্ফিতান্। ওঁ
কারাদ্যামমোহতাংশ্চ কুজোখাপ্য বলিং হরেৎ ।। ১৪৮।।

অথ প্রাসাদান্তঃ শ্রীমূর্তি প্রবেশন ।। দেবং গোবালরজাহভিবেট্য স্বস্থ্যভিবা-

পরমপি ক্তাবিশেবং লিখতি রত্ননাসমিতাদিনা।নবেদয়েতানেন। স্বস্তিতং সাবধানং রথেন সহ সংযোজিতমিতার্থঃ। অন্যৎ স্বগমং॥ ১৪৫॥ নস্বেবং ক্তো ক্রমে চ পুরাণাগমাদি বচনতোবিরোধাপস্তা কর্থং ব্যবহর্ত্তবাং তত্র লিখতি এবমিতি॥ নিজপ্তক্রসংপ্রদায়াচারাস্ক্রসাধ্বেত তত্র ব্যবহারঃ কর্ত্তবাইতার্থঃ॥ এবং স্কৃত্তিবে ছং। স্কৃত্র বিবিধবিরোধদশনাৎ পুনঃ পুনরেব লিখ্যতে ইত্যুন্নেরং॥ ১৪৬॥

কেভ্যোজুছয়াঝ্রানেব নির্দিশতি ॥ অত্র প্রয়োগঃ ওঁ অগ্নয়ে স্বাহা ওঁব্রহ্মণে স্বাহেভ্যাদি॥ ১৪৭॥

ইন্দ্রাদিভ্যশ্চ পারসবলিং তত্তন্ত্রামনস্ত্রেণ দদ্যাৎ।তত্ত্র প্রয়োগঃ। ওঁইন্দ্রায় নমইত্যাদি । ১৪৮॥ দণ্ডবদ্বালরত্বা অ্যক্রিতং কৃত্ব। যত্ত ইত্যাদি জীবস্তুক্তেন জীবদানং কৃত্রা সর্বেহন্যোন্যমসং:

চয়ন্। আচার্টোবিধিবস্তঞ্চ প্রাসাদান্তঃ প্রবেশয়েৎ। তরিধিশ্চ তত্তিব।। উথিতং তত্র দেবেশং বালরজাহি দণ্ডবং। ততঃ সুযজিতং রুজা ব্রাহ্মণান্ স্থান্তিবাচ্য চ।। জীবদানং ততঃ রুজা দেবদেবং সমুৎক্ষিপেৎ। স্থাপকঃ স্থাপয়েদ্দেবং মূর্ত্তি পৈর্বলব উরেঃ। পুণ্যাহজয় শবৈশ্চ ব্রহ্মাঘাবৈশ্চ পুক্ষলৈঃ। আচার্যাস্থাতোগচ্চেদর্যাহস্তঃ সমাহিতঃ। পৃষ্ঠতোযজনানস্ত ভক্ত্যা দেবস্ত সংস্পৃশন্। পুত্রভাতৃকলত্ত্রেশ্চ বন্দুভিঃ পরিবেইজিঃ। নর্বেইন্যান্যমসংলগ্না ধ্যায়মানা জনার্দনং। দ্বারদেশে সমানীয় অর্ঘাই তথ্য নিবেদয়েও। ততঃ প্রবেশয়েদেবং ন দ্রুত্তং ন বিলয়িতং ভির্মাপূর্জ্ব মধন্দেব মস্পৃশন্তং প্রবেশয়েও। হয়শীর্ষ পঞ্চরাত্রে।। পাশেন যজিতং রুজা ততোদেবেতি চালয়েও। অন্বারবন্ধে প্রাসাদে দ্বারেবিব প্রবেশয়েও।। দ্বারবন্ধে ক্রে চাপি অস্পৃশন্তং প্রবেশয়েও।। দেবস্য জ্বতি মন্ত্রেণ তির্যাগূর্জ্বমধ্যুর। ১৪৯।।

পিণ্ডিকান্যাসাদি। পাদ্যং দন্ত্বা পিণ্ডিকাঞ্চ বিন্যুস্য বিধিনা চ তাং ।। প্রক্ষাল্য ভার্চ্য ভার্ট্য ভার্ট্য কার্ডিং পারসেনোপলেপয়েং।। ভবিষ্যে ।। বিষণী সংক্ষালং পশ্চাদ্য দন্ত্যং দন্ত্রা সমাহিতঃ । কপিলাক্ষীরসং স্থান্ধং পরমান্ধং তু সংক্ষৃতং । কপিলাজ্যেন সংমিশ্রং তৈঃ শ্বন্ধপলেপয়েং ।। হয়শীর্ষে ।। রত্ত্বন্যাসমিশং কৃত্বা নপুংসক-শিলাভলে। ন্যুসেং পাদ্শিলাং তত্র স্ত্রালিসৈক্ষপলক্ষিতাং । তত্র সংপূজ্যে দিয়ান্দ্রিলাল লিণ্ডিকাং শক্তিকাপিনী ।। সহ রক্ষেণ বস্ত্রেণাচ্ছাদ্য গলাদিনার্চয়েং । পুর্তাম্পূলিংকলৈছ্বিদ্য দিভাগাল কিণ্ডিকাং শক্তিকাপিনী ।। সহ রক্ষেণ বস্ত্রেণাচ্ছাদ্য গলাদিনার্চয়েং । পুর্তাম পূলিংকাল্য কিণ্ডিকাক্সালিকার্ট্য বিন্যুসে দিলান্ত্রা । তালাহিতঃ ।। ১৫০।। কুছের পিণ্ডিকাক্সালিক্সালিকার্ট্য প্রতিমান ন্যুসেং । প্রাসাদানাং তু সর্ক্ষোণ্ড প্রতিমানীজন্ত তে । প্রতিমানাং তু স্ক্রাসাং পাদ্পীঠঃ শিলামরঃ । তন্মাৎ স্ক্রিপ্রাত্রন পীঠোর্দ্ধং প্রতিমাণ ন্যুসেং।।

অথ শ্রী মৃর্জি স্থাপনং ।। গদ্ধপুষ্পাদিনাভার্চ্য বিবিধৈম ক্লন স্থানঃ। গীতাদিভিক্রতাং মৃর্জিং স্থাপয়েৎ পিণ্ডিকোপরি ।। মাৎস্যে। ভতউত্থাপ্য দেবেশমিন্তাংশে
ত সুভাজনে । প্রবাজ্যোরিতি মন্ত্রেণ শ্বভ্রোপরি নিবেশয়েৎ ।। ভবিষ্যে চ ।। স্থাপয়েভমসংলগ্ন মন্ত্রকাবিলয়িতং । পুণাহজয়শকৈশ্চ ব্রহ্ময়োবৈশ্চ পুফলৈঃ।। শৃষ্পভেরী
নিনাদৈশ্চ গীতবাদিত্র নিষ্কনিঃ ।। ১৫১ ।।

লগ্নাঃ সন্তো গচ্ছেয়্রিতি শেষঃ। দ্বারদেশেচ সর্ব্বগন্ধজালৈঃ দ্বারি সংতিষ্ঠতে নমঃ ইতি দেবং স্থপয়েং ী ততোর্ঘাং নিবেদয়েদিতি কেবাঞিন্মতং॥ ১৪৯॥

বিধিনেতি প্রতিপদসীতি মস্ত্রেণ পিণ্ডিকাং বিন্যায় পঞ্চাব্যেন ক্ষায়োদকেনচ প্রকাল্য লক্ষ্মীমস্ত্রেণাভ্যর্চ্চোতি।। পূর্ব্বমধিবাদে প্রকালনাদিক্মশ্যাপি লিখিতং ইদানীঞ্ প্রাসাদান্তঃ স্থাপনইতি ভেদঃ।। ১৫০॥ পীঠস্যোর্দ্বমুপরি।।

रेष्णे सामनत्यात्ता वार्षा अत्मानाता। जवह स्नामत्न मदमात्व मिखिद्वाभन्नीजार्थः॥३६३

হয় শীর্ষপঞ্চরাত্তে ।। পিণ্ডিকোর্জ্ব ভভোদেবং নজিভোধারয়েৎ ক্ষন্ । ভভঃ শশু-ঘটীভোরৈ দৈবিজ্ঞান লয় নাদিশেৎ ।। ১৫২ ।। জ্ঞাত্বা সম্যক্ষিরং লয় নল গ্লং বা নিবেশয়েং । পিণ্ডিকায়াং সুর্শ্রেষ্ঠ মজেণানেন দেশিকং ।। ওঁ তৈলোক্য বিক্রান্তায় তিবিক্রমায় নমোনমং ইভি ।। সংস্থাপ্য পিণ্ডিকায়ান্ত স্থিরং কুর্য্যাদিচকুণ্। প্রবাদিনিরিভি মজেণ বিশ্ব হশ্চকুরিভ্যপীতি ।।

व्यथ औगूर्डियाभनानस्तर कुछानि ॥ ७७: वर्गामना एवर मर्याभार्पार প্রদায় চ। ধূপাদিদক্তাবহিতোমহামন্ত্র। জপেক্রকঃ ।। ভবিষ্যে ।। স্থিতমাত্রং সুবর্ণেন স্থাপয়েদথ সর্পিষা। তস্যান্তে সাপয়েত্তেন সংপাতান্তভিৰারিণা। অর্যাৎ मञ्चा नमक्ष्य वर्षायशायशाविधि।। यघृष्टः छत् छन्। मन्। सिः नकः कार्रायखणः। ঐশানে তু দিশাভাগে স্থিতস্তফীং সুসংষ্তঃ। উচ্চারয়েরছামন্তং দাদশাকর মন্তুভং। তেন বৈ অপ্যমানেন বিধের চ্ছিত্ততা ভবেৎ।। ১৫৩।। মন্ত্রইনোবিধি-র্যশ্চ অঙ্গহীনশ্চ যোভবেৎ। হীনোবৈ দক্ষিণাভিশ্চ ন প্রশস্তঃ কদাচন । এব ওছ্য-বিধিং প্রোক্তঃ সংহিত্যেক্তোময়া তব্যা ১৫৪ যা অথ মক্তৈঃ জীমদক্ষালভন্ম যে ওঁ য জ্ঞাগ্রতইত্যাদ্যৈমাল্রেঃ বড্ভিঃ ক্রমাৎ স্পৃষ্ণেৎ। দেবস্য দক্ষিণং পার্ম্বং বামং পৃষ্ঠং. শিরঃ পদৌ। ভবিষ্যো। অধুনা বৈদিকং বক্ষ্যে বিধিং সামান্যযোগতঃ। এভাভি ঋ গ্ভিঃ বড্ভিশ্চ বিষ্ণুং সর্বাক্ত সংস্পৃত্ৰেছ।। দক্ষিণং পশ্চিমং চৈব উত্তরং পূর্বামেব চ। মূর্দ্ধি মূলে চ হত্তেন সংস্পৃত্ৰেৎ প্রয়তোবুধঃ। তে চ মন্ত্রাঃ।। ওঁ বজ্জাপ্রতাদূর मूरेमिक रिन्दामिक ।।। उ यन कमानि। भागिता मनोविता घटळा । उ यर श्रकानी মুভচেতে। ধৃতিশ্চ ইতি।। ওঁ যেনেদন্ত্ত ভবনৎ ভবিষ্যদিতি। ওঁযিমানুচঃ সাম-হজুংষি যশ্মিরতি। ওঁসুখাবখিরশ্চানিরয়ন্মুব্যানিতি ।। মাৎস্যে। দেবধ্যানৈক চেতান্ত মক্রানেতানুদীরয়েৎ।। ও যজ্জাপ্রতোদূরমুদৈতি যাতইতি।। ততোবিরাড়-काव्र छ । मश्नुमार्य। भूक्र यहे छि । च चित्रा मृत तानु महे छ । उँ भूक्र य अदम ५ নৰ্কমিতি। ওঁ ত্রিপাদুৰ্কুইতি। ওঁ যেনেদং ভূতৎ ভুবনমিতি। ওঁ নছরো অন্ত-ইতি। স্ধাষেতান্ প্ৰতিষ্ঠাৰু অপু। মন্তান্ পুন: পুন: । চতঃ ক্ছা স্পৃশেদভিম লৈ। मुर्था भित्रमाशीष्टि ॥ ५৫६ ॥

व्यानित्मं भृत्कृषिठार्थः॥ ১৫२॥

আদিশকাৎ মধু দর্শিষা । তাথা পুরা শান্তিঘটনাস্তাবশিক্তদংপাতাছতি জল্পেন চ । অব-হিতঃ নিঃশক্তাদ্যাপাদনেন সাবধানঃ সন্ মহামন্ত্রং আদেশাক্ষরং জপেৎ । [তেন] পূর্বং শান্তিঘটনাস্তেন ।। অর্পরিত্বেতি পাঠে আদে মন্ত্রেণার্ঘ্যং বিস্তুল্প পশ্চান্তেন অর্ঘ্যং কৃত্ব।। বত্তা অর্ঘরিত্বা অর্চরিত্বেত্যেবার্থঃ॥ ১৫৩॥ বিধেঃ কর্মণঃ। ছিন্তভামের দর্শরতি মন্ত্রহীন ইতি॥ ১৫৪॥ অগ্রে লেখ্য়েঃ বত্তিম ক্রৈঃ ক্রমেণ দেবনা দক্ষিণপার্শ্যাদিস্থানবট্কং স্পুশেৎ॥ ১৫৫॥

অথ জপবিধিবিশেষঃ ।। देलवभू क्षि कंतर मात्रा एकर शांशम् अंशे क्ष्रुकरे । সূক্তান্য-থাত্মতত্ত্বক ভাৰয়িত্বা পঠেমনূন্।। ততৈৰে।। ততঃ স্থিরীক্তস্যাসঃ হতং দত্ত্বা ত মন্তকে। ধ্যাত্বা পরমন্ত্রাবং দৈবদেবন্ত নিক্ষলং । দেবব্রতংতথা সাম রুদ্রসূত্রং তথা পঠেং। আত্মানমীশ্বর খ্যাত্মা নানাভরণজূষিতং। যসঃদেবসা হদ্রপং ভদ্মানে সংস্থারেৎ সদা ১০৬ ৷৷ মন্ত্রাশ্চ ভবৈব ৷৷ অভসীপুস্পসংকাশং শভ্ ठळगमाध्वर । সংস্থাপয়ামি দেবেশং দেবোভূদ্বা জনার্দ্দন ।। ১৫१ ।। किश्र ।। দেব-মক্তাংতথা মন্ত্রান ক্রেস্য স্থাপনে জপেৎ। বিষ্ণোস্ত বৈক্ষবাংত্রসূর্কাংশ্চ ব্রহ্মণো-वृथः। मोताः मूर्यामा अक्षवास्थाताम् छनाव्यसः। विषयत्वविष्ठे। जुयमापानन-माग्निनो ॥ ७७৮॥ अभिरामगञ्ज एएरवम । अधान ख १ व्यक्षण राष्ट्र ॥ जिनाः भार्ष-স্থিতানন্যান্ আরেত্তৎপরিবারবৎ ॥ ১৫৯॥ হয়শীর্পঞ্রাতো ॥ পঞ্গবের ন তং न्नांगा काला गरकामरकन छ । भूकाराय मकलोक्त का मान्य मानवाः इति । धाराय उर পরমাজানৎ নিফলৎ নিম্লেৎ বিজুৎ।। গগনং তস্য মূর্ভিত্ত পৃথবী তস্য পিতিকা। কপ্পরেদ্বিগুহং তদ্য তৈজলৈঃ পরমাণুভিঃ। তেকোমারে ততোধ্যায়েচ্ছ্মচক্রগদা-পরং।। মন্ত্রমূর্ডিং ভতঃ কুর্য্যা আূলমন্ত্রেণ বৈ ছরিং। স্থিতে সভি স্থিতিন্যাস মা-নীনে সৃষ্টিসংজ্ঞিতং। শব্বিতে সংজ্ঞি ন্যাসং যানস্থে সর্ব্বনেব চ। এবং ন্যাসবিধিৎ क्षा ध्यारयविष्युर मूरवस्वदः । कृषा यवमयध्यः मर्ककरेर्यक माकिनः । क्लिउडः চিৎস্বভাবন্তমণীয়াংসমণোরপি। ফলোষপরমর্য্যাদীন্ প্রতিমায়াং নিবেশয়েৎ। সজীবকরণ কল্বা প্রণবেন নিরোধয়ে । সালিধ্যকরণার্থার ক্দয় দেশিকঃ। পৌরুষং তু জপেৎ সক্তং ধ্যায়েদেবং সুরেশ্বং । জপেত্তথাপরৎনন্ত্রমিমৎ গুহুং ननाजन। अ नमञ्चं । पूर्तभाग्र मर्खायविक्याचात्म। क्कानविकानकभाग्र उच्चरक-प्तिन्भानितः । खनानुकां खत्यात्र शुक्रयात्र महाचातः। व्यक्तत्रात्र शृदानात्र विष्या-সরিহিতোভব । যচ তে পরমৎ ভর্বিচ্চ জ্ঞানময়ৎ বপুঃ। তৎ সর্বমেকভোলীন मिनिन् (पर्व वितूध) जार । जातन मिन्नीकुछा (पर्वर (प्रवादिमूमनर । जाना मिश्रवि-. বারাংস্ত স্থানা স্থাপারেস্ততঃ ।। ১৬০ ।। আরুধান্যস্থ মন্ত্রেস্ত নমোহতৈঃ স্থাপা-য়ে দুধঃ ।। ততঃ সন্দর্শরেৎ পশ্চাৎ স্কাং মুক্রাং পৃথক্ পৃথক্ । সালিষ্যন্ত পৃথক্ कूर्या ९ धनरवन भू एक न छ।।

श्कानि, प्रविज्ञानीनि कर्णर । बाधाजकुः जगरपात्तार भी जाजा । बाजानः गर्नासर्वामिनः ॥ १८७ ॥ (परः प्रदेशाधीतापात्रहेणाईः ॥ १८० ॥ (दप्रमाणकर इत्याहः । दर्पाज
कानीवार ॥ १८० ॥ विश्वभावे । द्वापात्रहेणा कार्याज जावः ॥ १८० ॥ अतिवाद्य अपितात्रम् कानीवार ॥ १८० ॥ विश्वभावे । विश्वभावे । विश्वभावे । विश्वभावे । विश्वभावे । विश्वभावः विश्वभावः । विश्वभावः विश्वभावः । विश्वभावः विश्वभावः । विश्वभावः विश्वभावः विश्वभावः । विश्वभावः विश्वभावः विश्वभावः । विश्वभावः विश्वभावः विश्वभावः विश्वभावः । विश्वभावः विश्वभावः विश्वभावः । विश्वभावः विश्वभावः विश्वभावः । विश्वभावः विश्वभावः विश्वभावः । विश्वभाव

व्यथं गराश्वा ।। कृष्ण नागा धक्रानिष्ठः मरेख्रतां वार्नानिकः । कृष्ण वाश-राक्तीलां निना नक्षाम्लां निल्धः। ज्याह लिविरम्।। भन्तामावाहन कूर्याद्यान-प्रतम् भाक्तिः । धाषा भावमञ्चावः চত्তवृत्रिः छ**ङ्कः ॥ তত नक्षात्र हि**खः তু নিশ্চলং কুরুনন্দন। আবাহনং ততঃ কুর্য্যাম নিভিশান্ত্রসংযুক্তঃ। তত্ত সন্তাঃ। ওঁ আগত ভগবরনুগ্রাহয় জনার্দন। শাখত: পুরুব: পূজাং প্রতিগৃত্ধ নমোনম:। ওঁ স্বগতে ভগবতে সগণায় সপরিবারায় প্রতিগৃত্ধাত ভগবান্ মন্ত্রপূত্মিদমর্ঘ্যং পাদ্যমাচমনীয়ৎ চৈতদাসনং ব্ৰহ্মণা বিহিতং স্বয়ৎ ৷৷ ১৬১ ৷৷ মাৎস্যে ৷৷ ৩৩: পুगार्दारम उक्तायारिक পूक्तरेकः । नाभग्रोड ভতোদেবং मधिकोत्रमृत्वन ह । মধুশর্করয়া ভদ্বৎ পুণাগস্কোদকেন ভা। ১৬২ ।। রুত্বাথোদ্বর্ভনং দত্ত্বা বস্তাদি বিধি-বদুধ:। নত্ব। প্রদক্ষিণীক্তঃ স্তত্ত্ব। চাভ্যর্থেৎ প্রভূং।। ভবিষ্যে। ততঃ পৃত্তাৎ পকুষীত সংহিতোক্তান্ত মন্ত্রবিং। চনদনা গুরুকপূর কুক্ষুমালৈঃশচ লেপয়েং। নীরা-ग्रतिक माखन वरिख्न हिं रिभम्ह यो बराय । अवर मंत्र किकः कृष्णी प्रवासवर सनार्फनश • প্রণম্য দথার कृत्यो भरेनर्श छिष्ट প্রদক্ষিণং। পুনরাগত্য পুরতোবিজ্ঞ প্রব্যাক্ষনার্দনঃ। সুক্তং দুষ্তং বাপি জানভোহজানভোহপিব। ।। তৎ সর্কমাত্মনা সাঞ্ছৎ ময়া. ভভ্য নিৰেদিতং ।। কিঞ্ ।। শান্তিং ভবন্কুৰ্মথ লোকনাথোরাক্তন্চ রাষ্ট্স্য চ जान्नानाः। नवानवृक्षत्रः गवाकः मालि कन्।मू नक्षात्रु शिव्यकात्र् ॥ नमास् রোগা অথ ঈতয় ভবন্ত সর্কে সুথিতাশ্চ ভূতা: ।। শাকেষু ব্রীছিবৃথ কর্ষকাণাৎ সুভিক্ষকালং কুরু পদ্মনাভ । ১৬৩। হয়শীর্ষে ।। রুত্বাফীক্ষনমন্ধারং প্রণম্যা-😂 লি মুদ্রা। সামিধ্যকরণাতাথে ঋত্বিগ্ভিঃ সহিতোগুরু:।। সুরাদুপনিষণাুল্তৈ ঋর্গ্

মইত্ররত্রে লেথৈঃ ওঁ আগচ্ছেত্যাদিভিঃ অন্যাশ্যেপ্ট্রে আবাহনং। আদিশব্দেন ধ্যানাদি চ রুত্বা। গীতেন আদিশব্দাৎ গীত হত্যবেদঘোষাদিনা চ। ইত্যাদি সর্ব্ধমত্রে ব্যক্তংভাব্যের।।১৬১।। ততঃ স্থাপনানস্তরং। অত্র স্থপনানস্তরং কেবাঞ্জিয়তমিদং ওঁ বর্জাত্রতোদ্রমত্যাদি মন্ত্রান্ অপ্তা তিঃ রুত্বো সূলে নধ্যে শিরদি পুনর্দের মিঞ্জাত্রমিদং ওঁ বর্জাত্রতি সুর্ব্ধ লিখিত মাৎস্যবচনাৎ।। ততোদেবাত্রে ইমিমাধার পরিস্তীয় গায়ত্র্যা বৈষ্ণবেন চ মন্ত্রেণ চতহুভিরাহুতিভিরেকৈকং জাতকর্ম নামকরণ নিষ্কান্যাল পরিস্তীয় গায়ত্র্যা বৈষ্ণবেন চ মন্ত্রেণ চতহুভিরাহুতিভিরেকৈকং জাতকর্ম নামকরণ নিষ্কান্যাল কাল প্রাণান চূড়াকরণোপনয়নাদিকাং ক্রিয়াং কুর্যাৎ।। তত্শুভর্তিভিরেকিকং আতর্মমিত্যাদি চত্তুশ্রতিভিরে ক্রেন্যাছ্তিং দত্ত্বা বিধিবৎ যাগং রুত্বা স্থিতিকৃতং জুত্বয়াৎ।১৬২।। অর্থপ্রধান্ত্রাদি স্থানানস্তরং দেবস্যোহর্ডনং স্থাক্ষিত্তি গ্রা বিস্তিকৃতং জুত্বয়াৎ।১৬২।। অর্থপ্রধান্তি বিধিবছ মহাতি যথা বেন মন্ত্রেণ ফ্রাক্তি মুপ্রকাতে তথা তেন তন্ধস্ত্রেভার্থা। এবমত্রেপি বোদ্ধবাং। স্তর্ভার্কনং স্থার্কার্তিভিরেকি তথা তেন তন্ধস্ত্রেভার্থা। এবমত্রেপি বোদ্ধবাং। স্তর্ভার্তিভিরেকি কাল বিদ্বিক্র প্রধান্যাদিকং সন্ধিধীকরণং চোল্বাপরিক্র বার স্থানান্ত্র ভারেকি হালিকার প্রকার্যাদিরপনং ধ্যানাদিকং সন্ধিধীকরণং চোল্বাপরিক্র বার স্থানান্ত্র ভারেকি স্থানান্ত্র ভারেকি স্থানান্ত্র ভারেকি স্থানান্তিক স্থানান্ত্র ভারেকি স্থানান্ত্রিক ভারেকি স্থানানিক সন্ধিকিক স্থানানিক স্থানান্ত্রিক ভারেকিক স্থানানিক স্থানান্ত্রিক ভারেকিক স্থানানিক স্থানান্ত্রিক ভারেকিক স্থানানিক স্থানান্ত্রিক ভারেকিক স্থানান্ত্রিক স্থানান্ত্রিক স্থানান্ত্রিক স্থানান্ত্রিক স্থানান্ত্রিক স্থানান্ত্রিক স্থানান্ত্রিক স্থানান্ত্র স্থানান্ত্র বালিকার স্থানান্ত্র স্থানান্ত্র ক্রার স্থানান্ত্র ভারেকার স্থানান্ত্র স্থান্ত্র স্থানান্ত্র স্থানান্ত্র স্থানান্ত্র স্থানান্ত্র স্থানান্ত্র স্থানান্ত্র স্থানান্ত্র স্থান্ত্র স্থানান্ত্র স্থানান্ত্র স্থানান্ত্র স্থানান্ত্র স্থানান্ত্র স্থানান্ত্র স্থানান্ত্র স্থানান্ত্র

युक्तः नाममहिदाः । व्याने पानः भिति । व्याने प्रति । व्याने प्रति । व्याने व्याने । व्याने । व्याने । व्याने । व्याने । व्याने । व्याने । व्याने । व्याने । व्याने । व्याने ।

সংনিধীকরণান্তং পূর্বাং লিখিতমের ইদানীং চাত্র প্রণামাদিপ্রসঙ্গে সানিধ্যলক্ষণান্যলিথিয়া ভছক্তং প্রণ্মাদিকমেবাদে লিখতি কুত্বেভ্যাদিন। সালিধ্যকরণাদ্ধ অনন্তরং চ। আবশ্যকং নিত্যপাঠ্যং প্রতিষ্ঠায়ামবশ্যং পঠনীয়ং বা পুরুষস্ক্ত্যাদি। অন্যৎ স্থগমং। ১৬৪। এবঞ্চ স্থাপ-नामखत्रमामो चामनाक्षत्रस्थः। उट्यामदेखः औपमस्रानखनः । उटेवव किथिकानः । उन्येख-क्र পবিশেষः ভবৈত্র ধ্যানবিশেষ । ভভোহয় শীর্ষদেবোক্ত পুকাদি চ। ভভঃ পুন মহাপুজা-সাংধ্যানাদাবাহনাদি পঞ্চাম্তাদিস্পনং বস্তাদিসমপ্ণং ততঃ প্রণামাদি চ লিখিতং। ইপং বারংবারং অপ ধ্যান পুজাদিকং প্রাপ্তং। ডত্তচ মাৎস্যে।। ততঃ স্থিরীকুতস্যাস্যেত্যাদিনা স্থাপনানন্তরং দেবমূদ্ধি হস্তন্যানপূব্ধকং ধ্যানমুক্তংততোলেবব্রতাদি স্ক্রানাং মন্ত্রাণাং চ পাঠা ভতা পঞ্চামৃত্যদি স্পেনং। ভতোমক্রৈ: জ্ঞীমদকালভনং।। ভবিষ্যেচ।। স্থিতমাত্রং স্বর্ণে-ভ্যাদিনা স্থাপনানন্তরং স্বর্গ্রিক্সপনং। ততোদ্বাদশাক্ষরজ্প:। ততো বৈদিকষ্ড্মক্ত্র শ্রীম-मकालाजनः । आवाहनामिना श्वानस शामना श्र्यतिमात्राकः । क्वनमास्य अभनविश्राका-नखतः उडः भूकाः श्रकृत्वी उडानिना भूकान्यकातानिक युक्तः। रत्रभी वंभक्षता जिह । भक्ष गर्या-ন তং স্নাপ্যেত্যাদিনা স্থাপনানন্তরং স্থপনং সকলীকরণপূর্বকং পূজনংখ্যানং ন্যাসজপাদিনা সলিধীকরণংচোক্তং। এবং অপধ্যান পূজাদৌ পৌনঃপুন্যৎ ক্রিয়া লাঘবং চালোচ্য পূর্বলিথিতং কেষাংচিৎ পদ্ধতি কারাণাং সম্মতং পক্ষং নির্দ্য পক্ষান্তরং লিখতি যদ্বেতি । অথ দেবপূজা नखतः व्यावत्रानाः ज्ञानिপतिवातागामकंनः। তত्ত ভবিষ্যোক্তাসুनात्रम् भागनानखतः অর্থাদি অপনং। ততোমাৎদ্যোক্তাত্সারেণ ধ্যানং ততক্ষ তক্ষ্যোক্তাত্সারেণ মন্ত্রজ্পঃ মক্রৈঃ 🕮 মদঙ্গালভনং চ। ভভশ্চ ভবিষ্যে স্নপনবিধ্যন্তোক্তামুসারেণ 🕮 হয়শীর্ষ দেবোক্তানুসারেণ চ আৰাহনাদিনা সকলীকরণাদিনা চ পূজনং। ততো মংস্য হয়শীর্ষোক্তাপুসারেণ পরিবারপুজন-মিত্যেবমপৌনঃপুনাং জেয়ং ॥১৬৫॥ এবং জীমদকালভনানস্তরং পূকা লিখিতা। ভত্তচ মাৎস্যে ভবিষ্যে চ রপনানস্তরং জীর্মক্লালভনমেবোক্তং নচ পুরুনং। জীমক্লালভনানস্তরং চ মাৎস্যে আচার্যাদি পূজনমুজ্বা ভতস্তু মধুনা'দেবং প্রথমে ছবি লেপরেদিত্যাদিনা দিনান্তরক্তামে-বোक्तः। ভবিষ্যে চ । क्रिनाखत्रक्रुडाम्य । इयुनीर्यश्वकात्विशि शृक्षनः अभूतीश देन्दवम्यान् नमर्भागन विरम्भवरण विविद्या नार्क्यः (कवनः शृक्षामिर्क्यारा क्रिकः श्रम्भकि नक्नी क्रमानि निम्धी

नां र भणां र मकनी कर शामिकर । कुर्य शाम्हो क्या भी र्वाख्य भी विवास किया ।। १७७। व्यथं ठळ शिव्यवर मासिया नक्षानि ।। इश्रमीर्य। उन्यासन मूक्रके जू करमाना ভর্ষের চ। চক্ষুভ্রিম বিভ্রমোর। ত্রাসোরা জায়তে যদি। ব্যামোই পরমোহোর। স্ত নিতং পরম তথা। অঞ্জানাং জ্রুতির্বা স্যাৎ গাতাণাংবাথ বেপশু:। বৈরাগ্য নেত্রেরার্কা স্যাদর্পঃ কদর্পএব বা। পরমোবিক্ষয়োবাথ দিব্যোবা জয়তে ধুনিঃ। मिवाबीमिक्टियायां शक्तर्यनगत्र मा वा । मर्भनः कांग्र**ः कांल कियान् मूब्रग्रा**-চিতিং। নরানার্য্যোহথ দৃশ্যন্তে গায়ন্তোপ্যথ হর্ষিতাঃ। নন্দিত্র্য্যবধো বাপি আর তে ছন্দসাং ধুনিঃ। দিব্য গন্ধা রসা বাপি একস্যাপি ভবন্তি হি। লিকৈ রেতৈর্বিজ্ঞা-নায়াৎ তত্র সন্নিহিতৎ হরিং। প্রভাবৈর বিশেষেণ জ্লতীব চ দৃশ্যতে। ক্রুইন্ডীব চ দৃশ্যেত প্রতিমাচ বিশেষতঃ। ক্ষুর্নির জনঃ কশ্চিৎ ক্ষয়মান ইব ক্চিৎ। ৰীক্ষ্য-মাণে জনন্তত্র প্রস্থাইব লক্ষ্যতে। এতিস্ত লক্ষণৈতে ব্ন ন্তত্ত সন্ধিহিতোহরি:। বিশে-বাদথবা পশ্যে চ্কুক্রচাপোপমং কুচিৎ। ছ্বিৎ বজুপ্রভাৎ পশ্যেৎ প্রায়ন প্রভাং যথা৷ সৌদামিনীপ্রভাং পদে) ৎ প্রতিমারাং ক্চিন্দদি ॥ ১৬৭॥ এতৈ-লিপ্তৈত্ত বোদ্ধব্য ন্তত্ৰ সন্নিহিতোহরিঃ। বধিবাইৰ কেচিপ্তু মূকাইৰ ভথাপরে। বিজ্ঞা-ন্তঃ-ন্তুটৰ ঢাপল মন্তাইৰ তথা যদি। চিত্ৰস্থাইৰ কেচিভু বিৰশাইৰ কেচন। ভৰ্ম্ভি তত্ৰ ে। অতঃ প্রমতাইব চাপরে। লিক্তৈরেভৈস্ত বোদ্ধব্যস্তত্ত সন্মিহিভোহিঃ। ১৬৮। অথাচার্য্যাদি সন্মানন । সন্মানয়েদথাচার্য্য শক্ত্যা বস্ত্রাদিনা ততঃ। মূর্ত্তিপাং क्हांभवान् विश्वान् देवस्थारकाभवानि ॥ ১७৯ ॥ माध्या । श्वाभिष्ठ ,ख

বরণান্তমাত্র কৃত্য মুক্তং। সালিধ্য লক্ষণোক্তানন্তরং চ প্রণামাদিকমের ইত্যেবং বিচার্য্য মহাপূজা শব্দোলিখিতং পূজা বিশেষং ত্যাজয়নির পূর্বালিখিত পক্ষ এব পক্ষান্তরং লিখতি যদেতি। সকলীকরণং আদিশব্দাৎ ধ্যায়েজং পরমালান মিত্যাদিনা পঞ্চরাত্রোক্তানি ধ্যান ন্যাসক্ষপ সংনিধীকরণানি চ। নমু মৎস্য ভবিষ্যপুরাণয়োঃ প্রীমদক্ষালভনাদনন্তরং তৎ কিঞ্চিন্যাক্ত্রে লিখতি হয়শীর্ষোক্ত মিতি। অত্যোমাৎস্য ভবিষ্যাক্ত মতিক্রম্য প্রীহয়শীর্ষ দেবোলান্ত,তত্র লিখতি হয়শীর্ষোক্ত মিতি। অত্যোমাৎস্য ভবিষ্যাক্ত মতিক্রম্য প্রতিষ্ঠা প্রাধান্যাৎ। ক্তামুসারেণ এবং সর্বত্র প্রায়োব্যবহর্ত্তব্যমিতি ভাবঃ। মাৎস্যে শ্রিক্রদ্যা প্রতিষ্ঠা প্রাধান্যাৎ। ভবিষ্যে সংক্রেপাক্তেরিতি দিক্। এভচাত্রে স্বয়্যেব ব্যক্তং লেখ্যং। ভতঃ সনিধী করণানন্তরং মেব পরিবারাণামর্চন মিতি সমানমেব।। ১৬৬।

অভয়ং ভয়।ভাবং। চক্ষুষে।ভ্রমঃ অন্যক্ষিন্নন্য দর্শনং। বিজ্ঞাে ভান্তি বিশেষঃ। বাংমাংছা মৌচ্য বিশেষঃ। পরমােহো মূচ্ছা। নেতায়ােইবিরাগ্যং বৈবর্ণাং দর্শনে নির্ফোদো বা। তক্ষিন্ কালে স্থাপন সময়ে। একসৈয়ে জবাস্য দিবাা বহবে। গন্ধার্যা বাভবন্তি যদি।। ১৬৭।। তত্ত্ব

শক্ত্যা স্বশক্ত্যস্বারেণ যথাবিভব মিতার্থঃ। অপরান্দীনাক্ষাদীনপি ভতাগতান্।। ১৬৯।

## ইত্রাকৃতি বিসাধা



ভতেধিকৰে বজনানঃ সমূতিপং। আচাৰ্যাং পুৰুষেত্তত্যা বজালফারভূষী। । मीमाञ्चक्र भनाश्चिष्ठ (त्या विष्यु मा मुन विष्या: ।। ११०।। ७ विष्यु । १४७: मः जूब-रब्रक्कता दाशकः विधिवज्ञा । ज्यानानामि जिन्निर्देनार्वामादेन महीशास्त्रो যথা সত্তব্যতে রাজ্য তথা কার্য্য প্রযত্তঃ। যথাশক্ত নুসারেণ পূজ্যাশ্চাপি দ্বি-का छत्रः। मीनास्तरू भगनाक्ष भूका कार्या। श्रयपुष्टः। गर्गा मह नर्द्धकारी महत्र यथा मिक श्रिक् राष्ट्र । । १२)।। इस्मीर्य। मछ ल कमल वानि द्वानि श्रिका छङ्गः यरक्रः। প্রিয়প্রশ্রে ক্ষাপ্রের বিষ্ণুবং পূজ্যেদুধঃ। পাদয়োঃ প্রণিপত্যাথ দক্ষিণাঞ্ निर्विष्ट्रार । चाठार्या प्रकिनीर प्रमार नगत्र श्रामस्यव ह। मूदर्ग बक्र बक्र গাঞ্চৈৰ সমলক্ষাং । দক্ষিণাং বিধিবদত্ত্ব। দদ্যাদাভরণাদিক । আচার্য্যদক্ষি-शक्ति अम्माष् ऋमिना । मूर्जिभान् भूकात् भमार गावसा जति विक । স্বাৎস্ত পূল্রেভত বৈক্ষানাগতান্ দিলান্। ভোজয়ে ছ্রাক্ষণান্ অত্যাদরমভব্রিভ: ।। ১৭২ ।। কিঞ্চ । যক্তঃ স্পুদ্ধল: সর্বা: কর্ভব্যোধর্মলিপ্-সয়। । মস্ত্রহীনোগুরুৎ হন্যাত্রাষ্ট্রনেত্রন বজ্জি তিঃ । ধর্মঞ্চ যজমানঞ্চ হন্যাদ্দিশিণয়া-वित्नि ।। ১१७।। अथवा द्रार्थना राम्हाकानामावाइनामि ह । शक्षामृ छा-· দিনা অর্ণাদিনান্য সুপনৎ ভতঃ। বস্ত্রাদিদানৈর্বিধিবৎ পূজা মুদ্রজপাদিকং। নতিঃ व्यमिकना यां हुक्या खुक्याम् । एक का अर क्रमः ।। ५१८।।

দীনাদরিদ্রাঃ ক্নপণা রাগাদি ছঃথিতাঃ। বেচান্যেইস্তাজাদয়স্তানপি ॥ ১৭০॥ ভবিষ্যে চ সর্বায়ে প্রোক্ত মপ্যাচার্য্যাদিশমাননং যথাপ্রসঙ্গত্র নিথতি তত ইতি ক্রিভিঃ।। ২৭১॥ মণ্ডলে স্বারে ভেলাদে । যদ্যপি যাগোপযোগি জ্ব্যাণি সর্বাগ্যাইস্থা নিবেদয়েদিত্যাদি দানানস্তরমেবাশেষ যাগোপকরণ জ্ব্যার্পণমপি প্রীহয়শীর্ষদেবেন প্রসঙ্গাদেকত্রৈবোক্তং। তথাপি তৎ প্রক ক্রত্যং মাৎস্যোক্তাত্মসারেণ পুনরাচার্য্য সংমাননেহত্রে লেখ্যং। চন্তর্থী কর্মাদিশেষ ক্রত্য সমান্তিপদেন যাগ জ্ব্যসামগ্র্যাঃ নিজ্ঞে। বৈক্ষরান্ বিপ্রান্ সংপু দয়েৎ অন্যাংক্ষ ব্রাহ্মণান্ তদনস্তরমের তান্ ভোজয়েদিত্যর্থঃ। দক্ষিণাদিকং চাবশ্যমের দের মিত্যাহ যক্ত ইতি সার্জেন। সর্বোষজ্ঞঃ মপুদ্ধলং সংপূর্ণ এব কর্ম্তব্যঃ। অন্যথা চ প্রমানর্থ এবেত্যাহ মস্ত্রোত্ত। ১৭০। এবং নিখিতস্যাস্য প্রতিষ্ঠা বিধিক্রমস্য পূর্ব্ব নিখিত নিত্য পূদ্ধা বিধিক্রমেণ বিরোধ মাশক্ষ্য পূর্ব্ব স্থিতক্রমে পক্ষাস্তরং নিখতি অথবেতি। আদিশকৈপ্ হীতানি পূর্ব্বানিখিতাম্ব্যারেণোমেয়ানি । এবংক্রম নিখনেন বিধিরপি দর্শিত এব। তভক্ষ পূর্ব্ব নিখিতে ছিতীরপক্ষে পরিত্যক্রমপি পূজনং প্রসাদ্যন্তঃ পিণ্ডিকোপরি স্থাপনক্রপে মুখ্যক্রত্যে অন্যান্য মেবাপেক্ষ্য মিতি ভদত্র নিখিতমিতি জ্বেয়ং।,এতক্রাখিলং পূর্ব্বনিখিত মাৎস্যাদি বিচারেণ প্রায়ঃ পর্যাবস্যত্যের। যত্রচ বিশ্বধেণ্ড তত্র চ গ্রন্থায়ের প্রানিখিত মাৎস্যাদি বিচারেণাভিক্তির্বিরোধঃ পরিহ্রনীয়এব। স্ক্রীত্রব তথাত্বাদিতি দিক্॥ ২৭৪।।

শর্থ শ্রীমৃর্ডিবিরতাপাদনং। মৃত্তিং ন চালয়ে জ্ঞান্ত ষ্ট্রাং কুরির লাং নামেং। তিন্
ন্যাং প্রচলিতায়াঞ্চ কুর্যাৎ স্বস্তায়নাদিকং। তথাচ মাৎস্যে। বিরং ন চালয়েদেবমন্যথা পাপভাগ্ভবেং। পূজ্যেচিইকতাভিশ্চ নিচ্ছিত্রং দর্মভোভবেং। লাকপালস্য
দিগ্ভাগে যস্য সঞ্চলতে বিভুঃ। তস্য লোকপতেঃ শান্তির্দ্রাশ্চনাশ্চ , দকিনাঃ।
ইন্দ্রায় বরুণং দদ্যাৎ কাঞ্চনং বাংপবিত্তবান্। অরেঃ সুবর্গমেরফ খ্মস্য মহিবং
তথা। অজং সকাঞ্চনং দদ্যারিক্ষণিতং রাক্ষসং প্রভি। বরুণং প্রভি মুক্তানি সম্ভভীনি
প্রদাপরেং। রীতিকাং বায়বে দদ্যাৎ বন্ধ যুগ্মেন সংযুতাং। সোমায় ধেনুর্দাতব্যা
রাজতন্ত বৃবঃ শিবে। যস্যাং যস্যান্ত চলতে শান্তিঃ স্যান্তক ভক্তভা। অন্যথাচ
ভবেদ্যোরং ভয়ং কুলবিনাশনং। অচলং কারয়েরভ্রমাৎ শিকভাভিঃ সুরেশবং।
ভবিষ্যে। স্থিরং ন চালয়েদেবং কদাচিদিপি পিণ্ডভঃ। হন্যান্তিচালিভোজানাভ্রমান্তং ন বিচালয়েং। যাং যাং দিশাং চলেদেবতাং তাং শান্তিন্ত কারয়েং।
অন্যথা ভ ভবেদ্যোরাং ভয়ং কুলবিনাশনং। যথা ন চলতে দেব স্তথা ব্যুভি পিভিকাং। শান্তুমের ভ কর্তব্যং ন বিলম্বেং কদাচন। প্রভিমাং সুন্থিরাংকুর্য্যাৎ
নোর্কুদ্ন্তিৎ কদাচন।।

অথ দিনান্তরোৎসবং । রাত্রী গীতাদিকং কুর্বন্ দিবসে চ মহার্চনং । মহোৎসবেনাহরৈকং শক্ত্যা বা কতিচিন্নয়ে । ভবিষ্যে। ত্রিরাত্তং সপ্তরাত্ত্র বা দশরাত্রমথাপি বা । পুন্যাহজয়ঘোষৈশ্চ কুর্যাদ্দেবমহোৎসবং । কিঞ্চা রাত্রো মহোৎসবং কুর্যাৎ শন্ত ভের্যাদি নিংছনৈং । এক রাত্রংত্রিরাত্ত্র্থ বা সপ্তরাত্ত মথাপিবা। তথাবিষ্ণুং সদায়াতি ইত্যেষা ফল সংপ্রদা। মাৎস্যে । রাত্রৌদিনে চ গীতাল্যৈঃ পুন্যাহজয়মঙ্গলৈং । ত্রিপক্ষৎ সপ্ত দশ বা দিনানি স্যামহোৎসবং ।

## প্রীক্ষিত্তি বিলাগঃ।



শুক্রীখেবিনাশনং। রোচনাৎ নাগপুক্ষণ সপ্তমেহনি দাপারে । ক্ষেমৎ গো বছলং চাপি সুরভিঞ্জ ভবেৎ সদা। এবং সপ্তাহমভ্যকং কাপিলেন ঘৃতেন তু। দদ্যাদ্বিভবতঃ শক্ত্যা যদিচ্ছেচ্ছিয়মাত্মনঃ। দীপা ঘৃতেন দাতব্যাশ্চদ্বারশ্চ প্রদ-কিণাং। সপ্তাহৎ মন্ত্রযুক্তাশ্চ বিভবেন ততঃ পর্ব।।

' অথ চত্তথা কিমা। চত্তথে চ দিনে প্রাপ্তে চত্তথা কিমা কারয়ন্। অর্গৎ সমর্গ্র দেবেলাং প্রাণ্ড্র সুপনমাচারে ।। ১৭৫ ।। পুনশ্চ দল্পাইটালার্গ্রাময়ন্তিকা-দিভিঃ। দেবং নারাল্য গল্ধান্তির্দ্যাদাচমনং বুধঃ।। ১৭৬ ।। ততোবল্র মুগং দল্পাদিবার দল্পানুলেশনং। পুলাদি পুপদীপাদি তত্তমান্তেণ চাপরেই। ইথং সংপূজ্য বিধিবদণ্ডবত্তং প্রণম্য চ । বিজ্ঞাপয়ন্ মুক্তত্ত্যা তত্তৎ পদ্যং প্রকার্তিয়েই। মাৎদ্যে । চত্তর্যেক্তি মহাসান্ত্র চুক্তির তত্তি পদ্যং প্রকার্তিয়েই। মাৎদ্যে । চত্তর্যক্তি মহাসান্ত্র চুক্তিলং কর্মান্ত করিছে । দল্লি। চ পুনত্ত্বালিবার ত্রাপি শক্তিতঃ।।১৭৭ ।। কিঞ্চ ৷ স্বত্তিকং পল্লকং শক্ত্যাহ কর্মান করিছে । একান গোময়েঃ কুর্মান মুদা বা শুভারা ততঃ । পঞ্চবর্গোদনং তত্ত্ব পঞ্চবর্গোরক্ত থা । দুর্বা রক্তিলাং তদ্মানাল্য বিধার সর্ব্বপাপত্রং শুভং।। ১৭৯ ।। ততোবল্র মুগং দুদ্যালন্তেগানেন মাজতঃ । দেব সূত্রসমামুক্তে যজ্মানসমন্ত্র । সর্ব্বর্ণ শুভার রেলক্তং দর্ভ পানির বিধার তি । তত্ত্ব ক্রমানসমন্ত্র । স্ব্রক্ত্র মিঃ ৷ ইমমুচ্যার রেলক্তং দর্ভ পানিং প্রস্তুতঃ। শরীরত্তে ন জানামি চেন্টাং নৈব চ নৈব চ ৷ মরা নিবেদিতান্ গল্লান্ প্রতিগ্রাবিলিগ্যতাং। কিঞ্চ। চন্ত্রারিংশত্তে চাদীপান্ দদ্যাচ্চির প্রদক্ষিণাং।

মূর্জিমিত্যাদি ততঃ পরমিত্যন্তং হৃগমমের । প্রাগ্রদতি রপনমগুপে লিখিতরানবিধ্যান্ত্রণ ইত্যর্থঃ। তথাছি। গীতবাদ্যাদিমহোৎসবেন বল্নীকাদি মৃত্তিকাদিভিরুদ্ধৃতাসীতি মস্ত্রেণ দেবং বিলিপ্য পঞ্চগব্যাদিনা তত্ত্বস্ত্রেণ রাপয়িত্বা যথাশক্তি সংপাদিতৈনিঃ কিন্তান্ত্র্যুদ্ধিকৌষধী ব্রীহিকৈঃ কলদৈ স্তত্ত্বস্ত্রেণ রাপয়েদিতি ।। ১৭৫।। গোময়রুতেং স্বন্তিকাদিভিদ্দেবং নীরাজ্য। আদিশন্দেন গোময়রুত পল্লকাদি লপ্ত পঞ্চবর্ণোদনাদি চ । এতার্টাগ্রে বিশেষতো ব্যক্তংভাবি ।। ১৭৬ ।। তত্ত্বস্ত্রেণ বস্ত্রাদ্যর্পণমন্ত্রেণ । সচাগ্রে ব্যক্তোভাবী । তওৎ পূর্বেলিখিতং স্বরুতং কৃদ্ধৃতং বাপীত্যাদি প্রকীর্ত্রয়েৎ ভক্ত্যা বদ্ধাঞ্জলিঃ সন্ পঠেৎ ॥১৭৭ ॥ চত্তর্থীকর্মণি মাৎস্যোক্তং রপনাবধিং পূর্ব্বালিখিতত্বাত্ততোহন্যং বিশেষাকান লিখতি স্বন্তিক মিত্যাদিনা ॥১৭৮ ॥ নীরাজন বিধির্মাত ইতি গোময়েন মৃদা বা বির্চিতৈঃ স্বন্তিকাদিভিস্তথা পঞ্চবর্ণোদনৈঃ পঞ্চবর্ণ তণ্ডুলচূর্ণাদিভিক্ত দেবং নীরাজয়েদিত্যর্থঃ॥১৭৯ ॥ সন্ত্রমেবাহ দেব-স্ত্রেতি । বক্তমান ইতি বস্ত্রাপ্রাদেশী স্থেব কর্জেতি শিক্ত সম্বত্যা জ্বেয়ং। এব্যপ্রেহপি দীপার্পণে সন্ত্রক্ত স্বং স্ব্যাত্যাদি প্রত্যধ্পাদ্যর্পণ মন্ত্রেম্ব চ পূর্বতো বিশেষাভাবাৎ ক্রের্ম মিত্যাদীত্যেব

षः मूर्याकम् रक्षाकीः वि विष्ठामधिखरेशव । प्रस्तव मर्काकाः विष्ठीशास्त्र । अध्यव मर्काकाः विष्ठीशास्त्र । अध्य

অথাব্জু হুনানং ।। হয় শীর্ষে । অভঃপরং প্রক্রামি দেবস্যাবভূধং ভর। শোধয়েলোময়ৈবিপ্র যাগভান্ ত সর্বতঃ । সিজ্বাপকোদ্কেনাথ পঞ্চাব্যেম শোধরেৎ। বিকিরৈঃ শোধয়েড মিৎ বিতানেন বিভূষয়েৎ। পুল্পারৈরশ্লেচার্ধ্ব পাশ্তিকাপি শোভয়েৎ। জুভ্য়াদৈকবে বল্লো ঘৃত্রটোভরং শতং। বিক্ষো-নুলিতি সন্ত্রেণ সমিধোই শতৎ তথা। বিদ্যামালিখ্য বিধিনা একাশীভি পদং वृधः। देव कवर कनमः साधा आकि एपुछि निर्दर्भाष्यः। এका मी किनातः कूछान् ঞীসূ:ক্তন নিবেশয়েৎ ৷ শয়োদেবীতি মন্তেণ কলসানভিমন্ত্রেংং । কলসে বিন∫-সেঃৎ পঞ্চাব্যং মল্রৈবিশেষতঃ ।। ১৮১ ।। ফলং পুষ্পং ন্যাসভত্র জাবিতং কদ-লীজলং। মস্ত্রীত দ্রং চৈতদ্নাঃ ফ্লিনীতি সভ্সঃ। আক্রঞ্রসং বিদ্বাদ-ব্যেতি নিবেশয়েং। মন্ত্রতোয়ং ন্যেন্নধ্যে নব্কানাৎ সুরোভম। তবংস ইত্যুচা বিদান বস্ত্রপূত্র সমাহিতঃ ৷ নদীনদভড়াগোলেঃ শেষাংভোরেঃ অপরাজিতেন মন্ত্রেণ দর্বানেবাভিমন্ত্রহেৎ। নবেন শুক্লবস্ত্রেণ দর্বানেবাভিম-অয়েৎ। গায়তীৎ বৈক্ষবীং জপ্ত্বা মূলমন্ত্রং শতং জপেৎ। জপ্ত্বাধ্যায়ন্ হরিং স-মাক্ প্রবিশ্যাভান্তরঃ শুচিঃ। কুফোনীতি চ নির্মাল্যং বিষ্ক্ষেনায় নিক্ষিপেং। অর্থদের শুদ্ধবভ্যা শুদ্ধভোয়েন সেচয়েৎ। অবিদুদ্ধেত্ব ক্রাপ্য সানৎ সমাচরে । গোমূত্রেণ হরিং ক্ষাল। গোময়েন বিলেপয়ে । ক্টারেণ সাুপয়ে । প-শ্চাং দধিনা তদনন্তরং। ঘৃতেন স্লাপ্য বিধিনা ধূপং দদ্যাং স গুগ্ওলং। প্রকা-ল্য কোঞ্চোয়েন ফলতোয়েন সেচয়েছ। স্থাপয়েছ কদলাতোয়ৈন্তভন্তিকুকুরসেন চ ।। ১৮২। বৈম ত্রৈম্ত্রয়েজোয়ং তেম্ ত্রেঃ সাুপয়েদ্ধরিং। পঞ্চনদে ত্রচা পশ্চালদী-নদত্ডাগজৈঃ ৷ সাুপয়িত্বা বিধানেন বস্তুযুগুমুপাহরে<u>ং ৷৷ ১৮৩ ৷৷</u> পউনূত্রৎ বা কৌশেয়ং বাথ ভূষিতং। বৃহস্পতেতি মন্ত্রেণ পরিধার্য চিরেৎ ক্রমাৎ। গন্ধাদিভি: সমভ্যচ্য পার্ধান্ পূজ্রেত্তঃ। নিবেদয়ীত নৈবেদ্যৎ ভক্ষাভোজং

লিখিতং।। ১৮০॥

শ্রমাণ্ডাদ্বভ্থ মিতি শ্রীহরণীর্বদে প্রতিষ্ঠা কর্মসমান্ত্রে ক্রিমাণ্ডাদ্বভ্থ মিতি শ্রীহরণীর্বদে বেন বহুক্তং তচ্চত্রথীকর্ম প্রসঙ্গত এব নিথতি। অতঃ পর মিত্যাদি। বিকিইরঃ অকুরাদিভিঃ। একাশীতি পদ লিখন বিধিক্টাগ্রে প্রাসাদাদি নির্মাণ প্রসঙ্গে অব্যক্তশভাবী। মধ্যং একাশীতি পদান্তঃ। ১৮১। তত্রতি কল্পে একস্মিন্ ফল পুষ্পা শ্রুমনাস্থিত কদলীফল জল মিতি বোদ্ধবাং। অপ্রে স্পনে ভ্রোঃ পৃথগুক্তোঃ। এতন্যন্তক্ল পুষ্পং ন্যন্ত, কদলীফল জলং চেতি কল্প দ্বং। নবকানাং পদনাং মধ্যে। শেষান্ কল্পান্ যা, ১৮২। উক্ত গোস্ত্রাদি স্পনে মধ্যা দ্বিত বিদ্ধিতি বিশ্বত বৈশ্বতি বৈশ্বতি। ১৮৩। ভূষিতং গল্পাদিভি বিশ্বত বিশ্বতং শল্পাদিভি বিশ্বতং শাল্পাদিভি বিশ্বতং শল্পাদিভি বিশ্বতং শাল্পাদিভি বিশ্বতং শিল্পাদিভি ব

সুপুদ্ধনং । পেরং চূব্যং তথা লেহ্যং প্রভুতং দ্বিজ্ঞসন্তর । বলিৎ বিনিক্ষিপেৎ
পাদ্যাৎ দিশাসু বিদিশাসু চ । ১৮৪ ।। ওঁ নমং পার্মদেভ্যোহণ বলিং পাঠে বিনি
কিপেৎ । ততঃ প্রদক্ষিণীকতা মণ্ডলং ব্রাক্ষণেন তু । প্রবিশ্য ভবনং ভূয়ং সর্বমাবশ্যকং পঠেৎ।পৌরাণৈচ্চ ন্তবৈং স্তৃত্বা মহাপুক্ষপূর্বকৈঃ। দণ্ডবং প্রণমেৎ পশ্চায়্ভ্যগীভাদি কারয়েৎ। দদ্যাৎ সুবর্গৎ গাং বস্ত্রাৎ দক্ষিণাং দেশিকায় তু । বৈক্ষবান্
পূজ্য সক্ত্যা ত ব্রাক্ষণেভ্যুক্ত দক্ষিণাৎ । আচার্যাং তোষ্য মন্ত্রেন সন্ধ্যায়াং রিনিমাহরেৎ। বলিক্মা বিধিশ্চায়ৎ হয়শীর্ষে চ বিন্তরাৎ । উক্তোভিব্যক্তমেকত্র
ভেরব্তং পঞ্চরাত্রভঃ ॥ ১৮৫ ॥

অথহোম সমাধানং। শ্বস্হাক্তিবিধনা সম্পাধায় পাৰকং।
পর্বাক্তিভিদ্দ্যাদাভ্তিকং বুধং। তারেণাথারিমভুক্তা গায়
ত্যান্ত্তিপঞ্কং। ছবৈক বৈক্ষেবিনেবং জুভ্যাদার পঞ্কং। তভোব্যাহ্
তিভিত্তা শ্বাদশাক্ষর মন্ত্রঃ গুড়া পূর্ণান্ত্তিং বিদ্বান্ কুশকুণ্ডীং সমা-পরেং।। ১৮৬।।

অথ যজনানভিবেক: । আভিষেচনিকৈ সুত্তি: লাভিকু ডাডালা তত:। আচার্যাদাজিলা কুর্যুর্জনানাভিষেচনং । ১৮৭ ।। নাংলা । অনেন বিধিনা করা লপ্তরাত্ত মহোৎলবং । দেবকু ডেড ভ কুর্যাদ্যজনানাভিষেচনং ।
চন্ত্রভি রক্টভির্নাপি ছাভ্যামেকেন বা পুনং । সপঞ্চরত্র কনকৈ: সিতবস্তাববেফিতি: । দেবল্য ছেতি ময়েন লামা চাথকানে চ। অভিষেকে ইমে মস্তা নব গ্রহমথে
ক্রাঃ ।! ১৮৮। হরলার্য পঞ্চরাত্রে চ প্রাডমুখং যজনানন্ত সাপ্যিত্বা মথাবিধি ।
ক্রাং লমপ্রেভিনা পরিভ্রতমনা গুরু ।। ১৮৯ ।। পুনরাচার্যাদিসমাননং । যজনানে হিছিবিক্তঃ লন্দেবমভ্যক্তা লক্তিতঃ । আচার্য্য পূজ্যিত্বালৈ প্রিভিটাতব্যমপ্রেৎ। মাৎল্যে । লিভাম্বরধ্রঃ লাভা দেবং লংগু জ্য যত্নতঃ । ত্বাপকং পূজ্যে-

স্তরং গল্পাদিভি: ক্রমেণ পার্ষদান্ সমভার্চ্য বিধিবৎ পূজ্বেরে। প্রভূতং প্রচুরং ॥ ১৮৪॥ বলিমা-হরে দিতি বলিদানবিধিরপেক্ষিত স্তত্ত্ব লিখভি বলীতি । তদ্য হর্দীফ্র্য পঞ্চরাত্রতঃ বিস্তরেণ প্রব্যক্তমেকত্রৈবোক্তাা স্বজ্ঞেরত্বাদক্রচ গ্রন্থবিস্তার ভয়ান্ন লিখভিঃ ইতি ভাবঃ॥ ১৮৫॥

মাৎস্যাদ্যস্ক্রমণি হোম সমাধানং যুক্তত্বাচ্ছিউসংমত্তা লিখতি শ্বস্থেতি। পাবকমেব পর্যক্ষ্য এবং লিখিত প্রকারেণ একেন বৈদিক বৈফবেন বারপঞ্চকং জুছয়াৎ। তদনস্তরং ব্যাহ্নতিভিঃ সক্ষমুত্বা ভাদশাক্ষর মন্ত্রেণ পূর্ণাছতিং ছত্বা।। ১৮৬।।

ভবিষ্যে চাভিষেক মন্ত্রাশ্চাত্রে ব্যক্তা ভবিষ্যন্তি । ১৮৭ ।। দেবস্য কুরৈঃ দেবে।
বৈং রাপিতঃ তৈরের প্রসাদমতোঃ কলনৈরিভার্জঃ । আভিষেচনিকসারাধর্ববেন চ মন্ত্রেণ ।
নবপ্রহমধে মন্ত্রাশ্চ হ্রান্ত্রামভিষিক্ষক্ত ইভ্যাদয়ঃ । তৈক বজমানাভিষেচনং কুর্যাদিভি
পূর্বেবৈবাস্থয়ঃ ॥ ১৮৮ ॥ কলং কিঞ্জিল্পলাক্ষকং কলং পুণাং বা প্রভিত্তিত দেবং বা ॥ ১৮৯ ॥
শক্তিতঃ নিজপক্তাক্সারেশাচার্যাং পুরুষিশা ব্রক্ত্বণ দানাদিনা সংমান্য । অকৈচাচার্যায় ।

खुला विद्यानकांत्र ज्योगः। यद्धजानां मित्र (भाभक्तां पिकः । यद्धानां प्रशिष्ठ । यद्धानां यद्धानां । यद्धानां प्रशिष्ठ । यद्धानां यद्धानां । यद्धानां यद्धानां । यद्धानां यद्धानां । यद्धानं । यद्धानां । यद्धानं । यद्धानं । यद्धानं । यद्धानं । यद्

स्था युकारवालगर । कार्नाश व्यवकाताम युकारवालग मुख्यर । यर क्ष्या लुझनः समाज्ञ नम ११ कनमान वार । याज्ञ ।। याज्ञ थाना खराना क्ष्या थाः एकता खरा। विष्य खाना क्ष्या थाः एकता खरा। विष्य खाना कि क्ष्या क्ष्या कि स्व कि स्व क्ष्या कि स्व कि स्व क्ष्या कि स्व क

যক্ষাচার্যালা দল্লিতং স্বগৃহে তিঠেও ডদলি দদ্যাৎ !! ১৯০॥ তথা পরং পরমপি কলনাদি মণ্ডপং ॥ ১৯১॥ হয়লীর্বদেবেন প্রতিষ্ঠা পঞ্চকার্যানে বলিদান পটলানন্তরং দ্বার প্রশাদরোঃ প্রতিষ্ঠা প্রকারশ্যেক্যান্ত। সচ বলিদান বিধিন্তেনৈর স্থবাক্ত মেকরৈর বিস্তারেণ দলিতোলীত ক্ষত্রের্যান্ত তং পূর্ববদলিথিয়া সমাসেন দল্যতি এত ইতি। কুর্বাতি তি দ্বার্যা প্রানাদ্যা চ প্রতিষ্ঠায়া আবশ্যকত্বং দলিতং। নমু তর্হি তত্ত দিধির্লিথ্যতাং তত্ত্ব লিখতি বিজ্ঞায়েতি। তল্যাদ্যার প্রানাদপ্রতিষ্ঠায়া কিধিং। তত্ত্ব দ্বারপ্রতিষ্ঠা প্রথম মেকেন পটলেনেব্যক্তিং তি প্রানাদ প্রতিষ্ঠাচ ক্রং প্রতিষ্ঠাপটলৈং। বভঃ প্রানাদ প্রতিষ্ঠের ক্রংপ্রতিষ্ঠিত। তথাচ তব্রের। অতঃ পরং প্রক্যাদি প্রতিষ্ঠাং বেদ নির্শিতাং। প্রানাদ্যা মহাভাগ ক্রপ্রতিতি তি তি বিক্রত। মিতি ৷৷ ১৯২ ৷৷

यनाभि श्रवादाभगना विश्विति एउनिक्देविय विश्वादान ख्वाक मूस्काशित । ज्वाभि छना माहाचा विष्या भद्रमिछाचाक छः विष्यादा निविध च्छःभत्न मिछाकिना। अभवार नरपूर्नर श्रीष्ठिं। श्रानाह निर्माणांक कवर ममाक् श्रान्त्राह ॥ ১৯৩ ॥ स्वर स्वर्ग्न् न त्रिक्टर श्रवादाभरणनात्रिक्टर कृष्णे। यहा देवर स्वर्गास्त्रम् इष्टमिश भूवाक्तिर गृक्षि वनाहाव्याद्व ज्ञ्लिख। विश्वास हेि भारते न गृक्षि भारते। छण्य विश्वभार्यात विश्व श्राद्ध। विश्व हि भारते न गृक्षि भारते। छण्य विश्वभार्यात विश्व श्राद्ध। विश्व हि भारते न गृक्षि श्राप्तात विश्व श्राप्त विश्व श्राप्त विश्व श्राप्त विश्व श्राप्त विश्व श्राप्त विश्व श्रा

বিদ্ধি দণ্ড । পুরুষ বিপ্রাহং। প্রাসাদং বাসুদেবস্য সূর্ত্তিভূতং নিবেশ্ধ মে। ধারণান্ধর-नीः विक्षि चाकामः छिविद्राच्यकः। एकछः भागकः विक्षि वाद्युम्मभागः छथा। भाषागारियुव कला श्रार्थिकः भृथिको खन्। श्रिक मार्कालुतः भक्तः म्यार कर्कमाञ्चकः। अक्नामिकः ভবেজপ । त्रमाञ्चिमम् नः। धूर्शामिशस्त्रागञ्च वामाशी-তাদিষু স্থিতঃ । শুকনাসা স্তা নাসা বাহু ভদ্রকরে স্ভা । শিরস্থং নিগদিতং সকল। মুজজং স্তং। কণ্ঠং কণ্ঠমিতি জ্ঞেয়ং ক্ষমং বেদী নিগদ্যতে। পায়ুপত্তে প্রণালে ও ত্বক সুধা পরিকার্তিত। মুখং দ্বারং ভবেদস্য প্রতিমাজীব উচ্চতে। **उक्किंश शिखिकाः विकि धक्रिक उमाक्रिकः।** निम्हनद्वर छ शर्द्धारमा অধিষ্ঠাতাস্য কেশবং। এবমেষ হরিং সাক্ষাৎ প্রাসাদত্ত্বন সংস্থিতঃ ।। ১৯৭।। জত্বান্তেইস্য শিরোজেরং ত্বং ক্ষর্কান্তে ব্যবস্থিত:। উর্কুভাগে স্থিতোবিষ্ণুরেবনেভদব স্থিতং। এবং স্থিত্য চৈত্য্য প্রাসাদ্য্য যথাবিধি। প্রতিষ্ঠাং ধুজরপেণ শূনুনে माम्भुष् कृषे । भूर्य प्रवामूदेव यू एक विकाशर्थ छमा सर्वः। इषा नक्यानि **ভাপরি বাহনীন্যায়ুধানি চ।।১৯৮।। জিতং দৈত্যবলং সর্কং তদাদৌধুজ সং**স্থিতি:। অণ্ডোর্দুং কলসং ন, স্ত্রা তদুর্দ্ধং বিন্য সেদ্ধু সং ।। ১৯৯ ।। বিয়ার্দ্ধনানং চক্রং ও ত্রিভা গেনাথ কারয়েং। ছাত্রিং শদক্ষেণ জে। জৈ কনি ছ ছফ হানিতঃ। প্রতিমাত্র্য্য ভাগেন কারয়েছা সুদর্শন। লোহজৎশৈলজং বাপি কারয়েচিত্র পূর্বকং। व्यक्षातुः द्वाप्तभातः वा मक्ष्य मृक्षिममनिष्ठः। नातिभारत्न होएजन विश्वतान ৰা পুনং। দ্বারদ্য দৈর্ঘাদিওণং দণ্ডং বা পরিকপেয়েৎ। ধৃজযক্তিদেরগৃহে ঐশা-ন্যাং দিন্দি দেনিকৈঃ। বায়ব্যে স্থাপনীয়া বা সাংপ্রভং ধুজ উচ্যতে। পউকার্পা-সক্ষোমালে। ধু জং কুর্বা। ৎ সুশোভনং । একবর্ণং বিচিত্রং বা ঘণ্টাচামরভূষিতং । किक्षिगोबानिकारशब्द वर्षिश्वविवृषिष्द । स्क्रामिवरेर्गिविधानिः क्रमामा केर्रियः দুক্রং। দণ্ডাগ্রথ ধরণীয়ন্ত হতৈকে। বিস্তরেণ ত্রা মহাধুক্ত বিখ্যাত। সর্বকামপ্রদং শুভং। তুর্যাং শহীনা বিহিতা খুজাশ্চ সুরগণার্চিতাঃ । খুজিকার্দ্ধেন বিজেয়াঃ পভাকা মানবজ্জিতাঃ। विস্তারেণ ধজাঃ কার্য্যা বিংশত্যস্থলসংমিতাঃ। যোড়শা अनुसमारित अक्षिका विख्वार मा्छा। अधिवाना विधारित हे कि प्रश्न प्रश्ना विषव नकनः कृषा मखनमूननाषिकः । निखायोलनकः कृषा भूर्विष्ठः नर्व-মাচরেৎ। অধিবাসয়েভ বিধিনা শ্যায়াৎ প্রাপ্ত দেশিকঃ। ততঃ সহসুশীর্ষেতি সূক্তং চক্রে ন্যাসেৎ বুধঃ । তথা সৌদর্শনৎ মন্ত্রৎ সনন্ত ত্ত্বৎ নিবেশয়েৎ । মনোইনুর পেণালৈ ব সঞ্চিবকরণং স্থতং। আবেষু সূর্ভয়োন লেগাং কেশবাদ্যাং সুরোভনাং।

নিবাধ শূণু। এতদেব পঞ্চত্তময়ত্বাদি বিবিচা দশ্যতি ধারণাদিতি সার্ধিঃ বড়্ভি ॥১৯৭॥ ত্বং ব্রহা ॥১৯৮ ॥তদাদৌ তত আরুভোতার্ধ। ধুল্লা সংস্থিতিঃ প্রবৃত্তিঃ ॥ ১৯৯॥ অথেতি বিকল্পে

बाष्ट्राका अर्थरम देवतारमञ्जानि (मणिकः। नात्रमिष्टः विश्वतामक्रमश्या मिरव-मारबर । मकन दिन रामपा अनुवासान मजीवकर । निक्रमर भव्रमासान धरक ধ্যায়ন্ন্দের্করি। ভচ্ছ ক্তিব্যাপিনীৎ ধ্যায়েৎ ধ্রুক্রপাঞ্লাননাং। তভাষ্ওপ-মধ্যে ও সাপ্য পূজা যথাবিধি। পূর্বোক্তেন বিধানেন হোমং কুণ্ডেষু কারয়েছ। ততঃ প্রভাতসময়ে মূর্ত্তিপিঃ সহ দেশিকঃ। কলসে স্থানকলং নত্যা রত্নানি পঞ্চ। স্থাপয়েদক্রমন্ত্রেণ স্বর্চক্রমধন্তভঃ। পারদেন ভ সংগ্রেরেপ্টেন স্থাপয়েং। ততোনিবেশয়েজক্র ছাদশারং সুদর্শনং। দুর্নরীকর সুরৈদৈতি।-क्र महिङ्क क् निक्रकेर । जगत्था विख्याप्तवः न् मिः इर रेम छानिर्मानः । कृतर मोमामिनीहिल् जुलक्कुलनकमत्। मोश्चाक्रम्यनः हन्मु काणि ভाश्वतमः स्ट्रिन्। ত खन। जाभनी रामा मन्मर भूक्षाननः। मर्काम्य इतः एत्वर मूल्यकार एकमा-নবৈঃ। সক্ষরণাশ্বীজেন চত্তর্লযুভেন চ। বিশ্বালক্ষ্ডেনাদৌ প্রণবেন প্রভেন ৮। অত্তে প্রণতিযুক্তেন স্থাপয়েদুউনাশনং। ততে। মুজং গৃহীত্বা ত যক্তমানং স্বাহ্মবং! প্রদক্ষিণং ত কুকীত তূর্যামক্ষল নিঃম্বনৈঃ। ততোনিবেশয়েদণ্ডং মন্ত্রেণান্টাক্ষরেণ छ। मूक्षामि एइ कि मुल्लिन थुका मूक्षिविष्ठकाः। मिथि छ यू छ शांक थुक्तमा अः निर्वभारत् । अवारमान कड़ासन ४ अर माखन शृक्षात्र । नित्रमाधात्र ७ ९ शाउ নারায়ণমনুষ্মরন্। মুক্তমাত্রে ধঙ্গে দদ্যাৎ জীবমাচার্য্যসভ্যঃ। প্রভিন্নং কুঞ্জরৎ দদ্যাৎ ক্ষাং বা লক্ষণান্থিতং ! দাসং বা পেশলং চাপি দাসীং বালসবজ্জিতাৎ ৷ মহাশ্সীং প্রদার প্রামঞ্ ওরুওউয়ে। আচার্থ ভোজয়িতা ও মূর্তিপান্ পূজ্যেলুধঃ। সুবর্ণবস্ত্রদানেন বৈক্ষবানপি পূজ্যেৎ। অনিবারিতময়াদাৎ সকা-বর্ণেষ্ কীরয়েখী ভতোন্ভ্যঞ্বাদ্যঞ্বলিই দদ্যাত্তথা পুনং। কুর্যাদেখাদেব-अस्टन अब्दः विधिविधानणः। जमा माम्करप्रामाका रेवक्षरा नाज भःस्यः। কদাচিদ্দদি মানুষ্যলোকমায়াভি স্বেচ্ছয়া। তথা সর্বেষু ভূতেষু পুজীভূতঃ প্রকা-শতে। আধারভূতঃ সর্বেষাং বন্ধুনাং ধনিনাং তথা। ভন্মাৎ সর্বপ্রয়েল পুরুৎ कूर्या भूतानता । थुल यकि श्रमात्मन वभूमान् कांग्रत्न नतः। थुक्रमात्मन हा প্লোভি লোকং শক্রন্য দুর্জভিমিতি। অথ লক্ষ্যাঃ সুপর্ণাদিপরিবারগণন্য চ। প্রতিমাং হয়শীর্ষোক্ত সুব্যক্তবিধিনাচরে ।। ২০০ ।। সর্বামেতাৎ প্রতিষ্ঠাঞ্চ বিপ্রেণ विमूषा मेळा। शृहिना विकादिनिव कांत्रस्मा छत्त्व छ।। २०५।। छथा ह सारमा । न

বিষত্তীয়ভাগেন কারয়েং। অনাং স্থামং॥ হয়শীর্ষাজ্যেন স্বাক্তেন বিধিনেতি ততুক্ত পঞ্ রাত্রে তিছিবিরতাস্তক্ষুট্তয়া বর্ত্তইতি তিলিখন বিস্তরেণালমিতি পূর্ববদভিপ্রায়ঃ॥ ২০০॥ বিছয় প্রতিষ্ঠাবিধ্যভিজ্ঞেন। সতা স্থশীলেন। নম্ভ ইতরেণ লিখিতাদনোন কারয়েং॥ য়দ্যপি পূর্বে-মাচার্যা লক্ষণ লিখনেনৈতদ্বোধিতমেবাস্তি তথাপি তদ্ন্যধান্তে মহান্ দোষসঞ্চয়ঃ স্যাদিভি তদ্যার্থার্থমেব লিখিতমিতি দিক॥ ২০১॥ পাষ্ডিলক্ষণ্ড পালেষ্ডরেখণ্ডে প্রীমহাদেবেনাক্তরিং छिन्नोत्न म पिछित्वन म निश्निन। शांभनमक कार्य। १ विद्यान कार्य। ध्वाकिभाद्रशन मृहस्थर्मा छिद्रत्यन मिछा ।। भाविधिन । यस करदा छ वृक्ष। विद्यान व्याकि धर्म- युक्तान् । छक्त श्रीकिशे मियू कह्त नृनः कूनका अभाविद्रा पूर्वर ।। २०२ ।। सानः भिमारिकः भिद्रागृहा छ कम्भूका छ। याजि विद्राप । विरेशः कृष्ट याकृष्ट मः कूल माछि ।। २०० ।।

ত্থ চলজীমূর্ত্তিপ্রতিষ্ঠা। চলমূর্তেশ্চ বিবিধাং প্রতিষ্ঠাবিধর: ক্রাডাং। एक्षामी श्रीह्य श्रीवामत्वादका निया एक विधिः ॥ २०८ ॥ इत्रभी स्वी का विभाग **ठमटेम्व विविधाविस्कृतात् । यहत्नाशामिनुक्रवः आमूर्डावने उम्हनः ।। २०७।।** थानार इ। इनस्य कार्रेयु इ इनाइनः। मखामठेट हाइ। इति । शृब्दानाः मटि इनः। চলে রত্নাদিবিন্যান: পিণ্ডিকাযোজনাদিকং। যতে। ন বিদ্যুতে ভক্ষাৎ পিণ্ডিকা ভদ্য নেদৃশী। অভোবিশেষাদ্বক্যাসি চলানাং যাদৃশো বিধিঃ।। ২০৬।। প্রতি विश्वाइड६ महिन्द्रकोर्न शांकक्द छथा। विविधक ममूक्तिके विक्कार विष् ক্ষণৈঃ। প্রতিবিশ্বাহতং পূজ্যং ভাবং কালং ও পার্থিবং। ন ভত্র কশ্চিৎ সৎকারঃ কেবলং ভত্ত্যোজনং। পূজনান্তে বিদর্গশ্চ পুনর্নেষ্টং তদর্জনং।। ২০৭।। শস্ত্রেং कोर्नर वर्ष्ट्रविषर मिनात्रज्ञानि एक एकः । मात्रवर रेगनकः कशः श्रामापः सामारा পরং। রত্নজং নিমিতিং শক্তৈঃ পিণ্ডিকাসহিত্য শুভ্য। পিণ্ডিকারহিতং বাপি छ एन वर कि विश्वर भूनः ॥ २०৮॥ द्रञ्जू क्षत्रा छ क्षत्र ना शिखिका शास्त्री म्यूना । देनानी ख रेमामक्रमा के। त्रज्वमा ख तियार । शिक्षिकामहिकः कार्या । हना त्रज्ञानिनि-মিতিং। পাকজং ধাত্তিকং বিষং পিণ্ডিকাদহিতং তু তৎ।।২০৯।৷ তেষাং প্রতিষ্ঠাং वक्रांत्रि न रक्त भाष्यमिर्विचाः। ममहरुभवीमानः मखंभः कावरमञ्जू ७९। कूर्याः পঞ্চরাং বেদীং ভদ্বৎ কুণানি কারয়েছ। ভোরণধৃত্বকুন্তানাং স্থাপন্ পূর্ববৎ

বেছনাং দেবং পরত্বেন বদস্যজ্ঞানমোহিতাং। নারায়ণাৎ জগলাধান্তে বৈ পাষ্ডিনং স্মৃতাং ॥
শঞ্চক্রোর্দ্ধপুণাদিচিকৈঃ প্রিয়তবৈষ্ঠরেঃ। রহিতা যে দ্বিদাদেবি তে বৈ ইত্যাদি। পূর্বামচিরেণ
কুলক্ষয়ঃ ন্যাৎ।। ২০২।। তৎ শ্রীমৃতিস্থাপনসম্বিদ্ধানং। স্থাপিতশ্রীমৃতিঃ স্থাপকোবা লোকে
প্রজ্যতাং যাতি।। যৎ স্থাপনং বিশ্রৈঃ কৃত্বা কৃতং।। ২০৩।।

অপ্যর্থে চকার: । যথা স্থিরস্র্রেং প্রতিষ্ঠাবিধয়োবছপ্রকারন্তথা চলমূর্ত্তেরপি। স্তা-, অভিজ্যা। আদাবিতি পশ্চাদন্যোপি লেখা ইত্যর্থং।। ২০৪॥ আদিপুরুষং পরমাত্মা পরুমেশরো জগবান্ প্রবাহ্যদেবং অচলং সর্ব্যাপকত্বাৎ। প্রাদুর্ভাবগতং লীলয়া স্বীকৃতজ্ঞা চলং ভক্তাবিসালিলীলয়া ইতন্ততং পরিভ্রমণাৎ।। ২০৫॥ এবং যথানৌ দিবিধং তথাবৎ প্রতিমাপি দিবিধা ইত্যাহ প্রাদাহতি ।। ২০৬॥ পার্থিবং প্রতি বিশ্বাহতং ছায়াবৎ স্থালেহছিত। প্রদূর্তিং। তাবৎকালংনদাঞ্জব নত কালান্তরেণ পুনং পুজাং॥ ২০৭॥ পিণ্ডিকালহিতং পিণ্ডিকারহিতং বৈতি তৎ রত্ত্বমের তথিং।।২০৮॥ ক্রপন্য প্রিমর্তেং।।২০৯॥ তত্ত্ব

म् ७९। विक् कू दुः ७ थ। दाना । लाक भाम् भू खंब म्या छ । नर्वा छ छ कर विष्तार निर्थमुक्कृनवर्ग किः। रेवक्षवाधि प्रथा कूर्यताथ यात्मा मयता । अभा-ম্যাৎ ভত্রপাঠং জ ন্যা কুন্তং জ বিন্যাসং। সুকৌষ্ধিযুতান সর্বান্টাশীতিপদে ভথা।। ২১০।। অথোত্তরে মগুপদ্য সানবেদ্যাং তু পশ্চিমে। ভূমিং প্রলিপ্য ততাদৌ তভুলৈঃ পঞ্চবর্ণ কৈঃ। চত্তরসুৎ বিলিখ্যাদৌ স্বন্তিকং কম্পায়েকারুঃ। তন্ম-ধ্যে পীঠকং ন্যা প্রতিমাং ভত্র বিন্যানে । শন্ত্র্যারবৈত্তমং পঞ্চাব্যাদিনা-मुर्ति ।। २७५।। भूष्मशकां विचिः भृष्य प्राप्ता प्रकृत्व वाने मा। देशाभा विच्या वि विनास नाम खंभर। मध्यपूना इत्यासन नामभी के निवमस्तर। जनभाषा अभ-চ্ছান্তিং তৌষয়েৎ কর্মিণস্তধা। দেশিকস্য তদা দদ্যাৎ পূর্ববত্তরণীং শুভাং। সপুত্রাং বস্ত্রসংযুক্তাং হেমশৃঙ্গীং সদক্ষিণাং ॥ ২১২ ॥ ততোবেদাদিমকৈন্তামালভেদেশি কোত্তমঃ। পৌরুষেণ ও সূত্তেন মূলবীঞ্চন চালয়েং। কৌত্তকং মূলবীঞ্চন ত্বং करत विधिताभाष्य । हिन्दे (मार्विक माजन निक्ति कार्यामा कार्याम कार्याम कार्याम कार्य লেতে শুক্ষাত শলাকয়। ঘৃতেন মধুনা তদ্বৎ মধুবাতেতি দেশিকঃ। ততঃ শুদ্ধেন ভোয়েন সাপঃ মলৈঃ সমালভেৎ। বেদাদ্যেন চ স্জেন চত্তিমুর্ভিপৈঃ সহ । ততোদেবেতি চাবাহ্য বাসুদেব । बन्ताला क्र । विश्वक्रम्हिका जातर हिमकू तम्मूर्न-রিভ। কিরবৈঃ শীতলৈঃ সৌমোঃ প্রীণয়ন্তঞ্রাচর। লাবণ্যামৃততোয়েন নিঞ্স্ত মিব সর্বভঃ। সুনাভং বারিজং পত্তং ধারয়ন্তং গদাং শুভাং । ভূষিতং মালয়া ভদ্ব-দ্দীপিতং মণিকাঞ্চনঃ। এপুটিগরুড়াদ্যৈত্ত সমস্তাৎ পরিবারিতং। এবং ধ্যাত্মা ডতঃ কুষ্টেরভিষিপ্তেৎ সমন্ততঃ। আপোহিষ্টেতি মাত্রণ কুষ্টেনাসেচয়েকাুরুঃ। সমূত্রং গচ্ছ মস্ত্রেণ দক্ষিণেনাভিষেচয়েং। সোমরাছেতি মন্ত্রেণ উপ্তরেণাভিষেচয়েং। ঘৃত্তেনাভ্যঞ্জয়েদেবং তেজোগাতি ততোগুরুঃ। ক্রপদেতি সমুদ্বর্ত্ত দদ্যাদামলকং শুভং। योः ফলিনীতি সঙ্কেণ ফলৈনী রাজয়েৎ প্রভুং। কাণাৎ কাণ্ডেতি মস্ত্রেণ হরিং নিম স্থিয়েৎ পুনঃ। এক লভোয়েন সিঞ্ছে প্রায়ত্র্যা দেশিকোত্তমঃ। তদিকো-রিতি মন্ত্রেণ পঞ্চপব্যেন সেচয়েৎ । কাষায়েণ তু তোয়েন বরুণস্যেতি সেচয়েৎ । সুমঙ্গলীত মজেণ बिह्नात्मायिधियात्रिणा । मूर्कानः दिव मख्यण वाल्यीदिकां जित् চয়েৎ। ইমং মেতি চ মল্লেণ সাপয়েৎ সিকভাজলৈঃ। দেবোবরাই মল্লেণ মৃত্তোয়েনা-किरवहरत्र । तिहरत्र शक्षमृत् द्वारेत्रः मह्मात्मवीचि तिमकः। अख्य हिन् किन् किन् ভীর্ষ মৃথকু ন্তবারিণা। নাগকেশরভোয়েন এশিচতেত ডিবেচরে । চন্দনোদক কুল্ড-म পাবমান্যাভিষেচয়েৼ। পুৰদামা ভতঃ পঞ্রজুতোয়েন (সচয়েৎ। পঞ্চ নমেউছ্য-हा त्वर महीनम्डड़ाशिकः । यात्रार द्वारक्षि मत्त्वन এकामी छि घर्षे इति । नामि-

পূর্ববে।। ২১০।। স্নপেৎ স্থাপয়েৎ। আদিশব্দেন পঞ্চামৃতপঞ্চক্যায়াই মৃত্তিকাজনাদি।। ২১১॥
জগচ্ছান্তিমবধার্যোতি স্বন্তিবাচনাদিকং ক্ষেত্রতার্ধঃ // ২১২ // তাং প্রতিমাং আগতেৎ স্পূ

रशक्तरंशकुक्ता श्राब खरार नमाहिएः। एश खारहिए माजन एक्स्माक्त्यम छ। खकरणात्रन मारवणा खकरणा चिरवहरय ।। ১১৩ ।। खरणाईकरम मूर्वभानः লিভন্ত ইভি দেশিকঃ। পাদ্যন্ত মূল মস্ত্ৰেণ মধুপক্তিথৈব চ। স্নীয়মথবাচামৎ গায় ত্রা বিনিবেদয়ে । সুরাসুরেভি যুগাং ও দদ্যাত্তরৎ পবিত্রকং ।। ১১৪।। বেদাহ-মিত্যন্তরীয়ং রোচনাং প্রণবেন তু। অঞ্জনং অঞ্জতেতে বং গন্ধং পদ্ধবতীতি চ । ১১৫।। भूष्पत्रा उथा भूष्पर धूमर मित्रमिए छ्।। (उद्यामी छ छ। । । ম যি মূর্জেন প্রাপণ ।। ১১ ।। ইন্দু চ্ছত্তেতি বৈ চ্ছত্রং বিকর্ণেন ভু চামরং। আজ্য-मारहमे हाममर वारवावारविव वोक्रायः। विमामुवि थुक्र ममार भवाकामामिवि यात्रम्। (पर उट्टिन गामा जू परामाज्य गापिक । खूरा र पूरुष मृद्किन माकत्नान क्रनाम नः । मोर्चा য়ুষে তে সংপৃজ্ঞ কিরে দূর্ব্বাক্ষতং বুধঃ। যাওষধীতি মন্ত্রেণ পুত্পা-ণি বিকিরেশার: । পুনবৃহদ্রথৈ: স্তত্ত্বা চক্রসামা জনাদ্রং। শিবসংক্পে সূত্তেন শাকুন্তেন জনার্দ্দনং ৷ উত্তিপ্তি সমুখাপ্য শহ্যায়াং বিনিবেশয়েৎ ৷৷ ১১৭ ৷৷ অপারাজিত মত্ত্রেণ ধ্যায়েৎ সকল নিক্ষলং। ব্যাপিনস্ত পুনর্য্যাত্বা তত্ত্বানি বিনি-যোজমে । সকলীকরণং রুদ্ধা পূর্ব্বোক্তবিধিনা হরে: । ততঃ সহসুশীর্ষেতি প্রত্যচং পূक्षात्रष्यः। शक्ष पुष्पामिष्ठिः ममाक् रेनावमानि निव्यमस्य । घटलाम् विक সূজেন গৃহোপকরণানি চা। ২১৮।। নিজাকলস্বিন্যাসং ক্লবা পূজ্যন্ত মগুলে ! সর্বতোভদ্রকে দেবো গন্ধপুষ্পাদিভিঃ ক্রমাৎ ।। ২১৯।। প্রভূতৈর্যাজ্ঞিকৈ ত্রি হের পুলৈ: সমুদ্ধলৈ:। যন্তেবং মগুলে পশ্চাজ্ঞালয়েদ্বৈক্ষবানলং। নয়মান্ত্ৰন্ত তৎপশ্চাৎ কু জেবু दिজ नত ম:। জু ভ্রাচ্চ শতং সাউৎ পলাশ সমিধা ছিল। তিলাংশ্চ জু ভ্রা-मारेका रेवंकवः श्राप्ताक्रकः। विमञ्जूनम्रिक्ष गृष्टमार्थाः नाथरावः। अविच्छा-ভিঘার্টের মক্তেরেভিন্ত হোময়েৎ। বিষ্ণবে শিপিবিষ্ঠায় বিষ্ণবে নিগু ণৈতি চ। ইদং বিষ্ণেতি মস্ত্রেণ ভবিষ্ণোরিতি দেশিকঃ। ইরাবভতীতি মস্ত্রেণ ত্রংবিষ্ণোরিতি চৈৰভি। প্ৰভাষিক্ষেতি মন্ত্ৰেণ বিক্ষোলু গিতি চৈবছি ।। তথা পুৰুষসূক্তেন সমাক্ ষো-एम चाह्छीः । छक्र- छ्या श्रूनः शन्धायद्विद्विष्ठ होन्। अ विकास स्रोहा। ওঁ পুরুষোভ্যার স্বাহ।। ওঁতৈলোক্যমোহনার স্বাহা। ও বৈকুঠার স্বাহা। ওঁলক্ষ্মী-প্তরে স্বাহা। ওঁহ্যাকেশার স্বাহা। ওঁহয়শীর্ষ স্বাহা। ওঁনমোনারায়ণায় স্বাহা ওঁব্ৰফণে স্বাহা। ভ্ৰাব্যাস্তিভিঃ পূৰ্বং গান্ত্ৰ্যা হোমন্নেলাু রুঃ। এবং ভ্ৰা জুত্রাক চক্রদৌনাং যথাক্রমং। **লক্ষ্যদানাং ততোত্ত্ব। প্রহা**ণাং হোময়েস্তভঃন লেকেশানাং তু নাগানাৎ ছোময়েওদনত্তরং। নারায়ণায় ছত্বা তু দদ্যাৎ পূর্ণাভৃতিং

শেশ। ২১৩॥ यूष्यः পরিধানোজরীয়বস্ত্রজন্ত।। পবিত্রকং যজ্ঞোপবীতং॥ ২১৪॥ রোচনাং গোরো-চনাতিলকং॥ ২১৫॥ প্রাপণং নৈবেল্যং॥ ২১৬॥ সাকলেন স্থ্রেন ॥ ২১৭॥ স্কলঃ সপ্তণ-শাসে মিন্ধলোনিপ্রণক্তং॥ ২১৮॥ স্ক্রেভিক্রকে মণ্ডলে দেবঃ পুজাঃ॥ ২১৯॥ তং জন-

वूषः। ততে।विভेक्षां विश्रार्श्व मनार कनकनिक्ताः । जन्नाःचायानिमारमवर नमू-থাপ্য বিচক্ষণঃ। ওতোমগুলমধ্যে তু স্থাপয়িত্বার্চয়েৎ পুনঃ।। ২২০।। প্রত্যুচং निषम् खिन गन्ना भूष्मा पि ভिः क्र मार्थ। मित्रिधार भूक्तवर क्षेत्रा ममीवकदनः छकः। প্রাণবেন নিরুধ্যাথ ধ্যারেৎ সকলনিক্ষদং ।। ২২১।। পিগুকা যোজনীয়ানি মনসৈব वििष्ण राष्ट्र । नामः क्रवार्क्त प्रस्ति भन्ता शुक्र । विवाद प्रमाख् जृत्द-ভঃ পার্ষদেভঃ হ দেশিকঃ। প্রণিপত্য ততোদদ্যাদকিণাং শুরবে সুধীঃ।। ২২২।। সুবর্ণসহিত। পাত্র ভিলৈঃ পূর্ণ সযুগাকং। ধেনু । স্বলংকতা দ্যোদ্বেমশ্সী ত पक्षिनाः । बाक्षान कनकः प्रमागृर्डित्यकास्त्रीय ह।। **अथथभाव क्रमा कू प्रा**र्थ-কঃ কারকন্তথা। চরুং সংস্থাপয়েদ্ধন্তেরস্পূশন্ প্রণবেন ত্তা। হেং রাতিৎ বৈষ্টবেঃ সাৰ্দ্ধৎ জাগ্ৰন্তিষ্ঠেদব্ৰিতঃ। প্ৰভাতসময়ে স্নাত্মাদেবমুত্থাপ্য যত্নতঃ।২২৪। ভদ্রপীঠে সমারোপ্য সাপরেদচ্ছবারিণা। একালীতিঘটৈর্চ্দেবং মূলমন্ত্রেণ সেচয়েৎ। रिवक्षर्यम ख कुर्छन ঐन्नुमिक्नरेमस्था । मिहरत्र यन्त्रास्त्रम भक्षभवादिन। তথা। সুগল্পেন তথাজ্ঞোন সাপা। গন্ধাদিনার্চয়েৎ!। পৌরুষেণ ভ সুক্তেন প্রত্যুচং वन्तर्नाति जिः ॥२२७॥ तिञ्यू भाग म्यात्वके । धूमिश्रिषा गृहः नत्यः । जन्माया निः না সম্যাগ্রনিবেশ্যার্জন্নেৎ সুধীঃ। দক্ষিণাং দেশিকে দদ্যাৎ কনকং ছত্রমেব চ। ব্রা-ক্ষণান্ তোজয়িত্বাথ স্বয়ন্ত যতৰাগ্যতঃ। সভূত্যৰক্ষুবৰ্গ ২ ত দীনানাথাং স্ত ভোজ-(य़ ९ ॥ २२७ ॥

অথ চলমূপ্তিপ্রতিষ্ঠামাহাত্মা ।। অত্রৈব ।। যস্য গেছে সদা তিষ্ঠেৎ মূপ্তি দিবসা চক্রিণঃ । ন তত্র ভাবি দৌর্ভাগ্যং নবালক্ষা ন দুক্তং । অনেনৈব বিধানেন সংস্কৃত্য প্রতিমাং হরেঃ । বিফুলোকমবাপ্নেতি পুনরাবৃদ্ভিদুর্লভমিতি ।। ২২৭ ।। অধুনাচলমূর্ত্তের্ভিপ্রতিষ্ঠায়াঃ পরোবিধিঃ । লিখ্যতে পদ্ধতিশ্রেণী দৃষ্টিতঃ সমতঃ সতাং ।। ২২৮ ।। অথ বৌধারনাদ্যুক্তচলঞী মৃপ্তিপ্রতিষ্ঠাবিধিঃ ।। হিরমূর্ত্তিপ্রতি

লং।। ২২০।। নিজস্জেন সহস্পীর্যাদিনা।।২২১।। মনসৈব চিস্তয়েৎ নত্ত পূর্ববৎ সাক্ষাদুক্ষশিলা-দিন্যাসেনেতার্থঃ ।। ২২২ ॥ সমুগ্মকং বস্ত্রদ্বয়সহিতং।। ২২৩ ॥ যত্নতঃ ব্রহ্মঘোষাদিনা।। ১২৪॥ অচ্ছেন নির্মালেনা। ২২৫ ॥ সিত্যুগ্মেন শুক্লবস্ত্রদ্বয়েন।। ২২৬॥

যদ্যপি মূর্ত্তিরতি প্রতিমামিতি চ সামান্যতোনির্দেশং তথাপি চলমূর্ত্তিপ্রতিষ্ঠায়। উক্তত্বাদক্রৈব লিখিতং ॥ ২২৭ ॥ এবং হয়শীর্যোক্তঞ্চলশ্রীমূর্ত্তি প্রতিষ্ঠাবিধিং লিখিত্বা ইদানীং
ততঃ সংক্ষিপ্তং বৌধারনাদিশিই বর্গসন্মতং সংসাংপ্রদায়িকং বছলপন্ধতারুসারেণ প্রমপি
লিখতি অধুনেতি । এবার্থে হিশব্দঃ । চলমূর্ত্তেরেবান্যোপি প্রতিষ্ঠাবিধিং শ্রীকৃষ্ণ দেবাচার্য্য সন্মতঃ । তথাচ শ্রীকৃষ্ণ দেবাচার্যাপন্ধতৌ । বৌধারনাদি সন্মূলাক্রৈবিক্রম্যাদিপদ্ধতীং ।
বীক্ষ্য বক্ষ্যামি,বিষ্ণুদিচলার্চান্থাপনে বিধিমিতি॥,২২৮:। তত্ত্বচ মণ্ডপনির্মাণাদি প্রকৃার ষ্ঠানু সারেণাক্রাপি বৈক্ষবৈঃ। প্রতিষ্ঠাবিধিক্রমেরোবিশেষোহন্যন্ট লিখ্যতে 1২২৯। অধ তন্মগুপাদিনির্মাণবিধিঃ ।। প্রাসাদতোদিশি প্রাচ্যানুদীচ্যাং বাথ নগুপং। অশান্যাং বা চরেৎ স্থানেঃদূরেইক্লারাদিবিজ্ঞিতে ।। ২৩০ ।। দশহন্তং চন্তর্দারং চন্তরসূৎ সমৎ শুভং । চন্তন্তোরণসংযুক্তং সপতাকঞ্চ পূর্দাবং ।। ২৩১ ।। অন্যংশ্চ বিধিবৎ কুর্য্যাৎ স্থোন্যান্যন্ত্রিমেখনং । আগ্রেয্যাং কুগুমাশায়াং চন্তন্রসূৎ করোন্সিভং ।। ২৩২ ।। প্রাচ্যাং বেদীং করোচ্ছায়বিন্তারাৎ চন্তর সূকাৎ । এশান্যাং স্থানমেকঞ্চ দেবস্য সূপনোচিতং ।। ২৩৩ ।।

অথ তত্র মণ্ডলবিধি:।। মণ্ডলস্য চ নৈখাত্যাং বিধিবদ্বাস্থমণ্ডল**্।** মধ্যে চ

বিশেষঃ স্থাপনাদৌ মন্ত্রাদিকঞ্ প্রায়ঃ পূর্বলিথিত স্থিরমূর্ত্তিপ্রতিষ্ঠাবিধিবদ্বিজ্ঞেয় মিতি লিখতি স্থিতি। ২২৯॥

প্রাসাদেহিত্র ভাগবদাবাসালয়ঃ তন্মাৎ । অঙ্গারেণ আদিশকাৎ তুষাস্থ্যাদিনা চ রহিতে অদ্রেহনতি নিকটেচেতার্থঃ । মগুপমাচরেৎ রচয়েৎ ॥ ২৩০ । পূর্ব্ববিদিতি স্থিরমূর্ত্তি প্রতিষ্টায়াং তারণ পতাকা স্থাপনাদিবিধির্যথা পূর্বাং লিখিতোইস্তি তথৈবেতার্থঃ । যদ্যপি মণ্ডপ পরিমাণাদিকমপি পূর্ব্বলিশ্বনান্বিজ্ঞাতং স্যাদেব তথাপি তদেব স্মারয়ভাত্র লিখিত মশক্তাব ন্তা পক্ষং চাঙ্গীকুর্বাতা কিঞ্জিন্ধিশেষং দর্শয়তা,ভল্লিখিতং । এবমগ্রেপ্যাহাং ॥২৩১॥ তন্মিন্ম গুপে যোনিঃ স্মাসাঞ্চ বক্তাং ভিস্থো মেশ্বলান্দ তৈঃ সহিত্ব মায়েয়া মাশায়াং দিশি বিধিযুক্তং যথা-স্যান্তথা কুর্যাৎ। তদ্বিধিন্দ পূর্বাং দীক্ষাবিধে বিস্তার্যা লিখিতোইন্তি। করোন্মিতং একহন্ত পরি বিভং ॥২৩২॥ করঃ একহন্ত প্রমাণঃ উচ্ছুরো বিস্তারন্দ যায়ান্তাং। স্পনোচিতমিতি দেবসপ্নস্য তত্বপকরণ স্থাপনস্য চোপযুক্তমিতার্যাং ॥২৩৩॥

বাস্ত্রমণ্ডলং হৈবং । পুর্ব্বোপ্তরগান্তি র্মাবনবভীরেথাভিশ্চতুংযথিপদং মণ্ডলং বিধায় তত্র বহিশ্চন্তঃ কোণের কোণান্তির্যাগরেখা দল্পান্তাবিদ্ধান হন্তাবিশ্বিদ্ধান হন্তাবিশ্বিদ্ধান মধ্যে রেখাদ্ব মার্জনেন চন্ত্রপ্রদামকং। তথা তৎ প্রাচ্যাদি চন্তর্বিশ্বিদ্ধান হন্তমান হন্তমান হন্তমান হিল্পান ক্র্যাৎ । এবং পঞ্চন্ত্রারংশক্ষেবতাস্থান ভবিন্তা। দেবতাইশ্চনা মধ্যমন্তল্পদে ক্রমা। তৎ প্রাগাদি চন্তঃপদের ক্রমেণ আপানানি ভবিন্তা। কোণম্বের্ইই দ্বিপদে স্থানমকোণাদিক্রমেণ অর্যাম সবিত্ বিবস্থান্ত্রমানি পি মিত্র রাজ্যক্ষরপৃথীধরাপবৎসকাঃ ॥ তথান মাৎস্যে। দ্বাতিংশদাহ্তঃ প্রস্থাঃ পূজ্যাশ্বাস্ত ক্রেয়াদশ ॥ তথা। স্থান কোণাদির স্থান প্রান্ত প্রাক্রের্মান হন্তা । তথা। স্থানানি চন্তঃকোণ সংস্থিতান পুজ্মের দুধ: । আপইশ্বাধ সাবিত্রোজ্মের ক্রের্মান্ত । তথা। স্থানানি চন্তঃকোণ সংস্থিতান পুজ্মের দুধ: । আপইশ্বাধ সাবিত্রোজ্মের ক্রেইথবন। মধ্যে চন্তপ্রাদে ক্রমা ত্রাক্রের ক্রমান প্রস্কান চি তথা
প্রাধিরঃ ক্রমাণ । অর্যমান বিতা হৈন বিবস্থান বির্ধাধিপঃ। মিত্রোথ রাজ্যক্রান তথা
প্রাধিরঃ ক্রমাণ । অর্যমান বিতা হৈন বিবস্থান বির্ধাধিপঃ। মিত্রাথ রাজ্যক্রান্তপদের চ্বানানিক্রমেনের দ্বিতীরান্ত্রপদ্ধ পরিতানের ম্বান্তংশদেরতাঃ। তথান ভইত্রব শিখী হৈবাথ
পর্জনো ক্রম্ভঃ কুলিশার ধঃ। স্বর্যঃ সন্ত্যোভ্শকৈর আন্যানোরার বেন্ত। প্রাচ বিত্রইশ্বন গ্রহ্মত্বমার্কেটা। গল্পরং ক্রেনিম্বরাল্বল ম্বঃ ক্রিত্রার্মান্তরা। দেবিবারিক্রেথ স্থ্রীবঃ প্রশাদন্তো।
ক্রাধিপঃ। অস্তরঃ শোষপাপেণী চ রোগোহিম্ব্রার্থন চ ভ্লাটঃ সোমসপোর্ত অদিভিশ্ব দিতি-

দেবভার্চার্থং সর্বাভেত্রমালিখেৎ। সকর্নিঞ্চ তথ্যধ্য পলং বিরুচারেশুখা। স্বতিকং চোত্তরে ক্যা ভজ্র শব্যাং নিবেশয়েং।। ২৩৪।

অথ ব্রাহ্মণবরণাদি বিধিঃ। যজমানশ্চ পূর্কেদ্যুঃ প্রতিষ্ঠায়াঃসমাচরেৎ। পুণ্যাহ্ বাচনং বিশৈর্জ পদাপনং তথা।। ২৩৫।। মগুপ্রা চ বায়ব্যাং মাতুর্গজাদিনাচ্চরেৎ। প্রণবাদিনমোইন্ডেশ্চ নামভির্কিধিবছুধঃ।। ২৩৬।। নাদ্যাআদাং ততঃ
কৃষা সন্বিপ্রং ব্রুয়ালার্কং। মধুপর্কাদিনাভাচ্চ্য দত্তা বস্তাদি শক্তিতঃ।। ২৩৭।।
তদর্জদানাদুক্ষাণ পুরাণস্থতিপাঠকং। সূক্তজাপকমপ্যেবং ত্রীন্বিপ্রান্ বৃণুয়াৎ
পরান্।। ২৩৮। তোরণানি ততোভাচ্চ্য দ্বাবাণু ত্রতত্তথা। পূর্কবৎ বৃণুয়াদ্বপ্রাং

ন্তর্থা। এবং সর্কাঃ পঞ্চত্তারিংশন্দেবতাবাস্তমগুলে॥ তত্ত্বিরীশানাদিক্রমেণ চারকীক্ষণাবিদারী অর্থামা পূতনা জন্তকা পাপরাক্ষনী লিপিচ্ছাচেত্যক্তৌ দেবাইতি। এবময়ং চন্তঃৰ্ভিপদমগুল-দেবতান্তলে বিভাগোহয়শীর্ষপঞ্চরাক্রস্যাস্থলারী। নন্ত মাৎস্যপুরাণস্য। এতচ্চ নর্ক্রমগ্রে প্রাণাদনির্দাণে ইবশ্যলেখাত্বাদক বিস্তার্থ্য ন লিখিতং॥ তত্তৈব বিশেষতো ব্যক্তং ভাবি। এতচ্চ বাস্ত্র-ম গুলং। বিবিধরক্ষশালিপিইপ্রতং কার্য্যং। মগুপমধ্যে চ মগুলদেবতাপুজার্থং সর্ক্রভাল্যাখ্যং মগুলং কুর্য্যাং। তচ্চ স্থপ্রসিদ্ধমেন। তন্য নর্কেভোভদ্রন্য মধ্যে চ কর্ণিকানহিতং পদং তথেতি বিধিবনির্বহয়ে । তন্মগুলদেবতাশৈতাঃ । মধ্যে , ব্রন্ধা মগুলপ্রান্তে পূর্বাদ্যইদিক্ষ ক্রমেণ ইন্তালার্যকালায় রালাইকে চ বসবে। রুদ্রা আদিত্যা অখিনো পিতরো লগোঃ ক্রন্দে ব্রশ্ভেত্যটো। ঈশানাদিপঅদলেম্বইস্থ ক্রমেণ দক্ষোবিষ্ণুর্ত্রগা স্থাকাথে। মৃত্যুক্রগাং সমমুদ্রাং স্থিকী। উপরি মেরুঃ। তন্তপরি স্থাপ্যা দেবতাঃ। মগুলস্য বাহ্নতঃ প্রাগাদি দিক্পালানামায় ধানি বাহনানি চ। তদ্বাস্থে চ গৌতম ভ্রম্বাজ বিশ্বামিক্র কন্যাপ ক্ষমদায় বলিষ্ঠাদেয়ং সপ্তর্যয়ং। ততোবহির্নবগ্রহাঃ। তত্তাক বিশ্বামিক্র কার্যপ ক্ষমদায় বলিষ্ঠাদেয়ং সপ্তর্যয়ং। ততোবহির্নবগ্রহাঃ। তত্তাক বিশ্বামিক্র বার্যাই চামুণ্ডা বৈষ্ণবী মাহেশ্বরী বৈনায়কী চেত্যক্টো শক্তর ইতি। উপরের তৎস্ক্রেভাভদ্রব্রতঃ স্বন্তিকং মণ্ডলং চ কুত্ব। তত্পিরি শাযাং স্থাপরেহে।। ২৩৪।।

এবং মঁগুপরচনাদিকং লিখিত্বা পুণাহ্বাচনাদিপূর্বকমাচার্যাদিবরণং বজমানস্য কুত্য-বিশেষং লিখতি যজমানশেতি পঞ্চজিঃ। প্রতিষ্ঠাসময়াৎ পূর্বেদ্যুং পূর্বাদিবদে বিপ্রৈঃ কৃত্য পুণাহ্বাচনং মগুপপ্রতিষ্ঠাং চ সম্যাচরেৎ ॥ ২৩৫॥ গল্পেন আদিশকাৎ অক্ষতপুশাদিভিশ্চ মাতঃ পূজ্বেৎ। মাতৃপুজনে মন্ত্রান্ লিখতি প্রবাদীতি । মাতরশ্চ বোড়শ পূর্বমচলমুর্ত্তিপ্রতেষ্ঠারে তাথিতা এব। প্রয়োগঃ । ওঁগৌর্য্য নম ইত্যাদি বিধিবদিতি সর্বত্বিবাগ্রেপ্যকুর্ব্ভনীয়ং॥ ২৩৬॥ দলিপ্রং পূর্বানিথিতলক্ষণং ব্রাহ্মাণঃ মধুপর্কেণ আদিশকাৎ আসনপাদ্যাঘ্যাদিনা চ সংপূজ্য শক্তিতঃ যথাবিভবং ক্রাদিকং দত্ত্বা। আদিশকেন ভূবণাদি । গুরুবরণবিধিশ্চ পূর্বমেবলিখিত তোহন্তি। অমুকগোত্রং অমুকশর্মাণং অমুকশর্মাণং ত্বাং প্রতিষ্ঠাচার্য্যত্বেন বৃণে। সচ বৃত্তাহম্মীতি প্রব্রাদিত্যাদিরপঃ ॥ ২৩৭॥ তথা মধুপর্কাদিপুজাপুরঃসরং গুরুসংপ্রদানকব্রাদ্যাদিলানেন ব্রন্থানে বৃণ্যাৎ। পুরাণস্তিপাঠকসূক্তজাপকৌ চ মধুপর্কাদিনা তথৈবাভার্চ্য ভদর্জনানেন যথা বিভবং বা বস্তাদিদানেন বৃণ্যাদিত্যাদিরপশ্চ। ২৩৮॥ তদনন্তরং চ উত্তরতঃ উত্তরমারভা তোরণায় নমইতি ক্রমণ জেবেণানি তথা ছারাণি চত্যারি শ্রিইয় নমইত্যভার্চ্য

अक्टब्रावांत्रकां भकाम् ।। २७५ ॥

অধ বাস্তদেব পূজাদিবিধিঃ। আচার্য্যান গুপেছভোতঃ প্রাণায়ানান্ বিধায় চ। আপোহিটেতি দর্ভোদের্যাগাড়াক্ষয়েডুবং ।। ২৪০ ।। বিকার্যান ক্রণান্ শুক্রান্ রক্ষাৎকৃত্যা চ মন্ত্রতঃ । বিধিবং পূজ্যেছান্ত দেবতা বান্তনগুলো ।। মন্ত্রশ্চায়ৎ ।। দেবাযায়ান্ত জাত্তধানান্ত অপযান্ত বিষ্ণো দেবয়জনং রক্ষয়েতি ।। ২৪১ ।। ঈশানাদিক্রমেণাথ কুলপুজ্যভাক্ষতৈঃ । শিখ্যাদি দেবতাভাশ্চ বিশেষ বলিনপ্য়েং ।। ২৪২ ॥ আগতা কুগুপাশে ত হোমং কুর্য্যাদ্যথাবিধি ।। তত্রাবল্যাৎ প্রতিদ্রব্যং হোমান্তে প্রতিমাং স্পূশেণ ।। ২৪৩ ।।

অথ সুপনবিধিঃ। আচার্য্যায় বরং দল্পা নিজ্ঞাক্ত্যনুসারতঃ। বিপ্রান্ গল্ধাদিনাভ্যক্ত পুণ্যাহং বাচয়েৎ পুনঃ।। ২৪৪।। ততশ্চ যক্ত্যানানুমাদিতোহক্তাবিশোধয়ন্। আচার্য্যপ্রনিপভ্যাদৌ দেবং সংপ্রার্থ য়েদিদং ।। তদুক্তং ।। স্থাগতং
দেবদেবেশ বিশ্বরূপ নমোস্ত তে ।। শুদ্ধেপি দুদ্ধিষ্ঠানে কর্মাশুদ্ধিঃ ক্ষমস্থ মে ইতি ।
ভতশ্চ নবপীঠোপবেশিতাং প্রতিমাং গুরুঃ ।। মৃদ্ধিদ্ধানক্ষস্তাং সংশোধ্য ক্ষালয়েৎ কলৈঃ। পঞ্চগবৈগত্থা পঞ্চাম্ভৈত্তক্সত্ততোবুধঃ। সংস্থাগ্য হবিষাভাজ্য
চূর্ণক্ষন্ত্র্যেজ্ভ্তিঃ।। তথা ভল্পাঃ। পঞ্চগবাসুপনে প্রংপ্থিব্যামিতি। ক্ষীরাদি চত্তঃ সুপনে পূর্ববদেব শর্করামুশনে চ অয়ং গৌরিতি।। কোফোদকেন প্রকাল;
সুনন্ধেনানুলিপ্য চ। ততঃ সংস্বকুষ্তান্তিঃ সংস্থাপ্য প্রণমেচে তাৎ ।। ২৪৫।। তভি-

পুর্ব্বেথ যথাশক্তি মধুপর্কবালোসকারানিদানেনেভার্থঃ ॥২৩৯॥

প্রতিষ্ঠামশুপে অভ্যেত্য আগত্য যাগদ্য তুবং দেবপুলাছলং ॥ ২৪০ ॥ বিধিবদিতি প্রণবাদিনমোহন্তনামমন্ত্রৈঃ বোড়শোপচারৈঃ প্রত্যেকং পুলয়েদিতার্থঃ । মন্ত্রতইতি লিখিডং। তমেব মন্ত্রং লিখতি দেবইত্যাদি ॥ ২৪১ ॥ শিখী বাস্তমগুলসোশানকোণার্দ্ধপদবর্জী । তদাদি দর্ব্বনেবতাভ্যোহতো লেখ্যতপ্তদিহিতদ্রব্যাদন্তবে পুশাদিতির্বিশেষবলিং দদ্যাৎ ॥ ২৪২ ॥ যথাবিধীতি অগ্নিং প্রতিষ্ঠাপ্যান্থায় গোক্ষীরে নীর্দে চক্রং স্থাপ্যদেবতাকংস্পরিত্বাল্যভাগান্তে পলাশোডুররাশ্ব্যনাগ্রাধায় গোক্ষীরে নীর্দে চক্রং স্থাপ্যদেবতাকংস্পরিত্বাল্যভাগান্তে পলাশোডুররাশ্ব্যনাগ্রাধাপামার্গদমিদ্ধি প্রত্যক্ষরেশতাকৌত্তর রসহস্মফীবিংশতির্ব্বালিপালাম্দ্রিশা তত্ত্বান্ত্রের্ব্বাহ্ণতির্ব্বিশ্ব ক্রের্ব্বাল্যভাগিত্ব ক্রেণ্ডান্ত্রাক্র দেবতান্ত্রিক মন্ত্রেণ ক্রের্বাল্যভাগিত্ব আ্রির্ভাল্যক্র ক্রেণ্ডান্ত্রাল্যভাগিত্ব ক্রেন্ত্রাক্র ক্রেণ্ডান্ত্রাক্র আ্রের্বাল্যভাগিত্ব ক্রেন্ত্রান্ত্রাদ্রাদ্রিত্বাল্যানাহ্ প্রতির্ব্বাল্যভাগিত্ব ক্রেন্ত্রাল্যভাগিত্ব ক্রেন্ত্রালিত্র ক্রেন্ত্রিল ক্রেন্ত্রালিত্বলিক্র নির্দ্ধিক্র বিধিক্রের্ব্য । ২৪৩॥

যজমানক্ত্যং লিখতি।। বরং আচার্যাপেকিতং বস্ত্রালস্কারাদি নিজশক্তস্বারেণ দত্ত্য॥২ ৪৪।। সমাক্ সুবতি জলানি বছলছিত্রতয়েতি সংসুবং তাদৃশক্ত্রদা জলেন শঙ্গোদেবীরিতি মজেণ সংস্থাপ্য তাং প্রতিমাং প্রণমেশ ॥ ই৪৫॥ অর্চিতেঃ গল্পাক্ষতাদিভিঃ পুলিতৈঃ পরেঃ আকল- विस्मिनिटिख्य प्रस्तु देशः निम्नित् । नम्जरमाशेहिक। नि प्रस्ते देशः भेरतविश्मिनिटिख्य प्रस्तु स्थानि निक्नित् स्थानि भीरि । ज्ञानिक स्थानिक स्थानिक

चर्थ वद्धाम। भनिविधिः ॥ अভिवेद्धि वद्ध दि चार्ट भिविधाभा । मर्लु ११- वीठः भक्षारेम क्ष्मारे क्ष्मारे

. অথ স্ততি বলিদানাদি, ।। অথাচার্য্য: কুশাসীন: সংস্থাদার্য়ন্ কুশান্। দৈবং পুরুষসূত্তন প্রত্যাচৎ প্রবং পঠন্। পঞ্চবর্ণকধান্যান্নৎ পাত্রে সংস্থাপ্য বৈণবে। তেন নীরাজয়েদেবং বিগতাচারবিপ্রতঃ ।। ২৫৩ ।। তদ্ধন্তেন বলিং দদ্যাহ রুত্রান্য চ চত্ত্রত্রপথে। নমোরুদ্রায়েতি মন্ত্রৎ সম্ভবঞ্চ স্বয়ং জপেৎ ।। ২৫৪ ।। ব্রহ্মাণ্য প্রতিষ্ঠাপ্য তন্মন্ত্রেণ তদাদিকাঃ। উপচারেঃ ষোড্শভির্যজন্ত্রলদেবতাঃ।। ২৫৫ ।।

পঞ্চবর্ষধান্যনিষ্পারং ক্ষিপ্রোদনং বৈণবে পাত্রে নিধায় তেনারেন দেবং নিরাচারবিপ্রহস্তেন নীরাজয়ে ।। ২৫৩।। নৃধ্বং প্রণবদহিতং তথাহি॥ ও সমোরুতায় নর্বাভূতামিপতয়ে দীপ্ত-শূলধরায়োমাদয়িতায় বিশামিপতয়ে রুত্রায় বৈ নমঃ শূবমগর্হিতং কর্মাস্ত স্থাহেতি॥ ২৫৪।। তথ্যস্তেণ ব্রহ্মপ্রতিষ্ঠামস্ত্রেণ ব্রহ্মপ্রজানমিত্যাদিন। ব্রহ্মাণং প্রতিষ্ঠাপ্য॥২৫৫।। তলিক্সস্ত্রতঃ

तिस् धाव ने जा मिल्य देना क कन मिल क्षि कि से खुरा मिलिय ।। २८७। एड विश्व दे क्षि कि विश्व दे कि स्व कि कि स्व कि सि कि कि सि कि

যজ্ঞোপৰীতং চ অভিবক্তেতানেনৈৰ মন্ত্ৰেণ দক্ত্বা॥২৫১॥ নিতা শৰ্করা মধাদিভির্দেবস্য ত্বেতি মন্ত্রেণ পুনরভাঞ্জয়েৎ॥২৫২॥

স্থাপ্তিবেলথাবাহ্যার্চারাং ওলিজনজভঃ। ক্রিকারাং নশুলপত ভালচাম্পবেশ-রেং ।। ২৫৬ ।। সুপ্রতিষ্ঠোভবেভ্যেতাং সংপ্রতিষ্ঠাপ্য তত্র চ। পুনঃ সমর্চয়েলাকা দ্যুপচারেজ পঞ্চভিঃ ।। ২৫৭ ।। কুজাভিকনথাগত্য ভিলাজ্যৈ কুল্বাং কৃতী । তদেবতানাং প্রত্যেকং নামমজৈর্দশাস্ত্তীঃ ।। ২৫৮ ।।

व्याधिनानविधिः ॥ व्याधिकविधिनाः भागाताः जान्नोः नह । क्रिन् लिख्यास्त्र । क्रिन् ल्यास्त्र निवास्त्र । क्रिन् ल्यास्त्र निवास्त्र निवास्त्र । क्रिन् ल्यास्त्र निवास्त्र । स्वास्त्र निवास्त्र निवास्त्र निवास्त्र । स्वास्त्र निवास्त्र निवास्त्र । स्वास्त्र । स्वास्त्र निवास्त्र निवास्त्र । स्वास्त्र निवास्त्र निवास्त्र । स्वास्त्र निवास्त्र । स्वास्त्र निवास्त्र । स्वास्त्र निवास्त्र । स्वास्त्र निवास्त्र निवास्त्र निवास्त्र । स्वास्त्र निवास्त्र निवास्त्र निवास्त्र । स्वास्त्र निवास्त्र निवास्त्र । स्वास्त्र निवास्त्र निवास्त्र निवास्त निवास्त्र । स्वास्त्र निवास्त्र निवा

चर्थः शामनिविधिः ।। चक्रालामप्रकारम मजूरिके जन्माण्याकः। मह्यानिन वाम्रारिम्राक्त्यम्थार्थात्रक्षकः ॥ २७२ ॥ उद्यो शृक्ष्यमृत्क्रानाव्यवनादाप्रात्म ह । मण्डवीरिणा कुरश्चविधिवक्षाराष्ट्रकक्षरः ॥ ठकम्हारकानाचिष्यार्थः कुल्यासाममञ्जः ।

স্থাপ্যদেবলিক্সান্ত্রেণ স্থাপ্যদেবমর্চায়াং প্রতিমায়াসাবাছ। ২৫৬।। তত্রক্মি কায়াং॥ ২৫৭।। তার্লাং নামমটক্রঃ ওঁত্রন্ধাণে নমইত্যাদিকপৈঃ প্রত্যেকং তিলাক্তি দশান্ত তীর্জ্ব , হুরাং॥ ২৫৮।।

তত্ত্বং যথাবিধীতার্থং। ততৈবং।। পুরুষাত্মনে নমং প্রাণাত্মনে নম ইতি শির্দি। প্রকৃতিভত্ত্বায় নমং বুদ্ধিতত্ত্বায় নমং অংকরেতত্ত্বায় নমং মনস্তত্ত্বায় নম ইতি ক্লি। তথা শব্দতত্ত্বায় নমইতি শির্দি। স্পর্শতত্ত্বায় নম ইতি ত্তি। ৰূপতত্ত্বায় নমইতি ক্লি। এবং রস গল্প প্রোত্তত্বক চকু র্জিন্ত্বা ত্বাণ বারু পাণি পাদ পায় পৃষ্ঠ পূথিবাপ্ তেলো বায়াকাশাখানি তত্ত্বানি বস্তি পাদ কর্ম ত্বক্ চকু র্জিন্ত্বা ত্বাণ শিখান্ত যথাসন্তবং বিনাস্য দেহে বিনাসেগালিত।। ২৫১।। পুরুষস্ত্তান্যাসকৈবং। অস্য প্রুষ্ঠ স্কুর্বাদেবতা দেবস্যাক্ষ্ঠানে বিনিয়োগইতি সহস্পীর্বাদি ক্র্ত্বা। আদ্যুস্ক্রমগ্রকরয়োঃ উপরিত্তনং আস্ক্রান্ত তত্ত্পরিত্তনং কট্যোঃ সভ্যাদ্যান্তিস্থ নাভিক্রদর্কঠের। তত্ত্বরিত্তনম্প্রত্বং বান্ত্বোস্তত্ত্বপরিত্তনমক্ষ্ণঃ অস্ক্যাম্চং মন্তবে নালেকিতি।। ২৬০।। মণ্ডলশন্ত্রোরস্তরোলে মধ্যে কৈন্তির গন্তব্যমিত্যেবং নিবেধং কৃত্বা। বিধিবদিতি ক্রীরোদনং ব্রহ্মণে হ্বারম্বকাভিধারিত্যক্রিলায়। আল্যোদনমগ্রে নালার্লং বনায়। ক্রম্ব্রীহ্রমং পুনঃ নিস্কৃতিরে। নবনীতোদনং বরুণায়।। ম্বেন্ট্রনং বায়বে। বৈপ্রয়ন্তবং সোমার। গামীশার বলিং দ্বাদিতি জ্বেরং।। ২৬১।।

উভিষ্ঠ ত্রহ্মণস্পতে ইত্যনেন মৃত্ত্রেব॥২৬২॥ নামমন্ত্রেণ দশাছতীঃ স্থাপ্যদেবমন্ত্রেণ চ ব্তেন দশাছতীর্জ্ ছয়াৎ। চক্লশেবেণ মন্ত্রতোহ্বদানানি ছত্বা। তহ্মপ্রশায়ং। অগ্নয়ে স্বাহা শোমায় স্বাহা ধ্যব্তরায় কুইছা অসুমতৈর প্রশাপতায়ে বিশ্বেড্যোদেবেড্যাঃ ওঁ ভূডুবিঃ স্থঃ শগ্নয়ে প্রণবেশাপ প্রাদৃত্তিং বিচন্ত। তং। স্পৃত্যীয়ু দাভিসতেবু ইইছবৈধীতি বিজ্ঞাপেছ। मणाञ्जीः ज्ञानाः त्विमञ्जलाङ्गिया मणा। व्यवमानानि छ्त्रा ह हक्राव्यय ह अञ्चलः। পূৰ্ণাহুতিক জুত্য়াৎ তন্মজন্মতোবুধা।। ২৬১।। ভতোদক্বা ধেনুমুখ্যাং শক্তা-চার্য্যার मिक्काश स्मारतीतिक मुर्थः विकाश स्वर कूर्या कितामस्य ॥ २७८॥ अव-ধীরিতি মল্রেণ ততোদেবায় দশ্যেৎ। সর্কৌষধীপুষ্পাসূত্রকানি বিবিধানি চ। ভাশুপাত্তে২থ মূলেন শতবারাভিমন্ত্রিত । শান্ত্যমু গুরুরাদার সিঞ্চেদেবস্য নস্তকে।২৬৫। বিশ্বতশক্ষুরিভ্যেতমুপস্থাপ্য প্রকল্পয়েৎ। দেবাধোধ্যানভাত্রক শিলাং র হ্রাফকানিবতাং। ২৬৬।। অথ দর্ভেযুপবিক্টোধৃতদর্ভ: কতাঞ্জালঃ। ব্রহ্মণে नम हेलामि मञ्चरमञ्चनदः अप्तर । ততোर्खः পृतिकर कूछः विकिम्दिनियानः। অভার্চা যজমানসা পুরতঃ স্থাপায়ে ক্রুকঃ। হতং কুষ্তমুথে নাস্য বারানটৌ চ বিংশভিং। ভত্তোরমভিমন্ত্রাঝিং স্তার্থান্যাবাহয়েত্তভঃ। ভেনাভিষিঞ্চেদ্বাগ্রে যক্ষমানং সম-র্জিলে। ইমাআপঃ শিবতমা ইত্যাদিমনুভিগুরিঃ। সমুহূর্ত্তে ক্তন্যাশোজপু। মূল-ঘনুং ভতঃ। ভগবন্ প্রতিভিঙে ভি মনসুচ্চারয়ন্ মুহং।। ২৬१।। কুসুমাঞ্লিনা शोखवामामकारवायकः। (स्वर मृत्को श्राक्तिकाना जार ह म्ल्यू खे बर्लम्हः । अवा-দৈ।রিতি তং চোপতিঠেৎ পুরুষসূক্ততঃ। যঞ্চানঃ পভার্ঘ্যাহর বিভরেৎ কুসুমা-ঞ্জিং। তত্ৰমন্ত্ৰ:। স্বাগতং দেব দেবেশ মন্তাগ্যান্ত্ৰিহাগতঃ । প্ৰাক্তস্ব সদৃষ্ট্ৰ মাং বালবৎ প্রতিপালয়েভি॥ ২৬৮ ॥ শান্তিকুম্ভাম্ভদা দেবং গুরু: পঞ্চামূতৈ विशि । अधिविष्ठः नू। भरत्र इः व्रञ्जभू आकू भाष्युना। मिक्तिनानन्ति का निमरत्वन कुनुमा-পরিভাব্যাগতং দেবং ন্যাদেৎ প্রতিক্লতৌ ভতঃ ॥ ২৬৯ ॥

বিষ্টকতে সাহেতি। ত্যাপ্রবয়তঃ পূর্নান্ততিহবনমন্ত্রাভাগে সপ্ততে অথ্যে পুনস্থানিত্যেতাভাগি বুধইতি তত্তৎপ্রকারং তত্ত্যপ্রাংশ জানাতীতি ভিছিশেষলিখনপরিশ্রমেণ কিমিতি ভাবঃ। এবং স্ক্তির বান্ধকার । ২৬৩।। দিনোদয়ে স্থা্য উদিতে সতি। ২৬৪।। অথানস্তরং তামুপাত্রে স্থাাও। ২৬৫।। এবং দেবমুপস্থার। বজুমৌক্তিক বৈদুর্যাশপ্রকৃতিকপুসারাগেক্রনীলমহানীতের রুল্লাইকোপেতাং ক্রন্ধানাং ধ্যানেন দেবস্যাধন্তাৎ প্রকণ্পয়েও। ২৬৬।। ও জাকবে নিমা বিশ্ববে নমোক্রার নমঃ। এবং ইক্রার অগ্রের যমার নির্মাত্রের বরুণার বারবে সোমার স্থানার। বস্তুভ্যােকতের আদিত্যেত্যঃ অধিভাাং মরুদ্ভাঃ কুবেরার পঙ্গাদিত্যো মহানদীভাা ব্রহ্মেত্যা ক্রেভ্যা প্রার্থিকার প্রত্যান্ত্র ক্রেণার বিশ্বভ্যােদবেজ্যঃ ব্রন্থান নার বিশ্বভ্যােদবেজ্যঃ ব্রন্থান মইতি মন্ত্রং ক্রপেও।। অভার্চ্য ক্রেমের গল্পাক্রার বিশ্বভ্যােদবেজ্যঃ ব্রন্থান মইতি মন্ত্রং ক্রপেও।। অভার্চ্য ক্রেমের গল্পাক্রার নির্মাত্র ভক্তাা স্তবীত লাহ্রুবন্তং ক্রিবার রিভ্যাং ক্রেম্বর্যার গ্রিবিক্রির ভক্তাা স্থবীত লাহ্রুবন্তং নির্মান্ত্রপত্ত নির্ম্ভাহের ক্র্মান্ত্রাপ্রকার বিশ্বভার বিদ্যান্ত্র বিদ্যান্ত্র বিদ্যান্ত্র বিদ্যান্ত্র মার্থ বস্তুভার বিদ্যান্ত্র বিদ্যান্ত্র বিদ্যান্ত্র মার্থ বিদ্যান্ত্র বিদ্যান্ত্র মার্থান ক্রেণ ক্র্ম্ব্রাঞ্জলাবার্যতং পরিভাব্য প্রতিক্রেত্র শ্রীমুজ্যে বিদ্যানের বার স্থাভার ক্রেক্রেণ ক্রম্ব্রাঞ্জলাবার্যতং পরিভাব্য প্রতিক্রেত্র শ্রীমুজ্যের বিদ্যানের বিদ্যান্ত্র মুল্জা মুখ্যান্তর্য বিদ্যানের বার ভির্তিক। মুখ্যান্ত্র বিদ্যানের বিদ্যানের ভির্তিক। মুখ্যান্ত্র বিদ্যানের বিদ্যানির তেলের ক্রিয়ানার প্রতিক্রার প্রতিক্র বিদ্যানির বিদ্যানির বিদ্যানির বিদ্যানির বিদ্যানির বিদ্যানির প্রতিক্র বিদ্যানির প্রতিক্র ক্রিয়ার প্রতিক্রানার প্রতিক্র বিদ্যানির বিদ্যানি

শ্বমন্ত্রেং পরীবার দেবভাঃ পূর্ববন্ধঃ। প্রতিষ্ঠাপয়েদর্গাসু শ্রীমৃত্রের্ণ বা বিভিন্তরেং । ২৭০ ॥ সকলীকৃত্য দেবং চ মূলমক্রেনাবর্ত্ত। উপচারেঃ বোড়শভিঃ পরিবারা দ্বিতং ভতঃ। অফৌ বরশতং মূলমক্রমাবর্ত্ত। শক্তিতঃ। প্রণমান দশুবদ্দেবং বাহ্মান বৃত্তি বাচয়েং ॥২৭১ ॥ অথাচার্য্যাদিসংমাননং। যজমানস্ততোদদ্যাদারিয়ায় জুদ ক্ষিণাং। গবাং শতং তদর্কং বা গামেকাং বাত্যশক্তিতঃ। দদ্যান্ত দর্জুমূত্বিগ্রের্ডাঙ্গাপিভাশ্চ তদর্ক্তিং। অন্যেভ্যশ্চ যথাশক্তি বিবিধং দাননাচ্ব্রেং ॥২৭২ ॥ ততো গুরুত্ব উমনাং সর্বাকামিতলক্রেরে। সুক্ষণে যজমানাক্ষে শ্রীমৃত্তিতাং সমর্পরেং ॥২৭২ ॥ ততো গুরুত্ব উমনাং সর্বাকামিতলক্রেরে। সুক্ষণে যজমানাক্ষে শ্রীমৃত্তিতাং সমর্পরেং ॥২৭১ ॥ ততঃ সর্বাং পতাকাদি মশুপন্থং সমর্পরেং । আচার্যায়ন্ব্রুত্ব শক্তা বিশেশত ভোজয়েং ।।

वश् প্রতিষ্ঠা ফলং।। এবং কুর্ধন্ প্রতিষ্ঠাঞ্চ বজানাং ফলমাপু, য়াৎ। দীর্ঘারুলর লক্ষাকো বনেং স্থানি কিং সুখা। মর্ত্যালাকে চ জায়েত সর্বকামসমূদ্ধিনান্। ভতাহক্ষমপুথে লোকে বৈকুঠে বসতে সদা। অথৈকাধুর মর্গেণ চলার্চাস্থাপনে বিধিঃ। সংক্ষিপ্তো লিখ্যতে বৌধায়নাদু,ক্তানুসারতঃ।।অথিকাধুর প্রতিষ্ঠাবিধিঃ।। কুণ্ডমণ্ডপরেদানাং নাত্রাপেক্ষান্তি ভাদুশা। যজমানং পুণ্যকালে পুণ্যদেশে হৃত্-ক্রেঃ। স্বন্তিবাচনপূর্বস্ত নান্দীআদ্ধিং সমাচরেং। আচার্য্যাকার বৃণুষাং নর্ত্তিগাদীংশ্চ কাংশ্চন। বিদ্ধানে সর্বমাচার্য্যে ইত্যেকাধুরিকোবিধিঃ।। ২৭৪।। আচার্যোয়সমানানুক্তয়া সংকল্পনাচরেং। স্থিলেহ্রিং প্রতিষ্ঠাপ্য ব্রীহিণা অপয়ে-করুং। আদ্যভাগান্তমাচার্য্যামুর্তিং বারাইকং মুদা। সাপয়েং পূর্ববং পঞ্চগবৈ,ঃ পঞ্চামুক্তরিপ। অইভিশ্চাভিষিক্ষেতামাপোহিইেতি মন্ততঃ। কুট্ডেং সদুর্বাসিদ্ধার্ম পঞ্চপল্লবভায়কৈঃ। ১৭৫।। অভ্যক্র্যা বস্ত্রগল্লাদ্যইদিক্ষু সগল্লা-ক্রিক্যান্যধ্যস্থ ভদ্রপীঠে নিবেশয়েং।। ২৭৬।। তৎপ্রাগাদ্যইদিক্ষু সগল্লা-

কতপল্লবান্। কুন্তান্ জলভূতার্যস্থোপান্ প্রজ্বালয়েতথা ।। ২৭৭।। নৈত্তে চ প্রাগুদুখাল্য মধুনাক্তাংপ্রদায় চ। চিত্রারবলিনাত্মেউদেবমাহাত্মকং মরেৎ।।২৭৮।।

श्रिवाद्यात्मव काः नर्काः विविद्य त्य ।। २१०।। मिकिकः यथामिकि प्रियम् पर्वित श्रिवाद्य ।। २१०।। प्रिक्षणात्मव विश्वि ग्रिवामिकि । अकामिकिके वि श्रिक्षणात्म । विश्वि श्रिक्षणात्म । २१०।। प्रिक्षणात्म । १९०।। काः श्रिक्षणात्म । १९०।। काः श्रिक्षणात्म अपूर्वित कामिकि ।। १९०।। काम्मी श्रिक्षणात्म । १९०।। काम्मी श्रिक्षणात्म ।। १९०।। काम्मी काम्

ভতা পুরুবস্তেন পরিপূজাঙ্গদেবতাঃ। প্রত্যেকং জুত্যাং স্থিং শতর সমিধা पि जिः ॥ २१२॥ . अरेकके जन्य (कामास्य म्यू (भारत्ववः व शृक्षवः । किर्माष्ट्रिः-সংঘাত। ন্যন্তেইয়ু তরতো ঘটে।। ২৮০।। ততঃ পূর্ণাছতিং হুত্বা হোমদোৰঃ সমাপয়ে । ততঃ হৃতাক্ষ্যাসঃ সন্দেব ছদি বিচিত্য়ে । মূলমুচারয়ন্ত্র দেবৎ হাৎ হঞ্জ সুক্ষণে । কুসুমেন প্রতিষ্ঠাপ; শ্রীমূর্টো স্থাপায়েদথ ।। ধ্রুসুকৈঃ প্রতিষ্ঠাপ্য সূপ্রতিষ্ঠোভবেতি তথা প্রণবেন নিরুধোষ্ট সংপ্রার্থ্য ভতিমাচ-(तर ।। २४)। व्यात्यानककुछन्याचिमखनपूत्रः नतः । मृत्ननाहमनोक्षास्त्रनाममानेन् नमर्भाष्ट्रया २৮६॥ न्यानाथ क्रब्नानः एवर शक्षामृत्यः नूषरा मरशायकन সোদেন বিশুকায়োদকেন চ:। শখার্পিতেন সংস্থাপ্য তথ্যসৈর্বারনপ্তকং । বস্ত্রা-লক্ষরেগজাদীনুপঢ়ারান্ প্রকল্পায়ে । নৈবেদ্যানি বিচিত্রাণি পুরুষাছার সংমিতং। স্মৃতং শক্রোপেতং পায়স্থ বা নিবেদয়েও । ৷ ২০০ ৷৷ মহান্রিজনং কৃত্বা **প্রকিপ**্য कूम्माञ्जलिः। আচার্যোযজমানাত্যः শক্ত্যা বন্দেত দণ্ডবং ।। ২৮৪।। एक् भूण्णा-জলিং কৃষা ন্যাসং প্রার্থ্যাপ্যনেকশং। পুনং পুসাঞ্জলিং দত্ত্ব। স্বিন্ধ্যাসং সমা-हरत्र ।। २৮৫ ।। त्विशार्थ इ कलरेमत्रक्तिः त्महनमञ्ज्ञः। कूक्ते क यक्षमानमऽ विद्यारभरकारकिरयहनः ॥ २৮७॥ काहार्यतात्र करकाममतान्यक्रमानस् मिक्नाः। বস্ত্রালস্কার গোভূমিম্বর্গাল্যাং নিজশক্তিতঃ। যদি বা যদ্মানঃ স্যাদাচার্য্যঃ স্বয়মে-ৰ সং। তদাচাচাৰ্য,বরণৎ দক্ষিণা দানসন্তি না। ২৮৭।। যজমানঃ সমং বিধৈঃ পুণ্যাহৎবাচঃরৎ ম্বরং। অভিষেকঞ্চ কুর্র্বাত তাংস্ত সংপূজ্য ভোজায়েদিভি ।। ২৮৮॥ অথৈতৎ প্রতিষ্ঠা ফলং।। প্রতিষ্ঠানেত্রে। ইত্যানেন বিধানেন প্রতিষ্ঠাং বিদ-ধাতি যং। ভস্য পুণ্যক্ষাবান্তিঃ সুখং চাত্যন্তিকং ক্রমাৎ ।। ২৮১ ।। অথ বৈত্ত-গে পুনঃ সংস্থারঃ। কদাচিচ্চ কথিধিচেৎ কিঞ্চিৎ বৈ ওণ্যমাপতেও। সংস্কারাদি

সমিধাদিভিঃ সমিধাজ্য চরুতিলৈঃ । ২৭৯॥ অগ্নেরু তরতোন্যন্তে পুরাস্থাপিতে আত্তি সংপাতং পূর্ববদেব নিঃক্ষিপেও॥ ২৮০॥ ইন্টং নিজবাঞ্জিতং সমাক্ প্রার্থা পুক্বস্ক্তাদিনা স্থবীত॥ ২৮১॥ আসনং আদিশকেন আবাহনপাদার্ঘামধুপার্গাচমনীয়ানি ॥ ২৮২॥ তমান্তৈরিতি ইমা আপাং শিবতমাইতি সংপাতকলসোদকেন তমূলমন্ত্রেণ চ শুল্ধান্মোদকেন বারসপ্তকং সপ্তক্ত্বঃ সমাপ্য ॥ ২৮৩॥ প্রক্রিপা দেবসা পাদয়োর্বিরীর্যা। ২৮৪॥ অনেকশং বছধা। শর্ণাগতোংয়মশ্য বজ্ঞমানশ্য কুলে সর্বাদ সাম্প্রাহৃতিভবিত্যাদিকং প্রার্থ্য। অপিশক্ষঃ সমুস্তয়ে। ন্যাসং স্থাদিত্যনেন পূর্বান্ত দেবে ন্যাসং ক্রুভি জ্রেয়ং ॥ ২৮৫॥ বিপ্রোপেতঃ ব্যান্তি সহিতঃ ॥ ২৮৫॥ বিপ্রোপেতঃ ব্যান্তি গাহিতঃ ॥ ২৮৫॥ বর্ষা ক্রিলি সংক্ষিপ্তমেব চ শ্রীমুর্ত্তি প্রতিষ্ঠাবিধিং লিখতি যদিবেতি-জাতাং। ২৮৭। আনির্বারণ তদ্দক্ষিণা দানব্যতিরেকেণ পর্প্রক্ ক্রাং পূর্বদেব সর্বাং কুর্মাণিতি সমাসেন লিখতি যক্ষমান ইতি॥ ২৮৮॥

ক্রমাদিতি ক্রমেণ যথেক্ষং স্বর্গাদি ভোগানস্তরং আতান্তিকং স্থাং জীবৈকুঠপ্রাপ্তিলক্ষণং ভরতীভার্থঃ॥২৮৯॥ বহ্নিনাচ দূবিতা দক্ষেত্যর্থঃ। এবং দুবিতেত্যস্য সমাসগতস্যাকর্ম আর্থ্যঃ

পूनः कूर्य्या र नष्ट्रां त्वां कामूनाव छः। इत्रभीर्य शक्षवात्व ।। हानि छो ९ भाषि छा-হাচর্চা কেনচিৎ পাপ কর্মণা।। চণ্ডাল মদ্য সংস্পর্শ দূষিতা বছিনা চ যা। স্বয়ং বা পতিতা स्नोर्ग नमीरवर्गामि भाषिणा। अभूग सन मरम्भू की विश्वक्र छ सृविठा ।।२৯०।। काला पृषिकारमय शामरक्षियाम कारा भूका भीते भविका का यमनामि क-कारुशा जिल्हा याबाक विश्विना श्रामात्म मर्शनित्वभाष्त्र ।। २৯>।। অভिक्रीनीर তथा वाक्राः मात्रवीः रेमनजार ज्या । शतिष्ठाका नात्रमनार शृःसीक विधिना-গুরু: १ ২৯২ ।। সংধার বিধিনা ভত্ত ভত্তান্ সংস্ত্যদেশিক:। সহসুং নারসিংছেন ছত্তা ভামুদ্ধরে দুধং ৷৷ ২১৩ ৷৷ ব্যভং যোজয়িছা ভ মন্ত্রেণেৎপাট্য দেশিকঃ ৷ দারবীন্দা পরেছিছ্লে দৈলকাৎ প্রক্রিপেজ্ঞলে। ধাতুকাৎ রত্নকাৎ বালি প্রক্রিকরো-লরে। অগাধে চার্ন্তেরে বা কিপেরদ্যাৎ মহাবনে ।। ২৯৪ ।। যানমারোপ্য জীর্ণা র্চাং ছাদ্য বস্ত্রাদিনা গুরুঃ। শঞ্জপুন্দুভিনির্ঘোষেগ্য তবাদিত্রনিঃ হনেঃ। নীদ্বাগাধজলং রম্যং ভাগীরখ্যাৎ মহার্ণবে। বিষুক্সেনাত্মবীজেন প্রক্রিপেত্রাৎ তদা গুরুঃ ॥২৯৫॥ त्रज्ञानि कि छान। मात्र सन्न प्रमाख् मिक्गाः। स्थात्वा मण वा शक सर्वद्यामान -क्राः। ১৯৬। জীর্ণোদারে প্রশীতব্যা গুরবে বিষ্ণুতৃষ্টয়ে। ভোজনীয়া বিষ্ণুভক্তা দেরমন্নমবারিত১। ১৯৭। ত্রিরাত্রমুৎসবং কার্য্যং পঞ্চবা সপ্তবা তথা। বলিশ্চ বিধিনা দেয়োষথোক্তেন সুরোভম। ততোনিবেশয়েদন্যাং প্রতিমাংলক্ষণান্মিতাং। তৎক্ষণাদেব রাজেন্দু তস্য দোষপ্রশান্তরে ।। ২৯৮ ।। সৎপত্তির্বা বিপত্তির্বা নোপে-ক্ষাং তত্র কারয়েছ। অপাদ্য পিণ্ডিকাং পূর্বামন্যাং তত্র নিবেশয়েছ। যদুব্যা বং প্রমাণা বা যা মূর্জিশ্চোদ্ভা হরে:। তদ্ব্যা তৎ প্রমাণাচ সা মূর্জিন্ত কীর্জ্যতে। য়ৎ প্রমাণ্য ঘদাকার্থ যক্ষরং বিশ্বমুদ্ধরেও। তৎপ্রমাণ্থ ভদাকারং ভক্ষরং তত্র বিন্য-নে । বিহার পিশুকাং পূর্বাং ভদিনেচাপরং ন্যাসে। দ্বিতীয়েবা ভূতীয়ে ৰা দিবসে স্থাপয়েদ্ধরিং। অতউর্দ্ধং ভবেদোষো বিধিনাপি নিৰেশিতে।। ২৯৯।। व्यत्नरेनव विश्वारनन (नश्वामी९ क विमर्द्धारा व्यन्तार अकल्शासुकु ७९ अयानार

দদোব:। সংস্পৃত্তৈতি পাঠোৱা। জীর্রা সতী স্বরং পতিতা বদা জীর্রাচেতি পৃথকদূবণং চির-কালেন জাতক্ষতাদিভির্কৈগুণাদি প্রাপ্তোতার্ব:॥২৯০॥ এবং নবধা দূঘিভাং অচলাং স্থির প্রতিমাং বিধিনা উদ্ধৃতাং সভীং স্থাপয়েছ।। কবং প্রকং পীঠং পিণ্ডিকাং অন্যদপি বৎ পীঠং গতং প্রাপ্তং তদপি পরিত্যক্ষ্য অন্য স্থানে স্থাপয়েদিতার্থ:॥২৯১॥ তত্র চাত্যস্তজীর্ণাদিকাং, বিহায় তৎপরিবর্জেনান্যাং স্থাপয়েজিতাহ অভিজীর্ণামিতি॥২৯১॥ উদ্ধৃতামিত্যুক্তং তৎপ্রকার মেবাছ সংহারেতি। তত্বান্ পূর্বাং প্রতিমায়াং ন্যন্তানি তত্বানি॥২৯৩॥ নদ্যাদ্যভাবতো মহাবনে বা কিপেৎ॥২৯৪॥ তৎপ্রকারমের বিশিব্যাহ বানমিতি দ্যালাং।।২৯৫॥ কিপ্তানি পিণ্ডিকাধং পূর্বাং নাস্তানি। ব্রাক্ষণেভ্যোদক্ষিণাং দৃদ্যাৎ॥২৯৬॥ অবারিতং বধাস্যাৎ বোগ্যাযোগ্যাদ্য বিহারেণ সর্বেভ্যেব দেয় মিত্যর্থ:॥২৯৭॥ তস্য দৈবাক্তাভন্য পূর্ব্বাক্তন্য দেখিল্য প্রদাস্তরে স্থাতি বা॥২৯৮॥ দার্চ্যার্ব্যার্ম্বর্লার বিশ্বার্য বিদ্যাত্র বা ব্যাহ্য বিহার ত্রিয়াত বা।।২৯৮॥ দার্চ্যার্ব্যার্ম্বর্লার বিশ্বার্যারের বিশ্বার্যার বিহা শ্রীমূর্ত্তিং॥২৯৯॥ কটং

তদাङ्गि । किश ।। क्योग्राः जूकाशाः जूनयोगाः जू अभागकः। अकृषेः आतः नि १ इर वा नक्षर छ इर कर प्रमुधः ॥ ७०० ॥ शिक छात्रार छथा सूरमी यज कूजाशि वा ख्या। कूर्यतारयू व क्रांड क्रका ि अगृक्षायर। इत्यां क क्रांचा क्रू करनर সাৰ্দ্ধাযুত্বরং। দ্বিহত্তমাত্র পাত্ত প্রযাদাক্ষদি জায়তে। তদা লক্ষং জাপে করে। रेवककानिश शृक्षस्य । शूक्ष अभाग शास्त्र वाका जू अविमा यहा। शूक्व र मर्क कर्मानि कूर्यामोद्याव नरमन्नः। यावसञ्जग्र स्वश्व कृष्ठः चन्। क्ष्यूर्यकः। चास्रारेखः क oिलार्हामः कार्यान् नामिश्वरण। उक्तश्वराण। चिख्य कृष्टिक मास करके-মানবিবজ্জিতে। যাগহীনে পশু স্পৃত্ত পতিতে দুউভূমিষু। অন্যৰ্জাতিতেতৈৰ পতিত স্পর্শ দূ বিতে। দশবেতেযু নো চক্রুঃ সমিধানং দিবৌকসং। ইভি সর্বগভো-ৰিফু: পরিভাষ, ঞ্চকার হ।।৩০১। তত্রচ **শৈবাগমে। থণ্ডিভা ক্রুটিভা ভৱা যশা**-मर्का ভয়াবহা। ভস্মাৎ সমুদ্ধরেত্রাঞ্চ পূর্ব্বোক্ত বিধিনা বুধ: 11 ৩·২ 11 দেবঙা প্রতিমা পূজা ষভত্তৈরেব চোদিতৈঃ। বিজ্ঞাপ্য দেবভাং মন্ত্রী পূর্ববং মন্ত্রমৃচ্যু মৃ। यशनामुक्त द्रमर्ठाः किञ्च जार वृथ्छा दिना। ठाल द्रिष्टि लिश्चि ना कर महारे अर्थन বৰুৱৈঃ। চালিভোৎ পাটিভা বার্চা কেনচিৎ পাপকারিণা। স্থান পভিতা ভত্রে নিত্রণা লকণানিতা। মন্ত্রন্ত প্রদেশকঃ প্রতিষ্ঠা তন্ত্রনির্মলঃ। স্থাপয়েস্তাং প্রযত্নে পূর্ববং বিধিনা গুরুঃ। অর্চা সমুদ্তা যত্র নির্ব্য লক্ষণান্থিতা। তত্র তাং স্থাপয়েন্দ্রতী পূর্ব্বৰ ব্রহ্মণঃ শিলা। সংশোধ্যমন্ত্র সংক্ষারৈ: কৃত্বাচৈব। ধিবাসনং। পূর্বে ক্রেন বিধানেন স্থাপয়েচ্ছাক্রবিত্তম:।। ৩০৩।। থণ্ডিতাং ক্র্টিতাং জীর্ণা-यवलीणक्ष विद्वना । श्राष्ट्रियाः वड्डार्याम्बङ्गाष्ट्रयाः रेश्वलंकरेवर्यु छाः॥ ७०८॥ विधिवः পাটিতা মর্জাং দারজাং শৈলজাদিকাং। নিকিপেদারজামধৌতথানগামপু নিঃ কিপেং।। ৩০৫।।। যদ্রপ। যংপ্রমাণা চ যদ্মিন্নর্জা সমুদ্ধা। তদ্রপাং তৎ প্রমাণাৎ ठ खिन्नकाँ नित्नादा । श्रविमा यम्। त्रतमानुमात्त्व मःश्रकोर्डिका । जमा त्रतमा े তৈর্ম জৈ রক্ষাং সংস্থাপয়ে বুধঃ ॥ ৩০৬।। একা হপূ জাবিহতে কুর্য্যা দ্বিগুণমর্চনং। তিরাতে তু মহাপূজাৎ সংশোক্ষণমতঃ পরং ।। ৩০१।। মাসাদূর্ক্মনেকাহৎ পূজা

বীজং।। ৩০০।। খণ্ডিতে জাতকতে ক্টিতে ভগ্নাকে দক্ষে বৰ্নান্তরাপাদকদাহদ্যিতে একে নিজ স্নাচলিতে পতিতে বা মানেন উক্ত পরিমাণেন বিবর্জিতে যাগহীনে অপ্রভিত্তিতে পূজারহিতে বা পশুস্পৃত্তি অস্পৃশ্যপশুস্পর্শদূষিতে। ছফ ভূমিষু অশুচি স্থানেষু কথঞ্চিৎ পতিতে। অন্যাদেব মস্ত্রেণার্চিতে এতেষু অধিষ্ঠানেষু! এডচে সভামেবেত্যাহ ইতীতি ।। ৩০১ ।। তত্ত কথং ব্যবহর্তবা মিতাপেক্ষাং শৈবাগমোক্তং লিখতি থণ্ডিতেত্যাদি ।। ৩০২ ।। অফা ছফ স্বানে পতিতাচ নির্বা গাচেওহি পুনঃ সংস্কার্যোত্যাহ চালিতেতি চান্ডভিঃ! লক্ষণান্তিতেত্যানেন মানহীনা ভ্যাজ্যেত্যাহ গাততে ।। ৩০৩ ।। তথা খণ্ডিতাদিকাপি হেরৈবেত্যাহ খণ্ডিতামিতি ।। ৩০৪ ।। বর্জনপ্রকারমেবাছ বিধিবদিতি। পাটিতাং উৎপাটিতাং সতীং। তদিখিঃ প্রীহয়শীর্ষ দেবোক্তো লিখিতএব ।। ৩০৫ ।। স্থাপনপ্রকারং চাছ ব্রুপেতি ।। ৩০৬ ।। সংপ্রোক্ষণং মহাস্নানং। ৩০৭ ৷৷ বাগহীনায়াং কুড্য

ষদি বিহনাতে। প্রতিঠিবেশতে কৈশ্চিং কৈশ্চিং সংপ্রোক্ষণক্রমঃ। ৩০৮।।
কিঞা সংপ্রাক্ষণন্ত দেবন্য দেবনু দাস্য পূর্ববং । অট পঞ্চ ক্রমেইণৰ স্থাপরিস্থা
ম্লান্তনা। গ্রাং রুনৈশ্চ সংসাপা দর্ভতোরৈবিশোধ্যা । প্রোক্ষরেং প্রোক্ষণী
ত্যের মুলেনাটোন্তর শেতং । ৩০৯ ।। সপুস্পং সকুসং পালিং ন্যা দেবস্য মন্তকে।
পঞ্চরার জপে মূল মন্টোন্তর শতোন্তরং। ততো মূলেন মূর্দ্ধাদি পীঠান্তং সংস্পৃদ্ধা
দিশ। পূঞ্জাঞ্চ মন্তবিং কুর্যাৎ দেবমাধান্ত্য পূর্ববং।। দেবীপুরাণে।। দেবার্চা নৈব
সংচাল্যা মূলুরাপি ভয়াবহা। ইমাদির্দোবদা বংস পূর্বাম্বদ্ধা হা স্থাপিতা ।। ৩১০ ।।
মহাদুর্ভিক্ষলনী মরকারিউদা ভবেং। কর্তুপাক্রম্য ভয়দা রিপু বংশবি
বর্দ্ধিনা ।। ৩১১ । পুনঃ সংক্ষার মাহান্ত্র্য তত্তিব ।। শ্বাণি দেবস্য প্রাসাদেটিয়ঃ
পুনঃ সংক্তোদ্ধি । আশাচ্যান্তে মহাম্বানা গুভপাপা মহাধিয়ঃ ॥ ৩১২ ॥
হয়শীর্ষে ।। যোদ্ধাণিং বিধিনা দেবং সংক্র্যান্মানবোভুরি। কলং দশগুলং তস্য
মূলামান্ত্যক্র সংশ্রম। মূলাক্ষশগুলং পুল্যং কূপাদেঃ পরিক্রীন্তিতং। প্রতিমাদে
শতগুণ জীর্ন সংক্রেণান্তবেং ।। ০১৩ ।। ইতি জ্ঞীগোপাল ভট্ডবলিখিতে জ্রীভাগ
বন্তিকিবিলানে প্রাতিঠিকোনামৈকোনবিংশোবিলাকঃ।। ১৯ ।।

মাহ মানাদিতি। এবং পশু স্পৃতীন্য মন্ত্রার্কি ভাষ্য জাদিস্পর্শ দূষিতায় মহায়ানমের জ্যেং। ৩০৮। সংপ্রোক্ষণ প্রকারমেরাই সংপ্রোক্ষণ নিতি চন্ত্রভি:। অই পঞ্চ ক্রমেণেতি আলে বিল্রীকান্য রান মৃত্তিকাজলেন পঞ্চবায়াদি জলেন বা ইত্যর্থ:॥ ৩০৯॥ পঞ্চ অবরা যত্র। অটোপ্তর শত মুস্তরণ রাণি যত্র। পঞ্চবারতোহকৌপ্তর শতবারপর্যান্ত জপে বর্থাশক্তি মূলমন্ত্রং জপেদিত্যর্থ:। মূর্দ্বাদিব্যর্থ:॥ অথ করেনি আলাক্রাদিব্যর্থ:॥ মহালানির্দ্বাদির ভিনানা: মহাধিরক্ষ: পরমবিবেকিন: স্কর্ণান্ত্রান পেক্ষণেন পরকীর্ত্তিগংরক্ষণেন চ পুণ্য বিশেষ সিংদ্ধ:॥ ৩১২॥ মূলাৎ প্রথম স্থাপকাৎ। ৩১৩॥

रेज्यनिविश्मः॥ १०॥ : • ।।।

## विविष्त्रिक कि विशामः।



## विका विवानः।

কথঞ্চন স্থাত যিনান্দুজরং সুকরং ভবেৎ। বিষ্তুতে বিপরীতং স্যাৎ প্রীচনতন্যং নমামি তং ।। ১।। শ্রীমূর্তিস্থাপনারৈক বেখাবিশ্যমপেক্ষ্যতে। অভোষ্নির নির্মাণবিধিরত বিলিখ্যতে।। ২।।

অথ জীভগবন্দিরনির্মাণং।। ভবেদ্বহুবিধং তক্ষ বেশ্ম ভত্র স্বশক্তিতঃ। শাস্ত্রানুসারতঃ কুর্য্যাদেকং বাসোচিতং প্রভোঃ।। ৩।।

অথ মন্দিরনির্মাণমাহাস্কাং ।। বামনপুরাণে ।। য: কারয়েয়ন্দিরং মাধ-বস্য পুণ্যান লোকান্ স জয়েছাশতান বৈ । দ্ব্রারামান্ পুল্যফলাভিপয়ান্ ভোগান্ ভূউজে কামতঃ স্বর্গমণ্ডঃ ।। ৪ ।। পিতামহস্য পুরতঃ কুলান্যফৌ চ হানি তু । ভারয়েদাঅনাসার্দ্ধং বিফোর্মন্দিরকারকঃ ।। ৫ ।। কিঞ্চ । পিতৃ-গাথা ।। অপিনঃ স্বকুলে কন্চিদ্বিফুভক্তো ভবিষ্যতি ৷ হরিমন্দিরকর্তা যোভবিষ্যতি শুচিব্রভঃ ।। ৬ ।। অগ্রিপুরাণে ।। যেধ্যায়ন্তি সদাব্দ্ধা করিষ্যামোহরে-গ্রং । তেষাং বিলীয়তে পাপং পূর্বজন্ম শতোদ্ধরং ।। ৭ ৷৷ কিঞ্চ ৷৷ সমভীতং

সিধ্যেৎ প্রাণাদিকোভজি বিলাদো যৎ প্রসাদতঃ। স মে প্রদানবদনঃ শ্রীটত নাঃ প্রদীদত্ত।।
শীভগবতো মন্দিরনির্মাণবিধিং লিথিয়ান্ তলিখনেচাত্মনাহশক্যেপি তস্য স্মরণ প্রভাবেণ
শক্তিং সংভাবয়ন্ তং প্রণমতি কথঞ্চনেতি। যেনকেনাপি প্রকারেণ স্মৃতেপি। ছয়রং কর্ত্মশক্যমপি। বিপরীতং স্করমপি ছয়রং স্যাৎ।। এবমন্ম ব্যতিরেকাভ্যাং স্মরণ প্রভাবোদ্শিতঃ।।।।
নম্ন বৈক্ষবানামাবশ্যক কর্মলিখনমেব প্রাক্ প্রতিজ্ঞাতং তৎ কিং প্রাসাদ লিখনেন তত্ত্ব লিখতি
শ্রিষ্তিরিতি। পূজার্থমবশ্যং শ্রীভগবন্ম ব্রিরপেক্ষ্যতে তদর্থং চাবশ্যং গৃহমেকং তদ্বোগ্যমপেক্ষ্যতে অভন্তরির্মাণ প্রকারলিখন মপ্যপ্রস্কু থেবেতি ভাবঃ।। ২।।

প্রাসাদমগুপাদিভেদেন বছবিধং তচ্চ ন শাস্ত্রোক্তব্যতিক্রমেণ কার্য্যমিতি লিখতি শাস্ত্রেতি। যতঃ প্রভোর্জগদীশ্বরস্য বাসোচিতং॥ ৩॥ \*

শাশ্বান্ লোকানিতি বছত্বং শ্রীবৈকুঠলোকন্য গৌরবাভিপ্রায়েণ তত্রতা বছলপ্রদেশবিশেষা-পক্ষয় বা জ্বোং। অন্যেষাং সর্বেষামশাশ্বতত্বাং॥৪॥ নচ স এবৈকঃ কিন্তু নিজপুর্বেকৈ-রপ্যান্থিতইত্যাহ পিতেতি। তারয়ে দুর্দ্ধভিঃ সংশারাদ্ধৌ নরকেষু বা প্রিতানিপি শ্রীবৈকুঠ-লোকপ্রাপণেনাশেষদ্বংখপারং নয়েদিতার্থঃ ॥৫॥ অতএব পিতৃভিগাঁয়তে অপীতি ॥ ৬॥ করিষ্যামইতি বৃদ্ধ্যা ধ্যায়ন্তি দুটেছাং কুর্বেন্তি। যদা বৃদ্ধ্যা ভাবনয়া করিষ্যাম ইতি সদা চিন্তয়-ন্তোব নত্ত তাদ্শমপি কদাপি কর্জুং শকু বৃত্তি তেষামপি॥৭॥ লক্ষেণেতি সমর্থোবছবিত্তব্যয়েন

ভবিষ্যঞ্ কুলানামযুতং নরঃ। বিষ্ণুলোক্। নয়ত্যাশু কার্রিছা হরের্গ্হং।। লক্ষেণাথ সহসেণ শতেমার্জেন বা হরেঃ। তুল্যং ফলৎ সমাখ্যাতমিহে-খনদরিজয়োগ। ৮। বিষ্পুর্মোভরে তৃতীয়কাতে। কলা বাসগৃহং তস্য দেবস্য পরমেতিনঃ । রাজসূয়াখনেধানাং ফলেন সহ যুজ্যতে । সুরবেখানি যাবভোদ্ভিজ্দুাঃ পরমাণবঃ। ভাবদ্র্যসহসুাণি মুর্গলোকে মহীয়তে ৷৷১৷৷ প্রাসাদে মূণ্যুয়ে পুণ্যুৎ মহৈছেৎ ক্ষিত্র দ্বিদ্ধাঃ। তব্দাদারুময়ে পুণ্যং ক্ষতে শতগুণ্য ভবেৎ। ততোদশগুণং পুণ্যং ভথা শৈলময়ে ভবেং। ভতোদশগুণং লৌহে তামেু শভল্পণং ততঃ।। সহসূত্ত নিভং রৌপ্যে ভক্ষাং ফলমপাশুভে। ভতঃ শতসহসুং বৈ সৌবর্ণে দ্বিজ্ঞসভ্তমা:। অমস্ত ফলমাগোতি রত্নচিত্রে মনোহরে।। ১০।। স্কান্দে আরন্তে রুফ্ধিফ্যস্য সপ্তজমনি যৎ কৃতং। পাপং বিলয়মাপ্নেতি নরকাদুদ্বেৎ পিতৃন্। প্রাসাদ शास्त्र इषमः याव छिष्ठे छि । द्वानुकाः। তाव वृर्यमञ्त्राणि वमः विक्रमणि । ১১।। প্রাদাদে রক্ষদেৰস্য চিত্রকর্ম করোতি যা। বসতে বিফুলোকে তু যাবভিঠন্তি সংগরাং। নারসিৎহে।। যং কুর্য্যাচ্ছোভনং বেশ্য নরসিৎহস্য ভক্তিমান্। সর্ব পাপবিনির্জে। विष्णुलाकमवाभू मा ।। ১২।। দেবাগারং করোমীতি মনসা যস্ত চিন্তয়েৎ। তস্যকায়গতং পাপৎ তদত্ব: বিপ্র নশ্যতি। রুতে তু কিৎ পুনন্তস্য थानारि विधितेन जुन : जारे चारिका नमायुक्त यः कूर्यतिकारः शृह्य i ন ভদ্য ফলসংপত্তির্বজুং শক্যেত কেনচিৎ। অনেনৈবানুনেয়ং তুফলং প্রাদাদ विख्वार। यत्रवक्ष उद्यालकार्ख्याः कृषा अध्यक्षकार । न नत्राखना यक्षना ফলমাপ্রোভ্যসংশয়। । ১৪।। বিষ্ণুরহস্যে ।। বাল্যে সংক্রীড়মানা যে পাৎশু-ভির্বন হরে:। বাসুদেবস্য কুর্বন্তি তেইপি ভলোকগামিন: !! ১৫ !৷ আদি পুরাণে !৷ লেপনপ্তাদনং চৈব যা করোভি পুনর্নবং ৷ দেবস্যায়তনং রুত্বা ন ভবেৎ को छेकः ७ वर्षा ३७॥ व्यथ मिन्द्रिनिकानका । मार्या रेठाळ वर्राधिमवा

हरत्रशृंहः करत्राक्ष पितिष्ठावाण्यवाराम करताक घर्षात्रिय हरतः मकागांव कलः ममानरमव कथिउमिल्टिकः व्यक्तामिमामांव अतमकलरेवक्रेकेकश्रायनायिक पिक् ॥ ৮ ॥ रहिष्ट-रक्ताः॥ ৯ ॥ तरेष्ट्रः विर्व्ध थितिष्ठ ॥ ४ ॥ क्रिक्षमा श्रीमाप्तरमा श्रीप्त श्रुक्त व्यक्ति वावव वावर्ष्ठार्त्वकालिकेखि॥ ४ ॥ क्रिक्सरखुरेनव क्षावन्त्रकाकृत्रगाक्रिक्सानिकुरुकः निव्ध वित्रातिकार्तिकार्तिकार्तिक विक् ॥ ४ ॥ सन्तर्भा विद्याप्त क्षावामाकः करत्राक्षेण्य भागिष्य व्यवस्थ विद्याप्तर्थ विद्याप्त विद्याप्त विद्याप्त करत्राक्षेण विद्याप्त व्यवस्थ विद्याप्त विद्य विद्याप्त विद्य विद्यापत विद्यापत विद्यापत विद्य वि

প্রোভি যোগ্যং কারবেররঃ। বৈশাথে ধনর দ্বানি ক্রৈটে স্ভুবে ভথৈব চ। আবাচে ভ্তারত্বানি পশুবর্জমবাপুরুষাং। প্রাবণে মিত্তলাভং জু হানিৎ ভাত্রপদে তথা। পত্নী नामा हामग्रम कार्किक धनधानाकर । नार्ग मीर्स छथा छक्तर श्लीर कक्रवार खरः। नाजः जू वद्याविम्।पिकः माध्य विनिर्णित्यः। काक्षमः काक्षा পুঞানিতি কালবলং স্তং।। अधिनी রোহিণী মূলমুত্রাত্রবৈদ্বং। शांधी हरिखाश्नुवाधा ह ज्हाद्र ख थानगुरक ।। ১१।। चाहिन्त्रहर्भिवक्क नर्स्व वाद्राः শুভাবহাং।। বজুব্যাঘাত শুলানি ব্যতিপাতাতিগণ্ডকে।। বিষুদ্ধ গণ্ড পরিঘান্ वर्का (यारायू कांत्र रवर ।। ১৮॥ त्यर रेमर्क व मारहत्मु शास्त्र विक्रिक स्त्राहिः ণে। তথা বৈ রাজসাবিত্তে মুহূর্তে গৃহমারভেৎ ।। ১৯ ১। চল্টুাদিভাবলং লক্ষ্য লথং च्छिनितीकिछ। एए छाण्डुशांपि कर्छव। यनाज भत्रिवर्ष्मारा ।। २०।। इत्रभीर्य।। বাস্তকর্ম নচারভ্যং বর্ষাকালে বিজানতা। রুঞ্পক্ষে ত্রিভাগান্তে শুক্লস্যাদৌ বিভীয়-কে। চতুখী নবমী বর্জ্যা তিথিশ্চাপি চতুর্দশী ॥২১ ॥ ভৌমস্য তু দিনং বর্জ্যৎ করণং. বিফিনংজ্ঞিতং । ক্ষিত্যন্তরীক্ষদিব্যোথৈকংপাতৈভ্রপীড়িত । উপস্ফং প্রাই-র্ভঞ্চ ব্যতীপাতহতৎ তথা। চক্রতারানুকূলে চ কার্যাং ক্যা বিজ্ঞানত।।।২২।। ধ্রবাণি ठाळ मस्रानि रेनक्ष छ । मक्तरेषवर । भूषाः भीककः माविजः वाग्नवाः रेवकवर তথা। স্থিরাং শে চ স্থিরে লগ্নে কর্জুন্চোপচয়াত্মকে।। ২৩।। কেন্দ্রে সৌম্য প্রহো-খন্য ত্রিকোণে তু সুরোভমঃ। পাপাশ্চোপচয়স্থানে ভদা কার্য্যং সমারভেৎ। के छि ।। २४।। व्यानाम्ब्रह्माञ्चान अधिष्ठाञ्चाननिर्वेषा । व्यक्तरम्वाच्यः किन्द विष्मारवारनाइज नियारक ॥२७॥

প্রকাবং ম্গালীর্বং ॥ ১৭ ॥ বর্জা বর্জয়িয়া ॥ ১৮ ॥ শ্বেতাদি সংজ্ঞকালাং লবমুহূর্জালামেকতমে ॥ ১৯ ॥ অন্যত্র উক্তেত্রকালে পরিবর্জয়েৎ ল প্রারভিদিতার্থং ॥ ২০ ॥ অয়াণাং ভাগালামন্তে পত্তি একাদশ্যাদিযু লারভাং । তথা শুক্লপক্ষস্য আদিভাগে চ নচারভাং । ততাপি ক্ষমপক্ষস্য দিতীয়ে ভাগে চতুর্থী তথা ক্ষম্পক্ষরাস্তৃতীয়ে নবমী শুক্লস্য চাস্তে চতুর্দশী রিক্তাত্মেন
বর্জনীয়া ॥২১ ॥ ক্ষিত্যুপ্রভিৎপাতঃ ভ্রুকশ্যাদিঃ অন্তরীক্ষোপ্যমূল্কাপাতাদিঃ দিবা দ্ব স্থাপ্রহাদিঃ । তৈর্ভয়রপিঃ পীড়িতং বাধিতং দিনং বর্জাং । যথা তৈরুৎপাতৈ লক্ষিতং । অনৈার্ভয়েদ
বক্ষাবিযোগাদিভিঃ পীড়িতং দিনং বর্জাং । উপস্কাং পীড়িতং প্রতিঃ শবৈশ্চরাদিভিঃ ॥ ২২ ॥
ক্রবাণি স্থিয়াণি । নৈর্মাতং মূলং শক্রেটেরতং জ্যেষ্ঠা পৌষ্যং রেবতী সাবিত্যাং হন্তঃ বায়বাং
স্থাতী বৈক্ষবং ভাবণং ॥ ২৩ ॥ কেন্দ্রং লগ্নং ততশুস্তর্থং সপ্তমং দশমং চেত্যেবং স্থানচন্তম্যুং
ভক্ষিন্ । ত্রিকোণে নবপঞ্চমে । উপচয়স্থানং তৃতীয়ং বঠং দশনৈকাদশঞ্চ ভক্ষিন্ ॥ ২৪ ॥
বীমুর্জিপ্রতিষ্ঠাস্থানং সিক্ষক্ষেত্রং সরঃপুণ্যমিত্যাদিবচন্নের তথানগরপ্রামমধ্যে দ্বিত্যাদি হয়শীর্ষ
পঞ্রাত্রবহনিক যোনির্ময়ঃ পূর্বাং লিথিতোন্তি ভক্ষাদের প্রাসাদ্রচনায়াঃ স্থানমপি ব্যক্ত মেবাভবং নির্মীতমভূদেবেত্যর্থঃ। প্রাসাদান্তরে ত্রীমুর্জিস্থাপনাং অ্র প্রাসাদ্রচনায়ালে নির্মারে
ক্ষিক্রিনোপি বিশেষোলিখ্যতে ॥ ২৫ ॥

## विविद्विक विवाधः।



व्यथं श्रामानकानः ॥ र्मनीटर्यः ॥ शूर्वः त्मवकूनः भीवा श्रामानः वन्नकः তথা। সমবাপ্যাধিকং বাপি ন কর্তব্যং বিজ্ঞানত।। উভয়োদ্ভিণাৎ সীমাং ত্যক্ত্যু চোচ্ছু। अनः निर्छार। श्रामानः काद्रश्चिमनाः नाख्यः श्रीष्रश्चिष्रः ॥ २७॥ असे ञ्चान (नाधनानि ।) (नवी भूतार्थ ।। (नरवा विष्णु छथ। कृष्ठा क ज्ञानाः भूत महामाः । প্রতিষ্ঠাপ্যাঃ শুভে স্থানে অন্যথাতে ভয়াবহাঃ ।। গর্তাদিলক্ষণা ধাত্রী গন্ধস্থাদেন যাভবেং। বর্ণেন চ সুরশ্রেষ্ঠ সা মহা সর্বকামদায়া২গা মাংস্যো। পূর্বং ভূমিং পরীক্ষেত পশ্চাদ্বাস্ত্র প্রকল্পয়েং। খেতা বক্তা তথা পীতা রুফা চৈবানু পূর্ঝ-শঃ। বিপ্রাদেঃ শস্যতে ভূমিরতঃ কার্য্যং পরীক্ষণং। বিপ্রাণাৎ মধুরাস্থাদা ক্ষায়া ক্তিয়স্য চ। ক্ষায়কটুতা ভদ্ধৈশ্শুদ্রেণ্ শন্তে॥ ২৮॥ অর্ত্রি নাত্রে বৈ গর্ভে স্ব নুলি প্রেচ সর্বভঃ। ঘৃতনামশারাব ইং ক্র বর্ভিচতু উয়ং। জাল-য়েত্রুপরীক্ষার্থন পূর্ণন তৎসক দিজুখন।।২৯। দীপ্তান পূর্বাদি গৃহীয়াদ্বনানাম नुश्काः। वाञ्च ममृहिकानाम मोगाउ मक्ष छ यः।। ७०।। अछ मः मक्षेवर्गाना ५ প্রাসাদেষু গৃহেষু চ। অরত্নিমাত্রকং গর্ভং পরীক্ষ্য খাতপূর্ণে। অধিকে শ্রিয়-মাপোতি নূনে হানিং সমে সমৎ।। ৩১ ফালকৃষ্টে ২থবা দেশে সর্ববীজানি রোপ-য়েৎ। ত্রিপঞ্চ সপ্তরাত্রেণ যত্র রোহন্তি ভান্যপি। অফৌতরকনিষ্ঠা ভূর্বজনীয়ে-उता मना।। ७२।। इसमीर्स। मुद्रकीनाः दक्षित मतः मानाः वृदेवः मह। मुन्ह-ৰীণাং রতির্যত পুরুবৈ: সহ সভম। রাজ্ঞাং পূর্বং গৃহং যস্যামন্ত্রীনাৎ যজুনাৎ তথা। কাশ্মীরচন্দ্রীমোদা কপূরাগুরুগজিনী। কমলোৎপলগন্ধা চ জাভিচস্পক-গব্ধিনী। পাটলামলিকাগন্ধা নাগকেশারগবিনী। দ্বিক্ষীরাজ্ঞান্ধা চুম্দিরাস্থ-গন্ধিনা। সুগন্ধিত্রীহিগন্ধা চ শুভদ্রব্যবনা চ য।। সর্বেবাৎ বর্ণিনাং ভূনিঃ সক্ষসাধা,

পূর্বং প্রাচীনং দেবকুলং প্রাসাদমেব। পীড়া প্রীড়রিরা তৎসীমামাক্রমোত্রর্থঃ। ২৬।।

স্থান্ত্রাদিলক্ষিতা চ যা ভবেৎ। ২৭।। বিপ্রক্ষত্রিরবৈশাসূদ্রাণাং ক্রমেণ শ্বেতাদিভূমিঃ প্রশন্তাভবিতি ।। ২৮ ॥ স্থামশরাবস্থং ঘৃতং কুরা তত্রচ বর্তিচন্তর্ট্রং কুরা তর্চ বর্তিচন্তর্ট্রং ক্রমা তর্চ বর্তিচন্তর্ট্রং ক্রমা ভূপরীক্ষার্থং প্রস্থানিভিন্তর্ব্বাদিদিশামারভা ক্রমেণ বিপ্রাদীনাং শুভং জানীয়াদিত্যর্থঃ। তত্র যদি বর্তিদ্রমধিকং দীপাতে তদা দরোবের শুভং তত্র চ পূর্বাদক্ষিণয়োশ্চন্তর্হি বিপ্রক্ষত্রিরারোঃ পূর্বোভরয়োশ্চন্তর্হি বিপ্রশূদরোরিত্যেব-মূছং।।২৯।। যত্র চ বর্তিচন্তর্ট্রার সর্বমেবাধিকং দীপাতে তত্র সর্ব্বেমামেব শুভমিত্যাই বাস্ত্র-রিতি॥ ৩০॥ কথং পরীক্ষাং ভদাহ থাতস্য তদার্ত্ত্রা ত্রাভিকাদিনা পূরণে সতি যদি ভন্ম-ভিকাদিকমধিকমুক্তং ন্যান্তর্হি শুভং ন্যাদিত্যর্থঃ। তথাচোক্রং হয়শীর্ষদেবেন। সংপূর্য্ত মাণে থাতে ও তথাধিকমৃদং!শুভামিতি।। এবমগ্রেপ্যহং॥ ৩১॥ ত্রিরাত্রেণ যন্যাং বীজানি বোহন্তি নালেচ্চ্যা। পঞ্চরাত্রেণ যন্যাং না মধ্যা নপ্ররাত্রেণ চ যন্যাং না কনিষ্ঠা ভূজ্রের্য়া। পঞ্চরাত্রণ ফ্রান্ত্র্বাহিত্যং ক্রিটাং চ বর্জয়েরং॥ পাঠান্তরেপি স্ববার্থঃ॥ ৩২॥ বির্বর্মা

त्रगी गडा। मूर्गाका पृथ्वमा या छ मानावर्ग छ मूर्डमा । वृद्धाक्ष्वनमूत्रम्भा विखात्रा चिखनात्रका। विवर्ग वर्गहोना ह बद्धा मृहियूथी कथा। विवर्ग मूर्भमम्भी लामूथी ह जित्कां विका। यस्त्रा भूनतम्भी पश्चिश्रोणमा ह या। नदीम्शनमा या ह मिषा ए। भक्षे विहा । अवर श्रकाङ या ভূমির্বজ্ঞা যতে न मिट्रेकः ॥ ७०॥ কিঞ্। প্রাদাদস্য বিশেষেণ প্রোক্তা ভূমিশ্চতুর্বিধা। সুপলা ভতিকা পূর্ণা ধুমু বেগিন (থাপরা। ভিলকৈর্নালিকেরেশ্চ বহিঃ কাশেশ্চ শোভিতা ।। পছেন্দীবরু সংযুক্তা সা সুপ্ৰেতি বিশ্ৰুতা। নদীসমুদ্ৰায়তনতীৰ্থপৰ্যান্তশোভিতা। পুজা वृक्तनभाकोनी कीतवृत्काभरणाजिका। वर्ताम्। नम्का विभागक्ष अभाव्या । व्यक्षेत्र বৃক্ষসুক্ষেত্রযুক্তা ভদ্রেভি কীর্ত্তি। বকুলা শোকবক্তলা ভথাপুক্ষামুলোহিইতঃ। নাধবীবেষ্টিত। যাচ মুলানিস্পাবকোফ্রকৈঃ। শুক্ধান্যেশ্চ পন্নাগৈরিপাশ্ব-গতাচ্যা। তৌয়ক্ষ স্বন্সকং যদ্যাৎ সা পূর্ণা পরিকীর্ত্তিতা। ৩৪।। বিলা-ক্ষুহিপীলূনাৎ বনৈষা পরিতোব্ভা। সশর্করাচ কঠিনা যুক্তা কঠকিভিজ্ঞ মৈঃ। গৃধুগোমায়ুকাকানাৎ শ্যেনানাৎ যা কুলাকুলৈঃ। ধূমেুভি কীর্ত্তিভা সা তু তাং যজাৎ পরিবজ্জয়ে । ততোভূমিং পরীক্ষেত পূর্বোদক্থবনাং শুভা।। অস-. ক্ষটাং তথাচ্ছরামপেতোয়াং পরিপুতাং। সংপূর্য্যমানে খাতে তু তথাধিকমৃদং শুভাং। কুসুন্তুসদৃশং বৰ্ণ যস্যাৎ ন ম্লানিমৃচ্ছতি। ন নিৰ্বাতি তথা দীপন্তোয়ং শীঘ্ৎ ন জীয়্তে।। ৩৫ ।। খেতারুণা পীতরুক্ষা বিপ্রাদীনাৎ প্রশাস্ত্র। আল্লাসূগ্ গন্ধনদ্যানাং তুল্যগন্ধাতু যা ভবেং। মধুরাচ ক্যায়া চ অনুাচ কটুকা চ যা। कृरेमः मरित्रस्थी कारेमर्म् वी जिया ह मध्ये छ। छमा भूषा ३४ नक्ष क्या कूर्या-ডুমিপরিগ্রহ্ম।। ৩৬।।

অথ ভূমিপরিগ্রহঃ ।। তবৈব ।। প্রাকারসীমাপর্যন্তং ততোভূতব লিং হরেও ।
মাংসং হরিদ্রাচূর্বন্ধ সলাজাদধিশক্তবঃ । এভির্ভুতবলিৎ দ্ব্রা সূত্রমন্টাক্ষরেণ তু ।
পাতিয়িব্রা ততঃ শক্ষুনন্টিদিক্ষু নিবেশয়েও । রাক্ষসাশ্চাপি ভূতাশ্চ যেসিংস্তিই ভি
ভূলে । তে সর্বে বাপগচ্ছর স্থানৎ কুর্যামহৎ হরেঃ ।। ইত্যনুজ্ঞাপ্য ভূতাদীন্ তাং
ভূমিং পরিশোধয়েও । আদিত্যাদিগ্রহাগাঞ্চ লোকপালৈঃ সমস্ভা । আজ্যনিক্টবিধানেন ততোবৈ হোমমাচরেও ।। ৩৭। চক্র:হামৎ ততঃ কুর্যাামূলমজেণ
দেশিকঃ । দ্যাও পূর্ণান্ততিং পশ্চাদ্বোষ্ড্তেন দেশিকঃ ।। ব্যভো কপিলো গৃহ্য

দুর্বর ।। ৩৩।। প্রকাদিভিবিনিটা এবমগ্রেপি জেরং ।। ৩৪।। স্কু ইং শিজুং।। ৩৫।। আব্যাদিভিঃ স্তালোগালোযস্যাং সা। তত্র আব্যাং ঘৃতং অসূক্রক্তং গল্ধঃ অগুর্বাদিসাধিতস্থালিরেশ-বিশেষঃ।। ৩৬।।

मवाली वा विक्रमने ।। शिक्रमार्थः रमस्मित गृष्ट्रीवामणात्मास्वरः । श्रीका वर्षः राका मजाकावज्ञानकात्र ज्वितः ।। कामनी र स्थिमामात्र द्वामणाक्मत्र विमाणा ॥०৮॥ मरम-एम् ममीक्ष्ण श्रीकानि वाभाग्य ।। मरश्रीस्थ श्रीकाना कु शोक्षिर थामात्र-स्वारः । भूनखर कर्षविद्या कु ममीक्ष्ण गृहर श्रुकाः ॥ ०० ॥ मारमा । होनाधिका-स्वार वारशोः मर्काकः शिववर्ष्णात्वर । नगत्र श्रीमरमान्य मर्काद्वव विवर्ष्णात्वर ॥।।।।

ज्य क्रिंगधन । इस्मीर्य। वाह्यवाह्यमार क्रिंच छ्यू नुर ममछछः। कृषि छात्र ममर क्रिंच क्रिंच क्रिंच । वाह्यमाम क्रिंच वाद्यां हिंद्यां ममर्ग मार्ग क्रिंच वाद्यां हिंद्यां स्वाह्य । यथा मुनिक्त मार्ग हिंद्यां हिं

অথ শৈলোদ্ধারণং ।। মাৎস্যে। গৃহারন্তেতিকগুভিঃ ছাম্যক্সে যত্ত জায়তে।
শাল্যন্ত্বপনয়েত্তত প্রাসাদে ভবনে তথা।। সশাল্যন ভয়দং যক্ষাদশল্যন ভয়নাশানং ।। ৪৩।। হয়শীর্ষে ।। আদিশেদ্বান্তনঃ শাল্যং গৃহিণোক্ষবিকারতঃ ।। শকুনোদৃশ্যতে বাশি যস্য বা ক্রায়তে ধনিঃ। ক্রিভাতে যস্য বৈ নাম শাল্যং তস্য বিনি
ক্রিশেৎ ।। ৪৪।।

গৃহীত্বা। অসনঃ চারবৃক্ষঃ ভদ্ভবং॥ হলস্যোজিপাঠে হলমিতি শেষঃ। যোজ্য যোজয়িত্বা।। ৩৮॥ সমীকৃত্য ভদ্ভূতলং। তৎ তত্ৰজাতং সম্যাদি। তং প্রদেশং তদিতি বা পাঠঃ। গৃহংপ্রারভিদিতি-শেষঃ।। ৩৯॥ ভূমিপরিগ্রহে চ কিঞ্জিবিশেষমন্যং লিখতি হীনেতি। সর্বতঃ সমং কুর্য্যাদি-ত্যর্থঃ॥ ৪০॥

श्वाभा श्वाभित्रिया जगाः ज्यो हातायाः श्वादिष्ट निष्ट्यम ह निर्भाम ॥ १३।। नह भक्ष्यां महा किनाधनः गांविजाह। देवसूरवहेष्ठ। भक्ष्यक्रमः टिक्स श्रीहर्षा व शिल्पिन।। वृष्ठः ज्ञिमसः काल्यामात्र गांववः श्विमाक्रिकः। हण्डलम् छ ज्ञालाक्र काल्यां छ शिल्पिन।।। वृष्ठः ज्ञिमसः क्रियां विज्ञ विश्व श्वाद्य श्वाद्य श्वाद्य ह्यां विज्ञ व श्वाद्य श्वाद्य श्वाद्य ह्यां विज्ञ व श्वाद्य ह्यां व स्वाद्य ह्यां ह्यां व स्वाद्य ह्यां ह्यां

স্বামী গৃহকর্তা তদ্যাকে গাতে। যত যশ্মিন্ স্থানে॥ ৪৩ ।। অঙ্গবিকার: কণ্ডুয়নাদি: ডস্মাৎ। কীদৃশং ভজ্জামিত্যতাহ। শকুন ইন্ডি। তদ্য শকুনস্যাস্থাদিরপং শল্যং॥ ৪৪॥ অধ বাস্ত্রমণ্ডলং । মাংসের।। পাঞ্চ গবেরীষ্থিজলৈঃ পরীক্ষিষ্ণাবসেচয়েৎ।
একাশীতি পদং কুর্য্যান্তেথাভিঃ কনকেন তু ।। ৪৫ ।। পশ্চান্তেপেনচালিপার সূত্রেগালোড্য সর্বভঃ। দশ পূর্বায়তা রেখা দশ চৈবোন্তরায়তাঃ। সর্ববান্তবিভাগেষু
বিজ্ঞায় নবকানব ।। ৪৬ ।। একাশীতি পদং কৃত্যা বাস্তবিৎ সর্ববান্তবু । পদস্থান্
পূজ্যেৎ দেবান্ ত্রিংশৎ পঞ্চাংশব চ ।। ৪৭ ।। ভাজিংশলাভ্যতঃ পূজ্যঃ প্ল্যাংশচান্ত
স্ত্রোদশ । নামভন্তান্ প্রক্র্যামি স্থানানি চ নিবোধ মে ।। ৪৮ ।। ঈশানকোণাদিবু
সুরান্ পূজ্যেচ্চ বিধানতঃ । শিখা চৈবাথ পজ্জন্যাল্যন্তঃ কুলিশায়ুধঃ । সূর্যঃ
সভ্যোদ্শাংশ্ব আকাশোবায়ুরেবচ। পূষা চ বিভগাল্যের গৃহক্ষভ্যমাবুভৌ ।
গন্ত্রাজ্লচ মূগঃ পিত্গণন্তথা। দৌব্রিকাছ্ব সুপ্রীবঃ পুলারন্তোল্লা-

পরীক্ষিত্বা পূর্বাং ভূমিংপরীক্ষেতেত্যাদিনোক্তপ্রকারং ভূমিপরীক্ষণং রুত্বা। ততঃ পঞ্গবৈত্য-বো বধিজলৈক ভূমিমবসেচয়েৎ প্রোক্ষেত। অত্তচায়ং প্রস্থাসুদারেণ শিষ্ট দক্ষতোবিশেৰোজেরঃ I প্রথমং যত্ত্বসানোমাত্কার্চনপূর্বকং বৃদ্ধিশাদ্ধমাভাদায়িকং বিধায় প্রাভমুধাংস্ত্রীন্ ব্রাহ্মণাম্প-বেশ্য চন্দনপুষ্পাক্ষতভামূলবাদোহিরণাৈরভ্যষ্ঠা। ওঁপুণ্যাহং ভবতোক্রবস্থি**ভি প্রথমং আক্ষণ** ওঁ ঋদ্ধাতামিতিবাচনং ত্রি: কুর্যাৎ । ততোভগবৎপ্রীতয়েঽমুক্রাস্তকর্দ্ধাহং করিব্যে তত্ৰ স্বমাচাৰ্যোভৰ ইতি আচাৰ্য্যং বৃণুৱাৎ ভৰামীত্যাচাৰ্য্যেণাভিহিতে ভচ্ছাৰোক বিধিনা তমর্চরেং। তত আচার্য্যোগায়ত্রাে গোমূতং। গল্পদারাং ছ্রাধর্ষাং নিত্যপুষ্টাং করীবিণীং। ঈশ্বরীং দর্মভুতানাং ত্রামিহোবহ্বয়শ্রিবমিতি মস্ত্রেণ গোময়ং। আপ্যায়স্বমে ও তে বিশ্বতইত্যাদি মন্ত্রেণ দুপ্ত দ্বিক্রাব্রোঅকারিষ্ণ জিফোরশ্বস্য বাজিন ইত্যাদিমন্ত্রেণ দ্বি। তেলোংবি **২)ক্রমস্য মৃত্যদি ধামনাযাদি প্রিয়॰ দেবানামনাধৃউং দেবযজনমনীতি মস্ত্রেণ ঘৃতং। দেবস্য ত্রা** সবিত্তঃ প্রসংবেশ্বিনোর্ব্বাহ্নভাং পুঞ্চোহস্তাভ্যাং সরস্বতৈ বাচোয়ন্ত মন্ত্রেণ নাথেঃ সামাজ্যেনাভি-বিঞামীতি মস্ত্রেণোদকং। এবং পৃথক পৃথক অভিমন্ত্র্য স্ব্রেমকীকৃত্য তেন পঞ্চাব্যেনোদকেন চ তাং ভূমিণ প্রোক্ষেতেতি। তল্পধ্যে চ কনকেনেতি স্বর্গ শলাকরেতি জ্ঞেরং।। তদভাবে রক্তকল-পুষ্পান্যানামন্যতমেনাপি রেখাং কৃত্রা ভাভিরেকাশীতিপদং নাম বাস্তমগুলং কুর্ঘ্যাদি-ভার্থ:। ২৫।। তৎপ্রকারমেবাভিব্যঞ্জয়তি পশ্চাদিতি দ্বাভাগে। নবকানবৈতি একাশীভিরিভার্থঃ। অত্ৰচায়ং বিশেষঃ। শাস্তা যশোবতী কাস্তা বিশালা প্রাণবাহিনী সূচী স্থমনা নন্দা স্থ জ্ঞান থেতি সংজ্ঞিকা দশ প্রাক পশ্চিমায়তা দক্ষিণোপক্রমা: উদগপবর্গা রেখা: রুত্বা তছপরি হিরণ্যা স্ত্রতা লক্ষীবৈভূতিবিমলা প্রিয়া জয়াকলাবিশোকাচ ঈডেতি সংজ্ঞিকা দশদকিণোত্তরা-যুতাঃ পশ্চিমোপক্রমাঃ পূর্বাপবর্গারেখাঃ কুর্যাৎ। ততঃ শুক্লরক্ষ্কভোরেণ তাঃসমাগ্রিমায় নবর্তিনবকৈরেকাশীভিপদানীতি মগুলংকুর্য্যাদিতি ॥ ৪৬ ॥ বিংশৎ পঞ্চদশচেতি পঞ্চত্মারিংশত মিতার্থঃ।। ৪৭।। তবৈর বিশেষমাহ ছাত্রিংশদিতি। বাহাতঃ মণ্ডলস্য চন্ধর্দিক বাছ পংক্তি ছারে। অন্তক্ষ তদভান্তরে ।। ৪৮॥ ঈশকোণাদিয়ু পঞ্ ঈশানকোণ্মারভা বক্ষামাণ বিধিনা निथाकिशक्षक्वातिश्माक्तान् श्करायः।। जातन यथाश्वानः विख्का मर्भव्रन चारमे कत्मन चार्किः-লদেবানাহ শিখীতি দাৰ্জন্ত্রেণ। এতে শিখিপ্রভৃতয়ো ছাত্রিংশক্ষেবা বহির্মপ্রলবাহ্পংক্তিছমুল্য विश्वामार्भरमञ्ज्ञा हेजार्यः। उत्रव वक्तामान वहनारमक्षमावाममविश्वमान् विश्वकित्वा हाः।

বিশঃ। অসুরঃ শোষণাপেট রোগোছি মুধ্য এবচ। ভলাটঃ সোমসপৌ চ আদিভিল্ট দিভিতথা। বহির্নাতিংশদেতে তু ভদত্তক সুরান্ শৃণু ॥ ৪৯ ॥ ঈশানাদিচতুকোণসংস্থিতান্ পুরুষেধ্য ॥ ৫০॥ আপিলেবাথ সাবিলো জয়োক্রডথে ব চ ॥
মধ্যে নবপদৌ ক্রন্না তস্যান্টো চ সমীপগাঃ। সর্বানেকোত্রান্ বিদ্যাৎ পূর্বা
দীন্ নামতঃ শৃণু ॥ অর্যামা সঞ্জা চৈব বিবস্থান্ বিবুধাধিপঃ। মিলোহথ রাজযক্ষা চ তথা পৃথীধরঃ ক্রমাৎ। অন্তমশ্চাপবৎসশ্চপরিভাবিক্সাণঃ মৃত্যঃ।
আপিলেবাপবৎসশ্চ পর্যান্যাই মির্দিতি তথা। পদিকানাং চ বর্গোয়মেবং কোণেয়ব্বশেষতঃ ॥ ৫১॥ ত্রাধ্যে তু বহিরিৎশ্দিপদান্তে তু সর্বতঃ। অর্যামা চ বিব

এডচাগ্রে ব্যক্তং ভাবি। ঈশানাদিচতুঃ কেনিসংস্থিতানিতি বহিংকোণচপ্তইয়স্যাধস্তাৎ যদ্দিতীয়-পংক্তেঃ কোণচত্তইয়ং ত্র ঈশানাদিক্রমেণ স্থিতান্আপাদীন্ চত্তরো দেবান্ পূজরেদিত্যর্থ:॥৪৯। নবানি পদানি যস্য সনবপদস্থিত ব্ৰহ্মা পুৰু ইত্যৰ্থঃ।। তস্য ব্ৰহ্মণঃ সমীপগাঃ পাশাফদিক চাটো পুৰুষ ইত্যৰ্থ: ।। আদে সামান্যতন্তেষাং সংস্থানমাহ একোত্রহ্লা উত্তর: মধ্যবন্তী যেষাং তথা ভূতান্ সর্বান্ অফাবপি জানীয়াৎ। পাঠান্তরে একঃ সর্বাএব অন্তরা মধ্যে আবিষ্টঃ প্রবিষ্টো-বেষামিতি তথৈবার্থঃ। পূর্বেদীনিতি পূর্বেদিগাদিকেমেণ স্থিতান ইতার্থঃ। তানেবাহ আপশ্চেতি শক্ষিবরেন। আপাদয়ঃ পঞ্চ পদিকানাং পদানাং পদবতাংবা মধ্যে একএবায়ং জ্ঞেয়ঃ। পাশু-বর্ত্তিত্বন পরস্পরমেকতা মিলিভত্বাদেকপদত্বাচেতি দিক্। এবং অনেনোক্তপ্রকারেণ কে'ণেযু অন্যাশ্মন্ কোণত্রয়েপি পূর্ব্ধবদন্যোন্যমিলিটতরেব পদেঃ পঞ্চপঞ্চভিরেটককোবর্গোজ্যেইত্যর্থঃ। তত্ত্বচ মণ্ডলসোশানকে!ণে শিখী তদ্য বামে দিভি: দক্ষিণে প্রজ্ন্যঃ অধন্চাপঃ তদধন্চাপ্রৎস্ইতি পঞ্চভিরেকোবর্গ:। আগ্রেয়ে চ বায়ু: তস্য বামে আকাশ: দক্ষিণে পূষা অধ:সাবিত্র: তদধশ্চ সবি-তেতি পঞ্চভিরন্য:। নৈঝতে পিতৃগণ:। তদ্য বামে মৃগ: দক্ষিণে দৌবারিকঃ অধোজয়ঃ। তদধ-স্তাচ্চ বিবু**ধাধিপই ভি পঞ্চিভিরপর:। বা**য়ব্যে চ রৌগঃ তৃদ্য বামে পাপঃ দক্ষিণে অভি: অধো-রুদ্রতদ্ধস্তাচ রাজ্যক্ষেতি পঞ্জিঃ পরঃ। অশেষ তইত্যনেন চান্যতাপি সর্বাত বক্ষ্যমাণপ্রকা-রেণবর্গ উহুঃ তথাটি মণ্ডলস্য পূর্বামিন্ ভাগে জয়ম্বাদিভির্দ্বিপদৈঃ পঞ্চভিরেকঃ দক্ষিণে তথৈব বিতথানিভিরেকঃ। উত্তবে চ ভথৈব মুখ্যাদিভিরেকঃ। মধ্যেপি ব্রহ্মণা ভচ্চত্তর্দিকস্থিতৈ দার্য্য-মাদিভিশ্বন্ত ভিরেবংপঞ্চতিরেবৈ কইত্যেবংনববর্গাঃ। তৈর্ব্বপঞ্চত্মারিংশদ্বেতাভবস্তীতি। ইপ্র-মেবাত্রেবক্ষ্যমাণবাস্তপুরুষণ্য মন্তকাদ্যজেষু ক্রমেণ শিখ্যাদিদেবতা পূজাবিধিরপি সঞ্চত্তে ইতি দিক্।। ৫০ ।। তেষাং কোণস্থিতানাং মধ্যে বহিঃ চাপবৎসাদ্যধিষ্ঠিতপদপংক্তিতোবাহ্য-পংক্তিদ্বয়ে একসাং দিশি দিপদাঃ পঞ্চেত্যেবং সর্বভঃ চঙার্দিক্ষু বিংশতিদি পদাজেয়া ইত্যর্থঃ। ভত্তচ পূর্ব্বসাং দিশি পর্জনাদক্ষিণভোবহিরেক পদে তদ্ধশাস্ত রেকপদে এবং পদাদ্বয়ে ক্রমেণ্ জয়স্তাদয়ং পঞ্চ দক্ষিণস্যাং তবৈধ বিতথাদয়ং পঞ্চ। পশ্চিমস্যাং তবৈধ স্থাীবাদয়ং পঞ্চ। উত্তরস্যাং তবৈধব স্থান্যরঃ পঞ্চেত্যেবং ক্ষেত্রং। চত্তারক্ষাত্রপদা ইত্যাহ ভার্যমেতি। এবং সর্ক্ষে-এৰপদাবিংশতিঃ। দ্বিপদাক্ষ বিংশতিঃ ত্রিপদাক্ষত্বারঃ। নবপদকৈ কো ক্রন্ধা তত্ত্ব চ বহিরেক দ্বিপদাশ্চবিংশভিরেব । বহিঃ কোণচন্তুট্যাদ্ধঃকোণচন্ত্রটয়েচত্তারএকপদাঃ জক্ষণঃপূর্বাদি দিকু তিপদাকত্বার:। তদ্যের চক্তঃ কোণেচমুত্বারকৈকপদা এবেত্যেবমেকাশীতি পদেৰু পঞ্চত্বারিংশদেৰতাঃ। পূজা।ইতি বারাহাাদিমংমত্যা শিফীচারতেভেয়ং।।৫১।। প্রসঞ্চান

चाः म भिजः भ्थीभतस्य। उकानः भतिरकामिक् जिभमारसं छू मस्तकः ॥ वः मानिमानीः वक्तामि अजूनिं शृथक् शृथक्। वाशू यावः उथा आगः পিতৃভ্যঃ শিথিন তথা। মুখ্যাদৃশং তথা শোষাদিতথ যাবদেব তু। সুপ্রীবা দদিতিং যাবডুকাং পজ্জন্যনেব চ !! ৫২ !! এতে বংশাঃ সমাধ্যাতাঃ কৃটি-দূজবএব তে।। ৫৩।। এতেষাং যন্ত সম্পাতঃ পদমধ্য সমং তথা। মর্ম है। हेड সমাখ্যাতং ত্রিশূলৎ কোণগং চ যৎ। জয়ন্যাসেধু বর্জ্যানি ভুল্যা বেংধ্রু गर्तन। कीलाई मृत्छा भघा जानि वर्ष्क श्राप्य प्रदेश नदः।। मर्वत वासनि विक्री পিতৃ বংশোত্তরায়তঃ।। ৫৪।। মূর্জন। য়িঃ সমাবিকৌ মুখে চাপঃ সমাবিতঃ। পূথী-ধরোহর্ম। চৈব তনয়োভাবধি ছিতৌ। বক্ষংস্থলে ত্বাপবৎসঃ পূজনীয়ঃ সন্। বুলৈঃ।। নেত্ৰ.য়াৰ্দিভিপজ্জনেটা শ্ৰোত্ৰেহদিভি জয়ন্তকৌ।। সৰ্পেঞাৰং সসংখে ভু পূলনায়ে প্রযন্তঃ। সূর্যদোমাদয়ন্তব দাভো: পঞ্চপঞ্চ। রুদ্রশ রাজ্যকা চ বামহন্তং সমাপ্রিভৌ। সাবিত্রঃ সবিতা তছদ্ধতং দক্ষিণমাশ্রিভৌ। বিৰ-স্থানথ নিত্রশ্চ জঠরে সংকরেস্থিতী।। পূষা চ পাপযক্ষা চ হস্তয়োমণি**বন্ধনে।।** তথৈবাসুরশেষৌ চ বামং পার্খ সমাশ্রিতৌ। পার্শ্বে জু দক্ষিণে ভদ্ববিভথঃ • সগৃহক্ষতঃ। উর্বোর্যনায়ুপৌ জেয়ে জাবোর্গন্ধপুরুরে । জগুয়োভর্তু সুগ্রী-বৌ কট্যাৎ দৌবারিকো মূগং।। জন্তঃ শক্তস্তথা মেুচ্ছে পাদয়োঃ পিতরস্তথা। মধ্যে নবপদে। ব্ৰহ্মা হাদয়ে তু স পূজ্যতে। চতুং ষঞ্চিপদোবান্তঃ প্ৰাসাদে ব্ৰহ্মণঃ স্তঃ। ব্ৰনা চতু পদন্তবং কোণেষ্কেপদন্তথা। বহিঃ কোণেষু চাটো তু সার্দ্ধান্চোভয়তঃ म् जाः। विश्मिजिनिमारस्यार हजूश्यिमितम् मृषाः।। इस्मीर्यः। वास्कर

ভাস্তমণ্ডলে বংশানাই বংশানিতি দ্বাভাাং। অজুনিতি পাঠে বংশানাং বিশেষণং। রোগপদাঘায়ু-পদং যাবদেকোবংশঃ। এবমন্যেপ্যথে জেয়াঃ। ৫২।। এতে ষট্ বংশাঃ।।৫৩। বংশকথনপ্রয়োজনমাই এতেয়ামিতি দ্বাভাাং। তত্র সংপাতঃ দ্বাভাামেকত্র সংশ্লেষঃ। বাস্তপুরুষস্যাদ্ধেষু তত্ত্ব-দেবতাপুলাং বিভক্তা বক্ষান্ আদৌ তস্য দেহেয়ন্তামাই সর্বত্বেত্যক্ষেন। শিথিনমারভ্য শিথিনং-যাবদ্যোবংশন্তগ্যেত্বরুমন্তং যাবদায়ভোবাস্তপুরুষইত্যর্থঃ।। ৫৪।। অধামুখপতিতস্য বাস্তপুরুষ্থায় সূর্বানি সমাবিদ্যং অধিকিতোমিঃ পূজনীয় ইত্যর্থএবমগ্রেপি জ্বেরং।জ্যোতে প্রাত্রেয়াং অদিছি জ্বস্তের। সর্পঃ অদিতেরুত্তরতোনিরস্তর স্থিতো দিপদং। ইন্দ্রণ কুলিশাধিপোক্ষমন্ত্রণ দক্ষিণভোনিরস্তর স্থিতো বিপদং। ইন্দ্রণ কুলিশাধিপোক্ষমন্ত্রণ দক্ষিণভোনিরস্তর স্থিতা পিদং তৌ ক্ষমন্তিতো প্রেয়া। স্থ্যাদ্যং পঞ্চ দক্ষিণে বাছৌ। আদিশব্দেন ক্র্যাস্যাদ্ধিণে বিকটবর্ত্তিনং সভ্যভূশাকাশবায়বন্দন্ত্রারং তথাসোমাদয়ল পঞ্চ বামবাছৌ প্রস্তাইতার্থঃ। অত্রাদিশব্দেন বামস্যোন্তরে নিকটবর্ত্তিনোভল্লাটমুখ্যাছিরোগাশ্বারঃ। ইন্তয়োরিতিদ্বিত্বনন্দ্রিস্থাপ্রির্যাপি দ্বিরং ক্ষেয়ং। মণিবল্ধয়োরিতিবাপাঠঃ। তত্র দক্ষিণে মণিবল্ধে পুষা বামেচ পাপ্রক্ষা পাপ্রব। অত্রব বলিদানেপ্যত্রে বক্ষবং গোধা বৈপাপ্যক্ষমন্তিত। পাপ্যক্ষেত্যক্র প্রাঠঃ

সূত্রবেৎ প্রাক্তঃ শেভায়রধরঃ শুটিঃ । শেতগদ্ধানুলিপ্তাঙ্গং সর্বালকার ভূনিতঃ।
চত্ঃৰাফী প্রপ্রাাদে একাশীতিৎ গৃছে দদা।। ৫৫ ।। চত্তরসূক্তিতে ক্ষেত্রে অফথোভয়ভাজিতে। কোণরেখাৎ ততোদস্থা সুরভাগাংস্ত কংপয়েৎ। শিবঃ কোণার্কতো
ক্রেয়ঃ পর্ক্রনাঃ পদসংস্থিতঃ।। দ্বিপদস্থো জয়ো ক্রেয়ঃ সুবেশনৈচকপাদিকঃ।৷ ভাস্করস্ত্র পদে ক্রেয়োদ্রিপদঃ সভাইষাতে।৷ ভ্শঃ পদস্য বিজ্ঞেয়োব্যোমটের পদার্কাঃ। ভ্তাশনপদার্কান্চ পুষা চ পদসংস্থিতঃ।৷ বিভথোদ্বিপদনৈত্ব পদৈকশ্চ
গৃহক্ষতঃ। বৈবস্বতঃ পদৈকস্থো গল্পকোদ্বিপদস্থিতঃ। ভৃস্পনৈচকপদোক্রেয়োম্গ
শচার্ক্রপদে স্থিতঃ। পিতরশ্বার্কাতে ক্রেয়াঃ পদে দৌবারিকস্থা। সুপ্রাবশ্ব পদোক্রেয়োহ্যেকস্থং পুস্পদন্তকঃ। মাদসাংপতিরেকস্থোহ্যসুরস্ত দ্বিসংস্থিতঃ। শোষনৈতকপদোজ্বয়োহ্যক্রিগঃ পাপ ইষ্যতে। রোগশ্বার্ক্রপদে জ্রেয়া নাগশ্বাপি
পদে স্থিতঃ।৷ মুখ্যশ্ব দ্বিপদে জ্রেয়োভল্লাটঃ পদসংস্থিতঃ। যজ্ঞেরপদে জ্রেয়ো-

শ্চিয়াঃ। রুদ্রদাধঃ কোণস্থিতসা রাজ্যক্ষাণোরুদ্রেণ সহ বামহস্তে চ পূর্বং স্থিতেত্যুক্তঃ। অসুপো বরুণঃ। পুষ্পকঃ পুষ্পদন্তঃ। ভূষ্ণোভৃষ্ণরাজঃ। ক্ষিক্ কটী। শকোবিবুধাধিপঃ জয়ন্তস্যাধঃ কৌণ-বভী। মেটে মেটুয়োঃ এবং মূর্দ্ধমুখবকঃস্থ তিম্বক্ষেষু প্রত্যেকমেকইতি তরঃ। স্তনাদিদশযুগলে য চ প্রতিযুগলং দ্বাবিতি বিংশতিঃ। বাহ্বোঃ পঞ্চ চ পঞ্চ চেত্যক্তেস্তয়ে।র্দ্দন। হন্তয়োঃ পাশ্ব য়োশ্চ প্রত্যেকং দ্বয়োক্তেরটৌ জঠরে চৈকস্মিন্ দ্বৌ। পাদরোঃ পিতরস্তথেত্যক্তেরয়োঃ পিতৃগণ এক এব। হৃদয়ে চ মর্মনি ব্রৈটক্ষকএবেতি সর্বেষ্প্রের্ পঞ্চত্মারিংশদ্দেব্যভাগোজেয়:। চক্তঃ যটি প্রদমণ্ডলমাহ চন্তরিতি দ্বাভ্যাং। ব্রহ্মণঃ প্রাস্থেদ নান্যস্য। শ্রীহয়শীর্ষমতে চ সর্ববৈত্যবেত্যগ্রে ব্যক্তং ভাবি। ভদ্বৎ একাশীতিপদবন্মধ্যে ব্ৰহ্মা সচাত্ৰ চম্ভপদ ইত্যৰ্থঃ। ভতোব্ৰহ্মা এককোণেয় যেষু চপ্তরু পূর্ব্বমেকপদাঃ স্থিতাঃ ভেষু চাত্র কোণেষু রেখা দন্ত্রাফীবর্দ্ধপদাঃ স্থিতাঃ কার্য্যা-ইত্যর্থ:। কিঞা মণ্ডলস্য বহিশ্চন্ত:কোণেযু চ ডথৈবাফৌ।। মণ্ডলবহিঃ কোণানাং তেবাস্ত-রতঃ পার্শ্বরে অটে দেবাঃ সার্দ্ধপদাঃ স্থিতাঃ কার্য্যাইত্যর্থঃ। বাছাত্তরাইকোণের্দ্ধপদাঃ বোড়শ। তেচাগ্লিদক্ষিণকোণাধ্বক্ৰমেণ বহিঃ শিখ্যাকাশবায়ুমূগপিতৃপাপরোগাদিতয়োইউ। বস্তুষ্ট তথৈব সাবিত বিবুধাধিপ জয় রুদ্র রাজ্যক্ষ চাপবৎদ স্বিত্রহস্থরাঅফৌ জ্রেয়াঃ। অফৌ চ मार्क्त भनाः। তে ঈশান দক্ষিণ ক্রমে নৈব প্রজ্ঞান্ত পূষ ভৃঙ্গরাক দৌবারিক শেষা হি অদি তয়ে। জ্যোঃ। দ্বিপদাশ্র বিংশতিঃ। তত্তিকাশীতিপদ্যমণ্ডলস্য পূর্ব্স্যাং জয়স্তাদ্য়ং ক্রেশ চত্তারঃ। তথৈব দক্ষিণস্যাং বিতথাদয়:। পশ্চিমায়াং স্থগ্রীবাদয়:। উত্তরস্যাৎ চ মুখ্যাদয়:। ত্রহ্মণ: পূর্ব্বাদি-চত্তর্দিকু চার্যমাদরশতত্বারইতি বিবেচনীয়ং। মধ্যে ব্রক্ষাটেচকশ্চত্তপ্রাদইত্যেবং চতঃখটি-পদেযু পঞ্চত্ত্বারিংশদেবাজ্ঞেয়াইভি। তথাচ বারাছাং। অফীফকপদমথবা কৃত্বা রেখাস্ত কোণগান্তিয়ক।। ব্ৰহ্মা চক্তপদেহিমম্ব্ৰপদাব্ৰহ্মকোণেছাঃ । অটে চ বহিঃকোণেছপাৰ্ব্ধপদা-স্তত্ত্বয়তঃ স্থিতাঃ সাদ্ধাঃ। উক্তেভ্যোষেশেষাস্তে দ্বিপদাবিংশতিশেতি ॥ ৫৫॥ চন্ডঃযফিপদ-বিভাগমাহ চন্তরসীক্তইতি। অউধা অফাউত্বেন উভয়তঃ। তির্ঘ্যপূর্দ্ধনবনবরেখাভিভাঙ্গিতে কুভভাগে কেতে কোণরেখাং দৃত্ত্তি বহিশ্ভাকোণের মধ্যে মধ্যে রেখরাইর্জার্ত্বনাটভাগান্

নাগরাড় বিপদে স্থিতঃ। পদস্থা জ্ঞীনহাদেবী আদিতিশ্চার্ক্তনংস্থিতা । ৫৬।। আপো জেয়াস্থ পদগাপবলী বিপদাস্থিতা। চতুত্বদস্থোজেয়স্থ অর্মনা প্রমাধ্যনঃ। সবিতা তু পদে জেয়ঃ সাবিত্রী চ পদে স্থিতা। ততোবিবস্থান্ বিজ্ঞেয়শ্চতুক্তরপদে স্থিতঃ। ইন্দ্রশ্চন্দ্রে জায়শ্চিব একৈকে সংব্যবস্থিতে। নিত্রশ্চতুত্বসম্পদে প্রিতঃ। ইন্দ্রশ্চন্দ্রে জায়শ্চিব একৈকে সংব্যবস্থিতে। নিত্রশ্চতুত্বসম্পদ্ধ বিজ্ঞেয়োল ব্যবস্থিতঃ। কৃত্রঃ পদৈকসংস্থেবি যক্ষাটেকপদে স্থিতঃ। ধরাধরশ্চ বিজ্ঞেয়োল হাজুবে চ চতুত্বপদঃ। চতুর্বু গশ্চতুক্ক স্থোমধ্যে জেয়ঃ প্রজাপতিঃ।। ৫৭।।

অথ বাস্তপূজা। মাৎস্যে অথাতঃ সংপ্রবক্ষ্যামি প্রাসাদবিধিনির্বং! বাস্তৌ পরীক্ষিতে সমাক্ বাস্তুদেছবিচক্ষণঃ ।। বাস্তৃপশমনং কুর্য্যাৎ পূর্দ্ধমেব বিচ-

কণপ্রিত্বেত্যর্থঃ ॥ ৫৬॥ পদগা আপোজেয়াঃ বিদর্গলোপে দল্লিরার্যঃ। আপবলী দিপদন্থি। এবমত্রার্গপদাশ্চত্তঃকোন্সেটৌ। তল্লধ্যপ্রতিদিশং যড়িত্যেবং চন্তাদিক চন্তবিংশভিরেকপদা এবঞ্চবহিছাত্রিংশং। মধ্যে প্রলা চন্তম্পদঃ। তদ্য চন্তাদিক চন্তারশ্ভম্পদাঃ। তচন্তকোণীয়-বোড়শপদেয় চাটৌ দিপদা ইত্যেবং চন্তঃযফিপদেয় পঞ্চত্বারিংশদেশতাবিভাগাঃ। অত্র দেবতাবিভাগক্রন্দ বক্ষামাণপূজাক্রমাপেক রৈবোক্তঃ নচপদক্রমাপেকরেতি জ্রেয়ং॥ কিঞ্চ। মাংস্যোজদেবতা নামস্থানবিভাগাদিভেদশ্চ প্রাসাদাধিষ্ঠাত্দেবাদিভেদতঃ কম্পনীয় ইতি দিক। এতফ্রীহয়শীর্ষদেবোক্ত বিভাগান্ত্র্যারেবি শ্রিক্তাদেবাচার্যপাদৈবিভাগে। লিখিতঃ। কেবল-মংস্যোক্তাক গারেবিভাগামানি লিখিতানি তচ্চ পূর্বেং চলমূর্ত্তিপ্রতিষ্ঠায়াং লিখিত মেবান্তি। ৫৭।

হে বিচল্ল।ইতি তত্তস্থ শ্রোভূলাং সংঘাধনং। ৫৮॥ বাস্তৃপশ্মনপ্রকার্মাই॥ একা-শীতি ইত্যাদিনা। পিউকোর্লন্য লিখিত্বা যদ্বা পিষ্টকৈ রিত্যস্য পরেণাম্বয়ঃ। কুণ্ডনির্ম্মাণাদি বিধি বিশেষক পূর্ব্যৎ দীক্ষাবিধৌ নিখিতএব।স্তি হোমাদৌ চায়ং বিশেষোগ্রন্থান্তরাত্মনারেণ শিষ্ট-লমতাজ্ঞেরঃ। তথাই। তম্মিন্কুণ্ডে গোময়োপলিপ্তে সিকতোপকীর্মে যথোক্তহোযোপকরণা-ল্যুপস্থাপ্যাচার্য্যে ত্রহ্মবরণং বিধার স্থগৃছোক্তবিধিনাগ্নিমুপদমাধার মণ্ডলদ্মীপং গত্বা শিথি-প্রত্তি পঞ্চম্বারিংশদ্বেতাঈশানকোণাদিপ্রউপদেয় বটপঞ্চাশছন্তরশতদ্যুদংবৈগ্র্যক্ষমান মুটিপিরিনিতৈত্ত গুলৈঃ সপ্রণৰ মহাব্যাক্ত ভিরাবাছ তৈরেৰ স্থাপরিত্বা প্রণবাদনমোহত্তেন স্বনামমন্ত্রেণ প্রত্যেকং প্রাদ্যাদিতায়ূলা নৈর্ফপচারেরর্চন্তে। অথ কুওননীপমেত্য স্বগৃহ্যোক্ত বিধিনা ত্রক্ষোপবেশনাদ্যাজ্যভাগান্তং কর্ম নিক্তি শিখ্যাদিপঞ্চত্বারিংশদ্বৈতাভাঃ প্রণব-ব্যাহ্নতি পূৰ্বেণ মহাব্যাহ্নতিপূৰ্বেণ চ তপ্তত্মন্ত্ৰেণ ক্বাদিভিঃ পলাশাদীনামন্যতমসমিদ্ভিবি কুশ দুর্বাদিভির্বা প্রভ্যেকং দশদশাত্তীক্তি ত্য়াৎ। কেচিন্তু শিখ্যাদিদেবভান্তঃ প্রত্যেকমাছ্টি-দশকং প্রজেশায়াছ্ভিশতমিত্যাহঃ তথা প্রক্রাপতয়ে উক্তর্ত্তাণামনাতমেন প্রাক্রাপত্যেন মস্ত্রেণ শতমান্ত্রীর্জ্ঞান। ওঁবাস্তোস্পতেপ্রতীকানীক্ষান্ স্বাবেদোঅনমীবা ভবামঃ যদ্ধী মহেপ্রড়িতং নোজুষস্ব বামোভবলিপদেশং চততপদে।। ওঁবাস্তোষ্পতেপ্রতরণোনরায়ধিশয়স্কানো-গোভির্যেভির্ক্ষৌ অভরাস্বসংখ্যেস্যাম পিতেব পুতান প্রতি তল্লোজুষস্ব ওঁ বাল্ডোপতেগগ্ন-পাপং সদা তে শক্ষম হিরণায়াগাতুমাদ্যাপাহিকেম।। উভযোগে চরংনোপুগতেশ্বস্তিভি সদানঃ। उँ अभीव हा वास्त्राच्यार विश्वास्त्रां गामिन नः मथा मूर्यमाधन । उँ वास्त्राच्यार वास्त्रा नजः त्रीमाना हेक्चारज्जा अवाश्मचजीनामित्ना मूनीनाः नथा नहा ॥ अक्षणिमं देखेः

ক্ষণাঃ।। ৫৮।। একাশীভিপদং লিখ্য বাস্তমধ্যে তু পিউকৈঃ। হোমল্লিমেখলে-কার্য্যঃ কুণ্ডে হন্তপ্রমাণকে ।। ৫৯ ।। যবৈঃ রুফ্ডিলৈডদ্বৎ সন্ধিদ্ধিঃ ক্ষীরবৃক্ষজৈঃ। शानारेनः थापिरेवर्राभागार्शाष्ट्रयवम्खरेरः । कूनम्द्रागरेवद्याभि मधूमर्भः नम-ব্রিভেঃ। কার্যান্ত পঞ্চিবিলৈবিল্লবীজেরখাপি বা। হোমান্তে ভক্ষ্যভাক্তে। ৰাস্তদেবে বলিং হরে । তত্ত্বিশেষনৈবেদ্যমিদং দদ্যাৎ ক্রমেণ তু। ঈশকোণে ঘূতারন্ত শিংখিনে বিশিবেদয়েৎ। ওদনং সোৎ পল৲দদুয়াৎ পজ্জনিয়ায় ঘৃতান্বিতং। লয়ন্তীয় খুজং পীতৎ পৈটৎ কূমঞ সন্ত্যজেৎ। ইন্দুায় পঞ্চমত্রানি প্রৈটঞ কুলিশং তথা।। বিভানকঞ্ সূর্যায় ধূমুং রক্তং তথৈব চ। সভাায় ঘৃতগোধূমৎ মৎসান্ मना ए ज्या हा। मक् नीका खतीका य पना ए मक् ्र के वायत। भूछे नाका ख দাতব্য বিভথে চণকোদন। পূহক্ষতায় মধ্মৎ যমায়াপি শ্তৌদনং। প্রো-मनक गञ्जार्स ज्यम । मृक्षकः। मृगाय यावकः (मयः शिज्जाः क्रमता मजा। मोवादितक पष्टका छे र रियरे क्रम्प विनः ज्या ।। मू शोव भूभकर प्रमाद भूष्य 'मछात्र পারসং। কুশন্তম্বেন সহিতং দদ্যাৎ পদ্মক বারুণে। পৈন্টং হিরণুয়ং দদ্যাদসুরায় সুরা মতা। ঘৃতৌদনক শোষায় গোধাং বৈ পাপযক্ষণে।। ঘৃতলড্ডুং म्ह द्वाशाय नामपुर्व्यक्ताविष्ठ । मिर्मिर्थाय माठवाः मुक्तोपनमजः পর্থ।। ভল্লাটায় ভতোদদ্যাৎ সোমায় ঘৃতপায়স্থ। সর্পায় পৈইৎ সালূক मिरिका लाशिकास्था मिरेकास शृविकाः ममामिरकावः वाहारकाविकः । कोत মাপায় দাতব সাগবৎসায় বৈ দ্ধি। স্বিত্রে লড্ডুকান্ দ্দ্যাৎ সম্বীজান কুশৌদনং। সবিভর্ডপূপাংশ্চ জয়ায় ঘূভচন্দনং। বিবয়তে তথা দদগাজক্তচন্দন্ পায়সং। হরিতালৌদনং দদ্যাদিন্দায় ঘৃতপায়সং। ঘ্তৌদনঞ্মিত্রায় রুদ্রায় ঘৃতপায়সং। আমং পকৃং তথা মাংসং দেয়ং স্যাদ্রাজ্যক্ষণে। পৃথী ধরায় মাৎসানি কুআগুায় চ দাপয়েৎ। শক্রাপায়সৎ দদ্যাদর্য্যে, সক্ষাঃ ক্রমাং। নমস্কারান্তযুক্তেন পায়সং পুনরেব চ। পঞ্চাব্যং ববাং শৈচব তিলাক্ষত

প্রতিমন্ত্রং পঞ্চ বিল কলানি বিল্ বীজানি বা একৈকশোজ্ছয়াৎ। বনবাস্তৌ তু বাস্তোশাতীয় ছোমাৎ পূর্বাং বনপায় স্থাহা শিথিধুজায় স্থাহা সোমায় স্থাহা নাগরাজায় স্থাহা ইত্যাদি মট্ত্রেঃ প্রত্যেকদৈবতং যবাদিহোমজব্যাণা মন্যতমেন জ্বোণাই সহস্যাই শতাই বিংশ্তান্যভ্য সংখ্যাকা আহতীর্জ্জ হয়াদিতি। প্রীহয়শীর্ষে মতে চায়ং হোমোবিশেষবলিদানানস্তর মেব। তচাত্রে ব্যক্তং ভাবি।। ৫৯ ।। অথ পূর্ণাছতিং দত্বা বাস্তাদৈবতাজ্যস্তদভীই বলিং প্রত্যেকং দদ্যাদিত্যাই তছদিত্যাদিনা। তত্র তুশিখিনে অয়ং ঘৃতায়বলির্ম ইত্যাদি বাক্যং। বৈপইং পিইনির্মিতং ঘৃতগোধুমং সঘৃতং গোধুমায়ং। মৎস্যান্ মৎস্যান্ কেবলমৎস্যান্বা। বৈষ্টং কৃষ্ণং বলিং কৃষ্ণবর্গিইবলিং চ বর্লণায় দদ্যাৎ। নাগে অহয়ে। ভল্লাটায়ন্মুদ্রোদনং। গুরৈভার্বির্মির্মান্তাদনং। গুরৈভার্বদেশদনং

व्विभावत् । जमार्डाकाक विविधा जनात विनिद्यमस्य । अवर मार्श्वका स्वाः শান্তিং কুর্মন্তি তে সদা।। দর্মেভ্যঃ কাঞ্চনং দদ্যাৎ ব্রহ্মণে গাং পরম্বিনীং ॥ ৬০॥ हाकजीना विवासिता अणि यामृक् छथा मृगु। मार्त्रीपनः घृष्टः भवार कमात्रः र्शिवशास्त्रिकः ॥ ७३॥ केमानकाश्योधिकः हेन्नरेकः विनिद्यप्रसः मार्शिमनः সরুধিরং ছরিদ্রোদনমেব চ। আগ্নেগ্নীং দিশমাশ্রিত্য বিদার্থ্য বিনিবেদয়েৎ। দধ্যোদনৎ সরুধিমন্থি থত্তিশ্চ সংযুত্ৎ। পীতরক্তবলিং দদ্যাৎ পূতনা যাত রাক্ষসী। वांश्रता পाश्रताकरेमा मश्मामारममूतामूत्रामुत्रा। ७२ ॥ शायमर वाशि माख्यार স্বনামা সর্বতঃ ক্রমাৎ। নমস্কারান্তযুক্তেন প্রণবাদ্যেন সর্বতঃ।। ৬৩।। ৬৬ঃ সর্বেট-যক্রিলানৎ যজমানস্য কারয়েৎ। দ্বিজাৎস্ত পূজ্যেদ্বক্ত্যা যে চান্যে গৃহমাগতাঃ ।।৬৪।। এতদান্তৃপশ্মনৎ কৃত্বা কর্ম সমারভেৎ। প্রাসাদভবনোদ্যানপ্রারভে পরিবর্জনে। পরবেশাপ্রবেশেযু সর্বদোষাপনুত্রে। ইতি বাস্তৃপশমনৎ ক্রা সূত্রেণ বেইয়েৎ 11 ७৫ !! त्रक्षांत्रभवन्नात्नन मृत्कुन खरना मिकर । नृष्ठामक्षात्राम कूर्याध्राक्तन বাচনং। অনেন বিধিনা যন্ত প্রতিসংবৎসরৎ বুধঃ। গৃহে বায়তনে কুর্য্যাৎ ন স मुल्यान मुखार । नह व्याधिक सर जमा नह वक्त्यनक सरे। की विवर्षन छ । बर्ल क न्या कर বিনেল্লর ।। ৬৬ ।। হয়শীর্ষপঞ্চরাতো। এবং প্রগৃহ্য কোষ্ঠানি রজসাপুর্য্য দেশিক:। এভেঘালেব দেবানাৎ বলিৎ দদ্যাভূ কামিকঃ। ঈশানায় প্রদাতব্যং পায়সং মধুনা সহ। পাৰ্জন্যায় জলং দেয়ং পুষ্পাগন্ধাধিবাসিতং। জয়ন্তায় প্ৰদাভব্যা পাতাকা পীত-বর্বিকা। সুরেশ্বরায় র্জানি ভাক্ষরায় ঘৃতং তথা। ধূমুকং পীতবর্ণৎ বা সত্যে দদ্যা-বিভানকং। দদ্যাঞ্শে পক্ষিমাৎসং ব্যোনায় শ্রুবনগ্নয়ে। পুষ্ণে ধানাঃ সলাজান্ত সুব-র্ণ বিভয়ে ভথা। গৃহক্ষভায় মধুরৎ হনায় পিশিতৌদনং ন গলং গলাবাদেবায় ভ্রে

গীববর্গভক্ত মিতার্থঃ। ঘৃত সংযুতং হরিতালীদনং বলিবিশেষং দল্পা পশ্চাৎ ক্রমেণ সর্বেজ্যঃ নিথিপ্রতৃতিভাঃ কাঞ্চনং প্রজ্ঞান চ ধেলুং প্রণবাদি নমোন্তচতুর্থান্ত তন্ত্রমাম মন্ত্রেণ দল্যাৎ।। ৬০।। জথ মণ্ডলাছহিরৈশানাদি বিদিক্চতুইয়ে ক্রমেণ রাক্ষনীভাশ্চতসূভ্যো বলিদানমাহ রাক্ষনীলামিতি চতুভিঃ। হবিবালিত মিতি পাঠে পদ্মকেশরঞ্চ হবিঃশহিতমেবেতার্থঃ।। ৬১।। যা প্রনা তদা নৈর্থতে দংখ্যাদনানি দল্যাৎ। স্থ্যাস্থ্যয়েঃ পৈকাদিভেদেন ভেদঃ।। ৬২।। বৈষ্ঠবিঃ কথং মৎস্যমাংগাদিকং দেয়মিত্যাশক্ষ্য পক্ষান্তরমাহ পায়সং বৈতি।সর্বতঃ সর্বেস্থানেষ্ স্বেজ্যোপি শিথিপ্রভৃতিভাঃ। এবমপৌনরুজ্ঞাং। নমকারান্তযুক্তেন নমইতান্তেনেতার্থঃ চন্তর্থানেষ্ স্বেজ্যাপি শিথিপ্রভৃতিভাঃ। এবমপৌনরুজ্ঞাং। নমকারান্তযুক্তেন নমইতান্তেনেতার্থঃ চন্তর্থানের চিতি জ্রেঃ।। ৬০।। যজমানস্য সর্বেষিধিস্পনং কার্যেদিভাত্রায়ং বিশেষো জ্রেয়ঃ। আচার্যাঃ প্রত্যাভাত্রা প্রাভ্রা প্রাভ্রা প্রাভ্রা প্রাভ্রা বিশেষা ক্রিয়ালাভিনিক্ষ ক্রিয়া পশ্চাৎ সর্বেষিধিজনেন স্বপ্রেদিতি। জন্যশালাদিনাকের পরিন্ত্রি শিকালারতে। জ্যেঃ। ৬৪।। পরিবর্জনে জীনোন্ধানাদিনা প্রাসাদাদীনামের পরিন্ত্রি সংস্কারে।। ৬৫।। রক্ষোমেন প্রসানেন চ ইক্রেন।। ৬৬।। এবমিতি শিবঃ কোণা-

मनाबु भाकुंनरी मृत्र विवयवाररेक्टव शिक्छाः क्रमत्र एथा। मोवाद्रिक मस्काछर मू शीर्व यावकः छथा। भूज्यमस्य कूमा (मग्ना वांकर्ण भष्ममू श्रमण । अनुतारेगक्रवः দেয়ং রস্থ শোষে ঘূতেদিন্থ। যাবস্ত দেয়ং পাপায় রোগায় ঘূতমগুকং। নাগায় নাগপুলাণি ভক্ষ্যান্ মুখ্যায় দাপয়ে । চিত্রৌদনপ্র ভল্লাটে সোমায় সধুপায়দং। নাগায় চাপি শালুকং শ্রিয়ে সরসপায়সং। আদিতৈঃ পুরিকা দেয়া ক্ষীরঞ্চাড্যোদ-प्यक्ति। प्रिकातिः ठाभवरेसा कर्याया सङ्क्र वितः । कूरमाप्तकः मवित्व ठ সাবিত্তে গুড়পূপকং। বিবশ্বতে রক্তপুত্প । রক্তচন্দনমেব চ। হরিছানং তথেক্রায় লাজ্যৎ নিত্র হার চ। ঘৃতপূর ং তমি আয় রু দায় গুড়পায় সং। আমপকানি মাং দানি अम्मा आक्यक्य त्। भृथी धतायाम मारमः थङ्गमारमर विनर इति । नाककः निति है हेव পঞ্চাৰ্যং তথা চক্ষং । কুশান্গন্ধং তথা পুষ্পং ব্ৰহ্ম ছানে নিবেশয়েৎ ।। ৬৭।। আমমাংসং পূর্বভাগে সর্বাক্তকে ত মোদকং। সিতপালং ঘৃতং মাংসং বিদার্থ্য চাগ্নি-कांगरक। क्नांता भूभकर माममर्या मुदियव पिकाल । भिखरिक्षव छथा त्रक्तः भूखरेन। বৈশ্বতি তথা। সাসৃক্মাংসং প্রদাতব্যং জন্তকারৈ বিপশ্চিমে। ভারিথভৈশ্চ সহিতং রক্তপতিতন মিশ্রিত। প্রদেয়ং পাপরাক্ষন্যৈ বায়ব্যাং মাৎসমেব চ। উত্তরেপি लिभिष्हारेय मासुर ब्रख्यः विनः हरब्र । वादारेहा हागमारमानि धेमानाप्रकिमि-দাপয়ে ।। ৬৮।। ভভোভূতগণানাংস্ত রাক্ষসানাং সুরোত্তম। পিশাচানাং গণানাং ভ বলিদেয়ি জ কামিকঃ।। ৬৯।। এতান্বা পূজ্রেৎ সর্কান্ কুশপুজাকতিবুধিঃ। এবৎ সংপূজিতা দেবাঃ শান্তিপৃষ্টিপ্রদান্গাং ।। ৭০ ।। অপূজিতা বিহিংসন্তি কার-কং স্থাপকং তথা। তন্মাদেতাংস্তি সংপূজ্য গল্পপুল্পৈর্নাহরৈঃ। প্রাসাদং কারয়ে विवान् गृहर वा जुद्रमञ्जस ।। १०।।

অথ প্রাসাদমূলারস্তঃ ।। তত্তিব ।। ব্রহ্মস্থানে ততঃ কুর্য্যাৎ বাসুদেবস্য পূজনং। প্রিয়ঃ সংপূজনং কুর্য্যাৎ স্থাকিশগণস্য চ । পূজনস্ত ততঃ কুর্য্যাদ্বাসুদেব গণস্য চ।

किल। एक वे हे जा नित्मा कि विकाश कर्णात्व (कार्षा निवास क्षेत्र) विकाश । जिलानः जिलानः कियानः कियानः कियानः विकाश कियाने विकाश कियाने

গক্ষার্যপুষ্প নৈবেদ। ধূপদীপৈঃ সুরোভম । ভতঃ সংপূজ্যেত্তিমন্ সর্কলোক-थताः महोः। मुक्तभाः श्रममाकभाः निवाधित्र प्रकृषिकाः । धाष्ट्रा ममर्कात्र-দেবীং পরিস্তটাং সিভাননাং। ততঃ প্রণম্য বিজ্ঞাপ্য তন্ময়ত্বেন চিন্তয়েৎ। ততঃ খনামমজেণ স্কামরম্মং পরং। ধ্যাত্বা সমর্চয়েত্ত যভবাস্তম্মং নরঃ । ব্রহ্ম-ভাবে ততোবিষ:ন্ কুর্যাদাধারমক্তিঃ। তিমান্ সংস্থাপয়েৎ কুন্তং বর্জন্যা, সহ পূজিতং । रेहम तो ताज्ज र वालि मृत्याः वा मृष्ट नवः। नक्वीरकोषधी युद्धः সুবর্ণরজভান্তিতং । রত্নগর্ভং সুসংপূর্ণং বস্ত্রপূতেন.বারিণা । প্রশন্তপল্লবোপেতং খেতচন্দনচচিত্তি । পুলৈ: সুমানিতং কল্ব। গলপুলৈপিবিধূপিতং। আহতেন ভ শু-ক্লেন বস্ত্রযুগ্মেন বেষ্টিতং ।। ৭২ ।। ব্রহ্মন্থানে ততোমন্ত্রী কলসৎ স্থাপ্য পূক্ষয়েৎ। তি সাংশ্চস্তম্যু থং দেবং প্রজেশং মন্ত্রবিগ্রহং। গল্পপুলৈশ্চ নৈবেদ্যৈ: সুমনোভির্মনো-হরৈঃ। হতোমণ্ডলবাহেঃ তু প্রাচ্যাং বা প্রাধ্মুখঃ স্থিতঃ। আচার্য্যোগৃহ্য সংভা-রান্ গ্রহাদীংস্প্রেৎ সুরান্ । ঘূতৈন্তিলৈয় বৈশ্লী একাদীংস্প্রেৎ ততঃ। প্রজেশং তর্গরে দ্বানাহ ভীনাৎ শতেন চা ইতরান্দশতি দেবানাহ তিভিঃ প্রতর্প-য়েং। দদ্যাং পূর্ণান্ততিং পশ্চাদৌসড়ন্তেন মন্ত্রবিং ।। ৭৩।। ততঃ প্রণম্য বিজ্ঞাপ্য क्षणारि स्रिवाहनः। अगृश् कर्कतीः नगाग्न छन्छ अनिकाः। मृजमार्शन निर्दान ভোয়ধারাৎ ভ ভাুময়ে । পূর্ষপূর্ণেন নাগেণ সপ্তবীজানি ভাুময়ে । সুশোভনং শুভস্থানং তথা থাতস্য কারয়েছ। 198!। ততোগর্জং খনেমধ্যে হস্তমাত্রপ্রমাণকং। চন্ত র**জুলমাত্রং তদধঃ খন্যাৎ সুদংমিত১ ।** গোময়েনোপ**লিপ**্যা**থ** চন্দনেন বিভূষরে**ৎ**। মধ্যে দত্ত্ব। ত পুস্পাণি শুক্রান্যক্ষতমেব চ। আচার্য্যঃ প্রাত্মুখো ভূত্বা ধ্যায়েদেবং চত्रक्र ।। १७ ।। जूर्यामञ्जलाधारमन जन्मायायत्त्वन ना । व्यार मनाष नूत्रव्यक्रे কু স্ততোয়েন মন্ত্রবিং ।। ৭৬ ।। প্রগৃহ্য কর্করীং তাবভচ্ছু ভুৎপুরয়েজ্জলৈঃ । সর্বারস্থ ময়াকীনৈধিমলৈঃ সসুগন্ধভিঃ ৷ ११ ৷৷ তিমান্ শুক্লানি পুলাণি প্রক্ষিপেদে।মিতি মা-রন্। তদা বর্ণপরীক্ষেত বেদাদে। ক্ষতে কিপেং। শুভংস্যাদকিণাবর্ভিইশুভং বামে ভবেত্তভা । ৭৮ ।। বীজৈঃ শালিহবাদীনাং তৎ গর্ভং পূর্যমনুধঃ। কেত্র-

যন্তদিত্যব্যাং প্রিনিক্ষা। ৭২। স্থাপ্য স্থাপরিত্বা। কলসস্থাপনং চেদংবিশেষবলিদানাৎ পূর্ব্বামেবিতি কেষাংচিশ্বতং। তথা হোমশ্চ তদানীমেবেতি মাৎশ্যপুরাণস্মতংলিখিতমেব। ৭৩।। প্রদক্ষিণং যথাস্যান্তথা ভামরেং। সপ্ত বীকানি যব গোধুম ধান্য তিল কলু শ্যামাক নীবারাত্মকসপ্রধান্যানি ॥ ৭৪।। তদনস্তর মাচার্য্যো যক্ষমানো বা উদ্ধ্যুখা শক্তো স্বর্ম কুদ্যালেন প্রার্ভ্য যোগ্য খনিত্রেণ হস্ত প্রমাণং গর্ভং খনেব।। তস্যুগর্ভস্যাধশ্চন্তরকুলমিতং খনেব। তস্যুগর্ভ রাজতোতিলকরা প্রকাদি চন্তর্দিক্ষ্ প্রাদক্ষিণ্যেন নিঃক্ষিপেদিতি শিক্ষাচারতো ক্ষেরং।। ৭৫।। কুম্ভতোরেনেতি ব্রক্ষানে স্থাপিতং কুম্ভং তৃর্যমঞ্চনযোগদিনবানীয় ত্রা জলেনার্যাং দদ্যাদিত্যর্থঃ। মন্ত্রব্দিতি মন্ত্রন্থায়ং। ওঁনমোবরুণায়েতি ।। ৭৬।। জলৈ স্তর্ক্তীস্থ্রেব্রুণায়েতি ।। ৭৬।। জলৈ

काणिः পविज्ञानि म् क्विर्गर्खः ध्रभूत्रद्मः। এवः निष्णामः विधिनोप्तर्यः मानः मूद्राख्य। मूवर्भ गाःव अयुग्रामानार्य। मिरवप्रदार । किलक्ष अपनी भूष्कि विक्षवान् में किर्छा-र्कत्य । जान्नानान् ভोष्टिश्चां । श्वामिन कार्यस्य ।। १८।। छठछ था । १४।। জাং জলাত্তং যাবদেবতা প্রবাধঃ স্থিতং শল্যং ন গৃহে দোষদং ভবেং । প্রাসাদে मियमः मन्। ভবেদ্যবিজ্ঞলান্তিকং । ভন্মাৎ প্রাসাদিকী ভন্নী শোধ্যা যাবজ্ঞলা-স্তিক্ষ। শিবান্তং কর্করান্তং বা যাবদা ভূঃ কুমারিকা। আকোট্য তাং সমীক্ষত্য ভতো যাগং সমাচরে । কিঞা। পূরয়েৎ থাতকং যত্নাৎ পাদং পাদং যথাক্রমং।। ৮০।। অধ্যাপুলং মৃত্তিকয়া স্বস্তিকং চেষ্টকাদিভিঃ । সিক্ত্যা সিক্ত্যাত্ত তোয়েন কলসৈঃ কাঞ্চনাদিভিঃ। আকোটনং ততঃ কুর্য্যাৎ মুলারৈ ব্রেক্সবৃক্ষ জৈঃ। পাদোনং পূরয়েৎ খাত পুসন্ধের কার য়েৎ। দেশিকঃ পঞ্চাব্যেন তাং ভূমিং প্রোক্ষয়েদ্ধঃ। সুবর্ণ-ত্রাহি গভেঁণ চুতপল্লবশোভিনা। তীর্থতোয় সুপূর্ণন স্বর্তামুময়েন বা । সেটয়ে-দভিজ্ঞেন ৰারিণা কলসেন স্ত। ততঃ শুদ্ধা ভবেড্যুমি র্দোষযুক্তাপি যা ভবেং। অথ শিলালকণং ।। মাৎস্যে। আদাবেব সমাসেন শিলালকণ মুক্তমং। শিলান্যাস বিধা নঞ্চ প্রোচ্যতে ভদনন্তরং ।।৮১।। শিলা বাথেইকা বাপি চত্যো লক্ষণান্তিতাঃ। প্রসাদাদৌ বিধানেন ন্যন্তব্যাঃ সুমনোহরাঃ। চত্তরসাঃ সমাঃ কৃত্ব। সমন্তাদথবেফকাঃ। শিলাৰপাং স্তাবিদ্যা নন্দাদ্যা শেচফকা স্বিকাং। সংপূর্ণাঃ সুতলাঃ স্নিকাঃ সুয়মাল-ফণান্বিতা:। কুশদুর্বান্ধিতাধন্যা: সধ্বচ্ছত্রচামরা:। সান্ধুশান্তোরণোপেতাঃ কুর্ম-মৎন্য ফলান্বিতাং। দর্পণাহস্তিবজালাঃ প্রশন্তত্তব্যলাঞ্ছিতাং। শন্ত প্রকিষ্গালাক ব্যাক্ষাঃ সর্বদা হি তাঃ ৷ স্ব স্তিকাঃ বেদিকা শুক্রা নন্দ্যা বর্ত্তকলাপ্তিতঃ ৷ গাআদি লক্ষ-ণোপেতাঃ শিলা স্কার্থসিদিদাঃ । তথা গোবাজিপাদাক্ষাং শিলাধন্য স্থাবহঃ। ক্রবাদমূলপাদাস্কান শস্তাঃ পক্ষিণস্তথা। দিখা চ: দিগ্রিনাশ্চ দীর্ঘুস্কাঃ ক্ষতান্তিতাঃ। বিবর্ণাঃ স্ফটিতা ভগ্নাঃ সংভাজ্যা লক্ষণচুতোঃ। প্রশন্তপ্রাণিরপাক্ষাঃ লাঞ্ছিতাঃ। যথোক্তলকণোপেতাঃ শিলা নিত্যহিতাবহাঃ।। ৮২ ॥

অথ ইউকালক্ষণং।। তত্তিব। ইউকানাং সমাসেন লক্ষণং শৃণু সাস্পৃতং। এক-বর্ণাঃ সুপকৃষ্ণ সুপ্রমাণামনোরমাঃ। নন্দাদ্যান্দেইকাঃ কাষ্যাশ্চন্তর সাঃ সুসংমিতাঃ। অস্থাঙ্গারোত্বিতানেষ্টাঃ ক্ষ্যবর্ণ সম্পর্করাঃ। মন্দপকৃষিপকৃষ্ণ বহুদিন্যাশ্চ বিজিভাঃ। ভরাশ্চ বিষয়াহীনা বহুদ্নীয়াঃ প্রযত্তঃ।। হয়শার্ষপ্রকাতে।। ইউকানাং প্রমাণঞ্

কিন্তু মৃত্তিকাভিশ্চেত্যাই ক্ষেত্ৰজ্ঞাভিরিতি। ৭৯। আকোট্য দৃচমুক্ষারাদি প্রহাবৈঃ কুট্টনং কৃত্রা। যাগবিধিরত্রে বিজ্ঞাপাঃ ॥৮০॥ স্বন্তিকং সমাগ্রধাসাৎ । যদা স্বন্তিকমণ্ডলাকারেণ অফাটা-ক্লকমেণ মৃত্তিকয়াইউকাভিঃ আদিশকাচ্ছিলাকর্মাদিভিশ্চ তংখাতং প্রয়েৎ॥৮১॥ সধ্বেদ্রভিশ্ব কিন্তু সহিতা ইত্যর্থঃ এবমগ্রেপি জ্ঞেয়ং। তথা প্রক্ষিণঃ ইতি ভ্রতপ্রিক্পাদাস্কাশ্চন শন্তা ইত্যর্থঃ। ৮২॥

লক্ষণং সাক্ষ্যিত শৃণু । সুতলা লক্ষণেপেতা দ্বাদশাকুলস্মিতাঃ। সুবিতারবিভাগেন নৈ পুনে চ সংমিতাঃ। ছিন্নকর্নাশ্চাপ্রশন্তাঃ পাণিপাদ বিবজ্জিতাঃ।।৮৩।।
সশক্রাঃ ক্ষবন্ আন্তঃস্থান্তিতা ন যাঃ। বিবর্ণ। মন্দগল্পাশ্চ যাঃ পীনপিত্তিকা তথা।
হীনাশ্চ বিষমাভগ্নাঃ জ্জারাশ্চ বিবজ্জিতাঃ।। ৮৪।। অথ শিলাদিন্যাস ব্যবস্থা।
মাৎস্যে। শিলান্যাসন্ত কর্তব্যঃ প্রাসাদে ত্ত শিলাময়ে। ইউকানাৎ ত্ত বিন্যাসঃ
প্রাসাদে চেইকাময়ে। শৈলজে শৈলজঃ পীঠ এইকে চেইকঃ শৃতঃ। শিলান্যানাদিকো ভদ্রে মূলপাদে বিধীয়তে।। হয়শীর্ষেচ। কর্তব্যংশুইকান্যাসঃ প্রাসাদে চেইকাময়ে। শৈলে, শিলানাং বিন্যাসং কার্করে কর্বরৎ ন্যাসং ইতি।। ক্স্তা শিলাদি-

বহু।দন্যান্তিরন্তনাঃ। হীনাউক্তলক্ষণরহিতা অভিনবা।।৮৩।। শ্রীহয়শীর্ষদেবেন শিলা লক্ষণং শ্রীমৃত্তি প্রাছভাব প্রদক্ষে পূর্ব্বমেবাক্ত মন্তি অধুনা ইউকালকণ মতোচ্যতে ইউকা-নামিতি দার্ক্ষচন্তর্ভি:। পাণিপাদে: উপর্যাধোভাটের বিবেজিভা:॥ ৮৪॥ মৎসাপুরাণামুক্ত মপি শিলাদিন্যাস শিলাধিবাসনাদিকং শ্রীহয়শীর্ষপঞ্চরাত্রং দৃষ্ট্বা লিখতি ক্তত্ত্বতি দ্বাভ্যাং। নত্ত্ শিলাধিবাসনাদিবিধিঃ কীদৃশইত্যপেক্ষায়াং লিখতি স্বয়মিতি ৷ ক্ষুটমিতি একত্রৈব ব্যক্ততয়। তত্র বর্ত্তমানত্রাদত্র ন লিখতইতি ভাবঃ। তথাচতত্র শিলাধিবাসনপট্লে। নবৈব পরিগৃহনীয়া-স্তামুকুন্তান্ স্লোভনান্। আহত্য সর্বসংভারান্ইউকামধিবাসয়েৎ । ঐশান্যাং মণ্ডপং কৃত্বা ভদ্বৎ প্রাচ্যাং চ মগুপং। কুস্তানামিউকানাঞ্চ ততঃ স্প্রপনমাচরেৎ। অধ্ পঞ্কবায়েণ শর্কৌ-यि कल्न ह। शक्ता ७ १ एत ह ज्या कृटेख खायस्थ्रिटेजः । हित्र गुजी हिन श्यूटेक र्मक न्मन-চর্চিটেন্ড:। আপোহিষ্টেতি ভিস্তৃতিঃ শল্পোদেবী চাপ্যথ । তত্তৎসমন্ত্রীন্তি তথা পাবমানীতি-রেব চ। উদ্ভন্ত বরুণেতি ইমশ্যেতি ভথৈব চ। বরুণস্যেতি মস্ত্রেণ হংসঃ শুচিবদিত্যপি। গ্রীস্ক্রেন তথা কুট্ডেঃ স্নাপয়েদিট কাংতথা। আনবণীয়ং পচন হক্তং কুডাংস্তান্ স্নাপয়েদ্ধা। ততোমুলেপনং কার্য্যং চন্দনেন স্থাক্সিনা । আচ্ছাদনং ততঃ কুর্য্যাদ্বাসোভিঃ কুস্থ মৈস্ততঃ। শ-যাায়াং ত প্রকৃষ্টায়াং মণ্ডপে স্থাপ্য পূজ্বয়েং। নানাপ্রখ্যৌদবৈত করে গল্পৈঃ পুর্তিপার্যনোহরৈঃ। ध्रभः मीश्रक्ष देनत्वमाः उचाः यञ्जानित्वमस्य । এवः कृषा ७७ः नमाशिकेकारशममाहत्व । र्जित्याश्तर म अपन निया देवस्थवः म अनः ए जः । विस् म जार्फर सच्छ कूट ए इसि । कूट्स खिलः । देवस-বালিং জ্বলিজাদৌ যথাবিধি সমাহিতঃ। কুর্যাত সমিধাধানং ছাদশকরবিদায়া। আঘারাজ্য দ্বিভাগৌ তু প্রণবেইনৰ কারয়েং। অফ্টাক্ষরেস্ততোব্যক্তঃ কুর্য্যাদফাছতীঃ ক্রমাং॥ আজ্ঞাং ব্যা-ক্তিভিছ ত্বা লোকেশানাং ক্রমেণ তু। অগ্নরে চৈব গোমায় গ্রহেভাইতি চৈব হি।পুরুষোত্ত-মায়েতি ভ্রা ব্যাহ্নতীজ্ভ্যাত্তঃ ! প্রায়শিষ্তং ততা ছ্রা দদ্যাৎ পূর্ণাভ্তিং ততঃ । দ্বাদশ্য-ক্ষরমক্ত্রেণ বেদালৈ।রথবানঘ । কুণ্ডেষু মূর্জিপাঃ সমাক্ জুভ্রুঃ সঘ্তাং জিলান্ ।। অথ পাতাল যাগপটলে চ ॥ কুম্ভন্যাদং ততঃ কুর্য্যাদিউকান্যাদমেৰ চ । দেশিকঃ প্রাঙ্মুখোভূত্বা দর্বাল-काরভূষিতঃ। বিলিপ্য 'গোমইয়ভূ মিং বিন্যদেৎ কলসালব ।। অফদিক ু যথান্যাসং মধ্যে চৈকং তथा नारमः। পঞ্রত্ন সমাযুক্তালঙ্গলৌষধি সংযুতান্। পারদেন সমাযুক্তান্ ক্তা বস্তেণ ভূবি-তান্। শতাং চৈব মহাপদং মকরং কচ্চপং তথা॥ মুকুন্দঞ্ তথানন্দং নীলং শতাঞ প্যিনীং। এতাস্ত্র দেবতাঃ কুন্তে নাসনীয়া যথাক্রমং। এবং বিনাস্য কলসান্ পুনবৈতান্ প্রচালয়েৎ॥

नामक श्राक्तिनां का धिरामन । इंग्रेनां ना श्राप्तिक गर्छाधानक कांद्र रहर। छत्र व पिक्तार क्षा भोठेवजाक माधरहर । ज्यार श्रीह्यमीरेक्व (श्राकुछ इधिः कृषे ।। ৮৫॥

অথ পীঠবন্ধন ।। इहमीर्थ । পীঠবন্ধং ততঃ কুর্য্যাত্মহাপ্রাসাদ মানতঃ । পীঠোত্তুম (চাচ্ছুয়েণ প্রসংদেস্যোর্জুমানতঃ । পাদহীনং মধ্যমং স্যাৎ কন্যসংচার্জি মানতঃ । উত্তমং বাসুদেবস্য কুর্য্যাৎ পীঠং বিচক্ষণঃ ।। ৮৬ ।।

कुञ्जरमा। পরি विनामा हेकेकारकी यथाक्रमः । क्षेत्रारन ए उदारकारन हेक्काक ज्या नारमः ॥ প্রদক্ষিণ ক্রমেটার ইফাঞান্যাসইয়াতে। শক্তয়ো বিমলাদ্যান্ত ইফাকানাং তুদেবতাঃ। ন্যাস-নীয়া যথান্যাশং মধ্যে ন্যস্তান্ততোগ্রহাঃ। অব্যক্ষে চাফতে পূর্ণে মুনে রঙ্গিরশঃ হুতে। ইফকৈ স্ব প্রয়াজ্ঞেইং প্রতিষ্ঠাং কার্য়ামা হং। মজেণানেন বিনাশ্য ইটাকা দেশিকোত্তমঃ। গর্ভাধানং ততঃ কুর্ব্যালাখ্যস্থানে সমাধিত ইত্যাদি ।। অত কেষাঞ্চিচ্ছিষ্টানাং মতমেবং। প্রাসাদস্য চভক্ষোণেযু চন্তরোগর্ভান্ বিধায় প্রতিগর্জোপরি বেদীং নির্মায় ততুপরি শুক্লতগুলান নিংক্লিপ্য ততুপর্যাগ্রে স্নাদিকোণেযু নন্দাদ্যাঃ শিলা ইটকাবা বিধায় প্রতিবেদীসরিধৌ স্থলকণং পঞ্পল্লবাদিযুতং নি-শ্মলজলপুরিতং কলদং সংস্থাপ্যায়েয়াদিয়ু স্ব্যবেছাপরি নন্দাদ্যাঃ স্থাপয়েছ ॥ ততঃ প্রশস্তেন কেনাপি বারিণা প্রত্যেকং প্রণবেন সংস্থাপ্য অস্ত্রায় কড়িতি পুনরপি স্থাপয়েৎ বস্ত্রেণ ভোয়মপ-নয়েছ্য। এবং চতস্বামপি প্রত্যেকং স্পনং বিধায় ওঁনন্দারৈ নম ইতি পক্ষপুষ্পাদিভিরুপ-हारेकः श्राटक्रम्कराय । ज्ञात्व विकासानमरेख्यां स्वाला श्रीडवानारवननिर्धारेवः स्वालिक्ष्व छा-ষ্বয়েং। প্রথমশিলাবত রবে প্রশন্ত শকুমাদিকম্পি নিরূপনীয়ং। শিলাস্ত প্রাপ্তভরপ্রবা ন্যস্তব্যাঃ ন ভু দক্ষিণপশ্চিমপ্লবাঃ। অথোদকাস্ত্রেণাস্ত্রার ফড়িতি স্নাপগ্নিত্বা মন্ত্রবারিণা স্নাপঙ্গেৎ। ততো দিব্যব্দপাং হেমাভাং জ্ভ্বিতাং স্মিতাননাং ভাং খ্যাস্থা মন্ত্রমুক্ষার্য্য ওঁভগবতি নন্দে ইছান शक्ष रेरे डिएरेटा वाक्ष देविन देकत्रि मरेखः अिकाशा पूर्वत्व मौकूर साम का माजा साम शिक्षा অবিশিষ্ট কুস্তোদক্ষেন ওঁ নন্দারৈ নমঃ ইতি স্নাপয়েৎ। ততো বস্ত্রেণ তোয়মপ্নীয় বস্ত্রগস্ত্রাং দিভিত্রপচারেঃ প্রত্যেকমর্চয়েৎ। ভতো ধূপয়িত্ব। পুনরভার্চ্চা সামান্যমুক্তাং বন্ধা দ্বিমাংসাদ্ देनर्वनार निर्वता। उनन्ति त्या । उन्तिन्त जुर नन्तरम पूर्मार तक्क मार श्रीपद्मामाइर। अखिन् महीकिमः श्रुकी यावमा ह जुल का तकर । का ग्रःका यर श्रिशः न तक प्रमामि मर्कामा नृगार । का श्रिन् तका ত্বয়া কার্য্যা প্রাদানে অবৃতঃ দল। ।। ইতি মল্লেণ নক্ষাং স্থাপয়িত্বা পূর্ববৈত্পচারৈভক্তামভার্চ্য ওঁভদ্রারৈ নমঃ ওঁভদ্রে ত্বং সর্বাদা ভদ্রং প্রংসাং কুম হিতাবহং। আয়ু:কামপ্রদা দেবি জীপ্রদা সর্বাদা ভব।। ততো জয়াং প্রাত্তি ওঁ জয়ে ত্বং সর্বাদা ভতে সংভিষ্ঠ স্থাপিতা ময়া। নিতাং জয় জয়ে দেবি স্থামিলোকয়দা ভব। ততঃ পুর্নাংপ্রতি ওঁপূর্ণায়য় নমঃ।। ওঁপূর্ণে স্থং চ মহাবিদ্যে সর্বসং-দোহ লক্ষণে। সর্বাং সংপূর্ণমেবাত প্রসাদং কুল্ল সংপদা। এবং প্রসাদয়েৎ। ততঃ প্রভৃতি শিলানা-মিইকামায়ে চালনং ন কর্ত্তরাং। তত্ত বাস্তু দেবগণাঃ সংর্প্ত আমাদায় পার্থিবাও।। ইউকাম-প্রসিদ্ধার্থং পুমরাগমমায়তেতি পটিত্ব। ক্ষমধুমিতি চোত্ত্বাচাযোঁ। দেবতা বিসর্জ্ঞায়েৎ ॥ ভতে। यक्षमानः आध्यूरधाशविद्यात्रार्वात्र मक्तिनार भार बर्ज्यानिकर ह जमार ।। अब खिलाहकान् देवरक स्मिक देवस्वारण मर्भूका मञ्जा जास्मान् (जाकदानिजि। ৮৫।। भीकेदासानाम आमा-मना मूनास्त्र मूर्। পরিভম ভাগ: २१व८ ।। ৮৩॥

ष्यथ श्रामामि नक्तरानि । नांरमा । अवः वाख्यनिः कृषा छट्यर सः एम ভাগिके । ভगामाथा हर्विष्ठ ভारेगर्गर्जे ह कांद्रराष्ट्र। ভাগদাमभाकः তত্ত ভিত্তার্থং পরিকম্পরেং। চত্তলিগে ভিত্তানামুস্ভায়: স্যাৎ প্রমাণভঃ। দ্বিতাণঃ শিখরোচ্ছুয়ো ভিত্যুচ্ছু য়াৎ প্রমাণতঃ। শিখরার্জন্য চার্জেন বিধেয়া ভ প্রদ-কিণা। চত্ত কিন্তু তলাজেয়ে। নির্পমন্ত তথা বুধৈঃ। গর্ভসূত্রদরং ভাগো বিভারো মগুপান্য । আয়তঃ সাাৎ ত্রিভিভাগৈ ভ্রেযুক্তঃ সুশোভনঃ । পঞ্চাগেন সংভজা গর্ভমানং বিচক্ষণঃ । ভাগমেকং গৃহীত্বান্ত প্রাপ্রীবৎ কল্পয়েৎ বুধঃ। গর্সূত্র সলোভাগা দ্রতে। মুখনগুপা। এতং সামান্য মুদ্দিউ। প্রাসাদ্দেশ্র লক্ষণ । ৮৭।। কিঞা মের মন্দার কৈলাস কুম্ত সিংহ মূগা তথা। বিমানচ্ছ-ন্দক তত্ব চতু বি ক্ষেত্ৰ মূগা ধিপা: । বল ভী চত্ন্দক তত্ব দ্ৰ তুলঃ সৰ্বত দক:। গল স্চ নন্দ-লৈটেশ্চৰ নন্দাবিৰ্দ্ধন এবচ। ছংসোৰ্ষঃ সুপৰ্ণশচ পালকোহথ সমুদ্যাকঃ। প্ৰাৰ্শাদানামভঃ প্রোক্ত বিভাগৎ শূনুত দিলাং। শতশ্সশংস্তর্গারে। ভূমিকা ষোড়শোচ্ছিতঃ। নানা-বিচিত্র শিখরো মেরুঃ প্রাসাদ উচ্যত । মন্দ্রো দ্বাদশ প্রোক্তঃ কৈলাশোদশ জুমিকঃ। বিমান হলক স্তম্বৰনেক শিখরাননঃ। সচাই ভূমিক স্তম্বং সপ্ততির্নিক वर्छनः। বিংশাণ্ডক সমাযুক্তো নক্ষনঃ সমুদক্তি। বোড়শাণ্ডক সংযুক্তো নানা-রূপ সমল্বিভঃ। অনেকশিখরতদ্বৎ সর্বতো ভপ্রউচ্যতে। চন্দুশালা সমোপেতো বিজেয়ঃ পাপাভূমিকঃ। বলভীছনদকস্তদ্বজুকনাসা ত্রয়ানিতঃ। ব্যাসভূমতভ্লোগ সণ্ডলশ্চাসু বজ্জি তিঃ। সিংহাসিংহ গতিজে যে। মৃগোম্গদমস্থা। কুড়ঃ কুড়াক্ষতি স্কৃদ্ধ ভুমিকানৰকে। জুৱঃ। অঙ্গুলীপুট সংস্থান পঞ্চাওক বিভূষিতঃ। যোড়শাসুঃ भणकार्ज् विष्ण्यः ममगूलाकः । भार्श्वाशान्त्र भाषामा छक्त्राया जूमिकाषयः। ষোড়শাসুঃ সবিজ্ঞোরা বিচিত্র শিখরঃ শুভঃ । মূগরাজস্ত বিখ্যাতশচক্রশালা বিজু-বিতঃ। প্রাগ্রীবেণ বিশালেন ভূমিকাস্যভুরতঃ। ভানেক চলুশালন্ত গজঃ প্রাসাদ উচাতে। পर्यारवश्यारकारिक गढ़ार्कः नाम नामकः। म खलूगाण्ड्यः च वक्षत्रमुणाला-ত্রয়ান্বিতং। ভূমিকাষড়শীতিস্থ বাহ্যতঃ সর্বতো ভবেং। তথানোগরুড়ে ভন্বদুচ্ছুায়ে-ममञ्जिकः। शवाकः वासमामुङ ज्ञिष्यसमित्रः। शवाङनाश्रमात्न श्रीवृक्षके है डि ন্তঃ। পঞাওকল্লিভূমিস্ত গর্ভে ইউচভ্রক্তরং। বৃষোভবতি নামু: যং প্রাসাদঃ সক্র-

কো দুশভাগিকংভকেৎ বোড়শভাগান কুব্যাদিত্যর্থ:।। তথাচোক্তং ।। প্রীংয়শীর্ষদেবেন ।।
চপ্তরেসীক্তং ক্ষেত্রং ভ্রেণ্ড বোড়শধা পুনরিতি। এবমগ্রে লেখ্য হয়শার্যপথ্যরাত্রবচনামুসারেগাত্রেংন্যতাপ্যর্থোবোজ্বরাঃ ।। প্রদক্ষিণাদরক প্রাস্থাদোপরিতনভাগবিশেষাঃ শিল্পিশাস্ত্রভঃ
স্থাতি ম্প্রসিদ্ধানব। তথেতি প্রদক্ষিণান্তল্যমান ইত্যর্থঃ।। তিভিভাগৈর্মণ্ডপ আয়তঃ স্যাৎ॥৮৭॥
নামতো লক্ষণতো মানতক্ষ বিংশতিপ্রাসাদানাহ মের্বিত্যাদিনা শুভলক্ষণ ইত্যন্তেন। ছাদ্শেতি

নামিক:। সপ্তান্তে পঞ্চধা চৈব প্রানাদা যে ময়োদিতা:। সিংহস্য তে সমা জেয়া যে চান্যে তৎপ্রমাণতঃ। চন্দুশালৈঃ সমোপেতাঃ দর্কে প্রাগ্ত্রীবসংযুতাঃ। ঐইকাদার-वारेन्छव रेमामा वा मूरः मरणावनाः । रम्बः भक्षामाक्षतः महार मन्द्रः भक्षशीनकः। চত্বারিংশজু কৈলাশশচত্ত জ্বিংশদিমানকঃ। নিদ্বর্দ্নকৃত্তবৃদ্য তিৎশৎ সমুদাহৃতঃ। ত্রিংশতানন্দনঃ প্রোক্তঃ সর্বভোভদ্রকন্ত্রণা । বহুলঃ পদ্মকশ্চৈব বিংশদ্বন্ত উদা-श्रुवः । मृगः मिर्दम् कूसम् बन्छोइन्मक खर्था । এতে साएमहस्राः मृत्रमञ्जातात्मव বলভা:। এবৃক্ষোমৃগরাজক সমুদাক গজো তথা । এতে দ্বাদশহস্তাঃ সুর রেতেষাং হৎ দকঃ সমঃ। গরুড়োইকরোজেয়ে। বৃষ্ট দশ উদাহতা:। এবংমতে প্রমাণেন কর্ত্রাঃ শুভলকণাঃ । ৮৮ ।। যক্ষরাক্ষ্যনাগানাং মাত্হস্তঃ প্রশ্স্যতে । তথা মেৰ্বাদয়: সপ্ত জ্যেষ্ঠলিঙ্গে সুথাবহাং ।। জীবৃক্ষকাদয়শ্চাটো মধ্যমস্য উদা-হৃতা:। তথা হং সাদয়ঃ পঞ্চ কন্যসে শুভদা মতাঃ।। ৮৯।। হয়শীর্ঘপঞ্চরাতে। প্রাদাদ সংপ্রক্ষ্যামি সর্বসাধারণং শূণু। চত্তর সুক্তিং ক্ষেত্রং ভঞেৎ যোড়শধা পুনঃ। মধ্যে তস্য চন্তর্ভিন্ত কুর্য্যাদারসমন্থিতং। দ্বাদশৈব ভ ভাগানি ভিন্ত্যর্থংরিপ-कल्लारप्र । कर्षाच्छायस कुर्यो ७ ठवर्जारान ठायुक्र । क्षर्याविश्वरणाच्छ्राया नक्ष-'র্যাঃ কম্পারেৎ বুধঃ । চত্তভাগেন মঞ্র্যাঃ কার্যা সমাক্ প্রদক্ষিণা । তন্মানং নিগ্মং কার্য্যমুভয়োঃ পার্শ্বয়োঃ সমং। শিখরেণ সমৎ কার্য্যমগ্রে জগতি বিস্তর্থ। ত্রিগুণে-নাপি কর্ত্তব্যৎ যথানোভানুকপতঃ ৷ বিস্তারং মগুপস্যাগ্রে গর্ভসূত্রদ্বয়েন ত। দৈ-र्या भागिषिकः कूर्या मासा खरेस सिन्धिकः । श्रामामगर्नमानः वा कूरी व मूथ-মগুপং। একাশীতিপদৈক্ষাস্তং ইফ্রা মগুপমারভেৎ। শুকাঢ্যদ্বারি বিন্যাদে পদীন্ত স্থান্ যজেৎ সুরান্। তথাপ্রাকারবিন্যাসে যজেদ্বাতি ৭ দতগান্। সর্কাধারণং চৈত ৎ প্রাসাদস্য ভ লক্ষণ । মানেন প্রতিমা যা বা প্রাসাদমপারং শৃণু । প্রতিমায়াঃ প্রমা-ণেন কর্ত্তব্যা পিশুকা শুভা। গর্ভস্ত পিশুকার্দ্ধেন গর্ভমানাণ্ডু ভিত্তরঃ ৷ ভিত্তেরায়া-মমানেন উছায়স্ত প্রকল্পয়েৎ। ভিত্যুচ্ছায়াতু দ্বিগুণং শিখরং কল্পয়েৎ গুরুঃ। শিখরস্য ত তুর্য্যেণ ভ্রমণং পরিকপ্পয়েৎ। শিথরস্য চত্তর্থেন অগ্রতো মুখমওপং। অউকাৎশেন গর্ভস্য রথকানান্ত নির্গমঃ ৷ পরিধেগু ণভাগেন রথকাংস্তত্র কম্পয়েৎ ৷ তৎ তৃতীয়েন বা কুর্য্যাত্রথকানান্ত নির্গমং। রামত্রয়ং স্থাপনীয়ং রথকত্রিতয়ে সদা। শিখরার্থং চ সূতাণি রত্নানি বিনিপাতয়েৎ। শিখরস্যার্দ্ধভাগন্তং সিৎহং ভত্ত চ কারয়েৎ। শুকনাসাং স্থিরীকৃত্য মধ্যসন্ধো বিধারয়েৎ। অপরে চ তথা পাখেতির ২ সূত্র বিধাপয়ে । তদুর্দ্ধ ও ভবেদ শেঃ কঠঃ শ্যানলসারবান্।

ছাদশভূমিক:। এবমগ্রেপ্যাহাং। বর্দ্ধ্র লএব মণ্ডল ইত্যুক্ত:॥ পরিমাণং কার্য্যমন্যত চাত্ম-হক্তেনৈবেত্যর্থ:॥৮৮॥ ক্ন্যুলে ক্নিষ্ঠলিঙ্গে॥৮৯॥ ভক্তেৎ বিভক্তেৎ। প্রদক্ষিণাং ভ্রমণং

অর্থ মগুপলকণবিশেষ:।। মাৎসের।। অশাত: সংপ্রবক্ষরামি মগুপানাৎ ভু लकनः। मधनान् व्यवदान् वत्कः। वानामनान्बन्धः। विविधा मधनाः कार्याः क अ यथा कनीयमः। नामज्ङान् श्रवकाति मृन्दः विवनखगाः। भूष्णकः भूष्ण-ভ प्रमः मृत्राखा । को माला । दिन्ति मा कि विकास के वितास के विकास विकार रैक्टव वास्कोर्नः अक्छिक्षदः । यक्कछात्राविभागक मःश्लिकः अजुमक्नः। छात्र পাঞ্চোনন্দনশ্চ মানবোমানভদ্ৰকঃ। সুগ্ৰীবোহর্ষ্টশ্চব কর্বিকারঃ পাদান্ধকঃ॥ সিংহশ্চ শ্যামভদ্রক সুভদ্রক তথৈ বচা সপ্তবিংশতিবিখ্যাতা লক্ষণং শূণ্ত দিলা। তত্তা যত্ৰ চতুংৰ্ফি: পুস্পকঃ স উদাহ্বতঃ। দ্বাৰ্ফি: পুস্পভদ্ৰস্থ ৰফি: সুকুত্ৰ উচ্যতে। ' অফপঞাশক: স্তম্ভ কৰাতে হয়তনন্দন:। কৌশলা: ষ্টচ্পঞাশক্তৃ:পঞ্পাশত। পूनः। नामा जू त्किनःकीर्ला विशेषात्राक्षण्यकः। क्यावर्ष शकाण्य श्रीतृक्ष विशेनकः। विकास विशेनः महाद्यासम्भिक्तिकस्थाः वाकारमव अशेरम् ७७: व्यक्तिश्वाभावः । ठषाति भाष्यक्रक्षा विश्वाभाष्य विभाषकः ॥ वर्षे जिः भटेकव निश्मित्या विश्नेनः मळ्मर्पनः। वाजिरमञ्जाशशक्ष जिरमञानमनः मृष्टः। चर्छा-विश्मामानवस मानलाजा विद्योनकः। ठलूकिः मस मूशीया वाविश्मकर्वाणा मणः। विश्मिण्डिः कर्निकात् नामिण्डोहमानामार्क्षकः । निश्रहाण्डविस्होनमा मामिण्डामा ৰিহীনকঃ । সুভত্তত্ত্ব তথা প্ৰোক্তোদাৰত ভগংযুত:। মণ্ডপা: কথিত। হোতে যথা-बलक्षात्रिकाः । बिरकांगः वृद्धमधाः भक्षेरकान्षित्रकेकः। हजूरकांगक कर्डवार ৰংখানং মগুপৰা তু। রাজ্যঞ্বিজয় দৈচৰ আয়ু বঁজন্মেৰ চ। প্ৰজাভঃ আয়ঃ

পুটি দ্রাসাদিযু ভবেৎ ক্রমাৎ। এবং তু শুভদাঃ প্রোক্তা মান্থা ছু ভয়াবহাঃ।। व्यथं एक बार्जनर्वतः। इत्रमीर्यश्रक्षेत्रात्व । श्राप्त मत्था ह शृद्ध ह श्रक्ताः গ্দারং প্রকণ্পয়েং। বিদিশাবু চ সর্কাসু তথা প্রত্যশ্মুখং ভবেং। দক্ষিণে চোত্ত-রে চৈৰ পশ্চিমে প্রাত্মুখন ভবেৎ । কিঞ্চ। বিভারাদ্বিগুণন দারং কর্ডব্যং জু मुल्माखन । ब्राजक भर मत बर्फ कदानी जूसरे तर्म कर। खेलू मता क्षेत्र वर्ग सम्माशाः नात्मधुभः। जूर्यामकलासारमा जाकानम् सकिनाहा ह। बातमा जू हज्भीश्या कार्या · हथ थें हथ की। प्रश्रु ह कर्ड (बड़ी विषु करमाना भाव (की। भार्थार्क् नडमड बज़ानि नारमपूर्वमृषु सत् । कना मरधा स्था परिवो माका लक्षीः मृद्यभन्नी । कर्खना निग्गरेकः ना क् क्राणामाना घरछेन कू। भारताजुबत्रको कोर्स्यो भजवन्न। विक्थिको । একপাখং তিশাখং বা ষট্শাখং দারমিষ্যতে। নবশাখণ কুরীত অভউর্দ্ধ্ন কারয়ে । . বিষ্ণাবভার ৰূপাদ্য : শাখা ৭ যত্না বিভূষয়ে । । মা ৭ সে । । । । চতু । যটি পাদ্দ রুদ্ধা মধ্যে স্থারং প্রকল্পয়েৎ। বিস্তারাদ্দিগুণোচ্ছায়স্ত জ্রভাগা কটিভ-বেং। বিস্তারার্দ্ধান্তবেশা।ভা ভিত্তয়োহন্যা: সমন্ততঃ । গর্ভপাদেন বিস্তার্ণং দারং দ্বিগুণমায়তং। উচ্ছায়াৎ পাদবিস্তীণী শাখা ভদ্বদুডুম্বরং। বিস্তারপাদপ্রতিমং বাহুল্যং শাথয়োঃ শৃতং। ত্রিপঞ্চ প্রনবভিঃ শাথাভিদারমিষ্যতে। কনিষ্ঠং মধ্যমৎ জ্যেষ্ঠং মথাযোগং প্রকল্পয়েৎ । অঙ্গুলানাৎ শতং সার্দ্ধৎ চত্মারিংশদ্ধিরুত্তমং। ধন্যসূত্রমমাযুষ্যৎ ধনধান্যদমেব চ। শতং চাশীতিসহিতৎ বাতনির্গমনৎ ভবেৎ। অধিকং দশভিত্তবন্ত্ৰাবোড়শভিঃ শতং। শতমানং তৃতীয়ন্ত ভবত্যশীভিভিত্তথা। मन दार्जान देखान कार्या । क्या । क्या नि वर्ष्क नी ज्ञानि यान त्या दिश्लानी ত। দারবেধৎ তু যত্নে সক্ষরান্তধু বজরেরেং। বৃক্ষকোণাচ্চ ভূর্বারাং স্তম্ভকূপধু-कारिन । कून्याचालन वा विकार न वातर अलगर खदर । क्राम्य मूर्गकिरेम्य श्रवामः সুদ্রেরং তথা। দৌর্ভাগ্যং বন্ধনং রোগোদারিজ্যং কলহং তথা। বিরোধন্চার্থনাশন্ত मर्सावाध ভবেৎ ক্রমাৎ।।

অথ প্রাকারাদিনির্বাঃ ।। হয়শীর্ষপঞ্চরাত্রে । প্রাসাদস্য চন্তর্ভাবিঃ প্রাকারস্যো-জুয়োভবেৎ । পঞ্চয়স্ত দ্বস্য একহন্তা তু পীঠিকা । তন্মান্তু দিণ্ডণং প্রোক্তন্ত শা গরুড়মণ্ডপঃ । একহন্তাদি কুবা তি ত্রিংশদ্ধন্তান্তমেব চ ।।

অথ বৃক্ষরোপণনির্বঃ । মাৎসে। পূর্বেন ফলিনো বৃক্ষাঃ ক্ষারবৃক্ষান্ত দক্ষিণে। পশ্চিমেন জলং শ্রেষ্ঠং পরোৎপদ্ধবিভূষিতং । উত্তরেন নলৈন্তালৈঃ শুভা স্যাৎ পূজাবাটিকা। সর্বভন্ত জলং শ্রেষ্ঠং হিরমন্থিরমেব চ । সর্বভন্তাপি কর্ত্ববাং পরিখাবক্ষাদিকং । যামে। তপোবনস্থানমূভ্রে সাত্কাগৃহং । মহানসং তথা ব্যের নৈশ্বতে তু বিনায়কঃ । বারুণে শ্রীনিবাসন্ট বায়বে। গ্রহমালিকা । উত্তরে যক্তশালা তু নির্দ্ধান লাজনি মেবচ । বারুণে সোমদৈবতে। বলিনির্বাপণং স্কৃতং । পুরভোগরুড্সানং তথা-দেবাং যথোছিতং । এবমায়াতনং কুর্য্যাচ্ছুল্লমগুপ সংযুক্তং । ঘণ্টা বিভানক

সভোরণ চিত্রসূজ্ঞ নিভ্যোৎসবপ্রসুদিতেন জনেন সার্ক্ষঃ যা কারয়েৎ সুরগৃহং বিবিধধ্কাতাং জীন্তৎ ন মুঞ্জি সদা দিবি পুঞ্জতে চ।।

অধ জীংনিজার:। বিক্পথর্যান্তরে তৃতীরকাণ্ডে। যদ্য রাজন্ত বিষয়ে দেববেশ্ম বিশীর্যান্ত। তদ্য দাণ্ডি ততাল্যং দেববেশ্য যথা তথা । কৃত্যা শীন্দ্য সংক্ষারণ তথা দেবেশ্বেশানি । দ্বিগুনং ফলমাণ্ডোত নাত্র কার্ম্যা বিচারণা । বিক্ষুরহদ্যে। পতিতদ্য চ যং কর্তা পত্যানস্য রক্ষিতা । বিষ্ণোরায়তনস্যেহ দ নরোবিষ্ণুলোক ভাক্। অগ্রিপুরাণে। পতিতং পত্যানং ও তথার্জকুটিতং নরং। সমুজ্ত্য হরের্জান দ্বিগুনং ফলমাপ্লু য়াৎ। দেবাপুরাণে ।। মূলাচ্ছতগুণং পুণ্ড প্রাপ্লু যাজ্ঞানিকারকঃ। তথাৎ সর্বপ্রয়াৎ । দেবাপুরাণে ।। মূলাচ্ছতগুণং পুণ্ড প্রাপ্লু যাজ্ঞানিকারকঃ। তথাৎ সর্বপ্রয়াৎ তথানঘ। প্রতিমানাং সভানাঞ্চ সংক্ষণ্ডা যো নরো ভূবি । পুণ্ড শত্থেং ত্র্যান্ত্রা ভবেমুলার সংশয়ং । প্রতিষ্ঠায়া বিধিং কার্য্যন্ত্রথা মন্দিরনিমিতে। প্রায়ঃ শ্রিহয়শীর্যোক্তেরনু সারেণ বৈক্ষবৈং। দেবালয়প্রতিষ্ঠা চ খ্যাতা তল্পিখনেন কিং। জ্বিহয়শীর্যোক্তরনু সারেণ বৈক্ষবিং। দেবগৃহং দেবতায়াং প্রতিষ্ঠারিধিনা সদ্য । সংক্ষার্য্যন্ত্রলানান্ত সমুদায়োক্তকর্মণা । অথ শ্রিভ্রলসীং ধন্যাং বিবাহ্য প্রভূনা সমং। সংপ্রতিষ্ঠাপয়েচ্ছক্ত্যা বৈক্ষবং ক্ষত্তিক্টিকং।।

অথ ত্তলসীবিবাহঃ প্রতিষ্ঠা বিধিশ্চ।। জীবশিষ্ঠ উবাচ। বিবাহৎ সংপ্রব-ক্যামি ভলস্যান্ত যথাবিধি। যথোক্তং পঞ্চরাত্রে বৈ ত্রন্ধণা ভাষিতং পুরা। আদাবেৰ বনে বাপাঃ ত্তলগীৎ স্বগৃহেপি বা। বর্ষত্রেণে পূর্ণেন ততোবজনমারছেই। সৌম্যায়নে প্রকর্ত্তব্য গুরুশুক্রোদয়ে তথা। অথবা কার্ত্তিক মাসি ভীম্মপঞ্চিনেযু চ । বৈবা-হিকেষ্ ঋক্ষেষু পূর্ণিমায়াৎ বিশেষতঃ। মগুপং কারয়েভত্ত কুগুবেদীং যথা পুনঃ। শান্তিকঞ্চ প্রকর্ত্তব্যং মাতৃণাৎ স্থাপনং তথা । মাতৃশ্রাদ্ধাদিকং সর্বাং বিবাহবৎ সমা-हात्र । बाक्ष्म १८० अहिकालाम्। त्वमरवनाक्ष्मात्रशाम् । बक्काहारमणकरेण्डव हजा-त्र क ख्यार्जिकः । देव कट्वन विधारनन वर्क्ष नोकलनः शरकः । मध्यः कात्रसङ्ख्य क्यो-. নারায়ণং শুভং। গৃহযক্তং পুর: রুত্বা মাতুণাং যজনং তথা। রুত্বা নান্দীমুখং আদং সৌবর্ণং স্থাপয়েন্দ্রিরিং। কুত্বারোপ্য চ এলসীং লয়ে হস্তমিতে রবৌ। বাসং শতেন মস্ত্রেণ বস্ত্রযুগ্মেন বেউয়েৎ। যদাবধেতি মজেণ কন্ধণঃ পাণিপল্লবে। কোদাদিতি চ মন্ত্রেণ করগ্রাহো বিধীয়তে। ততঃ কু গু সমাগতঃ আচার্যাঃ সহসা দিকৈঃ। আচা-কর্ত্ব্যশ্চ ততেহোনোবিশেষাদ্বিধিপূর্বকং। ওঁ নৰোভগবতে কেশবায় নমঃ স্থাহা নারায়নায় স্থাহা। মাধবায় গোবিন্দায় বিঞ্বে মধুসূদনায় ত্রিবিক্রমায় বামনায় ঞীধরায় ক্ষীকেশান প্রনাভায় দামোদরায় উপেন্দার অধোকজার অনিরুদ্ধার অচ্যভায় অনন্তায় ংদিনে চক্রিণে বিষ্কুদেনায় বৈত্তীয় জনার্দ্দায় মুকুদায়

অধোক্ষপায় স্বাহা ইতি হোমং।। যক্ষমানং সপত্নীকো অন্যে যে পোত্রবান্ধবাং। প্রদিশাশ্চ কর্ত্রবাশ্চপ্তারে। বিষ্ণুনা সহ। প্রসম্যাং পাণিগ্রহণে বেদিকায়াৎ বিভাবনো । শতং কুন্তং জপেৎ সূক্তৎপাৰমানীং বিশেষতং। তথৈব শান্তিকাধ্যায়ং নবস্ক্রৎ তথৈব চা জীবসূক্তং পুনন্ধ্রপ্তা তথা বৈষ্ণবসংহিতাং। শত্রবান্ধরি নির্মো বৈভেরী অর্থা নিঃ স্থানাঃ বাগ্রন্থে মঙ্গলা নার্য্যো মাঙ্গলাং বিধিমাচরে ।। দদ্যাৎ পূর্ণান্ত্তিং পশ্চাদ্ভিষেকবিধিং. ততং। ব্রাক্ষণে ব্যত্তৎ দদ্যাদ্চার্যাং পরিধাশ্য চাগাং পটক তথা শ্যামাচার্য্যায় প্রদাপয়েও। শ্বিগ্রেণ্ড্যাদাপয়েদ্বন্ত্রাণ্যে বাং দদ্যাচ্চ দক্ষিণাং। এবং প্রতিষ্ঠিতাং দেবাং বিষ্ণুনা চ সমর্চয়ে । আজ্মোপাজ্রি তং পাপৎ দর্শনেন প্রণশাতি। প্রোপয়েন্তলসীং যন্ত সেচয়েন্তপ্রস্তুতং। প্রতিষ্ঠাপ্য হাথাক্তেন বিষ্ণুনা সহ মানবং। স মোক্ষং লভতে জন্ত্রবিষ্ণুলোকং তথাক্ষয়ং। প্রাণ্ডোভি বিপুলান্ ভোগান্ বিষ্ণুনা সহ মোদতে। প্রতিষ্ঠা শ্রীভলস্যান্ত লিখিতা বিষ্ণুলামলে।।

শাস্ত্রাথ ন ব জেয়ে নিতরাঞ্চ গ্রেম থাত। সন্তান্যপি লিখিতে দিহ। তত্তৎ শাস্ত্রাথ ন ব জেয়ে নিতরাঞ্চ গ্রেম থাত। সন্তান্যপি সদাচারা বহবং শাস্ত্রদর্শিতাং। ন লিখান্তেছত্র তে নর্বে গ্রাহ্কাভাবতোহখুনা। ক্বত্যান্যভানি ভ প্রায়ো গৃহিণাং ধনিনাং সতাং। লিখিতানি নত্ত ত্যক্তপরিপ্রহমহাজ্বনাং। অবশ্যং তানি স্বানি তেষাং তাদ্জ্সিদ্ধরে। প্রাগপেক্ষ্যানি ভক্তিহি সদাচারৈকসাধনা। তেষাং চ পূর্বলিখিতাৎ ক্বত্যান্যকান্তিলক্ষণাৎ। ব্যক্তিৎ যাতান্যখাপ্যন্তে লিখ্যন্তো হপোনি কানিচিৎ।

ভবৈশবিক্ত তাং ।। প্রাক্তিমভক্তি সম্পত্তি শিচ্ছানি লিখিতানি হি । তান্যেকান্তিকানাং প্রায়া জ্ঞাপকানি বিদুব্ধাঃ । হক্ষ্তাগেপাহেয়ায়া সর্বানর্থ ভূব শ্চতে । কুর্বাঃ প্রতিষ্ঠারিষ্টায় হতু মস্পর্শনে বরং । অতএবোক্তমেকাদশে ভগৰতা। জ্ঞানাবিষ্টো বিরক্তো বা মন্তকোবান্তপেক্ষকঃ। সলিঙ্গানাশ্রমাংস্তাক্ত্যা চরেদবিধি গোচরঃ। একান্তিতাং গতানাং ও প্রীক্ষচরণাজয়োঃ। ভক্তিঃ স্বতঃ প্রবর্তে ত ছিট্মঃ কিংক্রতাদিতিঃ । ন মধ্যেকান্তভক্তানাং গুণদোষোদ্ধবান্তগাঃ। সাধুনাৎ সমচিন্তানাং বুদ্ধেঃ পারমুপেযুষাং।। ক্রক্ষবৈবর্তে। যথা কথমপি জীমান্ জীকান্তং সমুপাশ্রিতঃ। কুরুতেইখিলপাশানাং প্রলম্ভ কিং পুনর্ত্র তৈঃ। বিষ্ণুরহন্যে। ক্রক্ষনাম্পংবাদে। মানোপৰাসকথনান্তে। ইন্দ্রিয়ার্থেশ্বসক্তানাং সদৈব বিমলা মতিঃ। পারিভোব্যুতে-বিষ্ণুং নোগবানোলিভান্তন:। কিং তস্য বহুভিন্তবিহিঃ সানহোমজপত্রতৈঃ। যেনেন্দ্রিগণাঘারো নির্জ্জিভান্তানাং দিব বিমলা মতিঃ। পারিভোহ্যুতি রভঃ। বাসুদেবপরোনিত্যং ন ক্রেশং কর্তুম্বতি। যে স্বরন্তি সদা বিষ্ণুং বিশুদ্ধোন্তরান্তরান্ত্রানাতে প্রযান্তি ভন্তং ন ক্রেশং কর্তুম্বতি। যে স্বরন্তি সদা বিষ্ণুং বিশুদ্ধোন্তরান্তরান্ত্রানাণ্ডানিতাহ ন ক্রেশং কর্তুম্বতি। যে স্বরন্তি সদা বিষ্ণুং বিশুদ্ধোন্তরান্ত্রানাণ্ডানিতাহ ন ক্রেশং কর্তুম্বতি। যে স্বরন্তি সদা বিষ্ণুং বিশুদ্ধোন্তরান্তরান্ত্রানাণ্ডানিতাহ কর ক্রেশং তাজুমিকান্তরান্তরান্তরানিতাহ ন ক্রেশং তাজুমিকান্তরান্তরানিকং। মানান্দিতাহথ বা চার্ডাং

## শ্ৰীশ্ৰীহরিভাকি বিশাসঃ।

জুদ্ধ শাষ্টে। থবা হরিং-। যোনু কার্ত্তরতে ভক্তা। স গচ্চে দ্বিষ্কাৎ গুরীঃ। গর্ভদ্ম করারোগদুং ধসংসারবন্ধনৈং। ন বাধ্যতে নরো নিভ্যৎবাসুদেবমনু মারন্। এবমেন কান্তিনাং প্রায়ং কার্ত্তনং মারনং প্রভাং । কুর্ব্বভাং পরমপ্রভিত্য কৃত্যমন্যন্ন রোচ-তে। ভাবেন কেন্চিৎ প্রেপ্ত জ্বীমূর্ত্তেরং ঘ্রিষেবনে। স্যাদি চৈছ্যাৎ স্বমন্ত্রেণ স্বর্তেন করিং ভিনিং বৈবিছিভেশ্বে নিভ্যেষু প্রবর্তন্তে স্বয়ং ছি তে। ইত্যাদে কালিনাং ভাতি মাহাস্থাং লিখিতৎ হি তৎ ।।

সদঃ । সদাচারপরাস্ত যে নরা ভবস্তি দামোদরভক্তঃপেক্ষয়া। তদীয়পাদাসু অধূলিধূবরং কদা ভবেদস্য শিরোহধমস্য মে । শ্রীনন্দসুন্দর মুকুন্দপদার বিন্দপ্রেমামৃতাব্ধিরসভান্দিক্ষানসা যে । নানার্থবৃন্দরনুসংদগতে নচ স্বং তেষাং পদাজ্জমকরন্দমধূব্রতঃ স্যাং।। ইতি শ্রীগোপালভট্টবিলিখিতে শ্রীভগবদ্ধকিবিলাসে
প্রাসাদিকে। নাম বিংশতিত্যো বিলাসঃ ।। সমাপ্রশ্চায়ং শ্রীভগবদ্ধকিবিলাসো
গ্রেহঃ। শুভমস্ত ওঁতংসং